Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113086

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा

अर्थशास्त्र की नवीनतम गतिविधियों की
मासिक पत्रिका
जनवरी १९६१

का प्रकाशन मन्दिर शक्ति नगर दिल्ली

मूल्य
७५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाल मार्क आफ़ क्वालिटी !!

बढ़िया चमक !!

# भा र त

## स्टेपल फ़ाइबर यार्न

ड्रिल, चमकीले और रंगीन किस्म के कपड़ों के लिए केवल

**भारत स्टेपल फ़ाइबर यार्न का प्रयोग कीजिए**

भारत स्टेपल फ़ाइबर यार्न हैंक और कोन दोनों में सुलभ है।

विस्तृत जानकारी के लिए निर्माता से सम्पर्क स्थापित कीजिये।

**मैसर्स भारत कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज़ लि०**

डाकखाना बिरला ग्राम

टैलिफोन नं० RTM 88

तार—भारत नागदा (वैस्टर्न रेलवे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113086.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


१. सम्पदा दसवें वर्ष में ५
२. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार नई दिशा में ६
३. सम्पादकीय टिप्पणियां ७
४. मुद्रास्फीति का अभिशाप ११
५. भरपूर खेती के नये परीक्षण १३
६. जूट : स्थिति व समस्याएं १६
७. गणतंत्र का ग्यारहवां वर्ष १९
८. विदेशी व्यापार की नई दिशा २३
९. विश्व में तेल उद्योग की स्थिति २५
१०. कोयला उत्पादन और ढुलाई २७
११. सर्वोदय की वैज्ञानिक दृष्टि ३०
१२. जनसंघ की आर्थिक नीति ३३
१३. विदेशी अर्थ-चर्चा ३६
१४. नया साहित्य ३८
१५. पंजाब की औद्योगिक आवश्यकताएं ३९
१६. अर्थ वित्त चयन ४३
१७. मास की प्रमुख आर्थिक घटनायें ४५


• • •

सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार
सहायक सम्पादक : देवीप्रसाद नौटियाल


# व्यक्तिगत सेवा

दीर्घकाल के अपने अनुभवों से प्राप्त विशेष ज्ञान के बल पर पंजाब नैशनल बैंक आज आपकी सहायता करने के लिये ऐसी अपूर्व स्थिति में है कि व्यक्तिगत रूप से आपकी सेवा कर सके।

प्रत्येक प्रकार का बैंकिंग व्यापार किया जाता है।

दि पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड

स्थापित : १८९५
प्रधान कार्यालय : नई दिल्ली


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


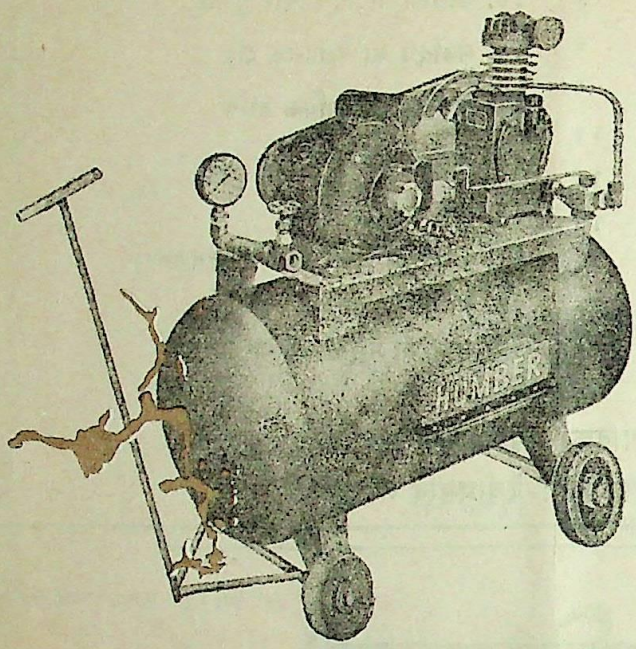

★ एयर कम्प्रेसर्स

★ स्प्रे पेंटिंग के साधन

★ कार वाशर

★ वैक्युम पम्प

# डीडवानिया ब्रादर्स (प्रा.) लि.

कश्मीरी गेट दिल्ली-६ ।

टेलीफोन : २३८१८

टेलीग्राम : डीडवानिया

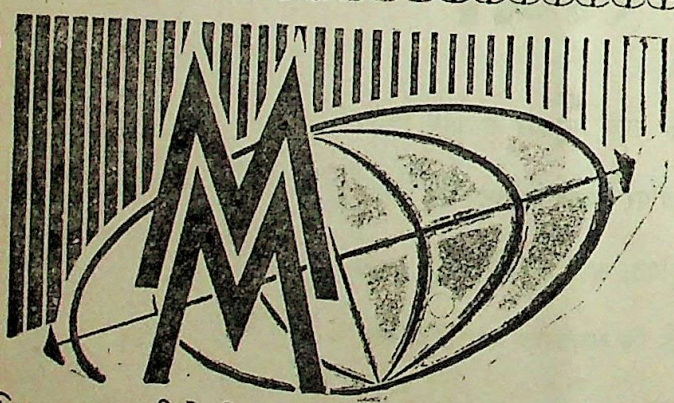

५ से १४ मार्च, १९६१

## लिपज़िग व्यापार मेला

५० से अधिक देशों से औद्योगिक मशीनरी तथा उपभोग्य पदार्थ

प्रमुख अन्तरर्राष्ट्रीय मेला और पूर्व तथा पश्चिम में निरन्तर बढ़ते हुए व्यापार का केन्द्र

वायुयानों से सीधी उड़ान : योरूप में रेल गाड़ियों पर कम भाड़ा : सब प्रमुख यात्रा एजेंसियों का साहित्य

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिए :

**लिपज़िग फेयर एजेंसी**

पोस्ट बाक्स नं० १९९३, बम्बई-१

डी-१७ निजामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली-१३

३४-ए, ब्रबोर्न रोड, कलकत्ता-१

लैमण्ड ४६, हैरिंगटन रोड, मद्रास-३१

प्राप्ति के साधनों के सम्बन्ध में अधिक सूचना तथा निःशुल्क परामर्श के लिए लिखिए :

LEIPZIGER MESSEAMT Hainstrasse 18 A. Leipzigc 1. German Democratic Republic


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पदा

वर्ष : १०
अंक : १
जनवरी १९६१

# सम्पदा दसवें वर्ष में

इस अंक के साथ सम्पदा अपने जीवन के नौ वर्ष समाप्त करके दसवें वर्ष में प्रवेश कर रही है। इस अवसर पर हम अपने हजारों पाठकों, ग्राहकों, एजेण्टों तथा विज्ञापनदाताओं का अभिनन्दन करते हैं। उन्हीं के सहयोग से हम इतनी प्रगति कर पाये हैं।

सम्पदा अपने निश्चित उद्देश्यों को लेकर अपने पाठकों के सामने आई है। आज के संघर्षशील युग में जब विभिन्न 'वाद' और 'हित' परस्पर संघर्ष कर रहे हैं, तब हम अपनी एक विशेष विचारधारा के प्रति आग्रह के कारण मूल उद्देश्य—राष्ट्र और विश्व की सर्वांगीण उन्नति तथा मानव का विकास और इसके लिए स्वतंत्रता भूल जाते हैं। हमने पिछले नौ वर्षों में यह प्रयत्न किया है कि हम राष्ट्र और मानव के विकास को सदा ध्यान में रखते हुए अपनी अर्थ-नीति के निर्धारण का विचार प्रस्तुत करें।

'सम्पदा देश में जहां शोषण की समाप्ति की इच्छुक है, वहाँ यूरोप के अनुकरण में बढ़ते हुए वर्ग संघर्ष को भी अवांछनीय समझती है। शोषण के साथ साथ पूंजी के अत्यधिक केन्द्रीकरण का भी विरोध हम करना चाहते हैं और इसलिये यह आवश्यक समझते हैं कि जहां देश की अर्थ-नीति पर समाज का उचित नियंत्रण हो वहां हमारी नम्र सम्मति में बिना विवेक के प्रत्येक आर्थिक प्रगति का राष्ट्रीयकरण ही इसका उपाय नहीं है। राष्ट्रीयकरण बहुत अनिवार्य परिस्थितियों में ही स्वीकार करना चाहिये।

सम्पदा पूंजी और उद्योगों के विकेन्द्रीकरण का समर्थन करती है। उद्योगों पर एकाधिकार का वह विरोध करती है। इसके लिये वह विभिन्न सहकारी संस्थाओं द्वारा उद्योगों में अधिकाधिक जनता के, जिनमें उद्योग के कर्मचारी भी सम्मिलित हों, शेयरों द्वारा सहयोग को वांछनीय समझती है।

पश्चिम के अर्थ-शास्त्र का अन्धानुसरण करने की प्रवृत्ति हमारी नम्र सम्मति में भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल नहीं है। इसलिये हमें सर्वोदय और औद्योगिक उन्नति दोनों का समन्वय करना होगा। अनेक उद्योग, विशेषकर, देहातों के क्षेत्र में ग्राम उद्योगों तक सीमित करने होंगे।

देश के विकास के लिये पंचवर्षीय योजनायें बनाते हुये भी हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि केवल भौतिक और आर्थिक समृद्धि ही देश को सुख नहीं प्रदान कर सकती है। इसलिये नैतिक मूल्यों की उपेक्षा करके केवल धनार्जन की योजनायें बनाने से पूर्व गंभीर विचार की आवश्यकता है। महात्मा गांधी ने अनेक दोषों के कारण वर्तमान अर्थ-शास्त्र को अनर्थशास्त्र कहा था, हमें व्यावहारिकता से समन्वय करते हुये पश्चिमी अर्थशास्त्र के दोषों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद मिल गया है और अनेक राज्यों में उच्च शिक्षा का माध्यम भी मान लिया गया है, तथापि आज देश में हिन्दी पत्रों को विशेषकर गंभीर विषयों पर प्रकाशित होने वाले हिन्दी पत्रों को बहुत कम सहयोग मिलता है। शिक्षित वर्ग और उद्योगपतियों में हिन्दी के प्रति आज भी पर्याप्त उदासीनता है। दुख तो यह है कि हिन्दी का गर्व करने वाले शासनाधिकारी भी हिन्दी के प्रति उदासीन हैं। इन विकट परिस्थितियों में भी हम अपने सीमित साधनों से गत नौ वर्षों से सम्पदा प्रकाशित करते रहे हैं। हमारी यह दृढ़ अभिलाषा है कि हिन्दी में अर्थशास्त्र का उच्च स्तर का एक पत्र प्रकाशित हो। इसी दृष्टि से हमारी यह साधना रही है। हम हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य पर विश्वास करते हैं।

इन पंक्तियों के साथ हम सम्पदा के प्रेमी पाठकों, कृपालु लेखकों तथा अन्य सहयोगियों से यह आशा करते हैं कि वे इस वर्ष अपना सहयोग और भी बढ़ायेंगे, ताकि सम्पदा का पाठक परिवार अधिक विस्तृत और व्यापक हो जाय। तब हम अधिक उत्साह के साथ अर्थशास्त्र के प्रेमियों की सेवा कर सकेंगे।

—कृष्णचंद्र विद्यालंकार

# अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की दिशा में नया मोड़

नीचे हम कुछ तालिकाएं दे रहे हैं। इन्हें पाठक ध्यान से पढ़ेंगे।

## वस्त्रों का निर्यात (मिलियन वर्ग गज)

| | १९५७ | १९५८ |
|---|---|---|
| जापान | १४५८ | १२५२ |
| स० रा० अमेरिका | ५६० | ५०८ |
| ग्रेट ब्रिटेन | ४५६ | ३८४ |
| जर्मनी | २१८ | १९९ (अब) |
| भारत (मिलियन गज) | ८४४ | ५८७ |

इस तालिका से ज्ञात होता है कि १९५८ में सभी देशों से वस्त्र के निर्यात में कमी हुई है। निम्नलिखित तालिका से संसार भर में वस्त्रों के निर्यात पर प्रकाश पड़ता है। उतार चढ़ाव के बावजूद अन्ततोगत्वा निर्यात कम हुए हैं।

## विश्व में वस्त्र निर्यात (मिलियन वर्ग गज)

| | |
|---|---|
| १९५० | ५५१२ |
| १९५१ | ५६७३ |
| १९५२ | ४६०३ |
| १९५३ | ४५९६ |
| १९५४ | ५२०९ |
| १९५५ | ४६८१ |
| १९५६ | ४५७० |
| १९५७ | ५००२ |
| १९५८ | ४३१६ (अनुमान) |

भारत के आयात निर्यात आंकड़ों पर प्रकाश डालने से मालूम होता है कि प्रतिकूल सन्तुलन बढ़ता गया है।

## व्यापारिक प्रतिकूलता (करोड़ रु० में)

| | |
|---|---|
| १९५४-५५ | ६३.९१ |
| १९५५-५६ | ११६.५० |
| १९५६-५७ | २२९.१३ |
| १९५७-५८ | ४००.५०९ |
| १९५८-५९ | २२९.७८ |

एक और तालिका देखिये। इसमें १९५२-५३ के आधार १०० मानकर विभिन्न वर्षों के निर्यात के निर्देशक अंक दिये गये हैं।

| | १९५७ | १७५८ |
|---|---|---|
| खाद्य सामग्री | १९९ | ११७ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | |
|---|---|---|
| पेत्र क तम्बाखू | ९० | ८७ |
| क्रूड सामान | १०६ | ९४ |
| खनिज ईंधन | ९१ | ९३ |
| वनस्पति तेल व चरबी | ८५ | ८१ |
| निर्मित सामान | ८० | ७९ |
| जनरल | ९४ | ९३ |
| कुल निर्यात | ११९ | १०६ |

मैंगनीज ओर १९५७ में १६ लाख टन विदेशों में भारत से गया था। लेकिन १९५८ में इसका निर्यात गिर कर केवल ९ लाख टन रह गया।

योजना आयोग ने तीसरी महत्वकांक्षापूर्ण योजना में निर्यात के बढ़ाने पर बल दिया है और उसके द्वारा विदेशी मुद्रा की समस्या के कुछ समाधान की आशा प्रकट की है, किंतु उपर्युक्त तालिकाओं से यह स्पष्ट होता है कि संसार में निर्यात व्यापार कम होता जा रहा है। भारतीय सरकार ज्यों ज्यों विदेशी मुद्रा के अर्जन के लिए बल देती है, निर्यात व्यापार में कमी होती जाती है। आज तो सरकार को यदि कहीं गन्ध भी मिलती है कि अमुक सामग्री का निर्यात करके हम दो लाख रु० प्राप्त कर सकते हैं, तो वह निस्संकोच वैसा करने के प्रयत्न करती है। उद्योग व्यापार मंत्रालय हो या वित्त मंत्रालय, विदेशी मुद्रा के अर्जन के लिए व्याकुल हैं। किसी प्रकार के मांस की विदेशों में खपत हो, या चीनी और इंजिगीयरिंग सामग्री की, सरकार सब में पूरी रुचि लेती है। विभिन्न उद्योगों को निर्यात व्यापार बढ़ाने लिए करो में छूट, ऋण की अदायगी, आयात कर में सुविधा आदि सभी उपाय किये जा रहे हैं, किन्तु अन्ततोगत्वा निर्यात व्यापार बढ़ने नहीं पाता। यह स्थिति क्यों पैदा हो गई है, इसे समझने के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर भी एक दृष्टि डालनी चाहिए।

(१) भारत की भांति सब देशों में राष्ट्रीयता और स्वावलम्बन की भावना पैदा हो रही है। जो देश भारत से कपड़ा मंगाते थे, वे अब स्वयं वस्त्र उद्योग के विकास में प्रयत्नशील हैं। अन्य पदार्थों के निर्माण के उद्योग भी प्रायः सब देशों में यथा सम्भव चलाये जाने लगे हैं और कच्चे माल के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाये जाने लगे हैं।

(२) परस्पर समझौतों के द्वारा क्षेत्रीय स्वतन्त्र व्यापार की प्रवृत्ति बढ़ने लगी है। यूरोप में छः व सात सदस्यीय संगठन इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं।

(३) स्वावलम्बन की दिशा में स्थानापन्न वस्तुओं का भी निर्माण होने लगा है। जैसे जूट के स्थान पर कागज आदि। इन तीन तथ्यों के जानने के बाद इनके अतिरिक्त कुछ अन्य भी कारण हैं, जिनसे भारत के निर्यात व्यापार में बाधाएं आती हैं। इनमें से मुख्य कारण यह है कि भारत में निर्माण व्यय अन्य देशों की अपेक्षा बहुत अधिक है। इसके भी तीन कारण है—

(१) पुरानी ढंग की मशीनें, जिनसे माल कम और देर में पैदा होता है।

(२) आधुनिकी करण की मन्थरगति बोनस, छुट्टी आदि, मंगल कार्य, वेतन वृद्धि- आदि।

(३) मजदूरों पर बढ़ते हुए व्यय।

(४) सरकारी करों का बोझ।

(५) गन्ना, कपास, चाय, जूट आदि की प्रति एकड़ कम उपज (अन्य देशों की तुलना में।) इसके कारण भी उत्पादन व्यय बहुत बढ़ जाता है।

हम इन अंकों, तथ्यों और कारणों से आंखें नहीं मूंद सकते। यह भी सच है कि निर्यात व्यापार में बाधक सब कारणों को दूर करना भी हमारे बस की बात नहीं है। कुछ कारण एक सीमा तक दूर अवश्य किये जा सकते हैं, किन्तु उनसे कब तक और कितना लाभ उठा सकेंगे, यह कहना कठिन है। फिर निर्यात से कमी की समस्या केवल भारत के लिए ही नहीं है, यह तो विश्वव्यापी समस्या है। सभी देश स्वावलम्बी होना चाहते हैं और इसलिए आयात पर निर्भर नहीं रहना चाहते।

यही सब देखकर अनेक अर्थशास्त्री कहने लगे है कि विदेशी या अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर बहुत समय तक निर्भर नहीं रहा जा सकता। इसलिए अब हमारी अर्थ व्यवस्था में एक भारी मोड़ आने वाला है। जब सब देश पंचवर्षीय या अन्य विकास योजनाओं द्वारा स्वावलम्बी होने का प्रयत्न करेंगे, अपने उद्योगों को संरक्षण देने के लिए भारत की भांति आयात व्यापार पर प्रतिबन्ध लगावेंगे, तब अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का विश्व की अर्थव्यवस्था में ही महत्व कम होता जायगा। यह भय आज निकटवर्ती न हो, किन्तु संसार की प्रवृत्ति इसी दिशा की ओर है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज प्रत्येक देश ही नहीं, उसका प्रत्येक राज्य भी आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बन चाहता है। भारत में ही प्रत्येक राज्य अपनी सब जरूरतें स्वयं पूरी कर लेना चाहते हैं। यदि यह प्रवृत्ति कालान्तर में कुछ स्थूल रूप धारण कर सकी, तो फिर एक एक जिला और तहसील भी स्वावलम्बन की ओर जावें और ग्रामों की पंचायतें स्वावलम्बन का आदर्श अपनाने लगें, तो कोई आश्चर्य न होगा। पर यह तो दूर की बात है।

आज तो देश के अर्थशास्त्रियों व नेताओं को यह सोचना चाहिए कि हमारी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार अन्तर्राष्ट्रीय बाजार चिरकाल तक नहीं रह सकते और अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ रखने ने लिए देश के ही जीवनस्तर को ऊंचा करना पड़ेगा अथवा अपनी औद्योगिक प्रवृत्तियों की दिशा को ही कुछ बदलना पड़ेगा।

## साइकल उद्योग

भारत सरकार ने साइकिल उद्योग को और तीन वर्षों के लिये संरक्षण दे कर बहुत उचित किया है। पिछले संरक्षण की अवधि १९६० के अन्त में समाप्त हो रही थी। आज यद्यपि साइकिल उद्योग ने बहुत उन्नति कर ली है, तथापि इसमें अभी उन्नति की काफी गुंजाइश है। साइकिलों का निर्माण व्यय अभी बहुत है। साइकिलों को अधिक मजबूत और अधिक अच्छा बनाने की आवश्यकता है। यदि संरक्षण कर हटा दिया गया तो छोटे उद्योग किसी भी अवस्था में टिक नहीं सकेंगे। विदेश से आने वाले साइकिलों पर आजकल मूल्य का ६५ प्रतिशत अथवा ८०) रु० प्रति साईकिल जो भी अधिक हो, आयात कर लगता है। दो एक बड़े उद्योगों ने विदेशी कम्पनियों के साथ मिल कर साइकल निर्माण का कार्य बहुत बढ़ाया है। संरक्षण कर लगाने से छोटे उद्योगों को अधिक लाभ मिलेगा। पंजाब और बंगाल में प्रति वर्ष छोटे उद्योग ७॥ लाख साइकिल तैयार कर सकते हैं। १९५९ में देश में ११,८८,००० साईकिलें तैयार हुई थीं जबकि १९५६ में सिर्फ ६,९१,००० साइकिल तैयार हुई थीं।

साइकिल उद्योग को हम दो भागों में बांट सकते हैं। एक वे उद्योग जो कि पूरा साईकल तैयार करते हैं और दूसरे वे सैकड़ों उद्योग, जो साईकिलों के अलग पुर्जे तैयार करते हैं। सरकार ने पुर्जे बनाने के लिये पिछले वर्ष में लाइसेन्स अधिक उदारता से जारी किये हैं। हमें आशा करनी चाहिये कि संरक्षण कर की अवधि बढ़ने से साइकिल उद्योग भी विकास को प्राप्त होगा, ताकि देश की बढ़ती हुई आवश्यकता को पूर्ण कर सके।

## ट्राम्बे में खाद कारखाना

भारत सरकार ने ट्राम्बे में खाद का नया कारखाना खोलने का निश्चय किया है। इसके लिये अमरीका ने २७-६१ करोड़ रुपया देने का निश्चय किया है। आज की अर्थ व्यवस्था में जबकि हम कृषि पदार्थों के उत्पादन पर बहुत बल दे रहे हैं, रासायनिक खाद का अधिकाधिक उत्पादन आवश्यक प्रतीत होता है। अमेरिकन सरकार का यह ऋण रुपये में अदा किया जायगा और इसलिये विदेशी मुद्रा पर बहुत बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा।

## उद्योग और पूंजी का विकेन्द्रीकरण

भारत सरकार एक नई दुविधा में है। एक तरफ तो वह देश के औद्योगिक विकास के लिए सम्पन्न, व्यवसाय कुशल, प्रतिभाशाली साहसिकों का सहयोग प्राप्त करना चाहती है और इसलिए उन्हें नए-नए क्षेत्रों में उद्योग खोलने की अनुमति देनें पर सहानुभूति पूर्वक विचार करती है। दूसरी ओर वह समाजवाद के घोषित आदर्श को देखते हुए पूंजी के विकेन्द्रीकरण की दिशा में भी सोचने लगती है। यह स्पष्ट है कि आज पूंजी का केन्द्रीकरण बढ़ता जा रहा है और यह केन्द्रीकरण जहां निजी उद्योगों के द्वारा हो रहा है वहां बड़े और छोटे सार्वजनिक उद्योग तथा व्यापार और पूंजी को अधिक केन्द्रीभूत करते जा रहे हैं। सरकार के नेता इस आरोप को स्वीकार करते हैं कि देश में पूंजी केन्द्रीभूत होती जा रही है। किन्तु सार्वजनिक उद्योगों की अपेक्षा उनकी दृष्टि निजी उद्योगों पर है। भारत के उद्योग मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने हैदराबाद में भाषण देते हुए देश के उद्योगपतियों को यह परामर्श दिया है कि सरकार जहां अपने अधिकारों और प्रशासन की शक्ति का विकेन्द्रीकरण कर रही है, वहां उद्योगपतियों को भी यह चाहिए कि लोगों की मांग के उत्तर में पूंजी का विकेन्द्रीकरण करें। संभवतः उनका अभिप्राय देश के भिन्न-भिन्न भागों में छोटे-बड़े उद्योग स्थापित करने से है। जिससे देश



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भिन्न-भिन्न भागों में औद्योगिक विकास समान रूप से हो सकें।

## नया खतरा

नये समाचारों से ज्ञात होता है कि यूरोप के कामन-मार्केट के देशों ने नये मार्केट के कार्यक्रम के अनुसार इस वर्ष के प्रारम्भ से गैर सदस्य देशों के आयात पर कर बढ़ा दिये हैं अथवा अपने सदस्य देशों के माल पर आयात कर कम कर दिये हैं। अब तक भारत ने जिन देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापारिक समझौते किये थे, उनका कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। वे कागजों पर ही लिखे गये हैं। अब तो इन देशों में भारत के निर्यात और भी कम होने का भय बढ़ गया है। इसलिए केन्द्रीय सरकार और भी चिन्ताकुल हो गई है। तिलहन व तम्बाखू के निर्यात में विशेष कमी आने का भय पैदा हो गया है। ब्रिटेन का भी कामनमार्केट के देशों से अब निश्चित रूप से व्यापार कम होने लगेगा और इसका प्रभाव भारत के निर्यात व्यापार पर भी पड़ेगा, क्योंकि तब ब्रिटेन को भी कच्चे माल की आवश्यकता कम होने लगेगी। हम यूरोप के कामनमार्केट के सदस्यों की जो कम्पनियां एशिया व अफ्रीका के देशों में हैं, उनके माल पर भारत की अपेक्षा कम आयात कर लगने से उन देशों का माल सस्ता पड़ने लगेगा।

कामनमार्केट के देशों के साथ भारत का व्यापार पहले ही असंतुलित रहता है। १९५८ में भारत ने केवल ३८ करोड़ रु० का माल इन देशों को भेजा था, जब कि १६३ करोड़ रु० का माल मंगाया था, इन देशों को निर्यात व्यापार में ४३ प्रतिशत तो कच्चा माल होता है, अब उसमें भी कमी आ जाने से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार या निर्यात के व्यापार से विदेशी मुद्रा अर्जन में और भी कठिन हो जायगा।

## बोनस आयोग

भारत सरकार ने पिछले दिनों एक बोनस आयोग की नियुक्ति की है। वेतन के साथ ही बोनस का प्रश्न भी काफी विवादास्पद है। बोनस क्या श्रमिकों का अधिकार है अथवा इनाम जो ज्यादा नफा होने की व्यवस्था में संचालक अपने सब साथियों को देता है। बोनस का आधार क्या है, क्या हो, क्या होना चाहिए? जो संस्थान घाटा उठाते हैं क्या उनसे भी बोनस मांगा जा सकता है और बोनस का दर क्या होना चाहिए, कुछ लाभ होने की दशा में नयी मशीनरी आदि खरीदने के लिए सुरक्षित निधि और घिसाई फण्ड में रुपया बोनस बांटने से पहले रखना चाहिए या नहीं अनेक प्रश्न समय-समय पर उपस्थित होते हैं और औद्योगिक सम्बन्धों पर बुरा असर डालते हैं। अब तक इस सम्बन्ध में औद्योगिक अदालतें जो निश्चय करती रही हैं उनमें परस्पर एक रूपता या एक सिद्धान्त का अभाव रहा है। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक था कि इस सम्बन्ध में विवादग्रस्त प्रश्नों पर विचार करके एक निश्चत नीति निर्धारित की जाय। जिस नीति को उद्योग और श्रमिक वर्ग दोनों बिना किसी आपत्ति के स्वीकार कर लें ताकि बोनस के प्रश्न पर परस्पर विवाद न हो और उद्योग के उत्पादन में किसी तरह की बाधा उत्पन्न न हो। इस बोनस आयोग के अध्यक्ष श्री एम० आर० मेहरा हैं। वे महाराष्ट्र औद्योगिक न्यायालय के अध्यक्ष रहे हैं। इस लिए यह आशा की जानी चाहिए कि वे बोनस सम्बन्धी बीसियों विवादों के अनुभवों से लाभ उठायेंगे। अ० भा० राष्ट्रीय मजदूर संघ ने इस आयोग का स्वागत किया है किंतु कुछ उद्योग पतियों ने आयोग की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए भी आयोग के संगठन पर शंकाएं की हैं। सुप्रीमकोर्ट ने इस आयोग के अध्यक्ष श्री मेहरा के बोनस सम्बन्धी अनेक निर्णयों के विरुद्ध अपनी सम्मति दी है। अब वही श्री मेहरा बोनस सम्बन्धी अपने निर्णयों को सुप्रीमकोर्ट की सम्मति के विरुद्ध क्रियान्वित करने का अवसर तो नहीं पायेंगे। दूसरी बात यह है कि इस आयोग में मजदूरों और मिल मालिकों का प्रतिनिधित्व नहीं है। तब इस आयोग का सिफारिशों को क्रियान्वित करने के लिए क्या कोई नया कानून बनाना पड़ेगा।

## भावनगर के निश्चय

भावनगर कांग्रेस के सामने इस वर्ष सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न राष्ट्र में बढ़ते हुए भेद-भावों को दूर करने तथा स्वयं कांग्रेस में बढ़ती हुई गुटबाज़ी को समाप्त करने का था। चीन के भारत पर आक्रमण ने भी देश के सामने एक गम्भीर समस्या उत्पन्न कर दी है। इसलिए यह स्वाभाविक था कि भावनगर में इन्हीं प्रश्नों की ओर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक ध्यान दिया जाता। आर्थिक प्रश्नों पर विचार अवश्य हुआ और काफी हुआ किन्तु कोई नया सन्देश या नया कार्यक्रम कांग्रेस ने देश को नहीं दिया। तीसरी पंचवर्षीय योजना का पूर्ण समर्थन करते हुए सहकारिता और समाजवाद के आदर्शों पर बल अवश्य दिया गया। लेकिन कठिनता यह है कि समाजवाद का स्वरूप स्पष्ट नहीं हो सका है। कुछ लोग उद्योगों के राष्ट्रीयकरण को ही समाजवाद मानते हैं, कुछ आय की समानता को ही समाजवाद मानते हैं। इसी तरह कुछ लोग समाजवाद का तीसरा अर्थ करते हैं। भावनगर कांग्रेस में भी भिन्न-भिन्न विचारों में समन्वय और सन्तुष्टिकरण की नीति ही अपनायी गयी दीखती है। हमें क्षमा किया जाय यदि हम यह कटु सत्य सामने रखें कि वस्तुतः कांग्रेस के बहुत कम नेता और शासक अपने जीवन-स्तर को कम करके जनता के साथ एकाकार होना चाहते हैं। आवड़ी कांग्रेस के बाद जब समाजवाद का आदर्श स्वीकार किया गया, तो अबतक शासन ने ऊंचे वेतन पाने वालों को कुछ भी कम वेतन लेने के लिए प्रेरित नहीं किया और न देश में बहुत ऊंचे जीवन स्तर को जिस में अमीरी की बू आती है, नीचा करने की रतीभर कोशिश की है। राष्ट्रीय आय में वृद्धि के बावजूद सामान्य नागरिक के जीवन-स्तर में कुछ विशेष उन्नति हुई हो, ऐसा भी प्रतीत नहीं होता। पिछले कुछ वर्षों के अनुभव ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि राष्ट्रीयकृत उद्योगों की क्षमता और औद्योगिक शान्ति निजी उद्योगों से बहुत अच्छी नहीं है। फिर यह भी सिद्ध होता जा रहा है कि राष्ट्र के आर्थिक विकास में निजी उद्योगों का अधिकाधिक सहयोग अनिवार्य है। इसीलिए सरकार को विवश होकर अपनी औद्योगिक नीति में अनेक परीवर्तन करने पड़े हैं। ऐसी स्थिति में समाजवाद के आदर्श को बार-बार दुहराते रहने से जनता को कोई विशेष सन्तोष हो सकेगा, इसमें हमें सन्देह है।

## तीसरी योजना में खेती का विकास

अनुमान है कि तीसरी योजना के अन्त तक देश की आबादी ४८ करोड़ की जाएगी। इनमें प्रत्येक व्यक्ति के लिये प्रति दिन १८ औंस अनाज की व्यवस्था करनी है। अर्थात्, तीसरी योजना का लक्ष्य है कि देश अनाज की पैदावार में आत्मनिर्भर हो जाए। इसलिए तीसरी पंचवर्षीय योजना में अनाज की पैदावार को बढ़ाकर १०-२०॥ करोड़—टन प्रति वर्ष करने का विचार है। दूसरी योजना के अन्त तक वार्षिक पैदावार ७॥ करोड़ टन हो जाने का अनुमान है।

अबतक के विचार के अनुसार खेती के विकास पर तीसरी योजना में ६२५ करोड़ रु० खर्च किया जाएगा, जबकि दूसरी योजना में ३२० करोड़ रु० की व्यवस्था है। इसके अलावा सिंचाई का प्रबन्ध और रासायनिक खाद का उत्पादन बढ़ाने पर और सामुदायिक विकास कार्यक्रम पर ज्यादा खर्च किया जाएगा। इन मदों पर जो रुपया खर्च होगा, उससे भी खेती को बढ़ावा मिलेगा।

सामुदायिक विकास पर ४०० करोड़ रु० खर्च होगा, जिसका एक-तिहाई खेती की उपज बढ़ाने में लगेगा। सिंचाई की बड़ी और मंझोली योजनाओं के लिए ६५० करोड़ रु० की व्यवस्था है और कोटी योजनाओं पर २०० करोड़ रु० खर्च होंगे। सिंचाई की छोटी योजनाओं से खेती की पैदावार बढ़ाने में बहुत मदद मिलती है। रासायनिक खाद का उत्पादन बढ़ाने के लिए २४० करोड़ रु० खर्च किए जाएंगे। किसानों को नई योजनाओं से लाभ उठाने में समर्थ बनाने के लिए सहकारियों की मार्फत ऋण दिलाने के लिए करीब ७०० करोड़ रु० रखे गये हैं।

नत्रजनी खाद का उत्पादन १० लाख टन प्रति वर्ष करने का विचार है। आजकल ३ लाख ६० हजार टन नत्रजनी खाद की खपत है। फासफेटी खाद के उत्पादन को अठ गुना करने और ५ करोड़ एकड़ और जमीन में हरी खाद का उपयोग चालू कराने का लक्ष्य है।

## घनी-खेती

कृषि विकास की योजनाओं में चुने हुए जिलों में घनी खेती के कार्यक्रम के अन्तर्गत, कुछ ऐसे जिलों में, जहां सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध काफी है और बाढ़ आदि का कम खतरा है, भरपूर खेती और पैदावार बढ़ाने का गहरा प्रयत्न किया जायगा।

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मुद्रास्फीति का अभिशाप

श्री एन० दाण्डेकर, आय० सी० एस० ( रिटायर्ड )

हमारा जीवन अत्यन्त व्यापक मुद्रास्फीति से घिरा हुआ है। गत ४ वर्षों से जिस गति से सामान्यतया मूल्यों तथा विशेषतया जीवनमान में वृद्धि हो रही है वह वास्तव में बड़ी भयानक है। चूंकि यह परिस्थिति हाल ही की राजकोषीय तथा मुद्रा सम्बन्धी नीतियों के कारण उत्पन्न हुई है, अतः इस विषय पर एक सुदृढ़ सार्वजनिक मत निर्माण करना जरूरी है अन्यथा हम मुद्रास्फीति के और भी गहरे दलदल में फंस जायंगे।

इस समस्या पर काबू पाने के लिए हमको मुद्रास्फीति के बाहरी स्वरूप को समझना चाहिए। यदि मूल्यों की तथा जीवनमान की आम सतह में स्पष्टतया क्रमशः और लगातार वृद्धि होती है तो वह मुद्रास्फीति की स्थिति विद्यमान होने का स्पष्ट संकेत है। १९५४-५५ की तुलनामें अभी मूल्यों की सामान्य सतह में ३० प्रतिशत तथा जीवनमान में लगभग ४० प्रतिशत वृद्धि हुई है। आज एक रुपये से केवल उतने का ही सामान खरीदा जा सकता है, जो ४–५ वर्ष पहिले ६० नये पैसों में मिलता था, अतः इस हद तक मुद्रा के मूल्य में क्रमशः और लगातार गिरावट हो रही है।

यदि किसी वस्तु की पूर्ति उसकी मांगसे अधिक होती है तो हम कहते हैं कि उस वस्तु की कीमत घट गई है। "मुद्रा की कीमत" का अर्थ होता है उसकी क्रय-शक्ति और अर्थ-व्यवस्था की आवश्यकताओं से यदि "मुद्रा की पूर्ति" अधिक होती है अर्थात् यदि वह पूर्ति "मुद्रा की मांग" से बढ़ जाती है तो इस प्रकार की मुद्रा की कीमत भी बहुत घट जायगी। और यदि ऐसी परिस्थिति लगातार जारी रहती है अर्थात् यदि आवश्यकतासे अधिक मुद्राकी पूर्तिमें स्पष्टतया लगातार वृद्धि होती रहती है तो उस स्थिति में क्रमशः और लगातार मुद्राकी कीमतमें अर्थात् उसकी क्रयशक्तिमें गिरावट होने लगेगी। यही मुद्रास्फीति का अर्थ है।

किसी भी देश में मुद्रा की पूर्ति मुख्यतया कानून की मुद्रा (विभिन्न संख्याके रुपयों के नोटों तथा चालू सिक्कों के रूप में) और बैंकों की मांग दायित्वों में होती है, जिन्हें चेकों के के जरिये प्राप्त किया जा सकता है।

मुद्रा की पूर्ति के पहले से मुद्रास्फीति की समस्या पर विचार करने से पता चलता है कि गत ५ से ७ वर्षों में चलित मुद्रा की मात्रा में लगातार और क्रमशः वृद्धि हुई है। आज कुल मुद्रा की पूर्ति की मात्रा लगभग २,७०० रुपया है, जबकि १९५२-५३ में यह मात्रा लगभग १,८०० करोड़ रुपये थी, जिसका अर्थ है कि चलन में मुद्रा की मात्रा में लगभग ५० प्रतिशत वृद्धि हुई है।

मुद्रा की मांग कैसे निर्धारित की जाती है? आधुनिक अर्थ-व्यवस्था मुख्य रूप से ऐसी है जो विनिमय और वितरण के माध्यम के रूप में मुद्रा पर आधारित है। सभी वस्तुओं की तुलनात्मक कीमतें और वर्तमान, भूत और भविष्य का कर्ज-इन सभी का माप और समीकरण एक उभय माध्यम मुद्रा से किया जाता है। और, इसलिये, मुद्रा की मांग की वृद्धि का अन्दाजन माप राष्ट्रीय आय की सतह की वृद्धि से लगाया जाता है। अतः यदि आर्थिक विकास को अवरुद्ध नहीं करना है, तो जैसे जैसे राष्ट्रीय आय बढ़ती है, मुद्रा की पूर्ति में भी वृद्धि होती है।

क्या इस देश को राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई है? इस बात में कोई सन्देह नहीं कि इस प्रकार की वृद्धि हुई है, और काफी हुई है। यह कहा जाता है कि १९५१-५३ और १९५९-६० के बीच के वर्षों में राष्ट्रीय आय में लगभग २८ से २९ प्रतिशत वृद्धि हुई है। इस प्रकार, इस अवधि में मुद्रा की मांग २८-२९ प्रतिशत बढ़ी है। लेकिन जैसा कि हमने देखा कि पूर्ति में लगभग ५० प्रतिशत वृद्धि हुई है। इस स्थिति में मुद्रा की कीमतों में क्रमशः गिरावट होना जरूरी है।

## घाटे की अर्थ-व्यवस्था

अब हमको "घाटे की अर्थ-व्यवस्था" पर विचार करना चाहिए, जिसका साधारण शब्दों में अर्थ सरकारी बजटों के घाटों के "मुद्राकरण" से है। यदि किसी व्यक्ति का खर्च



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी आमदनी से लगातार अधिक होता है, तो वह अपनी कमी को "मुद्राकरण" के जरिये पूरा नहीं कर सकता है; उसे तो अपना खर्च करना होगा या दिवालिया बनना पड़ेगा। लेकिन सरकार अपने घाटों का अनेक तरीकों से "मुद्राकरण" करती है। इसके अलावा घाटे की अर्थ-व्यवस्था के द्वारा पैदा की गई अधिक मुद्रा बैंकों के ऋणों में भी वृद्धि करती है। इसलिए रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया ने बैंकों के ऋणों पर नियन्त्रण रखने के प्रयत्नस्वरूप विभिन्न प्रकार के ऋण-नियन्त्रण लागू किये हैं।

योजना आयोग का विचार है कि तीसरी योजना के अन्तर्गत केवल १५० करोड़ रुपयों की ही घाटे की व्यवस्था करनी होगी, जिसे मूल्यों में वृद्धि के बिना ही देश सहन कर लेगा। यह कहा जाता है कि हमारा देश अल्प विकसित है और हमको तेजी से विकसित होना है। कभी कभी यह दावा किया जाता है कि अर्थ-व्यवस्था का मुद्रास्फीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन वास्तव में यह सही नहीं है, क्योंकि तेजी से आगे बढ़ने के प्रयत्नों में हमारे सामने दो विपरीत समस्याएं विद्यमान हैं और हम इन विपरीत उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयत्न करते हैं। पहले, हम काफी मात्रा में पूंजी निर्माण चाहते हैं; और दूसरे, पूंजीगत लागत में, विशेषतया सार्वजनिक क्षेत्र में, आय का अनुपात कम होगा अर्थात् उत्पादन में इतनी शीघ्रता से वृद्धि नहीं होगी, जितनी कि लागत में। अल्पकाल में यही बात निजी क्षेत्र की लागत के लिए भी लागू होगी।

## ऋणों पर नियंत्रण

मुद्रास्फीति पर काबू पाने के लिए लोग कुछ चुने हुए ऋण-नियन्त्रणों की बात करते हैं। लेकिन वास्तव में इस प्रकार के नियन्त्रण केवल लक्षण का ही उपचार करते हैं रोग का नहीं। हम अर्थ-व्यवस्था में मुद्रा-पूर्ति को लगातार बढ़ाकर मुद्रास्फीति पर नियन्त्रण प्राप्त नहीं कर सकते हैं। मुद्रास्फीति के लक्षण बिलकुल स्पष्ट दिखाई देते हैं जैसे: मूल्यों के सामान्य सतह और जीवनमान में वृद्धि, उत्पादकों, व्यापारियों तथा उपभोक्ताओं द्वारा माल जमा करना और मुनाफाखोरी। इसलिए आवश्यकता न केवल ऋण एवं मूल्य नियन्त्रण की है, बल्कि घाटे की अर्थ-व्यवस्था पर एक दृढ़ नियन्त्रण लागू करना तथा उत्पादन की सम्पूर्ण मात्रा और खरीदी-बेची जाने वाली सम्पूर्ण कृषि और औद्योगिक पदार्थों की अतिरिक्त मात्रा में वृद्धि करना है। केवल मूल्य तथा ऋण नियन्त्रण से ही, यदि वह व्यापारिक हो भी (जो वास्तव में नहीं है) कीमतों में घटाव और मुद्रास्फीति पर नियन्त्रण नहीं किया जा सकता है।

## मूल्य-नियंत्रण

व्यापक क्षेत्रमें मूल्य-नियन्त्रण लागू करना बिलकुल अव्यावहारिक है। नियन्त्रणों को प्रभावशाली बनाने के लिए उनको समन्वित बनाना चाहिए। इसके अलावा बिना प्रभावशाली राशनिंग के नियन्त्रण भी प्रभावशाली नहीं हो सकते हैं। यदि हम भारत जैसे देश में जहां पर ५ लाख गांवों में और लगभग ५० करोड़ आबादी पर नियन्त्रण लागू करना हो, हम उस विशाल कार्य की कल्पना सहज ही कर सकते हैं। देश भर में समन्वित नियन्त्रण और सम्पूर्ण राशनिंग लागू करने का अर्थ होता है एक व्यापक और जटिल प्रशासनात्मक व्यवस्था, जिसके फलस्वरूप अकार्य-क्षमता, भ्रष्टाचार और बरबादी फैलेगी, जिससे देश की नैतिकता सम्पूर्ण रूप से ध्वस्त हो जायगी।

## अल्प विकसित देश

प्रायः यह कहा जाता है कि अल्प विकसित देश थोड़ी बहुत मुद्रास्फीति के बिना पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हो सकते हैं। इस प्रकार का वक्तव्य देते समय जीवनमान में ४० प्रतिशत वृद्धि के परिणामों पर ध्यान नहीं दिया जाता है। मूल्यों में इस प्रकार की लगातार वृद्धि होने के फलस्वरूप उस अधिकांश मध्य-वर्ग की जनता का क्या होगा जिनकी आय एक तरह से स्थिर है? पेन्शन याफ्ता लोगों, विधवाओं, वृद्ध और नाबालिगों का क्या होगा, जो अपनी पेन्शनों या थोड़े किराये या लागत की आय पर आश्रित हैं, जो स्थिर है और जिसमें वृद्धि की संभावना नहीं है? फिर उन वेतन पानेवालों की क्या स्थिति होगी, जिनकी आमदनी में कीमतों की बढोतरी के अनुपात में वृद्धि नहीं हुई है? इस टालने योग्य संकट को देखकर प्रश्न उठता है: "आखिर यह सब विकास क्या है और किसके लाभ के लिए है?" भारतीय जनता की "मुद्रास्फीति सहनशीलता" मर्यादा अधिक समृद्ध देशों की जनता की तुलना में बहुत कम है।

[ शेष पृष्ठ ३८ पर ]



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भरपूर खेती के नये परीक्षण

कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

देश ने कृषि उत्पादन की समस्या को हल करने के लिए सबसे पहले १९४३-४४ में प्रयत्न प्रारम्भ किया था। तब अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन प्रारम्भ किया गया था किन्तु यह आन्दोलन कागजी घुड़दौड़ तक ही सीमित रहा। भारत ने स्वाधीन होने के बाद पंचवर्षीय योजनाओं—बड़े-बड़े बांधों, सिंचाई योजनाओं, रासायनिक खाद के कारखानों आदि के द्वारा अधिक अन्न उत्पादन के प्रयत्न किये। बीच में ऐसा मालूम पड़ा कि देश अन्न की दृष्टि से स्वावलम्बी होता जा रहा है। इसलिए अन्न का राशन समाप्त कर दिया गया और अनेक प्रकार के नियंत्रण भी शिथिल किये जाने लगे, किन्तु जल्दी ही यह मालूम हो गया कि वर्षा के थोड़ा-सा भी प्रतिकूल होते ही अन्न का उत्पादन देश की आवश्यकताओं से बहुत कम हो जाता है। दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंत में ५५ लाख टन अनाज की कमी महसूस की जा रही है। निम्नलिखित तालिका से यह बहुत स्पष्ट हो जायगा।

तीनों योजनाओं में कृषि और अन्न-उत्पादन का भाग

| | कुल लक्ष्य | कृषि के लक्ष्य | प्रतिशत | उत्पादन के लक्ष्य (मिलियन टन) | कुल उत्पादन (मिलियन टन) |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम योजना | २३५६ करोड़ | ३५७ करोड़ | १५.० | ६१.६ | ६५.८ |
| दूसरी योजना (संशोधित) | ४५०० करोड़ | ५१० करोड़ | ११.८ | ८०.५ | ७५.०❀ |
| तीसरी योजना | ७२५० करोड़ | १०२५ करोड़ | १८.१ | १०० से १०५ | ... |

❀ १९६०-६१ में संभावित

इस तालिका से स्पष्ट है कि योजना आयोग तीसरी योजना में ३५ से ४० प्रतिशत तक अन्न का उत्पादन बढ़ाना चाहता है। इसके लिए उसने निम्नलिखित चार कार्यक्रमों की ओर ध्यान देने का निश्चय किया है।

१. सिंचाई
२. भू-रक्षण तथा भूमि का सुधार
३. खाद और रासायनिक खाद की अधिक उपलब्धि
४. अच्छे हल तथा नये औजारों की प्राप्ति

योजना आयोग ने सामुदायिक योजनाओं की असफलता पर विचार करते हुए यह मत प्रकट किया है कि सिंचाई और खाद आदि की समुचित व्यवस्था न होने के कारण हमारे लक्ष्य पूरे नहीं हो सके। इसलिए अब यह निश्चय किया गया है कि कुछ चुने हुए क्षेत्र (प्रत्येक राज्य के प्रत्येक जिले में) लेकर उनमें अधिकतम उत्पादन के परीक्षण किये जायें और इसमें सहकारी समितियों तथा पंचायतों के माध्यम से सब किसान परिवारों का सहयोग प्राप्त किया जाये। क्षेत्रों के चुनाव में यह ध्यान रखा जायगा कि ऐसे ही क्षेत्र चुने जायें, जहां नहरी पानी सिंचाई वर्षा तथा अन्य परिस्थितयां बहुत अनुकूल हों। वस्तुतः यह विचार फोर्ड फाउंडेशन की एक मण्डली ने उपस्थित किया था। इस मण्डली ने इस योजना का नाम 'पैकेज प्रोग्राम' रखा था। फोर्ड फाउन्डेशन ने इस कार्य के लिए ५ करोड़ रुपया देने का भी प्रस्ताव रखा था। इसीको हिन्दी में 'सघन या भरपूर खेती का कार्यक्रम' कहा जाता है। इसके द्वारा आगामी ५ वर्षों में देश को अन्न की दृष्टि से स्वावलम्बी बनाने का विचार है। १३ अप्रैल १९६० को सबसे पहले तंजौर के जिले में यह योजना प्रारम्भ की गयी थी। फिलहाल प्रत्येक राज्य के एक-एक जिले में यह योजना प्रारम्भ की जायगी। राज्य और जिलों के नाम निम्नलिखित हैं :—

## सघन खेती के जिले

| राज्य | जिला |
|---|---|
| आन्ध्र | पश्चिमी गोदावरी |
| उत्तर प्रदेश | अलीगढ़ |
| पंजाब | लुधियाना |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | |
|---|---|
| बिहार | शाहाबाद |
| मद्रास | तंजौर |
| मध्य प्रदेश | रायपुर |
| राजस्थान | पाली |

इन ७ जिलों में से ४ जिले चावल के लिए, २ गेहूँ के लिए और १ बाजरे के लिए चुना गया है । इन स्थानों में सिंचाई आदि की अधिकतम सुविधाएं प्राप्त हैं । सघन खेती में निम्नलिखित कार्यक्रम चुने गये हैं—

(१) बीज, खाद और कृमि-नाशक औषधियों का सम्मिलित प्रयोग।

(२) कृषकों को अपनी फसल बढ़ाने के लिए समय पर पर्याप्त ऋण देने की व्यवस्था। ऋण को उत्पादन की मात्रा के साथ सम्बद्ध कर दिया जायगा और सहकारी समितियों के द्वारा पैदावार की बिक्री बढ़ायी जायगी।

(३) प्रत्येक स्तर पर प्रबन्ध और वैज्ञानिक कार्यक्रमों को चलाने के लिए विशेषज्ञों की सहायता। फार्मों के प्रबन्ध के लिए परामर्श और प्रशिक्षण।

(४) किसानों को उनकी पैदावार के न्यूनतम मूल्य का आश्वासन, जो उन्हें सहकारी समितियों द्वारा दिया जा सकेगा।

(५) समय-समय पर इन कार्यक्रमों के परिणाम की देखरेख।

बीज, खाद और कृमि-नाशक औषधियों की जो अतिरिक्त मात्रा इस विस्तृत कार्यक्रम के लिए आवश्यक है, वह निम्नलिखित है :—

बीज—३.२४ लाख टन
खाद—७.७६ लाख टन
फास्फेटी खाद—४.७७ लाख टन
पोस्टैसिक खाद—३००० टन
कृमि नाशक औषधि—२०००० टन
खेती के औजार—२४४ लाख रुपये

इस समस्त योजना पर करीब १५ करोड़ रुपये का व्यय होगा, जिसमें से ३.४ करोड़ रुपया फोर्ड फाउंडेशन देगा। शेष केन्द्र और राज्यों को बांटना पड़ेगा । किसानों को ऋण देने और गारंटी फंड के लिए ४५ करोड़ रुपया अलग सुरक्षित रखा गया है । ख्याल यह है कि आगामी ५ वर्षों में इस योजना से ३५ लाख टन अनाज मिलेगा। अन्न उत्पादन में वृद्धि की यह योजना निःसन्देह बहुत अच्छी है, परन्तु इस योजना की पूर्ति में एक बड़ा भारी 'यदि' छिपा हुआ है। क्या हमारे कृषि शिक्षणालयों से निकलने वाले ग्रेजुएट और सरकारी कर्मचारी अपनी बाबूगिरी छोड़कर किसानों के साथ घुलमिल सकेंगे और

## सुधरे औजारों से खेती

● किसानों को इन औजारों का महत्व समझने के लिए देश भर में, १०० जिलों के १,००० विकास खण्डों सुधरे औजारों से खेती की जाएगी। किसानों को अपने पुराने, और घटिया किस्म के औजार बदलने के बारे में यह पहला प्रयास होगा।

● औजार बनाने वाले कारखानों को पर्याप्त मात्रा में लोहा और इस्पात देने की व्यवस्था की जायगी। देश में ऐसे लगभग १०० कारखाने हैं, जो खेती के ५० से भी ज्यादा किस्म के यंत्र और औजार बनाते हैं।

● प्रत्येक राज्य में औजारों का कम से कम एक सरकारी केन्द्र होगा, जहां राज्य के अन्य कारखानों का डिजाइन और औजार चलाने आदि के बारे में उचित मार्ग-दर्शन मिल सके।

● दूसरी योजना में २५ विस्तार प्रशिक्षण केन्द्रों में खेती के औजार बनाने के कारखाने खोले गये। इसमें खेती के नये-नये औजार बनाए जाते हैं। आशा है, तीसरी योजना में ऐसे २५ और कारखाने खोले जायेंगे।

● उत्तर प्रदेश, पंजाब और दिल्ली में पेरी के ऐसे हजारों कोल्हु चलते हैं, जो बैलों द्वारा चलाए जाते हैं। जब से जापानी तरीके से धान की खेती शुरु हुई है, तब से हजारों किसान निराई के जापानी यंत्रों का इस्तेमाल करने लगे हैं। आजकल एक किस्म की त्रिफाली बड़ी लोकप्रिय होती जा रही है। इस यंत्र से तीन काम एक साथ हो सकते हैं। यह जमीन जोतने, मेड़ बनाने और बीज बोने के काम आता है। गेहूँ, ज्वार, मकई आदि की फसल में बीज बोने में यह यंत्र बहुत काम में आता है। इसे बाजार में कुछ ही वर्ष हुए हैं और ऐसे ४,००० यंत्र बिक चुके हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## भारत में भूमि का उपयोग

(करोड़ एकड़ों में)

| | १९५०-५१ | १९५६-५७ |
|---|---|---|
| कुल भौगोलिक क्षेत्रफल | ८०.६३ | ८०.६३ |
| कुल क्षेत्रफल (जिसके आंकड़े उपलब्ध) | ७०.२५ | ७१.९७ |
| वन प्रदेश | १०.०० | १२.५५ |
| खेती के लिए अप्राप्य | ११.७४ | ११.७२ |
| (क) गैर कृषि कार्यों में उपयोग में लाई जाने वाली भूमि | २.७७ | ३.२६ |
| (ख) बंजर और कृषि के अयोग्य भूमि | ८.९७ | ८.५२ |
| अन्य खेती न की जाने वाली भूमि पड़ती छोड़कर | १२.२२ | ९.७० |
| (क) स्थायी चरगाह | १.६५ | २.९४ |
| (ख) बागान और कुंजों के अन्तर्गत | ४.९० | १.४० |
| (ग) कृषि योग्य बंजर | ५.६७ | ५.३६ |
| पड़ती भूमि | ६.९५ | ५.९७ |
| (क) वर्तमान पड़ती भूमि | २.६४ | २.९४ |
| (ख) अन्य भूमि | ४.३१ | २.९३ |
| वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल | २९.३४ | ३२.०७ |
| कुल खेती किया क्षेत्रफल | ३२.५९ | ३६.६६ |
| एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्रफल | ३.२५ | ४.५९ |

## प्रति एकड़ उपज (पौंड में) १९५५

| देश | गेहूँ | चावल | कपास | जूट | गन्ना |
|---|---|---|---|---|---|
| संयुक्त राज्य अमेरिका | १२०१ | ३,०३० | ३३९ | १,२५८ | ४८,४३९ |
| कनाडा | १,५१२ | — | — | १,५९६ | — |
| जापान | १,८८७ | ३,७५० | ६९ | — | — |
| आस्टेलिया | ९०५ | — | — | — | — |
| भारत | ६४० | १,२०९ | ७७ | १,०१२ | २९,४६७ |
| मिश्र | २,०९१ | ४६२,९ | ४६४ | — | ७८,३४१ |
| चीन | ७६६ | २,३८७ | २३४ | — | ३५४३८ |
| रूस | ८३० | १९१८ | २८५ | — | — |

सर्दी गर्मी में उनके साथ खेतों पर काम करके किसानों का विश्वास सम्पादन कर सकेंगे ? फिर खाद और रुपये के वितरण में भ्रष्टाचार से अधिकारी मुक्त रह सकेंगे ? क्या तिकड़मी किसान इन सुविधाओं से दूसरों को वंचित तो नहीं करेंगे ? इन प्रश्नों के उत्तर पर ही नयी योजना का भविष्य निर्भर है।

पिछले ५ वर्षों में सामुदायिक योजनाओं के अन्तर्गत जो काम हुआ है, उसके मूल्यांकन के लिए एक मण्डल नियत किया गया था। इस मण्डल की रिपोर्ट अत्यन्त निराशाजनक है। अभी तक उन्नत बीज केवल ४१.५ प्रतिशत क्षेत्रों में प्रयुक्त हो सके हैं। खाद के सम्बन्ध में तो

( शेष पृष्ठ ३७ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जूट : स्थिति और समस्याएं

श्री सरदारमल जैन

इस समय भारतीय जूट उद्योग को संसार के आर्थिक इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण एवं प्रथम स्थान दिया जाता है। निस्संदेह भारतीय जूट उद्योग की विकास परम्परा का इतिहास मानवीय साहस, अन्वेषण एवं कुशलता का परिचायक हैं। इस समय भारत में जूट की लगभग ११३ मिलें हैं जिनका राज्यों के अनुसार वितरण निम्न प्रकार हैं—

| राज्य | मिलों की संख्या |
|---|---|
| पश्चिमी बंगाल | १०१ |
| बिहार | ३ |
| मद्रास व आंध्र | ४ |
| उत्तर प्रदेश | ३ |
| मध्य प्रदेश | १ |
| आसाम | १ |
| योग | ११३ |

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि भारत में जूट की अधिकांश मिलें पश्चिमी बंगाल में स्थित हैं। सुन्दर भौगोलिक दशाएं, समुन्नत यातायात के साधन, सस्ती शक्ति एवं पर्याप्त श्रमिकों की सुलभता ही वे कारण हैं, जिन्होने इस उद्योग की स्थिति को इस क्षेत्र में इतना दृढ़ कर दिया है।

पूँजी श्रमिक—जूट उद्योग में इस सयय लगभग ७० करोड़ की पूंजी लगी हुई है जिसमें १.५०७ करोड़ रु० विदेशी पूंजी है। यह उद्योग प्रत्यक्ष रूप से लगभग ३½ लाख व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करता है और परोक्ष-रूप से लगभग १०½ लाख व्यक्तियों की जीविका इस उद्योग पर निर्भर है। इस उद्योगिक श्रमिकों को ३० से ४० करोड़ रु० प्रति वर्ष वेतन के रूप में वितरित होता है। पूंजी एवं श्रम को देखते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि यह उद्योग भारतीय अर्थतन्त्र के मूलाधारों में प्रमुखता रखता है।

उत्पादन—देश का विभाजन हो जाने के फलस्वरूप भारत के जूट उत्पादन क्षेत्र व मात्रा दोनों में ही कमी हुई है किन्तु फिर भी आज भारत विश्व के कुल जूट उत्पादन का ३० प्रतिशत से भी अधिक भाग उत्पन्न करता है। संसार के जूट उत्पादक देशों में भारत का पाकिस्तान के बाद दूसरा स्थान है। भारत में आज लगभग १८.८३ लाख एकड़ भूमि पर जूट की खेती होती है।

इस समय देश को लगभग ६५ लाख गांठ जूट की प्रति वर्ष आवश्यकता होती है। अतः जून १९५८-५९ के वर्ष में भारत कच्चे पटसन की पैदवार में पहली बार आत्म निर्भर हुआ है, जब कि इस अवधि में पैदावार ६७ लाख ५९ हजार गांठ हुई। भारत में सबसे अधिक जूट पश्चिमी बंगाल में पैदा होता है, परन्तु प्रति एकड़ पैदावार में आसाम अग्रणी है। इस समय देश में जूट की प्रति एकड़ औसत उपज लगभग १ हजार पौंड है।

संसार भर के जूट कारखानों में जितने करघे हैं उनके ५३ प्रतिशत यानी ७२.३६५ करघे भारत के इस उद्योग में हैं। अधिकृत उपलब्ध नवीनतम आंकड़ों के अनुसार जनवरी से अक्टूबर १९५९ की अवधि में देश में जूट के निर्मित माल का उत्पादन ८,६९,९०० टन हुआ, जबकि पिछले वर्षों में जूट का उत्पादन इस प्रकार रहा—

| वर्ष | जूट का माल (००० टन) |
|---|---|
| १९५५ | १०७२.२ |
| १९५६ | १०९३.२ |
| १९५७ | १०९६.५ |
| १९५८ | १०६२.० |

देश में प्रति व लगभग १ अरब ३० करोड़ रु० की जूट की वस्तुएं तैयार होती है।

व्यापार—भारत के विदेशी व्यापार में जूट उद्योग का विशेष स्थान है; क्योंकि इस उद्योग से भारत को प्रति वर्ष लगभग १२० करोड़ रु० की आय होती है। विभाजन से पूर्व भारत कच्चे व निर्मित दोनों प्रकार के माल का निर्यात करता था, परन्तु विभाजन ने देश में जूट की पैदावार में कमी कर दी। परिणामस्वरूप पिछले वर्षों में देश से सिर्फ जूट के निर्मित माल का ही निर्यात किया। लेकिन १९५८-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५९ के वर्ष में देश में कच्चे जूट की पैदावार आवश्यकता से अधिक हुई अतः अब पूरे १० वर्ष बाद १९५९-६० से कच्चे जूट का निर्यात फिर शुरू हो गया है।

इस समय देश से लगभग १३०.६७ लाख रु० का जूट का सामान विदेशों को निर्यात किया जाता है। १९५७ में जूट निर्यात द्वारा ११४.२० लाख रु० प्राप्त किये गये। १९५९ में बोरों का भाव गिर जाने के बावजूद लगभग १६ करोड़ रु० अधिक का पटसन का सामान बाहर भेजा गया। निम्न तालिका से सपष्ट है कि देश से जूट का निर्यात निरंतर बढ़ता जा रहा है—

| वर्ष | निर्यात (हजार टनों में) |
|---|---|
| १९५२-५३ | ७०५.९ |
| १९५३-५४ | ७७६.८ |
| १९५४-५५ | ८५२.३ |
| १९५५-५६ | ८७१.५ |
| १९५६-५७ | ८९१.० |
| १९५७-५८ | ८८०.३ |

आज कल विदेशी माल भी बाजारों में आ जाने के कारण स्पर्द्धा बढ़ रही है। इन्हीं सब बातों का ध्यान रख कर द्वितीय योजना की समाप्ति तक निर्यात प्रति वर्ष ९ लाख टन करने का निश्चय किया गया है।

अमेरिका, कनाडा, इग्लैंड, अर्जेन्टाइना, आस्ट्रेलिया तथा ब्राजील आदि भारतीय जूट सामान के प्रमुख ग्राहक हैं। इनके अतिरिक्त पीरू, बर्मा, मध्यपूर्व के देश, पश्चिमी अफ्रीका व पश्चिमी जर्मनी में भी भारतीय जूट के सामान की मांग हो रही है। अभी कुछ ही समय पूर्व चीन व रूस से भी भारतीय जूट का सामान निर्यात करने सम्बन्धी व्यापारिक समझौते हो चुके हैं।

## पंचवर्षीय योजनाएं एवं जूट उद्योग

योजना आयोग ने सुझाव दिया था कि उद्योग की गिरती हुई स्थिति सुधारने के लिए प्रथम योजना में कोई नया जूट मिल न खोला जाय वरन् पुराने मिलों की उत्पादन क्षमता बढ़ाई जाये। इस सुझाव को कार्य रूप देने के लिए आवश्यक था कि देश में कच्चे जूट का उत्पादन बढ़ाया जाय। अतः प्रथम योजना का लक्ष्य उत्पादन शक्ति एवं निर्यात में वृद्धि करना रखा गया। १९५९-५१ में जबकि उत्पादन ८,५८,००० टन था बढ़ा कर १९५५-५६ में १२ लाख टन करने की तथा निर्यात ६,५०,००० टन से बढ़ाकर १० लाख टन करने की व्यवस्था की गई। योजना के अन्तर्गत कच्चे जूट का उत्पादन ३३.९ लाख गांठ से ५३.९ लाख गाँठ करने की व्यवस्था की गई। इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए ५० लाख रु० की राशि स्वीकृत की गई, जिससे विभिन्न राज्यों में दोहरी फसल और सिंचाई की उचित व्यवस्था की जा सके, साथ ही बीज व खाद का वितरण अन्य आर्थिक सहायता दी जा सके।

यहां यह उल्लेखनीय है कि विभिन्न प्रयत्नों के बावजूद भी प्रथम योजनाओं के सदस्यों की पूर्ति न हो सकी। कच्चे जूट का उत्पादन ५३.९ लाख गांठ की जगह ४० लाख गांठ तक ही बढ़ाया जा सका तथा जूट का निर्यात भी १० लाख टन की जगह ८७१,५०० टन तक ही बढ़ाया जा सका। अतः द्वितीय योजना में उत्पादन लक्ष्य २५ प्रतिशत बढ़ाकर ५० लाख गांठ तथा निर्यात प्रति वर्ष ९ लाख टन करने की व्यवस्था की गई है। साथ ही निर्मित जूट माल का उत्पादन १२ लाख टन तक बढ़ाकर उसे स्थिर रखने की व्यवस्था की गई है। यह हमारी द्वितीय योजना का अन्तिम वर्ष है। अब तक उपलब्ध आंकड़ों से जाहिर है कि इस अपने लक्ष्यों की पूर्ति में अवश्य सफल होंगे। कच्चे जूट का उत्पादन तो जून १९५८-५९ में ही हमारे लक्ष्यों से अधिक हो चुका है।

## उद्योग की समस्याएं एवं समाधान

यद्यपि जूट उद्योग विकास की दिशा में अग्रसर है और उसे इसमें काफी हद तक सफलता भी मिली है तथापि उद्योग के सर्वांगीण विकास में निम्न बाधाएं हैं, जिनका समाधान उद्योग के स्थायित्व के लिए अति आवश्यक है—

(१) कच्चे व अच्छे माल की कमी--भारत के बंटवारे से हमारे जूट उद्योग के एकाधिकार की स्थिति छिन्न-भिन्न हो गई है। आज उद्योग के सामने सबसे जटिल समस्या है कच्चे व अच्छी किस्म के माल की। विभाजन से पूर्व जहाँ जूट का औसत वार्षिक उत्पादन ७३ लाख गांठ प्रति वर्ष था। विभाजन के बाद देश का ७१ प्रतिशत जूट उत्पादक क्षेत्र पाकिस्तान में चला जाने



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से १९५१-५२ में जूट का उत्पादन ४१ लाख गांठ ही हुआ। १९५३-५४ में तो मात्र ३१ लाख गांठ ही उत्पादन हुआ। अतः इस समस्या के समाधान रूप देश में कच्चे जूट की पैदावार में अत्यधिक वृद्धि करने एवं जूट की किस्म में आमूल परिवर्तन करने की नितान्त आवश्यकता है।

( २ ) पाकिस्तान से प्रतिस्पर्द्धा—देश के विभाजन से हमारे यहां कच्चे जूट की कमी और पाकिस्तान में अधिकता हो गई। नतीजा यह हुआ कि हमें अपने कारखानों की जूट सम्बन्धी आवश्यकता पूर्ति के लिए पाकिस्तान पर निर्भर रहना पड़ा। इसके लिए हमने पाकिस्तान से कई व्यापारिक समझौते भी किए, परन्तु पाकिस्तान कभी अपनी नीति पर कायम नहीं रहा और उसने सभी समझौतों को तोड़ने की कोशिश की। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान सरकार द्वारा लगाये जाने वाले विभिन्न करों के कारण पाकिस्तानी जूट हमारे लिए मंहगा पड़ा और हमारे कारखानों का उत्पादन-व्यय बढ़ गया। दूसरी ओर सरकारी प्रोत्साहन व प्रयत्नों से पाकिस्तान में भी कई जूट मिलें कायम हो गईं और आज पाकिस्तात ने भी जूट के निर्मित माल का विदेशों को निर्यात करना शुरू कर दिया है। इस प्रकार भारत के सामने प्रतियोगिता की एक नई समस्या आ गई है। इस समस्या का एक मात्र हल है देश में जूट की प्रति एकड़ पैदावार बढ़ाकर जूट का उत्पादन बढ़ाया जाय, साथ ही जूट की किस्म में सुधार और उत्पादन व्यय में कमी के प्रयत्न किए जांय ताकि पाकिस्तान से प्रतियोगिता में डटकर मुकाबला कर सकें।

(३) स्थानापन्न वस्तुओं से प्रतिस्पर्द्धा—भारतीय जूट उद्योग की एक बड़ी समस्या विदेशी माल अर्थात् जूट की स्थानापन्न वस्तुओं से प्रतिस्पर्द्धा भी है। आज विश्व के कुछ देशों ने जूट की बजाय दूसरी वस्तुओं से बोरे आदि बनाना शुरू कर दिया है—जैसे स्पेन में स्पार्लवास, न्यूजीलैंड में टिनैक्स, मैक्सिको में हूरेक्वीन और जावा में रसोला आदि पदार्थों से अनेक प्रकार की वस्तुएं बनाई जाने लगी हैं, जो जूट द्वारा निर्मित वस्तुओं से काफी सस्ती पड़ती हैं। नतीजा यह हुआ है कि इन देशों में भारतीय सामान की मांग बहुत कम हो गई है। भारत के बंटवारे ने इस समस्या को और भी जटिल कर दिया है। कारण देश में जूट का उत्पादन कम होने और जूट की किस्म हलकी होने से जूट का उत्पादन व्यय बढ़ जाता है जबकि इन स्थानापन्न वस्तुओं द्वारा निर्मित माल काफी सस्ता पड़ता है। यही कारण है कि विदेशों का जूट मिल उद्योग काफी प्रगति कर रहा है।

इस समस्या के निवारणार्थ देश में अधिक मात्रा में सस्ते और उत्तम माल के निर्माण की आवश्यकता है। इसके लिए कारखानों में आधुनिकतम मशीन फिट करने की नितान्त आवश्यकता है ताकि हमारे यहां की निर्मित वस्तुएं स्थानापन्न वस्तुओं से भी सस्ती हों। तभी भारतीय माल की विदेशों में मांग बढ़ेगी और इस अपने खोये हुए बाजारों को पुनः प्राप्त करने में हम सफल हो सकेंगे।

(४) मशीनों का अभिनवीकरण—जूट उद्योग के सामने एक महत्वपूर्ण समस्या मशीनों के अभिनवीकरण की है। भारतीय जूट मिलों में आज भी वर्षों पुराने करघे लगे हुए हैं जो युद्धकाल में अत्यधिक काम करने के कारण बहुत घिस गई हैं। अतः इनसे जो माल तैयार होता है उसका प्रति इकाई उत्पादन व्यय बहुत अधिक होता है। अतः वह बहुत महँगा पड़ता है। फलस्वरूप विदेशों में भारतीय माल की मांग कम हो गई है। यदि देश को फिर से विश्व के जूट उद्योग पर एकाधिकार प्राप्त करना है तो जूट मिलों में पुराने कर्घों की जगह आधुनिकतम स्वचालित कर्घे लगाने चाहिएं, जिससे जूट के प्रति इकाई उत्पादन में व्यय कम हो और विदेशों को जूट का माल सस्ते मूल्यों पर निर्यात किया जा सके।

(५) उत्पादनों की विविधता—वर्तमान में जूट से सिर्फ बोरे, सुतली आदि कुछ ही चीजें बनाई जाती हैं। लेकिन आजकल स्थानापन्न वस्तुओं के आविर्भाव से इन चीजों की मांग कम हो गई है। इसके अतिरिक्त विशाल परिमाण पर खुली हुई वस्तुएं भेजने की व्यवस्था हो जाने के कारण भी कहीं कहीं जूट का माल खरीदा जाना कम हो गया है, अतः जूट उत्पादकों में विविधता लाने व जूट का नये २ कार्यों में प्रयोग किए जाने की आवश्यकता है।

(६) निर्यात वृद्धि की आवश्यकता—वर्तमान में

( शेष पृष्ठ ४० पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# गणतन्त्र का ग्यारहवां वर्ष : आर्थिक प्रवृत्तियां

गणतंत्र के ग्यारहवें वर्ष १९६० की आर्थिक गतिविधियों पर एक दृष्टि डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि कुछ क्षेत्रों में हम असंदिग्ध रूप से आगे बढ़े हैं और अनेक बाधाओं के बावजूद हम गिरते-पड़ते सम्भल ही गये हैं।

## खाद्य-समस्या

इस वर्ष का प्रारम्भ कुछ दिन से चल रहे कृषि विश्व मेले से हुआ। यह मेला इतना सफल रहा कि इसे दो बार अधिक समय के लिए बढ़ाना पड़ा। किसानों को इससे कोई स्थूल लाभ न हुआ हो, परन्तु इन्हें दुनिया में हो रहे नए-नए कृषि-परीक्षणों की झलक अवश्य मिल गई और उनकी आंखें कुछ खुल गईं तथा कुछ करने के लिए इनमें भी उत्सुकता उत्पन्न होने लगी।

इस वष के पूर्वार्द्ध में खाद्य-संकट अपनी चरम सीमा पर पहुँचता हुआ दीखा। किन्तु देश के सौभाग्य से यह चरम संकट शीघ्र ही नयी आशाओं में परिणत हो गया, जबकि विदेशी अन्न के आयात के साथ साथ देश में भी नयी फसल सन्तोषजनक उत्पन्न होने की घोषणा सरकार ने की। आज स्थिति यह है कि प्रायः सारे देश में अनाज की कीमतें कम हो गयी हैं। भय यहां तक किया जाने लगा है कि यदि मूल्य और कम हुए तो किसान संकट में पड़ जायेंगे और इसलिए सरकार के खाद्य मंत्री उन्हें यह आश्वासन दे रहे हैं कि वे अनाज के मूल्य नियत सीमा से नीचे नहीं गिरने देंगे।

## पंचवर्षीय योजना

१९६० का वर्ष दूसरी पंचवर्षीय योजना का अन्तिम वर्ष था। अब से दो ढाई महीने बाद इस योजना के ५ वर्ष पूर्ण हो जायंगे। इस लिए इस वर्ष दो दिशाओं में प्रयत्न हुए। एक तो यह कि दूसरी योजना के लक्ष्य अधिकतर पूर्ण किए जायें। दूसरा यह कि पिछले पांच वर्षों के अनुभवों के आधार पर तीसरी पंचवर्षीय योजना की रूपरेखा निर्धारित की जाय। दूसरी योजना के मध्य में ही यह अनुभव किया जाने लगा था कि लक्ष्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक साधन शायद हमें न मिल पायें। इसलिए महत्त्वपूर्ण अङ्ग (कोर ऑफ दी प्लैन) के नाम से कुछ नीचे लक्ष्य निर्धारित किए गए थे। ५ वें वर्ष तक भी हम रोजगार देने के लक्ष्य पूरे नहीं कर पाये। खाद्य का उत्पादन भी आवश्यकता से कम ही हुआ है। कोयले और खाद का उत्पादन भी हम यथेष्ट मात्रा में नहीं कर पाये। इसका प्रभाव अनाज और विशेषकर उद्योग पर बहुत बुरा पड़ा है। लोहे के नए कारखाने की भट्टियां कुछ समय तक बन्द रहीं। कोयला न मिलने से कुछ रेलगाड़ियां तक स्थगित कर देनी पड़ीं, वहां और छोटे कारखानों को भी इस कमी का दण्ड भुगतना पड़ा।

इस विकट स्थिति को अनुभव करने के बाद सरकार ने अपनी उद्योग नीति में कुछ परिवर्तन प्रारम्भ कर दिया। १९५९ की समीक्षा करते हुए हमने गत वर्ष लिखा था कि "शासन के कर्णधार आकाश में विचरण छोड़कर परिस्थितियों की ठोस भूमि पर चलने लगे हैं।" इस वर्ष इस सत्य के और भी अधिक प्रत्यक्ष दर्शन हुए। इस्पात के मंत्री सरदार स्वर्णसिंह कोयला उत्पादन में निजी उद्योग का अधिक सहयोग लेने पर उद्यत हो गए हैं। खाद के नये कारखाने निजी उद्योग खुलें, इसके लिए चार प्रस्तावों के स्वीकृत किए जाने की भी आशा है। तीसरी योजना के निर्माण में निजी उद्योग के विकास के लिए अधिक राशि नियत की गई है। जहाजी उद्योग को भी इसी तरह के आश्वासन दिये गये हैं। उद्योग तथा वित्तमन्त्री द्वारा भी विदेशी पूंजी को निमंत्रित करने के लिए निजी उद्योग को अनेक आश्वासन दिये गये हैं। सरकारी उद्योगों में निजी पूंजी का सहयोग लेने की दिशा में भी विचार किया जा रहा है।

चम्बल पर गांधी सागर के बांध और कोटा पर प्रताप सागर के बांध का उद्घाटन, भोपाल में बिजली की भारी मशीनें बनाने के कारखाने का उद्घाटन देश के अनेक भागों में मिट्टी के तेल की प्राप्ति तथा अनेक देशों से पंचवर्षीय योजना की पूर्ति के लिए नये समझौते गत वर्ष की सफलताएं कही जा सकती हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरी पंचवर्षीय योजना पिछली दोनों योजनाओं से बहुत बड़ी बनाई गई है। यद्यपि इसका अन्तिम रूप आगामी कुछ दिनों तक निर्धारित हो जायगा, तथापि इसका प्रारूप तैयार हो जाना १९६० की एक बड़ी सफलता है। पहली योजना २३ अरब रुपए की थी, दूसरी ७२ अरब रुपए की और तीसरी योजना १०२ अरब रुपये की बनायी गई है। इसके लिए ७५० करोड़ रुपए की विदेशी सहायता का आश्वासन मिल गया है। गत योजना की अपेक्षा इसमें घाटे की अर्थ-व्यवस्था बहुत कम अर्थात ५५० करोड़ रुपया रखी गयी है। १६५० करोड़ रुपए की आय नये करों से अनुमानित की गई है। राज्यों ने कुछ और भी योजनाएं सम्मिलित करने की मांग की है, जिसके फलस्वरूप संभवतः योजना के लक्ष्य और भी बढ़ जाये।

## वित्तीय समस्याएं

१९६० का वर्ष वित्तीय दृष्टि से साधारण रहा। वित्त मंत्री श्री मोरार जी देसाई की विदेशों की यात्रा सफल रही और इस वर्ष रूस, अमरीका, ब्रिटेन, जर्मनी और जापान आदि देश भारत की पंचवर्षीय योजनाओं की पूर्ति में सहायता देने के लिए ज्यादा प्रस्तुत हुए। अनेक देशों ने दूसरी और तीसरी योजनाओं के लिए काफी बड़ी रकमें देने का समझौता किया है। इसकी आवश्यकता इसलिए और भी अधिक तेज़ी से महसूस की गई क्योंकि आयत पर कठोर प्रतिबन्ध लगाने के बावजूद पूंजीगत भारी मशीनरी के आयात के कारण' हमारी विदेशी मुद्रा निरन्तर कम होती गई।

इस वर्ष के केन्द्रीय और राज्यीय बजटों में विशेष नये कर नहीं लगे, क्योंकि बढ़ती हुई मंहगाई के कारण नये कर लगाना संभव नहीं था। केन्द्रीय सरकार ने 'इनामी बांड' निकालकर रुपया एकत्र करने की नयी योजना इस वर्ष प्रारम्भ की है। बिक्री करों को उत्पादन कर में सम्मिलित करके जहां व्यापारियों की कठिनता दूर करने पर विचार हो रहा है, वहां इससे कर-प्रवंचना भी कुछ कम हो सकेगी। आयकर वसूली के लिए कुछ नई पद्धति भी इस वर्ष सोची गयी है। कम्पनी कानून में कुछ संशोधन करके कम्पनियों को अधिक व्यवस्थित करने की कोशिश की गई है। पूंजी और उद्योगों के विकेन्द्रीकरण की दिशा में भी सरकार गंभीरता से सोचने लगी है और इस प्रस्ताव पर विचार किया जा रहा है कि नये-उद्योग खोलने की अनुमति नये साहसिकों को देने में प्राथमिकता की नीति अपनाई जाये।

राज्य व्यापार निगम और जीवन बीमा निगम की गत वर्ष की रिपोर्ट जहां अपेक्षाकृत सन्तोष जनक हुई, वहां इण्डियन एयर लाइन्स और एयर लाइन्स ने भी पहले की अपेक्षा अधिक प्रगति की है। अनाज के सरकार द्वारा व्यापार को बहुत सफलता नहीं मिली। एक-दो राज्यों को छोड़कर अन्न के राजकीय व्यापार की नीति प्रायः सफल नहीं हुई। वस्तुतः यह नीति बहुत जल्दी में और बिना पूर्ण विचार किये अपनाई गई थी। संविधान के अनुसार राष्ट्रपति ने तीसरे वित्त आयोग की नियुक्ति की घोषणा कर दी है। यह आयोग यह निश्चय करेगा कि आगामी वर्षों में केन्द्र और राज्यों में राजस्व का वितरण किस तरह हो।

वित्तीय दृष्टि से इस वर्ष की एक बड़ी घटना लक्ष्मी और पलाई बैंकों का फेल होना है। इसके बाद ही आतंकित जनता पंजाब नेशनल बैंक की ओर भी दौड़ पड़ी। किन्तु उसकी नींव बहुत मजबूत थी और बैंक के संचालकों का दरशिता पूर्ण नीति से वह इस भारी आघात को सह गया। यद्यपि सरकार ने बैंकों के राष्ट्रीय करण की मांग को ठुकरा दिया है तथापि बैंकों पर और अधिक कठोर नियंत्रण करने का वचन दिया है।

## राज्यों की गतिविधि

गत वर्ष की एक सबसे बड़ी घटना बम्बई राज्य के दो खण्डों—गुजरात और महाराष्ट्र में विभाजन की है। राष्ट्रीय दृष्टि से यह कार्य विवादास्पद होगा, किन्तु आर्थिक दृष्टि से विकास की संभावनाएं अधिक बढ़ गई हैं। दोनों राज्य अब अधिक उन्नति के लिए परस्पर प्रतिस्पर्द्धा करने लगे हैं। कुछ समय तक आग्रह करने के बाद मध्य प्रदेश की सरकार बम्बई के साथ अनाज के निर्बाध व्यापार पर सहमत हो गई है। मैसूर और आन्ध्र का सीमांत का पानी सम्बन्धी विवाद इस वर्ष भी हल नहीं हुआ। राज्यों में देश के अखिल स्वरूप को भूल कर अपने-अपने राज्य में ही विकास की स्वार्थ-पूर्ण प्रवृत्ति ने इस वर्ष और भी जोर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76330

# "नये तीर्थ स्थान"

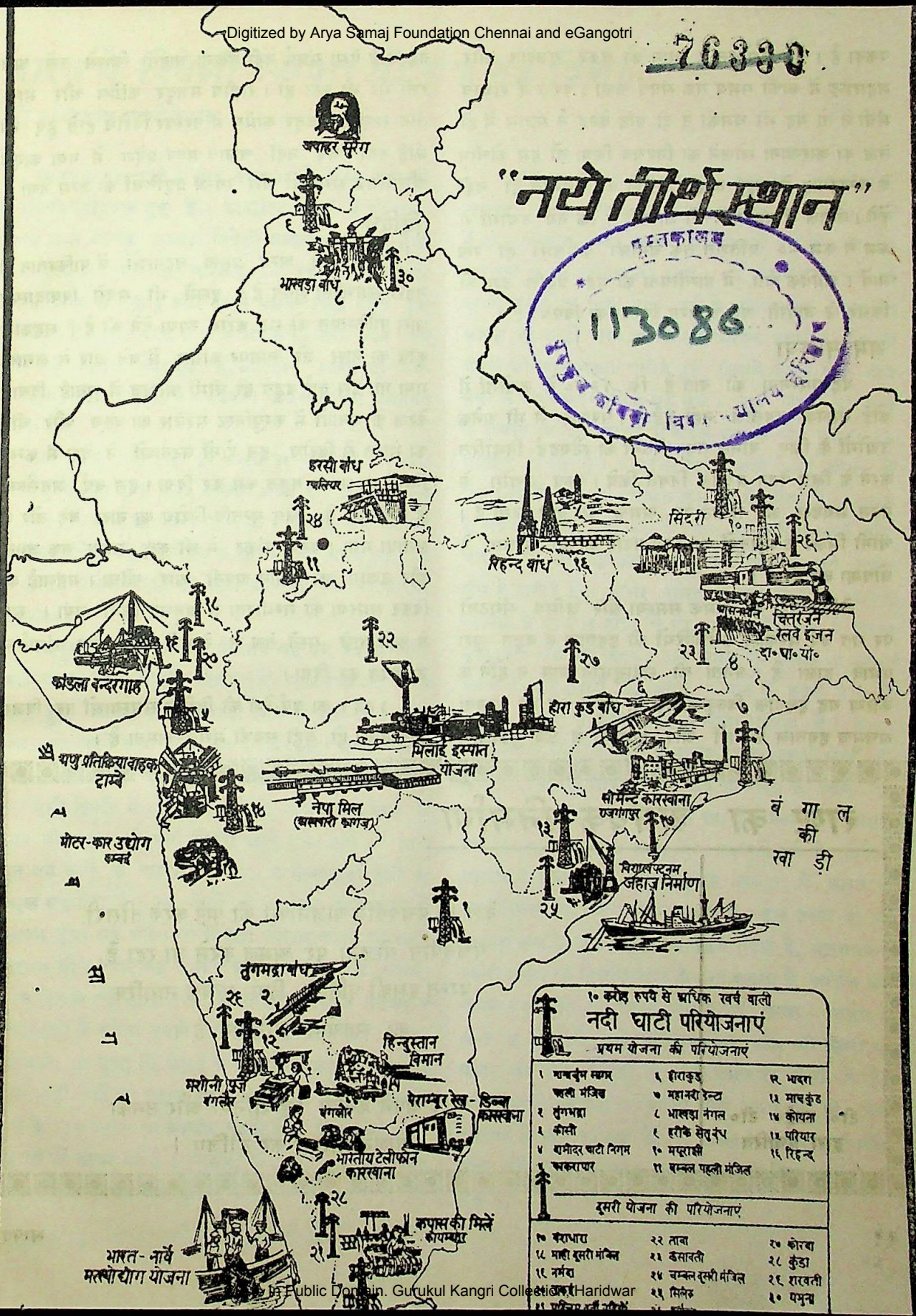


113086

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकड़ा है। तेल-संशोधन के स्थान को लेकर गुजरात और महाराष्ट्र में काफी समय तक संघर्ष चला। केरल के राजस्व मंत्री ने तो यह भी धमकी दे दी यदि केन्द्र ने मद्रास में ही तेल का कारखाना खोलने का निश्चय किया तो हम कोचीन के बन्दरगाह से पाइप लाइन बिछाने की अनुमति ही नहीं देंगे। बंगाल में यह मांग की जा रही है कि नये उद्योगों में कम से कम ८० प्रतिशत तक बंगाली कर्मचारी ही रखे जायें। आर्थिक क्षेत्र में प्रान्तीयता की यह प्रवृत्ति देश को किधर ले जायगी, यह अत्यन्त चिन्ता का विषय है।

## श्रम समस्या

यह प्रसन्नता की बात है कि १९६० में उद्योगों में कोई व्यापक हड़ताल नहीं हुई है। सरकार ने भी अनेक उद्योगों के लिए बोनस तथा वेतनों का स्टैण्डर्ड निर्धारित करने के लिए वेतन मण्डल नियत किये। वस्त्र उद्योग के वेतन मण्डल की रिपोर्ट पर अमल भी होने लगा है। चीनी मिलों के मजदूरों का वेतन बढ़ाने की भी सरकार ने घोषणा कर दी है।

लेकिन देश की श्रमिक समस्या और श्रमिक संगठनों पर गत वर्ष सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल ने बहुत बुरा प्रभाव डाला है। जनता की सहानुभूति प्राप्त न होने के कारण यह हड़ताल बिल्कुल फेल हो गई। देश की जनता सचमुच हड़ताल के नारों और प्रदर्शनों से ऊब चुकी है। वह कोई ऐसा संघर्ष नहीं देखना चाहती जिससे उसे अब रत्ती भर भी कष्ट हो। राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस और भारतीय राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस में परस्पर विरोध होते हुए भी कोई नया संघर्ष नहीं चला। मध्य प्रदेश में नया कानून औद्योगिक सम्बन्धों और स्वस्थ प्रवृत्तियों को जन्म देगा।

## विविध

१९६० की अन्य प्रमुख घटनाओं में पाकिस्तान से नहरी समझौता मुख्य है। इसमें भी सबसे विवादास्पद धारा पाकिस्तान को ८३ करोड़ रुपया देने की है। सहकारी कृषि का नारा जो नागपुर कांग्रेस में बड़े जोर से लगाया गया था, इस वर्ष बहुत ही धीमी आवाज में सुनाई दिया। केरल के चुनावों में कम्युनिस्ट सरकार का पतन और चीन का भारत से विरोध, इन दोनों घटनाओं ने देश में कम्युनिस्टों का प्रभाव बहुत कम कर दिया। इस वर्ष जनसंख्या के नियंत्रण के लिए सन्तति-निरोध का नारा बड़े जोर से लगाया गया। वस्त्र संकट ने भी कुछ समय तक जनता और उद्योग का ध्यान अपनी ओर खींचा। महंगाई की विकट समस्या को गम्भीरता से अनुभव किया गया। रूस से आने वाले सस्ते तेल ने देश में एक तेल संघर्ष-सा उपस्थित कर दिया।

१९६१ का वर्ष-देश की विविध समस्याओं पर विजय पाने वाला हो, यही सबकी मंगल-कामना है।


राष्ट्र का आर्थिक निर्माण

देश दो पंचवर्षीय योजनाओं को पूर्ण करके तीसरी पंचवर्षीय योजना पर अमल करने जा रहा है, परन्तु इसकी पूर्ति के लिए प्रत्येक नागरिक का सहयोग अनिवार्य है।

आप अपने कर्तव्य पहचानिए और उनका पालन प्रारम्भ कर दीजिए।

टी० आई० टी० द्वारा प्रचारित




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत के विदेशी व्यापार की एक नई दिशा

श्री हरिकान्त खण्डेलवाल

स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद भारतवर्ष में अनेक दिशाओं में अनेकों रद्दोबदल हुए हैं। आन्तरिक बातों में ही नहीं, इनका भारी व्यापक प्रभाव विदेशी सम्बन्धों पर भी हुआ है। विश्व राजनीति में भारत का जो स्थान है, उस पर काफी लिखा जा रहा है और हमारे पाठक उससे बहुत कुछ परिचित हैं। व्यापारिक क्षेत्र में भी अनेक नये काम हुए और नई दिशाएं पैदा हुई हैं, जिन्होंने भारत की अर्थ-व्यवस्था, उद्योगीकरण व पंचवर्षीय योजनाओं को प्रभावित किया है।

स्वतंत्रता प्राप्त से पूर्व भारत का अधिकांश व्यापार इंगलैंड के साथ होता था। जर्मनी, अमरीका और जापान के साथ भी माल का आना-जाना था। पर यह सब लन्दन के द्वारा अंग्रेजी सिक्के पौण्ड के जरिये होता था। इस ढंग से लन्दन के व्यापारियों को भारी लाभ था और भारत का नुकसान।

अनुभव व परिस्थितियों के साथ यह ढंग बदला और आज भारत के विदेशी व्यापार में एक ऐसी नई दिशा प्रकट हुई, जिससे भारत कोभारी लाभ हो रहा है। अब भारत को अपने लाभ और हित के अनुकूल अपने देशी-विदेशी व्यापार को अपने ढंग से चलाने की पूरी आजादी है। ऐसी स्थिति में भारत का विदेशी व्यापार उन देशों के साथ भी प्रारम्भ हो गया जिनसे पहले नाम मात्र को था। इन नये देशों के व्यापार में रूस व साम्यवादी देशों का प्रमुख सहयोग है। इन देशों से व्यापार ऐसे समय में प्रारम्भ हुआ जब भारत को विदेशी व्यापार बढ़ाने की सख्त जरूरत थी। अगर यह आगे न आते तो भारत के औद्योगिक विकास को भारी धक्का लगता और उसकी पंचवर्षीय योजनाओं के सफल बनाने में काफी देर लगती। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत के विदेशी व्यापार में रूस व साम्यवादी देशों का महत्व बहुत बढ़ गया। सन् १९४७ में रूस के साथ भारत का व्यापार सबसे कम था, परन्तु अब वह पांचवें नम्बर पर है। इंगलैंड, अमरीका, जर्मनी और जापान के बाद अब रूस है।

भारत का रूस के साथ प्रथम व्यापारिक समझौता २ दिसम्बर १९५३ को ५ वर्ष के लिए हुआ था। प्रथम वर्ष में ही यह चौगुना बढ़ गया और पांचवें वर्ष के अन्त तक दस गुने से भी अधिक बढ़ गया। १६ नवम्बर १९५८ को दूसरा समझौता फिर पांच वर्ष के लिए हुआ परन्तु यह समाप्त भी न हो पाया था कि इसे अधिक उदार व विस्तृत बनाने की आवश्यकता प्रतीत हुई, जिससे अगले शेष तीन वर्षों में यह बहुत अधिक बढ़ सके। इस समय भारतवर्ष के समस्त विदेशी व्यापार में केवल रूस के साथ उसका २० प्रतिशत हो रहा है। भारत से विदेश जाने वाली चीजों में किसी-किसी को ९० प्रतिशत रूस ही ले लेता है। भारत के समस्त निर्यात की ५० प्रतिशत से अधिक खालें और चमड़ा, ९० प्रतिशत ऊनी कपड़ा, ४० प्रतिशत जूते केवल रूस ने खरीदे हैं। अगर भारत व रूस दोनों का ही ऐसे व्यापार से लाभ न होता तो यह इतने थोड़े समय में इतना महत्वपूर्ण कैसे बन जाता। रूस भारत की चीजों का स्वागत करता है और भारत से अपने सामान के बदले में न तो विदेशी पौण्ड, न डालर और न सोना मांगता है। भारत रूसी तैयार माल के बदले में अपना कच्चा-पक्का माल ही देता है। विदेशी सिक्कों के अभाव में भारत के लिए यह अत्यधिक उपयोगी प्रमाणित हो रहा है। रूस से जो मशीनरी आ रही है उसका आना बिना इन नये ढंग के विदेशी व्यापार के सम्भव न होता। इसके अभाव में भारत के उद्योगीकरण के प्रयत्न पिछड़ सकते थे। इस समय जो भी सामान रूस के पास निर्यात के लिये तैयार हैं, भारत बिना किसी प्रकार की हिचकिचाहट के मंगा सकता है, क्योंकि उसे उसके मूल्य देने की चिन्ता परेशान नहीं करती। भारत के माल पर रूस में कोई प्रतिबन्ध या कोई भी किसी भी प्रकार की रुकावट नहीं है, जैसी पश्चिमी देशों में है। उदाहरणार्थ पश्चिमी जर्मनी का माल भारत में तो बिना रुकावट के खूब आ रहा है, पर उसके माल पर वहां प्रतिबन्ध लगे हुए हैं। भारत इनको उठाने के लिए जर्मनी से कह रहा है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के विदेशी व्यापार और उद्योगीकरण का एक पहलू और भी है। उद्योगीकरण के लिए आतुर भारत की आर्थिक कठिनाइयों से पश्चिमी देशों ने लाभ उठाने की कोशिश की थी पर रूस के साथ उसके इस नये ढंग के व्यापार ने उनको सावधान व आतंकित कर दिया। वे कड़ा रुख न अख्तियार कर सके वरन् अपनी शर्तें नरम रखने पर मजबूर हुए जिससे भारत में उनके माल की खपत का अंत न हो जाये। रूस के साथ भारत ने अपने इस नये ढंग के व्यापार के लाभों से परिचित होते ही अन्य साम्यावादी देशों के साथ भी इसी ढंग का व्यापारिक समझौता कर लिया जिसके फलस्वरूप अब पूर्वी जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया पोलैण्ड, हंगरी आदि कई देशों से भी भारत का व्यापार बढ़ने लगा। यह भी दिन-दूनी, रात-चौगुनी रफ्तार से आगे बढ़ रहा है। इस समय भारत के विदेशी व्यापार में साम्यावादी देशों के साथ इस नये ढंग के व्यापार का भारी महत्व है। इससे भारत व उन देशों का भारी लाभ है और ऐसा लगता है कि आगामी वर्षों में भारत के विदेशी व्यापार में उनका महत्व काफी बढ़ जायेगा। विदेशी मुद्रा के अभाव में भारत में अब इन देशों का माल खूब आने लगा है। विदेशी चीजों के अभाव में जो भाव बढ़ने लगे थे, वह अब रुकने लगे हैं।

इसका एक लाभ यह भी हुआ है कि भारत के उद्योगीकरण को एक विशेष प्रकार से प्रोत्साहन मिल रहा है कि भारत के बने माल की इन देशों में खपत होने लगी है। माल की यह अदला-बदली दोनों ही देशों के लिये अत्यधिक लाभदायक सिद्ध हुई है। इसका फल यह हुआ है कि अनेक नवस्वतंत्र देशों ने भी इसी प्रकार का व्यापारिक समझौता रूस व अन्य सभी साम्यवादी देशों के साथ किये हैं। संसार के विदेशी व्यापार में अब यह ढंग लोकप्रिय बन रहा है।

इसकी सफलता ने भारत को पश्चिमी देशों से व्यापारिक समझौते करते समय उनकी अनुचित मांगों को अस्वीकार करने का बल दिया और उन्हें भी अपना रुख नरम व न्यायोचित रखने के लिए मजबूर होना पड़ा।

इस व्यापारिक ढंग की विशेषता यह है कि इसमें दोनों देशों का व्यापार बराबर ही चलता है अर्थात् जितने मूल्य का माल रूस भारत को भेजेगा उतने ही मूल्य का वह भारत से भी खरीदेगा। इस बात को समझ कर दोनों ही देश बेफिक्री के साथ अपने-अपने आवश्यकता की चीजें खरीदते रह सकते हैं।


## प्रगति के पथ पर नया चरण

विश्व विख्यात 'साकामोटो' लूम अब भारत में 'सिमको साकामोटो' के नाम से सेन्ट्रल इण्डिया मशीनरी मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी बिरला नगर द्वारा (ENSHU JAPAN) एन्शु जापान के सहयोग से निर्माण किये जा रहे हैं। ये अपनी कार्य क्षमता के लिए अद्वितीय हैं। इनके उपयोग से दुर्लभ विदेशी मुद्रा बचाइए और वस्त्र उत्पादन में नये आँकड़े प्रस्तुत करिये। 'सिमको' डोबी, कलेण्डर वाइल, वाइंडिंग और वायरिंग मशीनें भी उपलब्ध हैं।

जानकारी के लिए लिखें :

'ग्राम—'सिमको'
फोन नं० ३६४
७४४

**सेन्ट्रल इंडिया मशीनरी मैनुफैक्चरिंग कम्पनी, लिमिटेड**

बिरला नगर (ग्वालियर) मध्यप्रदेश




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

•Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विश्व में तेल उद्योग की स्थिति

देवीप्रसाद नौटियाल

आज विश्व की तेल निर्यातक तथा तेल उत्पादक देशों की सरकारें अपने आर्थिक हितों का ह्रास होने से बचाने के लिए पैट्रौलियम निर्यायतक देशों का संघ' बनाने वाली हैं।

निर्यातक देशों की सरकारों ने तेल के व्यापार में अब तक खूब लाभ कमाया। फरवरी १९५९ तक, विशेषतः पश्चिमी संसार के अनेक देशों ने अपने तेल हितों पर आंच नहीं आने दिया। परन्तु अब स्थिति तेजी से बदल रही है। तेल के क्षेत्र में उत्पादन खपत की मात्रा से अधिक अनुपात में बढ़ता जा रहा है। जनसंख्या वृद्धि के अनुसार तेल की खपत भी बढ़नी चाहिए थी, परन्तु ऐसी संभावना दूर होने के कारण—एक तो सभी देशों में विद्युत शक्ति और गैसों का इस्तेमाल अधिक मात्रा में होने लग गया है और दूसरा यह कि ईंधन के और भी अनेक साधनों की पूर्ति में बहुत कुछ वृद्धि की गई है। परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि संसार में मांग कम है। नवोदित स्वतन्त्र राष्ट्रों में इसकी भारी खपत है, और जब यह बात है तो फिर क्रूड आयल (असंशोधित तेल) और पैट्रोलियम की कीमतें क्यों गिरती जा रही है और आगे और भी गिरने की संभावना क्यों है!

आज तक आंग्ल-अमरीकी तेल कम्पनियों और अन्य पश्चिमी तेल निर्यातक देशों का इस उद्योग के क्षेत्र पर एकाधिकार था। पश्चिमी एशिया, दक्षिणी एशिया और दक्षिण पूर्वी एशिया में मुख्य तेलों के श्रोत और बाजार आंग्ल-अमरीकी तेल कम्पनियों के अधिकार में थे, परन्तु अब सभी देशों के स्वतन्त्र होने के कारण आंग्ल-अमरीकी तेल एकाधिकार की परिधि से बाहर भी अपना आर्थिक संपर्क बढ़ा रहे हैं। जो विशेष सुविधायें उन्हें उन देशों में पहले प्राप्त थी वे भी धीरे-धीरे हाथ से निकलती जा रही हैं। रूस और अन्य समाजवादी देशों ने अपने तेल उद्योग का भारी विकास करके तेल का उत्पादन अपनी पूर्व क्षमता से बहुत बढ़ा लिया है। खासकर रूस ने, यूरोप के समाजवादी देशों को छोड़कर केवल पश्चिमी यूरोप को १९५९ में ६० लाख मेट्रिक टन तेल का निर्यात किया, जबकि १९६० में यह मात्रा बढ़कर १५० लाख मेट्रिक टन तक पहुँच जायगी। इसी हिसाब से यूरोप के समाजवादी देशों से अकेले ही यूरोप को तेल निर्यात बढ़ने की संभावना है। इटली की ई० एन० आई० कम्पनी और फिनलैण्ड भी रूस के सस्ते कच्चे तेल का भारी आयातक है, ये दोनों देश पूर्वी यूरोप के देशों से भी कच्चे तेल को सस्ती कीमत पर खरीदकर शोधित करके कम दामों पर यूरोप के बाजारों में बेचते हैं।

रूस का सस्ता तेल क्यूबा, वेनीजुयेला घाना, गिनी, लंका, भारत और चीन तथा अन्य अनेक देशों में भी बिकना आरम्भ हो गया है। आंग्ल-अमरीकी तेल-कम्पनियों की तेल दर से रूसी तेल बहुत सस्ता है। सारांश यह है कि अब संसार में तेल के मूल्यों के विषय में भारी प्रतिद्वन्दिता चल रही है।

तेल की दर में स्थिरता न आ सकने का मुख्य कारण यह भी है कि यूरोप और एशियाई, सभी देशों ने तेल के श्रोतों का विकास स्वयं अपने हाथों में ले लिया और स्वयं आत्म-निर्भर होना चाहते हैं। इस ओर बढ़ने के लिए 'रिफायनरी' और तेल-वितरण कम्पनियों की भी व्यवस्था कर रहे हैं, ताकि देश की विकास योजनाओं की सफलता में सस्ते तेल की उपलब्धि से विदेशी मुद्रा अन्य उद्योगों के निर्माण में काम में लाई जा सकेगी।

तेल के क्षेत्र में तेल की दर के अवमूल्यन का दूसरा कारण यह है कि पिछले कुछ वर्षों में यूरोप में तेल की खपत अत्यधिक बढ़ गई। जो लोग पहले कोयले का प्रयोग करते थे, तेल के उपभोग की ओर बढ़े हैं और कोयले के व्यापारी' अपना पुराना धन्धा छोड़कर 'तेल के व्यापार में जुट गए हैं। इन नए तेल के व्यापारियों ने तेल को कम लाभ से सस्ते दामों पर बेचना आरम्भ कर दिया है जिसका नतीजा यह हो रहा है कि पहले के तेल-व्यापारियों



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कम्पनियों के तेल की बिक्री घटनी शुरू हो गई है। उदाहरणार्थ-नये तेल बिक्री संघ—सी० एफ० पी० और पैट्रोफेनिया की कई शाखाओं ने फिनलैण्ड, इटली आदि देशों में अपना विस्तार करना आरम्भ कर दिया है नीदरलैंड में सहकारी तेल बिक्री संघ और मौबिल कम्पनी ने तेल की समस्त बाजार की बिक्री अपने ऊपर ले ली है। इटली में राजकीय तेल उद्योग कम्पनी ई० एन० आई० ने रूस का कच्चा सस्ता तेल खरीदकर तेल बाजार में नई क्रान्ति ला दी है। अब यह कम्पनी दक्षिणी जर्मनी, स्विटजरलैण्ड और आस्ट्रिया में अपना प्रसार कर रही है। फ्रांस में राज्य नियंत्रित राष्ट्रीय तेल संस्था यू० आई० पी० भी तेल बाजार में घुस गई है। डेनमार्क में टाईडवाटर नामक संस्था एक तेल रिफाइनरी (तेल शोधन कारखाना) बड़े पैमाने पर स्थापित कर रही है। जर्मनी में पहले ही तेल के कई छोटे छोटे उद्योग मौजूद हैं, फिर भी स्विटजरलैण्ड की एक संस्था के साथ साझेदारी पर जर्मनी की फ्रीसिया कम्पनी ने इमदेन के बन्दरगाह पर १४ लाख मेट्रिक टन तेल शोधन की क्षमता वाली एक रिफायनरी स्थापित कर ली है। अमेरिका लीबिया और उत्तरी स्पेन में तेल रिफायनरी निर्मित करने वाला है। इस प्रकार कई ऐसी संस्थायें उठ खड़ी हो रहीं हैं जो तेल के पुराने व्यापारी और संस्थाओं के लिए प्रतिद्वन्दिता में घातक सिद्ध हो रही हैं। इन सभी नई संस्थाओं के समक्ष अपने अपने लाभ की ही पड़ी है, इसलिए थोड़े मुनाफे पर भी वे सन्तुष्ट हैं और एक दूसरे से बाजार छीनने और अपने तेल की बिक्री बढ़ाने में रत हैं। तेल की स्थिर कीमत के बारे में इनमें एकता होना असंभव बात है। पूर्वी यूरोप और सोवियत रूस लगातार, तेल की दर उत्पादन वृद्धि के अनुसार घटाता जा रहा है, तो इससे कौन देश और कौन संस्था लाभ नहीं उठाना चाहेगी। हर महीने नई रिफाइनरियां खुलती जा रही है। नई छोटी छोटी पूंजी वाले तेल उद्योगपतियों के सम्मुख समस्त क्षेत्र में तेल वितरण की जिम्मेदारी नहीं है। वे अवसर के अनुसार तेल की कीमत घटाते बढ़ाते रहते हैं। बड़े और पुराने उद्योग ऐसा तुर्त-फुर्त कोई कदम नहीं उठा सकते और इसलिए छोटे व्यापारियों के साथ हार में रहते हैं। बड़ी संस्थाओं के सम्मुख तेल को केवल बेचने का ही काम नहीं है, वे अनुसंधान आदि पर भी भारी रकम खर्च करते हैं। यूरोप में खुदरा व्यापारी अधिक हो गए हैं, और बड़ेबड़े थोक व्यापारी संघ व संस्थायें कम, इस कारण प्रतिद्वन्दिता अधिक है जिससे तेल के मूल्य तथा दर में स्थिरता आनी मुश्किल है।

प्राकृतिक गैसों का नित्य प्रति अधिक उत्पादन और ईंधन के तौर पर खपत लगातार बढ़ती जा रही है इसलिए तेल के मूल्यों की अस्थिरता में यह भी कुछ सीमा तक कारण माना जा सकता है।

अतएव, उपर्युक्त कारणों से समस्या पर पर्याप्त प्रकाश पड़ जाता है। अब तो तेल उत्पादक देशों को अपनी आशायें अधिक मांग पर ही रखनी चाहिए न कि मूल्य वृद्धि पर।

## भारत में तेल उद्योग

विश्व में तेल उद्योग की स्थिति को देखकर भारत की यह इच्छा हुई कि वह भी क्यों न इस होड़ से फायदा उठाये, इसलिए रूस के साथ तेल समझौता हुआ। इस समझौते के फलस्वरूप भारतीय तेल कम्पनियों—स्टानवाक, कालटैक्स और बर्माशैल ने तेल के भाव घटा दिए जिससे तेल के मूल्य की दर घटती जा रही है। निश्चय ही इससे देश को लाभ होगा। इण्डियन आयल कम्पनी, जो सार्वजनिक क्षेत्र में स्थापित की गई है, रूसी तेल का वितरण करेगी, और क्योंकि रूमानिया और रूस के सहयोग से असम और गुजरात में जो नये तेल श्रोत मिले हैं, उनके लिए भी बरौनी, गुजरात और बम्बई में तेल शोधक कारखाने बनेंगे। इन रिफायनरियों द्वारा साफ किया गया तेल भी इण्डियन आयल कम्पनी द्वारा ही देश में वितरित किया जायगा।

इस प्रकार भारत भी अपने तेल उद्योग का विकास करके आत्म-निर्भर बनने की ओर अग्रसर है। इसका हमारी भविष्य की पंचवर्षीय योजनाओं पर बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ने की पूर्ण आशा है।

इटली की इ० एन० आई० कम्पनी भी भारत सरकार के साथ तेल उद्योग के विकास में हाथ बंटाने के लिए ५० करोड़ से १०० करोड़ रुपये तक की पूंजी लगाने को तैयार है। कम्पनी के लिये कच्छ और उत्तरप्रदेश के क्षेत्र निश्चित किए जाने पर विचार हो रहा है। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कोयला उत्पादन और ढुलाई की विकट समस्या

## कोयले का उपयोग

भारत में १९५६ में कोयले का उपयोग १९५६ में निम्नलिखित रूप में हुआ। आज भी सब उद्योगों के विकसित होने के कारण प्रायः यही अनुपात थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ है। लोहे के उद्योग में यह अनुपात अवश्य कुछ बढ़ गया है।

| | कोयले का उपयोग १९५६ |
|---|---|
| रेलों में | १३३.७ लाख टन |
| उद्योगों में— | |
| लोहे और इस्पात का उद्योग | २३.१ ,, ,, |
| सूते कपड़े का उद्योग | १६.१ ,, ,, |
| ईंटों का उद्योग | २२.५ ,, ,, |
| जूट का उद्योग | ४.७ ,, ,, |
| कागज का उद्योग | ५.९ ,, ,, |
| सीमेंट का उद्योग | १७.६ ,, ,, |
| इन्जीनियरिंग उद्योग | ३.५ ,, , |
| घरेलू काम के लिये— | |
| मुलायम कोक बनाने में | १६.५ ,, ,, |
| बिजली उत्पादन में | ३१.१ ,, ,, |
| जहाजों में तथा निर्यात में | १८.० ,, ,, |

प्रति व्यक्ति भारत में अन्य देशों की तुलना में कोयले की वार्षिक खपत बहुत कम है।

| | |
|---|---|
| ग्रेट ब्रिटेन | ३.९ टन |
| बेलजियम | ३.९ ,, |
| अमेरिका | ३.३ ,, |
| कनाडा | २.२ ,, |
| जर्मनी | २.० ,, |
| भारत | ०.०७ ,, |

पिछले दिनों संसद में रेलवे और ईंधन मन्त्रालयों में कोयले की कमी का आरोप रेलवे पर लगाने पर परस्पर असहमति प्रकट हुई थी। वस्तुतः यह सचाई है कि देश के भिन्न-भिन्न भागों में ठीक समय पर कोयला नहीं पहुँचता और इसके कारण कोयला उपभोक्ताओं को (चाहे वे सार्वजनिक उद्योग हों या गैर सरकारी, छोटे हों या बड़े) कोयला ठीक समय पर नहीं मिल पाता और इस कारण छोटे-बड़े कारखाने निश्चिन्तता से काम नहीं कर पाते। कोयले की इस कमी की जिम्मेवारी सभी दूसरे पर डालते हैं। कभी रेलवे पर यह आरोप लगता है कि वैगन कम होने के कारण वह खानों से ठीक समय पर और पर्याप्त मात्रा में कोयला नहीं पहुँचाती, कभी कोयला-उत्पादकों पर रेलवे यह आरोप लगाती है कि उनके वैगन खाली पड़े रहते हैं और कोयले का लदान नहीं किया जाता। कभी यह कहा जाता है कि कोयला साफ करने के कारखाने आवश्यक मात्रा में उत्पादन नहीं करते, कभी निजी उद्योग सरकार पर यह आरोप लगाता है कि उसने दूसरी पंचवर्षीय योजना में निजी कोयला खानों को विकास की बहुत कम अनुमति व सुविधा दी है। किसी के भी आरोप सही हों, यह एक तथ्य है कि उपभोक्ताओं को ठीक समय पर्याप्त मात्रा में कोयला नहीं मिल रहा है, जिसके कारण देश की भारी आर्थिक हानि हो रही है। एक अर्थशास्त्री ने तो क्षुब्ध हो कर यह लिखा था कि एक ओर हम औद्योगिक विकास की बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाते हैं, बड़े-बड़े लक्ष्य निर्धारित करते हैं, तो दूसरी ओर उनके लिए आवश्यक कोयले के उत्पादन, सफाई और यातायात की व्यवस्था नहीं कर पाते। इससे बढ़ कर हमारी पंचवर्षीय योजनाओं की असफलता का और क्या प्रमाण हो सकता है।

कोयले की अव्यवस्था का सार्वजनिक और निजी दोनों उद्योगों पर समान रूप से असर पड़ा है। इंडियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी के अध्यक्ष ने एक भाषण में कहा था कि इस वर्ष के पहले आठ महीनों में कोयले का जो लदान हुआ, उसमें ३२ प्रतिशत राख थी। टाटा को भी यह शिकायत है कि खराब कोयले के कारण उत्पादन व्यय ३ रु० प्रति टन बढ़ जाता है। इन दोनों कारखानों को यह आशा भी नहीं है कि कोयला साफ करने के कारखाने निकट भविष्य में अच्छा धुला हुआ काफी कोयला दे सकेंगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं रेलवे को यह शिकायत है कि घटिया किस्म के कोयले से इंजन पूरी चाल से नहीं चल पाते और कभी-कभी तो उन्हें रास्ते में ही रुक जाना पड़ता है। उत्तर प्रदेश तथा अन्य राज्यों में अनेक कारखानों, बिजलीघरों, ईंटों के भट्टों को कुछ समय तक रोक देना पड़ा है और इसी कारण माल-गाड़ियों को भी स्थगित कर देना पड़ा है। इसका प्रभाव दूसरे उद्योगों पर भी पड़ा है। कोयला-उपभोक्ता संघ के अध्यक्ष श्री दाराब कुरसेत जी ड्राइवर ने अपने एक भाषण में कहा है कि यदि योजना आयोग नेशनल कौंसिल आफ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च को कोयले की कमी से होने वाली राष्ट्रीय आर्थिक आय की जांच करने को कहे तो हमारी अर्थ-व्यवस्था और अर्थनीति की बहुत-सी पोलें खुलेंगी।

## कारण और उपाय

आखिर कोयले की इस कमी के मुख्य कारण क्या हैं'?

१--सबसे मुख्य कारण तो यह है कि जितनी तेजी से देश के विविध भागों में उद्योगों का विकास हो रहा है, उसे देखते हुए कोयला-उत्पादन और उसके यातयात की व्यवस्था सरकार नहीं कर सकी। संभवतः वह यह कल्पना भी नहीं कर सकी कि देश को नए उद्योगों तथा पुराने उद्योगों के विस्तार के लिए कितने कोयले की आवश्यकता होगी और वह कैसे पूर्ण हो सकती है।

२--इस आवश्यकता को पूर्णतया अनुभव न करने के कारण तथा समाजवादी उद्देश्य के आवेश में दूसरी योजना बनाते समय पुराने कोयला-उद्योगों को अधिक विस्तार की अनुमति नहीं दी गई। अब जाकर इस्पात मंत्री सरदार स्वर्णसिंह निजी उद्योग को अधिक अनुमति देने की आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं।

३--दुगधा, भोजूदीही, पथेरडीही में कोयला धोने के जो कारखाने खुलने थे, उनमें बहुत बिलंब हो रहा है। तीसरे कारखाने के बनाने का तो अभी किसी कम्पनी से समझौता भी नहीं हुआ।

४--यद्यपि विदेशों से अनेक फुटकर सहायताएं मिल रही हैं, तथापि कोयला-धुलाई के लिए जिन बड़ी मशीनों की आवश्यकता है, उनके लिए विदेशी मुद्रा एक बाधा बन कर खड़ी हुई है।

कोयले की कमी के इन चारों कारणों को दूर करने की आवश्यकता है। यह प्रसन्नता की बात है कि देश के सौभाग्य से नई खोजों के परिणामस्वरूप विविध स्थानों से कोयले के नए भंडारों का पता लगा है। रानीगंज के समीप छः क्षेत्रों में एक ऐसी पट्टी पाई गई है जहां डेढ़ करोड़ टन कोयले का भंडार बताया जाता है। रामगढ़ के कोयले के क्षेत्रों में दो पट्टियों का पता लगा है, जिनमें से एक ७४ फुट गहरी है। कुछ हलके किस्म का कोयला भी दक्षिण में पर्याप्त मात्रा में मिल रहा है। मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमा पर सिंगरौली में तीसरी योजना की अवधि में २५ लाख टन कोयला मिलने का अनुमान किया गया है, जबकि वहां दो पट्टियों में ६७॥ करोड़ टन कोयला मिलने की संभावना है। मध्यप्रदेश की अन्य अनेक खानों से भी कई करोड़ टन कोयला मिलने की आशा की जा रही है। इन कोयलाखानों के विकसित होने के बाद बिहार और बंगाल की कोयला-खानों में दूर वर्ती पश्चिम और दक्षिण में कोयला ढुलाई की समस्या भी कुछ सरल हो जाएगी।

जहां कोयले की नई खानें देश के लिए आशाप्रद हो सकती हैं वहां कोयले की सफाई और धुलाई की व्यवस्था में अत्यधिक और शीघ्र सुधार करने की आवश्यकता है। इसी तरह किन्हीं टैकनिकल उपायों के प्रयोग से कुछ घटिया कोयले का भी उपयोग किया जाना चाहिए, जिससे उत्पादन व्यय न बढ़े।

कोयले की समस्या को हल करने के लिए यातायात की व्यवस्था में भी सुधार आवश्यक है। कोयले के लदान और उतारने के लिए बड़ी मशीनों की आवश्यकता है ताकि

---

## भारत की बेकारी

२ करोड़ ७० लाख लोगों के पास प्रतिदिन ३ घन्टे या उससे भी कम का काम है। २ करोड़ लोगो के पास प्रतिदिन २ घन्टे या उससे भी कम का काम है। ४ करोड़ ५० लाख लोगों के पास ४ घन्टे या उससे भी कम का काम है इसलिए महात्मा गांधी ने कहा था।

"आज का सबसे जरूरी सवाल है उन लाखों लोगों के लिये, जिन्हें जीते जी ही मुर्दों की सी ज़िंदगी बसर करनी पड़ती है, उनके लिये है काम जुटाना।"



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

•Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे रेलगाड़ी के डिब्बे अधिक समय तक स्टेशन पर न रुके रह सकें। रेलवे में बहुत भारी मात्रा में कोयले की आवश्यकता पड़ती है, उसे कोयले की खानों और धुलाई के कारखानों की दृष्टि से स्वावलम्बी बनाने की कोशिश करनी चाहिए। धुलाई के कारखानों में धुलाई के उत्पादन व्यय में कमी करने का प्रयत्न करना चाहिए।

श्री ड्राइवर ने अपने भाषण में कोयले की स्थिति सुधारने के लिए कुछ और भी परामर्श दिए हैं, जैसे विभिन्न क्षेत्रों में कोयले के भंडार स्थापित करने चाहिएं। ताकि मन्दी के महीनों में रेलवे कम दर पर कोयले जमा कर सके और अधिक मांग के दिनों में कोयला इन भंडारों से पहुँचाया जा सके। मन्दी के दिनों में जो उद्योग कोयला लेना चाहे उन्हें ढुलाई में कुछ रियायती दर मिलनी चाहिए। ब्रिटेन में गर्मियों के दिनों में प्रति टन एक पौंड कम कीमत देनी पड़ती है विभिन्न उद्योगों में कोयले की जगह तेल और बिजली के प्रयोग को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। घटिया किस्म के कोयले से गैस उत्पादन के कार्य-क्रमों को अपनाना चाहिए। रेलवे को बैगनों की अधिक व्यवस्था करनी चाहिए और लदान में प्रबन्ध की कुशलता को और अधिक बढ़ाना चाहिए। यदि आवश्यकता हो तो इस्पात की भांति अलग कोयला मंत्रालय स्थापित करना चाहिए।

ये कुछ उपाय हैं कि जिनसे हम देश में बढ़ती हुई कोयले की समस्या को हल कर सकते हैं।

• •

अर्थशास्त्र की प्रमुख मासिक पत्रिका

सम्पदा

स्कूल कॉलेज के छात्रों और देश की आर्थिक गतिविधियों में रुचि रखने वालों के लिये अत्यन्त उपयोगी।

अशोक प्रकाशन मन्दिर

२८-११ शक्तिनगर दिल्ली-६



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्यन्त विचार-पूर्ण लेख

# सर्वोदय की वैज्ञानिक दृष्टि

(श्री अण्णासाहब सहस्त्रबुद्धे)

आगे के २५-३० वर्षों में हिन्दुस्तान में पढ़े लिखों की संख्या अत्यधिक बढ़ने वाली है। कोई आश्चर्य नहीं ५०% लोग ग्रेजुएट हो जांय तब काम करने के लिए इस देश में अनपढ़ लोग बचेंगे ही नहीं। यदि पढ़े लिखे लोग आज की तरह ही मजदूरी व मेहनत के कार्य को घृणा की दृष्टि से देखते रहे तो आप चाहे या न चाहें यह देश यंत्र शक्ति के पीछे ही जाने वाला है। क्या आप उनसे यह आशा रख सकते हैं कि वे गोबर या मैला सर ढोयें, आपको उनको ठेलागाड़ी देनी ही होगी। इसलिए हमें सोचना चाहिए कि उत्पादन के सारे साधन समाज की वृत्ति से मेल खाने वाले हों, नहीं तो उनका स्थान समाप्त हो जायगा और उनका स्थान दूसरे औजार लेते जायेंगे। यदि हम चाहते हैं कि अनपढ़ लोगों का एक वर्ग, पढ़े लिखों का दूसरा वर्ग न रहे तो यह निश्चित है कि हमें लोगों के मानस के अनुकूल अपने साधनों में सुधार करना होगा।

हिन्दुस्तान में वोल्टास कम्पनी ने एक हल बनाया है। हल यंत्र शक्ति से नहीं, बैल से ही चलता है परन्तु उसमें खूबी यह है कि उसमें आदमी बैलजोड़ी के बीच कुरसी पर बैठता है। कम्पनी का कहना है कि बैल के पीछे रहने वाला व्यक्ति भी दूसरा बैल ही बन जाता है। उसका यह भी कहना है कि हिन्दुस्तान के मानस शास्त्र का अध्ययन करके हमें उत्पादन के साधनों में इतना रद्दो बदल करना है कि उससे काम करने वाले के दिल में काम से नफरत पैदा न हो, बल्कि वह सम्मान के साथ सारे कार्यों को कर सके।

मेरे दिल में आज एक संघर्ष चल रहा है कि सर्वोदय का विचार रखने तथा उस दिशा में कुछ काम करने का जो प्रयत्न सर्वोदय कार्यकर्ता कर रहे हैं, उसके बरखिलाफ दुनिया में जो चीजें बनती जा रही हैं और उसका जो असर दुनिया पर हो रहा है, उसका जितना चिन्तन हमें करना चाहिए था, उतना नहीं हो रहा। आज देश में एक ओर कृषि-ग्रामोद्योग प्रधान समाज-रचना का प्रयत्न चल रहा है तो दूसरी ओर यंत्रवाद पर आधारित नागरिक समाज बनाने का कार्य चल रहा है।

## दो प्रवृत्तियां

गांवों में एक ओर मुख्यतः खेती और खेती के आधार पर चलने वाले छोटे-मोटे उद्योग चल रहे हैं तो दूसरी तरफ शहरों में बड़े-बड़े कारखाने बढ़ते जा रहे हैं और उनसे गांवों के उद्योग नष्ट होते जा रहे हैं। हम चाहें या न चाहें परन्तु यह सब हो रहा है और इस सबके अन्तर्गत न केवल सर्वोदय का ही, बल्कि देश का भविष्य निर्भर करता है।

यांत्रिक शक्ति के आविष्कार के फलस्वरूप दुनिया की अर्थ रचना में चामत्कारिक परिवर्तन हो रहे हैं। धीरे-धीरे ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था खतम हो रही है। पाश्चात्य देशों में तो अब गांव नाम की कोई वस्तु वास्तव में रही भी नहीं है। वहां ग्राम केवल विश्राम-स्थल (Outing) के केन्द्र बनते जा रहे हैं। हमारे सामने सवाल है कि क्या हम भी पश्चिम का ही अनुकरण करना चाहेंगे, यहां भी वैसा ही चलता रहने देंगे? यदि हमने गंभीरता पूर्वक इस दिशा में नहीं सोचा तो धीरे-धीरे हमारे यहां भी वही होगा जो दुनिया के अन्य देशों में हो रहा है, उस बहाव को हम रोक नहीं सकेंगे।

पिछले १०-१२ साल से देश के औद्योगीकरण का प्रयत्न चल रहा है। लोहा, सीमेन्ट व दूसरे-दूसरे अनेक उद्योगों के कारखाने खुल रहे हैं। गांवों में टीनें बड़ी तादाद में पहुँचने लग गई हैं और उससे धीरे-धीरे गांवों की शक्ल-सूरत बदलने लगी है। चूंकि हमने, सर्वोदय ने वालों) ग्रामों को अपनी सारी सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक रचना का आधार माना है इसलिए हमारे सामने प्रश्न है कि गांवों में इसी तरह सड़कें बनती रहीं, रेल-मोटरें दौड़ने लगीं, हर नया सुधार प्रवेश करता गया तो हमने सोचा है कि इन सब बातों का क्या असर हमारे सारे कार्यक्रम पड़ने वाला है? सारी दुनिया का राज तो आपके हाथ में है नहीं। आप दुनिया को अपने तरीके पर ढाल ही सकेंगे, इसकी कोई गारंटी नहीं हो सकती। इसलिये



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

•Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोदय के कार्यकर्त्ता को दुनिया की सारी हालत को देखकर चलना होगा और कदम उठाने होंगे।

## सर्वोदय का स्वरूप ?

हम यह तो नहीं कह सकते हैं कि गांवों में सड़कें नहीं बननी चाहिए, मोटरें व रेलें नहीं जानी चाहिये तो सोचने का सवाल यही रह जाता है कि ये सब चीजें बनें तो जरूर, परन्तु उनको सर्वोदय का स्वरूप कैसे मिले ? किसी स्थान पर खनिज सम्पत्ति की बहुतायत है तो क्या यह सर्वोदय कार्यकर्ताओं के लिए लिए सोचने का सवाल नहीं कि उस खनिज सम्पत्ति का कैसे उपयोग करना है। सर्वोदय की दृष्टि से उस उद्योग को कैसे चलाया जाय ? क्या ग्राम-स्वराज्य की सीमा में यह सब नहीं आता ? जो कारखाने या कार्य पंचायत समिति या जिला स्तर पर पूरे हो सकते हों उनको वहां पूरा करने का आग्रह रखना और सहकारिता के आधार पर सम्पन्न कराने की आवश्यकता व क्षमता पैदा करना हम जरूरी नहीं मानते ? क्या इन सब प्रश्नों पर सोचने की हम पर कोई अपनी जिम्मेदारी ही नहीं समझते ? यह एक प्रश्न है जिसका जवाब हमें अपने दिल से पूछना है।

एक मित्र से मैं हाल ही में दिल्ली में मिला था। खादीग्राम में भी वे रह चुके हैं। १३ साल से वे इंग्लैंड चले गये थे। विज्ञान में उन्होंने कई शोधकार्य किए और करोड़ों रुपया कमाया। उन्होंने मुझसे कहा कि आप लोगों को यह सोचना चाहिए कि आज देश में जो औद्योगीकरण हो रहा है, कारखाने खुलते जा रहे है—यह सब कार्य जिला या थाने के स्तर पर विकेन्द्रित रूप से कैसे सम्पन्न हो सकता है ? क्या बड़े-बड़े बिजली घर या सीमेंट के कारखाने चन्द जगहों पर खोलने के स्थान पर छोटे-छोटे कई प्लांट या सीमेंट फैक्ट्रियां नहीं खुल सकतीं ? उन्होंने कहा कि यदि आप लोगों ने इस दृष्टि से सोचना शुरू कर दिया तो आज के गांवों की कृषि प्रधानता को कायम रखते हुए भी देश औद्योगिक दिशा में तरक्की कर सकेगा और गांव की जनता का नगरों में भागना भी रुक सकेगा।

## राजस्थान में

राजस्थान को ही लीजिए। राजस्थान में अन्न के बारे में करीब-करीब आत्म-निर्भरता है। दूध भी यहां काफी है। भारत में विदेशों से काफी मिल्क पाउडर आता है। राजस्थान चाहे तो अकेला देश की पाउडर सप्लाई करने का काम कर सकता है, परन्तु सवाल यह है कि मिल्क पाउडर लगाने का कारखाना खोलना क्या 'सर्वोदय' में बैठेगा ? मिल्क पाउडर का खाली कारखाना ही खोलना हो तो यह काम बिड़लाजी भी कर सकते हैं, दूसरे पूंजीपति भी कर सकते हैं—चाहे सर्वोदय वालों की इच्छा इसके अनुकूल हो या प्रतिकूल, यह काम हो सकता है और यह काम चाहे आज न हो तो कल होने ही वाला है। प्रश्न इतना ही है कि सर्वोदय वाले अपने तरीके से इसमें पहल क्यों न करें ?

राजस्थान की ऊन कश्मीर से मुकाबला करने की क्षमता रखती है। यहां के ऊनी वस्त्र का मिलिंग अम्बाला में होता है तो सवाल है कि वह यहीं क्यों न हो ? यहां भेड़ों के पालन का अच्छा व्यवसाय है। आब हवा भी अनुकूल है। भारत में भेड़ की ऊन का औसत आधा पौंड और राजस्थान में ४ पौंड का औसत है, जबकि विदेशों में ४० पौंड तक का औसत आता है। क्या ऊन के विकास के लिए भेड़ों की नस्ल-सुधार का काम हाथ में नहीं लिया जा सकता ?

यह बालुकामय प्रदेश है। ५-१० साल में यहां पानी आने वाला है और लाखों एकड़ जमीन सींची जाने वाली है। पानी आने का क्या असर यहां के जन-जीवन पर पड़ने वाला है इस पर चिन्तन किए बिना हम नहीं रह सकते। महाराष्ट्र में नहरें बनीं तो बिना किसानों से पूछे जमीन छीन ली और वे शक्कर के कारखाने वालों को दे दीं। पानी का नतीजा यह हुआ कि छोटे-छोटे किसान जो कल भूमिवान थे, भूमिहीन हो कर मजदूर बन गये। पानी आने पर कौनसी फसलें लेगें, लोग व्यापारिक फसले लेना चाहेंगे तो उसका क्या असर होगा ? सर्वोदय वालों को यह सब सोचना है। इसका चिन्तन नहीं करेंगे उसकी तरफ से आंखें बन्द कर लेंगे तो आपके हमारे सामने ऐसी दीवारें खड़ी होती जायेंगी जिनको तोड़ना फिर कभी हमारे लिए सम्भव नहीं रहेगा।

आज घर-घर दातुन का स्थान ब्रुश लेता जा रहा है। पुरानी चीजों को जाने अनजाने हम छोड़ते जा रहे हैं और नई को अपनाते जा रहे हैं। पुरानी के बजाय नई



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में क्या विशेषता है उसको अपनाना क्यों आवश्यक है, आदि बातों पर हम कभी गहराई में जाकर चिंतन नहीं करते। हमारे घरों में दिन प्रतिदिन मशीनी-कारखानों में बने सामान बढ़ते जा रहे हैं और इस प्रकार दुनिया की हवा के साथ इच्छापूर्वक या अनिच्छापूर्वक आप—हम बहे जा रहे हैं। यदि हम सारे देश में नया व क्रांतिकारी विचार देने का सामर्थ्य रखते हैं, तमन्ना रखते हैं तो हमें इन सब प्रश्नों के अन्दर उतरना ही होगा, और हल सोचना होगा।

हर एक तहसील में मिट्टी के कणों के पृथक्करण करने की लेबोरेटरी होनी चाहिए, जहां यह परीक्षण चलता रहना चाहिए कि कहां की मिट्टी में किस चीज. की कमी है ताकि उसकी पूर्ति की जा सके। नाइट्रोजन की प्राप्ति के लिए किसानों को रासायनिक खाद के उपयोग की भी आवश्यकता हो सकती है तो क्या वह सिन्दरी से ही हम मंगवाते रहेंगे या अपनी पंचायत व ब्लाक लेवल पर तय्यार करने की व्यवस्था करना चाहेंगे।

---

पंचवर्षीय योजनाओं में गरीब के लिए कोई स्थान नहीं है। वे उस पंचांग की तरह है जिसमें पानी के बरसने का भविष्य तो बहुत लिखा रहता है पर निचोड़ने पर एक बूंद भी पानी नहीं निकलता।.....देहातियों को मदद देने का मापदण्ड तो यह होना चाहिए पहले भुखिया (भूखा), फिर दुखिया ( दुःखी ) और तब सुखिया। पर आज तो इसका उलटा हो रहा है।

—विनोबा

---

विभिन्न राज्यों में पंचायती राज बनने से सामने काम का बहुत बड़ा क्षेत्र खुला है। शहर व गांव के बीच समन्वय कराने के लिए हमारे कदम किस प्रकार उठें, इनकी हमें खोज करनी होगी। हमें देश को हिम्मत के साथ कहना होगा कि जो काम पंचायत स्तर पर हो सकते हों, लोग करना चाहें वे पंचायत स्तर पर ही पूरे किये जांय, जो पूरे न हो सके पर उन्हें ब्लाक लेवल पर और उसके बाद जिला स्तर पर पूरे किए जांए। कारखानों का संचालन न पूंजीपतियों के द्वारा हो, न लिमिटेड कम्पनी बनाकर किया जाय, बल्कि ग्राम इकाई के प्रतिनिधित्व के तरीकों से मैनेजिंग कमेटी गठित कर तथा उनके शेयर प्राप्त कर लिया जाय।

• •

## नया मोड़ नया कार्यक्रम

सर्वोदय संसार में 'नया मोड़' एक नया शब्द प्रचलित हुआ है। नया मोड़ कार्यक्रम का मुख्य विचार यह है कि ग्रामीण जीवन को पुनः इस ढंग पर संगठित किया जावे कि प्रत्येक गांव, जहां तक उसका सम्बन्ध उत्पादन तथा उपभोग की मुख्य आवश्यकताओं से है, आत्म-निर्भर बन जावे। नया मोड़ कार्यक्रम को कार्यान्वित करने में ग्रामीणों की सामूहिक जिम्मेदारी हो कि वे इस बात की निगाह रखें कि उनके गांव का एक भी व्यक्ति बिना खाने कपड़े तथा मकान के न हो। इस विचारधारा के अन्तर्गत ग्रामीण समुदायों के समग्र सामाजिक व आर्थिक विकास का समावेश होना चाहिए। निश्चित लक्ष्य निर्धारित किए जायं, लोगों को रोजगार मिले, संतुलित आहार मिले, गृह निर्माण व अन्य सामाजिक सुविधाएँ उपलब्ध हों। समाज की सारी जरूरतों और स्रोतों का पूरा अनुमान और सबकी जरूरत के लिए सामान उत्पादित करने तथा सेवायें उपलब्ध करने के लिए मानव-शक्ति तथा अन्य जरियों का विस्तृत और पूर्ण विवेक के साथ विवरण अर्थात सम्पूर्ण ग्राम्य जीवन के लिए समग्र आयोजन ही "नया मोड़" का सही अर्थ है।

नया मोड़ के अन्तर्गत निर्देशित हितों की प्राप्ति के लिए भगीरथ प्रयत्न करना होगा। और इसके लिए बड़ी संख्या में प्रशिक्षित तथा अनुभवी व्यक्तियों की आवश्यकता होगी। कार्यकर्ताओं की संख्या तथा उनके स्तर पर ही सफलता का दारोमदार है।

### ग्राम स्वराज्य की ओर

यह सही है कि संगठन व निर्देशन के हर कदम पर सिद्धांतवादियों, संगठकों और प्रबन्धकों का अलग अलग और शक्तिशाली वर्ग बनना, ऐसी समस्या है, जिसका अच्छी तरह हल करना होगा अन्यथा न्याय और समानता पर आधारित समाज और अर्थ-व्यवस्था का हमारा स्वप्न साकार नहीं हो सकेगा। बड़ी-बड़ी व पुरानी संस्थायें अपने कार्य को विकेन्द्रीकरण की दिशा में मोड़ रही हैं। यह प्रथम चरण आवश्यक और स्वागत करने योग्य है, परन्तु



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय जनसंघ का मत है कि तीसरी योजना की परिकल्पना, तंत्र और आकार सबके सम्बन्ध में क्रान्तिकारी विचार होना चाहिये। योजना की जड़ें भारत के जीवन में न होने के कारण वे जन जीवन में उत्साह एवं स्वेच्छा से सहयोग का भाव निर्माण नहीं कर पातीं। फलतः गांव के विकास के कार्यक्रमों तक के लिये शासन अनिवार्य श्रम जैसी योजनाओं को लागू कर रहा है। आवश्यकता इसकी है की योजना को भारतीय जीवन की निष्ठा से जोड़ा जाय जिससे लोगों में उसके प्रति प्रेरणा पैदा हो सके।

भारतीय जनसंघ भारत की संस्कृति और मर्यादाओं के आधार पर राष्ट्र के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन की रचना करना चाहता है। भारतीय संस्कृति, व्यक्ति और समाज की भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार की उन्नति चाहती है। एकांगी उन्नति का विचार अधूरा एवं हमारी सांस्कृतिक परम्परा के प्रतिकूल है। व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक विकास का समन्वित मार्ग ही भारतीय संस्कृति को अभीष्ट है।

मानव-विकास और मानव-स्वतंत्रता के विचार से पूंजीवादी एवं समाजवादी दोनों ही व्यवस्थायें अनुपयुक्त हैं। दोनों में अत्यधिक केन्द्रीयकरण के कारण व्यक्ति का अस्तित्व विलीन हो जाता है। हमें ऐसी अर्थव्यवस्था चाहिये, जिसमें व्यक्ति की अपनी प्रेरणा बनी रहे तथा भय है कि कहीं उसी में परिसमाप्ति न मान ली जाय। वह समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सम्बन्धों में मानवता का विकास कर सके। विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था ही इस लक्ष्य को सिद्ध कर सकती है।

---

नयी संस्थाओं से विशेष रूप से ग्राम-नियोजन व ग्राम स्वराज्य का लक्ष्य रखकर अपना काम करना है। सिर्फ उत्पादन और बिक्री का ही लक्ष्य रख कर कार्य होगा तो नया मोड़ केवल विचार मात्र रह जायगा। इस प्रकार यह सारा कार्यक्रम एक स्वाधीन अहिंसक सहकारी समाज व्यवस्था की पृष्ठभूमि पर आधारित राष्ट्रीय हितको सुदृढ़ की दिशा में ले जायेगा। —जीवनमल जैन

# जनसंघ की आर्थिक नीति

## ( वार्षिक अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव ) •

'काम के अधिकार' के साथ ही अर्जित वस्तु के उपयोग और उपभोगका अधिकार भी जुड़ा है, सम्पत्ति का अधिकार इसी आधार पर स्वीकृत हुआ है। काम की पूरी उजरत न मिलने अथवा सम्पत्ति के आधिक्य दोनों से ही कर्म प्रेरणा नष्ट होकर मानव-जीवन में विकृतियां आती हैं। अतः धन के अभाव और प्रभाव दोनों को ही रोकना होगा।

अतः भारतीय जनसंघ :—

१. प्रत्येक सबल और स्वस्थ नागरिक के उपार्जन के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में मानता है।

२. न्यूनतम जीवन-स्तर की गारन्टी तथा अधिकतम अर्थ की मर्यादा आवश्यक समझता है।

३. विकेन्द्रित उत्पादन-पद्धति की इन उद्देश्यों की सिद्धि का प्रमुख साधन मानता है। किन्तु,

४. आधारभूत, उत्पादक एवं सुरक्षा वस्तुओं, राजनीतिक सुरक्षा की दृष्टि के लिये केन्द्रित उत्पादन की पद्धति को अपवाद रूप में ग्रहण करता है।

### योजना की नीति

राष्ट्र के साधनों को न्यूनतम काल में अधिकतम लाभ के लिये प्रयुक्त करने के लिये आर्थिक नियोजन की आवश्यकता है।

अधिकतम उत्पादन, समानतर वितरण तथा संयमित उपभोग के आधार पर ही अर्थ-नीति सुव्यवस्थित रह सकती है। वितरण को उत्पादन और उपभोग के समीकरण का माध्यम मान कर चला जाय तो अर्थ-व्यवस्था में कभी असंतुलन नहीं आयेगा। उत्पादन के उपलब्ध साधनों का अधिकतम फलदायी संयोजन प्रत्येक देश और काल की परिस्थिति पर निर्भर करता है। भारत इस विषय में पाश्चात्य देशों का अनुकरण नहीं कर सकता। हमारी जनशक्ति अधिक है। उसे भार न समझ कर पूंजी समझना चाहिये तथा ऐसी उत्पादन प्रक्रिया विकसित करनी चाहिये जिसमें उसका अधिकतम उपयोग किया जा सके। निश्चित ही यह प्रक्रिया श्रम-प्रधान होगी।

देश के साधनों की कमी को कुछ अंशों में विदेशी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूंजी से पूरा किया जा सकता है, किन्तु विदेशी पूंजी मूलतः विदेशी उत्पादन-पद्धति से सम्बन्ध रखती है। इस देश की उत्पादन प्रक्रिया भी विदेशी ढाँचे में ढल जायगी। हम विदेशी सहायता का उन सीमित क्षेत्रों में ही उपयोग कर सकते हैं, जहाँ उत्पादन प्रक्रिया अपरिहार्य दिखती हो।

## संतुलित विकास

कृषि, उद्योग, व्यापार और सेवायें चारों का संतुलित विकास एक गतिशील अर्थ-व्यवस्था के लिये आवश्यक है। ये सब एक दूसरे के लिए पूरक हों। इनका हम टुकड़ों में विचार नहीं कर सकते।

भारत में कृषि-उत्पादन की वृद्धि, सघन खेती से ही संभव है। इसके लिये कृषक की सम्पूर्ण शक्ति, श्रम और सघन खेती में जुटाने होंगे। किसान को खेत का मालिक बनाये बिना यह सम्भव नहीं। साथ ही खेत न तो इतने छोटे हों कि खेती अनार्थिक हो जाये और न इतने बड़े कि सम्हल न पाये तथा सघन खेती न हो सके। अतः एक ओर जोत की अधिकतम मर्यादा तथा दूसरी ओर आर्थिक जोत की व्यवस्था करनी चाहिये।

कृषि को अदेवमातृका बनाने के लिये सिंचाई की व्यवस्था हो। बड़े बांधों के स्थान पर छोटे बांध तथा कुएं, नलकूप आदि की पद्धति भारत के लिये उपयुक्त है। यांत्रिक खेती भारत की जनसंख्या तथा भूमि की अवस्था के अनुकूल नहीं है। अतः अच्छे हल और बैलों की व्यवस्था हो। गो हत्या पर प्रतिबन्ध तथा गोवंश सुधार के प्रयत्न होने चाहियें। रासायनिक उर्वरक के स्थान पर खाद अधिक लाभप्रद होगी।

बड़े-बड़े खेत, उनका स्वामित्व तथा प्रबन्ध चाहे व्यक्तिगत हो अथवा सहकारी या सरकारी, प्रति एकड़ अधिकतम उत्पादन नहीं प्राप्त कर सकते। अतः एक मर्यादा में कुटुम्ब के स्वामित्व की तथा उसके द्वारा खेती ही सर्वाधिक उपयुक्त व्यवस्था है। कृषि के साधनों की उपलब्धि तथा बिक्री के लिये सहकारी संस्थाएं उपयोगी रहेंगी।

कृषि और उद्योगों का समन्वय करने के लिये गांवों में छोटे-छोटे यंत्रचालित उद्योगों को प्रारम्भ करना चाहिये। नगरों में उद्योगों के केन्द्रीयकरण से अन्य समाज-सेवाओं पर भारी व्यय होने के कारण वे सामाजिक दृष्टि से अनार्थिक होती हैं।

छोटे यंत्रचालित उद्योग ही देश के औद्योगीकरण का आधार हों। बड़े उद्योग आधारभूत तथा उत्पादक वस्तुओं के लिये स्थापित किये जाएं। आधारभूत उद्योग राज्य के स्वामित्व में तथा अन्य पूंजी और श्रम की साझेदारी में चलें।

श्रम की प्रतिष्ठा मानव-मूल्यों की प्रतिष्ठा है। श्रमिकों को संघठन और सामूहिक रूप से पारिश्रमिक निश्चित कराने का अधिकार है। उसके हड़ताल के अधिकार को जनसंघ स्वीकार करता है, किन्तु उसका उपयोग अन्तिम शस्त्र के रूप में ही करना चाहिये।

अर्थ-व्यवस्था के सुव्यवस्थित विकास के लिये सुनियोजित मूल्य नीति का निर्धारण आवश्यक है। किन्तु उसके लिये भौतिक नियंत्रणों का उपयोग यथासंभव नहीं करना चाहिये। औद्योगिक तथा कच्चे माल के मूल्यों तथा मूल्यों और वेतन के बीच समता बनाये रखने के लिये शासन को आंशिक व्यापार का अवलंबन तथा राष्ट्रीय वेतन-मण्डल की नियुक्ति करना चाहिये।

मौद्रिक एवं वित्तीय नीतियों का आधार मूल्यों का स्थिरीकरण, सबको काम की व्यवस्था, अधिकतम विनियोजन तथा समानान्तर वितरण ही हो सकता है। निर्धारित न्यूनतम आय वाले व्यक्ति प्रत्यक्ष करों से ही मुक्त हों तथा उनके व्यवहार में आने वाली वस्तुएं भी सामान्यतः कर मुक्त हों। ● ●

## राजस्थान की नहर

राजस्थान नहर के बन जाने पर राजस्थान और पंजाब के सूखे इलाकों की सिंचाई के लिए भरपूर पानी मिल सकेगा। राजस्थान नहर से लगभग ८० लाख एकड़ फुट पानी मिलेगा।

यह पानी व्यास और रावी से लिया जाएगा।

राजस्थान नहर ४२५ मील लम्बी होगी। यह पंजाब के हरीके हेडवर्क्स से शुरू होकर राजस्थान में जैसलमेर के पास रामगढ़ तक जाएगी। राजस्थान नहर की उप-नहरें और रजवाहे २,०००० मील लम्बे होंगे। राजस्थान नहर प्रणाली संसार भर में सबसे बड़ी होगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# वि दे शी अ र्थ - च र्चा

## जर्मन गणतंत्र में रासायनिक खाद

जनवादी जर्मनी ने रासायनिक खाद के उत्पादन के क्षेत्र में आशातीत उन्नति की है। खाद निर्माण में जर्मनी की पोटाश इन्डस्ट्री बहुत विकसित है। प्रति हेक्टर पोटाश की खपत यूरोप के अनेक देशों में सबसे अधिक जनवादी जर्मनी की है। जर्मनी के इर्द-गिर्द के देशों ने बाद से यह अनुभव किया है कि अकेले नाइट्रोजन और फास फोरस की खाद से कृषि उपज में वृद्धि होनी सम्भव नहीं है। और तब से वे भी रासायनिक खाद में पोटाश की मात्रा बढ़ाकर खेत की उत्पादन क्षमता को बढ़ाने की ओर अग्रसर हैं। इसलिए यह अनुभव अब आम हो गया कि नाइट्रोजन फासफोरस की खाद से पोटाशियम की खाद ही भूमि की उत्पादन क्षमता बढ़ाने में कारगर हो सकती है।

यूरोप के देशों में पोटाश की प्रति हेक्टर औसत खपत १९५७-५८ में इस प्रकार है—

| | | |
|---|---|---|
| बेलजियम | ८६.७ | किलोग्राम |
| जनवादी जर्मन गणतन्त्र | ८३.६ | ,, |
| हालैंड | ६७.२ | ,, |
| पश्चिमी जर्मनी | ६३.० | ,, |
| नार्वे | ५९.२ | ,, |
| डेनमार्क | ५५.८ | ,, |
| इटली | ३.८ | ,, |

इन सभी देशों ने अच्छी खाद के लिए नाइट्रोजन, फॉसफोरस और पोटाशियम तीनों को मिलाकर प्रयुक्त करना लाभकारी समझा है।

१९५७-५८ में बेलजियम में यह अनुपात N. P.$_2$ O$_5$ K$_2$ O 1. 1, 1. 16, डेनमार्क में 1 1, 1: 1: 1.7 नार्वे में 1: 1: 1.2 और जर्मन गणतंत्र तथा पश्चिमी जर्मनी में पोटाश का अनुपात अन्य देशों की अपेक्षा अधिक है। खाद में पोटाश की मात्रा अधिक होने से निश्चित रूप से कृषि उत्पादन बहुत बढ़ रहा है।

इन सब बातों से निश्चय ही हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि दुनियां में जितने भी सिद्धान्त और सिद्धांतवादी यह कहते हैं कि जनसंख्या वृद्धि से अकाल पड़ना अवश्यंभावी है, क्योंकि जनसंख्या में वृद्धि अन्नोत्पादन वृद्धि के अनुपात से अधिक है और खेती की उत्पादन क्षमता भी अब अधिक नहीं बढ़ेगी, बिल्कुल निर्मूल बात है। ये तथाकथित सिद्धांत और सिद्धांतवादी बीमारी का प्रकोप, विपत्तियां और युद्ध को प्रकृति की देन कहते हैं। इसलिए ये मानव जाति के लिए भयंकर खतरे हैं। १०० वर्षों के आंकड़ों पर देखने से पता चलता है कि खेती की पैदावार जनसंख्या वृद्धि के अनुपात से बहुत अधिक बढ़ती जा रही है। इसलिये माल्थुस का सिद्धांत गलत साबित हो चुका है।

जर्मन गणतन्त्र अपने समुन्नत अनुभव को भारत के कृषि विकास में उपयोग में ला रहा है। आशा है दोनों देशों के आपसी सहयोग से भारतीय कृषि पद्धति व उत्पादन क्षमता में महत्वपूर्ण आश्चर्यजनक मोड़ आयेगा। ●

## पूर्वी जर्मनी में कृषि

रासायनिक खाद के अतिरिक्त जर्मनी अन्य भी अनेक उपायों से अपना कृषि-उत्पादन बढ़ा रहा है। मुख्य रूप से उसने सहकारी कृषि-पद्धति को अपनाया है। इसके मुख्य कारण निम्नलिखित है—

१. सहकारी खेती की नैतिक श्रेष्ठता,

२. सहकारी खेती से बड़ी-बड़ी जोतें सम्भव होती हैं जिन पर नयी-से-नयी मशीनों का व्यापक पैमाने पर प्रयोग किया जा सकता है।

३. सहकारिता के आधार पर गांव के और कस्बों की नैतिक और राजनैतिक इकाई, जो बड़ी से बड़ी मुश्किलों को भी आसानी से हल कर देती हैं।

जर्मन जनवादी गणतन्त्र में सहकारी खेती के सभी किसान मिल-जुलकर काम करते हैं और नई-से-नई मशीनों का उपयोग सारे किसानों की भलाई के लिये सुलभ होता है। साल जूगेन जिले के गेहोज़ नामक स्थान पर १९५९ तक कटाई के लिये ६० जोड़ी गायों का उपयोग होता रहा। इससे एक ओर फसल-कटाई का काम धीरे-धीरे होता था, दूसरे गायों का दूध भी कम हो जाता था। इस साल वहां के सारे किसान सहकारी खेती में शामिल हो गये और वहां फसल कटाई में पहली



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार गायों को छुटकारा मिला, मशीन का इस्तेमाल हुआ और काम तेजी से पूरा हुआ। दूसरी ओर गायों के दूध में भी ११९ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

गत १७ अगस्त को राष्ट्रीय मोर्चे की राष्ट्रीय परिषद अपील को सुनकर मजदूरों, कर्मचारियों नौजवानों, घर की औरतों और जन-सेना के सिपाहियों ने खेतों में जुटकर काम करना शुरु कर दिया। हफ्ते के आखिरी दिनों में लगभग ढाई लाख श्रमदानी देश भर के खेतों में जमा हो जाते थे।

गत ७ अक्तूबर को हमारे गणतन्त्र की ११ वीं वर्ष गांठ थी। उस दिन ९९.८ प्र. श. काम पूरा हो चुका था। सहकारी किसानों की ओर से यह सफलता हमारे गणतन्त्र की वर्षगांठ के अवसर पर सबसे बड़ा उपहार समझा गया।

हमारे देश के किसानों ने जिस दिन से मिल-जुल कर खेती करना शुरु कर दिया, हमारी खेती से सम्बन्धित बिक्री वाली दूसरी चीजों का उत्पादन भी बहुत तेजी से आगे बढ़ गया है। यूकैरमुन्दे जिले में कृषि उत्पादन की वृद्धि इस प्रकार रही।

| | १९५९ के पहले ६ महीने में | १९६० के पहले ६ महीनों में |
|---|---|---|
| मांस | १३५०.७ टन | १५४८.३ टन |
| दूध | ८६४५.२ टन | १०२०३.६ टन |
| अण्डे | ५,०७०.३००.० | ५,७३१,६००.० |
| मुर्गियां | ३.३ टन | ४.५ टन |

यही प्रगति गणतन्त्र के और भी सारे क्षेत्रों में देखी गयी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि किसानों की सहकारी खेती से केवल काम करने के अच्छे तरीके ही नहीं सुलभ होते, बल्कि इससे समृद्ध और पौष्टिक भोजन भी खाने को मिलता है।

टी. एन. वर्मा

## रूस में पशुजन्य पदार्थों का उत्पादन

सन् १९५६ में संयुक्त राज्य अमरीका ने और सोवियत संघ ने क्रमशः १०२.३ किलोग्राम मांस प्रतिव्यक्ति पैदा किया। इसका अभिप्राय है कि हमारे देश से अमरीका का उत्पादन तीन गुना से भी अधिक था। इसी काल में प्रतिव्यक्ति दूध और मक्खन का उत्पादन ३४३ और २४५ किलोग्राम अमरीका में हुआ, और ३.८ और २.८ किलोग्राम सोवियत संघ में हुआ। इसका अर्थ है कि सोवियत संघ में मांस और डेयरी जन्य पदार्थों का प्रतिव्यक्ति उत्पादन संयुक्त राज्य अमरीका की तुलना में बहुत कम था।

लेकिन केवल तीन वर्षों में ही सोवियत संघ के पशुपालन ने इतनी भारी प्रगति कर ली है कि वर्तमान काल में वह अक्षरशः अमरीकी किसान के कदम से कदम मिलाकर चल रहा है।

इस मत के समर्थन में यहां कुछ आंकड़े दिये जाते हैं। सन् १९५८ में सोवियत संघ का दुग्ध का उत्पादन संयुक्त राज्य अमरीका के कुल उत्पादन से बढ़ चुका था। गत वर्ष सोवियत संघ में दुग्ध का उत्पादन ६ करोड़ २० लाख टन हुआ और संयुक्त राज्य अमरीका में लगभग ५ करोड़ ७० लाख टन हुआ। यह बात सच है कि सोवियत संघ में प्रतिव्यक्ति दुग्ध उत्पादन अभी तक संयुक्त राज्य अमरीका के स्तर से कम ही है। सन् १९५९ में सोवियत संघ में २९५ किलोग्राम (प्रतिव्यक्ति) उत्पादन रहा और संयुक्त राज्य अमरीका में ३२० किलोग्राम रहा। लेकिन जिस तेजी से उन्नति हो रही है उससे यह मान लिया जा सकता है कि सोवियत संघ इस क्षेत्र में अगले वर्ष संयुक्त राज्य अमरीका को मात दे देगा। मक्खन का प्रतिव्यक्ति उत्पादन गत वर्ष सोवियत संघ में ४ किलोग्राम रहा और संयुक्त राज्य अमरीका में केवल ३.७ किलोग्राम रहा।

इन आंकड़ों से पता चलता है कि सोवियत संघ का योजनाबद्ध पशुपालन बड़ी तेजी से लगातार उन्नति कर रहा है और पशुधन बढ़ रहा है।

सन् १९५७ और १९५९ (सम्मिलित करके) की कालावधि में सोवियत संघ में प्रतिव्यक्ति मांस उत्पादन ३२.३ किलोग्राम से बढ़कर ४१ किलोग्राम हो गया। इस तरह सोवियत संघ में मांस में ८.७ किलोग्राम की वृद्धि हुई, दूध में ५० किलोग्राम की और मक्खन में १.२ किलोग्राम की हुई। इसी कालावधि में संयुक्त राज्य अमरीका में प्रतिव्यक्ति मांस उत्पादन और दुग्ध उत्पादन क्रमशः



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४.३ किलोग्राम और २३ किलोग्राम घटा और मक्खन के उत्पादन में भी कमी आई।

इस वर्ष सामूहिक और राज्य कृषिशालाएं उत्पादन के नये शिखर तक पहुँचने की योजना बना रही हैं। इसके अनुसार मांस का उत्पादन १० करोड़ ६ लाख टन तक जा पहुंचेगा और दूध का उत्पादन ७ करोड़ २० लाख टन तक जा पहुँचेगा, अर्थात प्रतिव्यक्ति ३३६ किलोग्राम उत्पादन होने लगेगा।

## चीन के रेगिस्तान में तेल-नगरी का अभ्युदय

यूमन चीन का सबसे पहला प्राकृतिक तेल उत्पादन केन्द्र है। एक जमाना था, जब यूमन एक छोटा-सा कस्बा था, जिसमें चार हजार आदमी रहते थे लेकिन पिछले ग्यारह वर्षों में, उसकी आबादी बढ़ते-बढ़ते दसियों हजार हो गई और अब वह एक समृद्ध नगर बन गया है। चीन की बड़ी दीवार के पश्चिमी छोर पर रेगिस्तान में रात के समय हजारों बिजली की बत्तियां टिमटिमाती रहती हैं, जिनके प्रकाश में तेल-नगरी की छाया स्पष्ट रूप से दृष्टि-गोचर होती है।

१९५८ और १९५९ में, यूमन में कच्चे तेल का जो उत्पादन हुआ, वह क्रान्ति के पहले के दस वर्षों के कुल उत्पादन का पांच गुना था और १९५० से १९५७ तक के आठ वर्षों के कुल उत्पादन के लगभग बराबर था। उत्पादन में लगातार वृद्धि होती जा रही है।

यूमन, चीन का सर्वप्रथम तेल क्षेत्र होने के कारण, पैट्रोलियम उद्योग का एक विश्वविद्यालय भी बन गया है, जिसमें हजारों कुशल मजदूर, टेक्नीशियन और प्रबन्धकर्ता प्रशिक्षित किये गये हैं। केवल पिछले दो वर्षों में, यूमन ने चीन के तेल-उद्योग के विकास में मदद देने के लिये तेरह हजार से अधिक मजदूर और अधिकारी भेजे हैं।

## समाजवादी देशों के विकास की तीव्र गति

यूरोप के लिए गठित संयुक्त राष्ट्रीय आर्थिक मण्डल ने पश्चिमी यूरोपीय देशों और समाजवादी शिविर के देशों की आर्थिक स्थिति की पर्यालोचना प्रस्तुत करते हुए संकेत किया है कि समाजवादी देशों में औद्योगिक विकास योजना में निर्दिष्ट स्तर से तथा पिछले साल की तुलना में उच्चतर है। रिपोर्ट में कहा गया है कि साल की पहली तिमाही में समाजवादी शिविर के सभी देशों में वर्द्धित औद्योगिक उत्पादन योजना में निर्दिष्ट स्तर से अधिक था तथा श्रम की उत्पादनशीलता ने उनके अर्थतंत्र के त्वरित विकास में योगदान किया है। समाजवादी देशों में बहुत अधिक प्राविधिक प्रगति हो रही है। इस क्षेत्र में लोक जनतन्त्रों में सामूहिकीकरण और सहकारिता का और विकास हुआ है।

( पृष्ठ १५ का शेष )

अवस्था और भी खराब है। अभी तक किसान इस रासायनिक खाद की ओर बहुत कम आकृष्ट हुए हैं, करीब तीन चौथाई किसानों ने कृत्रिम खाद का इस्तेमाल नहीं किया अथवा कुछ समय तक प्रयोग के बाद इसे व्यर्थ समझ कर छोड़ दिया। नीचे की तालिका से मालूम होगा कि कितने प्रतिशत किसान इन नयी सुविधाओं और शिक्षाओंसे कोई लाभ नहीं उठाते।

१—बीज उन्नत
- धान—५४.५ प्रतिशत
- गेहूँ—६२.३ ,,
- ज्वार—६१.१ ,,

२—खाद
- सल्फेट—२०.० प्रतिशत
- सुपर फास्फेट—९२.७ ,,

३—खेती की उन्नत प्रणाली
- जापनी पद्धति—८५.० प्रतिशत
- —नये औजार ७८.० प्रतिशत

५—कृषि नाशक औषधी ९० प्रतिशत

यह संख्याएं सामुदायिक योजना के मूल्यांकन विवरण से ली गई हैं। रुपये की कमी इस असहयोग का कारण नहीं है। इस कारण केवल यह है कि सरकार के शिक्षित कर्मचारी किसानों को अपने विश्वास में लेकर उन्हें यह निश्चय नहीं करा सकें हैं कि कृषि की वैज्ञानिक विधियों से वे सचमुच वे अपना उत्पादन बढ़ा सकेंगे। आज तो आवश्यकता यह कि किसानों के साथ तादात्म्य स्थापित करके उनमें विश्वास उत्पन्न किया जाय तभी हम अपनी योजनाओं में परिवर्तन कर सकेंगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया साहित्य

आधुनिक भारत का वृहत् भूगोल -- ले० श्री चतुर्भुज मामोरिया। प्रकाशक—गयाप्रसाद एण्ड संन्स, आगरा। पृष्ठ सं० ६०१। मूल्य १८.०० रुपये सजिल्द।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक 'सम्पदा' के पाठकों के परिचित हैं। वे अपने विषय के गंभीर और प्रकाण्ड विद्वान हैं। उनकी 'आर्थिक और वाणिज्य भूगोल' का परिचय इन्हीं पंक्तियों में पहले दिया जा चुका है।

प्रस्तुत पुस्तक में भी विद्वान लेखक ने उसी ऊँचे स्तर को कायम रखा है। लेखक के गंभीर अध्ययन, व्यापक ज्ञान और परिश्रम की छाप प्रत्येक पृष्ठ पर है! लेखक को अपने परिश्रम के कारण इतना आत्मविश्वास है कि वह यह लिखता है कि जो कुछ अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा, वह सब तो इस पुस्तक में मिलेगा ही किन्तु जो इसमें मिलेगा, वह कहीं नहीं मिलेगा। डा० के० पी० रोड़े के शब्दों में इसको भारतीय भूगोल के ज्ञान का वृहत् कोष कहा जा सकता है। हमारी सम्मति में ये दोनों स्थापनाएं असत्य नहीं हैं।

लेखक की लेखन शैली इतनी व्यापक और विशद है कि प्रत्येक प्रकरण अपने आप में एक-एक अलग पुस्तक बन गया है। समस्त पुस्तक ४३ अध्यायों में विभक्त है। कुछ अध्याय भारत की भौतिक और भू-रचना सम्बन्धी हैं। कुछ अध्याय सिंचाई, यातायात, खनिज, शक्ति के स्रोत, वन-सम्पत्ति, पशु-धन, कृषि, विविध उद्योग और बन्दरगाहों आदि पर हैं। २-३ अध्यायों में जन-संख्या की विविध समस्याओं पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। भाषा, धर्म, प्रजातियों और जन-जातियों पर भी अलग-अलग प्रकरण हैं। प्रत्येक प्रकरण भूगोल के उच्च विद्यार्थी ही नहीं राजनीति, अर्थशास्त्र तथा देश सम्बन्धी समस्याओं में विचार करने वाले के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। लेखक ने स्थान-स्थान पर तालिकाएं तथा मानचित्र आदि देकर अपने विषय को बहुत व्यापक और स्पष्ट कर दिया है। देश में चलने वाली नयी-नयी आर्थिक प्रवृत्तियों की नवीनतम सूचना भी इस पुस्तक से पाठकों को मिल जायगी।

ग्रंथ-लेखक का दृष्टिकोण अत्यन्त उदार और व्यापक है। वह दकियानूसी तरीके से नहीं सोचता और न आज-कल के शासन नेताओं की हां में हां मिलाकर अन्धानुसरण करता है। कृत्रिम खाद और जन-संख्या निरोध सम्बन्धी विचारों से यह स्पष्ट हो जाता है। वह इन दोनों को बहुत आगे बढ़ने देने में हानि भी अनुभव करता है।

संक्षेप में यह पुस्तक भूगोल, वाणिज्य, अर्थशास्त्र और राजनीति—सभी क्षेत्रों में उपयोगी सिद्ध होगी। इस उत्कृष्ट साहित्य से हिन्दी के भण्डार को समृद्ध करने के लिए लेखक और प्रकाशक बधाई के पात्र हैं। —कृष्णा

जीवन साहित्य ( तालस्ताय-विशेषांक )—सम्पादक—श्री हरिभाऊ उपाध्याय, श्री यशपाल जैन। प्रकाशक—सस्ता साहित्य मण्डल, कनाट सरकस, नई दिल्ली। वार्षिक मूल्य ४.०० रुपये। इस अंकका मूल्य १.५० रु०।

महर्षि और साहित्यकार तालस्ताय विश्व की चन्द विभूतियों में से एक हैं, जिनका प्रभाव अपने युग तक ही सीमित न होकर युग-युगों तक रहेगा। जीवन-साहित्य का

( शेष पृष्ठ ४२ पर )

## मुद्रास्फीति

[ पृष्ठ १२ का शेष ]

योजना आयोग ने तीसरी योजनावधि में घाटे की अर्थ-व्यवस्था का अन्दाजा ५५० करोड़ रुपये लगाया है। वह क्या है कि साधन-स्रोतों का अधिक-अन्दाजा लगाने तथा निर्धारित लक्ष्यों के लिए कम खर्च आंकने के फलस्वरूप घाटे का यह आंकड़ा अत्यन्त कम आंका गया है। घाटे की अर्थव्यवस्था इससे कहीं अधिक होगी। इसके अलावा, अभी भी, जब हम तीसरी योजना की शुरूआत करनेवाले हैं, न केवल मुद्रास्फीति का बहुत भारी दबाव विद्यमान है बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था के गंभीर भागों में मुद्रास्फीति की गहरी संभावनाएं विद्यमान हैं।

अधिकांश जनता के लिए मुद्रास्फीति एक अनवरत अभिशाप है। हमारे देश की स्वतंत्र अर्थव्यवस्था में, जहां पर निजी-सम्पत्ति की संस्था विद्यमान है, मुद्रास्फीति, देश की सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक संस्थाओं में जनता के विश्वास के लिए सबसे बड़ा खतरा है। इसलिए यदि मुद्रास्फीति पर नियन्त्रण नहीं लगाया गया तो नियोजित विकास की सिद्धि में जनतंत्र की क्षमता से जनता का विश्वास उठ जायगा। ●●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पंजाब की औद्योगिक आवश्यकताएं और सफलतायें

श्री मोहनलाल, उद्योग मंत्री, पंजाब

इस बात का दावा नहीं किया जा सकता कि पंजाब उद्योगों में विकसित राज्य है। वास्तव में यह है भी नहीं। लेकिन फिर भी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिन में यह राज्य काफी आगे बढ़ा हुआ है। इस दिशा में छोटे उद्योग सम्बन्धी ऐसा क्षेत्र है, जिसमें इस राज्य को प्रमुखता प्राप्त है। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि पंजाब छोटे उद्योगों का घर है। भारत के उद्योग मंत्री श्री मनुभाई शाह ने इस राज्य को 'भारत के छोटे उद्योगों के क्षेत्र का महान केन्द्र' बताया है और 'इस आन्दोलन का एक उज्ज्वल उदाहरण' कहा है। पिछले कुछ वर्षों में विभाजन के कारण यहां की आर्थिक स्थिति को जो गहरी चोट पहुंची थी, उसे सुधारने के लिए छोटे उद्योगों द्वारा प्रयत्न किया गया है। वास्तव में इन उद्योगों को विकसित करना सरकार ने अपनी एक प्रमुख नीति बनाई है। इन प्रयत्नों में जनता भी पीछे नहीं रही। यह देखा गया है कि छोटे उद्योग इतनी तेजी से विकसित हुए कि निर्धारित नीति के लक्ष्य भी वास्तविक गति के सामने पीछे रह गये। औद्योगिक प्रगति के मार्ग में कच्चे माल, बिजली और अन्य पदार्थों की इस राज्य में कमी के बावजूद यहां इतनी प्रगति हुई है।

छोटे उद्योगों के बारे में लोगों को इतना अधिक उत्साह है कि छोटे पैमाने के उद्योगों की आवश्यकताओं से अधिक माल उत्पन्न हो रहा है। नवीनतम अनुमानों के अनुसार राज्य के विविध केन्द्रों में छोटे पैमाने के २५ हजार से अधिक औद्योगिक एकक हैं।

ग्राम उद्योग विकास कार्यक्रम की ओर पंजाब ने विशेष बल दिया है। ग्रामों में औद्योगिक विकास कार्यक्रम राज्य के उद्योग विभाग और राज्य के खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड एजंसियों द्वारा चलाया जा रहा है।

खण्ड क्षेत्र में कुछ रुकावटों के कारण निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति संभव नहीं हो सकी। लेकिन अब ये बाधाएं दूर हो चुकी हैं और एक निश्चित कार्यक्रम तैयार किया जा चुका है। अब यह प्रस्ताव किया गया है कि प्रथम श्रेणी के खण्डों में प्रति वर्ष १३ हजार रुपए खर्च किए जाएं। यह राशि ग्राम क्षेत्रों में कौशल और उद्योगों को विकसित करने के लिए प्रयोग में लाई जाएगी। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक त्रिमुखी योजना बनाई गई है, जो कि इस प्रकार है।

१. प्रशिक्षण सुविधाएं जुटाना।

२. औद्योगिक सहकारिताओं को प्रबन्धकीय सहायता के रूप में सहायता देना।

३. उपकरण और उन्नत औजारों के लिए आर्थिक सहायता देना।

इस खण्ड व्यवस्था को उद्योग विभाग जैसी अन्य एजेंन्सियां भी सहायता प्रदान करेंगी। तीसरी योजना में इस विभाग में १० लाख रुपयों की लागत से ४५ प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करने का प्रस्ताव है।

इस योजना के अमल में आने के बाद खण्डों की आवश्यकताओं की पूर्ति होगी। इस के अलावा २-२ लाख रुपयों की लागत से ५० ग्राम औद्योगिक बस्तियां भी स्थापित की जाएंगी। इन बस्तियों में उद्योगों को विकसित करने के लिए ग्राम कारीगरों को मूल-भूत सुविधाएं जुटाई जाएंगी। यह भी प्रस्ताव है कि १० विकास केन्द्र स्थापित किए जाए, जो कच्चा माल, हाट और ऐसी अन्य बातों के बारे में सुविधाएं प्रदान करेंगे। इन के इलावा राज्य उद्योग सहायता अधिनियम के अधीन इस योजना में ३.५ करोड़ रुपए की राशि ऋणों और सहायताओं के रुप में वितरित करने की व्यवस्था की गई है। तीसरी एजेन्सी अर्थात् खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड औद्योगिक इकाइयों को सहायता देगी और प्राविधिक प्रशिक्षण का प्रबन्ध करेगी।

पंजाब में मशीनी औजार और कृषि औजारों का उत्पादन वर्ष १९५९ में लगभग ३.६ करोड़ रुपयों का हुआ। बटाला के केवल एक ही मशीनी औजारों के उत्पादन केन्द्र में सारे भारत की तुलना में ५० प्रतिशत

( शेष पृष्ठ ४२ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

( पृष्ठ १८ का शेष )

जूट उद्योग के ८० प्रतिशत उत्पादनों की निर्यात हो जाता है अतः उद्योग की स्थिति को सुदृढ़ बनाये रखने के लिए विश्व के बाजारों की बदलती हुई अवस्था का लगातार अध्ययन नितान्त आवश्यक है। इसके साथ की निर्यात संवर्द्धन भी आवश्यक है जिससे खोये हुए बाजार फिर हाथ आ जायें और वर्तमान बाजारों में हमारे पैर न केवल जमें ही वरन और भी मजबूत हो जांय।

जूट निर्यात द्वारा हमारी पंचवर्षीय योजनाओं की सफलता के लिए मशीनरी खरीदने हेतु अधिक डालर विनिमय प्राप्त करके एवं देश का औद्योगिक एवं आर्थिक संतुलन कायम रखने के लिए निर्यात परामर्श दाता समिति एवं सरकार दोनों को उद्योग की उपरोक्त समस्याओं के निवारणार्थ भरसक आवश्यक प्रयत्न करने की आवश्यकता है। आशा है हमारी सरकार शीघ्र इस ओर आवश्यक ठोस कदम उठायेगी।

## उद्योग की सफलताएं—

महायुद्ध के उपरान्त भारतीय जूट उद्योग एक-दो वार्ड पर खड़ा हो गया था परन्तु अब वह अपनी अभीष्ट दिशा की ओर बढ़ चुका है। वर्तमान में जूट उद्योग के सामने भारी असुविधाएँ होते हुए भी उसने उल्लेखनीय उन्नति की है। उसने अपनी आधारभूत एकता, क्षमता, अवसर के उपयुक्त निर्वाह करने की कुशलता एवं अत्यन्त उच्चकोटि की संगठन शक्ति प्रदर्शित की है। जूट उद्योग की समस्याओं के निवारणार्थ किये गये प्रयत्नों में कहां तक सफलता मिली है, इसे निम्न तथ्यों द्वारा जाना जा सकता है।

कच्चे जूट का उत्पादन बढा—हर्ष है की देश में इस दिशा में काफी प्रशंसनीय कार्य हुआ है। सरकारी और गैर सरकारी दोनों के प्रयत्नों स्वरूप देश में जूट की प्रति एकड़ पैदावार में काफी वृद्धि हुई है। १९५८-५९ के अन्तिम अनुमान के अनुसार प्रति एकड़ २.८३ गांठ जूट पैदा हुआ जबकि गतवर्ष यह संख्या २.३३ गांठ थी। यद्यपि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद यह उपज सबसे ज्यादा हुई है तथापि इससे हमें संतोष नहीं होना चाहिए, क्योंकि पाकिस्तान में प्रतिएकड़ पैदावार ३.४२ से ४.४८ गांठ तक बदलती रही है। प्रतिएकड़ उत्पादन वृद्धि के फलस्वरूप ही जुलाई १९५८-५९ में देश में पटसन का उत्पादन ६७ लाख ५९ हजार गांठ हुआ, फलस्वरूप पाकिस्तान से कच्चे जूट का आयात कम हो गया। जुलाई १९५८-५९ में पाकिस्तान से हमने केवल ३,३०,२०० गांठ कच्चा जूट मंगाया जबकि १९५७-५८ की इसी अवधि में ६.७५.००० गांठ पाट, का आयात हुआ था। इस समय पाकिस्तान से केवल पटसन की कतरनें और बहुत बढ़िया किस्म का पटसन ही मंगाया जाता है इसके अतिरिक्त जूट की किस्म सुधारने के भी प्रयत्न किये जा रहे हैं। केन्द्रीय व राज्य सरकारों द्वारा उत्तम बीज व खाद तथा सिंचाई की उचित व्यवस्था की जा रही है तथा कृषकों को सुधरे खेती के ढंग अपनाने के लिए आर्थिक सहायता भी दी जा रही है।

मशीनों का अभिनवीकरण—जूट मिलों में लगी पुरानी मशीनों के अभिनवीकरण के लिए भारत सरकार ने राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम के द्वारा आर्थिक सहायता दी है। अब तक लगभग ५० प्रतिशत मशीने बदली जा चुकी हैं। अनुमान है कि १९६० तक उद्योग की सम्पूर्ण पुरानी मशीनों की जगह नई मशीने स्थापित की जा सकेंगी।

उत्पादनों के उपयोग की विविधता—इस दिशा में सफलता प्राप्त करने के लिए भारतीय जूट मिल्स एसोसियेशन द्वारा अनेक परीक्षण किये गये हैं। इस सम्बन्ध में हाल ही में एक नई घोषणा की गई है जिसके अनुसार अमेरिका की नहरों में एसफाल्टर के पलुस्तर के साथ टाट का अस्तर भी लगाया जा सकता है। अतः अगर यह योजना सफल रही तो जूट के टाट की अमेरीका में अच्छी खपत हो सकेगी। साथ ही अन्य देशों में भी जूट की मांग बढ जायगी। इसके अतिरिक्त दरियों के नीचे अस्तर लगाने में भी टाट का प्रयोग करने सम्बन्धी परीक्षण किये जा रहे हैं। आवश्यकता है जूट से वस्त्र निर्माण सम्बन्धी दिशा में प्रयत्न कियेजाने की ताकि नये-नये निमार्णों द्वारा उद्योग को स्थानापन्न वस्तुओं की प्रतिस्पर्द्धा से बचाया जा सके।

निर्यात वृद्धि के प्रयत्न—१९४९ से उद्योग प्रतिवर्ष बिक्री के विकास और जनसम्पर्क कार्य पर अधिकाधिक धन व्यय करता रहा है। केन्द्रीय सरकार ने भी इस कार्य में उद्योग को उदारता पूर्वक सहायता दी है। भारतीय जूट



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल एसोसियेशन के अमेरिका और ब्रिटेन में शाखा कार्यालय है। अमेरिका का कार्यालय अमेरिका, कनाडा, मध्य तथा दक्षिणी अमेरिका से व्यापारिक सम्पर्क स्थापित करता है और इग्लैंड का कार्यालय योरोपीय क्षेत्रों से व्यापारिक सम्पर्क स्थापित करता है। साथ ही भारतीय जूट का इन देशों में अधिकाधिक प्रचार करने के प्रयत्न किये जाते हैं। इस एसोसियेशन ने आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि विश्व के कई देशों में शिष्ट मंडल भी भेजे हैं। इन क्षेत्रों में प्रचार कार्य, जनसम्पर्क और विज्ञापन आदि के आन्दोलन अधिक तेजी से आरम्भ कर दिये गये हैं। अमेरिका में जूट के सामान के प्रयोग के सम्बन्ध में नये क्षेत्रों की खोज करने पर अधिकाधिक बल दिया जा रहा है। समस्त संसार में जो प्रदर्शनियां तथा मेले होते हैं, उनमें जूट उत्पादनों के नमूने प्रदर्शित किये जाते हैं। भारत सरकार के विदेशों में जो व्यापार प्रतिनिधि हैं उनके पास से विभिन्न बाजारों के विषय में जो महत्वपूर्ण समाचार प्राप्त होते हैं, उन्हें भारत सरकार एसोसियेशन को बतलाती रहती है। इस प्रकार जूट उद्योग अपने विभिन्न प्रयत्नों द्वारा निर्यात बढ़ाने में प्रयत्नशील है।

जूट निर्यात को बढ़ाने में सहायता देने के लिए भारत सरकार ने अपनी उदारनीति का प्रशंसनीय परिचय दिया है। सरकार ने जूट के सामान पर से निर्यात कर बिल्कुल हटा दिया है। कोरिया युद्ध काल में १५०० रु० प्रति टन हैसियन पर और ३५० रु० प्रति टन बोरों पर निर्यात कर था। इस प्रकार उपरोक्त सफलताओं को देखते हुए हम कह सकते हैं कि जूट उद्योग अपने विकास की दिशा में पूर्ण सजग है और निकट भविष्य में ही अपनी पूर्व स्थिति को प्राप्त करने में सफल हो सकेगा।

देश में औद्योगिक विकास हो रहा है अतः देश में जूट के सामान की खपत बढ़ रही है और निकट भविष्य में और अधिक बढ़ने की संभावना है, जैसा कि निम्न सारिणी से स्पष्ट है:—

| वर्ष | वार्षिक आन्तरिक खपत |
|---|---|
| १९५४ | १.१८.८०० टन |
| १९५५ | १.७०.८०० ,, |
| १९५६ | १.९३.००० ,, |

अनुमान है कि द्वितीय योजना की समाप्ति तक देश में प्रतिवर्ष लगभग ३ लाख टन जूट सामान की आन्तरिक खपत होने लगेगी। अमेरिकन उद्योग पतियों का कहना है कि यदि विशेष आकार व भार की दूसरी चीजें भारत बनाने लगे तो अमेरिका प्रति वर्ष कई हजार गांठें जूट खरीद सकता है।

स्पष्ट है कि बढ़ती हुई आन्तरिक खपत व विदेशों में भारतीय जूट की मांग के कारण देश में निश्चित रूप से जूट का उत्पादन बढ़ेगा। अधिक उत्पादन होने से प्रति इकाई उत्पादन व्यय कम होगा। और इस प्रकार जूट का माल विदेशों को सस्ते मूल्य पर निर्यात किया जा सकेगा। मूल्य कम होने से मांग बढ़ेगी और फिर मांग बढने से उत्पादन बढेगा। इस प्रकार इस आर्थिक चक्र की गति दिनों दिन बढ़ती रहेगी।

● ●

सस्ता साहित्य मंडल से प्रकाशित

# जीवन साहित्य

उन मासिक पत्रों में से है, जिसके प्रत्येक अंक में चुनी हुई बढ़िया, विचार-प्रेरक सामग्री रहती है।

● आचार्य विनोबा ने कहा, "जीवन साहित्य विचार के लिए अच्छा खाद्य देता है।"

● श्री वियोगी हरि की राय में "इस पत्र के जैसे स्वस्थ विचार-पूर्ण लेख अन्यत्र कम ही देखने में आते हैं।"

पत्र के ग्राहकों को

'मंडल' के प्रकाशनों के मूल्य में भी रियायत मिलती है।

सम्पादक—हरिभाऊ उपाध्याय : यशपाल जैन

वार्षिक शुल्क : केवल चार रुपये

तत्काल ग्राहक बन जाइये !

सस्ता साहित्य मंडल

नई दिल्ली



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## पंजाब के उद्योग

( पृष्ठ ३९ का शेष )

से अधिक मशीनी पुर्जों का उत्पादन हुआ। राज्य में बाईसिकलों, सिलाई की मशीनों और इनके लिए पुर्जों का उत्पादन लगभग ४.४ करोड़ रुपयों तक हुआ।

इन महान सफलताओं के अलावा बड़े पैमाने के उद्योगों का उल्लेख भी किया जा सकता है यद्यपि उनकी संख्या बहुत थोड़ी है। ५० से अधिक काम करने वाले व्यक्तियों वाली फैक्टरियों की संख्या दूसरी योजना के अन्त तक १५० के लगभग थी। बड़े पैमाने के मौजूदा उद्योगों की संख्या जो कि बहुत थोड़े से हैं, इस प्रकार हैं।

एक कागज की मिल, दो सीमेंट की फैक्टरियां, ७ खांड की मिलें, ६ सूती कपड़े की मिलें, ६ बाईसिकल की फैक्टरियों और एक नंगल की रासायनिक फैक्टरी जिसे भारत सरकार तैयार करा रही है।

तीसरी योजना को प्रचलित औद्योगिक कार्यक्रम को इस प्रकार से प्रोत्साहन दिया जाए कि विस्तृत कृषि उत्पादन के काम को शिथिल किये बिना ही इस दिशा में धीरे-धीरे प्रगति हो सके। तीसरी योजना में स्थापित की जाने वाली फैक्टरीयों के नाम इस प्रकार हैं।

कांगड़ा में एक सीमेंट की फैक्टरी जो कि प्रति वर्ष २,२५,००० टन सीमेन्ट तैयार कर सकेगी, एक अखबारी कागज़ की फैक्टरी जो प्रति वर्ष ३० हजार टन कागज़ तैयार कर सके। ५० हजार तकलों वाली कपड़े की २ फैक्टरियां और ४ खांड की फैक्टरियां। यह भी विचार है कि भाखड़ा नंगल वर्कशाप को फौलादी ढांचे और अन्य इंजनीयरिंग चीजें बनाने का एक बड़ा यूनिट बना दिया जाए। • •

( पृष्ठ ३८ का शेष )

प्रस्तुत विशेषांक ( अक्तूबर-नवम्बर' ६०:संयुक्त अंक ) तालस्ताय की ५० वीं पुण्यतिथि के अवसर पर श्रद्धांजलि के रूप में प्रकाशित किया गया है। इस अंक में तालस्ताय के जीवन और कृत्तित्व से सम्बन्धित सम्पादकीय सहित २८-२९ लेख दिये गये हैं, जिस को पढ़ने से पाठकों को पर्याप्त जानकारी और विचार सामग्री एक ही स्थान पर मिल जाती है। विशेषांक में जहां देशी और विदेशी विद्वान लेखकों की रचनाएं दी गई हैं, वहां स्वयं तालस्ताय प्रणीत कुछ मूल रचनाओं को भी स्थान दिया गया है। इस अंक के कुछ लेखक हैं सर्व श्री महात्मा गांधी, विनोबा, जैनेन्द्रकुमार, स्टीफन ज्विग, काका कालेलकर, डा० रामकुमार वर्मा, अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार, यशपाल जैन, मन्मथनाथ गुप्त, मोहनसिंह सेंगर आदि-आदि।

—कुमारसम्भव

साप्ताहिक भारत सेवक ( बाल-स्वास्थ्य-विशेषांक ) —इस अंक के सम्पादक—श्री बनारसीदास चतुर्वेदी। प्राप्तिस्थान—भारत सेवक समाज, कनाट सरकस, नई दिल्ली। मूल्य ५० न० पै०।

अब भारत में भी बच्चों के समुचित विकास और बच्चों के शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक विकास के लिए तरह-तरह के उपाय किये और बताये जाने लगे हैं। इस दृष्टि से प्रस्तुत विशेषांक का प्रकाशन बड़ा उपयोगी है। अंक में बालकों के स्वास्थ्य, बाल मनोविज्ञान और बाल-मनोविकास से सम्बन्धित अधिकारी विद्वानों, लेखकों और महिलाओं के लेख दिये गये हैं। बच्चों के भिन्न-भिन्न प्रकार के बीसियों चित्र भी दिये गये हैं। कुमारसम्भव

वस्त्र व्यापार
की
प्रमुख पत्रिका
'मध्य प्रदेश वस्त्र व्यापार पत्रिका'
पत्रिका विभाग :
श्री म. तु. क्लाथ मार्केट
एसोसिएशन
म० तु० क्लॉथ मार्केट, इन्दौर (म. प्र.)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ वृत्त चयन

## संसार में सबसे बड़ा उत्पादक

१—संयुक्त राष्ट्र अमरीका अनाज, रुई, लोहा, तांबा, कोयला और पैट्रोलियम का सबसे बड़ा उत्पादक है।

२—आस्ट्रेलिया ऊन का सबसे बड़ा उत्पादक है।

३—दक्षिणी अफ्रीका सोने का सबसे बड़ा उत्पादक है।

४—न्यूज़ीलैण्ड सूअर और भेड़ों का सबसे बड़ा निर्यातक है।

५—भारत चाय और गन्ने का सबसे बड़ा उत्पादक है।

६—पाकिस्तान जूट का सबसे बड़ा उत्पादक है।

७—घाना कोको का सबसे बड़ा उत्पादक है।

८—मलाया कच्चे टिन का सबसे बड़ा उत्पादक है।

९—चीन चावल का सबसे बड़ा उत्पादक देश है।

१०—सबसे अधिक काफी ब्राजील में पैदा होती है।

११—चुकन्दर की चीनी सबसे अधिक रूस में बनती है।

## समुद्र का पेय जल—

एक कहावत मशहूर है कि "सर्वत्र जलराशि फैली है लेकिन फिर भी पीने को एक बूंद जल उपलब्ध....." लेकिन सोवियत जहाज पर जो इस समय कालासागर में चल रहा है, यह कहावत निश्चय ही लागू नहीं होती। इस जहाज में काम करने वाले आनन्द से समुद्र का जल पी रहे हैं।

सोवियत संघ में बने एक विशेष प्रकार के यन्त्र द्वारा समुद्र का पानी साफ कर दिया जाता है। सफाई की इस प्रक्रिया द्वारा सभी अशुद्ध तत्व पानी से अलग कर दिये जाते हैं और समुद्र का खारा पानी शुद्ध पेय जल में परिवर्तित हो जाता है।

इस यन्त्र द्वारा प्रतिघण्टा लगभग ११० गैलन समुद्री पानी पेय जल में परिवर्तित होता है। पानी को साफ करने में पोलीमेर फिल्टर का प्रयोग होता है जो देखने में रेल जैसा मालूम होता है। एक गैलन पानी साफ करने के लिए आध छटांक से थोड़ा अधिक पोलीमेर फिल्टर की जरूरत होता है।

दुनियाँ की सबसे बड़ी विचित्र-प्रदर्शनी आजकल लन्दन में हो रही है। यह पदर्शनी ६५० ई० पू० से आजतक के करेंसी नोटों और मुद्राओं की है जिससे सिक्के के इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ रहा है।

संसार में कागज की मुद्रा का प्रचलन सर्व प्रथम चीन में ही आज से १३०० वर्ष पूर्व हुआ था। इन नोटो में से एक नोट प्रदर्शनी में है।

पहले पहल मोरीशस की सरकार ने कागज के नोट के निर्माण के लिये १८६० में एक फर्म को आदेश दिया था और तब से १०० सरकारों बैंकों के लिये संसार में नोट छापे जा रहे हैं।

नोट और धातु मुद्रा ही करेंसी के रूप नहीं हैं, दांत, हड्डियां और चाय के वर्तनों के टुकड़े भी मुद्रा के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं। प्रदर्शनी में फिजी से ह्वेल मछली का दांत और सोलमन द्वीपुओं से कुत्ते के दांत, रखे हैं।

## भारतीय रेलें

१—भारत का रेल-पथ एशिया में सबसे बड़ा और विश्व में चौथा है। इनकी लम्बाई ३५,००० मील से अधिक है।

२—अप्रैल २६,१८५३ को भारत की पहली रेलगाड़ी बम्बई से थाना तक यानी २१ मील के मार्ग पर चली।

३—स्वराज्य होने पर रेलों का विस्तार किया गया। पुराना पटरियां, इंजन, डब्बे और अन्य सामान बदले गए और लाइनों की मरम्मत की गयी।

४—पहली योजना के पहले रेलों में ९ अरब ७० करोड़ रु० की पूंजी लगी थी। पहली और दूसरी योजना की अवधि में यह पूंजी बढ़कर १५ अरब ६० करोड़ रु० हो गई।

५—इस अवधि में रेलों को माल ढोने की क्षमता ९ करोड़ १४ लाख टन प्रतिवर्ष से बढ़कर १६ करोड़ २० लाख टन प्रतिवर्ष हो गई।

६—आजकल प्रतिदिन लगभग ४० लाख यात्री रेलों



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सफर करते हैं और ४ लाख टन माल ढोया जाता है।

७—केन्द्रीय सरकार को रेलों से बहुत धन मिलता है। अनुमान है कि तीसरी योजना में देश के विकास के लिए रेलों से २५० करोड़ रु० मिलेगा। यह बचत प्रतिवर्ष ६५-७० करोड़ रु० घिसाई खाते, व्याज, केन्द्रीय लाभांश आदि देने के बाद होगी।

८—इस समय भारतीय रेलों के पास १०,६०० इंजन, २८,९०० सवारी और ३ लाख ५४ हजार माल के डिब्बे हैं। तीसरी योजना में १,०३१ इंजन, ४,९८३ सवारी और ८३,१६९ माल के डिब्बे बढ़ाए जाएंगे।

९—स्वराज्य के पहले भारत में ३७ रेल कम्पनियां थीं। प्रबंध और संचालन को सुविधा को ध्यान में रखकर इन सबको मिलाकर ८ क्षेत्र (जोन) में बांटा गया है।

१०—तीसरी योजना में रेलें १,२२० करोड़ रु० का सामान खरीदेंगी। इसमें केवल १३० करोड़ रु० विदेशी युद्ध, अर्थात विदेशी सामान पर खर्च होगा। दूसरी योजना में १,१२१ करोड़ रु० का सामान खरीदा गया था जिसमें ३२० रु० बाहर से सामान मंगाने में लगा था। इससे पता चलता है कि देश में अब कितनी अधिक रेल-सामग्री बनने लगी है।

११—भारत का सबसे बड़ा सरकारी उद्योग रेलवे है। इनमें सबसे अधिक यानी ११ लाख ५० हजार कर्मचारी काम करते हैं।

## योजनाओं का लक्ष्य

संविधान के निदेशक सिद्धांतों में कहा गया है कि सरकार देश की आर्थिक और सामाजिक उन्नति के लिए और सब श्रेणियों के लोगों के लोगों के योग्य क्षेत्र के लिए काम करेगी। इन योजनाओं का उद्देश्य केवल यही न हो कि देश में कल कारखाने और मशीनें लगें, बल्कि लोगों की प्रतिभा—बुद्धि और कौशल भी बढ़े और ऐसी व्यवस्था या तंत्र कायम हो, जो कि लोगों की आवश्यकता और आकांक्षा पूरी कर सके।

योजना आयोग के मुख्य काम ये हैं—(१) देश में प्राकृतिक मानवी और पूंजीगत साधनों का अनुमान लगाना और जिन साधनों की कमी मालूम दे, उन्हें जुटाने के उपाय सुझाना—(२) इन साधनों का सबसे उपयुक्त प्रयोग करने के लिए योजनाएं बनाना; (३) यह तय करना कि किस क्रम से योजनाएं शुरू की जाएं और प्रत्येक क्रम के लिए साधन या धन निर्धारित करना। (४) यह पता लगाना कि जिन कारणों से विकास की गति धीमी होती है। तथा कैसे इन्हें दूर किया जाए (५) योजना के प्रत्येक लाभ के लिए आवश्यक तंत्र या मशीनरी का निर्देश करना और (६) योजना की प्रगति को देखते रहना तथा जो हेरफेर आवश्यक हों, उन्हें बताना।

## पी० एल० ४८० अन्तर्गत मिली सहायता

भारत सरकार ने पी० एल०-४८० (टाइटिल १) कार्यक्रम के अन्तर्गत अमरीका से १० करोड़ ९६ लाख, २८ हजार रु० की खेती की जिन्स मंगाने के लिए ५ समझौते किये हैं। इनका भुगतान रुपये में होगा। समझौते का ब्यौरा इस प्रकार है:

| समझौता | जिन्स | रकम (डालरों में) |
|---|---|---|
| १. २९ अगस्त, १९५६ का पहला पी० एल० ४८० समझौता (बाद में संशोधित) | गेहूँ, चावल, कपास, तम्बाकू और दूध की चीजें | ३५,४५,५६,००० |
| २. २३ जून, १९५८ का पूरक समझौता | गेहूँ और मक्का | ५,५२,७७,००० |
| ३. २६ सितम्बर, १९५८ का दूसरा पी० एल०-४८० समझौता | गेहूँ और मक्का | २५,९८,००,००० |
| ४. १३ नवम्बर, १९५९ का तीसरा पी० एल० ४८० समझौता (संशोधित) | गेहूँ, चावल, कपास, तम्बाकू और दूसरे अन्न | २९,७८,७०,००० |
| ५. ४ मई, १९६० का चौथा पी० ४८० समझौता (संशोधित) | गेहूँ, चावल, कपास, तम्बाकू और सोयाबीन तेल | १,३३,४७,००,००० |
| | कुल | २,३०,२२,०३,००० |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं

## एशिया का आर्थिक विकास

यदि एशिया और सुदूरपूर्व के देशों की अधिक आर्थिक उन्नति करनी है तो उन्हें इस्पात का उत्पादन कई गुना बढ़ाना होगा। अगले २० या ३० वर्षों में जहां साधन हों, इस्पात के उत्पादन की कोशिश की जानी चाहिए। जब हम भारतीय कुछ विश्वास के साथ कह सकते हैं कि दूसरी पंचवर्षीय योजना के लिए इस्पात तैयार करने का हमने जो कार्यक्रम बनाया था वह अवश्य पूरा हो जाएगा और जल्दी ही हमारे देश में ६० लाख टन इस्पात बनने लगेगा। तीसरी पंचवर्षीय योजना में हमने इस्पात का उत्पादन ४० लाख टन और बढ़ाने का निश्चय किया है और इस तरह मार्च १९६६ तक भारत में १ करोड़ टन इस्पात बनाया जा सकेगा। तीसरी पंचवर्षीय योजना का मुख्य उद्देश्य ऐसी स्थिति पैदा करना है जिससे आगे के आर्थिक विकास के लिए हमें दूसरों पर निर्भर न करना पड़े। इसके लिए मूल बात यह है कि देश में बचत और पूंजी का नियोजन इतना अधिक हो जाए ताकि आय निरन्तर बढ़ती जाए। इसके लिए यह भी जरूरी है कि जिन उद्योगों आदि में पूंजी लगती हो, उनके लिए आवश्यक मशीनें और यंत्र आदि देश में ही बनाये जा सकें। साथ ही उच्च कोटि के कारीगर और इन्जीनियर आदि भी तैयार हों।

एशिया और सुदूरपूर्व के देशों में से अधिकांश देश हाल में ही स्वतन्त्र हुए हैं और ये गरीब हैं। इन देशों के अधिकांश लोग खेती से अपनी जीविका कमाते हैं और यहां ऐसे असंख्य लोग हैं, जिन्हें गुजारे लायक काम की कमी है। यह ठीक है कि सब देश ऐसे नहीं हैं। कुछ काफी आगे बढ़े हुए हैं। और वे दूसरों की सहायता कर सकते हैं। आज विज्ञान और शिल्प की इतनी उन्नति हो चुकी है, जिसकी कल्पना भी १०-२० वर्ष पहले नहीं की जा सकती थी। प्राकृतिक साधनों का अभाव भी किसी देश की उन्नति में बाधक नहीं हो सकता। आज यदि किसी देश की आर्थिक प्रगति में कोई बाधा हो सकती है तो वह इस बात से कि दुनिया के दूसरे देशों के लोग अपने ज्ञान से पिछड़े हुओं को फायदा पहुँचाने के इच्छुक नहीं। इकाफे क्षेत्र के देश अभी समृद्धि से बहुत दूर हैं। इस लिए उनके साथियों का अपनी समस्याओं के बारे में एक दूसरे को जानकारी देने से लाभ होगा।

## तीसरी योजना और विदेशी-मुद्रा

श्री बलिराम भगत ने बताया कि तीसरी पंचवर्षीय योजना के शुरू में हमारा विदेशी-मुद्रा कोष बहुत कम होगा। साथ ही हमारी विदेशी-मुद्रा की जरूरतें कहीं अधिक हो जाएंगी। दूसरी योजना में जहां नियोजन ६,७५० करोड़ रु० का बैठेगा, वहां तीसरी योजना में यह इससे ५० प्रतिशत से भी ऊपर, करीब १०,२०० करोड़ रु० होगा। हमें २,००० करोड़ रु० की मशीनें और बाकी जरूरतों के लिए ३,५७० करोड़ रु० का दूसरा माल तीसरी योजना की अवधि में आयात करना होगा।

इसके मुकाबले अपने निर्यात से हमें ३,५७० करोड़ रु० की विदेशी-मुद्रा मिलेगी इसका मतलब यह हुआ कि न तो हम अपने पुराने ऋण को चुका पाएंगे, जो इस अवधि में ५०० करोड़ रु० हो जाएगा और न हमारे पास विकास के कामों के लिए मशीनों आदि के आयात लिए २,१०० करोड़ रु० की विदेशी-मुद्रा होगी। इस प्रकार हमें अपना ऋण चुकाने और विकास के कामों के लिए २,६०० करोड़ रु० की विदेशी सहायता चाहिए। विदेशी सहायता के वायदों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि अभी तक हमें ७५० करोड़ रु० की सहायता का आश्वासन मिल चुका है। फिर भी हम अपनी पूरी जरूरत लायक विदेशी सहायता की उम्मीद नहीं कर सकते। तीसरी पंचवर्षीय योजना में प्रति वर्ष ६९० करोड़ रु० के औसत से कुल ३,४५० करोड़ रु० का निर्यात-लक्ष्य रखा गया है। लेकिन इसे भी हमें बढ़ाना होगा, जो आसान नहीं है। निर्यात को अधिक से



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक बढ़ाने और आयात को उतना ही कम करने की जरूरत है।

उपमंत्री महोदय ने बताया कि सरकार निर्यात बढ़ाने के लिए व्यापारियों को प्रोत्साहन दे रही है। उन्होंने कहा कि ९० प्रतिशत निर्यात व्यापार पर किसी तरह की पाबन्दी नहीं है। यद्यपि आयात के लिए सरकार करों आदि में कुछ और सुविधाएं दे सकती है, लेकिन निर्यात बढ़ाने की मुख्य जिम्मेदारी व्यापारियों और उद्योग-पतियों पर है।

अंत में उन्होंने कहा कि विदेशी बाजारों में हमें विकसित और कम-विकसित दोनों प्रकार के देशों से मुकाबला करना होगा। इसके लिए हमें उत्पादन-कौशल और बेचने का गुर सीखना और बढ़ाना होगा।

## संयुक्त जीवन बीमा

जीवन बीमा निगम ने अब पति और पत्नी का संयुक्त जीवन बीमा करना बन्द कर दिया है और स्त्रियों का जीवन बीमा करने में भी कुछ शर्तें लगा दी हैं। क्योंकि जीवन बीमा निगम को अनुभव हुआ है कि जिन्होंने संयुक्त जीवन बीमा कराया है, उनमें स्त्रियों की मृत्यु की संख्या बढ़ी है। इसीलिए संयुक्त जीवन बीमा समाप्त कर दिया गया है।

तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में अलौह धातुओं का उत्पादन कई गुना बढ़ाने का विचार किया जा रहा है। यद्यपि तांबे, सीसे और जस्ते का उत्पादन देश के साधनों को देखते हुए देश की जरूरत लायक नहीं हो सकेगा, लेकिन अलमुनियम का उत्पादन इतना बढ़ाने का अवश्य प्रयत्न किया जायगा।

## ब्रिटेन से ५० लाख एकड़ का ऋण

२३ दिसम्बर को ब्रिटेन से ६ करोड़ ६७ लाख रु० (५० लाख पौंड) ऋण लेने के बारे में नयी दिल्ली में नया करार हुआ है। इस ऋण में दूसरी योजना के चालू वर्ष में ब्रिटेन से काफी माल आयात किया जा सकेगा। इसे जोड़कर ब्रिटेन अब तक भारत को दूसरी योजना के लिए १ अरब ७ करोड़ रु० से भी अधिक की सहायता दे चुका है।

यह ऋण २० साल में चुकाया जाएगा। इसकी पहली किश्त ३० नवम्बर, १९६६ को दी जाएगी। ऋण पर वही ब्याज लगेगा, जो ब्रिटिश सरकार ब्रिटिश कन्सोलिडेटेड कोष से दिए जाने वाले ऋण पर लगा रही है।

## विदेशी कम्पनियों से ऋण

भारत सरकार ने निर्णय किया है कि पूंजीगत माल मंगाने वाले जो आयातक विदेशी कम्पनियों से ऋण लेना चाहते हैं, उन्हें बातचीत करने से पहले भारत सरकार से स्वीकृति लेनी चाहिए। स्वीकृति के लिए स्पेशल अफसर, (कैपिटल गुड्स), कैपिटल गुड्स डिविजन, आफिस आफ द चीफ कंट्रोलर आफ इम्पोर्ट्स एण्ड एक्सपोर्ट्स, नयी दिल्ली को अर्जी भेजी जाए और इसमें आवश्यक विवरण दिया जाए।

विदेशी कम्पनियों से ऋण लेने के बारे में बातचीत करने की अनुमति तभी दी जाएगी, जब सामान्यतः बाहर से मंगाए जाने वाले सामान का मूल्य १ करोड़ ५० लाख रु० से अधिक न हो। छोटी योजनाओं के लिए उद्योग वित्त निगम, उद्योग ऋण और नियोजन निगम तथा राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम से विदेशी मुद्रा का ऋण मिल सकता है।

---

## एक मिनिट में

विश्व में एक मिनट में—७५ आदमी मरते हैं
,, ,, ,, ,, ,,—९५ आदमी जन्म लेते हैं
,, ,, ,, ,, ,,—२५ शादियां होती हैं
,, ,, ,, ,, ,,—१ तलाक होता है
,, ,, ,, ,, ,,—९ लाख चाय के प्याले पिये जाते हैं।
,, ,, ,, ,, ,,—४० लाख सिगरेट पी जाती है,
,, ,, ,, ,, ,,—९ अरब पानी के गिलास पिये जाते हैं।
,, ,, ,, ,, ,,—१ आदमी दिवालिया होता है।
,, ,, ,, ,, ,,—९० मन दूध व्यय होता है।
,, ,, ,, ,, ,,—८० लाख रोगियों को डाक्टर देखता है,
,, ,, ,, ,, ,,—१ समाचार पत्र प्रकाशित होता है
,, ,, ,, ,, ,,—१ मकान में आग लगती है



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


संचालक पंचायत राज विभाग उ० प्र०
की
विज्ञप्ति संख्या ४।५५८० : २७।३३।५३, दिनांक १५
द्वारा
पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत

# सुन्दर पुस्तकें

| | | रु० | आ० |
|---|---|---|---|
| वेद सार | प्रो० विश्वबन्धु | १ | ८ |
| प्रभु का प्यारा कौन ? (२) भाग | | | |
| सच्चा सन्त | | | ३ |
| सिद्ध साधक कृष्ण | | | ३ |
| जीते जी ही मोक्ष | | | ३ |
| आदर्श कर्मयोग | | | ३ |
| विश्व-शांन्ति के पथ पर | | | १ |
| भारतीय संस्कृति | प्रो० चारुदेव | | ३ |
| बच्चों की देखभाल | प्रिंसिपल बहादुरमल | १ | १२ |
| हमारे बच्चे | श्री सन्तराम बी. ए. | ३ | १३ |
| हमारा समाज | | ६ | |
| व्यावहारिक ज्ञान | | २ | १२ |
| फलाहार | | १ | ४ |
| रस-धारा | | ० | १४ |
| देश-देशान्तर की कहानियां | | १ | |
| नये युग की कहानियां | | १ | १२ |
| गल्प मंजुल | डा० रघुबरदयाल | १ | |
| विशालभारत का इतिहास | प्रो० वेदव्यास | ३ | ८ |

१० प्रतिशत कमीशन और ५० रु० से ऊपर के आदेशों पर १५ प्रतिशत कमीशग।

विश्वेश्वरानन्द पुस्तक भंडार
साधु आश्रम, होशियारपुर, पंजाब



# सुभाषित रत्नमाला

## दूसरा संस्करण

सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

७ वर्ष पूर्व इस पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ था और हाथों-हाथ बिक गया था। कई वर्षों से पुस्तक अप्राप्य थी और इसकी माँग निरंतर बढ़ रही थी! अब परिवर्धित संस्करण आकर्षक रूप-सज्जा में प्रकाशित हुआ है इस संग्रह में—

- वैदिक एवं संस्कृत साहित्य के अगाध भण्डार से चुने गये ऐसे सरल-सुन्दर श्लोक और मंत्र, जिन्हें छोटे बच्चे भी सुविधापूर्वक कण्ठस्थ कर सकते हैं।
- श्लोकों और मन्त्रों का सरल-सुबोध हिन्दी में अर्थ।
- पुस्तक के अन्त में अर्थ-सहित कुछ ऐसी सूक्तियाँ, जिनके उपयोग विद्यार्थी अपने निबन्धों में कर सकें।
- आपके बच्चों के स्वस्थ मानसिक विकास और उनमें नैतिक चेतना जगाने के लिए अनिवार्य।
- उपहार और पुरस्कार में देने के लिए बहुत उपयुक्त।

मूल्य एक प्रति १.१५ रु०। 'सम्पदा' के ग्राहकों से ००.८५ न० पै० प्राप्त होने पर 'बुक पोस्ड अन्डर पोस्टेल सर्टिफिकेट' द्वारा भेजी जाएगी।

अशोक प्रकाशन मन्दिर
२८/११, शक्तिनगर,
दिल्ली-६


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा के अनूठे उपहार : ११ विशेषांक

'सम्पदा' का प्रत्येक अंक ज्ञानवर्धक होता है, पर विशेषांक तो अपने विषय के विश्व-कोष ही होते हैं। प्रोफेसर श्री ओमप्रकाश तोषनीवाल, एम० कॉम० कहते हैं—'सम्पदा' के विशेषांक तो हमारे लिए गीता व बाइबिल के समान हैं।'

## १-योजना अंक

( प्रथम योजना सम्बन्धी अपूर्व सामग्री )

एक प्रशंसनीय प्रयत्न। यह अंक पंचवर्षीय योजना को समझने की कुंजी है।

मूल्य : १.०० —जीवन साहित्य

## २-भूमि-सुधार अंक

( भूमि समस्याओं का अद्भुत विवेचन )

इस विषय में अपने ढंग का अद्वितीय प्रकाशन है।

मूल्य : १.०० (अप्राप्य) —प्रताप

## ३-वस्त्र-उद्योग अंक

( भारत के प्रमुख उद्योग का परिचय और समस्याएं )

इस अंक के पीछे काफी श्रम किया गया है। सम्पादक को बधाई।

मूल्य : १.२५ —श्री घनश्यामदास बिड़ला

## ४-चम्बल अंक

( चम्बल योजना का विस्तृत परिचय )

अंक को सभी दृष्टि से रोचक बनाया गया है।

मूल्य : ००.७५ (अप्राप्य) —श्री मिश्रीलाल गंगवाल

## ५-मजदूर अंक

(मजदूर समस्या के विविध पहलुओं का विवेचन )

लेख बहुत रोचक व उपयोगी हैं। ···मानव की नैतिकता पर भी जोर दिया गया है जो देश की संस्कृति व परम्पराओं के अनुकूल है।

मूल्य : १.५० —श्री खंडूभाई देसाई

## ६-उद्योग अंक

( प्रमुख उद्योगों के विकास का व्यापक परिचय)

भारतीय उद्योग और व्यवसाय की मूल समस्याओं पर गम्भीर तथा उपयोगी लेखों का अच्छा संग्रह है।

मूल्य : १.२५ —अजन्ता

## ७-राष्ट्रीय-विकास अंक

( द्वितीय पंचवर्षीय योजना का अध्ययन )

ज्ञानवर्धन के लिए ऐसी सामग्री प्रस्तुत करने वाले अंक का सर्वत्र स्वागत होगा।

मूल्य : १.२५ —श्री मोहनलाल सुखाड़िया

## ८-बैंक अंक

( भारतीय बैंकों की समस्याओं का निरूपण )

Here is one more 'Sampada' Special worth treasuring. (अप्राप्य)

मूल्य : १.२५ —Organiser

## ९-समाजवाद अंक

( समाजवाद के विभिन्न पहलुओं पर विचार )

सम्पदा का समाजवाद अंक मिला। यह काफी अच्छा और पठनीय है।

मूल्य : १.५० —श्री श्रीमन्नारायण

## १०-राष्ट्र-प्रगति अंक

( द्वितीय योजनाकाल की समस्याओं का विवेचन )

यह अति लाभदायक तथा उपयोगी है। लिखने का ढंग बहुत सुन्दर और रोचक है।

मूल्य : १.५० —श्री अमरनाथ विद्यालंकार

## ११-सहकारी कृषि अंक

देश के अत्यन्त विवादग्रस्त प्रश्न पर विविध समन्वयात्मक दृष्टिकोण। —मू० १.५०

रजिस्ट्री से सब प्राप्य अंक मंगाने के लिए रु० १०.५० भेजिये।

**सम्पदा • १८-११ शक्तिनगर • दिल्ली-६**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


स्वास्थ्य सम्बन्धी हिन्दी का प्रतिनिधि मासिक

# स्वस्थ जीवन

प्रधान सम्पादक : राधाकृष्ण नेवटिया

प्रबन्ध सम्पादक : धर्मचन्द सरावगी

● स्वास्थ्य-सम्बन्धी कहानी, कविता, संस्मरण, डायरी, रिपोर्ताज़, ललित लेख, नारी लोक, बाल जगत, समीक्षा, आपका पृष्ठ आदि रोचक स्तम्भ ।

● लेखक बन्धु अपनी नयी कृतियाँ भेजकर हमें सहयोग दें—विज्ञापक बन्धु विज्ञापन दे कर लाभ उठावें—एजेण्ट इस बहुचर्चित पत्र की एजेन्सी लेना न भूलें ।

एक प्रति : पचास नए पैसे मात्र

वार्षिक : पांच रुपए मात्र

कार्यालय : जैन हाउस ८/१ एस्प्लेनेड स्ट्रीट कलकत्ता—१

भूदान ग्रामदान व सर्वोदय का संदेशवाहक



# 'भारत व्यापार पत्रिका' की विशेषताएँ

पृष्ठ सं. १०० वार्षिक चंदा ८) साधारण अंक ७५न. पै.

❀ उद्योगपतियों एवं व्यापारियों के लिए उपयोगी सामग्री

❀ व्यापारिक भविष्य वाणी

❀ एक विज्ञापन मुफ्त छापने की योजना

❀ अर्थशास्त्र के छात्रों के लिए अनेक जानकारी

❀ मनोरंजन के लिए आकर्षक कहानी, गंगा की लहरें स्तम्भ में व्यंग विनोद तथा सामयिक कार्टून

❀ सम्पादक की डाक में आपके प्रश्नोत्तर

❀ इसके अलावा अनेकों स्थाई स्तम्भ

अगर आपने अब तक पत्रिका नहीं देखी है तो आज ही इस विज्ञापन की कटिंग के साथ २५ नये पैसे का पोस्टेज भेजकर नमूना मंगाइये । विज्ञापन दर तथा जानकारी के लिए लिखें—

व्यवस्थापक, भारत व्यापार पत्रिका (मासिक)

राजा दरवाजा, वाराणसी

तार—केनाको पो० बॉ० नं० ४९ फोन—३३४३



# ग्रा म रा ज

(मास में तीन बार प्रकाशित)

सम्पादक :— श्रीगोकुलभाई भट्ट

"ग्रामराज बहुत ही शानदार और बहुत ही सुन्दर पत्र निकल रहा है । सब तरह की जानकारी इसमें रहती है । राजस्थान के हर शिक्षित भाई-बहन के हाथ में यह पत्रिका होनी चाहिये

—विनोबा

वार्षिक चन्दा तीन रुपया

कार्यालय का पता :—ग्रामराज, किशोर निवास, त्रिपोलिया, जयपुर



# जागृति

संस्थापित १९४८

जिसे राष्ट्र भाषा के प्रायः सभी प्रमुख लेखकों, कवियों और कहानीकारों का सहयोग प्राप्त है । चार कहानियां, एक एकांकी, ६ लेख

तिरंगा आवरण अनेकों इक रंगे चित्र

५२ से ६४ पृष्ठ की सम्पूर्ण छपाई आर्ट पेपर पर

इस पर भी मूल्य केवल २५ नए पैसे

एजेन्टों को ५ से १०० प्रतियों पर २५ प्रतिशत और इससे ज्यादा पर ३३⅓ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है । डाक खर्च प्रकाशकों के जिम्मे । नमूने की प्रति के लिए आज ही लिखें :

व्यवस्थापक, 'जागृति' कार्यालय, लोक सम्पर्क विभाग, पंजाब, चंडीगढ़


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आर्थिक/राजनैतिक अनुसंधान विभाग का पाक्षिक पत्र

# आर्थिक समीक्षा

प्रधान सम्पादक : श्री सादिकअली

सम्पादक : श्री सुनील गुह

- हिन्दी में अनूठा प्रयास
- आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख
- आर्थिक सूचनाओं से ओतप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक, पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक।

वार्षिक मूल्य : ५) रु० एक प्रति २२ नये पैसे

लिखें—व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

**अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी,**

७, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली



# भारत की औद्योगिक नीति

भारत के आर्थिक विकास और औद्योगिक उन्नति का सर्वाधिक महत्व है। पर भारत सरकार की उद्योग नीति क्या है—सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के लिए किस तरह दोनों का विभाजन किया गया है, आदि बातें समझने के लिए प्रो० रोशनलाल द्वारा लिखित—

**भारत की औद्योगिक नीति**

को पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। इसमें भारत के औद्योगिक विकास के इतिहास का भी योग्य लेखक ने विद्यार्थियों की दृष्टि से उपयोगी और सुन्दर परिचय दिया है।

६२ न. पै. के टिकट भेजने पर पुस्तक अण्डर पोस्टल सर्टिफिकेट भेजी जायगी।

मैनेजर—अशोक प्रकाशन मन्दिर,

२८/११ शक्ति नगर, दिल्ली-६



# "राष्ट्र-भारती"

सम्पादक—मोहनलाल भट्ट, हृषीकेश शर्मा

वार्षिक चन्दा मनीआर्डर से ६) रु;

नमूने की प्रति ६२ नये पैसे

इसमें आपको लब्धप्रतिष्ठ-विद्वान साहित्यकारों के ज्ञान-पोषक और मनोरंजक अच्छे-अच्छे लेख, कविताएं, कहानियां एकांकी, रेखाचित्र, शब्दचित्र आदि रचनायें पढ़ने को मिलेंगी।

इसमें संस्कृत, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं की तथा अंग्रेजी, रशियन आदि विदेशी भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं के सुन्दर हिन्दी अनुवाद भी रहते हैं।

आज ही मनीआर्डर द्वारा ६) भेजकर ग्राहक बन जाइये।

रियायत—स्कूल-कालेजों, सार्वजनिक पुस्तकालयों तथा वाचनालयों को केवल ५) वार्षिक चन्दे में मिलेगी।

पत्रव्यवहार का पता—

**व्यवस्थापक—"राष्ट्रभारती"**

हिन्दी नगर, वर्धा

(राष्ट्रभाषा प्रचार समिति)



# उद्योग-व्यापार पत्रिका

देश में उद्योग और व्यापार को आगे बढ़ाने के लिये क्या हो रहा है और आप इससे किस तरह फायदा उठा सकते हैं? देश में क्या-क्या चीजें और कितने परिमाण में कहाँ-कहाँ बन रही हैं और आप क्या बना कर अच्छी कमाई कर सकते हैं? तरह-तरह के व्यापार की देश-विदेश में क्या दशा है? पंच-वर्षीय योजना से हमारी क्या उन्नति हो रही है? ये सभी प्रश्न ऐसे हैं, जिनके उत्तर आपको अवश्य जानने चाहिएँ, और इन सबकी जानकारी पाने का श्रेष्ठ साधन है—उद्योग व्यापार पत्रिका। इसलिये आप ६ रु० भेजकर साल भर के लिये आज ही ग्राहक बन जाइये। नमूना पत्र लिखकर मंगाइये।

एजेन्टों को भरपूर कमीशन।

पत्रिका विज्ञापन देने का अच्छा साधन है।

**वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,**

**भारत सरकार, नई दिल्ली**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि.

के

अधिकारी, कर्मचारी व कारीगर

## देश के जन-जन के लिए

हर किस्म का कपड़ा मिल में तैयार करते हैं

पँजाब की श्रेष्ठ रुई से

साड़ी, धोती, छींट, लट्ठा,

शर्टिंग, मलमल, कोटिंग, वायलिन,

खादी, दुसूती, चादर आदि

कुशल कारीगरों द्वारा बनाये जाते हैं

**बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लिमिटिड, दिल्ली।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मैं राज्य की शक्ति में वृद्धि बड़े भय से देखता हूँ, क्योंकि यद्यपि प्रकट रूप जब यह शोषण को कम करने में अच्छा काम करता है, तब यह सर्वांगीण प्रगति के मूल-व्यक्तित्व का विनाश करके मानव जाति का अनहित करती है।

--महात्मा गांधी

स्वतंत्र साहस के विषय में जनता को बताने वाला

**अराजनैतिक संघ**

वार्षिक सदस्य शुल्क १०) रु०

विद्यार्थियों के लिए

सदस्यता शुल्क २) रु०

**फोरम ऑफ फ्री इण्टर प्राइज**

**सोहराब हाउस, २३५ डा० दादाभाई नौरोजी रोड, बम्बई**

**दिल्ली केन्द्र ३०, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली**

सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवजीवन प्रेस (प्रा०) लि० (लीजिज ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा

अर्थशास्त्र की नवीनतम गतिविधियों की
मासिक पत्रिका
फरवरी १९६१

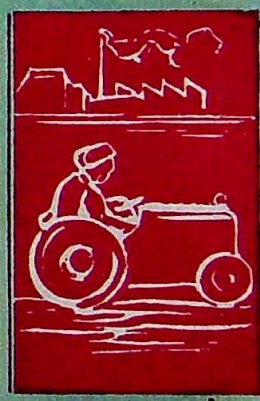

अशोक प्रकाशन मन्दिर शक्ति नगर दिल्ली

मूल्य
७५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# साधारण कर्मचारी की सूझ

जमशेदपुर में टाटा स्टील के ऐग्रिको कारख़ाने में क्रोबार बनाने के लिये कई ऐसे भी काम करने पड़ते थे जिनमें बहुत समय, बहुत मेहनत के अलावा खर्च भी अधिक पड़ता था। तब एक दिन फोरमैन रतन सिंह ने तय कर डाला कि इस हालत को सुधारने के लिये ज़रूर कुछ किया जाय। मसले पर खूब सोच-विचार करके उन्होंने एक डाइ (साँचा) बना डाली जिससे काम काफी आसान हो गया, माल भी पहले से अच्छा बनने लगा और तुर्रा यह कि कम समय और कम खर्च में। अपने इस शानदार करिश्मा पर रतन सिंह को ३००० रु० इनाम मिला।

१९६० तक दस वर्षों के अन्दर टाटा स्टील के कर्मचारी कुल मिलाकर १०,१६५ छोटे-बड़े सुझाव पेश कर चुके हैं—औसतन हर रोज़ तीन। अन्तिम वर्ष में कुल ४४५ सुझाव आये जिनमें से ५४ पर इनाम दिये गये!

इस तरह साधारण कर्मचारियों की सूझबूझ से जमशेदपुर में उत्पादन बढ़ाने में मदद मिल रही है जहाँ उद्योग सिर्फ रोज़ी-रोटी का जरिया नहीं, बल्कि ज़िन्दगी का रास्ता है।

**जमशेदपुर**

इस्पात नगरी

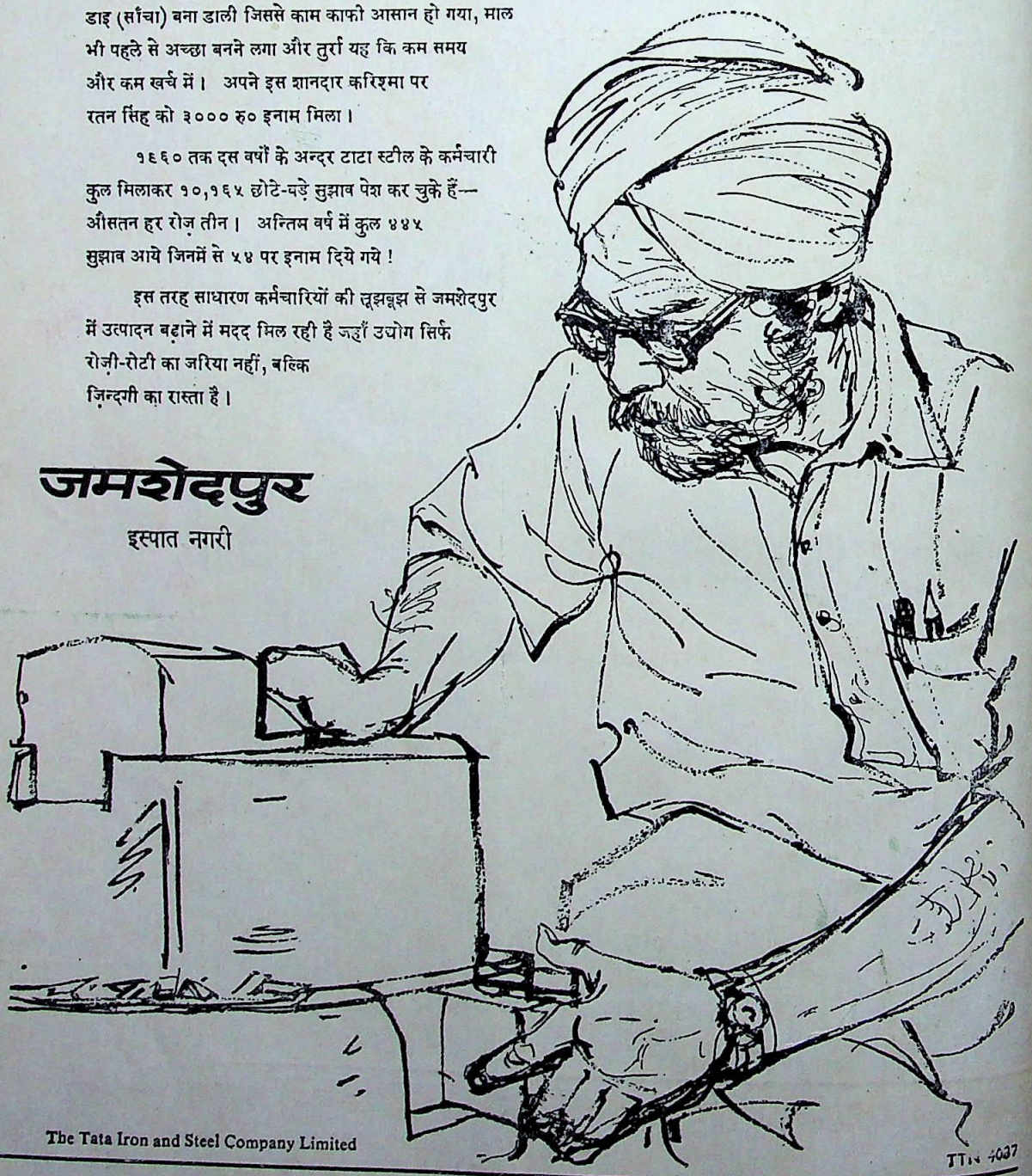

The Tata Iron and Steel Company Limited

TTIN 4037

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

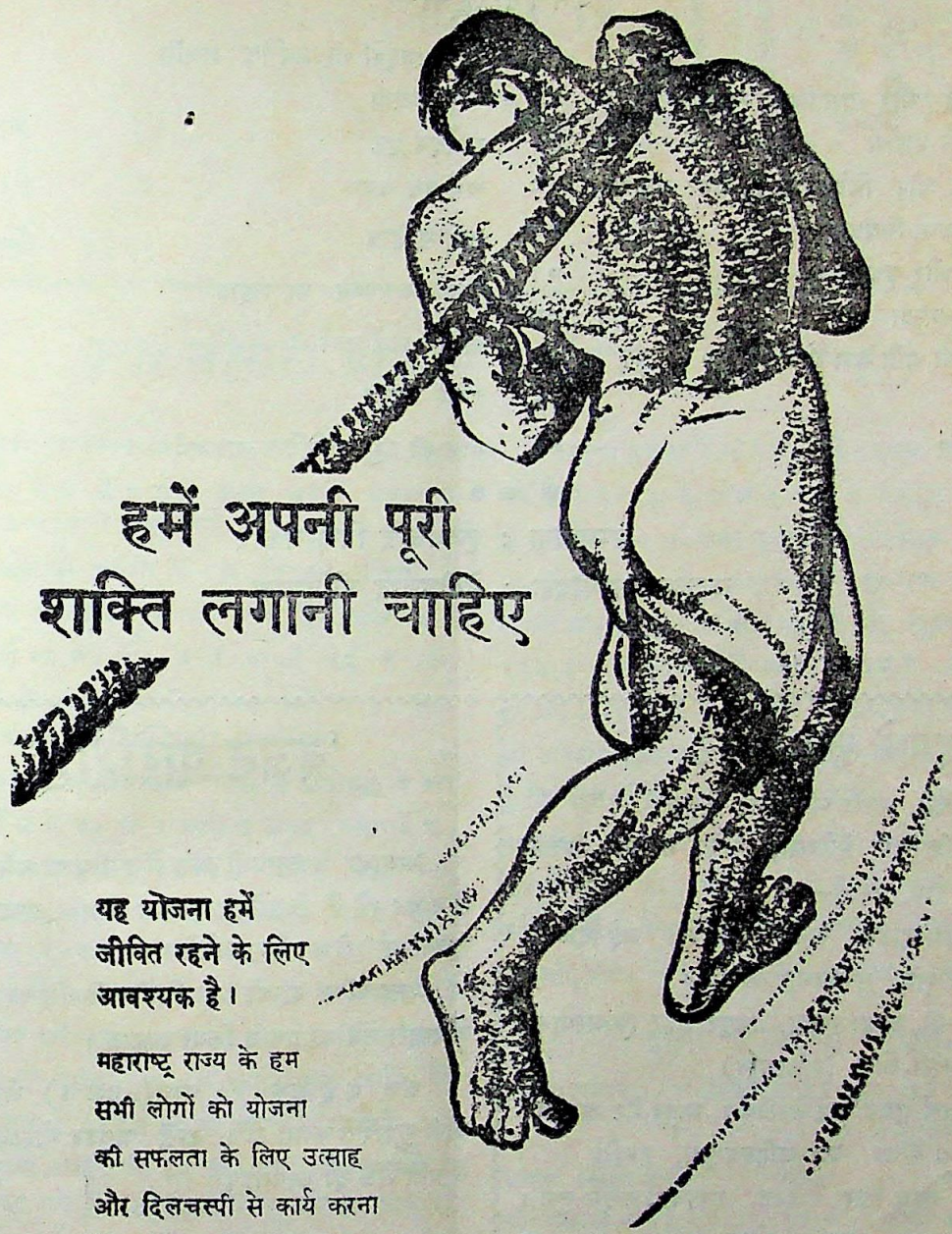

# हमें अपनी पूरी शक्ति लगानी चाहिए

**यह योजना हमें जीवित रहने के लिए आवश्यक है।**

महाराष्ट्र राज्य के हम सभी लोगों को योजना की सफलता के लिए उत्साह और दिलचस्पी से कार्य करना है, चाहे हमारी जाति, धर्म, भाषा, प्रदेश अथवा व्यक्तिगत प्रवृत्ति कुछ भी क्यों न हो।

महाराष्ट्र और भारत के कल्याण के लिए हमें अपनी पूरी शक्ति लगानी चाहिए।

## योजना के साथ अपनी प्रगति और उन्नति प्राप्त कीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| | |
|---|---|
| सम्पादकीय | ५७ |
| नियोजन समृद्धि और सामाजिक न्याय | ६३ |
| महाराष्ट्र का चीनी उद्योग | ६६ |
| पंचवर्षीय योजना और विदेशों से वित्तीय सहायता | ६८ |
| एशिया में जनसंख्या-नियंत्रण | ६९ |
| योजना में खेती और उद्योग का स्थान | ७१ |
| भारत की वन सम्पदा | ७३ |
| कृषि उत्पादन की गति कम हो रही है ? | ७५ |
| सांख्यिकी | ७७ |
| गणतन्त्र परिशिष्ट | ७९ |
| कृषि मजदूरों की आर्थिक स्थिति | ८३ |
| श्रम समस्या | ८५ |
| सर्वोदय पृष्ठ | ८७ |
| अर्थ वृत्त चयन | ९० |
| नया साहित्य | ९१ |
| आयोजन प्रबन्ध का महत्व | ९३ |
| विदेशी अर्थ-चर्चा | ९५ |
| हमारे उद्योग | ९६ |
| मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएँ | ९७ |


• • •

सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

सहायक सम्पादक : देवीप्रसाद नौटियाल

## हमारे कुछ एजेन्ट

सेंट्रल न्यूज ऐजेन्सी, कनाट प्लेस, नई दिल्ली
मैगजिन सबसक्रिपशन ऐजेन्सी, २।२३ नानिक निवास ९१ वार्डन रोड, बम्बई—१
पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली
ग्लोब ब्रेन ऐजेन्सी, सुजानगढ़ राजस्थान
ऊषा बुक ऐजेन्सी, चौड़ा रास्ता, जयपुर शहर (राजस्थान)
मोहन न्यूज ऐजेन्सी कोटा, (राजस्थान)
बुकलैण्ड बुकसेलर्स एण्ड रिप्रेजेंटेटिव्स, मादर गेट अजमेर
एम० पी० बुक सेन्टर, ४१ अहिल्यापुरा, इन्दौर
रामेश्वर शर्मा, न्यूज पेपर ऐजेण्ट, सरस्वती सदन चुरु।
पुरुषोत्तमलाल मुरारका, मुरारका स्टोर्स नवलगढ़, राजस्थान
राष्ट्रीय समाचार ऐजेन्सी, आर्यसमाज मार्ग, ब्यावर (राज०)
साहित्य निकेतन, श्रद्धानन्द पार्क, कानपुर ( उ० प्र० )
द्वारकानाथ राठी, जोधपुर (राजस्थान)
दुलीचन्द जैन, २९ खजूरी बाजार, इन्दौर,
मेसर्स रथ एण्ड कम्पनी, तिलोही बिल्डिंग, बंगाली घाट मथुरा (उ० प्र०)
किताबघर सोजत, गेट के बाहर, जोधपुर ( राजस्थान )
मेसर्स मोडर्न न्यूज ब्यूरो, कचहरी रोड, अजमेर

## 'बजट परिशिष्ट'

'सम्पदा' के आगामी अंक में हम बजट परिशिष्ट प्रकाशित कर रहे हैं जिसमें राजस्व व व्यय सम्बन्धी अनेक सूचनापूर्ण लेख दिए जायेंगे।

केन्द्र और राज्यों की वित्तीय स्थिति पर भी काफी जानकारी देने का प्रयत्न किया जायगा।

अंक के इच्छुक २५ फरवरी तक १) भेजकर अपनी कापी सुरक्षित करवा लें। उन्हें अण्डर पोस्टल सर्टीफिकेट से प्रति भेज दी जायगी।

मैनेजर
'सम्पदा'
२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली

रामप्रसाद एण्ड सन्स, कचहरी रोड, अजमेर
अरविन्द बुक डिपो, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज०)
'जागृति' भागलपुर—२, बिहार
केशरीजी, न्यूज पेपर ऐजेण्ट, स्टेशन चौक, भागलपुर-२ बिहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पदा

वर्ष : १०
अंक : २
फरवरी १९६१

# क्या तीसरी योजना स्थगित की जाय ?

अब तीसरी पंचवर्षीय योजना प्रारम्भ होने में बहुत थोड़ा समय रह गया है। इस समय दूसरी पंचवर्षीय योजना पर एक सरसरी दृष्टि डाल लेना उचित होगा। इससे यह मालूम हो जायगा कि हम पिछली योजना में कहाँ तक अपने लक्ष्यों को पूर्ण कर सके हैं और कौन से लक्ष्य अपूर्ण रह गये हैं। अभी पांचवें वर्ष के अंक उपलब्ध नहीं हो सकते। इसलिए चार वर्षों की ही सफलता या असफलता का चित्र हमारे सामने है।

दूसरी पंचवर्षीय योजना के लक्ष्यों में संशोधन के बाद सार्वजनिक क्षेत्र में ४५ अरब रुपये के लक्ष्य रखे गये थे। इसमें से पहले चार वर्षों में ३६४३.५ करोड़ रुपये व्यय हो चुके हैं। केन्द्र और राज्यों के विभाजन से ये दोनों संख्याएं क्रमशः २०६५.७ तथा १५७७.८ करोड़ रुपये हैं। पांचवें वर्ष में ये लक्ष्य पूर्ण होने की सम्भावना है। सरकार इस पर गर्व अनुभव कर सकती है, किन्तु इसके लिए हमें यह भी देखना होगा कि क्या वस्तुतः रुपये पैसे के आंकड़े योजना में निर्दिष्ट लक्ष्यों को पूर्ण करते हैं। हमें यह मालूम होना चाहिए कि इन पांच वर्षों में पदार्थों के मूल्य काफी बढ़ गये हैं। इसलिए केवल राशि के व्यय हो जाने मात्र से लक्ष्यों की पूर्ति नहीं मानी जा सकती। १९५२-५३ के आधार पर यदि मूल्य निर्देशक अंक देखें तो मालूम पड़ेगा कि वे अंक निम्न प्रकार से बढ़े हैं।

## मूल्य निर्देशक अंक

| | खाद्य पदार्थ | उद्योगों का कच्चा माल | निर्मित माल |
|---|---|---|---|
| १९५५-५६ | ८६.६ | ९९.० | ९९.७ |
| १९५९-६० | ११९.० | १२३.७ | १११.६ |

वस्तुतः इन वर्षों में पदार्थों के मूल्य लगातार बढ़ते गये हैं। १९६० के प्रथम ६ मास के अंक भी यही बताते हैं। अप्रैल ६० में खाद्य पदार्थों के निर्देशक अंक ११८.६ था, जो सितम्बर में बढ़कर १२३.९ हो गया। इसी तरह कच्चा माल और निर्मित पदार्थों के मूल्य भी क्रमशः १३४.२ और ११७.८ से बढ़कर १३८.८ और १२२.७ हो गये। पदार्थों के मूल्य बढ़ने के साथ-साथ व्यय के मूल्य भी अवश्य बढ़ने चाहिए थे। वे नहीं बढ़े, इसका अर्थ यह है कि योजना के प्रारम्भ में व्यय के कारण उत्पादन के जो वास्तविक लक्ष्य रखे गये थे, वे भी पूर्ण नहीं हो पाये। विदेशी मुद्रा की दुर्लभता तथा अन्य अनेक आकस्मिक कठिनाइयों के कारण भी हमारे उत्पादन-लक्ष्य पूर्ण नहीं हो पाये, जैसा कि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है—

## दूसरी योजना में उत्पादन

| खाद्य पदार्थ | संशोधित लक्ष्य × | १९६०-६१ में अनुमानित उत्पादन + |
|---|---|---|
| अनाज (लाख टन) | ८०५ | ७५० |
| रुई (लाख गांठें) | ६५.० | ५१.० |
| गन्ना (लाख टन) | ७८.० | ७२.० |
| तिलहन (लाख टन) | ७६.० | ७२.० |
| जूट (लाख टन) | ५५.० | ५५.० |
| चाय (लाख पौंड) | ७०००.० | ७२५०.० |
| तम्बाकू (हजार टन) | २५०.० | ३००.० |

× दूसरी पंचवर्षीय योजना १९६० की रिपोर्ट
+ तीसरी पंचवर्षीय योजना का अनुमान



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तालिका से यह स्पष्ट है कि संशोधित लक्ष्यों के अनुसार अनाज, रुई, गन्ने और तिलहन के उत्पादन में कमी हुई है।

दूसरी पंचवर्षीय योजना में बड़ी और छोटी बांध सिंचाई योजनाओं पर अरबों रुपया लगाने के लक्ष्य नियत किये गये थे और यह विचार किया गया था कि हम उनके अनुसार सिंचाई क्षेत्र बढ़ाते जायेंगे, किन्तु हमारी आशा पूर्ण नहीं हुई। हमारा लक्ष्य १९६०-६१ में ८८० लाख एकड़ की सिंचाई का था, किन्तु हम ७०० लाख एकड़ से अधिक सिंचाई नहीं कर सके। सिंचाई का जो हाल है, वही वैज्ञानिक खाद के उत्पादन का भी है। १९५९ में हम सुपर फास्फेट का ४२ प्रतिशत और अमोनियम सल्फेट का २६ प्रतिशत लक्ष्य पूर्ण कर सके।

भारतीय अर्थशास्त्र का मेरूदण्ड कृषि है। उसी के विकास पर ही देश का आर्थिक विकास निर्भर करता है। उपर्युक्त विवेचन से यह प्रतीत होता है कि दूसरी पंचवर्षीय योजना में हमारे कृषि-सम्बन्धी लक्ष्य आशा के अनुरूप पूर्ण नहीं हो सके हैं।

अब हम औद्योगिक उत्पादन के लक्ष्यों पर भी एक दृष्टि डालें। कुछ प्रमुख उद्योगों का उत्पादन बढ़ा है—अपने लक्ष्य पूर्ण कर चुका है तो कुछ उद्योग अपने लक्ष्यों से बहुत पिछड़ गये हैं, जैसा कि निम्न तालिका से स्पष्ट होता है—

## दूसरी योजना में औद्योगिक उत्पादन

| उद्योग | संशोधित लक्ष्य | १९५९ में उत्पादन | लक्ष्य का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| कोयला (हजार टन) | ६०००० | ४७०३२ | ७८ |
| इस्पात ( ,, ) | ४३०० | १६८३.४० | ३९ |
| सीमेंट (लाख टन) | १६० | ६८.३ | ४३ |
| चीनी की मशीनरी (लाख रुपये) | २५०.० | २८३.१५ | ११३ |
| इंजिन (निजी क्षेत्र संख्या) | १०० | १०२ | १०२ |
| बाइसिकल (हजार) | ८०५ | ९९०.४८ | १११ |
| कपड़ा (लाख गज) | ५३५०० | ४९२५५.६ | ९२.४ |
| अलुमीनियम (टन) | ३०००० | १७५४२.५३ | ५७ |
| सल्फूरिकऐसिड (हजार टन) | ५००० | २८३.५१ | ५७ |
| कास्टिक सोडा ( ,, ) | १५० | ६८.६८ | ४६ |
| मोटर के टायर (हजार टन) | १४०० | ११३८.६४ | ७९ |
| चीनी (हजार टन) | २५०० | २०८५.०५ | ८३ |
| बनस्पति ( ,, ) | ४४५ | ३१६.७८ | ७१ |

इस उपर्युक्त तालिका से यह मालूम होता है कि इंजन, बाइसिकल, चीनी की मशीनरी आदि के उत्पादन में हम लक्ष्यों से आगे बढ़ गये हैं तो कई उद्योगों में हम काफी पीछे रह गये हैं। इन औद्योगिक लक्ष्यों की कमी क्यों हुई है, इसके भिन्न-भिन्न कारण हो सकते हैं। किन्तु एक कारण यह भी हो सकता है कि रेलवे की परिवहन-क्षमता आशा के अनुरूप नहीं हो सकी। कोयले की कमी इन दो वर्षों में बहुत अनुभव की जाती रही है। कुछ कोयले का उत्पादन कम हुआ है तो कुछ रेलवे उसे यथास्थान व यथा समय पहुँचाने में असमर्थ रही है। यह ठीक है कि रेलवे इंजिनों का उत्पादन अपने लक्ष्य को पार कर गया है। निजी उद्योग रेलवे की असमर्थता के लिए प्रबन्ध को उत्तरदायी ठहराता है। किन्तु इसका एक कारण और भी हो सकता है कि इस वर्ष गेहूँ का बहुत आयात करना पड़ा और रेलवे को अपना बहुत-सा समय और अपने साधन गेहूँ को यथा स्थान पहुँचाने के लिए लगाने पड़े। इस कारण भी कोयला तथा अन्य औद्योगिक पदार्थ पहुँचाने में रेलवे को विलम्ब हो गया।

दूसरी पंचवर्षीय योजना की उक्त असफलताओं को देखकर कुछ अर्थशास्त्री हतोत्साह हो गये हैं और श्री दाण्डेकर प्रभृति विचारक यह कहने लगे है कि फिलहाल हमें तीसरी पंचवर्षीय योजना प्रारम्भ नहीं करनी चाहिए। पहले दो वर्ष तो हमें दूसरी योजना के अपूर्ण लक्ष्यों की प्राप्ति में ही लगा देने चाहिए अन्यथा तीसरी पंचवर्षीय योजना के लक्ष्यों को पूर्ण करना असम्भव हो जायगा। उक्त अर्थशास्त्रियों की सम्मति में हमें १९६१-६२ और १९६२-६३ में निम्न प्रयत्न करने चाहिए—

(१) हमें वर्तमान मंहगाई को कम करने का प्रयत्न करना चाहिए, जो उत्पादन में वृद्धि तथा मुद्रा प्रसार में कमी से ही हो सकती है। इन चार वर्षों में हमने करीब ११२० करोड़ रुपये घाटे की अर्थव्यवस्था से प्राप्त किये हैं। (२) इन दो वर्षों में हमें अमेरिका के ४८० पी० एल०





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से भी रुपया नहीं वसूल करना चाहिए। (३) हमें आयात में कमी करके स्टर्लिंग निधि को फिर ऊंचा करने का प्रयत्न करना चाहिए। (४) हमें प्रशासन व्यय को बढ़ने से रोकना चाहिए। १९५०-५१ में प्रशासन व्यय ५२९.७५ करोड़ रु० था, जो १९५८-५९ में करीब ७८० करोड़ रुपये तक पहुँच गया। (५) रिजर्व बैंक को अपनी मुद्रा को सुलभ बनने से रोकने का प्रयत्न करना चाहिए।

हम इन परामर्शों की उपयोगिता से इन्कार नहीं करते किन्तु हमारी नम्र सम्मति में इनमें से अनेक परामर्शों पर अमल करते हुए भी तीसरी पंचवर्षीय योजना प्रारम्भ की जा सकती है। असफलताओं के उपर्युक्त चित्र का एक दूसरा पहलू भी है। इन वर्षों में अनेक उद्योग नये-नये प्रारम्भ किये गये हैं। अनेक प्रारम्भिक कठिनाइयों पर हम विजय पा चुके हैं और अनेक अनुभव भी हमने इन वर्षों में पा लिये हैं। अनेक उद्योग तो अभी निर्माण की अवस्था में ही हैं। इसलिए यह कल्पना कर लेना कि हम उनकी कमी किसी तरह पूर्ण नहीं कर सकते, निराशावादिता ही है। ये असफलताएं तो हमें अपनी त्रुटियों की ओर ध्यान दिलाती हैं। इसका परिणाम तो यह होना चाहिए कि हम अधिक उत्साह से काम करें। हमने इन पंक्तियों में जान बूझकर उन शानदार सफलताओं की चर्चा नहीं की, जिन पर हम गर्व कर सकते हैं। उनका परिचय 'सम्पदा' में प्रायः पाठक पढ़ते रहते हैं। हमारी नम्र सम्मति में गत चार वर्षों के अनुभवों से हम निम्नलिखित शिक्षाएं ग्रहण कर सकते हैं—

(१) प्रशासन व्यय में यथा संभव कमी करें। आडम्बर शून्यता हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। (२) बड़ी व्यय-साध्य योजनाओं की अपेक्षा छोटी सिंचाई योजनाओं को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। (३) यथासम्भव विदेशों से आयात कम करने पर बल देना चाहिए। (४) जनता में योजनाओं के प्रति अधिक अनुराग उत्पन्न करने के लिए जहां योजनाओं का विकेन्द्रीकरण हो, वहां सरकारी कर्मचारी देहातों में जाकर जनता में घुलमिल जाएं। (५) लाइसेंस परमिट देने की पद्धति को अधिक उदार और भ्रष्टाचार-शून्य बनाया जाय। (६) प्रत्येक प्रश्न पर सरकार निजी उद्योग का अधिकाधिक सहयोग और विश्वास सम्पादन प्राप्त करे। (७) तीसरी योजना के लक्ष्यों का *निर्माण* करते हुए अपने सीमित साधनों का विचार अवश्य करना चाहिए। केवल महत्वकांक्षाओं को अपना आधार बना लेना बहुत दूरदर्शिता नहीं होगा। दूसरी योजना में भी हमें पीछे जाकर महत्वपूर्ण अंगों के नाम पर लक्ष्यों में कटौती करनी पड़ी थी। ऐसे ही कुछ अन्य अनुभवों से भी लाभ उठाया जा सकता है। आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ हमें तीसरी पंचवर्षीय योजना को प्रारम्भ कर देना चाहिए। ● ●

## वस्त्रों के मूल्य कम कैसे हों ?

हाल ही में प्रसिद्ध उद्योगपति श्री नवल टाटा ने बताया है कि वस्त्रों के मूल्य निर्धारण में निम्नलिखित बातें काम करती हैं—उनके कथनानुसार उनकी एडवांस मिल के उत्पादन में प्रतिगज इस तरह मूल्य का विभाजन किया जा सकता है—

| | न० पै० |
|---|---|
| कपास का खर्च | ३१ ,, |
| वस्त्र निर्माण (मिल में) | ५३ ,, |
| वस्त्र का उत्पादन व्यय | ८४ न० पै० |
| बोनस ग्रेच्युटी, घिसाई | |
| विकास-व्यय तथा कमीशन | |
| मैनेजिंग एजेंसी | ०७.७५ |
| सुरक्षित कोष के लिए बचत | २.२५ |
| डिविडेंड | १.५० |
| मिल का पड़ता भाव | ९५.५० |
| उत्पादन कर | १७.७५ |
| वितरण के खर्च | १७.२५ |
| ग्राहक से वसूल कीमत | १३०.५० |

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि मिल के पड़ता भाव से करीब ३७ प्रतिशत अधिक मूल्य ग्राहक से वसूल किया जाता है और इस ३७ प्रतिशत में आधा सरकार उत्पादन कर में वसूल करती है और शेष वितरण पर व्यय होता है। मिल के पड़ते भाव में भी ८८ प्रतिशत वे खर्च हैं, जिन पर मिल अधिकारियों के कथनानुसार उनका कोई



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*नियंत्रण* नहीं है, जैसे—रुई, वेतन और मजदूरी, बोनस और स्टोर की सामग्री। शेष १२ प्रतिशत में सरकार में टैक्स डिविडेन्ड, विसाई तथा भावी विकास के लिए रिजर्वकोष आते हैं। एडवांस मिल अहमदाबाद की अच्छी बड़ी मिलों में है। बहुत-सी छोटी मिलों में उत्पादन के व्यय इससे भी अधिक बढ़ सकते हैं। वस्त्र-उद्योग का कहना यह है कि इन सब व्ययों में से कहां और कैसे कमी की जाए। यह विचार करने के बाद ही वस्त्रों के मूल्यों में कमी करने का कोई प्रस्ताव व्यवहार में लाया जा सकता है।

आखिर प्रश्न यह है कि उत्पादन-व्यय में किस तरह कमी की जाए? यह प्रश्न केवल वक्तव्यों और अभिलाषाओं के आधार पर हल नहीं किया जा सकता। आज यह भी कहने का साहस कोई नहीं कर सकता कि मजदूरों के वेतन अथवा उनकी सुविधाएं कम कर दी जाएं। आज तो आवश्यकता यह है कि उनका जीवनस्तर ऊंचा किया जाए और उनकी सुविधाएं बढ़ाई जाएं। कपास के मूल्यों में कमी करना भी आज आसान नहीं है।

मिल के वस्त्र-निर्माण-व्यय में अवश्य कमी की जा सकती है, लेकिन इसके लिए नई आधुनिक और उन्नत मशीनरी का लगाना आवश्यक है। इसके मार्ग में भी दो कठिनाइयां आती हैं। एक तो यह कि नई मशीनरी के लिए न विदेशी मुद्रा हमारे पास है और न उद्योगपतियों के पास आधुनिकीकरण के लिए पर्याप्त पैसा है। आधुनिकीकरण तथा 'रेशनलाइजेशन' की दूसरी समस्या यह है कि स्वचालित आधुनिक मशीनरी लगाने से बहुत-से मजदूर बेकार हो जाते हैं और आज जब हम रोजगार की विकट समस्या को हल करना चाहते हैं, हम एक भी मजदूर की बेकारी सहन नहीं कर सकते।

वस्त्रों के मूल्य में तीसरा बड़ा भाग उत्पादन-कर तथा वस्त्र-वितरण के व्यय का है। प्रत्येक गज कपड़े पर सरकार उत्पादन करके रूप में अप्रत्यक्ष तौर पर १८ पैसे या तीन आने ले लेती है। आज सरकार ने अपने ऊपर जो नई जिम्मेवारियां ले ली हैं, उन्हें देखते हुए वह अपने राजस्व में किसी तरह की कमी करने पर सहमत हो जाएगी, इसकी सम्भावना भी नहीं की सकती। सुदूरवर्ती देहातों में मिल का कपड़ा पहुंचते-पहुँचते वितरण-व्यय बढ़ जाए, यह भी स्वाभाविक ही है।

इन स्थितियों में क्या मान लिया जाए कि वस्त्रों के मूल्य कम होने सम्भव ही नहीं हैं और क्या वर्तमान मंहगाई को अनिवार्य मानकर सहन किया जाए? वस्त्र-उद्योग इस बुराई को अनिवार्य और असाध्य नहीं मानता। वह इस बुराई को दूर करने के लिए निम्नलिखित सुझाव देता है—

(१) सरकार उद्योगों को आधुनिकीकरण के लिए मिलों को पर्याप्त आर्थिक सहायता दे, जैसा कि ब्रिटिश सरकार ने इसके लिए किया। भारत की विभिन्न वस्त्र उद्योग कम्पनियों के द्वारा केन्द्रीय सरकार के पास सूती मिलों के आधुनिकीकरण के १८० प्रार्थना पत्र पहुँच चुके हैं। इनमें बताये गये स्वसंचालित सांचों की कीमत करीब १ अरब रुपया होती है, जिसमें से करीब ६० करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा लगेगी। सरकार इन अर्जियों पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर रही है, इन योजनाओं के अमल में आने के बाद संभव है कि वस्त्र का उत्पादन व्यय कम होकर मूल्य भी कम हो जायें।

(२) वस्त्र-उत्पादन को मिलों के द्वारा बढ़ाने पर कोई अंकुश न लगाया जाए। मिलें जितना अधिक उत्पादन करेंगी, उतना ही उत्पादन-व्यय कम होगा। यदि यह अंकुश हटा दिया जाए तो हथकर्घों के उद्योग को अवश्य कठिनता का सामना करना पड़ेगा। वस्त्र-उद्योग का कहना यह है कि आधुनिकीकरण के बाद हम मिलों में विस्तार कर सकेंगे तथा अतिरिक्त मजदूरों को रोजगार दे सकेंगे। वस्त्र-उद्योग को यह भी विश्वास है कि ज्यों-ज्यों राष्ट्रीय और प्रति व्यक्ति आय बढ़ती जाएगी, वस्त्र की मांग भी बढ़ती जाएगी। वस्त्रों के मूल्य को कम करने के लिए वस्तुतः कुछ ठोस और व्यावहारिक उपाय सोचने की आवश्यकता है। शाब्दिक आलोचना से इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता। ● ●

## कृषि में यंत्रीकरण सोच समझकर

जब देश वेग से कृषि के यंत्रीकरण की ओर भागा जा रहा है और योजना आयोग तथा केन्द्र व राज्यों की सरकारें ट्रैक्टरों को निरन्तर प्रोत्साहित कर रही हैं, तब उत्तरप्रदेश के अनुभवी कृषि-मंत्री चौधरी श्री चरणसिंह ने कृषि महाविद्यालय कानपुर के स्नातकों को भाषण देते हुए बड़ी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंभीर चेतावनी दी है। उन्होंने अपने भाषण में कहा है।

"किसान कृषि के कामों में ट्रैक्टर एवं अन्य प्रकार की मशीनों का प्रयोग छोड़ दें नहीं तो लगभग ५० वर्ष के बाद सम्पूर्ण उत्तरप्रदेश 'रेगिस्तान' बन जायेगा। ट्रैक्टर आदि का प्रयोग उन देशों में होता है जहां की आबादी कम और भूमि अधिक होती है। साथ ही साथ वहां का जलवायु भी मशीनरी-युग के अनुरूप होता है। भारत की स्थिति भिन्न है और यहां किसी भी हालत में मशीनों द्वारा कृषि नहीं करायी जा सकती, क्योंकि इसके परिणाम बड़े भयंकर होंगे।"

"ट्रैक्टर काफी गहराई के साथ जमीन को खोदकर भूमि की 'उर्वरा शक्ति' को नष्ट कर देते हैं जिसका फल यह होता होता है कि भूमि शक्तिहीन हो जाती है, जिससे भूमि धीरे-धीरे रेतीली बन सकती है, इसलिए भारतीयों को किसी भी स्थिति में ट्रैक्टर आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिये।"

कृषि के कामों में श्री चौधरी चरणसिंह को कृषि का बड़े-बड़े उपाधिकारियों से अधिक अनुभव है। हमें संदेह यहां तक है कि योजना आयोग के किसी भी सदस्य से उनका कृषि-सम्बन्धी ज्ञान अधिक है इसलिए उनकी चेतावनी पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

## अमेरिका में मन्दी-निवारण

संयुक्त-राज्य अमेरिका की आर्थिक गतिविधि—का मन्दी और तेजी का दुनियां के अनेक देशों पर प्रभाव पड़ता है। पिछले दो वर्षों में वहां थोड़ी बहुत मन्दी अवश्य आई, जिसका प्रभाव अन्य देशों पर भी पड़ा। अनेक देशों में माल की मांग या आयात का कम होना तथा अमेरिका से स्वर्ण का निर्यात, इसके दो प्रमाण हैं। नये प्रशासक राष्ट्रपति कैनेडी ने आर्थिक स्थिति में सुधार के लिये अब १२ सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की है। मन्दी को दूर करने के लिये उन्होंने जो उपाय बताये हैं, उनमें से कुछ निम्न-लिखित हैं—

दीर्घकालीन अवधि के लिये ऋणों के ब्याज में कमी-संघीय तथा राज्यीय निर्माण व्यय में वृद्धि, सैनिक व्यय में वृद्धि, बेरोजगार जनता की अधिक सहायता, विधवाओं, असमर्थ व्यक्तियों और वृद्धों को अधिक सुविधायें और मजदूरों के न्यूनतम वेतन में वृद्धि। राष्ट्रपति ने यह भी घोषणा की है कि इन उपायों से पूर्ण सफलता न मिलने पर अन्य अनेक कदम भी उठाये जावेंगे। अमेरिका जैसे सम्पन्न देश को भी मन्दी दूर करने के लिए भारी प्रयत्न करने पड़ते हैं. तो अविकसित देशों के लिए योजनापूर्वक कार्य-क्रमों की कितनी अधिक आवश्यकता होनी चाहिए, यह स्पष्ट हो जाता है। परन्तु अमेरिका में बरते जाने वाले उपाय अविकसित देशों में भी बरते जायं, यह ठीक न होगा। हमें अपनी सामर्थ्य देखते हुए ही कुछ करना होगा, फिर भी यह निर्णय सड़क निर्माण आदि पर ध्यान देने व गृह-उद्योगों के प्रसार से हम बेरोजगारी को कुछ सीमा तक कम कर सकेंगे।

## केन्द्र की आय बढ़ रही है

यह प्रसन्नता की बात है कि प्रायः सभी स्रोतों से केन्द्रीय सरकार को गत वर्ष की अपेक्षा अधिक आय हुई है। अभी यह आर्थिक वर्ष समाप्त नहीं हुआ है। पहले आठ महीनों के ही अंक अब तक उपलब्ध हुये हैं। १९५९-६० के अप्रैल-नवम्बर तक के आठ महीनों में केन्द्रीय सरकार को ४४२ करोड़ २८ लाख रुपये प्राप्त हुये थे, जबकि इस वर्ष के इन आठ महीनों में ५०८ करोड़ ४६ लाख रुपये मिले हैं। विभिन्न मदों में किस तरह से वृद्धि हुई है, यह निम्न तालिका से स्पष्ट है :—

| मद | १९५९-६० | १९६०-६१ |
|---|---|---|
| | (अप्रैल से नवम्बर तक) | |
| तटकर | १०१,३३ | १०८,३८ |
| उत्पादन कर | २२७,५६ | २६३,३८ |
| कारपोरेशन टैक्स | ३१६० | ५३,५६ |
| आय कर | ६६,२२ | ६८,१२ |
| उत्तराधिकार | १३० | १२७ |
| सम्पत्ति कर | २७९ | २३४ ❀ |
| व्यय कर | २९ | ३५ |
| उपहार कर | ३० | ३४ |
| रेलवे यात्री किराया कर | ८२९ | ८०५ × |
| अफीम | २६० | २९७ |

❀ अनुमानित × अक्तूबर तक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह आशा की जा रही है कि इस वर्ष के शेष चार महीनों में भी आय की राशि इतनी बढ़ जायगी कि बजट के अनुमान लगभग पूरे हो जायंगे। यह भी स्पष्ट है कि पिछले वर्षों में सरकार ने उत्तराधिकार, सम्पत्ति, व्यय कर तथा उपहार कर लगाये हैं, उनसे भी केन्द्रीय सरकार की आमदनी काफी बढ़ रही है। इन सबसे इन आठ महीनों में सवा तीन करोड़ रुपये से अधिक मिला है और वर्ष के अन्त तक चार करोड़ रुपया हो जायगा। अभी तक यह नहीं मालूम हो सका कि इन करों के संग्रह में कुल कितना व्यय हुआ है। अन्य स्रोतों से भी आय बढ़ी है, उनको देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि आज का सबसे बड़ा स्रोत उत्पादन कर है, जो कुल आय के ५० प्रतिशत से भी अधिक है।

इन करों के अंक देखने से एक बात और स्पष्ट होती है कि अप्रत्यक्ष कर करीब ३८५ करोड़ रुपये के हैं; जबकि अप्रत्यक्ष कर १२५ करोड़ रु० सम्पदा को पाठकों को यह मालूम है कि अप्रत्यक्ष करों का सम्बन्ध सामान्य जनता से होता है जबकि प्रत्यक्ष करों का सम्बन्ध केवल सम्पन्न वर्ग से। यह ठीक है कि तटकरों तथा विलास सामग्री पर लगने वाले करों में से एक बड़ा भाग सम्पन्न वर्ग को भी देना पड़ता है।

---


डाकघरों के कामकाज में

# मेट्रिक प्रणाली

१ फरवरी, १९६१ से डाकघरों का सारा कामकाज मेट्रिक प्रणाली में शुरू कर दिया गया है। कुछ महत्वपूर्ण संशोधित डाक-दरें इस प्रकार हैं :

**अन्तर्देशीय**

**लिफाफा**

| | |
|---|---|
| पहले १५ ग्राम के लिये | १५ नये पैसे |
| प्रत्येक अतिरिक्त १५ ग्राम के लिये | १० नये पैसे |

**पैकेट**

| | |
|---|---|
| पहले ५० ग्राम के लिये | ८ नये पैसे |
| प्रत्येक अतिरिक्त २५ ग्राम के लिये | ३ नये पैसे |

**पार्सल**

| | |
|---|---|
| प्रत्येक ४०० ग्राम या अंश के लिये | ५० नये पैसे |

**पैकेट के लिये एयर सरचार्ज**

| | |
|---|---|
| प्रत्येक १० ग्राम या अंश के लिये | ४ नये पैसे |

**विदेशी डाक**

**लिफाफा**

| | |
|---|---|
| पहले २० ग्राम के लिये | ३० नये पैसे |
| प्रत्येक अतिरिक्त २० ग्राम के लिये | २० नये पैसे |

**छपी सामग्री आदि**

| | |
|---|---|
| पहले ५० ग्राम के लिये | १२ नये पैसे |
| प्रत्येक अतिरिक्त ५० ग्राम के लिये | ६ नये पैसे |

| | |
|---|---|
| व्यापारिक कागज-पत्रों और सैम्पलों के लिये न्यूनतम शुल्क | ३० नये पैसे |

विस्तृत जानकारी और अन्य दरों के लिए
किसी डाकघर से पूछताछ कीजिये

**डाक-तार विभाग**




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नियोजन—समृद्धि और सामाजिक न्याय

ए० डी० श्रॉफ

गत तीसरी दशाब्दि के उत्तरार्ध वर्षों में जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने राष्ट्रीय नियोजन समिति की स्थापना की थी उस समय मुझे उसका सदस्य होने का गौरव प्राप्त हुआ था। भारत जैसे अल्प-विकसित देश में नियोजन सम्बन्धी संभावनाओं पर विचार करना इस समिति का उद्देश्य था। जनता के जीवन-मान में वृद्धि करने के लिए नियोजन सम्बन्धी क्षमताओं को साकार करने के उद्देश्य से देश को तैयार करने का प्रथम वृहद् प्रयास १९४४ में किया गया जबकि आम तौर से विख्यात "बांम्बे प्लान" को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया गया था। उस नियोजन को तैयार करनेवाले आठ उद्योग पतियों और व्यापारियों में मुझे भी एक सदस्य होने का गौरव प्राप्त था। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वास्तव में निजी उद्योग ने ही सर्व प्रथम देश को नियोजन की संभावनाओं की आवश्यकता के प्रति जागरुक करने का प्रयत्न किया था।

नियोजन की पद्धतियों के बारे में अनेक मत हैं। हालांकि हमारे जैसे अल्प-विकसित देश में नियोजन की आवश्यकता के बारे में अधिकांस लोग सहमत हैं। नियोजन की पद्धतियों के बारे में विधित मत इसलिए होते हैं कि उनमें निर्णायक मूल्य निहित होते हैं। उदाहरण के तौर पर वैयक्तिक स्वाधीनता पर जोर देने वाले व्यक्ति का नियोजन से महत्वपूर्ण सम्बन्ध होता है।

भारत में नियोजन की समीक्षा, देश में १९५१ से नियोजन सम्बन्धी अनुभव से आरम्भ करना उचित होगा। इससे भारत में नियोजन विषय पर विभिन्न मत होने के कारणों पर प्रकाश पड़ सकेगा।

प्रथम पंचवर्षीय आयोजन के अन्तर्गत १९५१ और १९५६ के बीच की अवधि थी। वास्तव में प्रथम आयोजन उन योजनाओं की खिचड़ी के सिवा कुछ नहीं था जिन्हें १९४७ में स्वाधीनता प्राप्त होने से पहिले ही आरम्भ किया जा चुका था। यह योजना सफल हुई और उसके समाप्त होने पर राष्ट्रीय आय में १८ प्रतिशत से अधिक और प्रति व्यक्ति की आय में लगभग ११ प्रतिशत वृद्धि हुई। इसमें यह बात ध्यान देने योग्य है कि अत्यन्त बदनाम निजी क्षेत्र ने, जिसकी योजनावधि में उत्तरोत्तर और लगातार कड़ी आलोचनाएं होती रहीं, अपनी पूंजी के नये लक्ष्यों को पूरा कर आगे बढ़ गया जबकि सार्वजनिक क्षेत्र अपने लक्ष्यों से लगभग ४० प्रतिशत पीछे रह गया।

नियोजन को, १९५६ में सार्वजनिक क्षेत्र में ४,८०० करोड़ रुपये तथा निजी क्षेत्र में २,४०० करोड़ रुपये की प्रस्तावित पूंजी से आरम्भ किया गया था। लेकिन वर्ष के समाप्त होते-होते योजना अनेक कठिनाइयों में फंस गई और अनेक पहलुओं में ध्वस्त हो गई। उदाहरण के तौर पर रेल मंत्री ने संसद में शिकायत की कि सीमेन्ट के अभाव के कारण रेलवे की कुछ योजनाओं को पूरा नहीं किया जा सका। हमारी विदेशी विनियम के साधन, जिन्हें सालाना ४० करोड़ रुपये के हिसाब से व्यय कर योजनावधि के अन्त में ५०० करोड़ रुपये अवशेष रखना प्रस्तावित था, १९५८ में ही घट कर बहुत थोड़ा रह गया। अत्यधिक घाटे की अर्थ-व्यवस्था के कारण भोजन और जीवन की अन्य आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में भारी वृद्धि हुई जिससे वैयक्तिक आमदनियों में हुई संभाव्य वृद्धि बेकार हो गई। वास्तव में यह एक बड़ी बुरी दशा है कि योजना के पूरे होने से पहिले ही मूल्य रेखा निर्धारित करने के तरीकों और साधनों पर गंभीर विचारविमर्श होने लगा है। इन सभी गंभीर खामियों का, जिनका प्रतिकार एक अनियोजित अर्थव्यवस्था तक भी नहीं करती, मूलभूत कारण सोवियत रूस की तरह नियोजन का तरीका है जिसे द्वितीय आयोजन पर लागू किया गया है।

भारत में विस्तृत नियोजन के लिए और दो अधिक अवरोध हैं। इनमें से पहिला, पर्याप्त सांख्यकी विवरण का अभाव है जो विशेषतया विस्तृत नियोजन के लिए अत्यावश्यक है। इसकी थोड़ी सी भी गलती राष्ट्रीय पैमाने पर काफी बड़ी हो जाती है जिससे सारे देश को भयानक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। इस तरह से विस्तृत नियोजन का स्वरूप केवल ताशों का घर सा बन जाता है। दूसरा अवरोध, भारतीय समाज की बहुरूपीय समाज में यह संभव नहीं है।

पहिले लक्ष्यों को निर्धारित करना और बाद में साधन खोजने के लिए तीव्र प्रयत्न करना तभी संभव है जबकि अनिवार्यता के तत्व का सहारा लिया जाय। उदाहरण के तौर पर आर्थिक साधनों को जुटाने के लिए राज्य, व्यापक पैमाने पर अनिवार्य बचत योजना तभी लागू कर सकता है जबकि पदार्थों पर सर्वांगीण भौतिक नियंत्रण हो और उपभोक्ता सामान तथा खाद्य पदार्थों पर सम्पूर्ण राशनिंग जारी हो। उस स्थिति में श्रम की गति-शीलता समाप्त हो जायगी क्योंकि राज्य, श्रम-दल का परम-निदेशक बन जायगा। इन सभी बातों के लिए सख्त कदम और पुलिस की निगरानी सामाजिक ढांचे का अंग बन जायगी।

तीव्र और व्यापक आर्थिक विकास के लिए हालांकि भारी उद्योग का ठोस आधार विद्यमान होना आवश्यक और वांछनीय है फिरभी यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि स्वयं भारी उद्योग काफी नहीं है। यदि भारी उद्योगों की निर्माण प्रक्रिया में भारी घाटे की अर्थव्यवस्था का सहारा लिया जाता है तो मुद्रास्फीति पैदा हो जायगी जो इस तथ्य के रूप में स्पष्ट होगी कि उपभोक्ता सामानों का औद्योगिक उत्पादन, जारी की गई मुद्रा से समुचित अनुपात नहीं रख सकेगा। इसके अलावा उपभोक्ता सामानो के बिना जिनकी पूर्ति में भारी उद्योगो पर अनुचित जोर देने से, क्षति पहुंचेगी, शब्द "जीवनमान" का कोई अर्थ ही नहीं रहता है।

दूसरी समस्या कृषि के बारे में पैदा होती है जो भारतीय अर्थ-व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। जब भारी उद्योग पर अनुचित जोर दिया जायगा तब अर्थ-व्यवस्था का अन्तरक्षेत्रीय सन्तुलन बिगड़ जायगा और इस असन्तुलन से आर्थिक विकास पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

विस्तृत आर्थिक विकास चाहने वाले प्रशासन तंत्र की स्थापना केवल लोकतांत्रिक मूल्यों की लागत पर ही हो सकती है। एक निश्चित सीमा के बाहर प्रशासनात्मक तंत्र बढ़ जाने के कारण अनुशासन की समस्या काफी बड़ा रूप धारण कर लेती है। उस अवस्था में प्रशासनात्मक तंत्र में अनुशासन लागू करने और कार्य-क्षमता या उसके आभास को जारी रखने के लिए निष्ठुरता के तत्व की आवश्यकता होती है।

समन्वय की समस्या भी काफी बड़ी है और यदि अनुशासन की समस्या का समाधान भी किया जा सकता हो लेकिन समन्वय की समस्या का समाधान आसान नहीं है। इसके अलावा भारत के प्रशासन में अनुभवी प्रबन्ध करने वाले व्यक्तियों का तथा सार्वजनिक प्रशासन की कार्य-क्षम पद्धतियों के आविर्भाव का अभाव है जिससे परिवर्तन-शील समाज की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। इन सब बातों को एकदम पैदा नहीं किया जा सकता है। हमको अंग्रेजों से विरासत में मिली उनकी प्रशासनात्मक पद्धतियों को खत्म करने और समाज की परिवर्तितशील रचना औद्योगीकरण की समस्याओं के अनुसार नई पद्धतियों को अपनाने में अनेक दशाब्दियां लग जायंगी।

अतः यदि सोवियत किस्म का विस्तृत नियोजित विकास भारतीय अवस्थाओं के लिए अनुपयुक्त है तो प्रश्न उठता है कि भारत को किस प्रकार के नियोजन को अपनाना चाहिए। इस प्रकार के लेख में तो भारत के लिए उपयुक्त नियोजन पद्धति की केवल मोटी रूपरेखा ही दी जा सकती है।

सबसे पहिले यह महत्वपूर्ण बात ध्यान रखनी चाहिए कि भारत में नियोजन का उद्देश्य राष्ट्रीय समृद्धि की वृद्धि, उसके समान वितरण और एक न्यायपूर्ण सामाजिक रचना के लिए तीव्र और व्यापक आर्थिक विकास करना है। इस उद्देश्य के लिए कुछ बुनियादी सिद्धान्तों को मान्यता देनी चाहिए। वास्तविक नियोजन को सबसे पहिले इस आधार से आरम्भ होना चाहिए कि मानव स्वभाव की मान्यता उसके अनुसार ही होनी चाहिए न कि उसे किस प्रकार के होने से। दूसरे शब्दों में वैयक्तिक पहल और अध्यवसाय को काफी महत्व देना चाहिए। निजी सम्पत्ति के अधिकार की सुदृढ़ संस्थापना और सम्मान होना चाहिए। इसके अलावा वास्तविक नियोजन को आर्थिक नियमों के ठोस सत्यों की ओर भी देखना चाहिए जिन्हें कानून बनाकर न तो समाप्त किया जा सकता है और न बदला ही जा सकता



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भले ही कानून कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो।

भारत में नियोजन का श्री गणेश भारतीय समाज की बहूरुपीय रचना के तथ्य की मान्यता से होनी चाहिए। वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ योजना के अनुसार ही कार्य करता है। वह वस्तुस्थिति पर अपना निश्चय लेना सीखता है और तदनुसार अपनी आर्थिक प्रवृत्तियों का नियोजन करता है। एक उद्योगपति जो एक उत्पादन प्लान्ट की स्थापना करता है, वह तैयार माल के लिए कुछ निश्चित मांग की अपेक्षा कर लेता है, उसके विकास की कुछ संभावना निश्चित करता है और सामान्य रूप से वस्तुस्थिति के प्रति अपना निश्चय करता है जो उद्योग आरंभ करने के लिए प्रेरणा देता है। इसी प्रकार जो किसान चावल की अपेक्षा गेहूँ या खाद्य फसलों की बजाय नकद फसलों को बोता है वह भी वस्तुस्थितियों के प्रति अपना निश्चय लेता है और स्वयं अपनी एक योजना के अनुसार कार्य करता है। इसी प्रकार एक विद्यार्थी जो वैद्यकीय अथवा कानून का अध्ययन करता है उन वस्तु-स्थितियों के अनुसार अपना निश्चय लेता है जो उसके जीवन के लिए प्रेरणास्पद होती हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रत्येक आर्थिक प्रवृत्ति प्राथमिक रूप से किसी न किसी प्रकार के नियोजन पर आधारित है। इसमें कुछ विचार करके और निर्णय लेने की प्रक्रिया निहित है। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति और सभी सतहों पर रोजाना इस प्रकार के लाखों निर्णय लिये जाते हैं जिनसे कुल आर्थिक प्रवृति निर्मित होती है। राज्य को आर्थिक विकास के एक सहायक के रूप में कार्य करना चाहिए। व्यक्ति या सहकारी उद्योगों का (जिनका स्वरूप ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियों में मिलता है) स्थानापन्न करने की बजाय राज्य को जहां कहीं जरूरी हो उनकी सहायता और जहां कभी कहीं संभव हो उनको प्रोत्साहित करना चाहिए। इस बात की जांच के लिए राज्य को कुछ प्रयत्नशील होना पड़ेगा कि आर्थिक साधन, जन-शक्ति, तांत्रिक ज्ञान, प्रबन्ध योग्यता तथा कच्चा सामान जैसे बुनियादी साधनों की कितनी मात्रा देश में विद्यमान है। इसके बाद राज्य को आर्थिक विकास के लिए कुछ प्राथमिकताएं निश्चित करनी होंगी और उस आधार पर विकास को प्रोत्साहित करना होगा।

लक्ष्यों को निर्धारित करने के बाद, जिनको उचित परिवर्तित दशाओं की आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता होनी चाहिए, राज्य को चाहिए कि अर्थव्यवस्था के विकास के लिए आवश्यक सरंजाम-रूपरेखा की व्यवस्था करें। इस प्रकार की सरंजाम-रूपरेखा के अन्तर्गत अच्छी सड़कों, रेल मार्गों, बन्दरगाहों, अस्पतालों, तांत्रिक शालाओं, और इंजीनियरिंग कालेजों, नागरिक चेतना, आत्मसंयम और व्यक्तिगत विकास पर जोर देने वाली शैक्षणिक सुविधाओं, कार्यक्षम डाक, तार और टेलीफोन सम्बन्धी सुविधाओं और सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिज्ञों से अप्रभावित तथा कम से कम नियमादि से संचालित एक प्रशासन तंत्र आदि बातों का समावेश होता है।

विकास के लिए इस प्रकार की सरंजाम-रूपरेखा और आर्थिक वातावरण की व्यवस्था करने के पश्चात् राज्य को प्रतियोगिता का अवसर देना चाहिए। एकाधिकार (मोना-पली) चाहे निजी हो या सार्वजनिक, आर्थिक विकास का अवरोधक है। एकाधिकारों की स्थिति में किस प्रकार उप-भोक्ता को कष्ट उठाना पड़ता है, इस तथ्य को अनेक प्रमाण विद्यमान है। इस लिए यह जरूरी है कि राज्य, एका-धिकारी उद्योगों को आरंभ करना बन्द करे और विद्य-मान उद्योगों का राष्ट्रीयकरण न करे। उसको चाहिए कि वह निजी घटकों में स्वास्थ्य प्रतियोगिता का अवसर दे और जब कभी राज्य को आर्थिक विकास के हित में आर्थिक विकास के क्षेत्र में प्रवश करना पड़े तो उसको चाहिए कि वह निजी क्षेत्रों के घटकों के साथ उचित आधार पर प्रति-योगिता करे।

इस प्रकार के वास्तविक नियोजन का उद्देश्य पर्याप्त उपभोक्ता पदार्थों का उत्पादन करना होना चाहिए। कोई भी केन्द्रीय सता नागरिकों की विभिन्न आवश्यकताओं का अन्दाजा नहीं लगा सकती है। साथ-साथ उपभोक्ता पदार्थों से ही शब्द "जीवनमान" का अर्थ सार्थक होता है। इस लिए कुछ नियोजकों को नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को एक नियोजन के रूप में यह निश्चय करना है कि उसे किस चीज की आवश्यकता है। उसकी मांगों को पूरा करने में बड़े पैमाने पर आर्थिक प्रवृत्ति गतिशील होती है, लोगों को



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# महाराष्ट्र का चीनी उद्योग

साधारणतः यह स्वीकार किया जाता है कि उत्तर प्रदेश व बिहार गन्ने व चीनी उद्योग के सबसे बड़े क्षेत्र हैं। इसमें सन्देह नहीं कि गन्ने व चीनी के उत्पादन की दृष्टि से यह बिलकुल ठीक है। इस उद्योग पर इन दोनों का ही नियंत्रण रहा है, किन्तु पिछले कुछ वर्षों से दक्षिण और विशेषकर महाराष्ट्र इस एकाधिपत्य को चुनौती देने लगा है। वहां सही रफ्तार पर प्रति एकड़ गन्ने के उत्पादन और प्रति मन गन्ने से चीनी का उत्पादन उत्तर प्रदेश से बहुत अधिक है। यदि यह स्तर जारी रहा तो चीनी उद्योग में उत्तर प्रदेश का अनुपात कम होने लगेगा। वहां खेती के वैज्ञानिक तरीकों से जहां प्रति एकड़ गन्ने की पैदावार बढ़ी है, वहां गन्ने की किस्म में भी बहुत अधिक सुधार हुआ है। उत्तर प्रदेश बिहार ही नहीं अनेक विदेशों की प्रत्येक का महाराष्ट्र आगे बढ़ गया है।

आज से दो तीन दशक पहले महाराष्ट्र में खेती की अवस्था अच्छी नहीं थी। बम्बई सरकार ने कृषि को उन्नत करने के लिए अनेक नहरें बनाई थीं किन्तु फसल बहुत हलकी होने के कारण न किसान कुछ लाभ उठा सके और न सरकार को ही अपने विनियोग का कुछ फल मिल सका। सरकार का किसानों से लगान भी वसूल नहीं हो सका और उसे बकाया वसूल करने के लिए कुछ जमीन नीलाम करनी पड़ी। इन दिनों में चीनी संरक्षण कर का लाभ उठा कर कुछ चीनी-उद्योग कम्पनियां स्थापित हुईं और उन्होंने सरकार के सहयोग का आश्वासन पाकर कुछ जमीनें खरीद लीं। बहुत से किसानों ने भी अपनी जमीनें मिलों को बेच दी, क्योंकि उन्हें खेती से कुछ नहीं बचता था। मिलों ने भी कुछ जमीन खरीद कर और कुछ जमीन पट्टे पर ले कर वहां अनेक वैज्ञानिक साधनों से खेती शुरु की। खेती में निरन्तर वैज्ञानिक शोध, नए क्षेत्रों में सुधार तथा पूंजी विनियोग का परिणाम यह हुआ कि महाराष्ट्र में गन्ने की उपज तथा उस गन्ने से चीनी का निर्माण बहुत बढ़ गया। नीचे की तालिका यह बताती है की अन्य राज्यों तथा विदेशों की अपेक्षा गन्ने और चीनी का उत्पादन वहां कितना बढ़ गया है।

| नाम राज्य | प्रति एकड़ गन्ना टनों में | गन्ने में चीनी का उत्पादन प्रतिशत |
|---|---|---|
| हवाई | ६२.५ | १२.२३ |
| पेरू | ४१.१४ | १२.३३ |
| जावा | ५६.२० | ११.४९ |
| जापान | २८.०७ | १२.९३ |
| भारत | १४.४९ | ९.८४ |
| महाराष्ट्र | ५८.८६ | ११.४६ |
| आन्ध्र | २७.८८ | ९.५३ |
| मद्रास | २५.६५ | ९.०७ |
| मैसूर | २४.११ | १०.३५ |
| उत्तर प्रदेश | १२.१२ | ९.६० |
| बिहार | ४.८७ | ९.७८ |
| कुल भारत की औसत | १४.४९ | ९.८४ |

उसे तालिका से यह स्पष्ट है कि महाराष्ट्र में अनेक विदेशों की अपेक्षा भी प्रति एकड़ गन्ना अधिक उत्पन होता है। भारत में तो गन्ने की किस्म भी वहां सब राज्यों से अच्छी हो गई, जिसमें मिठास बहुत अधिक है।

भारत सरकार ने योजना आयोग के निश्चयों के अनुसार प्रत्येक राज्य को भूमि सुधारों के अन्तर्गत अधिकतम जोत की सीमा निर्धारित

---

अधिक रोजगार मिलते हैं, आमदनी में वृद्धि होती है और सर्वांगीण समृद्धि बढ़ती है। संक्षेप में, नियोजन को स्वतंत्र उद्योग के लिए योना चाहिए न कि स्वतंत्र उद्योग के विरुद्ध।

अतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि वास्तविक नियोजन से तीव्र आर्थिक विकास और न्याय का सम्बर्द्धन होना है इस प्रकार के नियोजन से व्यक्तियों में पैदा होने वाली स्वाधीनता और उद्योग की भावना से ऐसे स्वाधीनता-प्रिय लोगों का एक राष्ट्र पैदा होगा जिन्हें न केवल अपनी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति का सन्तोष प्राप्त होगा बल्कि उन्हें एक स्वतंत्र समाज में निर्माण के आनन्द तथा महत्वाकांक्षाओं की प्राप्ति का भी अनुभव होगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने का आदेश दिया है। इस सुधार का मुख्य उद्देश्य यह है कि एक नियत सीमा से अधिक भूमिधारी से अधिक भूमि लेकर भूमिहीन किसानों में वितरित की जाए। प्रायः सभी राज्यों ने अधिकतम भूमि सीमा सम्बन्धी नियम बना लिये हैं। महाराष्ट्र राज्य की विधान सभा ने भी इसी तरह का विधेयक स्वीकार किया है। किन्तु महाराष्ट्र के विधेयक में एक नई विशेषता है, जिसका प्रभाव वहां के चीनी उद्योग पर पड़ेगा। योजना आयोग ने सीमा सम्बन्धी भूमि सुधारों का उल्लेख करते हुए कुछ अपवाद रखने का परामर्श दिया है। इस परामर्श के अनुसार जिन खेतों पर यांत्रिक खेती सुचारु रूप से हो रही हो, जिन खेतों की व्यवस्था अच्छी हो, उन्हें तथा चाय, काफी, तम्बाकू और गन्ने के व्यवस्थित फार्मों को भूमि सीमा के बन्धनों से मुक्त रखा जाना चाहिए। इन अपवादों को रखने का मुख्य उद्देश्य यह बताया गया है कि आज किसी भी स्थिति में देश कृषि-उत्पादन में कमी सहने को तैयार नहीं है। अन्य राज्यों में इन परामर्शों का पालन किया जा रहा है, यद्यपि अनेक वामपक्षी दलों ने इसका तीव्र विरोध किया है। महाराष्ट्र में नई सरकार ने गन्ने के फार्मों को इस धारा से मुक्त नहीं किया। इसलिए वहां चीनी उद्योग में चिन्ता की लहर ले गई है। चीनी उद्योग का कहना यह है कि यदि गन्ने के फार्म भी भूमि सीमा विधेयक के अन्तर्गत ले लिये गए तो भूमि के छोटे-छोटे खण्डों में बंट जाने के कारण गन्ने के उत्पादन पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा जो समस्त देश की आर्थिक व्यवस्था पर प्रभाव डालेगा।

चीनी उद्योग ने एक और दलील देकर इस विधेयक से बचना चाहा है। चीनी की ११ फैक्टरियों द्वारा कुल १०९ हजार एकड़ भूमि पर खेती होती है जिसमें से ७६ हजार एकड़ पट्टे पर ली है। यदि यह जमीन कम्पनियों के सब शेयर होल्डरों में, जो वस्तुतः इस जमीन के स्वामी हैं, बांटी जाए तो प्रति व्यक्ति ५.१९ एकड़ से अधिक भूमि नहीं पड़ेगी और वह भी विधेयक के अन्तर्गत रखी ही जा सकती है।

चीनी उद्योग का यह भी कहना है कि समस्त राज्य में जितनी कृषि योग्य भूमि विद्यमान है, उसकी केवल ०.०६ प्रतिशत भूमि चीनी उद्योग के पास है। इतनी भूमि को छोड़ने से सरकार का कोई नुकसान नहीं होता और न इस भूमि के विभाजन से भूमिहीन किसानों को कोई विशेष लाभ ही होगा। किन्तु भूमि के खण्ड-खण्ड कर देने से गन्ने का उत्पादन बहुत कम हो जाएगा, क्योंकि किसान अपनी अशिक्षा और सीमित साधनों के कारण ऊंचा उत्पादन स्तर कायम नहीं रख सकेंगे।

दूसरी ओर इस विधेयक के समर्थकों का भी पक्ष जान लेना चाहिए। उनका कहना है कि किसान से कम्पनियों ने केवल ५० रु० प्रति एकड़ लगान पर भूमि ली हुई है जब कि कम्पनियां उससे बहुत अधिक (करीब ८०० रु०) नफा कमाती हैं। फिर अब मिलों के समीपवर्ती किसान भी खेती के नए तरीकों से परिचित हो चुके हैं। इसलिए वे उत्पादन स्तर को बहुत नीचे नहीं गिरने देंगे। उन्हें एक कानून द्वारा उचित मूल्य पर चीनी के कारखानों को गन्ना बेचने के लिए विवश भी किया जा सकता है। विधेयक के समर्थकों की इन युक्तियों में कितना बल है और उद्योग के पक्ष में कितना बल है, इस पर विचार करके भारत सरकार कोई निश्चय करेगी तथा महाराष्ट्र सरकार को परामर्श देगी कि विधेयक से चीनी उद्योगों को मुक्त रखा जाए या नहीं।

● ●

## भारत के सबसे बड़े

विभिन्न वस्तुओं के सबसे बड़े उत्पादक राज्य इस प्रकार है :—

बंगाल—ज्वार, बाजरा, मूंगफली, अरंडीबीज और कपास।

उत्तर प्रदेश—मक्का, गेहूँ, जौ, तारकोल, 'दूसरी दालें' तिल, सरसों, अलसी, गन्ना और आलू उत्तर प्रदेश खाद्यान्नों का भी सबसे बड़ा उत्पादक है।

मैसूर—रागी और काफी

मद्रास—छोटा बाजरा

असम—चाय

केरल—रबर, काली मिर्च, अदरक, नारियल और काजू

आन्ध्र—तम्बाकू और मिर्च



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पंचवर्षीय योजना और विदेशों से वित्तीय सहायता

कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

•

राष्ट्रीय विकास परिषद् से परिमाणित तीसरी पंचवर्षीय योजना की रूपरेखा के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र के ७५ अरब रुपये के व्यय में से करीब एक तिहाई व्यय विदेशी सहायता से पूर्ण किये जायेंगे। भिन्न-भिन्न देशों से जो समझौते हुए हैं वे करीब २७.७८ अरब रुपये के हैं। इनमें से बहुत सी रकम दूसरी योजना के लिए थी। पिछले समझौतों में निश्चित रकम जिसका उपयोग मार्च, १९६० तक नहीं हुआ था, ९। अरब रुपये के करीब थी। ३१ मार्च के बाद भी बहुत से समझौते हुए हैं। इनके अनुसार ९७७.१९ करोड़ रुपया विदेशों से मिलने के समझौते हो चुके हैं। आगामी अप्रैल में वाशिंगटन में 'एड इंडिया' क्लब की बैठक होने वाली है। इस क्लब के पांच देश सदस्य हैं। संयुक्तराज्य अमेरिका, ब्रिटेन, पश्चिमी जर्मनी, कनाडा और जापान सदस्य हैं। विश्वबैंक ने इटली, फ्रांस, स्विट्जरलैंड, स्वीडन और नीदरलैंड से भी इस क्लब का सदस्य बनने का अनुरोध किया है। इन देशों के अतिरिक्त रूस, चेकोस्लोवेकिया, यूगोस्लेविया पोलैंड आदि देशों ने भी भारत को पर्याप्त राशि देने का वचन दिया है। योजना आयोग का ख्याल है कि २२ अरब रुपया तीसरी योजना की पूर्ति के लिए मिल सकेगा। हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि जापान, फ्रांस और स्विट्जरलैंड में बहुत सी मशीनरी हमें वहां के उत्पादकों द्वारा हमें उपहार में मिली है। रौकफैलर संस्थान ने भी एक बड़ी राशि सहायता में दी है। पी० एल० ४८० समझौते के अन्तर्गत हमें कम सहायता नहीं मिल रही है। इसी तरह अन्य भी अनेक देशों से थोड़ी बहुत सहायता मिल रही है। सहायता की जितनी राशि का वचन दिया गया है वह सब उपयोग में नहीं आ सकी। इसके दो मुख्य कारण हैं। एक तो यह कि देने वाले देशों ने पूरी रकम नहीं दी और दूसरा कारण यह है कि भारत सरकार और उसकी विभिन्न एजेंन्सियां उसका नियत काल में उपयोग नहीं कर सकीं। संयुक्त राज्य अमेरिका ने अभी तक सबसे अधिक सहायता दी है—१४८०.३२ करोड़ रुपये। इसमें से ५०५.६८ करोड़ रुपया तो अनुदान ही है।

१.१५ करोड़ रुपये के अनुदान के अतिरिक्त रूस ने २.५ प्रतिशत के ब्याज पर करीब ३२२.५३ करोड़ रुपया ऋण दिया है। जिसमें से सबसे बड़ी राशि भिलाई के संस्थान के लिए है।

ब्रिटेन की सहायता दुर्गापुर के स्टील प्लांट तथा नहर कटिया के पाइप लाइन के लिए हैं। उसका कुल ऋण १६२.६६ करोड़ रुपया है।

कनाडा ने १०६.२८ करोड़ रुपये की सहायता आश्वासन दिया है। गेहूँ के लिए करीब १६ करोड़ रुपये ऋण तथा अनेक योजनाओं के अतिरिक्त ट्राम्बे में अणु शक्ति के रियेक्टर के लिए उसकी सहायता उल्लेखनीय है।

जर्मनी ने १२२.२४ करोड़ रुपया सहायता के लिए देने का वचन दिया है। जिसमें से एक बड़ी राशि रूरकेला लोहे के कारखाने के लिए है।

जापान, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, रूमानिया, चेकोस्लेवेकिया, नार्वे, पोलैंड, स्विटज़रलैंड, फ्रांस और फिनलैंड तक के देशों ने भारत की पंचवर्षीय योजनाओं के प्रति सहानुभूति प्रकट करतेहुए करोड़ों रुपये की सहायताएं दी हैं या देने का वचन दिया है।

विश्व बैंक अब तक ३१५.२८ करोड़ रुपये के ऋण दे चुका है। इसमें से २१९.४४ करोड़ रुपये सार्वजनिक क्षेत्र के लिए, ९५.८४ करोड़ रुपये निजी क्षेत्र के लिए हैं।

अमेरिका टैक्नीकल मिशन बोर्ड और स्पेशल फंड, विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा अन्य अनेक संस्थाओं से भी भारत को करोड़ों रुपये की सहायता प्राप्त हुई है।

इन सब ऋणों और सहायताओं के आधार पर भारत सरकार और उसका योजना आयोग अपनी तीसरी पंचवर्षीय योजना को पूर्ण करने की आशाएं कर रहा है। यह ठीक है कि अविकसित देश यदि विशेष रूप से विकास करना चाहते हैं तो उन्हें विदेशों से सहायता अवश्य लेनी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# एशिया में जनसंख्या नियंत्रण

ले०—श्री सी० चन्द्रशेखरन्

ईरान से जापान तक का क्षेत्र एशिया और सुदूर पूर्व आर्थिक कमीशन के क्षेत्र में आता है। यह विश्व के क्षेत्र-फल का छटा भाग है और विश्व की ५३.४ प्रतिशत जन-संख्या इसी क्षेत्र में है।

सन् १९२० में एशिया, दूर पूर्व की जनसंख्या विश्व की जगसंख्या की ५१.६ प्रतिशत थी। सन् १९५६ में यह बढ़कर ५३.४ प्रतिशत अर्थात्, लगभग १ अरब ४६ करोड़ २० लाख हो गयी। उत्तर और दक्षिण अमेरिका की जन-संख्या, १९२० में विश्व की जनसंख्या की ११.५ प्रतिशत थी, जो १९५६ में १३.७ प्रतिशत हो गयी, जबकि यूरोप की जनसंख्या (१५.१ प्रतिशत) इस अवधि में ३ प्रतिशत कम हुई।

विश्व की सबसे अधिक जनसंख्या वाले दो देश-चीन और भारत भी, इसी क्षेत्र में हैं। चीन की जनसंख्या ६३ करोड़ और भारत की ३९ करोड़ है, यह इस क्षेत्र की कुल जनसंख्या की ७० प्रतिशत है। इंदोनेशिया, जापान और पाकिस्तान की जनसंख्या लगभग ८-८ करोड़ है, जो रूस और अमेरिका को छोड़कर अन्य सब देशों से अधिक है। बर्मा, दक्षिण और उत्तर कोरिया, कोरिया, दक्षिण और उत्तर वियतनाम, फिलीपीन और थाईदेश की जनसंख्याएं २-३ करोड़ के लगभग है। अफ-गानिस्तान, श्रीलंका, मलाया, नेपाल, ब्रिटिश बोर्नियो, कम्बोदिया, हांगकांग, लाओस, सिंगापुर आदि की जनसंख्या तो १ करोड़ से कम हैं और कुल की १०·२० लाख ही है।

यूरोप को छोड़कर, विश्व भर में इस क्षेत्र में सबसे घनी आबादी है। १९५६ में इस क्षेत्र में औसतन एक वर्ग किलोमीटर में ६९ व्यक्ति रहते थे, जबकि विश्व का औसत २० व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था। चीन, जापान और दक्षिण कोरिया में घनत्व सबसे अधिक, प्रतिवर्ग किलोमीटर २२५ है। लाओस में सबसे विरल बस्ती है—प्रतिवर्ग किलोमीटर केवल ६ व्यक्ति।

## मृत्यु संख्या में कमी

इस क्षेत्र के देशों में इधर कुछ वर्षों में मृत्यु संख्या काफी घटी है। उदाहरण के लिए १९११-२० में भारत में, प्रति १००० व्यक्ति पर ४७ मरते थे। १९२१-३० में, मृत्यु संख्या घटकर ३६ और १९३१-४० में ३१ रह गयी। दूसरे विश्व युद्ध के बाद, इस क्षेत्र के लगभग सभी देशों में—मृत्यु संख्या बहुत घट गयी है। १९३०-४० में श्रीलंका में मृत्यु संख्या १००० में से २५ थी और १९५० में १३, और १९५७ में १० हो गयी। भारत में, नमूने की एक पड़ताल से पता चला कि १९५८-५९ में मृत्यु संख्या १००० व्यक्तियों में १९ थी।

बीमारियों और अन्नाभाव को कम करने के उपायों के फलस्वरूप मृत्यु-संख्या कम हो रही है। भारत की पंच-वर्षीय योजनाओं में जन-स्वास्थ्य पर ध्यान दिया गया है और मलेरिया, फील रोग, तपेदिक, कुष्ट और गुप्त रोगों की रोकथाम के विशाल कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

एशिया और सुदूरपूर्व में औसत उम्र काफी बढ़ी है, फिर भी यह विकसित देशों से कम है। १९११-२० में भारत में नवजात बच्चों का औसत जीवन २० साल था। १९२१-३० में २७ और १९४१-५० में ३३ वर्ष हो गया और इस समय अनुमानतः ४० साल हो गया है। श्रीलंका में १९१०-१२ में, औसत जीवन ३६ साल था, जो १९५५ में बढ़कर ५४ साल हो गया। जापान में १९२०-२५ में मर्दों की जिन्दगी औसतन ४२ साल और औरतों की ४३ साल थी। १९५५ में मर्दों की औसत जिन्दगी ६४ और औरतों की ६८ साल हो गयी।

---

पड़ेगी। किन्तु हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि विदेशी ऋण जब अरबों रुपये तक पहुँच जाते हैं तब उनका ब्याज चुकाना और वार्षिक किश्तें देना एक असह्य बोझ बन जाता है। इसीलिए अनेक अर्थशास्त्री विदेशों से अधिक ऋण लेने की अपेक्षा निजी उद्योग में उनका सहयोग स्वामित्व प्राप्त करने का अधिक समर्थन करते हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## जनसंख्या में वृद्धि

विश्व भर में जनसंख्या में सबसे अधिक तेजी से वृद्धि चीन (तेवान), मलाया हांगकांग और सिंगापुर में होती है। यहां ३ प्रतिशत के हिसाब से जनसंख्या बढ़ती है। कम्बोदिया, श्रीलंका, चीन, पाकिस्तान, फिलीपीन, थाईदेश और वियतनाम की जनसंख्या २ से ३ प्रतिशत बढ़ रही है। ब्रिटिश बोर्नियो, बर्मा, भारत, इंदोनेशिया और लाओस में २ प्रतिशत और जापान में लगभग १ प्रतिशत वृद्धि होती है। जापान में कम वृद्धि का कारण यह है कि वहां गर्भपात गैर-कानूनी नहीं है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ ने इस क्षेत्र के १३ देशों में अगले कुछ वर्षों में जनसंख्या की वृद्धि का अनुमान लगाया है! इनके आधार पर कहा जा सकता है कि अगले २५ वर्षों में १९५५-८० में कम्बोदिया और थाईदेश की आबादी दुगुनी और श्रीलंका, चीन ( तैवान ), मलाया, फिलीपीन और सिंगापुर की दुगुनी से भी अधिक हो जाएगी। भारत, इंदोनेशिया, लाओस और वियतनाम में भी आबादी १९५५ से ७०-८० प्रतिशत अधिक होगी। इस प्रकार वृद्धि से इन देशों के लोगों का रहन-सहन सुधारने के प्रयत्नों को काफी धक्का लग सकता है।

## परिवार आयोजन

इस क्षेत्र के बहुत से देशों में जन्म-निरोध का कार्यक्रम चल रहा है। भारत में सरकार ने पहली योजना के शुरू में, १९५१ में इस पर ध्यान दिया। दूसरी और तीसरी योजनाओं में इस पर और जोर दिया जा रहा है। तीसरी योजना में २५ करोड़ रु० रखे जाएंगे।

पाकिस्तान सरकार ने भी आबादी की बढ़ती रोकने की कोशिश शुरू की है। श्रीलंका में भी जन्म-निरोध कार्यक्रम चालू है। हांगकांग और सिंगापुर की सरकारें भी जन्म निरोध का समर्थन कर रही है, और जन्म निरोध के प्रचार से इन देशों की अधिक दशा सुधारने के प्रयत्न भी सफल हो सकते हैं।

● ●

## परमाणुशक्ति और भारत

परमाणुशक्ति आयोग के अध्यक्ष डा० एच० एच० भाभा ने परमाणु क्षेत्र में भारत की प्रगति पर प्रकाश डालते हुए यह घोषणा की है कि अब भारत परमाणु विद्युत उत्पादन के छोटे केन्द्र स्वयं बनाने में समर्थ हो गया है। तारापुर में प्रथम पारमाणविक विद्युत केन्द्र १९६५ में स्थापित हो जायगा। उन्होंने यह भी घोषणा की थी कि यदि हम चाहें तो दो वर्ष के अन्दर परमाणुबम भी बना सकते हैं। अब ऐसी स्थिति आ चुकी है कि विदेशों से टेन्डर आमंत्रित करने की बहुत आवश्यकता नहीं पड़ेगी। कुछ वैज्ञानिकों में इस प्रश्न पर विचार चल रहा है कि परमाणुशक्ति से बिजली उत्पन्न करना अधिक महंगा पड़ता है। श्री भाभा ने बताया है कि यह अन्तर बहुत अधिक नहीं है। हमें आनेवाली अधिक आवश्यकताओं के लिए अभी से इस दिशा में प्रयत्न प्रारम्भ कर देना चाहिए। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि चीन की अपेक्षा परमाण क्षेत्र में हम आगे बढ़े हुए हैं। निःसन्देह यह समाचार भारत की औद्योगिक उन्नति का अच्छा प्रमाण है।

## ८४५ नई कम्पनियां

इस वर्ष के प्रथम छः महीनों से ८४५ नई कम्पनियों की रजिस्ट्री हुई है, जिनकी अधिकृत पूंजी ११३ करोड़ रुपया है। पिछले कुछ वर्षों में सरकारी कम्पनियों की संख्या और विशेषकर उनकी प्रदत्त पूंजी (करोड़ रुपये में) निम्नतालिका से ज्ञात होती है।

| वर्ष | सरकारी कम्पनियां | | गैर सरकारी कम्पनियां | |
|---|---|---|---|---|
| | संख्या | प्रदत्त पूंजी | संख्या | प्रदत्त पूंजी |
| १९५६ | ६१ | ६६.० | २९,८१३ | ९,५८.२ |
| १९५७ | ७४ | ७२.६ | २९२८३ | १०,०५.८ |
| | | (+६.६) | | ( +६.८ ) |
| १९५८ | ९१ | २,५६.८ | २८,१८९ | १०४९.५ |
| | | (१८४.२) | | (+४४.५) |
| १९५९ | १०३ | ४,२४.२ | २७,३०६ | १०,८५.६ |
| | | (+१६७.४) | | (+३६.१) |
| ३१-३-१९६० | १२५ | ४,६८.४ | २६,७९६ | ११२४.७ |
| | | (+४४.२) | | (+३९.१) |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# योजनाओं में खेती और उद्योग का स्थान

लेखक—त्रिलोकसिंह, अतिरिक्त सचिव, योजना आयोग

जब कोई पंचवर्षीय योजना पूरी होने को आती है और उसके बाद अगली पंचवर्षीय योजना बनाने की बात चलती है तो देश के साधनों के सम्बन्ध में चर्चा शुरू हो जाती है, साथ ही इस बात पर भी बहुत बहस मुबाहिसा होता है कि खेती और उद्योगों में से किसको प्राथमिकता दी जाए। इन दोनों ही क्षेत्रों के पक्ष में बोलने वाले लोग यह भी मानते हैं कि खेती और उद्योग एक-दूसरे पर निर्भर हैं और बिना एक-दूसरे की सहायता से आगे नहीं बढ़ सकते। अगर ऐसा है, तो यहां इस बात पर विचार कर लेना लाभदायक होगा कि खेती और उद्योगों का आपसी सम्बन्ध क्या है? साथ ही यहां कुछ ऐसे प्रश्न पर प्रकाश डालना उचित होगा जिन वर्तमान परिस्थितियों में ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है।

कभी-कभी खेती या उद्योगों के पक्ष में बोलते हुए यह कहा जाता है कि हमें इतिहास से सबक लेना चाहिए। एक तो दूसरे विषयों की तरह इस विषय में भी इतिहास में हमें हू-बहू उदाहरण नहीं मिलता दूसरे आर्थिक दृष्टि से विकसित वर्तमान किसी भी देश को शायद इतनी बड़ी जनसंख्या और इतनी बेरोजगारी का सामना नहीं करना पड़ा जितना हमारे देश में है। इंगलैंड में औद्योगिक क्रांति से पहले खेती के क्षेत्र में क्रांति हुई। फ्रांस में १८वीं शताब्दी के अन्त में और १९वीं शताब्दी के शुरू में भूमि को किसान की मिल्कियत मान लिया गया। इससे वहां की खेती का विकास हुआ, लेकिन विकास की गति तब तक बहुत धीमी रही, जब तक ५० वर्ष बाद वहां परिवहन की सुविधाओं का विकास हुआ और उत्पादन बढ़ाने के लिए एक नई प्रेरणा मिली। जर्मनी में सरकारी नीति और सहकारी संस्थाओं ने मुख्य कार्य किया। जापान में खेती का विकास औद्योगिक विकास से पहले हुआ। इसका कारण वहां की वे परिस्थितियां थीं जिनमें खेती को ज्यादा व्यापारिक होना पड़ा और खेतिहरों को पहले की अपेक्षा ज्यादा टैक्स देने के लिए अपनी हालत तेजी से सुधारनी पड़ी। अमेरिका में प्रगति की शुरुआत प्राकृतिक सुविधाओं के

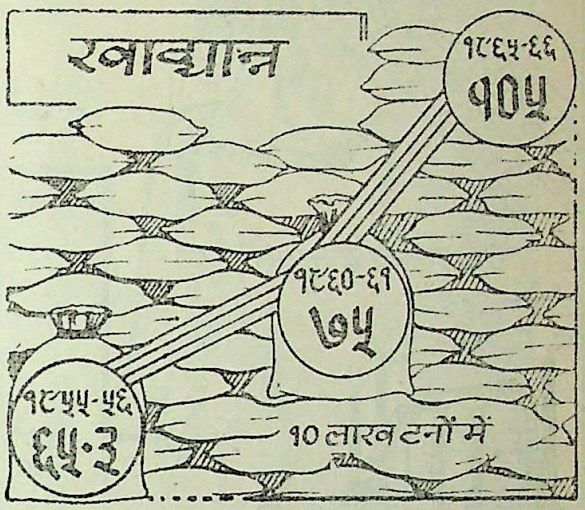


कारण हुई, लेकिन बाद में बाहर से आने वाले लोगों ने उस प्रगति को और भी तेज कर दिया क्योंकि जो लोग वहां आकर बसे, वे अपने साथ पूंजी और तकनीक दोनों लाए। इससे वहां की खेती के तरीकों में सुधार हुआ।

इन सब देशों के विकास में हमारे लिए जो बात महत्व रखती है, वह केवल यह है कि आर्थिक विकास के प्रारम्भिक दिनों में खेती का विकास पहले हुआ या उद्योगों का। इन सब उदाहरणों से यह पता चलता है कि इन दोनों क्षेत्रों के विकास में बहुत लम्बे अर्से का अन्तर नहीं रहा। अगर किसी निश्चित अवधि को लें। (यह अवधि बहुत छोटी नहीं होनी चाहिए) तो यह पता लगेगा कि फलते फूलते उद्योगों और पिछड़ी हुई खेती कभी साथ नहीं चल पाए।

खेती और उद्योगों के मूल सम्बन्धों को थोड़े से शब्दों में हम इस प्रकार कह सकते हैं। उद्योगों के विकास और उससे सम्बद्ध नगरों के विकास की प्रक्रिया में आवश्यक खाद्यान्नों, कच्चे माल और मजदूरों की मांग खेती ही पूरा कर सकती है। साथ ही बढ़ती हुई आबादी के लिए खाद्यान्नों और खुराक में पौष्टिक पदार्थों की मांग को भी खेती ही पूरा कर सकती है। विकास के प्रारम्भिक चरणों में भुगतान की क्षमता भी खेती द्वारा ही बढ़ सकती



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

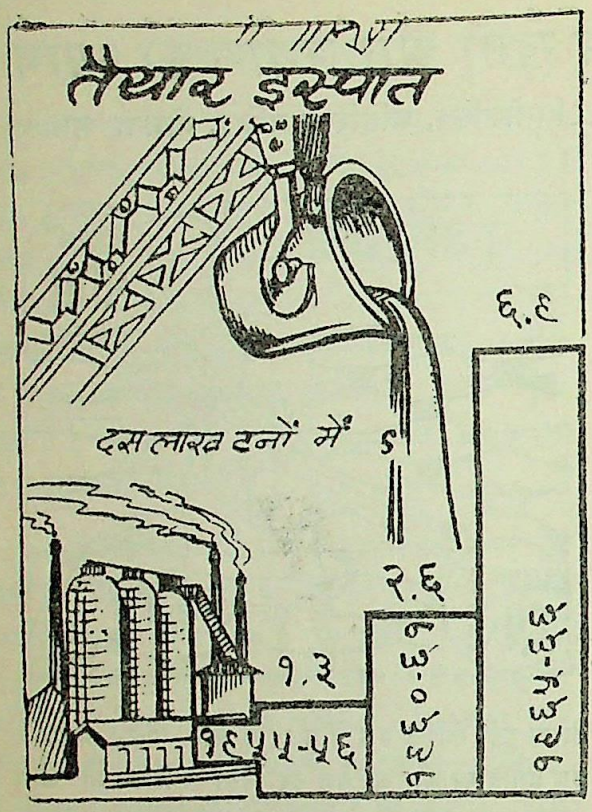


है। उधर उद्योगों से हमें खेती का उत्पादन बढ़ाने के साधन प्राप्त होते हैं। साथ ही उद्योगों के कारण उत्पादन के नये उपयोग निकलते हैं। उद्योग गांवों की बढ़ती हुई आबादी को कम करने में भी सहायता करते हैं क्योंकि बहुत से लोग उद्योगों में लग जाते हैं। इस प्रकार उनकी आय के नये जरिये हो जाते हैं और खेती की आमदनी शेष लोगों के लिए बच रहती है जिससे उनकी हालत सुधरती है।

आर्थिक विकास की सन्तुलित प्रक्रिया में बहुत सी बातों का ध्यान रखना होता है। सबसे पहली बात यह है कि अर्थ-व्यवस्था के विकास में खेती का योग कितना है। जहां खेती से राष्ट्रीय उत्पादन का ४० से ५० प्रतिशत तक प्राप्त होता हो, वहां खेती के विकास की गति कम-से-कम उतनी तेज अवश्य होनी चाहिए जितनी कि पूर्ण अर्थ-व्यवस्था के विकास के लिए अपेक्षित है। कुछ परिस्थितियां ऐसी होती हैं जिनमें, खासकर विकास की प्रारम्भिक अवधि में, ऐसा करना बिल्कुल आसान होता है। क्योंकि विकास का कार्य शुरू करने से पहले उत्पादन की मात्रा बहुत कम होती है। इसलिए थोड़ा-सा सुधार कर देने से उत्पादन में काफी वृद्धि हो जाती है। बाद में जब खेती के विकास पर विशेषकर खाद, सिंचाई वगैरा पर काफी पूंजी लगानी पड़ती है, तब लाभ का अनुपात कम होता है। विकास के पहले चरण में कुछ तो परम्पराओं के कारण और कुछ काफी मात्रा में जन-शक्ति उपलब्ध होने के कारण मुद्रा के विनियोग के बिना भी काफी काम किया जा सकता है जो बाद में संभव नहीं होता।

खेती का अधिक महत्व दिये जाने के पक्ष में दूसरा तर्क यह है कि इस क्षेत्र में उत्पादन बढ़ाने की प्रक्रिया लगभग वही है जो उपलब्ध जनशक्ति भरपूर काम लेने और उनको पूरा रोजगार देने की समस्या को हल करने की है। पूंजी निर्माण की दृष्टि से भी लगभग यही निष्कर्ष निकलता है। अर्द्ध-विकसित अर्थ-व्यवस्था में सर्वहित की दृष्टि से हर क्षेत्र को जब तक अर्थ-व्यवस्था का पूरा योग नहीं मिलता तब तक पूंजी निर्माण आवश्यक रूप से कम और अपर्याप्त होता है। ग्रामीण क्षेत्रों के भरपूर विकास द्वारा ही मुख्यत: ग्रामीण पूंजी की मात्रा बढ़ाई जा सकती है। इसलिए कुल मिलाकर अर्थ-व्यवस्था के विकास को ऐसा रूप देना होगा जिससे जल्दी-से-जल्दी प्रत्यक्ष रूप से यह उद्देश्य पूरा हो सके।

विचार-विनिमय से जो निष्कर्ष निकले हैं उनके अनुसार तीसरी योजना में कृषि का उत्पादन अन्दाज ३० प्रतिशत बढ़ जायगा। छोटी-मोटी हेर-फेर की तो संभावना रहती ही है लेकिन अब जो लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं वे निम्नलिखित हैं। इन पर अन्तिम रूप से विचार होना अभी बाकी है—

| | |
|---|---|
| खाद्यान्न | १० करोड़ टन |
| गन्ना | १ करोड़ ५ लाख टन |
| तिलहन | ९७ लाख टन |
| कपास | ७० लाख गांठ |
| जूट | ६५ लाख गांठ |

जो कुछ अब तक कहा गया है उससे यह सिद्ध हो जाता है कि खेती और राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की जरूरतों में काफी साम्य है और वे एक ही संयुक्त ढांचे के दो अंग

( शेष पृष्ठ ७६ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत की वन-सम्पदा

देवीप्रसाद नौटियाल

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी हमने अभी जंगल की उपयोगिता को नहीं समझा है, 'समझा नहीं' इसलिये कहा गया कि सरकारी आदेशों और कागजी योजनाओं के अतिरिक्त इस ओर कुछ भी महत्वपूर्ण मूर्त रूप में उन्नति दृष्टि से गायब है। १९५२ में राष्ट्रीय वन-नीति में यह महत्वपूर्ण प्रस्ताव रखा गया था कि ३३ प्रतिशत भू-भाग में बनों को उगाया जाय, जिसमें पर्वतीय व पठारी हिस्सों में वन के क्षेत्र को ६० प्रतिशत तक कर दिया जाय और २० प्रतिशत मैदानी क्षेत्रों में।

इस प्रस्तावित-नीति के बावजूद 'वन-क्षेत्र' का विघटन जारी है। १९५०-५१ में 'वन-क्षेत्र' २७७२३२ वर्गमील से घटकर १९५५-५६ तक २६८७०१ वर्गमील रह गया है, इसके बाद क्या प्रगति और अवनति हुई इसके आंकड़े अभी उपलब्ध नहीं हो सके। चीड़, फर, देवदार, राई-मुरेण्डा आदि नुकीली पत्तियों वाले वनों के क्षेत्र में ३० प्रतिशत की अवनति हुई याने १४१०७ वर्गमील से यह घटकर ९,७३६ वर्गमील क्षेत्र रह गया। निम्न तालिका चक्र से यह जानकारी सहज ही मिल सकती है कि किस किस्म के पेड़-पौधे कितने 'क्षेत्र' में उगते हैं !

(वर्गमील में क्षेत्रफल)

| | १९५०-५१ | १९५५-५६ |
|---|---|---|
| (क) कोनी फोरस (नुकीली पत्ती वाले पेड़ों के जंगल) | १४१०७ | ९,७३६ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | |
|---|---|---|
| (ख) चौड़ी पत्ती वाले (सख्त लकड़ी के जंगल) | | |
| (१) साल | ४०,७४७ | ४०,४४९ |
| (२) टीक | १६७८४ | २२,४४५ |
| (३) मिश्रित | २०५,६८४ | १,९६,०७१ |
| | २६८,७०१ | २७७,२३२ |
| (क) व्यापार योग्य लकड़ी वाले जंगल | २२५,७१४ | २१५,१३९ |
| (ख) बेकार जंगल | ५१५१८ | ५३,५६२ |
| | २७७,२३२ | २६८,७०१ |
| कानूनी संरक्षण के अन्तर्गत | | |
| (क) सुरक्षित जंगल | १३२७९५ | १३८,७९१ |
| (ख) संरक्षित | ४५५३२ | ६४,९११ |
| (ग) अवर्गीकृत वन | ९८,७२५ | ६४,९९९ |
| | २७७,२३२ | २६८,७०१ |

आमतौर पर इन वर्षों में वन सम्पदा की निकासी बहुत अधिक बढ़ी है। ईंधन के काम आने वाली लकड़ी का उत्पादन समूची वन सम्पदा के उत्पादन का मुख्य भाग है। ६० प्रतिशत लकड़ी ईंधन के काम आती है। यही दशा अन्य अविकसित व अर्ध विकसित नवोदित राष्ट्रों की है। यह अनुमान लगाया गया है कि एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशों में कुल लकड़ी का ४/५ भाग जलाने के काम में लाया जाता है; जबकि विकसित देशों में यह अनुपात कम है : १५ प्रतिशत उत्तरी अमरिका, ३४ प्रतिशत यूरोप में और रूस में ३७ प्रतिशत लकड़ी ईंधन में प्रयुक्त होती हैं। वास्तविक स्थिति यह है कि अविकसित देशों में ६० प्रतिशत जंगल हैं।

यूरोप में संसार के बन क्षेत्र का ⅓ प्रतिशत बन क्षेत्र है। परन्तु यूरोप के बनों का व्यापार योग्य लकड़ी का उत्पादन अविकसित देशों की अपेक्षा अधिक है। इसका प्रमुख कारण एक तो यह है कि अविकसित देशों के वनों का गठन, संरक्षण, विस्तार वैज्ञानिक रीति से नहीं किया गया, जबकि समृद्ध देशों में व्यापार योग्य लकड़ी के जंगलों का प्लांटेशन वैज्ञानिक रीति से किया गया, और निकासी वैज्ञानिक रीति से की जाती है।

भारत के जंगलों के बारे में तो यह कहा जाता है कि अब तक भारत के कुल बन क्षेत्र का ७५ प्रतिशत भाग खेती के लिये साफ कर दिया गया है, इसके अतिरिक्त जंगलों को ईंधन के लिये बेदर्दी से काटा गया है, इस कारण बन सम्पदा में गिरावट आती जा रही है।

नवीन योजनाओं में विभिन्न कारखानों की स्थापना के समय भारत को बन सम्पदा का महत्व समझ में आया, कागज, प्लाईवुड और रेयन कारखानों के लिये वनों का महत्व बहुत भारी हो गया। इस प्रकार भारतीय अर्थ-व्यवस्था में वन सम्पदा भी महत्वपूर्ण अंग है। इमारती लकड़ी का तो विशेष स्थान है। आज इमारती लकड़ी की भारी कमी महसूस की जा रही है। यह कमी १०-१५ वर्ष तक महसूस की जाती रहेगी जब तक बनों में उपयुक्त सुधार-प्रेमपूर्वक और लगन के साथ नहीं किया जाता। याद रहे कि भारत की बन सम्पदा का उत्थान देश की अर्थ-व्यवस्था और जीवन-स्तर को ऊंचा करने के लिये आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।

वर्तमान समय में भारत के भौगोलिक क्षेत्र के २० प्रतिशत भाग में बन हैं जबकि बाकी दुनियां में २३ प्रतिशत वन क्षेत्र भारत में है। भारत में प्रति-व्यक्ति वन क्षेत्र ०.५ एकड़ है जबकि रूस में ९ एकड़ और संयुक्त राज्य अमेरिका में ४.५ एकड़ है। भारतीय वनों की पैदावार क्षमता भी औद्योगीकृत देशों की तुलना में बहुत कम है। भारतीय वनों की उत्पादन-क्षमता एक एकड़ में वर्ष भर में ३ क्यूबिक फुट है, जबकि फ्रांस में यह ५७ क्यूबिक फुट, जापान में ३७ क्यूबिक फुट और संयुक्त राज्य अमरीका में १८ क्यूबिक फुट है। भारत के घनी आबादी वाले क्षेत्रों में तो जंगल नाम मात्र को हैं। कहीं सूखा क्षेत्र है जहां उपयोगी लकड़ी के जंगल हैं ही नहीं। कर्करेखीय वनस्पति ही भारत के जंगलों में उगती हैं। बहुत कम ऐसे इलाके हैं जहां टिम्बर अथवा इमारती लकड़ी के जंगल हैं।

## उत्पादन

बनों से हमें अनेक प्रकार के लाभ हैं। बनों से दियासलाई, कागज और प्लाईवुड के उद्योगों के लिए लकड़ी की उपलब्धि के अतिरिक्त बांस, गोंद, लीसा, (रेजिन), जड़ी बूटियां, लाख आदि हैं। ये वस्तुयें केवल देश की खपत की ही वस्तुयें नहीं बल्कि विदेशी-मुद्रा के अर्जन के मुख्य साधनों में हैं। कत्था, लाख, और जड़ी बूटियों की तो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी भारी मांग है। १९५०-५१ से १९५५-५६ तक बन श्रोतों से उपलब्ध सामग्री की जानकारी निम्न तालिका से मिल सकती है।

( शेष पृष्ठ ९२ पर )





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कृषि उत्पादन की गति कम हो रही है ?

## कृषि उत्पादन की शिथिल गति

इसी अङ्क में पाठक कृषि उत्पादन के उज्जवल भविष्य के सम्बन्ध में एक लेख पढ़ेंगे। कृषि उत्पादन की सफलता पर ही देश की योजनाओं की सफलता निर्भर है। उत्पादन की वृद्धि के लिए निम्नलिखित उपाय आवश्यक हैं।

१—परती भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिए ट्रैक्टरों का प्रयोग किया जाय और ऊषर भूमि को पानी की विशेष व्यवस्था से उपजाऊ बनाया जाय।

२—किन्तु हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि भूमि का क्षेत्रफल एक विशेष मात्रा से आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। चरागाह जंगल और दूसरे आवश्यक कामों के लिए भी काफी जमीन छोड़नी पड़ेगी। इसलिए यदि हमें उत्पादन बढ़ाना हो तो प्रति एकड़ कृषि उत्पादन बढ़ाने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। यदि इस दिशा में पर्याप्त ध्यान न दिया जाय तो केवल कृषि भूमि की वृद्धि करके हम कृषि-उत्पादन को यथेष्ट मात्रा में नहीं बढ़ा सकते।

भारत सरकार ने पहली दो योजनाओं में उत्पादन के आशा जनक परिणाम बताये हैं। तीसरी योजना में भी सन्तोषप्रद उत्पादन वृद्धि की संभावना की है, किन्तु क्या वस्तुतः हमारा उत्पादन बढ़ा है। इस प्रश्न पर विचार करते हुए श्री तुलसीदास प्राणजीवन दास सेठ ने व्यापार में एक सूचना पूर्ण लेख लिखा है। उनके विचार में हमारा कृषि उत्पादन पहले की अपेक्षा भी कम हो गया है। यह ठीक है कि अधिक भूमि में उत्पादन किया जाने लगा है और इस कारण कुल उत्पादन अवश्य बढ़ा है। किन्तु उत्पादन के अंकों पर नजर डालने से यह स्पष्ट है कि प्रति एकड़ उत्पादन पहले से कम हो गया है।

१९३६-३७ से १९३८-३९ तक के अधिकृत अङ्कों से मालूम होता है कि हमारा प्रति एकड़ उत्पादन ५९६ पौंड औसत उत्पादन था, किन्तु १९५६-५७ से १९५८-५९ के तीन वर्षों में हमारी पैदावार ५६१ पौण्ड रह गई। इस

### कृषि भूमि के प्रयोग में विस्तार और उत्पादन

| | १९३६-३७ १९३८-३९ के तीन वर्ष तक | | | १९५६-५७ १९५८-५९ के तीन वर्ष | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | प्रयोग १००० एकड़ में | उत्पादन १००० टनों में | प्रति एकड़ उत्पादन | प्रयोग १००० एकड़ में | उत्पादन १००० टनों में | प्रति एकड़ उत्पादन |
| अनाज | १६७५२९ | ४६१५७ | ६१९ | २१६७८४ | ५७५२२ | ५९४ |
| दालें | ३२७१० | ७०७५ | ४८४ | ५७४२९ | ११२०६ | ४३४ |
| कुल अन्न और दालें | १९९९३९ | ४३२३२ | ५९६ | २७४२१३ | ६८७२८ | ५६१ |
| मूंगफली | ८०२२ | ३१४५ | ८७८ | १४१२९ | ४४२९ | ७०२ |
| तिल | ४०६७ | ३९१ | २१५ | ४३४४ | ४३३ | १८१ |
| सरसों और राई | ४३२१ | ७४१ | ३८४ | ६२१६ | १००० | ३२० |
| अलसी | ३७३४ | ४२६ | २४४ | ३७२७ | ३६१ | २१७ |
| अरंडी | १२४८ | ११४ | २०४ | १३११ | १११ | १९० |
| कुल तिलहन | २१३९२ | ४८१७ | ५०४ | ३०७३२ | ६३३४ | ४६२ |
| गन्ना | ३२९२ | ४४२५ | ३०२७ | ४९८० | ६९१२ | ३१०९ |
| रुई ❀ | २०९७२ | ४०५५ | ७७ | १९९०४ | ४७२७ | ९३ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ने के बजाय ३५ पौंड उत्पादन कम हो गया।

तिलहन के सम्बन्ध में भी अंक इसी कथन की पुनरावृत्ति करते हैं। युद्ध से पूर्व के तीन वर्षों में प्रति एकड़ ५०४ पौंड औसत पैदावार थी, जबकि १९५६-५७ से १९५८-५९ के तीन वर्षों में ४६२ पौंड रह गई। अर्थात् ४२ पौंड प्रति एकड़ उपज कम हो गई। गन्ने और कपास के उत्पादन में अवश्य वृद्धि हुई है। गन्ने का उत्पादन ३०२७ पौंड से बढ़कर ३१०९ पौंड हो गया। बहुत संभवतः रुई और गन्ने के उत्पादन में वृद्धि का कारण कृषि सुधार की योजना है।

श्री तुलसीदास प्राण जीवनदास सेठ ने अपने लेख में यह भी सिद्ध करने की चेष्टा की है कि प्रयोग में भी बहुत अधिक भूमि नहीं लाई जा सकी है। अब जो नये अंक उपलब्ध होते हैं। उनमें वृद्धि का मुख्य कारण यह है कि पहले सब देशी राज्यों के भूमि प्रयोग के अंक ठीक तरह सम्मिलित नहीं किये जाते थे और अब किये जाने लगे हैं। इसलिये भूमि उपयोग के अङ्क अब काफी बढ़ गये हैं। सरकारी प्रकाशनों के आधार पर एक तालिका पिछले पृष्ठ पर दी गई है—इनसे समस्त स्थिति स्पष्ट हो जायगी। ●

## योजनाओं में उद्योग व कृषि

( पृष्ठ ७२ का शेष )

हैं। विकास की प्रक्रिया ही कुछ ऐसी होती है जिसमें खेती और ग्रामीणों के हित कुछ हद तक पीछे रह जाते हैं और ग्रामीण और नागरिक हितों में संघर्ष बढ़ जाता है। यह बात हमारे सामने अनेक रूप में आती है, खास कर (१) राष्ट्रीय उत्पादन में खेत की अपेक्षा उद्योगों का अधिक भाग, (२) उद्योगों में प्रति व्यक्ति उत्पादकता की मात्रा में अधिक बढ़ोत्तरी, (३) खेती की अपेक्षा उद्योगों में अधिक आमदनी। यह सत्य है कि उद्योगों के विकास से जिन लोगों को लाभ होता है, उनमें से बहुत से गांवों के रहने वाले हैं। फिर भी खेती और उद्योगों में एक विरोध देखने में आता है जो धीरे-धीरे बढ़ रहा है और जिसका भावों और कर सम्बन्धी नीति पर तथा दूसरे क्षेत्रों पर काफी प्रभाव पड़ रहा है।

साधारणतया औद्योगिक विकास में, चाहे वह निजी संस्थाओं द्वारा हो या सरकारी संस्थाओं द्वारा, ग्रामीण विकास की बात बिल्कुल अप्रत्यक्ष रूप से और कुछ समय गुजरने के बाद उठाई जाती है। कुछ भारी उद्योगों को छोड़कर अन्य उद्योगों के बारे में जगह जगह औद्योगिक सुविधाओं को ज्यादा-से-ज्यादा विस्तार करने की नीति होनी चाहिए। साथ ही छोटे-छोटे कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों में काफी संख्या में उद्योग खुलें।

हमारी ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था के सम्बन्ध में बहुत ही दुःख की बात यह है कि यद्यपि गांवों में विस्तार-खंडों का जाल फैलता जा रहा है, सिंचाई में पहले से ज्यादा पूंजी लग रही है, और भूमि सुधार के प्रयत्न से बहुत कुछ सामाजिक प्रभाव पड़ रहा है, फिर भी हमारी जीत बहुत छोटी है जो आर्थिक दृष्टि से लाभदायक सिद्ध नहीं होती। पिछली शताब्दी में आर्थिक विकास के सम्बन्ध में जो महत्वपूर्ण काम किए गए, उनसे वर्तमान जोतों में कोई खास सुधार नहीं हो सका। हमारी आबादी के तेजी से बढ़ने के कारण भविष्य में यह समस्या और भी गम्भीर हो जाएगी। खेती के वर्तमान ढांचे की तकनीकी और आर्थिक सम्भावनाएं अभी तक ठीक से कूती नहीं गई। मौजूदा ढांचे में भी इसमें बहुत कुछ करने की गुंजाइश है और उसे हमें करना पड़ेगा। गांवों में ऐसी परिस्थितियां पैदा करनी होंगी जिनमें लोग अपनी सहायता और कोशिशों से ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था को सहकारिता के आधार पर तेजी से और कुशलता से पुनर्गठित करें। राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था का विकास और गांवों में रहने वाले करोड़ों लोगों के हित को दृष्टि में रखते हुए इस कार्य का आज पहले से कहीं अधिक महत्व है। ●●

—भारत की प्रसिद्ध जहाजी कम्पनियां—सिन्धिया, इण्डिया स्टीमशिप तथा अन्य १५ कम्पनियों ने परस्पर मिलकर एक पूल बनाने का निश्चय किया है। इसका अर्थ यह है कि सब कम्पनियों की आय एक जगह एकत्र होगी और फिर उसका परस्पर विभाजन किया जायगा। अभी यह समझौता दस वर्ष के लिये है जिससे इन कम्पनियों में परस्पर प्रतिस्पर्धा न हो।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सांख्यिकी

## योजना का व्यय तथा उसकी वित्त-व्यवस्था : (१९५६-५७ से १९६०-६१ तक)

रु० करोड़ में

| | १९५६-५७ | १९५७-५८ | १९५८-५९ | १९५९-६० | १९६०-६१ | दूसरी योजना | मूल योजना के लक्ष्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १. योजना व्यय | ६३४ | ८८२ | ९९८ | १,००६ | १,०८० | ४६०० | ४,८०० |
| २. घरेलू साधन | | | | | | | |
| (क) चालू राजस्वों में से बची राशि (अतिरिक्त करों की आय को मिलाये बिना) | ९० | २१ | –३९ | –७२ | –१०० | –१०० | ३५० |
| (ख) अतिरिक्त करों की आय | ५५ | १६९ | २१९ | २६२ | २९५ | १,००० | ८५०* |
| (ग) रेलवे का अंशदान | ३३ | २९ | २३ | ३१ | ३४ | १५० | १५० |
| (घ) जनता से ऋण | १३९ | ७३ | २२६ | १७८ | १८४ | ८०० | ७०० |
| (ङ) छोटी बचतें | ६१ | ६९ | ७९ | ८३ | ८५ | ३७७ | ५०० |
| (च) सरकारी ऋण तथा फुटकर पूंजी प्राप्तियां | –३९ | –७० | १३७ | १२७ | ४३ | १९८ | २५० |
| योग (क+ख+ग×घ×ङ×च) | ३३९ | २९१ | १४५ | ६०९ | ५४१ | २,४१५ | २,८०० |
| ३, विदेशी सहायता | ४२ | ९५ | २१७ | २७० | ३७६ | १,००० | ८०० |
| ४. कुल साधन, जिनमें विदेशी सहायता भी शामिल है (२ और २) | ३८१ | ३८६ | ७६२ | ८७९ | ९१७ | ३,४२५ | ३,६०० |
| ५. घाटे की अर्थ-व्यवस्था | २५३ | ४९६ | १३६ | १२७ | १६३ | १,१७५ | १,२०० |
| ६. कुल साधन (४ और ५) योजना व्यय | ६३४ | ८८२ | ९९८ | १,००६ | १,०८० | ४,६०० | ४,८०० |

* ४०० करोड़ रुपये की उस कमी को शामिल कर, जिसकी पूर्ति मुख्यतः करों द्वारा की जायगी।

नोटः—यहां दिये गये आंकड़े योजना आयोग के अनुमान पर आधारित हैं।

## (राष्ट्रीय आय) १९४८-४९ के मूल्यों पर आधारित

| वर्ष | राष्ट्रीय आय (करोड़ रुपयों में) | प्रति व्यक्ति आय (रुपयों में) | राष्ट्रीय आय का सूचकांक | प्रति व्यक्ति आय का सूचकांक |
|---|---|---|---|---|
| (१) | (२) | (३) | (४) | (५) |
| १९४८-४९ | ८६५० | २४७ | १००.० | १००.० |
| १९५२-५३ | ९४६० | २५६ | १०९.४ | १०३.९ |
| १९५३-५४ | १००३० | २६८ | ११६.० | १०८.८ |
| १९५४-५५ | १०२८० | २७२ | ११८.८ | ११०.१ |
| १९५५-५६ | १०४८० | २८३ | १२१.३ | ११०.८ |
| १९५६-५७ | ११००० | २८३ | १२७.२ | ११४.८ |
| १९५७-५८ | १०८३० | २७५ | १२५.२ | १११.६ |
| १९५८-५९ | ११६९ | — | १३३.८ | ११७.७ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## १९४९ में प्रति व्यक्ति आय

| | विश्व की प्रति व्यक्ति आय का प्रतिशत | विश्व की कुल जन-संख्या का प्रतिशत | प्रति व्यक्ति आय रुपयों में |
|---|---|---|---|
| ऊंची आय वाले देश | ६७ | १८ | ९१५ |
| बीच की आयवाले देश | १८ | १५ | ३१० |
| निम्न आयवाले देश | १५ | ६७ | ५४ |

## केन्द्रीय सरकार और राज्यों का कुल कर राजस्व राष्ट्रीय आय के प्रतिशत के रूप में

| देश | वर्ष | राष्ट्रीय आय के प्रतिशत के रूप में |
|---|---|---|
| जर्मनी | १९५४-५५ | ३३.८ |
| इंगलैंड | १९५४-५५ | ३०.८ |
| नीदर लैंड्स | १९५४-५५ | २९.६ |
| नार्वे | १९५२-५३ | २९.१ |
| आस्ट्रेलिया | १९५३-५४ | २८.० |
| अमरीका | १९५२-५३ | २७.४ |
| चीन की मुख्य भूमि | १९५३ | २५.३० |
| स्वेडन | १९५३-५४ | २३.७ |
| डेनमार्क | १९५२-५३ | २७.५ |
| इजराइल | १९५४-५५ | २१.९ |
| जापान | १९५३-५४ | १९.५ |
| इटली | १९४९-५० | १९.५ |
| ब्रेजील | १९५२-५३ | १५.९ |
| इंडोनेशिया | १९५२-५३ | ११.३ |
| पाकिस्तान | १९५१-५३ | ८.९ |
| भारत | १९५२-५३ | ६.८६ |
| | १९५३-५४ | ६.४८ |
| | १९५४-५५ | ७.५० |
| | १९५५-५६ | ७.६१ |
| | १९५६-५७ | ७.३६ |
| | १९५७-५८ | ८.६६ |

## घाटे की अर्थव्यवस्था (केन्द्र तथा राज्यों की)

| वर्ष | रुपये करोड़ों में |
|---|---|
| १९५६-५७ | —२५३ |
| १९५७-५८ | —५०३ |
| १९५८-५९ | —१३६ |
| १९५९-६० | —२२८ ❀ |
| | —१,१२० |

❀ अनुमानित रिजर्व बैंक आफ इंडिया की करेंसी और फाईनान्स रिपोर्ट से।

## पूंजी और बचत

| | राज्यों और केन्द्र द्वारा कुल निर्मित पूंजी | सरकार की बचत |
|---|---|---|
| | | (करोड़ रुपये में) |
| १९५१-५२ | २१२.४ | १७७.५ |
| १९५२-५३ | २१०.३ | ७०.२ |
| १९५३-५४ | २५६.२ | २९.९ |
| १९५४-५५ | ३४०.६ | ४३.५ |
| १९५५-५६ | ४८२.३ | २९.२ |
| १९५६-५७ (संशोधित) | ५८६.८ | ९१.५ |
| १९५७-५८ (वास्तविक) | ७१७.६ | ३८.१ |
| १९५८-५९ (बजट) | ८६०.५ | —२५.९ |

**स्थायी ग्राहकः**—पत्र व्यवहार करते समय ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा उत्तर देने में कठिनाई होगी। संभव है उत्तर जा ही न सके।

—मैनेजर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# हम भारत का भव्य निर्माण करें

## राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद का संदेश

इसमें शक नहीं कि हमारा गणतंत्र अभी नन्हा-सा है, किन्तु हमारा राष्ट्र प्राचीन है। १९५० में सर्वाधिकार संपन्न प्रजातंत्रात्मक भारतीय गणराज्य की स्थापना निस्संदेह बहुत महत्वपूर्ण घटना है, जो उत्तर और पूर्व में हिमालय से लेकर दक्षिण और पश्चिम में समुद्र तट के बीच स्थित हमारी मातृभूमि के हजारों वर्ष पुराने इतिहास में आधुनिक नवयुग के उदय का प्रतीक है।

जिस कल्याण राज्य की हम कल्पना करते हैं, उसमें प्रत्येक नागरिक के लिए, किसी भी भेदभाव के बिना, सम्मानपूर्ण जीवन-यापन और पूर्ण विकास का अवसर उपलब्ध होगा। यही ध्येय हमारी सारी योजनाओं का अभीष्ट है। इसलिए हमें अपने भौतिक और आध्यात्मिक सभी साधनों को जुटाना होगा।

इस वर्ष हम लोग तीसरी पंचवर्षीय योजना चालू करने जा रहे हैं। पिछले १२ वर्षों में हमने बहुत कुछ प्राप्त किया है किन्तु स्वतंत्रता को आर्थिक विकास में बदलने के लिए अभी हमें लम्बा सफर तय करना है।

एशिया और अफ्रीका के भूखंडों में जागरण की लहर के साथ तथा संसार की आज जैसी स्थिति है, उसके फलस्वरूप, तीव्र गति से बदलती हुई परिस्थितियों में मानव को दूरदर्शिता और सामंजस्य की आवश्यकता है। यदि जीवन स्वयं एक साहस और चुनौती है तो इस अणु युग में, तज्जन्य भीषणता और शक्तियों के बीच रहना, और भी अधिक साहस की बात है। यदि मनुष्य को अपने ही पैदा किये हुए इस संकट से बचना है तो उसे अपने पुराने विचारों को बदलना होगा। मानव समाज के लिए नये आदर्श, नवमूल्यांकन और विश्व-बन्धुत्व की भावना में दृढ़ विश्वास, आज के युग की मांग है। आकाश-यात्रा के इस युग में व्यक्तिगत, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय चिन्तन और व्यवहार की पुरानी परिपाटी को संशोधित करना होगा अथवा उसमें परिवर्तन करना होगा।

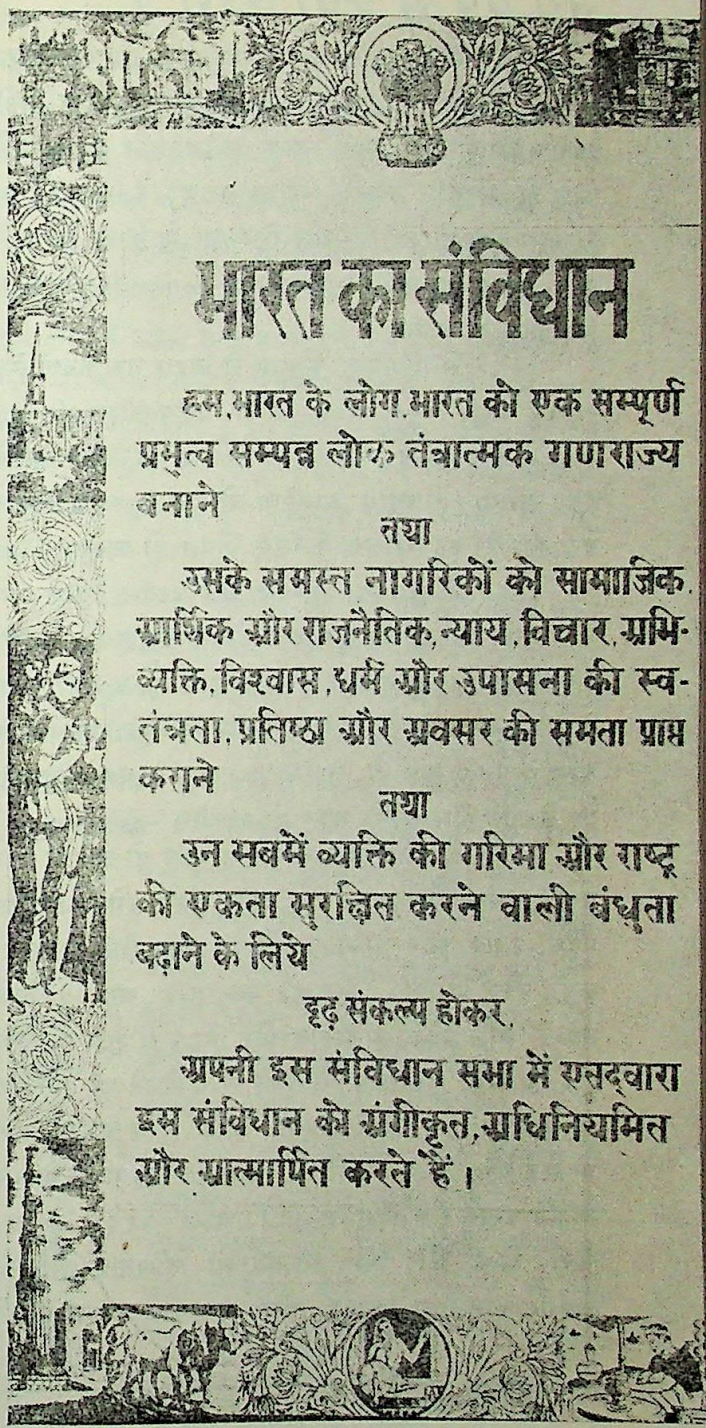


संविधान में आर्थिक न्याय की घोषणा उल्लेखनीय और अत्यन्त महत्वपूर्ण है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नये वर्ष में क्या करेंगे ?

१९६१ में दूसरी योजना समाप्त होकर तीसरी योजना शुरू हो जाएगी। राउरकेला, भिलाई और दुर्गापुर तीनों इस्पात कारखानों में सभी धमन भट्टियां और बेलन मिलें चालू हो जाएंगी; नेवेली (मद्रास राज्य) में लिग्नाइट का उत्पादन शुरू हो जाएगा; और लिग्नाइट के ईंधन से चलने वाले नेवेली बिजलीघर का २,५०,००० किलोवाट का निट चालू हो जाएगा।

१९६१ में सम्भवतः आसाम से बिहार तक कच्चा तेल पहुँचाने वाली ७२० मील लम्बी पाईप-लाइन भी बिछ जाएंगी; और सीमेंट तथा कागज तैयार करने की मशीनें बनने लगेंगी। भारतीय वायुसेना जो एव्रो—७४८ विमान बना रही है, वह परीक्षण के लिए तैयार हो जाएगा।

१९६१ में हीराकुड, चम्बल और घटप्रभा योजनाओं के अन्तर्गत सिंचाई की तीन बड़ी योजनाएं शुरू हो जाएंगी; पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश और केरल में भी ४ बड़ी योजनाएं लगभग पूरी हो जाएंगी; और विभिन्न स्थानों में ९ अन्य योजनाएं शुरू हो जाएंगी। भाखड़ा के बाएं बिजलीघर में तीन और यूनिट चालू हो जाएंगे।

१९६१ में नंगल खाद कारखाना चालू हो जाएगा और वहां हर साल ८०,००० टन खाद बनने लगेगी। उत्तरप्रदेश, पंजाब और मध्यप्रदेश में भी सघन खेती का कार्यक्रम (पैकेज प्रोग्राम) शुरू हो जाएगा। यह कार्यक्रम मद्रास, आंध्र प्रदेश, राजस्थान और बिहार में शुरू हो चुका है। गल्ले को एक राज्य से दूसरे राज्य भेजने पर प्रतिबन्ध को सम्भवतः हटा दिया जाएगा, ताकि हरेक जगह गल्ला जा सके और उनके भावों में समानता रहे; गल्ले के २२ गोदाम बनाने शुरू किए जाएंगे। अप्रैल १९६१ में सहकारी खेती की ७० आजमाइशी योजनाएं शुरू की जाएंगी। उड़ीसा, पंजाब और सम्भवतः उत्तरप्रदेश में

(शेष पृष्ठ ८१ पर)

---

क्या हम आज ऐसे भारत के भव्य नवनिर्माण में नहीं लगे हैं, जो शांति, प्रगति, स्वातंत्र्य और मानव-मात्र के लिए सुख और कल्याण का प्रबल समर्थक बन सके ? देश-सेवा का व्रत, अखिल भारतीय दृष्टिकोण और अपने दायित्व के प्रति जागरूकता, आज हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है।

● ●

# हमें सोचना है कि—

आगामी वर्ष में हमें सोचना है कि—

● हमारी बड़ी-बड़ी योजनाएं ग्राम के एक निर्धन किसान की समृद्धि में कहां तक सहायक हो रही हैं ?

● हमारी नीति से अमीर की अमीरी और गरीब की गरीबी की खाई चौड़ी तो नहीं हो रही है ?

● सरकार की राष्ट्रीयकरण की नीति से किसान और दस्तकार को सीधा लाभ क्या हो रहा है ?

● हम कहीं आदर्शों व नारों के प्रवाह में वास्तविक उद्देश्य—उत्पादन में वृद्धि व नागरिक के वास्तविक सुख को तो नहीं भूल गये ?

● मशीनरी का अधिकाधिक प्रयोग दस्तकारों व देहातियों को नुकसान तो नहीं पहुंच रहा और रोजगार के साधनों को तो नहीं छीन रहा ?

● हमारी मजदूर नीति आने वाले मजदूरों के मार्ग में बाधक तो नहीं बन रही ?

● पश्चिमी अर्थशास्त्र व पश्चिमी उद्योगवाद की नीति भारतीय संस्कृति और वातावरण के प्रतिकूल तो नहीं है ?

● कृषि का यंत्रीकरण व वैज्ञानिक क्या देश के सामाजिक संगठन को छिन्न-भिन्न करके भूमि की उर्वरता के लिए नई समस्याएं तो पैदा नहीं कर देगा ?

—चिन्तक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचायती राज्य का तृतीय रूप अपनाया जाएगा, अर्थात् गांवों में पंचायतें, खण्डों में पंचायत समितियां और जिलों में जिला परिषदें बनाई जाएंगी।

घड़ियों, सस्ते रेडियो आदि का अधिक मात्रा में निर्माण शुरू हो जाएगा; और अनेक उद्योगपुरियां बनाई जाएंगी। मध्यीय भारत में खंडवा-छिंगोली लाइन बिछाकर उत्तर और दक्षिण की छोटी रेल-लाइनों को जोड़ा जाएगा।

नये वर्ष में बच्चों, युवकों और स्त्रियों के हित के लिए भी अनेक नयी योजनाएं चलाई जाएंगी। अनिवार्य आरम्भिक शिक्षा योजना के अन्तर्गत ६ से ११ साल तक के लाखों बच्चे स्कूल जाने लगेंगे। ● ●

# सामुदायिक विकास की प्रगति

देश के ३,०८७ विकास खंडों में सामुदायिक विकास कार्यक्रम को जो सफलता मिली है, उसका श्रेय मुख्यतः गांववालों की कड़ी मेहनत और लगन को है। सामुदायिक विकास गांववालों में उत्साह और आत्म-विश्वास पैदा करने का अपूर्व साधन बना है।

पणवेल के विकास खण्ड में लगभग ८ साल से पहले शायद ही कोई किसान सब्जियां उगाता था, लेकिन अब जिन दिनों कोई फसल नहीं होती, तब गोभी, टमाटर, बन्द-गोभी और बैंगन लगाए जाते हैं और इन्हें ४५ मील दूर बम्बई में बिक्री के लिए भेजा जाता है। एक किसान ने नये तरीकों से एक एकड़ में ६० मन चावल तक पैदा किया। उसकी औसत पैदावार ४५ मन प्रति एकड़ रही। इस किसान ने भेड़ और मुर्गियां भी पाल रखी हैं। उसकी अपनी दुग्धशाला भी है। उसके यहां हर रोज ३ मन दूध होता है। कुछ साल पहले इस इलाके में अन्नानास का नाम भी न था। अब यहां पर्याप्त मात्रा में अन्नानास, आम और अमरूद होते हैं। १० प्रतिशत बेकार जमीन को खेती योग्य बना लिया गया है। यहां के ९५ प्रतिशत गांवों में सहकारियां खुल गई हैं। दो साल पहले केवल १८ सहकारियां थीं।

पणवेल में जो सफलता मिली है वह देश के ३,०८७ विकास खण्डों में होनेवाले काम का नमूना भर है। यह सफलता मुख्यतः गांव वालों की अपनी मेहनत और लगन के कारण मिली है। २ अक्टूबर, १९५२ को सामुदायिक विकास कार्यक्रम शुरू होने से ३० जून, १९६० तक लोगों ने इस कार्यक्रम में ९० करोड़ ६० लाख रु० और सरकार ने १ अरब ९० करोड़ ९० लाखरु० लगाया।

अप्रैल से जून, १९५९ तक प्रत्येक विकास खण्ड में ६७९ मन बीज बांटे गए, जबकि १९६० की इसी तिमाही में ८२८ मन बीज बांटे गए। रासायनिक उर्वरकों में विकास खंडों का औसत ९३६ मन से बढ़कर ९९० हो गया। खेती के सुधरे हुए औजारों के वितरण पशुपालन, स्वास्थ्य और सफाई, समाज शिक्षा और सड़कें आदि बनाने का काम भी बहुत बढ़ा है। अप्रैल से जून १९५९ की तिमाही में विकास खंडों में सड़क बनाने का औसत ०.९ मील था, जो १९६० की इसी तिमाही में बढ़कर १.२ मील हो गया। हजारों मील लम्बी कच्ची सड़कों की मरम्मत की गई। इसका औसत १.३ से बढ़कर २ मील हो गया।

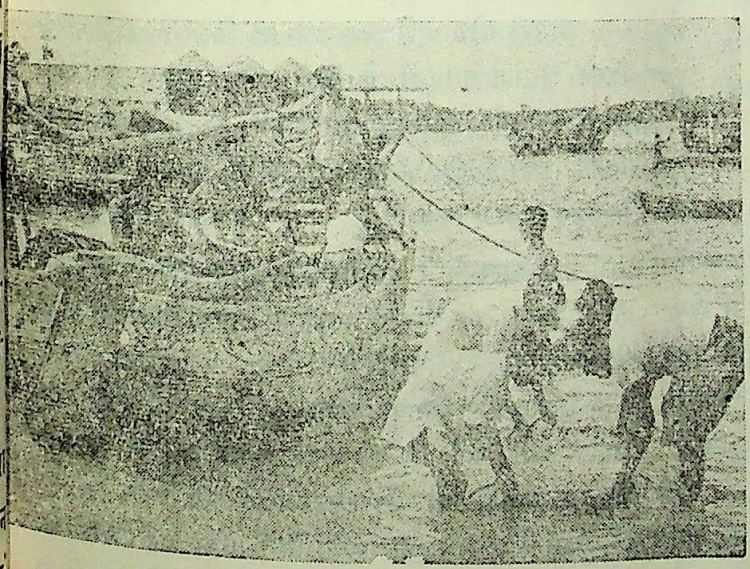

मत्स्य उद्योग में सहकारी समितियों द्वारा प्रगति



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामुदायिक विकास को प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य खेती और ग्राम सुधार संबंधी हर काम के लिए कुशल व्यक्तियों को तैयार करना है। अक्टूबर १९५७ से अब तक ३२ लाख से अधिक गांववालों को ट्रेनिंग दी गई और ७२ हजार ग्राम सहायक शिविर लगाए गए। हजारों युवक समाज और किसान संघ बनाए गए। इनके २० लाख से अधिक सदस्य हैं।

गांव वालों में अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने और गांवों में खुशहाली लाने की जो भावना जगी है और इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उनमें जो लगन उत्साह और आत्मविश्वास पैदा हुआ है, वह इन सफलताओं से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। गांव वालों ने सामुदायिक विकास में अब तक ९० करोड़ ६० लाख रु० लगाया है और इससे कहीं अधिक रुपया लगाने की उनकी उत्कट इच्छा है।

सामुदायिक विकास से यह भी स्पष्ट हो गया है कि गांव वालों की समस्याओं को सुलझाने और खुशहाली लाने के लिए जनता और सरकारी विभागों का सहयोग बढ़ना जरूरी है।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम किसी आर्थिक योजना का स्थान नहीं ले सकता। सामुदायिक कार्यक्रमों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए हर स्तर पर जन-सहयोग की नितान्त आवश्यकता है।

● ●

# एक दिन में दो रेल डब्बे

पेरम्बूर का रेल डिब्बा कारखाना एशिया में अपने किस्म का सबसे बड़ा कारखाना है। इस कारखाने में अब बढ़िया डिब्बे बनाए जा रहे हैं और इन पर पहले से ६० प्रतिशत कम लागत आ रही है। तीसरी योजना में पेरम्बूर (मद्रास) के रेल डिब्बा कारखाने में हर रोज दो डिब्बे बनने की आशा है।

१९५५ में कारखाने के चालू होने के समय से ही इसमें लक्ष्य से अधिक डिब्बे बन रहे हैं।

अक्टूबर १९५९ से सितम्बर १९६० तक यहां ५०२ डिब्बे अधिक बने। मई, १९६० से कारखाने हर महीने ४० से अधिक डिब्बे बन रहे हैं। यानी काम के ६ घंटों में एक डिब्बा बनकर तैयार हो जाता है। यह कारखाना ७ करोड़ ३५ लाख रु० की लागत पर तैयार हुआ।

पैरम्बूर के रेल डिब्बा कारखाने नये डिब्बे चलने में अच्छे हल्के और मजबूत होते हैं। ये डिब्बे आरामदेह होते हैं और इन्हें चलाने में कम खर्च आता है। दुर्घटना के समय ये डिब्बे पिचकते नहीं।

पुराने डिब्बों के मुकाबले नये डिब्बों की सफाई और मरम्मत में आसानी रहती है। नए डिब्बों का वजन कम होने के कारण इन्हें चलाने में कम ईन्धन या बिजली खर्च होती है। डिब्बे हल्के होने से पटरी भी कम घिसती है।

## लागत में कमी

अब रेल डिब्बों की लागत में ६० प्रतिशत की कमी हुई है। १९५५ में एक डिब्बे पर १ लाख ८६ हजार रु० लागत आती थी और अब ७८ हजार रु० में तैयार हो जाता है। डिब्बों में सीट आदि लगाने का खर्च भी ९७ हजार रु० से घटकर ६० हजार ५०० रु० रह गया है। स्विटजरलैण्ड से जो ऐसे डिब्बे मंगाए जाते थे उनका दाम लगभग ३ लाख १० हजार रु० होता था।

तीसरी योजना में कलकत्ता की बिजली की रेलों के डिब्बे पार्सल गाड़ियों के डिब्बे और डीजल से चलने वाली गाड़ियों के डिब्बे भी बनाने का प्रस्ताव है। ये डिब्बे बड़ी छोटी और संकरी तीनों लाइनों की रेलों के लिए बनाए जायंगे।

इस कारखाने ने आत्म निर्भरता की दिशा में जो प्रगति की है उसका इस बात से अनुमान लगाया जा सकता है कि डिब्बे के १,२४४ हिस्सों में से केवल एक हिस्सा ही पूरी तरह से बाहर से मंगाया जाता है। १,००० हिस्से कारखाने में बनाए जाते हैं, २३७ देश में ही मिल जाते हैं और शेष ६ हिस्सों को थोड़ा बाहर से मंगाया जाता है।

कारखाना अब इस स्थिति में है कि वह डिब्बों का निर्यात भी कर सके। दाम और अच्छाई दोनों दृष्टियों से यह कारखाना विदेशी बाजारों में अन्य निर्यातकों से होड़ कर सकता है।

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कृषि मजदूरों की आर्थिक स्थिति

श्रम मन्त्रालय ने १९५६-५७ में केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन, राष्ट्रीय नमूना पड़ताल विभाग और भारतीय सांख्यिकी संस्था के सहयोग से खेत मजदूरों की आर्थिक स्थिति की जांच कराई थी।

यह जांच देश के ३,६०० गांवों में पूरे बारह महीने तक की गयी और खेत मजदूरों के २८,५६० कुटुम्बों के काम, बेकारी, मजदूरी और कमाई, आमदनी, खर्च और कर्ज के बारे में जानकारी एकत्र की गयी। पहली खेत मजदूरों की जांच १९५०-५१ में हुई थी। इस दूसरी जांच का उद्देश्य यह जानना था कि पहली पंचवर्षीय योजना की विकास योजनाओं का खेत मजदूरों की स्थिति पर क्या असर पड़ा।

पहली खेत मजदूरों की जांच और दूसरी जांच कुछ तुलनात्मक परिणाम इस प्रकार है

## १. व्यवसाय के अनुसार खेत मजदूरों के कुटुम्बों की गिनती :

(क) १९५६-५७ में खेत मजदूर कुटुम्बों की संख्या १ करोड़ ६३ लाख होने का अनुमान है। १९५०-५१ में यह संख्या १ करोड़ ७.९ लाख होने का अनुमान था। इस प्रकार इनकी संख्या में १६ लाख की कमी हुई। यह अन्तर दोनों जांचों की 'खेत मजदूर कुटुम्ब' की परिभाषा में अन्तर के कारण पड़ा है। पहली जांच में खेत मजदूर की परिभाषा व्यापक थी, पर दूसरी जांच में उन्हीं कुटुम्बों को खेत मजदूर माना गया, जिनकी पहले साल की अधिकांश आय खेती से हुई।

(ख) १९५६-५७ में भूमिहीन खेत मजदूर कुटुम्बों की संख्या कुल की ५७ प्रतिशत थी और १९५०-५१ में ५० प्रतिशत।

(ग) १९५०-५१ की जांच में अपनी जमीन वाले और कभी-कभी काम पाने वाले खेत मजदूरों का अनुपात १० : ९० था। १९५६-५७ की जांच में अपनी जमीन वाले खेत मजदूर कुटुम्बों की संख्या २७ प्रतिशत थी। इस वृद्धि का कारण जमींदारों, जागीरदारों आदि की जमीन पर किसानों का स्वामित्व होना है।

(घ) खेत मजदूर कुटुम्बों का आकार भी दोनों जांचों के बीच कुछ बढ़ गया। पहली जांच में जहां कुटुम्बों की औसत संख्या ४.३ थी, वहां दूसरी जांच में ४.४ पाई गई। इसी प्रकार कमाने वालों की औसत संख्या २.०३ थी, जिसमें से पुरुषों की १.१३, स्त्रियों की ०-७४ और बच्चों की ०.१६ थी। पहली जांच में यह संख्या क्रमशः २.०, १.१, ०.८ और ०.१ थी। कुटुम्ब में कमाने वालों की संख्या इस दौरान बच्चों के कमाने योग्य हो जाने के कारण बढ़ी है।

(ङ) इस जांच में खेत मजदूरों की संख्या ३ करोड़ ३० लाख होने का अनुमान है। इसमें १ करोड़ ८० लाख पुरुष, १ करोड़ २० लाख स्त्रियां और ३० लाख बच्चे थे। पहली जांच में कुल ३ करोड़ ५० लाख खेत मजदूर और इनमें से १ करोड़ ९० लाख पुरुष, १ करोड़ ४० लाख स्त्रियां और २० लाख बच्चे होने का अनुमान था।

## काम और बेकारी

(क) १९५०-५१ में कभी-कभी काम पाने वाले बड़ी उम्र के पुरुषों को औसतन २०० दिन काम मिला और १९५६-५७ में १९७ दिन। १९५०-५१ में उन्होंने अपने आप ७५ दिन कोई न कोई काम किया और १९५६-५७ में ४० दिन।

(ख) इसी प्रकार बड़ी उम्र की स्त्रियों को १९५०-५१ में १३४ दिन मजदूरी मिली और १९५६-५७ में १४१ दिन।

(ग) बच्चों की इसी तरह की मजदूरी के औसत दिन १६५ से बढ़कर २०४ हो गए।

(घ) बड़ी उम्र के ऐसे मजदूर १९५६-५७ में १२८ दिन बेकार रहे और १९५०-५१ में ९० दिन बेकार रहे थे।

१९५०-५१ की जांच में रोजगार प्राप्त व्यक्तियों की संख्या समय आदि की गणना ठीक से नहीं गिनी गई। दूसरी पड़ताल में १९५६-५७ में काम या रोजगार को चार श्रेणियों में बांट दिया गया, जैसे दिन का, आधे का, नाम-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्र का और बेकार। 'पूरे दिन' से मतलब है १० या अधिक घण्टे का काम। इसके एक चौथाई से अधिक पर तीन-चौथाई से कम को आधा दिन माना गया, एक-चौथाई से कम काम को अपेक्षित मात्रा का आठवां हिस्सा माना गया।

## वेतन

(क) १९५०-५१ में खेत-मजदूर परिवारों की लगभग ७६ प्रतिशत आय खेतों में मजदूरी करके तथा खेती के अलावा अन्य कामों से हुई; १९५६-५७ में इन दोनों कामों से ८१ प्रतिशत हुई। १९५०-५१ में ५६ प्रतिशत जन दिनों के कामों के लिए नकद और ३१.३ प्रतिशत के लिए अनाज आदि के रूप में मजदूरी दी गयी थी; १९५६-५७ में ४८.७ प्रतिशत के लिए नकद और ४०.५ प्रतिशत के लिए अनाज आदि के रूप में मजदूरी दी गयी।

(ख) वयस्क मजदूर की औसत दैनिक मजदूरी १९५०-५१ के १०९ नए पैसे से गिरकर १९५६-५७ में ९६ नए पैसे और वयस्क मजदूरनी की औसत दैनिक मजदूरी १९५०-५१ के ६८ नए पैसे से गिरकर १९५६-५७ में ५३ नए पैसे रह गयी।

(ग) १९५०-५१ में गल्ले के रूप में जो मजदूरी दी गयी, वह गल्ले के खुदरा भाव से दी गयी, पर १९५६-५७ में थोक के भाव से दी गयी।

(घ) १९५०-५१ में खेत-मजदूरों को लगभग ५ अरब रु० दिया गया था, जबकि १९५६-५७ में ५ अरब २० करोड़ रु० दिया गया। इस वृद्धि का मुख्य कारण यह है कि १९५०-५१ में खेत-मजदूर परिवार के १० प्रतिशत सदस्य मजदूरी करते थे, जबकि १९५६-५७ में २७ प्रतिशत करने लगे।

## परिवार की आय

(क) १९५०-५१ में खेत-मजदूर परिवार की औसत वार्षिक आय ४४७ रु० थी; जबकि १९५६-५७ में ४३७ रु० रही।

(ख) खेत-मजदूर परिवार की आय के साधन निम्नलिखित थे :

| आय के साधन | १९५०-५१ (रु०) | १९५६-५७ (रु०) |
|---|---|---|
| १. खेती करने से | ५९.९० (१३.४९) | ३०.०७ (६.८७) |
| २. खेत मजदूरी से | २८६.९७ (६४.२) | ३१९.५५ (७३.०४) |
| ३. खेती के अलावा अन्य मजदूरी से | ५३.१९ (१४.९) | ३४.९४ (७.९९) |
| ४. अन्य साधनों से | ४६.९४ (१०.५०) | ५२.९२ (१२.१०) |

कोष्टक में दी गयी संख्याएं कुल आय के प्रतिशत हैं।

१९५६-५७ में खेती और खेती के अलावा अन्य मजदूरी से आय गिरी, पर खेत मजदूरी से आय बढ़ी।

## खपत और रहन-सहन का खर्च

(क) १९५०-५१ में खेत मजदूर परिवार ने रोजाना काम आने वाली चीजों पर औसतन १६० रु० खर्च किया था; जबकि १९५६-५७ में ६१७ रु० खर्च किया। इसका ब्यौरा इस प्रकार है :

| वर्ष | भोजन | कपड़ा और जूते | ईंधन और प्रकाश | फुटकर |
|---|---|---|---|---|
| | | कुल का प्रतिशत | | |
| १९५०-५१ | ८५.३ | ६.३ | १.१ | ७.३ |
| १९५६-५७ | ७७.३ | ६.१ | ७.९ | ८.७ |

(ख) १९५६-५७ में खेत मजदूर परिवार की औसत आय ४३७ रु० और खर्च ६१७ रु० था। इस प्रकार खर्च आय से १८० रु० अधिक रहा। यह कमी पिछली बचत छोर बेचने, बाहर से रुपया आने तथा ऋण से पूरी की गई।

## ऋण

(क) १९५६-५७ में लगभग ६४ प्रतिशत खेत-मजदूर परिवारों पर ऋण था, जबकि १९५०-५१ में केवल ४५ प्रतिशत पर था। प्रति परिवार ऋण भी १९५०-५१ के औसतन ४७ रु० से बढ़कर १९५६-५७ में ८८ रु० हो गया।

(ख) जिन परिवारों पर ऋण था, उन पर भी प्रति

( शेष पृष्ठ ८६ पर )





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# श्रम समस्या

## ब्रिटेन के स्त्री श्रमिकों का भी समान वेतन

१ जनवरी, १९६१ का दिन ब्रिटेन की महिलाओं के जीवन में सदा स्मरणीय रहेगा। उन्हें पुरुषों के बराबर सभी अधिकार प्राप्त हो गये हैं। इस दिन से ब्रिटेन में काम करने वाली प्रत्येक महिला को सभी क्षेत्रों में पुरुषों के समान वेतन मिलने लगा है।

इस दिन के लिए ब्रिटेन की महिलाएं पिछले ७२ वर्षों से संघर्ष करती आ रही हैं। आज से ७२ वर्ष पूर्व, वर्साइल्स की संधि के ४१ वर्ष बाद, हाउस आफ कामन्स में यह प्रश्न उठाये जाने के ४० वर्ष बाद, सबसे बड़े ट्रेड-यूनियन नालगो द्वारा समान वेतन की आवाज उठाये जाने के २४ वर्ष बाद और नगरपालिकाओं के घोषणापत्र के १४ वर्ष बाद ब्रिटेन की महिलाओं को यह दिन देखने को मिला है।

ब्रिटेन की महिलाओं को वोट का अधिकार प्राप्त करने में जितना समय नहीं लगा, उससे कहीं अधिक समय समान वेतन प्राप्त करने में लगा है। समान वेतन के प्रश्न पर कई बार यहां की महिलाओं ने हड़ताल की है, जुलूस निकाले हैं, सरकारी दफ्तरों पर धरना दिया है तथा इसी प्रकार अन्य अनेक उपायों से अपनी मांगें मनवाने के लिए आवाज उठाई है। यह बात नहीं कि सरकार तथा जांच कमेटियों ने उनकी यह आवाज नहीं सुनी। सरकार ने उनकी इस मांग को मन्यता दी, कमेटियों ने इसका समर्थन किया, पर उनकी इस मांग पर कभी कोई व्यवहार्य कदम नहीं उठाया गया। उनसे बराबर यही कहा गया कि यद्यपि उनकी मांगे उचित हैं, पर अभी देश इस स्थिति में नहीं है कि उनकी मांगों पर अमल किया जाये, सार्वजनिक नौकरियों तथा सरकारी नौकरियों में इस मांग के आधार पर तुरन्त कार्य नहीं किया जा सकता, अतः महिलाओं को इस प्रश्न पर अभी हठ नहीं करना चाहिये।

ब्रिटेन के सबसे बड़े ट्रेड यूनियन 'नालगो' ने इस प्रश्न पर १९३० में रुचि ली। तबसे वह बराबर महिलाओं की इस मांग का समर्थक रहा। प्रथम महायुद्ध के समय नगरपालिकाओं की नौकरियों में एक प्रकार से पुरुष का ही एकाधिपत्य था।

प्रथम महायुद्ध में जब पुरुषों को युद्ध क्षेत्र में जाना पड़ा तो महिलाओं को उनके रिक्त स्थान की पूर्ति करने के लिए सार्वजनिक जीवन में आना पड़ा। द्वितीय महायुद्ध के दौरान में और भी अनेक महिलाओं को घर से बाहर काम करने के लिए आना पड़ा।

युद्धकाल में भी जब इस सम्बन्ध में महिलाओं के छिटपुट आंदोलन चलते रहे तो १९४४ में सरकार ने उनकी इस मांग पर विचार करने के लिए 'रायल कमीशन' बैठाया। इस अवसर पर नालगो ने महिलाओं की इस मांग के समर्थन में प्रत्येक प्रकार से योगदान दिया। १९५१ में वित्तमन्त्री (चांसलर आफ एक्सचेकर) ने इस मांग को अस्वीकार कर दिया। इसके विरोध में महिलाओं ने एक विशाल जुलूस निकाला, जो ह्वाइट हाल से चलकर ट्राफलगर स्कवायर तक गया और वहां एक सभा के रूप में परिवर्तित हो गया। पर इन सबसे अधिक प्रभावशाली कार्य १९५४ में हुआ जब नालगो ने ब्रिटेन के अन्य सभी ट्रेड यूनियनों के सहयोग से लन्दन में द्विदिवसीय अभियान की योजना बनायी। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य पार्लियामेंट के सदस्यों को प्रभावित करना था। इसमें भाग लेने के लिए ब्रिटेन के प्रायः प्रत्येक गांव और शहर से महिलाओं के प्रतिनिधि-मण्डल आये थे। इस दिन ब्रिटेन की करीब ६ लाख महिलाओं के हस्ताक्षरों से युक्त एक पत्रक सरकार को देकर इस बात का आग्रह किया गया कि वह महिलाओं की इस मांग को मानकर जल्दी से जल्दी उस तिथि की घोषणा करे, जब महिलाओं को पुरुषों के समान वेतन मिलने लगेगा।

सरकार को आखिर हार माननी पड़ी। यह घोषणा की गई कि १ जुलाई १९५५ से नगरपालिका के विविध विभागों में कार्य करने वाली महिलाओं को पुरुषों के बराबर वेतन मिलने की दिशा में कुछ अधिक वेतन मिलेगा। महिलाओं की यह वेतन वृद्धि कुछ इस वार्षिक अनुपात में की गई कि १ जनवरी १९६१ तक पहुँचने पर उनका वेतन



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषों के समान हो जाये। बाद में धीरे धीरे अन्य सेवाओं में काम करने वाली महिलाओं के वेतन में भी इसी अनुपात में वृद्धि की गयी।

और अब महिलाओं की प्रतीक्षा का अन्त भी आ गया। गत १ जनवरी १९६१ को उन्हें अबतक के परिश्रम एवं धैर्य का फल मिल गया।

चूंकि अब महिलाओं को समान वेतन मिलने लगा है, अतः अब समाचार पत्रों में कुछ पाठकों ने संपादकों के नाम पत्र लिखकर यह आवाज भी उठायी है कि उन्हें आजकल पुरुषों की अपेक्षा जो कुछ अधिक सुविधाएं मिल रही हैं, उनमें कमी की जानी चाहिये। 'लेडीज फर्स्ट' का जो रिवाज यहां के समाज में वर्षों से चला आ रहा है, उसे समाप्त कर दिया जाना चाहिये, महिलाओं को आफिस का कार्य प्रारम्भ होने के बाद तथा बन्द होने के पूर्व १०-१५ मिनट का जो समय 'मेकअप' के लिए दिया जाता है, वह छूट उन्हें अब नहीं मिलनी चाहिये, उनके साथ ही अब प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के समान ही व्यवहार किया जाना चाहिये, विवाहित महिलाओं को आजकल जो छूट दी जाती है, वैसी छूट विवाहित पुरुषों को भी मिलनी चाहिये, तथा इसी प्रकार अन्य सभी बातों में दोनों वर्गों में समानता कर देना चाहिये। —'आज' से

---

( पृष्ठ का ८४ शेष )

परिवार औसत ऋण १९५०-५१ के १०५ से बढ़कर १९५६-५७ में १३८ रु० हो गया। इसका मुख्य कारण यह है कि खेत मजदूर परिवारों में ऐसे लोगों की संख्या बढ़ी जिन पर पहले से ऋण था।

(ग) १९५६-५७ में खेत मजदूर परिवारों पर कुल १ अरब ४३ करोड़ रु० ऋण था, जबकि १९५०-५१ में ८० करोड़ रु० था।

(घ) इन्होंने जो ऋण लिया, उसमें से लगभग ४६ प्रतिशत ऋण घरेलू खर्च के लिए, २४ प्रतिशत ऋण शादी आदि सामाजिक कार्यों के लिए, १९ प्रतिशत ऋण कारोबार बढ़ाने के लिए और बाकी ११ प्रतिशत ऋण फुटकर कामों के लिए लिया गया।

(घ) कुल ऋण में से ३४ प्रतिशत ऋण महाजनों से, ४४ प्रतिशत मित्रों और रिश्तेदारों से, १५ प्रतिशत मालिकों से, ५ प्रतिशत दुकानदारों से और १ प्रतिशत सहकारी समितियों से लिया गया। ●●

# छोटी बचत

१ छोटी बचत का मतलब है कि बिना किसी दिक्कत के देश के आंतरिक साधनों का विकास हो।

२ दूसरी योजना के ४ वर्षों में, अगस्त, १९६० तक छोटी बचतों से ३ अरब २४ करोड़ ६९ लाख रु० इकट्ठा हुआ। तीसरी योजना में ५ अरब ५० करोड़ रु० जमा होने की आशा है।

३ इस प्रकार प्रत्येक राज्य में जितना रुपया इकट्ठा होता है, उसका अधिकांश भाग इसी राज्य के विकास-कार्यों पर खर्च हो जाता है। इससे लोगों का रुपया बचाने को अधिक प्रोत्साहन मिलता है।

४ प्रत्येक वर्ग के व्यक्तियों की क्षमता के अनुसार विभिन्न प्रकार की लघु बचत योजनाएं उनके लिए चालू हैं। जो लोग पूंजी इकट्ठा करना चाहते हैं, वे १२ वर्ष का राष्ट्रीय बचत सर्टिफिकेट खरीद सकते हैं। इसके अन्तर्गत १०० रु० का सर्टिफिकेट खरीदने पर १२ साल के बाद बिना टैक्स के १६५ रु० मिलेंगे।

५ जो व्यक्ति नियमित वार्षिक आय चाहते हैं, वे ४ प्रतिशत ब्याज वाला और बिना टैक्स का १० साला ट्रेजरी सेविंग्स डिपाजिट सर्टिफिकेट खरीद सकते हैं।

६ डाकघर के सेविंग्स बैंक खाते में २॥ प्रतिशत सूद पर रुपया जमा किया जा सकता है।

७ अप्रैल १९६० से इनामी बांडों की योजना शुरू की गयी है। ये बांड किसी भी डाकघर, स्टेट बैंक की शाखा या सरकारी खजाने से खरीदे जा सकते हैं। इसका रुपया पांच साल के बाद वापस मिल जाएगा। इसके अलावा हर तिमाही लाटरी में नम्बर निकलने पर इनाम भी मिल सकता है।

—



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76333

सर्वोदय पृष्ठ

# औद्योगीकरण का समाज पर प्रभाव

श्री इन्द्रसेन, अरविन्द आश्रम पाण्डिचरी

औद्योगीकरण का मतलब है सामान को बहुत बड़े पैमाने पर तैयार करने का तरीका। अतएव वह लोगों के रहन-सहन के मान-दण्ड को ऊँचा करने का साधन है। रहन-सहन के अधिक ऊँचे मानदण्ड का सारभूत अर्थ होना चाहिए जीवन-यापन के अधिक सुन्दर एवं सुख-सुविधापूर्ण तरीके, विशेषकर ऐसे तरीके जो हमें भौतिक और मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ तथा सांस्कृतिक रूप से अधिक समग्र एवं समृद्ध जीवन के लिए प्रोत्साहित करें तथा उसे प्रदान भी करें।

इससे यह भी सूचित होता है कि लोगों को औद्योगीकरण के फलों का ठीक उपयोग करने तथा उसके द्वारा उत्पन्न अवस्थाओं में जीवन-यापन करने का ढंग सिखाया जाना चाहिए। जो लोग उद्योग-व्यवसाय की प्रक्रियाओं के साथ सीधे तौर पर सम्बन्धित हैं, उनके लिये इसका अर्थ यह भी है कि वे अपने सांस्कृतिक जीवन को हानि पहुंचाये बिना अपने-आपको व्यवसाय के क्षेत्र से संबंधित जीवन और कार्य की परिस्थितियों के अनुकूल बनायें। सच पूछो तो यह अनुकूलीकरण अपने-आप में एक सांस्कृतिक समृद्धि को लानेवाला होना चाहिए।

इस सबका अर्थ हुआ औद्योगीकरण की समस्या के प्रति एक मूलतः शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण। साधारणतया औद्योगीकरण में मनुष्य और उसकी सांस्कृतिक समृद्धता की अपेक्षा अत्यधिक विशाल उत्पादन को अत्यन्त एकांगी रूप से दृष्टि में रखा जाता है। ऐसी दशा में उत्पादित सामग्री तथा नयी अवस्थाओं को समाज पर एकाएक ही अव्यवस्थित ढंग से थोप करके पहले की जीवन-प्रणाली को कुछ विचारहीन ढंग से विघटित कर दिया जाता है। तब उसका स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि समाज का शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक विकास तो होता नहीं पर जीवन के मानवीय मूल्यों का प्रायः ह्रास ही हो जाता है, यद्यपि सामाजिक परिस्थिति निश्चय ही संस्कृति उपभोग और विकास के समृद्धतर अवसरों से सुसंपन्न हो जाती है। तब वास्तव में यह एक ऐसी अवस्था होती है जिसमें चारों ओर के सामाजिक परिवेश में जीवन की बाह्य-सामग्री खूब समृद्ध होती है। पर उसके उपयोग के लिए मनुष्य में यथोचित क्षमताएं नहीं होतीं।

यदि शैक्षणिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को अपनाया जाय, तो राष्ट्रीय प्रतिरक्षा जैसे औद्योगीकरण की मांग कर सकती है, उसको एक ओर रखते हुए साधारणतया इसके सम्बन्ध में हमारा मूल लक्ष्य होना चाहिए मनुष्य, उसका कल्याण और उसकी सांस्कृतिक उन्नति। तब औद्योगीकरण के सारे कार्यक्रमों को जनसाधारण के पूरणीय अभावों एवं वास्तविक आवश्यकताओं में से उद्भूत होना होगा, और उनका विकास भी, जैसे-जैसे उत्पन्न सामग्री का उपयोग करने की लोगों की क्षमताएं विकसित हों, वैसे-वैसे ही स्वभावतः होने देना होगा। उस दशा में औद्योगीकरण वर्तमान सामाजिक रचना का विघटन करके अपना काम नहीं चला सकेगा, बल्कि वह समाज को शिक्षा के द्वारा नये नमूने के अनुसार ढालने के लिए चिंतित होगा। उसके सारे कार्यक्रम में मानव-हित का विचार सदैव सर्वोपरि रहेगा और वही उसके सब कार्यों का निर्धारण करेगा।

यदि यह दृष्टिकोण अपनाया जाय तो पूर्वीय देश, जो आज औद्योगीकरण करना चाह रहे हैं, उन अनेक अनिष्टकारी परिणामों से बच सकते हैं जो पश्चिम में इसके प्रयोग से उत्पन्न हुए हैं और फिर उनका अनुभव पश्चिम के लिए भी उपयोगी हो सकता है।

## शिल्पविज्ञान के सामाजिक फलितार्थ

शिल्प विज्ञान संबंधी प्रगति का अर्थ होगा अधिक मशीनें, अधिक कारखाने, अधिक उत्पादन, अधिक खपत तथा सामाजिक जीवन-यापन का एक ऐसा व्यापक विस्तार जो मशीनरी, फैक्टरियों तथा उत्पादन पर अवलंबित हो। इसी प्रकार इसका यह अर्थ भी होगा कि समस्त सामाजिक जीवन को इसकी गढ़ी-गढ़ायी एकरूपताओं तथा नियत विविधताओं के नियामक प्रभाव के अधीन कर दिया जाय।

संभवतः इसका पहला सामाजिक परिणाम होगा—



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियमितता, क्रमबद्धता, सामूहिक सहोद्योग तथा राष्ट्रीय जीवन में इन मूल्यों का व्यापक आदर। सुख सुविधा का एक अधिक ऊंचा मानदंड तथा बहुत-सी व्यापक कार्य-प्रवृत्तियां भी इसका एक अन्य परिणाम होंगी।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कहा जाय तो इसका अर्थ होगा राष्ट्रीय मन का यांत्रिक विकास और हमारे देश में जहां 'सामाजिक' मूल्यों की बलि देकर भी 'व्यक्ति' के मूल्यों पर बल दिया गया है, यह एक महान् लाभ का सूचक हो सकता है।

परन्तु मशीन पर बल देने वाले औद्योगीकरण का परिणाम सामान्यतः यह होगा कि मन यांत्रिक बन जायगा तथा जीवन में 'उद्देश्य' और मूल्यों की भावना कमजोर पड़ जायगी। किन्तु 'उद्देश्य' और 'मूल्यों' की खोज ही क्रियों में अनुभव के नये उच्चतर गुण धर्मों को प्रकट करने का साधन बनती है। वे नये गुण धर्म मानव जाति के लिए विकास के नये विस्तृत मार्गों को खोल देते हैं तथा युग की हल न होने वाली समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत करते हैं।

आज इस जगत् के, विशेषकर पश्चिमी जगत् के सम्मुख ऐसी ही समस्या उपस्थित है। साइन्स ने आज शक्ति के उत्पादन के जो असाधारण साधन एवं स्रोत मनुष्य जाति को प्रदान किये हैं, उनके बीच मनुष्य अपने आपको अभूत-पूर्व रूप में असहाय अनुभव कर रहा है। उसे ऐसा लग रहा है कि ठीक ये साधन ही संभवतः उसका विनाश करके सभी चीजों को मटियामेट कर देंगे। हम इतने यांत्रिक बन गये हैं कि हमें इस बात की संभावना तक नहीं दीखती कि अनुभव में कुछ ऐसे नये गुण-धर्म भी हो सकते हैं, उदाहरणार्थ, प्रेम, एकता की सजीव भावना आदि, जो वर्तमान युग के विरोधों में समन्वय साध सकते हैं तथा जो आज के राष्ट्र गत द्वेष भावों तथा विरोध वैषम्यों का स्वास्थ्यकर समाधान कर सकते हैं।

यही भारत में प्राविधिक प्रगति का संकटपूर्ण सामाजिक भविष्य है। इसका रूप और भी तीव्र हो उठता है जब हम यह सोचते हैं कि भारत ने इधर हाल के कुछ वर्षों में ही अनुभव के कुछेक आश्चर्यजनक नये गुणों को प्रकट करके जाति की प्रगति में योगदान किया है। इन गुणों के कारण संसार में बहुत अधिक आशा उत्पन्न हो गई है। व्यक्ति पर तथा अनुभव के अनन्त क्षेत्रों में व्यक्ति के साहसिक अभिमान पर परम्परागत बल देने के कारण भारत से यह आशा की जा सकती है कि भविष्य में वह ऐसा योगदान और भी अधिक मात्रा में करेगा।

परन्तु क्या औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप मन का पूर्ण रूप से यांत्रिक बन जाना अवश्यंभावी है? हां, यदि शिल्प-विज्ञान को सांस्कृतिक प्रवृत्ति का मुख्य लक्ष्य स्वीकार कर लिया जाय तथा जीवन की अन्य सब प्रवृत्तियों को उसके आधीन रखकर गौण स्थान दिया जाय तो इस परिणाम से बचना संभव नहीं होगा।

वस्तुओं के यथार्थ विवेचन में शिल्प विज्ञान जीवन-यापन की अच्छी अवस्थाओं को जन्म देने के लिए एक साधन भर है। ये अवस्थाएं प्राप्त हों तो जीवन को अपने उच्चतम मूल्यों का अधिक सफलतापूर्वक अनुसरण करने तथा उन्हें चरितार्थ करने में समर्थ होना चाहिये। इस प्रकार शिल्प-विज्ञान के मूल स्वरूप में ही ऐसी कोई चीज नहीं है, जो स्वभावतः ही घृणाजनक हो।

यदि हमारा देश इन मूल्यों को अपनी दृष्टि में रखे तथा शिल्प विज्ञान के साथ इनका उचित रूप में गठबन्धन करे तो यह विज्ञान एक वरदान ही होगा तथा यह उस व्यापक दृष्टि क्षेत्र को भी प्राप्त कर लेगा, जिसकी इसे, समष्टि रूप से, सारे संसार के लिये इतनी अनिवार्य आवश्यकता है। ●●

# भूदान की प्रगति क्यों रुक गई?

महात्मा गांधी के सर्वोदय अर्थशास्त्र के प्रतिष्ठापक आचार्य विनोबा का भूदान यज्ञ बड़े प्रबल वेग के साथ प्रारंभ हुआ, किन्तु कुछ वर्ष चलने के बाद वह आज अत्यन्त शिथिल हो गया है, इसके कारणों पर विचार करते हुये श्री कामेश्वर प्रसाद बहुगुणा ने 'आज' में लिखा है:—

भूदान को देश ने जो स्वागत सम्मान तथा सहायता दी, वह सामाजिक क्रान्ति के इतिहास में अनुपम है। जनता की सुप्त आकांक्षाओं ने उनमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के स्वप्नों की पूर्ति की झलक देखी। भूदान का जो स्वरूप १९५७ ई० तक था, यदि वही कायम रहता जो वह जनता के सहयोग से बहुत आगे बढ़ चुका होता, किन्तु दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ। मेरी नम्र सम्मति में इसके दो प्रमुख



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण हैं। एक तो यह कि विनोबा जी का कार्य-क्रम तीव्रता से बदलता गया। जब तक स्वयं जनता बल्कि स्वयं कार्यकर्ता एक कदम को पकड़ लेते और समझने की कोशिश करते तब तक विनोबाजी चार कदम आगे बढ़ जाते। 'अतिदार्शनिकता' के अतिदोष ने भूदान से जनता को पृथक कर दिया। स्वय विनोबा भूदान को मीलों पीछे छोड़कर बढ़ चले। भूदान और विनोबा की इस दूरी ने गांधी विचार को अति दुरूह तथा रहस्यमय बना डाला।

दूसरा कारण इससे भी गहरा है। गांधी जी के आंदोलनों की यह विशेषता रही कि वे प्रतीकात्मक होते थे। उनके लक्ष्य यद्यपि अभौतिक थे, किन्तु उनके प्रतीक स्पष्ट भौतिक धरातल के थे तथा जनता की पहुंच के अन्दर होते थे। किसलिए, किससे और कैसे लड़ना है यह सब स्पष्ट था। अंग्रेज जाति के प्रति क्रोध और द्वेष के बदले विदेशी सरकार के प्रतीक कानून और वस्त्र जलाये गये।

यह मनोवैज्ञानिक क्रांति थी। इसने एक तरफ साधारण, अपंग तक भारतवासी के सुप्त 'अहं' को तुष्ट किया कि वह भी कुछ है देश के लिए कुछ कर सकता है तो दूसरी तरफ चर्खा जैसी विशुद्ध आर्थिक क्रिया को जीवन प्रदान किया। भूदान ने कहो लड़ना है किसके विरुद्ध कैसे, यह सब अस्पष्ट रहा। वह जनता को प्रतीक प्रदान नहीं कर सका। 'स्वामित्व', 'शोषण' ये सब भावात्मक प्रत्यय है, जिन्हें स्पष्ट करने के लिए स्पष्ट प्रतीकों की आवश्यकता पड़ती है। भूदान ऐसा स्पष्टीकरण नहीं प्रदान कर सका। अनुकूल प्रतीकों के अभाव में भूदान आंदोलन जनता के लिए गूढ़ तथा रहस्यमय तो बन ही गये किन्तु उसके लिए उसका कुछ अर्थ भी नहीं रह गया। प्रथम कारण ने भी इसमें योग दिया। फल यह है कि भूदान का कहीं पता नहीं, केवल विनोबा हैं। गांधी के साथ कभी ऐसा नहीं हुआ था। • •

## कहां से

दूसरी योजना का खर्च और पहले तीन वर्षों में वास्तविक बित्त व्यवस्था किस नमूने की होगी तथा शेष दो वर्षों में उसकी क्या स्थिति होने की सम्भावना है, ये तथ्य नीचे की तालिका में दिये गये हैं। सम्पूर्ण रूप से पांच वर्षों की अवधि में योजना पर जो कुछ खर्च होगा उसकी वित-व्यवस्था करने का जो अनुमान लगाया गया है उसका अनुमान निम्न प्रकार है।

## आन्ध्र का नया कृषि विश्वविद्यालय

भारत में रुद्रपुर (उत्तरप्रदेश) में कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद इसी तरह की एक संस्था आन्ध्र-प्रदेश में हैदराबाद से ११ मील दूर राजेन्द्रनगर में स्थापित की जायगी। राजेन्द्रनगर इस समय पहले से ही चला आ रहा है कई कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थाओं का केन्द्र है। इस विश्वविद्यालय को अमरीकी सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत अमेरिका के लैण्ड-ग्रान्ट (कृषि) कालेजों के अनुसरण पर कायम किया जायगा। २००० एकड़ के इस क्षेत्र में बहु-उद्देश्यीय प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किये जायंगे। भविष्य में पशु चिकित्सा विज्ञान और पशुपालन सम्बन्धी और दो टैक्नोलौजी और इन्जीनियरिंग सम्बन्धी कालेज की स्थापना की संभावना है। कैन्सास विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ यहां अनेक विभागों की स्थापना में परामर्श देंगे।

वस्त्र व्यापार
की
प्रमुख पत्रिका
'मध्य प्रदेश वस्त्र व्यापार पत्रिका'
पत्रिका विभाग :
श्री म. प्र. क्लाथ मार्केट
एसोसिएशन
म० प्र० क्लॉथ मार्केट, इन्दौर (म. प्र.)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ वृत्त चयन

## यूनिट ट्रस्ट

पिछले कुछ समय से आर्थिक क्षेत्रों में यूनिट ट्रस्ट की चर्चा चली है। ब्रिटेन में अनेक यूनिट ट्रस्ट चल रहे हैं। 'यूनिट ट्रस्ट' का अभिप्राय एक ऐसी कम्पनी से है, जो छोटे छोटे शेयर होल्डरों के सहयोग से बनती है और बाद में वह कम्पनी बड़े उद्योगों के शेयर खरीदती है। इसके कारण जो निर्धन या कम आय वाले लोग बड़ी कम्पनियों के शेयर नहीं खरीद सकते, वे भी अप्रत्यक्ष रूप से उनके शेयर होल्डर बन जाएंगे।

भारत सरकार ने अपनी दूसरी पंचवर्षीय योजना से यह देख लिया है कि लोगों में अल्प-बचत करने की प्रवृत्ति कम है। बचत के द्वारा साधन प्राप्ति के लक्ष्य अभी तक पूर्ण नहीं हुए। कुछ लोग अपने पास की छोटी बचत को कहीं लगाना अवश्य चाहते हैं। या तो वह शेयर ब्रोकरों के फेर में पड़ कर अविश्वसनीय कम्पनियों के शेयर खरीद लेते हैं। अथवा उनसे कटु अनुभव प्राप्त करके सोना-चांदी खरीदने में रुपया लगा देते हैं। यदि कोई ऐसा प्रमाणित संगठन बन सके, जो ऐसे लोगों को बचत को अच्छे लाभशील उद्योगों में लगा सके, तो वे अवश्य उसका लाभ उठाएंगे। ऐसे संगठनों-यूनिट ट्रस्टों-के बनाने का प्रस्ताव योजना आयोग के समक्ष विचाराधीन है। इन ट्रस्टों के शेयर ५ या १० रुपए की कीमत से अधिक न हों, तभी इन ट्रस्टों में सामान्यजन रुपया लगाने को प्रेरित होंगे। इनका लाभ देश के औद्योगिक विकास में मिल सकता है। लेकिन इसके लिए सरकार को भी अपनी कर-व्यवस्था में कुछ संशोधन करना पड़ेगा। वह ट्रस्ट द्वारा बांटे गए डिविडेंड पर सीधा ही अपना कर न वसूल किया करें। ● ●

## ब्रिटेन और पाइप लाइन

आयल इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड ने ब्रिटेन की ह्वेसो लिमिटेड कम्पनी से एक समझौता किया है, जिसके अनुसार वह अपर असम तेल प्लाण्ट के निर्माण का कार्य करेगी। निर्माण के पूर्ण होने पर ही नहर कटिया के तेल क्षेत्रों से ७२० मील लम्बी पाइप लाइन द्वारा बरौनी और नूनमती में तेल संशोधन का कार्य चालू होगा। इस निर्माण कार्य का ठेकेदार ६००,००० पौंड का है। ● ●

## पुरुष अधिक

भारत के बर्फानी आबादी क्षेत्रों में अभी हाल में हुई जनगणना के अनुमान के आधार पर स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों की जनसंख्या अधिक है। पुरुष ४५६,६११ (५२ प्रतिशत) और स्त्रियां ४२०,७४६ (४८ प्रतिशत) हैं, कुल मिलाकर ८८०,६६० है। साक्षरता इस प्रकार है—

| | |
|---|---|
| उत्तर प्रदेश | २४ प्रतिशत |
| पंजाब | १३ ,, |
| हिमाचल प्रदेश | १४ ,, |
| जम्मू और काश्मीर | ६ ,, |

राज्यों के बर्फानी आबादी वाले अंचल क्षेत्रों की आबादी इस प्रकार है—

| | |
|---|---|
| उत्तर प्रदेश | ६,०११ |
| पंजाब | १७८६६४ |
| जम्मू-कश्मीर | ३००६२२ |
| हिमाचल प्रदेश | ३६५३३३ |

## कितने डाक्टर ?

हमारे देश में कितने डाक्टर हैं और कितनों की आवश्यकता है, इस बारे में योजना आयोग ने अध्ययन किया जिससे पता चला है कि १९६१ में डाक्टरों की संख्या ७१,६४१ होगी जो १९६६ में बढ़कर ८२,८८३ हो जाएगी। इसका अर्थ यह हुआ कि इस साल हर ५,६८८ व्यक्तियों पर एक डाक्टर होगा और तीसरी योजना के अन्त में यह संख्या घटकर ५,७८७ रह जायगी। दूसरे देशों की तुलना में यह बहुत कम है। रूस में प्रति ६०० व्यक्तियों पर, अमेरिका में ७६० व्यक्तियों पर और ब्रिटेन में २००० व्यक्तियों पर एक डाक्टर है। ऊपर जो भारत के आंकड़े दिए गए हैं उनमें उन डाक्टरों की संख्या शामिल नहीं की गई जो सरकार द्वारा चलाई जाने वाली स्वास्थ्य सेवाओं के लिए आवश्यक होंगे। तीसरी योजना में इस काम के लिए १०,७०० डाक्टर और चौथी योजना में १७,००० डाक्टरों की आवश्यकता होगी। इस समय लगभग एक तिहाई डाक्टर कार्य कर रहे हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया साहित्य

धूप-छाँह (उपन्यास)—लेखक—श्री उपेन्द्र शर्मा। प्रकाशक—कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर। मूल्य ४-०० रुपये।

प्रस्तुत कृति लेखक का प्रथम प्रयास है। उपन्यास में आदर्श और यथार्थ का मनोवैज्ञानिक ढंग पर चित्रण करने का स्तुत्य प्रयत्न किया गया है। उपन्यास का कथानक पारिवारिक और सामाजिक है। इसमें एक सीधे-सादे माता-पिता के आर्थिक संकटों की संघर्षपूर्ण जीवन कहानी है, जो अपने बच्चों के बड़े होने पर उनसे काफी आशाएं रखते हैं, किन्तु परिस्थितियों के घात-प्रतिघात उनकी आशाएं पूर्ण नहीं होने देते। दुर्भाग्य से उनका बड़ा लड़का 'विभाव' जिस पर उनकी सारी आशाएं केन्द्रित होती हैं, समय आने पर साथ नहीं देता, और उनका अन्त बड़ी दयनीय स्थिति में होता है।

इस उपन्यास में कालिज के युवक युवतियों के रोमांस का बड़ा सजीव चित्रण किया गया है। कालिज के छात्र-छात्राएं कितने भावुक, कल्पनाशील और अपरिपक्व बुद्धिवाले होते हैं, इसका दिग्दर्शन विभाव, राजनारायण और रजनी आदि के चरित्र से मिलता है। शेष पात्रों का चरित्र-चित्रण भी काफी उभरा है। उपन्यास के अन्त में लेखक कुछ कुंठाओं को जन्म दे रहा था, किन्तु उसने अपने कथा-कौशल से उसे बड़ी सफलता पूर्वक दूर कर दिया है।

कहीं-कहीं कथोपकथन लम्बे अवश्य हो गये हैं, किन्तु उससे कथा के प्रवाह में बाधा नहीं पड़ती। लक्षणा, व्यंजना अभिधा, विभाव, अनुभाव, संचारी, पात्रों के नाम लेखक ने शायद नवीनता की दृष्टि से रखे हैं। भाषा सरल, सरस और प्रवाह पूर्ण है।

हिन्दी टाइम्स (नव-वर्षाङ्क)—सम्पादक—श्री नरोत्तम नागर। २ सी०।३, रोहतक रोड, नई दिल्ली-५। एक प्रति २५ न० पैसे।

प्रस्तुत अंक के साथ साप्ताहिक 'हिन्दी टाइम्स' अपने जीवनकाल का प्रथम वर्ष सफलता पूर्वक समाप्त करके दूसरे वर्ष में प्रवेश कर चुका है। इस अल्पावधि में इस पत्र ने लोकप्रियता और ख्याति अर्जित करली है। प्रस्तुत अंक में जहां व्यंग और हास्य पूर्ण कविताएं, लेख, रेखाचित्र हैं, वहां दो भावपूर्ण कहानियां और स्वाधीनता-संग्राम से सम्बन्धित रोचक और उत्साहपूर्ण संस्मरण भी पाठकों के पढ़ने को मिलेंगे। सर्वश्री नागार्जुन, अमृतलाल नागर, पाण्डेय बेचन शर्मा, 'उग्र', देवदत्त 'अटल', यश, मुंशी प्रेमचन्द, पशुपति आज़ाद आदि अनेक लेखकों की रचनाएं इसमें हैं। अनेक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रिय उपयोगी सूचनाओं से विश्व की गति-विधि का पर्याप्त परिचय भी मिल जाता है।

पंचायती राज (गणतन्त्र विशेषांक)—सम्पादक—श्री विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी'। मेरठ, । मूल्य ५० न० पैसे।

पंचायती राज पिछले कई वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। इस अंक में विविध विषयों पर लेखकों के उपयोगी लेख और महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं। इसमें जहां भारत के राजनीतिक तथा आर्थिक पहलुओं पर कुछ लेख दिये गये हैं वहां स्त्री-समाज, साहित्य और शिक्षा से सम्बन्धित सामग्री कविताएं भी संकलित की गयी है। अनेक चित्र भी दिये गये हैं, जिससे अंक और भी सुन्दर बन गया है।

मध्य प्रदेश वस्त्र व्यापार पत्रिका—श्री म-प्र० क्लाथमार्केट मर्चेन्ट्स एसोसिएशन, इन्दौर।

प्रस्तुत पत्रिका का जनवरी ६१ का अंक हमारे सामने है। पत्रिका के नाम से ही इस के विषय की भली प्रकार जानकारी मिल जाती है। इसमें मध्य प्रदेश के वस्त्र-उद्योग और व्यापार से सम्बन्धित उपयोगी लेख और नयी-नयी सूचनाएं पाठकों को मिलती हैं। —कुमारसम्भव

आर्थिक समीक्षा (भावनगर कांग्रेस अधिवेशन—विशेषांक)। प्रधान सम्पादक—श्री सादिक अली। ७ जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली-१। इस अंक का मूल्य १.५० रुपया है।

कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर यह विशेषांक प्रकाशित किया गया है। स्वभावतः इसमें देश की आर्थिक समस्याओं और विशेषकर तीसरी पंचवर्षीय योजना के सम्बन्ध में अनेक लेख हैं। इनमें से श्री ढेबर का 'तीसरी योजना और पंचायती राज', श्री सुनील गुहा का 'लोकतन्त्र और समाजवाद' श्री जी० एस० सहोता का 'पूंजी निर्माण में राजस्व बजट का महत्व', श्री रणदिवे का 'तीसरी योजना का मूल्यों पर प्रभाव' आदि अनेक लेख पठनीय हैं। कुछ लेख राज्यों की प्रगति का परिचय कराते हैं।—



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

( पृष्ठ ७४ का शेष )

| | परिमाण १००० क्यूबिक फुट में | | मूल्य लाख रुपयों में | |
|---|---|---|---|---|
| | १९५०-५१ | १९५५-५६ | १९५०-५१ | १९५५-५६ |
| (अ) मुख्य उत्पादन इमारती लकड़ी | १०५,६७६ | ११९८६७ | १३९१ | १६३२ |
| अन्य लकड़ी | २९५४९ | २५४३७ | १०५ | २०६ |
| पल्प और दियासलाई की लकड़ी | ४७५ | १४८१ | १ | ३३ |
| ईंधन ( जलाने ) की लड़की | ३९४३१९ | ३२६०५७ | ३९२ | ५५५ |
| कोयला लकड़ी | २७५६९ | ५५६६१ | ११ | २० |
| कुल | ५५७ ५५८ | ५२८,५०३ | १९०० | २४४६ |
| (ब) साधारण उत्पादन बांस, बेंत और रिंगाल | | | १४२ | १३७ |
| गोंद और लीसा | | | ४२ | १०१ |
| अन्य वस्तुयें | | | ४९८ | ५६४ |
| कुल | | | ६९२ | ८०२ |

इस प्रकार इस तालिका से यह भली प्रकार से जानकारी मिल जाती है वन हमारी आय के मुख्य श्रोतों में से हैं और यहां तक कहा जा सकता है कि पर्वतीय क्षेत्रों की अर्थ-व्यवस्था मुख्य रूप से वनों पर ही आधारित है। अकेले १९५९-६० में वनों से राज्य-सरकारों और केन्द्र को कुल २६.९६ करोड़ की आय हुई है और आशा है कि यह राशि १९६०-६१ में २८.३४ करोड़ रुपये तक पहुँच जायगी, वनों की विकास की दिशा में १९५० में सेन्ट्रल फोरेस्ट्री बोर्ड की स्थापना हुई, जो वैज्ञानिक रीति से वनों के विकास करवाने में ठोस सहायता देती आ रही है।

श्री के. एम. मुन्शी के मंत्रित्वकाल में वन महोत्सव की परिपाटी चलाई गई, लेकिन फिर भी वनो की दशा में कोई उल्लेखनीय उन्नति नहीं हुई। आमतौर पर सरकार की इस क्षेत्र में दीर्घकालीन नीति रही जिसमें वनों में सड़कों, जंगलात की चौकियों का निर्माण वैज्ञानिक ढंग से लकड़ी व वन्य पदार्थों की निकासी और नये प्लान्टेशन के कार्यक्रम चलाये गये। दो पंचवर्षीय योजनाओं में वनों के विकास के लिये बड़ी-बड़ी आकर्षक योजनायें बनाई गई परन्तु उन्होंने केवल इस समस्या का छोर ही छुआ। पहली पंचवर्षीय योजना में जंगलात पर ९.६ करोड़ रुपया खर्च हुआ। इस अवधि में ७५,००० एकड़ जमीन पर फिर जंगल लगाये गये ३००० मील लम्बी सड़कें बनाई गई। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में ४७ करोड़ रुपया व्यय किया गया। इस अवधि में ५०,००० एकड़ पर दियासलाई के योग्य लकड़ी का जंगल और २००,००० एकड़ पर इमारती तथा औद्योगिक लकड़ी का जंगल उगाने का लक्ष्य रखा गया। यह भी मालूम हुआ कि बाढ़ से प्रभावित ४०,००० एकड़ जंगल के क्षेत्र का पुनरुद्धार किया जायगा। ५००० मील जंगलात की सड़कों के निर्माण का भी लक्ष्य रखा गया है। भारत सरकार ने 'स्विटजरलैण्ड से २० सेर आधुनिक हथियार और ५०० जोड़े और भारतीय वनो को मुहैया किया है।

## तीसरी योजना में जंगलात

इन्धन की लकड़ी की कमी को दूर करने के लिए गांव के आसपास २० लाख एकड़ पर शीघ्र उगने वाले पेड़ उगाने का लक्ष्य रखा गया है। यह कार्य सामुदायिक विकास योजना के अन्तर्गत रखा गया है। सरकार तकनीकी ज्ञान और पौधों को देने की सहायता भी देगी। गांव में गोबर को खाद के लिए ही बचा लिया जा सकेगा। तीसरी योजना में उत्तरप्रदेश, पंजाब, काश्मीर, हिमाचलप्रदेश, और पश्चिमी बंगाल में ५० हजार एकड़ पर साल, चीड़ देवदार आदि इमारती लकड़ी के जंगलों में वृद्धि की जायगी। २ लाख एकड़ पर मध्यप्रदेश, असम, केरल, मैसूर, आन्ध्र-प्रदेश और बिहार में प्लान्टेशन किया जायगा। पंजाब,



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आयोजन प्रबन्ध का महत्व : एक मूलभूत सिद्धान्त

वाई० ए० फजलभाई (भूतपूर्व शेरिफ, बम्बई)

औद्योगिककृत भारत में जितना महत्व आजतक प्रशासन व प्रशासकों को दिया गया है, उससे बहुत अधिक महत्व अनिवार्य रूप में 'मैनेजमेंट और मैनेजरों' का बढ़ गया है। युग परिवर्तन के साथ व्यवस्था भी बदलती जा रही है और सामाजिक-आर्थिक पद्धति में भी नये-नये मोड़ आ रहे है। इसलिय भारत को विभिन्न उद्योगों के कुशल संचालक के लिये योग्य मैनेजरों (व्यवस्थापकों) की हजारों की संख्या में टीम तैयार करनी होगी और इसके लिये उसे शीघ्र व्यवस्था करनी होगी। —सम्पादक

बम्बई में उद्योग और व्यापार की एक सभा में श्री चिन्तामणि देशमुख ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कुछ महत्वपूर्ण बातें बताई थीं। उनका कहना है कि—"वर्तमान औद्योगिक व व्यापारिक कारोबार पहले से भिन्न हो गये हैं। आज देखने में यह आता है कि दुनिया के सभी देशों में 'मैनेजरों का नया वर्ग' उत्पन्न हो गया है—जो भविष्य की टेक्नोक्रेशी अथवा 'यांत्रिकी तंत्र' में विशेष महत्वपूर्ण स्थान ले रहा है। देश की समृद्धि सुदृढ़ व्यवस्था व प्रबन्ध से ही संभव है, इसलिए व्यवस्था करने के लिए एक नयी पेशेवर श्रेणी बन रही है जो हमारे देश के औद्योगीकरण में यह महत्वपूर्ण भाग अदा कर रही है। मैनेजरों की यह श्रेणी किसी साहस (Enterprise) को सफल बना सकती है—चाहे वह सार्वजनिक क्षेत्र में हो या निजी क्षेत्र में।"

यदि हम इस बात को समझ लें कि 'मैनेजमेंट' (व्यवस्था व प्रबन्ध) भी एक विज्ञान है, तो हम इसकी कठिनाईयों तथा खामियों को सहज में ही मालूम कर लेंगे।

वास्तविक स्थिति यह है कि 'मैनेजिंग' के विज्ञान के महत्व को प्रत्येक औद्योगिक साहस में अनुभव किया जा रहा है। कुछ लोगों की यह धारणा हो जाती है कि 'मैनेजमेंट' शब्द का अर्थ केवल मालिक से है, जिसका काम केवल मातहत कर्मचारियों को आदेश देना है, सच कहता हूँ, प्रबन्ध के लिए व्यक्ति का चुनाव ही वह पहलू है जिस पर बड़े सोच-विचार और व्यवहारिक अनुभव के ज्ञान के आधार पर महत्वपूर्ण निर्णय किये जाते हैं। प्रश्न यह है कि क्या यह 'मैनेजमेंट' का कार्य केवल आदेश देने तक सीमित है अथवा उसे प्रभावोत्पादक सहज नेतृत्व भी प्रदान करता है। इसका विश्लेषण करने पर मैनेजमेंट के चार तत्वों का पता चलता है जो ये हैं—आयोजना, संगठन, सुव्यवस्था और मूल्यांकन।

आयोजना—आयोजना के अन्तर्गत उद्देश्यों की पूर्ति के लिए नीति निर्धारण होता है और लक्ष्य रखे जाते हैं।

संगठन—संगठन निश्चित नीति को विधिवत् कार्यरूप में परिणित कर लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रारूप तैयार करता है। किये जानेवाले कुल कार्य का वर्णन और विश्लेषण प्रारूप में किया जाता है। प्रारूप के अनुसार कार्य करने के लिए सुयोग्य अधिकारियों का चयन किया जाता है और उनको कार्य के सिलसिले में अधिकार और दायित्व सौंपे जाते हैं।

---

उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मद्रास, केरल और कुछ अन्य राज्यों में ४ लाख ५० हजार एकड़ पर मिश्रित जंगल का विकास किया जायगा। इसके अतिरिक्त नहरों, सड़कों के किनारे भी पेड़ लगाये जाने की योजना है। १० लाख एकड़ पर जो जंगल दुर्दशा में है, उनकी भी सुध ली जायेगी। ३३,००० वर्ग मील के क्षेत्र पर 'जंगल चकों' का निर्माण किया जायगा।

इन योजनाओं से भूमि का कटाव रोका जा सकेगा और बाढ़ से रक्षा की जा सकेगी। खेती का भार भी कम होगा। परन्तु अच्छा हो कि मैदानी क्षेत्रों के गांवों के चारों ओर फोरेस्ट बेल्ट का निर्माण भी किया जाय जिससे अन्य लाभ के अतिरिक्त भयंकर लू और तूफान व अन्धड़ से गांवों की रक्षा हो सकेगी। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुव्यवस्था—श्रमिकों व अधिकारियों में आपसी सहयोग व कार्यकुशलता बढ़ाने और एकता स्थापित करने के लिए सुप्रबन्ध या सुव्यवस्था की आवश्यकता होती है जिससे उद्देश्यों की पूर्ति में सफलता मिल सके।

मूल्यांकन--यह लक्ष्यों की पूर्ति में सफलता की मात्रा जानने का तरीका है। योजनाओं और निर्धारित लक्ष्यों में फेर-बदल किया जा सकता है। मामूली बातों पर एक दम कोई निर्णय नहीं किया जाता। रिकार्ड से तथ्यों की जानकारी प्राप्त करके उसका विश्लेषण और अध्ययन मौजूदा हालतों को दृष्टि में रखकर किया जाता है। कार्य का ढंग क्या हो, किस तरह से कार्य किये जायँ, और किस स्तर पर कार्य को चलाया जाय। ये सब बातें परिमापन की की हैं। परिमापन, यह संभव कर देता है कि कर्मचारी किस तरह अपने को अनुशासित करके कार्य के निश्चित स्तर तक पहुँचे हैं।

हमें इन चार मुख्य बातों (तत्वों) के अध्ययन से यह मालूम हो जायगा कि 'मैनेजमेंट' कार्य वास्तव में कई नामों या संज्ञाओं में सम्पन्न होता है, जैसे—निम्न अथवा अन्तरवर्तीय, माध्यमिक और उच्च, संक्षेप में वैज्ञानिक 'मैनेजमेंट' एक निर्णयात्मक कार्य है जिससे उपयोगी नतीजे निकलते हैं।

आयोजना की सफलता में एक महत्वपूर्ण और साहस के उद्देश्यों की प्राप्ति है। इन उद्देश्यों की पूर्ति तभी हो सकती है जब मानवीय श्रम और पदार्थीय श्रोतों का जोखिम के अंतर्गत सन्तुलित ढंग से उपयोग हो।

उचित रीति से श्रोतों के विश्लेषण अंग उपयोग से औद्योगिक साहसों के लिए कई प्रकार के क्षेत्र खुलते हैं। जैसे—साहसों, अनुसंधान, डिजाइन और विकास इंजीनियरिंग, मैनुफैक्चरिंग (उत्पादन) और कर्मचारीय सम्बन्ध आदि हैं। व्यापारिक दृष्टि से बाजार की खरीद-फरोक्त, बाजारों की तलाश वितरण और व्यवस्था है। कुछ ऊँचे स्तर पर 'अर्थ', आयोजना और जन सम्पर्क आदि सभी देखेजा सकते हैं। मैनेजमेंट को 'जनता का प्रतिनिधित्व' कहा जाता है। 'मैनेजमेंट' का अर्थ व्यक्ति के कार्य का सही सामयिक मूल्यांकन है।

इस कार्य के लिए किस योग्यता के व्यक्ति चाहिए उसके इन गुणों पर आधारित है कि यदि उसे साहस की स्थिति और उसके क्षेत्र के अनुसार किसी खास आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक दिशा के अनुसार निरन्तर कार्य करना है और उसे ग्राहकों, शेयर होल्डरों, कर्मचारियों तथा कामगरों, पूर्तिकारों, जनता और सरकार के हितों में संतुलन व सामंजस्य स्थापित करना है। चाहे वह सुपरवाइजर है अथवा एकाउंटेंट, गोदाम मैनेजर है अथवा उत्पादन मैनेजर, आवश्यकता इस बात की है कि मैनेजर के लिए कुशल संगठन कर्त्ता और आकर्षक व्यवहार वाला होना चाहिए। इसी गुण के विकास पर उसकी सफलता, असफलता निर्भर करती है। उसे यह भी जानना चाहिये कि सूचना-सम्पर्क का कार्य किस नीति-रीति से किया जाय। मैनेजर को अपने उद्योग सम्बन्धी योजना बनाना, संगठन करना, सुदृढ़ वातावरण तैयार करना और श्रोतों में सामंजस्य स्थापित करना है। उसे यह जानना चाहिए कि जहाँ वह कार्य कर रहा है उस उद्योग के कार्यों और लक्ष्यों का वे किस प्रकार विवरण प्रस्तुत करते हैं। अन्त में, जैसे वह मैनेजरी के योग्य बनता जाता है उसको तुर्त-फुर्त विवेकपूर्ण निर्णय देने की कठिन और बड़े दायित्वपूर्ण स्थिति में होना चाहिए। जैसे-जैसे उसकी स्थिति व पद में उन्नति होती जाती है, उसे बड़े-बड़े प्रतिनिधित्व करना सीखना होता है। मैनेजरी के गुणों को प्राप्त करने के लिये उसे मैनेजरी के प्रशिक्षण में अवश्य प्रशिक्षित होना चाहिए। हमें खुशी है कि हमारे देश के विभिन्न उद्योगों में अब 'मैनेजरों' (व्यवस्थापकों) के प्रशिक्षण की व्यवस्था में वृद्धि होती जा रही है।

ये प्रशिक्षित व्यवस्थापक (मैनेजर) देश की अर्थव्यवस्था को सुगठित तथा सुसंचालित करने में अवश्य ही कुशल नेतृत्व प्रदान करेंगे जिससे नव-समाज का 'स्थिर आधार शिलाओं' पर नव-निर्माण अवश्यंभावी हो सकेगा।

विज्ञापन के लिए

सम्पदा

सर्वोत्तम

साधन

सम्पदा, अशोक प्रकाशन मन्दिर

२८-११ शक्तिनगर, दिल्ली-६



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# वि दे शी अ र्थ - च र्चा

## आईजन शासन में अमेरिका

गत २० जनवरी को श्री आइनजनहोवर अमीरीकी राष्ट्रपति के पद से मुक्त हो गए हैं। उनके शासन काल की आलोचना और दोनों बहुत हुई हैं। राजनीतिक दृष्टि से उनका शासनकाल कैसा रहा, इसमें मतभेद हो सकता है; किन्तु अमरीका के आर्थिक विकास की दृष्टि से ये आठ वर्ष कम महत्वपूर्ण नहीं है। इस अवधि में राष्ट्र का उत्पादन (पदार्थ निर्माण तथा सेवाएं) २५ प्रतिशत बढ़ गए। और १९५२ के मूल्यों के आधार पर अमरीकी परिवार को आय औस्तिन १५ प्रतिशत बढ़ गई हैं। उद्योग में अपेक्षाकृत अधिक शांति रही है। पहले के आठ वर्षों की अपेक्षा आइजनहोवर शासनकाल में हड़तालों के द्वारा ५० प्रतिशत श्रम-दिवसों की हानि हुई है। २५ लाख भूतपूर्व सैनिकों, २४ लाख संघ सरकार के कर्मचारियों और १२ लाख छोटे धंधों में करने वालों को आर्थिक सुरक्षा दी गई है। छोटे उद्योगों की सहायता के लिए एक नए विभाग की स्थापना की गई है। इसके कारण छोटे उद्योगों को अरबों रुपए का काम मिला है। इसी अवधि में सेंटलारेंस का समुद्री मार्ग बनाया गया है जिसके कारण मध्य अमरीका का समुद्र से सम्बन्ध स्थापित हो गया। ४१ हजार मील लम्बी नई सड़कें बनी अन्न और कपास का उत्पादन २.८ बिलियन डालर से बढ़ाकर ४.५ बिलियन डालर तक पहुँच गया। देहात के आर्थिक विकास और सिंचाई आदि में भी पर्याप्त उन्नति की गई। अमरीकी इतिहास में किन्हीं भी आठ वर्षों की अवधि से इस अवधि में अधिक मकान—९० लाख से ऊपर बनाए गए और इन सब सफलताओं के साथ ही हमें यह नहीं भूलजाना चाहिए कि अमरीका ने १९५४ ई० में करों में सबसे भारी कटौती (९.४ बिलियन डालर) की थी।

## ब्रिटेन का सहयोग

१० राष्ट्रकुलीय सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत १९५८ से अब तक भारत को ब्रिटेन से ७ सहायता कार्यक्रमों में इस प्रकार ऋण मिला है।

| | (दस लाख पौंड में) | (करोड़ रुपये में) |
|---|---|---|
| १९५८ में दुर्गापुर इस्पात कारखाने के लिये | १५ | २० |
| १९५८ साधारण आयात के लिये | १८.५ | २८ |
| १९५९ असम में तेल पाइप लाईन के लिये | २ | ४ |
| १९५९ साधारण आयात के लिये | १९ | २५.३३ |
| १९६० साधारण आयात के लिये | १० | १३.३३ |
| १९६० साधारण आयात के लिये | ५ | ६.६७ |
| १९६० तृतीय योजना में प्रारम्भिक सहायता के तौर पर | ३० | ४० |

इन ऋणों के अतिरिक्त २९.३४ करोड़ रुपये ब्रिटिश ब्रिटिश अफसरों की पेंशन वास्ते और बाकी १९५१-६० के तकनीकी सहायता के अन्तर्गत दिया जा चुका है। ●●

## रूस में कोयले का उत्पादन

जार के समय में रूस में कोयला प्रायः दोनबस तथा यूराल में खोदा जाता था, उस समय संसार में कोयला उत्पादन में रूस का छठा स्थान था। इस समय सोवियट संघ में सन् १९१३ की अपेक्षा १८ गुना अधिक कोयला पैदा नहीं किया जाता है तथा कोयला उत्पादन में सोवियट संघ में सन् १९१३ की अपेक्षा १८ गुना अधिक कोयला पैदा किया जाता है तथा कोयला उत्पादन में सोवियट संघ का संसार में पहला स्थान है। अक्टूबर क्रांति के बाद भूतत्वात्मक पर्यवेक्षण तथा शोध के फलस्वरूप कोयले के संचय में ३५ गुना से अधिक वृद्धि हो गई है। कुजनेत्सक, कारागन्दा तथा पेघोरा के कोयला क्षेत्रों को इतना अधिक विकसित कर लिया गया है कि अब देश की कुल आवश्यकता का लगभग २५ प्रतिशत काला ईन्धन संभरण कर रहे हैं। दोनेत्स तथा मास्को का कोयले की घाटियों ने अपनी सीमा का काफी विस्तार कर लिया है। पूर्व में जहां नयी खानों का पता चला है, वहीं बड़ी-बड़ी खुली हुई खानें खोदी गयीं है जो देश को सस्ता कोयला देती है।

कोयला खान उद्योग में काम की दशा में सुधार करने तथा उत्पादकता को ऊपर उठाने के लिए बड़े पैमाने पर काम किया गया है।

बराबर तेज रफ्तार से विकास करते हुए राष्ट्रीय अर्थतन्त्र में चालू सप्त वर्षीय योजना के काल में कोयले के


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारे उद्योग

## उद्योग खाद कारखाना

अब यह करीब-करीब निश्चित-सा है कि राजस्थान के हनुमान गढ़ में खाद का एक नया कारखाना बनाया जाएगा। इस कारखाने के लिए अनेक उद्योगपतियों ने अपनी-अपनी योजनाएं सरकार के विचारार्थ प्रस्तुत की हैं और लाइसेंस के लिए आवेदन पेश किए हैं।

बम्बई के 'व्यापार' के संवाददाता के अनुसार श्री खताऊ ने २६ करोड़ रुपए की एक योजना उपस्थित की है। श्री एस. पी. जैन और श्री जालान ने भी अपनी योजनाएं प्रस्तुत की है। एक प्रस्ताव में पाकिस्तान को प्राकृतिक गैस का आयात करके उसका प्रयोग करने की योजना है। दूसरी योजना में लिगनाइट के प्रयोग का प्रस्ताव है। एक प्रस्ताव में जैसलमेर के प्रदेश से मिलने वाली गैस के प्रयोग का भी प्रस्ताव है। जब तक यह गैस आवश्यक मात्रा में न निकले, तब तक पाकिस्तान से वह गैस ली जाएगी जो स्टैण्डर्ड वैकुम आयल कम्पनी वहां माड़ी क्षेत्र से निकालने वाली है।

यह भी निश्चित है कि सभी आवेदक कम्पनियां अमरीका या किसी अन्य देश का सहयोग प्राप्त करना चाहती हैं।

मध्यप्रदेश में भी खाद का कारखाना खोलने के लिए दो कम्पनियों ने आवेदन-पत्र दिए हैं।

## छोटा लोह उद्योग निजी क्षेत्र में ?

तीसरी पंचवर्षीय योजना का जो अंतिम रूप अब तक सामने आया है—उसके अनुसार सरकारी क्षेत्र में ८० अरब रुपए का लक्ष्य रखा गया है और निजी क्षेत्र में ४० अरब रुपए का। पिछले दस वर्षों के अनुभव ने यह बताया है कि यदि निजी उद्योग को अधिक सुविधा दी जाए तो वह औद्योगिक विकास में आशा के अनुरूप सहयोग दे सकता है। इस अनुभव से लाभ उठाकर सरकार ने अपनी औद्योकिक नीति को कुछ लचीला बना दिया है। इसीलिए सरकार इस बात पर भी गम्भीर विचार कर रही है कि तीसरी योजना में भी निजी उद्योगों को यह सुविधा दी जाए कि वह देश के आर्थिक विकास में अधिक सहयोग दे सके। किन्तु विदेशी मुद्रा के साधन सीमित है और सरकार अपनी योजनाओं को बलिदान करके निजी उद्योगों को सुविधाएं नहीं दे सकती, इसलिए उसने निजी क्षेत्र को यह अनुमति दे दी है कि यदि वह विदेशी मुद्रा पर बिना बोझ डाले आन्तरिक साधनों से अथवा निजी प्रयत्न से कोई व्यवस्था कर सके तो सरकार ४० अरब रुपए के लक्ष्य से बढ़ने पर आपत्ति नहीं करेगी। इसी दिशा में यह भी मालूम हुआ है कि यदि निजी क्षेत्र में लोहे के छोटे-छोटे कारखाने खुलें तो सरकार घोषित औद्योगिक नीति का आश्रय लेकर उन्हें रोकेगी नहीं। करीब एक लाख टन लोहा तैयार करने वाले कारखाने उद्योगपति खोल सकेंगे। घोषित नीति के अनुसार लौह-उद्योग के कारखाने केवल सरकारी क्षेत्र में ही खुल सकते है। इस सुविधा का लाभ उठा कर विदेशी संस्थानों के सहयोग से नए उद्योग स्थापित किये जायंगे।

---

उत्पादन में २१ से २३ प्रतिशत तक की वृद्धि होगी। १९६५ में सोवियट संघ में ६० से ६१.१ करोड़ टन तक कोयला पैदा होने लगेगा। पूर्वी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक कोयले का उत्पादन होगा। उत्पादन में लगभग ५० प्रतिशत वृद्धि का अनुमान है।

सप्तवर्षीय योजना काल में खानों में समस्त प्राविधिक प्रक्रियाओं का विस्तृत रूप से यंत्रीकरण कर दिया जायगा। जिससे कोयले की ढेरियां बनाने के यांत्रिक स्तर में ६५ से ७० प्रतिशत तक वृद्धि हो जाय।

१९५९ में कोयले की उत्पादन योजना की ४३ लाख टन से अतिपूर्ति की गयी। सोवियट संघ ने संयुक्त राज्य अमेरिका की अपेक्षा ११७० लाख टन अधिक कोयला पैदा किया। इस समय सोवियट संघ, इंग्लैण्ड, फ्रांस और पश्चिम जर्मनी के सम्मिलित उत्पादन से अधिक कोयला पैदा करता है।

सम्पदा के ग्राहक बनकर लाभ उठाइए।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं

## ★ पंजाब नेशनल बैंक की आय में वृद्धि

पंजाब नेशनल बैंक लिमिटेड ने ३१ दिसम्बर १९६० को समाप्त वर्ष में संतोषजनक कार्यपरिणाम प्रदर्शित किया। कर्मचारी ग्रेच्युटी कोष और आकस्मिक खर्चों के लिए रु० १२.७७ लाख की व्यवस्था करने के बाद बैंक को आलोच्य वर्ष में रु० १२१.१८ लाख का लाभ हुआ जिसमें पूर्व वर्ष की बचत के रु० ३.१९ लाख शामिल हैं। १९५९ में लाभ की रकम रु० ८८.६९ लाख थी जिसमें पिछले वर्ष की बचत के रु० ४.४९ लाख शामिल थे। कर लगने योग्य रु० १ प्रति शेयर के अंतरिम लाभांश देने में रु० १२.५० लाख खर्च हुए और इस प्रकार निर्धारण के लिए रु० १०८.६८ लाख की रकम बची। संचालकों ने वितरण की निम्न-व्यवस्था की है :

| | |
|---|---|
| आय कर की राशि | ५३ लाख रुपये |
| सुरक्षित कोष | ११ लाख रुपये |
| कर्मचारियों को बोनस | २७ लाख रुपये |
| दान कोष | १ लाख |

संचालकों ने कर लगने योग्य रु० १ प्रति शेयर के अंतिम लाभांश का सिफारिश की और इस प्रकार कुल वितरण २० प्रतिशत हो गया जिस पर कर देना पड़ेगा अंतिम लाभांश देने में रु० १२.५० लाख का खर्च बैठेगा। बचत रु० ४.१८ लाख की रही जो कि आगामी वर्ष के हिसाब में डाल दी गई।

३१ दिसम्बर १९६० को भारत पाकिस्तान और बर्मा में बैंक के ४०८ कार्यालय थे जबकि पूर्व वर्ष में कार्यालयों की संख्या ३८३ थी।

## अन्न का निर्बाध व्यापार

खाद्यान्न की स्थिति अब सन्तोषजनक हो गयी है और केन्द्रीय सरकार अब सम्पूर्ण देश को निकट भविष्य में अन्न के यातायात के लिए एक ही क्षेत्र घोषित करने जा रही है। अच्छी फसल तथा विदेशों से अन्न के पर्याप्त आयात के फलस्वरूप अब ऐसा करना संभव हो गया है। देश को तीन खाद्यान्न क्षेत्रों में विभाजित करने की भी आवश्यकता अब प्रतीत नहीं होती। अन्न के निर्बाध व्यापार से अन्न के भाव समस्त देश में एकरूप और सुस्थिर हो सकते हैं। किन्तु इसमें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि प्रकृति सदा ही उदार नहीं रहती। अनावृष्टि, अतिवृष्टि, बाढ़ आदि के रूप में वह अन्न की स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इसलिए अन्न के उत्पादन में हमारे प्रयत्नों में शिथिलता नहीं आनी चाहिए।

## रूमानिया से व्यापारिक समझौता

गत २२ दिसम्बर १९६१ भारत और रूमानिया के बीच एक व्यापारिक करार पर हस्ताक्षर हुए। इस समझौते के अन्तर्गत रूमानिया भारत को पेटोलियम का सामान, तेल की खुदाई की मशीनें तथा औजार आदि और कारखानों की मशीनें देगा। सामान खरीदने और बेचने के सभी वस्तुओं का दाम तय किया जाएगा।

## उत्तरप्रदेश की पहली आधुनिकी 'क्रीमरी'

राज्य सरकार ने केन्द्रीय डेरी फार्म, अलीगढ़ में एक 'आधुनिक 'क्रीमरी' स्थापित करने का निश्चय किया है। भारत सरकार ढाई लाख रुपये का अनुदान देगी। इसके समस्त उपकरण संयुक्त राज्य अमेरिका के टैक्नीकल कोआ-परेशन मिशन द्वारा उपहार स्वरूप प्रदान किए गए हैं।

इस 'क्रीमर' द्वारा जो राज्य में अपने ढंग की पहली होगी। प्रति दिन घी और मक्खन तैयार करने के लिए ५० मन क्रीम का उपयोग किया जायगा। इसके लिए गांवों से तथा स्थानीय ग्लेक्सो बेबी फूड फैक्टरी से, जो प्रतिदिन ३०० मन मन दूध का उपयोग करती है, क्रीम की व्यवस्था की जायगी।

## रासायनिक खाद के चार कारखाने

आन्ध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश और राजस्थान में निजी क्षेत्रों के भीतर रासायनिक खाद के जो चार कारखाने बैठाये जाने वाले हैं उनकी पूंजी में विख्यात विदेशी प्रतिष्ठानों का हिस्सा रखा जायगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक भारतीय उद्योगानुरागियों ने उक्त कारखाने बैठाने के बारे में केन्द्रीय सरकार के पास अपने आवेदन भेजे हैं। ये अमरीकी, इटालियन और जर्मन प्रतिष्ठानों के सहयोग से कारखाना बैठाना चाहते हैं।

इधर एक प्रस्ताव उत्तरप्रदेश के भीतर गोरखपुर में रासायनिक कारखाना बैठाने का है। यह कारखाना सरकारी क्षेत्र में बैठेगा। एक एतदर्थ केन्द्रीय सरकार ने जापान से सहायता की अकांक्षा की है। जापान ने आसाम के नहोर-काटिया स्थान में कारखाना बैठाने की अभिरुचि प्रकट की थी। पर, ऋण मिलने में कुछ विलम्ब के कारण नहोर-कटिया योजना ब्रिटिश ऋण से आगे चल पड़ी है। जापान से अब पूछा गया है कि क्या वह गोरखपुर में कारखाना बैठाना पसन्द करेगा।

भारत सरकार ने आसाम में एक खाद संयंत्र स्थापित करने के लिए १००,०००,००० स्टर्लिंग में उधार देने विषयक ब्रिटिश सरकार के एक प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है।

इस कारखाने पर २००,०००,००० खर्च कूता गया है। प्रति वर्ष इससे खाद का उत्पादन लगभग ५०,००० टन हुआ करेगा।

—प्रीमियर आटोमोबाइल और हिन्द मोटर्स ने डिजेल इंजन बनाने की योजनायें बनाई हैं, जिन पर सरकार सहानुभूतिपूर्वक विचार कर रही है।

—बम्बई की प्रसिद्ध बीमा कम्पनी युनिवर्सल फायर जनरल इन्श्योरेन्स कम्पनी के हिस्सों का एक बड़ा भाग (२८,००० शेयर) श्री शान्तिप्रसाद जैन और उनसे सम्बद्ध सम्बन्धियों व व्यक्तियों ने खरीद लिया। कम्पनियों के कुल शेयर ६५७८७ हैं। उसके प्रमुख श्री पी० यू० पटेल अब भी प्रमुख रहेंगे।

—तांबे का पूरा उत्पादन बिहार के सिंहभूम जिले की खानों से हुआ। इस अवधि में ८ हजार १६१ टन शुद्ध तांबा तैयार हुआ, जबकि १९५९ की इसी अवधि में ७ हजार ३०३ टन तांबा तैयार हुआ था।

पंजाब के कुछ व्यापारी यह समझकर चावल खरीद रहे हैं कि उत्तरी चावल क्षेत्र में, कुछ और क्षेत्र शामिल किये जाएंगे और इसके बाद वे इन क्षेत्रों को पंजाब से चावल भेज सकेंगे। केन्द्रीय खाद्य और कृषि मंत्रालय (खाद्य विभाग) ने एक विज्ञप्ति द्वारा सूचित किया है कि उत्तरी चावल क्षेत्र में कोई क्षेत्र मिलाने या निकालने का फिलहाल कोई इरादा नहीं है।

—पोलिश गणराज्य की विदेशी व्यापार संस्था-सेकोप (CEKOD) की ओर से श्री एस० दोब्रोवोल्सकी, संचालक लघु उद्योग विभाग के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल शीघ्र भारत पधार रहा है। यह प्रतिनिधि मंडल इस बात की जानकारी एकत्र करेगी कि कहां तक पोलैण्ड भारत के लघु उद्योगों के विकास में मशीनरी आदि तकनीकी सहायता दे कर सहायता कर सकता है।

## सुभाषित रत्नमाला पर छः सम्मतियां

सभी सुभाषित मानव के चरित्र निर्माण में सहायक हो सकते हैं क्योंकि ये मानव जीवन के प्राचीन अनुभवों के सार हैं।

—नवभारत टाइम्स, बम्बई

पुस्तक विद्यार्थियों के अतिरिक्त अन्य वर्गों के लिए भी उपयोगी है।

—नवभारत टाइम्स, दिल्ली

पुस्तक जहां छोटे बच्चों के लिए शिक्षाप्रद है, वहां बड़ी आयु के व्यक्तियों के लिए भी उतनी ही उपादेय है।

—श्री प्रकाशवीर शास्त्री, एम. पी.

पुस्तक अतीव ही लाभदायक है। भाषा सरल व रोचक है।

—श्री खेमसिंह किन्नर

सैकड़ों वर्षों का निचोड़ इन सुभाषितों म मिलेगा।

—साहित्य सन्देश, आ।

समाज की अवचेतनावस्था को जागृतकर उत्थान की ओर प्रेरित करने के निमित्त 'सुभाषित रत्न माला' का प्रकाशन एक सुन्दर प्रयास है।

—अणुव्रत (पाक्षिक), कलकत्ता



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


स्वास्थ्य सम्बन्धी हिन्दी का प्रतिनिधि मासिक

## स्वस्थ जीवन

प्रधान सम्पादक : राधाकृष्ण नेवटिया

प्रबन्ध सम्पादक : धर्मचन्द सरावगी

• स्वास्थ्य-सम्बन्धी कहानी, कविता, संस्मरण, डायरी, रिपोर्ताज, ललित लेख, नारी लोक, बाल जगत, समीक्षा, आपका पृष्ठ आदि रोचक स्तम्भ ।

• लेखक बन्धु अपनी नयी कृतियाँ भेजकर हमें सहयोग दें—विज्ञापक बन्धु विज्ञापन दे कर लाभ उठावें—एजेण्ट इस बहुचर्चित पत्र की एजेन्सी लेना न भूलें ।

एक प्रति : पचास नए पैसे मात्र

वार्षिक : पांच रुपए मात्र

कार्यालय : जैन हाउस ८/१ एस्प्लेनेड स्ट्रीट कलकत्ता—१

भूदान ग्रामदान व सर्वोदय का संदेशवाहक



## 'भारत व्यापार पत्रिका' की विशेषताएँ

पृष्ठ सं. १०० वार्षिक चंदा ८) साधारण अंक ७५न. पै.

- उद्योगपतियों एवं व्यापारियों के लिए उपयोगी सामग्री
- व्यापारिक भविष्य वाणी
- एक विज्ञापन मुफ्त छापने की योजना
- अर्थशास्त्र के छात्रों के लिए अनेक जानकारी
- मनोरंजन के लिए आकर्षक कहानी, गंगा की लहरें स्तम्भ में व्यंग विनोद तथा सामयिक कार्टून
- सम्पादक की डाक में आपके प्रश्नोत्तर
- इसके अलावा अनेकों स्थाई स्तम्भ

अगर आपने अब तक पत्रिका नहीं देखी है तो आज ही इस विज्ञापन की कटिंग के साथ २५ नये पैसे का पोस्टेज भेजकर नमूना मंगाइये । विज्ञापन दर तथा जानकारी के लिए लिखें—

व्यवस्थापक, भारत व्यापार पत्रिका (मासिक)
राजा दरवाजा, वाराणसी

तार—केनाको पो० बॉ० नं० ४६ फोन—३३४३



## ग्रा म रा ज

(मास में तीन बार प्रकाशित)

सम्पादक :— श्रीगोकुलभाई भट्ट

"ग्रामराज बहुत ही शानदार और बहुत ही सुन्दर पत्र निकल रहा है । सब तरह की जानकारी इसमें रहती है । राजस्थान के हर शिक्षित भाई-बहन के हाथ में यह पत्रिका होनी चाहिये

—विनोबा

वार्षिक चन्दा तीन रुपया

कार्यालय का पता :—ग्रामराज, किशोर निवास, त्रिपोलिया, जयपुर



सबसे सस्ता सचित्र हिन्दी मासिक

## जागृति

जिसे राष्ट्र भाषा के सभी प्रमुख लेखकों, कवियों और कहानीकारों का सहयोग प्राप्त है ।

उत्प्रेरक कविताएं, ज्ञानवर्धक लेख सांस्कृतिक निबन्ध, रोचक कहानियां, बाल संसार, साहित्य आगे बढ़ता है आदि स्तंभ

तिरंगा आवरण, अनेकों इकरंगे चित्र
४८ से ५६ पृष्ठ की सम्पूर्ण छपाई आर्ट पेपर पर
इस पर भी मूल्य केवल २५ नए पैसे

एजेन्टों को ५ से १०० प्रतियों पर २५ प्रतिशत और इससे ज्यादा पर ३३⅓ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है । डाक खर्च प्रकाशकों के जिम्मे । ऐजेंट नमूने की प्रति के लिए आज ही लिखें :

व्यवस्थापक, 'जागृति' हिन्दी लोक सम्पर्क विभाग, पंजाब, चंडीगढ़


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा के अनूठे उपहार : ११ विशेषांक

'सम्पदा' का प्रत्येक अंक ज्ञानवर्धक होता है, पर विशेषांक तो अपने विषय के विश्व-कोष ही होते हैं। प्रोफेसर श्री ओमप्रकाश तोषनीवाल, एम० कॉम० कहते हैं—'सम्पदा' के विशेषांक तो हमारे लिए गीता व बाइबिल के समान हैं।'

## १-योजना अंक

( प्रथम योजना सम्बन्धी अपूर्व सामग्री )

एक प्रशंसनीय प्रयत्न। यह अंक पंचवर्षीय योजना को समझने की कुंजी है।

मूल्य : १.०० —जीवन साहित्य

## २-भूमि-सुधार अंक

( भूमि समस्याओं का अद्भुत विवेचन )

इस विषय में अपने ढंग का अद्वितीय प्रकाशन है।

मूल्य : १.०० (अप्राप्य) —प्रताप

## ३-वस्त्र-उद्योग अंक

( भारत के प्रमुख उद्योग का परिचय और समस्याएं )

इस अंक के पीछे काफी श्रम किया गया है। सम्पादक को बधाई।

मूल्य : १.२५ —श्री घनश्यामदास बिड़ला

## ४-चम्बल अंक

( चम्बल योजना का विस्तृत परिचय )

अंक को सभी दृष्टि से रोचक बनाया गया है।

मूल्य : ००.७५ (अप्राप्य) —श्री मिश्रीलाल गंगवाल

## ५-मजदूर अंक

(मजदूर समस्या के विविध पहलुओं का विवेचन )

लेख बहुत रोचक व उपयोगी हैं। ...मानव की नैतिकता पर भी जोर दिया गया है जो देश की संस्कृति व परम्पराओं के अनुकूल है।

मूल्य : १.५० —श्री खंडूभाई देसाई

## ६-उद्योग अंक

( प्रमुख उद्योगों के विकास का व्यापक परिचय)

भारतीय उद्योग और व्यवसाय की मूल समस्याओं पर गम्भीर तथा उपयोगी लेखों का अच्छा संग्रह है।

मूल्य : १.२५ —अजन्ता

## ७-राष्ट्रीय-विकास अंक

( द्वितीय पंचवर्षीय योजना का अध्ययन )

ज्ञानवर्धन के लिए ऐसी सामग्री प्रस्तुत करने वाले अंक का सर्वत्र स्वागत होगा।

मूल्य : १.२५ —श्री मोहनलाल सुखाड़िया

## ८-बैंक अंक

( भारतीय बैंकों की समस्याओं का निरूपण )

Here is one more 'Sampada' Special worth treasuring. (अप्राप्य)

मूल्य : १.२५ —Organiser

## ९-समाजवाद अंक

( समाजवाद के विभिन्न पहलुओं पर विचार )

सम्पदा का समाजवाद अंक मिला। यह काफी अच्छा और पठनीय है।

मूल्य : १.५० —श्री श्रीमन्नारायण

## १०-राष्ट्र-प्रगति अंक

( द्वितीय योजनाकाल की समस्याओं का विवेचन)

यह अति लाभदायक तथा उपयोगी है। लिखने का ढंग बहुत सुन्दर और रोचक है।

मूल्य : १.५० —श्री अमरनाथ विद्यालंकार

## ११-सहकारी कृषि अंक

देश के अत्यन्त विवादग्रस्त प्रश्न पर विविध समन्वयात्मक दृष्टिकोण। —मू० १.५०

रजिस्ट्री से सब प्राप्य अंक मंगाने के लिए रु० १०.५० भेजिये।

**सम्पदा • १८-११ शक्तिनगर • दिल्ली-६**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आर्थिक राजनैतिक अनुसंधान विभाग का साप्ताहिक पत्र

# आर्थिक समीक्षा

प्रधान सम्पादक : श्री सादिकअली

सम्पादक : श्री सुनील गुह

- हिन्दी में अनूठा प्रयास
- आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख
- आर्थिक सूचनाओं से ओतप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक, पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक।

वार्षिक मूल्य : ५) रु० एक प्रति २२ नये पैसे

लिखें—व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

**अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी,**

७, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली



# भारत की औद्योगिक नीति

भारत के आर्थिक विकास और औद्योगिक उन्नति का सर्वाधिक महत्व है। पर भारत सरकार की उद्योग नीति क्या है—सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के लिए किस तरह दोनों का विभाजन किया गया है, आदि बातें समझने के लिए प्रो० रोशनलाल द्वारा लिखित—

**भारत की औद्योगिक नीति**

को पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। इसमें भारत के औद्योगिक विकास के इतिहास का भी योग्य लेखक ने विद्यार्थियों की दृष्टि से उपयोगी और सुन्दर परिचय दिया है।

६२ न. पै. के टिकट भेजने पर पुस्तक अण्डर पोस्टल सर्टिफिकेट भेजी जायगी।

**मैनेजर—अशोक प्रकाशन मन्दिर,**

**२८/११ शक्ति नगर, दिल्ली-६**



# "राष्ट्र-भारती"

सम्पादक—मोहनलाल भट्ट, हृषीकेश शर्मा

वार्षिक चन्दा मनीआर्डर से ६) रु;

नमूने की प्रति ६२ नये पैसे

इसमें आपको लब्धप्रतिष्ठ-विद्वान साहित्यकारों के ज्ञान-पोषक और मनोरंजक अच्छे-अच्छे लेख, कविताएं, कहानियां एकांकी, रेखाचित्र, शब्दचित्र आदि रचनायें पढ़ने को मिलेंगी।

इसमें संस्कृत, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं की तथा अंग्रेजी, रशियन आदि विदेशी भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं के सुन्दर हिन्दी अनुवाद भी रहते हैं।

आज ही मनीआर्डर द्वारा ६) भेजकर ग्राहक बन जाइये।

रियायत—स्कूल-कालेजों, सार्वजनिक पुस्तकालयों तथा वाचनालयों को केवल ५) वार्षिक चन्दे में मिलेगी।

पत्रव्यवहार का पता—

**व्यवस्थापक—"राष्ट्रभारती"**

**हिन्दी नगर, वर्धा**

**(राष्ट्रभाषा प्रचार समिति)**



# उद्योग-व्यापार पत्रिका

देश में उद्योग और व्यापार को आगे बढ़ाने के लिये क्या हो रहा है और आप इससे किस तरह फायदा उठा सकते हैं? देश में क्या-क्या चीजें और कितने परिमाण में कहाँ-कहाँ बन रही हैं और आप क्या बना कर अच्छी कमाई कर सकते हैं? तरह-तरह के व्यापार की देश-विदेश में क्या दशा है? पंच-वर्षीय योजना से हमारी क्या उन्नति हो रही है? ये सभी प्रश्न ऐसे हैं, जिनके उत्तर आपको अवश्य जानने चाहिएँ, और इन सबकी जानकारी पाने का श्रेष्ठ साधन है—उद्योग व्यापार पत्रिका। इसलिये आप ६ रु० भेजकर साल भर के लिये आज ही ग्राहक बन जाइये। नमूना पत्र लिखकर मंगाइये।

एजेन्टों को भरपूर कमीशन।

पत्रिका विज्ञापन देने का अच्छा साधन है।

**वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,**

**भारत सरकार, नई दिल्ली**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


संचालक पंचायत राज विभाग उ० प्र०
की
विज्ञप्ति संख्या ४।५५८० : २७।३३।५३, दिनांक १५
द्वारा
पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत

## सुन्दर पुस्तकें

| | | रु० | आ० |
|---|---|---|---|
| वेद सार | प्रो० विश्वबन्धु | १ | ८ |
| प्रभु का प्यारा कौन ? (२) भाग | | | |
| सच्चा सन्त | | | ३ |
| सिद्ध साधक कृष्ण | | | ३ |
| जीते जी ही मोक्ष | | | ३ |
| आदर्श कर्मयोग | | | ३ |
| विश्व-शांन्ति के पथ पर | | | १ |
| भारतीय संस्कृति | प्रो० चारुदेव | | ३ |
| बच्चों की देखभाल | प्रिंसिपल बहादुरमल | १ | १२ |
| हमारे बच्चे | श्री सन्तराम बी. ए. | ३ | १३ |
| हमारा समाज | | ६ | |
| व्यावहारिक ज्ञान | | २ | १२ |
| फलाहार | | १ | ४० |
| रस-धारा | | ० | १४ |
| देश-देशान्तर की कहानियां | | १ | |
| नये युग की कहानियां | | १ | १२ |
| गल्प मंजुल | डा० रघुबरदयाल | १ | |
| विशालभारत का इतिहास | प्रो० वेदव्यास | ३ | ८ |

१० प्रतिशत कमीशन और ५० रु० से ऊपर के आदेशों पर १५ प्रतिशत कमीशग।

विश्वेश्वरानन्द पुस्तक भंडार
साधु आश्रम, होशियारपुर, पंजाब



# सुभाषित रत्नमाला

## दूसरा संस्करण

सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

७ वर्ष पूर्व इस पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ था और हाथों-हाथ बिक गया था। कई वर्षों से पुस्तक अप्राप्य थी और इसकी माँग निरंतर बढ़ रही थी! अब परिवर्धित संस्करण आकर्षक रूप-सज्जा में प्रकाशित हुआ है इस संग्रह में—

- वैदिक एवं संस्कृत साहित्य के अगाध भण्डार से चुने गये ऐसे सरल-सुन्दर श्लोक और मंत्र, जिन्हें छोटे बच्चे भी सुविधापूर्वक कण्ठस्थ कर सकते हैं।
- श्लोकों और मन्त्रों का सरल-सुबोध हिन्दी में अर्थ।
- पुस्तक के अन्त में अर्थ-सहित कुछ ऐसी सूक्तियाँ, जिनके उपयोग विद्यार्थी अपने निबन्धों में कर सकें।
- आपके बच्चों के स्वस्थ मानसिक विकास और उनमें नैतिक चेतना जगाने के लिए अनिवार्य।
- उपहार और पुरस्कार में देने के लिए बहुत उपयुक्त।

मूल्य एक प्रति १.१५ रु०। 'सम्पदा' के ग्राहकों से १ रु० प्राप्त होने पर 'बुक पोस्ड अन्डर पोस्टेल सर्टिफिकेट' द्वारा भेजी जाएगी।

## अशोक प्रकाशन मन्दिर

२८/११, शक्तिनगर,
दिल्ली-६


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# डालमिया

## काश्म Stoneware एवं मृच्छिल्प Porcelain निर्मितियाँ (Products)

काश्म-नाल Stoneware Pipes
अधोभूमि जलोत्सारण के लिए

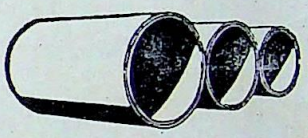

वज्रचूर्ण-अयस्संघा-नाल
( R. C. C. Spun Pipes )
पुलियाओं, जल-प्रदाय
और जलोत्सारण के लिए

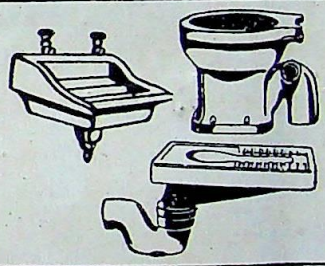

मृत्सा ( Porcelain )
आरोग्य पात्र ( Sanitary Wares )
भारतीय और यूरोपीय शौच-कुण्ड
( Water Closets )
धावन पात्री ( Wash Basins )
मूत्र-कुण्ड ( Urinals ) इत्यादि

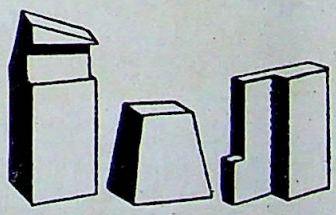

ऊष्मसह ( Refractories )
समस्त औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए

पोर्टलैण्ड सिमेंट
सामान्य निर्माण के लिये

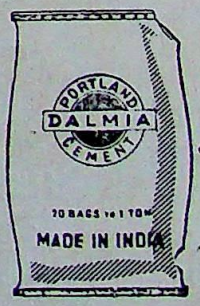


डालमिया सिमेंट ( भारत ) लिमिटेड
डालमियापुरम् ( तिरुचिरापल्ली )

DC-H-0

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आप निश्चिंत रह सकते हैं

जब आप अपना माल... द्वारा भेजते हैं।

**RTS**

**शीघ्र यातायात सेवा**

INDIAN RAILWAYS

मध्य रेलवे

## आप विश्वास रखें आपका माल समय पर पहुंचेगा

सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (नीलिन मॉल अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक रुपया

# सम्पदा

RUPEE

1961

GURUKULA KANGRI LIBRARY

24-2-61

बजट परिशिष्ट
सहित

मार्च १९६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अपने शहर को विपत्ति से बचाया

१९५९ की पहली अक्टूबर को जब भयंकर आँधी-पानी ने जमशेदपुर में कुहराम मचा रखा था तो अपने शहर को विपत्ति से बचाने के लिए टाटा स्टील के मुट्ठीभर कामगार सुवर्णरेखा के किनारे उस तालाब पर बड़ी तेजी से पहुँच गए जहाँ से शहर में पानी आता है।

आँधी से एक नाव खुल गई थी जो नदी और तालाब के बीचवाले बाँध के बिल्कुल किनारे आ गई थी। भयंकर खतरा था कि मचलते बल खाते पानी के जबर्दस्त हचकोलों से नाव यों टकरायेगी कि पुल पर से गुजरते हुए पानी के बड़े नल को चकनाचूर कर देगी।

इस सत्यानाश से बचने का जब कोई रास्ता नहीं दीख रहा था तो २७ वर्ष का जवान शमसुद्दीन खान उस फुफकारते पानी में कूद पड़ा। जान पर खेल वह उस नाव के पास पहुँचा और जैसे-तैसे उसे वहाँ से हटाया। साथियों ने उस बहादुर की बाँह पूजी और टाटा स्टील ने अपने एक भूतपूर्व कर्मचारी के उस सपूत को ५०० रु० इनाम के साथ पक्की नौकरी भी दे दी।

कर्तव्य पालन के लिए जान की बाजी लगा देना ऐसी परम्परा है जिसे शमसुद्दीन जैसे बहादुर कामगार जमशेदपुर में कायम कर रहे हैं जहाँ उद्योग सिर्फ रोजी-रोटी का जरिया नहीं, बल्कि जिन्दगी का रास्ता है।

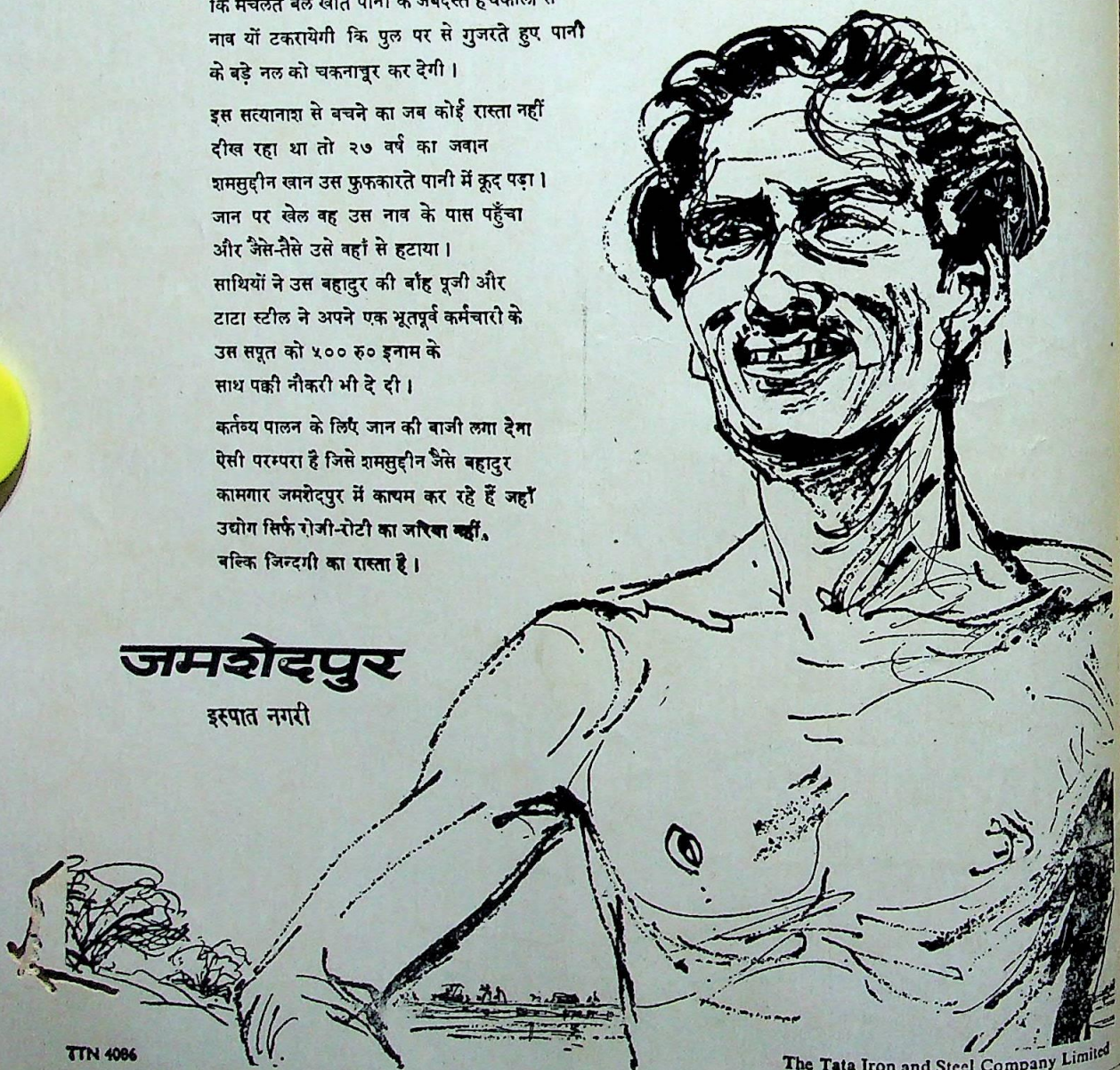

## जमशेदपुर

इस्पात नगरी

TTN 4086

The Tata Iron and Steel Company Limited

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

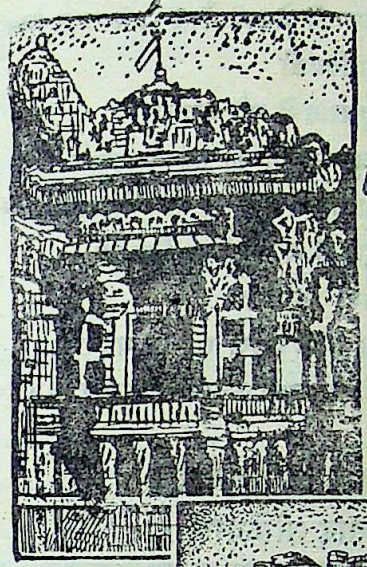

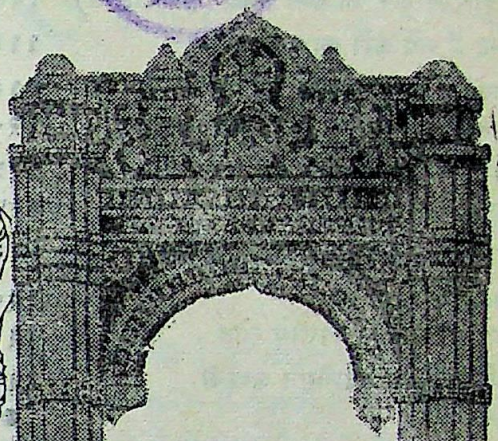

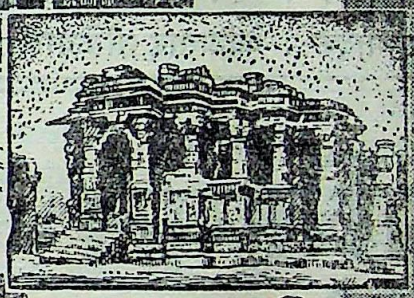

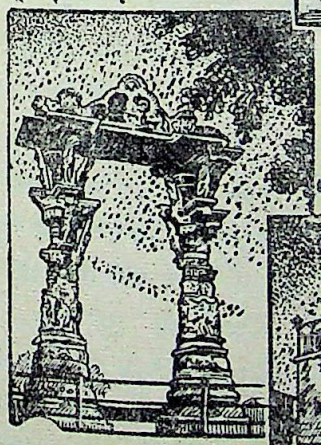

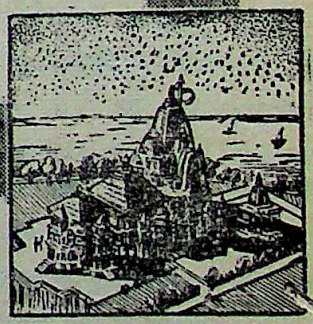

**गुजरात का आह्वान**

अपने गीर शेरों, कलापूर्ण सोमनाथ मंदिर, सोने चांदी की कलापूर्ण जरी और विशिष्ट ऐतिहासिक स्मारकों के लिए प्रसिद्ध गुजरात यात्रियों को भारत के इस नये राज्य में हार्दिक निमंत्रण देता है।

जानकारी के लिए लिखें :—
सूचना संचालक
गुजरात प्रशासन।
सचिवालय, अहमदाबाद-१५

DIRINF · T. (1)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


१. नये बजट की मूल दृष्टि १०९
२. सम्पादकीय टिप्पणियां १११
३. केन्द्रीय सरकार का नया बजट (एक दृष्टि में) ११५
४. बजट में नये करों का प्रस्ताव ११६
५. राज्यों में भूमि सुधारों की प्रगति ११९
६. भारतीय अर्थव्यवस्था में विदेशी सहायता १२०
७. तीसरी योजना के पहले साल का बजट १२३
८. करदान की क्षमता १२७
९. देहातों से नये करों की संभावना १२९
१०. नमक कर के दो पहलू १३०
११. राज्य सरकारों के वित्तीय स्रोत १३१
१२. सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी १३४
१३. नये वर्ष का रेलवे बजट १३६
१४. भारतीय राज्यों के बजट १३९
१५. आपकी जेब से पैसा किस तरह निकलता है ? १४०
१६. सांख्यिकी १४२
१७. गुजरात में नये उद्योग
जूट उद्योग की नई समस्यायें १४४
१८. आज की सरकारी योजनाएं और रचनात्मक कार्य १४६
१९. देश में मशीनों का निर्माण १४७
२०. नया साहित्य १४८
२१. मास की प्रमुख आर्थिक घटनायें १४९
२२. विषय-सूची जनवरी-दिसम्बर १९६० १५२


• • •


सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

सहायक सम्पादक : देवीप्रसाद नौटियाल



# व्यक्तिगत सेवा

दीर्घकाल के अपने अनुभवों से प्राप्त विशेष ज्ञान के बल पर पंजाब नैशनल बैंक आज आपकी सहायता करने के लिये ऐसी अपूर्व स्थिति में है कि व्यक्तिगत रूप से आपकी सेवा कर सके।

प्रत्येक प्रकार का बैंकिंग व्यापार किया जाता है।

दि पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड

स्थापित : १८९५

प्रधान कार्यालय : नई दिल्ली


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पदा

वर्ष : १०

अंक : ३

मार्च १९६१

# नये बजट की मूल दृष्टि

किसी भी देश में राज्य की आय के साधन निम्नलिखित होते हैं :—

१—विभिन्न करों के द्वारा—आय कर, तट कर आदि ।

२—विभिन्न सेवाओं के द्वारा—डाक-तार, रेलें आदि

३—विभिन्न राष्ट्रीय उद्योगों द्वारा—लोहे, जहाज, खाद के कारखाने और बीमा व्यवसाय आदि ।

४—देश और विदेश से ऋणों की प्राप्ति—पोस्ट आफिस के सेविंग बैंक, प्राइज बॉंड और प्रावीडेंट फंड की निधियां भी इसी के अन्तर्गत आती हैं ।

५—कागजी मुद्रा का अधिक प्रसार करके—दूसरे शब्दों में इसे घाटे की अर्थ व्यवस्था या 'डेफिसिट फाइनानसिंग' कहते हैं ।

इन पांचों साधनों का कोई भी सरकार अपनी आवश्यकतायें पूर्ण करने के लिए प्रयोग करती है । जिस देश की आवश्यकतायें अधिक और आय के साधन सीमित होंगे, वह चौथे और पांचवें साधन का उतना ही उपयोग करेगा । यदि देश की राष्ट्रीय और प्रति व्यक्ति आय अधिक होगी तो सरकार आसानी से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर लगा सकेगी । तब विभिन्न सेवाओं का भी वह अधिक मूल्य ले सकती है, क्योंकि नागरिक की सामर्थ्य अधिक होगी । साम्यवादी और समाजवादी प्रवृत्ति के देश विभिन्न उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करके अपनी आय का काफी भाग प्राप्त करते हैं । भारत भी समाजवाद का आदर्श अपना रहा है और इसीलिए औद्योगिक नीति का निर्धारण करते हुए वह अनेक उद्योगों के राष्ट्रीयकरण की दिशा में प्रयत्न कर रहा है । वायु-यातायात और बीमा व्यवसाय के राष्ट्रीयकरण के अलावा लौह, इस्पात, खाद आदि के कारखाने भी सरकार स्वयं चलाने लगी है । पिछले दिनों देश के अर्थशास्त्रियों तथा योजना आयोग के सदस्यों ने यह सुझाव दिया है कि सरकारी उद्योगों को लाभ की नीति पर चलाया जाय ।

प्रायः प्रत्येक राज्य देश में और विदेशों से पर्याप्त ऋण लिया करता है । ब्रिटेन, अमेरिका, रूस, पश्चिमी जर्मनी और जापान आदि अनेक देश आज भारत को ऋण दे रहे हैं । भारत सरकार के वित्तमंत्री अत्यन्त गर्वपूर्वक यह घोषणा करते हैं कि उन्हें विदेशों से ऋण लेने में बहुत सफलता प्राप्त हो रही है । इस सम्बन्ध में पाठक अन्यत्र एक तालिका देखेंगे । योजना आयोग ने स्वयं तीसरी योजना के लिए २२ अरब विदेशी सहायता का अनुमान किया है । इसके अतिरिक्त सार्वजनिक ऋण से ८५० करोड़ रुपया, अल्प बचत से ५५० करोड़ रुपया और भविष्य निधि आदि से ५१० करोड़ रुपये की आशा की गई है ।

राज्य और विशेषकर अपने आर्थिक विकास के लिये प्रयत्नशील अविकसित राज्य घाटे की अर्थ-व्यवस्था का आश्रय लेते हैं । दूसरी पंचवर्षीय योजना में नासिक के प्रेस से ११७५ करोड़ रुपये की कागजी मुद्रा प्रचारित करने का प्रस्ताव था । प्रथम योजना में भी इस व्यवस्था का आश्रय लिया गया था । किन्तु श्री कृष्णमाचारी के शब्दों में यह व्यवस्था भोजन का काम नहीं दे सकती । इसे तो कभी-कभी औषधि के रूप में ही प्रयुक्त करना चाहिए अन्यथा इससे देश में महंगाई बहुत बढ़ जाती है । इसलिए योजना आयोग के तीसरी पंचवर्षीय योजना के बहुत ऊंचे लक्ष्य होते हुए भी दूसरी योजना की अपेक्षा नासिक के प्रेस से ५० प्रतिशत आय जुटाने का ही विचार प्रस्तुत किया है ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन सब तथ्यों और विचारों को सामने रखते हुए ही हमें १९६१-६२ के नये बजट पर एक दृष्टि डालनी है।

हम पाठकों से अनुरोध करेंगे कि वे वित्तमंत्री के भाषण और बजट प्रस्तावों को एक बार भलीभांति पढ़ लें। हमारा विचार यह है कि जब वे यह अनुभव कर लेंगे कि पंचवर्षीय योजनाओं की सफलता के लिए आय के साधन जुटाने अत्यन्त आवश्यक है, तब उन्हें बजट थोड़े-बहुत मत-भेद के साथ निराशाजनक प्रतीत नहीं होगा। तीसरी योजना के लिये प्रथम वर्ष ११६६ करोड़ रुपये के व्यय लक्ष्य रखे गये हैं जिसमें से केन्द्र का भाग ९६६ करोड़ रुपया होगा। राज्यों से भी यह आशा की गई है कि वे दो सौ करोड़ रुपया वार्षिक अपने साधनों से एकत्र करेंगे। इस वर्ष में ४२१ करोड़ रुपये विदेशी सहायता की आशा की गई है और पी० एल० ४८० की निधि के मार्फत ९६ करोड़ रुपया मिलने की आशा की गई है। २३५ करोड़ रुपये भारत के बाजारों से ऋण लेने का विचार रखा गया है। ये सभी लक्ष्य कहां तक पूर्ण होंगे, यह तो वर्ष के अंत में ही कहा जा सकेगा।

नये वर्ष के सामान्य राजस्व और व्यय के अनुमानों पर भी पाठक एक दृष्टि डालेंगे। नये कर प्रस्तावों को देखते हुए यह प्रतीत होता है कि वित्तमंत्री की दृष्टि में निम्न-लिखित सिद्धान्त काम कर रहे हैं—

१—देश की बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामान्य जनता का अधिकतम योगदान वांछनीय ही नहीं, अनिवार्य भी है। आखिर विकास योजनाओं का लाभ सर्व साधारण को ही मिलना है।

२—नये कर किसी एक वस्तु पर इतने न लगाये जायँ कि वह बहुत महंगी हो जाय। इसलिये यदि कर लगाने हों (और वह अनिवार्य हैं) तो भिन्न-भिन्न वस्तुओं पर फैलाकर कर लगाने चाहिए, जिससे कर का बोझ किसी एक वर्ग पर न पड़े। यह कर लगाते समय इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि कर स्वल्प मात्रा में लगाये जायं ताकि उनका बोझ थोक व्यापारी स्वयं बरदाश्त कर लें और सामान्य नागरिक पर भारी बोझ न पड़े, यद्यपि साधारण व्यापारी इन करों की आड़ में भारी नफा उठाने की दुष्प्रवृत्ति दिखा रहे हैं। परन्तु हमें विश्वास है कि यह प्रवृत्ति स्थायी नहीं रहेगी।

३—वित्तमंत्री की दृष्टि में देश की आय उद्योगों के विकास से ही बढ़ सकती है। इसलिये कोई ऐसी नीति न अपनाई जाय, जिससे उद्योगों को प्रोत्साहन न मिले। यही कारण है जहां अप्रत्यक्ष कर करीब ५७ करोड़ रुपये के लगाये गये हैं, वहां प्रत्यक्ष कर केवल ३ करोड़ रुपये के हैं। औद्योगिक विकास के लिए विदेशी पूंजी को प्रोत्साहन देना इस बजट की एक मुख्य विशेषता है।

४—विदेशी मुद्रा के गिरते हुए स्तर को बचाने के लिए वित्तमंत्री निर्यात व्यापार को अधिकतम प्रोत्साहन देना चाहते हैं। बजट में इसी नीति का पालन किया गया है।

वित्तमंत्री की इस दृष्टि को समझने के बाद करों के विस्तार में हमें जाने की आवश्यकता नहीं, लेकिन हमारी नम्र सम्मति में सरकार को जहां अपनी आय के साधन बढ़ाने और अपनी मंगल कार्य की प्रवृतियों का क्षेत्र विस्तृत करने की आवश्यकता है, वहां प्रशासन के बढ़ते हुये व्यय को कम करने की भी आवश्यकता है। इस ओर सरकार अब तक ध्यान नहीं दे पाई। एक वर्ष पूर्व की संख्यायें यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि हमारा योजनेतर व्यय तथा केन्द्रीय कर्मचारियों की संख्या किस तरह बढ़ रही है:—

| | ३१ मार्च १९५०-५१ | ३१ मार्च १९५९ |
|---|---|---|
| कुल कर्मचारी | ५८०४०५ | ७१९५६९ |
| प्रबन्ध अधिकारी | ४८६८५ | ७४१६९ |
| क्लर्क | १३५२०१ | २४१३१९ |
| दक्ष या अर्ध-दक्ष कर्मचारी | १४६९७५ | १५८३६८ |
| अदक्ष | २४९५४४ | २४५७१४ |

राज्य सरकारों की कहानी भी इससे मिलती-जुलती हुई है। इन अंकों से भली-भांति जानकारी मिल जाती है जिस पर टीका-टिप्पणी की और अधिक आवश्यकता नहीं है।

## भारी अन्तर

केन्द्रीय सरकार के पिछले दस वर्षों के बजटों पर एक दृष्टि डाली जाय तो उसमें बड़ा अन्तर मालूम होगा। १९५०-५१ में केन्द्र की आय ४११ करोड़ रुपया थी जो १० वर्ष बाद अब १०२३.७५ करोड़ रुपया हो गयी है। इन ११ वर्षों में आय के आंकड़े करीब २॥ गुना बढ़ गये



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आय और व्यय में वृद्धि

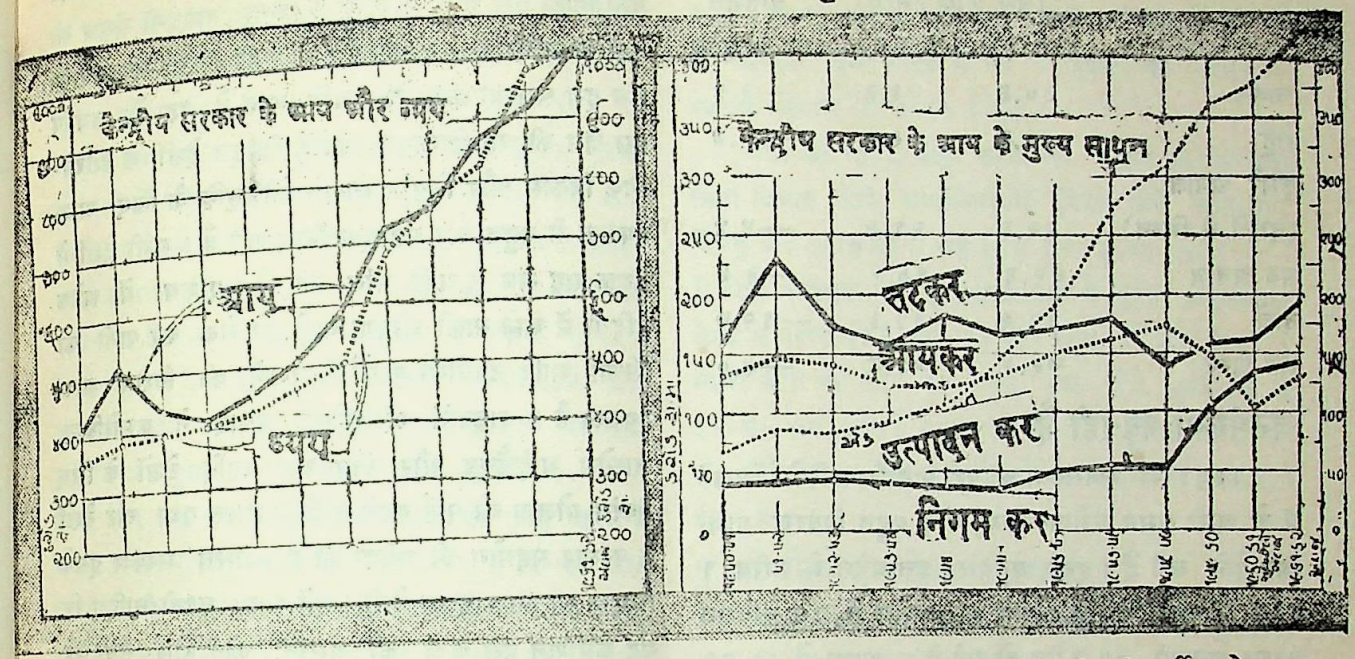


हैं। केन्द्र के व्यय भी ३५१ करोड़ रुपये से बढ़कर १०२३.५० करोड़ रुपये हो गये हैं अर्थात वे लगभग तीन गुना बढ़ गये हैं।

आय और व्यय की इन राशियों के साथ-साथ आय के साधनों में भी महान् परिवर्तन हो गया है। पहले आय का सबसे बड़ा साधन तटकर होता था, किन्तु पिछले कुछ वर्षों से यह स्थान उत्पादन करो ने ले लिया। १९५०-५१ में इन दोनों करों की आय क्रमशः १५७ और ६७॥ करोड़ थी। अब ११ वर्ष बाद इन दोनों की आय क्रमशः १९३ करोड़ और ४३४.७५ करोड़ रुपये हो गई।

इसी तरह खर्च की मदों में भी बहुत भारी परिवर्तन हुआ है। १९५०-५१ में सामाजिक और विकास सेवा कार्यों में—शिक्षा, स्वास्थ्य, खेती बाड़ी, ग्राम विकास आदि में केवल २७॥ करोड़ रुपया व्यय हुआ था, परन्तु नये बजट के अनुसार इस वर्ष १७३.५० करोड़ रुपये का अनुमान है। प्रतिरक्षा का व्यय भी इन ग्यारह वर्षों में १६५ करोड़ रुपये से बढ़कर २८३ करोड़ रुपया हो गया।

पहली और दूसरी योजना की अवधि में करों के द्वारा होने वाली आय के अंक भी कम मनोरंजक नहीं हैं। पहली योजना के ५ वर्षों में कुल मिलाकर सरकार को करों से २२५९.९० करोड़ रुपये की आय हुई। इसमें से ३३५ करोड़ रुपया राज्यों का भाग था। दूसरी पंचवर्षीय योजना के ५ साल में करों से ३५६६.३१ करोड़ रुपये की आय हुई। इसका अर्थ यह है कि दूसरी योजना की अवधि में पहली योजना की अपेक्षा भी १२ अरब रुपया करों से अधिक वसूल किया गया। पिछले वर्षों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नये करों की जानकारी भी मनोरंजक होगी। इससे यह स्पष्ट है कि सरकार प्रत्यक्ष करों को बहुत अधिक बढ़ाना संभव नहीं समझती।

| बजट वर्ष | | अप्रत्यक्ष | प्रत्यक्ष | कुल |
|---|---|---|---|---|
| १९५६-५७ | ... | २५.१५ | ९.०० | ३४.१५ |
| १९५७-५८ | ... | ५७.३५ | ३०.६५ | ८८.०० |
| १९५८-५९ | ... | २.८३ | ३.५० | ६.३३ |
| १९५९-६० | ... | २३.५७ | २.५० | २६.०७ |
| १९६०-६१ | ... | २४.२३ | — | २४.२३ |
| १९६१-६२ | ... | ६०.१७ | ३.०० | ६३.१७ |

## कृषि उत्पादन में कमी

सम्पदा के जनवरी अंक में हमने कृषि उत्पादन में कमी के सम्बन्ध में एक लेख प्रकाशित किया था। केन्द्रीय सरकार के वित्त मंत्री ने १९६०-६१ की आर्थिक समीक्षा में इसी की पुष्टि की है जो निम्नलिखित सारणी से स्पष्ट है—



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्न की उपज

| | (दस लाख टन में) | | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| | १९५८-५९ | १९५९-६० | कमी या वृद्धि |
| चावल | ३०.३ | २९.३ | —३.३ |
| गेहूँ | ९.८ | ९.७ | —०.४ |
| दूसरे अनाज (दालों से भिन्न) | २२.६ | २१.५ | —४.४ |
| सब अनाज | ६२.६ | ६०.५ | —३.४ |
| दालें | १२.९ | ११.३ | —१२.७ |
| सब अन्न | ७५.५ | ७१.८ | —५.० |

## जनसंख्या बढ़ रही है

१९६१ की जनसंख्या की पूरी प्रामाणिक रिपोर्ट मिलने में तो अभी समय लगेगा, किन्तु थोड़े बहुत विवरण प्रकाशित होने लगे हैं। इनके अनुसार उत्तरप्रदेश में करीब १ करोड़ आबादी बढ़ी है। पश्चिमी बंगाल में ३३ प्रतिशत बढ़कर आबादी ३॥ करोड़ हो गई है। आन्ध्र में १५.६३ प्रतिशत आबादी बढ़ी है और अब ३ करोड़ ६० लाख हो गई। जनसंख्या में इस वृद्धि का एक मुख्य कारण मृत्यु संख्या में कमी है। बंगाल में मृत्यु संख्या १८ से घटकर ८.५ प्रतिशत हो गई। जहां यह प्रसन्नता की बात है, वहाँ हमें अपनी विकास योजनाओं में अधिक सावधान होने की आवश्यकता का भी प्रतिपादन करता है।

## इकाफे का सम्मेलन

संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से एशिया और सुदूरपूर्व के देशों के आर्थिक विकास के लिए एक कमीशन नियुक्त किया हुआ है। इसे अंग्रेजी में 'इकाफे' के संक्षिप्त नाम से कहते हैं। इस कमीशन की ओर से १९६० की आर्थिक प्रगति की एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि एशिया और सुदूर पूर्व के देशों में अन्न की पैदावार पहले से कुछ ज्यादा हुई है, किन्तु भोजन में पश्चिमी देशों की अपेक्षा पोषक तत्वों की बहुत कमी है। औद्योगिक उत्पादन पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ रहा है, किन्तु यदि जापान और भारत को निकाल दिया जाय तो औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि बहुत कम रह जाती है। सभी देश आर्थिक विकास के बहुत ऊँचे लक्ष्य नियत कर रहे हैं। किन्तु उनके लिए जितनी आर्थिक सहायता की आवश्यकता है, उतनी प्राप्त नहीं हो रही। संसार की कुल आबादी का दो-तिहाई इस क्षेत्र में रहता है किन्तु आमदनी संसार की कुल आमदनी का २५ प्रतिशत भी नहीं होती। संयुक्त राष्ट्र-संघ इस समस्या की ओर यद्यपि ध्यान दे रहा है, तथापि इस क्षेत्र की यह शिकायत सही है कि इन देशों के औद्योगिक विकास और निर्यात व्यापार की वृद्धि के लिए आवश्यकता से बहुत कम सहायता मिल रही है। सभी देशों ने संयुक्त राष्ट्र संघ से यही मांग की है। एशिया में अनेक नदियों में आने वाली भीषण बाढ़ों को रोक कर पानी को सिंचाई आदि उपयोगी कार्यों में लगाने की विशेष आवश्यकता है। राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद ने कम्बोडिया, लाओस, थाईलैण्ड और विएटनाम आदि देशों के लिए मेकांग योजना को पूर्ण करने के लिए भारत तथा चार देशों के परस्पर सहयोग की अपेक्षा की है। भारत सरकार इसके लिए १२॥ लाख रुपया देगी। हमें आशा करनी चाहिए कि यह कमीशन इस क्षेत्र की वस्तुतः कोई ठोस सेवा कर सकेगा। परन्तु एक बात निश्चित है कि इस विशाल क्षेत्र के देशों में परस्पर सहयोग के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने राजनैतिक संघर्षों को भी समाप्त करें। भारत और पाकिस्तान, भारत और चीन, लाओस और विएटनाम के पारस्परिक संघर्ष यदि समाप्त हो जायं तो आर्थिक सहयोग अधिक अच्छी तरह हो सकता है। बहुत सी समस्याएं केवल राजनैतिक संघर्ष के कारण ही पैदा हो रही हैं तथा सरकारों की शक्ति केवल राजनैतिक संघर्ष में ही नष्ट हो जाती है। • •

## अन्धानुसरण नहीं

कुछ वर्ष पूर्व भारत में एक लहर चली थी कि हमारे प्रतिनिधि मंडल चीन जावें और वहां के आर्थिक विकास की प्रगतियों का अवलोकन करें। उस समय पारस्परिक सौहार्द का एक ऐसा वातावरण था कि श्री पाटिल आदि थोड़े से अर्थशास्त्रियों के अतिरिक्त सब मंडलों ने चीन की अर्थ पद्धतियों—कम्युन, सहकारिता, कृषि और बाढ़ नियंत्रण आदि की उन्मुक्त कंठ से प्रशंसा करके भारत को भी उसका अनुकरण करने का परामर्श दिया। यदि किसी ने कुछ अधिक सतर्कता की सलाह दी तो उसे प्रतिगामी माना गया। न सरकार ने अपने कृषि और उद्योग के



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पादन के जो बड़े-बड़े आंकड़े दिये उनकी चकाचौंध में भी बहुत से सार्वजनिक कार्यकर्ता आ गये। किन्तु पिछले दो-एक वर्षों से वहां दैवी-प्रकोपों के कारण जो भीषण दुर्भिक्ष और संकट उत्पन्न हो गया है उससे चीन की 'बलात् अर्थ पद्धति' की त्रुटियां सामने आ गईं। कृषकों को उद्योगों और खानों की ओर तथा अकृषकों को खेतों में बलात् भेजने की प्रथा ने दैवी-प्रकोप के साथ-साथ अवश्य दोनों के उत्पादनों पर प्रभाव डाला है। कैंटन के चीनी पत्र 'नान-फिंग-जिह-पाओ' ने ३० अक्टूबर के अंक में लिखा है कि खेतों पर ऐसे मजदूर भेज दिये गये जिनकी रुचि और जानकारी काफी कम थी, उन्होंने दिल से खेतों पर काम नहीं किया। युवक कारीगरों, माध्यमिक स्कूलों के विद्यार्थियों और कुछ पढ़े लिखे लोगों ने खेतों पर काम करने में अपना अपमान अनुभव किया। यह कारण है कि अब चीन के अधिकारी अपनी नीति में परिवर्तन करने के लिये विवश हुये हैं। अब किसानों को अपनी सम्पत्ति पर अधिक अधिकार दे दिये गये हैं। कम्यून संस्थाओं के अनियंत्रित अधिकार अब कम किये जा रहे हैं। अब कम्यून अपने सदस्यों को जहां कहीं भी स्वेच्छापूर्वक न भेजकर उनको अपने अपने कार्य में सहायता देना अपना कर्तव्य समझते हैं। किसानों को उनकी अपनी उपज के अनुसार पैसा दिया जाने लगा है। परिश्रम और उत्पादन की उपेक्षा करके सबको एक समान पारिश्रमिक देने की हानि को अब समझा जा रहा है। अब मजदूरी का १० प्रतिशत भाग नगदी में दिया जा रहा है। यदि कोई श्रमिक या श्रमिक-समूह लक्ष्य से अधिक उत्पन्न करता है तो उसे अतिरिक्त उत्पादन का १० प्रतिशत बोनस भी दिया जाता है। किसानों को अपनी निजी-खरीद फरोख्त करने की भी अनुमति दी जा रही है। उन्हें बीस एकड़ खुद काश्त करने की अपनी मवेशी रखने की, मुर्गीपालन की और फलों के वृक्ष स्वयं लगाने की अनुमति दी जा रही है। इन सब अधिकारों से कम्यून पद्धति चलाते समय १९५८ में उन्हें वंचित किया जा रहा था। इन सब समाचारों से यह स्पष्ट होता है कि चीन ने अपनी आर्थिक पद्धति की कमियों को अनुभव कर लिया है और अब वह उनमें सुधार करने को विवश हुआ है। हम इसके लिये चीन के अधिकारियों की प्रशंसा करना चाहते हैं कि जो अपने अनुभवों से लाभ उठाने से संकोच नहीं करते। किन्तु साथ ही हम उन भारतीय विचारकों को भी यह परामर्श देना चाहते हैं कि वे दूसरे की देखा-देखी स्वतंत्र चिन्तन की उपेक्षा न करें।

चीन की चावल पैदा करने की पद्धति का भी यहाँ बिना विचार किये अन्ध-समर्थन किया जाने लगा था। किन्तु अब परीक्षणों से यह सिद्ध हुआ है वह पद्धति भारत के लिये अनुकूल नहीं है। समलकोट के कृषि अनुसन्धान केन्द्र के परीक्षणों के बाद यह पता लगा है कि तीन फुट गहरी खेती पर ९६८ रु० खर्च हुआ है। खाद देने में ३६ रु० खर्च हुआ है। इस पद्धति के अनुसार प्रति एकड़ १५ बोरे चावल पैदा हुआ है, जो इस इलाके में सबसे कम उपज है। ● ●

## पूंजी नियोजन केन्द्रकी स्थापना

पिछले महीने में केन्द्रीय वित्तमन्त्री श्री मुरारजी देसाई ने भारतीय पूंजी नियोजन केन्द्र का उद्घाटन किया है। इस केन्द्र का काम उन देशों को भारत में पूंजी लगाने की सुविधा और लाभ के बारे में जानकारी देना है, जो विदेशों में पूंजी लगाते हैं। वित्त मन्त्री के कथनानुसार इस केन्द्र की स्थापना बहुत ठीक समय पर हो रही है, क्योंकि इस समय विदेशों के व्यापारी और सरकारें हमारे देश की व्यापार नीति और व्यापार की स्थिति से पहले से अधिक परिचित हैं। पिछले कुछ सालों में उद्योगों की संख्या पहले से ५-६ गुनी हो गई है। विदेशों से ऋण लेने और पीछे से उसे ब्याज समेत चुकाने की चिन्ता की अपेक्षा विदेशी पूंजी अधिक लाभ प्रद है। विदेशी निजी पूंजी हमारे लिए केवल विदेशी मुद्रा की दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि इससे बहुत सी आवश्यक शिल्पिक जानकारी और प्रबन्ध के नए तरीकों का भी हमें पता चलता है। दूसरी योजना की अपेक्षा तीसरी योजना में उद्योगों में डेढ़ गुनी पूंजी लगने की आशा है। अतः तीसरी योजना में विदेशी पूंजी को आकृष्ट करने की और भी आवश्यकता है। भारत ही नहीं, दुनिया के अधिकांश देशों को उद्योग धन्धों की उन्नति में विदेशी पूंजी से मदद मिली है। पिछले विश्वयुद्ध के बाद पश्चिमी यूरोप के अधिकांश देशों का पुनर्निर्माण अमेरिका



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सहायता से ही हो सका है।

पहली दो योजनाओं में भारत को मित्र देशों और विश्व बैंक आदि से बहुत सहायता मिली है। अनुमान है कि १९६० के अन्त तक भारत के कल-कारखानों, बिजली, रेल आदि के लिए, लगभग २,१०० करोड़ रु० विदेशों से मिल चुके हैं। विश्व बैंक से सबसे अधिक ऋण भारत ने ही लिया है। किन्तु इस सहायता की राशि तो वापिस चुकानी पड़ेगी। इसलिए विदेशी पूंजीपतियों का सहयोग आज अधिक वांछनीय है। वे अब भारत में ज्यादा पूंजी लगा रहे हैं। १९४८ में देश में लगभग २५६ करोड़ रु० की विदेशी पूंजी लगी हुई थी, जबकि १९५९ में ५९३ करोड़ रु० की विदेशी पूंजी लग चुकी थी। १९५६ से १९५८ तक के तीन वर्षों में प्रति वर्ष विदेशों से ३८ करोड़ रु० की निजी पूंजी भारत में आई। अनुमान है कि पिछले दो वर्षों में इससे भी बहुत ज्यादा विदेशी पूंजी भारत में लगी।

विदेशी पूंजी को प्रोत्साहन देने के लिए यह आवश्यक होगा कि उसे निश्चिन्त कर दिया जाय। सन् १९४९ में प्रधान मन्त्री ने विदेशी पूंजी के बारे में सरकारी नीति बताते हुए स्पष्ट किया था कि सरकार विदेशी पूंजीपतियों को भारतीय व्यापारियों के बराबर सुविधा देगी। विदेशी व्यापारियों को उचित मुनाफा कमाने और अपने देश भेजने तथा अपनी पूंजी निकालने में भी कोई बाधा नहीं होगी। अगर किसी विदेशी फार्म या कारखाने का राष्ट्रीयकरण होगा, तो उसे उचित मुआवजा दिया जाएगा। सरकार नये उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए, विकास-छूट शुरू-शुरू में आय कर की छूट और अन्य रियायतें दे रही है। ये रियायतें विदेशी उद्योगपतियों को भी दी जाती है। सरकार की अनुमति से जो विदेशी शिल्पिक यहां काम कर रहे हैं, उन्हें कर की छूट भी दी जाती है। अमेरिका, इंगलैंड, प० जर्मनी, जापान, स्वीडन और अन्य कई देशों से समझौते किए गए हैं, जिनके अन्तर्गत भारत में होने वाली आय पर दोहरा कर नहीं देना पड़ता। भारत सरकार ने आयकर में जो रियायत दी है, वह इन देशों के नागरिकों को भी दी जाती है। यह आशा की जानी चाहिए कि विदेशी पूंजी पहले की अपेक्षा देश के विकास में अधिक सहयोग देगी।

## अराष्ट्रीय प्रवृत्ति

नये बजट में अनेक वस्तुओं पर कुछ कर लगाये गये हैं। इनमें से अधिकांश कर इतनी कम मात्रा में हैं कि उनका असर साधारण उपभोक्ताओं पर नहीं पड़ना चाहिये या बहुत कम पड़ना चाहिये, किन्तु पिछले दिनों में थोक या खुदरा दुकानदारों ने इन पदार्थों के मूल्य नये करों के अनुपात से बहुत अधिक बढ़ा दिये हैं। कुछ दिनों में बाजार की यह घट-बढ़ समाप्त होकर स्थिरता का रूप धारण कर लेगी, किन्तु दुकानदारों के इस व्यवहार ने जनता में उनके प्रति असन्तोष अवश्य उत्पन्न कर दिया है। नफाखोरी की यह प्रवृत्ति अराष्ट्रीय है। नये बजट में सूत पर भी कर लगाये गये हैं। किन्तु सूती मिलों को यह नहीं भूल जाना चाहिये कि गत वर्ष की अपेक्षा कपास के मूल्य अब कम होने लग गये। इसलिये वे नये करों के बावजूद बिना मूल्य बढ़ाये आसानी से कपड़ा बेच सकते हैं। आई० सी० सी० अप्रैल १९६१ के मूल्य गत ६९०.०० रुपये प्रति तीन क्विंटल थे, जो अब ५६९.०० रुपये है। इसी तरह जरीना २५।३२ के मूल्य गत वर्ष ६९०.०० रुपये प्रति तीन क्विंटल थे, जो अब ६८०.०० हैं। मूल्यों में इस कमी का लाभ ग्राहकों (उपभोक्ताओं) को मिलना चाहिए।


## 'सम्पदा' के सम्बन्ध में जानकारी

रजिस्ट्रार न्यूज़ पेपर्स एक्ट के नियम ८ के अन्तर्गत विज्ञप्ति

| | |
|---|---|
| १-प्रकाशन का स्थान | २८/११ शक्ति नगर, दिल्ली-६ |
| २-प्रकाशन की अवधि | मासिक |
| ३-४-५-मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक, | कृष्णचन्द्र विद्यालंकार |
| राष्ट्रीयता | भारतीय |
| पता | २८/११, शक्तिनगर, दिल्ली-६ |
| ६. स्वामित्व | कृष्णचन्द्र विद्यालंकार |

मैं, कृष्णचन्द्र विद्यालंकार घोषित करता हूँ कि ऊपर दी गई जानकारी मेरे ज्ञान के अनुसार बिल्कुल ठीक है।

प्रकाशकः कृष्णचन्द्र विद्यालंकार




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# केन्द्रीय सरकार का नया बजट ( एक दृष्टि में )

बजट परिशिष्ट

## राजस्व

(लाख रुपयों में)

| | बजट १९६०-६१ | संशोधित १९६०-६१ | बजट १९६१-६२ |
|---|---|---|---|
| सीमा शुल्क | १,६२,५० | १,६३,०० | (१,६४,०० (+ २९,२७* |
| केंद्रीय उत्पादन शुल्क | ३,७९,६१ | ३,९४,९८ | (४,०६,२४ (+ २८,६०* |
| निगम कर | १,३५,०० | १,३७,५० | (१,४०,०० ( + १,००* |
| निगम कर के अतिरिक्त आय पर कर | ५२,९४ | ४०,५२ | ( ५०,२१ ( +२,००* |
| मृत सम्पत्ति शुल्क | १० | ९ | ९ |
| सम्पत्ति कर | ७,०० | ७,५० | ७,०० |
| रेल किराया कर | ११ | (–)१२ | ... |
| व्यय कर | ९० | ९० | ८० |
| दान कर | ८० | ८० | ८० |
| अफीम | ५,६९ | ५,८२ | ६,२५ |
| ब्याज | १५,७१ | १४,८७ | १३,८४ |
| प्रशासनिक सेवाएं | ८४ | ९९ | ९७ |
| सामाजिक और विकास संबंधी सेवाएं | ५२,३५ | ५१,४६ | ४७,०० |
| मुद्रा और टकसाल | ५७,२२ | ५७,८५ | ६०,६३ |
| असैनिक निर्माण कार्य | ३,०४ | ३,२८ | ३,७५ |
| राजस्व के अन्य स्रोत | ३९,७३ | ३८,६६ | ३९,२८ |
| डाक और तार-सामान्य राजस्व में वास्तविक अंशदान | ४७ | ४६ | ७७ |
| रेलें-सामान्य राजस्व में वास्तविक अंशदान | ५,६४ | ५,०६ | २१,२९ |
| जोड़—राजस्व | ९,१९,६५ | ९,२३,७२ | (९,६२,९२ (+ ६०,८७* |

## व्यय

(लाख रुपयों में)

| | बजट १९६०-६१ | संशोधित १९६०-६१ | बजट १९६१-६२ |
|---|---|---|---|
| करों, शुल्कों और अन्य मुख्य राजस्वों का संग्रह | ३२,८१ | ३२,२० | ३०,४६ |
| सिंचाई | १७ | १३ | १५ |
| ऋण व्यवस्था | ७४,५९ | ७२,३५ | ८१,९० |
| प्रशासनिक सेवाएं | ६०,५९ | ६१,५३ | ५८,३७ |
| सामाजिक और विकास संबंधी सेवाएं | २,०७,१७ | १,९८,५२ | १,७३,४६ |
| मुद्रा और टकसाल | १०,२७ | १०,८७ | ११,९६ |
| असैनिक निर्माण और विविध सार्वजनिक सुधार कार्य | २०,३२ | २१,५९ | २१,७३ |
| पेंशनें | १०,११ | १०,३३ | १०,४१ |
| विविध— | | | |
| विस्थापितों पर व्यय | २०,२८ | २०,२८ | ११,२८ |
| अन्य व्यय | १,११,७० | १,०७,०७ | ४२,७५ |
| राज्यों को अनुदान आदि | ५१,८१ | ५१,८७ | २,१०,९३ |
| केन्द्रीय उत्पादन शुल्कों में राज्यों का हिस्सा | ७४,५२ | ७५,१० | ७६,३३ |
| कसाधारण मदें | ३३,७५ | २८,८२ | १०,८७ |
| रक्षा सेवाएं (वास्तविक) | २,७२,२९ | २,६६,७२ | २,८२,९२ |
| जोड़—व्यय | ९,८०,३५ | ९,५७,३८ | १०,२३,५२ |
| कमी (–) | (–) ६०,७० | (–) ३३,६६ | ((–)६०,६० |
| अधिशेष (+) | | | ((+)६०,७८* |

* बजट प्रस्तावों का प्रभाव



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बजट में नये करों के प्रस्ताव

(लाख रु० में)

| | बजट १९६०-६१ | संशोधित १९६०-६१ | बजट १९६१-६२ |
|---|---|---|---|
| राजस्व | ९,१९,६५ | ९,२३,७२ | ९,६२,९२ + ६०,८७ नए करों से |
| व्यय | ९,८०,३५ | ९,५७,३८ | १०,२३,५२ |
| कमी | — ६०,७० | —३३,६६ | |
| बचत | + | | + २७ |

## अप्रत्यक्ष कर

सीमा शुल्कों के सम्बन्ध में ४१ मदों की शुल्क दरों में वृद्धि करने का विचार किया गया है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन इस प्रकार हैं :

१. सुपारी के वर्तमान शुल्कों में प्रति किलोग्राम ८० न० पै० की वृद्धि।

२. गैर-तैयार तम्बाकू के वर्तमान शुल्क में लगभग ५० प्रतिशत की वृद्धि।

३. कुछ कपड़ों पर मूल्यानुसार लगने वाला ५० प्रतिशत का वर्तमान शुल्क बढ़ाकर मूल्यानुसार १०० प्रतिशत कर दिया जाएगा।

४. लोहे और इस्पात की चीजों के मूल्यानुसार ३५ प्रतिशत के शुल्क को भी बढ़ाकर मूल्यानुसार ५० प्रतिशत कर दिया जाएगा। हर साल एक करोड़ रु० की और प्राप्ति।

५. मशीनों और पुर्जों के आयात शुल्क में वृद्धि की जाएगी। शुल्क की रियायती दर, जो अभी उन मशीनों पर लगती है जिन्हें सरकारी अधिसूचना के अनुसार छूट मिली हुई है, मूल्यानुसार ५ प्रतिशत से बढ़ाकर १० प्रतिशत कर दी जाए। इससे ७ करोड़ ७६ लाख रु० की और प्राप्ति होगी।

६. सुरासार (स्पिरिट्स), शराब और यव्य (माल्ट) के शुल्क में वृद्धि की जाएगी और यव्य-कटु (हाप) पर शुल्क लगाया जाएगा।

७. बिजली के व दूसरे औजारों, वैज्ञानिक यन्त्रों और उपकरणों के, जिनका अन्यथा उल्लेख नहीं है, वर्तमान शुल्क में मूल्यानुसार १० प्रतिशत वृद्धि की जाएगी। इन दोनों परिवर्तनों से १ करोड़ ४८ लाख रु० की प्राप्ति का अनुमान है। अन्य सभी वस्तुओं पर जिनका अन्यथा उल्लेख नहीं है, शुल्क मूल्यानुसार १० प्रतिशत बढ़ा दिया जाएगा, जिससे २ करोड़ ४३ लाख रु० की प्राप्ति होगी।

८. अखबारी कागज के शुल्क में मूल्यानुसार लगभग १० प्रतिशत की वृद्धि की जाएगी।

९. चाय के निर्यात शुल्क में प्रति किलोग्राम ९० न० पै० की कमी की जाएगी, जिससे राजस्व में २ करोड़ रु० की कमी हो जाएगी।

इन परिवर्तनों के फलस्वरूप सीमा-शुल्कों से प्राप्त होने वाले राजस्व में १६ करोड़ ९५ लाख रु० की वृद्धि होगी।

## उत्पादन-शुल्क

जो उत्पादन शुल्क लगाए जा रहे हैं, उनसे देशी उत्पादन को हानि न पहुंचे, इसके लिए आवश्यकतानुसार समप्रभावक आयात-शुल्क लगाने की व्यवस्था की जा रही है और इनसे १२ करोड़ ३२ लाख रु० का और राजस्व प्राप्त होगा। केन्द्रीय उत्पादन-शुल्कों के सम्बन्ध में १४ चीजों की, जिन पर अभी शुल्क लगता है, शुल्कदरों में परिवर्तन किया है और १८ नई चीजों पर शुल्क लगाया गया है।

१. खुली चाय के उत्पादन-शुल्क में प्रति किलोग्राम ५ से ८ न० पै० की वृद्धि की गयी है। बन्द चाय की शुल्क-दर में प्रति किलोग्राम ६ न० पै० की कमी की जा रही है। इन परिवर्तनों से १ साल में १ करोड़ ९८ लाख, रु० की प्राप्ति होगी।

२. कहवा (काफी) की शुल्क-दर में ३३ प्रतिशत की वृद्धि की गयी है।

३. तम्बाकू के डंठलों के शुल्क में वृद्धि की गयी है और वायु और धूमशोधित तम्बाकू, सिगरेटों, सिगारों और चुरुटों के शुल्क-ढांचे को सरल किया गया है। इन परिवर्तनों से २ करोड़ ५८ लाख रु० का अतिरिक्त राजस्व मिलने लगेगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. मिट्टी के तेल के शुल्क में लगभग ४६ प्रतिशत वृद्धि की जाएगी, जिससे कुल शुल्क-भार बढ़कर प्रति किलो-लिटर ६५.५५ रु० हो जाएगा। घटिया दर्जे के मिट्टी के तेल को इस वृद्धि से छूट दी जाएगी। इससे २ करोड़ ८४ लाख रु० की अतिरिक्त प्राप्ति होगी।

५. उस डीजल तेल के शुल्क में, जिसका अन्यथा उल्लेख नहीं है, प्रति मीट्रिक टन २८ रु० १५ न० पै० की वृद्धि की जाएगी। इससे १ करोड़ ३३ लाख रु० की प्राप्ति होगी।

६. रेयन के सभी प्रकार के धागे और 'स्टेपल' रेशे के शुल्क में लगभग दो-तिहाई की वृद्धि की जाएगी। इससे १ करोड़ ६९ लाख रु० का अतिरिक्त राजस्व प्राप्त होगा।

७. वनस्पति के शुल्क में भी प्रति क्विंटल यानी १०० किलोग्राम, २ रु० ८० न० पै० की वृद्धि की जाएगी। इससे हर साल ८० लाख रु० की अतिरिक्त प्राप्ति का अनुमान है।

८. रंगों और रोगनों के शुल्क में लगभग २५ प्रतिशत की और कागज के शुल्क में ३६ प्रतिशत से ५९ प्रतिशत की वृद्धि की जाएगी। छपाई और लिखने के कागज के शुल्क में वृद्धि नहीं होगी। इस परिवर्तनों से २ करोड़ ६७ लाख रु० का और राजस्व प्राप्त होगा।

९. मीडियम 'ए' ग्रे (धूसर रंग) कपड़े के बुनियादी शुल्क में २५ प्रतिशत की वृद्धि और वैज्ञानिक विधि से तैयार किए गए कपड़े के उत्पादन-शुल्क में थोड़ी वृद्धि की गयी है। इन परिवर्तनों से ४ करोड़ ७२ लाख रु० प्राप्त होने का अनुमान है।

१०. सूती, रेयन और रेशमी कपड़े के सिर्फ उन्हीं कारखानों को शुल्क की पूरी छूट दी जाएगी, जहां दो से ज्यादा बिजली के करघों पर काम नहीं होता। ऊनी कपड़ों के मामले में यह पूरी छूट उन कारखानों को दी जाएगी, जहां एक से ज्यादा करघों पर काम नहीं होता।

११. दियासलाइयों की शुल्क की अधिकतम दर को ५७ न० पै० प्रति हजार तीली से बढ़ाकर ६५ न० पै० प्रति हजार तीली कर दिया जाएगा। ५० तीलियों की प्रतिमानित डिब्बियों की शुल्क-दर प्रायः वर्तमान स्तर पर ही रहेगी। तीलियां बनाने में बांस का इस्तेमाल करने वाले घरेलू उद्योगों को प्राप्त रियायती दरों में और कमी की जाएगी।

१२. साइकिलों के रिम बनाने वाले छोटे और बड़े कारखानों को कुछ रियायती दी जाएगी, जिससे उन्हें सलाना १० लाख रु० तक की राहत मिल सकेगी।

१३. सोडा ऐश, कास्टिक सोडा और ग्लिसरीन पर थोड़े-थोड़े परिमाण-शुल्क, तारकौल के रंगों पर मूल्यानुसार १५ प्रतिशत शुल्क, मद्यसार या अलकोहलहीन पटेंट या मालिकाना दवाओं पर १० प्रतिशत और सुन्दरता बढ़ाने वाली व श्रृंगार की कुछ चीजों पर २५ प्रतिशत शुल्क लगाया जाएगा। इन कुल मदों से साल में १ करोड़ ८० लाख रु० की प्राप्ति का अनुमान है।

१४. सेलोफेन और प्लास्टिक पाउडरों व प्लास्टिक की दूसरी अर्ध-तैयार चीजों पर प्रतिशत शुल्क लगाया जाएगा, जिससे लगभग ५० लाख रु० की प्राप्ति होगी।

१५. मिल के बने सूती और ऊनी धागे पर थोड़ा-सा परिमाण शुल्क लगाया जाएगा। यह शुल्क सूत की उन लच्छियों पर नहीं लगेगा, जो हथकरघों से बुनाई करने के काम करने आती है। उस धागे पर भी शुल्क नहीं लगेगा, जो ऊन की घटिया चीजें तैयार करने के लिए पुराने ऊनी कपड़ों से तैयार किया जाता है। इस शुल्क से ५ करोड़ ५५ लाख रु० की प्राप्ति का अनुमान है।

१६. शीशा और शीशे की चीजों और चीनी मिट्टी व चीनी के बर्तनों पर (जिनमें पिर्च-प्याले वगैरा शामिल हैं) मूल्यानुसार ५ प्रतिशत से लेकर १५ प्रतिशत तक शुल्क लगाया जाएगा। इन मदों से १ करोड़ ६० लाख रु० की प्राप्ति होगी।

१७. तांबे और जस्ते की चद्दरों और चक्कों पर ३०० रु० प्रति मीट्रिक टन और नलों व नलियों पर मूल्यानुसार १० प्रतिशत शुल्क लगाया जाएगा।

१८. वातानुकूलन यन्त्रों और रेफ्रिजिरेटरों पर २० प्रतिशत शुल्क लगाया जाएगा। तीन सौ रु० प्रति सेट से अधिक कीमत के रेडियो-सेटों पर मूल्यानुसार २० प्रतिशत की अधितम दर और सस्ते रेडियो-सेटों पर रियायती दर से शुल्क लगाया जाएगा। १५० रु० तक की कीमत के



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियों सेटों पर यह शुल्क नहीं लगेगा। इन शुल्कों से ८३ लाख रु० की प्राप्ति होगी।

१९. मिल के बने रेशमी कपड़े पर, राज्यों द्वारा लगाए जाने वाले बिक्री कर के बदले, अतिरिक्त उत्पादन शुल्क लगाया जाएगा।

इन सब कर प्रस्तावों के परिणामस्वरूप ३० करोड़ ९० लाख रु० का अतिरिक्त राजस्व प्राप्त होगा, जिसमें से राज्यों को, उनके हिस्से के रूप में, २ करोड़ ३० लाख रु० मिल जाएगा।

## प्रत्यक्ष-कर

१. एक लाख रु० से अधिक की अर्जित आय पर ५ प्रतिशत के वर्तमान विशेष अधिभार की दर को बढ़ाकर बुनियादी कर १० प्रतिशत कर दिया जाएगा।

२. कम्पनियों के नए बोनस-शेयरों का कर ३० प्रतिशत से घटाकर १२॥ प्रतिशत कर दिया जाएगा।

३. कम्पनियों द्वारा नई कम्पनियों में निवेश (इन्वेस्टमेंट) के लाभांशों पर दिए जाने वाले अधिकार की दर २० प्रतिशत निर्धारित की जाएगी, चाहे निवेश भारतीय हो अथवा विदेशी और चाहे वह बहुसंख्यक शेयरों के आधार पर हो अथवा अल्पसंख्यक शेयरों के आधार पर, कर की नई दर उन कम्पनियों में किए गए निवेश पर लागू होगी जो १ अप्रैल, १९६१ के बाद संगठित की जाएंगी।

४. विदेशी कम्पनियों द्वारा भारतीय उद्यमों से प्राप्त होने वाली रायल्टी के कर की मौजूदा दर ६३ प्रतिशत से घटाकर ५० प्रतिशत की जाएगी। यह कटौती उन रायल्टियों के लिए होगी जो केन्द्रीय सरकार द्वारा ३१ मार्च, १९६१ के बाद स्वीकृत करारों के आधार पर दी जाएगी।

५. पानी के जहाज के सम्बन्ध में लागत के ४० प्रतिशत की दर दी जाने वाली विकास-छूट जारी रहेगी और ३१ मार्च, १९६१ के बाद लगने वाले दूसरे संयंत्र या मशीनों के लिए २५ प्रतिशत की दर से दी जाने वाली विकास छूट घटाकर २० प्रतिशत कर दी जाएगी।

६. विदेशी शिल्पिक विशेषज्ञों को, जिन्हें अब २४ से ३६ महीने तक के लिए कर की छूट दी जाती है, सभी मामलों में समान रूप से ३६ महीने के लिए छूट दी जाएगी।

८. सरकार द्वारा स्वीकृत उद्योगों को कर्ज देने वाली संस्थाओं को विशेष प्रारक्षित निधि में अन्तरित उन रकमों के लिए, जो प्रत्येक वर्ष की कुल आय के १० प्रतिशत से अधिक न हों, तब तक के लिये कुछ छूट लेने का अधिकार दिया गया है।

९. आय कर अधिनियम के अन्तर्गत ५ वर्ष के लिए कर से अवकाश का लाभ कुछ शर्तें पूरी करने वाले नए होटलों को भी दिया जाएगा।

१०. मार्च ३१, १९६१ के बाद बनाकर पूरे किए गए रियायशी मकानों के वार्षिक स्पेसमेंट में ६०० रु० सलाना की कटौती की व्यवस्था की जाएगी। यह रियायत मकान बन जाने की तारीख से सिर्फ तीन साल तक के लिए मिल सकेगी।

११. व्यापारिक प्रतिष्ठानों को भी ऐसे मकानों के लिए २० प्रतिशत की प्रारम्भिक मूल्य-ह्रास की छूट मिलेगी, जो २०० रु० मासिक से अधिक न पाने वाले कर्मचारियों के लिए बनाए गए हों।

प्रत्यक्ष करों में इन सब परिवर्तनों के फलस्वरूप ३ करोड़ रु० की अतिरिक्त राजस्व प्राप्ति होगी।

## प्रस्तावों का प्रभाव

केन्द्रीय उत्पादन शुल्कों के परिवर्तनों से २९ करोड़ २७ लाख रु० की अतिरिक्त प्राप्ति का अनुमान है। २ करोड़ ३० लाख रु० की रकम को छोड़, जो राज्यों को सौंप दी जाएगी, केन्द्रीय उत्पादन-शुल्कों से २८ करोड़ ६० लाख रु० की प्राप्ति होगी। आयकर और निगमकर के छोटे-छोटे परिवर्तनों से ३ करोड़ रु० की आमदनी होने का अनुमान है। इन प्रस्तावों के परिणामस्वरूप केन्द्र को ६० करोड़ ८७ लाख रु० की अतिरिक्त राजस्व प्रप्ति होगी, जिससे राजस्व का घाटा बिलकुल मिट जाएगा और राजस्व में २७ लाख रु० की बचत रह जाएगी। इस प्रकार १२५ करोड़ रु० का कुल घाटा कम होकर ६४ करोड़ रु० रह जाएगा, जिसे राजकोष हुंडियों के विस्तार से पूरा किया जाएगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राज्यों में भूमि सुधारों की प्रगति

विभिन्न राज्यों में भूमि-सुधार के उपायों की जो प्रगति हुई है वह संक्षेप में इस प्रकार है :—

## जमींदारों एवं बिचौलियों की समाप्ति

मैसूर, मध्यप्रदेश के भूतपूर्व मध्य-भारत क्षेत्र की माफी और इनामी भूमि तथा उत्तरप्रदेश के कुमायूं डिवीजन, जौनसार बावर और शहरी इलाकों को छोड़कर सभी राज्यों में जमींदारी या अन्य बिचौलिया पट्टेदारी समाप्त कर दी गई। मैसूर रियायत की व्यक्तिगत और इनामी भूमि में भी बिचौलिया समाप्त कर दिये गये हैं तथा कर्नाटक क्षेत्र में जागीरदारी समाप्त की जा चुकी है और इनामीदारों की समाप्ति कानून लागू किया जा रहा है और इनामीदारों की समाप्ति का कानून लागू किया जा रहा है। मध्यप्रदेश के भूतपूर्व मध्यभारत वाले इलाकों की माफी और इमानदारी भूमि में भी बिचौलियों को समाप्त करने के कानून बन चुके हैं। उत्तरप्रदेश के उपर्युक्त क्षेत्रों में भी इस कार्य में प्रगति हो रही है।

## आन्ध्रप्रदेश

आन्ध्रप्रदेश क्षेत्र में काश्तकारों के कब्जे में १ जून १९५६ को जो भूमि थी, उस पर उन्हें तीन साल और काश्त करने की छूट दे दी गयी थी। यह समय अब दो साल और बढ़ा दिया गया है। १ जून १९५६ के बाद बनने वाले काश्तकारों को कम-से-कम ६ साल का समय दिया गया है। इसका किराया सरकारी सिंचाई साधनों के अन्तर्गत भूमि के सम्पूर्ण उत्पादन के ५० प्रतिशत, सूखी भूमि के ४५ प्रतिशत और वेलिंग से सिंचाई होने वाली भूमि के २८.१।३ प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए।

जोत की अधिकतम सीमा निश्चित करने के विषय में कानून पास किया जा चुका है। यह सीमा भावी भूमि-ग्रहण के लिए १८ से २१६ एकड़ के मध्य तथा वर्तमान जोत के लिए २७ से ३१२ एकड़ के मध्य है।

तेलांगना के ३.८ लाख एकड़ भूमि पर चकबन्दी का काम हो रहा है।

## असम

किसानों को खुदकाश्त के अधिकार दे दिये गये हैं। भूस्वामी ३३.१।३ एकड़ भूमि तक व्यक्तिगत काश्त के लिए दुबारा कब्जा कर सकता है। परन्तु किसान को जब तक अन्यत्र भूमि न दी जाय, वह कम से कम ३.१।३ एकड़ भूमि अपने अधिकार में रख सकता है। बटाई का अधिक से अधिक किराया सम्पूर्ण उत्पादन के $\frac{1}{8}$ से $\frac{1}{5}$ तक तथा नगद किराया नजदीकी भूस्वामी को मिलने वाली राशि के ५० से १०० प्रतिशत तक होना चाहिए।

जोत की अधिकतम सीमा निश्चित करने के विषय में कानून पास किया जा चुका है। यह सीमा ३० एकड़ रखी गयी है। कानून बनाये जा चुके हैं और भूस्वामियों से उनके पास उपलब्ध जमीन के विषय में घोषणाओं की छानबीन की जा रही है ताकि फालतू जमीन का अन्दाजा लगाया जा सके।

चकबन्दी के कार्य को सुगम बनाने के लिए कानून पास किया जा रहा है।

## बिहार

छोटे रैयतों को १२ साल लगातार भूमि पर कब्जा रहने पर भूस्वामित्व के अधिकार प्राप्त होते हैं। पट्टेदारी लिखित रूप में होनी चाहिए। मौखिक पट्टेदार को बेदखल नहीं किया जा सकता।

काश्तकारी को नियमित करने के विषय में एक विधेयक राज्य विधान सभा के विचाराधीन है।

जोत की अधिकतम सीमा नियत करने के लिए एक विधेयक प्रवर समिति के विचाराधीन है। विधेयक में जोत की सीमा ३० से ९० एकड़ तक रखी गयी है।

१२,००० एकड़ भूमि की चकबन्दी की जा चुकी है और डेढ़ लाख भूमि में काम हो रहा है।

## गुजरात

सामान्यतया किसान आधी भूमि पर अधिकार रख सकता है और बाकी आधी भूमि पर जमींदार व्यक्तिगत काश्त के लिए कब्जा कर सकता है। जहां जमींदारों द्वारा

(शेष पृष्ठ १४४ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारतीय अर्थ-व्यवस्था में विदेशी सहायता

प्रोफेसर कृष्णचन्द्र बहादुर, एम० ए०

अन्य अर्द्ध विकसित देशों के समान ही भारत में भी कम से कम आमदनी, निम्न बचत प्रवृति तथा संकुचित पूँजी संचय का दुष्ट चक्र वर्तमान है। विकास-क्रम में विनियोग के लिये पर्याप्त बचत का जुटाना सभी अर्द्ध विकसित राष्ट्रों के लिये, जो जीवन निर्वाह की सीमा पर टिके हैं, एक कठिन काम है। ऐसी हालात में बिना धनी राष्ट्रों से काफी तायदाद में मदद पाये पिछड़े देशों का विकास सम्भव नहीं है।

आर्थिक दृष्टिकोण से भारत प्रगति के पथ पर है। लेकिन अब तक की प्रगति मात्र शुरुआत है। स्वयंधारी विकास की प्राप्ति तथा प्रत्येक नागरिक को यथोचित रूप से सामाजिक सेवा एवं सुरक्षा प्रदान करने के लिये अभी स्वदेश की प्रगति की राह पर बहुत दूर तक चलना है। फिलहाल राष्ट्रीय उत्पादन में ३.५ से लेकर ४ प्रतिशत की वृद्धि होती है, जबकि सालाना आबादी में २ प्रतिशत से अधिक की बढ़ोत्तरी हो रही है। इस प्रकार प्रति व्यक्ति जीवन स्तर में लगभग २ प्रतिशत वृद्धि का अन्दाज किया जा सकता है। फलतः अपर्याप्त बचत, जो इस समय राष्ट्रीय आमदनी का लगभग ८.५ प्रतिशत है, अधिक तायदाद में विदेशी सहायता की आवश्यकता की ओर इशारा करती है।

## औद्योगिक प्रसार

पहली योजना के अर्से में अमेरिका, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, कनाडा, रूस, न्यूजीलैंड, नार्वे तथा विश्वबैंक एवं फोर्ड संस्था से आर्थिक एवं प्राविधिक सहायता मिली। इसमें २३२ करोड़ रुपये का सबसे अधिक सहयोग अमेरिका का रहा। कोलम्बो योजना से सम्बन्धित राष्ट्रों के द्वारा भी ४५ करोड़ रुपये की सहायता मिली। सार्वजनिक क्षेत्र में १२.५ करोड़ रुपये को छोड़कर विश्व बैंक ने निजी क्षेत्र में १५ करोड़ रुपये लोहा एवं इस्पात कम्पनी को, ७.७ करोड़ रु० ट्राम्बे प्रोजेक्ट को तथा ४.८ करोड़ रु० भारतीय औद्योगिक साख एवं विनियोग निगम को कर्ज दिया।

दूसरी योजना के विनियोग कार्य-क्रम में विदेशी ऋण, विदेशी अनुदान तथा अन्य प्रकार की विदेशी सहायता पर विशेष बल दिया गया। दूसरी योजना के पहले दो वर्षों में ८१२ करोड़ २० रुपए की विदेशी सहायता प्राप्त हुई है। इसके बाद भी अमेरिका से १५४.७ करोड़, इंगलैण्ड से ५४.३ करोड़, कनाडा से ४७.६ करोड़ तथा जापान से ४.८ कर करोड़ रुपए की पर्याप्त सहायता मिली। पिछले वर्ष के पहले छह महीनों के दरम्यान विश्व बैंक ने पुनः रेलवे विकास के विस्तार एवं आधुनिकीकरण के लिए ८५० लाख डालर की सहायता दी। विदेशी सहायता मिलने वाले देशों में सोवियत रूस का स्थान विशिष्ट है, क्योंकि उसकी दी हुई रकम का इस्तेमाल खासकर लोहा एवं इस्पात, मशीन एवं शक्ति तथा इसी प्रकार के दूसरे मूलभूत उद्योगों के निर्माण एवं प्रसार में होता है, जो राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के विकास एवं उच्च जीवन-स्तर के लिए निहायत जरूरी समझा जाता है। भिलाई लोहे कारखाने के लिए सोवियत रूस ने ६३ करोड़ रुपए का ऋण दिया है। इसके अलावा तेल निकालने के क्रम में छानबीन करने खान सम्बन्धी औजार तथा विद्युत स्टेशन बनाने में सोवियत रूस ने प्राविधिक सहायता देने का प्रबन्ध किया है। इसी प्रकार निजी क्षेत्र में देश के बड़े-बड़े फर्मों के साथ साथ मिलकर कारखाना खोलने की उत्सुकता भी सोवियत सरकार दिखा रही है। बल्कि इस दिशा में व्यावहारिक तौर पर देहरादून में सूती कपड़े की मिल भी खोली जा चुकी है। कोलम्बो योजना के द्वारा भी शिक्षा, कृषि तथा छोटे पैमाने पर चलने वाले गांव के उद्योगों की काफी तरक्की हुई है। संयुक्त राष्ट्र विशिष्ट कोष के द्वारा भी दुर्गापुर में केन्द्रीय यांत्रिक अनुसन्धानशाला खोलने, कलकत्ता, मद्रास तथा कानपुर में प्रादेशिक श्रम संस्था खोलने तथा बंगलौर एवं भोपाल में स्थित इन्जिनियरिंग विद्यालय की सहायता करने के उद्देश्य से ३०, १२, ८०० डालर ऋण देने की व्यवस्था की गई है।

सामान्यतः अब तक प्राप्त विदेशी सहायता से हमारे उद्योगों को विकास करने का काफी मौका मिला है। इसी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधार पर हम लोग अपने रेलवे के प्रसार एवं विभिन्न उद्योगों में इस्तेमाल होने वाली मशीनों के पार्टस-पुर्जे के निर्माण करने और सिंचाई योजनाओं को चालू करने में कामयाब हो सके हैं। दूसरी योजना के अन्त तक मशीनी औजारों का उत्पादन दस गुणा बढ़ जाने की उम्मीद है, जो लगभग १० करोड़ रुपए मूल्य के होंगे। विदेशी ऋण ने कच्चा माल, पूंजीगत सामान तथा खाद्य सामग्री के जुटाने में काफी मदद पहुँचाई है। साथ ही विदेशी मुद्रा सम्बन्धी स्थिति में सुधार का भी वह एक मूल कारण बना है। इस प्रकार खेतों, कारखानों तथा औद्योगिक प्रतिष्ठानों की उत्पादन क्षमता बढ़ाने की पूरी कोशिश की जा रही है।

यद्यपि यह जाहिर है कि विदेशी सहायता के द्वारा उत्पादन एवं रोजगार में हुई वृद्धि का हम सही मूल्यांकन नहीं कर सकते, फिर भी इस बात को मानने से इन्कार भी नहीं कर सकते कि इस प्रकार की सहायता का हमारी अर्थ-व्यवस्था पर खास असर पड़ा है। निर्माण-रुपांकन एवं प्राविधिक जानकारी स्वरूप मिली हुई उक्त विदेशी सहायता का ही यह असर है कि आज हमारी अधिकांश परियोजनाओं में प्रयुक्त संयन्त्र अत्यधिक आधुनिक एवं समक्ष समझे जाते हैं। भारतीय तजुर्बा एवं उद्यम इससे काफी सबल हुआ है और औद्योगिक समाज की रचना के लिये लोगों में विश्वास और नवीन स्फूर्ति का संचार हुआ है। प्रथम योजना-काल में विनियोग की दर में २% की वृद्धि हुई और उस समय से प्रायः उत्तरोत्तर बढ़ती हुई यह दर १०-११% तक पहुँच चुकी है। अबतक के हुए कुल बिनियोगों का प्रतिफल तो बहुत माने में मिलने लगा है और कुछेक निर्माण कार्य आखिरी मंजिल पार कर रहे हैं। इस प्रकार सम्भाव्य उत्पत्ति की आशा लगातार बढ़ती जा रही है, जो पिछले वर्षों की अपेक्षा भविष्य में अधिक रफ्तार से बढ़ने की प्रेरणा निस्सन्देह देगी। ऐसा कहना बिल्कुल गैर मुनासिब नहीं होगा कि उक्त विदेशी सहायता के अभाव में हमारे विकास-कार्यों में या तो रुकावटें पैदा हो जाती या उनकी प्रगति बहुत धीमी हो जाती।

## विदेशी सहायता पर इतना भरोसा क्यों ?

जिस रफ्तार से हम आगे बढ़ रहे हैं, उससे हमारी आवश्यकताएं पूरी नहीं होंगी, ऐसा हम कभी कभी सोच बैठते हैं। परन्तु इस आधार पर विभिन्न देशों से प्राप्त विदेशी सहायता को हम किसी भी हालत में कम उपयोगी नहीं समझ सकते। हां यह दूसरी बात है कि हमें अपनी तमाम आवश्यकताओं को संतुलित रूप से पूरा करने के लिये और १०-१२ वर्ष चाहिये और इस बीच में पहले की अपेक्षा अधिक तायदाद में विदेशी सहायता की भी आवश्यकता होगी, तभी भविष्य में क्रमशः आने वाली योजनाएं सफल हो सकती हैं। इसके कारण स्पष्ट हैं। हमारे अपने साधन योजना सम्बन्धी खर्चों को चलाने के लिये काफी नहीं हैं। दूसरी योजना के आरम्भ में ही साधन प्राप्ति के सम्बन्ध में सरकार की यह नीति हो गई थी की करारोपण पर ज्यादा निर्भर किया जाय। नतीजा यह हुआ कि १९५८-५९ में सरकार की कुल आमदनी का ८५.५% टैक्स अथवा करों से वसूल हुआ। इस प्रकार भविष्य में लगातार होने वाले विकास-कार्य के लिये आन्तरिक साधन का श्रोत सूखता चला गया। दूसरी ओर प्रचलित प्रवृत्ति के आधार पर ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि निर्यात से होने वाली आमदनी, जो खास तौर पर चाय, जूट, सूती कपड़े, मैंगनीज आदि वस्तुओं पर निर्भर करती है, बहुत कम बढ़ेगी, जब कि आयात पर नियन्त्रण रहने के बावजूद भी पुराने उद्योगों के विस्तार तथा नये विशाल उद्योगों की स्थापना के लिये मशीन तथा अन्य पूंजीगत सामानों का आयात तेजी से बढ़ता जायगा। इससे भुगतान सन्तुलन में अप्रत्याशित विरोध उत्पन्न होगा। परिणामस्वरुप विदेशी पूंजी एवं सहायता की आवश्यकता जोरदार होती जायगी।

१०,२०० करोड़ रुपये की बृहदाकार वाली तीसरी पंचवर्षीय योजना के चालू होने में अब कुछ ही दिन शेष बचे हैं। इस अवधि में अनुमान किया जाता है कि प्रति वर्ष १४ प्रतिशत की दर से विनियोग होगा और कुल विकास की दर लगभग ६ प्रतिशत होगी। योजना में अनुमानित कुल विनियोग के लगभग ३२ प्रतिशत विनियोग की वित व्यवस्था विदेशी सहायता के द्वारा ही किया जायगा, जबकि पहली योजना में यह ६ प्रतिशत था और दूसरी योजना में १० प्रतिशत ही हैं। तीसरी योजना



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की महत्ता विकास की रफ्तार को बनाये रखने में ही नहीं है बल्कि उसे अधिक बढ़ाने में भी है। इस योजना में लगभग ६५० करोड़ रुपए की विदेशी सहायता प्राप्त होने का आश्वासन भी मिला है।

## विदेशी सहायता का भविष्य

इस सम्बन्ध में जो दो सवाल उठते हैं, पहला यह है कि देश की विकास योजनाओं को विदेशी सहायता पर आश्रित रखना कहां तक सुनिश्चित है और दूसरा यह है कि क्रमशः आने वाली योजनाओं में किस हद तक विदेशी सहायता प्राप्त हो सकती है ?

जहां तक पहले प्रश्न का सम्बन्ध है यह सुरक्षित रूप से कहा जा सकता है कि आर्थिक विकास के उद्देश्य से विदेशी सहायता स्वीकार करना देश के लिए किसी भी माने में हानिकारक साबित नहीं हो सकता। विश्व में आज जो विकसित अथवा धनी देश कहलाने का दावा करते हैं प्रायः सबने अपने विकास-कार्य को जारी रखने के लिए किसी न किसी रूप में विदेशी सहायता का सहारा लिया था। सोवियत रूस तथा जापान जैसे औद्योगिक देशों ने भी अधिक पैमाने पर विदेशों से प्राविधिक सहायता कबूल किया था। रूस की पंचवर्षीय योजना काल में स्टालिन ने इस बात को स्वीकार किया था कि "हम लोग इस बात को छिपाने का इरादा नहीं रखते कि औद्योगिक क्षेत्र में हम लोग जर्मनी, अंग्रेजी, फ्रांसीसियों, इटालियनों तथा खास-तौर पर अमेरिका निवासियों के छात्र हैं।" संयुक्तराष्ट्र संघ के ५५ तथा ५६ धाराओं के अनुसार भी विदेशी सहायता कार्यक्रम पर विशेष जोर दिया गया है। एशिया और सुदूरपूर्व के आर्थिक सम्मेलन ने स्थिति का अध्ययन करके इस बात पर महत्व दिया है कि पिछड़े देशों की आर्थिक स्थिति का विकास करने और उन्हें समृद्धशाली बनाने के लिए विदेशी सहायता जरूरी है। फिर भी विदेशी सहायता के सम्बन्ध में विचारणीय यह है कि इस प्रकार की सहायता राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक मामलों से सर्वथा मुक्त हो।

दूसरे प्रश्न के सम्बन्ध में, स्पष्ट है कि मौजूदा हालात में विश्व के विभिन्न देशों से हम अपनी योजना के सफल कार्यान्वय के लिए काफी तादाद में विदेशी सहायता प्राप्त कर सकते हैं। खास-खास परियोजनाओं के लिए अमेरिका तथा रूस की दिलचस्पी इस बात का सबूत है कि वे भविष्य में भी इसी प्रकार का सहयोगी विचार रखेंगे। अभी हाल में अमेरिका के राष्ट्रपति पद के लिए मि० जौन कैनेडी का निर्वाचन इस बात का सूचक है कि भारत को अमेरिका यथा शक्ति आर्थिक सहायता देने के लिए तत्पर रहेगा। यह जानकर तो निस्सन्देह गर्व होता है कि अपनी शांति-नीति के द्वारा ही हमने दो विरोधी देशों सोवियत रूस और अमेरिका को अपना घनिष्ठ मित्र बना लिया है और दोनों देशों से हमें बिना किसी शर्त के सहायता प्राप्त हो रही है। इतना ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं तथा विदेशी विनियोजकों से भी हम भविष्य में पर्याप्त सहायता की उम्मीद रख सकते हैं। परन्तु जरूरत इस बात की है कि विदेशों से प्राप्त किसी भी प्रकार की सहायता का समानाकूल उपयोग हो ताकि उससे सम्भावित लाभ प्राप्त हो सके।

## वास्तविक तथ्य

फिर भी वास्तविकता यह है कि चाहे हमें विदेशी ऋण तथा अन्य सहायता अधिकाधिक मात्रा में ही क्यों न मिलती हो, देश की विशुद्ध प्रगति हमारे यथार्थ सामर्थ्य के ऊपर निर्भर करती है। विदेशी सहायता के भरोसे ही हम विकास कार्य में होने वाली कठिनाइयों पर पूर्णतः विजय पाने की आशा नहीं कर सकते। साथ ही इस बात की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती कि इस प्रकार की सहायता सभी समय के लिए जारी भी नहीं रह सकती। अतः हमें स्वयं निर्मित अर्थ-व्यवस्था का निर्माण करना है जो स्वयं अपनी गतिसे चालू रहे। और इसके लिए संगठित एवं सक्रिय प्रयास जरूरी है।

तीसरी पंचवर्षीय योजना पर विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रथम और द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं का ज्ञान होना आवश्यक है।
प्रथम और द्वितीय पंचवर्षीय योजना पर सम्पदा के योजना अंक, राष्ट्र प्रगति अंक और राष्ट्रीय विकास अंक पढ़िये।

तीनों विशेषांकों को शीघ्र मंगाइये



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तीसरी योजना के पहले साल का बजट

श्री मोरारजी देसाई

चालू वर्ष की समाप्ति के साथ ही हम आयोजित विकास का एक दशक पूरा कर लेंगे और तीसरी पंचवर्षीय योजना का समारम्भ करेंगे। तीसरी योजना की सारी अवधि में हमें इस बात के लिए सतर्क रहना पड़ेगा कि हम उस व्यवस्था का कम से कम सहारा लें जिसे आम तौर पर घाटे का बजट कहा जाता है। दूसरों शब्दों में, योजना का आकार हमारे इकट्ठा करने के प्रयत्नों और बचत की रकम जुटाने की योग्यता पर निर्भर होगा।

चालू वर्ष में ९१९ करोड़ ६५ लाख रु० के राजस्व और ९८० करोड़ ३५ लाख रु० के व्यय का अनुमान था,

- अनुपात से अधिक आय।
- योजना पर १.११६ करोड़ रु० के व्यय की व्यवस्था।
- केन्द्र का भाग ९६६ करोड़ रु०।
- प्रतिरक्षा सेवाओं के व्यय में १६.२ करोड़ रु० की वृद्धि।
- छोटी बचत से १०५ करोड़ रु०।
- २३५ करोड़ रु० के बाजार-ऋण।
- ४२१ करोड़ रु० की विदेशी सहायता।
- चालू वर्ष (१९६०-६१) में केवल ३३.६६ करोड़ रु० का घाटा।
- कुल राजस्व में ४०.१३ करोड़ रु० की वृद्धि।
- पूँजीगत व्यय ४१६ करोड़ में।
- दूसरी योजना में १०४० करोड़ रु० के कर।
- विदेशी मुद्रा में ह्रास।
- चालू वर्ष में बहुमुखी प्रगति।
- महंगाई बढ़ी।

जिससे राजस्व खाते में ६० करोड़ ७० लाख रु० की कमी रही थी। वर्तमान अनुमानों के अनुसार अब ९२३ करोड़ ७२ लाख रु० के राजस्व और ९५७ करोड़ ३८ लाख रु० के व्यय की सम्भावना है, जिससे ३३ करोड़ ६६ लाख रु० की कमी रह जायगी।

राजस्व में ४० करोड़ १३ लाख रु० की वृद्धि का

मुख्य कारण यह है कि केन्द्रीय उत्पादन शुल्कों और निगम कर तथा आय-कर से अधिक प्राप्तियां हुई। साथ ही करों में राज्यों के हिस्से में ३६ करोड़ ६ लाख रु० की वृद्धि भी हुई। इस तरह राजस्व में वास्तविक वृद्धि ४ करोड़ ७ लाख रु० की होगी। सीमा शुल्कों की १६३ करोड़ रु० की आमदनी प्रायः अनुमान के मुताबिक ही है। अतिरिक्त उत्पादन शुल्कों को मिलाकर केन्द्रीय उत्पादन शुल्कों में ३९४ करोड़ ९८ लाख रु० की प्राप्ति होगी। जो मूल अनुमान से १५ करोड़ ३७ लाख अधिक है। वृद्धि की मदों में तम्बाकू, साफ किया हुआ डीजल तेल और मोटर गाड़ियां उल्लेखनीय हैं। इसका एक कारण इस वर्ष उत्पादन का बढ़ना और ज्यादा निर्यात है। निगम कर को मिलाकर आय सम्बन्धी करों से २५ करोड़ रु० की वृद्धि का अनुमान है। इसका मुख्य कारण पहले के वर्षों के बहुत से मामलों का निपटारा और अनुमान से अधिक वसूलियां हैं। लेकिन इसी के साथ आय कर राज्यों के हिस्से में भी ३४ करोड़ ९२ लाख रु० की बढ़ती होगी।

## वित्त वर्ष १९६१-६२

अगले साल (१९६१-६२) वर्तमान करों के आधार पर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## केन्द्रीय सरकार के बजट

### ( १९५५-५६—१९६०-६१ तक ) करोड़ रुपयों में

| | १९५५-५६ वास्तविक | १९५६-५७ वास्तविक | १९५७-५८ वास्तविक | १९५८-५९ वास्तविक | १९५९-६० संशोधित | १९६०-६१ बजट |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तट कर | १६६.६० | १७३.२३ | १७९.९९ | १३७.२९ | १५०.० | १६२.५० |
| उत्पादन कर | १४५.२५ | १९०.४३ | २७३.६२ | ३०२.९४ | ३५०.८२ | ३७९.६१ |
| कारपोरेशन टैक्स | ३७.०४ | ५१.१८ | ५१.१३ | ५४.३३ | ७८.० | १३५.० |
| आय कर | १३१.३६ | १५१.७४ | १६३.७० | १७२.०१ | १५२.० | १०५.० |
| उत्तराधिकार कर | १.८१ | २.११ | २.३० | २.७० | २.८५ | ३.० |
| सम्पति कर | | | ७.०४ | ९.५७ | १२.० | ७.० |
| रेलवे भाड़े पर कर | | | ४.६८ | १२.२४ | १२.५६ | १२.७७ |
| व्यय कर | | | | .६४ | .८० | .९० |
| उपहार कर | | | | .९८ | .८० | ५.६९ |
| आफीस कर | २.०९ | २.१९ | २.८७ | ३.१५ | ४.२६ | १५.७१ |
| ब्याज | २.८४ | ५.६५ | ६.१८ | ८.३१ | ८.२७ | ५७.२२ |
| टकसाल और चलन | २३.०९ | २४.२९ | ३३.२७ | ३२.०३ | ५५.८७ | ५७.२२ |
| प्रशासन | १४.४५ | १४.२८ | १४.०८ | ५१.०१ | ४७.५४ | ५३.१९ |
| निर्माण कार्य | २.६६ | २.६२ | २.५२ | २.९४ | ३.१३ | ३.०० |
| विविध | २४.७९ | २१.२२ | २३.६६ | ३५.०४ | ३५.० | ३९.७३ |
| डाक-तार | ३.४७ | ६.२२ | ३.७१ | ६.२४ | ४.१६ | .४७ |
| रेलवे से | ५.८० | ५.८६ | ६.२९ | ६.२६ | ५.७५ | ५.६४ |
| कुल आय | ५०४.३२ | ५८९.६६ | ७२५.८० | ७५७.८९ | ८३८.६६ | ८१९.६५ |

६६२ करोड़ ९२ लाख रु० के राजस्व और १०२३ करोड़ ५२ लाख रु० के व्यय का अनुमान है, जिससे ६० करोड़ ६० लाख रु० का घाटा रहेगा। इस साल सीमा शुल्कों में १ करोड़ रु० की वृद्धि का अनुमान है और केन्द्रीय उत्पादन शुल्कों में ११ करोड़ २६ लाख रु० तथा आय कर और निगम कर को मिलाकर ६ करोड़ रु० की वृद्धि की सम्भावना है। रेलों से मिलने वाले अंशदान में १६ करोड़ २३ लाख रु० की वृद्धि का अनुमान है। लाभांश की दर ४ प्रतिशत से बढ़कर ४। प्रतिशतहो जायगी। इसके अलावा रेल किराया कर की जगह रेलवे साधारण राजस्व में प्रतिशत १२॥ करोड़ रु० का अतिरिक्त अंशदान देंगी, जो राज्यों को अनुदान में दे दिया जायगा। रिजर्व बैंक का लाभ चालू साल की ४० करोड़ रु० की कम से २॥ करोड़ रु० ज्यादा होगा। पब्लिक ला ४८० में प्राप्त अनुदान में भी ५ करोड़ रु० की वृद्धि का अनुमान है। अगले वर्ष आय कर में राज्यों के हिस्से में६ करोड़ १९ लाख रु० की कमी इस कारण होगी कि पहले की बकाया रकमों की कम अदायगी की जायगी, पर दूसरी ओर कुछ मदों में कम प्राप्ति होगी, जैसे लोहा, इस्पात के सरचार्ज में, जिसमें प्रतिधारण मूल्य में अस्थायी वृद्धि के कारण ३ करोड़ ४० लाख रु० की कमी हो जायगी।

### व्यय

अगले वर्ष असैनिक व्यय में ४९ करोड़ ९४ लाख रु० और प्रतिरक्षा व्यय में देशी और विदेशी ऋणों के बढ़ने से ब्याज सम्बन्धी अदाइमियों के अन्तर्गत ९ करोड़ ५५ लाख रु० की वृद्धि होगी, विकास और सामाजिक सेवाओं पर ३२ करोड़ ८८ लाख रु० अधिक खर्च होंगे और आय कर में राज्यों के हिस्से में कमी के कारण उनकी जो तदर्थ अनुदान दिये जाते हैं, उनमें २ करोड़ ७६ लाख रु० की वृद्धि हो जायगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले साल सेना के अनुमानों में ९ करोड़ २० लाख रु० और जल सेना तथा वायुसेना के खर्च में ३ करोड़ ५४ रु० की वृद्धि होगी। फौजी पेंशनों के बढ़ने से भी करीब ३ करोड़ ४६ लाख रु० अधिक खर्च होगा।

## पूंजीगत व्यय

चालू साल में पूंजीगत व्यय के लिए ३७१ करोड़ रु० रखे गये थे, पर संशोधित अनुमान ४१६ करोड़ रु० का है। पहले से अधिक आयात, खासकर गेहूँ के आयात के कारण अनाज की खरीद पर ३० करोड़ ४८ लाख रु०, सीमावर्ती सड़कों के निर्माण के कारण १३॥ करोड़ रु० और तेल की खोज के लिए ७ करोड़ ९४ लाख रु० अधिक व्यय होंगे। सिंधु-नदी- संधि के अनुसार भी विश्व बैंक को ८ करोड़ २७ लाख रु० देने पड़े। अगले साल पूंजीगत व्यय के लिए ४५४ करोड़ रु० रखे गये हैं जो चालू साल के संशोधित अनुमानों से ३८ करोड़ रु० अधिक है। रेलें अपने पूंजी व्यय में ३६ करोड़ ३८ लाख रुपये खर्च करेंगी, लेकिन गल्ले की खरीद में २६ करोड़ रु० कम व्यय होंगे। इसके अलावा सीमावर्ती सड़कों के लिए ७ करोड़ ७० लाख रु०, औद्योगिक विकास के लिए ८ करोड़ ४६ लाख रुपये दिल्ली प्रशासन द्वारा प्राप्त भूमि के विकास पर ५ करोड़ २० लाख रु० और गल्ले के गोदाम को बनाने के लिए २ करोड़ ८३ लाख रु० की व्यवस्था है। राज्यों को ऋण देने के लिए इस साल ३५६ करोड़ ७ लाख रु० और अगले साल ४०९ करोड़ २२ लाख रु० बन्दरगाह ट्रस्टों, सरकारी नियमों आदि का कर्ज देने के लिए इस साल १७४ करोड़ ३७ लाख रु० और अगले साल १७० करोड़ ६० लाख रु० की व्यवस्था है।

## तीसरी योजना के लिए

अगले वर्ष योजना को अमल में लाने के लिए ९४३ करोड़ रु० के खर्च की व्यवस्था की गयी है। इसमें १८१ करोड़ राजस्व खाते का और बाकी ७६२ करोड़ रु० कर्जा को मिलाकर, पूंजी खाते का है। इसके अलावा रेलें अपने साधनों से २३ करोड़ की व्यवस्था करेंगी। इन अनुमानों में राज्यों की मदद के लिए ३५२ करोड़ रु० हैं, जिनमें ९० करोड़ राजस्व और २६२ करोड़ पूंजी खाते के हैं। राज्य अपनी ओर से २०० करोड़ रु० प्राप्त करेंगे और इस तरह राज्यों के परिव्यय की रकम ५५२ करोड़ रु० होगी। योजना के केन्द्रीय अंग पर ६१४ करोड़ रु० खर्च होगा। इस तरह तीसरी योजना के पहले साल केन्द्र और राज्यों का खर्च ११,६६ करोड़ रु० होगा।

आर्थिक स्थिति आशामय है। तरह-तरह की कठिनाइयों के बावजूद हम अपनी अर्थ-व्यवस्था में नई गति लाने में सफल हुए हैं। सरकारी क्षेत्र ने काफी तरक्की की है और ऐसे कामों को हाथ में लिया है जो बिलकुल नये हैं गैर सरकारी क्षेत्र भी काफी आगे बढ़ा है। देश में गांवों और शहरों में चारों ओर नये विकास का शुभारम्भ हो रहा है।

हमारी दूसरी योजना पहली के मुकाबले बड़ी और ऊंचे उद्देश्यों की थी। दूसरी योजना भी सफलता से सम्पन्न हो रही है और आशा है कि हम इस पर लक्ष्य से १०० करोड़ अधिक, अर्थात् ४६०० करोड़ रु० खर्च करेंगे। दूसरी योजना में कुल अतिरिक्त कर १०४० करोड़ रु० के थे, जिनमें से लगभग ८०० करोड़ रु० के कर केन्द्रीय थे। ऋणों, छोटी बचतों और प्राविडेंट फंडों से करीब १४०० करोड़ रु० प्राप्त हुए। घाटे की वित्त व्यवस्था का अनुमान करीब ११०० करोड़ रु० का है, जो मूल अनुमान से १०० करोड़ रु० कम है और यह संतोष की बात है।

पिछले १० वर्ष की अवधि में हमारा औद्योगिक उत्पादन ६६ प्रतिशत और खेती की उपज ३३ प्रतिशत बढ़ी है। रासायनिक उद्योगों का भी तेजी से विकास हुआ है। साथ ही हमने ईंधन, बिजली, परिवहन और सिंचाई जैसी बुनियादी व्यवस्थाओं को भी काफी बढ़ाया है जो तीव्र आर्थिक विकास की नींव हैं।

अब हम अपनी तीसरी योजना को शुरू कर रहे हैं जो पहले की योजनाओं से बड़ी है और हमें अपने साधनों को जुटाने और ऐसे ढंग से काम में लाने के लिए अधिकाधिक प्रयत्न करना होगा, जिससे हम पहले से अधिक विकास कर सकें। राष्ट्रीय विकास परिषद् के निश्चय के अनुसार हमें अपने स्थूल आयोजन के लिए ८,००० करोड़ रु० तक के कार्यक्रम बनाने चाहिए। लेकिन ७५०० करोड़ रु० की सीमा का पालन तो अवश्य करना चाहिये। तीसरी योजना में हमें यथासंभव घाटे की वित्त व्यवस्था का कम से कम सहारा लेना चाहिये। इसलिए तीसरी योजना का आकार



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे परिश्रम और बचत कर सकने की क्षमता पर निर्भर होगा। इसलिए यदि हम ७५०० करोड़ रु० के लक्ष्य से अधिक साधन जुटा सकें तो मुझसे ज्यादा प्रसन्नता और किसी को न होगी। हम इस आधार पर चल रहे हैं कि तीसरी योजना का खर्च पूरा करने के लिए हमें अपने विभिन्न सरकारी उद्योगों का मुनाफा भी प्राप्त हो सकेगा। रेलों के अलावा पिछले १० वर्षों में बहुत से सरकारी कारखानों में बड़ी-बड़ी रकमें लगाई गई हैं। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि ये उद्योग-धंधे इस ढंग से चलाये जाएं कि इनसे हमें काफी लाभ हो जिसे हम फिर से और उद्योग खड़ा करने में लगा सकें। हमारी योजना के लिए विदेशी सहायता का भी बहुत महत्व है, पर हमें हर संभव दिशा में विदेशी मुद्रा का खर्च घटा कर अपने निर्यात को बढ़ाना चाहिये। तीसरी योजना में हमने विदेशी सहायता की प्राप्ति का जो अनुमान किया है, उससे हम आगे नहीं बढ़ना चाहते।

## ऋण और बचत

बजट में २५० करोड़ रु० के बाजार-ऋणों का अनुमान किया गया था, जिसमें २५ करोड़ इनामी बौंडों का था। इस साल १७५ करोड़ रु० के दो ऋण जारी किये। १९६६ का ३॥ प्रतिशत बांड और १९८० का ४ प्रतिशत ऋण। इनमें पुराने ऋणों का रूपान्तरण करने की भी सुविधाएं दी गयीं। इन ऋणों में कुल १८० करोड़ ७० लाख रु० लगाये, जिसमें ७४ करोड़ ६० लाख रु० पुराने ऋणों के रूपान्तरण का था। इस साल इनामी बांडों से १२॥ करोड़ रु० प्राप्त होने का अनुमान है। चालू साल के पहले १० महीनों में छोटी बचत में पिछले साल की इसी अवधि से १९ करोड़ रु० अधिक जमा हुए और साल के अन्त तक १०० करोड़ रु० जमा होने का अनुमान है। पिछले साल कुल ८४ करोड़ रु० जमा हुए थे। अगले साल बाजार ऋणों से २३५ करोड़ रु०, थोड़ी बचतों से १०५ करोड़ रु० और विदेशी सहायता से ४२१ करोड़ रु० की प्राप्ति का अनुमान किया गया है। पब्लिक ला ४८० की निधियों से ९६ करोड़ रु० के आने की संभावना है।

## विदेशी भुगतान की स्थिति

चालू साल में हमारे विदेशों से भुगतान की स्थिति बिगड़ गयी। फरवरी, १७, १९६१ को हमारे पौंड पावने में १५७ करोड़ रु० था, जो पिछले वर्ष की इस अवधि से लगभग ४६ करोड़ रु० कम था। हमें अपना निर्यात बढ़ाने की भरपूर कोशिश करनी चाहिये। विदेशी मुद्रा बचाने के लिए विदेश यात्रा करने पर रोक लगायी जायेगी।

## बहुमुखी प्रगति

चालू वर्ष में बहुमुखी प्रगति हुई और सरकारी तथा गैर सरकारी दोनों क्षेत्रों में अधिक पूंजी लगी और उत्पादन बढ़ा, पर १९५९-६० में मौसम की खराबी के कारण खेती की फसल आशा से कम हुई।

१९६० के पहले १० महीनों में उद्योगों का उत्पादन पिछले साल की इसी अवधि से ११॥ प्रतिशत अधिक रहा। यह वृद्धि अब तक हुई सब वृद्धियों से अधिक है। सभी उद्योगों में खासकर खनिज-लोहा, लोहा और इस्पात, मशीन, कागज, रसायन, सीमेंट, इंजीनियरी, बिजली और परिवहन सामग्री के उत्पादन में वृद्धि हुई।

इस साल जनता के पास मुद्रा उपलब्धि में २१९ करोड़ रु० की वृद्धि हुई, जबकि १९५९ में १७१ करोड़ रु० की हुई थी। अनुसूचित बैंकों में जमा रकमों में १९६० में ६५ करोड़ रु० की वृद्धि हुई, जबकि पहले के वर्ष में २५४ करोड़ की हुई थी। इस अन्तर का एक मुख्य कारण पब्लिक ला ४८० के अनुसार होने वाले आयातों से उत्पन्न रुपया निधियां रखने की नयी व्यवस्था है। अनुसूचित बैंकों द्वारा दिये जाने वाले ऋणों में भी १९५९ की अपेक्षा दुगुने से भी ज्यादा वृद्धि हुई और ऋण और जमा का अनुपात १९६० के अन्त में ६२ प्रतिशत हो गया। इस कारण बैंकों ने रिजर्व बैंक से अधिक ऋण लिया।

थोक मूल्यों का सूचक अंक जो १९५९ के अंत में ११७.९ था, १९६० के अक्टूबर के मध्य में १२७.४ के उच्चतम अंक पर पहुँचा, पर साल के अंत में घटकर १२४.३ रहा। १९५९ की बनिस्बत २३९० का औसत ६.५ प्रतिशत अधिक रहा। औद्योगिक कच्चे माल में मुख्यतः तिलहन, कपास और जूट में १८ प्रतिशत और बने माल में ११ प्रतिशत की वृद्धि हुई। चावल के मूल्यों में ७ प्रतिशत वृद्धि और गेहूँ में ११ प्रतिशत कमी हुई। यह ठीक है कि दूसरी योजना की प्रायः पूरी अवधि में मूल्यों का रुख चढ़ाव की ओर रहा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कर दान की क्षमता

श्री ओमप्रकाश तोषनीवाल

राज्य आय के विभिन्न श्रोतों में एक श्रोत करों से प्राप्त होने वाली आय का है। कर प्रत्यक्ष हो सकते हैं अथवा अप्रत्यक्ष। यह स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष करों की अपेक्षाकृत करों का औचित्य अधिक समझा जाता है, क्योंकि इसमें जनता कर देते भी कर देने की चिन्ता से मुक्त रहती है। फिर एक ऐसे देश में जहां लोगों का जीवन स्तर निम्न हो, आय के साधन सीमित हों, अर्थ-व्यवस्था के विकास हेतु अप्रत्यक्ष करों का ही सहारा लिया जा सकता है। यही कारण है कि देश में अप्रत्यक्ष करों का बाहुल्य है! सन् १९६१-६२ के लिए रक्खे गये बजट में वित्त मन्त्री ने जिन ६० करोड़ ८७ लाख रुपये के नये करों की घोषणा की है उनमें ५७ करोड़ ८७ लाख रुपये की आय अप्रत्यक्ष करों से और केवल ३ करोड़ रु० की प्राप्ति प्रत्यक्ष करों से अनुमानित की गई है। लेकिन कर प्रत्यक्ष हों अथवा अप्रत्यक्ष, करारोपण में कुछ सिद्धान्तों को दृष्टि में रखा जाता है। करारोपण के अनेक सिद्धान्तों में कुछ प्रमुख सिद्धान्त निम्न हैं—

(१) व्यय का सिद्धान्त (Principle of Cost)—इसका अभिप्राय यह है कि कर नीति का निर्माण इस प्रकार किया जाय कि राज्य उन सेवाओं का पूरा व्यय कर दाताओं से वसूल कर ले जो उसने जनता के लिए की हैं। सैद्धान्तिकता के साथ-साथ न्यायशीलता के दृष्टिकोण से भी यही सिद्धान्त सर्वोत्तम प्रतीत होता है। लेकिन इसके व्यवहारिक पहलू पर भी विचार करने की आवश्यकता है। समाज के साथ यह बात पूर्णतया व्यवहारिक है कि राज्य समाज पर जो खर्च करेगा वह उसी से करों के रूप में प्राप्त भी करेगा, लेकिन व्यक्ति अथवा वर्ग विशेष के साथ जब हम इस सिद्धान्त पर विचार करते हैं तो उसकी व्यावहारिकता पूरी सन्देहयुक्त है। राज्य की ओर से किस व्यक्ति अथवा किस वर्ग पर क्या खर्च किया जा रहा है। उसी के अनुरूप उस व्यक्ति अथवा वर्ग से कर प्राप्त किया जाय। यह बात भले ही सिद्धान्त और न्याय के अनुकूल हो लेकिन व्यवहार में सर्वथा असम्भव है। व्यावहारिक असम्भवता विशेष रूप से इसलिए नहीं कि राज्य द्वारा दी गई सेवाओं के व्यय का मूल्यांकन कठिन है अथवा कहीं २ असम्भव है वरन इसलिए कि राज्य जिस वर्ग पर अधिक खर्च करेगा अनिवार्यतः वह वर्ग ऐसा होगा जो करदान क्षमता में सबसे पीछे है। और फिर राज्य है भी तो इसीलिए कि पिछड़े और गरीब व्यक्तियों समाज के सम्पन्न और प्रगतिशील व्यक्तियों के समकक्ष बनाये!

सेवा लाभ का सिद्धान्त (Benefit of Services Principle)—इसका अभिप्राय है कि प्रत्येक करदाता से कर उस लाभ के अनुपात में लिया जाय तो उसे राज्य सेवाओं से प्राप्त हुआ है। यहां फिर, यह अत्यन्त कठिन है कि इस प्रकार की दी गई सेवाओं द्वारा उपर्जित लाभ को व्यक्ति विशेष के साथ कैसे नापा जाय। लेकिन क्योंकि यह स्पष्ट है कि अधिकांश दशाओं में राजकीय सेवाओं से सम्पन्न वर्ग की अपेक्षा गरीब वर्ग के लोगों को ही अधिक लाभ होता है, ऐसी दशा में गरीबों से उनके द्वारा प्राप्त लाभ के अनुपात में कर प्राप्त करना व्यावहारिक दृष्टि से कभी भी सम्भव नहीं कहा जा सकता। और यदि राज्य ऐसा करता है तो वह अपने उस लक्ष्य के प्रतिकूल चलता है, जिसके अन्तर्गत वह कल्याणकारी राज्य बनाने के लिए बचन बद्ध है। कर नीति का सामान्य आधार तो यही है कि सम्पन्नशाली व्यक्तियों से अधिक कर प्राप्त किया जाय। सेवा लाभ का सिद्धान्त तो केवल समाज के सामूहिक लाभ को ध्यान में रख कर ही कार्यान्वित किया जा सकता है। व्यक्ति अथवा वर्ग विशेष पर कर लगाने में यह आधार उचित नहीं बैठ सकता।

(३) करारोपण का तीसरा सिद्धान्त 'कर दान क्षमता' (Ability to pay principle) का है। वास्तव में व्यवहारिक दृष्टिकोण से यही सिद्धान्त सबसे अधिक महत्व का है। इस सिद्धान्त का सरल सा अभिप्राय है कि प्रत्येक व्यक्ति से उतना कर प्राप्त किया जाय



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितना कि उसमें कर चुकाने की क्षमता है। न्याय के बाह्य स्वरूप की दृष्टि से भले ही यह बात कम जचती हो, लेकिन वास्तविक न्याय के आधार पर तो हमें इसे स्वीकार करना ही चाहिये। व्यक्ति समाज के लिए है, समूची सम्पत्ति समाज की है। अतः सम्पन्नशाली व्यक्तियों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वे समाज में पिछड़े और गरीब अपने बन्धुओं के हित में क्षमतानुसार करों के रूप में त्याग करें। आज की कर व्यवस्था में इसी सिद्धान्त का मूलतः पालन किया जाता है।

आइये 'करदान क्षमता' की कसौटी पर हम नये बजट में लगाये गये करों का कुछ अध्ययन करें। जैसा कि पूर्वतः लिखा जा चुका है कि बजट में प्रस्तावित अतिरिक्त करों का ६५ प्रतिशत अप्रत्यक्ष करों से प्राप्त किया जायेगा। इसके अन्तर्गत 'सीमा शुल्क' और 'केन्द्रीय उत्पादन शुल्क' आते है। बजट में दोनों ही स्रोतों से अतिरिक्त आय के रूप में लगभग बराबर की ही राशि का अनुमान लगाया गया है, जो क्रमशः २६२७ और २८६० लाख रु० हैं।

## सीमा शुल्क

जहां तक सीमा शुल्क का प्रश्न है इस बार ४१ वस्तुओं पर सीमा शुल्क में वृद्धि की है और जैसा कि वित्त मन्त्री ने कहा है इतनी अधिक वस्तुओं पर पहली ही बार कर बढ़ाये गये हैं। सीमा शुल्क में वृद्धि का बहुत कुछ प्रभाव मध्यम वर्ग पर भी पड़ेगा, परन्तु निम्न वर्ग इससे कम प्रभावित होगा। इस दृष्टि से सीमा शुल्क के विषय में आलोचना की गुंजाइस कम ही रह जाती है। फिर सीमा शुल्क में वृद्धि का अभिप्राय निश्चित रूप से देश के कारखानों को बढ़ावा देना है, फिजूल खर्चा कम करना है। विदेशी मुद्रा की बचत करना है। इन सभी बातों को अंगीकार करना हमारे लिए आज नितान्त आवश्यक है।

## उत्पादन कर

उत्पादन कर के विषय में बजट में बतलाया गया है कि १४ वस्तुओं के उत्पादन शुल्क की दरों में वृद्धि की गई है और १८ नई चीजों पर पहली बार शुल्क लगाया गया है। उत्पादन कर लगाये जाने वाली सूची की विशेषता यह है कि उसमें ऐसी वस्तुएं हैं जिनके ऊपर कर लेने का अभिप्राय है समाज के सभी वर्गों को प्रभावित करना। न्याय की दृष्टि से यह बात उचित भी है। लेकिन उत्पादन कर का जब हम और अधिक विश्लेषण करते हैं, तो हम पाते हैं कि पिछले ५ वर्षों में कुल उत्पादन कर का ६० से ८० प्रतिशत केवल कपड़े, तम्बू, चीनी, दियासलाई, सीमेंट, मिट्टी का तेल और स्प्रिट से प्राप्त किया जा रहा है। इनमें से अधिकांश वस्तुयें वे हैं जो जीवन के लिए परम आवश्यक है। इस प्रकार करारोपण करके सभी वर्गों पर कर भार डालने का एक सफल प्रयत्न होता रहा है। गत वर्षों की भांति इस बार भी वही नीति अपनाई गई है। बढ़ाये गये करों के विषय में यों तो वित्त मन्त्री ने स्वयं यह स्वीकार किया है कि इन करों से आम जनता पर करों का भाव बढ़ जायेगा। यह वित्त मन्त्री की दूरदर्शिता है कि ऐसा स्वीकार करके उन्होंने अपने को एक बहुत बड़ी आलोचना से बचा लिया है लेकिन तथ्य तो यह है कि आम जनता की दैनिक आवश्यकताओं की इतनी अधिक वस्तुओं पर कर लगाना उचित नहीं लगता। हमारा ऐसा सोचने का आधार भावुकता नहीं वरन आर्थिक सत्य है। निःसन्देह दो योजना काल में लोगों की आय बढ़ी है। लेकिन इस आय का अर्थ समझने के लिए हमें दो प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने होंगे। प्रथम, इस काल में वस्तुओं के मूल्य कितने बढ़े हैं और द्वितीय इस बढ़ी हुई आय का वितरण किस प्रकार हुआ है। हम यह स्वीकार करके भी चले कि मूल्यों को दृष्टि में रखते हुये भी आय में वृद्धि हुई है तो दूसरी ओर यह स्वीकार करना होगा कि उस आय का समान वितरण नहीं हो सका है। इन १० वर्षों में, कहना शायद ठीक रहेगा। रुपये ने रुपये को खेंचा है। ऐसी दशा में गरीब वर्ग की स्थिति में कुछ ऐसा सुधार हुआ हो कि उससे उसके उपयोग की परम आवश्यक वस्तुओं पर हम कर प्राप्त करें, हमें इसे स्वीकार करने में संकोच होता है। अतः राष्ट्र विकास हेतु नये बजट का स्वागत करते हुये भी हमें बजट में प्रस्तावित दियासलाई मिट्टी का तेल, चाय, कपड़ा, सम्बाकू आदि की कर वृद्धि खटकती ही है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76333

# देहातों से नये करों की संभावना !

पिछले दो तीन वर्षों से अनेक अर्थ-शास्त्रीय क्षेत्रों में यह कहा जा रहा है कि देश की विकास योजनाओं में अब देहातों को भी अधिक योगदान देना चाहिए। अर्थात् अब उन पर भी पहले की अपेक्षा कुछ अधिक कर लगाने चाहिए। इस विचार के समर्थन में वे निम्नलिखित युक्तियां देते हैं।

१—अनाज तथा अन्य कृषि पदार्थों के मूल्य पहले की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गये हैं। फिर भी वे २५-३० साल पुराना लगान दे रहे हैं।

२—सरकार की भिन्न भिन्न विकास योजनाओं से देहातियों को विशेष लाभ हो रहा है। सड़कें, स्कूल, अस्पताल आदि देहातों में अधिकाधिक खुल रहे हैं।

३—सिंचाई की नई-नई योजनाओं के कारण खेती की पैदावार बढ़ गई है। इसका कुछ प्रतिफल राज्य को भी मिलना चाहिए।

४—सम्पन्न वर्ग और नगरों के मध्य वित्तीय वर्ग पर पहले से ही इतने अधिक कर हैं कि उन पर और बोझ लादना कठिन है।

प्रश्न यह है कि देहातों पर नये कर किस सीमा तक लगाये जा सकते हैं। यह कर लगाना राज्य सरकारों का काम है और अभी तक राज्य सरकारें इस सम्बन्ध में कोई नीति निर्धारित नहीं कर पाई हैं। कर नीति के सम्बन्ध में नियत मथाई कमीशन भी कोई ठोस सुझाव नहीं दे सका था। पंजाब और राजस्थान में विकास कर लगाया गया था। यह कर उस भूमि पर था, जिसकी पैदावार नई सिंचाई योजना के कारण पहले से काफी बढ़ गई थी, किन्तु दोनों राज्यों में किसानों ने इस कर के विरुद्ध संघर्ष छेड़ दिया। फलतः इस कर से राज्य सरकारों को कोई विशेष आमदनी नहीं हो सकी।

आज कुल राजस्व में ८ प्रतिशत भाग भूमि करों का है, जबकि राष्ट्रीय आय में ५० प्रतिशत से अधिक कृषि का भाग है। इसलिये कृषि से अधिक लाभ की प्राप्ति उचित ही है। यदि हमें अपनी विभिन्न योजनाओं को पूर्ण करना है तो ३५) रु० प्रति एकड़ सिंचित भूमि पर और १५) प्रति-एकड़ असिंचित भूमि पर कर लेना होगा। इसके लिए निम्नलिखित सुझाव दिए गए हैं—

१—५ एकड़ से अधिक भूमि पर सरकारी मालगुजारी की दर बढ़ाई जाय।

२—खेती के लगान पर टैक्स लगाया जाय।

३—५ एकड़ से अधिक भूमि पर विशेष कर लिया जाय। यदि उस पर व्यापारिक फसल पैदा की जाती है।

किन्तु प्रोफेसर बी० जी० रामकृष्ण इन सब सुझावों की व्यावहारिकता पर सन्देह करते हैं। यह ठीक है कि किसान को अब अन्न के ज्यादा मूल्य मिलते हैं किन्तु उसका जीवन निर्वाह व्यय भी तो पहले से बहुत बढ़ गया है। समय-समय पर आने वाले प्राकृतिक प्रकोपों का भी उसे सामना करना पड़ता है। आज राजनैतिक दलों के प्रचार के द्वारा किसानों में एक नई चेतना भी जागृत हो चुकी हैं और वे आज कोई नया भार उठाने को तैयार नहीं है। यह ठीक है कि कुल राष्ट्रीय आय में कृषि का भाग ५० प्रतिशत है। परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि देहातों में रहने वाली जनता की कुल जन-संख्या का ८० प्रतिशत है, फिर देहातों में आमदनी काफी कम होती है। शहरों का एक मजदूर खेतीहर मजदूर से ५-७ गुना अधिक पाता है। इन सब बातों को देखते हुए हमें देहातों से कर वृद्धि के द्वारा बहुत आमदनी की आशा नहीं करनी चाहिए। हमें यह भी सन्देह है कि आज मत-संग्रह की राजनीति में पड़ा हुआ कोई शासकीय दल अपने मतदाता किसानों में असन्तोष पैदा करने का साहस भी कर सकता है।

राज्य देहाती किसानों पर कोई कर न लगावे, किन्तु केन्द्र ने जीवन के उपयोग में आने वाली अनेक वस्तुओं पर अप्रत्यक्ष कर लगाकर देहाती जनता से भी एक अच्छी राशि प्राप्त करने का प्रबन्ध कर लिया है।

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नमक कर के दो पहलू

नमक बनाने वाले छोटे कारखानों और सहकारियों पर नमक के उत्पादन के अनुसार कर लगाया जाता है। जिन छोटे कारखानों या सहकारियों के नमक बनाने की क्यारियां १० एकड़ से अधिक होती हैं, उनसे १ आना मन कर लिया जाता है। जिन कारखानों या सहकारियों की क्यारियां १० एकड़ से कम में होती हैं, उनसे कर नहीं लिया जाता। उन छोटे-छोटे निर्माताओं की सहकारियों से भी कर नहीं लिया जाता, जिनके सदस्यों की नमक की क्यारियां १० एकड़ से कम में होती हैं। नमक-कर से जो धन प्राप्त होता है, उसे इस उद्योग को बढ़ाने पर खर्च किया जाता है।

भारत में नमक-कर प्राचीन काल से चला आ रहा है। अभी हालही में सिद्धराज जयसिंह के समय की 'कर व्यवस्था' का पता लगा है। उस कर व्यवस्था के अन्तर्गत नमक पर कर भी लगता था। १९४६-४७ तक बाहर से आनेवाले और देश में बनाये जाने वाले नमक पर कर लगाया जाता था, जिससे विशुद्ध वार्षिक आय ९ करोड़ रुपये के लगभग होती थी। देश में जो नमक बनाया जाता था उस पर कर १.२६ न. पै. प्रतिमन की दर से था। इस हिसाब से एक वर्ष में एक व्यक्ति पर इस कर का भार केवल २५ न. पै. आता था।

कुछ लोग नमक पर कर लगाने के पक्ष में हैं और कुछ नहीं, दोनों पक्षों के तर्क संक्षेप से निम्न लिखित हैं। समर्थकों का कहना है की यह कर प्राचीनकाल से चला आ रहा है और इसका भार जनता पर पहले की अपेक्षा कम है, इसलिये इस कर से लोग अवगत हैं और नमक कर से उन्हें परेशानी नहीं महसूस होती। नमक कर परोक्ष कर के रूप में लिया जाता है। इस कर से कम आय वालों से भी राज्यकोष को कुछ आय हो जाती है।

कर के विरोधियों का मत है कि कर प्राचीन काल से चला आ रहा है और आगे भी चलता रहना चाहिये, यह कथन तर्कसंगत व उचित नहीं है। प्राचीन काल में नमक पर बहुत कम कर था और हर कोई नमक बना सकता था परन्तु वह स्थिति अब नहीं रही। नमक पर अप्रत्यक्ष कर की युक्ति भी उचित नहीं क्योंकि सभी पदार्थों पर लगाये हुये कर परोक्ष होते हैं, परन्तु सभी कर उचित नहीं होते हैं, यह कहना कि नमक कर का भार बहुत कम है, सर्वसाधारण और कम आय वाले वर्ग की आर्थिक दृष्टि से उचित तथा विवेकपूर्ण नहीं है। व्यवहार में यह देखा गया है कि सर्व साधारण व कम आय वाले लोगों को अप्रत्यक्ष कर बहुत देने होते हैं। नमक, तेल, गुड़ अन्न और वस्त्र, ये ऐसी चीजें हैं जिन पर लगाये गये कर का बोझ निम्न आय वाले वर्ग पर अधिक पड़ता है और यह 'बोझ' उसके जीवन स्तर पर विपरीत प्रभाव डाले बिना नहीं रहता।

ये ही कारण हैं, जिनसे नमक कर भारत में असन्तोषमूलक रहा है। नमक का हमारे जीवन में वही महत्व है जो हवा, पानी, अन्न आदि का। नमक के उत्पादन में लागत कम आती है, परन्तु कर के ही कारण मूल्य अधिक रहता था और पशुओं और मनुष्यों को आवश्यकतानुसार नमक नहीं मिल पाता था जिससे उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता था। सामान्य नागरिक की यह इच्छा थी कि स्वाभाविक रूप से पाये जाने वाले इस महत्वपूर्ण पदार्थ को स्वेच्छया उपयोग करने देना चाहिए।

१९४७-४८ के बजट में स्वाधीन देश की सरकार ने उपर्युक्त तथ्यों पर विचार करके इस कर को हटा दिया। कर हटा तो दिया गया, परन्तु नमक सस्ता, नहीं हुआ। देश की बदली हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जनसामान्य को आज तो योगदान करना ही होगा, अतएव यदि नमक कर दुबारा लगा दिया जाय तो अनुचित नहीं होगा।


भारतीय जूट मिल ऐसोसियेशन
रोयल एक्सचेंज

**कलकत्ता-१**

विज्ञप्ति

भारतीय जूट मिल ऐसोसिएशन की साधारण वार्षिक सभा की बैठक शुक्रवार, १७ मार्च १९६१, ११ बजे सुबह रोयल ऐक्सचेंज में होगी।

—मंत्री




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राज्य सरकारों के वित्तीय स्रोत

श्री देवीप्रसाद नौटियाल

गणराज्य भारत में वित्तीय व्यवस्था के अन्तर्गत वित्तीय-स्रोत तीन चार सूचियों में विभाजित किये गये हैं—(१) केन्द्रीय (२) राज्यीय और (३) स्थानीय।

संघीय वित्त सूची में सम्मिलित कुछ वित्तीय आय के स्रोत केन्द्र और राज्यों के लिए मिश्रित हैं, जैसे—संघीय उत्पादन कर (भारतीय संविधान की धारा २७२ के अधीन), निगम के अतिरिक्त अन्य आय कर तथा जूट कर आदि।

संघीय सूची में सम्मिलित आय के मुख्य स्रोत निम्नलिखित हैं:—आयात निर्यात पर, 'निगम कर' अतिरिक्त लाभ कर, व्यापार लाभ कर, उत्पादन कर, नमक कर, तटकर (आय सम्बन्धी और संरक्षणात्मक तट कर) मृत्यु तथा उत्तराधिकार कर। सम्पदा कर, रेल भाड़ों पर कर, व्यय कर, उपहार कर, अफीम कर, ब्याज की आय, नागरी प्रशासन, चलार्थ और टकसाल, नागरिक निर्माण कार्य, डाक तार और रेलें।

यहां पर संघीय वितीय स्रोतों की ची ही संक्षेप में दी गई है। इस लेख में हम केवल राज्यों के वित्तीय स्रोतों पर ही विस्तार से प्रकाश डाल सकेंगे।

१ नवम्बर १९५६ के बाद जब से भारत में राज्यों के पुनर्गठन की योजना लागू की गई, भारतीय संघ में 'क' और 'ख' श्रेणी के राज्यों का अन्तर समाप्त कर दिया गया है। सभी राज्यों को समान दर्जा दिया गया है और आय के साधन और व्यय के विषय भी प्रायः सभी राज्यों में समान स्तर पर हो गये हैं। अलग-अलग राज्यों में आय के कुछ स्रोतों और व्यय की मदों में एक दूसरे से कुछ भिन्नता होते हुए भी अधिकांश समान ही हैं। राज्यों की आय के प्रमुख साधन इस प्रकार हैं:—

(१) भूमिकर—द्वितीय महायुद्ध तक यह कर ही राज्यों की आय का मुख्य स्रोत रहा। १९५२-५३ में इससे लगभग ५९.२ करोड़ रुपये राज्य सरकारों की आय थी, जो उनकी कुल आय का लगभग १८ प्रतिशत थी।

(२) उत्पादन कर—१९५२ के पहले वित्त आयोग की सिफारिशों के अनुसार, तम्बाकू, दियासलाइयों और वनस्पति पर लगाये गये उत्पादन करों की विशुद्ध आय का ४० प्रतिशत राज्यों में जनसंख्या के आधार पर बांटा जाता था। १९५७ के दूसरे वित्त आयोग ने चाय, कहवा, चीनी, कागज और अनावश्यक तेलों पर लगाये गये उत्पादन करों को भी बांटने की सूची में जोड़ दिया है। अब इन सब उत्पादन करों की विशुद्ध आय का २५ प्रतिशत राज्यों में बांटा जाता है। १९५७ के कानून के अनुसार सूती वस्त्र, तम्बाकू और चीनी पर बिक्री कर के स्थान पर अतिरिक्त उत्पादन कर लगाये जाते हैं, जिनकी आय राज्यों में वितरित की जाती है।

(३) आयकर—(निगम कर के अलावा) इस कर के दो मुख्य स्रोत हैं—(१) राज्य सरकार द्वारा लगाये गये कृषि आय कर और (२) केन्द्रीय आय कर की प्राप्तियों में राज्य का भाग। खेती से होने वाली आय पर पहले लगान व माल गुजारी के अतिरिक्त कोई कर नहीं था और राज्य सरकारें इसे लगाने में हिचकती थीं, परन्तु कुछ राज्यों की सरकारों ने इसे न्यायपूर्ण तथा उचित समझ कर इस कर को लगाना प्रारम्भ कर दिया है। इस कर के लगाये जाने से भूमिकर में पायी जाने वाली असमानतायें कुछ मात्रा में कम हो गई।

(४) सम्पदा कर—बड़ी-बड़ी सम्पत्ति पर केन्द्र यह कर लगाता है, जिसकी आय राज्यों में वितरित की जाती है।

(५) रेल भाड़ों पर कर—यह कर दूसरी तथा तीसरी पंच वर्षीय योजना को पूरा करने के लिये राज्यों के वित्तीय साधनों की दृष्टि से लगाया गया है। इससे प्राप्त होने वाली ९९.७५ प्रतिशत राज्यों में वितरित किया जाता है। अब इस कर से प्राप्त होने वाली आय को रेलवे बजट में सम्मिलित कर लिया गया है, पर एक निश्चित राशि रेलवे राज्यों को देती रहेगी।

(६) राज्यीय आबकारी कर (State Excises) यह कर अफीम, गांजा, चरस, भांग, अलकोहल और कोकीन आदि मादक पदार्थों अथवा उससे तैयार औषधियों



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व श्रृंगार सम्बन्धी सामग्रियों पर लगाया जाता है। मोटर ईंधन के रूप में प्रयोग होने वाले अलकोहल पर भी यह कर लगाया जाता है।

(७) गाड़ियों पर कर—इस कर के अधीन अधिकांश आय राज्यीय मोटर गाड़ियों के कानून के अधीन होती हैं। इससे राज्य सरकारों को बहुत लाभ हो रहा है, जैसे जैसे मोटर यातायात का विकास होता जा रहा है वैसे वैसे इस कर से आय बढ़ती जाती है।

(८) बिक्रीकर—यह कर आज राज्य सरकारों की आय का प्रमुख साधन बन गया है। राज्यों के वित्त मंत्रियों ने बिक्रीकर को बहुत लचीला बना दिया है।

(९) स्टाम्प—स्टाम्प दो प्रकार के होते हैं। (१) अदालती और (२) गैर अदालती। पहला न्यायालयों द्वारा वसूल किया जाता है और दूसरा व्यापारिक दस्तावेजों पर लगता है।

(१०) वन कर—राज्य की सरकारों को जंगलों की ईंधन व इमारती लकड़ी तथा अन्य पैदावार—लीसा, कत्था, लाख, दियासलाई की लकड़ी, बांस, रिंगाल, ऐलीफेन्टा घास और जड़ी बूटियां आदि पर विक्रय शुल्क तथा चरागाहों की महसूल आदि से आय होती है।

(११) रजिस्ट्री कर—अचल सम्पत्ति-सम्बन्धी दस्तावेजों की रजिस्ट्री कराने पर शुल्क के रूप में एकत्र किया जाता है।

(१२) मनोरंजन कर—नाटक, सिनेमा, सरकस आदि मनोरंजन के व्यापक कारोबार पर यह कर लिया जाता है। इस कर से राज्य सरकारों की आय में वृद्धि होती ही रहती है। यह कर दर्शकों व तमाशवीनों से ही वसूल किया जाता है।

(१३) सिंचाई कर—इस मद की आय कुल आय में से सम्पादन-व्यय निकाल कर बतलाई जाती है। अधिकांश आय सरकारी नहरों, तालाबों, ट्यूबवैलों और सिंचाई कर आदि न मिलने पर जुर्माने से होती है। इसको निर्धारित करने में सभी राज्यों में समान नियमों का पालन नहीं किया जाता। पंचवर्षीय योजनाओं के लिये साधन जुटाने में इस कर में वृद्धि भी की जा सकती है।

(१४) ब्याज—इस मद की आय में जिला बोर्डों नगरपालिकाओं, किसानों, बैंकों, उद्योगपतियों आदि को दिये गये ऋण पर प्राप्त ब्याज से आय दिखलाई जाती है।

(१५) नागरी प्रशासन—(क) न्याय—नीलामी के माल की बिक्री से आया धन, कोर्ट फीस, जुर्माना, वकालत के लाइसेन्स, सनद फीस आदि इस मद के साधन हैं।

(ख) इसके अलावा जेल विभाग, पुलिस विभाग, शिक्षा विभाग, चिकित्सा विभाग, लोक स्वास्थ्य विभाग, कृषि विभाग, पशुपालन विभाग, सहकारी विभाग, उद्योग-धन्धा विभाग तथा अन्य सरकारी विभागों द्वारा होने वाली आय भी इसमें सम्मिलित होती है।

(१६) विविध—इस मदमें लेखन सामग्री, राज पत्र तथा अन्य पुस्तकों की बिक्री की आय, पासपोर्ट, कापीराइट आदि से आने वाली आय होती है।

(१७) केन्द्रीय सहायता—इस मद में जूट निर्यात कर का हिस्सा, आय में कमी के कारण सहायता अनुच्छेद विधान के २७५ (१) के अन्तर्गत, केन्द्रीय सड़क कोष से, औद्योगिक मकानात तथा सफाई, विस्थापितों का पुनर्वास, हाथ करघा तथा कुटीर उद्योग, बेकारी निवारण सहायता, कृषि सहायता, सहकारिता, पानी, स्वास्थ्य आदि के लिए केन्द्र की ओर से मिलने वाली केन्द्रीय सहायता में शामिल हैं।

## राज्यों के व्यय के विषय

राज्यों के व्यय के विषय इस प्रकार हैं:—

(१) कर प्राप्ति व्यय—कर्मचारियों का वेतन-भत्ता व उच्च कर्मचारियों की सुविधाओं का व्यय आदि इस विषय में शामिल है।

(२) सिंचाई—नहरों आदि सिंचाई के विभिन्न साधनों के मरम्मत पर व्यय।

(३) ब्याज—केन्द्रीय सरकार से लिये ऋण पर ब्याज प्रावीडैण्ट फण्ड या बीमा फण्ड और अन्य देनदारी का ब्याज इस मद में सम्मिलित है।

(४) नागरिक प्रशासन—इस मद पर राज्यों की सरकारों का सबसे अधिक व्यय होता है। इसके अन्तर्गत राज्य के सभी विभाग आ जाते हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य तथा पुलिस पर सर्वाधिक खर्च किया जाता है। पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत तो विकास योजनाओं पर बजट का एक भारी अंश व्यय किया जाता है।

(४) सामान्य प्रशासन—यह विषय देश और राज्य



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के ऊपर अत्यधिक भारस्वरूप है।

(५) नागरिक निर्माण कार्य—इस मद में पुरानी इमारतों, सड़कों, पुलों, डाक बंगलों, रेस्ट हाउसों कर्मचारियों का वेतन, कार्यालय का व्यय और औजारों आदि का खर्च शामिल है।

## स्थानीय वित्त

केन्द्र तथा राज्य की सरकारों की वित्त व्यवस्था के अवलोकन के बाद स्थानीय वित्त व्यवस्था पर भी तनिक प्रकाश डालना आवश्यक है। स्थानीय स्वराज्य की बुनियादी संस्थायें—नगरपालिकायें, जिला बोर्ड, नोटी फाइड बोर्ड, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट, कारपोरेशन और ग्राम हैं। स्थानीय क्षेत्रों के विकास का उत्तरदायित्व इन्हीं का होता है। प्रजातंत्रीय भारत में वालिग मताधिकार के मिल जाने से इन संस्थाओं का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है।

पंचायतों की आय के कुछ स्रोत इस प्रकार हैं—

कर—पंचायतें मवेशी कर, चूल्हा कर, सेवा कर, व्यवसाय कर तथा गाड़ियों पर कर आदि करों से पंचायतों को भारी आय होती है। उत्तर प्रदेश में ग्राम पंचायतों की आय ६३ प्रतिशत इन्हीं करों से होती है। करों के अतिरिक्त शुल्क और जुर्माने अनुदान आदि आय के मुख्य स्रोत है।

पंचायतों के व्यय—पंचायतों के व्यय के मुख्य विषय—सफाई, स्वास्थ्य, शिक्षा, कच्ची सड़के, छोटे नालों पर पुल, बाचनालय तथा पीने के पानी का प्रबन्ध है।

राज्य की सरकारों ने जिला बोर्डों के स्थान पर जिला परिषदों के गठन करने का निश्चय किया है। परन्तु आय के स्रोत और व्यय की मदें वही हैं।

आय के स्रोत—भूमि उपकर; हैसियत कर; अथवा जायदाद कर, राहदारी कर (तालाबों व घाटों आदि के उपयोग के लिये कर) शुल्क (बीमा पशु चिकित्सा, जिला बोर्ड के स्कूलों की फीस) कांजी हाउस (कैटिल पौंड), लाइसेन्स फीस (धोबी घाट, कसाई घर, झटका घर, आटा चक्की वालो से कर; सरकारी सहायता; और मेलों प्रदर्शिनियां तथा सार्वजनिक बाग-बगीचे व उद्यान इसकी आय के मुख्य स्रोत हैं।

## व्यय के विषय

जिला बोर्ड अथवा परिषद निम्नलिखित कार्यों पर व्यय करती हैं—शिक्षा (प्राथमरी, जूनियर, माध्यमिक तथा अन्य तकनीकी स्कूल); नगर निर्माण कार्य (सड़के, पुल, घाट, डाक बंगले, कुएँ, तालाब आदि की मरम्मत); सार्वजनिक स्वास्थ्य, चिकित्सा और सफाई आदि; प्रशासन व्यय (परिषदों के चुनाओं, अधिवेशनो, अध्यक्षीय भत्ता-सवारी तथा कार्यालय का व्यय); कर वसूली के कर्मचारियों का वेतन आदि, सरकारी ऋण का ब्याज और मेले, हाट व्यवस्था तथा प्रदर्शनियों आदि।

जो महत्व ग्राम पंचायतों व जिला परिषदों का ग्रामीण-क्षेत्र के लिये है, वही महत्व नगर निगमों व नगर पालिकाओं का नगरों के लिये है। नगरों की समस्यायें गांवों की समस्याओं से भारी पेचीदी है, इसलिये नगरों के प्रशासन, निर्माण कार्य तथा बिजली, पानी, मकान, सफाई और शिक्षा की सारी व्यवस्था नगर निगम व पालिका को सुचारू रूप से चलानी होती है।

नगर निगमों व पालिकाओं के आय के स्रोत—(१) स्थानीय कर, (२) राज्य सरकारों से अनुदान (३) उद्योगों से होने वाली आय पर कर है।

स्थानीय कर में व्यापार कर, चुंगी और राहदारी सम्पति कर—मनुष्यों पर कर—शुल्क एवं परमिट कर, (पानी, रोशनी, मैला सफाई, मवेशियों सवारियों—गाड़ियों, तांगे, साइकलों टैक्सियों पर कर), आदि अनेक कर शामिल हैं। राज्य की ओर से अनुदान आय का प्रमुख स्रोत है।

नगरपालिकाओं व निगमों की कई व्यवसायों से भी भारी आय होती है।

## व्यय के विषय

नगरपालिकाओं तथा नगरनिगमों के व्यय की मदें निम्नलिखित (१) प्रशासक और कर प्राप्ति व्यय हैं—(२) सार्वजनिक सुरक्षा के लिये चौकीदारों की नियुक्ति, आग बुझाने की मोटरे तथा अन्य असुरक्षा से बचने के उपायों पर खर्च करना; (३) सार्वजनिक स्वास्थ्य और चिकित्सा (रोगों तथा महामारियों की रोक-थाम के लिये) (४) सफाई; (५) जल-पूर्ति; (६) शिक्षा; (७) ऋण व ब्याज; (८) सार्वजनिक निर्माण कार्य, आदि की व्यवस्था तथा दंगल समारोह आदि हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सिंधिया स्टीम नेविगेशन कम्पनी

सिंधिया स्टीम नेविगेशन कम्पनी लिमिटेड के शेयर होल्डरों की ४१वीं वार्षिक साधारण सभा में जो २२ फरवरी १९६१ को हुई, कम्पनी के अध्यक्ष श्री धरमसी एम. खटाऊ ने निम्नलिखित भाषण दिया।

शेयर होल्डरों की ४१वीं वार्षिक साधारण सभा में भाषण देते हुये श्रीधरमसी खटाऊ ने ३० जून १९६० को समाप्त होने वाले वर्ष में कम्पनी की प्रगति की चर्चा की और कहा कि भाड़े की आमदनी गत वर्ष की अपेक्षा १.७५ करोड़ रुपये अधिक रही और लदान भी दो लाख टन अधिक रहा, फिर भी विशुद्ध आमदनी पिछले वर्ष से कम रही। इसके मुख्य कारण ये हैं—भाड़े की दरों में कमी, खर्च में बढ़ोतरी, क्योंकि भिन्न-भिन्न बन्दरगाहों पर ज्यादा समय ठहरना पड़ा, स्ट्रैवोडोरिंग; मरीन तथा नहरों की देन-दारी पहले से बढ़ गई है। १०१ लाख रुपया विशेष ह्रास निधि में सुरक्षित रखने और ६.७४ लाख रुपये की सम्पत्ति की बिक्री की अतिरिक्त राशि को न लेते हुये कम्पनी को अपने कारोबार में ७४.५३ लाख रुपये का लाभ हुआ है, जो संसार भर में जहाजी उद्योग की गिरती हुई अवस्था को देखकर असन्तोषजनक नहीं कहा जा सकता।

६० न० पै० प्रति शेयर साधारण कोष में से डिविडेंड देने का प्रस्ताव है। इस में से टैक्स काट लिया जायगा।

अध्यक्ष ने बताया कि विदेशी व्यापार में भाड़ों की दर में कमी इसलिये हुई है कि जहाजरानी में काफी मन्दी छा गई है। ट्रैम्प रेट बहुत कम हो गये हैं, 'ट्रैम्प' और उन लाइनों के जहाजों में परस्पर प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है, जो विदेशी व्यापार में लगे हुये हैं। उनका भारत से प्रत्यक्ष सम्बन्ध न होते हुये भी जिन्हें भारतीय बन्दरगाहों पर ठहरना पड़ता है। यह प्रतिस्पर्धा उन जहाजों के द्वारा भी बहुत बढ़ गई है, जो विदेशों से भारतीय बन्दरगाहों पर अनाज तथा रासायनिक खाद लाते हैं। वापिस जाते हुये वे खाली जाने की अपेक्षा जो कुछ भी मिले, उसी पर माल ले जाना चाहते हैं। भारत, ब्रिटेन तथा यूरोपियन देशों के व्यापार में लगी हुई भिन्न-भिन्न जहाजी कम्पनियों के पारस्परिक समझौतों की पुष्टि करते हुए उन्होंने उस विचार-विनिमय की भी चर्चा की, जो सिन्धिया कम्पनी इन्डिया स्टीमशिप तथा अन्य सम्मेलन सहयोगियों के बीच में चल रही हैं। उन्होंने कहा कि शिपिंग सर्विसें आधुनिक उन्नतियों की रोशनी में पुर्नगठित हुई हैं तथा लगे हुए जहाजों के सर्वोत्तम प्रयोग को निश्चित करने और बन्दरगाहों पर लादने-उतारने की अधिकतम व्यवस्था प्रदान करने के लिये मेम्बर लाइनों की सेवायें परस्पर सहयोगपूर्ण बनाने के यत्न किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह राशनलाइजेशन की एक योजना है, जो अन्य उत्तम स्थापित उद्योगों के समूहों के द्वारा किये जाने वाले प्रयत्नों से भिन्न नहीं। अधिक संतोषजनक तथा उत्तम सेवा देने के लिये यह प्रबन्ध किया गया है।

हाल में जनरल कौंसिल आफ ब्रिटिश शिपिंग उद्योग ने कम विकसित देशों द्वारा अपनी राष्ट्रीय जहाजरानी विकसित करने के प्रयत्नों की आलोचना की है। इसकी चर्चा करते हुए श्री खटाउ ने कहा कि संसार भर में शिपिंग द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाइयों का दोष भारत जैसे देश पर मढ़ना अनुचित है। श्री खटाउ ने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में शिपिंग द्वारा अनुभव की जाने वाली वर्तमान कठिनाइयां इसलिए पैदा हुई हैं कि परंपरागत जहाजरानी के देशों ने प्रति वर्ष आवश्यकता से अधिक अपने जहाज बढ़ा लिये हैं। उन्हें उन्नत परिस्थिति को अधिक अच्छा समझना चाहिए था और संसार की व्यापारिक आवश्यकताओं के अनुसार वर्ष प्रति वर्ष टनेज को बराबर करने की सतर्कता लेनी चाहिए थी। उन्होंने कुछ देशों द्वारा टनेज में वृद्धि का निम्न उदाहरण दिया।

### प्रत्येक वर्ष १ जुलाई को टनेज

(जी० आर० टी० के दश लक्ष में)

| | १९४८ | १९५५ | १९५९ | १९५९ | १९६० |
|---|---|---|---|---|---|
| संसार का कुल | ८०.३ | १००,६ | ११८.० | १२४.९ | १२९.८ |
| जिसमें से यू. के. व उत्तर-आयरलैण्ड | १८.० | १९.३ | २०.३ | २०.८ | २१.१ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यू० एस० ए० | २६.९ | २३.९ | २३.१ | २२.८ | २२.३ |
| यूरोप के देश स्कैंडेनेविया तथा यू. के. छोड़कर | ८.१ | १४.७ | १८.५ | १९.६ | २०.१ |
| स्कैन्डेनेवियन देश | ७.३ | ११.७ | १४.७ | १६.३ | १७.२ |
| ग्रीस | १.३ | १.२ | १.६ | २.१ | ४.५ |
| साईबेरिया | — | ३.९ | १०.१ | ११.९ | ११.३ |
| पनामा | २.७ | ३.९ | ४.४ | ४.६ | ४.२ |
| जापान | १.० | ३.७ | ५.५ | ६.३ | ६.९ |

भविष्य ने बारे में श्री खटाऊ के अक्तूबर १९५९ में ८७ लाख जी० आर० टी० के पड़े हुए टनेज से घट कर जनवरी १९६१ में ३३ लाख जी० आर० टी० रह जाने का जिक्र किया और कहा कि भाड़े में कुछ भी वृद्धि नहीं हुई, जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि संसार में कुल जहाजों तथा व्यापार का असंतुलन काफी ठीक हो चुका है।

तटीय तथा पास के व्यापार का उल्लेख करते हुए श्री खटाऊ ने नमक और कोयले का रेल की बजाय, जहाजों में लादना, वेगनों की कमी तथा उतारने के कार्य की अक्षमता के फल स्वरूप बन्दरगाहों पर उतारने तथा जहाजों पर लदान में देर का जिक्र किया। इन के अतिरिक्त हुगली नदी के असंतोषजनक ड्राफ्ट्स के कारण भी प्रतिबंधित चढ़ाई के साथ तट पर लगे शिपिंग टनेज में काफी बरबादी हुई। उन्होंने कहा कि ये समस्यायें नेशनल शिपिंग बोर्ड के सामने रखी गई थीं तथा नियोगी कमेटी के सामने भी। उन्होंने यातायात के सभी साधनों के उचित परस्पर सहयोग तथा तटीय शिपिंग द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाइयों के शीघ्र समाधान पर जोर दिया।

नये जहाजों के प्रोग्राम का जिक्र करते हुए श्री खटाऊ ने कहा कि कम्पनी की सेवाओं में फ्लीट् में नये तथा हाल के बने जहाज लाये गये हैं, जिससे हम अपनी सेवाएं अधिक उत्तम बना सकें तथा प्रतियोगितामें ठहर सकें।

श्री खटाऊ ने भारत सरकार से वार रिस्क इन्श्योरेंस योजना जारी करने पर जोर दिया, जिससे विदेशों में खर्च होने वाली विदेशी मुद्रा की बचत संभव हो सके। उन्होंने सरकार के सामने प्रस्तुत प्रस्तावों को शीघ्र मानने पर बल दिया। श्री खटाऊ ने नये जहाजों के निर्माण के बढ़ते हुए खर्च का तथा कारोबार के संचालन में व्यय वृद्धि का जिक्र किया। तटीय और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में लगे हुए जहाजों के लिये भाड़े की आर्थिक दरों पर उचित नीति अपनाने पर उन्होंने बल दिया। वस्तुतः उन्होंने कहा, कि जहाज मालिक उससे कुछ अधिक नहीं चाहते जो कुछ प्रमुख तटीय उद्योगों को पहले दिया जा चुका है। श्री खटाऊ ने आगे आयोजित आधार पर भारतीय जहाजों के विस्तार की आवश्यकता पर बल दिया, जिसमें कि प्राप्य जहाजों का अधिकतम व्यवहार हो सके तथा भारतीय लाइनों में परस्पर बरबादीपूर्ण तथा अस्वस्थ प्रतियोगिता दूर की जा सके। इस बात को ध्यान में रखकर उन्होंने कहा कि जहाजों को नया लाइसेंस केवल नये मार्गों के लिये दिया जाय या उनके लिये जो भारतीय लाइनों द्वारा इस समय भलीभांति सेवित नहीं हैं।

अधीनस्थ कम्पनियों के कार्य का जिक्र करते हुए श्री खटाऊ ने कहा कि बी० एस० एन० (१९५३) प्राइवेट लि० ने जो कोंकण तट पर चलती हैं ६.९५ लाख रु० की और हानि दिखाई, जिससे कुल हानि रु० २८.६३ लाख हो गई। उन्होंने आशा प्रकट की कि सरकार कोंकण शिपिंग सर्विसेज कमेटी की रिपोर्ट पर शीघ्र कुछ निर्णय करेगी। सिंधिया वर्कशाप प्राईवेट लि० ने १६७३ रु० का छोटा नकद लाभ दिखाया। श्री खटाऊ ने बम्बई में एक जहाज-मरम्मत की फर्म को सरकार द्वारा अधिकार में लेने का जिक्र किया और जोर दिया कि गवर्नमेंट शिपिंग कारपोरेशनों के द्वारा सभी वर्कशापों से जहाज मरम्मत के कार्य के लिये टेंडर मांगने तथा न्यूनतम टेंडर-दाता को कार्य देने की प्रथा में कोई अन्तर नहीं पड़ना चाहिये, जिससे कारपोरेशन कम खर्च पर मरम्मत का लाभ उठा सकें। उन्होंने कहा कि जलनाथ इन्श्योरेंस लि० के कार्य से बीमा प्रीमियम में प्रायः १.८८ लाख रु० की वृद्धि हुई है और कहा कि १ जनवरी १९६१ से कम्पनी ब्रिटेन, यूरोपीय और सुदूर पूर्व के देशों से परस्पर संधि प्रबंध करने में सफल हुई है, जिससे कम्पनी को और भी लाभ होगा।

अन्त में श्री खटाऊ ने यातायात मंत्री, डा० सुब्बारायन शिपिंग के राज्य मंत्री श्री राजबहादुर, यातायात मंत्रालय के सचिव तथा डायरेक्टर जनरल शिपिंग और उनके अफसरों का भारतीय जहाज उद्योग के हित बढ़ाने के लिये धन्यवाद दिया।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नये वर्ष का रेलवे बजट

चालू वर्ष के रेलवे बजट में ८.६४ करोड़ रु० की बचत होने का अनुमान है। मूल्य ह्रास आरक्षित निधि में अधिक धन देने और सामान्य राजस्व को ऊंची दर से लाभांश देने के बावजूद यह बचत होगी। रेल के किराये में कोई परिवर्तन नहीं होगा और ढुलाई भाड़े में भी सामान्य रूप से कोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा।

इस समय कम माल पर जो विशेष पूरक चार्ज लगाया जाता है, उसकी दर १० प्रतिशत से बढ़ाकर २० प्रतिशत कर दी जायगी, जिससे रेलों द्वारा कम माल न भेजा जाए, क्योंकि उस पर रेलों का खर्चा ज्यादा आता है। इसी प्रकार कोयले पर अभी जो कम से कम ४२ किलोमीटर का भाड़ा लिया जाता है, वह बढ़ाकर कम से कम ७० किलोमीटर के लिए लिया जाएगा। इससे कम दूरी के लिए कम से कम भाड़ा ५ रु० प्रति टन कर दिया जाएगा। अभी यह भाड़ा ४.२५ रु० से ४.९८ रु० तक लिया जाता है। इन दो मामूली परिवर्तनों के बावजूद यदि कम दूरी तक या कम मात्रा में भेजा जाने वाला माल सड़क परिवहन से नहीं भेजा जाने लगा तो इससे रेल राजस्व में थोड़ी सी वृद्धि होगी।

## १९६१-६२ के अनुमान

माल यातायात में १ करोड़ ५० लाख टन और वृद्धि होने की सम्भावना और सवारी यातायात में थोड़ी सी वृद्धि के कारण १९६१-६२ में यातायात से कुल ४९९ अरोड़ रु० की प्राप्ति होने का अनुमान है। यात्री कर के बदले राज्यों को १२॥ अरोड़ रु० की जो निश्चित राशि दी जानी है, उसे देखते हुए वास्तव में कुल प्राप्ति ४८६.५ करोड़ रु० की होगी जबकि चालू वर्ष के संशोधित अनुमान के अनुसार कुल प्राप्ति ४५८ करोड़ रु० होगी।

१९६१-६२ में साधारण संचालन-व्यय ३३२.५३ करोड़ रु० होने का अनुमान है। यह राशि १९६०-६१ के संशोधित अनुमान से ६.२२ करोड़ रु० अधिक है।

मूल्य ह्रास आरक्षित निधि के लिए १९६०-६१ में ४५ करोड़ रु० दिये गये थे। जबकि १९६१-६२ में इस

रेलवे मन्त्री श्री जगजीवनराम

निधि में ६५ करोड़ रु० दिये जाएगें। इसके बावजूद १९६१-६२ में शुद्ध बचत १२.५ करोड़ रु० की रहेगी। परन्तु सामान्य राजस्व को दिये जाने वाले लाभांश में ८.७ करोड़ रु० की वृद्धि हो जाने से वास्तविक बचत घटकर ८.६४ करोड़ रु० रह जाएगी।

## दूसरी योजना का विचारी परीणाम

पिछले पांच वर्षों में रेलों में लगी पूंजी ९६९ करोड़ रु० से बढ़कर १,५५९ करोड़ रु० हो गई। टन मील के हिसाब से पहली योजना के अन्त में जितना यातायात था, उससे लगभग ५० प्रतिशत बढ़ा है और वार्षिक कुल प्राप्ति ३१६.२९ करोड़ रु० से बढ़कर ४५८ करोड़ रु० हो गई है।

व्यय-पक्ष को लें तो कर्मचारियों पर वार्षिक प्रति व्यक्ति व्यय धीरे-धीरे बढ़ा है। १९५५-५६ में यह खर्च १,४७६ रु० था, जो १९५९-६० में बढ़कर १,६६० रु० हो गया। अनुमान है कि चालू वर्ष में यह खर्च बढ़कर १,८८० रु० हो जाएगा। कर्मचारियों पर खर्च में यह वृद्धि वेतन और काम की अवस्था में सुधार के कारण हुई है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोयले और अन्य सामान के भाव भी बढ़े हैं।

१९३८-३९ के मुकाबले में प्रति कर्मचारी औसत वार्षिक खर्च २०० प्रतिशत से भी अधिक बढ़ा है और सामान के भावों में ३५० प्रतिशत वृद्धि हुई है। फिर भी पिछले २० वर्षों में यात्रियों के किराये में औसतन केवल ७० प्रतिशत वृद्धि और माल भाड़े में लगभग १०० प्रतिशत वृद्धि हुई है।

इस तथ्य की ओर ध्यान देने की बात है कि पिछले कुछ वर्षों में किराये में कोई वृद्धि नहीं हुई है। माल भाड़े की दर भी खर्च में वृद्धि के अनुरूप नहीं बढ़ाई गयी है और कुछ वस्तुओं जैसे अनाज, नमक, तिलहन और खनिज आदि का भाड़ा इतना कम है कि उससे कोई लाभ नहीं होता। यह इसलिए किया गया कि उद्योगों को प्रोत्साहन मिले और निर्यात बढ़े। कोयले के यातायात के प्रति टन मील से ३ रु० ३३ नये पैसे की आय होती है, जबकि उस पर बड़ी लाइन पर ३ रु० ८० नये पैसे और छोटी लाइन पर ५ रु० ८९ नये पैसे खर्च आता है।

## यातायात की स्थिति

कोयले और अन्य माल के दैनिक औसत लदान में निरन्तर वृद्धि हुई। १९५८-५९ की तुलना में १९५९-६० में बड़ी लाइन पर कोयले का लदान २.८५ प्रतिशत बढ़ा। कोयले के परिवहन को बढ़ाने के लिए जो विशेष कदम उठाये गये, उनके फलस्वरूप अप्रैल से दिसम्बर, १९६० के बीच बंगाल और बिहार के कोयला क्षेत्रों से होने वाले कुल लदान में ९.६ प्रतिशत वृद्धि हुई।

योजना के अन्तर्गत रेलों के लिए जो धन रखा गया है, उसका ७६ प्रतिशत पहले चार वर्षों में खर्च किया गया और चालू वर्ष में बाकी तमाम धन का इस्तेमाल कर लिये जाने की आशा है। विदेशी मुद्रा का खर्च ३३२ करोड़ रु० तक सीमित रखा जाएगा, जबकि मूल रूप से ४२५ करोड़ रु० के खर्च की व्यवस्था की गई थी।

योजना के साधनों में रेलों का कुल अंशदान लगभग ४८० करोड़ रु० का होगा।

८०० मील नई लाइन बिछाने का पूरा हो गया है। ८०० मील दोहरी लाइनें बिछाने का काम भी पूरा हो गया है और ५०० मील और दोहरी लाइनें बिछाने का काम चल रहा है।

## बिजली की रेलें

१,४०० मील लाइनों पर बिजली की रेलें चलाने का लक्ष्य था। इसमें से पूर्वी क्षेत्र में लगभग ५०० मील लाइनों पर बिजली की रेलें चलाने का काम दूसरी योजना में पूरा हो जाएगा। अनेक शाखाओं पर बिजली की रेलें जून, १९६१ तक शुरु हो जाएंगी।

## तीसरी योजना

तीसरी योजना में रेलों के लिए अस्थायी रूप से ६१.२५५ करोड़ रु० रखे गये हैं। रेलों के लिए यह लक्ष्य रखा गया है कि वह तीसरी योजना में ५,४०० करोड़ टन मील से बढ़कर ९,३०० करोड़ टन मील होने वाले यातायात को संभालने योग्य बनें। यह दूसरी योजना की अवधि में हुई वृद्धि से दुगनी है। इसके लिए अस्थायी रूप से १,२५५ करोड़ रु० रखे गये हैं, जबकि दूसरी योजना में १,१२१५ करोड़ रु० रखे गये थे। रेलों की तीसरी योजना के अन्तर्गत इंजनों की संख्या सवारी डिब्बों की संख्या ७,८०० और माल डिब्बों की संख्या १,१०,-००० बढ़ाई जाएगी। योजना के अन्तर्गत १६०० मील लम्बी नई लाइनें भी बिछाई जायेंगी।

## विदेशी सहायता

भारतीय रेलों के विकास के लिए विश्व बैंक से गत जुलाई में ७ करोड़ डालर का एक और ऋण मिला। इससे पहले विश्व बैंक से ५ करोड़ डालर का ऋण मिला था। इसके अलावा, अमेरिका की विकास ऋण निधि के अधिकारियों ने ५ करोड़ डालर का ऋण देना मंजूर किया है, जिसमें १ करोड़ डालर की वह राशि भी शामिल है, जो पहले ऋण रूप में मिल चुकी है।

## आत्मनिर्भरता

चल स्टाक और अन्य सामान देश में ही तैयार करने की नीति के फलस्वरूप रेलों पर दूसरी योजना में ४२५ करोड़ रु० की जो विदेशी मुद्रा खर्च होनी थी, उसके मुकाबले केवल ३३२ करोड़ रु० की विदेशी मुद्रा खर्च हुई। तीसरी योजना में रेलों पर केवल १८६ करोड़ रु० की



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## रेलवे बजट एक दृष्टि में

( करोड़ रु० में )

| | वास्तविक | संशोधित अनुमान | बजट अनुमान |
|---|---|---|---|
| | १९५९-६० | १९६०-६१ | १९६१-६२ |
| १—यातायात से कुल प्राप्ति | ४२२.३३ | ४५८.०० | ४९९.०२ × |
| २—साधरण संचालन-व्यय | २८९.५२ | ३२६.३१ | ३३२.५३ |
| ३—शुद्ध विविध व्यय | १३.१६ | १५.९१ | १४.८८ |
| ४—मूल्य ह्रास आरक्षित निधि के लिए विनियम | ४५.०० | ४५.०० | ६५.०० × |
| ५—चालित (वर्क्ड) लाइनों को भुगतान | ०.१० | ०.०९ | ०.१३ |
| शुद्ध रेलवे राजस्व | ७४.५५ | ७०.६९ | ८६.४८ |
| सामान्य राजस्व को लाभांश | ५४.४३ | ५६.६६ | ६५.३४ × |
| यात्रा भाड़े पर लगे कर के लिए भुगतान | – | – | १२.५० ×× |
| शुद्ध बचत | २०.१२ | १४.०३ | ८.६४ |

× १-४-६१ से यात्री भाड़े में यात्री भाड़ा कर मिलाने से जो वृद्धि हुई है, वह भी इसमें शामिल है।

× १९६०-६१ के, सामान्य राजस्व को, ४ प्रतिशत लाभांश से बढ़ाकर १९६१-६२ में ४.२५ प्रतिशत करने से बढ़ी राशि।

×× यात्री भाड़े से सामान्य राजस्व में दिया गया अंशदान जो कि राज्य सरकारों को दिया जाएगा।

विदेशी मुद्रा खर्च होने का अनुमान है। चालू वर्ष में अनेक नई वस्तुओं का देश ही में उत्पादन होने लगा। बिजली के सिग्नल का सामान भी देश में ही बनना शुरू हो गया। चित्तरंजन कारखाने में चालू वर्ष में १६४ इंजन तैयार होने की आशा है। अगले वर्ष भी चित्तरंजन कारखाने में इतने ही इंजन बनेंगे। चित्तरंजन कारखाने ने बिजली से इंजन तैयार करने का काम भी हाथ में लिया है और प्रति वर्ष लगभग ६० ऐसे इंजन तैयार करने लगेगा। इन इंजनों के लिए बिजली का सामान बाद में भोपाल के बिजली कारखाने द्वारा बनाया जाने लगेगा। आशा है कि १९६१-६२ में चित्तरंजन बिजली के २० इंजन तैयार करेगा।

टेलको ने १९५९-६० में १०५ इंजन दिये थे और चालू वर्ष में वह १०० इंजन और दे देगा। ३१ मई, १९६१ तक, जब टेलको से १६ वर्ष का समझौता समाप्त हो जाएगा, २५ इंजन और मिलेंगे। टेलको से जून १, १९६२ से ३१ मार्च, १९६६ के बीच छोटी लाइन ३२५ इंजिन सप्लाई करने को कहा गया है। तीसरी योजना में छोटी लाइनों के लिए जितने भाप के इंजनों की जरूरत पड़ेगी, वह इससे पूरी हो जाएगी। एक इंजन का मूल्य ३,८०,७५० रु० होगा, जो १९५८-६० की अवधि के लिए पंच द्वारा निर्धारित मूल्य से कम है।

### सवारी डिब्बा कारखाना

पेरम्बूर के सवारी डिब्बा कारखाने में १९६०-६१ में ६२० डिब्बे तैयार होने की आशा है, जबकि १९५९-६० में कारखाने में ४४८ सवारी डिब्बे तैयार हुए थे। अगले वर्ष १९६१-६२ में कारखाने में ६५० सवारी डिब्बे तैयार होने का अनुमान है। उत्पादन में यह वृद्धि कारखाने की दूसरी पारी का काम बढ़ने के कारण हुई है। डिब्बों में सीटें आदि लगाने वाला स्थायी विभाग १९६२ के मध्य तक तैयार हो जायगा। यह विभाग एक पारी में काम करके प्रति वर्ष ४०० सवारी डिब्बों में सीटें आदि लगाएगा। इसके अलावा, तीसरी योजना में पेरम्बूर कारखाने में छोटी लाइन के तीसरे

( शेष पृष्ठ १५१ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारतीय राज्यों के बजट

विविध राज्यों की विधान सभाओं में बजट प्रस्तुत हो रहे हैं । अभी तक प्रकाशित बजटों का संक्षपित विवरण निचे दिया जा रहा है । बहुत कम राज्यों में घाटे की पूर्ति के लिए नये कर लगाये गये हैं ।

## पश्चिमी बंगाल

| | ( करोड़ रुपयों में ) |
|---|---|
| राजस्व आय | ९५.४८ |
| व्यय | ९८.७ |
| घाटा | ३.१२ |

कोई नया कर नहीं लगाया गया । बिक्री कर कानून की कुछ कमियों को अवश्य दूर किया जायगा । राज्य की सरकार नये विकासशील उद्योगों को अच्छे मूल्य पर भूमि बेचकर राज्य-कोष बढ़ाने का प्रयत्न कर रही है ।

## आन्ध्र

| | |
|---|---|
| राजस्व | ८५.१२ |
| व्यय | ८७.६२ |
| घाटा | २.५० |

कोई नया कर नहीं लगाया गया १२ करोड़ रुपये का सार्वजनिक ऋण लेने का प्रस्ताव विचाराधीन है ।

## पंजाब

| | |
|---|---|
| आय | ६३७७ लाख रुपये |
| व्यय | ६३७३ ,, ,, |
| घाटा | ९६ ,, ,, |

स्कूलों में फीस में रियायत तथा चतुर्थ-श्रेणी के कर्मचारियों की मंहगाई-भत्तावृद्धि से यह घाटा ३७ लाख रुपया और बढ़ जायगा । वित्त मंत्री ने १३१ लाख रुपये के नये कर लगाने की घोषणा की है । बिक्री कर ४ से ५ प्रतिशत कर दिया गया है तथा मनोरंजन कर ६ न. पै. प्रति रुपया बढ़ा दिया गया है । वित्त-मंत्री ने यह भी विचार प्रकट किया कि ५ एकड़ या कम जमीन पर मिलने वाली मालगुजारी पंचायतों को दे दी जाय ।

## जम्मू-कश्मीर

| | |
|---|---|
| आय | ३३६.३६ लाख रुपये |
| व्यय | ४३५.१५ लाख ,, |
| घाटा | ९८.७९ लाख ,, |

केन्द्र से ६.५० करोड़ रुपये सहायता मिलने की बजट में आशा प्रकट की गई है, जो विभिन्न विकास कार्यों में व्यय होगा । कोई नया कर लगाने का प्रस्ताव नहीं किया गया ।

## मद्रास

| | |
|---|---|
| आय | ८७५.०९ लाख रुपये |
| व्यय | ९९३५.३३ लाख रुपये |
| घाटा | २८५.२४ लाख रुपये |

इस बजट के बाद नये कर लगें या न लगें पर इतना तो स्पष्ट कर दिया गया है कि ११ वीं कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा की सुविधा दी जायगी ।

## गुजरात

| | |
|---|---|
| आय | ५४.२५ करोड़ रुपया |
| व्यय | ५८.१२ करोड़ रुपया |
| घाटा | ३.८७ करोड़ रुपया |

८० लाख रुपये के नये कर लगाये गये हैं, जिनके द्वारा मोटर स्प्रिट, मिट्टी का तेल, मूंगफली, मनोरंजन, बिजली और स्टाम्प ड्यूटियों में थोड़ा बहुत परिवर्तन कर दिया गया है ।

## बिहार

| | |
|---|---|
| आय | ८४.४७ करोड़ रुपये |
| व्यय | ७९.०८ करोड़ रुपये |
| घाटा | ५.३९ करोड़ रुपये |

## मध्य प्रदेश

| | |
|---|---|
| आय | ७३.८० करोड़ रुपये |
| व्यय | ८०.२४ ,, |
| घाटा | ६.४४ करोड़ रुपये |

३ करोड़ रुपये तक के नये कर बाद में लगाने की वित्तमंत्री ने घोषणा की है ।

[ शेष पृष्ठ १४१ पर ]



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आपकी जेब से पैसा किस तरह निकलता है ?

महीने के प्रारम्भ में जब आप अपने सरकारी दफ्तर, किसी मिल या व्यापारिक कम्पनी से अपने वेतन के १००-२०० या अधिक रुपया वेतन के रूप में ले आते हैं। तो कुछ दिन बाद ही यह देख कर हैरान हो जाते हैं कि आपका वेतन करीब करीब समाप्त हो गया है और नई आवश्यकतायें मुंह बायें खड़ी हुई हैं। पर आपने कभी यह सोचा है कि रोटी पानी, कपड़ा और मकान के भारी खर्चों के अलावा बहुत बड़ी रकम सरकार चुपचाप आपकी जेब से निकाल लेती है और आप को पता भी नहीं लगता अथवा कम-से-कम उस समय ध्यान नहीं रहता। लीजिये हम आपको ऐसे कुछ उदाहरण पेश करते हैं :—

१. जब आप अपने बच्चों और परिवार को दूध और चाय के लिये एक सेर चीनी खरीदते हैं तो सरकार आप से ३ आना प्रति सेर ले लेती है। यदि आपने महीने में ८ सेर चीनी ली तो १.५० रु० आपकी जेब से निकल कर सरकार की जेब में पहुँच गया।

२. कुछ समय पहले तक आप दुकानदार को कपड़ा खरीदते समय बिक्री कर के रूप में प्रति गज डेढ़ दो आना दिया करते थे। आज दुकानदार आप से बिक्री कर नहीं लेता। पर यह मत समझिये कि सरकार आप पर मेहरबान हो गई है और उसने बिक्री कर छोड़ दिया है। वह अब मिलों से कपड़े की निकासी के समय ही उत्पादन कर में वृद्धि करके बिक्री कर भी वसूल कर लेती है और दुकानदार बढ़े हुये मूल्य के रूप में आप से यह कर प्राप्त कर लेता है। १९६०-६१ के केन्द्रीय बजट में उत्पादन करों से ही ३८० करोड़ रुपये की आमदनी का अनुमान लगाया गया था।

३. जब आप दियासलाई की डिब्बी खरीदते हैं तो आप उस पर एक कागज पट्टी चिपकी हुई देखेंगे। यह 'पट्टी' सरकार बेचकर दियासलाई के उत्पादकों से एक टैक्स वसूल कर लेती है जो पीछे से आपको देना पड़ता है।

४. आपको प्रायः महीने में एक-दो-बार किसी-न-किसी काम से मोटर द्वारा किसी दूसरे शहर जाना पड़ता होगा और मोटर वाला आपको किराये का जो टिकट देता है, उस पर एक सरकारी टिकट देखते होंगे। यह सरकारी टिकट इस बात का सबूत है कि सरकार ने आप से मोटर में यात्रा करने का दण्ड भी वसूल कर लिया। यह दंड अभी सब राज्यों में लागू नहीं हुआ। पंजाब ने इसकी शुरुआत की है और राजस्थान ने भी इसकी नकल की है। यह सम्भव नहीं कि अन्य सरकारें भी यात्री रूपी गौ से किस तरह दूध दुहने लगें।

५. राज्य सरकारें यात्रियों पर दंड लगावें तो केन्द्रीय सरकार पीछे कैसे रह सकती थी। उसने रेल यात्रियों पर ही 'सरचार्ज' लगा दिया। आपको शायद मालूम न हो, इस 'सरचार्ज' से ही रेलवे को करीब १२.५० करोड़ रुपये की आमदनी हुई अर्थात् इतना रुपया आपकी जेब से खिंचकर सरकार की जेब में पहुँच गया। आपको यह ध्यान में रखना चाहिये कि यह रुपया रेलवे के उचित किराये से भिन्न है जो आपको पहले नहीं देना पड़ता था।

६. मैं नहीं जानता कि आप में से कितने ग्राहक रेडियो, स्टेशनरी, आर्टपेपर श्रृंगार सामग्री, फर्नीचर, घड़ियां या दूसरा सामान खरीदते समय बिक्री कर की चोरी करते हैं। लेकिन यदि आप इमानदार हैं और चोरी नहीं करते जैसा कि मुझे विश्वास करना चाहिये तो निश्चित रूप से आपको बिक्री कर के रूप में काफी बड़ी राशि देनी पड़ती होगी। आज से दो वर्ष पूर्व बिक्रीकर से करीब ९० करोड़ रुपया एकत्र किया गया था जो इस वर्ष ९५ करोड़ से कम नहीं होगा।

७. मैं यह लेख उन मध्य वित्तीय और अल्प वित्तीय पाठकों को ध्यान में रख कर लिख रहा हूं जो बहुत अधिक आय कर नहीं देते। सम्पन्न वर्ग पर तो १२-१३ आने प्रति रुपये तक कर लगता है, लेकिन मध्य और अल्प वित्तीय वर्ग को भी चुंगी के रूप में प्रायः प्रत्येक वस्तु पर कर देना पड़ता है।

८. आप कभी-न-कभी बाल-बच्चों को लेकर सिनेमा या सर्कस जाते होंगे। आपको १ रु० का टिकट सवा रुपये



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मिलता है। यह चार आने आपकी जेब से इसलिये जाते हैं कि सरकार इसे अपने लिये लेना चाहती है।

९. आप यह भी न भूलें कि केन्द्रीय सरकार को प्रतिवर्ष डेढ़-पौने दो अरब रुपया तट करों से मिलता है। यह तट कर आप को भी अवश्य देने पड़ते हैं यदि आप अपने जीवन में विदेश से आने वाली किसी वस्तु का प्रयोग करते हैं।

१०. आप अपने नित्य के प्रयोग लिये साइकिल रखिये या अपने घर में गौ-भैंस रखिये तो बड़े शहर की म्यूनिसिपल कमेटी आप से अवश्य दंड वसूल कर लेगी। दिल्ली में तो मकान मालिकों पर भंगी टैक्स और पानी का टैक्स अलग लगने लगा है।

विभिन्न सेवाओं के लिये सरकार जो मूल्य देती है। वह अनिवार्य ही है। किन्तु उन मूल्यों के अतिरिक्त जो भिन्न-भिन्न कर वह लगाती है उसे देखते हुये एक मित्र ने मुझे कहा था कि अभी तक घर में बच्चा पैदा होने पर तो टैक्स नहीं लगा, बाकी हर-एक समय हमें टैक्स देना पड़ता है। यहां तक कि मर जाने पर उसकी सन्तान को टैक्स देना पड़ता है। उनका संकेत उत्तराधिकार पर था। आप के पास यदि कुछ लाख रुपये की सम्पत्ति है तो उस पर आपको कर देना पड़ेगा। दिल्ली में यदि आप १०,-००० रु० की जयदाद खरीदते है तो आय को ८ रु० प्रति सैकड़ा के हिसाब से ८००) रु० इस्टाम्प, रजिस्ट्री और निगम कर के रूप में देना पड़ेगा। यदि आप अपने सम्बन्धियों को कुछ सम्पत्ति उपहार के रूप में देना चाहते हैं तो आपको कर देना पड़ेगा। यदि आप अपनी आय में से कुछ रुपया आर्यसमाज या अन्य मन्दिर को सहायता के रूप में देना चाहते हैं तो उस राशि पर भी आप आय कर से नहीं बच सकते।

इस लेख में हमने कुछ करों के उदाहरण मात्र दिये हैं। करों की अनन्त शाखायें हैं, जिनका अनुभव पाठक अपने व्यवहार में कर सकते हैं। हमारे इस लेख का आशय यह बिल्कुल नहीं है कि सरकार इन करों को अनुचित रूप से वसूल करती है। इनका प्रयोग वह कितने उचित या अनुचित रूप से करती है, यह दूसरे लेख का विषय है।

● ●

( १३९ पृष्ठ का शेष )

**केरल**

| | |
|---|---|
| आय | ४७.२५ करोड़ रुपये |
| व्यय | ५४.०१ ,, |
| घाटा | ६.७६ करोड़ रुपये |

दो रुपया प्रति एकड़ भूमि कर में वृद्धि, इमारतों के निर्माण पर एक बार कर, बस के किरायों में थोड़ी-सी वृद्धि। विदेशी शराब पर बिक्री कर में वृद्धि आनाज पर १ प्रतिशत बिक्री कर। इन सब करों से घाटा १ करोड़ ४१ लाख कम हो जायगा।

## राजस्थान

| | |
|---|---|
| राजस्व आय | ४६९८ लाख रुपये |
| राजस्व व्यय | ४९४८ लाख रुपये |
| घाटा | २५० लाख रुपये |

२ करोड़ ५० लाख रुपये की घाटे की पूर्ति के लिये १३५ लाख रुपये के नये कर और २८ लाख रुपये मित्तव्यापिता से किया जायगा। व्यक्तिगत मोटर-कारों, यात्री मोटर-वाहनों, मनोरंजन और गैर अदालती स्टाम्प ड्यूटी में कर वृद्धि कर दी जायगी।

## आसाम

आसाम के वित्त मंत्री ने ३.१ करोड़ का घाटे का बजट प्रस्तुत करते हुये डिजेल तेल और पेट्रोल पर कर में वृद्धि का प्रस्ताव किया है। करों से कुल १४ लाख रुपये की पूर्ति हो सकेगी।

देश की आर्थिक समस्याओं पर अपने ज्ञान-वर्द्धन के लिए सम्पदा की फाइलें मंगाइये।
सन् १९५९ और १९६० की फाइलें प्रति फाईल रु० ४.५० नये पैसे शीघ्र भेजकर मंगा लें।

**सम्पदा अशोक प्रकाशन मन्दिर**

२८-११, शक्तिनगर दिल्ली-६



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सांख्यिकी

नेशनल कौउसिल आफ एप्लाईड इकानामिक रिसर्च ने कुछ समय पहले एक विवरण प्रकाशित किया है जिसमें यह बताया गया है कि भिन्न-भिन्न देशों में आय पर 'इनकम टैक्स और सुपर टैक्स कितना प्रतिशत लगता है। इस विवरण से ज्ञात होता है कि अनेक विकसित देशों की अपेक्षा भारत में कर की दर काफी अधिक है।

## प्रतिशत कर

| आय पौंड | आय रुपया | भारत | इंगलैंड | प० जर्मनी | फ्रांस | नार्वे | अमेरिका | कनाडा | जापान | पाकिस्तान | श्रीलंका |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १००० | १३३३३ | ६.४ | ७.७ | १०.९ | ३.८ | ११.४ | २.९ | — | १५.६ | ५.८ | ३.८ |
| २००० | २६६६६ | १६.५ | १८.८ | १८.२ | ९.३ | ३०.८ | ११.४ | ७.५ | २३.० | १५.२ | १०.९ |
| ३००० | ४०,००० | २६.३ | २५.१ | २३.१ | १३.७ | ४२.१ | १४.८ | ११.८ | २७.५ | २३.३ | १७.८ |
| ४००० | ४३३३३ | ३४.५ | ३०.४ | २६.५ | १६.९ | ४९.१ | १६.९ | १४.१ | ३०.६ | ३२.० | २४.७ |
| ५००० | ६६६६६ | ४०.७ | ३४.४ | २९.४ | २०.४ | ५४.६ | १८.७ | १८.३ | ३३.३ | ३८.७ | ३०.५ |
| ६००० | ८०,००० | ४६.० | ३९.६ | ३१.९ | २२.९ | ५८.३ | १९.९ | २१.६ | ३५.३ | ४५.० | ३५.२ |
| ७००० | ९३३३३ | ४९.८ | ४३.३ | ३३.८ | २४.६ | ६०.९ | २१.६ | २४.५ | ३७.२ | ५०.० | ३८.८ |
| ८००० | १,०६,००० | ५३.१ | ४६.२ | ३५.५ | २५.९ | ६२.८ | २३.१ | २७.१ | ३८.८ | ५३.९ | ४१.४ |
| ९००० | १,२०,००० | ५५.७ | ४८.९ | ३६.९ | २७.८ | ६४.४ | २४.८ | २९.१ | ४०.१ | ५६.७ | ४३.५ |
| १०,००० | १,३३,३३३ | ५७.९ | ५१.२ | ३८.२ | २९.४ | ६५.६ | २६.४ | ३०.७ | ४१.१ | ४९.० | ४५.१ |
| १५,००० | २,००,००० | ६४.२ | ६२.० | ४३.२ | ३४.३ | ६९.२ | ३३.८ | ३७.१ | ४५.७ | ६६.० | ५०.१ |
| २०,००० | २,६६,६६६ | ६७.४ | ६८.७ | ४६.५ | ३८.३ | ७१.० | ३९.९ | ४१.४ | ४८.० | ६९.५ | ५२.६ |
| २५,००० | ३,३३,३३३ | ६९.३ | ७२.७ | ४८.६ | ४१.२ | ७२.१ | ४४.५ | ४४.५ | ५०.४ | ७१.६ | ५४.१ |
| | | ७७ | ८८.७५ | ५७.२४ | ६६ | ७६.५ | ९१ | ८० | ७० | ८० | ६० |

## विदेशी ऋण १९६१-६२ के बजट तक विवरण

| देश | सहायता की मद लाख रुपये में | प्रतिशत ब्याज की दर | विवरण |
|---|---|---|---|
| सोवियत रूस | ३८३८१ | २½ | (१) भिलाई (२) औद्योगिक योजनायें (३) औषध कारखाना (४) बरौनी तेल कारखाना (५) तीसरी आयोजना। |
| जापान | २७६२ | ५¾ | प्रस्तावित प्राप्त होने वाली राशि, |
| पश्चिमी जर्मनी | १,२२,२४ | ६ | राउरकेला इस्पात कारखाना आदि |
| चेकोस्लोवाकिया | २३१० | २½ | ढलाई, गढ़ाई तथा भारी मशीनी औजार। |
| पोलैण्ड | १४३० | २½ | पूंजीगत साज सामान के लिये ऋण। |
| यूगोस्लाविया | १९०५ | ३ | पूंजीगत माल के आयात के लिये। |
| ब्रिटेन | १२२६६ | ५⅜ | दुर्गापुर इस्पात कारखाना, तेल पाइप लाइन तथा सामान्य उधार। |
| कनाडा | १५७१ | | गेहूँ के लिये |
| स्विटजरलैण्ड | १०९० | ३¾ | पूंजीगत माल के आयात के लिये। |
| संयुक्त राज्य अमेरिका | ६६५०८ | × ४⅜ | गेहूँ के लिये, विकास सहायता। |
| अन्तर्राष्ट्रीय बैंक | १९४८७ | ४-६ | रेलवे, दामोदर घाटी, कोयना प्रायोजना आदि। |
| कुल | १५,९९,३४ | × औसत पर | |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## विश्व बैंक का एशियाई देशों को ऋण

सितम्बर १९६० तक, विश्व बैंक से एशियाई देशों को उनके नव निर्माण व विकास कार्यों के लिये १४४४८ लाख डालर दिये गये हैं। किस देश को कुल कितना दिया गया यह इस प्रकार है—

| देश | राशि (दस लाख डालरों में) |
|---|---|
| भारत | ६६२.१० |
| जापान | ३३७.४० |
| पाकिस्तान | २४१.३० |
| थाईलैंड | १०६.६५ |
| मलाया | ३५.६० |
| श्रीलंका | २३.९० |
| बर्मा | १९.३५ |
| फिलीपाइन | १८.५० |
| कुल | १४४४.८० |

यह ऋण राशि, विश्व बैंक द्वारा दी गई कुल ऋण की राशि का चौथाई अंश है जो एशियाई देशों के निर्माण कार्यों व सेवाओं के लिये दी गई है। उदाहरण के लिये रेल, सड़क समुद्री और हवाई यातायात के लिये समूची राशि का २।५ वां अंश, जो ५६२८ लाख डालर होता है, दिया है। ऋण की कुल राशि का १।४ वां अंश ३९६६.५ लाख डालर बिजली के निर्माण के लिये दिया गया। उद्योगों के लिये ३४५६ लाख डालर, कृषि के लिये ४९७.-५ लाख डालर और 'सिन्धु जल विकास' के लिये ९०० लाख डालर दिये है।

---

( पृष्ठ १६ का शेष )

दोबारा कब्जा नहीं जा सकता उस जमीन का काश्तकारों को भूस्वामी बना दिया गया है।

किराया उत्पादन के $\frac{1}{6}$ भाग या लगान के ३ से लेकर ५ गुने से अधिक नहीं होना चाहिए।

यह व्यवस्था है कि १२ से लेकर १३५ एकड़ से अधिक भूमि भविष्य में नहीं ली जा सकती। जोत की अधिकतम सीमा निश्चित करने के विषय में विधेयक विधानसभा में रखा जा चुका है। यह सीमा १४ से १३२ एकड़ के मध्य है।

३१-३-१९६० तक ६ लाख एकड़ चकबन्दी की जा चुकी है और ६.७ लाख एकड़ में काम हो रहा है।

## जम्मू और कश्मीर

किसानों को खुदकाश्त के अधिकार दे दिये गये हैं। जमीदार इसमें से व्यक्तिगत काश्त के लिए २ से ६ एकड़ पर दुबारा कब्जा कर सकता है। १२$\frac{1}{2}$ एकड़ से अधिक भूमि पर किसानों द्वारा जमीदारों को दिये जाने वाला सम्पूर्ण उत्पादन का सिंचाई वाली भूमि में $\frac{1}{4}$ और सूखी भूमि में $\frac{1}{3}$ से अधिक नहीं होना चाहिए।

जोत की अधिकतम सीमा २२.३।४ एकड़ नियत की गयी है। इसके लागू होने से ४.५ लाख एकड़ भूमि मिली। इस भूमि को या तो उन किसानों को दे दिया गया जो काबिल थे या विस्थापितों में बांट दी गई।

इस विषय में कानून बनाया जा चुका है और काम शुरू कर दिया गया है।

## केरल

केरल भू-वितरण सम्बन्धी अधिनियम के अन्तर्गत किसानों को खुद काश्त और बटाई के अधिकार दे दिये गये हैं। जमीदार अधिक से अधिक दो फसली धान वाली पांच एकड़ भूमि अथवा इसके बराबर अन्य क्षेत्र पर व्यक्तिगत काश्त के लिए दुबारा कब्जा कर सकता है। जिनके पास इससे अधिक भूमि है वे दुबारा कब्जा नहीं कर सकते। छोटे-छोटे जमीदार (जिनके पास दो फसली धान वाली १० एकड़ से कम भूमि है या बटाईदारों की आधी जमीन पर कब्जा कर सकते हैं। कोचीन और मालाबार में दुबारा कब्जा करने के अधिकार नहीं हैं जिस भूमि पर जमीदार दोबारा नहीं कर सकते उसका स्वामित्व शीघ्र ही किसानों को दे दिया जाएगा। इसकी घोषणा होने वाली है।

किराया कुल उत्पादन के $\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{5}$ तक है (केवल धान वाली खेती पर)।

भविष्य में अधिग्रहण की जाने वाली तथा वर्तमान जोत पर जोत की अधिकतम सीमा निश्चित की जा चुकी है। यह सीमा १५ से ३७$\frac{1}{2}$ एकड़ तक है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारे उद्योग

## गुजरात में औद्योगिक विकास

जब से गुजरात राज्य अलग बना है, गुजरात के प्रतिभाशाली अध्यवसायी और अनुभव-वृद्ध उद्योगपति और व्यापारी—व्यवसायी गुजरात को समृद्ध बनाने की अनेक योजनाएं बनाने लगे हैं। गुजरात के औद्योगिक विकास में अनेक बाधाएं हैं। बिजली का उत्पादन वहां आवश्यकता से बहुत कम मिलता है। यातायात की समुचित व्यवस्था भी वहां नहीं है। न सड़कें काफी हैं और न परिवहन के पर्याप्त साधन हैं। बन्दरगाहों का भी अभाव है और उद्योग के लिए आवश्यक कोयला भी वहां दुर्लभ है।

गुजरात के सौभाग्य से खम्भात और अंकलेश्वर में तेल मिलने की भारी संभावनायें व्यवहार में आने में अधिक समय नहीं लगेगा। कान्दला का बन्दरगाह जिस वेग से विकसित हो रहा है वह भी गुजरात के व्यवसाइयों के लिए उज्ज्वल भविष्य का सूचक है। गुजरात के महत्वाकांक्षी व्यवसाइयों ने नवीन संभावनाओं को क्रिया-रूप में परिणत करने के लिए नई से नई साहसपूर्ण योजनाएं बना ली हैं और इसी दृष्टि से वे केन्द्रीय सरकार के पास प्रस्तुत कर रहे हैं। इन योजनाओं में कितनी योजनाएं केन्द्रीय सरकार स्वीकार करती है, यह कुछ समय तक स्पष्ट हो जायगा। उसे यह अवश्य देखना है कि किस सामग्री के उत्पादन की योजना अभी तक स्वीकृत नहीं हुई है। ऐसा न हो कि एक ही वस्तु को समस्त देश की आवश्यकता से अधिक बनने की स्वीकृति दे दी जाय। फिर भी केन्द्रीय सरकार गुजरात के व्यवसाइयों की साहसपूर्ण योजनाओं पर गम्भीरता से विचार कर रही है।

बम्बई के व्यापार पत्र की सूचना के अनुसार निम्नलिखित उद्योग के बारे में बहुत कुछ निश्चय हो चुका है और वह अधिकांशतः उद्योगपतियों के लिए बहुत उत्साहवर्धक नहीं है। सरकार किसी वस्तु का अत्यधिक उत्पादन बढ़ाने के पक्ष में नहीं है।

माणिकलाल मैनुफैक्चरिंग कम्पनी ने डीजल इंजन बनाने की एक योजना बनाई है। यह कारखाना अहमदाबाद में खुलेगा। उक्त कम्पनी इस उद्योग के लिए स्विटजरलैंड 'स्विसलोकोमोटिव एण्ड मशीन वर्कस' का सहयोग प्राप्त कर रही है। केन्द्रीय सरकार ने इस योजना को स्वीकार करने का निश्चय किया है।

इण्डियन एलम्युनियम कम्पनी में भी २५०० टन की उत्पादन शक्तिवाला एलम्युनियम बनाने का कारखाना प्रस्तुत किया है। अभी तक सरकार ने इस योजना पर कोई अन्तिम निर्णय नहीं किया है।

जयन्त पेपर बौक्स फैक्टरी ने भी ग्रीज प्रूफ पेपर और ग्लासीन पेपर बनाने के लिए एक आवेदन पत्र प्रेषित किया है। अभी तक सरकार इस उद्योग की संभावनाओं और आवश्यकताओं पर पूर्ण निश्चय नहीं कर पाई है।

मशीनरी एण्ड इक्विपमेंट मैनुफैक्चरर्स प्राइवेट लिमिटेड ने हाथगाड़ियों के बैकड्रस, कपड़े की मिलों के लिए प्रेण्ड स्टील बीम, गैस सिलेंडर आदि बनाने की एक नई योजना पेश की है। सरकार ने इन योजनाओं पर पुनर्विचार करने की सलाह दी है। गुजरात इलैक्ट्रोन्स लिमिटेड ने पूर्वी जर्मनी की एक कम्पनी के सहयोग से बड़ौदा में वेल्डिंग इलैक्ट्रोड् बनाने की योजना पेश की है, किन्तु केन्द्रीय सरकार के मन्तव्य के अनुसार अभी इसकी बहुत आवश्यकता नहीं है।

साइमिक ग्रुप इंडिया लिमिटेड ने हिन्द जर्मन ऑटोमोबाइल्स' के नाम से छोटी गाड़ियां बनाने के लिए एक योजना उपस्थित की है। इस योजना के अनुसार कान्दला में प्रतिवर्ष ४२०० गाड़ियां जोड़ी या बनाई जायंगी। किन्तु केन्द्रीय सरकार छोटी गाड़ियों का निर्माण सार्वजनिक क्षेत्र में करना चाहती है। दूसरे इस योजना में विदेशी मुद्रा की बहुत बड़ी आवश्यकता होगी। इसलिए इस योजना के स्वीकृत होने की कोई आशा नहीं है।

अनेक अन्य योजनायें भी गुजरात के साहसी व्यवसाइयों ने प्रस्तुत की हैं और एक या दूसरे कारण से सरकार ने उन योजनाओं पर विचार करना स्थगित कर दिया है। फिर भी गुजरात के व्यवसायी यह दृढ़ निश्चय कर चुके हैं कि वे गुजरात को शीघ्र ही उद्योग प्रधान राज्य बना देंगे। स्कूटर्स आदि बनाने की योजनाएं विदेशों के सहयोग से



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत की गई हैं। बहुत संभवतः सरकार शीघ्र ही एक समिति की नियुक्ति करने वाली है जो भिन्न योजनाओं पर उनके गुणावगुण तथा देश की आवश्यकताओं को देखकर कुछ निर्णय करेगी और तभी सरकार विभिन्न योजनाओं की स्वीकृति या अस्वीकृति का निश्चय करेगी।

जहां उद्योग की अनेक योजनाओं को इसलिए अस्वीकृति मिली है कि देश को उन वस्तुओं की अब अधिक आवश्यकता नहीं है वहां अनेक नई योजनाओं को भारत सरकार ने स्वीकृति भी दी है। भावनगर अथवा बड़ौदा में कागज के कारखाने खोलने की योजना स्वीकृत हुई है। इसमें ५,४०० टन की उत्पादन क्षमता होगी। अनिल स्टार्च-प्रोडक्ट्स की सोडियम और जिंक सिलिक क्लोराईट्स बनाने की योजना स्वीकृत हुई है। इस तरह अन्य अनेक रासायनिक पदार्थ बनाने की एक योजना की स्वीकृति भी मिल गई है। गुजरात में रसायन उद्योगों की उन्नति की बहुत गुंजाइश है। साराभाई केमीकल्स की एक विकास योजना के अतिरिक्त आक्सिजन गैस और ऐसिडलीन गैस आदि की योजनाएं भी स्वीकार कर ली गई हैं। कुछ उद्योगपतियों ने ऐसी योजनाएं प्रस्तुत की हैं जिसमें गुजरात या महाराष्ट्र का विकल्प प्रस्तुत किया गया है। केन्द्रीय सरकार प्रत्येक योजना की संभावनाओं पर स्वयं विचार करके अंतिम निर्णय करेगी। ● ●

## जूट उद्योग की नई स्थिति

जूट भारत का एक प्रमुख उद्योग है। किन्तु यह परिस्थिति की प्रतिकूलता है कि जूट के कम उत्पादन और कम आयात के परिणामस्वरूप जूट के मूल्य बढ़ रहे हैं। जूट के मूल्यों पर अंकुश रखने के लिये ही 'जूट मिल संघ' ने अपनी सदस्य मिलों को ३० जनवरी १९६१ को यह हिदायत दी थी कि वे काम के घन्टे ४५ से ४२॥ प्रति सप्ताह कर दें और १२ प्रतिशत सांचे बन्द रखें। एक तरफ मिलों में जूट का उत्पादन कम हो रहा है और दूसरी ओर जूट के माल के मूल्यों को कम रखने की आवश्यकता है। जूट उद्योग की समस्या पर विचार करने के लिये भारत सरकार और 'जूट मिल संघ' के प्रतिनिधियों में फरवरी के अन्तिम सप्ताह में एक सम्मेलन हुआ था। इसमें सरकार जूट संघ के प्रतिनिधियों से यह अनुरोध किया कि वे स्वयं कुछ ऐसी व्यवस्था करें जिससे जूट के मूल्य न बढ़ने पायें। जनवरी में जूट के मूल्य १४२.५० रुपया प्रति क्विंटल से बढ़कर १७०.१३ रुपया तक पहुंच गया। इसी तरह जूट की पक्की गांठों में ५० रुपया प्रति गांठ मूल्य की वृद्धि हुई। सरकार ने 'जूट मिल संघ' से यह स्पष्ट कह दिया कि जल्दी ही वह मूल्य नियंत्रण की कोई योजना कार्यान्वित नहीं करेगी तो सरकार को अधिकतम मूल्य नियत करने पड़ेंगे। जूट मिल संघ ने कच्चे जूट की कीमत ६२ रु० प्रतिमन (आसाम बाटम) नियत करने की एक योजना चलाना स्वीकार किया। सरकार ने पाकिस्तान से जूट मंगवाने के लाईसेन्स देने में उदार नीति का आश्वासन दिया।

'जूट मिल संघ' को सदा यह शिकायत रही है कि सभी प्रकार के नियंत्रण संघ के सदस्यों पर लागू होते हैं। जो मिलें संघ की सदस्य नहीं हैं वे किसी नियम का पालन नहीं करती। सरकार ने इस प्रश्न पर भी विचार करने का आश्वासन दिया है।

जूट उद्योग की एक विकट समस्या यह है कि अमेरिका में, जो जूट का बहुत बड़ा ग्राहक है, जूट की मांग निरन्तर कम हो रही है। १९५९ में अमेरिका में ८९७० लाख गज जूट गया था, जबकि १९६० में केवल ८५७० लाख गज गया है। वहां जूट की बजाय कागज के थैलों का प्रचार बढ़ गया है। इस समस्या का समाधान शीघ्र ही करना होगा। ● ●

विज्ञापन के लिए

सम्पदा

सर्वोत्तम

साधन

सम्पदा, अशोक प्रकाशन मन्दिर

२८-११ शक्तिनगर, दिल्ली-६



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# आज की सरकारी योजनाएं और रचनात्मक कार्य

शंकरराव देव

पिछली तीन-चार सदियों का अनुभव है कि भौतिक जीवन को सम्पन्न और समृद्ध ही नहीं, बल्कि विलासी बनाने की होड़ में आज के सभ्य संसार ने जो तरीके अपनाये हैं, उनसे राजनैतिक और आर्थिक सत्ता का केन्द्रीयकरण और बड़ी-बड़ी बस्तियों का निर्माण एक अटल परिणाम बन कर आया है और इसके लिए मानव-समाज को अपने मानवीय मूल्यों की कीमत चुकानी पड़ती है। मानवीय मूल्यों की रक्षा यदि करनी है तो जिस रास्ते पर आज तक दुनिया चली आयी है, उससे भिन्न कोई नया रास्ता हमें खोजना होगा।

इसके लिए आज की जो लोकशाही समाज-व्यवस्था है या जो साम्यवादी समाज-व्यवस्था है, ये दोनों ही काम नहीं दे सकतीं; क्योंकि साम्यवादी समाज ने पूंजीवाद को खतम तो किया, लेकिन पूंजीवाद के जो अनिवार्य अंग है—सत्ता और अर्थ का केन्द्रीकरण व बड़ी-बड़ी बस्तियों का निर्माण—इनको भी ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया। लोकशाही की तरह ही साम्यवादी समाज के भी ये दोनों अंग बने हुए हैं। इसका कारण यह है कि साम्यवाद ने उत्पादन के औजारों में व्यक्तिगत हित को तो खतम किया, लेकिन यंत्र और उत्पादन-पद्धति को बड़े पैमाने पर केन्द्रित ही रखा। मालिक को हटाया, पर यंत्र के रूप में कोई परिवर्तन नहीं किया। यही कारण है कि लोकशाही की तरह ही 'यंत्रारूढानि मायया'-जैसी ही साम्यवाद की भी हालत है। इस मामले में दोनों में रत्ती भर फरक नहीं है।

इसके लिए नया रास्ता यह हो सकता है कि जहां मानवीय मूल्यों की रक्षा हो सकती है और जहां मानवीय मूल्य पनप सकते हों, ऐसे छोटे-छोटे समाजों का निर्माण कम-से-कम प्राथमिक इकाई के रूप में करना होगा और यंत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन करने होंगे। इसमें विज्ञान की मदद लेनी होगी।

आज की योजनाएँ हमारे लक्ष्य की पूर्ति में नाकाम होंगी या कम-से-कम अपर्याप्त तो जरूरी है, क्योंकि कल्याणकारी सरकार के माने यह है कि राज्य की सत्ता को कम करने के बजाए बढ़ाते जाना। आज राज्य-सत्ता ने करीब-करीब नागरिकों के समग्र जीवन को व्याप्त कर लिया है। इसके पहले लोग अपना-अपना व्यवहार शांति से और बे रोक टोक कर सके, इसलिये पुलिस और फौज के आधार पर शांति और सुव्यवस्था को कायम रखने का ही सरकार का काम समझा जाता था। लेकिन पूंजीवाद ने ऐसी परिस्थिति का निर्माण किया कि जिससे सरकार के हाथ से अपनी रक्षा का अधिकार वापस अपने हाथ में लेने के बजाय उलटे जनता ने रक्षा के साथ-साथ अपनी रोटी का सवाल भी सरकार के सिपुर्द कर दिया!

## भूदान और 'सीलिंग'

ऐसे भ्रम में मत रहिये कि सरकार को जमीन दे दी है—याने सीलिंग हो गया है—तो दान नहीं मिलेगा। दान और सीलिंग में फर्क है। माँ बच्चे को सुलाती है..., धीरे-धीरे थपथपाती है—इसका नाम है भूदान! और बच्चे को तमाचा मार के सुलाने की कोशिश—यह है सीलिंग। तमाचा मारने से बच्चा सोयेगा नहीं, वह चिल्लायेगा। इसलिये सीलिंग से सरकार को जमीन मिलेगी तो भी दिल से हिल नहीं जुड़ेगा। सार यह है कि दान और सीलिंग दोनों की तुलना ही नहीं हो सकती।

—विनोबा

'सम्पदा' आगामी अंक से नये आकर्षणों के साथ प्रकाशित होगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# देश में मशीनों का निर्माण

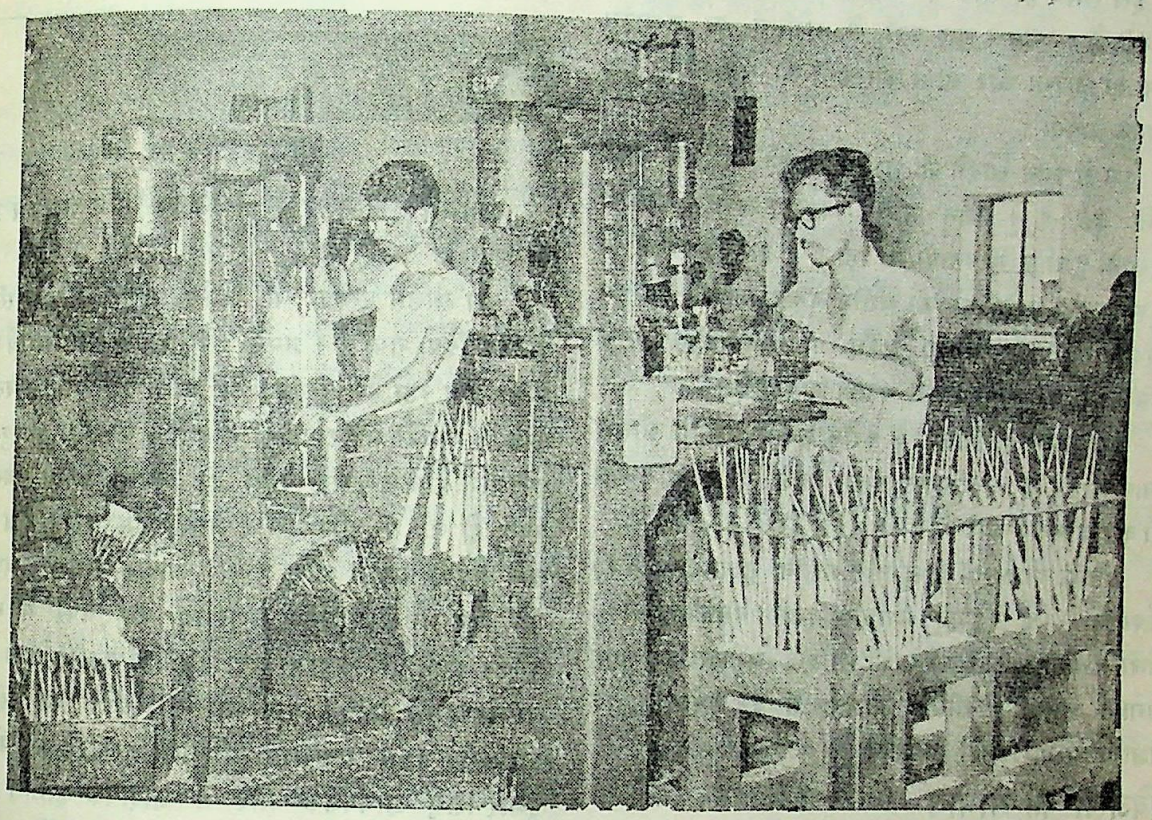

तृतीय पंचवर्षीय योजना काल में प्रति वर्ष ३०० करोड़ की औद्योगिक मशीनरी के निर्माण का लक्ष्य रखा गया है। चित्र में टैक्सटाइल मशीनरी का निर्माण दिखाया गया है।

इस समय देश में हर साल १ अरब रु० से अधिक की मशीनें बन रही हैं, जबकि १० साल पहले केवल ११ करोड़ रु० सालाना की मशीनें बनती थीं। अनुमान है कि १९६० में ही १ अरब २० करोड़ रु० की मशीनें बनीं।

तीसरी योजना में कारखानों की मशीनों का निर्माण बहुत बढ़ाने का प्रस्ताव है। आशा है तीसरी योजना के अंत तक देश में हर साल लगभग ३ अरब रु० की मशीनें बनने लगेंगी।

उद्योग-धन्धों को बढ़ाने के लिए देश में ही तेजी से कल-कारखानों की मशीनें बनाना आवश्यक है। तभी देश अपने बल पर आर्थिक विकास कर सकेगा।

## आत्म-निर्भरता

इन कारखानों के अलावा, जिनका देश में पर्याप्त उत्पादन होने लगा है, तीसरी योजना में कागज, सीमेंट, चीनी और कपड़ा कारखानों, रेल का सामान और वायलर और छपाई की मशीनों में देश आत्म-निर्भर हो जाएगा। कारखानों की मशीनों की बहुत मांग होने के कारण, फिलहाल कुछ मशीनों का आयात जारी रहेगा।

कागज के कारखानों की मशीनें बनाने वाले कुछ कारखाने चालू हो गए हैं और कुछ खड़े किए जा रहे हैं। इन कारखानों के बन जाने पर देश में हर साल ९॥ करोड़ रु० की कागज के कारखानों की मशीनें बनने लगेंगी।

## सीमेंट और चीनी के कारखानों की मशीनें

अगले साल के अन्त तक सीमेंट के कारखानों की सब मशीनें बनाने वाले दो कारखाने चालू हो जाएंगे। इस



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय चार कम्पनियां सीमेंट की मशीनों के हिस्से बना रही हैं।

इस समय हर साल ५ करोड़ रु० की चीनी मशीनें बन रही हैं। अगले कुछ वर्षों में मशीनों का उत्पादन दुगना हो जाएगा और चीनी कारखानों की सब मशीनें देश में बनने लगेंगी।

देश में खान खोदने की मशीनें बनाने में भी काफी प्रगति हुई है। खान मशीनें बनाने का एक सरकारी कारखाना दुर्गापुर में बनाया जा रहा है। इस कारखाने में हर साल १५ करोड़ रु० की मशीनें बनाई जाएंगी। इस कारखाने को बढ़ाया भी जा सकेगा। खान-मशीनें बनाने वाले निजी कारखानों को भी बढ़ाया जा रहा है।

इस समय हर साल १० करोड़ रु० के मशीनी औजार बनाए जा रहे हैं, जबकि दस साल पहले १ करोड़ रु० से भी कम के बनाए जाते थे।

तीसरी योजना में हिन्दुस्तान मशीन टूल्स (बंगलौर) कारखाने में अब से दुगने मशीनी-औजार बनने लगेंगे। भारी मशीनी औजार बनाने का भी एक सरकारी कारखाना लगाया जाएगा। तीसरी योजना में ३६ करोड़ रु० के मशीनी औजार बनाने का लक्ष्य है।

## बिजली का सामान

भोपाल में बिजली का भारी सामान बनाने का सरकारी कारखाना खोला गया है। ऐसे दो और सरकारी कारखाने खोले जाएंगे।

इन कारखानों में पानी और भाप से बिजली बनाने वाले जनेरेटर, बिजली की मोटरें, ट्रांसफार्मर, स्विचगीयर और बिजली की रेलों का सामान बनाया जायगा।

रांची (बिहार) में भारी मशीनें बनाने का कारखाना बनाया जा रहा है। इस कारखाने में लोहा और इस्पात कारखानों की मशीनें बनाई जाएंगी। इस कारखाने में प्रति वर्ष ८० हजार टन मशीनें बनेंगी और हर दो साल पर यहां १० लाख टन के एक इस्पात कारखाने की पूरी मशीन बनेगी।

रसायन उद्योग की मशीनों का उत्पादन बढ़ाया जायगा। इस समय हर साल लगभग ४॥ करोड़ रु० की रासायनिक कारखानों की मशीनें देश में बन रही हैं। रासायनिक कारखानों की भारी मशीनें और अन्य सामान बनाने का सरकारी करखाना खड़ा करने पर विचार हो रहा है।

---

## नया साहित्य

जर्मनी एक नज़र में—फ़ैडरल जर्मन सरकार द्वारा प्रकाशित।

इस संक्षिप्त पुस्तक में जर्मन गणराज्य का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। जर्मनी संसार में एक समर्थ और उन्नत राष्ट्र रहा है। दुर्भाग्य से आज वह भी भारत की तरह दो खण्डों में विभक्त हो गया है। भीषण विश्वयुद्ध में क्षतिग्रस्त होने के कारण पहले ही जर्मन जनता बिल्कुल तबाह हो गई थी और देश के नगर, ग्राम, रेलवे, कल कारखाने अर्थात् उद्योग और कृषि, व्यापार सब नष्ट भ्रष्ट हो गये, फिर भी आज जर्मन गणराज्य कुछ वर्षों में सशक्त बनकर अपने पैरों खड़ा हो गया है। यहां तक कि आज भारत सरकार उससे आर्थिक सहायता की अपेक्षा कर रही है। इसलिए जर्मन गणराज्य (पश्चिमी जर्मनी) का परिचय हमारे लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक होगा। प्रस्तुत पुस्तक में जर्मनी के सम्बन्ध में भौगोलिक, आर्थिक, औद्योगिक, संवैधानिक, राजनैतिक सचित्र जानकारी मिलती है।

यजुर्वेद शतकम्, सामवेद शतकम्—

इन दोनों पुस्तकों के प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क दिल्ली है। दोनों का मूल्य एक-एक रुपया है। दोनों पुस्तकें पॉकेट साईज में निकाली गई हैं। यजुर्वेद शतकम् में ऋषि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य से सौ मंत्र लिये गये हैं और स्वामी जी के शब्दों में ही उनका भाष्य किया गया है। प्रत्येक पृष्ठ में एक मंत्र है। पुस्तक की छपाई-सफाई और गेट-अप बहुत आकर्षक है।

दूसरी पुस्तक में पण्डित तुलसीराम स्वामी के साम्यवेद भाष्य से सौ मंत्रों का सुन्दर संग्रह दिया गया है। स्वाध्याय प्रेमियों के लिये दोनों पुस्तकें अध्ययन योग्य है। दोनों का आवरण पृष्ठ नयनाभिराम है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं

## पश्चिमी जर्मनी की सहायता

भारत की पंचवर्षीय योजनाओं के विकास में पश्चिमी जर्मनी पूर्वी जर्मनी की तरह पर्याप्त उत्साह दिखा रहा है। पश्चिमी जर्मनी से १९६० तक कुल आयातक माल का मूल्य १०,००० लाख रुपये तक पहुँच गया है इस आयातक माल में राउ केला इस्पात कार खाने के लिये संयंत्र व अन्य सामान, रासायनिक कारखाने का सामान और बिजली आदि का सामान सम्मिलित है। मशीन निर्माण कारखाने की स्थापना में भी पश्चिमी जर्मनी रुचि लेने लगा है, मोटर के पहिये आदि के पुर्जों के बारे भी वह सहायता का हाथ आगे बढ़ा रहा है। पश्चिमी जर्मनी भारत को तकनीकी और वित्तीय सहायता दे रहा है। दूसरी योजना की अवधि तक पश्चिमी जर्मनी से भारत को कुल ९२० लाख पौंड की सहायता मिल चुकी है। तीसरी पंचवर्षीय योजना में वह भारत को पूर्वी जर्मनी की तरह विनियोजन की सुविधा देने को तैयार हो गया है।

## कनाडा से आर्थिक सहायता

कनाडा ने १९६०-६१ में भारत को २ करोड़ ५० लाख डालर की सहायता दी है। कनाडा और भारत के अधिकारियों ने विचार-विमर्श द्वारा यह तय किया है कि इसमें से ७० लाख डालर गेहूँ के आयात के लिए रखा जाए। अलौह धातुओं के आयात के लिए १ करोड़ १७ लाख डालर रखे गए हैं। कनाडा-भारत अणु-भट्टी के लिए ६ लाख डालर और मद्रास में कुंडा पन-बिजली योजगा के लिए ३५ लाख डालर रखे गये हैं।

## चीनी वेतन मंडल की सिफारिशें

भारत सरकार ने चीनी उद्योग के वेतन मंडल की सिफारिशें कुछ शर्तों के साथ मानने की घोषणा की है।

चीनी वेतन मंडल दिसम्बर १९५७ में नियुक्त किया गया था और विंध्य वासिनी प्रसाद इसके अध्यक्ष थे। इसकी रिपोर्ट ७ सितम्बर, १९६० को प्रकाशित हुई थी।

यद्यपि हर क्षेत्र के वेतन अलग-अलग होंगे। फिर भी मंडल की सिफारिशों के अनुसार कम-से-कम वेतन ६०-१-६५ रु० अवश्य होना चाहिए और बाकी रकम उस क्षेत्र का मंहगाई भत्ता माना जाना चाहिए। वेतन की दृष्टि से देश को चार क्षेत्रों उत्तर, मध्य, महाराष्ट्र और दक्षिण में बांटा गया है। मंडल की सिफारिशें १ नवम्बर, १९६० से लागू करने को कहा गया है।

## मद्रास में इस्पात बेलन मिल

मद्रास राज्य में तीसरी योजना में इस्पात बेलन मिल स्थापित की जाएगी, जहां ५० हजार टन इस्पात बेला जाएगा। यह मिल सरकार स्थापित करेगी और इस पर १ करोड़ रु० खर्च आएगा।

## कारखाना मजदूरों के लिए ९५,७४४ मकान

कारखाना मजदूरों के लिए मकान बनाने की योजना के अन्तर्गत सितम्बर १९५२ से ३० सितम्बर १९६० तक ९५,७४४ मकान बनाये गये। इस अवधि में १,३२,५१२ मकान बनाने की स्वीकृति दी गयी इनमें से ४२,१८१ मकान पहली योजना में बनाये गये और शेष दूसरी योजना के पहले चार वर्षों में।

राज्य सरकारों ने ७९,८३३, मालिकों ने १४,४८५ और सहकारी समितियों ने १,४२६ मकान बनाये।

## भिलाई इस्पात कारखाने का विस्तार

भारत सरकार और सोवियत रूस की सरकार की एक संयुक्त विज्ञप्ति में कहा गया है कि भारत और रूस के सहयोग से भिलाई का इस्पात कारखाना अब और बढ़ाया जाएगा, ताकि यहां प्रति वर्ष २५ लाख टन इस्पात तैयार हो सके।

भारत और सोवियत संघ के आर्थिक सहयोग के फलस्वरूप २ फरवरी, १९५५ को भिलाई इस्पात कारखाने की स्थापना के बारे में समझौता हुआ था।

भिलाई की पहली धमन भट्टी फरवरी १९५९ में चालू हो गयी थी। अब तक ६०० से भी ऊपर शिल्पी सोवियत संघ जा कर इस्पात कारखाने का काम सीख चुके



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। अब तक इस कारखाने में १० लाख टन से अधिक लोहा और ४ लाख टन इस्पात और कई प्रकार के रसायन बन चुके हैं। जल्दी ही यहां पूरा क्षमता के बराबर उत्पादन होने लगेगा।

## उद्योगों में केन्द्रीय सरकार की पूंजी

उपलब्ध जानकारी के अनुसार, केन्द्रीय सरकार ने बड़े उद्योग-कारखानों पर पहली योजना में ५२ करोड़ २० लाख रु० और इस योजना के पहले तीन वर्षों में ४ अरब १४ करोड़ १९ लाख रु० लगाया है।

सदन की मेज पर रखे गये ब्यौरे में बताया गया है कि केन्द्रीय सरकार ने जो पूंजी लगाई, उसका राज्यवार ब्यौरा इस प्रकार है :

(लाख रुपयों में)

| राज्य | पहली योजना की अवधि में | दूसरी योजना के पहले तीन वर्षों में |
|---|---|---|
| आंध्र प्रदेश | ३४९ | ६५ |
| बिहार | २५८ | ५२४ |
| बम्बई | २३८ | २७६ |
| केरल | १०२ | २५× |
| मद्रास | ७३८ | २२६८ |
| मध्य प्रदेश | १२३ | १२७०९ |
| मैसूर | ७३१ | २५९ |
| उड़ीसा | ६५४ | १३८७३ |
| पंजाब | — | ९१० |
| उत्तर प्रदेश | — | ६९ |
| प० बंगाल | १९८८ | १०३५२ |
| दिल्ली | ३९ | ८९ |
| कुल— | ५२२० | ४१४१९ |

× हिन्दुस्तान इसेक्टिसाइड कम्पनी को छोड़कर। उसमें लगने वाली पूंजी दिल्ली के अन्तर्गत दिखाई गई है।

उक्त आंकड़ों में वह पूंजी शामिल नहीं है, जो केन्द्रीय सरकार औद्योगिक वित्त निगम के अथवा राज्यों के कारखानों के लिए राज्य सरकारों के मार्फत दी जी जाती है। इसमें छोटे उद्योगों को दी जाने वाली रकम भी शामिल नहीं है।

नूनमती में तेल साफ करने का पहला कारखाना इस साल के अन्त में चालू हो जाएगा। वहां हर साल लगभग ४०,००० टन ग्रीन पेट्रोलियम कोक भी तैयार किया जाएगा।

## तीसरी योजना में खेती कार्यक्रम

तीसरी पंचवर्षीय योजना में खेती के कार्यक्रमों के लिए १० अरब ७२ करोड़ रु० रखने का प्रस्ताव है। तीसरी योजना की प्रस्तावित रूपरेखा में खेती के कार्यक्रमों के लिए जो राशि निर्धारित की गयी थी वह उससे ५० करोड़ रु० अधिक है।

योजना आयोग ने निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में उर्वरक बनाने के कारखाने खोलने की मंजूरी दी है। इस्पात, खान और ईंधन मंत्रालय खेती के औजारों के लिए इस्पात देने को प्राथमिकता देगा। खेती की उपज बढ़ाने के लिए जो कार्यक्रम चालू किये जा रहे हैं उनसे तीसरी योजना के अन्त तक १० करोड़ टन अनाज पैदा करने का लक्ष्य अवश्य पूरा होगा। खेती के कार्यक्रमों में पशु-पालन और दुग्धशालाएं खोलने को प्राथमिकता दी जाएगी।

## १९६० में कम्पनियों की रजिस्ट्री

कम्पनी कानून प्रशासन विभाग से प्राप्त विवरण के अनुसार अप्रैल, १९५६ से लेकर अब तक ५,६०० से भी अधिक नयी कम्पनियां बन चुकी हैं। कम्पनी अधिनियम अप्रैल १९५६ में लागू हुआ था। सन् १९६० में सबसे अधिक १६४१ नयी कम्पनियां रजिस्टर हुईं। यह अधिक है। इन नयी कम्पनियों की अधिकृत पूंजी २८८ करोड़ रु० थी। १९५९ में १३९९ नयी कम्पनियां रजिस्टर हुई थीं, जिनकी अधिकृत पूंजी १६९ करोड़ रु० थी।

अप्रैल, १९५६ से १९६० के अन्त तक जो ५,६३८ कम्पनियां रजिस्टर हुईं, उनकी कुल अधिकृत पूंजी ९८३ करोड़ रु० थी। कुल रजिस्टर हुई कम्पनियों में से ४०६ सरकारी कम्पनियां और ५,२३२ निजी कम्पनियां थीं।

अप्रैल १९५६ से १९६० के अन्त तक की अवधि में कम्पनियों की कुल चुकता पूंजी में ६२५ करोड़ रु० की वृद्धि हुई। इसमें ४२५ करोड़ रु० की पूंजी सरकारी क्षेत्र में थी।





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## बम्बई के प्रसिद्ध व्यवसायी

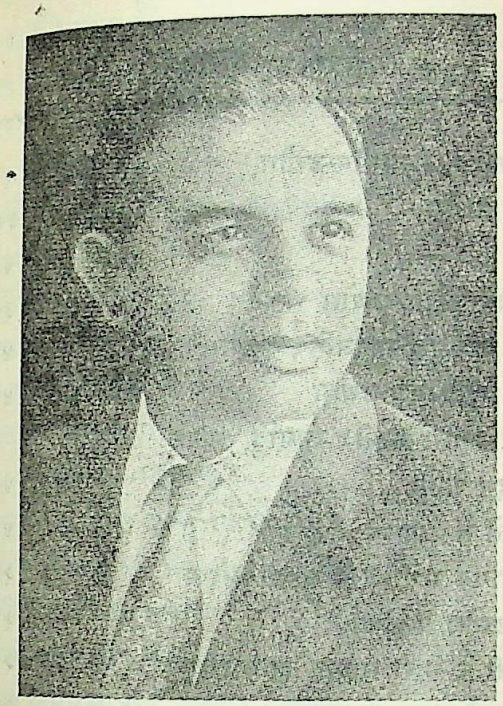

प्रवीणचन्द्र बी० गांधी

श्री प्रवीणचन्द्र बी० गांधी १९६१ के लिये इंडियन मर्चेन्ट्स चेम्बर के उपाध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं। आप कई वर्षों से इस चेम्बर के सक्रिय सदस्य रहे हैं। आप 'फेडरेशन ऑफ इंडियन चेम्बर्स आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री' के भी सदस्य हैं।

आप श्री देवकरन नानजी के प्रपौत्र हैं। आपका जन्म सन् १९२२ में हुआ। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् आप १९३९ में देवकरन नानजी बैंकिंग कम्पनी लिमिटेड में कार्य करने लगे और अपनी अद्भुत प्रतिभा और कठोर परिश्रमी होने के कारण १९४३ में ही आपने बैंक के मैनेजिंग डाइरेक्टर के पद को प्राप्त कर लिया। इण्डियन बैंकर्स एसोसियेशन तथा अनेक संस्थाओं के सदस्य या संचालक (डाइरेक्टर) भी आप ही हैं। 'वेस्टर्न इंडिया ऑटोमोबाइल एसोसियेशन आदि अनेक संस्थाओं के भी आप सदस्य हैं। ब्रिटेन, अमरीका, जापान आदि अनेक देशों की यात्राओं से आपको उन देशों की बैंकिंग संचालन की नई-नई प्रणालियों व पद्धतियों का अध्यापन का अवसर मिला। आप अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक तथा अन्य उपयोगी संस्थाओं में रुचि लेते हैं।

[ पृष्ठ ३८ का शेष ]

दर्जे के डिब्बे, बड़ी लाइन के ई० एम० यू० डिब्बे आदि भी तैयार करने लगेगा। सरकारी क्षेत्र में डीजल के इंजन तैयार करने का काम भी शुरू किया जाएगा। देश में माल डिब्बे तैयार करने की क्षमता निरन्तर बढ़ती जा रही है और माल डिब्बे तैयार करने वाले नये कारखाने खुल रहे हैं।

## निर्यात के माल पर भाड़े में रियायत

निर्यात बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयत्नों के अन्तर्गत इस वर्ष १३ और वस्तुओं पर माल भाड़े में रियायत दी गयी है। इनको मिलाकर माल भाड़े में रियायत प्राप्त ऐसी कुल वस्तुओं की संख्या अब ३८ हो गयी है।

दो और जनता गाड़ियां शुरू की गईं हैं तथा कुछ जनता गाड़ियों के यात्रा क्षेत्र और संख्या में वृद्धि की गयी है। तीसरे डिब्बे में सोने के डिब्बों की सुविधा छोटी लाइन की उन गाड़ियों में भी दे दी गयी है, जिसका यात्रा क्षेत्र ४५० किलोमीटर से अधिक है।

रेलों को पहले दर्जे के डिब्बों में अतिरिक्त पंखे लगाने के आदेश दे दिये गये हैं। दूसरी योजना के पहले ४ वर्षों में ७७९ स्टेशनों पर बिजली लगा दी गयी है और चालू वर्ष में ३८० और स्टेशनों पर बिजली लग जाने की आशा है।

## रेल सहकारियां

रेल कर्मचारियों की ऐसी सहकारी संस्थाएं बनाने को प्रोत्साहन दिया जा रहा है जो माल, पार्सल और कोयला आदि के यातायात के ठेके ले सकें। ऐसी १२ सहकारियों को १८ स्टेशनों पर लगभग १० लाख रु० साल के ठेके दिये गये हैं। कुछ सहकारियों को इंजीनियरी के काम को सौंप गये हैं। इनके अतिरिक्त रेल कर्मचारियों के लिए उपभोग्य वस्तुओं की व्यवस्था करने वाली बहुत सी सहकारियां इस समय काम कर रही हैं।

हड़ताल के कारण रेलों को लगभग ८ लाख ५० हजार जन-दिनों की हानि हुई। रेल विभाग सदैव ही अधिकांश कामों में कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहा है। इसी बात को ध्यान में रखकर विभिन्न रेलों में ३५० संयुक्त समितियां भी बनायी गयी हैं जिनके द्वारा रेल कर्मचारी कुशलता बढ़ाने, खर्च में कमी करने, यात्रा को सुरक्षित बनाने तथा यात्रियों को सुविधाएं देने के बारे में अपने सुझाव दे सकते हैं। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा

## विषय-सूची

जनवरी—दिसम्बर, १९६०

### कृषि और खाद्य


कृषि के यंत्रीकरण से पूर्व ५
भूमिसुधार और अन्न उत्पादन १३
भारत की खाद्य समस्या २१
क्षरण या कटाव कैसे रोका जाय २४
आखिर, अनाज की मंहगाई क्यों ? ३१
हरी खाद अधिक उपयोगी १०५
सहकारी खेती क्या रूप लेगी २०३
कृषि का अन्धकारमय भविष्य २५५
सहकारिता की परम्परायें २४८
खेती ट्रेक्टर से नहीं २५९
भारतीय कृषि व्यवस्था की रीढ़ २७३
कृषि उत्पादन की समस्या २५८
क्या सहकारी खेती संभव है ? ३०१
पशु कैसे उन्नत हों ? ३२८
भूमिसुधार के कार्यक्रम ४२७
सहकारिता कुछ बुनियादी बातें ४६९


### उद्योग


पिपरी पेनिसिलिन कारखाना १०
भारत में अणुशक्ति का विकास १८
भारत की वन सम्पदा ५४
बड़े उद्योगों का स्वामित्व ७१
घरेलू इंधन का उपयोग ७७
वस्त्रोद्योग की समस्यायें व समाधान ८१
भारी उद्योगों का आधार ८७
भारत का प्राचीन उद्योग ९५
हथकरघा उद्योग ९६
हथकरघा सेवा केन्द्र ९७
उद्योग के बढ़ते चरण २१९
जहाजी उद्योग की कहानी २६८
हमारे उद्योग २८३
लोकतंत्र में राज्यकीय-उद्योग २९९
हमारे उद्योग २२९, ३१५, ३७४, ४२४, ५१५, ६३०
भारतीय जहाज उद्योग ३२३
भारत के प्रमुख सार्वजनिक उद्योग ४१९
भारत का कागज उद्योग ४७२
सीमेंट उद्योग-मेंगनीज निर्यात, अभ्रक उत्पादन आदि ४७८
उद्योगों में उत्पादन कैसे बढ़ें ? ४९६
औद्योगिक मशीनों में आत्मनिर्भरता ५१७
तेल उद्योग में संघर्ष ५६१
बिजली के भारी सामान का कारखाना ५७४
सीमेंट की मूल्य समस्या ५६५
गुडइयर ६२२
खादी का मूल्यांकन ६२५


### आर्थिक तथा वित्तीय


बंगलौर कांग्रेस का आर्थिक कार्य-क्रम १६
गिरता हुआ समय २०
सोवियत संघ और भारत का नया आर्थिक समझौता २२
गणतंत्र का दसवां वर्ष : आर्थिक प्रवृत्तियां २७
वस्त्र संकट का नया दौर ३३
१९५८-५९ में भारत की आर्थिक व वित्तीय स्थिति ४०
विदेशी मुद्रा और विदेशी सहायता ५०
बड़े उद्योगों का स्वामित्व ७१
सांख्यि की ८५, १५५, २२६
नये वर्ष का बजट १३३
राष्ट्र-सम्पति का विनाश, आडम्बर में कमी १३४
योजनायें और बजट १३८
बजट और आधुनिक अर्थशास्त्र १३९




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


राज आय के विभिन्न साधन १४२
बजट कैसे बनता है १४४
राष्ट्र की आर्थिक स्थिति १४७
भारत के वित्त मंत्री १५२
उत्पादन कर बढ़ रहे हैं १५४
संघों और राज्यों में राजस्व का वितरण १५९
राज्यों के बजट १६०
नये वर्ष का रेलवे बजट १६३
बजट १९६०-६१ के नये प्रस्ताव १६७
जी हां मैं वित्तमंत्री हूँ। १७१
उत्पादन उपलब्धियां और मूल्य १९५
मुद्रा स्फीति तथा संकुचन १९९
कम्युनिजम मानव जाति आ भविष्य २०४
स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास २०८
विविध राज्यों का बजट २१२
राज्यों का विकास नियोजन २२१
मूल्य निर्धारण और मंहगाई विवरण २४१
राष्ट्रीय आय २४६
१९५९-६० में विदेशों से सहायता २५१
राष्ट्र का आर्थिक प्रवाह २५३
अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियां २९३
वस्त्र-व्यापार संघों की सेवायें ३०७
ग्रामों का प्रवाह नगरों की ओर ३१२
क्या साधन जुटा सकेंगे ? ३४५
सरकारी उद्योगों में निजी पूंजी ३६४
भारत अमरीकी सहयोग ३६९
राज्यों की आय के श्रोत ३७६
मंहगाई की विकट समस्या ३९१
भारत में मिश्रित अर्थ व्यवस्था ३९५
जापान व भारत का आर्थिक विकास ३९८
भारत के लिये रूस का सस्ता तेल ४०१
विदेशों से सहायता ४१०
राज्य की बढ़ी हुई आय कहां गई ? ४५५
राष्ट्र का आर्थिक प्रवाह ४६०
नयी आयात नीति ५०१
प्रतिकूल व्यापाराधिक्य की समस्या ५०७
पाकिस्तान से नहरी समझौता ५१९
भारत व पोलैण्ड में पारस्परिक बंध ५३५
वन्य पशु और वन सम्पति ५७९
काफी की मांग कम : उत्पादन अधिक ५९४
मंहगाई कम हो रही है ! ! ! ५५७
बिक्री कर उत्पादन कर के रूप में ६०९
कम्पनी कानून में संशोधन ६१४
नियंत्रणों का संकट ६१५
मूल्य वृद्धि कैसे रोका जाय ? ६१८
कम्पनियां कैसे हिसाब रखती हैं ? ६२८


## अन्तर्राष्ट्रीय


विश्व कृषि मेले में जर्मनी का मंडप २६
विदेशों में 'कागजी सुवर्ण' ३९
रूस में कृषि का यंत्रीगरण ५२
पूर्वी जर्मनी में सहकारी कृषि ११९
ख्रुश्चेव के गांव का काया कल्प १०६
चीन का आर्थिक विकास १११
विदेशों के बजट १७२
जर्मनी गणराज्य में स्वतंत्र बाजार १८०
दक्षिण पूर्व एशिया में नया आर्थिक संघ १९४
नील नदी पर अस्वान बांध २६३
सामूहिक फार्मों की सम्पति २६४
विश्व की आबादी दो अरब ४७६
घाटे की अर्थव्यवस्था व अर्द्ध विकसित देश ५१०
पोलैंड अंकों में परिचय ५३६
पोलैंड की अर्थव्यवस्था ५३८
पोलैंड व भारत में व्यापार ५३९
कोलम्बो योजना ५८५
बिनाटैक्सों वाले देश ५८३
यूरोप का स्वर्ण संकट ५६३
अक्टूबर की महान क्रांति ५७१
यूरोप के आर्थिक संगठन और भारत ६२०
पोलैंड की पंचवर्षीय योजना ६३४
शंघाई का सूती उद्योग ६३५
कोलम्बो योजना व ब्रिटेन ६३७




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज की दुनियां में ग्रामोद्योग ६२३

## श्रम समस्या

श्रमिकों का प्रबन्ध में सहयोग ७९
आगे बढ़ते हुये देश और श्रमिक २१०
श्रम समस्या २८१
संगठित और असंगठित मजदूरों के वेतन ३२५
श्रम समस्या ३६६, ५४१
श्रमिक संघ का कोष और उनका उपयोग ५९०

## राज्यों की गति विधि

पंजाब द्वारा खाद्य मोर्चे पर संघर्ष ४८
पंजाब में हथकरघा उद्योग ९७
मैसूर का हथकरघा उद्योग ९८
मध्य प्रदेश की प्रगति १०३
गुजरात की समस्यायें २४५
पंजाब की औद्योगिक समस्यायें २६६
पंजाब ने क्या पाया ? ४०७
राजस्थान एकीकरण से विकेन्द्रीकरण तक ५२७
पंचायत राज का एक वर्ष ५२९
राजस्थान में सामुदायिक विकास ५३१
खनिजों का भंडार राजस्थान ५३२
कोटा—राजस्थान का कानपुर ५६५
चम्बल योजना की विशेषतायें ५९६
विभिन्न राज्यों की गतिविधि ५७६
जय चम्बल ६३९
कोटा सिंचई बांध ६४१
गांधीसागर बांध ६४३

## विविध

दो विरोधी दलों के कार्यक्रम २१६
नये बजट २१७
कांदला का बन्दगाह २५७
ग्राम निर्माण की दिशा में २७९
लोकतंत्र में राजकीय उद्योग २९९
सन्तति विरोध ३६७
गांव-गांव में सहकारिता ४०३
अपनी जानकारी बढ़ाइये ४०५
राजधानियों पर अपव्यय ४१२
उद्योग मंत्रालय कैसे काम करता है ? ४६३
१९६१ की जनगणना ४७७
क्या कपड़े के दाम कम हुये ? ४७३
सरकार बनाम भूदान आंदोलन ५०१
खाद्यान्नों का सरकारी व्यापार व आयात ५०५
कांदला भारत का मुक्त व्यापार क्षेत्र ५१२
सामुदायिक विकास व सर्वोदय ५२४
समाजवादी समाज ५८८
गो सेवा का आर्थिक और नैतिक मूल्य ५८७
हम बढ़ रहे हैं ! ६३२

## पंचवर्षीय योजना

तीसरी योजना के मूल श्रोत ११
तीसरी योजना के ऊंचे लक्ष्य ६१
पंचवर्षीय जोजना में खेती की पैदावार ७४
भारत प्रगति पथ पर १०४
तृतीय पंचवर्षीय योजना १९९
योजनाओं का मूल २४७
योजनायें व औद्योगिक विकास ३०३
तीसरी योजना की प्रस्तावित रूपरेखा ३५१
कुछ महत्वपूर्ण आर्थिक प्रश्न ३६३
तीसरी विकास योजना ३९९
तीसरी योजना कैसे सफल हो ? ४१७
तीसरी पंचवर्षीय योजना कुछ प्रश्न ४४९
योजना पर पुनर्विचार की आवश्यकता ४५८
तीसरी योजना में औद्योगिक विकास ४७५
तीसरी योजना के लिए साधन ५०३
तीसरी योजना में रोजगार ५६२
चम्बल योजना एक दृष्टि में ५६२
तीसरी योजना में अन्न की आत्म निर्भरता ५८१
तीसरी पंचवर्षीय योजना ५६३
तीसरी योजना के लिए विदेशी सहायता ६२६

## स्थायी स्तंभ

अर्थ वृत्त-चयन, सर्वोदय पृष्ठ, राष्ट्र का आर्थिक-प्रवाह बैंक व बीमा, नया निर्माण और नया साहित्य आदि।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अहिंसक समाज रचना की मासिक

# खादी पत्रिका

- खादी ग्रामोद्योग तथा सर्वोदय विचार पर विद्वतापूर्ण रचनाएं ।
- खादी ग्रामोद्योग आन्दोलन की देशव्यापी जानकारी ।
- कविता, लघुकथा, मोल के पत्थर, साहित्य-समीक्षा, संस्था परिचय ।
- सांख्यिकी पृष्ठ आदि स्थायी स्तम्भ ।
- आकर्षक मुखपृष्ठ : हाथ कागज पर छपाई ।

संपादक

ध्वजाप्रसाद साहू

जवाहिरलाल जैन

वार्षिक मूल्य ३)रु०, एक प्रति पच्चीस नये पैसे

राजस्थान खादी संघ पो० खादी बाग (जयपुर)



# 'भारत व्यापार पत्रिका' की विशेषताएँ

पृष्ठ सं. १०० वार्षिक चंदा ८) साधारण अंक ७५न. पै.

- उद्योगपतियों एवं व्यापारियों के लिए उपयोगी सामग्री
- व्यापारिक भविष्य वाणी
- एक विज्ञापन मुफ्त छापने की योजना
- अर्थशास्त्र के छात्रों के लिए अनेक जानकारी
- मनोरंजन के लिए आकर्षक कहानी, गंगा की लहरें स्तम्भ में व्यंग विनोद तथा सामयिक कार्टून
- सम्पादक की डाक में आपके प्रश्नोत्तर
- इसके अलावा अनेकों स्थाई स्तम्भ

अगर आपने अब तक पत्रिका नहीं देखी है तो आज ही इस विज्ञापन की कटिंग के साथ २५ नये पैसे का पोस्टेज भेजकर नमूना मंगाइये । विज्ञापन दर तथा जानकारी के लिए लिखें—

व्यवस्थापक, भारत व्यापार पत्रिका (मासिक)

राजा दरवाजा, वाराणसी

तार–केनाको पो० बॉ० नं० ४९ फोन–३३४३



# ग्राम राज

(मास में तीन बार प्रकाशित)

सम्पादक :— श्रीगोकुलभाई भट्ट

"ग्रामराज बहुत ही शानदार और बहुत ही सुन्दर पत्र निकल रहा है । सब तरह की जानकारी इसमें रहती है । राजस्थान के हर शिक्षित भाई बहन के हाथ में यह पत्रिका होनी चाहिये

—विनोबा

वार्षिक चन्दा तीन रुपया

कार्यालय का पता :—ग्रामराज, किशोर निवास, त्रिपोलिया, जयपुर



सबसे सस्ता सचित्र हिन्दी मासिक

# जागृति

जिसे राष्ट्र भाषा के सभी प्रमुख लेखकों, कवियों और कहानीकारों का सहयोग प्राप्त है ।

उत्प्रेरक कविताएं, ज्ञानवर्धक लेख सांस्कृतिक निबन्ध, रोचक कहानियां, बाल संसार, साहित्य आगे बढ़ता है आदि स्तंभ

तिरंगा आवरण, अनेकों इकरंगे चित्र

४८ से ५६ पृष्ठ की सम्पूर्ण छपाई आर्ट पेपर पर

इस पर भी मय केवल २५ नए पैसे

एजेन्टों को ५ से १०० प्रतियों पर २५ प्रतिशत और इससे ज्यादा पर ३३$\frac{1}{3}$ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है । डाक खर्च प्रकाशकों के जिम्मे । ऐजेंट नमूने की प्रति के लिए आज ही लिखें :

व्यवस्थापक, 'जागृति' हिन्दी लोक सम्पर्क विभाग, पंजाब, चंडीगढ़


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा के अनूठे उपहार : ११ विशेषांक

'सम्पदा' का प्रत्येक अंक ज्ञानवर्धक होता है, पर विशेषांक तो अपने विषय के विश्व-कोष ही होते हैं। प्रोफेसर श्री ओमप्रकाश तोषनीवाल, एम० कॉम० कहते हैं—'सम्पदा' के विशेषांक तो हमारे लिए गीता व बाइबिल के समान हैं।'

## १-योजना अंक

( प्रथम योजना सम्बन्धी अपूर्व सामग्री )

एक प्रशंसनीय प्रयत्न। यह अंक पंचवर्षीय योजना को समझने की कुंजी है।

मूल्य : १.०० —जीवन साहित्य

## २-भूमि-सुधार अंक

( भूमि समस्याओं का अद्भुत विवेचन )

इस विषय में अपने ढंग का अद्वितीय प्रकाशन है।

मूल्य : १.०० (अप्राप्य) —प्रताप

## ३-वस्त्र-उद्योग अंक

( भारत के प्रमुख उद्योग का परिचय और समस्याएं )

इस अंक के पीछे काफी श्रम किया गया है। सम्पादक को बधाई।

मूल्य : १.२५ —श्री घनश्यामदास बिड़ला

## ४-चम्बल अंक

( चम्बल योजना का विस्तृत परिचय )

अंक को सभी दृष्टि से रोचक बनाया गया है।

मूल्य : ००.७५ (अप्राप्य) —श्री मिश्रीलाल गंगवाल

## ५-मजदूर अंक

(मजदूर समस्या के विविध पहलुओं का विवेचन )

लेख बहुत रोचक व उपयोगी हैं। ···मानव की नैतिकता पर भी जोर दिया गया है जो देश की संस्कृति व परम्पराओं के अनुकूल है।

मूल्य : १.५० —श्री खंडूभाई देसाई

## ६-उद्योग अंक

( प्रमुख उद्योगों के विकास का व्यापक परिचय)

भारतीय उद्योग और व्यवसाय की मूल समस्याओं पर गम्भीर तथा उपयोगी लेखों का अच्छा संग्रह है।

मूल्य : १.२५ —अजन्ता

## ७-राष्ट्रीय-विकास अंक

( द्वितीय पंचवर्षीय योजना का अध्ययन )

ज्ञानवर्धन के लिए ऐसी सामग्री प्रस्तुत करने वाले अंक का सर्वत्र स्वागत होगा।

मूल्य : १.२५ —श्री मोहनलाल सुखाड़िया

## ८-बैंक अंक

( भारतीय बैंकों की समस्याओं का निरूपण )

Here is one more 'Sampada' Special worth treasuring. (अप्राप्य)

मूल्य : १.२५ —Organiser

## ९-समाजवाद अंक

( समाजवाद के विभिन्न पहलुओं पर विचार )

सम्पदा का समाजवाद अंक मिला। यह काफी अच्छा और पठनीय है।

मूल्य : १.५० —श्री श्रीमन्नारायण

## १०-राष्ट्र-प्रगति अंक

( द्वितीय योजनाकाल की समस्याओं का विवेचन)

यह अति लाभदायक तथा उपयोगी है। लिखने का ढंग बहुत सुन्दर और रोचक है।

मूल्य : १.५० —श्री अमरनाथ विद्यालंकार

## ११-सहकारी कृषि अंक

देश के अत्यन्त विवादग्रस्त प्रश्न पर विविध समन्वयात्मक दृष्टिकोण। —मू० १.५०

रजिस्ट्री से सब प्राप्य अंक मंगाने के लिए रु० १०.५० भेजिये।

**सम्पदा • २८-११ शक्तिनगर • दिल्ली-६**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आर्थिक-राजनैतिक अनुसंधान विभाग का पाक्षिक पत्र

# आर्थिक समीक्षा

प्रधान सम्पादक : श्री सादिकअली

सम्पादक : श्री सुनील गुह

- हिन्दी में अनूठा प्रयास
- आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख
- आर्थिक सूचनाओं से ओतप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक, पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक।

वार्षिक मूल्य : ५) रु० एक प्रति २२ नये पैसे

लिखें—व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी,
७, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली

# "राष्ट्र-भारती"

सम्पादक—मोहनलाल भट्ट, हृषीकेश शर्मा

वार्षिक चन्दा मनीआर्डर से ६) रु;
नमूने की प्रति ६२ नये पैसे

इसमें आपको लब्धप्रतिष्ठ-विद्वान साहित्यकारों के ज्ञान-पोषक और मनोरंजक अच्छे-अच्छे लेख, कविताएं, कहानियां एकांकी, रेखाचित्र, शब्दचित्र आदि रचनायें पढ़ने को मिलेंगी।

इसमें संस्कृत, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं की तथा अंग्रेजी, रशियन आदि विदेशी भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं के सुन्दर हिन्दी अनुवाद भी रहते हैं।

आज ही मनीआर्डर द्वारा ६) भेजकर ग्राहक बन जाइये। रियायत—स्कूल-कालेजों, सार्वजनिक पुस्तकालयों तथा वाचनालयों को केवल ४) वार्षिक चन्दे में मिलेगी।

पत्रव्यवहार का पता—
व्यवस्थापक—"राष्ट्रभारती"
हिन्दी नगर, वर्धा
(राष्ट्रभाषा प्रचार समिति)

# भारत की औद्योगिक नीति

भारत के आर्थिक विकास और औद्योगिक उन्नति का सर्वाधिक महत्व है। पर भारत सरकार की उद्योग नीति क्या है—सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के लिए किस तरह दोनों का विभाजन किया गया है, आदि बातें समझने के लिए प्रो० रामनरेशलाल द्वारा लिखित—

**भारत की औद्योगिक नीति**

को पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। इसमें भारत के औद्योगिक विकास के इतिहास का भी योग्य लेखक ने विद्यार्थियों की दृष्टि से उपयोगी और सुन्दर परिचय दिया है।

६२ न. पै. के टिकट भेजने पर पुस्तक अण्डर पोस्टल सर्टिफिकेट भेजी जायगी।

मैनेजर—अशोक प्रकाशन मन्दिर,
२८/११ शक्ति नगर, दिल्ली-६

# उद्योग-व्यापार पत्रिका

देश में उद्योग और व्यापार को आगे बढ़ाने के लिये क्या हो रहा है और आप इससे किस तरह फायदा उठा सकते हैं? देश में क्या-क्या चीजें और कितने परिमाण में कहाँ-कहाँ बन रही हैं और आप क्या बना कर अच्छी कमाई कर सकते हैं? तरह-तरह के व्यापार की देश-विदेश में क्या दशा है? पंच-वर्षीय योजना से हमारी क्या उन्नति हो रही है? ये सभी प्रश्न ऐसे हैं, जिनके उत्तर आपको अवश्य जानने चाहिएँ, और इन सबकी जानकारी पाने का श्रेष्ठ साधन है—उद्योग व्यापार पत्रिका। इसलिये आप ६ रु० भेजकर साल भर के लिये आज ही ग्राहक बन जाइये। नमूना पत्र लिखकर मंगाइये।

एजेन्टों को भरपूर कमीशन।

पत्रिका विज्ञापन देने का अच्छा साधन है।

वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


संचालक पंचायत राज विभाग उ० प्र०
की
विज्ञप्ति संख्या ४।५५८० : २७।३३।५३, दिनांक १५
द्वारा
पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत

## सुन्दर पुस्तकें

| | | रु० | आ० |
|---|---|---|---|
| वेद सार | प्रो० विश्वबन्धु | १ | ८ |
| प्रभु का प्यारा कौन ? (२) भाग | | | |
| सच्चा सन्त | | | ३ |
| सिद्ध साधक कृष्ण | | | ३ |
| जीते जी ही मोक्ष | | | ३ |
| आदर्श कर्मयोग | | | ३ |
| विश्व-शांन्ति के पथ पर | | | १ |
| भारतीय संस्कृति | प्रो० चारुदेव | | ३ |
| बच्चों की देखभाल | प्रिंसिपल बहादुरमल | १ | १२ |
| हमारे बच्चे | श्री सन्तराम बी. ए. | ३ | १३ |
| हमारा समाज | | ६ | |
| व्यावहारिक ज्ञान | | २ | १२ |
| फलाहार | | १ | ४ |
| रस-धारा | | ० | १४ |
| देश-देशान्तर की कहानियां | | १ | |
| नये युग की कहानियां | | १ | १२ |
| गल्प मंजुल | डा० रघुबरदयाल | १ | |
| विशालभारत का इतिहास | प्रो० वेदव्यास | ३ | ८ |

१० प्रतिशत कमीशन और ५० रु० से ऊपर के आदेशों पर १५ प्रतिशत कमीशग।

विश्वेश्वरानन्द पुस्तक भंडार
साधु आश्रम, होशियारपुर, पंजाब



# सुभाषित रत्नमाला

## दूसरा संस्करण

सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

७ वर्ष पूर्व इस पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ था और हाथों-हाथ बिक गया था। कई वर्षों से पुस्तक अप्राप्य थी और इसकी माँग निरंतर बढ़ रही थी! अब परिवर्धित संस्करण आकर्षक रूप-सज्जा में प्रकाशित हुआ है इस संग्रह में—

- वैदिक एवं संस्कृत साहित्य के अगाध भण्डार से चुने गये ऐसे सरल-सुन्दर श्लोक और मंत्र, जिन्हें छोटे बच्चे भी सुविधापूर्वक कण्ठस्थ कर सकते हैं।
- श्लोकों और मन्त्रों का सरल-सुबोध हिन्दी में अर्थ।
- पुस्तक के अन्त में अर्थ-सहित कुछ ऐसी सूक्तियाँ, जिनके उपयोग विद्यार्थी अपने निबन्धों में कर सकें।
- आपके बच्चों के स्वस्थ मानसिक विकास और उनमें नैतिक चेतना जगाने के लिए अनिवार्य।
- उपहार और पुरस्कार में देने के लिए बहुत उपयुक्त।

मूल्य एक प्रति १.१५ रु०। 'सम्पदा' के ग्राहकों से १ रु० प्राप्त होने पर 'बुक पोस्ड अन्डर पोस्टेल सर्टिफिकेट' द्वारा भेजी जाएगी।

## अशोक प्रकाशन मन्दिर

२८/११, शक्तिनगर,
दिल्ली-६


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# डालमिया

## काश्म Stoneware एवं मृच्छिल्प Porcelain निर्मितियाँ (Products)

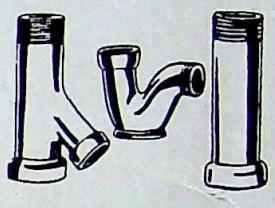

काश्म-नाल Stoneware Pipes
अधोभूमि जलोत्सारण के लिए

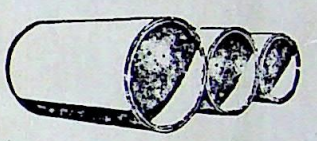

वज्रचूर्ण-अयस्संघा-नाल
( R. C. C. Spun Pipes )
पुलियाओं, जल-प्रदाय
और जलोत्सारण के लिए

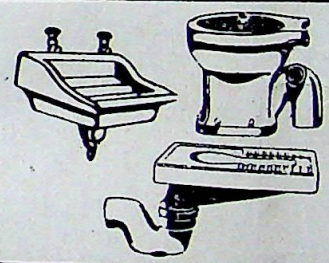

मृत्सा ( Porcelain )
आरोग्य पात्र ( Sanitary Wares )
भारतीय और यूरोपीय शौच-कुण्ड
( Water Closets )
धावन पात्री ( Wash Basins )
मूत्र-कुण्ड ( Urinals ) इत्यादि

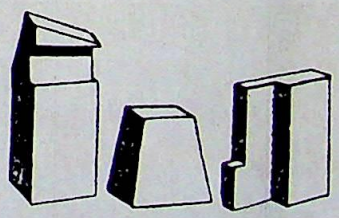

ऊष्मसह ( Refractories )
समस्त औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए

पोर्टलैण्ड सिमेंट
सामान्य निर्माण के लिये

**डालमिया सिमेंट ( भारत ) लिमिटेड**
**डालमियापुरम ( तिरुचिरापल्ली )**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




# जहां कहीं भी अच्छे वस्त्र पहने जाते हैं..... उत्तम सूटिंग्ज के लिये

GWALIOR RAYON FABRICS

BIRLA NAGAR

# ग्वालियर रेयन

किनारों पर

" ग्वालियर रेयन "

का चिन्ह देख लें

एरिस्टोक्रैट • डिप्लोमैट • मल्टी-कलर
थ्री-रोज़ेज़ • जैटएज • गार्डिया • कार्पन
वैल्थ • कालेजियन • क्रिस-क्रास
टिपटाप • हैपी यू इयर • तथा
गुडविल

GR-121


सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीजिज ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित
अशोक प्रकाशन मन्दिर २८/११ अजितगढ़, दिल्ली-६ से प्रकाशित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा

अर्थशास्त्र की नवीनतम गतिविधियों की
मासिक पत्रिका
अप्रैल १९६१

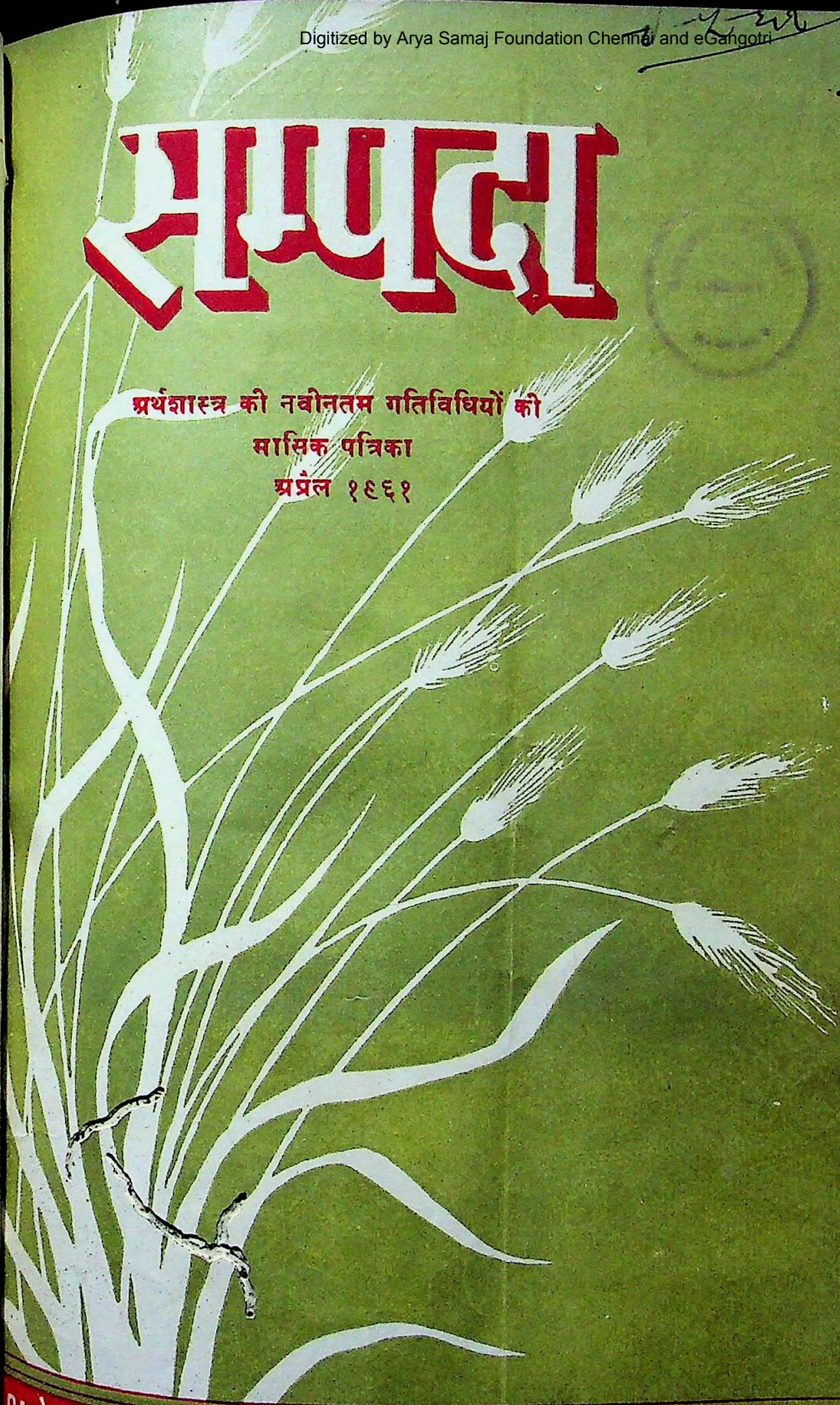

अशोक प्रकाशन मन्दिर शक्ति नगर दिल्ली

मूल्य
७५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# प्रगति के पथ पर नया चरण

विश्व विख्यात 'साकामोटो' लूम अब भारत में 'सिमको साकामोटो' के नाम से सेन्ट्रल इण्डिया मशीनरी मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी बिरला नगर द्वारा (ENSHU JAPAN) एन्शु जापान के सहयोग से निर्माण किये जा रहे हैं। ये अपनी कार्य क्षमता के लिए अद्वितीय हैं। इनके उपयोग से दुर्लभ विदेशी मुद्रा बचाइए और वस्त्र उत्पादन में नये आंकड़े प्रस्तुत करिये। 'सिमको' डोबी, कलैण्डर वाइल, वाइडिंग और वायरिंग मशीनें भी उपलब्ध हैं।

जानकारी के लिए लिखें—

**सेन्ट्रल इंडिया मशीनरी मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी, लिमिटेड**

बिरलागनर (ग्वालियर) मध्यप्रदेश

ग्राम—'सिमको'
फोन नं० ३६४
७४४



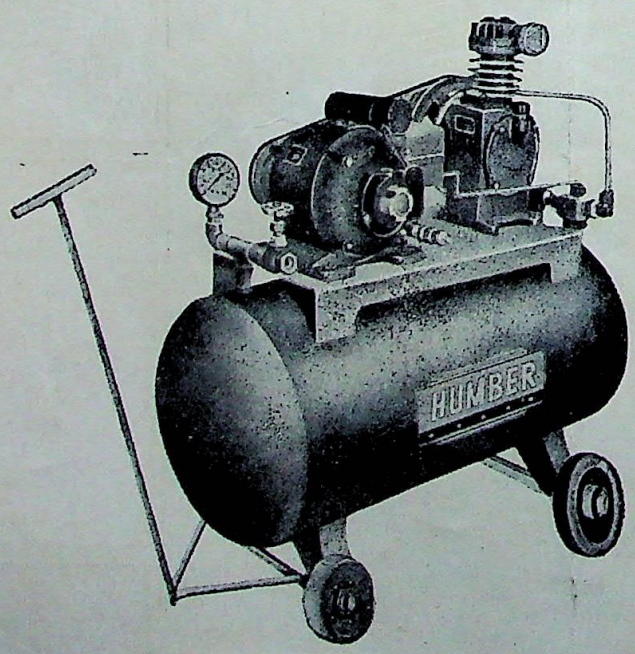


★ एयर कम्प्रेसर्स

★ स्प्रे पेंटिंग के साधन

★ कार वाशर

★ वैक्युम पम्पे

**डीडवानिया ब्रादर्स (प्रा.) लि.**

कश्मीरी गेट दिल्ली-६।

टेलीफोन : २३८१८

टेलीग्राम : डीडवानिया


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आप निश्चिंत रह सकते हैं

जब आप अपना माल... **OTS** शीघ्र यातायात सेवा द्वारा भेजते हैं।

## आप विश्वास रखें आपका माल समय पर पहुंचेगा

मध्य रेलवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय सूची


१. सम्पादकीय—हमारी अपनी योजना १६५

२. सम्पादकीय टिप्पणियां—भारत माता के ४४ करोड़ पुत्र, गन्ने का अत्यधिक उत्पादन, पिछले दस वर्षों में सरकारी उद्योगों में लाभ, अतिरिक्त आवश्यकता, परिवहन की क्षमता, बैंकों की आय, आर्थिक संगठनों की होड़ १६६

३. जनसंख्या और आर्थिक उन्नति साथ-साथ चलती है १७१

४. भारत की नई जनसंख्या १७२

५. उद्योग के विकास में बाधायें—मुरुगप्पा चेट्टियर १७५

६. उद्योगों का उद्देश्य समाजहित हो—पं० जवाहर लाल नेहरू १७६

७. सांख्यिकी—उत्पादनकर और मुख्य-मुख्य कर १७७

८. आटोमेशन ( स्वचलन ) से नई अर्थ व्यवस्था का जन्म—देवीप्रसाद नौटियाल १७९

९. पश्चिमी जर्मनी के द्रव्य मार्क का पुनर्मूल्यांकन—श्री शिवप्रसाद गोविल १८१

१०. राष्ट्रीय मजदूरी नीति—श्री बी० एन० गुप्त १८३

११. राज्यों में भूमि-सुधार की प्रगति ( गतांक से आगे ) १८६

१२. सर्वोदय-पृष्ठ—नई समाज रचना-नया मोड़—तामिलनाड में सत्याग्रह—गाय क्यों पाले ? १८८

१३. राजस्थान मरुभूमि से शस्यश्यामल में रूपान्तर १९०

१४. हमारे उद्योग १९२

१५. नया साहित्य १९३

१६. नब्बे लाख नागरिकों को नवजीवन १९४

१७. रुई और रेयन में संघर्ष १९६

१८. खाद्यान्नों का आयात १९९

१९. राज्यों के बजट २००

२०. आर्थिक समाचार २०२


●●●


सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

सहायक सम्पादक : देवीप्रसाद नौटियाल


---


## सम्पदा के पाठकों से

## अपना कर्तव्य देखिये

सम्पदा दस वर्षों से आपकी सेवा कर रही है। हिन्दी में अर्थशास्त्र की यह अपने ढंग की एक-मात्र पत्रिका है। क्या आपने इस के प्रति अपने कर्तव्य का पालन किया है ?

कम से कम दो ग्राहक बनाकर आप हमें सहयोग दे सकते हैं। दो नये ग्राहक बनाने वाले महानुभावों को,

**भारतीय औद्योगिक नीति**

अर्पित की जायगी। इसके लेखक हैं श्री रामनरेश लाल एम० ए०। सरकार की औद्योगिक नीति को समझने के लिए यह पत्रिका उपयोगी है।

—व्यवस्थापक सम्पदा

२८-११ शक्तिनगर दिल्ली-६


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पदा

वर्ष : १०
अंक : ४
अप्रैल १९६१

# हमारी अपनी योजना

इस मास की पहली तारीख से तीसरी पंचवर्षीय योजना का श्रीगणेश हो गया है। किसी विकास योजना की कोई एक अवधि नियत नहीं की जा सकती। तीसरी योजना का भी प्रारंभ वस्तुतः उसी दिन हो गया था, जिस दिन प्रथम पंचवर्षीय योजना का सूत्रपात किया गया था।

प्रत्येक योजना वस्तुतः एक विशाल विकास-योजना की एक कड़ी या सीढ़ी है, जिसके द्वारा हम एक मकान की छत बनाते हैं या ऊपर की मंजिल पर पहुँचने का प्रयत्न करते हैं। प्रत्येक पंचवर्षीय योजना अपनी आगे आने वाली विकास योजना के लिये पृष्ठभूमि तैयार करती है, जिससे नई योजना का कार्य सरल हो सके।

तृतीय पंचवर्षीय योजना भी देश को स्वयं स्फूर्त विकास के मार्ग पर चलाने में अधिक सहायक होगी, इस उज्ज्वल आशा से यह नई पंचवर्षीय योजना प्रारंभ की गई है।

तीसरी पंचवर्षीय योजना का अन्तिम रूप यद्यपि निर्धारित नहीं हुआ, तथापि यह निश्चित आय है कि वह करीब १२० अरब रुपये के लक्ष्य तक पहुँचेगी, इस योजना के लिये हम कहां तक साधन जुटा सकेंगे; इस योजना में कितनी त्रुटियां हैं या कितनी अच्छाइयां हैं तथा कितनी व्यावहारिक कठिनाइयां हमारे मार्ग में हैं आदि प्रश्नों की चर्चा करने का यह स्थान नहीं है। हम तो इन पंक्तियों के द्वारा केवल एक महत्वपूर्ण बात की ओर पाठकों और शासकों का ध्यान खींचना चाहते हैं।

कोई भी योजना तब तक पूरी नहीं हो सकती, जब तक शासनतंत्र जनता का विश्वास और सहयोग सम्पादन करने में सफल न हो और इसके लिये उसे जहाँ नीति या वाद पर पूर्वाग्रह और हठ छोड़ना होगा, वहाँ आडम्बर प्रियता तड़क-भड़क के साथ-साथ अपव्यय, भ्रष्टाचार आदि को भी छोड़कर आदर्श बनना होगा।

भारत में लोकतंत्र शासन है और लोकतंत्र का अर्थ है जनता की सरकार। प्रत्येक नागरिक को यह अनुभव करना होगा कि पंचवर्षीय योजना उसकी अपनी योजना है और उसको सफल बनाने में यथा-संभव अधिक से अधिक सहयोग देना उसका पवित्र कर्त्तव्य है। इसी सहयोग पर योजना की सफलता निर्भर है।

भगवान करे कि शासन-तंत्र और नागरिक वर्ग दोनों अपने कर्त्तव्यों को समझेंगे और देश के महान् विकास में हम तीसरी योजना द्वारा आशातीत सफलता प्राप्त कर सकेंगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत माता के ४४ करोड़ पुत्र

नई जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या ४३ ८० लाख हो गई है। १९५१ को जनसंख्या से यह २१.४९ प्रतिशत अधिक है। केन्द्रीय सांख्यिकी विभाग ने १९५९ में यह कल्पना की थी कि जनसंख्या ४३ करोड़ १० लाख होगी। योजना आयोग ने दूसरी पंचवर्षीय योजना बनाते समय यह अनुमान किया था कि १९६१ तक जनसंख्या ४१ करोड़ तक पहुँचेगी। यह दोनों अनुमान सत्य प्रमाणित नहीं हुये। परन्तु इसका प्रभाव हमारी तीसरी पंचवर्षीय पर पड़ेगा। तीसरी पंचवर्षीय योजना बनाते समय जनता के लिये भोजन, वस्त्र, निवास और शिक्षा, चिकित्सा आदि की जितनी आवश्यकताओं का अनुमान किया गया था, उससे अब कहीं अधिक आवश्यकताओं की पूर्ति हमें तीसरी योजना में करनी होगी। संभव है कि योजना और विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन के लक्ष्य में कुछ हेर-फेर भी करना पड़ेगा।

जनसंख्या की वृद्धि पहले की अपेक्षा अधिक अनुपात से बढ़ रही है, यह निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट हो शायगा।

| | |
|---|---|
| १९२१-३१ | ११.० प्रतिशत |
| १९३१-४१ | १४.२ ,, |
| १९४१-५१ | १३.३ ,, |
| १९५१-६१ | २१.५ ,, |

बहुत संभवत: १९५१ में जनसंख्या पद्धति व व्यवस्था में कुछ कमी रही होगी। यदि यह न होती तो संभवत: १९५१ में जनसंख्या की वृद्धि कुछ अधिक होती और १९६१ का प्रतिशत कुछ कम होता। १९६१ में जनसंख्या के अनुपात में वृद्धि का एक मुख्य कारण पूर्वी पाकिस्तान शरणार्थियों का आगमन भी प्रतिशत है। इसी वजह से बंगाल में करीब ३३ और आसाम में ३३.२५ प्रतिशत वृद्धि हुई है।

जनसंख्या में वृद्धि का एक बड़ा कारण यह है कि मृत्यु संख्या को कम करने के हम प्रशंसनीय रूप से सफल हुए हैं। बंगाल में मृत्यु संख्या ८ प्रतिशत तक गिर गई है।

देश की जनसंख्या में वृद्धि कुछ अर्थशास्त्रियों और योजना आयोग की सम्मति में चिन्ताजनक है तो दूसरे अर्थशास्त्री इस वृद्धि को राष्ट्र के लिये आशाजनक और स्वाभाविक समझते हैं। उनकी सम्मति में प्रत्येक स्वस्थ मनुष्य अपने एक मुख के साथ आर्थिक उत्पादन के लिए दो सक्षम हाथ लाता है। इसलिये वह अपनी आवश्यकता से अधिक उत्पादन भी कर सकेगा। इस सम्बन्ध में पाठक एक लेख अन्यत्र भी पढ़ेंगे।

जनसंख्या की इस वृद्धि को हम तब अवश्य भयावह मानते, जब हम यह देखते कि राष्ट्र की प्रति-व्यक्ति आय कम हो रही है अथवा लोगों के स्वास्थ्य, चिकित्सा, शिक्षा और मनोरंजन आदि की सुविधायें कम हो रही हैं। साक्षरता १९.६ से बढ़कर २३.७ प्रतिशत हो गई है औसत आयु भी अब ३२ वर्ष से कहीं आगे बढ़ गई है। यह ठीक है कि अभी इन दोनों में और भी उन्नति की गुंजाइश है और यदि जनसंख्या कुछ कम तेजी से बढ़ती तो औसत आयु और शिक्षा का स्तर हम कुछ अधिक ऊँचा कर सकते। तीसरी योजना में सन्तति निरोध को प्रोत्साहन देने के लिये विशाल कार्यक्रम निर्धारित किये गये हैं। इन कार्यक्रमों से देश को कहां तक सफलता मिलेगी, यह नहीं कहा जा सकता। फिर नये कृत्रिम उपाय कहां तक वांछनीय हैं, इस पर भी विद्वानों में मतभेद हैं, वस्तुत: जनसंख्या की वृद्धि वहां तक अवांछनीय नहीं है जहाँ तक वह नागरिक के पोषण और स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालती है।

## गन्ने का अत्यधिक उत्पादन

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री चन्द्रभानु गुप्त ने एक भाषण में यह भय प्रकट किया है कि प्रदेश में किसान आवश्यकता से अधिक गन्ना बो रहे हैं। इस समय जितना गन्ना खेतों में है, उसको चीनी मिलें जुलाई तक भी नहीं पेर सकेंगी और भय है कि गन्ना खेतों में पड़ा-पड़ा सड़ जायगा। चीनी मिलों के गोदामों में भी ११ लाख टन गन्ना पड़ा हुआ है। यदि गन्ने का उत्पादन इसी तरह बढ़ता गया तो राज्य का पूरा आर्थिक ढांचा ही बिगड़ सकता है। केन्द्रीय खाद्यमंत्री श्री एस० के० पाटिल ने भी चीनी के अत्यधिक उत्पादन की संभावना प्रकट की है। इसकी गम्भीरता तब और भी स्पष्ट हो जाती है, जब हम मद्रास का यह समाचार पढ़ते हैं कि वहाँ के शासन ने केन्द्रीय सरकार से यह मांग की है कि उत्तर प्रदेश और बिहार से



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें चीनी न मंगवाने की अनुमति दी जाय, क्योंकि मद्रास में जितनी चीनी की खपत होती है, उसका ९० प्रतिशत अब दक्षिण में स्थापित चीनी मिलें तैयार कर सकती हैं। वस्तुतः दक्षिण के राज्यों में चीनी की मिलें जिस गति से विकसित हो रही हैं, उसे देखते हुए यह स्वाभाविक है कि वे चीनी की दृष्टि से उत्तर प्रदेश और बिहार पर निर्भर न रहें। यह देखते हुए उत्तर प्रदेश के किसान को गन्ने के साथ-साथ अन्य फसलों की भी उपज प्रारम्भ कर देनी चाहिए। अनाज की अपेक्षा गन्ने की खेती किसान के लिए अधिक लाभप्रद है। इसीलिए किसान गन्ने की खेती उपजाने पर अधिक बल देता है। किन्तु जब चीनी मिलें ही उसकी फसल लेने में असमर्थता प्रकट करेंगी तब उसे विवश होकर गन्ने की खेती को कम करना पड़ेगा। दूसरी ओर उत्तर प्रदेश की चीनी मिलों को भी दक्षिण के राज्यों की प्रतिस्पर्द्धा में अपना उत्पादन कम करना पड़ेगा अथवा विधि में सुधार कर अपना उत्पादन व्यय कम करना पड़ेगा। उत्तर प्रदेश में योजना के अनुसार नयी चीनी मिलें खोलने से भी समस्या का हल नहीं होगा, क्योंकि दक्षिण की आवश्यकता अब दक्षिण स्वयं पूरी कर लेगा। (उत्तर प्रदेश की सरकार ५.६० करोड़ रुपये के व्यय से चार नयी सहकारी मिलें खोलना चाहती है।) विदेशी बाजारों में भी हम अपनी महंगी चीनी नहीं बेच सकते।

आज से बहुत वर्ष पूर्व सर्वोदय अर्थशास्त्र के प्रसिद्ध विचारक श्री जे० सी० कुमारप्पा ने अनाज की बजाय गन्ना और तम्बाकू आदि की अधिक खेती पर चिन्ता प्रकट की थी, हमें एक बार कुछ ठहर कर सोचना होगा कि कहीं हम अत्यधिक उत्पादन की दिशा में तो नहीं जा रहे ?

## सार्वजनिक उद्योगों में लाभ

लोक सभा की आकलन समिति ने सिंदरी के विशालकाय खाद के कारखाने में कम उत्पादन और कम लाभ पर चिन्ता प्रकट की है। इस समिति का मत यह है कि सरकारी उद्योगों में जितनी पूंजी लगी हुई है, उस पर उचित मात्रा में लाभ मिलना ही चाहिए। इस निधि के के लिए आवश्यक राशि निकालने के बाद भावी विकास के लिए भी कुछ राशि उद्योग से मिलनी चाहिए, ताकि सरकारी उद्योगों में लगी हुई पूंजी निकल सके। सिंदरी का विशालकाय बहु विज्ञापित उद्योग दस वर्षों से स्थापित है। १९५८-५९ में कर और ब्याज की राशि निकालने के बाद उसे केवल ५.४ प्रतिशत आय हुई है। टैरिफ कमीशन ने रासायनिक उद्योगों के लिए ८ से १२ प्रतिशत लाभ की सम्भावना प्रकट की है। परन्तु १० वर्ष तक काम करने के बाद भी इस उद्योग में साढ़े ५ प्रतिशत से भी कम आय हुई है। सुरक्षित कोष की भी कोई व्यवस्था नहीं की गयी। सिंदरी उद्योग की वर्तमान स्थिति तथा देश की बढ़ती हुई आवश्यकताओं के कारण ही संभवतः सरकार ने खाद के १२ कारखाने निजी क्षेत्र में खोलने की अनुमति दी है।

१९५३-५४ के टेक्सेशन इंक्वायरी कमीशन की रिपोर्ट में बताया गया था कि रूस में सरकारी राजस्व का ९० प्रतिशत भाग करके अतिरिक्त राजस्व के अन्य स्रोतों से प्राप्त होता है और इन स्रोतों में सरकारी अथवा राष्ट्रीय उद्योगों से प्राप्त होने वाली आय और सरकारी उद्योगों द्वारा पैदा की गई वस्तुओं पर लगाए गए कर प्रमुख है।

प्रथम पंचवर्षीय योजना में कहा गया था कि सरकारी उद्योग अपनी अतिरिक्त आय सरकार को सौंपकर एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं और कीमतों व जीवन-यापन के लिए आवश्यक वस्तुओं के मूल्य पर भी ठीक प्रकार से नियंत्रण रखा जा सकता है।

निजी क्षेत्र के उद्योगों को प्राप्त सभी सुविधाएं सरकारी उद्योगों को उपलब्ध करनी होंगी, जैसे लाभांश को पुनः उद्योग में लगाना इत्यादि। ऐसी स्थिति में प्रतिस्पर्द्धा, उत्पादित वस्तु और खुले बाजार में उसकी मांग इन तीनों बातों के अनुरूप अधिक लाभ अर्जित करने के आधार पर मूल्य-नीति निर्धारित करनी होगी।

उन्नत देशों में सरकारी उद्योगों में 'कोई लाभ, कोई हानि न होने' की मूल्य-नीति अपनाना ठीक हो सकता है। लेकिन इस सिद्धान्त को भारत की अर्थ-व्यवस्था में लागू करना उपयुक्त नहीं है। इस विषय पर डाक्टर वी० के० आर० वी० राव का कहना है कि "सरकारी उद्योग लाभ-अर्जन के आधार पर चलाए जाने चाहिए, इसका अर्थ केवल यह नहीं है कि सरकारी उद्योगों की उत्पादित वस्तुओं का मूल्य केवल सामान्य रूप से लाभप्रद रखा जाए, अपितु वह



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना होना चाहिए कि उन उद्योगों द्वारा राष्ट्र के लि पर्याप्त साधन सरकारी उद्योगों के साधारण-व्यय और विनियोजन के लिए उपलब्ध हो सकें। सरकारी उद्योगों में एक उचित मूल्य और लाभ की नीति अपनानी होगी जिससे राज्य को उनसे लाभ द्वारा अधिक साधन उपलब्ध हो सकें और राज्य में साधनों के प्रति विश्वास पैदा हो जाए। इस दशा में ही हमारे देश में समाजवादी समाज की रचना सम्भव हो सकेगी।"

## पछले दस वर्षों में

तीसरी पंचवर्षीय योजना का श्रीगणेश हो गया है। इस समय इस पर विचार करना उपयुक्त होगा कि पहली दो योजनाओं में हमने क्या सफलता प्राप्त की है। पिछले दस वर्षों में हमारे देश में राष्ट्रीय आय लगभग ४२ प्रतिशत बढ़ी है, लेकिन जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि केवल २० प्रतिशत ही हुई। खेती की पैदावार में लगभग ४० प्रतिशत वृद्धि हुई है और औद्योगिक उत्पादन तो करीब-करीब दुगुना हो चुका है।

खेती की पैदावार पिछले दस वर्ष में बराबर बढ़ती रही है और उसमें काफी वृद्धि हुई है। लेकिन मौसम के अच्छे बुरे होने ने कारण यह वृद्धि प्रति षर्ष एक सी नहीं रही। खाद्यान्नों का उत्पादन १९५०-५१ में ५ करोड़ २० लाख टन था। दस वर्ष बाद अर्थात् १९६०-६१ में खाद्यान्नों की पैदावार बढ़कर ७ करोड़ ६० लाख टन हो चुकी है। इसी प्रकार इस अवधि में तिलहन का उत्पादन ५१ लाख टन से बढ़कर ८० लाख टन और रुई का उत्पादन २९ लाख गांठ से बढ़कर ५१ लाख गांठ और जूट का उत्पादन ३३ लाख गांठ से बढ़कर ४३ लाख गांठ हो गया है।

सारे देश में भूमि सुधार के अनेक कार्यक्रम चलाये गये हैं। जमींदारी प्रथा समाप्त हो गई है और किसानों को भूमि पर काफी अधिकार दिए जा चुके हैं। पहली योजना के आरम्भ में केवल ५ करोड़ १५ लाख एकड़ भूमि में सिंचाई होती थी, लेकिन अब ७ करोड़ एकड़ भूमि को यह सुविधा उपलब्ध है। उर्वरकों का प्रयोग बढ़ रहा है और पहले की अपेक्षा अब किसान उर्वरकों की सात गुनी मात्रा का प्रयोग कर रहे हैं। औद्योगिक उत्पादन में सबसे अधिक वृद्धि हुई है। विदेशी सहायता से तीन नये इस्पात के कारखाने खोले गये हैं। इन तीनों कारखानों में पूरा उत्पादन होने पर हमारे देश में प्रति वर्ष ४५ लाख टन इस्पात बनना शुरु हो जायगा, जबकि दस वर्ष पहले केवल दस लाख टन इस्पात बनता था। बड़े उद्योगों के साथ ही साथ अनेक छोटे उद्योग खुले हैं, जिनमें कपड़े सीने की मशीनें, बिजली के पंखे और साइकिल उद्योग विशेष उल्लेखनीय हैं।

बिजली के उत्पादन में तीन गुनी वृद्धि हुई है और इसे गांवों और शहरों तक पहुंचाया जा रहा है। पहली योजना से पहले केवल ३,६८७ शहरों और गांवों में बिजली थी। लेकिन अब देश के १९,००० शहर और गांव बिजली से जगमगा रहे हैं।

यातायात के साधनों में भी बहुत वृद्धि हुई है। रेल यातायात तो इन दस सालों में लगभग दुगुना हो गया है। दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक लगभग १२०० मील लम्बी नयी रेल लाइनें बिछाने १३०० मील रेल लाइनों को दुहरी करने और १०० मील लम्बी लाइनों पर बिजली से रेल चलाने की व्यवस्था हो जाने की आशा है। सामुदायिक विकास के अधिकारी देश के एक बड़े भाग के नवजीवन में क्रान्ति करने का दावा करते हैं। प्राथमिक स्कूलों में इन दस वर्ष में ७० प्रतिशत वृद्धि हुई है और आज ६ से ११ साल की अवस्था के लगभग ६१ प्रतिशत बालक बालिकाएं इन स्कूलों में पढ़ रहे हैं।

इन उल्लेखनीय सफलताओं के साथ ही साथ कुछ कमियां भी रहीं। जैसे खेती और उद्योग दोनों का ही उत्पादन देश की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हो सका। राष्ट्रीय आय में वृद्धि के लिए भी जो लक्ष्य नियत किया गया था, उसको प्राप्त करने में सफलता नहीं मिली। बेकारी मिटाने के लिये किये गये प्रयत्न हमारी बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए नाकाफी रहे और आज देश में बेकारों की संख्या पहले से भी अधिक हैं।

सबसे बड़ी असफलता यह है कि जनता का सहयोग और उत्साह हम अभी तक सम्पादन नहीं कर सके हैं। अनेक योजनाओं और कार्यक्रमों में अनुमान से बहुत अधिक व्यय हो गया है और भ्रष्टाचार, उत्तरदायित्वहीनता आदि के अनेक उदाहरण समय समय पर मिलते रहे हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनको रोकना नई योजना की सफलता के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

## अतिरिक्त आवश्यकता

नयी जनसंख्या के अनुसार योजना आयोग को भोजन, वस्त्र आदि आवश्यकताओं के लिए अतिरिक्त पदार्थों की जरूरत होगी। जनसंख्या की वर्तमान वृद्धि के अनुसार १९६५-६६ तक देश की आबादी ४९ करोड़ हो जायगी। तब प्रति व्यक्ति १८ औंस अन्न (१५ औंस अनाज ३ औंस दालें) के हिसाब से हमें ८६७ लाख टन अन्न की आवश्यकता होगी, जबकि वर्तमान अनुमान के अनुसार ८४९ लाख टन की आवश्यकता थी। इसी तरह बीज चारा और बीज के लिए और भी हमें १३६ लाख टन की बजाय १३९ लाख टन की गुंजायश करनी होगी। हमें सुरक्षित भण्डार के लिए पहले के अनुसार ही भी १५ लाख टन अन्न रखना होगा। यह नीचे की सारिणी से अधिक स्पष्ट हो जायगा।

| | आज का अनुमान | संशोधित अनुमान |
|---|---|---|
| जनसंख्या (लाखों में) | ४८०० | ४९०० |
| अन्न की आवश्यकता | (लाख टनों में) | |
| क—(बचत के लिए) | ८४९ | ८६७ |
| ख—बीज चारे और बीज | १३६ | १३९ |
| ग—सुरक्षित भण्डार | १५ | १५ |
| घ—कुल | १००० | १०२१ |

इस तरह हमें करीब २१ लाख टन का अतिरिक्त उत्पादन करना होगा। केवल अन्न ही नहीं, चीनी, तम्बाकू, कपास आदि का भी अतिरिक्त उत्पादन करना पड़ेगा।

## नई आयात नीति

भारत सरकार ने इन छः महीनों के लिये नई आयात नीति की घोषित कर दी है। इसके अनुसार १४७ वस्तुओं के आयात में कटौती की गई है। विदेशी मुद्रा की दुर्लभता और विदेशी व्यापार में प्रतिकूल सन्तुलन तथा भारतीय उद्योगों की क्रमिक उन्नति आदि को ध्यान में रखकर यह निर्धारित की गई है। जिन उद्योगों को विदेशों से आने वाले कच्चे माल की दुर्लभता का सामना करना पड़ता है, उन्हें आयात की कुछ सुविधायें दी हैं। यही कारण है कि इस आयात नीति का प्रायः सभी क्षेत्रों में स्वागत हुआ है। ज्यों-ज्यों देश में नये उद्योगों का विकास होता जाता है, त्यों-त्यों बाहर से आने वाले माल पर पाबन्दी भी आवश्यक होती जाती है। निर्यात करने वाले उद्योगों को कुछ अधिक सुविधायें दी गई हैं और दुर्लभ तथा सुलभ मुद्रा क्षेत्रों का भेद-भाव भी आयात के लिये समाप्त कर दिया गया है। इस कारण संभवतः निर्यात-व्यापार को भी सुविधा मिलेगी। हमारी नम्र सम्मति में यदि अनावश्यक विदेशी साहित्य और विशेष कर विदेशी पत्र पत्रिकाओं के आयात पर कुछ प्रतिबन्ध लगाया जाता, तो विदेशी मुद्रा के संग्रह में कुछ सहायता मिलती।

## परिवहन क्षमता की कमी

पिछले दिनों देश में जिन महत्वपूर्ण आर्थिक प्रश्नों पर विचार हुआ, उनमें से एक यह था कि भारत में यातायात और परिवहन की व्यवस्था सन्तोषजनक नहीं है। इसका एक अनिवार्य परिणाम यह हुआ है कि उद्योगों का विकास भी पूरी गति से नहीं हो रहा। १०० वर्ष तक रेलवे के विकास के बावजूद भारत में ब्रिटेन, अमेरिका और लंका की अपेक्षा यातायात के साधन कम हैं। —नीचे देखिये

| देश | प्रति किलोमीटर रेलवे के पीछे जनसंख्या | प्रति किलोमीटर सड़क के पीछे जनसंख्या | प्रति १००० व्यक्तियों के पीछे मोटर व गाड़ियां | एक किलोमीटर सड़क के पीछे गाड़ियां |
|---|---|---|---|---|
| भारत | ६६१० | ९३० | ०.९ | १.० |
| लंका | ५२८३ | ७०६ | ८.६ | ७.५ |
| संयुक्त राष्ट्र अमेरिका | २३६ | ३१ | ३५१.० | ८.० |
| ब्रिटेन | ५९८ | १६९ | १०६.० | ४.० |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तालिका से परिवहन में भारत का पिछड़ापन स्पष्ट हो जाता है। अखिल भारतीय उद्योग वाणिज्य संघ ने इसी लिए पिछले दो तीन वर्षों से परिवहन की क्षमता बढ़ाने पर जोर दिया है। आज कोयला ठीक समय पर न पहुँच सकने के कारण बहुत से उद्योगों को भारी हानि हो रही है। कारखानों का माल यथास्थान शीघ्र न पहुँचने से उद्योग का उत्पादन-व्यय व्यर्थ ही बढ़ता जाता है और बाजार से भी मूल्य मिलने में असुविधा होती है। परिवहन की अक्षमता के कारण ही अधिकांश उद्योग देश के अंतरवर्ती भागों में न खुल कर बम्बई, कलकत्ता और मद्रास जैसे बन्दरगाहों पर खुलते हैं क्योंकि वहां परिवहन के साधन अधिक होते हैं और यही कारण है कि देश का श्रमिक वर्ग कुछ स्थानों पर ही केन्द्रित होता जाता है। इन सब पर विचार करने के बाद यह आवश्यक हो जाता है कि हम तीसरी योजना में जल, स्थल तथा वायु के यातायात को अधिक से अधिक विकसित करने का प्रयत्न करें।

## बैंकों की आय

मार्च और अप्रैल के महीनों में प्रायः सभी भारतीय बैंक अपनी अपनी वार्षिक सभायें करते हैं और अपनी प्रगति का विवरण प्रस्तुत करते हैं। इसी मीटिंग में डिवीडेंड भी देने का निश्चय भी किया जाता है। विभिन्न बैंकों के प्रकाशित हानि-लाभ के विवरणों से ज्ञात होता है कि इस वर्ष बैंकों के लाभ गत वर्ष की तुलना में काफी बढ़ गए हैं। इस प्रगति के तीन मुख्य कारण बताये जाते हैं। बैंकों द्वारा किए जाने वाले ऋण पहले की अपेक्षा बढ़ गये हैं, इसका मुख्य कारण भिन्न भिन्न उद्योगों में वृद्धि है। बैंकों ने अपनी ब्याज दर भी कुछ अधिक बढ़ा दी है। इसका मुख्य कारण रिजर्व बैंक की वह नीति है, जिसमें उधार देने को अनुत्साहित करने के लिए बैंक दर बढ़ा दिए गए हैं, किन्तु इसका परिणाम रिजर्व बैंक की इच्छानुसार नहीं हो रहा। बैंकों से ऋण लेने वालों की संख्या बढ़ती गई। यदि बैंकों को उधार देने के लिए रिजर्व बैंक से रुपया मांगने पर विवश न किया जाता तो बैंकों को और भी अधिक लाभ होता।

## आर्थिक संघों के निर्माण की होड़

यूरोप में पिछले वर्षों में दो आर्थिक संगठन बने हैं। इनमें एक संगठन के सदस्य छः देश हैं और दूसरे के सात। दोनों का उद्देश्य सह-सदस्यों में आर्थिक प्रतिबन्धों को कम करके परस्पर व्यापार बढ़ाना है। इस दृष्टि से ये देश परस्पर आयात करों को कम करते जा रहे हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है कि अ-सदस्य देशों के साथ उनका व्यापार कम होता जा रहा है। भारत को भी इन संगठनों का दुष्परिणाम थोड़ा बहुत भोगने के लिए तैयार रहना चाहिये।

यूरोप की इस प्रवृत्ति का प्रभाव अन्य देशों पर भी पड़ने लगा है और उन देशों में भी इसी तरह के संगठन बनाने की प्रवृत्ति बढ़ने लगी है। उदाहरण के तौर पर अरबलीग कनामिक कांउसिल ने अरब कामन मार्केट की स्थापना की सलाह दी है। मध्य अमेरिका में भी दो वर्षों से कामन मार्केट का काम चल रहा है। १९६० से लैटिन अमेरिका में स्वतंत्र व्यापार का क्षेत्र बना दिया गया है। अमेरिका और यूरोप में भी व्यापारिक क्षेत्र में निकट सम्पर्क स्थापित करने की चेष्टा की जा रही है।

पिछले दिनों दिल्ली में होने वाले 'इकाफे' सम्मेलन में अनेक सदस्यों ने भी एशियाई देशों का कामन-मार्केट बनाने की सलाह दी थी, लेकिन कुछ समय पहले तक एशियाई देशों की बाह्य और आन्तरिक स्थिति ऐसी नहीं थी जो इस प्रकार का संगठन बनाने के लिये अनुकूल हो। भारत और पाकिस्तान के पारस्परिक सम्बन्ध अच्छे नहीं थे। बर्मा और पाकिस्तान सरकारें आन्तरिक दृष्टि से स्थिर नहीं थी। वियतनाम में आज भी गृह-युद्ध की स्थिति विद्यमान है। वियतनाम का युद्ध क्षेत्र सीमावर्ती राज्यों पर भी प्रभाव डालता रहा है। फिर भी अब कुछ देश इस प्रकार के शीघ्र संगठन की आवश्यकता को समझने लगे हैं। इन देशों में भारत, पाकिस्तान, लंका, बर्मा, थाईलैण्ड, इन्डोनेशिया और मलाया है। सभी देश अपने-अपने उद्योग और व्यापार के विकास में भारी पूंजी लगा रहे हैं। इस भारी विनियोजन में यदि किसी तरह परस्पर समन्वय और संगति हो सके तो विनियोजन के अपव्यय को रोका जा सकता है। प्रत्येक देश उन उद्योगों का अधिक विकास करे, जो अधिक सुविधा के साथ वहां संभव है। एक दूसरे

( शेष पृष्ठ १९७ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# १९६१ में भारत की जनसंख्या

मार्च १९६१ में भारत भर में जनगणना हुई। इसकी प्रारम्भिक रिपोर्ट के अनुसार जनसंख्या के अंक निम्नलिखित हैं। तालिका में तुलना के लिए दस वर्ष पूर्व १९५१ के अंक भी दिये गये हैं। प्रति मील जनसंख्या का घनत्व तथा दस वर्ष में प्रतिशत वृद्धि के अंक भी महत्वपूर्ण हैं।

| राज्य | वर्ष | कुल जनसंख्या | दस वर्ष में प्रतिशत वृद्धि | आबादी का घनत्व प्रति वर्ग मील | साक्षरता वृद्धि |
|---|---|---|---|---|---|
| आंध्र प्रदेश | १९५१ | ३१,११५,२५९ | | २९६ | १३.१ |
| | १९६१ | ३५,९७७,९९९ | १५.६३ | ३३९ | २०.८ |
| असम | १९५१ | ८८३०७३२ | | १७१ | १८.३ |
| | १९६१ | ११८६०,०५९ | ३४.३० | २५२ | २५.८ |
| बिहार | १९५१ | ३८,७८३,७७८ | | ५७८ | १२.२ |
| | १९६१ | ४६,४५७,०४२ | १९७८ | ६९१ | १८.२ |
| गुजरात | १९५१ | १६२६२६५७ | | २२५ | २३.१ |
| | १९६१ | २०,६२१,२८३ | २६.८० | २८६ | ३०.३ |
| जम्मू कश्मीर | १९४१ | ३२६५८४६ | | ५१ (१९४१) | |
| | १९६१ | ३५,८३५८५ | ९.७३ | | १०.७ |
| केरल | १९५१ | १३५४९११८ | | ९०७ | ४०.७ |
| | १९६१ | १६,८७५,१९९ | २४.५५ | ११२५ | ४६.२ |
| मध्य प्रदेश | १९५१ | २६०१,७७३७ | | १५२ | ९.८ |
| | १९६१ | ३२३९४३०५ | २४.२५ | १८९ | १६.९ |
| मद्रास | १९५१ | ३०११९,०४७ | | ५९७ | २०.८ |
| | १९६१ | ३३,६५०,९१७ | ११.७३ | ६७१ | ३०.२ |
| महाराष्ट्र | १९५१ | ३२००२५६४ | | २७८ | २०.९ |
| | १९६१ | ३९५०४२९४ | २३.४४ | ३३२ | २९.७ |
| मैसूर | १९५१ | १९,४०१९५६ | | २५९ | १९.३ |
| | १९६१ | २३,५४७०८१ | २१.३६ | ३१८ | २५.३ |
| उड़ीसा | १९५१ | १४६४५,९४६ | | २४३ | १५.८ |
| | १९६१ | १७५६५६४५ | १९.९४ | २९२ | २१.८ |
| पंजाब | १९५१ | १६१३४,८९० | | ३४३ | १५.२ |
| | १९६१ | २०२९८१५१ | २५.८४ | ४३१ | २३.६ |
| राजस्थान | १९५१ | १५,९७०,७७४ | | १२१ | ८.९ |
| | १९६१ | २०१४६१७३ | २६.१४ | १५२ | १४.७ |
| उत्तर प्रदेश | १९५१ | ६३,२१५७४२ | | ५५७ | १०.८ |
| | १९६१ | ७३,७५२,९१४ | १६.६७ | ६५० | १७.५ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प० बंगाल | १९५१ | २६३०२३८३ | | ७७५ | २४.० |
| | १९६१ | ३४९६७,६३४ | ३२.९४ | १०३१ | २९.१ |
| दिल्ली | १९५१ | १७४४०७२ | | ३०४४ | ३८.४ |
| | १९६१ | २६४४०५८ | ५१.६० | ४६१४ | ५१.० |
| हिमाचल प्रदेश | १९५१ | ११०९४६६ | | १०२ | ७.७ |
| | १९६१ | १३४८९६२ | २१.५९ | १२४ | १४.६ |
| अण्डमान निकोवार | १९५१ | ३०९७१ | | १० | २५.८ |
| | १९६१ | ६३,४३८ | १०४.८३ | २० | ३०.४ |
| लकादीव तथा अन्य द्वीप | १९५१ | २१०३५ | | १,९१२ | १५.२ |
| | १९६१ | २४१०८ | १४.९१ | २,१९२ | २३.४ |
| त्रिपुरा | १९५१ | ६३९०२९ | | १५८ | १५.५ |
| | १९६१ | ११,४१४९२ | ७८.६३ | २८३ | २१.४ |
| कुल देश | १९५१ | ३५९२.२ लाख | | ३१६ | |
| | १९६१ | ४३६४.२ लाख | २१.५९ | ३८४ | २३.७ |

सिक्किम, मनीपुर, नागालैंड, उपूसी (एन० ई० फ० ए०) की जनसंख्या भारत की कुल जनसंख्या में सम्मिलित नहीं है।

# जनसंख्या और उन्नति साथ-साथ चलती है

इंगलैंड के पादरी श्री माल्थस ने १७९८ में एक सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। इसमें उन्होंने बताया था कि दुनिया की जनसंख्या उत्तरोतर गुणोत्तर वृद्धि के सिद्धान्त से बढ़ती है, जबकि उसका अन्न आदि का उत्पन्न समानान्तर वृद्धि से बढ़ता है। पहली वृद्धि का उदाहरण १, २, ४, ८, १६ और १२ अथवा १, ३, ९, २७, ८१ आदि है। दूसरे प्रकार की वृद्धि का उदाहरण १, २, ३, ४, ५ अथवा १, ३, ५, ७, ९, ११ आदि है। इसलिये जनसंख्या वृद्धि और अन्नोत्पादन में सन्तुलन बनाये रखने के लिये संसार में समय समय पर बीमारी, महामारी, भूचाल और युद्ध आदि दैवी प्रकोप होते रहते हैं। माल्थस का सिद्धान्त पहले मान्य समझा जाता था, परन्तु ब्रिटेन के विद्वान् अर्थशास्त्री श्री कालिन क्लार्क ने इस सिद्धान्त का तीव्र प्रतिवाद किया है।

श्री क्लार्क का कहना है कि जनसंख्या वृद्धि के साथ पदार्थों का उत्पादन भी बढ़ता जाता है, क्योंकि जनसंख्या में वृद्धि ही मनुष्य को नये क्रान्तिकारी आविष्कारों के अनुसंधान, उत्पादन तथा निर्माण के लिये प्रेरित करती है।

माल्थस का दूसरा कथन यह था कि मनुष्य जल्दी सन्तति प्रजनन करता है, परन्तु श्री कालिन क्लार्क महोदय का विचार यह है कि विवाहित स्त्री-पुरुष के विवाह हो जाने के हर दो-तीन वर्ष के बाद एक बच्चा पैदा होता है और इस प्रकार ज्यादा से ज्यादा ७-८ बच्चे ही होते हैं अथवा जीवित रह जाते हैं। इस तरह लगभग ६० वर्ष की आयु तक दस वर्ष में अन्न आदि का उत्पादन जनसंख्या से कई प्रतिशत अधिक बढ़ता है।

माल्थस के समर्थकों का यह भी मत था कि जमीन उतनी ही रहेगी, उसमें वृद्धि नहीं हो सकती। दूसरी ओर जनसंख्या इतनी तेजी से बढ़ेगी कि जमीन उनका पेट नहीं पाल सकेगी। इस कथन के अनुसार न तो भूमि की उत्पादन शक्ति में वृद्धि की जा सकेगी और न ही भूमि के





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरुस्थलों और हिम से दबे क्षेत्रों को खेती के योग्य बनाया जा सकेगा। माल्थस महोदय को शायद विज्ञान पर इतना भरोसा न रहा हो और न इसका ज्ञान ही हो। जो हो, भूमि की उत्पादन शक्ति में वृद्धि करना मानव का कौशल है और वह सम्पूर्णतः सफलता की ओर अग्रसर हो रहा है। माल्थस महोदय कहते थे कि विभिन्न देशों में भूमि अपनी उत्पादन शक्ति के अनुसार जनसंख्या वृद्धि को सहन न कर सकेगी। परन्तु इसके विपरीत यह हुआ कि वैज्ञानिक ढंग से जब से विभिन्न देशों में खेती होने लगी, तो उतने से भी कम भूमि पर पहले से कहीं अधिक पैदावार होने लगी। श्री कालिन क्लार्क ने जापान और डेनमार्क में खेती करने के ढंग पर अपना मत व्यक्त करते हुये कहा है कि यदि समूचा संसार इन दो देशों में होने वाली खेती करने की पद्धति अपना ले तो आज की जनसंख्या से चौगुनी जनसंख्या के लिए भरपूर भोजन उपलब्ध किया जा सकता है।

---

संयुक्त राष्ट्र संघ के क्षेत्रों के अनुसार संसार की कुल जनसंख्या ४॥ से ५॥ करोड़ तक प्रति वर्ष बढ़ रही है और इस वर्ष के अन्त तक संसार की कुल जनसंख्या ३ अरब तक पहुँच रही है।

---

आज भारत, चीन, जापान, बेलजियम और ग्रेट ब्रिटेन अत्यधिक आबादी वाले देश हैं। इन देशों का प्रति वर्ग मील घनत्व बहुत भारी है, फिर भी बेलजियम और जापान में प्रति एकड़ उपज सब देशों से अधिक है। यह भी अधिक तर्कसंगत नहीं बैठता कि जनसंख्या वृद्धि से उद्योग-व्यापार के क्षेत्र में वृद्धि नहीं होती। जनसंख्या में वृद्धि ही अधिक उत्पादन और उन्नति में अधिक विस्तार की प्रेरणा प्रदान करती है।

जिन देशों ने जनसंख्या वृद्धि की समस्या की ललकार पर विजय प्राप्त करने की कोशिश की, वे ही देश एक नवीन सभ्यता को अपना सके। वे देश और उनकी जनता धनी हो गई, सांस्कृतिक स्तर ऊँचा हो गया राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से पहले से कहीं अधिक सुसंगठित और सबल हो गये। हैं

## निराशावादी माल्थस

वस्तुतः माल्थस निराशावादी था। उसी के समय में अनेक विद्वानों ने उसके सिद्धान्त की आलोचना कर दी थी। उसने उन वैज्ञानिक आविष्कारों की कल्पना नहीं की थी, जिन्होंने उसकी भविष्यवाणी को असत्य सिद्ध कर दिया है। फिर वह यह भी भूल गया था कि अधिकाधिक सभ्य होने के साथ-साथ मनुष्य की सन्तान उत्पन्न करने की शक्ति कम हो जाती है। मानसिक और नैतिक उन्नति के साथ-साथ मनुष्य कम सन्तान उत्पन्न करते हैं। यह ठीक है कि माल्थस के समय में इंगलैंड में अन्न की उपलब्धि अपेक्षाकृत कम अनुपात में हो रही थी। किन्तु आज अन्न की प्राप्ति केवल उस देश की खेती पर निर्भर नहीं करती, वह तो कुल राष्ट्रीय आय पर निर्भर करती है। फिर रूस ने साइबेरिया के शीतप्रधान देशों और सहारा जैसे मरुस्थलों को भी वैज्ञानिक साधनों से शस्यश्यामल बना दिया है। ऐसी स्थिति में माल्थस की जनसंख्या का सिद्धान्त पूरी तरह लागू नहीं होता।

## भारत में

आज भारत में हम जनसंख्या की वृद्धि से चिन्तित हो सकते हैं, क्योंकि हमें अपनी योजनाओं में अनुमान से अधिक जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति करनी पड़ेगी, परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत में यदि सिंचाई, अच्छे बीज आदि की व्यवस्था कर दी जाय तो हम प्रति एकड़ अधिक उत्पादन कर सकते हैं। जनसंख्या की वृद्धि हमें नये आविष्कार करने, अपनी योजनाओं को अधिक क्षमता से चलाने की भी प्रेरणा देंगी। प्रो० मीड (Meade) ने लिखा है कि "मेरी राय में इष्टतम जनसंख्या की उचित परिभाषा यह है, जिससे प्रति व्यक्ति अधिकतम सन्तोष प्राप्त करे अर्थात् वस्तुओं और सेवाओं की वास्तविक आय प्रति व्यक्ति को अधिकतम मिले। यदि श्रम का सीमान्त उत्पादन से अधिक है तो जनसंख्या इष्टतम से कम है। जनसंख्या की वृद्धि से प्रति व्यक्ति उत्पादन बढ़ेगा।"

देखना यह है कि हमारा देश क्या यह साहस रखता है कि बढ़ती हुई जनसंख्या की भोजन, वस्त्र और निवास की आवश्यकताओं को पूर्ण कर सके। यदि इस प्रश्न का उत्तर हां में हैं तो हमें बढ़ती हुई जनसंख्या से घबराना नहीं चाहिए। हमें विश्वास करना चाहिए कि भारत माता के ४४ करोड़ पुत्र अपने ८८ करोड़ हाथों से कृषि और उद्योग दोनों क्षेत्रों में आवश्यक उत्पादन कर सकेंगे।

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# औद्योगिक विकास में बाधाएँ

(श्री मुरुगप्पा चेट्टियर)

आज देश में औद्योगिक उत्पादन ही नहीं बढ़ रहा, बल्कि औद्योगिक विकास में भी परिवर्तन आ रहा है अथवा औद्योगिक व्यवस्था का स्वरूप स्वयं बदलता जा रहा है। उद्योग का क्षेत्र भी विस्तृत होता जा रहा है। भौगोलिक बाधाओं के कारण क्षेत्रीय उद्योगों के विकास तथा आय में यद्यपि असमानता है फिर भी भविष्य में देश के आर्थिक उन्नति के अभियान में औद्योगिक क्षेत्र में विकास-प्रवृत्ति इस असन्तुलन को दूर कर देगी।

परन्तु आज तृतीय पंचवर्षीय योजना का फिर से पुनरावलोकन होना चाहिए और उसमें निजी क्षेत्र के विस्तार की सुविधा अधिक होनी चाहिये। देश का सर्वांगीण विकास हमारा उद्देश्य है और इसमें विभिन्न क्षेत्रों में भेदभाव नहीं होना चाहिए, किन्तु सार्वजनिक क्षेत्र के लिए सरकार ने ७५०० करोड़ रु० से ८००० करोड़ रुपए रखे हैं, जबकि निजी क्षेत्र के लिए केवल ४००० करोड़ रुपये है। सरकार को निजी उद्योग पर प्रतिबन्ध कड़ा करने के बजाय देश में रोजी की वृद्धि और देश की सम्पत्ति बढ़ाने के लिए निजी उद्योगको प्रोत्साहन व सुविधा देनी चाहिए।

१९६१-६२ के बजट में उद्योगों पर कुछ नये कर लगा दिए गए हैं। नये करों से नये उद्योगों की स्थापना और पुराने उद्योगों के विस्तार में कठिनाई उत्पन्न होगी और उद्योगों की अर्थ-व्यवस्था पर भी बुरा प्रभाव पड़े बिना नहीं रहेगा। विदेशों से निजी पूंजी के आने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे विदेशी मुद्रा-सम्बन्धी कठिनाई उत्पन्न होगी।

वर्तमान अवस्था में उद्योगों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इनमें सबसे अधिक बड़ी समस्या बढ़ते हुए उद्योगों और नये उद्योगों के परिचालन में शक्ति की कमी है। भारत सरकार की कोयला नीति के कारण तो उद्योगों को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। सरकार को इस ओर अधिक ध्यान देकर उद्योगों की बाधा को दूर करना चाहिए।

यातायात में भी सड़क परिवहन के प्रति रेलवे का रुख उचित नहीं है। तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक रेलों का भारी विस्तार होने पर भी फिर भी २०० लाख टन माल को परिवहन की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। हमें सभी प्रकार के यातायात के साधनों में परस्पर संगति व समन्वय करना होगा।

## कच्चे माल की उपलब्धि

इस्पात के वितरण में उपयुक्त सुधार की आशा की जाती है। किन्तु रुई आदि बहुत से अन्य कच्चे माल की भी देश में कमी है। इसलिए उद्योगों को चालू रखने के लिये विदेशों से कच्चे माल के आयात की भी उद्योगों को सहायता मिलनी चाहिये। आशा की जाती है कि सरकार इस दिशा में सामञ्जस्य स्थापित करके उपयुक्त कदम उठायेगी। वस्त्र का उत्पादन बढ़ाकर रुई की उपलब्धि की व्यवस्था करनी चाहिए।

## विदेशी सहायता

द्वितीय पंचवर्षीय योजना काल के लिए जो विदेशी सहायता की राशि प्राप्त हुई थी, उसमें ४५० करोड़ करोड़ रुपए अभी बचे हैं। यदि सरकार के पास इस राशि को सार्वजनिक क्षेत्र में खर्च करने की योजना नहीं थी तो अच्छा होता कि निजी उद्योग को इस राशि से सहायता मिलने दी जाती।

## बोनस टैक्स

नये बजट में बोनस शेयरों पर टैक्स की कमी स्वागत योग्य है, परन्तु 'शेयर प्रीमियम' को भी करों से निवृत करना और भी अच्छा होगा।

## कम्पनी कानून

कम्पनी कानून में किये गये एक संशोधन ने बचत रकम को किसी नये उद्योग को लगाने में भारी कठिनाई उत्पन्न कर दी है। दूसरी कम्पनियों में एक कम्पनी द्वारा शेयर लेने में भी अनेक बाधायें उपस्थित हो गई हैं। इससे तो उद्योगपतियों में अनुत्साह ही पैदा होगा। फिर यह संशो-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# उद्योग का उद्देश्य समाज-हित हो

पंडित जवाहरलाल नेहरू

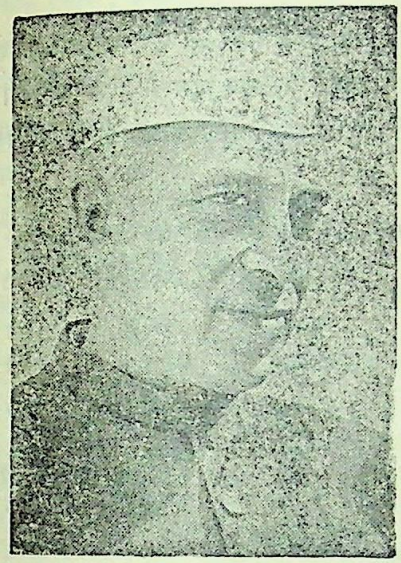

वैज्ञानिक और प्राविधिक विकास के फलस्वरूप जो विराट् शक्ति जनता के हाथों में आई है, उसे वैयक्तिक नियंत्रण में छोड़ा नहीं जा सकता। मुझे आश्चर्य है कि आज भी कुछ प्रमुख व्यक्ति समाज में उठने वाली बड़ी शक्तियों व वैज्ञानिक प्रगति को अनुभव नहीं कर रहे हैं। वर्तमान समाज का सारा विकास समाजात्मक है और समाज के माध्यम से ही भारत में ऐसे समाज की स्थापना की जा सकती है, जिसका प्रत्येक सदस्य प्राथमिक आवश्यकताओं के अभाव से मुक्त रहे। इस प्रकार के समाज में निजी उद्योग का उद्देश्य समाज का हित-साधन होना चाहिये।

प्रौद्योगिक उन्नति अब नया मोड़ ले रही है और ऐसी 'प्राकृतिक व सामाजिक शक्तियां' उत्पन्न हुई हैं, जिन पर सामाजिक नियंत्रण अनिवार्य हो गया है। निजी उद्योग को व्यक्तिगत-लाभ की पुरानी मनोवृत्ति त्याग देनी चाहिये। उद्योग सार्वजनिक हित की दृष्टि से ही चलाये जाने चाहिये। आज की अर्थ-व्यवस्था के युग में प्रौद्योगिक क्षेत्र में मालिक-मजदूर के सम्बन्ध न होकर हिस्सेदार व सहकारी का सम्बन्ध होना चाहिये, तभी हर आर्थिक समस्या को शांतिपूर्वक सुलझाया जा सकता है।

पंचवर्षीय विकास योजना का लक्ष्य सामान्य जन का हित है, इसलिये योजना का रूप उसी दृष्टि से तैयार किया जाता है। देश में अनियंत्रित आर्थिक पद्धति जनहित के अनुकूल नहीं होती। विश्व अधिकाधिक सामुदायिक होता जा रहा है। अमरीका तक, सबसे बड़े पूंजीवादी देश में निजी कारोबार पर सामाजिक नियंत्रण बढ़ता जा रहा है। इस प्रकार का नियंत्रण वस्तुतः आज के युग की मांग है। हमारी योजना का लक्ष्य भी किसी एक व्यक्ति या कारखाने की समृद्धि नहीं, बल्कि ४४ करोड़ की समृद्धि होना चाहिये और उद्योगपतियों को भी इसी भावना से देश-निर्माण में हाथ बंटाना चाहिये। वे १९ वीं शताब्दी का सपना देखना अब छोड़ दें और यह समझ लें कि भारत शान्तिपूर्ण ढंग से बहुत ही क्रान्तिकारी लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है। आज भारतीय जनता गतिहीनता से गतिशीलता की स्थिति में आ गई है। मानव का कल्याण आज तो सबसे बड़ी चीज है। यदि देश के निवासियों को ठीक ढंग से प्रशिक्षित किया जा सके तो वह आवश्यक सम्पत्ति का उत्पादन कर लेगी। हमारा लक्ष्य प्राविधिक दृष्टि से ऐसे

[ शेष पृष्ठ १९९ पर ]

---

धन योजना में उद्योगों में प्रोत्साहन की भावना से मेल खाता नहीं प्रतीत होता।

इस बात की भी अत्यन्त आवश्यकता है कि प्रशासनिक दृष्टिकोण में परिवर्तन होना चाहिए। इसमें सहयोग की भावना हो न कि नियंत्रण करने व आदेश देने की।

यदि सरकार की नीति यह है कि देश का आर्थिक विकास निर्बाध रूप से आगे बढ़े तो आर्थिक बन्धन नहीं होने चाहिये। यदि सरकार की यह नीति है और यह चाहती है कि देश में रोजगार और लोगों को आय बढ़े तो अनुपयुक्त बन्धनों को हटा लेना चाहिए। कुल राष्ट्रीय आय में वृद्धि के लिये उत्पादन-वृद्धि और तकनीकी ज्ञान के प्रसार की परम आवश्यकता है। उत्पादन में वृद्धि पर ही वितरण की व्यवस्था पर भी विचारा जा सकता है।❀

❀ अ. भा. उद्योग वाणिज्य संघ के अध्यक्षीय भाषण का सारांश



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# उत्पादन करों से केन्द्र की आय बढ़ती जा रही है !!!

(लाख रुपयों में)

निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है कि सरकार पिछले वर्षों में किस तीव्र गति से कर बढ़ाती जा रही है। १९५१-५२ में बहुत कम वस्तुओं पर उत्पादन कर था, किन्तु अब अधिक वस्तुओं पर कर लग गया है या करों में वृद्धि हो गई है। २९ वस्तुयें ऐसी हैं, जिन पर १९५०-५१ में बिल्कुल कर नहीं था। परन्तु तालिका बताती है कि किस तरह तबसे अधिकाधिक वस्तुओं पर कर लगाये जाते आ रहे हैं।

| | १९५०-५१ | १९५४-५५ | १९५६-५७ | १९६०-६१ | १९६१-६२ |
|---|---|---|---|---|---|
| मोटर स्प्रीट | २,०८ | ९,८७ | २५,२३ | ३८७५ | ३९१० |
| मिट्टी का तेल | २८ | ९३ | ३२९ | ७६५ | ८५० |
| चीनी | ६४६ | ८३६ | २०८८ | ४५४० | ४६२० |
| दियासलाई | ८०७ | ९२५ | १००५ | १७८० | १८०० |
| इस्पात के पिण्ड | ५४ | ६७ | ६४ | १२२० | १२५० |
| टायर और ट्यूब | ४०४ | ५३९ | ६१५ | १२५० | १३५० |
| तम्बाकू | ३१९९ | ३१३९ | ३८४३ | ४८१० | ४९३५ |
| वनस्पति से बनी वस्तुयें | २१९ | ३१३ | ४३५ | ५०० | ५२५ |
| काफी | ११७ | ९८ | १२० | १३५ | १३५ |
| चाय | ३३९ | ३१९ | ३१९ | ७६५ | ७६५ |
| सूती वस्त्र | ९२६ | २७५९ | ५१८६ | ३७८५ | ३८०० |
| नकली रेशम | — | ४९ | १०३ | १८९ | १९० |
| सीमेंट | — | २११ | २५५ | १७५० | १७५० |
| पायदान व चटाईयाँ | — | ८२ | ९९ | १५० | १६० |
| साबुन | — | १४० | १८५ | २०५ | २१० |
| ऊनी वस्त्र | — | २ | ६१ | ६२ | ६३ |
| बिजली के पंखे | — | ५ | ३२ | ११० | ११० |
| बिजली के बल्ब | — | १ | २८ | ७० | ७० |
| बिजली की बैटरियां | — | ५ | ८९ | १७० | १७० |
| कागज | — | २१ | ३२७ | ८२५ | ८८० |
| रंग-रोगन | — | ९ | ११७ | १४० | १४० |
| अनावश्यकीय बनस्पति तेल | — | — | ५३० | १२२५ | १२५० |
| शोधित डिजेल तेल | — | — | २५३ | ३८०० | ४००० |
| इंधन का तेल : डिजेल तेल और फरनेस तेल | — | — | ३०३ | ९५० | १०५० |
| रेयन और सिन्थेटिक फायवर्र तथा सूत | — | — | ७ | २७० | २७० |
| मोटर कार | — | — | ५ | ९५० | १००० |
| असफाल्ट और विटुमिन | — | — | — | ३०० | ३०० |
| अलम्युनियम | — | — | — | ११० | ११० |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| टिन प्लेट | — | — | — | १२० | १२० |
| कच्चा लोहा | — | — | — | १०० | १०० |
| रेशम फेबरिक | — | — | — | ५ | ५ |
| साइकल तथा पुर्जे | — | — | — | १२५ | १२५ |
| कम्बश्न इंजन (अन्दर) | — | — | — | १३५ | १३५ |
| बिजली की मोटरें | — | — | — | ७५ | ७५ |
| सिनेमा फिल्में | — | — | — | ७५ | ७५ |
| नमक कर (सेस्स) | — | — | — | ८२ | ७९ |
| कोयला | १९२ | २४५ | २१८ | ३७५ | ५४३ |
| नारियल | — | — | — | १० | १० |
| तेल और तिलहन पर कर | — | — | १५ | २५ | २५ |
| मिश्रित | ४४ | १९१ | १२१ | ५१ | ५१ |
| कुल आय | ७१५० | ११०३६ | १९२७५ | ३५८७९ | ३७००५ |
| ❀ | | | | | |
| कुल वास्तविक आय | ६७५४ | १०८२२ | १९०४३ | ३५४२९ | ३६५५५ |
| **अतिरिक्त आयकर** | | | | | |
| चीनी | — | — | — | १२९० | १२९० |
| वस्त्र | — | — | — | १९९६ | १९९६ |
| तम्बाकू | — | — | — | ७८३ | ७८३ |
| कुल जोड़—केन्द्रीय आयकर का | ६७५४ | १०८२२ | १९०४३ | ३९४९८ | ४०६२४ +२८६०❀ |

❀ २.३ करोड़ रुपये राज्यों को देय राशि

# केन्द्र के मुख्य मुख्य कर

निम्नलिखित तालिका से यह स्पष्ट है कि निर्यात करों से हमारी आय लगातार कम होती जा रही है, हमें विवश होकर कुछ पदार्थों पर निर्यात कर समाप्त कर देने पड़े हैं या काफी कम कर देने पड़े हैं। १९५०-५१ में तटकरों से हमें ४७.३६ करोड़ रुपये की आमदनी हुई थी, लेकिन नये बजट के अनुसार हमें केवल १३.७२ करोड़ रुपये की आमदनी हुई, जबकि बढ़ती हुई आर्थिक अवस्था में यह ५०-५५ करोड़ रुपया हो जानी चाहिये थी।

## समुद्री निर्यात तटकर

(लाख रुपयों में)

| | १९५०-५१ | १९५६-५७ | १९६०-६१ संशोधित | १९६१-६२ बजट |
|---|---|---|---|---|
| जूट-कच्चा | २६१२ | ३ | — | — |
| रुई | १२० | १६१ | ३० | ३० |
| काटन वेस्ट | — | १८४ | ४७ | ४७ |
| सूती वस्त्र और सूत | ३१ | १० | — | — |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मैंगनीज | १३२२ | १८९ | — | — |
| चाय | ११२४ | २०४७ | १२०० | १२०० |
| काली मिर्च | ४२६ | — | — | — |
| अन्य कृषि उत्पादन | ४० | ४२ | ५० | ५० |
| लोहा तथा इस्पात | २१ | — | — | — |
| अभ्रक | २९ | २२ | २८ | २८ |
| तेल और तिलहन | २ | १५१ | — | — |
| खल्ली | — | ३८ | — | — |
| कच्ची ऊन | १९९ | — | — | — |
| पारा | — | — | — | — |
| काफी | — | ५ | ७ | ७ |
| चावल | — | — | — | — |
| नारियल की जटा से बना का समान | — | ६ | ४ | ४ |
| लाख | — | — | ६ | ६ |
| अन्य वस्तुयें | — | ९ | — | — |
| कुल निर्यात | ४७३६ | २८६७ | १३७२ | १३७२ |
| कुल समुद्री आयात कर (संरक्षण कर सहित) | १०७७० | १४०५२ | १४६८८ | १४७५८ |
| स्थल मार्ग से कस्टम | ४५९ | २६८ | २६० | २६० |
| हवाई यातायात से कस्टम | — | १९९ | २१० | २१० |
| मिश्रित | १७८ | ११६ | २७० | २५० |
| कुल आय करों से (वापसी निकाल कर) | १६१४३ | १७६५० | १६८०० | १६८५० |
| कुल आय | १५७१५ | १७३२३ | १६३०० | १६४०० +२९२७ |

## निगम कर

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| साधारण शुल्क | ३४२५ | ५०९६ | १३६८५ | १३९३५ |
| अत्यधिक लाभ पर कर | ३८१ | १९ | ६० | ६० |
| कारोबार लाभ कर | २४२ | ३ | ५ | ५ |
| कुल | ४०४९ | ५११८ | १३७५० | १४००० +१००* |

## निगम कर के अलावा आयकर

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| साधारण शुल्क | १२७१३ | १४५५२ | ११७३५ | १२०८५ |
| सरचार्ज* | २३५ | ५४९ | १००० | १००० |
| अत्यधिक लाभ पर कर | २४९ | ५५ | १० | १० |
| कारोबार लाभकर | ७६ | १८ | ५ | ५ |
| कुल | १३२७३ | १५१७३ | १२७५० | १३१०० +२००** |

* सरचार्ज ( विशेष ) सम्मिलित

** बजट प्रस्तावों का प्रभाव



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ऑटोमेशन (स्वचलन) से नई अर्थ-व्यवस्था का जन्म

देवीप्रसाद नौटियाल

"आवश्यकता आविष्कार की जननी है" का कथन मानव के विकास में मूलभूत सिद्धान्त प्रमाणित हो चुका है। आदिकाल से आज तक मानव की बढ़ती हुई आवश्यकताएं उसके लिए नवीन आविष्कारों के प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। और इसीलिए समय समय पर मानव नई दिशाओं को खोजता रहा है। नए आविष्कारों के साथ-साथ मानव समाज और उसकी अर्थ व्यवस्था में भी परिवर्तन होता रहा।

१८ वीं और १९ वीं शताब्दि की यूरोप की औद्योगिक क्रान्ति के बाद नये आविष्कार होते गये। उत्पादन सम्बन्धी प्रायः हर तरह के कामों में स्वचालन के तरीकों के प्रयोग के कारण औद्योगिक परिवर्तनों ने अर्थ-व्यवस्था के बहुत बड़े भाग और बहुत अधिक उद्योगों को पूर्ण रूप से प्रभावित कर दिया है।

परन्तु अब विश्व की अर्थ-व्यवस्था में एक प्रभावशील मोड़ आना आरम्भ हो गया है और वह है ऑटोमेशन के अन्तर्गत अर्थ-पद्धति। औद्योगिक क्षेत्र में स्वचालित मशीनों और स्वचालन की नई रीतियों के बड़े पैमाने पर काम करने तथा उत्पादन करने को 'आटोमेशन' कहते हैं। महत्व की बात यह है कि इसमें लम्बी योजना के आधार पर सब काम चलता है जिसका अर्थ-व्यवस्था व अर्थ पद्धति पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। आटोमेशन में कई अन्य सम्बन्धित योजनाओं का जैसे विशेष नये तरल पदार्थों और धातु पदार्थों का उत्पादन, कार्यान्वयन भी साथ-साथ करना होता है। मशीन का संचालन व नियन्त्रण केवल तकनीकी ज्ञान के आधार पर होता है।

## वर्तमान स्थिति

कारखानों, खेतों, खानों, रेल-व्यवस्था, संचार के साधनों, दफ्तरी कामों, थोक व्यापारों और परिवहन में स्वचालन की रीतियों के बड़े पैमाने पर प्रयोग से अमेरिका, ब्रिटेन, सोवियत रूस आदि देशों में औद्योगिक क्षेत्र में तीव्र गति से क्रान्तिकारी परिवर्तन आना आरम्भ हो गया है। इन देशों में भी और विभिन्न उद्योगों में ऑटोमेशन का वर्तमान विस्तार समान रूप से नहीं है। फिर भी अनेक विभाग कारखाने और कार्यालय स्वचालन और अंशतः स्वचालन के तरीके अपना चुके हैं। बहुत से अभी प्रारम्भिक प्रक्रिया में है अथवा इसके लिए भावी योजना बनाने में संलग्न हैं। नए उपकरण और उत्पादन के नये तरीके पूर्व काल में प्राप्त की गई आटोमेशन की बड़ी सफलताओं को भी अतीत की बातें सिद्ध कर रहे हैं। धातु उद्योग के लिये परम्परा से एक बड़ी संख्या में दक्ष कारीगरों की जरूरत पड़ती रही है। अब आटोमेशन के दौर में उसमें भी अनेक जटिल कार्य स्वचालित यन्त्रों से किये जा रहे हैं। आटोमेशन में अब केवल स्वतः नियंत्रित संचालन की प्रक्रियाओं के निरीक्षकों की आवश्यकता पर रह गई है। निकट भविष्य में ही उद्योग और व्यापार में अणु-ऊर्जा और सूर्य शक्ति का उपयोग अधिकाधिक होने लगेगा। तीव्र और मूल औद्योगिक परिवर्तनों से मशीनों, उत्पादन के तरीकों, कार्य प्रवाह व कार्यालय प्रणाली, मानव शक्ति की आवश्यकताओं, कर्मचारियों की दक्षता और उद्योगों की स्थिति में व्यापक परिवर्तन होने प्रारम्भ हो गये हैं। इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों में वायरिंग और ट्यूब्स के स्थान पर प्रिंटेड सरकिट्स और ट्रांजिस्टर लगाये जा रहे हैं। धातुओं के स्थान पर प्लास्टिकों का उपयोग हो रहा है। उद्योग के बड़े पैमाने पर अणु भट्टियों के उपपदार्थ, रेडियोधर्मी आइसोटोपों का प्रयोग भी किया जाने लगा है।

## आटोमेशन का दूरवर्ती परिणाम

टेक्नोलौजी-सम्बन्धी बुनियादी परिवर्तन हमेशा कुछ न कुछ विस्थापन पैदा कर देते हैं। पुराने कौशल अप्रचलित या अतीत की वस्तु हो जाते हैं और नई दक्षता में अनावश्यक प्रतीत होने लगते हैं। कुछ प्रकार के काम बन्द हो जाते हैं और बहुत से उद्योग पूर्णतः अथवा अंशतः समाप्त हो जाते हैं। माल या वस्तुओं से सम्बन्धित परिवर्तनों से भी कुछ उद्योगों का पतन और नये उद्योगों का विकास होने लगता है। उद्योगों के स्थान में परिवर्तन होने लगते हैं। आर्थिक कार्य-व्यवस्था में ऐसे उत्थान पतन



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व उथल पुथल का पूरे समाज और प्रदेश पर व्यापक असर पड़ता है।

'आटोमेशन' में यदि पुरानी घिसी-पिटी केवल मुनाफाखोरी की भावना से काम लिया गया तो जबरी छुट्टी की घटनाओं और बड़े पैमाने पर 'बेकारी' में वृद्धि होगी। बढ़ते हुए रोजगार के काल में भी 'आटोमेशन' से कुछ श्रमिक विस्थापित हो जायंगे और कुछ पर कार्यों और कुशलता की आवश्यकताओं से होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव पड़ेगा। नई टैक्नोलौजी से उत्पादन की कई क्रियाओं में आमतौर पर कमी हो जाती है। किसी तरह की दक्षता का मूल्य कम और किसी विशेष दक्षता का मूल्य ज्यादा हो जाता है। आटोमेशन से कितने ही कुशल और अंशतः कुशल कर्मचारियों की दक्षतायें पुरानी और अनावश्यक हो जाती है। स्वचालित यंत्रीकरण स्वयं एक समस्या है। इसके लिए कच्चे माल की द्रुतगति से पूर्ति और उत्पादित माल की खपत के लिये मांग प्राप्त करना भी बड़ी समस्याएं हैं। सारांश यह है कि आटोमेशन और यंत्रीकरण तब तक समस्या बने रहेंगे, जब तक नई स्थिति के अनुसार समूचे समाज के हित को दृष्टि में रखते हुए सामाजिक व आर्थिक ढांचे में आमूलचूल परिवर्तन नहीं किया जाता।

यह भी कहा जाता है कि 'स्वचालन' के अन्तर्गत बाबू वर्ग की अर्थ व्यवस्था पर भारी विपरीत असर पड़ेगा। बाबुओं के स्थान पर कम्प्यूटर काम करेंगे। जहां कहीं भी स्वचालित यंत्र काम करने शुरू हो गए हैं। वहां कम्प्यूटरों (गणक मशीनों) से काम लेना शुरू हो गया है।

## लाभ

जहां एक ओर 'स्वचलन' (आटोमेशन) में ऊपर लिखी अनेक बुराइयां व कठिनाइयां सामने आती हैं, वहां दूसरी ओर इसके कुछ लाभ भी हैं।

ओटोमेशन में मानव श्रम के अनेक नये साधन भी पैदा होने रहते हैं, क्योंकि ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में जो भी नये आविष्कार होंगे, उनके लिये नये किस्मों के पदार्थ—मशीनरी व पुर्जे बनाने पड़ेंगे। इससे कार्य दक्षता व कार्य-क्षमता बढ़ती है, जिससे अधिक उत्पादन होता है। अधिक उत्पादन से आवश्यकताओं की पूर्ति होती है और उनकी पूर्ति के साथ-साथ नई-नई आवश्यकतायें भी बढ़ती ही रहती हैं। इसलिये मांग में कमी का भय बहुत नहीं रहता।

ऑटोमेशन से लोगों की रुचि अनुसन्धान कार्य में बढ़ती ही रहेगी। इस बात पर शंका करने की गुंजाइश नहीं मालूम पड़ती कि ऑटोमेशन से मानव समाज में विज्ञानवेत्ताओं का एक नया वर्ग खड़ा हो जायगा, जो संभवतः समाज को नई दिशा अवश्य प्रदान करेगा।

ऑटोमेशन की पद्धति में सही और सामूहिक लाभ की अर्थ-पद्धति अपनाने पर लोगों को विश्राम का समय अधिक मिलेगा, क्योंकि काम के घंटे अवश्य कम हो जायंगे और तब शिक्षा, मनोरंजन और अनुसन्धान आदि के लिये लोगों को अधिक समय मिल सकेगा। ज्ञान-विज्ञान का स्तर और अधिक ऊंचा होता रहेगा और स्वास्थ्य की ओर भी अधिक ध्यान दिया जा सकेगा।

## संगठन तथा अर्थ-वितरण

नये उपकरण लगाने से पहले श्रमिकों के प्रशिक्षण के लिये समुचित प्रबन्ध करना होगा। यदि इस काम में मालिक और मजदूरों का संयुक्त आयोजन हो तो विस्थापन की कठिनाइयां कम ही सामने आयेंगी। श्रमिक और मालिक में सहकारिता परम आवश्यक है, जिससे व्यवस्थित कार्य-प्रणाली द्वारा काम होता रहे। जिन श्रमिकों को जबरन छुट्टी दी जाये, उनकी आजीविका व काम के लिये पहले से राज्य सरकार द्वारा प्रबन्ध हो जाना चाहिये।

वरिष्ठता की पर्याप्त व्यवस्था द्वारा श्रमिकों को यह विश्वास दिलाना चाहिये कि उन्हें उच्चतर दक्षता की श्रेणियों के योग्य बनाने का अवसर प्राप्त होगा। उन श्रमिकों को जिनके कारखाने या विभाग स्थानान्तरित हो गये हैं, वरिष्ठता के आधार पर नई जगह जाने के अवसर और यात्रा आदि के लिये आर्थिक सहायता उपलब्ध होनी चाहिये।

जो पुराने कर्मचारी वर्तमान पेंशन योजनाओं के अन्तर्गत अवकाश प्राप्त करने योग्य आयु तक नहीं पहुँचे हैं और साथ ही वे अपने को नई मशीनों के उपयुक्त बनाने में असमर्थ हों, उन्हें कोई दूसरा काम दिलाने का प्रयत्न करें

[ शेष पृष्ठ १८२ पर ]



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पश्चिम-जर्मनी के द्रव्य मार्क का पुनर्मूल्यांकन

ले० श्री शिवप्रसाद गोविल

पश्चिम जर्मनी ने अपने द्रव्य मार्क का पुनर्मूल्यांकन ४ मार्च १९६१ को किया है, जिसके फलस्वरूप मार्क के मूल्य में ४.७६ प्रतिशत की वृद्धि हो गई। मार्क और डालर के बीच पहले सरकारी विनिमय दर ४.१७ से ४.२३ मार्क प्रति डालर थी। अब वह घटकर ३.९७ से४.०३ मार्क प्रति डालर हो गया। 'पेरिटी' (I. M. F. Parity) का दर ४.२० मार्क प्रति डालर से घट कर ४ मार्क प्रति डालर हो गया। पहले भारतीय १.१३९ रु० १ मार्क के बराबर होता था, अब १ मार्क का मूल्य १.१९ रु० होगा।

जर्मनी के वित्त मंत्री डा० लुडविग अरहर्ड के अनुसार इस पुनर्मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य जर्मन करेंसी में आन्तरिक स्थिरता कायम करना है।

१९६० में जर्मनी की आर्थिक व्यवस्था में जो तेज़ी आई, उसका मुख्य कारण जर्मनी के निर्यात में उत्तरोत्तर वृद्धि थी। उत्तरोत्तर बढ़ते निर्यात के कारण जर्मनी का बैलेंस ऑफ पेमेण्ट पर्याप्त अनुकूल रहा। सट्टे-बाजी की अनुकूल परिस्थिति जर्मनी में हो गई एवं ब्याज दर भी आकर्षक बनी रही, जिनके कारण भी विदेशी मुद्रा जर्मनी में इकट्ठी होती गई और इस प्रकार १९६० में पश्चिम जर्मनी का संचय (Reserves) २४२० करोड़ मार्क से बढ़कर ३२२० करोड़ मार्क हो गया। दूसरे शब्दों में इस संचय में ३३ प्रतिशत की वृद्धि हो गई। परिणामस्वरूप विश्व के भुगतानों में एक असामान्य परिस्थिति उत्पन्न हो गई एवं जर्मनी में आन्तरिक अर्थ-व्यवस्था में मुद्रा-स्फीति की परिस्थिति उत्पन्न होती गई। उत्पादन-स्तर इतना विस्फारित हुआ कि मजदूरों की कमी हो गई। वस्तुओं की कीमतों एवं मजदूरी में लगातार वृद्धि होती गई और यह सोचा जाने लगा कि जब तक कोई महत्वपूर्ण कदम नहीं उठाया जाता, अर्थ-व्यवस्था की यह बीमारी दूर नहीं की जा सकेगी। चुनाव-वर्ष में करों की वृद्धि अप्रिय सिद्ध हो जाती। मौद्रिक तरीके डालर और स्टर्लिंग की स्थिरता को और ख़तरे में डाल देते और इसलिए सरकार को विवश होकर मार्क के पुनर्मूल्यांकन का सहारा लेना पड़ा। आशा की जाती है कि यह उपाय आयात को सस्ता करके मुद्रा-स्फीति को रोकने में समर्थ हो सकेगा तथा साथ ही साथ जर्मनी के बढ़ते संचय को रोक सकेगा।

## पुनर्मूल्यांकन का प्रभाव

१. पुनर्मूल्यांकन का मुख्य प्रभाव जर्मनी के आयात पर पड़ेगा। आयात की वस्तुएं ५ प्रतिशत सस्ती हो जायेंगी और आशा की जाती है कि वस्तुओं का आयात बढ़ने लगेगा। सस्ते आयात से उत्पादन-खर्च में कमी हो सकेगी और इस कारण आन्तरिक कीमतों में भी कमी हो जाएगी।

२. जर्मनी से आयात करने वाले देशों के लिए जर्मनी से आयात की जाने वाली वस्तुओं की कीमत (यदि उत्पादन-खर्च में कमी नहीं हुई) लगभग ५% बढ़ जाएगी। परन्तु इससे जर्मनी की अर्थ-व्यवस्था में अधिक उथल-पुथल होने की संभावना नहीं है, क्योंकि पुनर्मूल्यांकन की मात्रा बहुत कम है। साथ ही साथ सस्ते आयात के कारण उत्पादन-व्यय में कुछ कमी हो जाएगी, जिससे कुल निर्यात के बढ़ जाने की उम्मीद है। परन्तु, यूरोपीयन-फ्री-ट्रेड-एरिया (E.F.T.A.) के अन्तर्गत आयात करों में कमी हो जाने के कारण जर्मनी के अन्दर के कुछ आन्तरिक एवं निर्यात उद्योगों को अपेक्षाकृत कड़ी स्पर्धा का सामना करना पड़ेगा। ईंधन के काम में आने वाले तेलों का आयात (आयात मूल्य ५% कम होने के कारण) जर्मनी में बढ़ जाएगा जिससे कोयले के उद्योग को आघात पहुँचेगा। फ्रांस का इस्पात जो पहले से ही फ्रांस के दो अवमूल्यनों के कारण जर्मनी में अपेक्षाकृत सस्ता था, और अधिक सस्ता हो जायगा। मोटर-उद्योग को, जो अपने उत्पादन का लगभग एक तिहाई योरोपियन फ्री ट्रेड एरिया में भेजता था, इस पुनर्मूल्यांकन से क्षति पहुँचेगी।

३. पुनर्मूल्यांकन सम्बन्धी अटकलबाजियों के समाप्त हो जाने पर जर्मनी में अल्पावधि-पूंजी का बहाव (short term Capital in flow) कम हो जाएगा और इस प्रकार



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी की अर विश्व-संचय के बहाव में भी कमी हो जाएगी।

४. आशा की जाती है कि पुनमूल्यांकन, तथा इसके साथ १९६१ में जर्मनी भी अमेरिका को युद्ध सम्बन्धी १०० करोड़ डालर-कर्ज के पूर्ण-रूपेण निपटारे एवं युनाइटेड किंगडम को पुनर्भुगतान एवं अन्य निपटारों के सिलसिले में ६.७ करोड़ पौंड देने तथा अर्ध-विकसित देशों को १०० करोड़ डालर की सहायता करने की योजनायें, विश्व-तरलता (world liquidity) की, जो जर्मनी में विश्व-संचय (world reserves) के बढ़ जाने से उत्पन्न हो गई है, अंशतः ठीक कर पायेंगी तथा विश्व व्यापार और उत्पादन में विस्तार करेंगी।

५. जर्मन मार्क की मूल्य-वृद्धि की अनिश्चयता समाप्त हो जाने पर कुछ जर्मन-मुद्रा दूसरे देशों की ओर अग्रसर होगी। अभी तक मूल्य-वृद्धि की अटकलबाज़ियों के कारण जर्मन पूँजी का निकास लगभग रु० का हुआ था।

लन्दन की प्रेस रिपोर्ट के अनुसार मार्क के पुनर्मूल्यांकन के बाद स्टर्लिंग कुछ निर्बल पड़ गया है, क्योंकि अमेरिका तथा यूरोप के अन्य देशों के कुछ अल्पकालीन फंड जो लंदन में आये थे, लन्दन के बाहर जाना प्रारम्भ हो गये हैं। अमेरिका के डालर को इससे कुछ बल मिल गया है; क्योंकि लोगों को यह स्पष्ट हो गया है कि अमेरिका, डालर के मूल्य को सोने तथा अन्य मुद्राओं के समक्ष कायम रखने के लिए दृढ़ है।

## भारत पर प्रभाव

१. जब तक कि जर्मनी उत्पादन बढ़ाकर या अन्य उपायों से अपने निर्यात मूल्यों में कमी नहीं लाता, जर्मनी से मशीन आदि वस्तुओं के आयात-मूल्यों में वृद्धि हो जाएगी।

३. रुपये के संदर्भ में हमारे ऋण-भुगतान का मूल्य पुनर्मूल्यांकन के अनुपात में बढ़ जाएगा।

३. ऋण-भुगतान में ही जर्मनी से लिए गए कर्ज पर ब्याज बढ़ जाएगा।

४. जर्मनी में भारत के निर्यात की वस्तुयें पुनर्मूल्यांकन के कारण, पूर्व की अपेक्षाकृत कुछ सस्ती हो जाएँगी और प्रयत्न करने पर हम जर्मनी में अपने कुछ सामानों जैसे चाय, कहवा, दरी, दस्तकारी की वस्तुयें इत्यादि के निर्यात को कुछ सीमा तक बढ़ा सकते हैं।

५. मार्क का मूल्य दूसरी मुद्राओं की अपेक्षा ५% बढ़ जाने के कारण १९६१-६२ में जर्मनी से ऋण रूप में मिलने वाली कुल सम्मिलित रकम ४० करोड़ मार्क से जितनी भी राशि खुले रूप में (Untied basis) मिलेगी, उससे भारत को पहले की अपेक्षा ५ प्रतिशत अधिक डालर और पौंड बदले में प्राप्त हो सकेंगे। भविष्य में खुले आधार (untied basis) पर जर्मनी से भारत को जितना भी ऋण मिल सकेगा, उतना ही उसे अधिक लाभ होगा।

# आटोमेशन

[ पृष्ठ १८० का शेष ]

चाहिये अथवा पेंशन योजनाओं को बदलने का प्रयत्न किया जाना चाहिये जिससे कि जल्दी अवकाश प्राप्त किया जा सके, आटोमेशन के अन्तर्गत मजदूरी के ढाँचे में भी परिवर्तन आवश्यकक है, क्योंकि नई मशीनों के कारण उत्पादन क्रियाओं, कार्यों और जिम्मेदारियों में भी परिवर्तन होते हैं।

स्वचालित यंत्रीकरण तथा मशीनीकरण से मानव समाज का सामूहिक रूप से भला होता है या नहीं, यह किसी देश व समाज में अर्थ की वितरण व्यवस्था पर निर्भर करता है। इससे भिन्न दृष्टिकोण व विचार रखने वाले इसको मानव समाज को पंगु बनाने वाले तथा समस्याकारक ही समझेंगे।

## एक प्रश्न

गांधीवादी विचारक यह प्रश्न करता है कि अन्तोगत्वा मशीनरी के इस बढ़ते हुए प्रयोग का क्या परिणाम निकलेगा? समय और व्यय की बचत की भी एक सीमा होती है और आवश्यकताओं की भी। केवल २-३ घण्टे काम करके सारा समय बेकार बिता देना मानव समाज के नैतिक, शारीरिक व सामाजिक जीवन पर कहां तक अभीष्ट प्रभाव उत्पन्न करेगा?



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राष्ट्रीय मजदूरी नीति

श्री बी. एन. गुप्त एम. काम.

राष्ट्र के औद्योगिक विकास में श्रम का महत्व सर्वमान्य है। श्रम औद्योगिक विकास का एक क्रियाशील साझेदार है। अतः श्रम की मजदूरी के प्रति उदासीनता की नीति अपनाना न केवल सामाजिक रूप से अवांछनीय है, बल्कि मानवता के दृष्टिकोण से अन्यायपूर्ण एवं राजनैतिक दृष्टिकोण से घातक है। श्रमिकों को कम मजदूरी मिलना, उनकी क्षमता को कम करना है। उनकी आय कम होने से अनेक प्रकार की वस्तुओं की मांग, क्रयशक्ति के अभाव में नियंत्रित रहेगी। राष्ट्रीय मजदूरी नीति ऐसी होनी चाहिये, जिसके अनुसरण से श्रमिक वर्ग में सन्तोष रहेगा और उनकी सर्वांगीण उन्नति होगी, वह भी समाज का एक आवश्यक अंग है, जिसके हितों को उपेक्षा नहीं की जा सकती। भारत जैसे विकासोन्मुख नियोजित अर्थ-व्यवस्था वाले देश ( Development Seeking Planned Ecoomy ) में एक उचित राष्ट्रीय मजदूरी नीति का निर्धारण और भी आवश्यक है। श्रमिकों को दी जानेवाली मजदूरी एक ओर तो लागत का अंग होती है, जो वस्तुओं के मूल्य निर्धारण पर प्रभाव डालती है तथा दूसरी ओर उसका प्रभाव राष्ट्रीय आय के स्तर पर पड़ता है। आर्थिक विकास में स्थिरता लाने में राष्ट्रीय मजदूरी का स्तर एक महत्वपूर्ण अंग होता है। वर्तमान परिस्थितियां अत्यन्त ही परिवर्तनशील है, अतः बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार राष्ट्रीय मजदूरी नीति में भी परिवर्तन करना आवश्यक होता है।

राष्ट्रीय मजदूर नीति में निम्नलिखित लक्ष्यों की प्राप्ति को प्राथमिकता देनी चाहिये—

१. पूर्ण रोजगार तथा आर्थिक साधनों का संतुलित उपयोग।

२. आर्थिक स्थिरता, आर्थिक प्रगति एवं श्रमिकों को वास्तविक आय की सुरक्षा।

३. आर्थिक चक्र के प्रभावों के प्रति सुरक्षा प्रदान करना।

## राष्ट्रीय मजदूरी नीति के प्रकार

सैद्धांन्तिक रूप से राष्ट्रीय मजदूरी नीति के तीन प्रमुख प्रकार होते हैं—

१. निर्देशकों पर आधारित नीति (Index-based wage policy)।

२. न्यूनतम मजदूरी नीति (Minimum wage policy)। तथा

३. नियंत्रित मजदूरी नीति (Administered wage policy)।

निर्देशकों पर आधारित मजदूरी नीति स्वीडन में प्रयोग की गई है। इस नीति के अनुसार राष्ट्रीय निम्नतम मजदूरी स्तर को जीवन निर्वाह लागत से संबंधित कर दिया जाता है, जिससे वह आर्थिक चक्र के प्रभावों से बची रहे। द्वि-भागीय मजदूरी-नीति (Two-Part wage policy) भी अपनायी जा सकती है, जिसके अनुसार एक भाग तो स्थिर रहता है तथा दूसरा भाग चक्रिम प्रभावों के अनुसार घटता-बढ़ता रहता है। चक्रिम प्रभावों को निष्क्रय करने के लिए मजदूरी एवं सामाजिक सुरक्षा नीति को भी अपनाया जा सकता है।

न्यूनतम-अधिकतम नीति नीदरलैंड जैसी अर्द्ध-नियोजित अर्थव्यवस्था में अपनायी जाती है, जिसके अनुसार राष्ट्रीय मजदूरी स्तर की निम्नतम एवं अधिकतम सीमायें निर्धारित कर दी जाती है, जिससे अर्थ-व्यवस्था पर कम-से कम चक्रिय प्रभाव पड़े। ऐसी नीति से आर्थिक क्रियाओं के उच्चावचन की सीमायें निश्चित हो जाती हैं।

नियंत्रित मजदूरी नीति न्यूनतम मजदूरी अधिनियम द्वारा अपनायी जाती है। इससे चक्रिय प्रभावों पर परोक्ष रूप से असर पड़ता है। ऐसी मजदूरी नीति के प्रमुख उद्देश्य श्रम-शोषण रोकना तथा मजदूरी को एक निश्चित स्तर से गिरने से रोकना है।

नियोजित अर्थ-व्यवस्था में आर्थिक चक्रों की प्रतिरोधी मजदूरी नीति अपनाने से अधिक महत्वपूर्ण यह है कि



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजदूरी को उत्पादकता से सम्बन्धित कर दिया जाय। उत्पादकता या तो (१) राष्ट्रीय स्तर पर या एक बड़े उद्योग अथवा उद्योग समूह की ली जा सकती है अथवा (२) किसी औद्योगिक इकाई की उत्पादकता, जो कार्य निर्धारण की प्रमाणित पद्धतियों और प्रेरणात्मक-भुगतान अपनाने पर हो। ऐसी मजदूरी नीति को "उत्पादकता पर आधारित परिवर्तनीय मजदूरी नीति" (Productisiby geared dynamic wage Policy) कहा जा सकता है —ऐसी नीति अपनाने में दो कठिनाइयां उपस्थित होती हैं—

प्रथम यह कि औद्योगिक मजदूरी में किस "उत्पादन-शीलता" के अनुसार परिवर्तन किया जाय—सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था की औसतन उत्पादनशीलता के आधार पर या प्रत्येक उद्योग के अलग-अलग उत्पादनशीलता निर्देशकों के आधार पर ?

दूसरे किस प्रकार का 'मजदूरी-भिन्नता' (Wage Differential) अपनाई जाए, जिससे अतिरिक्त श्रम-शक्ति प्राथमिक उद्योगों के घटते क्षेत्र से हटकर उत्पादन उद्योगों में लग जाय। श्रम की ऐसी गतिशीलता ही देश की विकासोन्मुख अर्थ-व्यवस्था के हित में होती है।

भारत की विकासोन्मुख अर्थ-व्यवस्था में, जिस पर मूल्य वृद्धि का अधिक प्रभाव है, मजदूरी का सम्बन्ध राष्ट्रीय स्तर की उत्पादनशीलता से होना चाहिए। वर्तमान नियोजित व्यवस्था में यह माना गया है कि यदि मजदूरी में वृद्धि होती है तो देश की अर्थ-व्यवस्था की स्थिरता खतरे में पड़ जायगी और मूल्यों में वृद्धि होगी। परन्तु यह माना गया है कि निम्न दशाओं में मजदूरी में वृद्धि की जा सकती है—

(अ) यदि किसी उद्योग में मजदूरी अत्यन्त ही कम हो तो समानता लाने के लिए उसमें वृद्धि की जाय।

(आ) अधिक उत्पादनशीलता के द्वारा युद्ध के पूर्व के वास्तविक मजदूरी के स्तर को अपनाया जाय और ऐसा करना "जीवन निर्वाह मजदूर नीति" अपनाने के मार्ग में एक पदक्षेप होगा।

(इ) श्रमिकों को राष्ट्रीय आय की वृद्धि में उचित भाग मिले।

अतः मजदूरी के स्तर को उत्पादनशीलता पर आधारित करना महत्वपूर्ण है। सैद्धांतिक रूप से अगर हम औद्योगिक मूल्यों का विश्लेषण करें तो हम पायेंगे कि जब राष्ट्रीय मजदूरी स्तर राष्ट्र की औसतन उत्पादनशीलता पर आधारित होता है—उद्योगों की अलग-अलग उत्पादनशीलता पर नहीं, तो श्रम बाजार में मांग और पूर्ति में स्थायित्व आ जाता है, परन्तु बाजार में असंतुलन बन जाता है, क्योंकि जिन उद्योगों में सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था की तुलना में उत्पादन-शीलता कम होगी, उनमें मजदूरी बढ़ने की प्रवृत्ति होगी। जिसके फलस्वरूप कम उत्पादनशीलता वाले उद्योगों में लागत बढ़ेगी और उसके द्वारा उत्पादित वस्तुओं के मूल्य बढ़ेंगे। इसके विपरीत यदि प्रत्येक उद्योग में दी जानेवाली मजदूरी में वृद्धि ठीक उसी अनुपात में दी गई, जिस अनुपात में उस उद्योग की उत्पादनशीलता बढ़ी है तो वस्तु बाजार में मूल्यों में स्थिरता रहेगी, परन्तु श्रम बाजार में मांग व पूर्ति का संतुलन बिगड़ जायगा। ऐसा इसलिए होगा कि जिन उद्योगों में प्रति-व्यक्ति उत्पादनशीलता बढ़ती है, श्रम की मांग कम हो जाती है और प्रगतिशील उद्योगों में श्रमिकों को लगाने की गति इतनी जल्दी नहीं बढ़ती। अतः उचित मजदूरी नीति वह होगी, जहां इन दोनों में संतुलन स्थापित हो सकेगा। सैद्धांतिक रूप से नियोजित अर्थ-व्यवस्था में जिसमें निजी-क्षेत्र भी कार्यशील हो, ऐसी उचित मजदूरी नीति अपनायी जाय, जो उत्पादनशीलता पर इस प्रकार आधारित हो कि वस्तु बाजार एवं श्रम-बाजार में मांग और पूर्ति का संतुलन बना रहे। संतुलन की ऐसी दशा बनाये रखने के लिए यह आवश्यक होगा कि जिन उद्योगों में प्रति व्यक्ति उत्पादन-शीलता तीव्रगति से बढ़ रही हो उनमें प्रति व्यक्ति मजदूरी वृद्धि उत्पादनशीलता वृद्धि से कम होनी चाहिए, इसके विपरीत जिन उद्योगों में उत्पादनशीलता वृद्धि कम हो, उनमें प्रति व्यक्ति मजदूरी वृद्धि उत्पादनशीलता वृद्धि से अधिक होनी चाहिए। इस प्रकार की नीति से अधिक उत्पादनशीलता वाले उद्योगों में अधिक श्रमिकों के लगाने की गति बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त इससे मूल्यों में स्थिरता भी बनी रहेगी। सन् १९४८ में यूनाइटेड किंगडम के कोहेन काउन्सिल ने उत्पादन शीलता मजदूरी तथा मूल्य स्तर पर सुझाव दिया था कि मूल्य वृद्धि की अस्थिरता (Inflationery Price Instability) दूर करने के लिए



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह आवश्यक है कि मजदूरी के स्तर को उत्पादनशीलता पर आधारित किया जाय। भारत की विकासोन्मुख अर्थ-व्यवस्था में भी ऐसी नीति अपनाना कठिन नहीं होगा।

व्यक्तिगतवादी अर्थशास्त्र (Micso Economics) के दृष्टिकोण से भी यह उचित होगा कि मजदूरी के स्तर को उत्पादनशीलता से जोड़ दिया जाय। विशेषकर उस दशा में, जबकि पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से 'परिणाम पर आधारित मजदूरी भुगतान' पद्धति अपनायी जाय। उदाहरणस्वरूप नीदरलैंड में मौद्रिक तथा प्रशुल्क नीतियों के साथ साथ मजदूरी नीति भी चक्रिय प्रभावों को निष्क्रिय करने के लिए अपनायी जाती है और अन्तः औद्योगिक उत्पादन सम्बन्ध स्थापित किये जाते हैं। नीदरलैंड में समस्त अर्थ-व्यवस्था को पांच क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। जीवन निर्वाह लागत में परिवर्तन के अनुसार प्रत्येक क्षेत्र के लिए प्रशिक्षित, अर्द्ध शिक्षित तथा साधारण श्रमिकों के लिए अलग अलग न्यूनतम मजदूरी निश्चित की जाती है। साधारण श्रमिक से प्रशिक्षित श्रमिक को १०-२० प्रतिशत अधिक मजदूरी मिलती है। आर्थिक प्रगति को स्थिर बनाये रखने के लिए तथा मजदूरी मूल्य में संतुलन बनाये रखने के लिए अधिकतम मजदूरी भी निश्चित कर दी जाती है। भारत में राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद की स्थापना से यह नीति अपनाना और भी सरल हो गया है, क्योंकि यह संस्था उत्पादनशीलता सम्बन्धी सांख्यिकी का संकलन करती है।

भारत सरकार की मजदूरी नीति को नियंत्रित मजदूरी नीति कहा जा सकता है, जिसमें न्यूनतम मजदूरी अधिनियम को अपनाया गया है। इसकी प्रकृति एवं क्षेत्र व्यापक नहीं है। यह नीति मूल्यवृद्धिसे संशकित अर्थ-व्यवस्था (Inflation sensitive Economy) में स्थिरता तथा उत्पादनशीलता में वृद्धि लाने में असमर्थ रही है।

देश की विकासोन्मुख अर्थ-व्यवस्था में भविष्य की मजदूरी नीति के आधार निम्न होने चाहिए:—

(१) देश की बेकार श्रम-शक्ति का उपयोग। (२) न्यूनतम मजदूरी देश की अर्थ-व्यवस्था के सभी क्षेत्रों के लिए निश्चित की जाय। (३) उत्पादन स्तर में वृद्धि हो तथा (४) संकुचित होने वाले कृषि जैसे क्षेत्र से श्रम-शक्ति विकासोन्मुख क्षेत्र-उद्योग में चली जाय।

देश की अर्थ-व्यवस्था को दो खण्डों में बांटा जा सकता है—कृषि तथा उद्योग। पहिले क्षेत्र में श्रम शक्ति अधिक है, दूसरे में कम। आर्थिक उन्नति से रोजगार के अवसर कृषि क्षेत्र में कम होंगे और उद्योग क्षेत्र में उत्पादन तथा आय बढ़ेगी तो देश की अर्थ-व्यवस्था सन्तुलन की ओर अग्रसर होगी। समायोजनकाल में श्रम शक्ति कृषि क्षेत्र से से उद्योग क्षेत्र में हस्तांतरित होगी। यह हस्तांतरण दो प्रकार से सम्भव हो सकता है—

(१) केन्द्रिय नियोजन—सत्ता जानबूझकर घटते क्षेत्र कृषि तथा बढ़ते क्षेत्र उद्योग में मजदूरी में भिन्नता रक्खें। समायोजन काल में उद्योग क्षेत्र में मजदूरी स्तर अधिक ऊंचा हो। दूसरे शब्दों में 'मजदूरी देने की क्षमता' का सिद्धांत अपनाया जाय। इस मजदूरी भिन्नता के फलस्वरूप श्रम कृषि क्षेत्र से उद्योग क्षेत्र की ओर आकर्षित होगा और यह आकर्षण उस समय तक बना रहेगा, जब तक कि समायोजन पूरा न हो जाय तथा दोनों क्षेत्रों में परिवर्तित मांग के अनुसार श्रम पूर्ति न हो जाय।

(२) नियोजन सत्ता दोनों क्षेत्रों में मजदूरी के समान स्तर स्थापित करने का प्रयत्न करे। ऐसी दशा में श्रम शक्ति की कृषि क्षेत्र से उद्योग क्षेत्र में हस्तांतरण की गति धीमी होगी। देश में आवश्यकता इस बात की है कि (१) अन्तिम उत्पादन की मांग में परिवर्तन हो। (२) श्रम की पूर्ति में परिवर्तन हो तथा (३) उत्पादनकला में परिवर्तन हो अर्थात विनियोग के ढांचे में परिवर्तन हो। विनियोग पर ही श्रम की आय निर्भर रहती है। अतः विनियोग नीति इस प्रकार होनी चाहिए कि (१) विनियोग से हुई राष्ट्रीय आय की वृद्धि का अधिकांश श्रम को प्राप्त हो। (२) आय की पुनः वितरण पद्धतियों को अपनाकर आय की विषमता कम की जाय तथा (३) देश में अधिक विनियोग अधिक उत्पादन, अधिक रोजगार तथा अधिक पूंजी संग्रह हो सके। तीसरा उद्देश्य विकासोन्मुख अर्थ-व्यवस्था में अधिक महत्व रखता है। श्रम को यदि आय के पुनः वितरण तथा सामाजिक सुरक्षा कार्यों का विश्वास दिलाया जाय तो निःसंदेह वह ऐसी मजदूरी नीति से सहयोग करेगा, जिसमें मूल्य स्थिरता तथा उत्पादन वृद्धि को महत्व दिया गया हो।

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राज्यों में भूमि-सुधार की प्रगति (गतांक से आगे)

## मध्यप्रदेश

किसानों को खुदकाश्त के अधिकार दे दिए गये हैं, बशर्ते कि उनके पास १० से २५ एकड़ से अधिक न हो। भूमि की यह मात्रा इस बात से निर्धारित होगी कि वे कितने दिन से उस भूमि में खेती कर रहे हैं। इससे अधिक भूमि होने पर ही जमींदार उन्हें बेदखल कर सकेगा। दुबारा कब्जा करने की अधिकतम सीमा २५ एकड़ है। जहां जमींदारों द्वारा दुबारा कब्जा नहीं किया जा सकता, उस जमीन का काश्तकारों को भूस्वामी बना देने की व्यवस्था कर दी गई है। इसका किराया लगान के दो से ४ गुने से अधिक नहीं होगा।

जोत की अधिकतम सीमा निश्चित करने के विषय में कानून पास किया जा चुका है। यह सीमा ३० एकड़ रखी गई है। मध्यप्रदेश क्षेत्र में ३५.४३ लाख एकड़ की चकबन्दी की जा चुकी है और २.५ लाख एकड़ में काम हो रहा है।

## मद्रास

बेदखली के खिलाफ १९५५ से अन्तरिम सुरक्षा प्रदान की गयी है। किराया सिंचाई वाली भूमि में ४० प्रतिशत (जहां सिंचाई की वृद्धि उठान सिंचाई द्वारा की गयी है, ३५ प्रतिशत तक) और दूसरे किस्म की भूमि में ३३ प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। किसानों को खुदकाश्त के अधिकार देने के विषय में एक विधेयक प्रवर समिति के विचाराधीन है। जमीदार इसमें से व्यक्तिगत काश्त के लिए अधिक से अधिक ५ स्टैण्डर्ड एकड़ (५ से २० साधारण एकड़) पर दुबारा कब्जा कर सकता है।

जोत की अधिकतम सीमा ३० स्टेन्डर्ड एकड़ (३० से १२० साधारण एकड़) नियत करने के विषय में एक विधेयक राज्य विधान सभा में पेश किया गया है।

## महाराष्ट्र

सामान्यतया किसान आधी भूमि पर अधिकार रख सकता है और बाकी आधी भूमि पर जमीदार व्यक्तिगत काश्त के लिए कब्जा कर सकता है। जहां जमींदारों द्वारा दोबारा कब्जा नही किया जा सकता उस जमीन के काश्तकार को भूस्वामी बना दिया गया है।

विदर्भ में हैदराबाद के कानूनों के अनुसार व्यवस्था की गई है। वहां ३८६४३० एकड़ भूमि पर ३७.१७६ किसानों को भूस्वामित्व के अधिकार दे दिये गये हैं। किराया (सारे राज्य में) कुल उत्पादन के $\frac{1}{6}$ भाग या लगान के ३ से लेकर ५ गुने से अधिक नहीं होना चाहिए। भविष्य में ली जाने वाली भूमि की सीमा १२ से १८० एकड़ भूमि के मध्य है। वर्तमान जोत की अधिकतम सीमा निश्चित करने के विषय में विधेयक विधान सभा में रखा जा चुका है। यह सीमा १४ से १३२ एकड़ के मध्य है।

३१ मार्च १९६० तक ११ लाख ७० हजार एकड़ भूमि में चकबन्दी की जा चुकी है और १२ लाख ८० हजार एकड़ भूमि में काम हो रहा है।

## मैसूर

बेदखली के खिलाफ अन्तरिम सुरक्षा प्रदान की गई है। किराया यथापूर्व है। बम्बई राज्य के क्षेत्र में उत्पादन का छटा भाग और मद्रास से हस्तांतरित क्षेत्र में सिंचाई वाली भूमि के उत्पादन के $\frac{2}{3}$ के मध्य है।

विस्तृत भूमि सुधार के विषय में एक विधेयक विधान सभा में १९५८ में रखा जा चुका है। आजकल यह प्रवर समिति के विचाराधीन है।

भूमि सुधार विधेयक में जोत की अधिकतम सीमा निश्चित करने के विषय में व्यवस्था है। यह सीमा तीन परिवारों के जोत के बराबर है अर्थात् ३६०० रुपए आय वाला क्षेत्र है।

कर्नाटक क्षेत्रमें ३१ मार्च, १९६० तक ८ लाख एकड़ भूमि में चकबन्दी की जा चुका है और ५ लाख ४५ हजार एकड़ भूमि में काम हो रहा है। सारे राज्य में चकबन्दी करने के विषय में विधेयक तैयार किया जा रहा है।

## उड़ीसा

उड़ीसा भूमि सुधार अधिनियम पास होने तक किसानों को अन्तरिम सुरक्षा दी जा चुकी है। इस अधिनियम के अन्तर्गत किसानों को खुदकाश्त के अधिकार



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे दिए गए हैं, और जमीदार पट्टे पर दी गयी भूमि के $\frac{2}{3}$ से $\frac{5}{6}$ तक पर दुबारा कब्जा कर सकता है। दोबारा कब्जा करने की अधिकतम सीमा २५ स्टैंडर्ड एकड़ है। जहां जमीदार द्वारा दोबारा कब्जा नहीं किया जा सकता, वहां काश्तकारों को बिना मुआवजा दिये भूस्वामी के अधिकार प्राप्त हो जाते हैं। किराया कुल उत्पादन के $\frac{1}{4}$ से अधिक नहीं होना चाहिए।

जोत की अधिकतम सीमा निर्धारित करने की व्यवस्था की जा चुकी है। यह सीमा २५ से १०० एकड़ के मध्य है। जमीदारों को फालतू जमीन छोटे किसानों, भूमिहीनों अथवा उन किसानों को देनी पड़ेगी, जो कि काश्त थे।

## राजस्थान

एक किसान १२०० रुपए वार्षिक आय देने वाली भूमि रखने का अधिकारी है। बाकी जमीन पर जमीदार कब्जा कर सकता है। जहां जमींदारों द्वारा दुबारा कब्जा नहीं किया जा सकता, उस जमीन का काश्तकारों को भूस्वामी बना दिया गया है।

उत्पादन किराया कुल उत्पादन के $\frac{1}{6}$ भाग और नकद किराया लगान के दुगुने से अधिक नहीं होना चाहिए। जोत की अधिक सीमा निश्चित करने के विषय में कानून बनाया जा चुका है। यह सीमा ३० स्टैन्डर्ड एकड़ है। ८ लाख एकड़ की चकबन्दी की जा चुकी है और ६.४लाख एकड़ में काम हो रहा है।

## उत्तर प्रदेश

सब किसान शिकमी राज्य के सीधे सम्पर्क में आ गए हैं और बिचौलिया जमीदार समाप्त कर दिये गये हैं। इस प्रकार १५ लाख किसानों और शिकमियों को जिनके पास २० लाख एकड़ भूमि है, भूमिधर बना दिया गया है। भविष्य में जी जाने वाली सीमा १२॥ एकड़ है। वर्तमान जोत की सीमा ४० से ८० एकड़ के मध्य निश्चित की जा चुकी है। ३१ मार्च १९६० तक ३७ लाख ३० हजार एकड़ भूमि की चकबन्दी की जा चुकी है और ४३ लाख ५५ हजार एकड़ भूमि में काम हो रहा है।

## पश्चिमी बंगाल

बटाई का हिस्सा पाने वालों (बरगदरों) के अलावा सब किसानों और शिकमियों को भूस्वामी बना दिया गया है। जिन बरगदरों को खुदकाश्त अधिकार प्राप्त न हों उन्हें ये अधिकार देने की व्यवस्था की जा चुकी है। जमीदार पट्टेदारी की $\frac{2}{3}$ भूमि पर दुबारा कब्जा कर सकता है। परंतु जिन जमीदारों के पास $7\frac{1}{2}$ एकड़ से कम भूमि हो वे दोबारा सारी जमीन पर कब्जा कर सकते हैं। बटाई अधिक से अधिक उत्पादन के ४० से ५० प्रतिशत तक होनी चाहिए।

जोत की अधिकतम सीमा निश्चित की जा चुकी है। यह सीमा २५ एकड़ है। राज्य सरकार को इस प्रकार १.३ लाख कृषि-योग्य भूमि प्राप्त हुई है जो कि हर साल पट्टेदारी पर दी जाती है। जैसे जैसे काम आगे बढ़ेगा राज्य सरकार को और भूमि प्राप्त होती रहेगी। ● ●

## अमरीका से ३ लाख रुई का आयात

भारत और अमरीका के एक समझौते के अनुसार भारत पी० एल० ४८० के अन्तर्गत अमरीका से तीन लाख गांठ रुई का आयात करेगा। यह समझौता ४ मई, १९६० को किये गये पी० एल० ४८० समझौते का पूरक है, जिसमें व्यवस्था की गयी थी कि अमरीका भारत को १ अरब ३३ करोड़ ४० लाख डालर मूल्य की कृषि-जिन्स देगा।

पी० एल० ४८० के अन्तर्गत आयात की जाने वाली और सभी वस्तुओं की भांति इस रुई की कीमत का भुगतान भी भारतीय मुद्रा में किया जाएगा। कपास के कुल मूल्य में से १ करोड़ ४१ लाख ८० हजार (७ करोड़ रु०) की राशि आर्थिक विकास योजनाओं के लिए भारत को लौटा दी जाएगी। इतनी ही राशि भारत को ४ प्रतिशत ब्याज पर दीर्घकालीन ऋण के रूप में दी जाएगी। १८ लाख डालर (८५ लाख रु०) अमरीकी फर्मों से सम्बद्ध भारत के निजी उद्योगों को ऋण के रूप में देने के लिए रखें जाएंगे और ३७ लाख डालर (१ करोड़ ७५ लाख रु० भारत में होने वाले अमरीकी खर्चों के लिए रखे जाएंगे।

पहले के समझौतों को मिलाकर ४ मई, १९६० के समझौते की कुल राशि १ अरब ३६ करोड़ ९८ लाख डालर बैठती है, जिसमें से १ अरब १५ करोड़ ५१ लाख ३० हजार डालर भारत को ऋण और आर्थिक विकास योजनाओं के लिए अनुदान के रूप में दे दिये जाएंगे। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## नई समाज रचना का रूप

अखिल भारत सर्व सेवा संघ ने गत ६ अप्रैल को एक घोषणा द्वारा यह स्पष्ट किया है कि वह किस प्रकार के समाज की रचना चाहता है और उस समाज की आर्थिक रचनायें कैसी होंगी। सर्वोदय अर्थशास्त्र और दृष्टि बिन्दु को समझने के लिए हम वह घोषणा नीचे दे रहे हैं—

"हम यह घोषणा करते हैं कि हम अपनी शक्ति एक सहकारी, समन्वित और एकरस समाज के निर्माण में लगायेंगे। प्राथमिक ग्राम-समाज को यह जिम्मेदारी लेनी चाहिए कि समाज के सब सदस्यों को उनके जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं सुलभ हों और वे समाज के अन्दर रहते हुए अपनी सुरक्षा और स्वतंत्रता का अनुभव कर सकें।

"हमारे समाज में न तो कोई भूखा रहेगा और न कोई बेकार। इसके लिए हम बे-जमीनों या बेकारों को जमीन दिलाने की और दूसरे उद्योग-धन्धों में लगाने की व्यवस्था करेंगे। हम अपने गांव में सुलभ सभी साधनों का अनुमान लगायेंगे और खास कर ग्राम-समाज की जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उनका पूरा या ज्यादा से ज्यादा उपयोग करेंगे। ऐसा करते हुए हम देश के उस बृहत् समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति में भरपूर योग देना अपना कर्तव्य समझेंगे, जिसके कि हम एक अंग हैं।

"हम वे सब जरूरी उपाय बरतेंगे, जिनसे हमारे आर्थिक जीवन में विविधता आये, जिनसे रहन-सहन की हमारी स्थिति में सुधार हो, जिनसे समाज के हर व्यक्ति को उपयोगी और समाज की दृष्टि से हितकारी काम मिले और गांव में पढ़े-लिखे लोगों में अभी भी धनी आबादी से भरे शहरों की ओर जाने की जो वृत्ति बनी है, उसमें रोक-थाम हो। हम अपने आर्थिक जीवन की योजना इस तरह करेंगे कि जिससे हमारे नौजवानों की बुद्धि-शक्ति को ज्यादा से ठोस रीति से वहीं गांव में काम करने का भरपूर मौका मिल सके।

"खादी अहिंसक समाज रचना की प्रतीक है। आज भी खादी गांवों में हजारों-लाखों गरीबों और उपेक्षितों के लिए आशा का चिन्ह और रोजी-रोटी का साधन है। नये मोड़ के नये विचार से हमें बहुत प्रेरणा मिली है। उसकी सहायता से हमें ग्राम-समाज का समग्र संयोजन और विकास करना चाहिए। कृषि-उद्योग-प्रधान समाज की नयी रचना में खादी और ग्रामोद्योगों के महत्व को हम मानते हैं, इस लिए हम अपने आर्थिक जीवन की नये सिरे से इस तरह रचना करेंगे, जिससे उस नवनिर्माण में इनके महत्व का योग-दान हो और समाज में सबके लिए स्वतंत्रता और समानता की स्थिति पैदा हो सके।"

## 'नया मोड़' को सरकारी स्वीकृति

सर्वसेवा संघ ने 'नया मोड़' नाम से जो कार्यक्रम प्रस्तुत किया है, उसको खादी और ग्रामोद्योग कमीशन ने स्वीकार कर लिया है। इसका उद्देश्य ग्रामों के समग्र जीवन में एक-रूपता और सन्तुलन लाना है। कमीशन ने जो नया कार्यक्रम बनाया है, उसके अनुसार ५ हजार की आबादी के कुछ क्षेत्र चुने जायेंगे, इन क्षेत्रों में खद्दर, चीनी, कागज, गो-सेवा, कृषि आदि समस्त कार्यों को एक साथ लिया जायेगा, ताकि उनमें परस्पर समन्वय हो सके। करीब ३ हजार क्षेत्र तीसरी पंचवर्षीय योजना में लिये जायेंगे। इसका मुख्य उद्देश्य यह होगा कि ये क्षेत्र अपनी आवश्यकताओं के लिए पराश्रित न रह कर स्वावलंबी हो जाए। आजकल जो प्रवृत्तियां चल रही हैं, उनको भी आगे बढ़ाने का कार्य-क्रम कमीशन ने स्वीकार किया है।

## तमिलनाड़ में सत्याग्रह की तैयारियां

बटलागुण्डु क्षेत्र में तमिलनाड सर्वोदय मण्डल के निर्णयानुसार अहिंसात्मक रीति से बेदखली के विरुद्ध सीधी कार्रवाई की प्रारम्भिक तैयारियां हो रही हैं। ५०० सत्याग्रहियों के नाम दर्ज किए गए हैं, उनमें से ६७ सदस्यों की एक सत्याग्रह परिषद् का निर्माण हुआ है। इस परिषद् से ७ व्यक्ति प्रबन्ध-समिति के लिए चुने गए हैं। तमिलनाड के प्रमुख सेवक श्री जगन्नाथनजी ने भी इसी कार्यक्रम को लेकर इस क्षेत्र की पदयात्रा की और वे सत्याग्रह करने के निर्णय पर पहुँचे। अखिल भारत सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति में भी श्री जगन्नाथनजी ने इस विषय को ठहराया।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबन्ध-समिति ने एक प्रस्ताव भी पास किया, जिसमें जमींदारों को समझाने-बुझाने और उनके जीवनमान को बनाए रखने के लिए आश्वासन देने के बावजूद भी वे ग्रामदान में शामिल नहीं होते हैं, तो उनकी जमीन पर काश्त न करके असहयोग का कदम उठाया जाय और यह भी सावधानी रखी जाय कि हर सूरत में असहयोग का यह कार्यक्रम, वर्ग-संघर्ष और हिंसा का रूप न ले।

मदुराई का मेलूर तालुक भी सत्याग्रह के लिए चुना गया है। वहां की जनता इसके लिए तैयार है।

## गाय क्यों पालें ?

केन्द्रीय फार्म गंजरिया, लखनऊ में १२ वर्ष के अनुभव से यह सिद्ध हो गया है कि गाय भैंस की अपेक्षा ज्योदा दूध दे सकती है और उसकी संतान दिनों दिन बढ़ती रहती है।

---

## १०० रु० की पूंजी से ७५ रु० आय

भारत के पशु धन में २१०० करोड़ की पूंजी लगी हुई है। पशुधन से हमें प्रतिवर्ष १५०० करोड़ रुपये की आमदनी होती है। १०० रुपये की पूंजी में से ७५ रु० की आमदनी देने वाला गोरक्षण और गोसम्बर्धन के सिवाय और कोई दूसरा धन्धा भारत में नहीं है। गो-सेवकों का यह उत्तरदायित्व है कि वे देश में गो दुग्ध का प्रचार करें और कृषि-गोपालन तथा ग्रामोद्योगों में एक सूत्रता लाकर गोवंश का विकास करें।

—उ० न० ढेबर

---

भैंस गाय से दूना खाती है, किन्तु भैंस बिना पेट भरे दूध नहीं देती। भैंस गन्दी रहती है और अधिक बीमार पड़ती है। गाय के मुकाबिले में भैंस पर ऋतुओं के फेर-बदल का अधिक प्रभाव पड़ता है, जिससे इसकी देख रेख पर तथा बीमारियों पर अधिक खर्च पड़ता है। भैंस ज्यादा दिनों में ब्याती है और ज्यादा दिन सूखी रहती है। इसके बच्चे मौत के शिकार होते हैं, जिससे पशु पालकों को बड़ी हानि पहुँचती है। पड़वे खेती का कार्य नहीं कर पाते हैं। गाड़ियों में जोतने पर बैठ जाते हैं, गर्मी सहन नहीं कर पाते और हांफते रहते हैं।

कुछ और तुलनायें भी देखिये :—

१—बछिया लगभग २ साल में जवान होती है, जब कि पड़िया ३ साल में।

२—बछिया २॥ वर्ष में ब्याती है, जब कि पड़िया ३॥ साल पर ब्याती है।

३—गाय साल के हर मास गर्म होकर गाभिन हो सकती है। वह २४ से ३६ घन्टे तक गर्म रहती है, जिससे सांड का प्रबन्ध आसानी से हो सकता है। भैंस केवल बरसात और जाड़े में ही गर्म होती है। गर्मी में गाभिन नहीं होती है और केवल १८ घन्टे तक ही गर्म रहती है, जिससे सांड का प्रबन्ध कठिन हो जाता है।

४—गाय साल के किसी भी माह में बच्चा दे सकती है अर्थात् साल में एक ही बार बच्चा देती है। वह केवल ९० दिन सूखी रहती है। भैंस १३-१४ महीने बाद बच्चा देती है। इस तरह वह ११६ दिन सूखी रहती है। गाय २८६ दिन में ब्याती है जब कि भैंस ३१० दिन में ब्याती है।

५—गाय के ७५ प्रतिशत बछड़े-बछिया जीवित रहते हैं और भैंस के केवल २५ प्रतिशत पड़िया पड़वे जीवित रहते हैं।

६—गाय का बच्चा मर जाने पर भी वह आसानी से दूध देती है पर भैंस का बच्चा मर जाने पर वह दूध देना बन्द कर देती है।

७—गाय केवल पीने और सफाई के लिए ही पानी चाहती है पर भैंस ज्यादातर पानी में ही रहना पसन्द करती है।

८—गाय का दूध मधुर और शीतल होता है। वह वायु-पित्त तथा विकार को नाश करता है। फेफड़े के लिए लाभकारी है, क्षय रोग को दूर करने वाला है। इस प्रकार गाय का दूध अमृत तुल्य है। भैंस का दूध भारी, गर्म, वीर्य-वर्द्धक, अपचनीय, कफ और वायुकारक है।

९—गाय का दूध पीने वाले बच्चे पुष्ट, स्वस्थ, फुर्तीले और बली होते हैं। बीमार नहीं पड़ते और बीमार पड़ने पर भी शीघ्र अच्छे हो जाते हैं। इसके विपरीत भैंस का दूध बच्चे को हजम नहीं होता, उसे दस्त आ जाते हैं। मनुष्य मोटे तो जरूर हो जाते हैं, किन्तु बुद्धि तीव्र नहीं होती शरीर में आलस्य रहता है। इसलिए विशेषतः गाय ही पालें।

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान : मरुभूमि से शस्यश्यामल में रूपान्तर

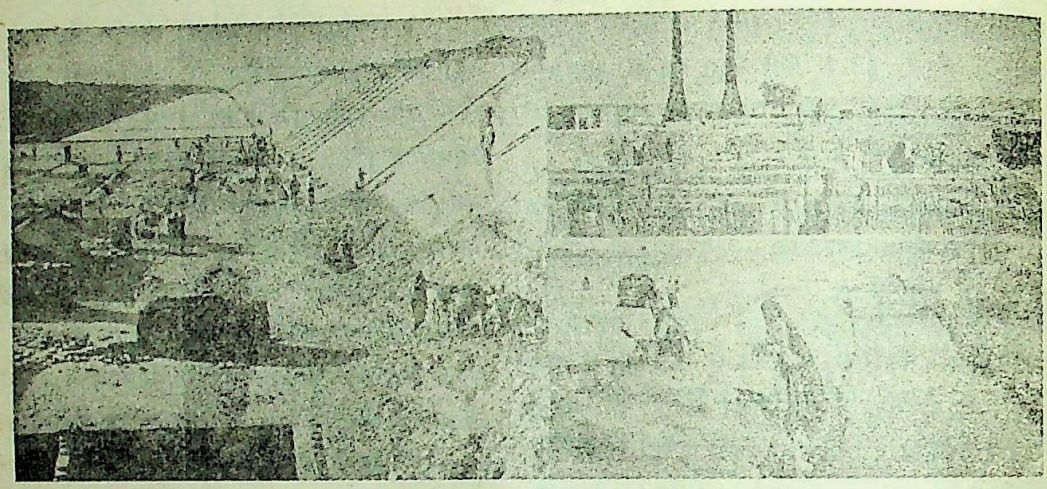

४२५ मील लम्बी नहर पक्की की जा रही है। चुनाई के लिए ईंटें बना रही है।

विश्व की सबसे बड़ी मानवनिर्मित नहरों में से एक, ४२५ मील लम्बी राजस्थान नहर केनिर्माण कार्य का उद्घाटन ३० मार्च, १९५८ को भारत के तत्कालीन गृह मंत्री स्व० श्री गोविन्द वल्लभ पन्त ने किया था। यह एक महत्त्वाकांक्षी योजना है जो एक विशाल, ऊसर तथा रेतीले भूभाग को सुसमृद्ध कृषि क्षेत्र में परिवर्तित कर देगी।

राजस्थान नहर से लाभान्वित होने वाला क्षेत्र उस विशाल भारतीय मरूस्थल का एक भाग है जो रेत का लहराता सागर सा लगता है और जहां वर्षा बहुत ही कम होती है तथा अकाल एवं अन्नाभाव साधारण बातें हैं। इसमें पाकिस्तान की सीमा से लगे बीकानेर डिवीजन के श्री गंगानगर व बीकानेर जिलों तथा जोधपुर डिवीजन के जैसलमेर जिले के भू-भाग सम्मिलित हैं।

वैसे यह मरूस्थल पर्याप्त उपजाऊ है। आवश्यकता केवल पानी की है। राजस्थान नहर इस मरूस्थल के १०,००० वर्गमील क्षेत्र को १८,५०० घन फुट प्रति सैकंड की गति से जीवनदायी जल से सींचेंगी और इस प्रकार दीर्घकालीन विकास की उस प्रक्रिया को प्रारम्भ करेगी, जिसकी सम्भावनाएं इस क्षेत्र में निहित हैं।

इस परियोजना का प्रादुर्भाव सन् १९४८ में तब हुआ, जब भूतपूर्व बीकानेर राज्य के सिंचाई विभाग के तत्कालीन मुख्य अभियन्ता श्री कंवर सेन ने 'बीकानेर राज्य की जल सम्बन्धी आवश्यकताएं' नामक अपने प्रारम्भिक अध्ययन में भारत सरकार से सिफारिश की थी कि वह राजपूताना (राजस्थान) के मरुस्थल को सींचने के लिए नांगल परियोजना के साथ ही "हरीके हैडवर्क्स" तथा "राजस्थान नहर" के निर्माण की भी व्यवस्था करे।

"हरिके हैडवर्क्स" का निर्माण १९४९-५१ में किया गया तथा राजस्थान नहर परियोजना सम्बन्धी तय्यारियां केन्द्रीय जल एवं विद्युत आयोग द्वारा १९५१ में आरम्भ कर दी गयी थीं। इसके पश्चात् राजस्थान सरकार ने विस्तृत सर्वेक्षण किया तथा ६६ करोड़ रु० का अनुमान तय्यार किया।

यह योजना ८० लाख एकड़ मरुक्षेत्र को लाभान्वित करेगी, जिसमें ७० लाख एकड़ कृषि योग्य क्षेत्र सम्मिलित है, तथा ४० लाख एकड़ नयी भूमि की सिंचाई करेगी। मुख्य नहर की लम्बाई ४२५ मील है जो सम्पूर्ण पक्की होगी तथा कांडला बन्दरगाह से सम्बन्ध किये जाने पर ९०० मील हो जायेगी। इसकी शाखाओं तथा वितरक नहरों की लम्बाई ५,००० मील होगी तथा क्षेत्र नहरों की लम्बाई ४०,००० मील होगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## विशाल परियोजना

इस विशाल परियोजना को पूरा करने में १,१०,००० लाख घन फुट मिट्टी की खुदाई करनी पड़ेगी, जो भाखरा नहरों से ४ गुनी, चम्बल नहरों से ५ गुनी तथा दामोदर घाटी निगम नहरों से ८ गुनी होगी। सीमेन्ट की ईंटों की राजगीरी भाखरा बांध से अधिक होगी। रेगिस्तान में नहरों का ऐसा विशाल जाल फैलाना दुष्कर कार्य ही है, विशेषकर इसलिए कि यहां पीने का पानी भी उपलब्ध नहीं है। पानी की सतह यहां २०० से ३०० फुट तक गहरी है तथा पानी खारा है। इस प्रकार यह किसी भी अभियन्ता अथवा प्रशासक के गुणों को चुनौती है तथा यह कसी भी दृष्टिकोण से एक असाधारण कार्य है। इस परियोजना के निर्माण में लगभग १५ वर्ष लगेंगे तथा पूर्ण विकास में २० से २५ वर्ष।

## दो चरण

इस परियोजना का निर्माण कार्य दो चरणों में आयोजित किया गया है। प्रथम चरण में १२२ मील तक की मुख्य नहर तथा नौशेरा शाखा सम्मिलित है, जो सम्भवतः १९६८-६९ तक सम्पूर्ण हो जायेगी और दूसरे चरण में पूर्ण सम्पूर्ण नहर (२९२ मील जिसमें लीलुवा शाखा भी सम्मिलित है) आती है, जिसे १९७५-७६ तक पूरा करने की योजना है। पूर्ण विकास के लिए इस योजना में रावी तथा व्यास नदियों पर सम्बद्ध कार्यों के निर्माण का भी लक्ष्य है जिनमें रावी तथा व्यास और व्यास तथा सतलज नदियों को जोड़ने वाली नहरें तथा व्यास नदी पर पानी एकत्र करने के लिए एक बांध सम्मिलित है। रावी तथा व्यास के बीच की माधोपुर व्यास नहर का निर्माण सम्पूर्ण किया जा चुका है तथा व्यास नदी पर यौंग बांध का निर्माण प्रारम्भ कर दिया गया है। निर्माण कार्यक्रम इस प्रकार आयोजित किया गया है कि परियोजना के निर्माण के साथ ही साथ पानी अधिकाधिक काम में लाया जा सके ताकि नहर का लाभ निर्माण कार्य के प्रारम्भ से ही दिया जा सके।

## खरीफ की सिंचाई

इस बात के सभी प्रयत्न किये जा रहे हैं कि आने वाली गर्मियों से ही खरीफ की सिंचाई प्रारम्भ की जाये। बारहमासी सिंचाई व्यास सिंचाई बांध के निर्माण के साथ १९६९-७० में ही प्रारम्भ की जा सकेगी। इस प्रकार २७,००० एकड़ की मौसमी सिंचाई से प्रारम्भ होकर यह सिंचाई तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्त तक २.५ लाख एकड़ तक फैल जायेगी तथा १९८५-८६ में योजना के सम्पूर्ण विकास के साथ ३६ लाख एकड़ तक चली जायेगी। सम्पूर्ण रूप से विकसित होने पर यह योजना २५ लाख टन खाद्यान्नों का उत्पादन कर सकेगी, जो वर्तमान बाजार भावों के आधार पर ६६ करोड़ रुपये के मूल्य के होंगे।

## कार्य-प्रगति

नहर को पक्की करने का निर्माण कार्य रात दिन चल रहा है। राजस्थान पूरक नहर पर कुल १६,३०० लाख घन फुट मिट्टी की खुदाई में से १०,३८५ लाख घन फुट मिट्टी की खुदाई फरवरी १९६१ तक की जा चुकी थी। इसी प्रकार नहर के १४ वें मील तक १,७०० लाख घन फुट मिट्टी की खुदाई में से १,३४४ लाख घन फुट मिट्टी की खुदाई जा चुकी है जबकि राजस्थान पूरक नहर को १३४ मील तक पक्का करने के कार्य में से ४० मील तक का कार्य किया जा चुका है। योजना के अन्तर्गत २० निर्माण कार्य पूरे किये जा चुके हैं तथा ३० अन्य कामों पर प्रगति हो रही हैं।

यह परियोजना सीधे इसके अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र तथा उसके आस पास के क्षेत्रों को कई तरह के लाभ पहुँचायेगी। यह न केवल कृषि, उद्योग तथा व्यवसाय के विकास की पर्याप्त सम्भावनाएं उपलब्ध करेगी, बल्कि वन लगाने, पशु-पालन तथा मछली पालन में भी बहुत सहायक होगी। इससे पास पड़ौस के नगरों एवं ग्रामों को पीने के पानी के अतिरिक्त बहुत से लोगों को उचित रोजगार का, रेगिस्तान के उपजाऊ भूमि तक फैलने पर नियन्त्रण का तथा टिड्डी दलों की रोकथाम का भी लाभ मिलेगा।

राजस्थान नहर में पानी के प्रवाह के साथ ही प्रकृति की प्रक्रिया भी बदल जायेगी और यह विशाल मरुस्थल लहलराते खेतों तथा हरे भरे बगीचों का हो जायेगा। गंगानगर, बीकानेर तथा जैसलमेर जिलों में १०,००० वर्गमील से भी अधिक बंजड़ रेतीली क्षेत्र जो अभी उजड़ा पड़ा है देश के सबसे समृद्ध अन्न भण्डार में परिणत हो जायेगा। यह देश में खाद्यान्नों के अभाव को भी एक बड़ी सीमा तक दूर करने में सफल होगी। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारे उद्योग

## रेल इन्जिनों का निर्माण

चितरंजन के रेल इंजन कारखाने में १९५० में सिर्फ ७ इंजन बने। अब हर ४८ घंटों में एक रेल इंजन बनकर तैयार हो जाता है।

### ४८ घंटे में एक रेल इंजन

पहली योजना शुरू होने के समय सन् १९५०-५१ में, इस कारखाने में केवल ७ भाप के इंजन बने और बायलर एक भी नहीं बना। अब हर ४८ घंटे में एक इंजन बनकर तैयार हो जाता है और १,००० से अधिक बायलर भी बन चुके हैं।

पहली और दूसरी योजना में बने इंजनों और बायलरों का ब्यौरा इस प्रकार है :—

| | इंजन | बायलर |
|---|---|---|
| पहली योजना में | ३३१ | २८० |
| दूसरी योजना में | ८३१ | ७८६ |
| कुल जोड़ | १,१६९ | १,०६६ |

पहले कुछ वर्ष बायलर, इंजनों से कम बने और उन्हें बाहर से मंगाना पड़ा, पर अब प्रत्येक इंजन में यहीं का बना बायलर लगा होता है।

१९५३-५४ में एक इंजन बनने में १ लाख २१ हजार काम के घंटे लगते थे और अब केवल ५५ हजार लगते हैं। इससे इंजन की लागत भी घट गई है। १९५३-५४ में एक इंजन पर ६ लाख ५ हजार रु० लागत आती थी, सन् १९५९-६० में केवल ४ लाख १० हजार रु० लागत आई। कारखाने में अब इंजनों के पुर्जे और हिस्से भी बनने लगे हैं तथा इंजनों की मरम्मत और सफाई भी की जाती है।

### आत्मनिर्भरता

यद्यपि यहां बनने वाले इंजनों में अभी भी विदेशी पुर्जे लगाये जाते हैं, पर कारखाना इनकी संख्या घटाने की निरन्तर कोशिश कर रहा है। सन् १९५१-५२ में, एक इंजन के लिए २ लाख ४६ हजार रु० के पुर्जे बाहर से मंगाने पड़ते थे। अनुमान है कि १९६०-६१ में, प्रत्येक इंजन में ४० हजार रु० से अधिक के विदेशी पुर्जे न लगेंगे और इस्पात कारखानों में पूरा उत्पादन शुरू हो जाने पर, और भी कम पुर्जे बाहर से मंगाने पड़ेंगे।

दूसरी योजना के आखिरी साल, १९६०-६१ में, मध्य रेल के लिए १,५०० वोल्ट के डी० सी० बिजली के इंजन बनाने का काम शुरू हुआ और दो तीन महीने के अंदर बिजली का पहला रेल इंजन बनकर चलने लगेगा। इस इंजन के बिजली के पुर्जे अभी बाहर से मंगाने पड़ेंगे। बाद में ये भोपाल के कारखाने में बनने लगेंगे।

तीसरी योजना में हर महीने बिजली के ६ रेल-इंजन बनाने का प्रस्ताव है।

## निजी उद्योगों की सहायता

निजी उद्योगों को ऋण और अनुदान के रूप में आर्थिक सहायता देने के लिए भारत सरकार के १२ विभाग हैं। उनके नाम ये हैं—औद्योगिक वित्त निगम, इन्डस्ट्री प्राइवेट लिमिटेड के लिए पुनर्वित निगम, फिल्म वित्त निगम लि०, औद्योगिक ऋण और पूंजी निगम, लिमिटेड, स्टेट बैंक आफ इंडिया राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड, अखिल भारतीय लघु उद्योग मंडल तथा खादी और ग्रामोद्योग आयोग।

एक उद्योग अथवा उद्योग समूह एक से अधिक सरकारी विभागों से आर्थिक सहायता ले सकता है और खास तौर पर जब विदेशी मुद्रा और रुपए, दोनों की जरूरत पड़ती हो। फिर भी इस काम में मेल रखने के लिए औद्योगिक वित्त निगम, राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम, औद्योगिक ऋण और पूंजी निगम लि० में सरकार के निर्देशक हैं और राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम की ऋण सलाहकार समिति की औद्योगिक वित्त निगम के प्रतिनिधि हैं। इन निगमों ने अर्जियों को जांचने और एक अर्जी पर एक से अधिक सहायता देने के बारे में नियम आदि बनाये हैं। अन्य विभागों में एक से अधिक सहायता देने की सम्भावना कम है, क्योंकि वे विभाग या तो कुछ विशेष उद्योगों की सहायता देने के लिए हैं, अथवा सहायता की सीमा बहुत सीमित है।

( पृष्ठ १९८ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया साहित्य

इंडियन इकानामिक ईयर बुक—(१९६१)—लेखक—श्री राजनारायण गुप्त । प्रकाशक—किताब महल इलाहाबाद । मूल्य—३ रु०

इस पुस्तक के सम्पादक और लेखक श्री राजनारायण गुप्त सम्पदा के पाठकों के लिये अपरिचित नहीं हैं । प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने भारत की आर्थिक प्रवृत्तियों की जानकारी देने का सुन्दर प्रयत्न किया है । भारत की जनसंख्या, जन्म और मृत्यु के अनुपात, भारत के प्राकृतिक स्रोत, खनिज द्रव्य, पंचवर्षीय योजनायें, कृषि और कृषि-सुधार की विभिन्न प्रवृत्तियां, सिंचाई और बिजली तथा विभिन्न उद्योग, रेलवे यातायात, संचार, व्यापार, मुद्रा और वित्तीय संस्थायें, सरकारों के बजट आदि बीसियों विषयों की जानकारी नवीनतम अंक देकर इस पुस्तक में दी गई है ।

लेखक केवल आंकड़े देकर ही नहीं रह गया, विषयों को हृदयंगम करने के लिये उनकी पृष्ठ भूमि और संभावनाओं का भी परिचय देता गया है । इस कारण यह पुस्तक अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा लेखकों के लिये भी बहुत उपयोगी हो गई है । क्या ही अच्छा होता यदि प्रकाशक इस प्रकार की पुस्तकें हिन्दी में भी प्रकाशित करते ।

जर्मनी टू-डे-लेखक—श्री ए० के मुकर्जी और श्री रामसिंह

प्रकाशक—सिद्धार्थ पबलिकेशन (प्रायवेट) लिमिटेड २५, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली । मूल्य रु० २.५०

प्रस्तुत पुस्तक के लेखकों ने कुछ समय पहले पश्चिमी जर्मनी की यात्रा की थी । जर्मनी के जीवन के विविध क्षेत्रों का परिचय पुस्तक में दिया गया है । जर्मन जनता की भावनायें क्या है, यह भी इस पुस्तक से स्पष्ट होता है । जर्मनी के एक प्रमुख अधिकारी ने कहा कि विभक्त जर्मनी को अधिक स्थान की आवश्यकता है । इस पुस्तक को पढ़ने से मालूम होता है कि यदि आज जर्मनी के दोनों खंडों का पुनः एकीकरण कर दिया जाय तो वह विश्व की शान्ति का कारण बन सकता है । विभाजन जर्मनी के महान् राष्ट्र का अपमान है, इस चीज को जर्मनी भूल नहीं सकता ।

रसवन्ती (श्री अनूपशर्मा अभिनन्दनांक)—इस अंक के विशेष सम्पादक—डा० पुत्तूलाल शुक्ल । प्राप्ति स्थान—विद्यामन्दिर, रानी कटरा, लखनऊ । वार्षिक शुल्क ७.०० रुपये । इस अंक का मूल्य ३.०० रुपये ।

साहित्य, संस्कृति और कलाप्रधान मासिक पत्रिका 'रसवन्ती' का गत तीन वर्षों से प्रकाशन हो रहा है । प्रस्तुत विशेषांक में हिन्दी के प्रसिद्ध वयोवृद्ध साहित्यकार श्री अनूप शर्माजी के जीवन और कृतित्व का सर्वाङ्गीण परिचय देने का प्रशंसनीय प्रयास किया गया है । श्री अनूपजी हिन्दी में वीर रस के कवि के नाम से प्रख्यात हैं । इस अंक में जहां उनके जीवन से सम्बन्धित संस्मरण दिये गये हैं, वहाँ उनकी जीवनी भी दी गई है । साथ ही उनकी अब तक की समस्त प्रकाशित रचनाओं की समीक्षा भी प्रस्तुत की गई है ।

विश्व-ज्योति ( महापुरुषाङ्क : मार्च १९६१ ) प्राप्ति स्थान—साधु आश्रम, होशियारपुर । वार्षिक शुल्क आठ रुपये ।

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर की प्रमुख मासिक पत्रिका 'विश्व-ज्योति' प्रस्तुत अंक से १०वें वर्ष में प्रवेश कर रही है । आज के पतनोन्मुख मानव-जीवन के नैतिक विकास की दृष्टि से 'विश्व-ज्योति' का 'महापुरुषांक' बड़ा ही उपयोगी प्रकाशन है । इसमें जहाँ भारतीय महापुरुषों के जीवन से सम्बन्धित चरित्र और विचार दिये गये हैं, वहाँ अन्य धर्मों के महापुरुषों के जीवन चरित्र और प्रेरक घटनाएं भी दी गई हैं । यदि इसे हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, यहूदी, जैन आदि संस्कृतियों का संगम कहा जाये तो अनुचित न होगा । कुछ प्रमुख महापुरुषों के चित्र भी दिये गये हैं । अंक संग्रहणीय है ।

—कुमार सम्भव

कत्थक नृत्य—लेखक—श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग प्रकाशक—संगीत कार्यालय, हाथरस मूल्य—८) रुपया ।

प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी में शायद अपने ढंग की प्रथम पुस्तक है । इस पुस्ततक में कत्थक-नृत्य का इतिहास, उसके प्राचीन कलाकार, नृत्य सम्बन्धी पारिभाषिक शब्द, गत, भाव, नायक—नायिका भेद, कत्थक और राधाकृष्ण नृत्य के कुछ कवित्तों का परिचय देने के बाद

( शेषपृष्ठ १९८ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नब्बे लाख नागरिकों को नवजीवन

देश के विभाजन के बाद जो ९० लाख आदमी अपने घरबार छोड़कर भारत आए, उन्हें शरण ही नहीं मिली, बल्कि नया जीवन शुरू करने के लिए पूरी सहायता दी गयी। आज वे देश के जीवन में पूरी तरह घुलमिल गए हैं। इनमें से ५० लाख आदमी पश्चिमपा किस्तान से आए। बहुत से लोग, बटवारे से पहले ही भारत आ गए थे, पर अधिकांश विस्थापित १५ अगस्त १९४७के बाद के कुछ हफ्तों में ही यहां आये। शेष ४० लाख विस्थापित पूर्वी पाकिस्तान से १९४७ से १९५६ के बीच आए।

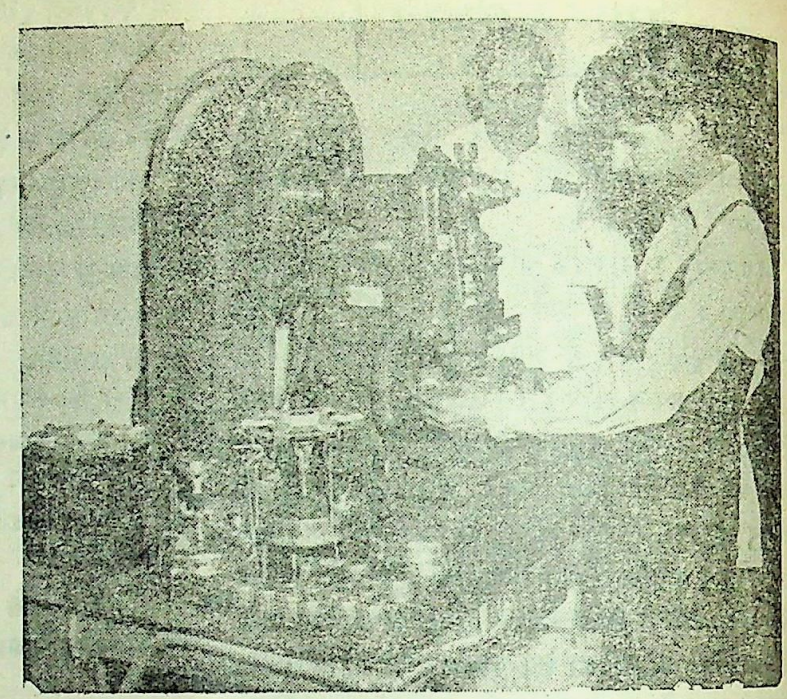

विस्थापित युवक फ़रीदाबाद में स्टोव फ़ैक्ट्री में काम कर रहे हैं।

पश्चिमी पाकिस्तान से आने वाले विस्थापितों के लिए २०० सहायता-शिविर खोले गए। इन शिविरों में रहने वालों की संख्या ९ लाख ५० हजार तक पहुंच गयी थी। कुरुक्षेत्र का शिविर सबसे बड़ा था और इसमें लगभग २॥ लाख लोग थे। इतने लोगों के भोजन, वस्त्र आदि का प्रबन्ध कोई आसान काम न था। इसके अलावा इनके स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना था और महामारी या संक्रामक का भी बचाव करना था।

बाद में पश्चिमी पाकिस्तान के ५ लाख ६८ हजार विस्थापितों को ३७ लाख रु० के बाग, और खेती के लिए १९ लाख ६० हजार पक्के एकड़ और १ लाख ६० हजार कच्चे एकड़ जमीन दी गई। पूर्वी पाकिस्तान के ३ लाख २० हजार विस्थापित परिवारों को भी खेती के लिए जमीन देकर बसाया जा चुका है। इन्हें बैल और औजार खरीदने और पहली फसल तक निर्वाह के लिए अब तक ३३ करोड़ ६० लाख रु० ऋण दिया जा चुका है।

जो विस्थापित शहरों में बसना चाहते थे, उन्हें व्यापार और छोटे उद्योग-धन्धों के लिए ऋण दिए गए। इनके लिए नए बाजार बनाए गए और नाम मात्र के किराए पर दुकानें दी गयीं। कल-कारखाने खोलने के लिए सहायता दी गयीं और ऋण देने के लिए वित्त निगम खोले गए।

विस्थापितों के बच्चों की शिक्षा और उन्हें धन्धे सिखाने का प्रबन्ध करना भी जरूरी था। हजारों निराश्रित स्त्रियां और बच्चे भी थे। अतः पश्चिमी पाकिस्तान के विस्थापितों के लिए ५३० प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल और पूर्वी पाकिस्तान के विस्थापितों के लिए ६०० से अधिक प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल तथा कालेज खोले गये। इसके अलावा अन्य स्कूलों में इनके लिए दुहरी पारियां शुरू की गयीं। भर्ती होने और परीक्षा में बैठने के नियमों में बहुत छूट दी गयी, गरीब विद्यार्थियों की फीस माफ की गई और किताबें मुफ्त दी गयीं।

विस्थापितों की चिकित्सा और स्वास्थ्य की देखरेख के लिए १३० नए अस्पताल, दवाखाने और स्वास्थ्य केन्द्र तथा सांस्कृतिक कार्यों के लिए संस्थाएं खोली गयीं।

विस्थापितों के लिए मकान बनाने पर सबसे अधिक ध्यान दिया गया। पश्चिमी पाकिस्तान के विस्थापितों के

सम्पूर्ण



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए १०० से अधिक बस्तियां बसायी गयीं, जिनमें २ लाख से अधिक मकान हैं। पूर्वी पाकिस्तान के विस्थापितों के लिए ४०० से अधिक बस्तियां बसायी गयीं। इन बस्तियों में ४ लाख २० हजार मकान, झौंपड़ियों व मकानों के प्लाट हैं। अधिकांश बस्तियों में स्कूल, कालेज, दवाखाने और बाजार हैं। उद्योग धंधे भी खोले गये हैं, जिससे बहुत से विस्थापितों ने अपने मकान आप बनाये हैं। सरकार ने उन्हें मकान की जमीन, इमारती सामान के लिए ऋण और अन्य सहायता दी है।

निराश्रित स्त्रियों और बच्चों के लिए नारी निकेतन खोले गए हैं, इन नारी निकेतनों में ३६ हजार विधवाएं और अनाथ बच्चेरहते थे और १३ हजार को गुजारा दिया जाता था।

इन ६० लाख विस्थापितों को बसाने में सबसे बड़ी बात यह है कि इसका पूरा भार भारत ने अपने ही कन्धों पर उठाया। इस वित्त वर्षके अन्त तक इन पर लगभग ३ अरब ८३ करोड़ रु० खर्च हो जायगा। इस समय दण्डकारण्य में पूर्वी पाकिस्तान के विस्थापितों को बसाया जा रहा है। उन्हें खेती के लिए जमीन और उद्योग-धंधे शुरू करने के लिए सहायता दी जा रही है। विस्थापितों को बसाने के लिए उड़ीसा और मध्यप्रदेश के ३० हजार वर्ग मील इलाके का विकास किया जा रहा है।

प० पाकिस्तान में जो विस्थापित अपनी जमीन-जायदाद छोड़ आए हैं, उन्हें सरकार मुआवजा दे रही है। ५ लाख दावेदारों में से ४ लाख ७६ हजार को मुआवजा दिया जा चुका है। इन्हें १ अरब ४२ करोड़ १५ लाख रु० का मुआवजा नकद या मकान और खेती की जमीन के रूप में दिया जा चुका है।

## भारत में अंगूरों की खेती

विश्व भर में जितनी जमीन में अंगूरोंकी खेती होती है, उतनीमें अन्य किसी फल की नहीं होती। कुल दो करोड़ १० लाख एकड़ से भी अधिक जमीन में अंगूर लगाये जाते हैं। अंगूर युरोप के सभी देशों में, संयुक्त राज्य अमरीका में, अफ्रीका के कुछ भागों में, फिलस्तीन, ईरान, अफगानिस्तान, पुर्तगाल और भारत में होता है। आजकल भारत में लगभग १० हजार एकड़ में अंगूर की खेती होती है, जिसमें से आधी से ज्यादा मैसूर राज्य में है। इसके अलावा महाराष्ट्र में २,२०० एकड़ जमीन में और मद्रास तथा आंध्र प्रदेश में भी अंगूर की खेती होती है। पंजाब, दिल्ली और हिमाचल प्रदेशमें भी अंगूर की काफी खेती की जा सकती है।

अंगूर ताजे खाने में अच्छे होते हैं, कुछ को सुखाकर किशमिश और मुनक्का बना दिया जाता है। कुछ रस और मदिरा बनाने के काम आते हैं।

अगर देश में खाने में अच्छे अंगूरों की उपज बढ़े, तो इनका आयात कम हो सकता है। भारत प्रति वर्ष ८३ हजार टन अंगूर आयात करता है, इसमें से ९८ प्रतिशत अफगानिस्तान से आता है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने चिनी ( हिमाचल प्रदेश ) में मुनक्का वाले अंगूरों का एक केन्द्र खोला है। इस क्षेत्र का जलवायु और जमीन अफगानिस्तान की तरह की है। यहां की जलवायु के उपयुक्त किस्मों को उगाने के लिए प्रयोग और खोज हो रही है। जब यहां अच्छी किस्मों के अंगूर उगने लगेंगे तब देश में बाहर से अंगूर मंगाने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

अनुमान है कि भारत में हर साल कुल १९ करोड़ ५० लाख मन फल होते हैं। इनका औसत प्रति दिन प्रति व्यक्ति १॥ औंस पड़ता है। प्रति दिन हर व्यक्ति को कम से कम २ औंस फल मिलने चाहिएं। इसलिए इस कमी को पूरा करने, और बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए फलों की पैदावार काफी बढ़नी चाहिए।

फलों की खेती बढ़ाने के खयाल से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने विभिन्न क्षेत्रों में प्रमुख फलों के बारे में अनुसंधान करनेकी योजना बनाई है। तीसरी योजनामें इसके लिए ८ क्षेत्रीय केन्द्र खोले जाएंगे, जिनके अन्तर्गत २६ उपकेन्द्र होंगे। इस काम के लिए १ करोड़ रु० रखा गया है।

—



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रेयन और रुई में संघर्ष

मानव और प्रकृति का युद्ध पिछले कुछ वर्षों से वस्त्र-उद्योग के क्षेत्र में भी चल रहा है। इस युद्ध का रूप है रेयन और सूती वस्त्रों का परस्पर संघर्ष। किसान कपास उत्पन्न करता है; मिलें या देश की माताएं उसे कातती हैं और फिर उस सूत से कपड़ा बुना जाता है। यदि कपास न हो तो कपड़ा बुनना कठिन हो जाय। किन्तु मानव ने विज्ञान का आश्रय लेकर रेयन से तागे बना लिए हैं और वह कपड़े की कुछ आवश्यकता पूरी करने लगी है। यह उद्योग अब इतना विकसित हो गया है कि कपास के वस्त्र को भी इससे खतरा पहुँचने की संभावना की जाने लगी है।

पिछले दिनों भारत सरकार के योजना आयोग ने एक नोट के द्वारा (१।४८।६० सी० डी० एन०) यह मत प्रकट किया था कि तीसरी पंचवर्षीय योजना में रेयन उद्योग को बहुत प्राथमिकता नहीं मिलनी चाहिए, क्योंकि रेयन की वस्तुएं विलास सामग्री के अन्तर्गत गिनी जाती है। इससे क्षुब्ध होकर रेयन उद्योग ने योजना आयोग को एक आवेदन पत्र भेजा है। इसमें उन्होंने इस बात का प्रतिवाद किया है कि रेयन सम्पन्न और विलासी वर्ग की वस्तु है। एक समय अवश्य ऐसा था कि सम्पन्न वर्ग ही रेयन के चमकीले और भड़कीले कपड़ों का उपयोग करता था। किन्तु आज यह कपड़ा अपने सस्तेपन अपनी चमक और टिकाऊपन के कारण साधारण व निम्न मध्यमवर्ग के भी उपयोग की वस्तु बन गया है। अब शहरों के निम्न वर्ग में ही नहीं, गांव में भी यह कपड़ा आम प्रयोग की वस्तु बन गया है। इसलिए विलास सामग्री कह कर इसका तिरस्कार नहीं किया जा सकता। यह कपड़ा तो अब कपास के बढ़ते हुए संकट को भी दूर करने में सहायक होगा।

संसार भर में इस मानव निर्मित रेशे का उत्पादन तेजी से बढ़ता जा रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका के टैक्सटाइल इकनोमिक ब्यूरो के कथनानुसार १९५९ में रेयन का उत्पादन ७०१ करोड़ पौंड हो गया था, जो १९५८ की अपेक्षा १६ प्रतिशत अधिक था। १९५९ के अंकों में रेयन ऐसीटेट के ५५६ करोड़ पौंड भी सम्मिलित हैं। भारत में भी इसी प्रकार की उन्नति हुई है। वस्तुतः संसार के अन्य अनेक देशों की अपेक्षा भारत में रेयन उद्योग ने बहुत अधिक उन्नति की है। यदि इस वस्त्र पर प्रतिबन्ध लगाकर अथवा इसे अनुत्साहित करके इसका उत्पादन कम किया गया तो कपास के वस्त्र भी अधिक दुर्लभ हो जायंगे। अब तो आवश्यकता यह है कि इसका उत्पादन बढ़ाया जाय और उत्पादन-व्यय कम किया जाय तथा विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा अर्जित की जाय।

किन्तु सरकार इस रेयन उद्योग के साथ सौतेले पुत्र का सा व्यवहार कर रही है। तीसरी पंचवर्षीय योजना में इसके उत्पादन लक्ष्य बहुत कम रखे गये हैं, जो आवश्यक मांग की उपेक्षा करते हैं। वाइकोज रेयन तो विदेशों से लम्बे रेशे की रुई की मांग को भी कम करने में सहायक होगा। हमारा प्रयत्न यह होना चाहिए कि रेयन उन वस्तुओं से अधिक बनाने का प्रयत्न करे, जो भारत में सुलभ हैं।

भारत में कपास आवश्यकता से बहुत कम पैदा होती है। १९४९-५० में २६ लाख १९५७-५८ में ४७ लाख और १९५९-६० मे केवल ३८ लाख गांठ कपास उत्पन्न हुई। जबकि हमने अपना लक्ष्य ७२ लाख गांठें रखा है। इसकी पूर्ति अत्यन्त कठिन है। यदि हम बहुत परिश्रम करें और सिंचाई, खाद आदि साधनों का पूर्ण उपयोग करें तो भी ६० लाख गांठों से अधिक उत्पन्न होने की संभावना नहीं की जा सकती और यह भी पता नहीं कि इन्द्र भगवान अनावृष्टि का प्रकोप कब कर दें। अनिश्चित प्रकृति पर निर्भर रहने की अपेक्षा मानव निर्मित रेशों का प्रयोग ही अधिक बुद्धिमता होगी।

उद्योग मंत्रालय ने १४०० लाख पौण्ड बाइ कोज और १३८० लाख पौंड स्टेपल फाइबर लक्ष्य रखने की सिफारिश की थी, किन्तु योजना आयोग ने यह लक्ष्य घटाकर क्रमशः ७६० और ७५० लाख नियत किये हैं। यह लक्ष्य देश की आवश्यकता को देखते हुए बहुत कम है। यदि वर्तमान मिलों को ही विस्तार की अनुमति दी जाय और नयी मिलें खोलने पर बल न दिया जाय



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेयन उद्योग के विकास में विदेशी मुद्रा की आवश्यकता भी ८७ करोड़ रुपये के अनुमान से बहुत कम होगी (क़रीब ३०-३२ करोड़ रु०) और फिर उद्योग को यह भी आशा है कि उद्योग स्वयं अपने लाभ के द्वारा बहुत-सी आव-श्यकता पूर्ण कर लेगा। जितनी भूमि कपास के उत्पादन में लगाई जाती है, उसे बढ़ाकर अनाज के उत्पादन में कमी करना संकट के नये खतरे को बुलाने के समान है। शरीर ढकने के लिए सूती वस्त्र, रेशमी, ऊनी और रेयन के वस्त्र मानव की परम आवश्यकता है।

रेयन उद्योग के संघ ने अपने पक्ष की पुष्टि में दो तालिकाएं भी दी हैं, जिनसे यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है कि रेयन उद्योग ने विदेशी मुद्रा की बहुत बचत की और भविष्य में भी उत्पादन को देखते हुए विदेशी मुद्रा का बहुत अधिक प्रयोग नहीं किया जायेगा। तालिकाएं संक्षेप से निम्न लिखित हैं :—

| | उत्पादन क्षमता | वास्तविक उत्पादन | विदेशी मुद्राकी बचत |
|---|---|---|---|
| | लाख पौंड में | लाख पौंड में | लाख रुपयों में |
| १९५४ | १२० | ६८.० | ४४.२ |
| १९५८ | — | ३०७.१ | १९९.६ |
| १९५९ | — | ४४८.५ | २९१.५ |
| १९६० | ६४० | ४८०.० | ३२०.० |

भावी विकास के लिए आगामी ५ वर्षों में ६६० लाख पौंड अधिक उत्पादन होगा और केवल ३४६.२ लाख रुपये विदेशी मुद्रा के व्यय होंगे।

( पृष्ठ १६७ का शेष )

का गला काटने के लिये परस्पर जो स्पर्धा हो रही है, उससे उससे सभी प्रतिस्पर्धी देशों को हानि ही हो रही है। चीन की बढ़ती हुई महत्वाकांक्षा भी एशियाई देशों को शंकित कर रही है और उनका परस्पर मिलना अधिक आवश्यक दीखने लगा है। इन सब कारणों से अब ऐसा वातावरण बनने की संभावनायें अधिक बढ़ गई है, जिनमें एशिया के विभिन्न देश परस्पर मिलकर आर्थिक क्षेत्र में किसी समझौते पर पहुंचने का प्रयत्न करें।

एक तरफ हम निर्यात बढ़ाने की चिन्ता कर रहे हैं दूसरी तरफ इस वर्ष के प्रथम तीन महीनों में हमारा वस्त्र-निर्यात कम हो रहा है। १९५९ में हमने ८१४६ लाख गज कपड़ा भेजा था, जबकि १९६० में केवल ६९४८.२ लाख गज कपड़ा भेजा। १९६१ के प्रथम तीन महीनों में भी निर्यात कम हुआ है। निर्यात में कमी का मुख्य कारण भारतीय वस्त्रों का मंहगा होना बताया जाता है। जापान, पुर्तगाल और स्पेन अपना सस्ता कपड़ा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भेजने लगे हैं। कुछ साम्यवादी देश भी भारत के मुकाबले में आ रहे हैं। नई मशीनरी के कारण इन देशों का कपड़ा अधिक सस्ता होने लगा है। इस समस्या पर गंभीरता से भारत को विचार करना होगा।

## आय के अनुसार रेयन की खपत

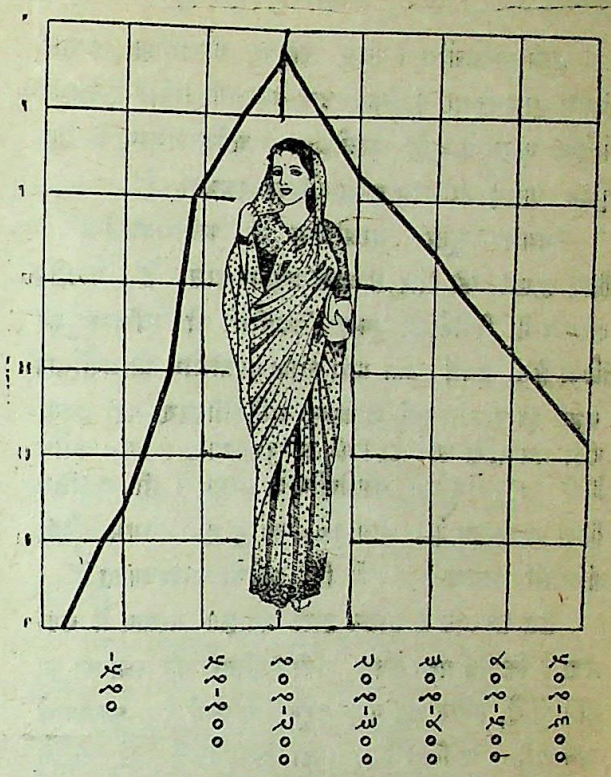






CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## वस्त्रोद्योग का अभीनवीकरण

सूती वस्त्रोद्योग के लिए राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम द्वारा नियत कार्यकारी दल ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि भारत के सूती वस्त्रोद्योग के अभिनवीकरण के हेतु १८० करोड़ की धन राशि को आवश्यकता है।

निगम सूती वस्त्रोद्योग के अभिनवीकरण के लिए शासन की ओर से ऋण प्रदान करता है। केन्द्रीय सरकार ने रिपोर्ट की मुख्य सिफारिशों को स्वीकार कर लिया है। इनमें कहा गया है कि वस्त्रोद्योग की मशीनरी बहुत ही पुरानी होने के कारण अभिनवीकरण पर इतनी बड़ी धन राशि खर्च करने की आवश्यकता है। १८० करोड़ में से ८० करोड़ रु० वस्त्रोद्योग के अन्दर से ही एकत्रित किया जा सकता है। शेष १०० करोड़ रु० निगम जैसी संस्थाओं से ऋण के रूप में दिये जानेकी आवश्यकता है।

इस सम्बन्ध में शासन द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव में कहा गया है कि यह प्रश्न केवल नयी मशीनरी की स्थापना का ही नहीं है, बल्कि यह एक बहुसूत्रीय कार्य है। आवश्यक धन राशि और विदेशी मुद्रा का प्रश्न तो है ही, किन्तु साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा जाना जरूरी है कि इससे जिन श्रमिकों की छटनी हो, उन्हें दूसरा काम दिया जा सके। वस्त्रोद्योग से सम्बन्धित सभी कारखानों का न्यूनतम स्तर एक जैसा किये जाने का अहम सवाल है। इसलिए शासन ने निर्णय किया है कि सर्वप्रथम अभिनवीकरण का न्युनतम स्तर सभी कारखानों का एक जैसा किया जाए।

## भारत में दूसरे जहाज कारखाने

तृतीय पंचवर्षीय योजना में भारत सरकार केन्द्रीय (केरल) में २० करोड़ रुपए की लागत से एक जहाज उद्योग कारखाना स्थापना पर विचार कर रही है परन्तु यह इस बात पर निर्भर करता है कि विदेशों से कैपीटल इक्विपमेंट (मूलभूत संयत्र सामग्री) आसानी से मिल सकेगी या नहीं।

हिन्दुस्तान शिपयार्ड का निश्चय ही विस्तार किया जायगा जिसके लिये तीसरी योजना के अन्तर्गत २.४४ करोड़ रुपए की राशि नियत की जा चुकी है। ८ करोड़ 'सबसिडी' के अन्तर्गत इस पर व्यय किया जा सकेगा।

( पृष्ठ १६२ काशेष )

नृत्यों के समय की वेश-भूषा, रूप श्रृंगार, (चेहरा, ओंठ आंखें, कपोल, नख आदि) घुंघुरु, पदसंचालन, भृकुटि और नेत्र संचालन; पाद विक्षेप आदि नृत्य सम्बन्धी सैकड़ों बातें विस्तार के साथ लिखी गई हैं। भिन्न-भिन्न घरानों की बन्दिशें देकर नृत्य के शिक्षार्थियों के लिये इस पुस्तक को बहुत ही उपयोगी बना दिया गया है। बीच-बीच में नृत्य की मुद्रा के और विभिन्न अंगों के संचालन के चित्र देने से यह पुस्तक शिक्षार्थियों के लिये अधिक सुबोध हो गई है।

भारत के प्रसिद्ध नर्तक पद्मश्री शम्भु महाराज ने इसकी भूमिका लिखते हुये लिखा है—आजकल के नौजवान कलाकारों, शिक्षकों, विद्यार्थियों और संगीत के बड़े-बड़े विद्यालयों के लिये यह ग्रन्थ एक ऐसी निधि बन गया है कि जिस पर उन्हें गर्व होना चाहिये।

पुस्तक प्राप्ति स्वीकार—(समालोचना अगले अंक में)

| पुस्तक का नाम | मूल्य | लेखक | प्रकाशक |
|---|---|---|---|
| १. ग्राम सुधार की एक योजना | .७५ | जो० का कुमारप्पा | अखिलभारत सर्व सेवा संघ |
| २. स्थायी समाज व्यवस्था | २.५० | ,, | ,, |
| ३. गांधी अर्थ विचार | १.०० | ,, | ,, |
| ४. गांव आन्दोलन क्यों | २.५० | ,, | ,, |

## वास्तविक क्रान्ति

१. विज्ञान ने छोटी सी अँधेरी झोंपड़ी को आकाश की सुदूर सीमाओं से जोड दिया है।

२. इसलिए, श्रमजीवी भाई अपने संकीर्ण घेरों से बाहर निकल कर राष्ट्र को ही अपना विशाल परिवार बनाने की तैयारी करें।

३. शिक्षित कहलाने वाले लोग कोटि-कोटि अशिक्षित श्रमजीवियों की बहबूदी के लिए काम करें। यही सच्चे जनवाद की मंजिल है।

४. अपनी आमदनी का विवेक पूर्वक विनियोग करें, इसी में कौटुम्बिक, पारिवारिक तथा सामुदायिक समृद्धि का मूल मंत्र निहित है।

५. गरीबों, बेकारों और अशिक्षितों को उभाड़ने के बजाय उनकी योजनाबद्ध निःस्वार्थ सेवा करना ही वास्तविक क्रान्ति की उपासना है।

—वी० वी० द्रविड़



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विदेशों से खाद्यान्नों का आयात

१९६० में गेहूँ का आयात अमरीका कैनाडा और आस्ट्रेलिया से हुआ तथा चावल का बरमा अमरीका और संयुक्त अरब गणराज्य से। अमरीका से गेहूँ और चावल दोनों पी० एल० ४८० के शीर्षक के अन्तर्गत मंगाये गये जिसमें अमरीकी फार्मों के अतिरिक्त उपज को आयात कर्ता देशों के सिक्के में भुगतान लेकर बेचने की व्यवस्था है। केनाडा और आस्ट्रेलिया से जो आयात हुआ, उसमें से कुछ तो कोलम्बो योजना के अधीन हुआ और कुछ सामान्य खरीदारी के अनुसार। बर्मा से चावल का आयात मुख्य रूप से २२ मई १९५६ के भारत-बर्मा पंचवर्षीय करार के अन्तर्गत हुआ। थोड़ा चावल सितम्बर १९५९ के समय समझौते के अन्तर्गत भी आया। संयुक्त अरब गणराज्य से जो आयात हुआ वह भारत और उस देश के मार्च १९६० के बराबर के अधीन हुआ।

(हजार टनों में)

| अनाज | १९५८ | १९५९ | १९६० |
|---|---|---|---|
| चावल | ३९० | २९० | ६८८ |
| गेहूँ | २६७४ | ३४,९७ | ४३१५ |
| और चीजें | १०९ | २० | ५२ |
| कुल | ३१७३ | ३८०७ | ५०५६ |

खाद्यान्नों में आयात के सम्बन्ध में १९६०-६१ में निम्नलिखित करार या व्यवस्थाएं किए गये।

गेहूँ

(१) अमरीकी सरकार के साथ पी० एल० ४८० के के शीर्षक १ के आधीन ४ मई, १९६० का करार जिससे अगले चार वर्षों में गेहूँ और चावल की खरीद में बूंजी लगाने के लिए १२७६० लाख डालर की सहायता की व्यवस्था है। इससे लगभग १६० लाख मीट्रिक टन गेहूँ और १० लाख मीट्रिक टन चावल आयेगा। इस करार के आधार पर ४० लाख मीट्रिक टन गेहूँ तथा ढाई लाख मीट्रिक टन चावल की खरीद के सिलसिले में ३१९० लाख डालर की रकम का निर्धारण किया जा चुका है। १९६१ में और धन राशि का निर्धारण किया जायेगा। १९६० के अन्त तक इस करार के अन्तर्गत लगभग ८ लाख टन गेहूं का आयात किया गया।

(२) कोलम्बो योजना के अधीन १९५९-६० के लिए सहायता कार्यक्रम, जिसके अन्तर्गत आस्ट्रेलिया से ५०० टन गेहूँ प्राप्त हुआ।

(३) कैनाडा के साथ ७ नवम्बर १९६० का संविदा और ८ दिसम्बर १९६० का संविदा, जिसमें कैनाडा से गेहूँ खरीदने के लिए एक कोलम्बो योजना कार्यक्रम के आधीन ७० लाख डालर की सहायता की व्यवस्था की गई है।

## चावल

(क) अमरीकी सरकार के साथ पी० एल० ४८० के अधीन २१ मार्च १९६० का करार जिसमें लगभग ६०,००० मीट्रिक टन चावल की खरीद की व्यवस्था की गई है। इसका मूल्य समुद्र परिवहन की लागत मिलाकर ७८ लाख डालर पड़ेगा।

(ख) संयुक्त अरब गणराज्य के साथ २१ मार्च १९६० का करार जिसमें १ लाख टन मिश्री चावल के आयत की व्यवस्था है। इसका भुगतान अपरिवर्तनीय भारतीय रुपयों में किया जायगा और इस रकम का उपयोग संयुक्त अरब गणराज्य भारत से माल खरीदने में करेगा। इस करार के अधीन १९६० में लगभग १०४००० टन चावल आयातहुआ

(ग) ४ मई १९६० के पी० एल० ४८० करार के अधीन १९६० के अन्त तक लगभग ५३००० टन चावल का आयात हुआ। इस करार में ४ साल में अमरीका से १० लाख मीट्रिक टन चावल का आयात करने की व्यवस्था है।

(घ) पंचवर्षीय भारत-बर्मा चावल करार के अधीन १९६० में ३.५ लाख टन चावल की सप्लाई का एक संविदा बरमा से कर लिया गया। दिसम्बर १९६० के अन्त तक इस संविदे के अधीन लगभग २.६ लाख टन चावल का आयात किया जा चुका था।

(ङ) बरमा के साथ २३ नवम्बर १९६० का करार के अनुसार १९६१ में भारत २ लाख टन चावल खरीदेगा।

---

प्रबुद्ध समाज की स्थापना है जो अधिकाधिक सम्पत्ति का उपार्जन कर सकेगा और इस अर्जित सम्पत्ति का इस प्रकार वितरण कर सकेगा जिससे सामाजिक विषमतायें दूर हो सकें।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राज्यों के बजट

## उत्तरप्रदेश

| | | |
|---|---|---|
| आय | ... | १४५.६३ करोड़ रुपये |
| व्यय | ... | १५४.१३ ,, ,, |
| घाटा | ... | ८.५ करोड़ रुपये |

राज्य के वित्त मंत्री ने अपने कर प्रस्तावों द्वारा ५.२१ करोड़ रुपया प्राप्त करने की व्यवस्था कर ली है और ३.२९ करोड़ रुपये के घाटे को यों ही अछूता छोड़ दिया है। बिक्री कर की दर में वृद्धि और कर-मुक्त वस्तुओं पर कर लगाया जायगा, जिनसे १.५ करोड़ रुपया वसूल होने का अनुमान है। देशी शराब पर शुल्क बढ़ाने से १ करोड़ रुपये की आय का अनुमान है। सिंचाई शुल्क की छूट को अब समाप्त कर दिया गया है। इससे २ करोड़ रुपये की आय का अनुमान है। इनके अलावा डीजल तेल पर कर लगाकर ५० लाख रुपया और चीनी मिलों द्वारा गन्ने की खरीद पर शुल्क वसूली से २१ लाख रुपया और प्राप्त हो जायगा।

## मसूर

| | |
|---|---|
| आय | ६९६०.४० लाख रुपये |
| व्यय | ७३९१.९२ ,, ,, |
| घाटा | ४.३१ करोड़ रुपये |

घाटे की आंशिक पूर्ति के लिये लगान पर अतिरिक्त कर (सरचार्ज) और कुछ विशेष उपभोक्ताओं के लिये बिजली कर में वृद्धि किये जाने का प्रस्ताव, है जिनसे १.३० करोड़ और ४० लाख रु० का अनुमान है।

## उत्कल

| | |
|---|---|
| आय | ४१.१० करोड़ रुपये |
| व्यय | ४५.२९ ,, ,, |
| घाटा | ४.१९ करोड़ रुपये |

केन्द्रीय वित्त मंत्री के कथन के अनुसार ३ करोड़ रुपये के अतिरिक्त कर लगाकर घाटे की पूर्ति की व्यवस्था की जायगी।

## हिमाचल प्रदेश

| | |
|---|---|
| आय | १२,८५,१०० रु० |
| व्यय | २६३,५२,१०० रु० |
| घाटा | २५०६७००० रु० |

इस घाटे की आंशिक पूर्ति कुछ नये कर लगाकर की जायगी। शेष राशि केन्द्र की सहायता से ही पूरी होगी।

# नये करों में ६॥ करोड़ की छूट

वित्त मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने प्रस्तावित नये करों में कुछ रियायतें घोषित की है। जिनसे करीब ४॥ करोड़ रु० राहत मिलेगी। उन्होंने मिट्टी के तेल, बिजली के कर्घे, मोटे कपड़े, सूती साड़ियों पर लगे शुल्कों में कमी की घोषणा की है और घटिया दर्जे के कहवे पर शुल्क घटाने का संकेत किया है।

मिट्टी के तेल के ऊपर लगने वाले शुल्क में ५० प्रतिशत की कमी होगी। इसका भी प्रबन्ध किया जा रहा है कि घटिया दर्जे का जितना मिट्टी का तेल गोदामों में है, उसे जल्दी छोड़ दिया जाए, ताकि वह देश में सब जगह उपलब्ध हो सके। घटिया दर्जे के मिट्टी के तेल पर कोई शुल्क नहीं लगा है।

तीन या चार बिजली के करघे वाले कारखानों में बनने वाले कपड़े पर पहले पहल उत्पादन शुल्क लगाया जा रहा रहा है। इस शुल्क में अब ५० प्रतिशत कमी कर दी गई है। इस प्रकार के छोटे कारखानों पर स्लैब या खंड के आधार पर शुल्क लगाया जाएगा, ताकि उन पर कर का बोझ बहुत अधिक न पड़े। एक से दस नम्बर तक के मोटे सूत पर शुल्क न लगाने को अनुरोध स्वीकार कर लिया गया है। इस सूत से हथकरघे पर मोटा कपड़ा और सूती दरियां बुनी जाती हैं।

ऊनी गलीचों में लगने वाले ऊन पर भी शुल्क लगाने का अनुरोध किया गया था। जो गलीचे बाहर निर्यात होंगे, उन पर लगे शुल्क को पूरा-पूरा वापस कर दिया जाएगा। पर गलीचों के ऊन पर शुल्क एकदम न लगाने की बात नहीं



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानी गई। जो बुनकर बिना बिजली के करघे या मजदूरों को रखे खुद अपने या अपने कुटुम्बियों की मेहनत से गलीचे बुनते हैं, उन पर शुल्क नहीं लगाया जाएगा। गलीचों के छोटे निर्माताओं को भी यह सुविधा दी जा रही है कि समय-समय पर वे अपना हिसाब दिखा दें तो उसी आधार पर उनसे शुल्क वसूल किया जाएगा और उन पर कोई उत्पादन शुल्क अधिकारी नहीं बैठाया जाएगा। जहां तक घटिया दर्जे की काफी का सम्बन्ध है यदि इस प्रकार की तरीका बताया जाए तो इसे शुल्क-वृद्धि से कुछ हद तक बरी करने पर सरकार विचार करेगी।

वित्त मंत्री ने कहा कि प्लास्टिक और कांच के व्यापारियों को यह बात बता दी गई है कि इन पर केवल एक बार शुरू में शुल्क लगेगा, प्लास्टिक के चूरे, या दाने पर और कांच की चादरों या नालियों पर शुल्क अदा कर देने पर इससे बने हुए पदार्थों पर फिर से शुल्क नहीं देना पड़ेगा। पर इस प्रकार के जो पदार्थ बाहर से आवेंगे, उन पर शुल्क लगेगा।

सुपारी दाम बढ़ने की बहुत शिकायत आई हैं। लेकिन शुल्क केवल बाहर से आयात होने वाली सुपारी पर लगाया जा रहा है और यदि आज तक तुरन्त दाम घटाने का प्रबन्ध नहीं करते तो सरकार केवल उन्हीं व्यापारियों को आयात के लाइसेंस देंगी, जो उसे ठीक दाम पर बेचने का जिम्मा लेंगे। ● ●

## लिपजिग (पूर्वी जर्मनी) व्यापार मेले में भारत

इस वर्ष लिपजिग का व्यापार मेला ५ मार्च से १४ मार्च तक चला। लिपजिग अपने औद्योगिक महत्व के लिये विश्व में प्रसिद्ध है। इस मेले में पूर्व-पश्चिम के ५० देशों ने भाग लिया।

३२ लाख वर्ग फुट क्षेत्र पर मेला लगा, इसमें देश-विदेश के हजारों मंडपों में उद्योग और व्यापार के महत्व की अनेक चीजें प्रदर्शित की गईं। भारत के निजी उद्योग-पतियों के अतिरिक्त भारत सरकार के उद्योग और वाणिज्य मंत्रालय का १००० वर्ग फुट के क्षेत्र में मंडप था, यह व्यापार मेला बहुत ही सुन्दर, आकर्षक, लाभकारी और सफल रहा। लगभग १६३ भारतीय व्यापारियों ने इसे मेले में भाग लिया।

मेले की अवधि में दीर्घकालीन व्यापारिक समझौतों के अतिरिक्त लिनोलियम, बिजली की मोटरें, चाय, मसाले कपड़ा और हैंडीक्राफ्ट्स आदि माल के आयात-निर्यात के कई और समझौते भी हुये। १४० लाख रुपये से भी अधिक माल के निर्यात का समझौता सम्पन्न हुआ।

भारतीय व्यापारियों तथा प्रदर्शिनी कर्ताओं ने यह आशा तथा इच्छा प्रकट की कि अगले मेले तक भारत व जर्मनी का व्यापार और अधिक बढ़ेगा और व्यापारिक सम्बन्ध दृढ़तर होंगे।

संयंत्रों के निर्माण और कई अन्य मशीनरी के निर्माण में निश्चय ही पूर्वी जर्मनी अपना विशिष्ट स्थान रखता है और वह दूसरे देशों को मशीनरी मुहैया करने तथा उन देशों में संयंत्र स्थापित करने में सक्षम और भारी इच्छुक है।

---

## अमृत कण

कविता से भूख-प्यास नहीं मिटती। उसके लिए तो अन्न चाहिए।

ग्रामीण भाई शहर वालों के माता पिता समान है। दूध, फल, तरकारी घी-मक्खन यह सब कुछ देहातों से शहरों को जाता है। देहात वालों की मेहनत पर ही शहर वालों का निर्वाह होता रहा है।

अकेली सरकार क्या-क्या करेगी। ताली तो दो हाथों से बजती है। सरकार और जनता दो हाथ हैं। दोनों को मिलकर काम करना चाहिए। लेकिन जनता का हाथ ऊपर तथा सरकार का हाथ नीचे रहना चाहिए।

किसी बहुत अमीर आदमी को देखकर भी मुझे दुख होता है।

— विनोबा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं

## तीसरी पंचवर्षीय योजना के लक्ष्य

योजना आयोग ने एक विज्ञप्ति निकाल कर तीसरी योजना का लक्ष्य १०४ अरब कर दिया। यह लक्ष्य पहले १०२ अरब था। योजना के लक्ष्यों पर अंतिम रूप से ३० और ३१ मई को विचार किया जायगा। अब निम्नलिखित रूप से लक्ष्यों की व्यवस्था की जा रही है।

( करोंड़ रुपयों में )

| मद | मूल योजना | संशोधित |
|---|---|---|
| कृषि व० सा० वि० | २०२५ | १०७२ |
| सिंचाई योजना | ६५० | ६५६ |
| विद्युत | ९२५ | १०१९ |
| ग्राम लघु उद्योग | २५० | २५६ |
| उद्योग व खनिज | १५०० | १५२६ |
| यातायात | १४५० | १४७५ |
| समाज सेवा | १२५० | १२९६ |
| अन्य व्यय | २०० | २०० |

## प्रभावशाली मजदूर संघ

समय समय पर यह विवाद उपस्थित होता रहता है कि किस श्रम-संगठन का देश पर कितना प्रभाव है। इण्टक कांग्रेसी विचारों के साथ मेल खाती है, एटक कम्युनिस्ट पार्टी का मजदूर संगठन है। हिन्द मजदूर सभा प्रजा-सोशलिस्ट पार्टी का संगठन है और यू० टी० यू० सी०। सरकार ने इसकी जांच की थी। इसके अनुसार इण्टक या राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस की सदस्य संख्या मार्च १९६० में १०५०७७७ रही, जबकि अन्य सभी विरोधी यूनियनों की संयुक्त संख्या केवल ९०३३०२ ही है। इस प्रकार देश के मजदूरों की प्रतिनिधि संख्या राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस ही हैं। आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस ( इण्टक ) की सदस्य संख्या ५०८९६२, हिन्द मजदूर सभा [एच० एम० एस०] २८४३०६ और यू० टी० यू० सी० की सदस्य संख्या ११००३४ है। १९६१ में इंटक की सदस्य संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई और मार्च १९६१ तक यह १६ लाख से भी ऊपर पहुँच गयी है।

## लौह उद्योग के लिए वेतन मण्डल

भारत सरकार ने लौह उद्योग के लिए एक वेतन मण्डल नियत करने का निश्चय किया है। यह मण्डल सरकारी या गैर सरकारी दोनों उद्योगों को कर्मचारियों के लिए वेतन क्रम निर्धारित करेगा।

मिलों के अचानक बन्द हो जाने की स्थिति में जो मजदूर बेकार हो जाते हैं और जिनके बकाया वेतन भी मिलें नहीं दे सकतीं, उनकी सहायता के लिए सरकार एक निधि स्थापित करेगी।

—लंका और युगैण्डा अब भारत के मुकाबले में अपनी चाय की निर्यात की वृद्धि के लिए एक नई किस्म की 'सौल्यूबिल टी०' के उत्पादन की ओर अग्रसर हो रहे हैं, इस किस्म की चाय बहुत उत्तम होगी। और चाय के बाजार में इसकी स्थिति बढ़ जायगी। लंका इस ओर कई सालों से प्रयत्नशील है। १९६५ तक युगैंडा का विचार ७००० एकड़ भूमि पर चाय उगाने का है। अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा चाय की खपत के मुख्य देश हैं।

—भारत सरकार के खाद्य मंत्रालय ने वर्षों पूर्व वनस्पति घी में रंग डालने के प्रश्न पर सुझाव देने के लिए वैज्ञानिकों की समिति नियुक्त की थी। किन्तु अब तक भी भारतीय वैज्ञानिकों की प्रतिभा किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाई। कुछ वैज्ञानिक रतनजोत के रंग को इसके लिए उपयुक्त समझते हैं, तो दूसरे इसे अनुपयुक्त ( Nontoxi ) अब उक्त समिति ने केन्द्रीय परीक्षण संस्था को और अधिक परीक्षण करने की सलाह दी। हल्दी का रंग निर्दोष हो सकता है, किन्तु उसका रंग गाय के दूध के घी से मिलता जुलता है। इसलिए व्यापारी वनस्पति घी को ही गाय के घी के नाम से पुनः बेचने लगेंगे यह भय है।

—पश्चिमी बंगाल में जूट का उत्पादन १९५८ की अपेक्षा १९६० में गिर गया। दोनों वर्षों में क्रमशः १९,८९,६०० तथा २१,७९६०० गांठ जूट पैदा हुआ। बंगाल सरकार की नीति यह है कि जूट का उत्पादन क्षेत्र न बढ़ा कर वर्तमान क्षेत्र में ही उत्पादन बढ़ाने के तरीकों पर विचार किया जाय।

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अहिंसक समाज रचना की मासिक

# खादी पत्रिका

- खादी ग्रामोद्योग तथा सर्वोदय विचार पर विद्वतापूर्ण रचनाएं ।
- खादी ग्रामोद्योग आन्दोलन की देशव्यापी जानकारी ।
- कविता, लघुकथा, मोल के पत्थर, साहित्य-समीक्षा, संस्था परिचय ।
- सांख्यिकी पृष्ठ आदि स्थायी स्तम्भ ।
- आकर्षक मुखपृष्ठ : हाथ कागज पर छपाई ।

संपादक

ध्वजाप्रसाद साहू

जवाहिरलाल जैन

वार्षिक मूल्य ३)रु०, एक प्रति पच्चीस नये पैसे

राजस्थान खादी संघ पो० खादी बाग (जयपुर)



# 'भारत व्यापार पत्रिका' की विशेषताएँ

पृष्ठ सं. १०० वार्षिक चंदा ८) साधारण अंक ७५न. पै.

- उद्योगपतियों एवं व्यापारियों के लिए उपयोगी सामग्री
- व्यापारिक भविष्य वाणी
- एक विज्ञापन मुफ्त छापने की योजना
- अर्थशास्त्र के छात्रों के लिए अनेक जानकारी
- मनोरंजन के लिए आकर्षक कहानी, गंगा की लहरें स्तम्भ में व्यंग विनोद तथा सामयिक कार्टून
- सम्पादक की डाक में आपके प्रश्नोत्तर
- इसके अलावा अनेकों स्थाई स्तम्भ

अगर आपने अब तक पत्रिका नहीं देखी है तो आज ही इस विज्ञापन की कटिंग के साथ २५ नये पैसे का पोस्टेज भेजकर नमूना मंगाइये । विज्ञापन दर तथा जानकारी के लिए लिखें—

व्यवस्थापक, भारत व्यापार पत्रिका (मासिक)

राजा दरवाजा, वाराणसी

तार–केनाको पो० बॉ० नं० ४९ फोन–३३४३



# ग्रा म रा ज

(मास में तीन बार प्रकाशित)

सम्पादक :— श्रीगोकुलभाई भट्ट

"ग्रामराज बहुत ही शानदार और बहुत ही सुन्दर पत्र निकल रहा है । सब तरह की जानकारी इसमें रहती है । राजस्थान के हर शिक्षित भाई बहन के हाथ में यह पत्रिका होनी चाहिये

—विनोबा

वार्षिक चन्दा तीन रुपया

कार्यालय का पता :—ग्रामराज, किशोर निवास, त्रिपोलिया, जयपुर



सबसे सस्ता सचित्र हिन्दी मासिक

# जागृति

जिसे राष्ट्र भाषा के सभी प्रमुख लेखकों, कवियों और कहानीकारों का सहयोग प्राप्त है ।

उत्प्रेरक कविताएं, ज्ञानवर्धक लेख सांस्कृतिक निबन्ध, रोचक कहानियां, बाल संसार, साहित्य आगे बढ़ता है आदि स्तंभ

तिरंगा आवरण, अनेकों इकरंगे चित्र

४८ से ५६ पृष्ठ की सम्पूर्ण छपाई आर्ट पेपर पर

इस पर भी मूल्य केवल २५ नए पैसे

एजेन्टों को ५ से १०० प्रतियों पर २५ प्रतिशत और इससे ज्यादा पर ३३$\frac{1}{3}$ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है । डाक खर्च प्रकाशकों के जिम्मे । ऐजेंट नमूने की प्रति के लिए आज ही लिखें :

व्यवस्थापक, 'जागृति' हिन्दी लोक सम्पर्क विभाग, पंजाब, चंडीगढ़


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा के अनूठे उपहार : ११ विशेषांक

'सम्पदा' का प्रत्येक अंक ज्ञानवर्धक होता है, पर विशेषांक तो अपने विषय के विश्व-कोष ही होते हैं। प्रोफेसर श्री ओमप्रकाश तोषनीवाल, एम० कॉम० कहते हैं—'सम्पदा' के विशेषांक तो हमारे लिए गीता व बाइबिल के समान हैं।'

## १-योजना अंक

( प्रथम योजना सम्बन्धी अपूर्व सामग्री )

एक प्रशंसनीय प्रयत्न। यह अंक पंचवर्षीय योजना को समझने की कुंजी है।

मूल्य : १.०० —जीवन साहित्य

## २-भूमि-सुधार अंक

( भूमि समस्याओं का अद्भुत विवेचन )

इस विषय में अपने ढंग का अद्वितीय प्रकाशन है।

मूल्य : १.०० (अप्राप्य) —प्रताप

## ३-वस्त्र-उद्योग अंक

( भारत के प्रमुख उद्योग का परिचय और समस्याएं )

इस अंक के पीछे काफी श्रम किया गया है। सम्पादक को बधाई।

मूल्य : १.२५ —श्री घनश्यामदास बिड़ला

## ४-चम्बल अंक

( चम्बल योजना का विस्तृत परिचय )

अंक को सभी दृष्टि से रोचक बनाया गया है।

मूल्य : ००.७५ (अप्राप्य) —श्री मिश्रीलाल गंगवाल

## ५-मजदूर अंक

(मजदूर समस्या के विविध पहलुओं का विवेचन )

लेख बहुत रोचक व उपयोगी हैं। ···मानव की नैतिकता पर भी जोर दिया गया है जो देश की संस्कृति व परम्पराओं के अनुकूल है।

मूल्य : १.५० —श्री खंडूभाई देसाई

## ६-उद्योग अंक

( प्रमुख उद्योगों के विकास का व्यापक परिचय)

भारतीय उद्योग और व्यवसाय की मूल समस्याओं पर गम्भीर तथा उपयोगी लेखों का अच्छा संग्रह है।

मूल्य : १.२५ —अजन्ता

## ७-राष्ट्रीय-विकास अंक

( द्वितीय पंचवर्षीय योजना का अध्ययन )

ज्ञानवर्धन के लिए ऐसी सामग्री प्रस्तुत करने वाले अंक का सर्वत्र स्वागत होगा।

मूल्य : १.२५ —श्री मोहनलाल सुखाड़िया

## ८-बैंक अंक

( भारतीय बैंकों की समस्याओं का निरूपण )

Here is one more 'Sampada' Special worth treasuring. (अप्राप्य)

मूल्य : १.२५ —Organiser

## ९-समाजवाद अंक

( समाजवाद के विभिन्न पहलुओं पर विचार )

सम्पदा का समाजवाद अंक मिला। यह काफी अच्छा और पठनीय है।

मूल्य : १.५० —श्री श्रीमन्नारायण

## १०-राष्ट्र-प्रगति अंक

( द्वितीय योजनाकाल की समस्याओं का विवेचन )

यह अति लाभदायक तथा उपयोगी है। लिखने का ढंग बहुत सुन्दर और रोचक है।

मूल्य : १.५० —श्री अमरनाथ विद्यालंकार

## ११-सहकारी कृषि अंक

देश के अत्यन्त विवादग्रस्त प्रश्न पर विविध समन्वयात्मक दृष्टिकोण। —मू० १.५०

रजिस्ट्री से सब प्राप्य अंक मंगाने के लिए रु० १०.५० भेजिये।

**सम्पदा • २८-११ शक्तिनगर • दिल्ली-६**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आर्थिक-राजनैतिक अनुसंधान विभाग का पाक्षिक पत्र

# आर्थिक समीक्षा

प्रधान सम्पादक : श्री सादिकअली

सम्पादक : श्री सुनील गुह

- हिन्दी में अनूठा प्रयास
- आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख
- आर्थिक सूचनाओं से ओतप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक, पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक।

वार्षिक मूल्य : ५) रु० एक प्रति २२ नये पैसे

लिखें—व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी,
७, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली



# भारत की औद्योगिक नीति

भारत के आर्थिक विकास और औद्योगिक उन्नति का सर्वाधिक महत्व है। पर भारत सरकार की उद्योग नीति क्या है—सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के लिए किस तरह दोनों का विभाजन किया गया है, आदि बातें समझने के लिए प्रो० रामनरेशलाल द्वारा लिखित—

**भारत की औद्योगिक नीति**

को पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। इसमें भारत के औद्योगिक विकास के इतिहास का भी योग्य लेखक ने विद्यार्थियों की दृष्टि से उपयोगी और सुन्दर परिचय दिया है।

६२ न. पै. के टिकट भेजने पर पुस्तक अण्डर पोस्टल सर्टिफिकेट भेजी जायगी।

मैनेजर—अशोक प्रकाशन मन्दिर,
२८/११ शक्ति नगर, दिल्ली-६



# "राष्ट्र-भारती"

सम्पादक—मोहनलाल भट्ट, हृषीकेश शर्मा

वार्षिक चन्दा मनीआर्डर से ६) रु;
नमूने की प्रति ६२ नये पैसे

इसमें आपको लब्धप्रतिष्ठ-विद्वान साहित्यकारों के ज्ञान-पोषक और मनोरंजक अच्छे-अच्छे लेख, कविताएं, कहानियां एकांकी, रेखाचित्र, शब्दचित्र आदि रचनायें पढ़ने को मिलेंगी।

इसमें संस्कृत, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं की तथा अंग्रेजी, रशियन आदि विदेशी भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं के सुन्दर हिन्दी अनुवाद भी रहते हैं।

आज ही मनीआर्डर द्वारा ६) भेजकर ग्राहक बन जाइये। रियायत—स्कूल-कालेजों, सार्वजनिक पुस्तकालयों तथा वाचनालयों को केवल ५) वार्षिक चन्दे में मिलेगी।

पत्रव्यवहार का पता—

व्यवस्थापक—"राष्ट्रभारती"
हिन्दी नगर, वर्धा
(राष्ट्रभाषा प्रचार समिति)



# उद्योग-व्यापार पत्रिका

देश में उद्योग और व्यापार को आगे बढ़ाने के लिये क्या हो रहा है और आप इससे किस तरह फायदा उठा सकते हैं? देश में क्या-क्या चीजें और कितने परिमाण में कहाँ-कहाँ बन रही हैं और आप क्या बना कर अच्छी कमाई कर सकते हैं? तरह-तरह के व्यापार की देश-विदेश में क्या दशा है? पंच-वर्षीय योजना से हमारी क्या उन्नति हो रही है? ये सभी प्रश्न ऐसे हैं, जिनके उत्तर आपको अवश्य जानने चाहिएँ, और इन सबकी जानकारी पाने का श्रेष्ठ साधन है—उद्योग व्यापार पत्रिका। इसलिये आप ६ रु० भेजकर साल भर के लिये आज ही ग्राहक बन जाइये। नमूना पत्र लिखकर मंगाइये।

एजेन्टों को भरपूर कमीशन।

पत्रिका विज्ञापन देने का अच्छा साधन है।

वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


संचालक पंचायतराज विभाग उ० प्र० की

विज्ञप्ति संख्या ४।५५८० : २७।३३।५३, दिनांक १५ द्वारा

पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत

# सुन्दर पुस्तकें

| | | रु० | आ० |
|---|---|---|---|
| वेद सार | प्रो० विश्वबन्धु | १ | ८ |
| प्रभु का प्यारा कौन ? (२) भाग | | | |
| सच्चा सन्त | | | ३ |
| सिद्ध साधक कृष्ण | | | ३ |
| जीते जी ही मोक्ष | | | ३ |
| आदर्श कर्मयोग | | | ३ |
| विश्व-शान्ति के पथ पर | | | १ |
| भारतीय संस्कृति | प्रो० चारुदेव | | ३ |
| बच्चों की देखभाल | प्रिंसिपल बहादुरमल | १ | १२ |
| हमारे बच्चे | श्री सन्तराम बी. ए. | ३ | १३ |
| हमारा समाज | | ६ | |
| व्यावहारिक ज्ञान | | २ | १२ |
| फलाहार | | १ | ४ |
| रस-धारा | | ० | १४ |
| देश-देशान्तर की कहानियां | | १ | |
| नये युग की कहानियां | | १ | १२ |
| गल्प मंजुल | डा० रघुबरदयाल | १ | |
| विशालभारत का इतिहास | प्रो० वेदव्यास | ३ | ८ |

१० प्रतिशत कमीशन और ५० रु० से ऊपर के आदेशों पर १५ प्रतिशत कमीशग।

विश्वेश्वरानन्द पुस्तक भंडार
साधु आश्रम, होशियारपुर, पंजाब



# सुभाषित रत्नमाला

## दूसरा संस्करण

सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

७ वर्ष पूर्व इस पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ था और हाथों-हाथ बिक गया था। कई वर्षों से पुस्तक अप्राप्य थी और इसकी माँग निरंतर बढ़ रही थी! अब परिवर्धित संस्करण आकर्षक रूप-सज्जा में प्रकाशित हुआ है इस संग्रह में—

- वैदिक एवं संस्कृत साहित्य के अगाध भण्डार से चुने गये ऐसे सरल-सुन्दर श्लोक और मंत्र, जिन्हें छोटे बच्चे भी सुविधापूर्वक कण्ठस्थ कर सकते हैं।
- श्लोकों और मन्त्रों का सरल-सुबोध हिन्दी में अर्थ।
- पुस्तक के अन्त में अर्थ-सहित कुछ ऐसी सूक्तियाँ, जिनके उपयोग विद्यार्थी अपने निबन्धों में कर सकें।
- आपके बच्चों के स्वस्थ मानसिक विकास और उनमें नैतिक चेतना जगाने के लिए अनिवार्य।
- उपहार और पुरस्कार में देने के लिए बहुत उपयुक्त।

मूल्य एक प्रति १.१५ रु०। 'सम्पदा' के ग्राहकों से १ रु. प्राप्त होने पर 'बुक पोस्ड अन्डर पोस्टेल सर्टिफिकेट' द्वारा भेजी जाएगी।

अशोक प्रकाशन मन्दिर
२८/११, शक्तिनगर,
दिल्ली-६


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# डालमिया

काश्म Stoneware एवं मृच्छिल्प Porcelain निर्मितियाँ (Products)

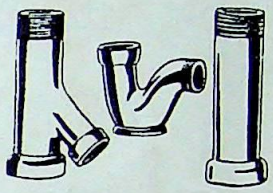

काश्म-नाल Stoneware Pipes
अधोभूमि जलोत्सारण के लिए

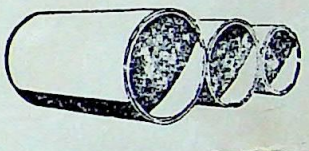

वज्रचूर्ण-अयस्संघा-नाल
( R. C. C. Spun Pipes )
पुलियाओं, जल-प्रदाय
और जलोत्सारण के लिए

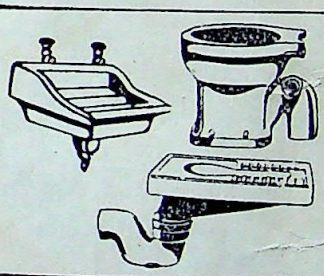

मृत्सा ( Porcelain )
आरोग्य पात्र ( Sanitary Wares )
भारतीय और यूरोपीय शौच-कुण्ड
( Water Closets )
धावन पात्री ( Wash Basins )
मूत्र-कुण्ड ( Urinals ) इत्यादि

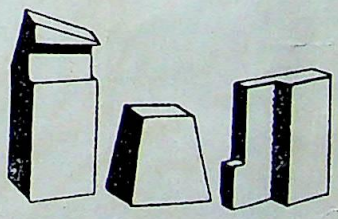

ऊष्मसह ( Refractories )
समस्त औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए

पोर्टलैण्ड सिमेंट
सामान्य निर्माण के लिये

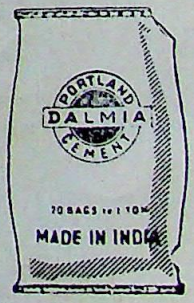


डालमिया सिमेंट ( भारत ) लिमिटेड
डालमियापुरम् ( तिरुचिरापल्ली )


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैचवैल इलैक्ट्रिकल्स (इंडिया) लिमिटेड ४/११ आसफअली रोड, नई दिल्ली • फैक्टरी : पूना

भारत के लिए सोल ऐजेन्ट :

मेसर्स बजाज इलैक्ट्रीकल्स लिमिटेड

(भूतपूर्व : रेडियो लैम्प वर्क्स लिमिटेड)

बम्बई • नई दिल्ली • कलकत्ता • मद्रास • कानपुर • इन्दौर • वर्धा • गौहाटी • पटना


सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीजिज ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित
अशोक प्रकाशन मन्दिर, २८/११, शक्तिनगर, दिल्ली-६ से प्रकाशित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा

अर्थशास्त्र की नवीनतम गतिविधियों की
मासिक पत्रिका
मई १९६१

लोक प्रकाशन मन्दिर शक्ति नगर दिल्ली

मूल्य
७५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# सेंचुरी मिल्स, बम्बई की

## प्रसिद्ध फैशन फैब्रिक्स

● असली आरगन्डी ● लेक्सब्यूटी मलमल मोती वायल और फुल वायल

● परमसुख धोती ● एम्बास्ड प्रिंट्स सादी और धारीदार पॉप्लीन

नित्य नवीन डिजाइनों में छपी हुई चमकदार छींट, लट्ठा, ड्रिल्स, चादरें, तौलिये, काटन-वेस्ट कम्बल आदि-आदि

## नवीन आकर्षण

प्रिश्रङ्क—सेचुराइज्ड शर्टिंग पाप्लीन और ड्रेस मैटीरियल

निर्माता :

**दी सेंचुरी स्पिनिंग एण्ड मैन्युफैक्चरिंग कं० लि०**

इंडस्ट्री हाउस, १५९ चर्चगेट रिक्लेमेशन बम्बई—१

मैनेजिंग एजेंट्स : बिरला ग्वालियर प्रा० लि०



# व्यक्तिगत सेवा

दीर्घकाल के अपने अनुभवों से प्राप्त विशेष ज्ञान के बल पर पंजाब नैशनल बैंक आज आपकी सहायता करने के लिये ऐसी अपूर्व स्थिति में है कि व्यक्तिगत रूप से आपकी सेवा कर सके।

प्रत्येक प्रकार का बैंकिंग व्यापार किया जाता है।

**दि पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड**

स्थापित : १८९५

प्रधान कार्यालय : नई दिल्ली


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा

## आप 'सम्पदा' जरूर पढ़िये !

## क्योंकि :—

★ आप अर्थशास्त्र के विद्यार्थी हैं और आप संसार तथा विशेष कर भारत की आर्थिक समस्याओं की जानकारी चाहते हैं।

★ आप विधान सभा के सदस्य हैं और आपको भारत तथा राज्यों के सामने आने वाली समस्याओं की जानकारी प्राप्त करके उन पर विधानसभा में अपने विचार प्रकट करना और मत देना होता है।

★ आप प्रतिष्ठित सार्वजनिक कार्यकर्त्ता हैं और आपको प्रायः जनसभाओं में आर्थिक समस्याओं पर विचार प्रकट करके अपनी योग्यता प्रकट करते हुए जनता का मार्ग-प्रदर्शन करना होता है।

★ आप व्यापारी तथा उद्योगपति हैं और आपके लिए देश के उद्योग या व्यापार की प्रामाणिक जानकारी आवश्यक है।

★ आप हिन्दी के पत्रकार हैं और आपको लेख लिखने के लिए आर्थिक समस्याओं पर एक अच्छी 'रेफरेंस' पुस्तक चाहिए।

★ आप देश की बहुमुखी विकास योजनाओं में रुचि रखते हैं, इसलिए आपको विकास की विविध प्रवृत्तियों की जानकारी मिलनी चाहिए।

★ आप सामुदायिक विकास योजनाओं में सक्रिय सहयोग देते हैं और आपको सरल भाषा में आर्थिक प्रगति व समस्याओं का परिचय चाहिए।

हमें विश्वास है कि :—

## 'सम्पदा' आप सब की जरूरतों को पूरा करती है

और

## 'सम्पदा' का प्रत्येक पृष्ठ आपका ज्ञानवर्धन करेगा

यदि विश्वास न हो तो :—

सम्पदा के कोई चार अङ्क मंगाकर देखिये ! ऐसी सामग्री आपको हिन्दी में अन्यत्र नहीं मिलेगी। अंग्रेजी पत्र भी आपसे पांच गुना मूल्य लेकर यह सब सामग्री देंगे।

आज ही ग्राहक बनिये और पास के सार्वजनिक पुस्तकालय से अनुरोध कीजिये कि वह ८) भेजकर सम्पदा का ग्राहक बन जावे। पिछले वर्षों की थोड़ी-सी फाइलें बची हैं। कुछ समय बाद आपको वे किसी भी मूल्य पर न मिलेंगी।

## सम्पदा के बिना आपका पुस्तकालय अधूरा है !



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| | |
|---|---|
| आधुनिक अर्थनीति का गंभीर भविष्य | २१३ |
| सम्पादकीय टिप्पणियाँ | २१४ |
| जनसंख्या का भारी विस्फोट | २१८ |
| विदेशी मुद्रा की समस्या | २१९ |
| तीन मुख्य समस्यायें | २२२ |
| हॉंगकॉंग | २२३ |
| राष्ट्रीय आय कितनी बढ़ी ? | २२५ |
| वस्त्र उद्योग की समस्यायें | २२७ |
| भारत की सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ | २२९ |
| सांख्यिकी | २३२ |
| बैंकों का आशामय भविष्य | २३३ |
| इंडिया एड क्लब | २३४ |
| बढ़ता हुआ माल यातायात | २३५ |
| बिजली की गाड़ियाँ | २३८ |
| नया साहित्य | २३९ |
| तृतीय योजना में श्रम नीति | २४१ |
| हथकर्घे के वस्त्र की निर्यात समस्या | २४३ |
| गो सेवा का आर्थिक और नैतिक मूल्य | २४४ |
| मानवीय मूल्य | २४५ |
| हमारे उद्योग | २४६ |
| सामुदायिक विकास | २४८ |
| अर्थ-वृत्त-चयन | २४९ |
| अधिकतम सम्पत्ति वाली ५० कम्पनियां | २५१ |
| उद्योगीकरण में सोवियत सहायता | २५२ |
| मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएँ | २५३ |


• • •

सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार
सहायक सम्पादक : देवीप्रसाद नौटियाल


## जुलाई के प्रथम सप्ताह तक

**तीसरी पंचवर्षीय योजना प्रकाशित हो जायगी और सम्पदा के प्रतिभाशाली पाठक**

## तीसरी योजना विशेषांक

की उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगेंगे, हम उनकी उत्सुकता और प्रतीक्षा को जानते हैं, इसलिए अगस्त १९६१ में

## तृतीय योजना विशेषांक प्रकाशित होगा

इसमें तीसरी योजना के विभिन्न अङ्गों का प्रामाणिक परिचय दिया जायगा। उनकी समीक्षा की जायगी और विभिन्न अधिकारी विद्वानों के विद्वतापूर्ण लेख प्रकाशित किये जायेंगे। उनके अतिरिक्त उसमें होंगे, बीसियों ज्ञानवर्धक चित्र, ग्राफ और चार्ट आदि।

यह अङ्क सम्पदा की स्वस्थ विशेषांक परम्परा का १२वां रत्न होगा।

**विस्तृत विवरण की प्रतीक्षा कीजिए।**

—मैनेजर सम्पदा
३६ शक्तिनगर, दिल्ली--६


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादा

वर्ष : १०
अंक : ५
मई १९६१

# आधुनिक अर्थनीति का गम्भीर भविष्य

नई जनगणना के बाद जब यह मालूम हुआ कि देश की जनसंख्या कल्पना से भी अधिक तेजी के साथ बढ़ रही है, तब से देश में बढ़ती हुई बेकारी पर और भी अधिक चिन्ता प्रकट की जाने लगी है। वस्तुतः बेकारी की समस्या अत्यन्त भीषण है। अरबों रुपये खर्च करने के बाद भी योजना आयोग इस बात का वचन देने में अपने को असमर्थ पाता है कि वह सबको रोजगार दे सकेगा।

लेकिन बेकारी की समस्या भारत जैसे अविकसित देश में ही नहीं है। अमेरिका जैसे विकसित देश में भी बेकारी की समस्या विकट रूप से विद्यमान है। श्री मैथ्यू जे० कस्ट नामक विद्वान ने एक सूचनापूर्ण लेख में अमेरिका की बेकारी की समस्या पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला है। पाठकों की जानकारी के लिये हम उसका आशय यहाँ दे रहे हैं, ताकि पाठकों को मालूम हो कि बेकारी की समस्या के कितने रूप हैं और क्या क्या कारण हैं।

भारत में बेकारी की समस्या इसलिये है कि यहाँ उद्योगों का विकास बहुत कम हुआ है और अमेरिका में बेकारी इसलिये है कि वहाँ औद्योगिक मशीनरी और उद्योगों का विकास चरम सीमा तक पहुंच गया है। वहां बेकारी की संख्या ७ प्रतिशत है और नये राष्ट्रपति श्री केनेडी अपनी नई योजना के द्वारा इसे कम करके ४ प्रतिशत तक करना चाहते हैं। इस स्तर तक पहुंचने के लिये भी वहाँ नई नौकरी के लिये ७० लाख स्थान तलाश करने पड़ेंगे और इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये ७ अरब डालर खर्च करने पड़ेंगे।

करीब दो सदी पूर्व सर विलियम पैटी ने यह भविष्य-वाणी की थी कि उद्योगीकरण की प्रवृत्ति के साथ-साथ जनता का प्रवाह कृषि और ग्रामोद्योग से मुड़कर उद्योगों, शहरों और सरकारी नौकरियों की ओर बहने लगेगा। उसकी यह मान्यता सब उद्योगप्रधान देशों में सत्य सिद्ध हो रही है। एक सदी पूर्व अमेरिका में ८५ प्रतिशत जनता कृषि पर निर्भर करती थी, आज केवल ११ प्रतिशत जनता कृषि से अपना जीवन निर्वाह करती है। यह भी अनुमान लगाया गया है कि १८ करोड़ अमेरिकनों के लिये पर्याप्त अनाज को केवल ४ प्रतिशत व्यक्ति ही पूर्ण कर सकते हैं, यह तभी संभव है, जब सूरतगढ़ जैसे हजार-हजार या उससे अधिक एकड़ों के फार्म, जिन पर उन्नत यन्त्रों से कृषि होती हो, बनाये जायँ। यही स्थिति अब उद्योगों में भी आ रही है। जिस उद्योग में पहले १०० आदमी लगते थे, अब उसी में 'रेशनलाइजेशन,' 'आटोमेशन' तथा नई वैज्ञानिक पद्धतियों द्वारा १० आदमी उतना या उससे अधिक उत्पादन कर सकते हैं। परिणाम यह हो रहा है कि न कृषि में और न उद्योग में लोगों को रोजगार मिल रहा है। अब अधिकतर रोजगार नौकरियों में ही मिलने लगा है।

१९५६ में अमेरिकन अर्थ-व्यवस्था ने एक क्रांतिकारी मोड़ लिया था। उस समय कृषि, खनिज, निर्माण कार्य आदि में ५० प्रतिशत व्यक्ति लगे हुये थे। किन्तु अब कृषि और उद्योग में रोजगार पहले से कम हो गया है। १९४७ में उक्त कार्यों में २,६४,७१,००० व्यक्तियों को रोजगार मिला हुआ था, जबकि १९६० में यह संख्या गिरकर २,५४,६३०,०० रह गई। दूसरी तरफ नौकरी करने वालों



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की संख्या २,६८,२७,००० से बढ़कर ३,५६,३७,००० हो गई। इसका मुख्य कारण मशीनीकरण की तीव्र गति है। कोयले के खनिकों की संख्या १९२० में ७ लाख थी, अब वह संख्या केवल २ लाख हो गई है। इसी तरह रेलों पर काम करने वाले लोगों की संख्या २० लाख से गिरकर ८ लाख हो गई है। १९५० में ५ लाख ४० हजार श्रमिकों ने जितना इस्पात उत्पन्न किया था, १९६० में ४,६०,००० श्रमिकों ने उससे भी अधिक इस्पात का उत्पादन किया। बड़े-बड़े विद्युत् यन्त्र एक बटन दबाते ही सब काम स्वयं करने लगते हैं—रोटियाँ पकाते हैं, अंडे सेकते है, इस्पात को लपेटने लगते है, मिट्टी के तेल का संशोधन करने लगते हैं और बड़े-बड़े कारखानों को चलाने लगते हैं, यहाँ तक कि ३५ हजार मील लम्बी रेलवे लाइन को एक केन्द्र से ही संचालित किया जाने लगा है। इसका परिणाम यह हुआ है कि बेरोजगारी इन सब में बढ़ती जा रही है।

प्रोफेसर हालविन हैनसेन (हार्वर्ड यूनीवर्सिटी) ने यह बताया है कि वैज्ञानिक उन्नति के कारण प्रतिवर्ष उत्पादन में कमी लाये बिना १२॥ लाख व्यक्तियों को अलग किया जा सकता है और अमेरिका में प्रतिवर्ष इतनी ही जन-संख्या बढ़ती है। इसका अर्थ यह है कि वहां प्रतिवर्ष २५ लाख बेकारों के बढ़ने की सम्भावना है। यही कारण है कि अमेरिका के अनेक अर्थशास्त्री श्री केनेडी की बेकारी निवारण की योजना को अव्यावहारिक बता रहे हैं। इसलिये अनेक विचारक वहां सरकारी और गैरसरकारी क्षेत्रों में मिलने वाली नौकरियों की संख्या बढ़ाने पर जोर दे रहे हैं। उनका कहना है कि शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्राम सुधार आदि कार्यों का सरकार अधिक-से-अधिक विकास करे और उनमें लोगों को खपाने की कोशिश करे। प्रोफेसर हैनसेन का ख्याल यह है कि उत्पादन का काम निजी क्षेत्र अत्यन्त कुशलता के साथ करता रहेगा। राष्ट्र मंगल का काम सरकार को अधिक से अधिक करना चाहिये।

श्री मैथ्यू ने अपने लेख में बेकारी का एक और भी कारण दिया है। वे कहते हैं कि एक पीढ़ी पहले लोग यह कहने या सुनने में अपना अपमान अनुभव करते थे कि उनकी स्त्री भी घरेलू खर्चों के लिये नौकरी करती है, लेकिन आज अमेरिका में १३५ लाख गृहिणियां भिन्न-भिन्न पेशों द्वारा धन का अर्जन करती हैं। वस्तुतः अमेरिका की समाज व्यवस्था में बड़ा भारी अन्तर आ रहा है। इन उपार्जनशील स्त्रियों में से २० प्रतिशत स्त्रियां ऐसी हैं, जिनके छोटे-छोटे बच्चे बिना देख-रेख के रहते हैं और इस उपेक्षा के कारण ही अमेरिका के बालकों में अपराध की प्रवृत्ति बढ़ रही है। और इस तरह समस्त राष्ट्र में उच्छृंखलता और अपराधवृत्ति बढ़ती हुई दृष्टिगोचर होती है।

श्री मैथ्यू कस्ट का लेख अत्यन्त विचारपूर्ण है। भारत को भी आज अपने विकास के प्रथम चरण में यह सोचकर चलना होगा कि मशीनरीवादी सभ्यता कुछ समय के बाद उक्त समस्यायें भारत में ही न पैदा कर दे। समाजवाद का उद्देश्य और समाजवाद की नीति इस संकट को लाने में विलंब कर सकते हैं किन्तु इस संकट को वे सदा के लिये नहीं रोक सकते। इसलिये आज हमें थोड़ा-सा ठहर कर गंभीरतापूर्वक विचार करना होगा कि क्या हम भविष्य में ऐसी अर्थनीति को तो जन्म नहीं दे रहे जो आज तो बहुत आकर्षक और चमकदार दीखती है, किन्तु कुछ समय बाद हमारे लिये एक नई कठिन समस्या उत्पन्न कर दे? •

## विदेशी पूंजी की सीमा

पिछले कुछ वर्षों में भारत में विदेशी संस्थानों के सहयोग से अनेकानेक नये उद्योग खुलते जा रहे हैं। इनकी सूची इतनी अधिक लम्बी होती जा रही है कि कभी-कभी यह भय होने लगता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था पर विदेशी पूंजी छा न जाय। सम्पदा के पाठक इसी अंक में अन्यत्र पढ़ेंगे कि अमेरिका ब्रिटेन की अर्थनीति पर छा रहा है। ऐसी स्थिति भारत में उत्पन्न नहीं होने देनी चाहिए। यह प्रसन्नता की बात है कि भारत सरकार का ध्यान इधर गया है। वह निजी उद्योग के उन सब आवेदनपत्रों पर विचार करने के लिये एक नीति निर्धारित कर रही है जो विदेशों के सहयोग से नये उद्योग खोलने की अनुमति के लिये आते हैं। सरकार ने दो सूचियां बनाई हैं— एक में वे उद्योग हैं, जिनमें विदेशी पूंजी का स्वागत किया जा सकता है और दूसरी में वे उद्योग हैं, जिनमें इस पूंजी की आवश्यकता नहीं स्वीकार की गई। बैंकिंग, बीमा, चाय, कहवा तथा व्यापार



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि के क्षेत्र विदेशी पूंजी के लिये निषिद्ध कर दिये गये हैं। जो उद्योग १९५६ की घोषित नीति के अनुसार सार्वजनिक घोषित किये गये हैं, उनमें भी विदेशी पूंजी को निमन्त्रण नहीं दिया जायगा। सार्वजनिक हित की दृष्टि से इसमें अपवाद अवश्य होंगे। भारी मशीनरी, खाद, रासायनिक द्रव्य, डिजेल इंजन, ट्रेक्टर बुलडोजर प्लास्टिक आदि उद्योगों में विदेशी पूंजी पर कोई रोक नहीं लगाई जायगी। यह ध्यान रखा जायगा कि किसी उद्योग में विदेशी पूंजी का प्रभुत्व न हो जाय। वस्तुतः यह हमें हमेशा ध्यान में रखना चाहिये कि विदेशी पूंजी केवल उन उद्योगों में लगे, जिनमें उसके बिना काम नहीं चल सकता। जिस तरह हमें भिन्न-भिन्न पदार्थों के आयात पर एक मर्यादा बांधनी पड़ती है, इसी तरह विदेशी पूंजी के आयात पर भी एक मर्यादा बांधने की आवश्यकता है।

## मूल्य निर्धारण का प्रश्न

भारत के खाद्य मंत्री श्री एस० के पाटिल ने पिछले दिनों एक भाषण देते हुये कहा था कि अनाज की कमी की समस्या को तो हल करना इतना कठिन नहीं है जितना कठिन अनाज की अधिकता की समस्या को हल करना है। उन्होंने यह भी कहा था कि आज हमारी समस्या अधिकता की समस्या होने जा रही है। उनका कहने का आशय यह था कि यदि अनाज आवश्यकता से अधिक पैदा हुआ तो अनाज के मूल्य कम हो जांयगे और इससे देश की अर्थ-व्यवस्था में संकट उत्पन्न हो जायगा। पहले भी अनेक बार सरकार यह घोषणा कर चुकी है कि अनाज के मूल्य एक नियत मात्रा से कम नहीं होने दिये जांयगे। समय-समय पर अनेक राजनीतिक दल इस बात का तकाजा करते हैं कि अनाज के मूल्य इतने अवश्य रखे जांय कि किसानों को अनाज के उत्पादन की प्रेरणा मिले। उनका कहना यह भी है कि सरकार ने गन्ने के निम्नतम मूल्य निर्धारित करके एक उदाहरण उपस्थित किया है। तब वह अनाज का मूल्य क्यों न निर्धारित करे?

वस्तुतः अनाज या अन्य कृषि पदार्थों के मूल्य निर्धारित करने में एक बड़ी भारी बाधा यह है कि किसान को ६ महीने के बाद उसकी फसल मिलती है। इन छः महीनों में उसे अपने परिवार का पालन पोषण करना पड़ता है। यदि वह छः महीने का सारा व्यय अपनी फसल पर डाले तो अनाज इतना मंहगा हो जाय कि मंहगाई का भयंकर संकट उत्पन्न हो जायगा। दूसरी ओर उसे भी भूखा नहीं मरने दिया जा सकता। इसका उपाय केवल एक है कि जिन महीनों में वह बेकार बैठता है, उसे ग्रामोद्योगों और घरेलू धन्धों के रूप में कोई निश्चित काम मिलना चाहिये। तभी वह अनाज के मूल्य कुछ कम रख करके भी अपना जीवन निर्वाह कर सकेगा।

## कुछ नये प्रश्न

संसद की आकलन समिति ने जीवन-बीमा निगम के सम्बन्ध में कुछ परामर्श दिये हैं। एक परामर्श के अनुसार जीवन-बीमा निगम का सारा रुपया सरकार को मिल जाना चाहिए। अभी तक बीमा निगम भिन्न-भिन्न कम्पनियों के शेयर खरीदने में तथा भिन्न-भिन्न उद्योगों को ऋण देने में रुपया लगाता है। आकलन समिति की इस सिफारिश पर काफी चर्चा हुई है और इस प्रस्ताव को भारत सरकार ने मानने से इन्कार कर दिया है। जब बीमा व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण किया गया था, तभी सरकार ने आश्वासन दिया था कि बीमा निगम उद्योगों के लिये अपने धन का विनियोजन करेगा, जिससे देश में चलने वाले सैंकड़ों उद्योग यथापूर्व अपना कार्य चालू रख सकें। इसलिये भारत सरकार की इस घोषणा से उद्योगों को कुछ संतोष होगा।

आकलन समिति ने दूसरा सुझाव यह दिया है कि बीमा-निगम को अनेक क्षेत्रों में विभक्त कर दिया जाय, जिससे कि प्रत्येक क्षेत्र में स्वयं आगे बढ़ने की प्रेरणा से लाभ उठाया जा सके। जब बीमा-व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण हुआ था, तब भी यह सुझाव रखा गया था कि एक निगम न बन कर भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में प्रमुख कम्पनियों को केन्द्र मानकर अलग अलग निगम संगठित किये जायं। किन्तु सत्ता की केन्द्रीयकरण की नीति ने इस सुझाव को नहीं मानने दिया। अब भी यह विचार सामने आने लगा है कि इन क्षेत्रीय विभागों को न केवल अपने-अपने क्षेत्र में बल्कि दूसरे क्षेत्र में भी कार्य करने की अनुमति दी जाय। इससे न केवल अपने अपने क्षेत्र में अधिक कारोबार हो सकेगा, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने से परस्पर प्रतिस्पर्धा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी उत्पन्न होगी और यह प्रतिस्पर्धा ही किसी उद्योग को विकसित करती है। केन्द्रीय निगम का काम सब क्षेत्रों पर प्रीमियम दर आदि नीति सम्बन्धी नियंत्रण रहेगा। कनवेंसिग, पोलिसी होल्डरों के साथ व्यवहार, दावे का भुगतान आदि मामलों में प्रत्येक क्षेत्र अपने ग्राहकों को अधिकतम सुविधा देने में स्वतन्त्र रहेगा। इस सुझाव के पालन करने में एक आशंका यह अवश्य है कि कुछ कार्यों और सेवाओं पर दोहरा-तेहरा खर्च होने लगेगा। परन्तु दूसरी तरफ प्रतिस्पर्धा के लाभ भी बीमा-व्यवसाय को मिलने लगेंगे। ●

## विदेशों में प्रतिस्पर्धा

भारत के औद्योगिक और विशेषकर रासायनिक संस्थानों को जहां आयात के सम्बन्ध में विशेष कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है, वहां एक नई परिस्थिति के कारण एक नई सुविधा भी पैदा हो रही है। ज्यों ज्यों भारत अपनी आयात नीति को कठोर करता जा रहा है। त्यों त्यों विदेशी उत्पादकों में चिन्ता फैलती जा रही है और वे प्रतिस्पर्धा में आकर अपने पदार्थों के मूल्य कम करने लगे हैं। फ्रांस और बेलजियम में हाइड्रो के मूल्य में कठोर प्रतिस्पर्धा पैदा हो गई है और इस प्रतिस्पर्धा के कारण २० पौंड की कमी हो गई है। फिर फ्रांस उधार पर माल देने को तैयार हो गया है। इससे कुछ समय पहले विटामिन बी० १२ के मूल्यों में स्विटजरलैंड और इटली ने प्रतिस्पर्धा की थी और इसके मूल्य ६॥ पौंड से गिर कर ६ पौंड रह गए थे। क्लोरोम, फनीकोल पाउडर में भी पिछले चार महीनों में प्रतिस्पर्धा हुई है। और शनैः शनैः मूल्य घटते हुये २१ पौंड से गिरकर १६॥ पौंड रह गये। जापान और हालैंड की पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के कारण फैलिक एन हाइड्रो का मूल्य भी २२० पौंड से गिर कर १७० पौंड तक आ गया है। ● ●

## चीन भारत के मार्ग में नई बाधा

क्यूबा और अमेरिका के पारस्परिक विरोध के कारण अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में एक नई परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। अमेरिका ने क्यूबा से चीनी लेने से इनकार कर दिया है और रूस तथा चीन ने क्यूबा की सहायता के साथ-साथ अपना हित भी देखना शुरू किया है। वह बड़े भारी परिमाण में क्यूबा से चीनी खरीद रहे हैं। भारत को भी चीनी का निर्यात करना है। वह अमेरिका से आग्रह कर रहा है कि भारत से ६ लाख टन चीनी वह खरीद ले। इधर चीन क्यूबा से पर्याप्त मात्रा में चीनी लेकर बर्मा और लंका को चीनी बेच रहा है। इसलिये यह असंभव नहीं है कि ये पड़ोसी देश भारत से चीनी न खरीदें। भारत के खाद्य मंत्री श्री एस० के० पाटिल अमेरिका से चीनी समझौता करने के लिये वहाँ जाना चाहते हैं, किन्तु मुख्य प्रश्न यह है कि भारत में चीनी बहुत मंहगी पड़ती है। इसका उत्पादन व्यय जब तक कम नहीं होगा, तब तक विदेशों में हम चीनी सुविधापूर्वक नहीं बेच सकेंगे। श्री पाटिल ने यह सुझाव दिया है कि भारत सरकार चीनी के निर्यात के लिए ३५ करोड़ रुपये सहायता दे। किन्तु चीनी के विदेशी निर्यात से केवल २० करोड़ रुपये मिलेगा। ऐसी स्थिति में क्या यह अधिक विचारणीय नहीं है कि हम गन्ने और चीनी का उत्पादन कुछ कम करें और अनाज का उत्पादन अधिक बढ़ाया जाय? ●

## मनुष्य बनाम मशीन

सम्पदा के इस अंक में औद्योगिक प्रक्रिया के बढ़ते हुए वैज्ञानिक शोधों पर चिन्ता प्रकट की गई है। इसी सम्बन्ध में प्रसिद्ध श्रमिक नेता श्री वसावड़ा के विचार भी मननीय हैं। वे लिखते हैं—

"भारत, जन-संख्या की दृष्टि से समृद्ध है और अगर योजना को बुद्धिसंगत होना है तो उसका लक्ष्य विशाल जनसंख्या का सम्पूर्ण उपोग होना चाहिए। कोशिश केवल यही नहीं होनी चाहिए कि महज उत्पादन में वृद्धि हो या उत्पादन मूल्य में कटौती के लिए कोई तरीका निकाला जाए, बल्कि उसमें वृद्धि होनी चाहिए और साथ ही साथ समस्त जनसंख्या को उत्पादन की इस प्रणाली में प्रयुक्त किया जाना चाहिए। फलस्वरूप समूचे देश की क्रय-शक्ति में विकेन्द्रीकरण होगा और उत्पादन और रोजगार को प्रोत्साहन मिलेगा। अतः लक्ष्य होना चाहिए देश की समूची जनसंख्या के संपूर्ण उपयोग के जरिए उत्पादन।"

देश की जनसंख्या का लगभग ८० प्रतिशत हिस्सा गांवों में रहता है और जब तक योजना के जरिए इस जन-

सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या को सम्पूर्ण रोजगार नहीं मिलता राष्ट्र की कोई वास्तविक प्रगति सम्भव नहीं। यंत्रीकृत भारी उद्योगों की भी देश की अर्थव्यवस्था में अपना स्थान है। लघु और कुटीर ग्रामोद्योग पर पर्याप्त बल दिया जाना चाहिए, क्योंकि बेरोजगारी की समस्या उन्हीं से हल हो सकती है। द्वितीय आयोजना में, दोनों के बीच संतुलन खो गया था और अब कम से कम तृतीय योजना में तो ऐसा नहीं होना चाहिए।

आयोजना के प्रति रुख, परिमाणात्मक उत्पादन की शब्दावली ही नहीं होना चाहिए और न ही उसके लिए आवश्यक विदेशी मुद्रा और मशीनों की शब्दावली में आयोजना का केन्द्र मशीन नहीं, मनुष्य होना चाहिए। मैं इस बात का आश्वासन देना है कि भूल से। "मनुष्य की जगह मशीन को प्रमुखता न दे दी जाए। योजना की सफलता प्रयुक्त मशीनों की संख्या से ही नहीं आंकी जाएगी बल्कि उन लोगों की संख्या से जिन्हें उत्पादन-रोजगार प्रदान किया जायगा।" ● ●

## सरकारी फर्मों की आवश्यकता

भारत के कृषि और व्यापार विभाग यह देख कर प्रसन्न हैं कि भारत में तम्बाखू का उत्पादन बढ़ रहा है। तम्बाखू के निर्यात व्यापार को बढ़ाने की भी लगातार कोशिश की जा रही है। लेकिन हमें मालूम होना चाहिये कि अन्य देश भी भारत से पीछे नहीं रहना चाहते। दक्षिणी रोडेशिया बढ़िया किस्म की तम्बाखू अधिक से अधिक पैदा करने की कोशिश कर रहा है। यूगोस्लाविया और ग्रीस यूरोप के कॉमन मार्केट के देशों में तम्बाखू का लगातार निर्यात बढ़ा रहे हैं। इधर चीन के भारतीय तम्बाखू खरीदना बन्द कर देने के कारण हमारा निर्यात कम हो गया है। स्वयं इंग्लैण्ड में भी तम्बाखू का निर्यात कम हुआ है। ऐसी स्थिति में हम अपने निर्यात-व्यापार पर कितने समय के लिये निर्भर कर सकते हैं।

बीजों के सुधार, मवेशियों को बढ़िया नस्ल तथा कृषि की वैज्ञानिक पद्धति के प्रदर्शन आदि के लिये, सरकारी फार्म स्थापित करना आवश्यक माना जाने लगा है। ये फार्म कृषि उत्पादन की मात्रा में इतने सहायक नहीं होते, जितने कि शिक्षण और प्रेरणा की दृष्टि से। हमें यह स्मरण होना चाहिये कि भारत में सूरतगढ़ जैसे बड़े फार्म बहुत सफल नहीं हो सकते। इसके दो मुख्य कारण ये हैं कि भारत में ऐसे बड़े क्षेत्र जो अब तक खाली पड़े हैं, बहुत कम संख्या में मिलेंगे। दूसरा बड़ा कारण यह है कि यहाँ जन-शक्ति पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। उसकी उपेक्षा करके हम ट्रैक्टर कम्बाइनर आदि लौह दानवों का प्रयोग हानिकर होगा। फिर सूरतगढ़ जैसे विशाल फार्म अभी तक उत्साहजनक सफलता नहीं प्राप्त कर सकते। संसद की आकलन समिति ने इस सम्बन्ध में जो विवरण प्रकाशित किया है, वह बहुत आशाजनक नहीं है। सूरतगढ़ फार्म में १९५६-५७ में २२९३ एकड़ पर खेती हुई थी। यह कृषि भूमि बढ़ते-बढ़ते तीन वर्ष बाद ३६४८० एकड़ भूमि हो गई। पहले तीन वर्षों में इस फार्म से क्रमशः ७६०० रु०, ५ लाख ४८ हजार रुपये और ४२ हजार रुपये का लाभ हुआ। १९५७-५८ के वर्ष में मानसून की खराबी के कारण १२७,००० रुपये की हानि हुई। आकलन समिति ने प्रति एकड़ व्यय और उत्पादन की निम्निलिखित संख्या दी है जो किसी तरह उत्साहवर्धक नहीं है।

| वर्ष | प्रति एकड़ उत्पादन व्यय | प्रति एकड़ आय |
|---|---|---|
| १९५६-५७ | १८३ | १८७ |
| १९५७-५८ | १३३ | १०४ |
| १९५८-५९ | १४६ | १८५ |
| १९५९-६० | १२२ | ११३ |

बहुत संभव है कि प्रारंभ में व्यय बहुत अधिक करने पड़े हों और आगे कम व्यय करना पड़े तो भी उत्पादन और व्यय में बहुत अधिक अन्तर पड़ने की आशा नहीं करनी चाहये। वस्तुतः भारत में तो कृषि में सुधार रूस और अमेरिका जैसे देशों का अन्धानुकरण करने से पहले काफी सोच-विचार कर लेना चाहिये। ● ●


**भूलिए नहीं !**

**आपको 'सम्पदा' का एक नया ग्राहक अवश्य बनाना है।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जनसंख्या वृद्धि का विस्फोट

श्री यूजेन ब्लैक, अध्यक्ष विश्व बैंक

जहां १९५० में चार व्यक्ति थे आज ४ के स्थान पर ५ हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि १९५० के बाद से, अब तब लगभग २५ प्रतिशत तक जनसंख्या में वृद्धि हुई है और ४० वर्ष बाद आज के ५ तब के दस हो जांयगे अर्थात् विश्व की आबादी निश्चित रूप से दुगनी हो जायगी। प्रति मिनट ९० बच्चे पैदा होते है, यदि हम से ६० मर भी जायें तब भी ३० जनसंख्या में बच्चे अर्थात इसमें प्रति सैकण्ड एक बलक जीवित रहते। इस कदर वृद्धि से इटली की जनसंख्या में भारी वृद्धि हुई। और १९६१ में तो विश्व की संख्या करीब ३ अरब तक बढ़ जायगी और ०४ वर्ष बाद यह दुगनी हो जायगी।

३०० वर्ष पूर्व संभवतः विश्व में ५० करोड़ से अधिक लोग जीवित नहीं थे, और जन संख्या में जो वृद्धि हो भी रही थी, उसकी गति बहुत धीमी थी। उस समय जन्म और मरण का अनुपात बराबर का ही चलता रहा। लोगों की जीवन यापन की दिशा इतनी दयनीय थी कि जो बच्चे अपने बाल्यकाल को पूरा कर भी लेते वे ३० वर्ष से ऊपर बहुत कम जाते।

अवश्य ही हर कोई मृत्यु की दर में कमी की प्रवृत्ति का हृदय से स्वागत करता है, चाहे इस से कितनी ही जटिल समस्यायें खड़ी होती हों। हम सब यही चाहते हैं कि अल्पमृत्यु और अपंग तथा आपाहिज बनाने वाली बीमारियों से जो दुःख और नुकसान होता है उसका तुरन्त उपचार किया जाय। हम चाहते हैं कि विकाश-शील देशों में मृत्यु दर में निश्चित रूप से कमी हो। लेकिन यदि हर वर्ष १००० में से २० व्यक्ति या इससे भी कम मरें तो प्रति १००० पर ४० की जन्म की दर अवश्य ही विस्फोटक स्थिति पैदा कर सकती है। और ऐसी स्थिति में यह कहना कि जन्म की दर भी कम हो जायगी तर्क संगति नहीं बैठता। बीमारियों से लोहा लेकर मृत्यु दर में तो कमी अवश्य की जा सकती है; परन्तु समाज के प्रजनन के तौर तरीके बदलना इतना सरस नहीं। अभी ऐसी दवाइयों की बड़ी आवश्यकता है जिसके प्रयोग से प्रजनन नियन्त्रण सहायता मिल सके। तब इन सब बातों से किस निष्कर्ष पर पहुंचा जाय ?"

जीवन स्तर बढ़ाने के जन संख्या वृद्धि अविकसित अविकसित देशों में जनसंख्या वृद्धि जीवनस्तर बढ़ाने के वादी व्यक्ति ही यह कह सकता है कि वर्तमान जीवन स्तर को गिरने से बचाया जा सकता है। निराशा वादी इस प्रकार सोचने का भी साहस नहीं कर सकता। जब तक जनसंख्या वृद्धि को रोका नहीं जा सकता हमें एशिया और मध्य एशिया में तो कम-से-कम एक पीढ़ी तक लोगों के आर्थिक स्तर को ऊँचा करने की आशाओं को छोड़ देना पड़ेगा। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस दिशा में कुछ भी प्रभावकारी कार्य नहीं किया जा सकता, परन्तु उन देशों की सरकारों के समक्ष इसके समाधान के लिये समय है। वे उपचार कर सकते हैं।

"जनसंनख्या-वृद्धि सफल आर्थिक विकास के नियमों व सिद्धान्तों में कोई स्थायी परिवर्तन नहीं ला सकती। आवश्यकताओं की अपेक्षा पूँजी व साधन सीमित हैं, जिसका बिस्तार जहाँ तक हो सके किया ही जाना श्रेयस्कर है। विकास-शील देशों में किसी अर्थ-नीति के बारे में यदि प्रश्न पूछा जाय तो वह यह होगा कि 'क्या ज्यादा से ज्यादा आर्थिक विकास का रास्ता यही है, और यदि उत्तर 'नहीं' है तो हमको किसी ऐसे सिद्धान्त पर दृष्टि से देखना होगा, जो आर्थिक विकास के बलिदान के औचित्य के रूप में उपस्थित की गई हो।*

*आर्थिक और सामाजिक विकास परिषद में दिये गये लेखक के वक्तव्य से।

—अमरीकी राजदूत श्री गालब्रेथ के कथन के अनुसार अब अमरीका भारत में चौथा इस्पात कारखाना तैयार करने के लिए उत्सुक है। यह कारखाना बोकारो में स्थापित किया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विदेशी मुद्रा की समस्या

प्रोफेसर सी० एन० वकील

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय से एक नियम के तौर पर भारत के व्यापार की दशा अनुकूल चली आ रही थी। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह था कि इस दीर्घकालीन अवधि में हमारी निर्यात की मात्रा आयात से अधिक रहती थी। इस बारे में यहां यह स्मरण दिलाना उचित होगा कि इस प्रकार के निर्यात का अधिक होना वास्तव में एक ऐसा तरीका था जिसके जरिये भारत, ब्रिटेन की कुछ ढंग से सहायता करता था और जिसे भारत से ब्रिटेन की ओर बहाव की संज्ञा दी जाती थी। दूसरे शब्दों में वह एक प्रकार का अनिवार्य अतिरिक्त निर्यात था जिसे हमने अनेक वर्षों तक जारी रखा, ताकि शासक देश द्वारा विभिन्न उद्देश्यों के लिए भारत पर लगाये गये कुछ खर्चों को पूरा किया जा सके। भारत सरकार के खातों में इन खर्चों को 'गृह खर्च' (होम चार्जेस) कहा जाता था। हलांकि प्रथम महायुद्ध की अवधि में कुछ परिवर्तन हुए, लेकिन द्वितीय युद्ध तक सामान्य रुख लगभग यथावत् बना रहा। भारत में मित्र राष्ट्रों के युद्ध कार्यों, विशेषतया जापानियों को पीछे हटाने के प्रयत्नों के लिए भारत को काफी रकम रुपयों में खर्च करनी पड़ी जिससे युद्ध-वित्त की एक विशेष समस्या पैदा दो गई। भारत ने इन साधनों को मुद्रास्फीति के जरिए पूरा किया जिसने बहुत-सी अन्दरूनी कठिनाइयां पैदा कर दीं। लेकिन युद्ध पर भारत में खर्च किये गये रुपयों के बदले में पौण्डों में उतनी ही रकम भारत के नाम जमा कर दी गई और इस प्रकार युद्ध के बाद लन्दन में पौण्ड-पावना जमा हो गया था, जिसका कुछ नियमों के अंतर्गत उपयोग किया जा सकता था। बस यहीं से माल का विपरीत दिशा में बहाव शुरू हुआ। इस जमा रकम का उपयोग हम अपनी योजनाओं के लिए आवश्यक मशीनों और अन्य सामानों को खरीद कर आयात कर सकते हैं।

इस सम्बन्ध में यह जानना भी उचित होगा कि अन्य देशों ने अपने विकास के लिए पूंजीगत खर्चों के लिए कहां से धन प्राप्त किया था। संसार के तथाकथित आगे बढ़े-चढ़े देशों ने अपनी आर्थिक प्रगति स्वयं अपने साधनों के आधार पर नहीं की है। उदाहरण के तौर पर इंग्लैण्ड अपने औद्योगिक क्रांति के लिए धन, ब्रिटिश साम्राज्य के उपनिवेशों और आश्रित देशों के विपुल साधन स्रोतों के बल पर, जुटा सका था। अमेरिका और कनाडा दोनों विस्तृत प्राकृतिक साधनों से भरपूर और सीमित जनसंख्या के नये देश थे। इन साधनों को विकसित करने के लिए विदेशी पूंजी विशेषतया ब्रिटिश पूंजी इन देशों में आई। अन्य देशों के विकास के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार की परिस्थितियां बताइ जा सकती हैं। इस सम्बन्ध में यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि इन अधिकांश देशों का औद्योगिक विकास काफी लम्बे समय तक चला और उस अवधि में विश्व का ध्यान उनकी ओर आकर्षित नहीं हुआ।

## भारत की परिस्थिति भिन्न

अल्प विकसित देशों में स्वाधीनता के अभ्युदय से, जिसकी शुरूआत भारत से हुई, आर्थिक विकास की भावना जागृत हुई। लेकिन भारत जैसे देशों की समस्या कुछ कठिन है। भारत एक बड़ी और तेजी से बढ़ने वाली आबादी का देश है जिसके अधिकांश लोग गरीब और किसी तरह गुजरबसर करते हैं। इन अवस्थाओं में हमारे देश के लिए यह सम्भव नहीं है कि अपनी तेजी से विकास की मांगों को पूरा करने के लिए स्वयं उसकी ही बचत की रकमें पर्याप्त हो सकें। अन्य औद्योगिक देशों के विपरीत हमारे सामने शीघ्रता से विकास की समस्या है जिसका अर्थ है कि हमको तुलनात्मक कम अवधि में ही अपना आर्थिक विकास करना है। इस प्रकार के उद्देश्यों से अन्य देशों के साधनों का उपयोग करने की दृष्टि से हमारे पास किसी प्रकार की राजनैतिक शक्ति नहीं है जैसी कि अन्य देशों के पास थी। साथ साथ हमारा अन्य देशों के साथ वैसा सम्बन्ध भी नहीं है जो हमारी मदद कर सकें जैसा कि अमेरिका और कनाडा को प्राप्त था। इन देशों में इंग्लैंड और यूरोप के लोग बसे हुए थे। इन्होंने इंग्लैंड और



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूरोप से आने वाले उद्योगशील लोगों का स्वागत किया जिससे यूरोपीय देशों की अतिरिक्त आबादी को नये विस्तारों में बसने में सहायता मिली। लेकिन हमको तो अन्य देशों की सद्भावना पर निर्भर रहना है।

## विदेशी सहायता की सीमा

सौभाग्य से अधिक विकसित देशों को इस बात का पता चल चुका है कि पिछड़े देशों में जीवनमान में वृद्धि करना वास्तव में स्वयं उनके ही हित में है। हमारे इतिहास के इस मौके पर विश्व के महान् राष्ट्रों में इस प्रकार की उत्तरोत्तर जागरूकता वास्तव में हमारे लिए एक बड़ी समस्या बनी हुई है। विश्व के दो शक्तिशाली गुटों के बीच शीत-युद्ध ने इस प्रवृति को और बढ़ावा दिया है, जिसके फलस्वरूप भारत जैसे देश को, जो किसी भी गुट से सम्बद्ध नहीं है, दोनों तरफ से आर्थिक सहायता मिलना संभव हो सका है। लेकिन, फिर भी इस प्रकार की विदेशी सहायता की कुछ स्वाभाविक सीमाएं हैं। विकास के लिए अल्प-विकसित देशों की मांगें बढ़ गयी हैं। हाल ही के बढ़े-चढ़े देशों द्वारा दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों तथा दक्षिणी अमेरिका की ओर कुछ ध्यान दिया जा रहा है। अफ्रीका में राष्ट्रीय-चेतना जागृत होने के फलस्वरूप उन विभिन्न अफ्रीकी देशों के विकास सम्बन्धों में एक नई आवश्यकता पैदा हो गई है जो स्वाधीन हो चुके हैं अथवा होनेवाले हैं। इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों से एक साथ मांग होने के कारण आर्थिक सहायता की मात्रा सीमित हो जाती है जिसे दे सकने वाले देशों से उपलब्ध किया जा सकता है।

## नया तथ्य

इसके अलावा एक नया और एक प्रकार से अनपेक्षित तथ्य, जो हाल ही के वर्षों में सामने आया है, अमेरिका से सोने का भारी तादाद में निर्यात होना है। युद्ध के जमाने में सोने की मुद्रा निधियों का बहाव विभिन्न देशों से अमेरिका की ओर हुआ जिसके फलस्वरूप आज अमेरिका के पास रक्षित स्वर्ण मुद्रा का सबसे अधिक स्टाक जमा है। युद्ध के बाद अनेक देशों को अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनाने में इस प्रकार के स्वर्ण स्टाक से काफी सहायता प्राप्त हुई। यूरोप का पुनरुद्धार काफी हद तक मार्शल योजना के जरिये ही हुआ। तब से अमेरिका ने विभिन्न प्रकार से भारत सहित अनेक देशों को सहायता देने की विस्तृत व्यवस्थाएँ की। इसके अलावा अमेरिका के योरोप तथा विश्व के अन्य हिस्सों में फौजी संस्थान भी है जिन पर देश के बाहर काफी खर्च किया जाता है। यूरोप के विकास के बाद अमेरिका और यूरोप के बीच व्यापारिक सम्बन्धों का स्वरूप भी बदल रहा है। इन सभी कारणों के फलस्वरूप अमेरिका का व्यापार सन्तुलन प्रतिकूल हो गया जिसके लिए दूसरे देशों को सोना निर्यात करना जरूरी हो गया। कुछ अंश तक सोने का यह निर्यात सट्टेबाज सौदों के कारण भी हुआ जो इस प्रकार की परिस्थितियों में अनिवार्य हो जाते हैं। इस पहलू का उल्लेख इस तथ्य की ओर ध्यानाकर्षित करने के लिए किया गया है कि दुनिया के सबसे धनी देश की भी दूसरे देशों को सहायता देने के लिए साधन उपलब्ध कराने की क्षमता की एक सीमा है। यह बात सुविदित है कि अमेरिका की सरकार अपने भुगतान अवशेष की स्थिति पुनः सुदृढ़ बनाने लिए प्रयत्नशील है ताकि सोने के बाहरी बहाव पर नियन्त्रण किया जा सके।

## आवश्यकता अधिक : क्षमता सीमित

हमने अन्दाजा लगाया कि तीसरी योजना के लिए हमको विदेशी मुद्रा की काफी मात्रा की आवश्यकता होगी। हमको यह बात भी मालूम है कि विदेशी मुद्रा अर्जित करने की स्वयं हमारी क्षमता बहुत सीमित है क्योंकि इस उद्देश्य से हमारे निर्यातों की मात्रा पर्याप्त नहीं है। हमारी विदेशी मुद्रा की आवश्यकताएँ कुछ अंश तक उन विदेशी कर्जों के ब्याज तथा पूंजी अदायगी के लिए जिन्हें हम पहले स्थापित कर चुके हैं, सामान, कच्चे माल तथा उपकरणादि की काफी मात्रा आयात भी करनी पड़ती है। इसी प्रकार नये उद्योगों के विकास के लिए, जिन्हें हम नियोजित कर रहे हैं, मशीनों के आयात की जरूरत है। थोड़े समय में हमारे आर्थिक जीवन में मूलभूत परिवर्तन करने की हमारी आवश्यकताओं की विशालता की दृष्टि से इस प्रकार की परिस्थिति और कुछ वर्षों तक जारी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगी, हालांकि हम लोग विदेशी सहायता से जल्द-से-जल्द छुटकारा पाने के लिए उत्सुक हैं।

इस प्रकार अन्य देशों के साथ हमारे आर्थिक सम्बन्ध का और भी अधिक जटिल होने की सम्भावना है। इसलिए हमको अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्धों के परिवर्तनों को, हम से भी सम्बन्ध है, सावधानीपूर्वक देखना चाहिए। हालांकि यह एक विस्तृत समस्या है, लेकिन एक पहलू निर्विवाद है और वह यह कि हमको अपनी विदेशी मुद्रा की समस्या को सुलझाने के लिए यथाशीघ्र एक दीर्घकालीन निर्यात-नीति तैयार करनी चाहिए। स्पष्टतया हमारे लिए यह बात वांच्छनीय नहीं है कि हम आवश्यकता से अधिक समय तक विदेशी सहायता की छोटी-बड़ी मात्राओं के लिए अनेक देशों पर निर्भर बने रहे। देश में तीव्र आर्थिक विकास की सदिच्छा में हमने विकास के इस महत्वपूर्ण पहलू के प्रति आवश्यक प्रयत्नों की दिशा में पर्याप्त ध्यान नहीं दिया है। दुर्भाग्य की बात है कि इसी मौके पर चाय और जूट जैसी हमारी परम्परागत वस्तुओं का निर्यात स्थिर हो गया है और उसे अन्य देशों से उत्तरोत्तर प्रतियोगिता का सामना करना पड़ रहा है। अभी तक हमने विदेशों में अपने माल को दूसरे देशों के माल की प्रतियोगिता में बेचने की कला को विकसित नहीं कर पाया है। इस प्रकार के प्रयत्नों के लिए हमको अन्य देशों के अनुमान से काफी सीखना है और कुछ मदों पर जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है संक्षेप में निम्न प्रकार है—

१. निर्यात व्यवसाय उन लोगों के हाथों में होना जरूरी है जिन्होंने इस कार्य में विशेष ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त किया है।

२. सफलता के तत्वों में एक बात यह है कि निर्यात व्यवसाय को एक लाभप्रद व्यापार होना चाहिए। इसके लिए निर्यातक को एक व्यवहार-संहिता (कोड आफ आनर) का पालन करना चाहिए और प्रतियोगितात्मक कीमतों पर श्रेष्ठ माल की पूर्ति तथा अन्य देशों के खरीदारों में देश के लिए एक राष्ट्रीय सद्भावना विकसित करनी चाहिए और इस प्रकार से ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करना चाहिए जिससे हमारे माल की विदेशों से काफी खपत होने में मदद मिल सके। सरकार को भी निर्यातकों की प्रारम्भिक अवस्थाओं में सबसिडी तथा अन्य प्रकार के प्रोत्साहन देकर मदद करनी चाहिए।

२. व्यापारी वर्ग तथा सरकार को संसार के बाजारों में लगातार अध्ययन करने के लिए एक उपयुक्त कार्यक्रम तथा संगठन कायम करने तथा इस प्रकार के बाजारों को बढ़ाने के लिए प्रचार करने में सक्रिय सहयोग देना चाहिए।

४. हमारा उद्देश्य न केवल चाय और जूट जैसे परंपरागत निर्यातों को जारी और विकसित करना होना चाहिए बल्कि तैयार सामानों का निर्यात भी योजनाबद्ध होना चाहिए।

५. दीर्घकालीन दृष्टिकोण से इस प्रकार के सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने के लिए हम को अन्य देशों के साथ सांस्कृतिक सम्बन्धों को बढ़ाना चाहिए जिसके अन्तर्गत उन विभिन्न देशों की भाषाओं को सीखना भी शामिल होना चाहिए जहाँ पर हम व्यावसायिक सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं।

६. इन प्रयत्नों के साथ-साथ जहाज, बीमा, बैंक संबंधी सुविधाओं, अन्य देश की व्यापारिक पद्धतियों की जानकारी, विभिन्न देशों में हमारे सामानों की प्रदर्शनियों, मेलों, एम्पोरियमों का आयोजन और स्वयं व्यापारी वर्ग द्वारा आवश्यक व्यवयार-संहिता को अपने ऊपर लागू करना जिसे निर्यातकों को विदेशी खरीददारों के साथ व्यापार करते समय अमल में लाना चाहिए।

७. निर्यात व्यापार को अन्य प्रवृतियों का उप-व्यवसाय समझा जाना चाहिये। • •

देश की आर्थिक समस्याओं पर अपने ज्ञान-वर्द्धन के लिए सम्पदा की फाइलें मंगाइये।
सन् १९५९ और १९६० की फाइलें प्रति फाईल रु० ४.५० नये पैसे शीघ्र भेजकर मंगा लें।
**सम्पदा अशोक प्रकाशन मन्दिर**
२८-११, शक्तिनगर दिल्ली-६





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तीन मुख्य समस्याएं

श्री रामनाथ गोयनका

गत वर्ष जिन तीन समस्याओं ने देश को अधिक चिन्तित किया है, वे निम्नलिखित हैं—

(१) पदार्थों के मूल्य में वृद्धि।

(२) देश की आन्तरिक बचत में कमी।

(३) प्रतिकूल व्यापार सन्तुलन के कारण विदेशी मुद्रा पर भारी दबाव।

१९६० में पदार्थों के मूल्य में ६-५ प्रतिशत वृद्धि हुई है, केवल, जबकि १९५९ में ४-१ तथा २९५८ में २-१ प्रतिशत वृद्धि हुई थी। मंहगाई में दूसरा अन्तर यह हुआ है कि १९५९ तक मंहगाई केवल खाद्य पदार्थों की हुई थी। १९५९ से उद्योगों के कच्चे माल और तैयार माल के मूल्यों में भी वृद्धि होने लगी है। सरकारी अनुमानों से बहुत कम बचत देश में हो रही है। योजना आयोग ने यह अनुमान लगाया था कि दूसरी योजना के अन्तिम वर्ष तक कुल राष्ट्रीय आय का ९.४ प्रतिशत बचत के रूप में मिलने लगेगा। किन्तु बचत ८ प्रतिशत से अधिक नहीं हुई, वस्तुतः बचत की समस्या पर वैज्ञानिक रूप से अभी तक विचार ही नहीं किया गया। इसे अव्यवस्थित तुक्के-बाजी के रूप में ही पेश किया गया है। इसका एक उदाहरण इनामीबॉंड है। बचत को हम तीन श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं।

(१) कम्पनियों की बचत (२) सम्पन्न व्यक्तियों की बचत (३) निम्न आय के लोगों की बचत। पहली बचत का सम्बन्ध शासन से है। उसे यह देखना है कि कम्पनियों की बचत का ठीक उपयोग होता है या नहीं। दूसरी बचत के लोग अपने विनियोजन पर शीघ्रतम और अधिकतम लाभ चाहते हैं। वे ऐसी जगह रुपया लगाना चाहते हैं, जहाँ उसका मूल्य बढ़े, कम-से-कम घटे नहीं। ये लोग अपना रुपया या तो शेयर खरीदने में लगाते हैं या मकान बनाने में। सरकार चाहती है कि निम्न आय के लोग अधिकतम रुपया जमा करें, किन्तु इस समस्या को सरकार ने रत्तीभर भी सुलझाने की कोशिश नहीं की। आज स्थिति यह है कि मंहगाई बढ़ने के साथ-साथ लोगों को वास्तविक वेतनों का स्तर कम होता जा रहा है। कारखानों के श्रमिकों से कुछ बचत की आशा की जा सकती है। किन्तु उसमें सामान्यतः बचत की प्रवृत्ति नहीं होती। हमें यह प्रयत्न करना चाहिए कि लोगों को अपनी बचत बैंकों में सुरक्षित रूप से जमा करने की प्रवृत्ति पैदा हो। इसके लिए उन्हें सुरक्षा का पूर्ण आश्वासन देना चाहिए। किसान हाल ही के कुछ वर्षों में अपनी आर्थिक स्थिति को कुछ सुधारने लगे हैं किन्तु अकिंश किसानों में बैंक खाता खोलने की प्रवृत्ति नहीं पायी जाती। उनमें भी बैंकों में रुपया जमा करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करने का प्रयत्न करना चाहिए। अब क्योंकि बीमा उद्योग का राष्ट्रीयकरण हो चुका है और विभिन्न बीमा कम्पनियों में ग्रामों के स्रोतों को प्राप्त करने की प्रतिस्पर्द्धा नहीं रही इसलिए स्टेट बैंक का यह काम होना चाहिए कि वह देहाती क्षेत्रों में अपनी शाखाएँ खोल कर लोगों की बचत को प्राप्त करने की चेष्टा करे। अभी तक स्टेट बैंक ने इस सम्बन्ध में जो काम किया है वह अधिक सन्तोषजनक नहीं है। बैंकों के अधिकारियों और संचालकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि देश में जितना व्यापार और कारोबार बढ़ेगा, उतना ही बैंकों का कारोबार भी बढ़ेगा। आजकल बैंकों में मियादी डिपोजिट बढ़ रहे हैं। सरकार की आर्थिक नीति और रिजर्व बैंक का सहयोग विशेषतः उत्साहजनक है। अब हम उद्योग और व्यापार की मांग को पूरा कर सकते हैं। ब्रिटेन जैसे देश में, जहाँ चैकों का प्रयोग काफी होता है। बैंक लोगों की निजी सेवाएँ करके उन्हें अपनी ओर अधिक आकृष्ट कर रहे हैं। भारत में भी उद्योग और व्यापार न करने वाली जनता और बैंकों का परस्पर सम्बन्ध स्थापित करने की आवश्यकता है।

यह ठीक है कि हमें विदेशों से काफी सहायता प्राप्त हुई है, फिर भी हमारी विदेशी मुद्रा ६९ करोड़ रुपया कम हो गयी है। अब हमें नये साधनों से और अधिक सहायता प्राप्त करनी होगी तथा अपने निर्यात व्यापार को बढ़ाने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा।

( शेष अगले पृष्ठ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# हाँगकाँग

श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

हांगकांग भारत के पूरब में एक छोटा सा प्रदेश है। भौगोलिक और सामरिक दृष्टि से इसका अपना महत्त्व रहा है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह बहुत छोटा—केवल २२ वर्ग मील है। खनिज पदार्थों तथा कृषि की दृष्टि से भी यह विशेष महत्त्व नहीं रखता, किन्तु व्यापारिक और औद्योगिक दृष्टि से यह कुछ वर्षों में बहुत प्रगति कर चुका है। इसके समर्थन में एक उदाहरण देना पर्याप्त होगा कि आज ब्रिटेन को भी वस्त्र उद्योग के सम्बन्ध में हांगकांग से ऐसे समझौते करने पड़ते हैं कि हांगकांग ब्रिटेन के लिए अमुक मात्रा से अधिक वस्त्र निर्यात न करे।

हांगकांग की आर्थिक समृद्धि का कारण उसकी भौगोलिक परिस्थिति है। पूरब और पश्चिम का व्यापारिक यातायात हांगकांग के बन्दरगाह से ही होता है। पहले चीन का समस्त व्यापार इस बन्दरगाह से होता था; लेकिन चीन में कम्युनिस्ट शासन स्थापित होने के बाद पश्चिमी देशों और अमेरिका का चीन से व्यापार बहुत कम हो गया। कोरिया का युद्ध छिड़ने पर तो राष्ट्रसंघ ने चीन से व्यापार करने पर सर्वथा प्रतिबन्ध लगा दिया। इस प्रकार चीन की दृष्टि से हांगकांग की महत्त्वपूर्ण स्थिति समाप्त हो गई। इस बन्दरगाह द्वारा होने वाले चीन के निर्यात की मात्रा १९५०-५१ के ४० प्रतिशत से गिरकर केवल ४ प्रतिशत रह गई। इधर चीन से लाखों शरणार्थी भी हांगकांग में आ बसे। हांगकांग के सामने आजीविका का एक नया संकट उपस्थित हो गया।

लेकिन हांगकांग निराश नहीं हुआ। वहाँ के लोगों को अपनी अर्थव्यवस्था को चालू रखने के लिए हम अब आयात में और कमी नहीं कर सकते, किन्तु निर्यात को बढ़ाने का अवश्य प्रयत्न कर सकते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भारत का स्थान क्रमशः कम होता जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ाने के लिए हमें प्रतिस्पर्द्धात्मक मूल्य रखने होंगे और इसके लिए हमें अपनी आर्थिक और श्रम नीति में भी कुछ परिवर्तन करना होगा।*

*बैंक की वार्षिक बैठक में दिये गये अध्यक्षीय भाषण से

एक बड़ा अनुभव था—पूरब और पश्चिम से आने वाले माल को जहाजों से उतारने-चढ़ाने और उसे गोदामों में रखने का। उन्होंने इस अनुभव का लाभ उठा कर निकटवर्ती देशों से स्वयं व्यापार आरंभ कर दिया। हांगकांग की दूसरी बड़ी विशेषता जिसने उसे समृद्ध करने में बहुत योग दिया, तट कर से मुक्ति थी। इसके कारण अनेक देशों की बड़ी-बड़ी कम्पनियों ने अपने क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय वहाँ खोल दिए। इस कारण वहाँ के खरीद-फरोख्त का कारोबार तेजी से बढ़ गया। वहाँ जो यात्री जाता, तटकर से मुक्ति के कारण बहुत सस्ती चीजें ले आता। पाठकों को स्मरण होगा कि कांग्रेस के युवक समाज की ओर से जाने वाले बहुत से युवकों के विरुद्ध यह आरोप लगाया गया था कि वे सिंगापुर में अन्य कार्यों को छोड़कर चीजों की खरीद में लग गए। इसका मुख्य कारण यही था कि वहाँ भी तटकर नहीं लगता था।

हांगकांग में कुछ वर्ष पूर्व ९,००,००० टन कारगो एक समय में रखने के लिए गोदामों की व्यवस्था थी। अब तो संभवतः यह क्षमता और भी बढ़ गई है। आज दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में जो माल अमेरिका आदि देशों से आता है, वह हांगकांग के द्वारा ही सब जगह पहुंचाया जाता है। इस तरह हांगकांग एक बहुत बड़ा वितरण केन्द्र बन गया है।

पिछले वर्षों में हांगकांग ने औद्योगिक क्षेत्रों में भी प्रवेश किया है। उपभोग्य वस्तुओं के व्यापार का उसे अच्छा अनुभव हो गया था और यह जानकारी हो जाना स्वाभाविक था कि दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों की किन-किन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है। वहाँ अनेक नये-नये उद्योग स्थापित किए जाने लगे। बड़ा बन्दरगाह होने के कारण जहाजों की मरम्मत से बढ़ते-बढ़ते जहाजी उद्योग भी विकसित होने लगा। लेकिन दूसरे देशों के सामने ठहरना आसान काम नहीं है। ईंधन की कमी थी, क्षेत्रफल अत्यन्त छोटा होने के कारण बड़े उद्योग स्थापित नहीं हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सके थे और यह खतरा भी हमेशा सामने था कि साम्यवादी चीन किसी भी समय हांगकांग पर अधिकार कर सकता है। फिर भी वहाँ उद्योग का विकास हुआ और खूब हुआ।

चीन से आने वाले लाखों शरणार्थी अपने साथ जहाँ श्रम लाए वहाँ कुछ पूंजी भी ले आए। स्थानीय शासन ने भी उन्हें प्रोत्साहन देने के लिए सब सुविधाएं दीं। १२॥ प्रतिशत से अधिक कर नहीं लगाया गया और व्यवसाय को लाभ अर्जन की बहुत प्रेरणा मिली। बाजारों का अनुभव अच्छा होने के कारण वे दक्षिणी समुद्र के लिए सरौंग, योरुप के लिए ऊनी दस्ताने, अफ्रीका के लिए सस्ती छींट, अमेरिका के लिए कमीजों का कपड़ा और तरह-तरह के सिले-सिलाए कपड़े तैयार करने लगे।

इसका परिणाम यह हुआ कि हांगकांग का निर्यात बहुत बढ़ गया। १९४७ में जो उद्योग-व्यापार १० प्रतिशत था, वह १९५८ में ७० प्रतिशत तक पहुंच गया। मूल्यों में लगभग ४० करोड़ डालर की वृद्धि हुई। इसमें से ५० प्रतिशत से भी अधिक वृद्धि वस्त्रों और सिलेसिलाए वस्त्रों से हुई।

गत वर्ष के ग्यारह महीनों में १२३० लाख रुपये का कपड़ा ब्रिटेन गया। १० महीनों में ही उसने ५,४११,००० दर्जन कमीजें भेजी हैं, जबकि १९५८ में ३,७३,००० कमीजें भेजी गई थीं। पुरुषों की रात को पहनने की कमीजों की कीमत ५,२९,००० पौण्ड से बढ़ कर १,९१,००० पौण्ड हो गई। रसोई के बर्तन, रबड़ के जूते, बिजली के बल्ब, बैटरी, थर्मस, जग तथा प्लास्टिक की विविध वस्तुएँ भी हाँगकांग में खूब बन रही हैं। खाद्य पदार्थों का उद्योग भी वहाँ लगातार बढ़ रहा है। प्रतिवर्ष वहाँ से गुजरने वाले यात्रियों द्वारा खरीदी जाने वाली कला कौशल की वस्तुएं भी आय का अच्छा साधन बन गई हैं। इसी तरह इस छोटे से क्षेत्र में होटलों तथा पर्याप्त संख्या में दफ्तरों के खुलने से भी हाँगकांग की आय बढ़ी है।

यह सब देखते एक प्रश्न हमारे सामने आ खड़ा होता है कि आखिर २२ वर्ग मील क्षेत्रफल वाले इस क्षेत्र की आर्थिक समृद्धि का रहस्य किस बात में है? हाँगकांग की सफलता का प्रधान कारण वहाँ के उत्पादन व्यय में कमी होना है। विदेशी मुद्रा के वितरण पर पाबन्दी नहीं है, इसलिए वहाँ के उद्योगपति कच्चा माल बहुत सस्ता खरीद लेते हैं। वहाँ के मजदूर बहुत मेहनती हैं और जीवनोपयोगी वस्तुएँ सस्ती होने के कारण बहुत कम वेतन पर सन्तुष्ट हो जाते हैं। इसीलिए औद्योगिक संघर्ष भी वहाँ बहुत कम होते हैं। वहाँ की सरकार उद्योगों को कोई विशेष सुविधा नहीं देती, और न ही कोई बाधा उपस्थित करती है।

अन्य देशों में सरकारें उद्योगों का विकास करने के लिए योजनाएँ बना कर चल रहे उद्योगों पर अनेक प्रकार के नियंत्रण और प्रतिबन्ध लगाती हैं और अपनी योजनाएँ चलाने के लिए कागजी मुद्रा के प्रेस का सहारा लेती हैं। विदेशी मुद्रा के वितरण, आयात पर नियंत्रण तथा करों के भारी बोझ के द्वारा वे अपनी उन योजनाओं को पूर्ण करना चाहती हैं, जो आर्थिक दृष्टि से प्रायः लाभकारी होती हैं। इसके लिए वे विकास के लिए आवश्यक स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा को भी समाप्त कर देती हैं। परिणाम यह होता है कि महँगाई बढ़ जाती है। खरीदारों को आवश्यक वस्तुएं और सेवाएँ प्राप्त करने के लिए अधिक पैसा खर्चना पड़ता है। देशी और विदेशी पूँजी को नये उद्योग खोलने के लिए प्रोत्साहन नहीं मिलता और देश की पूँजी ऐसे स्थानों पर जाने लगती है, जहाँ लाभ की अधिक संभावनाएं होती हैं।

हाँगकांग में ऐसी बाधाएँ नहीं थीं। परिणामस्वरूप प्राकृतिक स्थिति अनुकूल न होते हुए भी वहाँ विदेशी पूँजी पर्याप्त मात्रा में आई। वहाँ वस्तुतः सरकार की ओर से न विशेष हस्तक्षेप ही था और न नियंत्रण ही।

इन्हीं कारणों से हांगकांग को अपने विकास के लिए विदेशों से आर्थिक सहायता नहीं लेनी पड़ी। हांगकांग की सरकार ने स्वयं इस सत्य को अपने अनेक प्रकाशनों में स्वीकार किया है। एशिया के सब देश अपने आर्थिक विकास और जीवन-स्तर को ऊँचा करने के लिए विदेशी सहायता लेने की कोशिश में लगे हुए हैं; लेकिन हांगकांग इसका अपवाद है। इस छोटी-सी जनता ने प्राकृतिक साधनों का नितान्त अभाव होते हुए भी जनता की अदम्य भावना और दृढ़ संकल्प के बल पर ही न केवल अनेक भविष्यवाणियों को असत्य सिद्ध कर दिया है, बल्कि अपने को एक प्रबल औद्योगिक शक्ति भी बना लिया है और यह महान सफलता बिना किसी बाहरी आर्थिक सहायता के की गई है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राष्ट्रीय आय कितनी बढ़ी !

१९५९-६० में भारत की राष्ट्रीय आय (१९४८-४९ के मूल्यों पर) १ खरब १७ अरब ६० करोड़ रु० थी।

१९५८-५९ में देश की राष्ट्रीय आय १ खरब १६ अरब ५० करोड़ रु० थी।

दूसरी पंचवर्षीय योजना के शुरू में, १९५५-५६ में, यह आय १ खरब ४ अरब ८० करोड़ रु० थी। १९४८-५९ के मूल्यों पर १९५९-६० में देश की प्रति व्यक्ति आय २९१.६ रु०, १९५८-५९ में २८२.६ रु० और १९५५-५६ में २७३.६ रु० थी। यह जानकारी केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन के आठवें वार्षिक पत्र में दी गयी है, जो हाल ही में प्रकाशित हुआ है।

१९५८-५९ के अनुमान उसी विधि से निकालने गये हैं, जिसका पिछले वर्षों में प्रयोग होता आया है। १९५९-६० के ये अनुमान अभी प्रारम्भिक हैं और पिछले साल अगस्त में जल्दी में जो अनुमान तैयार किये गये थे, उनसे ये कुछ अधिक हैं।

१९५८-५९ में जहाँ कृषि और दूसरी चीजों के उत्पादन में वृद्धि होने से इसके पहले साल से स्थिति काफी सुधरी थी, वहाँ १९५९-६० में आय बहुत थोड़ी १ अरब १० करोड़ ही बढ़ी। इसका कारण १९५९-६० में कृषि उपज का कम होना था। इस वर्ष राष्ट्रीय आय में कृषि की आय का हिस्सा (१९४८-४९ के मूल्यों पर) पिछले साल से १ अरब ५३ करोड़ रु० कम था। लेकिन उद्योगों आदि दूसरी मदों से आय में २ अरब ६५ करोड़ रु०

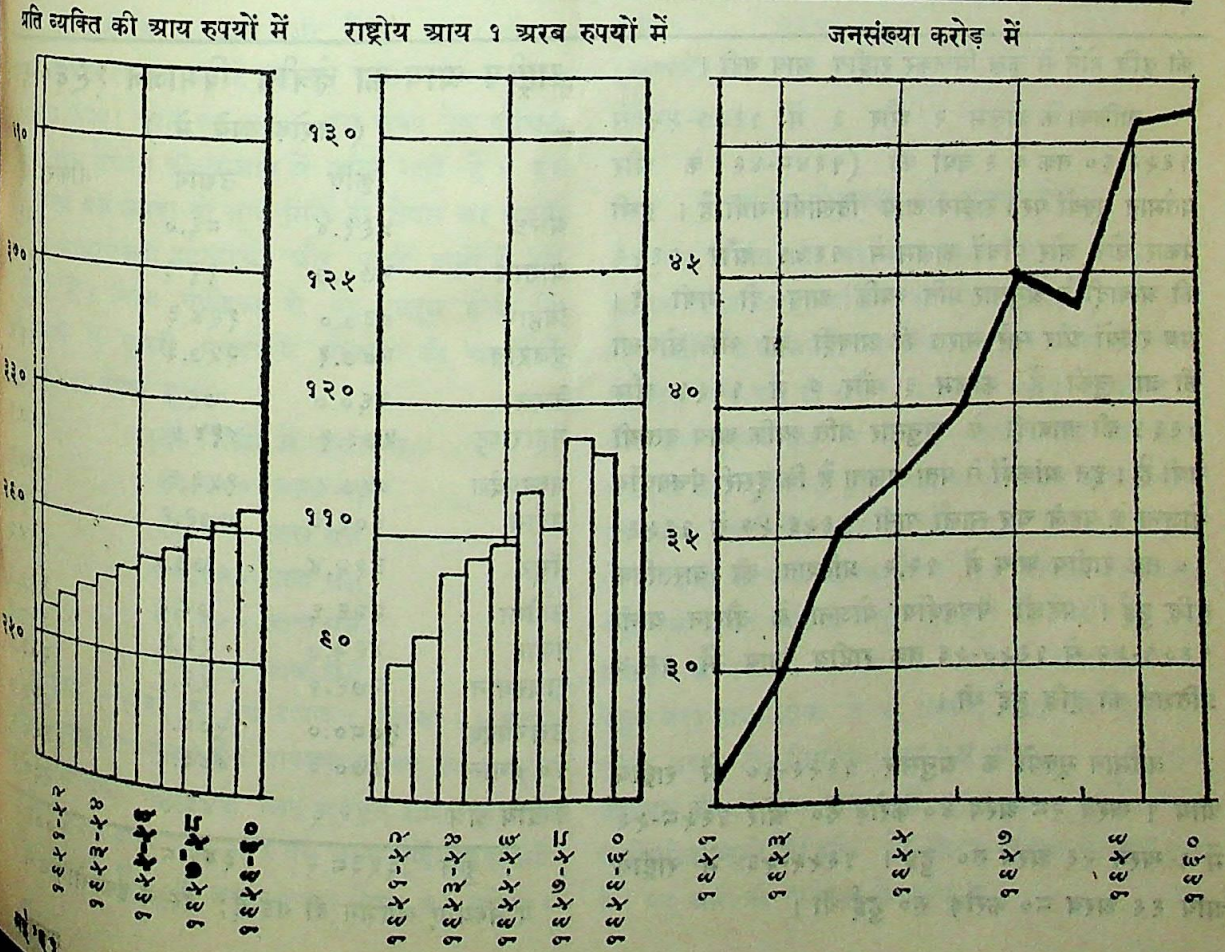


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| वर्ष | शुद्ध राष्ट्रीय आय (१०० करोड़ रु० में) वर्तमान मूल्यों पर | १९४८-४९ के मूल्यों पर | १९४१ और १९५१ की आबादी के अनुसार वर्तमान मूल्यों पर | १९४८-४९ के मूल्यों पर | प्रति व्यक्ति आय (रु० में) १९५१ और १९६१ की आबादी के अनुसार वर्तमान मूल्यों पर | १९४८-४९ के मूल्यों पर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| १९५१-५२ | ९९.७ | ९१.० | २७४.९ | २५०.१ | २७४.२ | २५०.३ |
| १९५२-५३ | ९८.२ | ९४.६ | २६६.४ | २५६.६ | २६५.४ | २५५.७ |
| १९५३-५४ | १०४.८ | १००.३ | २८०.७ | ५६८.७ | २७८.१ | २६६.२ |
| १९५४-५५ | ९६.१ | १०२.८ | २५४.२ | २७१.९ | २५०.३ | २६७.८ |
| १९५५-५६ | ९९.८ | १०४.८ | २६०.६ | २७३.६ | २५५.० | २६७.८ |
| १९५६-५७ | ११३.१ | ११०.० | २९१.५ | २८३.५ | २८३.४ | २७५.६ |
| १९५७-५८ | ११३.९ | १०८.९ | २८९.८ | २७७.१ | २७९.६ | २६७.४ |
| १९५८-५९ | १२६.० | ११६.५ | ३१६.५ | २९२.६ | ३०३.० | २८०.२ |
| १९५९-६० (प्रारम्भिक) | १२८.४ | ११७.६ | ३१८.४ | २९१.६ | ३०२.३ | २७६.९ |

की वृद्धि होने से कुल मिलकर राष्ट्रीय आय बढ़ी।

तालिका के कालम २ और ३ में १९५१-५२ से १९५९-६० तक के ९ वर्षों की (१९४८-४९ के और वर्तमान मूल्यों पर) राष्ट्रीय आय दिखायी गयी है। इसी प्रकार चौथे और पाँचवें कालम में १९४१ और १९५२ की आबादी के अनुसार प्रति व्यक्ति आय दी गयी है। अब राज्यों और सारे भारत की आबदी की भी घोषणा की जा चुकी है। कालम ६ और ७ में १९५१ और १९६१ की आबादी के अनुसार प्रति व्यक्ति आय बतायी गयी है। इन आंकड़ों से पता चलता है कि दूसरी पंचवर्षीय योजना के पहले चार सालों यानी १९५६-५७ से १९५९-६० तक राष्ट्रीय आय में १२.२ प्रतिशत की वास्तविक वृद्धि हुई। पहली पंचवर्षीय योजना के दौरान यानी १९५१-५२ से १९५५-५६ तक राष्ट्रीय आय में १८.४ प्रतिशत की वृद्धि हुई थी।

वर्तमान मूल्यों के अनुसार १९५९-६० में राष्ट्रीय आय १ खरब २८ अरब ४० करोड़ रु० और १९५८-५९ में १ खरब २६ अरब रु० हुई। १९५५-५६ में राष्ट्रीय आय ९९ अरब ८० करोड़ रु० हुई थी।

## राष्ट्रीय आय का क्षेत्रीय विभाजन १९६०-६१

( करोड़ रुपये में )

| | कृषि | उद्योग | नौकरी आदि |
|---|---|---|---|
| आन्ध्र | ५९१.४ | ८६.० | ३८१.६ |
| आसाम | २७०.७ | ११.६ | १११.५ |
| बिहार | ४३७.० | १९४.३ | २८७.० |
| गुजरात | २०७.१ | २५७.३ | ३४१.४ |
| केरल | ३६०.० | ७९.० | १६८.० |
| महाराष्ट्र | ५७३.१ | ४१४.५ | ५८७.६ |
| मध्यप्रदेश | ४५७.५ | १५३.३ | २७७.९ |
| मद्रास | ६०९.३ | ७७९.९ | ४२२.४ |
| मैसूर | ३१२.४ | ७७.५ | २१४.२ |
| उड़ीसा | २२६.६ | ७४.९ | ११५.६ |
| पंजाब | ४९३.७ | ५५.५ | ३२८.१ |
| राजस्थान | २७९.३ | ५३.१ | २०३.३ |
| उत्तरप्रदेश | १०८०.० | २०८.१ | ७२५.७ |
| पं० बंगाल | ५७०.३ | ४४३.८ | ५९९.६ |
| केन्द्रीय क्षेत्र | ५२.६ | ४३.७ | २३८.३ |
| कुल | ६५३८.२ | २३४५.८ | ५००२.३ |

ये संख्याएँ लगभग दी गई हैं; ईस्टर्न इकानोमिस्ट से।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# वस्त्र उद्योग और उसकी समस्याएँ

श्री प्रताप भोगीलाल, अध्यक्ष सूती मिल संघ, बम्बई

योजना आयोग का ख्याल यह है कि आगामी पाँच वर्षों तक वस्त्र की आवश्यकता ९ अरब ३० करोड़ गज़ तक पहुंच जायगी। यह उत्पादन उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों में किस तरह किया जाय, इसका निश्चय न होते हुए भी आयोग ने यह विचार प्रकट किया है कि हाथकरघा उद्योग से २ अरब ८० करोड़ गज़ कपड़ा तैयार होगा। सूती मिलों से योजना आयोग ने यह आशा की है कि वे ५८ करोड़ गज़ कपड़ा तैयार करेंगी। शेष वस्त्र पावर लूमों और खादी उद्योग से तैयार किया जायगा किन्तु वस्त्र उद्योग इन लक्ष्यों से सन्तुष्ट नहीं है। उसका कहना है कि १८.५ गज़ प्रति व्यक्ति की आवश्यकता को देखते हुए देश को ८७ करोड़ गज़ कपड़ा उत्पादन करना चाहिए। इसके अलावा ८००० लाख गज़ कपड़ा हमें विदेशों को निर्यात के लिए भी तैयार करना होगा। इस समय आवश्यकता यह है कि देश प्रति वर्ष ९५ हज़ार लाख गज़ कपड़ा तैयार कर सके। इस लक्ष्य तक पहुँचना संगठित वस्त्र उद्योग की सम्मति में कठिन नहीं है। ६२ हज़ार लाख गज़ कपड़ा तो सूती मिलें ही तैयार कर सकती हैं। शेष आवश्यकता हाथकरघों और पावर लूमों से पूरी हो सकती है। निम्न तालिका से यह मालूम होगा कि सूती मिलों में दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में कितना कपड़ा तैयार हुआ :

| | सूती मिलों में उत्पादन |
|---|---|
| १९५६ | ५३,६०० लाख गज़ |
| १९५७ | ५३,१७० लाख गज़ |
| १९५८ | ४९,२७० लाख गज़ |
| १९५९ | ४९,२५० लाख गज़ |
| १९६० | ५०,४४० लाख गज़ |

आगामी ५ वर्षों में यह उत्पादन लक्ष्य ६२ हज़ार लाख तक बढ़ाये जा सकते हैं। आवश्यकता यह कि है सूती मिलों को अभिनवी करण के लिए पर्याप्त राशि दी जाये तभी वे न केवल वस्त्र उत्पादन के नये लक्ष्य पूर्ण कर सकेंगी बल्कि निर्यात के लिए भी काफी कपड़ा तैयार कर सकेंगी। विदेशी बाजारों में स्थिरता के लिए कपड़े का उत्पादन व्यय कम होना आवश्यक है। बिना इसके हमारा कपड़ा विदेनह नहीं बिक सकेगा। भारतीय वस्त्रों का निर्यात हमारे लिए कितनी विदेशी मुद्रा प्राप्त करने में सहायक होती है, यह नीचे की तालिका से स्पष्ट है—

| वर्ष | वस्त्रों का निर्यात (लाख गज़ों में) | मूल्य (करोड़ रुपयों में |
|---|---|---|
| १९५६ | ६८४० | ४८ |
| १९५७ | ८३९० | ५० |
| १९५८ | ५८१९ | ४० |
| १९५९ | ८१६० | ५४ |
| १९६० (जनवरी से नवम्बर तक) | ५९०० | ४९ |

## अभिनवीकरण की आवश्यक्ता

यह निर्यात और भी बढ़ सकता है तथा और भी अधिक विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सकती है, यदि हम इस उद्योग के अभिनवी करण पर और भी ध्यान दें, ताकि उत्पादन व्यय कम हो सके। कपड़े के मूल्य निर्धारण में तीन अंग मुख्य रूप से होते हैं—कच्चा माल या रूई-मजदूरी और मशीनरी द्वारा निर्माण का व्यय वस्त्र उद्योग का कहना यह है कि भारत में प्रति एक नियत परिमाण पर मरदूजी का खर्च अधिक बैठता है। जापान की अपेक्षा यहाँ एक नियत वस्त्र के पीछे मजदूरी का खर्च ३०-५० प्रतिशत अधिक है। वस्त्र के उत्पादन में मशीनरी का बहुत बड़ा हाथ होता है। जितनी आधुनिक मशीनरी होगी, उतना ही निर्माण व्यय कम होगा। भारत वस्त्र उत्पादन की दृष्टि से संसार में दूसरा बड़ा देश है, किन्तु आटोमेटिक लूमों की दृष्टि से भारत बहुत पिछड़ा हुआ है। यह आगे की तालिका से स्पष्ट है—



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## ऑटोमैटिक लूमों का अनुपात

| देश | मिलों में कुल लूम | आटोमैटिक लूम | कुल लूमों का प्रतिशत ऑटोमैटिक लूम |
|---|---|---|---|
| संयुक्त राज्य अमरीका | ३२६,२२० | ३२६,२२० | १०० प्रतिशत |
| जापान | ६८,२७४ | ५२,९०२ | ७७.४८ |
| इटली | १०३,२०० | ६२,१२१ | ५९.७ |
| ब्रिटेन | २२३,००० | ४५,००० | २०.२ |
| पश्चिमी जर्मनी | १२०,३०० | ३९,२१९ | ३२.६ |
| पाकिस्तान | २८;३६० | १६,९३६ | ५९.७ |
| भारत | २०५,५६४ | १५,६४८ | ७.६ |

(ये संख्याएँ इन्टर नेशनल काटन एडवाइज़री कमेटी की रिपोर्ट से ली गई हैं ।)

भारत को सूती मिलों के अभिनवीकरण की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है । भारत की सूती मिलों को दूसरे विश्व-युद्ध की अवधि में बहुत अधिक उत्पादन करना पड़ा । मिलें दिन-रात तीन-तीन पारियाँ चलती रहीं । इसलिए अधिकाँश मिलें आज रद्दी लोहा बन गई हैं । उन मिलों में न तो अच्छा कपड़ा तैयार हो सकता है और न सस्ता ही । इसलिए अनेक वर्षों से मिलों के अभिनवीकरण पर विचार हो रहा है । करीब आठ वर्ष पूर्व श्रीरामस्वामी मुदालियर के नेतृत्व में एक अध्ययन दल नियत किया गया था । इसको करीब ४५० मिलों में से १११ मिलों ने ही आवश्यक जानकारी भेजी थी । इस अध्ययन दल ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि मिलों के तकुवों और लूमों के अभिनवीकरण के लिए ४९ करोड़ रुपये की आवश्यकता होगी ।

किन्तु अब इस सम्बन्ध में राष्ट्रीय उद्योग विकास निगम द्वारा नियत अध्ययन मण्डल ४५० मिलों से जानकारी के बाद, जिनमें १५० लाख तकुए २ लाख लूम हैं ।

आधुनिकीकरण के लिए १८० करोड़ रुपए की सिफारिश की है । वस्तुतः इसकी रिपोर्ट अधिक व्यापक और गहरी है । यदि हमें अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में टिकना है और दूसरे देशों का मुकाबला करना है, तो हमें मिलों को नवीन आविष्कारों से सुसज्जित करना ही होगा ।

सूती मिलों के अभिनवीकरण की सिफारिश कर देने से ही तो काम नहीं बनेगा । इसके लिए लिए भारी मात्रा में धन की आवश्यकता होगी । यह धन भी जहाँ विदेशी मुद्रा की अपेक्षा रखता है, वहाँ आन्तरिक साधनों के संग्रह की भी । उक्त कार्यकारी दल की सम्मति में ८० करोड़ रुपया तो मिलें स्वयं जुटा सकती हैं । शेष १०० करोड़ रुपए की आवश्यकता देश को होगी, जो विदेशी मुद्रा के रूप में प्राप्त की जानी चाहिए । यह राशि विदेशों से मशीनरी मंगाने में काम आएगी । टैक्सटाइल मशीनरी बनाने के उद्योग को अधिक प्रोत्साहन मिले, इसकी भी व्यवस्था करनी होगी, ताकि मशीनरी के लिए विदेशों पर हमें कम निर्भर रहना पड़े । औद्योगिक विकास के लिए औद्योगिक शान्ति भी अत्यन्त आवश्क है ।

## पावरलूमों से प्रतिस्पर्धा

निर्यात व्यापार के लिए जहाँ दूसरे देशों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है, वहाँ सूती मिलों को एक और भी समस्या का समाधान करना पड़ रहा है और वह है पावर लूमों से प्रतिस्पर्धा । सूती मिलों के मुकाबले में सरकार पावर लूमों को बहुत अधिक रियायत देती है । उत्पादन कर प्रति पारी यह भेद कितना अधिक है, यह इस तालिका से स्पष्ट हो जता है—

| | |
|---|---|
| सुपर फाइन कपड़ा | १०.१७ रु. |
| फाइन कपड़ा | ९.०० रु. |
| मोटा कपड़ा | २.०० से ३.०० रु. |

( शेष पृष्ठ २४५ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारतीय सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ

श्री सरदारमल जैन, मेडता

If you are planning for one year-plant grains, if you are planning for ten years, plant trees, if you are planning for hundered years, plant men.

—A Chinese Proverb

मनुष्य जीवन में प्रतिक्षण किसी न किसी आकस्मिक दुर्घटना या संकट का भय बना रहता है, जैसे मृत्यु, बीमारी, बेकारी, वृद्धावस्था, आदि। अतः उसे समाज में अपना कर्त्तव्य पूरा करने के लिए इन आकस्मिक दुर्घटनाओं से सुरक्षा की आवश्यकता होती है। क्योंकि यह सुरक्षा किसी व्यक्ति-विशेष के लिए न होकर समाज के लिए होती है, अतः इसे सामाजिक सुरक्षा कहते हैं। परिभाषा के तौर पर हम कह सकते हैं कि "सामाजिक सुरक्षा से अभिप्राय उस सुरक्षा से है जो समाज के सभी सदस्यों को जीवन के आकस्मिक अभिशापों तथा बीमारी, बेकारी, वृद्धावस्था, आकस्मिक दुर्घटना, वैधव्य तथा मृत्यु इत्यादि के लिए समाज अथवा राज्य से प्राप्त होती है।" सर विलियन बैलरिज के अनुसार सामाजिक सुरक्षा से अभिप्रायः पांच दानवों के ऊपर आक्रमण है जैसे आवश्यकता, बीमारी, अज्ञानता, गन्दगी और बेकारी।"

सामाजिक सुरक्षा का क्षेत्र विस्तृत है। सामाजिक बीमा और सामाजिक सहायता इसी के अन्तर्गत आते हैं। सामाजिक बीमा उन व्यक्तियों की बीमारी और दुर्घटना के समय सहायता करता है जो चन्दा देते हैं। सामाजिक सहायता राज्य द्वारा मुफ्त मिलती है। इसके अन्तर्गत स्वास्थ्य सेवाएँ, औषधि सहायता, मातृत्व उपकार और बाल-कल्याण कार्य आते हैं।

## सामाजिक सुरक्षा का महत्व

प्राचीन समय में जब मनुष्य अपने घरों पर ही अपने परिवार के सदस्यों के साथ ही कार्य करते थे, उन्हें सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता नहीं थी; क्योंकि उस समय संयुक्त परिवार प्रणाली ही सामाजिक सुरक्षा का कार्य करती थी। परन्तु औद्योगिक क्रान्ति के बाद लोगों में व्यक्तिवाद की भावना का उदय हुआ। बड़े परिवार छोटे परिवारों में परिणत होने लगे और नगरों में श्रमिकों की संख्या बढ़ने लगी। इनकी सामूहिक रूप से रक्षा एक गम्भीर समस्या है।

श्रमिक वर्ग प्रत्येक राष्ट्र में समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है अतः अगर यह असंतुष्ट या भावी संकट से चिंतित रहता है तो यह उस राष्ट्र के विकास में सबसे बड़ी रुकावट है। सिद्धान्तः यह कहा जाता है कि प्रत्येक नागरिक की जन्म से मृत्यु तक की सुरक्षा का उत्तरदायित्व राज्य पर होना चाहिए।

## सामाजिक सुरक्षा का उद्भव एवं विकास

सामाजिक सुरक्षा योजना सर्वप्रथम जर्मनी में सन् १८८१ में विलियम प्रथम द्वारा लागू की गई परन्तु उस समय यह आन्दोलन ज्यादा प्रगति नहीं कर सका। इस योजना का वास्तविक विकास १९२४ से प्रारम्भ हुआ। आज रूस की सामाजिक सुरक्षा योजनाएं संसार के अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। इन योजनाओं पर प्रतिवर्ष लगभग २,१४,००० रुबल का व्यय होता हैं।

इंग्लैंड में बैवरिज प्रणाली के अन्तर्गत सरकार, शिशु, युवक, वृद्ध, स्त्री पुरुष सभी को जन्म से लेकर मृत्यु तक (From birth to death) सभी आवश्यक सुविधाएं प्रदान करती है। वैवरिज योजना सामाजिक सुरक्षा की एक पूर्ण तथा आदर्श योजना है। इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक मनुष्य देता है और प्रत्येक मनुष्य प्राप्त भी करती है। इस योजना का प्रारूप विलियम बैवरिज द्वारा १९४२ में इग्लैंड में प्रस्तुत किया गया था और १९४६ में इस सम्बन्ध में अधिनियम पास कर इसे लागू कर दिया गया। अतः इस योजना का जन्मदाता इग्लैंड माना जाता है। इग्लैंड में प्रतिवर्ष १२०० करोड़ रुपये (प्रति व्यक्ति लगभग २३०) रु० सिर्फ सामाजिक सुरक्षा पर ही खर्च होते हैं इसलिए प्रायः यह कहा जाता है कि इग्लैंड पूंजीवादी देश होते हुए भी सबसे अधिक समाजवादी है। अमेरिका में यह योजना १९३५ में लागू की गई। आज तो यह योजना



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीडन, डेनमार्क, फ्रांस, न्यूजीलैंड, मिश्र और आस्ट्रेलिया में भी लागू की जा चुकी है।

## भारत में सामाजिक सुरक्षा

भारत में यह आन्दोलन अन्य देशों की तुलना में अपेक्षाकृत नया है। फिर भी इस क्षेत्र में काफी प्रशंसनीय कार्य किया गया है। वर्त्तमान में भारत में सामाजिक सुरक्षा के लिए निम्न आयोजन है—

(१) श्रमिक प्रतिफल अधिनियम १९२३ (Workmens Compensaticn Act 1923)

सामाजिक सुरक्षा क्षेत्र में सबसे पहला प्रयत्न १९२३ में किया गया जबकि प्रतिफल अधिनियम पास हुआ। यह अधिनियम जम्बू व काश्मीर को छोड़ शेष भारत के उन सभी कारखानों, खानों व रेलों में लागू होता है जहां शक्ति का प्रयोग होता है और १० या अधिक श्रमिक काम करते हैं तथा जहां शक्ति का प्रयोग नहीं होता पर ५० या अधिक श्रमिक काम करते हैं। राज्य सरकारों को अधिकार दे दिया गया है कि वे किसी भी क्षेत्र के श्रमिकों पर इसे लागू कर सकती है, यदि वे उनके कामों को खतरनाक समझती हैं। वे सभी श्रमिक जिनका मासिक वेतन ४००) रु० से कम है तथा जो क्लर्क या प्रशासन (Administration) के पद पर कार्य नहीं करते हैं, इस अधिनियम के अन्तर्गत लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

अधिनियम के अनुसार श्रमिकों की मृत्यु, अस्थाई, आंशिक अथवा स्थाई पूर्ण असमर्थता के लिए क्षतिपूर्ति मिलती है बशर्ते कि चोट कार्य करने के दौरान पहुंची हो और मजदूर के स्वयं के दोष के कारण न लगी हो। किसी व्यवसायिक रोग या रसायन से विष आदि लग जाने पर भी क्षति के अनुसार अलग-अलग मुआवजा देने की व्यवस्था की गई है।

(२) राज्य मातृत्वलाभ अधिनियम (State Maternity Fits Act)

भारत में इस क्षेत्र में जो कुछ भी प्रयास किये गये हैं, वे राज्यों में व्यक्तिगत रूप से ही हुए हैं। अखिल भारतीय स्तर पर "खान मातृत्व उपकार अधिनियम १९४१" को को छोड़कर कोई भी ऐसा अधिनियम नहीं बनाया गया है। सर्व प्रथम १९४१ में बम्बई में मातृत्व उपकार अधिनियम पास किया गया था। आज तक आसाम, पश्चिमी बंगाल, मध्यप्रदेश, बिहार, पूर्वी पंजाब, मद्रास तथा उत्तर-प्रदेश, राजस्थान, ट्रावनकोर-कोचीन, उड़ीसा आदि राज्यों ने अपने यहाँ इसे लागू कर दिया है।

इस अधिनियम के अनुसार स्त्री श्रमिकों को प्रसव के कुछ सप्ताह पूर्व एवं कुछ सप्ताह पश्चात् तक छुट्टी दे दी जाती है तथा कुछ सहायता भी दी जाती है। लाभ की दर और समय की अवधि भिन्न २ प्रान्तों में भिन्न २ है। इसके अतिरिक्त प्रसव से सम्बन्धित निशुल्क डाक्टरी सहायता व चिकित्सा सुविधा भी दी जाती है। काम करते समय शिशु को रखने के लिए कुशल दाइयों तथा शिशु गृहों की व्यवस्था भी एक लाभ ही है। हित लाभ की रकम विभिन्न राज्यों में ८ आने से लेकर १२ आने प्रति दिन तक है।

## सामाजिक सुरक्षा की आधुनिक योजनाएं—

(१) श्रमिक राज्य बीमा अधिनियम १९४८—

यह अधिनियम २ अप्रेल १९४८ को पारित हुआ। ४००) रु० मासिक वेतन से कम वेतन पाने वाले वे सभी कर्मचारी (जिनमें क्लर्क भी शामिल है) जो सेना में भर्ती नहीं है इस अधिनियम के अन्तर्गत लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

अधिनियम का प्रशासन कार्य एक स्वशासित संस्था "श्रमिक राज्य बीमा कार्पोरेशन" को सौंप दिया गया है। इसका अध्यक्ष श्रममंत्री होता है। प्रमंडल की अर्थव्यवस्था हेतु "कर्मचारी राज्य बीमा फंड" खोला गया है जिसे मालिक व श्रमिक चन्दे के रूप में तथा केन्द्रीय व राज्य सरकारें सहायता के रूप में द्रव्य देती हैं। चंदे की दर आय के आधार पर तय की जाती है। इस योजना के अन्तर्गत आगोपित व्यक्तियों को निम्न ५ प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध होती है।

(क) औषधोपचार सम्बन्धी सुविधाएँ— जहाँ भी यह योजना लागू की जाती है आगोप प्रमडल अपने औषधालय खोलता है या वहाँ के सरकारी अस्पतालों में अपने सदस्यों के लिए निशुल्क चिकित्सा की व्यवस्था करती है तथा कुछ चलते-फिरते औषधालय भी रखती है जो आगोपित व्यक्तियों के घर जाकर उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी देखभाल करते हैं।

(ख) मातृत्व सम्बन्धी लाभ— यह लाभ स्त्री श्रमिकों को प्रसव के समय दिया जाता है। प्रसव के ६



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्ताह पूर्व तथा ६ सप्ताह बाद तक के अवकास के समय में १२ आने प्रति दिन या बीमारी हित लाभ की दर से (जो भी दर अधिक हो) १० सप्ताह तक प्रसूति लाभ मिलता रहेगा। गर्भावस्था में औषधोपचार सुविधाएँ भी दी जाती है।

(ग) अयोग्यता लाभ—यदि कार्य के दौरान किसी श्रमिक के चोट लग जाने या उस कारखाने से सम्बन्धित किसी व्यवसायिक रोग का शिकार हो जाने के फलस्वरूप श्रमिक अस्थाई या स्थायी, आंशिक या पूर्ण रूप से अयोग्य हो जाय तो उसे अयोग्यता के दौरान उसके दैनिक वेतन का आधा भाग सहायता के रूप में दिया जायगा।

(घ) आश्रितों के लाभ—यदि श्रमिक की कारखाने में होने वाली किसी दुर्घटना से मृत्यु हो जाती है तो उसके आश्रितों को (उसकी विधवा एवं बच्चे) वार्षिक वृति के रूप में सहायता दी जायगी।

(ङ) बीमारी सम्बन्धी लाभ—बीमित श्रमिकों को डाक्टरी प्रमाणपत्र के आधार पर बीमारी काल में समय के अनुसार दैनिक वेतन का ½ भाग सहायता के रूप में मिलता है। वर्ष में अधिक से अधिक ५६ दिन तक कोई भी श्रमिक यह लाभ प्राप्त कर सकता है।

योजना की प्रगति—इस योजना का शुभारम्भ २४ फरवरी १९५२ को दिल्ली और कानपुर में श्री नेहरू ने किया। आज यह देश के सभी प्रमुख औद्योगिक केन्द्रों में लागू की जा चुकी है। १९५८-५९ तक इसमें मालिकों तथा श्रमिकों का चन्दा क्रमशः २.९० करोड़ तथा ३.८१ करोड़ रुपये था, जिसमें से २.४५ करोड़ रुपया बीमित कर्मचारियों को दिया गया। मार्च १९५९ तक १२ राज्यों के ५१ केन्द्रों में १४.१४ लाख श्रमिक सदस्य हो चुके थे। जिसका अनुमान है कि अब तक लगभग २० लाख श्रमिक इस योजना के सदस्य हो चुके हैं।

(२) प्रावीडेन्ड फन्ड एक्ट १९५२—यह अधिनियम ४ मार्च १९५२ को लागू किया गया। सरकारी कारखाने एवं नये उद्योग इससे बाहर हैं। इसके अन्तर्गत श्रमिक और मालिक दोनों को अनिवार्य रूप से चन्दा देना होता है। श्रमिक और मालिक को मजदूरी बिल का ६½% अलग २ रूप से देना पड़ता है। श्रमिक चाहे तो ८⅓% तक दे सकता है। ३००) रु० मासिक से कम आय वाले श्रमिक ही इस योजना का लाभ उठा सकते हैं। ५ वर्ष की नौकरी पूरी करने के बाद श्रमिक को मालिक द्वारा जमा किये गये भाग ⅓ तथा २० वर्ष बाद पूरा भाग लेने का अधिकार है।

सितम्बर १९६० तक इस योजना के अन्तर्गत ३१.७१ लाख कर्मचारियों में से २२.२५ लाख कर्मचारी आ चुके हैं तथा १५१.८करोड़ रुपया एकत्रित हो चुका है।

(३) औद्योगिक विवाद (संशोधन) अधिनियम १९५३—यह अधिनियम केवल गैर मौसमी करखानों तथा खानों पर ही लागू होता है। इसके अन्तर्गत श्रमिकों को जिन्होंने १ वर्ष तक नौकरी की है बेकारी की अवस्था में सुरक्षा प्रदान की जाती है। अधिनियम के अनुसार कोई भी श्रमिक बिना १ माह का नोटिस दिये या १ महीने की अग्रिम तनख्वाह दिये नौकरी से अलग नहीं किया जा सकता है।

(४) उत्तर प्रदेश में वृद्धावस्था पेन्शन अधिनियम १९५७—दिसम्बर १९५७ से उत्तर प्रदेश में ७० वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्तियों को जो निराश्रित हैं एवं कुछ भी कमा नहीं रहे हैं, मासिक पेन्शन के रूप में सहायता दी जाती है। वह योजना लागू करके उत्तर प्रदेश सरकार ने सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में वास्तव में एक सराहनीय कार्य किया है।

## आलोचनात्मक अध्ययन

यद्यपि भारत में सामाजिक सुरक्षा क्षेत्र में काफी प्रशंसनीय कार्य किया गया है तथापि हमारी सामाजिक सुरक्षा योजना में निम्न कमियां हैं—

(१) औषधोपचार सहायता का अपर्याप्त प्रबन्ध है तथा अस्पतालों के निर्माण में काफी समय व्यर्थ नष्ट कर दिया जाता है।

(२) इन योजनाओं से कुछ खास क्षेत्रों के विशेष प्रकार के श्रमिक ही लाभ उठा सकते हैं।

(३) वृद्धावस्था पेन्शन एवं बेकारी के समय लाभ देने के लिए अभी तक कोई व्यवस्था नहीं की गई है।

(४) बीमारी का लाभ बहुत ही कम समय के लिए दिया जाता है।

(शेष पृष्ठ २४५ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सांख्यिकी

## प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष करों में वृद्धि

(करोड़ रु० में)

| | १९५०-५१ | १९५९-६० | दस वर्षों में वृद्धि |
|---|---|---|---|
| प्रत्यक्ष कर | | | |
| आयकर (कार्पोरेशन-कर के साथ) | १७३.०२ | २५५.१० | |
| उत्तराधिकार कर | — | २.०१ | |
| सम्पत्ति कर | — | १२.११ | |
| व्यय कर | — | ०.०७ | |
| उपहारकर | — | ०.८० | |
| कुल | १७३.०१ | २७२.६१ | + ९९.५९ |
| अप्रत्यक्ष कर | | | |
| तटकर | १५७.०२ | १५६.४१ | |
| उत्पादनकर | ११६.०९ | ३६०.३५ | |
| कुल | २७३.११ | ५१६.७६ | + २४३.६५ |

रिजर्व बैंक बुलेटिन जनवरी १९६१

## अन्न का उत्पादन

| फसल | १९५७-५८ | १९५८-५९ * | १९५९-६० ❀ |
|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ |
| चावल | २४९ लाख टन | ३०४ लाख टन | २९३ लाख टन |
| गेहूँ | ७७ ,, | ९८ ,, | ९७ ,, |
| दूसरे अनाज | २०४ ,, | २२४ ,, | २१५ ,, |
| दालें चने समेत | ९५ ,, | १२९ ,, | ११२ ,, |
| कुल खाद्यान्न | ६२५ ,, | ७५५ ,, | ७१७ ,, |

## व्यापारिक फसलें (लाख टनों में)

| १ | २ | ३ | ४ |
|---|---|---|---|
| गन्ना (गुड़ के हिसाब के आधार पर) | ६९ | ७१ | ७६ |
| मूंगफली | ४४ | ४८ | ४४ |
| अन्य तिलहन | १७ | २१ | २० |
| कुल तिलहन | ६१ | ६९ | ६४ |
| कपास (प्रत्येक ३९२ पौंड वजन की गांठें) | ४७ लाख | ४७ लाख | ३८ लाख |
| पटसन (प्रत्येक ४०० पौंड वजन की गांठें) | ४१ लाख | ५२ लाख | ४५ लाख |

* इनमें संशोधन हो सकते हैं

❀ अंशतः संशोधित अनुमान

## राजस्व की आय

१९६०-६१ के वित्तवर्ष के पहले ग्यारह महीनों में विभिन्न चीजों पर लगे शुल्कों और करों से केन्द्रीय सरकार को ७ अरब ४१ करोड़ ८६ लाख रु० की आमदनी हुई। १९५९-६० के पहले ११ महीनों की यह आय ६ अरब ५८ करोड़ ८७ लाख रु० थी और फरवरी, १९६० की ६७ करोड़ ४६ लाख रु०।

मदों के अनुसार राजस्व की प्राप्ति का ब्यौरा इस प्रकार है :—

(लाख रुपये में)

| राजस्व की मद | अप्रैल से फरवरी १९६१ | १९६० |
|---|---|---|
| १. सीमा शुल्क | १,५०,९१ | १,३९,९५ |
| २. केन्द्रीय उत्पादन शुल्क (कोयलाउपकर और-नमक उपकर छोड़कर) | ३,६८,५८ | ३,२४,२२ |
| ३. निगम कर | ८६,९२ | ६५,३८ |
| ४. आयकर | १,११,८० | १,०३,८२ |
| ५. सम्पदा शुल्क | २,०५ | २,०० |
| ६. सम्पत्ति पर कर | ४,५६ (अ) | ७,१३ |
| ७. व्यय कर | ५४ | ५४ |
| ८. उपहार कर | ६१ | ५६ |
| ९. रेल-यात्री किराया कर | ११,३५ (अ) | ११,५३ |
| | जनवरी १९६१ तक | ३,७५ |
| १०. अफीम | ४,५४ | |
| योग | ७,४१,८६ | ६,५८,८७ |

अ : अस्थायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बैंकों का आशामय भविष्य

मार्च और बैंक अप्रैल के महीने में प्रायः सभी बैंक अपने-अपने बैलेन्सशीट प्रस्तुत करते हैं और शेयर होल्डरों की वार्षिक बैठक करते हैं। इनमें हह स्पष्ट हो जाता है कि बैंकों ने गत वर्ष कितनी प्रगति की। इस वर्ष जो विवरण प्रकाशित हुए हैं, उनसे मालूम होता है कि बड़े बैंकों की प्रगति संतोषजनक रही है। यद्यपि गत वर्ष पलाई सेंट्रल बैंक की असफलता न बैंक जगत में एक अस्थिरता और अनिश्चितता ला दी थी। बड़े बैंकों की शानदार सफलताओं ने आगामी वर्ष को और भी आशाप्रद बना दिया है। यही कारण है कि देश के प्रमुख बैंकों के शेयरों के मूल्य ऊंचे हो गए हैं, जैसा कि निम्न तालिका से स्पष्ट हो जाएगा :

| बैंक का नाम | पहले का भाव | नया भाव |
|---|---|---|
| बैंक आफ बड़ौदा | ८२.५० | ९९.०० |
| बैंक ऑफ इंडिया | १११.५० | १२२.५० |
| सेंट्रल बैंक | ५६.०० | ६१.५० |
| पंजाब नेशनल बैंक | ११.४८ | २२.०० |
| युनाइटेड कामर्शियल बैंक | ८४.५० | ८८.३० |
| स्टेट बैंक | ३०९.०० | ३२५.०० |

बैंकों के शेयरों का मूल्य इस आशा पर बढ़ा है कि उनका कारोबार भी काफी बढ़ेगा। नवम्बर १९६९ से अब तक बैंकों द्वारा दिए गए ऋण २२४ करोड़ रुपए बढ़ गए हैं। ३१ मार्च १९६० को बैंकों ने ११३३ करोड़ रुपए ऋण दे रखे थे, लेकिन ३१ मार्च १९६१ में ये ऋण बढ़कर १३३४ करोड़ रुपए हो गए। इसका अर्थ यह है कि कि गत वर्ष की अपेक्षा बैंकों ने २०० करोड़ रुपया अधिक दिया हुआ है।

पलाई सेंट्रल बैंक की घटना ने बैंक में रुपया जमा करने वालों को काफी अनुत्साहित किया था, किन्तु अब उसका प्रभाव समाप्त हो चुका है। बैंकों ने अपनी ब्याज दर बढ़ा दी है : इसका प्रभाव यह हुआ है कि पिछले चार सप्ताहों में ही बैंकों के डिपोजिट ४२.४० करोड़ रुपए बढ़ गए हैं, बैंक मुख्यतः देश के आर्थिक विकास में सहयोग देते हैं और भिन्न प्रवृत्तियों के लिए रुपया उधार देते हैं। १४, अप्रैल १९६० को बैंकों ने अपने विनियोजन का ३८.०४ प्रतिशत रुपया सरकारी सिक्योरिटी में लगाया हुआ था। किन्तु नई प्रवृत्तियों की मांग के कारण बैंकों को वहां से रुपया निकालना पड़ा गया। १४ अप्रैल १९६१ को सरकारी सिक्योरिटियों में बैंकों का विनियोजक केवल ३०.३८ प्रतिशत रहा। यदि स्टेट बैंक को हम सम्मिलित न करें तो सरकारी सिक्योरिटियों में बैंकों का उतना ही रुपया बचेगा, जितना कि कानून के अनुसार न्यूनतम रखा जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि बैंकों ने अधिकतम राशि व्यापार और उद्योग में लगा दी है। केन्द्रीय सरकार की अपेक्षा राज्यों के ऋणों पर अधिक ब्याज मिलता है इसलिए बैंकों की प्रवृत्ति केन्द्रीय ऋणों की अपेक्षा राज्जीय ऋण में अधिक रुपया लगाने की रही है। बैंकों की यह प्रवृत्ति इस बात की सूचक है कि देश में उद्योगों का विकास बड़ी तीव्र गति से हो रहा। सैकड़ों नए उद्योग खुल रहे हैं और पुराने उद्योग भी अपने कारोबार का विस्तार कर रहे हैं। यही कारण है कि बैंकों पर इतना दबाव आ गया था कि डिपोजिटरों को प्रोत्साहन देने के लिए उन्हें ब्याज दर बढ़ानी पड़ी।

नीचे की तालिका से मालूम होगा कि प्रमुख छः बैंकों ने १९५८ से ६० तक कितना कमाया।

(बैंक का लाख रु० में)

| बैंक का नाम | १९५८ | १९५९ | १९६० |
|---|---|---|---|
| स्टेट बैंक | १९०.१४ | १८७.१९ | २१७.५९ |
| सेंट्रल बैंक | १०१.४२ | १००.१८ | १९३.०५ |
| पंजाब नेशनल बैंक | ११७.०९ | ९६.१९ | १३०.८५ |
| बैंक आफ इंडिया | ८५.७७ | ८२.६८ | १०३.३७ |
| युनाइटेड कमर्शियल बैंक | ४५.३८ | ६०.४२ | ६७.४३ |
| बैंक आफ बड़ौदा | २७.४३ | २९.४७ | ७०.८५ |

इस विवरण से यह स्पष्ट होता है कि सभी बैंक निरन्तर लाभ में वृद्धि कर रहे हैं। किसी बैंक का गत वर्ष की अपेक्षा प्रतिशत लाभ अधिक है, किसी का कुछ कम। इस प्रगति को देखते हुए यह आशा की जा रही है कि १९६१ का वर्ष बैंकों की दृष्टि से और भी अधिक उत्साह-वर्धक रहेगा। वस्तुतः बैंकों की प्रगति देश के आर्थिक विकास का मापक होता है। बैंकों में कितने डिपोजिट बढ़ रहे हैं या घट रहे हैं, इससे यह अन्दाज किया जाता है कि



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# इंडिया एड क्लब

गत मास के अन्तिम सप्ताह विश्व बैंक ने उन देशों का सम्मेलन बुलाया था जो भारतको तीसरी पंचवर्षीय योजना की पूर्ति में सहायता देना चाहते हैं। इस सम्मेलन में संयुक्तराज्य अमरीका, इंगलैंड, कनाडा, जापान और प. जर्मनी की सरकारों के प्रतिनिधि भाग ले रहे थे। अन्तर्राष्ट्रीय कोष तथा आस्ट्रेलिया और फ्रांस की सरकारों की ओर से भी निरीक्षक इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन ने इस प्रश्न पर विचार किया कि तीसरी योजना के अन्तर्गत भारत को कितनी और किस रूप में सहायता दी जाए।

तीसरी पंचवर्षीय योजना के लक्ष्यों की पूर्ति के लिए करीब २६-२७ अरब रुपयों की विदेशी सहायता की आवश्यकता पड़ेगी।

इस सम्मेलन को वस्तुस्थिति का परिचय देने के लिए भारत सरकार ने एक विवरण प्रकाशित किया। इसके अनुसार भारत पर इस वर्ष के प्रारम्भ में १०१३.४७ करोड़ रुपये का विदेशी ऋण है। इस भारी ऋण की किस्तें और ब्याज का चुकाना भी कठिन समस्या है। ऊक वर्ष हमें ३६.९२ करोड़ रुपए देना था और अब १५७.१७ करोड़ रुपए देना है। आगामी ५ वर्षों में हमें ५५५.९४ करोड़ रुपए चुकाना होगा। इसमें से ३९६.६४ करोड़ रुपया तो मूलधन है और १५९.३० करोड़ रुपए ब्याज के हैं। रूस से भी भारत ने ऋण लिया है; किन्तु वह पदार्थों के निर्यात के रूप में चुकाया जाना है, इसलिए इसकी इतनी कठिन समस्या नहीं है। विश्व बैंक का ही हमने २२२.८९ करोड़ रुपया देना है, जिसमें से ७७.७२ करोड़ रुपया निजी उद्योगों को ऋण के रूप में है। कुछ विभिन्न देशों से हमने जितना रुपया ऋण लिया हुआ है, वह संक्षेप से निम्नलिखित है—अमरीका—३०२.५१ करोड़ रुपया, इंगलैण्ड—११४.८२ करोड़ रुपया, प. जर्मनी १०४.७१ करोड़ रुपया।

कनाडा, जापान और विश्व मुद्रा कोष से भी हमने करोड़ों रुपयों के ऋण ले रखे हैं। यह स्थिति से जिस पर वाशिंगटन में होने वाले सम्मेलन ने गम्भीरता से विचार किया। अमरीका और इंगलैण्ड तो 'इण्डिया एड क्लब' (भारत सहायता क्लब) में जो इस सम्मेलन को नाम दिया गया है, भारत को अधिक सहायता देने का समर्थन कर रहे हैं, किन्तु पश्चिमी जर्मनी का रुख अभी तक निश्चित नहीं हो पाया था। प्रश्न केवल ऋण की विशाल राशि देने का नहीं है, उसे चुकाने के लिए कम सूद, लम्बी अवधि और यथा सम्भव रुपयों में परिवर्तनीयता का भी है।

इंगलैण्ड के एक प्रसिद्ध प्रकाशक ने एक अर्थशास्त्री "इण्डियन इकॉनामिक पॉलिसी एण्ड डेवलपमेंट" नाम की एक पुस्तक प्रकाशित की है। इसके लेखक भारत सरकार की आर्थिक नीतियों से खिन्न प्रतीत होते हैं इसलिए उन्होंने यह सम्मति दी है कि भारत को सिर्फ १०० या १२५ करोड़ रुपये वार्षिक सहायता मिलनी चाहिये इस सम्मेलन ने भारत को सहायता सम्बन्धी अनेक प्रश्नों पर विचार किया और यह निश्चय किया कि विभिन्न तथ्यों पर उनके देशों की सरकारें विचार करेंगी और ३१ मई को फिर 'इंडिया एड क्लब' की बैठक बुलाई जायगी। विदेशी सहायता के संबन्ध अन्तिम निश्चय में विलम्ब होने का प्रभाव भारत की तीसरी योजना पर भी यह असर पड़ेगा की उसका अन्तिम रूप जल्दी निश्चित नहीं हो सकेगा।

---

लोगों में बचत की सामर्थ्य कितनी बढ़ रही है। निम्नलिखित सूची से यह मालूम होगा कि निम्नलिखित बैंकों में १९५८ की अपेक्षा डिपोजिट बढ़ गए हैं। डिपोजिट करोड़ रुपयों में है।

| बैंक | १९५८ | १९६० |
|---|---|---|
| स्टेट बैंक | ४७८.८६ | ५७६.६२ |
| सेंट्रल बैंक | १६१.९८ | १९९.५१ |
| पंजाब नेशनल बैंक | १२९.२७ | १४०.४९ |
| बैंक आफ इंडिया | ८८.२७ | १०९.४४ |
| युनाइटेड कामर्शियल | ७८.२८ | ८८.९५ |
| बैंक आफ बड़ौदा | ६७.१९ | ८४.९८ |

इसी तरह बैंकों द्वारा लिए गए ऋणों से भी यह बात ज्ञात होता है कि बाजार में रुपए की मांग किस तेजी से बढ़ रही है, इस उपयुक्त संक्षिप्त विवेचन से यह मालूम हो गया होगा कि देश में आर्थिक विकास की वृद्धि के साथ-साथ बैंकों का भविष्य भी उज्ज्वल होता जा रहा है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बढ़ता हुआ माल-यातायात : रेलों की व्यवस्था

श्री एस० के० गुह

स्वतन्त्रता से पहले हमारे देश में रेल-यातायात की जो व्यवस्था थी, वह मुख्यतः अंग्रेज शासकों की सैनिक और प्रशासनिक आवश्यकताओं के अनुरूप थी। अतएव स्वतन्त्रता के बाद देश की विकासशील अर्थ-व्यवस्था के अनुसार रेल-यातायात के विभाग की समस्या सामने आई। नीचे दिए गए आंकड़ों से पता चलता है कि पिछले दस वर्षों में, जब से हमने अपनी आर्थिक विकास की योजनाएँ शुरू की हैं, यातायात में कितनी वृद्धि हुई है :

तीसरी योजना में माल-यातायात २४ करोड़ ३५ लाख टन तक पहुंच जाने का अनुमान है। यात्री-यातायात में भी काफी वृद्धि हुई है; केवल तीसरी योजना में यात्री-यातायात २६ प्रतिशत बढ़ा है और तीसरी योजना में १५ प्रतिशत और बढ़ने का अनुमान है।

## रेलों द्वारा ढोया जाने वाला माल

कोयला, सीमेंट, लोहा इस्पात, खनिज, मेंगनीज, लौह या अन्य खनिज, कागज, चाय और पटसन आदि वस्तुओं का यातायात अधिकांशतः रेलों से ही होता है। उद्योगों के लिए कोयला, खनिज, चूना आदि कच्चे माल का यातायात रेलों पर बराबर बढ़ रहा है। आंकड़ों से पता चलता है कि रुई, कपड़ा तथा चीनी आदि का यातायात रेलों पर कुछ कम होता जा रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि रेलों पर कम भाड़े वाले माल का यातायात बढ़ रहा है और ऊँचे भाड़े वाले माल का कम हो रहा है। अनुमान है कि तीसरी योजना में जो २४ करोड़ ३५ लाख टन माल ढोया जाएगा, उसमें से १९६५-६६ में ५४ प्रतिशत माल कम भाड़े वाला होगा। एक हद तक ऊँचे भाड़े के माल का यातायात ट्रक आदि अन्य यातायात-साधनों से अधिक होने लगा है। इसका परिणाम यह होगा कि रेलों पर माल के यातायात की मात्रा तो बढ़ेगी, लेकिन आमदनी उतनी मात्रा में नहीं बढ़ेगी। १९५९-६० में कुल जितने टन-मील माल ढोया गया, उसमें से कोयला, खनिज, पत्थर, चूना और डोलोमाइट का प्रतिशत ३७.३ था। लेकिन माल-यातायात से कुल जितनी आय हुई, उसमें इन वस्तुओं से हुई आय केवल २५ प्रतिशत थी।

यह सभी को पता है कि कोयला तथा कच्चे औद्योगिक माल का भाड़ा राष्ट्रीय नीति के अनुसार कम रखा गया है, जिससे देश के विभिन्न क्षेत्रों को कच्चा माल सुविधा से पहुंच सके और औद्योगिक तथा आर्थिक विकास, सभी जगह सन्तुलित रूप में हो। रेलों का माल-यातायात से होने वाली ७५ प्रतिशत आय नीचे की सारिणी में दी गयी वस्तुओं से होती है। इस सारिणी से पता चलता है कि बड़ी और छोटी लाइनों पर १९५९-६० में इन वस्तुओं पर प्रति टन मील कितना भाड़ा लिया गया।

### १९५९-६० में प्रति टन-मील भाड़ा

(नए पैसे)

| | बड़ी लाइन | छोटी लाइन |
|---|---|---|
| आम प्रयोग के लिए कोयला | ३.३३ | ३.३३ |
| अनाज | ४.६८ | ४.९६ |

| | १९५०-५१ | १९५५-५६ | १९५९-६० | १९६०-६१ (कच्चे) |
|---|---|---|---|---|
| माल-यातायात (लाख टन में) | ९१४ | ११४० | १४४२ | १५४० |
| सूचक अंक | १०० | १२४.७ | १५७.८ | १६८.५ |
| टन-मील (लाख में) | २,६९,६३० | ३,६४,३४० | ५,०१,४९० | ५,४७,२०० |
| सूचक अंक | १०० | १३५.१ | १८६.० | २०२.९ |
| औद्योगिक उत्पादन का सूचक अंक | १०० | १२१.४ | १५१.९ | १६७.५ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | |
|---|---|---|
| तिलन | ६.९३ | ७.७९ |
| कपास और रुई | १४.७५ | १५.०९ |
| कपड़ा | १६.०२ | १७.६३ |
| संगमरमर और पत्थर | ५.८० | ६.०३ |
| नमक | ५.०५ | ५.१९ |
| कच्ची धातुएं | | |
| (क) खनिज मैंगनीज | ७.१९ | ६.७९ |
| (ख) खनिज लौह | ७.४६ | ५.७० |
| (ग) अन्य खनिज | ६.३७ | ७.६३ |
| खनिज तेल | | |
| (क) मिट्टी का तेल | ९.६८ | ९.९६ |
| (ख) पेट्रोल | १७.१३ | १५.५६ |
| (ग) अन्य खनिज तेल | ९.९७ | ९.९५ |
| चीनी | १०.४४ | ९.२७ |
| सीमेंट | ७.३३ | ७.५३ |
| सीमेंट की बनी चीजें | ९.८१ | १०.०४ |
| लोहा और इस्पात | ९.४८ | १०.५० |
| लकड़ी | ६.३० | ७.५८ |
| पटसन | १४.७५ | १७.७३ |
| वनस्पति | ९.३४ | १०.३० |
| फल और सब्जियां | ५.६० | ७.२१ |
| अन्य वस्तुएँ | ६.८३ | ८.४९ |

रेलों पर १ टन माल १ मील तक ढोने पर १९५९-६० में बड़ी लाइन पर औसतन ४.४४ नए पैसे और छोटी लाइन पर ८.१९ नए पैसे खर्च हुआ। ऊपर की सारिणी से पता चलेगा कि बड़ी और छोटी दोनों ही लाइनों पर कोयला ढोने में आय खर्च से कम हुई। छोटी लाइन पर अनाज, तिलहन, संगमरमर और पत्थर, खनिज धातुओं, सीमेंट, लकड़ी और फल तथा सब्जियों के प्रतिटनमील हातायात पर जितना औसत खर्च होता है, उससे आय का औसत कम है। यद्यपि सब चीजों को मिलाकर प्रति टन-मील यातायात के औसत खर्च से प्रत्येक वस्तु के यातायात से होने वाली औसत आय की तुलना करना कुछ ठीक नहीं होगा, लेकिन मोटे तौर पर यातायात पर होने वाले खर्च के अनुसार भाड़े की दर कहां तक ठीक है, इसका उचित अनुमान लगाया जा सकता है।

## रेलों के लिए आवश्यक वस्तुओं की कीमतों तथा कर्मचारियों के वेतनों में वृद्धि

इसी के साथ-साथ यह बात भी उल्लेखनीय है कि यद्यपि कृषि-उपज तथा औद्योगिक उत्पादन काफी बढ़ा है, लेकिन फिर भी योजना-अवधि में चीजों के भाव भी बढ़े हैं। नीचे की सारिणी से पता चलेगा कि रेलों को जिन वस्तुओं की अपने कार्य-संचालन के लिए आवश्यकता होती है, उनके दाम १९५२-५३ को आधार मानकर वृद्धि हुई है :

वर्ष के अन्तिम सप्ताह रेलों के लिए आवश्यक वस्तुओं के मूल्य का सूचक अंक
(आधार १९५२-५३=१००)

| | १९५६ | १९५९ | १९६० |
|---|---|---|---|
| कोयला | १०१ | १३२.७ | १३५.२ |
| खनिज तेल | ९५ | १०८.४ | १०८.६ |
| लोहे और इस्पात की वस्तुएँ | १२६ | १४४.६ | १४८.२ |
| सीमेंट | ९८ | १२९.२ | १२९.२ |
| लकड़ी | ११७ | ११९.० | १३९.५ |
| ईंटें और टाइल | ८७ | ९६.९ | १०५.३ |
| कागज और अखबारी कागज | ९५ | ११५.७ | १०८.१ |
| बिजली | १०० | ११०.३ | ११५.२ |

थोक भावों के मूल्यों का सूचक अंक १९५५-५६ के अंक ९२.५ से बढ़कर १९५९-६० में ११७.१ हो गया और १९६०-६१ के पहले नौ महीनों में १२४.३ तक पहुंच गया।

इसके अतिरिक्त प्रति कर्मचारी तथा उसकी भलाई के कामों पर होने वाला खर्च भी बराबर बढ़ रहा है। १९५०-५१ में प्रति कर्मचारी पर १२६३ रु० औसतन खर्च हुए तथा उसकी भलाई के कामों पर ३४.०४ रु० खर्च हुए। १९५५-५६ में यह खर्च क्रमशः १४७६ रु० और ४९.०४ रु० तथा १९५९-६० में १६६० रु० और ७२.४५ रु० रहा। १९५९-६० के आंकड़ों में अभी वह खर्च शामिल



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं किया गया, जो दूसरे वेतन आयोग की सिफारिशों के परिणामस्वरूप बढ़ेगा।

## खर्च अधिक लाभ कम

इस सब के आधार पर विश्लेषण कर के देखें तो रेलें जितना खर्च करती हैं, उस पर लाभ की मात्रा बहुत कम है। नीचे की सारिणी से स्पष्ट होगा कि यात्री तथा माल-यातायात से होने वाले प्रति १०० रु० लाभ में खर्च का प्रतिशत कितना बैठता है :

प्रतिशत आय व्यय का अनुपात

| | यात्री-यातायात (प्रतिशत) | माल-यातायात (प्रतिशत) |
|---|---|---|
| १९५०-५१ | ८९.६ | ९५.२ |
| १९५५-५६ | ९८.५ | ९०.७ |
| १९५७-५८ | १०३.४ | ८७.९ |
| १९५८-५९ | १०७.५ | ८९.६ |
| १९५९-६० | १०१.९ | ८७.५ |

दूसरी ओर १ अप्रैल, १९५१ से यात्री-किराए में कोई शेष वृद्धि नहीं हुई है। कुछ वृद्धि यात्री-कर के कारण हुई, लेकिन वह राज्य सरकारों को चला जाता है। इसके अतिरिक्त १ अप्रैल, १९५५ से दूरी क्रम के अनुसार किराए निश्चित करने में थोड़ी बहुत घट-बढ़ हुई। मूल्यों के बढ़ने तथा कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि और यात्री-सुविधाओं पर किए गए खर्च के कारण १९५७-५८ से यात्री-यातायात पर आय की अपेक्षा व्यय अधिक हो रहा है। लेकिन यात्री-कर के कारण इस बढ़े हुए खर्च को पूरा करने के रेल-किराया बढ़ाना सम्भव नहीं है। माल-यातायात में १९५०-५१ से आय की अपेक्षा यद्यपि व्यय का अनुपात कम हुआ है, लेकिन फिर भी वह कुछ बहुत नहीं है। इसका एक कारण यह भी है कि रेलों पर ऊँचे भाड़े के माल-यातायात में इतनी वृद्धि नहीं हो रही, जितनी कम भाड़े के माल-यातायात में हो रही है।

## कुशलता बढ़ाने के प्रयत्न

रेलें देश की आर्थिक उन्नति के लिए बराबर यह प्रयत्न कर रही हैं कि उनके अपने कार्य-संचालन-व्यय में कमी की जाए जिससे बिना किराया और भाड़ा बढ़ाए काम कुशलता से चलाया जा सके। इसके लिए अनेक उपाय किए गए। रेल-डिब्बों, पटरियों तथा इंजनों और माल-डिब्बों का उनकी क्षमता के अनुसार अधिक से अधिक उपयोग किया जाता है। नीचे की सारिणी से पता चलता है कि पिछले वर्षों में कितने कम माल डिब्बों और इन्जनों ने कितना अधिक टन-मील माल ढोया है।

प्रतिदिन प्रति १० लाख टन माल ढोने में काम आने वाले डिब्बे तथा इंजन

| वर्ष | बड़ी लाइन के माल-इंजनों की संख्या | बड़ी लाइन के माल डिब्बों की संख्या |
|---|---|---|
| १९३८-३९ | ६६ | २८४९ |
| १९५०-५१ | ५६ | २३०४ |
| १९५५-५६ | ४७ | १८४८ |
| १९५९-६० | ३९ | १६८६ |

इसी प्रकार पटरियों का भी अधिक से अधिक उपयोग किया जा रहा है। १९३८-३९ में प्रति हजार मील पटरी पर प्रतिवर्ष ढोये जाने वाले माल की टनमील संख्या ७४ करोड़ ९० लाख थी। १९५०-५१ में यह संख्या १ अरब २१ करोड़ २० लाख, १९५५-५६ में १ अरब ५७ करोड़ २० लाख और १९५९-६० में २ अरब ५ करोड़ ६० लाख टन-मील हो गयी।

अगले कुछ वर्षों में जैसे-जैसे देश की और आर्थिक उन्नति होगी, रेलों की जिम्मेदारी भी और बढ़ेगी और निश्चित ही रेलें इस जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक पूरा करेंगी। ● ●

विज्ञापन के लिए

**सम्पदा**

सर्वोत्तम

साधन

**सम्पदा, अशोक प्रकाशन मन्दिर**

२८-११ शक्तिनगर, दिल्ली-६



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बिजली की गाड़ियां क्यों ?

श्री एच० डी० अवस्थी

बिजली से रेलगाड़ी चलाने के लिए रेलवे में एक बिजली गाड़ी विभाग खोला गया है।

बिजली से रेल चलाना भाप इंजनों के मुकाबले सस्ता होता है और देखरेख और मरम्मत का खर्च भी कम पड़ता है। भाप के इंजन के लिए बढ़िया किस्म का कोयला चाहिए, जिसकी देश में कमी है। बिजली घरों में जिनसे रेल चलाने को बिजली मिलेगी, घटिया कोयले का इस्तेमाल होता है। बिजली के इंजन अधिक भार खींच सकते हैं।

भाप इंजन की ताप कुशलता ४॥ प्रतिशत होती है जबकि बिजली के इंजन में १४ प्रतिशत। इसके अर्थ यह हैं कि भाप के इंजनों में कोयले की खपत बिजली बनाने में लगने वाले कोयले से तिगुनी होती है।

बिजली के इंजनों की देख रेख और मरम्मत पर भाप-इंजनों का एक तिहाई खर्च पड़ता है, जबकि भाप के ईंजनों की भट्टी उस समय भी गरम रखनी पड़ती है, जब वह रुका रहता है।

जैसे-जैसे भारत में पन-बिजली और बनेगी, वैसे-वैसे बिजली से रेल चलाने का खर्च और कम होता जाएगा।

भाप के इंजनों में कोयला और पानी भरने में काफी समय लगता है। भाप-इंजन को गति पकड़ने में देर लगती है, जबकि बिजली के इंजन तत्काल गति पकड़ लेते हैं। बिजली के इंजनों से भाप इंजनों का ढाई गुना अधिक काम लिया जा सकता है। इन कारणों से संसार के उन्नत देश भाप-इंजन चला रहे हैं।

## प्रगति का विवरण

भारत में पहली योजना के अंत तक बम्बई और मद्रास के शहरी क्षेत्रों में बिजली रेलों का मार्ग २४६ मील था। १९५८ तक पूर्व रेलवे में हावड़ा से बर्दवान तक मुख्य लाइन पर और शिवराफुली-तारकेश्वर ब्रांच लाइन पर ८८ मील पर बिजली लगायी गयी।

बिजली संचालन की तैयारी करने में अन्य मंत्रालय भी सहयोग दे रहे हैं। डाक विभाग तार के रेल लाइनों के साथ लगेंगे और ऊपर से जाने वाले तार हटाकर जमीन के अन्दर तार बिछ रहा है।

३१ मार्च, १९६१ तक बिजली-गाड़ी-विभाग ने पूर्व रेलवे में दुर्गापुर से नीमीघात तक, आसनसोल-सीनी, बोंडामुडा (राउरकेला) से आदित्यनगर (टाटानगर) और डांवापोसी से राजखरसांवां तक बिजली लगाने का कार्य पूरा कर लिया।

दुर्गापुर से गोमो तक और डगवापोसी से राजखरसांवां तक बिजली की गाड़ियां चल भी रही हैं। तीन-चार महीने में चक्रधरपुर से आदित्यनगर (टाटानगर) और सीनी से आसनसोल तथा गोमो से गया तक भी बिजली-गाड़ियां चलने लगेंगी। जैसे ही यह काम पूरा हो जाएगा टाटानगर, बर्नपुर और दुर्गापुर तक बिजली गाड़ियां जाने लगेंगी।

गया से मुगलसराय और टाटानगर से खड़गपुर सेक्शनों में काम अधिक नहीं हुआ है, परन्तु खम्भे और तांबे के कण्डक्टर आदि लगाने का काम काफी हो चुका है।

## देशी सामान लगाया जाएगा

भोपाल के कारखानों में बिजली की रेलों का आवश्यक सामान बन रहा है और देश में ए० सी० बिजली के इंजन और डिब्बे बनने लगेंगे। बंगलौर के टेलीफोन कारखाने में भी नये प्रकार के बहुत से बिजली के सामान बनाये जा रहे हैं। अन्य कारखानों में भी पुर्जे बनाये जा रहे हैं। दक्षिण में एक ऐसा कारखाना खोला गया है, जिसमें ऊँचे वोल्ट के इन्सुलेटर बनाये जा रहे हैं। भारतीय कारखानों में तार भी बनाये जा रहे हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया साहित्य

स्थायी समाज-व्यवस्था—लेखक—जे० का० कुमारप्पा। प्रकाशक—अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ, प्रकाशन, राजघाट, काशी। पृष्ठ सं० २१६ मूल्य २.२५ रु०।

ग्राम-सुधार की एक योजना—लेखक और प्रकाशक—वही। पृष्ठ सं० ८८। मूल्य ७५ न० पै०।

गाँधी विचार के लेखक और प्रकाशक वही। मूल्य १ रु०।

इन पुस्तकों के लेखक स्व० श्री कुमारप्पा देश के उन विद्वानों में से थे, जिन्होंने भारतीय विचारधारा के अर्थशास्त्र का अच्छा अध्ययन किया था। वे पश्चिम के आधुनिक अर्थशास्त्र को देश के लिए हानिकारक मानते थे। प्रस्तुत पुस्तकों में उन्होंने विस्तार से अपने विचारों का प्रतिपादन किया है।

हमारी वर्तमान दृष्टि भौतिकवादी है और श्री कुमारप्पा उसी पर ही कुठाराघात करना चाहते हैं। इसलिए आधुनिक अर्थशास्त्र का विद्यार्थी और पाश्चात्य जीवन-दर्शन का मानने वाला उनके विचारों को एकदम आत्मसात् नहीं कर पायेगा। किन्तु इसी कारण यह पुस्तक और भी अधिक उपयोगी हो गई है कि वह पाठक को झकझोर कर दूसरे दृष्टिकोण का भी दर्शन कराने का प्रयत्न करती है। यह दृष्टिकोण नैतिक है। गांधीजी का यह दावा था कि वर्तमान अर्थव्यवस्था विश्व को पतन की ओर ले जा रही है। वे तो आधुनिक अर्थशास्त्र को अनर्थशास्त्र कहा करते थे। लेखक ने उनके विचारों को शास्त्रीय और सुसम्बद्ध रूप देने का प्रयत्न किया है। वर्तमान अर्थशास्त्र का मूलभूत सिद्धान्त मानव की आवश्यकताओं की वृद्धि है, किन्तु सर्वोदय अर्थशास्त्र ऊँचे विचार और सादा रहन-सहन के आदर्श को मानता है।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने मानवीय विकास के विभिन्न चरणों की चर्चा करते हुए मूल्यांकन, जीवन का स्तर, श्रम विभाग आदि के सम्बन्ध में वर्तमान मान्यताओं का जिस तरह खण्डन किया है, वह पाठक के लिए सोचने को पर्याप्त विचार सामग्री देता है। हम 'सम्पदा' के पाठकों की जानकारी के लिए इसमें से कुछ उदाहरण भविष्य में देने का प्रयत्न करेंगे।

प्रथम पुस्तक के दूसरे भाग में लेखक ने योजना, योजना के स्वरूप, कृषि और उद्योग की उन्नति के लिए अनेक उपयोगी सुझाव दिये हैं तथा वर्तमान समस्याओं के व्यावहारिक स्वरूप पर प्रकाश डाला है। वे व्यापारिक फसलों के—तम्बाकू, तिलहन, गन्ना आदि के उत्पादन पर वहाँ तक प्रतिबन्ध लगाने की सम्मति देते हैं, जहाँ तक वह अन्न के उत्पादन में बाधक बनता है। वे कृषि को जीवन-क्रम बनाना चाहते हैं न कि एक परावलम्बी उद्योग। वे ट्रैक्टर-कृषि के विरोधी हैं क्योंकि उनकी सम्मति में ट्रैक्टर कुछ समय बाद भारत की भूमि को अनुपजाऊ कर देगा। वे ग्राम को नगरों पर आश्रित न रखकर स्वावलम्बी बनाना चाहते हैं। इसीलिए वे मिलों और नगरों की प्रतिस्पर्द्धा से ग्राम-उद्योगों की रक्षा करना चाहते हैं। बड़े उद्योग देश में न केवल बेकारी फैलाते हैं, किन्तु शोषण, अनैतिकता और हिंसा को भी प्रथम देते हैं।

दूसरी पुस्तिका में भी उन्होंने उक्त विचारों का ही प्रतिपादन किया है। वे अत्यन्त दृढ़ शब्दों में कहना चाहते हैं, कि देश के लिए कोई योजना नई दिल्ली में नहीं बन सकती। गांवों के विकास को आधार मानकर ही भारत की विकास योजनाएँ बनाई जा सकती हैं जबकि सरकार की वर्तमान योजनाएँ लोहे, सीमेन्ट और बिजली आदि उद्योगों को लेकर चलती हैं। उन्होंने इस पुस्तक में योजना की एक रूपरेखा भी दी है जो विचार करने योग्य है।

हमारी नम्र सम्मति में गांधीवादी अहिंसाप्रधान अर्थशास्त्र मांस-भक्षण को उपयोगी नहीं मानता, परन्तु विद्वान लेखक ने मुर्गी पालन, मछलियों की खेती आदि की चर्चा की है। इसका अहिंसक की दृष्टि में क्या उपयोग है, यह हमारी समझ में नहीं आया।

तीसरी पुस्तक में भी उक्त विचारों का समर्थन किया गया है। इसके अन्त में समाजवाद, साम्यवाद और गांधी अर्थनीति पर एक तुलनात्मक विचारपूर्ण लेख दिया गया है, जो मनन करने के योग्य है।





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान के दृश्य—लेखक—श्री सी० वी० रमन, अनुवादक—श्री रामचन्द्र तिवारी। प्रकाशक—प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, दिल्ली। पृ० संख्या ८७, मूल्य ७५ न० पै०।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक श्री रमन भारत के ही नहीं, विश्व के विख्यात वैज्ञानिक हैं। पिछले २५ वर्षों में विज्ञान में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं, उनकी कुछ चर्चा लेखक ने अपने अनेक लेखों में की है। वस्तुतः १९ वीं सदी का यदि कोई वैज्ञानिक आज आकर न्यूट्रोन, रिएक्टर, कास्मिक किरणों, इलैक्ट्रोन, मीज़ोन, आइसोटोप आदि शब्दों को सुने तो वह भी इन सबका अर्थ पूछने लगेगा। वस्तुतः पिछले ३०-३५ वर्षों में मानव ने प्रकृति के अन्तः में प्रवेश करके अद्भुत रहस्यों का उद्घाटन किया है। प्रस्तुत पुस्तक में श्री रमन ने अनेक लेखों में प्रकृति के अद्भुत आश्चर्यों की चर्चा की है और बताया है कि भौतिकी का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है। "१९ वीं शताब्दी की भौतिकी अभी मरी नहीं है, परन्तु वह नयी भौतिकी की विशाल इमारत की तुलना में मन्द पड़कर पृष्ठ भूमि में अदृश्य हो गयी है। नयी भौतिकी का सम्बन्ध मुख्यतः ब्रह्माण्ड की अन्तिम संरचना से है।" विद्वान लेखक भौतिकी विज्ञान को गणित का उच्च रूप मानते हैं। ब्रह्माण्ड के बारे में भी अनेक लेख इस पुस्तक में मिलते हैं। विज्ञान के प्रेमियों के लिए यह पुस्तक लाभकारी होगी।

देशबन्धु चितरंजनदास—लेखक—श्री हेमेन्द्रनाथ दास। प्रकाशक वही, मूल्य दो रुपये।

भारत सरकार ने एक माला में उन महान देशभक्तों का परिचय देने का प्रस्ताव किया है जिनका भारत के नव निर्माण में विशेष भाग रहा है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में बंगाल के नेता श्री देशबन्धु चितरंजनदास का जीवन परिचय है। पुस्तक के लेखक श्री देशबन्धु के घनिष्ठ सहकारी रहे हैं, इसलिए वे उनकी हार्दिक भावनाओं को भली-भांति समझते हैं। यह पुस्तक वस्तुतः केवल एक व्यक्ति का जीवन नहीं है किन्तु दो दशकों का भारतीय स्वाधीनता-संग्राम का इतिहास भी है। पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों में उनके दो लेख दिये गये हैं जिनमें से एक बंगाल की संस्कृति पर है और दूसरा स्वाधीनता के अर्थ पर। ये दोनों लेख अत्यन्त विचारपूर्ण हैं और पाठक को काफी विचार सामग्री देते हैं। श्री देशबन्धु यद्यपि उच्चकोटि के वकील थे किन्तु भारतीय विचारधारा उनके हृदय में विद्यमान थी। उनके ये शब्द हमें स्मरण रखने चाहिएँ कि 'कृत्रिम अंग्रेजियत हमारे मा[illegible] में बाधा बन गयी है। उसके कलुषित पदचिह्न हमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र एवं कार्य में दृष्टिगोचर होते हैं। हम देवालयों के स्थान में सभा भवन बनाते हैं। दान जैसे शुभ कार्यों के लिए नाटकों का आयोजन और मनोरंजन का विक्रय करते हैं। हम अपने राष्ट्रीय तथा स्वास्थ्यवर्द्धक खेलों को छोड़कर विविध प्रकार के विदेशी खेल अपनाते हैं। हम अपने पहनावे, विचार, भावनाओं, संस्कृति सभी दृष्टियों से मिश्रित किस्म के हो गये हैं। सम्भव है कि पाश्चात्य आदर्शों के अनुकरण के इस नये उन्माद में एक दिन हम यह भी भूल जायें कि धन केवल साध्य है, साधन नहीं। आज तो पाश्चात्य सभ्यता का जिस तरह प्रचार हो रहा है, उसे देखते हुए श्री देशबन्धु की वेदना कितनी हो जाती, इसकी हम कल्पना कर सकते हैं।

१. हीरे की लौंग।

२. संगठन में बल।

प्रकाशक वही, मूल्य एक-एक रुपया।

प्रस्तुत दोनों पुस्तकें बालकों के लिए प्रकाशित की गई है। दोनों पुस्तकों में पशु-पक्षियों की कहानियाँ हैं। प्रत्येक कहानी सचित्र है और बालक की रुचि और योग्यता के अनुकूल है।

बारह आविष्कार—प्रकाशक—अमेरिकी सूचना विभाग, नई दिल्ली।

इस छोटी-सी पुस्तिका में उन बारह वैज्ञानिक आविष्कारों की सक्षिप्त कहानी है, जिन्होंने दुनिया को बदल दिया। इन आविष्कारों में स्टीम बोट, कटनी (फसल काटने वाली) मशीन, सिलाई की मशीन, टैलीग्राफ (तार) टैलीफोन, टाइपराइटर, ऐटोमैटिक, टाइप सैटर, ग्रामोफोन विद्युत शक्ति का आविष्कार, वायुयान आदि आविष्कारों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। पुस्तिका की छपाई, सफाई और गेटअप बहुत आकर्षक है। कुछ लेखों में शायद अंग्रेजी का प्रति पंक्ति अनुवाद छापा गया है, इससे कोई पंक्ति बहुत छोटी और कोई बहुत बड़ी हो गयी है जैसे अतुकान्त कविता हो जो हिन्दी में छापी जाती है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तृतीय योजना में श्रम नीति

भारत की तीसरी पचवर्षीय योजना का शुभारम्भ हो चुका है। इस दूसरी योजना के विकास कार्यों के लिए पिछली पचवर्षीय योजनाओं की भाँति श्रम-नीति का निर्धारण भी किया जा चुका है। किसी भी योजनाबद्ध विकास कार्य में श्रम-नीति-निर्धारण परम आवश्यक हो जाता है। हमारी सरकार के श्रम-मन्त्री श्री नन्दा ने स्वाभाविक रूप से तीसरी योजना में अपनी श्रम-नीति का निर्धारण कर लिया।

मन्त्री महोदय के निश्चय तथा नीति निर्धारण के अनुसार मूल-भूत सिद्धान्त तथा नीति में कोई परिवर्तन नहीं किया जायगा, हालाँकि अनुभव के आधार पर कुछ छुट-पुट बातों में नई नीति स्वाभाविक रूप से प्रयोग में लाई जाया करेगी।

आपसी समझौते पर अधिक बल दिया जायगा। त्रिद-पक्षीय (सरकार-मालिक-मजदूर) और द्विपक्षीय (मजदूर-मालिक) समझौतों को सरकार अधिक प्रोत्साहन देना चाहेगी। मालिक मजदूरों के झगड़े को निर्णय के लिये ट्रिब्यूनल के समक्ष उपस्थित करने की प्रवृति व विधि को यदि सम्भव हो सकेगा, हतोत्साहित किया जायेगा। इसका मुख्य उद्देश्य औद्योगिक क्षेत्र में शाँति कायम रखना और उत्पादन वृद्धि को निरन्तर बढ़ावा देना है। परन्तु इसका यह तात्पर्य कदापि न होगा कि मजदूर सँगठन व मजदूर आन्दोलन को शिथिल कर दिया जायगा। सरकार मजदूर संगठन की मजबूती पर अधिक ध्यान देगी। कामगारों की समतियों को और मजबूत किया जायगा और श्रमिकों को औद्योगिक प्रबन्ध में अधिकाधिक भाग लेने के सिद्धान्त को व्यावहारिक रूप देने की कोशिश की जायगी। अधिक वेतन मण्डलों की स्थापना की जायगी। वेतन कमीशन की स्थापना तो पहले ही की जा चुकी है। 'ट्रेड, यूनियन, के कार्य सँचालन के लिये निरीक्षण की समुचित व्यवस्था की जायगी। श्रमिकों के शिक्षण के लिये अनेक प्रकार से शिक्षा की पूरी-पूरी सुविधायें जुटाने की कोशिश की जायगी।

जिन सूती वस्त्र की मिलों ने, जिन्होंने वेतन मण्डल की सिफारिश को अभी तक अपने यहाँ लागू नहीं किया उन्हें 'मण्डल' की सिफारिशों को मानने के लिये कानूनन वाध्य किया जायगा। ४२६ सूती मिलों में से ३५१ ने अभी तक वेतन मंडल की सिफारिशों को अपने यहाँ लागू कर दिया है।

सीमेण्ट उद्योग में ३२ फैक्टरियों में से १० ने तो सिफारिशों को पूरी तरह लागू कर दिया है और ७ ने आंशिक रूप में। श्रम-मन्त्री ने उत्तर प्रदेश और मैसूर के प्रधान मन्त्रियों को आदेश भी दे दिया है कि वेतन मण्डल की सिफारिशों को राज्यों में शीघ्र ही अमल में लाया जाय। पश्चिमी बंगाल में १०० जूट मिलों, जो 'भारतीय जूट मिल संघ के सदस्य हैं, ने भी वेतन मण्डल की सिफारिशों को अमल में लाना स्वीकार कर लिया है। उत्तर प्रदेश की ३ जूट मिलों ने भी इस ओर पग बढ़ा लिया है। बीड़ी उद्योग में यही संभावना है।

## विकास में श्रमिकों का योगदान

"यह स्पष्ट है कि कर्मचारी जब तक सद्भावना और मेहनत से काम नहीं करेंगे तब तक अधिक औद्योगिक क्रान्ति नहीं हो सकती। वास्तव में उन्हें यह जानना चाहिए कि वे भारत में निर्माण के लिए काम कर रहे हैं और उन्हें इसी को ध्यान में रखकर अपने को देश के औद्योगीकरण का एक अंग मानना चाहिए।

"हम प्रगति के रास्ते में आने वाले झगड़ों में अपना बहुमूल्य समय और शक्ति बरबाद नहीं कर सकते। इसलिए हमें सभी विवादों से दूर रहना चाहिए और अपनी समस्याओं को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने का रास्ता खोजना चाहिए। हमें ध्यान में रखना चाहिए कि हमारी उन्नति उतनी ही होगी, जितना हम सब काम करेंगे।

—श्री जवाहरलाल नेहरू





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारांश यह है कि श्रम-नीति का पालन स्वेच्छा से प्रगति-शीलता की ओर बढ़ती जा रहा है।

## श्रमिकों की मांगें

यमुनानगर में राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस ने जो प्रस्ताव पास किये हैं, उनमें से कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव निम्न आशय के हैं। एक प्रस्ताव द्वारा लौह और इस्तपात उद्योग के लिये वेतन-मण्डल नियत करने का स्वागत किया गया क्योंकि पहली बार सरकारी उद्योग के सम्बन्ध में ऐसा कदम उठाया गया। अन्य उद्योगों के लिये भी वेतन-मण्डल नियत करने की मांग की गई। दूसरे प्रस्ताव द्वारा उद्योगों के प्रबन्ध में श्रमिक उत्साह से भाग ले सकें, इसकी अपील की गई। एक और प्रस्ताव में विकास योजनाओं में मजदूरों के हार्दिक सहयोग का वचन दिया गया और सरकार से अनुरोध किया गया कि वह आर्थिक शक्तियों के विकेन्द्रीकरण की दिशा में मजदूर संघों का अधिक उपयोग करे। एक प्रस्ताव में आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों के चढ़ाव को रोकने तथा उचित स्तर पर स्थिर करने का सरकार से अनुरोध किया गया। बोनस आयोग की स्थापना का भी स्वागत किया गया। यथा संभव तालाबन्दी को रोकने की दृष्टि से अनिवार्य पंचनिर्णय की दिशा में कानून बनाने का समर्थन किया गया। ग्रेच्चुटी के लिये कानून बनाने, दुर्घटनाओं को रोकने की व्यवस्था, क्षति-पूर्ति की राशि अधिक करना; नौकरी की सुरक्षा; सरकारी कर्मचारियों को अधिक वेतन देने आदि के प्रस्ताव भी स्वीकृत किये गये।

# श्रम-समस्या

## रा० म० कां० की दृष्टि में

हमारा—राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस—का यह भी दावा है कि उद्योगपतियों पर अधिक कर लगाए जाने चाहिये, क्योंकि उद्योगों की उन्नति और इनकी समृद्धि का मूल कारण पूँजीपतियों और उद्योगपतियों की व्यवस्था-क्षमता और कार्य-कुशलता नहीं है बल्कि जनता की कुर्बानियाँ, श्रमिकों की कमर-तोड़ मेहनत और सरकार की दूरदर्शितापूर्ण आयोजन-नीति ही इस विकास का आधार है।

इस कमजोरी को दूर करने का एक तरीका यह है कि सरकारी क्षेत्र को विकसित किया जाए। सरकार ने यह नीति अपनाई है और हम इसका स्वागत करते हैं। लेकिन सार्वजनिक क्षेत्र के और अधिक विकास से तभी फायदा हो सकता है, जब कि उसका संचालन अत्यन्त दक्षतापूर्वक हो। सार्वजनिक उद्योगों को और निजी उद्योगों को निजी उद्यमों के लिए एक उच्च उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिये जिससे उसकी उत्पादकता, उत्पादन तथा संचालन-दक्षता में वृद्धि हो।

यहाँ हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि यदि श्रमिक अधिक वेतन या बोनस की माँग करते हैं तो वे भिक्षा या दान नहीं माँगते वश्रमिक माँगता है अपने उत्पादन में उचित भाग, और यह वह अवश्य लेगा।

श्री खण्डूभाई देसाई

## श्रमिकों के वेतनों में वृद्धि

१९५१ से १९५८ तक विभिन्न उद्योगों में २०० रूपये से कम वेतन लेने वाले श्रमिकों के वेतनों में निम्नलिखित वृद्धि हुई है—

वस्त्र उद्योग २५ प्रतिशत
रासायनिक ५०.६ प्रतिशत
सीमेन्ट ५३.४ प्रतिशत
पैट्रोल और कोयला ६२.४ प्रतिशत
मशीनरी ३२.४ प्रतिशत
धातवी उद्योग २९.३ प्रतिशत
कागज़ उद्योग ३५.५ प्रतिशत

## ब्रिटेन में अमरीकी पूंजी

आज ब्रिटेन में २० मजदूरों के पीछे १ मजदूर अमरीकी फर्मों में काम करता है। जहां द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व ८० मजदूरों में से १ मजदूर उनकी फर्मों में काम करता था। इस कदर अमरीका ब्रिटेन की अर्थ-व्यवस्था में महत्वपूर्ण भागीदार हो गया है। साउथ हैम्पटन विश्वविद्यालय के कामर्स विभाग की एक रिपोर्ट में बताया गया कि १९५९ तक अमरीका की पूंजी का हित २४७५० लाख डालर तक पहुंच गया और दिसम्बर १९६० तक यह राशि ३२००० लाख डालर पहुंच गई जो अमरीका की विदेशी पूंजी का अंश है। रासायनिक उद्योग में काफी बड़ी रकम लगी हुई है। ब्रिटेन कुल राष्ट्रीय आय का १२.१८ प्रतिशत प्राप्त करता है।

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# हथकर्घे के वस्त्र की निर्यात समस्या

श्री देवीप्रसाद नौटियाल

आज तक विश्व के चार महाद्वीपों के बाजारों पर भारतीय हथकर्घे के कपड़े का प्रभुत्व-सा बना चला आ रहा था। हथकर्घे से निर्मित कपड़े की उन देशों में भारी खपत है परन्तु परिस्थितियां प्रतिकूल होती जा रही हैं। आज उत्पादन में अकुशलता और लापरवाही के कारण तथा विदेशी ग्राहकों को आकर्षित न कर सकने के कारण हथकर्घे के कपड़े की मांग कम होती जा रही है।

कई वर्षों तक यूरोप, एशिया, अफ्रीका और अमेरिका के हमारे माल के नियमित ग्राहक रहे हैं। लेकिन अब इनमें से प्रत्येक देश में हथकर्घे के कपड़े की मांग तीव्रगति से गिरती जा रही है। हमारे हथकर्घे के वस्त्र का बाजार इससे किस गति से हटता जा रहा है यह निम्न आंकड़ों से स्पष्ट होता है—

आज से ५ वर्ष पूर्व भारत ने ५९,८६८,००० गज हथकर्घे के कपड़े का निर्यात किया, जिसकी कुल कीमत ८६७१७,००० रुपये थी। पिछले वर्ष निर्यात घट कर २८,८०१,००० गज रह गया, जिसकी कुल कीमत ५०,१४२,००० रुपये थी। और लक्ष्यों के अनुसार १९५६ में लंका ने कुल २१,७४४,००० गज कपड़े का आयात किया जिसका मूल्य कुल ३१,३७६,००० रुपये था। १९६० में उसने कुल १३७९५००० रुपये के ७२,६८,००० गज कपड़े का आयात किया। इसी तरह जहां नाइजीरिया २,१३,३२,००० रुपये के मूल्य का १,२५०,०४,००० गज कपड़े का आयात किया था, वह अब केवल ४२,१९००० रुपये के मूल्य का २६,४२,००० गज कपड़ा आयात किया।

## स्थिति

कुछ समय पूर्व विदेशों में इम्पोरियम स्थापित करने और मांग बढ़ाने के लिये ट्रेवलिंग सेल्समैनों की नियुक्ति पर ३,५०,००० रुपये व्यय कर दिये गये। तीनों

### हथकर्घे के कपड़े का निर्यात

( हजार गज में ) (मूल्य हजार रुपये में)

| देश | १९५६ गजों में | १९५६ मूल्य रुपयों में | १९५९ गजों में | १९५९ मूल्य रुपयों में | १९६० गजों में | १९६० मूल्य रुपयों में |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ब्रिटेन | ७९५ | ११९३ | ७२२ | १४१६ | ६४६ | १२७२ |
| बहरीन | २६१३ | ३२६० | १७२२ | २३२८ | २७०६ | ४१८५ |
| कुवैत | ७५९ | ३३७ | १४० | ४१ | १९ | ४७ |
| लंका | २१७४४ | ३१३७६ | १२६६३ | २३२३१ | ७२६८ | १३७९५ |
| सिंगापुर | २९०३ | ५२२० | २३९८ | ४७३९ | २८२० | ६०८९ |
| मलाया | ६४८३ | १२३४२ | ४२९५ | ७९९७ | ५३०७ | ९७४५ |
| रोडेशिया | १२००४ | २१३३२ | २४२२ | ३४५८ | २६४२ | ४२१९ |
| केनिया | ६०३ | ५४७ | ९३ | १६५ | १७३ | ३०८ |
| ओमान | ५९७ | ५०५ | ४० | ३७ | १९ | २८ |
| सूडान | १३२० | १११३ | १७१८ | १५३९ | १८२४ | १५५८ |
| संयुक्त राज्य अमेरिका | — | — | ६०१९ | १६६६५ | २०६५ | ४७७७ |
| अन्य | १०,०४५ | ९,७९२ | ३३५२ | ४२५५ | ३२७२ | ४१२३ |
| कुल जोड़ | ५९८६८ | ८६७१७ | ३५५८४ | ६५,९११ | २८८०१ | ५०१४२ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कामर्शियल ट्रेवलरों' को प्रतिवर्ष ३६,००० रुपया दिया गया और यात्रा का भत्ता ५०,००० रुपया दिया गया। ७ इम्पोरियमों की स्थापना में प्रत्येक पर ३००० रुपये मासिक व्यय के हिसाब से २,५२,००० रुपये वर्ष भर में खर्च हुआ। यदि इन उपर्युक्त धन राशियों को उपयुक्त ढंग से प्रयुक्त किया जाता तो इनसे इच्छित नतीजा निकल जाता। परन्तु हुआ यह कि ये धन-राशियां पानी की तरह बह गईं।

भारतीय हथकर्घे के वस्त्र अपनी विशिष्टता रखते हैं, परन्तु अमरीकी और यूरोपीय व्यापारी बड़े-बड़े आर्डर देने में वष प्रतिवर्ष कतराते हैं अथवा उदासी दिखाते हैं। संभवतः उनकी नवीनता का आकर्षण कम होता जा रहा है।

विदेशों में भारतीय हथकर्घे के वस्त्र की मांग कम होने का एक कारण यह है कि भारतीय उत्पादक उपयुक्त स्तर कायम नहीं रख सके। विदेशी-मुद्रा के अर्जन में इस तरह की असावधानी बरतना निश्चय ही दुखदायी वस्तुस्थिति है। कपड़ों की मशीनों से धुलाई करके उनको चमकदार तथा साफ करने में ढील की गई। कपड़े को ठीक रीति से 'श्रिन्क' नहीं किया गया। शेड का भी विशेष ध्यान नहीं रखा गया। कपड़े के 'अरज' में भी देश के अनुसार उचित परिवर्तन नहीं किया गया, क्योंकि लोगों की मांग हर एक देश में एक जैसी नहीं है। भिन्न-भिन्न देशों की रुचि में भी अन्तर होता है। उदाहरण के लिए अमरीका को ही ले लीजिये। वहां लोग मशीन से धुला और अच्छी तरह से प्रैस्ड कपड़ा ज्यादा पसन्द करते हैं। चार वर्ष पूर्व अमरीकी विशेषज्ञ भारत आये थे और उन्होंने उत्पादकों को यही राय दी थी कि वे कुछ फैशन के कपड़े तैयार करें और कुछ घरेलू इस्तेमालों के लिये जैसे पर्दा, टेबुल क्लौथ आदि तैयार करें।

हमें यह देखना होगा कि अमरीकी अपने पहने, खेल-कूद के लिये और विशेष अवसरों के लिए किस तरह के कपड़े पसन्द करते हैं। अमरीकी लाखों करोड़ों डालर हर वर्ष अपने घर, होटल, जहाज, रेलगाड़ियों, स्कूलों, थियेटरों और व्यापार कारोबार के कार्यालयों को सजाने में खर्च करते हैं।

हथकर्घे के वस्त्र के निर्यात के लिये यह आवश्यक है कि सरकार और उत्पादक तथा उत्पादक संस्थायें पुर जोर से उत्पादन कार्य में जुट जायं और उन समस्त साधनों को व्यवहार में लाये जिनसे भारत का विदेशी बाजार सुरक्षित बना रहे। अन्तः राज्यीय व्यापार की दिशा में भी नये सिरे से प्रयत्न करने होंगे, जिसमें सभी महत्वपूर्ण नगरों में विशाल इम्पोरियम स्थापित हों, जहां विदेशी पर्यटक व विदेशी व्यापारी सभी नमूनों की सामग्री का आराम से निरीक्षण कर सकें और अपनी मनपसन्द के नमूने की चीजें खरीद सकें। ● ●

# गोसेवा का आर्थिक और नैतिक मूल्य

आज की संस्कृति ने इस प्रकार की गाय तैयार की है जो रोज़ ३० से ६० पौंड दूध देती है। गाय एक मशीन मात्र बन चुकी है जो सुबह-शाम ३०-४० पौंड दूध देती हैं, लेकिन जब गाय सूख जाती है तब संसार में उस गाय के लिए कोई स्थान नहीं है। हिन्दुस्तान की संस्कृति ने वनस्पति, पक्षी और पशु को परिवार समझकर अपने समाज में स्थान दिया। प्रकृति के सन्तुलन का अगर हम ख्याल नहीं करेंगे तो नुकसान अवश्यमेव होगा।

गाय की समस्या बड़ी इसलिए है कि संस्कृति ने संशोधन करके तय किया है कि मनुष्य जाति को बचाने के लिए मनुष्य मात्र की ही नहीं, परन्तु पशु, पक्षी—और वनस्पति को भी बचाना होगा। । वर्षा सिर्फ इन्सान के लिए ही नहीं, वरन् पशु, पक्षी सब के लिए होती है।

गोसेवा की समस्या को हम दो दृष्टियों से देखते हैं। एक तो प्रकृति का संतुलन कायम रखने के लिए और दूसरे अर्थ नीति की दृष्टि से। गोसेवा के ज़रिये ही खेती होती है। गोपालन न हो तो खेती कैसे होगी? किसान को जमीन दे दी, लेकिन उसके पास बैल न होगा तो वह क्या करेगा?

हिन्दुस्तान को ४० करोड़ एकड़ जमीन जोतना है बोना है, तो कितने जोड़ी बैल चाहिए? हालत ऐसी है कि बैल नहीं हैं इसलिये भैंसों को जोतना पड़ता है। लोग कहते हैं कि ट्रैक्टर से खेती करेंगे। इसलिए ४० लाख ट्रैक्टर हो तो हिन्दुस्तान की खेती हो सकती है। ४० लाख

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट्रैक्टर के लिए ८० करोड़ रुपयों की आवश्यकता है। जहां हर साल २,००९ करोड़ रुपये लगेंगे। हिन्दुस्तान जैसे गरीब देश की २०० साल तक ट्रैक्टर खरीदने की ताकत नहीं है। ट्रैक्टर हम कैसे चला सकेंगे? २४० साल के बाद हर साल ५,००० नये ट्रैक्टर कहाँ से लायेंगे। छोटा सा मुल्क हो तो वहाँ ट्रैक्टर की बात कर सकते हैं लेकिन हिन्दुस्तान जैसा लम्बा व चौड़ा और गरीब देश क्या ऐसी बात कर सकता है? नतीजा यह होता है कि छोटे किसान ज्यादा अमीर और गरीब ज्यादा गरीब हो जाते हैं। कुदरत की सारी रचना ऐसी है जब बनस्पति की रक्षा की जाय, तो पेड़ बढ़ते हैं और बनस्पति व धरती की सेवा की जाये तो अन्न और मिलता है।

श्री उ. न. ढेवर

● ●

( पृष्ठ २२८ का शेष )

इस के भेद के कारण ही पावर लूम बहुत अधिक लाभ में रहते हैं। सूती मिलों को यह शिकायत है कि करघों से तो लोगों को ज्यादा रोजगार मिलता भी है पावर लूम तो रोजगार को भी नहीं बढ़ाते, फिर इतनी रियायतें पावरलूमों को क्यों दी जाती हैं।❀

## देश में मिलों की संख्या

| | |
|---|---|
| बम्बई नगर व उपनगर | ६५ |
| अहमदाबाद | ७१ |
| महाराष्ट्र व गुजरात के शेष भाग | ७७ |
| राजस्थान | ११ |
| पंजाब | ६ |
| दिल्ली | ७ |
| उत्तर प्रदेश | २९ |
| आंध्र प्रदेश | १५ |
| मध्य प्रदेश | २० |
| बिहार | २ |
| उड़ीसा | ३ |
| प. बंगाल | ३९ |
| मद्रास | ३९ |
| केरल | १४ |
| मैसूर | १९ |
| पांडिचेरी | ३ |
| कुल | ५१६ |

❀ लेखक के अंग्रेजी लेख का भावानुवाद।

( पृष्ठ २३१ का शेष )

(५) योजनाओं को क्रियान्वित करने में अनावश्यक देरी की जाती है, लाल फीताशाही का बोलबाला है।

(६) योजनाओं की सबसे कटु आलोचना है—सुरक्षा की किसी योजना में कृषि श्रमिकों को शामिल नहीं किया गया है, जबकि औद्योगिक श्रमिकों की तुलना में खेती हर श्रमिकों की दशा अधिक शोचनीय है।

## वी० के० मेनन कमेटी के सुझाव

स्वर्गीय बापू के शब्दों में, "जनता की आंखों से आंसू पोंछने के लिए भारत में सामाजिक सुरक्षा की नितान्त आवश्यकता है।" श्री वी० के० मेनन अध्ययन मंडल ने भारत में सामाजिक सुरक्षा योजना को अधिक सफल बनाने के लिए निम्न सुझाव दिये हैं—

(१) वर्त्तमान श्रमिक प्राविडेन्ड फन्ड योजना को वैधानिक पेन्शन योजना में परिणित कर दिया जाय।

(२) श्रमिकों के लिए बेरोजगारी लाभ योजना चालू की जाय।

(३) श्रमिक बीमा योजना व प्राविडेन्ट फंड योजना का संयुक्त रूप से संचालन करने के लिए एक केन्द्रीय समिति बनाई जाय।

● ●

## इस दृष्टि से भी देखिये

# मानवीय मूल्य

चावल की कमी के कारण लोग भूखों मर रहे हैं और उधर चावल की काश्त की जमीनों में साबुन की फैक्टरियों के लिये आवश्यक नारियल की काश्त हो रही है। मालाबार के कई गांवों में धान की काश्त करीब २० प्रतिशत कम हो गई है और वहां नारियल के झाड़ों के बन उठाये गये हैं। इन झाड़ों के नारियल साबुन बनाने के लिये मिलों को भेज दिये जाते हैं अर्थात् उन जगहों में अब धान के एवज में साबुन उगाया जा रहा है। और इधर देहाती चावलों के अभाव में भूखों मर रहा है। इस हालत से यह स्पष्ट है कि केवल रुपयों-पैसों में कूती जाने वाली कीमत मनुष्य की सच्ची आवश्यकता की द्योतक नहीं मानी जा सकती।"

—कुमारप्पा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारे उद्योग

## सन् १९६० में लक्ष्य से अधिक उत्पादन

इस वर्ष, जो दूसरी योजना का अन्तिम वर्ष है, देश में अनेक उद्योगों में विदेशी मुद्रा की कठिनाई के बावजूद लक्ष्य से अधिक उत्पादन हुआ। बहुत से उद्योगों में लक्ष्य से अधिक उत्पादन हुआ। डीजल इंजन, मशीनी औजार, चीनी मिल की मशीनरी, मोटर, सीमेंट, बिजली व पंखे, बालबेयरिंग, सिलाई की मशीन, साइकिल के टायर, गंधक का तेजाब और सोडा ऐश का उत्पादन खास तौर से बढ़ा। सन् १९६० में ६३६ करोड़ रु० का निर्यात (कच्चे आंकड़े) हुआ, जो पिछले वर्ष से १६ करोड़ रु० अधिक था। आयात १,००० करोड़ रु० का हुआ, जबकि १९५९ में ९४० करोड़ रु० का हुआ।

## तीसरी योजना में ४ उर्वरक कारखाने

संयुक्तराष्ट्र शिल्पिक सहायता मण्डल द्वारा प्रेषित जो रासायनिक उद्योग जांच दल ने भारत सरकार से सिफारिश की है कि तीसरी योजना में रासायनिक खाद के चार नये कारखाने खोले जांय। हर कारखाने में ८५ हजार टन नत्रजन तैयार किया जा सकेगा। यह भी सुझाव दिया गया है कि ये कारखाने गोरखपुर, अंकलेश्वर, एन्नौर या तुत्तीकुडी और मंगलौर में खोले जाएं।

## २० करोड़ रु० वार्षिक के प्लास्टिक के माल का उत्पादन

आजकल देश में लगभग २० करोड़ रु० वार्षिक का प्लास्टिक का कच्चा और पक्का माल तैयार होता है। अब ५ उद्योगों और आम इस्तेमाल के लिए प्लास्टिक का हर तरह का माल ढाला जाने लगा है। दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंत में देश में प्लास्टिक का कच्चा माल तैयार करने की उत्पादन क्षमता २०,००० टन प्रतिवर्ष होने का अनुमान लगाया गया। तीसरी पंचवर्षीय योजना के लिए इसका लक्ष्य ८६ हजार टन रखा गया है। पिछले वर्ष भारत से लगभग ७३ लाख रु० का प्लास्टिक का सामान बाहर भेजा गया। १९६१-६२ में १ करोड़ रु० का प्लास्टिक का सामान बाहर भेजने का लक्ष्य है। प्रतिवर्ष इसका निर्यात २५ लाख रु० बढ़कर तीसरी योजना के अन्त तक २ करोड़ वार्षिक हो जाएगा।

राष्ट्रीय उद्योग विकास निगम की वार्षिक रिपोर्ट में बताया गया है कि १९५९-६० में निगम ने उद्योग विकास की १८ योजनाओं के बारे में प्रारम्भिक पड़ताल की। जिन योजनाओं के बारे में पड़ताल की गयी, उनमें से कई योजनाएं सरकारी क्षेत्र में शुरू भी की जा चुकी हैं। ये हैं: जीव रसायन, पाइराइट से गंधक बनाना, कच्ची फिल्में तैयार करना, बिजली के भारी सामान का दूसरा और तीसरा कारखाना, गढ़ाई कारखाना, भारी मशीनें बनाना, कोयला खान मशीनों का निर्माण, भारी मशीनी औजार और ऐनकों के शीशे।

रिपोर्ट में कहा गया है कि औषधियां बनाने के लिए हाल ही में एक नयी कम्पनी रजिस्टर की गयी है। भारी इमारती सामान, अलमूनियम, सूक्ष्म यंत्र आदि उन योजनाओं के बारे में अभी और पड़ताल की जा रही है और आशा है कि जल्दी ही सरकारी क्षेत्र में इन उद्योगों के कारखाने शुरू हो जाएंगे। गन्ने की खोई से अखबारी कागज बनाने और रेयन की लुगदी की योजनाओं को छोड़ दिया है।

## तीसरी योजना में जहाजरानी

तीसरी योजना में जहाजरानी के लिए ५५ करोड़ रु० की जो रकम रखी गयी है, उसमें से ३५ करोड़ रु० जहाजरानी विकास कोष के लिए निर्धारित किए जाएंगे। इन ३५ करोड़ रु० में से १५ करोड़ रु० ट्रम्प जहाज और १० करोड़ रु० टैंकर जहाज खरीदने के लिए रखे जाएंगे। ८-१० करोड़ रु० अन्य जहाज खरीदने के लिए रखे जाएंगे।

आजकल भारत को मालवाहक जहाजों की बहुत जरूरत है, क्योंकि देश से लोहे का काफी निर्यात और अन्न का आयात हो रहा है। अतः सरकार मालवाहक जहाज बनाने को काफी प्रोत्साहन देगी।

आजकल भारत के पास तेल आदि ले जाने वाले तेल जहाज हैं। सरकार इन जहाजों की संख्या बढ़ाना चाहती है। अतः सरकार ने हाल ही में निजी क्षेत्र में कुछ और टैंकर जहाज खरीदने की छूट दी है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी योजना में ९ लाख टन के जहाजों का लक्ष्य पूरा हो चुका है। पिछले १२ महीनों में तीन नयी जहाज कम्पनियां खुली हैं। इनमें से एक ने ३० हजार टन के चार जहाज खरीदे हैं। एक कम्पनी ने यूगोस्लाविया से ७.८ हजार हजार टन के जहाज खरीदने का समझौता किया है। तीसरी कम्पनी नित्सुभूम शिपिंग कम्पनी से ३०-३० हजार टन के चार माल वाहक जहाज खरीदने का कर किया है। ये जहाज डीजल से चलने वाले होंगे।

दो सरकारी जहाजरानी निगमों को मिलाया जा रहा यह नया निगम इस साल के मध्य तक भारत के पश्चिमी तट से आस्ट्रेलिया तक भी जहाज चलाने लगेगा।

## १९६०-६१ में सबसे अधिक चावल हुआ

खाद्य और कृषि मंत्रालय के अर्थ और अंक संकलन निर्देशालय की विज्ञप्ति में कहा गया है कि १९६०-६१ में चावल व अखिल भारतीय अन्तिम प्राक्कलन के अनुसार इस साल ८ करोड़ ३३ लाख ३५ हजार एकड़ जमीन में धान की खेती हुई और ३ करोड़ ३७ लाख टन चावल हुआ। इतना चावल कभी नहीं हुआ। सन् १९५९-६० के आंशिक संशोधित प्राक्कलन के अनुसार, ८ करोड़ २८ लाख २९ हजार एकड़ में धान की खेती हुई थी और ३ करोड़ ९ लाख ६३ हजार टन चावल पैदा हुआ था। अर्थात् १९६०-६१ में ५ लाख ६ हजार एकड़ यानी ०.६ प्रतिशत अधिक जमीन में धान की खेती हुई और २७ लाख ३७ हजार टन, यानी ८.८ प्रतिशत अधिक चावल हुआ।

आलोच्य वर्ष में प्रति एकड़ औसतन ९०६ पौंड, अर्थात् पिछले साल से ८.२ प्रतिशत अधिक चावल हुआ। का सदस्य बाने का लक्ष्य रखा गया है।

## हिन्दुस्तान लीवर

हिन्दुस्तान लीवर भारत की एक प्रसिद्ध कम्पनी है, जिसके उत्पादन प्रायः देश के प्रत्येक भाग में मिलते हैं। इसका मुख्य कारण कम्पनी की शुभ-व्यवस्था है कम्पनी के उपाध्यक्ष श्री पी० एल० टंडन के वार्षिक सभा में दिये गये भाषण से यह ज्ञात होता है कि कम्पनी अपने माल को तैयार करने से पहले किस तरह बाजार की रुचि को जानने का प्रयत्न करती है। उसकी सेवा में नियुक्त सैकड़ों लड़कियां घर जाकर लोगों की रुचि को पहचानते और अपने माल की पसन्दगी का प्रयत्न करती है। किसी भी माल को बाजार में भेजने से पहले भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में उसका टेस्ट किया जाता है। अपने माल के वितरण का भी कम्पनी ने समुचित प्रबन्ध किया हुआ है। १९५४ में कम्पनी के उत्पादन १४०० बाजारों में ३,८०,००००० जनता की सेवा करते थे अब वे ६५०० बाजारों में जाकर ९ करोड़ १० लाख जनता की सेवा करते हैं। कम्पनी के संचालकों का यह दावा ठीक मालूम होता है कि सारे देश में बहुत कम काम ऐसे होंगे जहाँ सनलाइट साबुन न जाता हो। देहातों के क्षेत्रों उसके उत्पादन चार गुने बिकने लगे हैं। श्री टंडन का यह विचार ठीक है कि विकास-शील अर्थव्यवस्था में नगरों की अपेक्षा गाँवों में अधिक सफलता और विस्तार की गुंजाइश है।

● ●

## वित्तीय बिल स्वीकृत

१९६१ का वित्तीय बिल पार्लियामेंट द्वारा स्वीकृत हो चुका है बिल में कुछ संशोधन तथा परिवर्तन किये गये हैं। ४.५० करोड़ रुपये के कर कम कर दिये गये हैं मिट्टी के तेल और १ से १० यूनिट पावर लूम पर से कर कम कर दिया गया है। दरी व गलीचे बनाने में जो ऊन प्रयुक्त होता है उस पर भी करों में कुछ कमी कर दी गई है। काफी अखबारी कागज, कांच का सामान आदि पर भी करों में कमी आदि के संशोधन भी वित्तमंत्री ने स्वीकार किये हैं। इन सबके कारण कुल ६.१४ करोड़ रुपये की कमी आय में होगी। वित्तमंत्री को यह आशा है कि अधिक उत्पादन और अधिक कारोबार से यह कमी कमी नहीं रहेगी।

इस अधिवेशन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों के संबन्ध में काफी विवाद रहा। कुछ सदस्यों ने अप्रत्यक्ष कर कम करने और प्रत्यक्ष कर बढ़ाने की मांग की किन्तु वित्तमंत्री ने इसे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने करों में जो थोड़े बहुत संशोधन किये हैं, उनसे अनेक उद्योगों को थोड़ी-बहुत राहतें अवश्य मिलेंगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सामुदायिक विकास

१. अक्टूबर, १९६३ तक सारा देश सामुदायिक विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत आ जाएगा। २ अक्टूबर, १९५२ में गांधी जयन्ती के दिन इस कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इस समय ३,१०० विकास खण्ड चालू हैं। इन के अन्तर्गत ४ लाख गांव हैं जिनके २० करोड़ निवासियों को इससे लाभ हो रहा है।

२. शुरू में लगभग २०० विकास खण्डों में सामुदायिक विकास चालू हुआ था और वर्ष में ही इनकी संख्या १ हजार हो गई थी।

३. इस कार्यक्रम में विभिन्न महकमों द्वारा गांवों के विकास की भरपूर कोशिश की जाती है और विशेष कर जनता का सहयोग लिया जाता है। इसका मुख्य लक्ष्य है कि गांव के लोग स्थानीय साधनों का पूरा उपयोग करें और सरकारी एजेंसियों के सहयोग से अपनी उन्नति अपने आप करें।

४. सामुदायिक विकास में खेती, सिंचाई, मछली और पशुपालन पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

५. लोगों का रहन-सहन सुधारने के लिए चिकित्सा, स्वास्थ्य और शिक्षा का विस्तार किया गया है, और खेल-कूद, नाटक, गीत के लिए युवकों और स्त्रियों के क्लब बनाए जाते हैं। पर इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सभी ओर पैदावार बढ़ाना है।

६. अनाज की उपज बढ़ाने के लिए पंचायतों और सहकारियों की सलाह तथा सहयोग से खेती के कार्यक्रम बनाए जाते हैं। सरकार ऋण, उर्वरक और अन्य सहायता देती है। राज्यों के कुछ गांवों में कई कार्यक्रम तैयार किए गए। प्रत्येक कार्यक्रम में उस क्षेत्र की आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता है।

७. खेती के काम में बढ़ावा देने के लिए शिक्षित ग्राम-सेवक और ग्राम-सेविकाएँ हैं, जो पंचायत आदि स्थानीय संस्थाओं से सम्बद्ध होते हैं। इस समय देश भर में ३१ हजार ग्राम-सेवक और २,८०० ग्राम-सेविकाएँ काम कर रही हैं।

८. किसानों को खेती के नए और अच्छे तरीके बताने के लिए लगभग ३,२०० कृषि विस्तार अधिकारी हैं। ये गांव-गांव जाकर किसानों को बताते हैं। इनके अलावा २,८०० पशुपालन विस्तार अधिकारी हैं, जो पशुओं को पालने और उनसे लाभ उठाने की विधियां बताते हैं।

९. शिक्षा, सहकारिता आदि में सहायता के लिए ३,३५० समाज शिक्षा अधिकारी, २,६०० सहकार विस्तार अधिकारी और १,५५० समाज-शिक्षा संगठन-कर्त्रियां हैं।

१०. शुरू से ही सामुदायिक विकास कार्यक्रम से जनता के प्रतिनिधियों का सम्बन्ध रहा है। पर अब गांवों के विकास के कार्यक्रमों को बनाने और चलाने की जिम्मेदारी पंचायतों को सौंपी जा रही है।

११. अब तक राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश, मद्रास, उड़ीसा, मैसूर, आसाम में पंचायती राज अर्थात् गांव पंचायतों की स्थापना हो चुकी है और कुछ अन्य राज्यों में आवश्यक कानून बनाए जा रहे हैं।

१२. सामुदायिक विकास कार्यकर्ताओं को ट्रेनिंग देने के लिए कई संस्थाएँ हैं। कार्यकर्ताओं को काम सिखाने के साथ उनमें जन-सेवा का भाव भी भरने की कोशिश की जाती है।

१३. मसूरी की सामुदायिक विकास अध्ययन और अनुसन्धान संस्था के अलावा, देहरादून में प्रशिक्षकों की शिक्षण संस्था भी है। इसके अलावा राज्यों में समाज-शिक्षा संगठनों, ग्राम-सेवकों और सेविकाओं आदि की ट्रेनिंग के लिए केन्द्र हैं।

१४. गरीब लोगों को सामुदायिक विकास से कैसे अधिक से अधिक लाभ हो, इस पर विचार और सुझाव देने के लिए श्री जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में समिति स्थापित की गई है।

**'सम्पदा' आगामी अंक से नये आकर्षणों के साथ प्रकाशित होगी।**



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ वृत्त चयन

## भारत में चीनी मंहगी नहीं है

इण्डिया शूगर मिल्स एसोसिएशन के सेक्रेटरी लिखते हैं कि भारत में चीनी के दाम अन्य देशों की अपेक्षा बहुत अधिक नहीं हैं। अधिकांश देशों से वे कम ही हैं। अपने विचार की पुष्टि में उन्होंने इन्टर नेशनल शूगर कौंसल की चीयर बुक से किम्नलिखित अंक उद्धृत किये हैं विदेशी बाजारों में जो मूल्य उद्धृत किये जाते हैं, वे अपने देश के फुटकर मूल्यों से बहुत अधिक कम होते हैं। १ जनवरी १९६० को भिन्न-भिन्न देशों मे प्रतिपौण्ड चीनी के मूल्य अमेरिकन मुद्रा सैंट में निम्नलिखित थे—

| देश | मूल्य |
|---|---|
| आस्ट्रेलिया | ९.३ |
| बेल्जियम | १३.७ |
| कम्बोडिया | १३.४ |
| श्रीलंका | १३.४ |
| डोमीनिकन रिपब्लिक | ११.९ |
| इथोपिया | ११.० |
| फिनलैण्ड | १६.५ |
| फ्रांस | ११.५ |
| पूर्वी जर्मनी | १९.४ |
| पश्चिमी जर्मनी | १३.५ |
| हंगरी | १९.९ |
| भारत | १०.१ |
| इण्डोनेशिया | ५.९ |
| इरान | २२.१ |
| इटली | १७.६ |
| जापान | १७.६ |
| पाकिस्तान | १६.१ |
| फिलीपाइन | ९.० |
| सूडान | ९.० |
| थाइलैण्ड | १६.१ |
| टर्की | १६.४ |
| यू. ए. आर. | १५.७ |
| ब्रिटेन | ९.३ |
| अमेरिका | ११.६ |
| यूगास्लेविया | २५.७ |

(१०० सैण्ट १ डालर ४.७५ रु०)

## एक अर्थ शास्त्री के परामर्श

सरदार वल्लभ भाई विद्यापीठ के अर्थ-शास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो० आर० के० अमीन ने एक भाषण देते हुए कहा है कि यदि हम पिछले अनुभवों से लाभ उठा सकें तो आगामी ३० वर्षों में आर्थिक दृष्टि से हम बहुत उन्नति कर सकेंगे। उन्होंने विकास योजनाओं को अधिक प्रभावकारी बनाने के लिए कुछ परामर्श भी दिये हैं, जिनमें से मुख्य परामर्श निम्नलिखित हैं—

१—योजना आयोग का संगठन बदलकर इसे केवल परामर्शदाता मण्डल का रूप देना चाहिए। योजना आयोग को राजनीतिज्ञों से अलग करके केवल अर्थ-विशेषज्ञों तथा शिल्प-विशेषज्ञों का संगठन बनाना चाहिए।

२—सांख्यिकी विभाग केवल कुछ अंकों का संग्रह करने वाली संस्था न बने, किन्तु वह सरकार तथा भिन्न उद्योगपतियों को परामर्श और उपयोगी सूचनाएँ देने वाली संस्था भी बने।

३—राष्ट्र के साधन-स्रोतों का मित-व्ययत के साथ उपयोग हो सभी अनावश्यक व्यय यथाशीघ्र खत्म कर देने चाहिये।

४—हमारी योजना काफी लचकीली होनी चाहिए। वस्तुतः योजना में ३ या ४ विकल्पों की गुंजाइश रहनी चाहिए, ताकि आवश्यकता पड़ने पर किसी एक योजना की बजाय दूसरी योजना शुरू की जा सके।

५—मुद्रा की स्थिरता पर अधिक ध्यान दिया जाय और घाटे की अर्थ-व्यवस्था का आश्रय न लिया जाय।

६—हमारी तीसरी पन्चवर्षीय योजना बहुत महत्वकांक्षापूर्ण नहीं होनी चाहिए। चादर के अनुसार ही हमे पांव पसारने चाहिएँ।

७—सहायता और ऋण आदि सुविधाएँ देने की आदत को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए। यथा सम्भव



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब उद्योगों को स्वावलम्बी बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

## ब्रिटेन पर अमरीकी छाया !!

आज ब्रिटेन में २० ब्रिटिश मजदूरों में से एक मजदूर अमरीकी औद्योगिक फर्मों में काम करता है, जबकि द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व मजदूरों में से केवल एक मजदूर अमरीकी फर्मों में काम करता था। अमरीकी पूँजी ब्रिटेन की अर्थ-व्यवस्था में किस प्रकार अपना प्रभुत्व स्थापित करती जा रही, यह इसी से पता चल जाता है। साउथ-हैम्पटन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डा० जॉन डनिंग ने अपने एक लेख में लिखा है कि १९५९ के अन्त तक ब्रिटेन में अमरीकी पूजी २४७५० जाख डालर तक पहुंच गई है। दिसम्बर १९६० तक यह राशि ३२,००० लाख डालर तक बढ़ गई है, जो अमरीका की विदेशी पूँजी का $\frac{1}{10}$ भाग है जिन आर्थिक क्षेत्रों में अमरीकी पूँजी लगी है, वे मुख्य तथा रासायनिक आदि हैं। ब्रिटेन के कुल बिक्री में ३२.८ प्रतिशत अमरीकी फर्मों का हिस्सा है।

## छुट्टियां

स्वाभाविक रूप से मनुष्य यह चाहता है कि उसके काम करने के ढंग में इस तरह से परिवर्तन हो कि उसे कम से कम समय में काम करके अधिक से अधिक उसका फल मिले। और जो भी व्यक्ति काम के घंटे बढ़ाने की बात करेगा वह अवश्य घृणा की दृष्टि से देखा जायगा। इस आशय के विचार श्री सी० एच भामा ने भारतीय बैंक संघ के वार्षिक सम्मेलन में व्यक्त किये।

ऐसा क्यों है? इसका सहज प्रकटीकरण यह है कि जब श्रमिक श्रम करता है तो उस समय वह यह सोचता है कि यह उसकी मजबूरी है कि उसे मालिक के लाभ के लिए काम करना होता है। इसलिए वह अधिक आराम के लिए छुट्टियां चाहता है। दूसरा कारण देश जाति और समाज के रीति-रिवाजों का है जिसमें लोगों के संस्कार उसी तरह के बन जाते हैं। उदारण के लिए भारत में तीर्थ और व्रत के दिन बहुत अधिक हैं क्योंकि पहले भारत में मालिक-मजदूर का रिस्ता ही नहीं था। तब हर काम सामूहिक रूप से सामूहिक हित के लिये किया जाता था। तीसरा कारण यह है मजदूर को यह जानकारी भली प्रकार से है कि मशीनों के प्रयोत का लाभ मालिक की जेब में जाता है और वह जल्दी जल्दी एक ही वर्ष में इतना अधिक कमा लेता है जितना वह बिना मशीन के २० वर्ष में भी नहीं कमा सकता। इन उपर्युक्त कारणों से श्रमिक छुट्टियों से अधिक लगाव रखता है, जिनमें वह आराम करना चाहता है।

यदि किसी देश की उन्नति वहाँ मनाई जाने वाली छुट्टियों से आंकी जाय तो भारत सबसे अधिक उन्नत देश कहलाया जाना चाहिये। निम्न आंकड़े बहुत दिलचस्प हैं:

| | प्रतिवर्ष सार्वजनिक छुट्टिया | | |
|---|---|---|---|
| ब्रिटेन | १० | ,, | ,, |
| अमरीका | ११ | ,, | ,, |
| भारत | २७ | ,, | ,, |
| जापान | २२ | ,, | ,, |

उत्तर पश्चिमी यूरोप में सार्वजनिक छुट्टियों के दिन ब्रिटेन से भी कम हैं।

भारत में अलग अलग राज्यों में छुट्टियों की संख्या में अलग अलग है—

मद्रास १७ दिन, केरल १९, बंगाल २४ दिन
आन्ध्र १७ दिन, मैसूर १९, महाराष्ट्र २७ दिन

महाराष्ट्र में सबसे अधिक उन्नति तथा प्रगतिशील राज्य है और छुट्टियां भी अधिक वहीं होती हैं। सादे जीवन की भारतीय सभ्यता में छुट्टियों का अधिक होना कोई आश्चर्य तथा बुरी बात नहीं है। पाश्चात्य देश गुलामी प्रथा के शिकार रहे हैं इसलिये वहाँ छुट्टियों का कम होना स्वाभाविक है।

## सिर के बालों के जापानी व्यापारी

एक समाचार के अनुसार जापानी व्यापारी भारतीय स्त्रियों के चमकीले काले बालों के आयात के लिये पूछ-ताछ कर रहे हैं। कहा जाता है कि बालों की शोभा का मूल्य उतना नहीं होगा जितने कि उससे मिलने वाली विदेशी मुद्रा का। विदेशी व्यापारी भारत की बहिनों से इस प्रकार का उपहास करेंगे, यह सम्भावना किसी को न थी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अधिकतम सम्पत्ति वाली ५० कम्पनियां

नीचे ५० कम्पनियों की सूची उनकी पूँजीगत सम्पति के अनुसार दी जा रही है। यह सूची उद्योग और वाणिज्य मंत्रालय के अनुसन्धान तथा सांख्यिकी विभाग के संचालक डा० राज के० निगम और श्री एस. सी. सीनियर रिसर्च ऑफिसर की 'कारपोरेट सेक्टर इन इण्डिया' रिपोर्ट से उधृत की गई है।

—सम्पादक

| कम्पनियों के नाम | कुल पूँजीगत सम्पति (रुपये १०००) |
|---|---|
| टाटा आइरन एण्ड स्टील कं० | ९८२८७८ |
| इण्डियन आइरन एण्ड स्टील कं० | ५३९६७४ |
| ऐसोशियेटेड सीमेण्ट | ४०५७७५ |
| बर्माशैल रिफायनरीज | ३७७५५४ |
| सीन्धिया स्टीम नेवीगेशन | ३६३५२८ |
| सिन्द्री फरटीलाईजर | २३६५४९ |
| टाटा लोको एण्ड इजीनियरिंग कं० | २७२२११ |
| इम्परियल टुवाको कं० | २७१५१४ |
| हिन्दुस्तान स्टील | २६९३४८ |
| स्टैंडर्ड वैकुम रिफायनरी कं० आफ इंडिया | १८५२५२ |
| दिल्ली क्लौथ एण्ड जनरल मिल्स कं० | १७७६०७ |
| टाटा पावर कं० | १न०६७७ |
| हिन्दुस्तान एयर क्राफ्ट प्रा० | १४९४३० |
| इरिया स्टीमशिप कं० | १४६८४७ |
| औद्योगिक विनियोजन निगम | १३०८६५ |
| अहमदाबाद बिजली कं० | १२४४६० |
| राष्ट्रीय कोल विकास निगम | १११५२४ |
| रोहतास इंडस्ट्रीज | ११८४३८ |
| हिन्दुस्तान लीवर | १०९६६९ |
| हिन्दुस्तान मोटर्स | १०८५८४ |
| जीयाजी राव कॉटन मिल्स | १०४३९५ |
| डनलप रबर कं० (इण्डिया) | १०४३१३ |
| महेन्द्र एण्ड महेन्द्र | १०३४३१ |
| ब्रिटिश इण्डिया कारपोरेशन | १०२४५० |
| बर्न एण्ड कं० | ९८३९० |
| ब्रुक बॉंड (इण्डिया) प्रा० | ९५१३८ |
| स्वदेशी काटन मिल्स कं० | ९९४४५ |
| बम्बई बर्मा व्यापार कं० | ८८१४६ |
| प्रिमियर आटोमोबाइल्स | ८७०७४ |
| नेशनल रेयन | ८६७६७ |
| हिन्दुस्तान शिपयार्ड प्रा० | ८६१५३ |
| ईस्टर्न शिपिंग | ८५४३० |
| नैवेली लिगनाइट | ८२९१९ |
| न्यू सेंन्ट्रल जूट मिल्स | ८२७५७ |
| अरियट पेपर मिल्स | ८१९०० |
| इण्डियन टेलिफोन इंडस्ट्रीज | ८०८०१ |
| मार्टिन बर्न लिमिटेड | ८०३०० |
| बकिंघम एण्ड कार्नाटक | ७९८७१ |
| आन्ध्र वैली पावर सप्लाई क० | ७६८२४ |
| टाटा सन्स प्रा० लिमिटेड | ७६५०७ |
| टीटागढ़ पेपर मिल्स लिमिटेड | ७६०१४ |
| मदुरा मिल्स क० लिमिटेट | ०५६११ |
| बम्बई डाइंग मैनुफैक्चरिंग | ७४७७० |
| इण्डियन केबल्स कं० | ७४२०० |
| जार्डिन हैंडरसन | ७३९४७ |
| सेन्चुरी स्पिनिंग एण्ड क० | ७३०२६ |
| निजाम शूगर फैक्टरी | ७२३४२ |
| सिरसिल्क लिमिटेड | ७२१३७ |
| कैलिको प्रिन्टिग | ७१७८५ |
| नेशनल न्यूज प्रिंट एण्ड पेपर मिल्स | ७०३२६ |

**स्थायी ग्राहकः**—पत्र व्यवहार करते समय ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा उत्तर देने में कठिनाई होगी। संभव है उत्तर जा ही न सके।

—मैनेजर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत के उद्योगीकरण में सोवियत सहायता

सोवियत संघ ने भारत को भिलाई लौह एवं इस्पात कारखाना निर्मित करने में मदद की, जो प्रतिवर्ष १० लाख टन इस्पात तैयार कर सकता है। इसकी वार्षिक उत्पादन क्षमता को २५ लाख टन तक बढ़ाने के लिए सोवियत सहायता से काम शुरू हो गया है।

१९५८ में सोवियत विशेषज्ञों ने भारत को खम्भात में तेल भण्डार खोजने में मदद की, और १९६० में अंक्लेश्वर और रुद्रसागर में नये तेल-भण्डारों का पता लगाने में सहायता दी।

अंक्लेश्वर के तेल-भण्डार इतने विशाल साबित हुए हैं कि इसी वर्ष १,५०० टन तेल प्रतिदिन पैदा करने की योजना है। १९६५ के अन्त तक वहाँ का तेल-उत्पादन २०-२५ लाख टन प्रति वर्ष तक पहुँच जाएगा।

इस समय सोवियत संघ विभिन्न समझौतों के अनुसार भारत को कई महत्वपूर्ण कारखाने खड़े करने में सहायता दे रहा है—भारी इन्जीनियरिंग के कारखाने, जो प्रतिवर्ष ८०,००० टन मशीनें तैयार करेंगे, खान उद्योग के लिए मशीनें और यन्त्रादि तैयार करनेवाले कारखाने जिनकी उत्पादन-क्षमता ४५,००० टन प्रतिवर्ष होगी, और बिजली की भारी मशीनें तथा सूक्ष्म औजार व यन्त्र तैयार करने के कारखाने इनमें शामिल हैं।

चार औषधि-निर्माण कारखानों, और नैवेली, कोर्बा व सिंगरौली में ८,५०,००० किलोवाट क्षमता के बिजली घरों के निर्माण में, बरौनी में २० लाख टन प्रतिवर्ष की क्षमता के एक तेल-शोधक कारखाने और कोयला आयोग सम्बन्धी अनेक-संस्थानों के निर्माण में सोवियत संघ भारत को तकनीकी सहायता प्रदान कर रहा है।

इसी साल २१ फरवरी को एक नया सोवियत-भारत समझौता हुआ है। इसके अन्तर्गत भाखड़ा में ४,८०,०९० किलोवाट बिजली पैदा करने वाले पनबिजलीघर के निर्माण में, गुजरात में २९ लाख टन प्रतिवर्ष की क्षमता के एक तेल-शोधक कारखाने के निर्माण में, एक ताप-सह ईंटों के कारखाने (रिफ्रेक्टरीज वर्क्स) की स्थापना में, ३० लाख टन प्रतिवर्ष की उत्पादनक्षमता वाले कोयला शोधक (कोल कन्सट्रेशन) कारखाने के निर्माण में और तेल की खोज तथा तेल निकालने के कामों में भी सोवियत संघ भारत को तकनीकी सहायता देगा।

ये सब उद्यम भारत के आर्थिक विकास के लिए तीसरी पंच-वर्षीय योजना (१९६१-६६) के अत्यन्त महत्वपूर्ण अभिन्न अंग हैं, जो उसके औद्योगीकरण और आर्थिक स्वाधीनता के लिए एक महत्वपूर्ण योग प्रदान करेंगे। सोवियत सहायता से खड़े किये जाने वाले भारी मशीनरी कारखाने की वार्षिक उत्पादन-क्षमता इतनी काफी होगी कि भिलाई जैसे विशाल इस्पात कारखाने का निर्माण उसके द्वारा सुनिश्चित रूप से हो सके।

खान-मशीनरी तैयार करने के कारखाने का वार्षिक उत्पादन इसके लिए काफी होगा कि प्रतिवर्ष ८० लाख टन कोयले के उत्पादन के काम का मशीनीकरण किया जा सके।

बिजली के भारी सामान तैयार करने का कारखाना प्रतिवर्ष भारत का २ करोड़ से अधिक रुपया बचायेगा जो इस समय उसे विदेशों से बिजली की भारी २० मशीनरी खरीदने में खर्च करना पड़ता है। साथ ही इस सामान के लिए भारत को अमरीका, पश्चिमी जर्मनी, जापान तथा अन्य देशों पर निर्भर नहीं रहना होगा।

## मूल्य निर्धारण

योजना आयोग तीसरी योजना की अवधि के लिए पदार्थों के मूल्य निर्धारण पर गंभीरता से विचार कर रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य अनाज, वस्त्र, चीनी, मिट्टी का तेल आदि वस्तुओं के मूल्य इस तरह निर्धारित करना है कि उनका परस्पर सन्तुलन बिगड़ने न पाये। दूसरी योजना की अवधि में मूल्यों में २५ प्रतिशत—५ प्रतिशत वार्षिक की वृद्धि हुई है। मूल्य न बढ़ने देने की दिशा में पदार्थों के उपभोग को नियंत्रित कर देने की दिशा में विचार किया जा रहा है ताकि एक ओर लोग कुछ बचा सकें और दूसरी ओर अतिरिक्त पदार्थों का निर्यात हो सके।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं

## खेत-मजदूरों की आर्थिक स्थिति

खेत मजदूरों की आर्थिक स्थिति सुधारने के सम्बन्ध में सलाह देने के लिये बनाई गयी योजना आयोग की केन्द्रीय सलाहकार समिति ने अनेक सिफारिशें की हैं। समिति ने सिफारिश की है कि जो जमीन उपलब्ध हो, उसे भूमिहीन खेत मजदूरों को बांटने के बारे में कलैक्टर को सलाह देने के लिए राज्यों में बने सलाहकारी मंडल के अतिरिक्त प्रत्येक जिले में भी एक सलाहकार समिति नियुक्त की जानी चाहिये। समिति के अनुसार सरकार भूमि को सुधारने, अधिकतम भूमि की सीमा निर्धारित करने तथा भूदान से कितनी भूमि खेत मजदूरों में बांटने के लिये प्राप्त होगी, तथा वह इस निष्कर्ष पर पहुंची कि तीसरी योजना में ५० लाख एकड़ भूमि में भूमिहीन खेत मजदूरों के ७ लाख परिवारों को बसाने का कार्यक्रम शुरू किया जाना चाहिए। समिति ने सिफारिश की कि जो कहीं अधिक जमीन प्राप्त हो तो भूमिहीन खेत मजदूरों की सहकारी कृषि संस्था को दिया जाना चाहिये। भूमि के छोटे-छोटे टुकड़ों को जल्दी से जल्दी बांट देना चाहिए और जहां कहीं बांटी हुई भूमि के सुधार की आवश्यकता हो उसे भूमि पाने वाले पर ही जोड़ दिया जाना चाहिये। एक सिफारिश के अनुसार सरकार ने १० करोड़ रु० खर्च करके भूमिहीन खेत मजदूरों के मकान बनाने के लिये जो जमीन प्राप्त की है, उसे ५० लाख परिवारों को मुफ्त देना चाहिये। समिति ने प्रत्येक परिवार को, यदि आवश्यक हो तो, मकान बनाने के लिये १५० रुपये सहायता देने की भी सिफारिश की। इसमें से एक चौथाई राशि सहायता तथा तीन चौथाई ऋण के रूप में होगा। एक चौथायी ऋण के रूप में होगी।

समिति ने ऐसे काम शुरू करने पर विशेष जोर दिया जिससे देहातों के नेरोजगार या कम रोजगार वाले लोगों को काम मिले। इस सम्बन्ध में समिति को बताया गया कि देहाती जन-शक्ति का सार्वजनिक लाभ के कामों में तथा निर्माणकारी कामों में उपयोग करने के लिए योजना आयोग ने हाल ही में ३४ आजमाइशी योजनाएं स्वीकार की हैं। समिति ने इस कार्यक्रम का अध्ययन करने के लिये एक उपसमिति नियुक्त करने का निर्णय किया।

—श्री मनुभाई शाह उद्योग मन्त्री ने कलसूर (उत्तरी कन्नड़) में रेयन बनाने वाले एक बहुत बड़े कारखाने की आधार शिला रखी है। इस पर दस करोड़ रुपये व्यय का अनुमान है। यह कारखाना रेयन बनाने का सबसे बड़ा कारखाना है। यह उद्योग फ्रांस के एक उद्योग संस्थान के साथ मिलकर तैयार किया जा रहा है।

## सुई गैस का मूल्य

पाकिस्तान सरकार ने भारत को इंधन मंत्रालय से कहा है कि वह पहले यह बताये कि पाकिस्तान से निकलने वाली सुई-या माड़ी गैस का किन-किन क्षेत्रों में प्रयोग हो सकेगा और कितने समय तक प्रयोग की गारटी देगा। यह जानकारी प्राप्त करने के बाद ही पाकिस्तान यह बता सकेगा कि वह इस गैस का क्या मूल्य कर सकता है।

## मादक तमाखू का अधिक उत्पादन

—गत सात वर्षों में भारत में सिगरेटों का उत्पादन लगभग दुगना हो गया है, यह बात भारत में तम्बाकू की बिक्री पर प्रकाशित एक रिपोर्ट में बताई गई है। सन् १९५९-६० में भारत में ३२ अरब सिगरेटें बनाई गईं जबकि सन् १९५२-५३ में १८ अरब बनाई गई थीं। रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत विश्व में तम्बाकू का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। अमरीका व चीन के बाद उसका नम्बर आता है। वर्ष में ७० करोड़ पौंड तम्बाकू पैदा होता है जिसमें से ८० प्रतिशत से अधिक बीड़ी-सिगरेट, हुक्के आदि में भारत में ही खप जाता है। शेष के निर्यात से देश को १५ करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा की आमदनी होती है। भारत का यह तम्बाकू करीब ५० देशों



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भेजा जाता है । इसके अतिरिक्त भारत सरकार को तम्बाकू पर विभिन्न करों में ५० करोड़ रुपए वार्षिक की आय होती है और करीब इतनी ही राशि तम्बाकू उगाने वाले किसानों को भी प्राप्त होती है।

लेकिन क्या यह योजनापूर्वक आर्थिक समृद्धि का एक चित्र है ? क्या अन्य आवश्यकताओं को इससे पूर्व प्राथमिकता नहीं मिलनी चाहिए ?

क्या दीर्घकालीन विकास योजनाओं में केवल किसी वस्तु का उत्पादन चाहे वह स्वास्थ्य के लिए घातक ही हो बढ़ाना ही हमारा एकमात्र उद्देश्य होना चाहिए ? क्या तम्बाकू का नियंत्रण करके जीवन के लिये अधिक आवश्यक अनाज के उत्पादन को अधिक प्रोत्साहन नहीं दिया जा सकता ?

## लघु इस्पात का कारखाना

ज्ञात हुआ है कि भोपाल में शीघ्र ही निजी क्षेत्र में एक लघु इस्पात कारखाना स्थापित करने का प्रस्ताव राज्य शासन द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। एक प्राइवेट फर्म से इस सम्बन्ध में चर्चा चल रही है उस फर्म को ५० एकड़ भूमि देने का वायदा किया गया है । इस कारखाने पर लगभग ५ करोड़ रुपया लगेगा ।

## गुजरात में रुई

गुजरात में रुई की ६ लाख गांठों का स्टाक बिना बिका पड़ा हुआ है और इससे कृषकों को करीब ३ करोड़ रुपया नुकसान होने की आशंका है। रुई के स्टाक की विषम परिस्थिति के बारे में गुजरात के मुख्य मंत्री डाक्टर जीवराज मेहना ने कुछ सुझाव भी दिये हैं । (१) लम्बे रेशेवाली सौराष्ट्र-कच्छ की रुई की एक लाख गांठों का निर्यात करने की इजाजत दी जाय तथा गुजरात की मिलों को गुजरात की रुई का खास कोटा दिया जाय तथा शेष रुई के निर्यात की व्यवस्था की जाय । आपने यह भी सुझाव दिया है कि अमेरीकी रुई की जिन तीन लाख गांठों की खरीद केन्द्रीय सरकार ने लम्बे समय पर मूल्य चुकाने की शर्त पर की है, वह माल जुलाई में नहीं, वरन् अक्तूबर में प्राप्त किया जाय ।

इस वर्ष गुजरात की रुई की बिक्री न होने का कारण बताया जा रहा है कि गुजरात में गुजरात की रुई के पहले पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, खानदेश, बिहार की रुई आ पहुंचती है और मिलों ने उन प्रदेशों की रुई अपनी आवश्यकता के अनुसार खरीद कर ली । गुजरात में रुई का उत्पादन जनवरी-फरवरी में होता है, जबकि उक्त प्रदेशों की रुई बहुत पहले गुजरात में आ जाती है । कोटा पद्धति को भी इसके लिए कारण बताया जा रहा है ।

## गेहूं का जहाजी भाड़ा

अमेरिका से १७० लाख टन गेहूँ भारत में आता है, किन्तु अभी तक सरकार यह निश्चय नहीं कर पायी है कि किन जहाजी कम्पनियों को किस भाड़े पर गेहूँ को लाने का काम सौंपा जाय । जो भाड़ा सरकार देना चाहती है न भारत की और न विदेशों की कम्पनियां उसे स्वीकार करने को तैयार हैं । इसका मुख्य कारण यह है कि एक तरफ उन्हें खाली जाना पड़ेगा । भारत से अमेरिका जाने वाला कोई ऐसा माल नहीं है जिसे भारी मात्रा में अमेरिका ले जाया जा सके ।

## इन्कम टैक्स में संशोधन

१९६१ का बजट अधिवेशन समाप्त हो गया । इसमें अनेक वित्तीय विधेयकों के अलावा आयकर सम्बन्धी विधेयक स्वीकार हुआ । भारत का इन्कम टैक्स कानून बहुत पहले बनाया गया था, इसमें समय-समय पर छोटे-मोटे परिवर्तन व संशोधन होते रहे, फलतः यह बहुत जटिल बन गया । इसलिए यह आवश्यकता थी कि नये सिरे से इसका निर्माण किया जाय । त्यागी कमेटी की सिफारिशों के अनुसार यह विस्तृत बिल संशोधित होकर पास हो गया।

—भारत सरकार विभिन्न राज्यों के इस प्रस्ताव पर विचार कर रही है कि यदि राज्य नये उद्योगों के लिए स्वयं साधनों का प्रबन्ध कर सकें तो उन्हें तीसरी योजना की अवधि में वे उद्योग खोलने की भी अनुमति दी जाय जिनका तीसरी योजना में उल्लेख नहीं है। •

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिंसक समाज रचना की मासिक

# खादी पत्रिका

- खादी ग्रामोद्योग तथा सर्वोदय विचार पर विद्वतापूर्ण रचनाएं ।
- खादी ग्रामोद्योग आन्दोलन की देशव्यापी जानकारी ।
- कविता, लघुकथा, मोल के पत्थर, साहित्य-समीक्षा, संस्था परिचय ।
- साहित्यकी पृष्ठ आदि स्थायी स्तम्भ ।
- आकर्षक मुखपृष्ठ : हाथ कागज पर छपाई ।

संपादक

**ध्वजाप्रसाद साहू**

**जवाहिरलाल जैन**

वार्षिक मूल्य ३)रु०, एक प्रति पच्चीस नये पैसे

राजस्थान खादी संघ पो० खादी बाग (जयपुर)

# ग्रा म रा ज

(मास में तीन बार प्रकाशित)

सम्पादक :— श्रीगोकुलभाई भट्ट

"ग्रामराज बहुत ही शानदार और बहुत ही सुन्दर पत्र निकल रहा है । सब तरह की जानकारी इसमें रहती है । राजस्थान के हर शिक्षित भाई बहन के हाथ में यह पत्रिका होनी चाहिये

—विनोबा

वार्षिक चन्दा तीन रुपया

कार्यालय का पता :—ग्रामराज, किशोर निवास, त्रिपोलिया, जयपुर

# 'भारत व्यापार पत्रिका' की विशेषताएँ

पृष्ठ सं. १०० वार्षिक चंदा ८) साधारण अंक ७५न. पै.

- उद्योगपतियों एवं व्यापारियों के लिए उपयोगी सामग्री
- व्यापारिक भविष्य वाणी
- एक विज्ञापन मुफ्त छापने की योजना
- अर्थशास्त्र के छात्रों के लिए अनेक जानकारी
- मनोरंजन के लिए आकर्षक कहानी, गंगा की लहरें स्तम्भ में व्यंग विनोद तथा सामयिक कार्टून
- सम्पादक की डाक में आपके प्रश्नोत्तर
- इसके अलावा अनेकों स्थाई स्तम्भ

अगर आपने अब तक पत्रिका नहीं देखी है तो आज ही इस विज्ञापन की कटिंग के साथ २५ नये पैसे का पोस्टेज भेजकर नमूना मंगाइये । विज्ञापन दर तथा जानकारी के लिए लिखें—

**व्यवस्थापक, भारत व्यापार पत्रिका (मासिक)**

राजा दरवाजा, वाराणसी

तार—केनाको पो० बॉ० नं० ४९ फोन—३३४३

सबसे सस्ता सचित्र हिन्दी मासिक

# जागृति

जिसे राष्ट्र भाषा के सभी प्रमुख लेखकों, कवियों और कहानीकारों का सहयोग प्राप्त है ।

उत्प्रेरक कविताएं, ज्ञानवर्धक लेख सांस्कृतिक निबन्ध, रोचक कहानियां, बाल संसार, साहित्य आगे बढ़ता है आदि स्तंभ

तिरंगा आवरण, अनेकों इकरंगे चित्र
४८ से ५६ पृष्ठ की सम्पूर्ण छपाई आर्ट पेपर पर
इस पर भी मय केवल २५ नए पैसे

एजेन्टों को ५ से १०० प्रतियों पर २५ प्रतिशत और इससे ज्यादा पर ३३⅓ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है । डाक खर्च प्रकाशकों के जिम्मे । ऐजेंट नमूने की प्रति के लिए आज ही लिखें :

व्यवस्थापक, 'जागृति' हिन्दी लोक सम्पर्क विभाग, पंजाब, चंडीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा के अनूठे उपहार : ११ विशेषांक

'सम्पदा' का प्रत्येक अंक ज्ञानवर्धक होता है, पर विशेषांक तो अपने विषय के विश्व-कोष ही होते हैं। प्रोफेसर श्री ओमप्रकाश तोषनीवाल, एम० कॉम० कहते हैं—'सम्पदा' के विशेषांक तो हमारे लिए गीता व बाइबिल के समान हैं।'

## १-योजना अंक

( प्रथम योजना सम्बन्धी अपूर्व सामग्री )

एक प्रशंसनीय प्रयत्न। यह अंक पंचवर्षीय योजना को समझने की कुंजी है।

मूल्य : १.०० —जीवन साहित्य

## २-भूमि-सुधार अंक

( भूमि समस्याओं का अद्भुत विवेचन )

इस विषय में अपने ढंग का अद्वितीय प्रकाशन है।

मूल्य : १.०० (अप्राप्य) —प्रताप

## ३-वस्त्र-उद्योग अंक

( भारत के प्रमुख उद्योग का परिचय और समस्याएं )

इस अंक के पीछे काफी श्रम किया गया है। सम्पादक को बधाई।

मूल्य : १.२५ —श्री घनश्यामदास बिड़ला

## ४-चम्बल अंक

( चम्बल योजना का विस्तृत परिचय )

अंक को सभी दृष्टि से रोचक बनाया गया है।

मूल्य : ००.७५ (अप्राप्य) —श्री सिश्रीलाल गंगवाल

## ५-मजदूर अंक

(मजदूर समस्या के विविध पहलुओं का विवेचन )

लेख बहुत रोचक व उपयोगी हैं। ···मानव की नैतिकता पर भी जोर दिया गया है जो देश की संस्कृति व परम्पराओं के अनुकूल है।

मूल्य : १.५० —श्री खंडूभाई देसाई

## ६-उद्योग अंक

( प्रमुख उद्योगों के विकास का व्यापक परिचय)

भारतीय उद्योग और व्यवसाय की मूल समस्याओं पर गम्भीर तथा उपयोगी लेखों का अच्छा संग्रह है।

मूल्य : १.२५ —अजन्ता

## ७-राष्ट्रीय-विकास अंक

( द्वितीय पंचवर्षीय योजना का अध्ययन )

ज्ञानवर्धन के लिए ऐसी सामग्री प्रस्तुत करने वाले अंक का सर्वत्र स्वागत होगा।

मूल्य : १.२५ —श्री मोहनलाल सुखाड़िया

## ८-बैंक अंक

( भारतीय बैंकों की समस्याओं का निरूपण )

Here is one more 'Sampada' Special worth treasuring. (अप्राप्य)

मूल्य : १.२५ —Organiser

## ९-समाजवाद अंक

( समाजवाद के विभिन्न पहलुओं पर विचार )

सम्पदा का समाजवाद अंक मिला। यह काफी अच्छा और पठनीय है।

मूल्य : १.५० —श्री श्रीमन्नारायण

## १०-राष्ट्र-प्रगति अंक

( द्वितीय योजनाकाल की समस्याओं का विवेचन)

यह अति लाभदायक तथा उपयोगी है। लिखने का ढंग बहुत सुन्दर और रोचक है।

मूल्य : १.५० —श्री अमरनाथ विद्यालंकार

## ११-सहकारी कृषि अंक

देश के अत्यन्त विवादग्रस्त प्रश्न पर विविध समन्वयात्मक दृष्टिकोण। —मू० १.५०

रजिस्ट्री से सब प्राप्य अंक मंगाने के लिए रु० १०.५० भेजिये।

**सम्पदा • २८-११ शक्तिनगर • दिल्ली-६**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आर्थिक-राजनैतिक अनुसंधान विभाग का पाक्षिक पत्र

# आर्थिक समीक्षा

प्रधान सम्पादक : श्री सादिकअली

सम्पादक : श्री सुनील गुह

- हिन्दी में अनूठा प्रयास
- आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख
- आर्थिक सूचनाओं से ओतप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक, पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक।

वार्षिक मूल्य : ५) रु० एक प्रति २२ नये पैसे

लिखें—व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी,

७, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली



# भारत की औद्योगिक नीति

भारत के आर्थिक विकास और औद्योगिक उन्नति का सर्वाधिक महत्व है। पर भारत सरकार की उद्योग नीति क्या है—सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के लिए किस तरह दोनों का विभाजन किया गया है, आदि बातें समझने के लिए प्रो० रामनरेशलाल द्वारा लिखित—

**भारत की औद्योगिक नीति**

को पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। इसमें भारत के औद्योगिक विकास के इतिहास का भी योग्य लेखक ने विद्यार्थियों की दृष्टि से उपयोगी और सुन्दर परिचय दिया है।

६२ न. पै. के टिकट भेजने पर पुस्तक अण्डर पोस्टल सर्टिफिकेट भेजी जायगी।

मैनेजर—अशोक प्रकाशन मन्दिर,

२८/११ शक्ति नगर, दिल्ली-६



# "राष्ट्र-भारती"

सम्पादक—मोहनलाल भट्ट, हृषीकेश शर्मा

वार्षिक चन्दा मनीआर्डर से ६) रु;

नमूने की प्रति ६२ नये पैसे

इसमें आपको लब्धप्रतिष्ठ-विद्वान साहित्यकारों के ज्ञान-पोषक और मनोरंजक अच्छे-अच्छे लेख, कविताएं, कहानियां एकांकी, रेखाचित्र, शब्दचित्र आदि रचनायें पढ़ने को मिलेंगी।

इसमें संस्कृत, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं की तथा अंग्रेजी, रशियन आदि विदेशी भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं के सुन्दर हिन्दी अनुवाद भी रहते हैं।

आज ही मनीआर्डर द्वारा ६) भेजकर ग्राहक बन जाइये।

रियायत—स्कूल-कालेजों, सार्वजनिक पुस्तकालयों तथा वाचनालयों को केवल ५) वार्षिक चन्दे में मिलेगी।

पत्रव्यवहार का पता—

व्यवस्थापक—"राष्ट्रभारती"

हिन्दी नगर, वर्धा

(राष्ट्रभाषा प्रचार समिति)



# उद्योग-व्यापार पत्रिका

देश में उद्योग और व्यापार को आगे बढ़ाने के लिये क्या हो रहा है और आप इससे किस तरह फायदा उठा सकते हैं? देश में क्या-क्या चीजें और कितने परिमाण में कहाँ-कहाँ बन रही हैं और आप क्या बना कर अच्छी कमाई कर सकते हैं? तरह-तरह के व्यापार की देश-विदेश में क्या दशा है? पंच-वर्षीय योजना से हमारी क्या उन्नति हो रही है? ये सभी प्रश्न ऐसे हैं, जिनके उत्तर आपको अवश्य जानने चाहिएँ, और इन सबकी जानकारी पाने का श्रेष्ठ साधन है—उद्योग व्यापार पत्रिका। इसलिये आप ६ रु० भेजकर साल भर के लिये आज ही ग्राहक बन जाइये। नमूना पत्र लिखकर मंगाइये।

एजेन्टों को भरपूर कमीशन।

पत्रिका विज्ञापन देने का अच्छा साधन है।

वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,

भारत सरकार, नई दिल्ली


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


संचालक पंचायत राज विभाग उ० प्र०
की
विज्ञप्ति संख्या ४।५५८० : २७।३३।५३, दिनांक १५
द्वारा
पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत

# सुन्दर पुस्तकें

| | | रु० | आ० |
|---|---|---|---|
| वेद सार | प्रो० विश्वबन्धु | १ | ८ |
| प्रभु का प्यारा कौन ? (२) भाग | | | |
| सच्चा सन्त | | | ३ |
| सिद्ध साधक कृष्ण | | | ३ |
| जीते जी ही मोक्ष | | | ३ |
| आदर्श कर्मयोग | | | ३ |
| विश्व-शान्ति के पथ पर | | | १ |
| भारतीय संस्कृति | प्रो० चारुदेव | | ३ |
| बच्चों की देखभाल | प्रिंसिपल बहादुरमल | १ | १२ |
| हमारे बच्चे | श्री सन्तराम बी. ए. | ३ | १३ |
| हमारा समाज | | ६ | |
| व्यावहारिक ज्ञान | | २ | १२ |
| फलाहार | | १ | ४ |
| रस-धारा | | ० | १४ |
| देश-देशान्तर की कहानियां | | १ | |
| नये युग की कहानियां | | १ | १२ |
| गल्प मंजुल | डा० रघुबरदयाल | १ | |
| विशालभारत का इतिहास | प्रो० वेदव्यास | ३ | ८ |

१० प्रतिशत कमीशन और ५० रु० से ऊपर के आदेशों पर १५ प्रतिशत कमीशग।

विश्वेश्वरानन्द पुस्तक भंडार
साधु आश्रम, होशियारपुर, पंजाब



# सुभाषित रत्नमाला

## दूसरा संस्करण

सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

७ वर्ष पूर्व इस पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ था और हाथों-हाथ बिक गया था। कई वर्षों से पुस्तक अप्राप्य थी और इसकी माँग निरंतर बढ़ रही थी! अब परिवर्धित संस्करण आकर्षक रूप-सज्जा में प्रकाशित हुआ है इस संग्रह में—

- वैदिक एवं संस्कृत साहित्य के अगाध भण्डार से चुने गये ऐसे सरल-सुन्दर श्लोक और मंत्र, जिन्हें छोटे बच्चे भी सुविधापूर्वक कण्ठस्थ कर सकते हैं।
- श्लोकों और मन्त्रों का सरल-सुबोध हिन्दी में अर्थ।
- पुस्तक के अन्त में अर्थ-सहित कुछ ऐसी सूक्तियाँ, जिनके उपयोग विद्यार्थी अपने निबन्धों में कर सकें।
- आपके बच्चों के स्वस्थ मानसिक विकास और उनमें नैतिक चेतना जगाने के लिए अनिवार्य।
- उपहार और पुरस्कार में देने के लिए बहुत उपयुक्त।

मूल्य एक प्रति १.१५ रु०। 'सम्पदा' के ग्राहकों से १ रु. प्राप्त होने पर 'बुक पोस्ट अन्डर पोस्टेल सर्टिफिकेट' द्वारा भेजी जाएगी।

अशोक प्रकाशन मन्दिर
२८/११, शक्तिनगर,
दिल्ली-६


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि.

के

अधिकारी, कर्मचारी व कारीगर

## देश के जन-जन के लिए

हर किस्म का कपड़ा मिल में तैयार करते हैं
पंजाब की श्रेष्ठ रुई से

साड़ी, धोती, छींट, लट्ठा,
शर्टिंग, मलमल, कोटिंग, वायलिन,
खादी, दुसूती, चादर आदि
कुशल कारीगरों द्वारा बनाये जाते हैं

**बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लिमिटिड, दिल्ली।**

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैचवैल इलैक्ट्रिकल्स (इंडिया) लिमिटेड ४/११ आसफअली रोड, नई दिल्ली • फैक्टरी : पूना

भारत के लिए सोल ऐजेन्ट :

मेसर्स बजाज इलैक्ट्रीकल्स लिमिटेड

(भूतपूर्व : रेडियो लैम्प वर्क्स लिमिटेड)

बम्बई • नई दिल्ली • कलकत्ता • मद्रास • कानपुर • इन्दौर • वर्धा • गौहाटी • पटना


सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीजिज ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा

अर्थशास्त्र की नवीनतम गतिविधियों की
मासिक पत्रिका
जून १९६१

आत्मा प्रकाशन मन्दिर शक्ति नगर दिल्ली

मूल्य
७५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमें अपनी पूरी शक्ति लगानी चाहिए

यह योजना हमें
जीवित रहने के लिए
आवश्यक है।

महाराष्ट्र राज्य के हम
सभी लोगों को योजना
की सफलता के लिए उत्साह
और दिलचस्पी से कार्य करना
है, चाहे हमारी जाति, धर्म, भाषा,
प्रदेश अथवा व्यक्तिगत प्रवृत्ति कुछ भी क्यों न हो।

महाराष्ट्र और भारत के
कल्याण के लिए हमें अपनी पूरी शक्ति लगानी चाहिए।

## योजना के साथ अपनी प्रगति और उन्नति प्राप्त कीजिए

प्रकाशन संचालक

महाराष्ट्र सरकार, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तरल पदार्थ नापने के मेट्रिक पैमाने

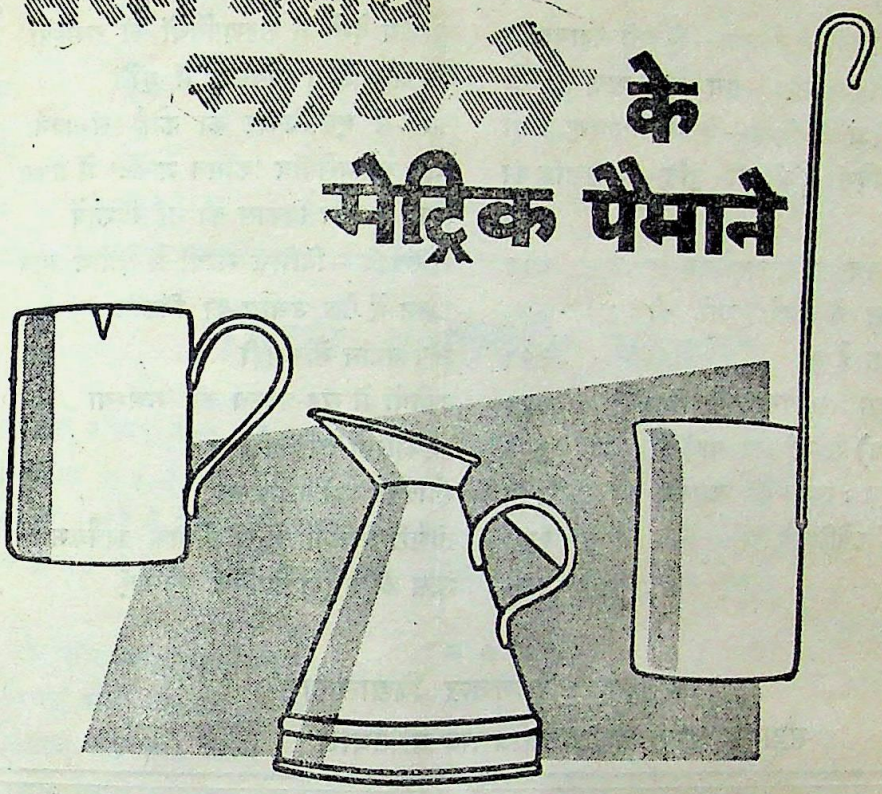

१ अप्रैल, १९६१ से केन्द्र शासित क्षेत्र दिल्ली में तरल पदार्थ मापने के मेट्रिक पैमाने का प्रयोग अनिवार्य हो गया है।

शेष देश के निर्धारित स्थानों पर भी तरल पदार्थ मापने के मेट्रिक पैमाने चालू हो चुके है। इन जगहों पर केवल एक वर्ष तक पुराने पैमानों का प्रयोग हो सकेगा।

समाई मापने की इकाई

लिटर

१ लिटर = लगभग १·१ सेर

# मेट्रिक प्रणाली

सरलता व एकरूपता के लिए

DA 61/109

भारत सरकार द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


सम्पादकीय—तीसरी पंचवर्षीय योजना—विदेशी सहायता के भारी आश्वासन—नया विशेषांक—हम भारी ऋण ले तो रहे हैं—कृषि सहकारिता की दिशा—बेकारी निवारण के दो सुझाव—भारत में विदेशी पूंजी की वृद्धि—अणुशक्ति का उत्पादन। २६५

न्याय संगत समाज-व्यवस्था का आयोजन २६९

क्या आर्थिक विकास के लिये घाटे की अर्थव्यवस्था आवश्यक है? २७१

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया : स्थापना और संगठन २७३

आटोमेशन (स्वचालन) से नई समस्याएं २७६

अत्यधिक तेल उत्पादन : खपत की समस्या २७९

औद्योगिक विकास में उपेक्षित दृष्टि २८१

नया साहित्य २८३

यूरोपीय देशों में शरणार्थियों की समस्या २८५

बैंक और बीमा व्यवसाय में वृद्धि २८६

भारत में एकाधिकार की कोई संभावना नहीं २८७

ब्रिटेन का यूरोपीय 'कॉमन मार्केट' में प्रवेश २९०

पंजाब में ग्राम विकास की नई दिशायें २९१

सांख्यिकी— विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय आय २९३

असम में तेल उद्योग का विकास २९५

जीप बनाम बैलगाड़ी २९७

उद्योगों में सह-प्रबन्ध की समस्या २९९

सहकारिता क्यों और कैसे ३००

सोवियत घरेलू व्यापार ३०३

तीसरी योजना में औद्योगिक कार्यक्रम ३०५

मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएँ ३०६


• • •


सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

सहायक सम्पादक : देवीप्रसाद नौटियाल



## जुलाई के प्रथम सप्ताह तक

तीसरी पंचवर्षीय योजना प्रकाशित हो जायगी और सम्पदा के प्रतिभाशाली पाठक

## तीसरी योजना विशेषांक

की उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगेंगे, हम उनकी उत्सुकता और प्रतीक्षा को जानते हैं, इसलिए अगस्त १९६१ में

## तृतीय योजना विशेषांक प्रकाशित होगा

इसमें तीसरी योजना के विभिन्न अङ्गों का प्रामाणिक परिचय दिया जायगा। उनकी समीक्षा की जायगी और विभिन्न अधिकारी विद्वानों के विद्वतापूर्ण लेख प्रकाशित किए जायेंगे। उनके अतिरिक्त उसमें होंगे, बीसियों ज्ञानवर्धक चित्र, ग्राफ और चार्ट आदि।

यह अङ्क सम्पदा की स्वस्थ विशेषांक परम्परा का १२वां रत्न होगा।

**विस्तृत विवरण की प्रतीक्षा कीजिए।**

—मैनेजर सम्पदा

२५ शक्तिनगर, दिल्ली-६


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पदा

वर्ष : १०

अंक : ६

जून १९६१

# तीसरी पंचवर्षीय योजना

राष्ट्रीय विकास परिषद् ने १ जून ६१ को तीसरी योजना पर अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। तीसरी योजना का एक प्रमुख लक्ष्य राष्ट्रीय आय में ३० प्रतिशत तथा प्रतिव्यक्ति आय में १७ प्रतिशत वृद्धि करना है। तीसरी योजना के सारे कार्यक्रमों को पूरा करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र में ८,००० करोड़ रु० तथा निजी क्षेत्र में ४,१०० करोड़ रु० से कुछ अधिक व्यय होगा। ८,००० करोड़ रु० के व्यय का विभाजन इस प्रकार किया गया है :

| | (करोड़ रुपए) |
|---|---|
| कृषि और सामुदायिक विकास | १०९४ |
| सिंचाई और बिजली | १६७० |
| ग्रामीण और छोटे उद्योग | २६४ |
| उद्योग, खानें, परिवहन और संचार | ३२४२ |
| समाज सेवाएं | १५३० |

## राज्य योजनाएं

१. प्रत्येक राज्य की योजना का निश्चय करते समय राज्य की आवश्यकताओं, समस्याओं, विगत प्रगति, मुख्य राष्ट्रीय लक्ष्यों की पूर्ति हेतु सम्भावित योगदान, विकास की सम्भाव्यता और विकास-कार्यों के लिए राज्य कहां तक साधन जुटाने की सामर्थ्य रखता है, इस सबका ध्यान रखा गया है। राज्य की आवश्यकताओं और समस्याओं का अनुमान लगाने के लिए जिन पहलुओं को ध्यान में रखा गया है, वे हैं, जनसंख्या, क्षेत्र, आय और व्यय का स्तर; सड़क, स्कूल, अस्पताल इत्यादि सेवाओं की उपलब्धि; दूसरी योजना से आ रही स्कीमों तथा बड़ी प्रयोजनाओं का शेष काम और राज्य की तकनीकी एवं प्रशासकीय सेवाओं की स्थिति।

## अतिरिक्त साधन

२. तीसरी योजना में सम्मिलित ८,००० करोड़ रु० के कुल कार्यक्रम के लिए ७,५०० करोड़ रु० के वित्तीय साधन उपलब्ध होने की सम्भावना है। हाल ही में किए गए अध्ययनों से पता चला है कि यदि देश में बचत आन्दोलन तेज किया जाय और आवश्यक विदेशी सहायता समय पर मिल जाय, तो अतिरिक्त साधन उपलब्ध होने की सम्भावना है। जैसे-जैसे योजना आगे बढ़ेगी तो हो सकता है कि ऐसी हालत सामने आए कि कुछ काम अधूरे रह जाएं और उनको चौथी योजना में शामिल करना पड़े।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. विकास के विभिन्न कार्यों के लिए अनुमानतः २,०३० करोड़ रु० की विदेशी सहायता की आवश्यकता है।

४. योजना में कुल विनियोजन में ५४ प्रतिशत की वृद्धि की व्यवस्था की गयी है। इसमें है सार्वजनिक क्षेत्र के विनियोजन में ७० प्रतिशत और निजी क्षेत्र के विनियोजन में ३२ प्रतिशत वृद्धि करने के लक्ष्य हैं। भौतिक कार्यक्रमों और वित्तीय विनियोजन के आकार को इस प्रकार रखा गया है, जिससे योजना में विभिन्न कामों को दी जाने वाली प्राथमिकता प्रतिबिम्बित होती है।

• ०

# विदेशी सहायता के भारी आश्वासन

इंडिया एड क्लब ने तीसरी पंचवर्षीय योजना की पूर्ति के लिये प्रथम दो वर्षों में २२२ करोड़ ५० लाख डालर देने का निश्चय कर लिया है। इस क्लब में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, पश्चिमी जर्मनी, ब्रिटेन, कनाडा, जापान और फ्रांस सम्मिलित थे। यह सम्मेलन अमेरिका और विश्व बैंक की प्रेरणा से बुलाया गया था। अमेरिका के अतिरिक्त ५ देशों ने ७८ करोड़ रुपया देने का निश्चय किया है जो पहले के प्रस्तावित लक्ष्यों से निम्नलिखित रूप से अधिक है—

| | | (लाख डालरों में) |
|---|---|---|
| प० जर्मनी | ३३१० | ४२५० |
| ब्रिटेन | ४०४० | २५०० |
| कनाडा | २०० | ५२० |

फ्रांस भी इस क्लब का सदस्य हो गया है और उसने ३ करोड़ डालर का ऋण देना स्वीकार कर लिया है। जापान ने भी अपनी सहायता की राशि बहुत बढ़ा दी है।

संयुक्त राज्य अमेरिका १०८ करोड़ डालर दे रहा है और विश्व बैंक तथा अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ ४० करोड़। इस तरह कुल सहायता २२२ करोड़ डालर से अधिक हो जाती है। भारत ने कुल २४० करोड़ डालर की मांग की थी। १८ करोड़ डालर की यह कमी भी संभवतः कुछ महीनों में पूरी हो जायगी। क्लब ने यह भी निश्चय किया है कि भुगतान के लिये भारत को अधिक सुविधा दी जाय। ब्रिटेन और पश्चिमी जर्मनी के कुछ कर्जों की अवधि २५ वर्ष होगी और अमेरिका के कुछ कर्जों के अवधि ४० वर्ष होगी। पश्चिमी जर्मनी १० करोड़ डालर लगभग ३ प्रतिशत सूद पर देगा। इटली, नीदरलैंड आस्ट्रिया आदि देश भी संभवतः इस मित्र संघ के सदस्य बन जायंगे। रूस आदि साम्यवादी देशों ने भी ७२ करोड़ डालर देने का आश्वासन दिया हुआ है। इन ऋणों के अतिरिक्त अमेरिका और कनाडा गेहूँ के रूप में भी करोड़ों रुपये का ऋण देना चाहते हैं। मित्र संघ की इस सफलता का मुख्य श्रेय अमेरिका को है।

मित्र देश संघ के निश्चयों का स्वागत भारत में किया जा रहा है और तीसरी योजना की पूर्ति के स्वप्न के साकार होने की अधिक आशायें की जाने लगी हैं।

• •

## नया विशेषांक

तीसरी पंचवर्षीय योजना के लक्ष्य और साधनों पर बहुत कुछ विचार किया जा चुका है तथा इंडिया-एड क्लब के देशों ने भी अमित सहायता देने का वचन दिया है। जुलाई के प्रथम सप्ताह तक तीसरी योजना का अन्तिम प्रारूप प्रकाशित हो जायगा। अगस्त में हम सम्पदा का नया विशेषांक प्रकाशित करना चाहते हैं।

योजना के विभिन्न अंगों, साधनों और उनकी पूर्ति की विविध समस्याओं पर प्रामाणिक अधिकारियों द्वारा इस आगामी विशेषांक में पूर्ण प्रकाश डाला जायगा, हमारा प्रयत्न यह होगा कि योजना के विभिन्न अंगों पर विविध पहलुओं से विचार किया जाय। पाठक विशेषांक की धैर्य-पूर्वक प्रतीक्षा करें।

• •



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हम भारी ऋण ले तो रहे हैं....

इण्डिया एड क्लब की बैठक दस बारह दिन पहले हो चुकी है इसके निश्चय भी समाचार पत्रों में पाठक पढ़ चुके होंगे। इन पंक्तियों के लिखने तक अमेरिका में स्थित भारतीय अधिकारियों के अनुमान के अनुसार तीसरी योजना की पूर्ति के लिये विदेशों से ५.५ अरब डालर मिलने की सम्भावना है। इसमें से ८० करोड़ साम्यवादी देशों से तथा ३० करोड़ डालर निजी उद्योगों के लिये मिलने की सम्भावना है। शेष ४ अरब ४० करोड़ डालर इंडिया एड क्लब तथा विश्व बैंक आदि संस्थाओं से मिलने की सम्भावना है और इसमें भी ३ अरब १० करोड़ डालर क्लब के सदस्यों से। यह भी खयाल है कि पश्चिमी जर्मनी भी अपनी राशि ४० करोड़ डालर कर देगा और ब्रिटेन, जापान, कैनाडा आदि ने क्रमशः २० करोड़ ४० लाख, ८ करोड़ और ३ करोड़ ६० लाख देने का विचार किया है। शेष राशि अमरीका से मिलने की आशा है। पिछले दिनों भारत को ऋण मिलने के बहुत आशाजनक समाचार मिले हैं।

किन्तु इन सब ऋण प्राप्ति के समाचारों से जहां हम प्रसन्न हो सकते हैं कि हमारी आशायें पूर्ण होंगी, वहां भारत की अर्थव्यवस्था पर यह ऋण भारी प्रभाव डाल सकते हैं। भारत सरकार का यह कर्तव्य है कि वह इन ऋणों के कारण आने वाले भारी उत्तरदायित्वों के प्रति सावधान रहे और देश को भी उससे अवगत रखती रहे। हमें यह मालूम होना चाहिए कि इन ऋणों को हमें किस तरह चुकाना है और ब्याज का कितना भार हम पर पड़ना है।

नये वर्ष के बजट के साथ व्याख्यात्मक प्रतिवेदन में बताया गया था कि ३१ मार्च १९३९ को भारत पर ९४९ करोड़ के सार्वजनिक ऋण थे। किन्तु आगामी वर्ष (३१ मार्च १९६२) तक यह ऋण ५५५४ करोड़ रुपया हो जायेगा। इस राशि में वे राशियां शामिल नहीं हैं जो पोस्ट आफिस, सेविंग बैंक, कैश सर्टीफिकेट तथा और प्रावीडेन्ट फण्ड के रूप में सरकार ने वापस चुकाने हैं। इन सबका भी जोड़ १८६८ करोड़ रुपया होता है। इसका अर्थ यह है कि भारत सरकार पर इस वर्ष के अन्त तक ७४२२ करोड़ रुपया ऋण होगा। हमने विभिन्न राज्यों व संस्थानों आदि से कुल ५७२५ करोड़ रुपया लेना है, जिसमें पाकिस्तान के नाम की ३०० करोड़ रुपये की राशि भी सम्मिलित है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि जिस गति से हम विदेशों से ऋण ले रहे हैं, उसे देखते हुये तीसरी योजना के अन्त तक हम पर ११ हजार करोड़ रुपया का ऋण हो जायगा। भारत सरकार को यह जताते रहना चाहिये कि हमारी जिम्मेदारियां प्रति वर्ष किस हिसाब से बढ़ेंगी या घटेंगी। केवल १९६१-६२ में ही हमें २८ करोड़ रुपया विदेशों को केवल ब्याज के रूप में चुकाना है। भारत के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री श्री एम० ए० मास्टर के कथनानुसार चौथी योजना के प्रारम्भ से हमें प्रति वर्ष १०० करोड़ रुपया ब्याज के रूप में देना पड़ेगा, जबकि किश्तों के रूप में १५० करोड़ रुपया प्रति वर्ष चुकाना पड़ेगा। इसका अर्थ यह हुआ कि चौथी योजना के प्रारम्भ में अर्थात आज से ४॥ वर्ष बाद हमारे सामने यह गम्भीर समस्या उपस्थित हो जायगी कि हम २५० करोड़ रुपया प्रति वर्ष विदेशों को किस प्रकार चुका सकते हैं और इसके लिये हम विदेशी मुद्रा की क्या व्यवस्था करेंगे। हमें स्मरण रखना चाहिये कि हमें न केवल ब्याज और किस्तें ही चुकानी हैं, बल्कि चौथी योजना के विकास और निर्माण कार्यों के लिये भी पर्याप्त राशि उपलब्ध करनी है। विदेशी व्यापार जिस तरह से प्रतिकूल होता जा रहा है, उसे देखते हुये हमारी समस्या की विकरालता और भी स्पष्ट हो जाती है। यदि हम व्यापार द्वारा विदेशी मुद्रा का अर्जन न कर सके तो श्री मास्टर के कथनानुसार हमारे सामने दो ही विकल्प रहेंगे या तो हम अपनी किस्तें चुकाना स्थगित करें अथवा इनके चुकाने के लिये विदेशों से नया ऋण लें। हम इन दोनों तरीकों का ही इस्तेमाल कर रहे हैं। १९५१ के गेहूँ ऋण की और रूरकेला के स्टील प्लान्ट की किस्तें हमने समय पर नहीं चुकाई। और तीसरी पंच वर्षीय योजना की अवधि में चुकाये जाने वाले ५०० करोड़ रुपयों के लिये हम और नये ऋण ले रहे हैं। अभी तक सरकार की ओर से जो बजट आदि निकलते हैं, उनमें सम्पूर्ण ऋण सम्बन्धी स्थिति को अधिक स्पष्ट करना चाहिये। इससे जनता को यह मालूम होता रहेगा कि उसके ऊपर कितने उत्तरदायित्व हैं। बल्कि आगे भी हमें कितना सावधान होकर चलना चाहिये, यह भी हम समझ सकेंगे। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## कृषि सहकारिता की दिशा

रिजर्व बैंक के गवर्नर श्री आयंगर ने पिछले दिनों संयुक्त कृषि सहकारिता के सम्बन्ध में एक बहुत सामयिक चेतावनी दी है। तामिलनाड सहकारिता सम्मेलन के सोलहवें अधिवेशन का उद्घाटन करते हुये जहां उन्होंने सहकारिता आन्दोलन को अधिक प्रगतिशील बनाने पर बल दिया वहां उन्होंने सहकारिता आन्दोलन को राजनीतिक प्रभाव से बहुत दूर रखने की भी सलाह दी है। बहुत सी सहकारी समितियां केवल राजनीतिक पक्षपात के कारण बनीं या समाप्त हो गईं। वे अपने सदस्यों की आर्थिक समृद्धि की चिन्ता छोड़कर किसी न किसी दल की राजनीतिक गतिविधियों में अपनी शक्ति लगाने लगीं। इन समितियों के कर्मचारियों में योग्यता, अपने उत्तर-दायित्वों को निभाने की लगन तथा ईमानदारी आदि में काफी कमी थी। इसी कारण हमारी अधिकांश समितियां सफल नहीं हो रही या बहुत कम उन्नति कर रही हैं।

इन स्थितियों को देखते हुये भी आज हम संयुक्त कृषि सहकारिता चलाने के बड़े बड़े स्वप्न ले रहे हैं। संयुक्त सहकारी कृषि सम्बन्धी कार्यकारी मंडल ने, तीसरी योजना की अवधि २०००० सहकारी समितियां स्थापित करने का विचार प्रस्तुत किया था। यह प्रस्ताव अत्यन्त अव्यावहारिक था। यही कारण है कि राज्य सरकारों ने इस योजना में बहुत सन्देह प्रकट किया। उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि बहुत प्रयत्न के बावजूद हम ४ हजार से अधिक समितियां स्थापित नहीं कर सकते।

वस्तुतः सहाकारिता, खेत जोतने में नहीं बल्कि साख, गोदाम, बाजार में बिक्री, बीज व खाद के वितरण आदि कार्यों में अधिक सफल होती है। हमारे देश में पारिवारिक कृषि की संस्था को जो सदियों से देश में प्रचलित है, छोड़ना ठीक नहीं होगा। जापान में रिजर्व बैंक के गवर्नर श्री आयंगर गये थे और उन्होंने वहां की सहकारिता समितियों का अध्ययन किया। जापान में पारिवारिक कृषि होती है। किसानों के पास छोटे-छोटे खेत हैं। एक औसत खेत २ एकड़ है। वहां सहकारिता समितियां किसानों की बहुत सेवा कर रही हैं। यद्यपि उनकी शेयर पूंजी हजारों लाखों में है, उनके डिपोजिट लाखों करोड़ों रुपया है। ये समितियां सब प्रकार की राजनीति से दूर रहकर केवल किसानों की आर्थिक समृद्धि में लगी रहती हैं और बीज खाद के वितरण, समय पर आर्थिक सहायता, गोदाम और बिक्री की व्यवस्था में सहयोग देती हैं।

योजना आयोग ने तीसरी योजना में अरबों रुपये की राशि सहकारिता के लिये निर्धारित की है, किन्तु आर्थिक सहायता की अपेक्षा कर्मचारियों का प्रशिक्षण और आवश्यक गुणों का अभ्यास अधिक आवश्यक है। स्वीडन में सहकारी आन्दोलन के प्रमुख अधिकारी ने एक दिन कहा था कि यदि एक ओर हमें रुपया दिया जाय और दूसरी ओर हमें रुपया न देकर योग्य ईमानदार कर्मचारी दिये जांय, तो हम रुपये की अपेक्षा योग्य कर्मचारियों को अधिक पसन्द करेंगे। योजना आयोग यह समझता है कि किसी कार्यक्रम की सफलता के लिये करोड़ों रुपये की राशि नियत कर देना ही पर्याप्त है। परन्तु बड़ी-बड़ी योजनायें बनाने की अपेक्षा छोटे लक्ष्य नियत करके उन्हें अमल में लाना अत्यन्त लाभदायक है।

## बेकारी निवारण के दो सुझाव

उत्तर प्रदेश की सरकार ने सरकारी कर्मचारियों की सेवा निवृत्ति की आयु ५८ वर्ष से ५५ वर्ष तक करके उचित ही किया है। यह ठीक है कि कोई व्यक्ति अधिक समय तक कार्य करने का लोभ संवरण नहीं करना चाहता, किन्तु दूसरी ओर बेकारी की समस्या को हल करना भी आवश्यक है। हमारी नम्र सम्मति में गैर सरकारी कार्यों में भी सेवानिवृति की यह आयु निश्चित करने की आवश्यकता है। इसी दृष्टि से इस सुझाव पर भी विचार होना चाहिये कि जिन पुरुषों की आय ४००) रु०—अन्य भी कोई राशि नियत हो सकती है—हो, उनकी पत्नियों को सरकारी नौकरी में न लिया जाय। भारतवर्ष में परिवार को इकाई के रूप में स्वीकृत किया जाता है। स्त्री और पुरुष को अलग-अलग इकाई के रूप में पश्चिम में ही देखा जाता है। इस सुझाव को यदि स्वीकार किया जाय तो आर्थिक विषमता को एक सीमा तक दूर कर सकते हैं। हम जानते हैं कि आज की शिक्षित महिलायें और कुछ पश्चिमी विचारों से प्रभावित पुरुष स्त्री-पुरुष के समान अधिकार के नाम पर इसका विरोध करेंगे, किन्तु समाजवाद की दिशा में परिवार को एक इकाई मानने वाले देश में यह प्रयोग आवश्यक है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## भारत में विदेशी पूंजी की वृद्धि

रिजर्व बैंक द्वारा प्रकाशित एक बुलेटिन से मालूम होता है कि १९५५ में भारत में ४५६.१ करोड़ रुपये की विदेशी पूंजी लगी हुई थी। १९५९ में यह पूंजी बढ़कर ६१०.७ करोड़ रुपये हो गई अर्थात इन चार वर्षों में १५३ करोड़ रुपये की पूंजी बढ़ी हैं। १९६० में भी जो पूंजी लगी है, उसका अनुमान सम्मिलित किया जाय तो यह रकम २०० करोड़ रुपये तक जायगी। वस्तुतः भारत में रुपये लगाने की प्रवृत्ति विदेशों में बढ़ती जा रही है। विश्व-बैंक तथा विदेशों की सरकारों ने भारत को जो सहायता प्रदान की है, उसे देखते हुये भारत की आर्थिक स्थिति पर विदेशी उद्योगपतियों का विश्वास बढ़ता जा रहा है और इस कारण भारत में पूंजी लगाना निरापद समझ रहे हैं। इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि विदेशी उद्योपतियों को अच्छा लाभ हो रहा है। १९५८ की अपेक्षा १९५९ में ११ करोड़ रुपये का अधिक लाभ हुआ। यह आशा की जा सकती है कि विदेशों में भारतीय उद्योगों के विकास में निजी सहयोग की प्रवृत्ति इन आगामी ५ वर्षों में और भी बढ़ेगी और भारत के निजी उद्योग को उन्नत होने का और अवसर मिलेगा। सार्वजनिक उद्योग पर भी शासन का ध्यान नहीं है। तीसरी पंचवर्षीय योजना में उसके लिये काफी बड़ी राशि नियत की गई है। वस्तुतः आज भारत का आर्थिक चित्र इतनी तेजी से बढ़ता जा रहा है कि ५ वर्ष बाद हम कितना आगे बढ़ जायंगे, इसकी कल्पना साधारण पाठक नहीं कर सकते। ● ●

## अणुशक्ति का उत्पादन

आज विश्व में अणुशक्ति के उत्पादन और प्रयोग के लिये बीसियों प्रयत्न हो रहे हैं। उसके प्रयोग में सबसे बड़ी बाधा यह है कि उसका उत्पादन व्यय साधारण बिजली की अपेक्षा अधिक होता है। किन्तु अब अणु शक्ति को अधिक सस्ता करने का प्रयत्न किया जा रहा है। गत मास के अन्त में अमेरिका के अणुशक्ति कमीशन के अध्यक्ष ने यह घोषणा की है कि पहली जुलाई से अणुशक्ति के उत्पादन के प्रमुख अंग यूरेनियम का मूल्य कम कर दिया जायगा और इसलिये अमेरिका तथा अमेरिकन इंधन प्रयुक्त करने वाले देशों में अणुशक्ति के उत्पादन का व्यय कम हो जायगा। अच्छी किस्म के यूरेनियम का मूल्य २० से ३४ प्रतिशत और घटिया किस्म के यूरेनियम का ४१ से ६३ प्रतिशत मूल्य कम हो जायगा। यूरोप के विभिन्न देश भी अब अणुशक्ति के उत्पादन के प्रयोग कर रहे हैं। इसका परिणाम भी यह होगा कि अणुशक्ति अपेक्षाकृत सस्ती पड़ेगी। ● ●

# न्याय संगत समाज व्यवस्था का मूल आयोजन

श्री गुलजारीलाल नन्दा

●

करीब दो महीने पहले हमने योजनाबद्ध विकास के दस वर्ष पूरे किये हैं और हम विकास के एक और चरण, तीसरी पंचवर्षीय योजना में प्रविष्ट हुए हैं। आइए, देखें कि अब तक हम क्या कर पाये हैं और हमें आगे क्या करना होगा।

योजनापूर्वक विकास का प्रयत्न हमें देश की अर्थ-व्यवस्था को मजबूत करने के लिए और अपने उद्योगों तथा खेती को उन्नत करने के लिए ही नहीं, देश में ऐसी समाज व्यवस्था स्थापित करने के लिए भी जरूरी है, जो सबको न्याय दे सके और जिसमें अधिक सामाजिक एकता और सहयोग उत्पन्न हो। कुछ वर्ष पहले हमारी संसद ने इस व्यवस्था को "समाजवादी समाजव्यवस्था" का नाम दिया।

हर पंचवर्षीय योजना के द्वारा देश के संविधान के निर्देशक सिद्धांत कार्य रूप में सामने लाए जाते हैं। हमारी समाज व्यवस्था का उद्देश्य है कि सबको सामाजिक और आर्थिक न्याय मिले, सबको अपनी जीविका चलाने के साधन उपलब्ध हों, समाज की धन-सम्पत्ति का सबको समान लाभ मिले और यह कुछ थोड़े लोगों के हाथ में न आ जाए, जिससे अधिकांश लोगों को हानि हो। हर पंच-वर्षीय योजना में इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयत्न किया जाता है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## निरंतर उद्यम की आवश्यकता

हमारे देश से अधिक और व्यापक गरीबी शायद इने-गिने देशों में ही मिले। मुद्दत से हमारी अर्थ व्यवस्था जहां की तहां रही और आबादी दिनोंदिन बढ़ती गयी, फिर भी हमारे पास जन-शक्ति इतनी असीम है कि यदि हम निश्चय के साथ उद्यम करें तो देश को इतना समृद्ध और खुशहाल बना सकते हैं, जिसके आगे हमारी अर्थ व्यवस्था स्वतः प्रगति करती चली जाए।

जनशक्ति का विधिवत् उपयोग और सहकारिता हमारी कृषि-व्यवस्था के सुधार की कुंजी है। खेती की उन्नति से ही बाकी सारी अर्थ व्यवस्था की उन्नति होगी। हम केवल पैदावार ही नहीं बढ़ाना चाहते, बल्कि यह भी चाहते हैं कि देहातों में तरह तरह के ऐसे धंधे विकसित हों, जिनसे गांव वालों की विशेषकर गरीबों की स्थिति सुधरे। कृषि और उद्योग योजना के दो अभिन्न अंग हैं। उद्योगों का स्थान निस्संदेह बहुत महत्त्वपूर्ण है, लेकिन उनका सच्चा लाभ तभी होगा, जब भिन्न-भिन्न वर्गों को इनका अधिकाधिक लाभ पहुँचे। इतना ही नहीं, भिन्न-भिन्न क्षेत्रों और देहातों तथा शहरों के लोगों को भी देश की उद्योग वृद्धि का समान लाभ मिलना जरूरी है।

अभी कुछ समय पहले तक भारत की उद्योग व्यवस्था की बुनियाद कमजोर थी। लेकिन दूसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान इस्पात, कोयले, मशीनों, बिजली और परिवहन के उत्पादन और विकास में तेजी से उद्योग धंधे बढ़ाने के लिए अच्छा आधार तैयार हो गया है। मशीनें बनाने की दृष्टि से हमारे उद्योग बहुत पीछे थे, लेकिन यह अभाव भी अब कुछ न कुछ पूरा हुआ है। यद्यपि देश के निजी उद्योग भी योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था के भीतर राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए काम कर रहे हैं, फिर भी अर्थ-व्यवस्था की बुनियादी कमजोरियों को दूर करने के लिए हमारी निगाह सरकारी उद्योगों की ओर ही जाती है। दूसरे आर्थिक शक्ति को भी कुछ लोगों के हाथों में केन्द्रित होने से रोकने का उपाय भी सरकारी उद्योगों की वृद्धि है। भविष्य में राष्ट्रीय उद्योगों का हिस्सा और भी महत्व बढ़ेगा।

## जन-शक्ति का उपयोग

राष्ट्रीय या सरकारी उद्योगों के साथ ही हमें सहकारी और खासकर छोटे तथा मध्यम उद्योगों की ओर भी ध्यान देना है और हर तरफ नये लोगों को प्रोत्साहन देना है। इन सब कामों के लिए हमें अपने देश के विशाल जन-समुदाय को तैयार करना है। शिक्षा, स्वास्थ्य और मकान देने की योजनाएं तथा पिछड़े वर्गों को उठाने के हमारे सब प्रयत्न और विज्ञान तथा शिल्प की सारी तरक्की देशवासियों को विकास के बड़े-बड़े काम करने योग्य बनाने के लिए ही है। हमारी पंचवर्षीय योजनाओं से हर अवस्था और हर स्थान के लोगों को शिक्षा मिलेगी तथा स्वास्थ्य, सफाई, मकानों और पीने के पानी आदि के प्रबन्ध से जनता को अधिक सुख और सुविधाएं मिलेंगी। हमारा ज़ोर इस बात पर है कि भोजन, कपड़ा, मकान, शिक्षा और स्वास्थ्य की कुछ न्यूनतम सुविधाएं देश के हर कुटुम्ब को प्राप्त हो सकें।

## रोजगार के अवसर

हमारी अनेकों समस्याओं में सबसे बड़ी समस्या है, देशवासियों के लिए रोजगार बढ़ाना। अशक्त अर्थ-व्यवस्था की सबसे बड़ी कमी यही है कि इसमें सब काम चाहने वालों को उचित आय वाला काम नहीं मिल सकता। हमारी पंचवर्षीय योजनाओं में काम बढ़ाने की काफी कोशिश की गई है। लेकिन शुरू में उनसे अधिक लाभ नहीं दिखाई देगा। पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत होने वाले कामों के साथ-साथ जब दफ्तरों में बड़े-बड़े काम चलाए जायंगे और उद्योगों की वृद्धि का कुछ हिस्सा गांवों को भी मिलने लगेगा, तब रोजगार काफी बढ़ेगा।

इन्हीं सब दिशाओं में हमने यथासम्भव प्रयत्न किये हैं। आयोजित विकास के इन दस वर्षों में हमारी राष्ट्रीय आय ४२ प्रतिशत बढ़ी, लेकिन आबादी बढ़ने के कारण प्रति व्यक्ति आय लगभग १८ प्रतिशत ही बढ़ पाई। पहले हमने देश की अर्थ-व्यवस्था में प्रति वर्ष ५ प्रतिशत वृद्धि करने का लक्ष्य रखा था, लेकिन हाल की जनगणना से पता चला कि आबादी संभावना से अधिक बढ़ रही है। अभी काफी दिनों तक हमारी आबादी इसी गति से बढ़ती रहेगी, इसलिए जनसाधारण की समृद्धि में अधिक वृद्धि नहीं होगी। भविष्य में हमें अपने आर्थिक विकास के प्रयत्न और बढ़ाने होंगे।

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# क्या आर्थिक विकास के लिए घाटे की अर्थव्यवस्था आवश्यक है ?

प्रो. अमूल देसाई

इस तथ्य के बावजूद भी कि घाटे की अर्थ-व्यवस्था से मुद्रास्फीति पैदा होती है जो आर्थिक विकास सम्वद्धन स्वयं अपने उद्देश्य को असफल बनाती है, उसके समर्थक तीसरी पंचवर्षीय योजना में निम्न तीन आधारों पर उसे जारी रखने की दलीलें पेश करते हैं।

पहले, रुपये की क्रय-शक्ति की गिरावट दुनियाँ की अन्य महत्वपूर्ण मुद्राओं की तुलना में कम हुई है। जबकि १९४८ और १९५८ की अवधि में रुपये के मूल्य में १.७ प्रतिशत सालाना के हिसाब से गिरावट हुई, उसी अवधि में डालर के मूल्य में १·८ प्रतिशत, पौण्ड के मूल्य में ४.३ प्रतिशत, फ्रांक के मूल्य में ६·७ प्रतिशत और जर्मन मार्क के मूल्य में १.७ प्रतिशत सालाना गिरावट हुई। दूसरे शब्दों में हमारे देश की तुलना में दूसरे देशों में मूल्य सतह में तेजी से चढ़ाव हुआ और विकास के लाभों को देखते हुए भारत की अर्थ-व्यवस्था में तीसरी पंचवर्षीय योजनावधि में अभी भी घाटे की अर्थ-व्यवस्था की गुंजाइश है।

दूसरे यह सुझाव दिया जाता है कि तीसरी योजना में घाटे की अर्थ-व्यवस्था की मात्रा केवल ५५० करोड़ रुपये की होगी जबकि दूसरी योजना में यह मात्रा १,३०० करोड़ रुपये की थी इसीलिए घाटे की अर्थ-व्यवस्था की थोड़ी मात्रा का मूल्यों पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि घाटे की मात्रा थोड़ी होगी और राष्ट्रीय आय में तेजी से वृद्धि होगी।

तीसरे, यह कहा जाता है कि बढ़ती हुई कीमतें न केवल आर्थिक विकास का सूचकांक है बल्कि पूंजी लगाने तथा उत्पादन बढ़ाने का एक उत्तेजन भी है। इसके अलावा कीमतों की वृद्धि से आवश्यक रूप से मुद्रास्फीति अवस्था का संकेत नहीं होता है।

उपर्युक्त सभी दलीलें केवल आंशिक रूप से सत्य हैं और इनसे गलतफहमियाँ पैदा हो सकती हैं।

यह बात सच है कि गत दस वर्षों में इस देश की अपेक्षा अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रान्स या जर्मनी जैसे देशों में कीमतों में अधिक चढ़ाव हुआ। लेकिन जिस प्रकार एक धनी व्यक्ति कीमतों में १० प्रतिशत तक की वृद्धि के भार को भी आसानी से सहन कर लेता है, वहाँ एक निर्धन व्यक्ति के लिए एक प्रतिशत वृद्धि भी हो जाती है, इसी प्रकार हमारे जैसे अल्पविकसित देश की तुलना में बढ़े-चढ़े देश मूल्यों के तीव्र चढ़ाव को भी सहन कर सकते हैं। इस सन्दर्भ में मुख्य बातें न केवल मूल्यों की तुलना है बल्कि राष्ट्रीय आय की तुलना, प्रति व्यक्ति आय, रोजगार की मात्रा, राष्ट्रीय आय वृद्धि के प्रमाण में खपत, सामानों के उत्पादन में वृद्धि, मूल्यों की सामान्य वृद्धि के सम्बन्ध में जीवन की आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि और इसी प्रकार की अनेक अन्य बातें शामिल हैं। अन्तर्राष्ट्रीय तुलना करते समय यह बात भुला दी जाती है कि इंग्लैण्ड और अमेरिका जैसे अन्य देशों में न केवल काफी अधिक प्रति व्यक्ति और राष्ट्रीय आय है, बल्कि उनकी अर्थ-व्यवस्थाएँ लगभग सम्पूर्ण रोजगार सतह पर कार्यरत हैं। भारत में मुद्रास्फीति की सहनशीलता, मर्यादा, प्रति व्यक्ति आय कम होने तथा देश में व्यापक बेरोजगारी फैली होने के कारण, बहुत कम है। इसके अलावा भारत में अन्य देशों की तुलना में खाद्य पदार्थों की कीमतें अन्य कीमतों की अपेक्षा काफी अधिक बढ़ गई है। वर्तमान विकृत अवस्था का यह एक महत्वपूर्ण अंग प्रतीत होता है।

इसी प्रकार, स्वयं घाटे की मात्रा किसी बात को प्रमाणित नहीं करती। पहले से ही बढ़ी हुई कीमतों पर घाटे की थोड़ी-सी ही मात्रा से स्थिर 'आय वर्ग' की जनता का जीवनमान न केवल कम हो जायगा बल्कि मुद्राधिकारियों के लिए मूल्य गति नियंत्रण करना उत्तरोत्तर कठिन हो जायगा। मंदी के समय पैदा की गई मुद्रा की एक बड़ी मात्रा जहाँ एक वरदान बन सकती है, वहां जब गत पाँच वर्षों में कीमतें पहले से ही काफी अधिक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ गई है; उस अवस्था में मुद्रा की थोड़ी सी भी मात्रा खतरनाक हो सकती है । इसी प्रकार एक ऐसी अर्थ-व्यवस्था में, जिसमें एक अत्यन्त कार्यक्षम प्रशासनात्मक व्यवस्था के साथ-साथ खपत और पूंजी लागत पर कुशल मोहरेबाज नियंत्रणों की व्यवस्था हो, कीमतों में वृद्धि किये बिना ही अतिरिक्त मुद्रा की बड़ी मात्रा चालू की जा सकती है । लेकिन लोकतांत्रिक व्यवस्था से सम्बद्ध अर्थ-व्यवस्था में, जिसमें खास मोहरों पर नियंत्रण की कोई पद्धति न हो, अल्पाकार घाटे की अर्थ-व्यवस्था से भी मूल्यों में वृद्धि हुए बिना नहीं रह सकती है ।

इस संवेदनशील उपकरण के उपयोग के लिए यही बुनियादी मोहरा अपनाना चाहिए कि पूँजी प्रवृति को उतेजना देने के बाद पैदा की गई नई मुद्रा को या तो सरकारी खजाने में वापस खींच लेनी चाहिए या उसको जमा धन के रूप में निष्क्रय रहना चाहिए या उसे उस वर्ग के लोगों के हाथों में जाना चाहिए जो उसे बचा कर उत्पादन में लगा सकें । केवल तभी, एक ओर खपत सामानों की मांग कम हो सकेगी और दूसरी ओर समानों की पूर्ति में वृद्धि होगी । लेकिन एक "समाज-वादी पद्धति" के निर्माण के उद्देश्य के अन्तर्गत क्रय-शक्ति को बचत कर्ताओं से लेकर खर्च करने वालों के हाथों में देने सम्बन्धी नीति से खपत सामानों की कुल मांग बढ़ जायगी जिससे कीमतों में और भी वृद्धि होगी । घाटे की अर्थ-व्यवस्था और आर्थिक समानता कम-से-कम कुछ समय के लिए परस्पर विरोधी हो जाते हैं और विशेषतया अल्प-विकसित देशों में जहाँ पर धनी व्यक्तियों से निर्धनों के पास धन हस्तान्तरण होने से गरीब लोग बचत करने के स्थान पर हमेशा खर्च करने के लिए प्राथमिकता देंगे (जब तक कि गरीबों से अतिरिक्त धन आय का काफी हिस्सा अनिवार्यतः बचत न कराया जाय) । आय वितरण में विषमता कम करने के उद्देश्य के सन्दर्भ में घाटे की अर्थ-व्यवस्था का थोड़ा प्रमाण भी खतरनाक हो सकता है ।

यह बात सच है कि विगत दो योजनाओं में उत्पादन का आधार काफी चौड़ा हो गया है और इसलिए अर्थ-व्यवस्था की अधिक उत्पादन क्षमता से घाटे की अर्थ-व्यवस्था के ही कारण मूल्यों पर पड़ने वाला प्रभाव हल्का होगा । यह बात भी सही है कि तीसरी योजना में भोजन और कृषि उत्पादन तथा खपत सामानों के उत्पादन पर अधिक ध्यान दिया जायगा और यह बात भी सही है कि घरेलू कमी को पूरा करने के उद्देश्य से पूरक स्टाफ के रूप में विदेशों से खाद्यान्न आयात करने के लिए दीर्घकालीन व्यवस्थाएँ कर ली गई हैं । इन कदमों से वस्तु बाजार पर पड़ने वाले दबाव को राहत मिलेगी । लेकिन साथ-साथ कुछ और भी बातें हैं जो कठिनाइयाँ पैदा करेंगी । ब्याज और अल्पकालीन कर्जों की अदायगी का अर्थ हमारी राष्ट्रीय आय के कुछ अंश का बाहर जाना होगा । हिसाब लगाया गया है कि हमारे निर्यात अर्जन की लगभग २० प्रतिशत रकम को आयात क्रय के लिए उपयोग में नहीं लाया जा सकेगा, क्योंकि उतनी रकम की आवश्यकता हमारे विदेशी कर्ज की अदायगी तथा तत्सम्बन्धित सेवाओं के लिए होगी । घरेलू बाजार में इस कीमत तक के सामानों की पूर्ति में कमी हो जायगी । मांग की ओर कुछ अधिक बातों के पैदा होने की संभावना है, जो कठिनाइयाँ बढ़ा देंगी । उनमें से एक बात विशेषतया ग्रामीण क्षेत्रों में रकम जमा करने की आदत का लोप होना है । अर्थ-व्यवस्था के विकास और जीवन के मूल्यों में परीवर्तन होने के फल-स्वरूप प्रदर्शन-प्रभाव (डिमोन्स्ट्रेशन इण्डैक्त) के कारण खपत-मण्डी की अधिक मांग होने की संभावना है । यह प्रक्रिया तब होती है जब ग्रामीण देखते है कि शहर के लोग खर्च करते हैं और अच्छा जीवन बिताते हैं तो वे भी बचाने की अपेक्षा खर्च करने लग जाते हैं । ऐसी स्थिति में भूतकाल में जमा की गई रकम, खपत-व्यय के रूप में बाहर आ जायगी, सामानों की मांग बढ़ेगी और इस तरह से कीमतें भी बढ़ेगी । इसलिए घाटे की अर्थ-व्यवस्था के प्रभावों को देखने के लिए न केवल पैदा की गई नई मुद्रा को बल्कि भूतकाल में पैदा की गई उस मुद्रा पर भी विचार करना चाहिए जो इस प्रकार जमा रखी है ।

तेजी से बढ़ती हुई कीमतें आर्थिक प्रगति का कोई दर्शकांक नहीं है, बल्कि इसके विपरीत उससे उत्पादन का ढांचा बिगड़ जाता है, निधियाँ सट्टेदार मार्गों की ओर

( शेष पृष्ठ २६१ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया : स्थापना और संगठन

प्रो० विश्वम्भरनाथ पाण्डेय

रिजर्व बैंक ऑफ इन्डिया की स्थापना १ अप्रैल १९३५ को हुई। इसकी स्थापना के साथ भारत की दीर्घकाल से चली आने वाली मौद्रिक तथा बैंकिंग आवश्यकता की पूर्ति हुई। भारत में केन्द्रीय बैंक ने 'बंगाल और बिहार के साधारण बैंक' (The General Bank of Bengal and Bihar) की स्थापना के प्रस्ताव में किया था। १९ वीं शताब्दी के अन्त में तथा बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारत में एक केन्द्रीय बैंक की स्थापना की जोरदार मांग तथा चेष्टायें की गईं। सन् १९२० ई० में ब्रुसेल्स की अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ-परिषद् ने यह प्रस्ताव स्वीकृत किया था कि "जिन देशों में केन्द्रीय बैंक नहीं हैं, उन देशों में शीघ्र ही केन्द्रीय बैंकों की स्थापना होनी चाहिये।" इन सब घटनाओं के परिणामस्वरूप १९२१ ई० में बम्बई, मद्रास तथा कलकत्ता के प्रेसीडेंसी बैंकों का एकीकरण करके इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना की गई। यह बैंक १ जुलाई १९५५ को राज्याधीन कर लिया गया और इसका नाम अब 'भारत का राज्य बैंक' (State Bank of India) कर दिया गया है।

सच्चे अर्थों में इम्पीरियल बैंक भारत का केन्द्रीय बैंक कभी नहीं रहा। इसके मुख्य कारण दो थे। एक यह कि इम्पीरियल बैंक का दृष्टिकोण अभारतीय था तथा दूसरा यह बैंक अर्ध-व्यावसायिक था और यह देश के अन्य व्यावसायिक बैंकों के साथ प्रतिस्पर्द्धा करता था। इम्पीरियल बैंक की वास्तविक स्थिति को समझते हुये ही १९२५ में हिल्टन यंग कमीशन ने भारत सरकार के सामने भारत में एक शुद्ध केन्द्रीय बैंक की स्थापना का प्रस्ताव किया था। कमीशन के इस सुझाव पर विचार करते हुये जनवरी १९२७ ई० में विधानसभा में एक 'बिल' पेश किया गया जिसका उद्देश्य केन्द्रीय बैंक की स्थापना था। कुछ राजनीतिक कारणों से यह बिल उस वक्त स्थगित कर दिया गया और १९३३ में भारत के संवैधानिक सुधारों पर जब श्वेत-पत्र प्रकाशित किया गया तब केन्द्रीय बैंक की स्थापना का प्रश्न

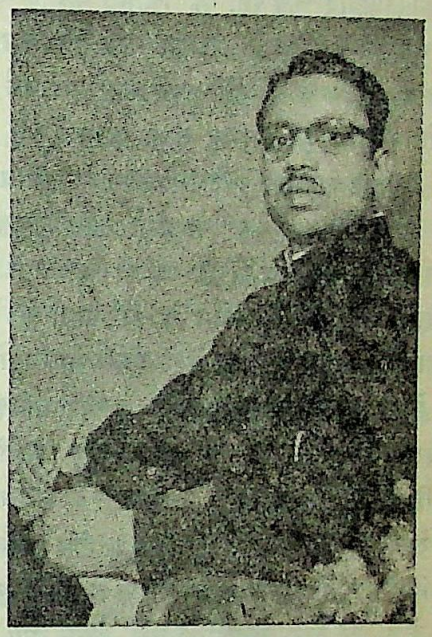

लेखक

फिर से उठ खड़ा हुआ। इस पत्र के अनुच्छेद ३२ में कहा गया था कि केन्द्र में ब्रिटिश सरकार के हाथ से भारतीय हाथों में सत्ता के हस्तान्तरण के पूर्व राजनीतिक प्रभावों से सर्वथा मुक्त एक केन्द्रीय बैंक के रूप में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया का सफलतापूर्वक कार्य करते रहना आवश्यक है। स्पष्टतः यह शर्त भारत में रिजर्व बैंक की स्थापना का प्रस्ताव था। अस्तु, ८ सितम्बर १९३३ को भारतीय विधानसभा में एक नया विधेयक उपस्थित किया गया। विधानसभा ने यथासमय इस विधेयक को स्वीकार कर लिया और ६ मार्च १९३४ को इसे गवर्नर जनरल की विधिवत-स्वीकृति भी मिल गई। फलतः १ अप्रैल १९३५ से रिजर्व बैंक ऑफ इन्डिया ने अपना कार्य आरम्भ किया। अप्रैल १९३७ में जब बर्मा भारत से अलग हो गया तब भी जून १९४२ तक बर्मा के लिये मुद्रा अधिकारी के रूप में यह बैंक कार्य करता रहा। इसके बाद भी ३१ मार्च १९४७ तक रिजर्व बैंक ने बर्मा सरकार के 'बैंकर' का काम किया। इसी तरह १९४७ में जब भारत और पाकिस्तान



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विभाजन हुआ तब जून १९४८ तक यह बैंक पाकिस्तान सरकार को केन्द्रीय बैंक की सेवायें देता रहा।

## बैंक का प्रारम्भिक संगठन

रिजर्व बैंक की स्थापना के समय भारत में इस बात पर बहुत वाद-विवाद चल रहा था कि यह बैंक हिस्सेदारों के बैंक के रूप में संगठित हो अथवा राज्य बैंक के रूप में। हिस्सेदारों के बैंक के पक्ष में सबसे महत्वपूर्ण तर्क यह था कि उद्योगपतियों का अनुभव तथा परामर्श नहीं प्राप्त हो सकेगा। इसके अतिरिक्त विदेशी सरकार के अधीन केन्द्रीय बैंक के राज्य बैंक होने का भी कोई खास महत्व राष्ट्रीय दृष्टि से नहीं था। इससे अच्छा यह था कि देश के अनुभवी व्यापारियों तथा उद्योगपतियों के ही हाथ में बैंक की व्यवस्था रहे। इन सब कारणों से निजी हिस्सेदारों के बैंक के रूप में ही यह बैंक संगठित हुआ। इसकी अधिकृत पूँजी ५ करोड़ रुपये की रखी गई जो सौ-सौ रुपयों के पाँच लाख हिस्से में विभक्त थी। २ लाख २० हजार रुपये के हिस्से केन्द्रीय सरकार को दिये गये। शेष समस्त पूँजी निजी हिस्सेदारों के हाथ में केन्द्रित न हो जाय इस कारण समस्त देश को चार अंचलों में बाँट दिया गया—बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली और मद्रास। और यह व्यवस्था की गई कि बैंक के हिस्से इन सभी अंचलों के व्यक्तियों के हाथ में बेचे जाँय। किन्तु इस सावधानी के बावजूद भी बैंक के हिस्से बम्बई अंचल के हिस्सेदारों के हाथ में केन्द्रित हो गये। इस दोष को दूर करने के लिये मार्च १९४० में भारत सरकार ने रिजर्व बैंक संशोधन नियम बनाकर यह सीमा निर्धारित की कि किसी भी व्यक्ति के हाथ में २० हजार से अधिक मूल्य के हिस्से नहीं रह सकते हैं। फिर भी हिस्सों का केन्द्रीकरण नहीं रुक सका और यह दोष किसी न किसी रूप में जनवरी १९४९ तक बना रहा जबकि इस बैंक का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया।

## बैंक का राष्ट्रीयकरण

समय-समय पर रिजर्व बैंक के राष्ट्रीयकरण की मांग पहले भी की जाती थी किन्तु द्वितीय महायुद्ध के बाद की घटनाओं ने इस दिशा में विशेष प्रेरणा दी। प्रथम यह कि अगस्त १९४७ को भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र हो गया। इसका सम्पूर्ण राजनीतिक आन्दोलन समाजवादी चेतनाओं से सम्बन्धित था। अतः स्वतन्त्रता के बाद देश की आर्थिक संस्थाओं का समाजीकरण अनिवार्य और स्वाभाविक था। द्वितीयतः युद्धोत्तर काल के प्रारम्भ में ही बैंक आफ फ्रांस (१९४५) तथा बैंक आफ इंगलैण्ड (१९४६) का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया था। भारत को पश्चिम के इन दो महत्वपूर्ण देशों के आचरण से प्रभावित होना स्वाभाविक था। अतः भारत सरकार ने १९४८ में रिजर्व बैंक (जन-स्वामित्व हस्तान्तरण) नियम (Reserve Bank Transfer to Public ownership Act) पास करके बैंक की समस्त पूँजी अपने अधिकार में ले लिया। पुराने हिस्सेदारों को प्रति १०० रुपये के हिस्से के लिये ११८ रुपये १० आने मुआवजे के बौन्ड दे दिये गये और इस एक्ट के अनुसार १ जनवरी १९४८ से रिजर्व बैंक ने पूर्ण सरकारी बैंक के रूप में अपना कार्यारम्भ किया।

## बैंक का प्रबन्ध

बैंक के प्रबन्ध, निरीक्षण तथा निर्देशन का भार एक केन्द्रीय निर्देशक मण्डल (Central Board of Directors) को सौंपा गया है, जिसमें कुल १५ सदस्य होते हैं। इन सदस्यों का विवरण इस प्रकार है—१ गवर्नर तथा ३ उपगवर्नर जिनकी नियुक्ति सरकार करती है। प्रत्येक स्थानीय मण्डल से एक एक करके ४ निर्देशक, ६ मनोनीत निर्देशक तथा १ सरकार द्वारा ही मनोनीत सरकारी कर्मचारी।

चारों क्षेत्रीय अंचलों के लिए एक एक स्थानीय मण्डल ( Local Board ) की व्यवस्था की गई है, जिसमें सरकार द्वारा नियुक्त ५ सदस्य होते हैं और जिनका कार्यकाल ४ वर्षों का होता है। इन सदस्यों की नियुक्ति सरकार इस प्रकार करती है कि उनके द्वारा क्षेत्रीय आर्थिक हितों, सहकारिता तथा स्वदेशी बैंकों आदि का समुचित प्रतिनिधित्व हो सके। स्थानीय मण्डलों का कार्य उन विषयों पर परामर्श देती है, जो केन्द्रीय मण्डल उनके पास भेजता है तथा ऐसे ही अन्यान्य कर्त्तव्यों का पालन करना भी उनके जिम्मे सौंपा करता हैं। क्षेत्रीय अंचल बम्बई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली हैं।

## आन्तरिक व्यवस्था

केन्द्रीय निर्देशक मण्डल का गवर्नर उसका सभापति



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा मुख्य शासन अधिकारी होता है। गवर्नर की अनुपस्थिति में उसके द्वारा मनोनीत कोई उपगवर्नर उसका स्थान ग्रहण करता है। बोर्ड के अधिनियमों के अन्तर्गत गवर्नर उन सब शक्तियों का प्रयोग कर सकता है जो एक्ट के द्वारा बैंक को दी गई हैं। अपने कर्त्तव्यों के पालन में गवर्नर अपने तीन उपगवर्नरों से समुचित सहायता लेता है। अभी की शासकीय व्यवस्था यह है कि एक गवर्नर नोट निर्गमन, विनिमय नियंत्रण, सरकारी एकाउण्ट, जमा एकाउण्ट, खुले बाजार की क्रियाओं, जन-ऋण तथा साधारण शासन प्रबन्ध कार्यों का निरीक्षण करता है। दूसरा बैंकिंग के कार्यों का निरीक्षण करता है, और तीसरा उप गवर्नर ग्रामीण साख बैंकिंग विकास तथा औद्योगिक वित्त के कार्य-भारको सम्हालता है।

गवर्नर और उपगवर्नरों का कार्यकाल ५ वर्षों से अधिक का नहीं हो सकता। किन्तु सरकार इनकी फिर से नियुक्ति कर सकती है।

बैंक का केन्द्रीय कार्यालय बम्बई में स्थित है। तथा इसके अन्तर्गत प्रमुख गणक (Chief Accountant) और मंत्री के कार्यालयों के अतिरिक्त विधि विभाग, कृषि साख विभाग, बैंकिंग क्रिया विभाग और बैंकिंग विकास विभाग, औद्योगिक वित्त विभाग, विनिमय नियंत्रण विभाग और शोध और सांख्यिकी विभाग के भी कार्यक्रम स्थित हैं।

देश भर में अपने विविध कार्यों के संतोषपूर्ण सम्पादन के लिए बैंक ने बंगकोट, बम्बई, कलकत्ता, कानपुर, नागपुर और नई दिल्ली में अपनी स्थानीय शाखाएं तथा कार्यालय भी खोल रखे हैं। इन शाखाओं में बैंक के बैंकिंग और निर्गम दो विभाग होते हैं। अन्य स्थानों में स्टेट बैंक आफ मैसूर इसका प्रतिनिधित्व करते हैं, जो इसके 'एजेंट' हैं। इनके अतिरिक्त लन्दन में रिजर्व बैंक का एक बैंकिंग विभाग भी है। व्यवसायिक तथा सरकारी बैंकों के कार्यों का निरीक्षण करने के लिए बैंक के बैंकिंग-क्रिया विभाग के कार्यालय बंगलौर को छोड़ कर ऊपर के सभी स्थानों तथा त्रिवेन्द्रम में खोले गये हैं। कृषि साख विभाग के कार्यालय कलकत्ता, मद्रास, नई दिल्ली तथा कानपुर में स्थित हैं।

## रिजर्व बैंक के विभाग

बैंक आफ इंगलैंड की तरह रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के भी दो प्रमुख विभाग हैं— (१) निर्गमन विभाग (Issue Department) जो पत्र मुद्रा के निर्गमन की व्यवस्था तथा नियमन करता है। (२) बैंकिंग विभाग (Banking Department) जो अधिकोषण सम्बन्धी कार्य करता है। यह विभाग तीन उपविभागों में बंटा हुआ है। (१) कृषि साख विभाग (२) विनिमय नियंत्रण विभाग और (३) अधिकोषण विभाग। कृषि साख विभाग ग्रामीण वित्त सम्बन्धी कार्यों को करता है। विनिमय नियंत्रण विभाग विदेशी विनिमय का नियंत्रण करता है तथा अधिकोषण विभाग देश की सम्पूर्ण बैंकिंग की व्यवस्था का नियमन एवं उनकी उचित कार्य-प्रणाली का निरीक्षण करता है।

## रिजर्व बैंक के मुख्य कार्य

रिजर्व बैंक का मुख्य कार्य देश की भौतिक व्यवस्था का नियमन है ताकि सरकार की सामान्य अर्थ-नीति के ढांचे के भीतर देश की अर्थ-व्यवस्था के विकास और आर्थिक स्थायित्व में सहायता पहुँच सके। १९३४ के रिजर्व बैंक आफ इण्डिया एक्ट की भूमिका में कहा गया है कि "भारत में मौद्रिक स्थायित्व के स्थापना तथा देश के हित में इसकी करेंसी और साख व्यवस्था के संचालन की दृष्टि से बैंक नोट के निर्गम का नियमन करना एवं राष्ट्रीय कोष की रक्षा करना ही रिजर्व बैंक का मुख्य कार्य है।'

मौलिक व्यवस्था के नियमन के अन्तर्गत करेंसी बैंकिंग तथा देश की सम्पूर्ण साख व्यवस्था का नियंत्रण शामिल है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बैंक को नोट-निर्गम का एकाधिकार दिया गया है, यह राज्य सहकारी बैंकों और व्यावसायिक बैंकों के बैंकर का काम करता है, उनके कोषों का प्रतिरक्षक बनता है तथा उन्हें अपने निर्णय के अनुसार ऋण आदि देता है।

साख नियमन (Regulation of Credit) के अपने कर्त्तव्यों के पालन के लिए बैंक के पास साख नियंत्रण

(शेष पृष्ठ २९४ पर)





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ऑटोमेशन (स्वचालन) से नई समस्यायें

देवीप्रसाद नौटियाल

•

औद्योगिक क्षेत्र में स्वचालन की प्रक्रियाओं से नया तकनीकी मोड़ आ चुका है। इस 'नये मोड़' से नई पेचीदी समस्यायें उठ खड़ी हुई हैं। श्रमिकों और प्रबन्धकों के के सम्मुख पुनः-प्रशिक्षण, सीनियरिटी का स्थायीकरण, वेतन-स्तर, वेतन दर में वृद्धि, आवास प्रावास की सुविधा पूर्ण स्थान पर कारखाना खड़ा करना, उद्योग में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं की उपलब्धि, बेकारी निवारण, नये कार्यों का वर्गीकरण आदि ऐसी समस्यायें हैं जिनका समुचित हल न निकाले जा सकने पर विश्व की राजनीतिक और आर्थिक गतिविधियों पर प्रभावकारी असर पड़ सकता है।

कोइ कैसा भी कुछ भी तर्क क्यों न प्रस्तुत करे, यह सामान्य और तर्क-संगत तथा वास्तविकता है कि 'स्वचालन' से बेकारी और बेरोज़गारी बढ़ती ही रहेगी घटेगी नहीं और निश्चय ही यह बड़े पैमाने पर वर्ग संघर्ष को जन्म देने वाला होगा। संयुक्त राज्य अमेरिका की एक औद्योगिक संस्थान की रिपोर्ट में बताया गया है कि १९५५ तक १६ प्रतिशत काम-काज 'स्वचालन तकनीकी प्रक्रिया' के अन्तर्गत आ चुका था और १९६४ तक ३९ प्रतिशत कारोबार स्वचालन के अन्तर्गत आ जायगा। वस्तुतः आज का विश्व आटोमेशन के दौर से गुजर रहा है। एक ओर उद्योगपति स्वचालित मशीनों से कम समय में, कम श्रम में अधिक उत्पादन से अधिक लाभ अर्जित करना चाहते हैं, दूसरी ओर श्रमिक चाहता है कि उसकी पुरानी सर्विस, सीनियरिटी तथा लाभ पर कोई आंच नहीं आने पाये, उसके पुनः प्रशिक्षण से भी उसके 'हितों' पर कोई बिपरीत असर न पड़े। इस अवरोध का समाधान आटोमेशन के अन्तर्गत मिलना संभव नहीं दीख पड़ता।

## बेकारी में वृद्धि

निश्चित रूप से 'स्वचालन' से रोजगार की स्थिति में निरन्तर कमी का आना अटल तथ्यहै, क्योंकि कम्पनियां इस बात के लिये बाध्य हो जायगी कि वह नये श्रमिकों की भर्ती न करे। फिर कारखानों का सुविधानुसार स्थानान्तरण भी करना पड़ता है। जैसे सूती वस्त्र मिलों के स्वचालित यंत्रीकरण से उत्तर अमेरिका के सूती वस्त्र उद्योग के मुकाबले दक्षिण अमरीका के सूती वस्त्र उद्योग को अधिक अच्छी स्थिति प्राप्त हुई है। इस तरह जब पुराने नगरों में रोजी के अवसर कम मिलने लगेंगे तो उनकी स्थिति में गिरावट आती जायेगी। लोग पुराने स्थान को छोड़ कर नई औद्योगिक बस्तियों में बसने लगेंगे।

अकेले रबर उद्योग में कम-से-कम लगभग ३१,००० श्रमिकों को उनके काम से हटा दिया गया है। रेल रोड में १९५९ तक ९०९,००० आदमी बेकार हुये। मोटर उद्योग में लगभग ७५००० कामगर काम से अलग कर दिये गये। यूनाइटेड आटो मोबाइल कामगरों की संख्या ५००० से घटाकर ४००० कर दी गई है। गिनती आदि करने वाली मशीनों (गणकों) के इस्तेमाल से क्लर्कों की भारी छंटनी हो रही है। तेल, रासायनिक और आणविक श्रमिकों का कहना है कि 'स्वचालन' ने हज़ारों-लाखों श्रमिकों को बेरोज़गार बना दिया है। अफ्ल-सियो (AFL CIO) का कहना है कि ५ वर्ष के अन्दर ही ८००,००० लोग बेकार हो गये।

इन उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम यह कहने को बाध्य हो जाते हैं कि ज़िन-जिन उद्योगों में स्वचालित यंत्र सज्जित किये गये हैं, उससे बेरोजगारी व बेकारी के आंकड़ों में वृद्धि हुई है।

यह भी सचाई है कि 'आटोमेशन' के अन्तर्गत नये उद्योगों का सूत्रपात भी हुआ और नये तकनीकी कार्य भी शुरू किये गये। पुराने श्रमिकों को भी नहीं निकाला गया बल्कि उन्हीं को नये कार्य के लिये पुनः प्रशिक्षित किया गया। फिर भी छंटनी, बेकारी और बेरोजगारी की समस्या पेचीदी व भंयकरतम होती ही जा रही है। बहुत से ऐसे श्रमिक हैं जो कई वर्षों से एक पद्धति से काम करते रहे हैं और अब नई परिस्थितियों में अपने को ढालने में कतई अक्षम पाते हैं। ऐसे लोगों की रोजी की समस्या



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# राजस्थान हस्तकला का केन्द्र है

राजस्थानी कला के नमूने खरीदकर अपने घरों को
सुशोभित कीजिए

तथा

## गृह उद्योगों को प्रोत्साहन दीजिये !

* हाथी दांत के खिलौने
* लाख व नगीनों के कंगन
* बंधाई व छपाई के स्कार्फ
* जोधपुर की बनी शीतल जल की झारियां
* चन्दन की लकड़ी के खिलौने
* रंगी एवं बंधेज की साड़ियां
* पक्के रंग की चादरें
* लकड़ी एवं खस की बनी वस्तुएं
* कलापूर्ण सामान
* नीले व सफेद पाटरी के सामान
* आकर्षक नमूने की दरियां
* सांगानेरी रंगाई व छपाई के वस्त्र
* उदयपुर के सुन्दर लकड़ी के खिलौने
* जयपुर की कसीदा की हुई जूतियां व जते
* जयपुर की प्रसिद्धि प्राप्त चूड़ियां व चूड़े
* कोटा के सुन्दर डोरिये

## प्रत्येक सरकारी विक्रय केन्द्र पर प्राप्त

राजस्थानी हस्तकला के नमूने अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भी
ख्याति प्राप्त कर चुके हैं !

**राजस्थान हैन्डीक्राफ्ट्स एम्पोरियम**
क्वींन्स वे लेन, नई दिल्ली

**राजस्थान हैन्डीक्राफ्ट्स एम्पोरियम**
जयपुर, जोधपुर, उदयपुर

## राजस्थान राज्य द्वारा प्रचारित




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असाधारण ही नहीं विस्फोटक भी हो सकती है। इस समस्या को कामगरों और उद्योगपतियों के बीच कशमकश के लिये नहीं छोड़ा जा सकता। यह एक बड़ी राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है।

समस्या का आंशिक समाधान पुनः प्रशिक्षण से तो हो सकता है, परन्तु यह स्थायी हल नहीं, क्योंकि नये काम के लिये नये प्रशिक्षण देने के बाद भी श्रमिकों की आवश्यकता कम होती रहेगी, कम्पनियां और सरकार ज्यादा-से-ज्यादा यही कर सकती हैं कि पुनः प्रशिक्षण का सारा व्यय स्वयं वहन करें और पुराने श्रमिकों को नये काम की गारंटी दें लेकिन करोड़ों की संख्या में जो नौजवान काम की ढूँढ में हर वर्ष निकलते हैं, उनका क्या होगा ? क्या उनकी जीविका की गारंटी सरकार तथा समाज देने को तैयार है या नहीं ?

वैसे छोटे-मोटे काम तो होते ही रहेंगे लेकिन अच्छा काम बहुत सीमित रहेगा। कुछ काम तो केवल बटन दबाने तक ही सीमित रह जायगा। केवल सर्तकता अधिक बरतनी पड़ेगी। एक मिनट की बदहवासी नये यंत्रीकृत उद्योग में भारी उथल-पुथल मचा सकती है। पुराने उद्योग में पुराना अनुभव किसी काम न आएगा। शारीरिक श्रम का महत्व ही नहीं रहेगा। एक मजदूर की प्रतिक्रिया उसके शब्दों में यह है कि "मुझे ८ घंटा प्रतिदिन श्रम करना अच्छा लगता है बनिस्पत इसके कि मैं शारीरिक श्रम न करके ८ घंटे तक दत्त चित्त होकर सतर्कता से मशीनी संचालन निहारता रहूँ।"

यह भी सम्भव है कि जिस व्यक्ति ने 'नयी विधि' के के लिये नव प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है उसको काम ही न मिले, तो ऐसे प्रशिक्षण से क्या लाभ ? आखिर जब सभी उद्योगों में स्वचालन विधि अपनाई जाती है तो प्रशिक्षित श्रमिक कहाँ जायेंगे। इसका उत्तर ढूँढना भी सरल नहीं है। 'आटोमेशन' में थोड़ा जो सौभाग्य की बात है वह यह कि आटोमेशन कार्य-प्रणाली को कार्य रूप में संचालित करनेके लिये काफी लम्बे समय की आवश्यकता होती है और इस बीच श्रमिकों को पुनः प्रशिक्षण और व्यवस्थापकों व कम्पनियों के मालिकों से अपनी कुछ शर्तें मनवाने का समय मिल जाता है।

## महत्वपूर्ण परिवर्तन

आटोमेशन के अन्तर्गत महान परिवर्तन होने स्वाभाविक हैं। और विशेषतः इस्पात, रबर और मोटर उद्योगों आदि में बड़ी-बड़ी कठिन समस्यायें आती हैं, जिनका हल निकालना टेढ़ी खीर होता है, और खासकर इसका विपरीत असर बाबू वर्ग और मध्य वित्तीय व्यवस्थापक वर्ग पर पड़ता है।

आटोमेशन के अन्तर्गत जो व्यक्ति नये कार्य के अनुकूल नहीं रहे और जिनका पुराना अनुभव भी नये कार्य के लिये उपयुक्त न हो, उनको थोड़ी-सी मजदूरी पर छोटे-मोटे कामों में ही लगाया जा सकता है। जहाँ स्वचालित यंत्रीकृत कारखाने स्थापित होंगे वहीं लोग जाकर बसने लगेंगे और इस तरह विभिन्न स्थानों में उनकी औद्योगिक स्थिति के अनुसार उनमें अच्छे—बुरे परिवर्तन होते रहेंगे। एक बार गुडयेर टायर एण्ड रबर कम्पनी ने धमकी दी कि यदि उसके १ करोड़ डालर खर्च करने पर वहां के मजदूरों ने संभावित उत्पादन करने की कोशिश नहीं की तो वह आक्रन शहर से टायर का बड़ा कारखाना हटा देंगे। मजदूरों ने कम्पनी की शर्तें मान ली और स्थानान्तरण रुक गया। आटोमेशन के अन्तर्गत पुराने संयंत्रों से सज्जित कारखाने बन्द हो जाने संभव हैं। लेकिन इसका असर वहां के निवासियों पर विपरीत ही पड़ सकता है, जब तक कि उसी क्षेत्र में नये कारखाने नहीं स्थापित किये जाते या मजदूर वहां छोड़कर अन्यत्र नहीं बस जाते। रोजी की ढूँढ में लोगों को अपना घर जायदाद छोड़कर जाना पड़ेगा, स्थानीय अर्थव्यवस्था में गिरावट आ जायगी, स्थानीय करों से होने वाली आय में भी कमी आ जायगी।

## संरक्षण

नई अर्थव्यवस्था में मजदूरों के 'हितों' के संरक्षण के नियमों में समुचित परिवर्तन किया जाना आवश्यक है, क्योंकि परिस्थितियों और कार्य-प्रणालियों में पहले से काफी अन्तर आ गया है। काम के घन्टों में भी कमी का किया जाना श्रमिकों की दृष्टि से उचित ही है।

[ शेष पृष्ठ ३०२ पर ]



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अत्यधिक तेल उत्पादन : खपत की समस्या

आजकल भारत सरकार तेल के निकालने और उसके संशोधन के लिये काफी प्रशंसनीय प्रयत्न कर रही है और यह हमारे सौभाग्य की बात हैं कि तेल के निकालने में हमें पर्याप्त सफलता प्राप्त हो रही है। इससे हम प्रति वर्ष करोड़ों रुपये की विदेशी-मुद्रा बचा सकेंगे।

वस्तुतः आज शक्ति के स्रोतों में तेल का अत्यन्त महत्व-पूर्ण स्थान है और यही कारण है कि अमेरिका, रूस और ब्रिटेन आदि देशों में तेल के व्यवसाय में करोड़ों अरबों रुपये लगा रखे हैं। इस व्यवसाय में न केवल इन देशों को लाभ होता है बल्कि मध्यपूर्व के उन देशों को भी कम लाभ नहीं होता, जहां ब्रिटिश और अमरीकन कम्पनियां तेल निकालती हैं।

किन्तु तेल उद्योग के सामने एक नई समस्या उत्पन्न हो रही है, इसका विकास इतनी तीव्र गति से हो रहा है कि जब मांग केवल २.५ प्रतिशत बढ़ रही है, तब तेल का उत्पादन ६ प्रतिशत की गति से बढ़ रहा है। इसका अर्थ यह है कि आवश्यकता से अधिक उत्पादन हो रहा है और इसी कारण तेल की कीमतें कुछ कम हो रही हैं। १९५६ तक 'शक्ति'—कोयला, तेल, बिजली आदि की आवश्यकता जिस तेजी से बढ़ रही थी, उसकी अपेक्षा तेल और गैस का उत्पादन अधिक बढ़ रहा है। जिस गति से इनका उत्पादन बढ़ रहा है, यदि १९७० तक वही गति रही तो फिर शक्तिके अन्य साधनों की आवश्यकता ही न रहेगी। इनमें भी गैस का उत्पादन अधिक तीव्र गति से हो रहा है और यह असंभव नहीं है कि तेल का महत्व कुछ कम हो जाय। दूसरी तरफ बिजली का उत्पादन भी निरन्तर बढ़ रहा है। यह भी तेल के महत्व को कम करने का एक कारण बन गया है।

मोटर गाड़ियों में तेल की खपत बहुत होती है, किन्तु मोटर निर्माण में जो नये आविष्कार हो रहे हैं, उनके कारण प्रति गैलन गाड़ी डेढ़ गुना मील चल सकती है। इस कारण बहुत-सी मोटर गाड़ियों में भी तेल की खपत कम होने लगेंगी।

कोरिया युद्ध के दिनों में अमरीकी सरकार को चिन्ता उत्पन्न हो गई थी कि क्या बढ़ती हुई तेल की आवश्यकताओं को पूर्ण भी किया जा सकेगा। इसलिये सरकार ने यह सिफारिश की थी कि तेल उत्पादन की क्षमता बहुत अधिक—१० लाख बैरल प्रतिदिन अर्थात् वास्तविक उत्पादन से १५ प्रतिशत अधिक बढ़ा दी जाय ताकि किसी भी असाधारण संकट का सामना किया जा सके। इसी दौड़ का परिणाम यह हुआ कि १९५८ के मध्य तक २० लाख बैरल अधिक उत्पादन क्षमता प्राप्त कर ली गई और आज तो करीब २८-२९ लाख बैरल उत्पादन क्षमता है। इस अत्यधिक उत्पादन का परिणाम यह हो रहा है कि तेल के दाम गिर रहे हैं। इस समय अमेरिका में करीब ४०-४५ बिलियन (१=१० करोड़) बैरल तेल अमेरिका में रिजर्व किया जा चुका है। एक दूसरे अनुमान के अनुमान के रिजर्व तेल की मात्रा करीब ९० बिलियन बैरल है। परस्पर प्रतिस्पर्धा से तेल अधिकाधिक निकाला जा रहा है ताकि तेल कम्पनियों को सस्ता पड़े।

तेल की कीमतें गिरने का एक बड़ा कारण न्यूयार्क विश्वविद्यालय के प्रोफेसर मार्कस नाडलर की सम्मति में यह है कि अब तेल दुनियां के अनेक भागों में मिलने लगा है। तेल कम्पनियों ने खर्च करके आवश्यकता से अधिक उत्पादन क्षमता के संयंत्र लगाये हैं, क्योंकि अधिक उत्पादन सस्ता पड़ता है।

इन पंक्तियों के लिखने का यह आशय नहीं है कि भारत को तेल उद्योग के सम्बन्ध में किये जा रहे प्रयत्नों में कुछ शिथिलता कर देनी चाहिये। हमें तो अपनी आवश्यकता से बहुत कम तेल देश में मिलता है। हम इस दृष्टि से जितना अधिक स्वावलम्बी हो सकेंगे, होने का प्रयत्न करना चाहिये।

एक अमेरिकन अर्थ-शास्त्री के कथनानुसार अमेरिका में लोहे का उद्योग भी अब कुछ गिरने लगा है। लोहे का स्थान अलम्युनियम, प्लाष्टिक और कंक्रीट ले रहा है। इस्पात के बहुत बड़े ग्राहक मोटर-गाड़ियों के कारखाने थे। लेकिन अब ऐसी गाड़ियां बनने लगी हैं, जिनमें इस्पात काफी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम लगता है। इन गाड़ियों को कम्पेक्ट कार कहते हैं।

दक्षिण अफ्रीका सोने का सबसे बड़ा उत्पादक है वहाँ ७० करोड़ डालर का सोना प्रतिवर्ष उत्पन्न होता है। दक्षिण अफ्रीका के बाद सोने का दूसरा बड़ा उत्पादक देश रूस है जहां ५० करोड़ डालर का सोना प्रतिवर्ष होता है। अन्य देशों में सोना इस तरह उत्पन्न होता है—

| | |
|---|---|
| कनाडा | १५ करोड़ ७० लाख डालर |
| अमेरिका | ५ करोड़ ७० लाख डालर |
| आस्ट्रेलिया | ३ करोड़ ८० लाख डालर |
| घाना | ३ करोड़ २० लाख डालर |

किन्तु सबसे अधिक सोना अमेरिका के पास है—१८ बिलियन डालर! इसके बाद दूसरा संभवतः रूस का है जहां संभवतः ८ बिलियन का सोना मौजूद है। ब्रिटेन और पश्चिमी जर्मनी के पास तीन-तीन बिलियन डालर हैं।

रूस की अर्थ-नीति में स्वर्ण मुद्रा का कोई महत्व नहीं है फिर भी वह पिछले कुछ वर्षों से लगातार सोना एकत्र कर रहा है। साम्यवादी अर्थपद्धति में सोना केवल विदेशों से व्यापार सम्बन्ध के काम में आता है जबकि पूंजीवादी देशों की अर्थपद्धति का आधार ही सोना है, साम्यवादी देशों में सरकार ही पदार्थों का मूल्य निर्धारण करती है न कि बाजार की स्वतंत्र गति से मूल्य निर्धारित होते हैं। पूंजीवादी देशों में कागजी मुद्रा का आधार भी एक नियत स्वर्णकोष होता है, लेकिन साम्यवादी अर्थपद्धति में इसकी भी आवश्यकता नहीं होती। साम्यवादी अर्थ-शास्त्री तो सोने को बहुत कम महत्व देते हैं, फिर भी यह सचाई है कि रूस कुछ वर्षों से सोने का अधिकाधिक संग्रह कर रहा है।

अमेरिका में इस रहस्यपूर्ण स्वर्ण-संग्रह के सम्बन्ध में काफी चर्चा हो रही है। दूसरे कुछ लोगों की सम्मति में रूस इसलिये स्वर्ण-संग्रह कर रहा है कि वह किसी भी समय अमेरिका की डालर मूल्य नीति में संकट पैदा कर सकता है।

● ●

## १९६०-६१ में सबसे अधिक कम्पनियों की रजिस्ट्री

१९६६०-६१ में १,६८३ नयी कम्पनियों की रजिस्ट्री हुई इन कम्पनियों की अधिकृत पूंजी २८७ करोड़ रु० थी। अभी तक कम्पनियों की रजिस्ट्री एक साल में इतनी कभी नहीं हुई थी और यह संख्या १९५९-६० में रजिस्टर हुई कम्पनियों की संख्या से दुगनी थी। पिछले साल यानी १९६०-६१ में १५३ सार्वजनिक और १,५३० निजी कम्पनियों की रजिस्ट्री हुई। दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में कुल ६,०३९ कम्पनियों की रजिस्ट्री हुई। सबसे अधिक कम्पनियां २,११४, पूर्वी क्षेत्र में रजिस्टर हुई। दूसरी योजना के दौरान कम्पनियों की चुकता पूंजी में ७ अरब रु० की वृद्धि हुई।

## विभिन्न देशों में महंगाई

नीचे की तालिका से यह ज्ञात होता है कि केवल भारत में ही नहीं सभी देशों में पिछले दस वर्षों में मंहगाई बढ़ी है अर्थात मुद्रा की क्रयशक्ति कम हुई है। इस दृष्टि से केवल भारत सरकार की निति को मंहगाई के लिये उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। विश्व-व्यापी प्रवृति ही ऐसी है कि उत्पादन की अपेक्षा मांग बढ़ती ही जा रही है।

| | १९६० | १९६१ |
|---|---|---|
| श्री लंका | १०० | ९४ |
| स्विटजरलैण्ड | १०० | ८७ |
| बेलजियम | १०० | ८२ |
| जर्मनी | १०० | ८१ |
| भारत | १०० | ८१ |
| संयुक्त राज्य अमेरिका | १०० | ८१ |
| पाकिस्तान | १०० | ७५ |
| इटली | १०० | ७५ |
| नीदरलैण्ड | १०० | ७४ |
| जापान | १०० | ६७ |
| ब्रिटेन | १०० | ६७ |
| न्यूजीलैण्ड | १०० | ६५ |
| नार्वे | १०० | ६४ |
| फ्रांस | १०० | ५७ |
| ईरान | १०० | ५१ |
| चीन (ताईवान) | १०० | २८ |

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# औद्योगिक विकास में उपेक्षित दृष्टि

इन पंक्तियों के पाठकों तक पहुँचने से पहले संभवतः राष्ट्रीय विकास परिषद के तीसरी योजना सम्बन्धी विचार पाठकों तक पहुँच जाय। इस योजना में मुख्य बल कृषि और उद्योग के अधिक उत्पादन पर बल दिया गया है। हम इन पंक्तियों में केवल उसके उद्योग पक्ष की चर्चा करेंगे।

उद्योग के उत्पान की दो प्रमुख समस्या हैं—पहली समस्या यह है कि पदार्थों का उत्पादन आवश्यकता के अनुसार बढ़ता जाय। इसके लिये अधिक पूंजी, अधिक प्रशिल्पिक जानकारी तथा अधिक श्रम चाहिये। दूसरी समस्या यह है कि हमारा उत्पादन व्यय यथासंभव कम हो ताकि हम जनता तक न केवल कम मूल्य में पदार्थ पहुँचा सकें बल्कि विदेशों को भी प्रतिस्पर्धात्मक मूल्य पर अपना माल बेच सकें।

जहाँ तक पहली समस्या का सम्बन्ध है, योजना आयोग सरकारी और गैर सरकारी दोनों क्षेत्रों में अरबों रुपया लगाने को तैयार है। इसी के लिये विदेशों से ऋण लिया जा रहा है। विदेशी उद्योग पतियों से पूंजी प्राप्त की जा है तथा देश के विभिन्न साधनों का औद्योगिक विकास में प्रयोग करने की योजनायें बनाई जा रही हैं। तीसरी योजना की सर्वाङ्गीण पूर्ति के लिये ५५० करोड़ रुपये नासिक के प्रेस से भी लिये जांयगे।

दूसरी समस्या उत्पादन व्यय को कम करने की है। देश के उद्योग पतियों ने इस सम्बन्ध में काफी विचार किया है। उनका कहना यह है कि उत्पादन व्यय कम करने के लिये यह आवश्यक है कि प्रति श्रमिक उत्पादन बढ़ाया जाय। अगर श्रमिक के वेतन बढ़ते हैं तो यह भी आवश्यक है कि उसका उत्पादन भी बढ़ना चाहिये। वेतन और उत्पादन क्षमता के अनुपात में बहुत अन्तर नहीं होना चाहिये। उनकी आपत्ति यह है कि देश के औद्योगिक उत्पादन में इनका अनुपात एकसा स्थिर नहीं रहा। मजदूरी बढ़ी है परन्तु अनेक उद्योगों में उतनी उत्पादन क्षमता नही बढ़ी। नीचे की दो तालिकाओं से यह स्पष्ट हो जायगा।

प्रतिश्रमिक वेतन

| | १९४८ | | १९५७ | |
|---|---|---|---|---|
| | प्रति मजदूर मजदूरी | वेतन का निदेशक अंक | प्रति मजदूर मजदूरी | वेतन मुद्राप्रसार को निकाल कर |
| १—वस्त्र उद्योग | १,१०७ | १०० | १,४५७ | १३२ |
| २—जूट उद्योग | ७३० | १०० | १,०५३ | १४४ |
| ३—लोहा तथा इस्पात | १२८४ | १०० | २,१५० | १६७ |
| ४—इंजीनियरिंग | ९७५.९ | १०० | १,४९३.० | १२६.४ |
| ५—चीनी | ५८६ | १०० | १,४३३ | १४१ |
| ६—रासायनिक | ८०३ | १०० | १,२४८ | १७८ |
| ७—कागज | ८०५ | १०० | १,३८१ | १५५ |
| ८—सीमेण्ट | ६७९ | १०० | १,२८५ | २०३ |
| कुल ❀ | ९०४ | १०० | १२८५ | १४२ |

❀ जनगणना में सम्मिलित २९ उद्योगों का वेतन क्रम।

इस तालिका में मजदूरी अथवा वेतन में वे सब सुविधायें भी सम्मिलित कर दी गई हैं जो मालिकों द्वारा श्रमिकों को दी जा रही है। हम नीचे दूसरी तालिका दे रहे हैं। इससे यह मालूम होगा कि उत्पादन क्षमता उक्त उद्योगों में कितनी बढ़ी या घटी है।

## उत्पादन क्षमता के निदेशक अंक

| उद्योग | १९४८ प्रति व्यक्ति उत्पादन मूल्य में वृद्धि (रु०) | क्षमता का निदेशक अंक | १९५७ प्रति व्यक्ति उत्पादन मूल्य में वृद्धि (रुपये) | क्षमता का निदेशक अंक |
|---|---|---|---|---|
| १—वस्त्र उद्योग | २,२६२ | १०० | १,९१७ | ९३.४ |
| २—जूट उद्योग | १,२३५ | १०० | १,४६३ | १३०.७ |
| ३—लौह तथा इस्पात | २,६२४ | १०० | ५,६७१ | २३८.४ |
| ४—इंजीनियरिंग वस्तुयें | १,४७० | १०० | २८२२ | १७२.८ |
| ५—चीनी | १,७१८ | १०० | २४९२ | १४८.५ |
| ६—रासायनिक | २५१३ | १०० | ५९३२ | २६०.४ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ७—कागज तथा गत्ता | १८११ | १०० | ३७९४ | २३१.१ |
| ८—सीमेंण्ट | २,२१२ | १०० | ४१६८ | २०७.८ |
| कुल ❀ | १८६२ | १०० | २४५२ | १४५.३ |

❀ जनगणना में सम्मिलित २९ उद्योग

इस तालिका से यह तो स्पष्ट है कि उत्पादन क्षमता बढ़ी है, किन्तु बीच के कुछ वर्ष ऐसे भी आये हैं, जबकि उत्पादन क्षमता कम हुई है। वस्त्र उद्योग में १९५४ में उत्पादन क्षमता ८८.५ तक गिर गई थी। इसी तरह जूट में उत्पादन क्षमता १५०.३ तक बढ़ी और १९५४ में १२८.१ तक गिर गई। १९५१ और १९५७ में जहां मजदूरी २४ अंक बढ़ी है वहां उत्पादन क्षमता केवल ८.६ अंक बढ़ी है। जिन उद्योगों में अधिक ऊँचे किस्म की मशीनरी लगी है, उनमें उत्पादन क्षमता काफी बढ़ी है।

देश के उद्योगपति इन अंकों से यह सिद्ध करना चाहते हैं कि मजदूरी का सम्बन्ध उत्पादन क्षमता से जोड़ना चाहिये। किन्तु औद्योगिक उत्पादन वृद्धि के साथ एक और महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसकी हम उपेक्षा कर जाते हैं। और वह है रोजगार। औद्योगिक उत्पादन बढ़ाना ही हमारा एक मात्र उद्देश्य नहीं है। यदि जनता को बेकार रखकर हमने उत्पादन बढ़ाया तो हमारी योजना व्यर्थ हो जायगी। नीचे की तालिका से यह ज्ञात होता है कि जितना अधिक रुपया अधिक उन्नत उद्योगों में लगाया जाता है अथवा मशीनरी में राशनलाईजेशन को निकाला जाता है, उतना ही लोगो को रोजगार कम मिलता है। हमारे देश में पूंजी के साधन सीमित हैं। उन साधनों का प्रयोग यथा-संभव अधिकाधिक रोजगार प्रिय होना चाहिये। नीचे की तालिका से यह स्पष्ट होता है कि एक आदमी को रोजगार देने के लिये निम्न उद्योगों में कितना-कितना रुपया लगाया गया है—

| | १९४८ | १९५७ |
|---|---|---|
| १—वस्त्र उद्योग | ७१७ | १८३३ |
| २—जूट | ७१९ | १८८४ |
| ३—लौह तथा इस्पात | ४०५१ | ११००६ |
| ४—इंजीनियरिंग | १६१२.५ | २,८८७.३ |
| ५—चीनी | १९२८ | ३,१६२ |
| ६—रासायनिक | २६८८ | ११,३७४ |
| ७—कागज | २९६४ | ८,७४४ |
| ८—सीमेंट | ३,७११ | १५,५९९ |
| कुल — | १२६६ | ३१९० |

इस तालिका से यह स्पष्ट है कि औद्योगिक विकास के साथ-साथ पूंजी में मजदूर को रोजगार देने की क्षमता कम होती गई है। हमारे देश में जहां इतनी विराट जन-शक्ति विद्यमान है, वहां अधिक रुपया लगाकर लोगों को रोजगार से बंचित करना कहां तक उचित हैं। छोटे उद्योगों में लगाई हुई दो-तीन-सौ रुपये की पूंजी एक व्यक्ति को रोजगार दे सकती है, जबकि बड़े उद्योगों में एक व्यक्ति को रोजगार देने के लिये हजारों रुपये लगाने पड़ते हैं। सर्वोदय अर्थशास्त्र इस दृष्टि पर विशेष बल देता है। हमारे योजना निर्माताओं को इस युक्ति के बलाबल पर एक बार फिर गंभीरता से विचार करना चाहिये। • •

## पूर्वी जर्मन की भवन योजनाएं

जर्मन जनवादी गणतंत्र में तीन तरह की भवन योजनायें हैं—श्रमिक भवन, सहकारी योजना और पुराने भवनों की योजना। इन योजनाओं के अन्तर्गत एक गुसलखाने के साथ दो कमरों वाले फ्लैट का किराया क्रमशः ३९ मार्क, ४८ मार्क, ४० मार्क और २० मार्क के लगभग पड़ता है। यहाँ के फ्लैट्स में कमरों के गरम रखने का प्रबन्ध रहता है। गाँवों और छोटे कसबों में पुराने मकानों का किराया और भी कम है।

मकानों के बारें में सट्टेबाजी और मुनाफ़ाखोरी की कोई गुंजायश नहीं। हालांकि जर्मन जनवादी गणतंत्र में कुछ मकानों का स्वामित्व गैर सरकारी भी है लेकिन तथाकथित म ंत्र दुनिया की तरह यहाँ किरायों में मुनाफाखोरी नहीं चलती।

सात साला योजना में भवन निर्माण को भी प्राथमिकता दी गयी है। इसमें श्रमिक भवन सहकारी योजना का सबसे बड़ा भाग है। इस योजना में सहकारी समिति के सदस्य जो चन्दा देते हैं, उसे उनका शेयर मान लिया जाता है, जो फ्लैट छोड़ने पर किरायेदार को मिल जाता है। ढाई कमरों वाले फ्लैट के लिए २१०० मार्क शेयर के रूप में देना पड़ता है। साथ ही ३०० से लेकर ८०० घन्टे तक का श्रम भी करना होता है। यह शेयर १० साल की किस्तों में दिया जा लकता है। • •



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया साहित्य

भारतीय योजना-करण—ले० प्रो० विश्वम्भरनाथ पाण्डेय प्रकाशक—मोतीलाल बनारसीदास पुस्तक विक्रेता, बाँकीपुर, पटना ४.। मू० १.३१ नये पैसे।

प्रस्तुत-पुस्तक के लेखक श्री विशम्भरनाथ पाण्डेय अर्थ-शास्त्र के अनुभवी अध्यापक हैं। उनकी एक विशेषता यह है कि केवल पुस्तकों का अध्ययन ही नहीं करते, बल्कि आर्थिक प्रश्नों पर वे स्वतंत्र चिंतन भी करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने भारत की पंचवर्षीय योजनाओं पर एक दृष्टि डाली है। प्रथम अध्याय में उन्होंने आर्थिक योजना और उसके सिद्धान्तों की सुन्दर चर्चा करते हुये बताया कि योजना के कितने भेद हैं, उसके प्रमुख उद्देश्य क्या हैं, उसका प्रयोजन क्या है, पूँजीवादी देशों में, अविकसित देशों में और प्रजातंत्र तथा साम्यवादी देशों में सुनियोजित विकास योजनाओं की क्या समस्यायें हो सकती हैं। भारत की पंचवर्षीय योजना का प्रारम्भिक इतिहास देते हुये उसकी विशेषतायें भी बताई गई हैं। दूसरे अध्याय में भारत की अब दो पंचवर्षीय योजनाओं का परिचय दिया गया है और उसकी संक्षिप्त आलोचना की गई है और योजनाओं की पूर्ति में आने वाली बाधाओं की भी चर्चा हुई है। यह भाग हमारी सम्मति में पुस्तक का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग है। यदि इसी प्रसंग में गांधीवादी दृष्टिकोण से भी योजना की आलोचना प्रस्तुत की जाती तो परिचय हो जाता। योजना की प्रशंसा में उसे नैतिक तथा आध्यात्मिक कहना हमारी समझ में कुछ अत्युक्ति होगी। इन आर्थिक योजनाओं ने तो भारत के दृष्टिकोण को ही नैतिक की अपेक्षा भौतिक ही अधिक बना दिया है। हमारा दृष्टिकोण ही बदल गया है और अब हम वस्तुओं का मूल्य केवल नये पैसे में आंकने लगे हैं।

एक अध्याय में तीसरी पंचवर्षीय योजना की संक्षिप्त रूपरेखा दी गई है। यह पुस्तक अर्थ-शास्त्र के विद्यार्थियों की दृष्टि से लिखी गई है और इसलिये प्रत्येक अध्याय के अन्त में परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्न भी दे दिये गये हैं, यदि लेखक जन-सामान्य की दृष्टि से इन योजनाओं की सफलता या असफलता पर भी प्रकाश डाल देते तो अधिक अच्छा होता।

आयोजन (परिवार नियोजन विशेषांक)—सम्पादक श्री सुमनेश जोशी; कार्यालय-नारनोली भवन सांगानेरी गेट जयपुर, राजस्थान। मूल्य सजिल्द पुस्तक-पांच रुपया।

प्रस्तुत विशेषांक एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। इसमें आज की प्रमुख समस्या सन्तति-निरोध के सम्बन्ध में अनेक नेताओं के तथा चिकित्सकों के विचारों का संग्रह किया गया है। इस कारण जहाँ प्रस्तुत विषय के अधिकांश पहलुओं का विवेचन हो सका है, वहाँ विभिन्न लेखकों के लेखों में पुनरावृत्ति भी अनेक स्थलों पर हो गई है। सम्पादक का मुख्य उद्देश्य संतति निरोध की उस सरकारी योजना का प्रचार है, जो सरकार इस दिशा में कर रही है। संतति निरोध के भिन्न-भिन्न उपायों को भी सचित्र और विस्तृत परिचय दिया गया है। अच्छा होता कि दो एक लेखों में संतति निरोध का दूसरा पक्ष भी दिया जाता। आजकल संतति निरोध का प्रचार सरकारी सहायता से इसलिये स्पष्ट रूप में किया जा रहा है कि अनेक विचारकों को उसमें अनैतिकता के दर्शन होते हैं इस दृष्टि से भी दो एक लेख अवश्य आने चाहिये थे। पाठक को स्वयं विचार करने के लिये प्रश्न के दोनों पक्ष मिलने चाहिये। अन्तिम अध्याय में राजस्थान राज्य के परिवार नियोजन संघ का अनावश्यक परिचय दिया गया है और इसके कारण समस्त विशेषांक सरकारी प्रकाशन का एक अंक दिखाई देने लगता है। हम इस पत्र के तेजस्वी सम्पादक से यह आशा करते हैं कि वह अपने पत्र को प्रकाशन विभाग का एक अंग न बनाकर स्वतंत्र चिंतन के रूप में पाठकों को विचारपूर्ण सामग्री देंगे।

विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था—ले० श्री सिद्धराज ढड्ढा-अखिल भारतीय सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट काशी। मूल्य ६१ नये पैसे।

प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य सर्वोदय अर्थ-शास्त्र का परिचय देना है। श्री सिद्धराज ने अपनी पुस्तक को चार भागों में बाँटा है। खादी का विचार, ग्रामोद्योग, विकेन्द्रित उद्योग व्यापार और फुटकर प्रश्न। प्रथम भाग तो प्रश्नोत्तरी के रूप में है। इसमें खादी के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को उठाकर उनका उत्तर दिया गया है। एक प्रश्न के उत्तर में लेखक बहुत सुन्दर शब्दों में लिखते हैं कि "आज मनुष्य के बजाय यंत्रों और कल-कारखानों की चिन्ता अधिक है। आज के कल-कारखाने के युग में भी अस्सी फीसदी आदमियों को कठोर परिश्रम करना पड़ता है। सिर्फ दस बीस फी सदी आदमी ही वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण व्यापार उद्योग के दलाल होने के नाम पर या प्रबन्ध के बहाने खुद उत्पादन किये बिना दूसरे की मेहनत के फल का उपयोग करना चाहते हैं। हम सिर्फ यह चाहते हैं कि आज बहुसंख्यक लोगों को जो श्रम मजबूरन और दूसरों के गुलाम बन कर करना पड़ता है, वह श्रम वे बुद्धि पूर्वक स्वेच्छा से अपने निज के लिये करें और उससे समाज तथा अपने को लाभ पहुँचायें। इस क्रिया में आज के दस बीस प्रतिशत परोपजीवी लोगों को भी उत्पादन श्रम में लगना होगा। मानव-उपयोगी रेडियो आदि आविष्कारों को हम पसंद करेंगे। किन्तु बेकारी बढ़ाने या जनता के बुनियादी और आवश्यक स्वावलम्बन को नष्ट करके उसे पंगु बनाने वाले यंत्रों को हम अवश्य बन्द करेंगे।" इसी तरह अन्य प्रश्नों के भी सुन्दर उत्तर दिये गये हैं। एक लेख में लेखक ने आज के संतति निरोध की भी आलोचना की है। लेखक कहते हैं कि मनुष्यों की संख्या जिस अनुपात से पिछले दिनों बढ़ी बतलाई जाती है, यदि उसको हम स्वीकार करें तो आज से दो हजार वर्ष पूर्व की तिथि पर शायद एक मनुष्य भी न रहा होगा, किन्तु लेखक यह लिखते हुये भूल गये हैं कि आज की जनसंख्या-वृद्धि का एक मुख्य कारण यह भी है कि विज्ञान और शिक्षा में मृत्यु संख्या को पहले की अपेक्षा बहुत कम कर दिया है। समाजवाद, साम्यवाद और गांधी अर्थ नीति का तुलनात्मक अध्ययन मननीय लेख हैं।

महापुरुष कीर्तनम्—लेखक और प्रकाशक पं०—धर्मदेव विद्यावाचस्पति, आनन्द कुटीर, ज्वालापुर (उत्तर-प्रदेश। मूल्य सजिल्द दो रुपया।

प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान लेखक ने भारत और विदेशों के करीब एक सौ महान् पुरुषों का कीर्तन संस्कृत पद्यों में किया है। इन महानुभावों में उन्होंने भारत के महात्माओं, कवियों, विद्वानों समाज सुधारकों, वीर सैनिकों, राजनीतिक नेताओं आदि सबका समादेश किया है। भारत में भी उन्होंने उत्तर और दक्षिण दोनों के महापुरुषों का स्तवन किया है। प्रत्येक संस्कृत श्लोक के नीचे उसका अर्थ दिया गया है। इससे संस्कृत न जानने वाले भी महापुरुषों की विशेषताओं को जान सकेंगे। उदाहरण के लिये हम ने तीन पद्य नीचे दे रहे हैं।

मूर्धन्यभूतो भुवि तार्किकेषु,
ह्यद्यापि यो मन्यतः एव विप्रैः।
परस्तनास्तिक्कमतं सुधीन्द्रं,
तं शङ्कराचार्यमहं नमामि॥

गुरुस्तेगस्यासीद् भुवि बहुमतो वीरतनयो,
धृतोऽसिर्येनाऽऽसीत् सकल खल पापं शमयितुम्।
कवियोगी भक्तोऽखिल जगति विख्यात महिमा,
गुरुं गोविन्दं तं प्रमुदित मनस्का इह नुमः॥
भातीयं राष्ट्रमेतत् संविधानुं हि स्वतन्त्रं,
यः प्रसेहे यातना नानाविधाः कारागृहेषु।
वर्तते सौभाग्यतो यो मन्त्रिमुख्यो भारतस्य—
श्री जवाहरलाल ईडयो नेहरू नेहरू वंशावतंसः॥

भारत में परस्पर साम्प्रदायिकता को कम करने सहिष्णुता की भावना बढ़ानी है तो ऐसी पुस्तकों का प्रचार और अध्ययन आवश्यक है। भाषा बहुत सरल है और लेखक ने बिना धर्म, भाषा और राज्य के वेद के सभी महापुरुषों को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है।

विज्ञापन के लिए

सम्पदा

सर्वोत्तम

साधन

सम्पदा, अशोक प्रकाशन मन्दिर

२८-११ शक्तिनगर, दिल्ली-६



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# यूरोपीय देशों में शरणार्थियों की नई समस्या

एक समय था, जब यूरोप के साम्राज्यवादी देशों से नागरिक पराधीन देशों का शोषण करने व पैसा कमाने के लिए उन देशों में जा रहे थे। भारत, एशिया तथा अफ्रीका के भिन्न-भिन्न देशों में इंगलैण्ड, फ्रांस, बेल्जियम, हालैंड, पुर्तगाल आदि देशों के लाखों नागरिक अपने अधीनस्थ देशों में व्यापक उद्योग और शासन के नाम पर रुपया बटोर ने के लिए गए थे। पर समय सदा एक सा नहीं रहता। आज कालचक्र दूसरी दिशा में घूम रहा है और एक के बाद एक पराधीन देश स्वतन्त्र हो गया है।

कालचक्र में इस परिवर्तन का एक परिणाम यह हो रहा है कि विजेता देशों के नागरिकों को फिर अपने-अपने देशों में जाने के लिए विवश होना पड़ रहा है। पंद्रह साल पहले भारत में जितने अंग्रेज थे, आज उसके सौवां हिस्सा भी नहीं है। सब को वापस अपनी मातृभूमि में जाना पड़ा। २॥ लाख फ्रांसीसी उत्तरी अफ्रीका से अपने देश में लौटे हैं। ३ लाख डच इण्डोनेशिया से लौटने को मजबूर हुए हैं। २॥ लाख इटालियन लीबिया और पूर्वी अफ्रीका से और ६० लाख बेल्जियन कांगों से। अभी कांगों से अल्जीरिया से लाखों यूरोपीय लोगों को वापस अपने देशों को जाना पड़ेगा। पूर्वी जर्मनी से भी यद्यपि उपर्युक्त कारण से नहीं केवल रोजी कमाने के लिए १.२५ करोड़ लोगों को पश्चिमी जर्मनी भागना पड़ा है।

इस भारी संख्या में आने-वाले नवागन्तुकों का पुनर्वास उनकी अपनी मातृभूमि के लिए भी एक समस्या बन गयी है। भारत को तो शरणार्थियों की समस्या का काफी अनुभव हो चुका है। अब यूरोप के देशों को भी अपने ही नागरिकों के पुनर्वास की समस्या परेशान कर रही है। फिर भी जर्मनी की आर्थिक व्यवस्था इतनी सुदृढ़ और उन्नतिशील है कि उसे पूर्वी जर्मनी से आने वाले लोगों के पुनर्वास में कोई कठिनता नहीं हुई। युद्ध से क्षत-विक्षत जर्मनी के पुनर्निर्माण तथा औद्योगिक विकास में वे खप गए, किन्तु अन्य देशों के लिए इन सब शरणार्थियों को खपाना आसान काम नहीं है। इन सब का यह दावा है कि राष्ट्रीय सरकारों ने अपने-अपने अधीनस्थ देशों को अपनी इच्छा से स्वतन्त्र किया है इसीलिए उनके सामने विवश होकर अपना कारोबार, जमीन-जायदाद और नौकरी छोड़ कर मातृभूमि लौटने के सिवाय और कोई चारा नहीं था। इसलिए मातृभूमि का ही यह कर्तव्य है कि उनके पुनर्वास और सम्मानपूर्ण जीवन निर्वाह के लिए खुद प्रबन्ध करें तथा उनकी हानि का पूरा मुआवजा दें तथा अपने घर वापिस आने वाले नागरिकों को कुछ न कुछ सुविधाएं अवश्य दें। अभी तक किसी भी यूरोपीय देश ने उनकी क्षति पूर्ति का दावा मंजूर नहीं किया। हालैण्ड में, जहां की अर्थव्यवस्था प्रगतिशील है, उनको बसाया जा सका है। वहां गत महायुद्ध में २८ प्रतिशत मकान ध्वस्त हो गए थे। उन्हें तथा नवागन्तुकों के लिए मकान बनाने आदि के काम में सब खप गए। इटली में पहले ही बेकारी फैली हुई थी। नवागन्तुकों के कारण बेकारी और भी फैल गई। बेल्जियम में देशव्यापी हड़तालों ने सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था ही छिन्न-भिन्न कर डाली है। नवागन्तुओं को वहां कैसे बसाया जा सकता है? फ्रांस में यद्यपि कृषि भूमि की कमी नहीं है, तथापि अभी ४० लाख नागरिकों के लिए मकानों का अभाव है। नवागन्तुकों को मकान देने में कोई प्राथमिकता देने से सरकार ने इंकार कर दिया है।

नवागन्तुक अपने-अपने देशों में सरकार से वैसे ही असन्तुष्ट हो रहे हैं, जिस प्रकार हमारे देश में शरणार्थी। इन नवागन्तुकों का यह दावा है कि अपने देश को समृद्ध बनाने में उनका बहुत बड़ा भाग रहा है। वे वही थे जो अपनी मातृ-भूमि से सैकड़ों हजारों मील दूर अपरिचित वातावरण में रह कर भी अपनी मातृ-भूमि को समृद्ध करते रहे। अब उनकी मातृ-भमि ने उन्हें ही निराश कर दिया है। इसलिए मातृ-भूमि का कर्तव्य है कि उनके पुनर्वास की पूर्ण व्यवस्था करे।

## सोने के बटन

गुरुदेव के जन्मदिवस के अवसर पर उनकी पत्नी श्रीमती मृणालिनी देवी ने उन्हें उपहार स्वरूप सोने के बटन भेंट किये। गुरुदेव ने कहा—छिः छिः, मैं सोने के बटन लगाऊंगा! मेरा देश किसानों का है, मुझसे यह न हो सकेगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बैंक और बीमा व्यवसाय में वृद्धि

खातेदारों के हितों की सुरक्षा के लिए भारत सरकार कुछ समय से ऐसे विभिन्न उपायों पर विचार कर रही है, जिनसे देश के बैंकों की स्थिति सुदृढ़ हो। इसी उद्देश्य से पिछले वर्ष कमजोर बैंकों को लेन-देन बन्दी की अनुमति देने के लिये एक कानून बनाया गया, जिससे ये बैंक अपनी स्थिति को मजबूत कर लें या दूसरे बैंकों के साथ मिल जाएं। यह कानून बनने के बाद से छोटे बैंकों को बड़े बैंकों में मिला भी दिया गया है।

बीच-बीच में सरकार के सामने ऐसे सुझाव आते रहे हैं कि इसके अतिरिक्त बैंक के फेल होने, या उनके पुनर्निर्माण के अथवा बड़े बैंकों के साथ मिलने के दौरान खातेदारों को जो कठिनाइयां होती हैं, उन्हें दूर करने या कम करने के लिए बैंक खातों का बीमा करने की योजना शुरू की जाए।

इस काम के लिए रिजर्व बैंक के गवर्नर की अध्यक्षता में एक स्वशासी निगम स्थापित करने का विचार है। अध्यक्ष की सहायता के लिए एक छोटा-सा मण्डल बनाया जाएगा, निगम की अधिकृत पूंजी ५ करोड़ रु० होगी, जो पूरी की पूरी रिजर्व बैंक को दे दी जाएगी। स्टेट बैंक तथा उसकी शाखाओं को छोड़कर योजना लागू होने के दिन काम करने वाले सभी बैंकों के खातों को इस योजना के अन्तर्गत बीमा कर दिया जाएगा। स्टेट बैंक आफ इंडिया तथा उसकी शाखाओं की विशेष स्थिति को देखते हुए यह सोचा गया है कि इनके खातों का बीमा करना जरूरी नहीं है, फिर भी ये बैंक निगम की निधि में कुछ रुपया जमा करेंगे।

आशा है कि आरंभ में एक हजार रु० तक के खातों का बीमा किया जाएगा। वास्तविक राशि निगम स्वयं ही निर्धारित करेगा। इस बारे में एक विधेयक तैयार किया जा रहा है और इसे संसद के अगले अधिवेशन में प्रस्तुत करने का विचार है।

## बीमा व्यवसाय में वृद्धि

१९५९ में भारत में सामान्य बीमा व्यवसाय में काफी वृद्धि हुई है। इस वर्ष सामान्य बीमा व्यवसाय के सूचक अंक में १०.५ अंकों की वृद्धि हुई, जबकि १९५८ में ६.४ अंकों की वृद्धि हुई थी।

भारतीय बीमा कम्पनियों को सब प्रकार के साधारण बीमों की किश्तों से होने वाली शुद्ध आय १९५९ में २५.०२ रु० थी जबकि १९५८ में १२.९८ करोड़ रु० थी। १९५९ में आग बीमा से ५.१४ करोड़ रु०, समुद्री से २.६२ करोड़ रु० तथा अन्य प्रकार के बीमों से ७.२६ करोड़ रु० की आय हुई। भारत में काम करने वाली विदेशी बीमा कम्पनियों को १९५९ में समुद्री बीमा तथा अन्य विविध प्रकार के बीमों से १९५७ की अपेक्षा अधिक आय हुई। इन कम्पनियों को १९५९ में ७.४५ करोड़ रु० की आय हुई।

भारतीय बीमा कम्पनियों का विदेशों में भी इस वर्ष अच्छा काम रहा। १९५८ की अपेक्षा १९५९ में विदेशों से होने वाली शुद्ध प्रीमियम आय में वृद्धि हुई। यह आय १९५९ में १३.३२ करोड़ रु० थी, जिस में ७.२८ करोड़ रु० की आय आग बीमा से, २.४९ करोड़ रु० की समुद्री बीमा से और ३.५५ करोड़ रु० की आय अन्य बीमों से हुई।

वार्षिकों के अनुसार ३१ दिसम्बर, १९६० को बीमा अधिनियम, १९३८ के अन्तर्गत रजिस्टर की गयी कम्पनियों की कुल संख्या १६६ थी, जिस में से ८८ भारतीय और ७८ विदेशी कम्पनियां थीं। विदेशी कम्पनियों को कुल जितनी आय हुई, उसमें से लगभग ७१ प्रतिशत आय ब्रिटेन की ६२ कम्पनियों को हुई। कुल मिलाकर भारतीय कम्पनियों को २८.७८ करोड़ रु० की आय हुई।

३१ दिसम्बर, १९५९ को भारतीय बीमा कम्पनियों की कुल पूंजी ५७.०४ करोड़ रु० थी। १९५८ और १९५७ में यह राशि क्रमशः ३१.९३ करोड़ रु० और ४९.०८ करोड़ रु० थी।

३१ दिसम्बर, १९५९ को भारत में काम करने वाली विदेशी बीमा कम्पनियों की पूंजी ११.४१ करोड़ रु० थी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत में एकाधिकार की कोई संभावना नहीं

श्री मनुभाई शाह, केन्द्रीय उद्योग मन्त्री

राष्ट्र में एकाधिकार कहां है ? क्या एकाधिकारों की चर्चा आर्थिक दृष्टि से की जाती है ? यह स्मरण रखें कि इस बारे में औद्योगिक विशालता से कोई विभ्रम न होना चाहिये, कारण, मूल्यांकन-समिति ने भी उसे 'औद्योगिक साम्राज्य' की संज्ञा दे रखी है।

इस बारे में, मैं केवल दो ही बातें विचारार्थ यहां रखता हूँ। 'एकाधिकार' शब्द अर्थशास्त्र का है जिसका प्रयोग उस अर्थ में होता है जहां औद्योगिकों ने किसी माल को 'दबा' रखा हो अथवा किसी माल को अपने हाथों में 'नियंत्रित' कर रखा हो। इसे राष्ट्र के उद्योगपतियों की एक फेबन्दी भी कहा जा सकता है। यही कारण है कि ब्रिटेन और अमेरिका में 'एण्टीशेर्मन एक्ट' जैसे कानून ऐसे एकाधिकारों के विरुद्ध बने हुए हैं। ब्रिटिश साधारण सभा ने तो एकाधिपत्य के विरुद्ध एक आयोग ही तैनात कर रखा है। ऐसा उन देशों में इसलिए करना पड़ा, क्योंकि, वहां राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना आर्थिक विकास हो जाने के बाद आयी। किन्तु हम लोगों के सौभाग्य से राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना यहां आर्थिक विकास से बहुत पहले ही आ चुकी है। यह दूसरी बात है कि इतिहास ने आर्थिक विकास के लिए जो अवसर हमारे सामने उपस्थित कर रखे थे, उनका हम समुचित लाभ उठा न सके। किन्तु यह हमारी उस सामाजिक-राजनीति से अग्रसरता का ही फल है कि हमारी संसद् और राष्ट्र का जनमत भी एकाधिपत्यों के विरुद्ध पूर्ण सजग है और हमने ऐसे एकाधिपत्यों के लिए व्यवहारतः कहीं कोई स्थान रहने ही नहीं दिया है।

## विश्लेषण

सूती वस्त्र, चीनी और जनोपयोग के अन्य आवश्यक पदार्थों के क्षेत्र में ऐसा एक भी वर्ग राष्ट्र में नहीं, जिसके हाथों में राष्ट्रीय उत्पादन का ४ या ५ प्रतिशत से अधिक अंश न्यस्त हो। भारत में अधिक परिमाण में जनोपयोगी सामान तैयार करने वाली ऐसी एक भी औद्योगिक इकाई या औद्योगिक कारखाना ऐसा नहीं है, जिसका उत्पादन कुल राष्ट्रीय उत्पादन के ५ प्रतिशत से अधिक ठहरे।

किन्तु, इस बारे में कुछ विकल्प भी हैं एक विकल्प तो 'भारतीय धातविक वर्क्स कारखाना' ही है जो डिब्बे आदि तैयार करता है। पर, हमें यह विदित करते हर्ष होता है कि इस कम्पनी के हाथों में एक समय डिब्बों आदि के निर्माण में व्यस्त रहा। एकाधिकार आज जाकर राष्ट्रीय उत्पादन के केवल २० प्रतिशत तक आ गया है। यह परिणाम सम्भव करने का सारा श्रेय औद्योगिक (विकास एवं नियमन) कानून को है, जिसके जोड़ का विश्व में अन्यत्र कोई कानून नदारद है। हमारी औद्योगिक नीति एवं सामाजिक दर्शन की दृष्टि से इस कानून का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है। इन कानूनों ने ही भारत सरकार को ऐसे सभी किल्ली-कांटे और तौर-तरीकों से लैस कर दिया है, जिनके द्वारा समस्त विकास-कार्यों को निर्धारित दिशा में ही चलने में बड़ी सहायता मिली है। हम लोगों ने उद्देश्यतः इस कम्पनी से सर्वथा पृथक् दूसरी कम्पनियां डिब्बों आदि के निर्माणार्थ कायम किये जाने के लाइसेंस ऐसे परिणाम में प्रदान किये हैं, जिनसे शेष ८० प्रतिशत का उत्पादन उनसे सम्भव हो सके।

अब सीमेण्ट निर्माता 'ए० सी० सी०' कम्पनी की भी स्थिति को समझें। सब को ज्ञात है कि यह 'ए० सी० सी०' सीमेण्ट कम्पनी किस प्रकार अस्तित्व में आयी। चार-पांच कारखानों ने परस्पर में मिलकर इस 'असोशियेटेड सीमेंट कम्पनी' की स्थापना की। स्वतन्त्रता के समय और खासकर सन् १९५१ में इस कम्पनी की स्थिति यह थी कि सीमेंट में राष्ट्रीय उत्पादन का प्रायः ६४ प्रतिशत अंश वही तैयार करती थी। पर, अब हमारी निर्धारित नयी लाइसेंस नीति के अनुसार, जिसके द्वारा स्थापित कारखानेदारों के मुकाबले नये उद्योगाभिलाषियों को हम सदा आगे बढ़ाते हैं, 'ए० सी० सी०' का उत्पादन-परिणाम अब कुल राष्ट्रीय उत्पादन के अनुपात में ३९ प्रतिशत पर आ गया है। मैं



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह विश्वास करता हूँ कि तृतीय आयोजनकाल में इस कारखाने का उत्पादन-परिमाण ३५ प्रतिशत से भी अधिक नीचे ला दिया जायगा। सन् १९५६ के प्रस्ताव के बाद से यह हमारी सुनिश्चित नीति हो चुकी है कि प्रत्येक नये उद्योगाभिलाषी के आते ही हम उसे औद्योगिक लाइसेंस देने के बारे में प्रश्रय देते हैं, चाहे वह लाइसेंस सीमेंट उत्पादन के लिए मांगे अथवा अन्य किसी भी चीजों के लिए तलब करे।

## विमको-दियासलाई

इसके बाद, तीसरा प्रश्न 'विमको' कम्पनी का है जो भारतवर्ष में दियासलाइयों के निर्माण का कार्य प्रायः एकतंत्र रूप में चलाती रही है। इस सम्बन्ध में हमने उत्पादन-कर में श्रेणी-भेद प्रस्तुत किया और दियासलाई-निर्माता कारखानों को ४ प्रकार की इकाइयों में बांटा गया। इनमें ए० बी० सी० और डी० श्रेणी की इकाइयों को प्रोत्साहित किया गया। इस प्रकार, १९ बड़ी या मझौली श्रेणी की इकाइयां प्रोत्साहित की गयी। इससे गत ५ वर्षों के भीतर 'विमको' का दियासलाई उत्पादन तो २ करोड़ २० लाख ग्रूस के परिणाम में जहां का तहां ही थमा रह गया और नवीन इकाइयों का १ करोड़ ६५ लाख ग्रूस का उत्पादन अतिरिक्त मांग की पूर्ति करने लगा गया।

'विमको' कम्पनी का उत्पादन पहले राष्ट्र में शत प्रतिशत के परिमाण में रहा है, उसे नयी नीति द्वारा आज ६० प्रतिशत की स्थिति में ला दिया गया है। दियासलाई उद्योग की वृद्धि की गति राष्ट्र में तीव्र नहीं है।

## औद्योगिक गैस

इसके आगे, अब केवल औद्योगिक गैस का ही मसला निबटाने को रह जाता है। इस क्षेत्र में भी अब तक १४ नये कारखाने खोलने के लिए लाइसेंस दिये जा चुके हैं। २ साल के भीतर इसकी भी समस्या निबट जायगी। राष्ट्रीय वित्त में औद्योगिक गैस का कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं है। अतएव, इस बारे में चिन्ता का कोई खास कारण भी नहीं। कारण, चेष्टा तो हम इस बात की कर रहे हैं कि इस क्षेत्र में भी नये उद्योगाभिलाषी जन आगे आयें और औद्योगिक गैस के उत्पादन का काम चालू करें।

जैसा कि हम पूर्व में ही संकेत कर चुके हैं कि ब्रिटेन और अमेरिका के सामाजिक विकास का क्रम भारत के विकास की अपेक्षा भिन्न ही रहा है। यहां भारत में ऐसी प्रबुद्ध लोकसभा और प्रबुद्ध संसद की प्रतिष्ठा हुई है जो आरम्भ से ही 'समाजवादी समाज' के दर्शन से अनुप्राणित है। हम जितनी भी नीतियां चरितार्थ करते हैं, वे सभी इस लक्ष्य से प्रेरित रहती हैं ताकि साधारण जनता का प्रभाव बढ़े। यही कारण है कि यहां कीमतों की अधिक खींचतान सम्भव ही नहीं है। हम राष्ट्र के भीतर किसी प्रकार का भी एकाधिकार चलने देने के सर्वथा विरोधी है। किसी प्रकार के एकाधिकार का विकास तो हम सहन कर सकते ही नहीं। यदि कोई ऐसी खुराफात करना चाहे कि वह लघु अथवा मध्यम श्रेणी के औद्योगिकों को उखाड़ दे, उन्हें दबा दे या उनके उत्पादनों का माल दबा रखे या कुछ समय के लिए चीजों का भाव चढ़ा बैठने का तिकड़म करे तो हम ऐसे लोगों के विरुद्ध कार्रवाई की व्यवस्था करते हैं। इस कार्यों के लिए अन्य लोगों की अपेक्षा संसद के सदस्य और सामाजिक कार्यकर्ता कहीं अधिक जागरूक है। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि उपर्युक्त चार उद्योगों को छोड़कर, जहां एकाधिकार तोड़ने का व्यवस्थित चक्र चलाया जा रहा है। इस बात के लिए सर्वथा सन्नद्ध हैं कि एकाधिकार का कहीं भी स्थान न रहे।

यहां उद्योग [विकास एवं नियमन] कानून के अन्तर्गत प्राप्त अधिकारों की भी कुछ चर्चा भी आवश्यक है। मेरी समझ में, कुछ लोगों की धारणा है कि उपर्युक्त कानून के अन्तर्गत उद्योगों को केवल लाइसेंस देने का ही काम होता है। इससे बढ़कर अधिक भ्रान्तिमूलक बात दूसरी न होगी? उद्योगों के लिए लाइसेंस देना तो उक्त कानून के अन्तर्गत प्राप्त एक बहुत मामूली-सा ही कार्य है। इस कानून के ही पीछे तो हमारा सामाजिक एवं आर्थिक दर्शन काम कर रहा है। भावों का नियंत्रण, मशीनों का नियंत्रण या वितरण, राष्ट्रीय प्राथमिकताओंका निर्धारण एवं उनकी चरितार्थता, क्षेत्रीय विकास के सन्तुलन की निर्बाध प्रगति पर दृष्टि रखना आदि कतिपय ऐसे महत्वपूर्ण कार्य हैं, जो इसी कानून के अन्तर्गत चलते हैं और यही सब काम किये

समाप्त



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा रहे हैं।

अब रहा 'उद्योगों की विशालता' का प्रश्न । इनकी 'विशालता' निस्सन्देह बड़ी बाधक हो सकती है । हम सभी लोग उद्योगों की विशालता के विरोधी है, पर इस बारे में हमें संसद की भी सहानुभूति अपेक्षित है। कारण, हम लोग तो 'उद्योगीकरणका महान् कार्यक्रम' छेड़ बैठे हैं। यदि मैं कुछ आंकड़े इस सम्बन्ध में रखूं तब तो बहुत ही चौंकने जैसी स्थिति भी आ जायगी । स्वाधीनता प्राप्ति के प्रारम्भ में उत्पादक उद्योग क्षेत्र के भीतर कुल विनियोग का परिमाण प्रायः ७ अरब ९९ करोड़ रुपया ही रहा है, पर तृतीय आयोजन के अन्त तक इसका परिमाण तो प्रायः १० अरब रुपये का हो जाने वाला है। अतः समस्या तुलना करने की यहीं प्राप्त है। यदि राष्ट्रीय उद्योग का प्रस्तार, परिमाण और विविधता बढ़ती है तो संसद को इसमें प्रतिशतात्मक एवं आनुपातिक दृष्टि से ही उसके विस्तार का विचार करना होगा। फिर, उद्योग चलाने की कला, उत्तम प्रबन्ध-व्यवस्था, अनुभव, संघटन-क्षमता आदि भी ऐसी चीजें हैं जिनका विचार करना ही होगा और जिन्हें कुछ व्यक्तियों के शब्दों से ही भड़कने के आधार पर छोड़ा नहीं जा सकता। फिर, ऐसे व्यक्तियों के हाथों में शक्ति ही क्या है ? कानूनों के निर्माण की समस्त क्षमता तो हमारे हाथों में है। सारी नीतियों के निर्माता हम लोग हैं। सम्पूर्ण जनता का समर्थन हमें प्राप्त है और राष्ट्र की समस्त निष्ठा एवं भरोसा हमारे साथ है। धन के विनियोग का अधिकार और अर्थ भी हमारे ही हाथों में है। सरकारी क्षेत्र के उद्योगों का स्थान सर्वोपरि है ही। ऐसी दशा में, यदि हम टाटा और बिड़ला के कौशलों का उपयोग अलुमूनियम कारखाना या विशाल लौह तिक यंत्र बैठाने आदि जैसे कामों में नहीं लेते, जो निजी क्षेत्रों के लिए स्वीकृत भी हैं और जबकि हम सरकारी क्षेत्र में अपनी दृढ़ नीति के अनुसार अपनी शक्ति का अधिकतम धन निर्धारित भी कर चुके हैं, तो हानि अपनी ही होगी। बहुत सारे क्षेत्र ऐसे हैं जिन्हें हमें निजी क्षेत्र के उद्योगों के लिए छोड़ ही रखना पड़ा । इस स्थिति में यदि हम उन्हें नये प्रकार के काम की ओर प्रेरित करते हैं, तब इसमें कोई त्रुटि तो है नहीं। कागज, कपड़ा, चीनी, रसायन, रेयन, सीमेंट आदि के कारखाने तो ऐसी चीजें हैं जिन्हें नये उद्योगाभिलाषी भी चालू कर सकते हैं। अतएव मेरा कहना है कि 'औद्योगिक विशालता न आने देने के प्रति तो हम डटे ही हैं और यह प्रयत्न कर रहे हैं कि 'औद्योगिक विशालता' से बचा जा सके।

'औद्योगिक विशालता' के विरुद्ध हमारे दो युद्धक प्रयत्न चल ही रहे हैं। इनमें प्रथम यह है कि सूती वस्त्र, पटसन के कपड़े, सीमेंट, कागज, चीनी, रेयन, ऊंचे रसायन आदि जैसे पूर्ण विकसित उद्योगों के क्षेत्र में जमे लोगों को हमने दूर ही रखा है। भविष्य में इस पर हम और भी दृढ़ता से काम लेंगे। इन पूर्ण विकसित उद्योगों के क्षेत्र में आगे केवल नये उद्योगाभिलाषी ही प्रोत्साहन पा सकेंगे। यह है 'औद्योगिक विशालता' रोकने के लिए हमारा पहला कदम। ●


## उद्योग-व्यापार पत्रिका

का

### ग्रामोद्योग विशेषांक

जुलाई १९६१ से 'उद्योग-व्यापार पत्रिका' का नवें वर्ष में प्रवेश होने के उपलक्ष में पत्रिका का जुलाई ६१ का अंक 'ग्रामोद्योग-विशेषांक' के रूप में प्रकाशित करने का निश्चय किया गया है। इसमें निम्नलिखित विशेष लेख होंगे जिनसे गांव में चलने वाले उद्योगों की जानकारी मिल सकेगी।

गुड़ तथा खाण्डसारी, ताड़ गुड़, मिट्टी के बर्तनों का निर्माण, रस्सियां आदि बनाना, मधु-मक्खी-पालन, तेल-घानी, दियासलाई गृह-उद्योग, चमड़ा कमाना और रंगना, हाथ का बना कागज, बढ़ईगिरी तथा लोहारगिरी के उद्योग, अखाद्य तेल से साबुन बनाना।

विशेषांक में लगभग १०० पृष्ठ तथा अनेक आकर्षक चित्र होंगे। इस प्रकार यह विशेषांक हर प्रकार से संग्रहणीय होगा। मूल्य केवल ५० नये पैसे।

विशेषांक विज्ञापन देने का भी अच्छा साधन है। विज्ञापन-दाता विज्ञापन शीघ्र भेजें। एजेंटों को भरपूर कमीशन।

सम्पादक—**उद्योग-व्यापार पत्रिका**

वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,

भारत सरकार, नयी दिल्ली।




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ब्रिटेन का यूरोपीय 'कॉमन मार्केट' में प्रवेश

एक समीक्षक

●

ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति दुविधा में पड़ गई है। यूरोपीय देश पड़ोसी देश हैं, पड़ोस में व्यापार की सुविधा हैं, वांछित वस्तुयें उचित मूल्य पर पड़ौस से ही मिल सकती हैं और ब्रिटेन के तैयार माल की खपत भी तेजी से हो सकती है, क्योंकि यूरोपीय देशों की जनसंख्या और जीवन-स्तर दोनों में वृद्धि हो रही है। यूरोपीय देश उसके औपनिवेशिक साथी भी हैं जिनकी अर्थव्यवस्था भी उसी जैसी है।

दूसरी ओर ब्रिटेन अपने 'कामन वेल्थ' के देशों से अपने व्यापारिक सम्पर्क किसी तरह भी नहीं खोना चाहता क्योंकि कामनवैल्थी देशों की अर्थ-व्यवस्था में उसके भारी हित निहित हैं। उसकी पूंजी लगी है, है, उसके तैयार माल की खपत होती है, पुराने सम्बन्ध सुविधाजनक है, बाजार से अनभिज्ञ नहीं है और फिर राजनैतिक सम्बन्ध इन भी देशों की सरकारों के साथ अच्छे हैं। इन देशों को खोने का तात्पर्य होगा उसकी राजनीतिक-आर्थिक स्थिति में गिरावट।

अब ब्रिटेन इस हल की ढूंढ में है कि उसे यूरोपीय कामन मार्केट का भी लाभ मिले और कामन वेल्थी देशों से भी पूर्ववत सम्पर्क बना रहे। कामन मार्केट की ओर उसका झुकने का कारण यह है कि कामन वेल्थी देश ब्रिटेन पर ही आधारित न रह कर प्रत्येक उन्नत देश से अपने आर्थिक समझौतों से अपने देश निर्माण में जुटे हैं और निरंतर अपने को 'सक्षम' बनाने में लगे हैं।

कामन वेल्थी देश ब्रिटेन का साथ इसलिए नहीं छोड़ना चाहते कि उनके कच्चे तथा तैयार माल की खपत ब्रिटेन द्वारा हो जाती है। उन्हें इसमें सुविधा होती है फिर कामनवैल्थी देशों में चुंगी नहीं लगती, यदि यह कहा जाय कि ब्रिटेन कामन वेल्थी देशों के माल की "डिस्ट्रीब्यूटिंग ऐजेन्सी है" तो अत्युक्ति नहीं होगी। इसलिए कामनवेल्थी सरकारें तथा ब्रिटिश सरकार इस हल की ढूंढने का अध्ययन कर रही है। सितम्बर १९६१ में कामनवेल्थी देशों तथा ब्रिटेन का एक आर्थिक-व्यापारिक सम्मेलन होगा जो इसका हल निकाल सकेगा, ऐसी आशा है।

कामनवेल्थी देशों को यह डर है कि ब्रिटेन के 'कामन-मार्केट' में शामिल होने पर ब्रिटेन आदि देशों में 'कामन मार्केट के देशों का बिना चुंगी का माल कामनवेल्थी देशों के माल से सस्ता पड़ेगा। इसका कामनवेल्थी देशों के व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। और खासकर भारत पर तो अवश्य ही इसका विपरीत असर पड़ेगा क्योंकि भारतीय माल का सबसे बड़ा आयातक देश ब्रिटेन है। फिर ब्रिटेन को कामन मार्केट के देशों की समान नीति पर चलना होगा। इस समय तो कॉमनवेल्थी देशों का माल बिना चुंगी के ब्रिटेन में आता है और अन्य देशों के माल पर चुंगी ली जाती है। जब यह चुंगी हट जायगी तो कामनवेल्थी देशों के माल की कॉमन मार्केट के देशों के साथ प्रतिस्पर्धा में टिकने का है। ब्रिटेन आयात के लिए यदि 'कोटा सिस्टम' अपनाता है तो भारत को और भी नुकसान है। हाँगकाँग 'कोटा सिस्टम' नहीं चाहता और न ही हमारा देश चाहता है।

फ्रेन्च कामन वैल्थी अफ्रीकी देशों से जो माल यूरोप के बाजारों में आता है वह भारतीय कच्चे माल के मुकाबले काफी सस्ता होता है। ब्रिटेन के कामन मार्केट में शामिल होने से वहां उनका माल भारतीय माल के मुकाबले सस्ता होगा। चाय, कहवा और जानवरों की खालें अफ्रीकी देशों से काफी सस्ती कीमतों पर यूरोप में अपना बाजार हथिया लेंगे। भारत चाय और चमड़े से अब तक खूब विदेशी मुद्रा अर्जित करता रहा है। इकोनोमिक इन्टेलीजेन्स यूनिट की रिपोर्ट में बताया गया कि भारत को ब्रिटेन के कामन मार्केट में शामिल होने से विशेष हानि नहीं होगी, क्योंकि भारत में राजनीतिक स्थिति सुदृढ़ है और उसको सभी देशों से पूंजी की सहायता मिलती ही रहेगी।

( शेष पृष्ठ २९२ पर )

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पंजाब में ग्राम विकास की नई दिशाएं

मा० गुरुवन्तासिंह

•

अन्य राज्यों की भांति पंजाब में सामुदायिक विकास कार्यक्रम १९५२ में प्रारंभ किया गया था। यह कार्यक्रम आर्थिक और सामाजिक रूप से एक प्रगतिशील कदम था। इस लिए हर वर्ष अधिकाधिक काम इस कार्यक्रम के कार्य क्षेत्र में लाए जाते रहे। अब ग्रामीण जनता अपने अच्छे और उज्जवल भविष्य के प्रति विश्वस्त होती जा रही है, क्योंकि सरकार की नीति ही यह थी कि यह कार्यक्रम अर्थात् सामुदायिक विकास कार्यक्रम केवल उन्हीं लोगों की सहायता कर सकेगा जो अपनी सहायता आप करेंगे,

ग्रामवासी तन मन और धन से अधिक योगदान देकर इस कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर भाग ले रहे हैं। इसके साथ ही ग्रामवासियों की स्थानीय दशा, जरूरतों और संभावनाओं को सम्मुख रखते हुए उनके परामर्श से ही उनके विकास के भी कई कार्यक्रम शुरू किए गए। इन सबका उद्देश्य यह था कि उपलब्ध मानवीय शक्ति और स्थानीय साधनों का पूरी तरह उपयोग किया जाए और खेती बाड़ी के नए तरीके प्रयोग में लाए जाएं, सिंचाई की सुविधाओं और भूमि की पैदावार की शक्ति को बढ़ाया जाए, चकबन्दी कार्य को तेज किया जाए, पशुधन का विकास किया जाए और साथ ही इतनी बड़ी संख्या में अशिक्षित ग्रामीणों को विद्या और सामाजिक स्वच्छता के प्रति सचेत करना, अल्पस्तरीय उद्योग स्थापित करके औद्योगिक कार्यों की सिखलाई के अधिक अवसर प्रदान करना था। ये सभी सुविधाएं लोगों की सहायता से खंड विकास संस्थाओं द्वारा प्रदान की गईं।

इस समय राज्य में १७१ ब्लाक कार्य कर रहे हैं जिनके कार्य क्षेत्र में १७००० गांव और १०९ लाख की आबादी आ चुकी है। पंजाब के सामूहिक विकास कार्यक्रम के लिए द्वितीय पंचवर्षीय योजना में ९४५ लाख रुपयों की व्यवस्था की गई थी। इस राशि में से ८४९ लाख रुपए खर्च किए गए हैं।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम का १ अप्रैल, १९५८ को पुनरावलोकन किया गया था और इसके अनुसार अब राज्य में सामुदायिक विकास के दो चरण हैं—प्रथम चरण और द्वितीय चरण। इससे पूर्व इस कार्यक्रम के तीन चरण थे, राष्ट्रीय विस्तार सेवा, सामुदायिक विकास और विस्तार के बाद का चरण। अब पहले चरण के ब्लाकों के लिए कुल १२ लाख और दूसरे चरण के ब्लाकों के लिए ५ लाख रुपयों की व्यवस्था की गई है। प्रत्येक चरण पांच वर्षों की अवधि का है। कृषि उपज को बढ़ाने के लिए अधिकाधिक प्रयत्न किए जा रहे हैं। इस लिए सामुदायिक विकास कार्यक्रम के नए रूप में भी यह स्पष्ट किया गया है कि प्रत्येक चरण के ब्लाक के प्रारंभ होने की वास्तविक तिथि से एक वर्ष पूर्व ही प्रारंभिक कार्य शुरू कर दिया जाए।

कोई चुना हुआ क्षेत्र इस पूर्व विस्तार की आरंभिक स्तर को पार कर ले तो उसे पहली स्टेज के ब्लाक में बदल दिया जाता है और उससे पांच साल बाद स्तर नं० २ का रूप दे दिया जाता है। इन वर्षों में न केवल खेती बाड़ी की ओर ही बल्कि पशुपालन, स्वास्थ्य और सफाई, विद्या तथा यातायात सहकारिता की सुविधाएं बढ़ाने की ओर भी ध्यान दिया जाता है।

द्वितीय योजना के पहले चार वर्षों में लोगों ने नकदी, अन्य सामान एवं परिश्रम की शक्ल में ६०८ रु० मालियत का हिस्सा डाला। अब तक जो प्राप्तियां और सफलताएं हुई हैं उनसे यह बात निश्चित हो जाती है कि सामुदायिक विकास कार्यक्रम के लिए जो समय, धन और ध्यान लगाया गया उससे पूरा-पूरा लाभ हुआ है।

ऊपर के स्तर पर जिस बात की चिंता की जा रही है वह यह है कि लोगों में परस्पर मेल जोल एवं तरक्की के लिए काम करने के जज़्बे जितनी तेजी से होने चाहिए थे वे आशा अनुसार काफी नहीं। इस लिए इस कार्य को और आगे बढ़ाने और तेज करने की जरूरत है।

यह आशा की गई थी कि कुछ वर्षों में ही लोग बाहर से सहायता लेने की बजाए अपनी स्वेच्छिक संस्थाओं



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा ग्राम विकास की योजनाओं को स्वयं अपने हाथों में ले लेंगे। जो सर्वेक्षण, निरीक्षण और मूल्यांकन इन विकास योजनाओं के सम्बन्ध में अब तक किया गया है उससे पता चलता है कि लोगों को तरक्की के पड़ाव पर पहुँचने के लिए अभी और अगुवाई की जरूरत है। इस लिए यह निर्णय किया गया है कि सामुदायिक विकास कार्य को जैसा कि देश भर में प्रोग्राम बनाया गया है, पंचायतों के हाथों में सौंप दिया जाए। इस प्रारंभिक विकास का मनोरथ यही है कि इन परियोजनाओं में अब जन साधारण को एक महत्वपूर्ण भाग दिया जाए।

इन जरूरतों को सम्मुख रखते हुए पंजाब सरकार ने पहले ही पंचायत एवं सामुदायिक विकास विभागों का एकीकरण कर दिया है। जरूरत के मुताबिक और कर्मचारी भी नियुक्त किए जा रहे हैं। समयोपरान्त पंचायत राज के आधार पर एक नया शासन प्रबन्ध लाया जाएगा।

पंचायत राज से तात्पर्य यह है कि लोग बढ़कर चक-बन्दी और विकास योजनाओं से सम्पर्क स्थापित करें। इस लिए सामुदायिक विकास परियोजना का कार्यक्रम पंचायतों, पंचायत समितियों और जिला परिषदों को सौंप दिया जाएगा। इसका अर्थ यह हुआ कि पंचायत राज में शामिल होने वाले लोग जन सेवा भाव से तत्पर होकर सभी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए तैयार रहेंगे और साथ ही उन जिम्मेदारियों को पूरी योग्यता और बुद्धिमत्ता से निभाने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण भी प्राप्त करेंगे। इस उद्देश्य के लिए विविध स्तरों पर एक विशाल ट्रेनिंग प्रोग्राम चालू करने की जरूरत है। इस सम्बन्ध में कदम उठाए जा चुके हैं और आशा की जाती है कि पंचायती राज के कायम हो जाने से पहले जो लोग इसकी बागडोर संभालेंगे वे सारी आवश्यक जानकारी रखते होंगे। वे न केवल अपनी मुश्किलों को दूर करने के लिए प्रबन्धकीय वाकफियत ही रखते हों बल्कि उनके हृदय भी बड़े विशाल होने चाहिएं। इस लिए सरकारी एवं अन्य कर्मचारियों की ट्रेनिंग का प्रोग्राम हाथ में लिया जा रहा है।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम द्वारा हमारे देश वासी अपने लिए एक नए जीवन का निर्माण कर रहे हैं। जैसे कि ऊपर बताया गया है इन सभी विकास योजनाओं में ग्रामीण भाईचारे का एक बहुत बड़ा एवं महत्वपूर्ण कार्य है। अब पंचायतों को सभी विकास योजनाओं के लिए कार्यसाधक एजेंसी का रूप दिया जा रहा है, क्योंकि यह योजना शासन प्रबन्ध एवं ग्रामों में स्वराज या स्वशासन की एक बुनियादी इकाई है। गांव के स्वशासन एवं विकास को एक साथ चलना चाहिये ताकि विकास का महान कार्य सफल हो सके। ● ●

---

( पृष्ठ २०० का शेष )

फिर भी उसने यह स्वीकार किया कि भारत के दो इहाई व्यापार पर गम्भीर प्रभाव पड़ सकता है। हालांकि गरम मसाले, तेल-तिलहन ऐसे पदार्थ हैं जिस पर विपरीत असर नहीं पड़ेगा। निम्न तालिका में ब्रिटेन को निर्यात होने वाली मुख्य वस्तुएं दी गई हैं।

## भारत का ब्रिटेन को निर्यात की कुछ प्रमुख वस्तुएँ

(करोड़ रुपये में)

| | १९५९ | १९६० |
|---|---|---|
| चाय | ४६.८ | ८५.२ |
| तम्बाकू | १०.८ | १२.१ |
| चमड़ा, चमड़े से बनी वस्तुएं तथा फर के वस्त्र | १८.१ | १७.३ |
| तेल और तिलहन | १५.१ | १३.६ |
| ऊन और अन्य जानवरों के बाल | ३.७ | ३.६ |
| कच्ची खाद और कच्ची धातु पदार्थ ( इंधन को छोड़कर ) | २.२ | २.५ |
| कच्ची धातुएं | ३.२ | ४.१ |
| (पशु तथा वनस्पति तेल की बनी चीजें) | ४.४ | ५.३ |
| पशु और वनस्पति तेल, चर्बी पनीर आदि | २.५ | ५.४ |
| सूती वस्त्र तथा हाथ बुने वस्त्र | १४.१ | १९.३ |
| मिश्रित वस्त्र | १५.० | १५.७ |
| कुल | १९०.१ | १९८.९ |

निश्चय ही भविष्य में भारत को ऐसी आर्थिक नीति अपनानी प्रारम्भ कर देनी चाहिए जिसमें विदेशी व्यापार को बनाये रखकर अपनी जरूरत की चीजें देश में ही बने, और कम से कम आयात किया जाय। दुनियां की स्थिति में स्वयं भारी परिवर्तन आ रहे हैं और हमें समय तथा स्थिति के अनुसार अपनी आर्थिक नीति में फेर-बदल करके सतर्कतापूर्वक अपने व्यापारिक सम्बन्ध सुदृढ़तर करने पड़ेंगे। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सांख्यिकी

## • विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय आय

'इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ पब्लिक ओपीनियन' ने पिछले दिनों देश के विभिन्न भागों में आय कैसे बढ़ी और किन क्षेत्रों में—कृषि, उद्योग और नौकरी आदि में बढ़ी। यह तालिका निम्न है। इससे मालूम होता है कि खेती में प्रायः आय पंजाब को छोड़कर किसी राज्य में बहुत नहीं बढ़ी है। मध्यप्रदेश और बिहार में यह आय बहुत कम बढ़ी है। यूं कृषि में उद्योग की अपेक्षा अधिक आय बढ़ी है। तालिका से यह दीखता है कि पिछले पांच वर्षों में कृषि में ६२ प्रतिशत आय बढ़ी जबकि उद्योग और नौकरी आदि से क्रमशः ५६ और ३८ प्रतिशत; उड़ीसा में औद्योगिक दृष्टि से उन्नति का प्रतिशत सबसे अधिक रहा, राजस्थान में सबसे कम। महाराष्ट्र में नौकरियों से आय का प्रतिशत सबसे कम बढ़ा और आसाम में यह प्रतिशत सबसे अधिक।

### क्षेत्रीय आय, १९५५-५६ से १९६०-६१ तक

( वर्तमान मूल्यों के आधार पर करोड़ रुपयों में )

| राज्य | कृषि | | | | उद्योग | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १९५५-५६ | १९६०-६१ | १९५५-५६ से १९६०-६१ में प्रतिशत परिवर्तन | १९५९-६० से १९६०-६१ में प्रतिशत परिवर्तन | १९५५-५६ | १९६०-६१ | १९५५-५६ से १९६०-६१ में प्रतिशत परिपर्तन | १९५९-६० १९६०-६१ में प्रतिशत परिवर्तन |
| आन्ध्र | ४००.०० | ५९८.३८ | +४९.६० | +७.७४ | ६७.३४ | ८६.०५ | +२७.७८ | +८.९८ |
| असम | १७१.५७ | २७०.७३ | +५७.८० | +७.४९ | ७.८१ | ११.६३ | +४८.९१ | +१५.१४ |
| बिहार | ३०९.९५ | ४३६.९६ | +४०.९८ | +८.२७ | ११९.८७ | १९४.३० | +६२.०९ | +१८.६३ |
| गुजरात | ११२.९५ | २०७.१४ | +८३.३९ | +५.५३ | १५९.८९ | २५७.३३ | +६०.९४ | +१४.९९ |
| केरल | १९४.६६ | ३५९.९९ | +८४.९३ | +८.३७ | ६४.७९ | ८९.०१ | +३७.३८ | +१०.३९ |
| महाराष्ट्र | २६६.०८ | ५७३.१४ | +५६.५६ | +६.५० | २५५.१४ | ४१४.५६ | +६२.४८ | +१९.६० |
| मध्यप्रदेश | ३२५.०० | ४५७.४६ | +४०.७६ | +७.२३ | १००.७५ | १५३.३२ | +५२.१८ | +११.०७ |
| मद्रास | ३६३.२६ | ६०९.२७ | +६७.७२ | +८.०६ | १२६.३५ | १७९.८८ | +४२.३७ | +१४.८५ |
| मैसूर | १९५.६९ | ३१२.४२ | +५९.६५ | +७.८५ | ५२.७३ | ७७.५२ | +४७.३४ | +१४.९२ |
| उत्कल | १४५.४९ | २२६.६६ | +५५.७९ | +०.३७ | ३१.२९ | ७४.९५ | +१३९.५३ | +१४.६९ |
| पंजाब | २४३.३० | ४९३.७६ | +१०२.९४ | +७.०२ | ३७.६४ | ५५.४६ | ×४७.३४ | +१४.९२ |
| राजस्थान | १७५.३७ | २८९.२९ | +६४.९६ | +७.०३ | ४८.४४ | ५३.०९ | +९.६० | +३.४३ |
| उत्तरप्रदेश | ६९९.४१ | १०८०.०५ | +५६.६६ | +७.०६ | १८२.३७ | २०८.१६ | +१४.१४ | +८.९९ |
| पश्चिम बंगाल | ३०९.४१ | ५७०.३५ | +८४.३३ | +७.८८ | २३३.६३ | ४४३.८१ | +९६.४६ | +२६.०१ |
| केन्द्र शासित प्रदेश | ३१.०७ | ५२.५८ | +६९.२३ | +७.५३ | २६.९४ | ४८.७० | +८०.७७ | +१९.७१ |
| समस्त भारत | ४०३३.२१ | ६५३८.१८ | +६२.११ | +७.१६ | १५०४.९८ | २३४७.७७ | +५६.०० | +१६.९४ |

प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से देखें तो विभिन्न राज्यों की आय में बहुत अन्तर है। पंजाब में प्रतिव्यक्ति आय सबसे अधिक बढ़ी है। गुजरात उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल में अखिल भारतीय औसत से अधिक आय बढ़ी हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## क्षेत्रीय आय १९५५ से १९६०-६१ तक

( वर्तमान मूल्यों के आधार पर करोड़ रुपयों में )

| राज्य | नौकरी, पेशे आदि | | | | कुल | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १९२५-५६ | १९६०-६१ | १९५५-५६ से १९६०-६१ में प्रतिशत परिवर्तन | १९५९-६० से १९६०-६१ में प्रतिशत परिवर्तन | १९५५-५६ | १९६०-६१ | १९५५-५६ से १९६०-६१ में प्रतिशत परिवर्तन | १९५९-६० से १९६०-६१ में प्रतिशत परिवर्तन |
| आन्ध्र प्रदेश | २७१.१२ | ३८१.६२ | +४०.७६ | +६.१५ | ७३८.४६ | १०६६.०५ | +४४.३६ | +७.२६ |
| असम | ७२.२४ | १११.४८ | +५४.३२ | +७.९९ | २५१.६२ | ३९३.८४ | +५६.५२ | +७.८५ |
| बिहार | २१२.३५ | २८६.९८ | +३५.१४ | +५.४८ | ६४२.१७ | ९१८.२४ | +४२.९९ | +९.३९ |
| गुजरात | २३५.४२ | ३४१.४१ | +४५.०२ | +६.६२ | ८०८.२६ | ८९०५.८८ | +५८.५६ | +९.९८ |
| केरल | १२५.२४ | १६७.९१ | +३४.०७ | +५.३५ | ३८४.६९ | ६१६.६० | +६०.३७ | +७.८१ |
| मध्यप्रदेश | २०१.७६ | २७७.९१ | +३७.७४ | +५.७९ | ६२७.५१ | ८८८.६९ | +४१.६२ | +७.४१ |
| मद्रास | २९५.७१ | ४२२.४५ | +४२.८६ | +६.३३ | ७८५.३२ | १२११.६० | +५४.२८ | +८.४० |
| मैसूर | १५३.६८ | २१४.१९ | +३९.३७ | +५.९९ | ४०२.१० | ६०४.१३ | +५०.२४ | +७.९७ |
| उत्कल | ८०.९८ | ११५.६० | +४२.७५ | +६.९६ | २५७.७६ | ४१७.२१ | +६१.८६ | +४.५१ |
| पंजाब | २२०.४९ | ३२८.१३ | +४८.८२ | +७.०२ | ५०१.४३ | ८७७.३५ | +७४.९७ | +७.४८ |
| राजस्थान | १५७.६१ | २०३.३४ | +२९.०१ | +४.७१ | ३८१.४२ | ५४५.७२ | +४३.०८ | +५.८० |
| उत्तरप्रदेश | ५४०.६७ | ७२५.७१ | +३४.२२ | +५.३७ | १४१२.४५ | २०१३.९२ | +४२.५८ | +६.६४ |
| पश्चिम बंगाल | ४६४.५९ | ५९९.६५ | +२९.०७ | +४.७२ | ९९७.६३ | १६१३,८१ | +६१.७६ | +११.०३ |
| केन्द्रीय प्रदेश | १४६.३० | २३८.३३ | +६२.९० | +८.३७ | २०४.३१ | ३३९.६१ | +६६.२२ | +९.७३ |
| समस्त भारत | ३६३३.७८ | ५००२.३२ | +३७.६६ | +५.८० | ९१७१.९७ | १३०८८.२७ | +५१.४२ | +८.१९ |


## छात्र-छात्राओं के हितार्थ अपूर्व अवसर

सभी प्रकार की बोर्ड एवं विविध राज्य की विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में सुनिश्चित-सफलता हेतु:—

**श्रीकृष्ण-हिन्दी-विद्यापीठ (धारीवाल के सामने)**
**नई सड़क, दिल्ली में—प्रवेश प्राप्त कीजिये,**

कालिज-विभाग

मैट्रिक (ग्वालियर, पंजाब, यू० पी० अलीगढ़)
हायर सेकन्ड्री ,, ,,
एफ० ए० ,, ,, ,,
बी० ए० गुजरात, नागपुर दिल्ली
(केवल छात्राओं के लिये)
एम० ए० (बिहार, अलीगढ़, पंजाब, बनारस, दिल्ली)।

हिन्दी-विभाग

१. प्रभाकर (पंजाब, दिल्ली)
२. रत्न, भूषण ( ,, ,, )
३. साहित्यरत्न (प्रयाग)
४. साहित्यलंकार (बिहार, केन्द्र)
५. महिला विद्यापीठ, प्रयाग (विनोदिनी, सरस्वती आदि का केन्द्र)।
६. निरक्षरों के लिये प्रौढ़ शिक्षण, केन्द्र प्रतिष्ठ अधिकारी विद्वानों द्वारा शिक्षण।

लिखिये अथवा मिलिये :—

**प्राचार्य :—सुदर्शन शर्मा एम० ए०,**




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# असम में तेल उद्योग का विकास

श्री जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी

भारत का सीमान्त प्रदेश आसाम अनेक कारणों से महत्वपूर्ण है। आसाम आजसे लगभग सौ वर्ष पूर्व तेल के लिए प्रसिद्ध हो चुका था। सन् १८६५ में ही मारवरीटा के पास माकुम नामडङ्ग क्षेत्र में धरती के ऊपर ही तेल उतरता दिखा था और १८६६ में नहरकटिया से ८ मील दक्षिण नाहरपुङ्ग में तेल के लिए कुआं खोदा गया था। १८८९ में डिगबोई के पास पहला तेल का कुआं खुदा जो ६६२ फुट की गहराई तक गया था। इस कुएं ने, जो आज डिगबोई में एक ऐतिहासिक स्मारक के रूप में रह गया है, प्रतिदिन २०० गैलन के हिसाब से तेल दिया और डिगबोई के विशाल तेल क्षेत्र तथा शोध संस्थान की नींव डाली।

## तेल की खोज

भूतत्ववेत्ताओं के अनुसार आसाम में नागा पहाड़ियों के किनारे की भूमि ऐसी थी जहां पर तेल का उत्पादन सम्भव था, इस लिए नागा पहाड़ी के चारों ओर के जितने इलाके हैं उनको तेल के लिए खोज डाला गया। डिगबोई तेल क्षेत्र में तो अब तक एक हजार तेल के कुएं खोदे जा चुके हैं और इस तेल क्षेत्र से लगभग ८० लाख टन तेल निकाला जा चुका है। आजकल भी प्रतिवर्ष २,७०,००० टन तेल निकाला जाता है। आसाम के कुछ अन्य क्षेत्रों में जैसे बदरपुर और माशीपुर में भी तेल की खोज की गयी और वहां पर कुछ तेल निकला भी। लेकिन बदरपुर में, जो सुरमा घाटी में स्थित है, केवल १८ वर्ष तेल निकला। बर्मा तेल कम्पनी ने इस क्षेत्र में ६३ कुएं खोदे और उनसे १८,६४,००० बैरल कच्चा तेल निकला।

बर्मा तेल कम्पनी ने जिसने, १९२१ में आसाम तेल कम्पनी का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया, तुरू पहाड़ियों, बरसिला, निचुगुवाड़ और बन्दरसलिया में तेल की खोज की, परन्तु तेल प्राप्त करने का प्रयत्न सफल न हो सका इस बीच डिगबोई तेल क्षेत्र का भी तेल भण्डार समाप्त हो रहा था। माकुम नामडङ्ग तेल क्षेत्र, बदरपुर और माशीपुर पहले ही समाप्त हो चुके थे कि १९५२ में नहर कटिया में तेल का एक ऐसा कुआं मिला जिसने इस देश की तेल की खोज की दिशा ही बदल दी।

## चौरस मैदान में तेल

नहर काटिया में तेल जिस स्थान पर मिला है वह चौरस मैदान है। अभी तक पहाड़ियों और नदियों के किनारे के ऊंचे नीचे क्षेत्रों से तेल का पता लगा था, क्योंकि धरती की किस्म को समझने के यही सीधे रास्ते थे। भूतत्वविशारदों का मत भी यह था कि जहां समुद्र के स्थान पर पहाड़ निकल आये हैं वहां पर तेल प्राप्त करने की अधिक सम्भावनाएं हैं। नहर कटिया का तेल क्षेत्र इस माने में अनोखा है कि वह पहाड़ के किनारे पर न होकर श्यामल मैदान में है।

## सब से पहला तेल का कुआं

यद्यपि नहर कटिया से ८ मील की दूरी पर सब से पहला तेल का कुआं खोदा गया था और १९२३ में भूतत्व विशारदों ने यहां पर तेल की सम्भावनाएं प्रकट की थी, परन्तु इस क्षेत्र में तेल की खुदाई १९५१ यानी प्रथम पंचवर्षीय योजना के प्रारंभ होने के बाद ही सम्भव हो सकी। जब २६ मई, १९५२ को नहर कटिया का पहला तेल का कुआं खोदा गया और जब दस हजार फुट की गहराई पर पहुँचकर उसने एक विशाल तेल के भण्डार का संकेत किया तो उससे आसाम के मैदानी क्षेत्र में तेल की खोज की नयी सम्भावनाओं पर विचार हुआ। नहर कटिया के तेल क्षेत्र के पास ही हुगरी जान का तेल क्षेत्र मिला और १९५६ में नहर कटिया से २५ मील पश्चिम दक्षिण में मोरानहाट गांव में पांच मील दूर एक कुआं खोदा गया। ११,१०० फुट की गहराई पर इस कुएं से तेल आना प्रारम्भ हो गया। इस कुएं को १३,१३९ फुट तक खोदा गया। यह कुआं दक्षिण-पूर्व एशिया के सब से गहरे कुओं में से है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिगबोई की अपेक्षा नहर कटिया और मोरान के तेल क्षेत्र बहुत विस्तृत हैं। इन दो क्षेत्रों से गौहाटी की नून-माटी और बरौनी के शोध कारखाने (रिफायनरियों) को २७,५०,००० टन तेल प्रतिवर्ष और लगभग ३ लाख ५० हजार क्यूबिक फुट गैस प्रतिदिन प्राप्त होगी। यद्यपि इन तेल क्षेत्रों की संभावनाओं के बारे में विभिन्न विचार प्रकट किये गये हैं फिर भी यह महत्वपूर्ण है कि प्रति वर्ष जो अनुमान किया जाता है वह पिछले अनुमानों से अधिक होता है। साधारणतया यह अनुमान लगाया जाता है कि इन दो क्षेत्रों से तेल का उत्पादन ४० लाख टन प्रति वर्ष तक हो सकता है। उत्पादन की दृष्टि से देखें तो नहर-कटिया और मोरान क्षेत्र डिगबोई तेल क्षेत्र से कहीं बड़ा है।

नहर कटिया बूढ़ी डिहग नदी के तट पर स्थित ऐसा तेल क्षेत्र है जिसे नदी ने दो भागों में बांट दिया है। यहां पर अभी तक ८५ कुएं खोदे-जा चुके हैं। इनमें से सात कुओं से तेल नहीं निकला और सात कुएं केवल गैस उत्पादन करते हैं। शेष कुओं से तेल आ रहा है।

एक समय था जब कुआं खोदने में महीनों लग जाते थे। डिगबोई का सबसे पहला कुआं लगभग एक वर्ष में खुदा था और उस समय केवल ६६२ फुट की गहराई तक गया था। डिगबोई के पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण वहां कुओं की खुदाई में कुछ समय अधिक लगा। लेकिन नहर कटिया के मैदानी कुओं में यह काम आसानी से हो रहा है। सन् १९५९ में तेल खोदने वाली 'रिग' को जमाने से लेकर हटाने तक में २१ दिन लगते थे। अब लगभग दस हजार फुट तक का कुआं केवल आठ दिन में खोदकर तेल निकलने लगता है। मोरान क्षेत्र में, जहां १४ कुएं खुद चुके हैं, कुछ समय अधिक लगता है क्योंकि यहां पर अधिक नीचे तेल निकलता है। यहां पर पहला कुआं ही १३७३९ फुट की गहराई तक गया था। हम जब मोरान पहुँचे तो वहां पर चौदवां कुआं खोदा जा रहा था।

## जंगल में मंगल

मोरान शिवसागर-डिब्रूगढ़ मार्ग पर स्थित है और डिब्रूगढ़ से २३ मील पूर्व पड़ता है। यह क्षेत्र चाय बागानों से भरा पड़ा है। परन्तु यहां पर तेल निकलने से इस धरती का कायापलट हो गया है। तेल क्षेत्र में काम करने वाले कार्यकर्त्ताओं के मकान वर्कशाप, बिजलीघर, बड़ी भारी डैरिक मशीनें और तेल, संस्थान की चौबीसों घण्टे चलने वाली गतिविधियों ने जंगल में मंगल कर दिया है। मोरान-हाट से मोरान तक एक पुरानी सड़क थी। तेल क्षेत्र की गाड़ियों और भारी सामग्री के आवागमन को सरल करने के लिए आयल इण्डिया कम्पनी ने सड़क के पुराने लकड़ी के पुल के स्थान पर सीमेण्ट और लोहे का एक पक्का पुल बनाया है। मोरान तेल क्षेत्र के मुख्य ड्रिलिंग अधिकारी श्री अजित मुखर्जी हैं। तेल क्षेत्र ने जहां एक ओर आसाम की श्रीवृद्धि की है वहां देश की भावात्मक एकता की रक्षा में भी वह सहायता करता है। तेल के कुएं को खोलकर बाद में उसमें रंग बिरंगे पेण्ट किये कुछ पुर्जे लगा दिये जाते हैं इन कल पुर्जों से तेल का आगमन नियन्त्रित रहता है और किस दबाव पर कितना तेल निकल रहा है वह एक मीटर में अपने आप रिकार्ड होता जाता है। इसके बाद कुएं को बन्द कर देते हैं। एक बार तेल का कुआ खोद देने के बाद उसे चलाने के लिए किसी चालक की आवश्यकता नहीं होती। सब कार्य यंत्र चालित होता है। नहरकटिया तेल क्षेत्र दो भागों में विभक्त है। बीच में बूढ़ी डिहंग नदी के दोनों ओर कुएं हैं। उसके ऊपर एक रेलवे पुल जाता है जिसके नीचे-नीचे तेल की लाइन डाली गयी है जिससे तेल दूसरी ओर तेल एकत्र करने के स्थान पर पहुँच जाय। गैस को नदी के पार पहुँचाने के लिए गैस की एक पाइप लाइन भी नदी के ऊपर डाली गयी थी।

## तेल प्रवाह

जालोनी में, जहां, नहर कटिया का उद्योग क्षेत्र है, विभिन्न पाइपों से तेल आता है और सेपरेटरों द्वारा उसमें से गैस निकाल कर अलग कर दी जाती है और तेल अलग निकाल दिया जाता है। वैसे नदी के दोनों ओर गैस एवं तेल पृथक करने के सेपरेटर हैं, परन्तु जालौनी की ओर बड़े आधुनिक सेपरेटर लगे हैं। ये सारे सेपरेटर भी ऑटोमेटिक है।

जालौनी में वर्कशाप ही नहीं है, गैस टरबाइन से चलने वाला नया बिजलीघर भी है। एशिया में यह पहला



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# जीप बनाम बैलगाड़ी

लालमणि शर्मा

प्रत्येक विकास-खण्ड को विकास-कार्यों के लिए सरकार की ओर से एक जीप दी जाती है। जीप देकर सरकार यही आशा करती है कि विकास कार्यों में तेजी से प्रगति होगी। परन्तु अनुभव के आधार पर कहना पड़ता है कि जीप से विकास-कार्यों को प्रगति की ओर कदापि अग्रसर नहीं किया जा सकता है। व्यवहारिक रूप में विकास-खंडों को जीप देने से निम्नलिखित समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं।

## जन-सम्पर्क में बाधा

जीप जन-सम्पर्क में बाधा पहुँचाती है। जनता से संपर्क तभी किया जा सकता है, जब सम्पर्ककर्ता जनता का ही हो जाय। किसी भी प्रकार की विभिन्नता होने पर जनता का नहीं बना जा सकता है। जीप पर, पुष्पक विमान पर या हाथी पर सवार होकर जन-सम्पर्क करने पर जनता और कार्यकर्ताओं में अन्तर पैदा होना स्वाभाविक ही है। इसको सम्पर्क के अभाव में जन-सहयोग नहीं मिल पाता है।

## बी० डी० ओ० और विस्तार अधिकारी

अधिकांश खंडों में बी० डी० ओ० और विस्तार अधिकारियों में द्वन्द्व युद्ध चलता रहता है। इसका मुख्य कारण जीप है। प्रत्येक विस्तार अधिकारी जीप चाहता है और यह सम्भव भी नहीं होता कि प्रत्येक को जीप से भ्रमण कराया जाये। होता यही है कि जिसको जीप दी जाती है वह तो खुश हो न हो, परन्तु बाकी सब मुँह फुला लेते हैं और हमारी आरामदायक जीप विकास खण्ड वलों को ही खंडित कर देती है। सहकारिता का सिद्धांत "एक सबके लिए और सब एक के लिए" खंड कर्मचारियों द्वारा ही खंडित हो जाता है।

## जिला अधिकारी और जीप

अधिकांश जिला अधिकारियों के पास जीप नहीं होती और सभी को खंड का दौरा करना पड़ता है। भिन्न-भिन्न विभागों के कम-से-कम १० अफसर तो प्रति मास खंड का दौरा करते ही हैं और किसी-किसी दिन तो दो या उससे अधिक अफसर भी आ टपकते हैं। प्रत्येक यही चाहता है कि मुझे जीप मिल जाय। ऐसी हालत में जिसे जीप नहीं मिल पाती वह खंड से असहयोग करने लगता है। यही बात विकास-खंड के अन्य कर्मचारियों पर भी लागू होती है। यही नहीं जीप की मुख्य सीट पर बैठने के प्रश्न को भी ले कर मन-मुटाव होते रहते हैं।

## जनता और जीप

चूंकि सामुदायिक विकास-कार्यक्रम जनता का कार्यक्रम है, इसलिए जब कभी उन्नतिशील, प्रतिभाशाली एवं लगनशील काश्तकार या विकास-कार्यकर्ता को किसी विशेष अवसर पर मोटर सरीखी तीव्रगामी वाहन की आवश्यकता पड़ती है, तो वह सबसे पहले बी० डी० ओ० साहब का ही द्वार खटखटाता है। व्यस्त होने के कारण उसे जीप नही उपलब्ध हो पाती है और फलतः वह विकास-कार्यों से

---

बिजलीघर है जो पूर्णतया गैस से चलता है।

नाहरकटिया तथा मोरान तेल क्षेत्र का संचालन आयल इण्डिया कम्पनी करती है जिसके एक तिहाई शेयर भारत सरकार के हैं एवं दो तिहाई बर्मा तेल कम्पनी के। अभी यहां का तेल डिगबोई के शोध कारखाने को जा रहा है। गौहाटी और बरौनी के कारखानों के बन जाने पर पाइप वाहन द्वारा वहां जायगा। यहां के तेल में मोम बहुत है जिसे दूर तक भेजने में दिक्कत होगी, इसलिए उसके लिए एक डीवाक्सिंग मशीन लगेगी। मोम आसाम तेल की विशेषता है। इससे तेल निकालने में कठिनाई अवश्यहोती है, परन्तु मोम का निर्माण लाभदायक और विदेशी मुद्रा लाने वाला है।

(आज से)





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असहयोग शुरू कर देता है।

जब बी० डी० ओ० दौरे पर निकलते हैं तो जीप पर बैठ कर कार्यालय से सीधे वांछित स्थान पर ही ब्रेक लगाते हैं पचास मील की रफ्तार के आगे रास्ते में पड़ने वाले गांव के लोग जीप की धूल के ही दर्शन कर पाते हैं और ये गांव के खंड अधिकारी के सम्पर्क से वंचित रह जाते हैं।

जीप के द्वारा जब बी० डी० ओ० दौरा करते हैं तो यह स्वाभाविक ही है कि अशिक्षित और पिछड़े लोग उनसे मिलने में हिचकिचायेंगे। ऐसी हालत में बी० डी० ओ० से केवल वही लोग मिलते हैं, जो चालाक और चतुर होते हैं। ऐसे ही चन्द लोगों द्वारा वह वहां की परिस्थितियों का पता लगाते हैं, जिससे वास्तविक परिस्थिति क्या है, यह नहीं बताया जा सकता है। इस प्रकार से देश का बहुसंख्यक वर्ग विकास-कार्यक्रमों से अनभिज्ञ होने के कारण देश कभी भी उन्नति नहीं कर सकता है।

जीप घर-घर खेत-खेत, और अधिकांश स्थानों पर पहुँच ही नहीं पाती है। जहां पहुँचती भी है, बड़ी परेशानी से या अफसरों की जबर्दस्ती से अधिकांशतः अधिकारी वर्ग के लोग इतने जागरूक नहीं होते कि उन्हें जीप के बनने या बिगड़ने का ध्यान रहे। नतीजा यह होता है कि जीप हमेशा वर्कशाप में ही जाती रहती है। अक्सर यह देखा जाता है कि नई जीप चार-पांच साल में ही खराब हो जाती है, उससे राष्ट्रीय सम्पत्ति का नाश होता है। जितनी शिकायतें बी० डी० ओ० के कार्य न करने की आती हैं, उससे दूनी-चौगुनी शिकायतें जीप दुरुपयोग करने की आती हैं।

## बैलगाड़ी के लाभ

ऐसी हालत में मेरे विचार से विकास-खंडों में जीप का प्रवधान कतई हटा देना चाहिए और उनकी जगह एक अच्छे किस्म की बैलगाड़ी बी० डी० ओ० को उपलब्ध करानी चाहिए। बैलगाड़ी से निम्न फायदे होंगे—

१. बी० डी० ओ० या कोई भी विस्तार-अधिकारी जब बैलगाड़ी से क्षेत्र का दौरा करेंगे कतो वह आवश्यक कागजात आदि, बिस्तर, खाद-बीज रख लेंगे और रास्ते में प्रत्येक आदमी से मिल सकेंगे।

२. चूंकि अधिकांश ग्रामीण पैदल या बैलगाड़ी पर ही यात्रा करते हैं, अतः वह बी० डी० ओ० को बैलगाड़ी पर किसान ही की पोशाक में देख अपने आप आकर्षित होंगे।

३. स्टाफ तथा अधिकारियों का आपसी झगड़ा खत्म होगा और सहयोग की भावना पैदा होगी।

४. राष्ट्रीय सम्पत्ति का बचाव होगा।

• •

# इस दृष्टि से भी देखिये !

## आधुनिक अर्थशास्त्रीय दृष्टि

यदि कोई मां अपने बच्चों के लिये विशुद्ध घी का हलुआ बनाती हो, तो हमारे विश्वविद्यालयनि विद्याविभूषित पंडित उससे दलील करेगा, "यदि आप इस शुद्ध घी में थोड़ा सा वनस्पति घी नहीं मिलायेंगी, तो दुनिया के बाजारों की स्पर्धा में आप कैसे टिकेंगी ?" वह सलाह देगा कि हलुआ की कीमत कूतने में उसे अपने लगे समय की भी कीमत जोड़नी चाहिये। शास्त्रीय पूर्णता की दृष्टि से यह नितांत आवश्यक है। बाद में फिर वह कहेगा, अब बाजारी हलुए के भाव से इसकी तुलना करें। बेचारी मां कहेगी, "ये दुनिया के बाजार कहाँ हैं ? वे कहां लगते हैं ? मैं तो यह हलुआ अपने बच्चों के खाने के लिये बना रही हूँ और मैं चाहूँगी कि उसमें अधिक से अधिक शुद्ध और साफ चीजें रहे। मुझे हलुए के बाजार भाव से अथवा उसे शास्त्रीय अचूक दृष्टि से कूतने से कोई सरोकार नहीं। और मैं अपने समय की क्या कीमत लगाऊँ ? मेरा तो सारा जीवन ही अपने बच्चों की परवरिश में लगने वाला है।" बेचारा विश्वविद्यालयीन पंडित इस 'जंगली, अशिक्षित माँ के प्रगाढ़ अर्थशास्त्र विषयक अज्ञान पर स्तंभित ही रह जायगा। घर में सेवाप्रधान व्यवस्था का अमल रहता है और मां उसमें सराबोर रहती है, इसलिये वह अपनी हर एक कृति उसी मानदंड से कूतती है, पर यह विश्वविद्यालयीन पदधारी आक्रामक व्यवस्था के मानदंड का उपयोग जब सेवाप्रधान व्यवस्था में करने लग जाता है, तब मजाक का विषय बन जाता है।

—जे. सी. कुमारप्पा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# उद्योगों में सह-प्रबन्ध की समस्या

उद्योगों के प्रबन्ध में मजदूरों के भाग लेने पर सह-प्रबन्ध पर बहुत समय से विचार किया जा रहा है, मद्रास की सिमसन समूह की मिलों में १९५७ में सह-प्रबन्ध का एक परीक्षण प्रारंभ किया गया था । इसको यह सुविधा थी कि समूह की सभी मिलों में एक मजदूर संघ का संगठन था। मद्रास के श्रम मंत्री श्री बेंकट रमण ने इस दिशा में काफी प्रयत्न किया, किन्तु यह परीक्षण सफल नहीं हुआ। कुछ मिलों में इसी तरह जरूर चलता रहा और कुछ सन्तोष भी प्रकट किया गया । प्रबन्ध के लिये जो संयुक्त समिति बनाई गई थी, उसमें सब तरह के दृष्टिकोण के सदस्य थे, मजदूरों और मालिकों के प्रतिनिधि समान संख्या में थे। समिति का अध्यक्ष कभी मजदूर प्रतिनिधि होता था तो कभी मिल मालिकों का प्रतिनिधि वेतन । बोनस आदि के विषय इस समिति के कार्य क्षेत्र से बाहर थे । (फैक्ट्री-एक्ट) भर्ती आदि राशनलाईजेशन विषयों पर ही यह समिति विचार करती थी, इस समिति को मिलों की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में पूरी जानकारी दी जाती थी। बाजार के भाव उत्पादन और बिक्री आदि से छिपाये नहीं जाते थे, श्रमिकों के वैलफेर काकाम इसी समिति के सुपुर्द था, सुरक्षा के साधयों की देखभाल यह समिति करती थी, किन्तु अनुशासन सम्बन्धी एक प्रश्न पर समिति के दोनों पक्षों में इतना तीव्र मतभेद हो गया कि समिति भंग हो गई। कुछ मजदूर प्रतिनिधियों ने मालिकों को परेशान करने वाले प्रबन्ध सम्बन्धी ऐसे प्रश्न पूछे, जिनका उत्तर देना मिल मालिकों ने अनुचित समझा और बात बढ़ गई ।

व्यापारिक कम्पनियों के कुछ ऐसे रहस्य होते हैं जिन्हें सार्वजनिक रूप से प्रकट करना हितकर नहीं होता । संयुक्त प्रबन्ध समिति में यदि ऐसे प्रश्नों की चर्चा हो तो उन्हें गुप्त नहीं रखा जा सकता, फिर यदि एक मिल में कई यूनियनें हों तो भी संयुक्त प्रबन्ध को चलाना और कठिन होता ।

मजदूर संघों ने पिछले दिनों में यह मांग पेश की है कि सरकारी उद्योगों में भी संयुक्त प्रबन्ध की व्यवस्था प्रारंभ की जाय । सरकार ने इस दिशा में कुछ कदम उठाने का आश्वासन दिया है । कुछ समय बाद यह तो कहा जा सकेगा कि उद्योगों में दोनों पक्षों का सह प्रबन्ध किसी सीमा तक सफलता है ।

## कुछ और उद्योगों पर भविष्य निधि योजना लागू

भारत सरकार ने होटलों, जलपान-घरों और पैट्रोल, पैट्रोल से बनी चीजों तथा प्राकृतिक गैस रखने, बेचने और वितरण करने वाले संस्थानों पर भी कर्मचारी भविष्य निधि अधिनियम के अन्तर्गत अनिवार्य अंशदायी भविष्य निधि योजना लागू करने का निश्चय किया है। ऐसे संस्थापनों में, जहां २० या इससे अधिक कर्मचारी काम करते हैं, वहां ३० जून, १९६१ से यह योजना लागू हो जाएगी। हाल ही में यह योजना कलफ उद्योग में काम करने वाले कर्मचारियों के लिए भी लागू की गयी थी।

## घाटे की अर्थव्यवस्था

( पृष्ठ २७२ का शेष )

जाती है, योजनाओं की लागत कीमतों के सभी हिसाब गलत हो जाते है, स्थिर आय वर्ग की जनता का जीवत-मान कम हो जाता है, नियोजन के तंत्र से जनता का विश्वास उठ जाता है और इस तरह से स्वयं योजना के कार्यान्वय पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

अतः घाटे की अर्थ-व्यवस्था करना वास्तव में जुए में भारी दाव लगाने के समान है जिसे देश अभी बर्दास्त नहीं कर सकता है ।

**भूलिए नहीं !**

**आपको 'सम्पदा' का एक नया ग्राहक अवश्य बनाना है ।**



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सहकारिता क्यों और कैसे ?

कान्तिलाल ठाकरे नलिनीश

सब 'एक के लिये और एक सबके लिये' यही सहकारिता का मूलमंत्र है। वैसे सहकारिता का शाब्दिक अर्थ यही होता है कि मिल जुल कर सहयोग की भावना से कोई कार्य करना, पर तांत्रिक अर्थ में सहकारिता से तात्पर्य उस विशिष्ट प्रवृत्ति से लिया जाता है जहाँ पारस्परिक निर्भरता रखने वाले साधनों की सहायता से सही अर्थों में कोई कार्य सबके द्वारा सर्वहित में या सबके लिये कुछेक द्वारा सर्वाधिक हित में किया जाय। यह किसी भी प्रजातंत्र सत्ता से शासित देश का एक आधार स्तम्भ है, जिस पर सर्वांगिक विकास निर्भर रहता है।

भारत में सहकारिता आन्दोलन कठिनाई से पांच दशाब्दि पुराना है। सर्वप्रथम सहकारी समिति विधेयक सन् १९०४ में पारित हुआ। इस बीच हुई प्रगति संतोषप्रद तो नहीं कही जा सकती फिर भी सन् १९५५-५६ के अन्त तक सहकारी समितियों की संख्या २,३९,७८३ थी। देश का आकार प्रकार देखते हुए तुलनात्मक रूप में यह संख्या बहुत ही कम है। डेन्मार्क, स्वीडन, आयरलैंड, इजराइल, इटली तथा चीन में आर्थिक क्रियाओं के अंतर्गत सहकारी समितियां विस्तृत क्षेत्र में व्याप्त हैं। इन देशों में प्रत्येक नागरिक एक से भी अधिक सहकारी समितियों का सदस्य है।

भारत में सहकारी आन्दोलन की जो प्रमुख विशेषता रही है वह यह कि अभी हाल ही में गैर सहकारी साख क्षेत्र में हुई प्रगति को छोड़कर प्राथमिक सहकारी समितियों आवश्यकता से अधिक प्रतिशत कृषकों को अग्रिम-ऋण प्रदान करने में ही संलग्न रहा। दूसरे देशों में सहकारिता ने उत्पादन तथा बाजार के क्षेत्र में भी पर्याप्त प्रगति की है। उदाहरणार्थ चीन और इजराइल में कृषिजन्य उत्पादन का अधिकांश भाग कृषकों की सहकारिता द्वारा प्रबंधित होता है, स्वीडन और डेन्मार्क में ६० प्रतिशत से भी अधिक फुटकर व्यापार उपभोक्ताओं के सहकारी भंडारों से संचालित होता है। भारत में यहाँ तक कि कृषि साख के क्षेत्र में ही सहकारी समितियों का योगदान केवल ५ प्रतिशत है और अधिकांश साखसुविधा महाजन तथा साहूकारों द्वारा ही प्रदान की जाती है।

## ग्राम साख सर्वेक्षण

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने सन् १९५१-५४ के मध्य भारत में साख-व्यवस्था का विस्तृत सर्वेक्षण किया। जांच समिति ने यह पाया कि भारत में सहकारिता आन्दोलन की धीमी प्रगति का मुख्य कारण यह है कि प्राथमिक समितियों को केन्द्रीय तथा प्रांतीय बैंकों से कम सहायता प्राप्त हुई। समिति ने कहा—

"सहकारी रकम की संस्थाओं तथा संगठनों के अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय नहीं है जिससे कृषि साख को उचित प्रमोशन देने के लिये तथा पंचवर्षीय योजनाओं की सफलता के लिये सहकारिता असफल नहीं होनी चाहिये और नहीं इसे त्यागना चाहिये। इसे जीवन प्रदान करने हेतु तथा सक्रिय बनाये रखने के लिये सरकार का प्रबल सहयोग आवश्यक है। सहकारी समितियों के साथ सरकार को सहयोगात्मक सम्बन्ध स्थापित करना चाहिये चाहे वे छोटी हों या बड़ी हों।"

इस समिति ने ये सुझाव दिये—

(१) विभिन्न स्तरों पर सरकार को सहकारी समितियों का प्रमुख सहयोगी बनना चाहिये।

(२) साख विपणन एवं नवीन समितियों के मध्य पूर्ण सहकारिता का निर्माण हो।

(३) प्राथमिक समितियां वृहत आकार की तथा सीमित दायित्व की हो।

(४) राष्ट्रीय एवं राजकीय वेअर हाउसिंग कारपोरेशन द्वारा गोदामों और वैअरहाउस का जाल बिछा दिया जाना चाहिये।

(५) सहकारी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने का अधिक प्रावधान होना आवश्यक है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समिति ने इम्पीरियल बैंक को स्टेट बैंक आफ इन्डिया में परिवर्तित करने की भी सिफारिश की। उसने यह भी सिफारिश की कि राज्य द्वारा ५१ प्रतिशत अंश धारण किये जाने के आधार पर राजकीय सहकारी बैंकों तथा भूमि बंधक बैंकों की अंशपूंजी में अभिवृद्धि होनी चाहिये। स्टेट बैंक के द्वारा सहकारी बैंकों तथा वृहत प्राथमिक समितयों के मध्य इसी प्रकार के साझेदारी की सिफारिश की गई। सहकारिता में राजकीय योगदान के लिये कृषि साखनिधि में से स्टेट बैंक को रिजर्व बैंक द्वारा दिये जाने वाले दीर्घकालीन ऋण की व्यवस्था भी की जा सकती है।

### प्रयोगकरण

सरकार ने अधिकांशतः उक्त सुझावों को प्रयोगीकृत कर लिया। सर्वप्रथम सन् १९५५ में रिजर्व-बैंक आफ इंडिया का संशोधन हुआ ताकि सहकारी समितियों के लिये कोष का निर्माण हो सके। तदनुसार एक राष्ट्रीय कृषि साख कोष का निर्माण किया गया, जिस की प्रारंभिक पूंजी १० करोड़ रुपये थी। द्वितीय योजनाकाल में प्रतिवर्ष ५ करोड़ का योगदान करने का नियोजन किया गया, ताकि सन् १९६०-६१ तक अग्रिम ऋण प्रदान करने के लिये ३५ करोड़ की राशि हो सके। उसी वर्ष इम्पीरियल बैंक का राष्ट्रीयकरण हुआ और १ जुलाई १९५५ से स्टैट बैंक आफ इन्डिया में परिणत हो गया। ग्राम्य क्षेत्रों में इस बैंक की ४०० नई शाखायें खोलने का नियोजन रखा गया ताकि देश की ग्राम्य अर्थ-व्यवस्था में वह मुख्य भूमिका अदा कर सके।

सरकार ने एक राष्ट्रीय सहकारी वैअरहाउसिंग तथा विकास बोर्ड की भी स्थापना की, ताकि कृषिजन्य उपज के विपणन संग्रह तथा वैअर हाउसिंग के लिये योजनायें बनाई जा सके। यह बोर्ड दोनों कोषों पर नियंत्रण रखेगा।

## द्वितीय योजना में अभिवृद्धि का नियोजन

द्वितीय योजना में १०४०० वृहत आकार की सहकारी समितियां तथा १८०० विपणन समितयां स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया। यह भी प्रस्तावित किया गया कि ३५० वैअर हाउसिंग तथा ५५०० गोदाम खोले जायेंगे।

भविष्य में प्राथमिक समितियां कृषकों को उनकी उत्पत्ति पर ऋण प्रदान करने में समर्थ हो सकेगी। इस सम्बन्ध में २२५ करोड़ रु० के दीर्घकालीन मध्यम तथा अल्पकालीन ऋण प्रदान करने का लक्ष्य रखा गया। गतिवर्द्धन के क्षेत्र में यह प्रस्तावित किया गया कि ३५ शुगर फैक्टरीज, ४८ सहकारी कॉटन जिनिंग और ११८ अन्य गतिवर्द्धक सहकारी समिति द्वितीय योजनावधि में स्थापित की जा सकेंगी। दूसरे प्रकार की सहकारिता के प्रारूपों का भी सुझाव दिया गया जैसे—औद्योगिक सहकारिता, श्रम सहकारिता, तथा उपभोग स्टोर्स।

## वर्तमान स्थिति—

सन् १९५५-५६ में सहकारी आन्दोलन की स्थिति इस प्रकार थी—

| | |
|---|---|
| कुल सहकारी समितियों की संख्या | २,३९७८३ |
| कुल सदस्य संख्या | १९,७८७,०७ |
| सभी प्रकार की समितियों की कार्यशील पूंजी | ४९६ करोड़ रु० |
| प्राथमिक कृषि साख समितियां | १.५९,९३९ |
| गैर कृषि साख समितियां | १०००३ |
| प्राथमिक कृषि गैर साख समितियां | ३०२६८ |
| प्राथमिक गैर कृषि साख समितियां | २७७४५ |

( इन्डिया एण्ड वर्ल्ड इकानामी—पृ० २६ )

( सूचना एवं प्रकाशन मंत्रालय दिल्ली मई—५८ )

सहकारी ऋण के क्षेत्र में तृतीय योजना का लक्ष्य किसानों को प्रतिवर्ष ५ अरब रुपये से अधिक रुपये वितरित करना है। इस रकम में अल्पकालीन ऋणों के लिये ४ अरब रुपये, मध्यकालीन ऋणों के लिये ८० करोड़ रु० तथा दीर्घकालीन ऋणों के लिये ३५ करोड़ रु० शामिल रहेंगे। प्राथमिक समितियों की अंशपूंजी में राज्यों के योगदान के प्रश्न पर सहकारिता मंत्रालय ने बताया है कि इस प्रकार का योगदान एपैक्स या सैन्ट्रल बैंकों के जरिये अप्रत्यक्ष रूप से किया जाना चाहिये। मंत्रालय ने यह बात भी बतायी कि राज्यों में से यदि कोई भी राज्य शेयर पूंजी के सम्बन्ध में अपना योगदान करना चाहे तो ऐसी स्थिति में डायरैक्टरों को नामजद करने से अलग रहना चाहिये।

सहकारी कृषि के सम्बन्ध में प्रयोगात्मक योजनाओं के विषय में ३ हजार २ सौ फार्मों की स्थापना की जायगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौजूदा राष्ट्रीय सेवा विस्तार खंडों के आधार पर इन फार्मों को स्थापित किया जायगा। इसके अतिरिक्त देश में सहकारी कृषि को गति देने हेतु केन्द्रीय सहकारी कृषिमंडल स्थापित करने व ३२०० स्वैच्छा से सहकारी कृषि क्षेत्र स्थापित करने का निश्चय किया गया है। श्री निजलिंगप्पा की अध्यक्षता में गठित सहकारी कृषि पर अध्ययन मण्डल की सिफारिशों के आधार पर कई निर्णय लिये गये हैं। राज्य स्तर पर सहकारी कृषि मंडल स्थापित करना राज्यों की स्वेच्छा पर छोड़ा गया है। जिला सहकारी कृषि संघों पर देखरेख की जिम्मेवारी सौंपने का सुझाव दिया गया है। राज्यों को भी कृषि सहकारी समितियों के हिस्से खरीदने का निर्देश दिया गया है। अल्प समय ऋण स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार केन्द्रीय बैंक या ग्रामीण सहकारी समिति द्वारा दिया जाना चाहिये। व्यवस्था के खर्च हेतु अधिक से अधिक १२०० रु० अनुदान दिया जा सकेगा। इसके अलावा अन्न भण्डार व पशुनिवास निर्माण हेतु ५००० रु० (२५ प्रतिशत अनुदान व ७५ प्रतिशत ऋण) दिया जायगा। यदि सहकारी कृषि समिति अपने विकास कार्यों के हेतु केन्द्रीय बैंक या भूमि बन्धक बैंक या अन्य स्थानों से ऋण न मिल सके तो ४००० रु० तक ऋण सरकार देगी। सहकारी कृषि क्षेत्रों के सदस्य वे ही बन सकेंगे जो खेतों में या अन्य प्रकार से क्षेत्र में कार्य करेंगे।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि सहकारिता ही भारतीय आर्थिक विकास की नीव है। यदि सहकारिता सफल होती है तो हमारे राष्ट्र निर्माण के नियोजित लक्ष्य अपने आप पूरे हो जायेंगे। इसलिये सभी सम्भव प्रयत्नों से सहकारिता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। ●●

## रिजर्व बैंक

(पृष्ठ २०५ का शेष)

के सामान्य अस्त्र (जैसे बैंक दर, खुले बाजार की क्रियाओं बैंकों के कोषानुपाती में परिवर्तन आदि) ही नहीं है बल्कि १९४९ के बैंकिंग कम्पनीज अधिनियम के अनुसार इसे साख-नियमन के गुणात्मक तथा प्रत्यक्ष अस्त्र भी दिये गये हैं। रुपये के विदेशी विनिमय मूल्य की स्थिरता के लिए बैंक देश के अन्तर्राष्ट्रीय कोष की सुरक्षा तथा व्यवस्था करता है। इसके अतिरिक्त यह अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा अन्तर्राष्ट्रीय भुगतानों पर भी नियंत्रण रखता है।

देश के आर्थिक विकास की आर्थिक विकास की आवश्यकताओं तथा समस्याओं के साथ साथ रिजर्व बैंक के के कार्य भी निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं। अपने साधारण बैंकिंग कार्यों तथा साख के नियमन के अतिरिक्त देश में बैंकिंग का यथेष्ट विकास करना भी इसका उत्तरदायित्व हो गया है ताकि केवल व्यापार और वाणिज्य की ही नहीं बल्कि इनके साथ ही कृषि और उद्योग की भी वित्तीय अथवा आर्थिक आवश्यकताओं की पर्याप्त रूप से पूर्ति हो सके। चूंकि बैंक सरकार के बैंकर तथा देश की समस्त करेन्सी और साख व्यवस्था का नियामक होता है, इसलिए यह (केन्द्रीय बैंक) आर्थिक एवं वित्तीय मामलों में सरकार का सलाहकार भी होता है। रिजर्व बैंक भी भारत सरकार का सलाहकार है।

उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त रिजर्व बैंक व्यावसायिक तथा सहकारी बैंकों के कार्यों, भुगतान तुला, सरकार तथा निजी कम्पनियों की आर्थिक स्थितियों एवं मुद्राबाजार के आवश्यक आंकड़ों का संकलन करता है। तथा उनका विधिवत् प्रकाशन करता है। प्रत्येक महीने बैंक अपना मासिक बुलेटिन तथा साप्ताहिक सांख्यिकी परिशिष्ट प्रकाशित करता है। इसके अलावे प्रत्येक वर्ष बैंक अपनी विविध रिपोर्ट भी प्रकाशित करता है। जिनमें केन्द्रीय निर्देशक मण्डल की रिपोर्ट भारत में बैंकिंग की प्रगति एवं प्रवृत्ति पर रिपोर्ट, भारत में सहकारिता आन्दोलन की समीक्षा करेंसी और वित्त पर रिपोर्ट आदि के नाम उल्लेखनीय है। स्पष्ट है कि रिजर्व बैंक देश के आर्थिक विकास तथा बैंकिंग विकास सम्बन्धी जो समीक्षात्मक साहित्य उपस्थित करता है। वह दूसरी आर्थिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने तथा मौद्रिक आर्थिक एवं वित्तीय नीतियों के निरूपण में अमूल्य सहायता प्रदान करता है। ●●

(पृष्ठ २७६ का शेष)

इस प्रकार आटोमेशन के अन्तर्गत नई अर्थ-पद्धति में सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में समाज ढाँचे महत्वपूर्ण प्रभावशाली परिवर्तन आना अवश्यम्भावी है। इसके दूरगामी परिणामों पर समय रहते अभी से विचार कर लेना और उसमें उपर्युक्त सुधारों का समावेश कर लेना दूरदर्शितापूर्ण कदम होगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# सोवियत घरेलू व्यापार

ले० ए० कोज़लोव

## ५,४०,००० से अधिक स्टोर

सोवियत संघ में खुदरा बिक्री का काम राजकीय तथा सहकारी संगठनों के हाथों में है। कुल मिलाकर सोवियत संघ में ५,४०,००० से अधिक स्टोर हैं, और राज्य संगठनों तथा उपभोक्ता सहकारी सोसाइटियों द्वारा ही संचालित लगभग १,५०,००० भोजन-कक्ष, रेस्तरां और कैफे हैं। इन तमाम व्यापारिक संस्थानों द्वारा विभिन्न उपभोक्ता सामग्रियों एवं खाद्य पदार्थों की दैनिक बिक्री लगभग २० करोड़ रूबल की बैठती है।

राज्यीय व्यापार देश के कुल खुदरा व्यापार का लगभग ६६ प्रतिशत है। यह मुख्यतया शहरी आबादी की ही आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। नगरों और मजदूर बस्तियों में छोटे-बड़े 'डिपार्टमेंट स्टोर' (अनेकों प्रकार के सामान बेचने वाली दुकानें जिनमें विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के लिए विभिन्न विभाग होते हैं) और विशिष्ट स्टोर ग्राहकों के लिए खिलौनों तथा टेलीविजन सेटों से लेकर कारें तथा निजी मकानों के निर्माण के लिए जरूरी सामान तक सभी वस्तुएँ प्रस्तुत करते हैं।

उपभोक्ता सहकारी समितियां, जिनकी कुल सदस्य संख्या लगभग ४ करोड़ है, मुख्यतया देहात में ही व्यापार-कार्य करती हैं। हर बड़े गांव में या ग्राम-समूह में एक उपभोक्ता सहकारी सोसाइटी है जिसके अपने स्टोर, भोजनालय, रेस्तरां और काफे हैं। उपभोक्ता सोसाइटी का निर्देशन सोसाइटी के सदस्यों द्वारा निर्वाचित एक मण्डल करता है। गांव में अपने व्यापार-कार्य के अलावा, उपभोक्ता सहकारी समितियां सामूहिक खेतों तथा अपने सदस्यों को अपना अतिरिक्त उत्पादन नगरों में बेचने में भी सहायता देती हैं। फल, सब्जियां, फलों के रस, मांस, अचार-मुरब्बे तथा अन्य अनेक सामग्रियां समस्त सोवियत संघ में विशेष सहकारी स्टोरों में बेची जाती है। इसके अलावा, शहरों और कस्बों में सामूहिक-खेत-बाजार हैं जहां सामूहिक खेत तथा उनके सदस्य अपने अतिरिक्त उत्पादनों की बिक्री करते हैं, यद्यपि राजकीय तथा सहकारी व्यापार की तुलना में सहकारी खेतों का यह व्यापार नगण्य है।

## व्यापार

व्यापार वस्तुओं के उपभोग के स्तर का, और फलतः जनता की सुख-सुविधा का एक महत्वपूर्ण सूचक चिन्ह है। सोवियत संघ में उपभोग्य वस्तुओं की खपत निरन्तर बढ़ रही है। उपभोग्य वस्तुओं का वार्षिक खुदरा व्यापार १९५८ में ६७ अरब ७० करोड़ रूबल (नये मूल्यों में) का हुआ, १९५९ में यह ७१ अरब ९० करोड़ रूबल तक पहुँच गया, और १९६० में ७६ अरब ९० करोड़ रूबल का हुआ।

तेजी से बढ़ता हुआ उत्पादन व्यापार में अभिवृद्धि को और भी प्रोत्साहन देता है। इस प्रकार सप्त-वर्षीय योजना अवधि के प्रथम दो वर्षों में व्यापार में अभिवृद्धि लगभग १९ प्रतिशत से अधिक की हुई, जबकि योजना में १५.४ प्रतिशत वृद्धि का लक्ष्य रखा गया था। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं है, बल्कि एक नियमित प्रक्रिया है—जैसा कि विगत दशक से देखा जा सकता है जबकि देश के व्यापार में वृद्धि की औसत वार्षिक दर लगभग ११ प्रतिशत थी।

हर वर्ष के साथ सोवियत जन बेहतर खाते हैं और बेहतर पहनते हैं, और अधिक टिकाऊ उपभोक्ता-सामग्री खरीदते हैं। १९५८ की तुलना में, १९६० में मांस तथा मांस से बने पदार्थों की बिक्री ३३ प्रतिशत बढ़ी, दूध की २० प्रतिशत, चीनी की २१ प्रतिशत, अण्डों की १८ प्रतिशत, तैयार कपड़ों की २५ प्रतिशत, बिनाई के कपड़ों



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की २४ प्रतिशत, जूतों की १८ प्रतिशत, टेलीविजन सेटा की ६१ प्रतिशत और कपड़े धोने की मशीनों की बिक्री ६९ प्रतिशत बढ़ी। आकस्मिक ढंग से छांटे गये आंकड़ों के अनुसार, पिछले ६ वर्षों के अन्दर औद्योगिक मजदूरों के परिवारों में मांस की प्रति व्यक्ति खपत ३८ से बढ़कर ५४ किलोग्राम हो गई। प्रति व्यक्ति दूध की खपत ८८ से बढ़कर १५४ किलोग्राम हो गई, और मखन की खपत ४.७ से बढ़कर ६.४ किलोग्राम हो गई।

## अमरीकी नागरिकों की समृद्धि

इस समय लगभग ७१ प्रतिशत अमरीकी परिवार बीच के दर्जे के आय-वर्ग में आते हैं, अर्थात् वे १४,००० रु० और ७०,००० रु० के बीच प्रतिवर्ष कमाते हैं। यह एक आंकड़ा-युक्त प्रमाण है कि अमरीकी लोकतंत्र एक ऐसे समाज की स्थापना कर रहा है जिसे वर्गहीन समाज कहा जा सकता है। अमरीकी अर्थ-व्यवस्था के कुछ और आंकड़ों से उक्त तथ्य की पुष्टि होगी। सात करोड़ अमरीकी, यानी कुल अमरीकी जनसंख्या का चालीस प्रतिशत बचत करता है; पिछले १४ वर्षों में बचत की कुल रकम में १३३% की वृद्धि हुई है।

तीन करोड़ चालीस लाख अमरीकी परिवारों या लगभग ५८% परिवारों के पास अपने निजी मकान हैं और मकान के साथ ही उन्हें वे सब सुविधायें भी प्राप्त हैं जो आराम और मानवीय गौरव के लिये आवश्यक है।

एक करोड़ पचास लाख अमरीकी नागरिकों के पास न कि केवल थोड़े से लोगों के पास अमरीकी कम्पनियों के शेयर या हिस्से हैं। धीरे धीरे देश के बुनियादी उद्योगों की मिल्कियत जनता के काफ़ी बड़े हिस्से के हाथों में पहुँचती जा रही है। ग्यारह करोड़ पचास लाख अमरीकी, अर्थात दो-तिहाई अमरीकी नागरिकों का जीवन बीमा है जिसके मतलब हुए कि उन्होंने स्वयं को और अपने परिवारों को आकस्मिक मृत्यु के विरुद्ध सुरक्षित ही नहीं किया है बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें अपने देश के बड़े बड़े उद्योगों में भी दिलचस्पी है। चार करोड़ अमरीकियों के पास संयुक्तराज्य के बचत वाले बाँड (सेविंग्स) हैं। यह तथ्य अमरीकी परिवारों के आर्थिक स्वास्थ्य का ज्वलन्त उदाहरण तो है ही, साथ ही अमरीकी लोकतंत्र में उनके अडिग विश्वास का एक ठोस प्रमाण है।

## पाकिस्तान का चीनी की खरीद

कुछ साम्यवादी देश पाकिस्तान में भारत के चीनी के बाजार को हथियाने की कोशिश कर रहे हैं। वे पाकिस्तान को भारतीय चीनी के मूल्य से सस्ते मूल्य पर चीनी बेचने को तैयार हैं। रुमानिया और चेकोस्लोवाकिया पाकिस्तान को २८ पौंड प्रति टन के हिसाब से ५०,००० टन चीनी बेचने को तैयार हैं, जबकि भारत ३२ पौंड प्रति टन चीनी बेचना चाहता था। पाकिस्तान को इस समय ५०,००० टन चीनी की आवश्यकता है।

नये समाचारों से ज्ञात हुआ है कि पाकिस्तान २३ पौंड प्रति टन पर भारत से २५००० रु० की चीनी खरीदने पर सहमत हो गया है।

## भारत में विदेशी पूंजी

जून १९४८ में भारत में आई विदेशी पूंजी कुल २५५.८ करोड़ थी। १९५५ के अन्त तक यह राशि बढ़कर ४५६ करोड़ रुपये हो गई और १९५८ के अन्त तक ५७०.६ करोड़ रुपये। यह निरन्तर बढ़ती ही जा रही है। १९६० तक विदेशी समझौतों की संख्या ३८८ तक पहुँच गई थी। इन समझौतों में ब्रिटेन सबसे आगे है।

## रूसी सहायता में अड़चन

बिजली उत्पादन के लिये जिस टर्बाइन की स्थापना में सोवियत सरकार ने सहायता का बचन दिया था अब अपने ही घर में अधिक आवश्यकता बढ़ जाने के कारण अपनी असमर्थता प्रकट कर रही है। खास कर बालवियरिंग के 'प्लान्ट' के निर्माण में बाधा उपस्थित हो गई है। उद्योग मंत्री—श्री मनुभाई शाह इस सिलसिले में जून में बातचीत के लिये मास्को जा रहे हैं।

—राज्य-व्यापार निगम ने यह प्रस्ताव किया है कि निर्यात उपयोगी पदार्थ बनाने वाले उद्योगों को वह ऋण के रूप में आर्थिक सहायता दे या उनके शेयर खरीदे सके। इससे निगम का खयाल यह है कि वह इन उद्योगों पर नियंत्रण कर सकेगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तीसरी योजना में औद्योगिक कार्यक्रम

प्रारंभिक अनुमानों के अनुसार, सब उद्योगों में तीसरी योजना के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए लगभग २९७१ करोड़ रुपयों (खनिज विकास के लिए ५३१ करोड़ रुपयों को मिलाकर) की आवश्यकता होगी। लेकिन तीसरी योजना के वर्तमान समस्त वित्तीय व्यय के अनुमानों के आधार पर सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्रों सहित औद्योगिक विकास के लिए कुल २५०० करोड़ रुपये से अधिक मिलने की सम्भावना नहीं। तीसरी योजना के औद्योगिक लक्ष्यों की पूर्ति के लिए नियत २९७१ करोड़ रुपयों की राशि में से १७८६ करोड़ रुपये (खनिज विकास के लिए ४७१ करोड़ रुपयों को मिलाकर) उन परियोजनाओं पर खर्च होंगे जो निश्चित रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत आती हैं या इसके अन्तर्गत लिए जाने का इरादा है। निजी क्षेत्र के लिए अनुमानतः ११८५ करोड़ रुपये (खनिज विकास के लिए ६० करोड़ रुपयों को मिलाकर) का खर्चा होगा। सार्वजनिक क्षेत्र में उद्योगों तथा खनिजों के लिए १७८६ करोड़ रुपयों की आवश्यकता है। लेकिन केवल १४५० करोड़ रुपये करने की व्यवस्था की गयी है। इसका मतलब यह हुआ है कि सार्वजनिक क्षेत्र की कुछ औद्योगिक योजनाएं तीसरी योजना में पूरी न हों पाएंगी। इस श्रेणी में वे योजनाएं होंगी जो प्राथमिकता की दृष्टि से बाद में आती हैं, जिन पर योजना के बाद के चरणों में काम चालू होगा, और वे योजनाएं जिन पर तकनीकी दिक्कतों के आधार पर द्रुतगति से काम नहीं किया जा सकता और जिनके लिए योजना के शुरू में आवश्यक विदेशी मुद्रा उपलब्ध नहीं। तीसरी योजना के औद्योगिक लक्ष्यों की पूर्ति में कहां तक प्रगति हो सकेगी, अभी यह निश्चयपूर्वक कहना सम्भव नहीं।

तीसरी योजना में सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के औद्योगिक लक्ष्यों का बंटवारा अप्रैल १९५६ के औद्योगिक नीति प्रस्ताव के अनुसार किया जायगा और यही प्रस्ताव तीसरी योजना में भी अपनाया जायगा। इस नीति को समझने के लिए ६२ नये पैसे के टिकट भेजकर औद्योगिक नीति मंगाइये—अशोक प्रकाशन मंदिर २८/११ शक्तिनगर दिल्ली। सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्रों के उद्योगों की भूमिका एक दूसरे के पूरक के रूप में निश्चित की गयी है। उदाहरणतया नत्रजनयुक्त ऊर्वरक को लें। इस दिशा में सरकारी क्षेत्र में काफी काम हो चुका है और यह कल्पना की गयी है कि निजी क्षेत्र पहले से अधिक पैमाने पर इस काम को लेगा और सार्वजनिक क्षेत्र के प्रयत्नों को बल देगा। कच्चे लोहे के बारे में पूर्व नीति में कुछ ढिलायी की गयी है ताकि निजी क्षेत्र के अन्तर्गत बनाये जाने वाले कारखानों की क्षमता अब तक स्वीकृत १५,००० न से बढ़कर १००,००० टन प्रतिवर्ष हो जाय। निजी क्षेत्र में रंग-सामग्री, प्लास्टिक और दवाइयों को बनाने का कार्यक्रम सार्वजनिक क्षेत्र के नये इस्पात कारखानों में बनने वाले सुरभि पदार्थ और बड़े पैमाने पर मूल औषध उत्पादन के कार्यक्रमों के पूरक के रूप में चलेगा।

निजी क्षेत्र को विस्तार के अलावा, १५० करोड़ रुपये सूती कपड़े, पटसन और चीनी उद्योगों के लिए नयी मशीनें आदि खरीदने के लिए चाहिए। इस प्रकार निजी क्षेत्र के लिए कुल १५३५ करोड़ रुपये की पूंजी की आवश्यकता होगी। इस प्रकार के विस्तृत कार्यक्रम से निजी क्षेत्रों के वित्तीय साधनों पर बहुत प्रभाव पड़ेगा। प्रारम्भिक अनुमानों के अनुसार निजी क्षेत्र में औद्योगिक विकास के लिए १२०० करोड़ रुपये उपलब्ध होने का अनुमान है। इस राशि को जुटाने में भी सरकार को वित्तीय संस्थाओं द्वारा विशेषतया पुनर्वास कार्यक्रम के लिए अपरिवार रूप धन देना होगा।

यह तथ्य इस आक्षेप का खंडन करता है कि सार्वजनिक क्षेत्र को ज्यादा भाग दिया गया है। दूसरी योजना में निजी क्षेत्र पर अनुपाततः ८५० करोड़ रुपये खर्च हुए जबकि तीसरी योजना में १३३५ करोड़ रुपयों की व्यवस्था की गयी है। तीसरी योजनाकाल में सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत जिस वृहत् आर्थिक विकास के कार्यक्रम को अपनाया गया है उसके द्वारा निजी क्षेत्र में भी तीव्र गति से औद्योगिक विकास होगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं

## औद्योगिक संरक्षण क्यों और कैसे ?

● उन्नत देशों में भी विकासशील देशी उद्योगों को संरक्षण दिया जाता है। अमरीका में लगभग १३० साल से यह संरक्षण दिया जा रहा है।

● इन उद्योगों में जो सामान बनता है, उसे विदेशी सामान की होड़ से बचाने के लिए विदेशी माल पर आयात शुल्क लगाया जाता है।

● अंग्रेजी राज में बहुत समय तक भारतीय उद्योगों को संरक्षण नहीं मिला। बाद में जनता के आंदोलन होने पर महायुद्ध के समय लड़ाई की आवश्यकताओं के कारण लोहा, इस्पात जैसे उद्योगों को संरक्षण दिया गया।

● १९५१ में कानून के अनुसार स्थायी तटकर आयोग नियुक्त किया गया। तटकर आयोग उद्योगों को संरक्षण देने के विषय में सुझाव देता है। औद्योगिक नीति प्रस्ताव में कहा गया है कि संरक्षण शुल्क लगाने का उद्देश्य देशी उद्योग को उन्नत, विदेशी उद्योगों के मुकाबले से बचाना और उपभोक्ताओं पर अनुचित बोझ न डालते हुए देश के साधनों के उपयोग को बढ़ाना है।

● उद्योगों को संरक्षण देते समय इस बात का भी विशेष ध्यान रखा जाता है कि संरक्षित उद्योग जल्दी से जल्दी अपने पैरों पर खड़े हो जाएं, और आगे उन्हें संरक्षण की आवश्यकता न रहे।

● किसी उद्योग को संरक्षण देने से पहले तटकर आयोग सूक्ष्म जांच करता है कि देशी माल के उत्पादन पर क्या लागत बैठती है और विदेश से आए माल का क्या दाम पड़ता है। वह यह भी देखता है कि देश में कितना माल तैयार होता है, और उद्योग को बढ़ाने का क्या कार्यक्रम है। समय-समय पर इस बात की जांच भी की जाती है कि संरक्षण से उद्योगों के विकास में सहायता मिल रही है या नहीं और इससे उपभोक्ताओं को तो हानि नहीं हो रही है।

● इस समय ७० उद्योगों को संरक्षण मिल रहा है, इनमें वे उद्योग भी शामिल हैं, जिन्हें स्वराज्य से पहले संरक्षण मिल रहा है। बहुत से उद्योगों के संरक्षण की प्रार्थना इस लिए नहीं मानी गयी कि संरक्षण की अवधि में उनके अपने पांवों खड़े होने की सम्भावना नहीं थी। संरक्षित उद्योगों के पर्याप्त उन्नति कर लेने पर संरक्षण हटा लिया जाता है। अब तक ४० उद्योगों का संरक्षण इस प्रकार समाप्त किया गया है। कुछ ऐसे उद्योगों का भी संरक्षण समाप्त कर दिया गया, जिन्होंने संरक्षण की अवधि में, यथेष्ट उन्नति नहीं की और न जिनके आगे भी पर्याप्त उन्नति करने की आशा थी।

● संरक्षण से उद्योगों की बढ़ती हुई, उनमें अधिक लोगों को काम मिला और उत्पादन बढ़ा। संरक्षण से देश में साइकिल, मशीन, अलम्युनियम और अन्य धातु, रसायन, मोटर गाड़ी और बिजली के सामान के उद्योगों की नींव जमी। संरक्षित उद्योगों में बनने वाले माल की उत्तमता भी बढ़ी।

## मद्रास में उर्वरक का नया कारखाना

वित्त मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने मद्रास के पास एन्नोर में एक निजी उर्वरक खारखाने की नींव रखी। आशा है, यह कारखाना अगले वर्ष चालू हो जाएगा और इसमें ५० हजार टन सुपर फास्फेट और १८,००० टन गंधक का तेजाब बनेगा।

—भारत सरकार ने बैंकों के डिपोजिट का बीमा करने का निश्चय कर लिया है। प्रारंभ में १ हजार रुपये के डिपोजिट का बीमा किया जायगा। इसका अर्थ यह है कि किसी भी बैंक के फेल होने पर यह नई बीमा कम्पनी १०० रुपये तक की जिम्मेवारी लेने को तैयार है। बैंक-बीमा की यह योजना अनेक वर्षों से विचाराधीन थी। पलाई बैंक के फेल हो जाने के कारण इसकी आवश्यकता और भी अधिक तीव्र गति से अनुभव की गई। ● ●

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आप निश्चिंत रह सकते हैं

जब आप अपना माल... **QTS** शीघ्र यातायात सेवा द्वारा भेजते हैं।

INDIAN RAILWAYS

## आप विश्वास रखें आपका माल समय पर पहुंचेगा

मध्य रेलवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Regd No. D. 301

# अपने प्राचीन देश के पुनर्निर्माण में.....

**रजा दुलन्द शूगर कम्पनी लिमिटेड**
**रामपुर (उत्तरप्रदेश)**

जहां हम भारत में कहीं भी बनने वाली उत्तम सफेद दानेदार चीनी का निर्माण करते हैं ।

**उड़िशा सिमेंट लिमिटेड**
**राजगंगपुर (उड़िशा)**

जहां नवीनतम साधनों एवं उत्पादन की नवीनतम प्रणालियों द्वारा हम बड़ी संख्या में ऊष्मसहों (रिफ्रेक्टरीज़) का निर्माण करते हैं जो कि इस्पात, सिमेंट, कांच आदि विविध बड़े उद्योगों में भट्टियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

**डालमिया सिमेंट (भारत) लिमिटेड**
**डालमियापुरम् (मद्रास राज्य)**

जहां हमारा सिमेंट का उत्पादन निरन्तर वृद्धि पर है। सिमेंट हमारी उन समस्त विकास योजनाओं के लिये अत्यन्त आवश्यक है, जो हमारे उज्वल भविष्य के स्वप्न को मूर्त रूप देने में सहायक हो रही हैं ।

**राष्ट्र की सेवा में सन्निहित एक राष्ट्रीय उद्योग**


सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीजिज ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित और अशोक प्रकाशन विभाग, २/१०, शक्तिनगर, दिल्ली-६ से प्रकाशित ।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा

अर्थशास्त्र की नवीनतम गतिविधियों की
मासिक पत्रिका
जुलाई १९६१

प्रकाशन मन्दिर शक्ति नगर दिल्ली

मूल्य
७५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# झंझट बिना लेन-देन

मेट्रिक बाटों का प्रयोग शुरू हो चुका है। अब कीमतें मेट्रिक इकाइयों के अनुसार तय हो गयी हैं। पर फिर भी बाजार में लेन देन करते समय कई बार झंझट का सामना करना पड़ता है। जानते हैं आप क्यों ?

इसका कारण यह है कि अभी मेट्रिक प्रणाली की भावना नहीं अपनाई गयी है। वस्तुएँ खरीदते समय या तो पुराने तोल के हिसाब से अथवा पुराने तोल के बराबर मेट्रिक तोल के अनुसार चीजें खरीदी जाती हैं।

जैसे कि एक पाव के लिए २३३ ग्राम और १ पौण्ड के लिए ४५४ ग्राम।

इस ढंग से मेट्रिक प्रणाली का लाभ सब तक नहीं पहुँचता।

ठीक तरीका तो यह है कि २०० या ३०० ग्राम अथवा ४०० या ५०० ग्राम चीज खरीदी जाय।

इस ढंग से नयी प्रणाली का पूरा लाभ मिलेगा। दाशमिक सिक्के शुरू हो जाने के कारण अब सब लोग यदि इसी तरह पूर्ण मेट्रिक इकाइयों में सामान खरीदें तो तुलाई और हिसाब में बड़ी सहूलियत होगी और कोई झगड़ा या झंझट नहीं होगा।

**पूर्ण मेट्रिक इकाइयों**

**में ही चीजें खरीदिये**

**इसमें आप और दूकानदार दोनों की सुविधा है**

भारत सरकार द्वारा प्रचारित

DA 61/108

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तृतीय योजना अङ्क

## सम्भावित विषय सूची


१. तीसरी योजना एक दृष्टि में
२. योजना के उद्देश्य और लक्ष्य
३. योजना के सुलभ साधन
४. आर्थिक व्यवस्था में नियंत्रणों का स्थान
५. योजना के कुछ मूलभूत प्रश्न
६. योजना की कुछ विशेषताएं
७. आदर्शवाद और व्यावहारिकता में समन्वय
८. योजना का स्वरूप—केन्द्रीकृत या विकेन्द्रीकृत
९. योजना और मूल्य नीति
१०. तीसरी योजना में श्रम-नीति
११. योजना और सर्वोदयवाद
१२. विकास योजना और भारतीय आत्मा
१३. राष्ट्रीयकरण से लाभ तथा हानि
१४. योजना और लोकतन्त्र
१५. कृषि बनाम उद्योग
१६. छोटे बनाम बड़े उद्योग
१७. सहकारिता के स्वरूप
१८. योजना और रोजगार
१९. योजना में अन्य उद्योग
२०. योजना के कुछ मूलभूत प्रश्न
२१. ग्रामों से शहरों की ओर
२२. मुद्रा प्रसार योजना नहीं, औषधि है।
२३. विभिन्न देशों में योजनाबद्ध विकास
२४. विदेशी पूंजी का आर्थिक विकास में सहयोग
२५. विदेशों से ऋण वरदान या अभिशाप
२६. प्रमुख अर्थ-शास्त्रियों से कुछ प्रश्न
२७. प्राथमिकता के निर्णय की कसौटी
२८. पहली दो योजनाओं के अनुभव
२९. राजनीतिक दलों की दृष्टि में पंचवर्षीय योजना
३०. अत्यधिक उत्पादन की ओर तो हम नहीं जा रहे हैं।
३१. स्वयं स्फूर्त योजना का अभिप्राय
३२. यांत्रिक कृषि क्या भारत में वांछनीय है ?
३३. ग्राम पंचायतें और आर्थिक विकास
३४. यातायात व्यवस्था का आर्थिक विकास।
३५. विकास योजनाओं की एक बड़ी समस्या जनसंख्या-वृद्धि
३६. विविध राज्यों में औद्योगिक विकास की प्रतिस्पर्धा
३७. क्या हम समाजवाद की ओर जा रहे हैं
३८. देश की अर्थ-व्यवस्था : महत्वपूर्ण अङ्ग
३९. भूमि सुधारों में प्रगति
४०. पूंजी निर्माण की संभावनाएं
आदि आदि।


## पाठकों से

सम्पदा के इस अंक में एक फार्म कम जा रहा है। हम पाठकों को विश्वास दिलाते हैं कि इसकी पूर्ति विशेषांक में पूर्ण कर दी जायगी।

हम पिछले वर्षों में दो अंकों का संयुक्त विशेषांक प्रकाशित करते थे। इस बार हम कोई अंक बन्द नहीं कर रहे हैं।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| सम्पादकीय | ४१७ | किसानों की आर्थिक स्थिति | ४३६ |
| औद्योगिक विकास में विदेशी पूंजी | ४२३ | कोलम्बो योजना | ४३८ |
| तीसरी पंचवर्षीय योजना के साधन | ४२५ | साम्यवादी देशों से व्यापार | ४३९ |
| राज्य व्यापार निगम और उसके क्षेत्र | ४२६ | अन्न-पूर्णा खेती | ४४० |
| स्वयं-स्फूर्त विकास योजना | ४२७ | यह खादी का ढंग नहीं है | ४४२ |
| अलोह धातुओं के स्थानापन्न | ४२८ | सोवियत संघ में बैंकिंग प्रणाली | ४४३ |
| पूंजीवाद का ऐतिहासिक विकास | ४२९ | नया साहित्य | ४४५ |
| तीसरी योजना में सामाजिक सेवाएँ | ४३१ | पौलैण्ड का राष्ट्रीय दिवस | ४४७ |
| भारतीय भोजन के पोषक तत्वों में वृद्धि | ४३३ | भारत में अस्पतालों की व्यवस्था | ४४९ |
| बैंक और सार्वजनिक उद्योग | ४३५ | मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएँ | ४५० |


सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

सहायक सम्पादक : देवीप्रसाद नौटियाल


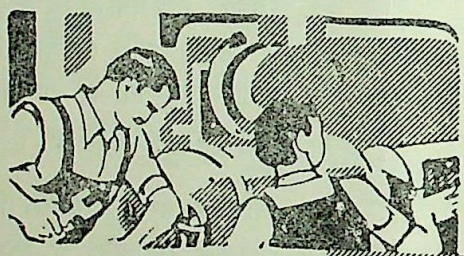

बैंकिंग

राष्ट्रीय सम्पदा को बढ़ाती है

पंजाब नैशनल बैंक राष्ट्र के उद्योग, कृषि और व्यापार की सेवा करता है।

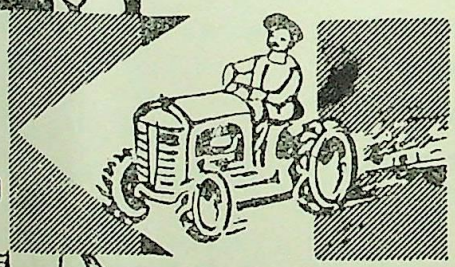

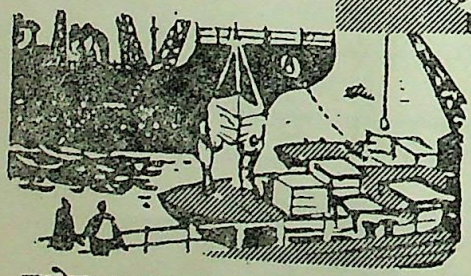

प्रत्येक प्रकार का बैंकिंग व्यापार होता है।

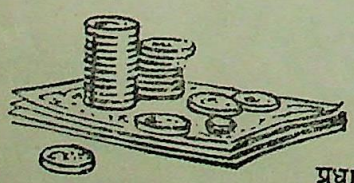

दि पंजाब नैशनल बैंक लि०

संस्थापित १८९५

प्रधान कार्यालय : नई दिल्ली


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पदा

वर्ष १०
अंक : ७
जुलाई १९६१

# बैंकों को कुछ परामर्श

रिजर्व बैंक ने हाल ही में एक रिपोर्ट प्रकाशित की है जिसमें बैंकों की १९६० में प्रवृति और प्रगति पर प्रकाश डाला है और कुछ परामर्श दिये हैं कि तीसरी पंचवर्षीय योजना में बैंकिंग के कारोबार को बढ़ाने के लिये क्या क्या करना चाहिये। रिपोर्ट में यह बताया गया है कि पिछले दस वर्षों में बैंकों की प्रदत्त पूंजी और सुरक्षित कोष में कोई वृद्धि नहीं हुई है, जबकि बैंकों ने पर्याप्त लाभ का अर्जन किया है। उनके डिपोजिटों के अनुपात में बैंकों की अपनी पूंजी का अनुपात इन दस वर्षों में ९ से ४ प्रतिशत तक गिर गया है। इसलिये रिजर्व बैंक ने उन्हें यह परामर्श दिया है कि वे अपने पूंजी कोष को वार्षिक लाभों में से बढ़ाने की कोशिश करें।

रिजर्व बैंक की यह सम्मति है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना में कारोबार के बढ़ने की जो आशा है, उसे देखते हुए बैंकिंग का कारोबार दुगुना अवश्य हो सकता है। देश की इस आवश्यकता को पूर्ण करने के लिये बैंकों को अभी से प्रयत्न करना चाहिये। यह काम किस तरह किया जाय, इस सम्बन्ध में भी रिजर्व बैंक ने तीन परामर्श दिये हैं—(१) बैंक अपनी नई से नई शाखायें खोलें। (२) डिपोजीटरों में विश्वास सम्पादन का अधिक प्रयत्न किया जाय। (३) अपने गाहकों की सेवाओं में अधिक कुशलता और अधिक विविधता का प्रयत्न किया जाय। रिजर्व बैंक को विश्वास है--कि इन परामर्श के पालन से बैंकों का कारोबार बढ़ सकेगा और वे तीसरी योजना की अवधि में बदली हुई आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकेंगे।

इसमें सन्देह नहीं कि यदि इन परामर्शों को क्रियान्वित किया जाय तो बैंकों का न केवल अपना कारोबार बढ़ेगा, बल्कि वे विकासशील उद्योगों के साधनों की पूर्ति में भी सहायक सिद्ध होंगे। किन्तु प्रश्न यह है कि क्या इन परामर्शों का बैंक पालन कर सकेंगे? आज छोटे बैंक नई शाखायें खोलने में समर्थ नहीं हैं। आज भी देश में १४०० ऐसे कस्बे और शहर हैं, जिनमें बैंकिंग की कोई सुविधा नहीं हैं। उनमें बड़े बैंक अपनी शाखायें खोल सकते हैं। यह जानते हुये भी बैंक अपनी शाखायें वहां नहीं खोलते। इसके कारण बैंक संचालकों की सम्मति में निम्नलिखत हैं:—

छोटे कस्बों में बैंक की शाखायें खोलने से प्रारंभिक वर्षों में नुकसान रहता है, बैंक एवार्ड के अनुसार बैंक कर्मचारियों को वेतन तो पर्याप्त देने पड़ते हैं, किन्तु नई शाखाओं में करोबार कम मिलता है। इनके स्वावलम्बी होने में अनेक वर्ष अपेक्षित हैं। इसलिये या तो स्टेट बैंक अपनी शाखायें वहां खोले अथवा कस्बों को प्रोत्साहन देने के लिये सरकार कुछ आर्थिक सहायता दे। सरकार सहायता की इस मांग को पूरा करेगी, इसमें सन्देह है। दूसरी तरफ यह भी सच है कि यदि बैंक कुछ घाटा भी उठाकर छोटे कस्बों में नई शाखायें खोलें तो सरकार को भी अप्रत्यक्ष रुप से कुछ न कुछ योगदान देना ही पड़े। अलाभकर या हानि उठाने वाली शाखाओं का परिणाम यह होगा कि बैंकों का वास्तविक लाभ कम हो जायगा और सरकार को भी उनसे आयकर अपेक्षाकृत कम मिलेगा। इस तरह नई



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाखायें खोलने का कुल खर्च सरकार को सहन करना पड़ेगा।

किन्तु हमें सन्देह है कि बैंक इस अप्रत्यक्ष सहयोग से कुछ प्रोत्साहन प्राप्त करेंगे। बैंकों को यह भी शिकायत है कि बैंक कर्मचारियों के संगठन कर्मचारियों को ईमानदारी से कार्य नहीं करने देंगे। कर्मचारी काम की अपेक्षा अपने 'ओवर टाइम वेतन' तथा अन्य सुविधाओं को अधिक महत्व देते हैं। यदि वे संगठग कर्मचारियों को अधिक लगन के साथ काम करने की प्रेरणा दें तो बैंकों की कार्य क्षमता बढ़ सकती है और वे नई शाखायें खोलने में अधिक प्रोत्साहन प्राप्त कर सकते हैं।

पिछले दस वर्षों में बैंकों के डिपोजिट ८७० करोड़ रुपये से बढ़कर १६५० करोड़ तक जा पहुँचे हैं। यदि बड़े बैंक ब्याज दर के सम्बन्ध में समझौता करके अधिकतम सीमा न बांध देते अथवा पलाई सेंट्रल बैंक जैसी दुर्घटना न होती तो डिपोजिट और भी अधिक बढ़ सकते थे। सरकार ने डिपोजिट के बीमे की योजना किसी रूप में स्वीकार करके डिपोजीटरों को अवश्य आश्वासन दिया है, किन्तु यह आश्वासन बहुत पर्याप्त नहीं है।

इस सब के बावजूद, यह निश्चित है कि तीसरी योजना में विशाल विनियोजन के परिणाम स्वरूप उद्योगों की वृद्धि होगी और बैंकों का कारोबार बढ़ने की सम्भावना भी अधिक होती जायगी। इसीलिये बैंकों का यह कर्तव्य है कि विकासशील अर्थ-व्यवस्था में वे योगदान में पीछे न रहे। इसके लिये यह भी आवश्यक है कि बैंक अपने कर्मचारियों के प्रशिक्षण में अधिक रुचि लें ताकि प्रशिक्षित कर्मचारी नई शाखाओं को चला सकें अथवा नई सेवाओं से अपने ग्राहकों को सन्तुष्ट कर सकें।

## विकास कार्यों में बाधाएं

कोई सप्ताह ऐसा नहीं जाता, जबकि कोई न कोई नई आर्थिक समस्या देश के सामने न आती हो। कभी विदेशी मुद्रा की दीर्घ कालीन समस्या के हल होने में एक नई अड़चन आ जाती है, तो कभी गन्ने का अत्याधिक उत्पादन और चीनी मिलों की उसे पेलने में अक्षमता किसानों के लिए एक समस्या उपस्थित कर देती है। इस वर्ष के प्रारम्भ में गुजरात में कपास के अधिक उत्पादन और कम बिक्री ने उत्पादकों और व्यापारियों के सामने एक संकट पैदा कर दिया। कभी कोयला रेल गाड़ियों के द्वारा ठीक समय और ठीक स्थान पर न पहुँचाया जाने के कारण उद्योग के लिए एक संकट बन जाता है। कारखाने बन्द हो जाते हैं, उत्पादन कम हो जाता है और इस कारण मजदूरों में बेकारी फैल जाती है। न इससें उद्योग संचालकों का कोई दोष होता है और न मजदूरों का। कभी औद्योगिक सम्बन्ध अशान्त हो जाते हैं तो कभी सरकार की उत्पादन कर नीति नई समस्या उत्पन्न कर देती है। छोटे और बड़े उद्योगों में पारस्परिक संघर्ष भी देश के विचारों का ध्यान अपनी ओर खींचता रहता है। बड़े उद्योग यदि उत्पादन वृद्धि और मितव्यय का राग अलापते हैं, तो छोटे उद्योग मानवता, न्याय, आर्थिक आय में समानता और रोजगार इत्यादि के तर्क उपस्थित करते हैं।

## जूट उद्योग में संकट

ऐसे ही विविध समस्या अथवा प्रश्नों में गत मास एक नया संकट पूर्ण प्रश्न आ जुड़ा है। बंगाल का जूट उद्योग इसलिये चिन्तित है कि जूट की खेती बहुत कम हुई है। जूट नहीं मिल रहा है, फलतः जूट मिल एसोसिएशन ने एक सप्ताह तक मिलें जून में बन्द कर दीं और एक सप्ताह जुलाई बन्द कर रहा है। इसका व्यापक परिणाम न केवल जूट के उत्पादन पर ही नहीं पड़ेगा बल्कि मजदूरों के रोजगार पर भी और जूट के निर्यात में कमी के कारण विदेशी मुद्रा पर भी। हम जानते हैं कि किसी समय जूट के कारण भारत करोड़ों रुपया प्रति वर्ष कमाता रहा। अब वह व्यापार शनैः शनैः कम होता जा रहा है। ऐसे समय जूट मिलों की बन्दी हमारे लिए और भी हानिकारक होगी। योजना आयोग का कर्तव्य है, कि इन पिछले वर्षों में एक एक करके जो आर्थिक समस्याएं उपस्थित हुई हैं। उनका संग्रह करके ऐसी व्यवस्था करें जिससे भविष्य में उनकी पुनरावृत्ति न हो, अथवा वे कम ही प्रभावकारी हों।

## पाकिस्तान की विदेशी पूंजी को रियायत

पाकिस्तान ने अपने औद्योगिक विकास तथा विदेशी पूंजी आकृष्ट करने के लिए अनेक प्रकार की रियायतें देने की घोषणा की है। पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिम के भागों में नये उद्योगों को आठ वर्ष तक के लिये आय कर से मुक्त कर दिया गया है। पश्चिमी सीमा प्रान्त तथा बटगांव के पर्वतीट प्रदेश में बिक्री कर समाप्त कर दिया गया है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी तरह निर्यात की जाने वाली सामग्री पर बिक्री कर हटा दिया गया है। मत्स्य और खनिज उद्योग को भी कुछ रियायतें दी गई हैं। इन सब सुविधाओं से पाकिस्तान को १'११ करोड़ रुपये का नुकसान होगा। इसकी क्षति को पूर्ण करने के लिये वित्त मंत्री ने कोई नया टैक्स नहीं लगाया। इनमें से कुछ सुविधाएं पहले भी दी जा चुकी हैं, और उनका सन्तोषजनक परिणाम हुआ है। अब भी आशा करनी चाहिए कि नए उद्योगों की स्थापना से आर्थिक क्षति भी पूर्ण हो जाएगी।

## लक्ष्य से कम उत्पादन

योजना आयोग ने तीसरी योजना के अन्तिम रूप में जहाँ देश की औद्योगिक प्रगति पर अच्छा प्रकाश डाला है, वहां हम अपने लक्ष्यों को किस सीमा तक पूर्ण नहीं कर सके यह भी प्रस्तुत किया है। लोहे के तीन नये सरकारी उद्योगों से १९६० तक २० लाख टन उत्पादन की आशा की गई थी, जबकि हम केवल छः लाख टन उत्पन्न कर सकें हैं। इसी तरह टैरिफ कमीशन ने टाटा के कारखाने से ४१'८ लाख टन की आशा की थी जबकि उस कारखाने में ४४'९ लाख टन से अधिक लोहा उत्पन्न नहीं हुआ। योजना आयोग ने खाद के कारखाने, भूपाल में भारी बिजली का कारखाना, तथा खनीज और इंजीनियरिंग उद्योग में विलम्ब पर भी चिन्ता प्रकट की है। सिन्दरी के कारखाने की विस्तार योजनाएं तथा बनारस का एल्युमीनियम कारखाना पूर्व निर्दिष्ट अवधि के समाप्त हो जाने के बाद भी पूर्ण नहीं हो पाये। अब इन उद्योगों को अनेक प्रारम्भिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। यह अनुमान किया गया था कि नाँगल नेवैली और राउरकेला में खाद के कारखाने दूसरी अवधि के समाप्त होने पर अच्छी तरह उत्पादन करने लगेंगे। किन्तु इनमें अब भी एक दो साल की देर है। भारी मशीनरी, खानो की मशीनरी, तथा फौरडरी और फोर्ज बनाने के कारखानों में भी काफी विलम्ब हो गया है। अनेक मामलों में तो सरकार स्थान का निर्णय करने में विलम्ब लगाती है, और कभी किसी कारखाने की योजनाओं का बारीकी से अध्ययन करने में। किन विदेशी कम्पनियों से समझौता किया जाय और किन शर्तों पर इस का निश्चय भी आवश्यक विलम्ब से होता है। योजना आयोग ने अपनी रिपोर्ट में यह भी शिकायत की है, कि पहले किसी कारखाने का जो अनुमानित व्यय पत्र बनाया जाता है, कुछ समय बाद खर्च उससे कहीं अधिक अधिक होता है। लोहे के तीन कारखानों का प्राथमिक अनुमान ४२५ करोड़ रुपये का था, किन्तु अन्तिम अनुमान ६२० करोड़ रुपये के बने। टाटा के कारखाने पर भी पूंजी गत व्यय प्राथमिक अनुमान से ३० करोड़ रुपये बढ़ गया। यह सब कमियां ऐसी हैं, जिन पर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए, ताकि तीसरी योजना की अवधि में उनसे बचा जा सके।

## राज्यों में उद्योग

तीसरी योजना के अंतर्गत राज्यों का उद्योग विकास क्रम अब अन्तिम रूप से तैयार हो गया है। इस में बारह नये औद्योगिक और तीन नये खनिज कार्यक्रम सम्मिलित हैं। पश्चिमी बंगाल व कश्मीर में एक-एक सूती मिल, मद्रास में स्टील प्लांट और रोलिंग मिल, आसाम में गैस वितरण, काश्मीर के कलाकोट में कोयले की खान, राजस्थान में लिगनाइट की खान, तथा मैसूर में लोहे और मैंगनीज की खान का विकास सम्मिलित हैं। प्रशासकीय क्षेत्रों में कुल १५२६ करोड़ रुपये के औद्योगिक विकास का आयोजन है, जिस में से ७६ करोड़ रुपया उपर्युक्त राज्यीय औद्योगिक विकास कार्यों में लगेगा। बहुत से चलतू विद्यमान उद्योगों का विकास भी किया जायेगा। इन पर भी करोड़ों रुपये का व्यय होगा। प्रश्न यह है कि इन बड़े उद्योगों में सूती मिलों को रखने की क्या आवश्यकता थी! काश्मीर और बंगाल में खद्दर को अधिक प्रोत्साहन देने की आवश्यकता थी। क्या हमारी योजना में ग्रामोद्योगों के विकास का कोई विशेष महत्व नहीं है?

एक दूसरे समाचार के अनुसार भारत सरकार ने सूती मिलों को यह सलाह दी है, कि वे मोटा कपड़ा बनाने की ओर अधिक ध्यान दें। मोटा कपड़ा बनाने में मिलों को कोई विशेष खर्च नहीं करना पड़ेगा। केवल रुई की अधिक आवश्यकता है, जो आज अधिक सुलभ होगी। पिछले कुछ समय से मिलें महीन कपड़ा बनाने की ओर अधिक ध्यान दे रही हैं। जनवरी १९५७ में कुल कपड़े का २१.५% मोटा कपड़ा मिलों में बनाया गया। नवम्बर १९६० में यह प्रतिशत गिरकर १५.५४% रह गया और दूसरी तरफ



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीडियम कपड़े का प्रतिशत ६६.१९ से बढ़कर ७४.६६ हो गया। इस का अर्थ यह है कि मोटे कपड़े की ओर मिलों का ध्यान कुछ कम होने लगा है। अब सरकार उन्हें फिर मोटा कपड़ा बनाने की ओर प्रेरित कर रही है।

खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अधिकारियों को इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। क्या खद्दर और हथकर्घे का कपड़ा मिलों के मोटे कपड़े का स्थान नहीं ले सकता? यदि खद्दर को टिकना है तो उसे मिलों की प्रतिस्पर्धा से बचाना होगा, न कि मिलों को और भी मोटा कपड़ा तैयार करने के लिए प्रेरित करना।

## घड़ियों का चोरी से आयात

'इकौनामिक टाइम्स' के सहकार्यकर्ता श्री जोज़फ वी. फर्टैलो के एक अनुमान के अनुसार १९६० में ३.३० करोड़ रुपये की घड़ियां चोरी से भारत में आईं। कस्टम वालों ने इसका दसवां भाग अर्थात् ३२ लाख रुपये की घड़ियां पकड़ीं। बम्बई, पूना, बेलगांव व बंगलौर में इन घड़ियों का ज्यादा व्यापार होता है। गोआ की समीपवर्ती २०० मील लम्बी सीमा तथा दमन के समीप ३० मील लम्बी सीमा इस चोर व्यापार के लिए सबसे अधिक सुविधा-जनक स्थल हैं। कहते हैं कि अनेक सम्पन्न लखपति इस चोर व्यापार में छिपे रूप से सहायता देते हैं और अपने कर्मचारियों को हर प्रकार के दण्ड से बचाने में सहायता देते हैं। इस चोर व्यापार को रोकने का एक ही उपाय है, कि घड़ियों का मुक्त व्यापार प्रारम्भ कर दिया जाय। इससे सरकार को आयात कर के रूप में काफी रुपया मिल सकेगा। एक समाचार के अनुसार भारत सरकार राज्य-व्यापार निगम द्वारा रूस से कुछ घड़ियां मंगवाने का निश्चय कर चुकी है। लेकिन घड़ी व्यापारियों का कहना यह है, कि रूसी घड़ियां सस्ती भले ही हों, पर वे बढ़िया किस्म की नहीं होतीं। फिर इन घड़ियों के आयात से भारत में खड़ा होने वाला घड़ी व्यवसाय प्रोत्साहित नहीं हो सकेगा।

## दूध भी नहीं बांट सके?

विदेशों से दुग्धचूर्ण मंगाना ठीक है या नहीं, अथवा यह चूर्ण स्वास्थ्य-कर भी होता है या नहीं, इस पर मतभेद हो सकता है। किन्तु इस चूर्ण के वितरण की व्यवस्था में त्रुटियों के सम्बन्ध में किसी को सन्देह नहीं हो सकता। भारत में गत वर्ष राष्ट्रसंघ की संस्था के द्वारा १५० लाख टन दुग्ध-चूर्ण मंगवाया गया था। इसका उद्देश्य राज्य सरकारों के द्वारा भिन्न-भिन्न राज्यों में स्कूलों के बच्चों को दूध बांटना था। किन्तु इस वर्ष भारत ने यह मात्रा घटा कर ११० लाख टन कर दी है। इसका कारण यह नहीं है कि भारत सरकार इसे कम पोषक मानने लगी है। इसका मुख्य कारण यह है कि राज्य सरकारों के पास उस दूध को बांटने की उचित व्यवस्था ही न थी और बांटे जाने से कुछ दूध बच गया। योजनाबद्ध विकास के दिनों में दुग्ध वितरण की यह दूषित व्यवस्था समझ में आने वाली चीज़ नहीं है।

## ब्रिटेन का कामन मार्केट में प्रवेश और भारत

ज्यों-ज्यों कामन मार्केट या यूरोपीय देशों की संयुक्त मंडी में ब्रिटेन के प्रवेश का अन्तिम निश्चय सन्निकट आता जाता है, भारत में इससे उत्पन्न होने वाले परिणामों पर अधिकाधिक चिन्ता प्रकट की जाने लगी है। भारत के प्रधान मंत्री नेहरू ने इसे चिन्ताजनक बताते हुए इसके सम्भावित परिणामों पर गम्भीर विचार करने की आवश्यकता प्रकट की है। अ. भा. वाणिज्य संघ ने भी ब्रिटेन के कामन मार्केट में प्रवष्टि होने पर चिन्ता प्रकट की है। उसने भारत-सरकार को यह सलाह दी है कि भारतीय निर्यात को कम न होने देने का यथा सम्भव प्रयत्न करना चाहिए। उसका कहना है कि कामन मार्केट के देशों में भारतीय माल के आयात पर अधिक तटकर लगे हुए हैं तथा पदार्थों के आयात की एक सीमा भी बांधी हुई है, यद्यपि भारत विश्व में व्यापार सम्बन्धी नियन्त्रणों पर परामर्श देने वाले संगठन के सम्मेलनों में इसका बहुत विरोध कर रहा है। ब्रिटेन भी कामन मार्केट में सम्मिलित हो गया तो भारत के लिए समस्या और कठिन हो जाएगी। अब तक भारत प्रति वर्ष ब्रिटेन को १७० से २०० करोड़ रुपए तक का माल भेजता रहा है और उसमें भी चाय, कपड़ा और जूट का भाग अधिक होता है। भारत ने गत वर्ष कुल १२० करोड़ रुपए की चाय का निर्यात किया, जिसमें से ७५ करोड़ रुपए की चाय सिर्फ ब्रिटेन को भेजी गई। इसी तरह भारत ने कुल ६० करोड़ रुपए के कपड़े का निर्यात किया, जिसमें से १६



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोड़ रुपए का माल ब्रिटेन को भेजा गया। इसी तरह जूट का भी करोड़ों रुपए का माल ब्रिटेन को जाता है।

जब ब्रिटेन कॉमन मार्केट में शामिल हो जाएगा, तो भारतीय माल का ब्रिटेन को निर्यात स्वभावतः बहुत कम हो जाएगा, क्योंकि कामन मार्केट के देशों को २५ से ४२ प्र० श० तटकरों की रियायत मिली हुई है। कॉमन मार्केट के देशों में भारतीय माल को ब्रिटिश माल से भी स्पर्धा करनी पड़ेगी। भारतीय माल को अधिक आयात-कर देना होगा और ब्रिटेन को कम। भारत पिछले कुछ वर्षों से इन्जीनियरिंग के पदार्थ बनाने की ओर विशेष ध्यान दे रहा है। उसके ये पदार्थ यूरोप के देशों में जाते हैं। ब्रिटेन का माल कम तट-कर होने के कारण वहां के बाजारों से भी भारतीय माल को निकाल फेंकेगा। इस तरह निर्यात व्यापार बढ़ाकर विदेशी मुद्रा अर्जित करने का भारत का स्वप्न अपूर्ण रह जायगा। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि तीसरी योजना का हमारा एक मुख्य आधार विदेशों को निर्यात है। पश्चिमी जर्मनी, फ्रांस और इटली के साथ भारतीय व्यापार का सन्तुलन पहले ही प्रतिकूल रहता है। अब और भी अधिक प्रतिकूल होने लगेगा। कुछ क्षेत्रों में यह सम्मति प्रकट की गई है, कि भारत को अपना विदेशी व्यापार रूस तथा अन्य साम्यवादी देशों के साथ बढ़ाना चाहिए। किन्तु कुछ अर्थशास्त्रियों का कहना है कि समाजवादी देश सन्तुलित व्यापार में विश्वास रखते हैं इसलिए उनसे यह आशा नहीं की जा सकती कि वे हमारा माल अधिक मात्रा में मंगवाएंगे। ब्रिटेन हम से १७०-२०० करोड़ रुपए का माल मंगवाता है, जबकि सब समाजवादी देश मिलकर भी ५० करोड़ रुपए से अधिक का माल नहीं मंगाते। रूस ने भारत से १९६० में केवल २९.९४ करोड़ रु० का माल मंगाया है।

राष्ट्रमण्डल के अन्य देश भी ब्रिटेन के कामन मार्केट में प्रवेश के पक्ष में नहीं है, पर ब्रिटिश उद्योग ब्रिटेन के कामन मार्केट में सम्मिलित हो जाने पर बहुत बल दे रहे हैं, क्योंकि यूरोप के साथ एकता उन्हें राजनीतिक व आर्थिक दृष्टि से अधिक लाभकर प्रतीत होती है। इस तरह ब्रिटेन इस समय असमंजस की स्थिति में है और यह असंभव नहीं कि वह इस प्रश्न पर अपना निर्णय फिलहाल स्थगित कर दे।

● ●

## औद्योगिक प्रगति

पिछले दिनों भारत सरकार के रक्षा मंत्री श्री कृष्ण मेनन ने यह घोषणा की थी कि भारत ने जैट विमान तैयार कर लिया है। आज जो पुर्जे विदेशी भी लगे हैं, कुछ समय में उनको भी हम बनाने योग्य हो जायेंगे। इसी सप्ताह सरकारी सूत्रों ने यह भी बताया कि भारत अब राष्ट्रीय प्रति रक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वयं शस्त्र बनाने की स्थिति की ओर बढ़ रहा है। इसलिए उसे अमेरिका से टैंक या अन्य शस्त्र सामग्री लेने की आवश्यकता नहीं। भारत सरकार की नीति प्रतिरक्षा सम्बन्धी सभी आवश्यक सामग्री यथा सम्भव देश के अन्दर बनाने की है। ये दोनों समाचार अत्यन्त शुभ हैं भारत औद्योगिक दृष्टि से तीव्र गति से बढ़ रहा है।

● ●

## पौण्ड पावने की स्थिति

पिछले दिनों में भारत का पौण्ड पावना ११३ से ८७ करोड़ रुपये तक गिर जाने के कारण बहुत चिन्ता प्रकट की जा रही हैं। वर्तमान कानून के अनुसार रिर्जव बैंक में २०० करोड़ रुपये तक की विदेशी मुद्रा रहनी चाहिए जिस में से ११५ करोड़ रुपया स्वर्णमुद्रा में हो, शेष विदेशी सेक्योरिटियों में। इस लिए यह सम्भावना की जा रही थी कि सरकार एक कानून बना कर बैंक के लिए न्यूनतम आवश्यक मात्रा को और भी कम कर देगी। किन्तु इससे हमारी साख पर कुछ न कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ा सकता था, इसलिए अब वह विचार छोड़ दिया गया प्रतीत होता है। अब सरकारी सूत्र स्थिति को बहुत निराशा-जनक नहीं बता रहे। रिर्जव बैंक में ७ जुलाई तक ११.५ करोड़ रुपये की स्वर्ण मुद्राएँ मौजूद थीं। नियम के अनुसार उसे ८५ करोड़ रु० की विदेशी मुद्रा भी रखनी चाहिए। इतने इससे अधिक उसके पास विदेशी मुद्रा है। फिर यदि वह चाहे तो विदेशी यात्राओं पर कुछ प्रतिबन्ध लगा कर विदेशी मुद्रा को अधिक रोक सकती है। भारत सरकार ने यह भी सूचित किया है, कि ३० जून तक इस वर्ष भारत ने जितना निर्यात किया है वह गत वर्ष के



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के निर्यात से ३० करोड़ रुपया अधिक है । सरकार को यह भी आशा है कि विदेशों से मिलने वाली सहायता की राशि शीघ्र ही भारत पहुँच जायेगी और तब विदेशी मुद्रा की समस्या उतनी विकट नहीं रहेगी। सम्भव है, सरकारी पक्ष का यह आश्वासन निराधार न हों, किन्तु इस से स्थिति की गम्भीरता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता विदेशी सहायता से ही यदि हम विदेशी मुद्रा की समस्या को दूर करना चाहते हैं तो यह कोई लाभकारी उपाय नहीं है। विदेशी सहायता तो आपत कालीन स्थिति में ही प्रयुक्त की जा सकती है । हमारा मुख्य प्रयत्न आयात को कम करने का होना चाहिये । इस प्रश्न पर हमें गम्भीरता से विचार करना चाहिये कि आज सैकड़ों हजारों युवक विद्यार्थी और नागरिक विदेशों में शिक्षा प्राप्त करने या यात्रा के लिए जाते हैं। यह कहाँ तक आवश्यक है ? ऊँचे विज्ञान की शिक्षा को छोड़कर अंग्रेजी, कानून, या दूसरे सामान्य विषयों में ज्ञान प्राप्ति के लिए विदेशों की यात्रा बहुत आवश्यक नहीं है और कम से कम भारत वर्तमान आर्थिक स्थिति में रुपया नहीं दे सकता । इसी तरह हजारों सरकारी कर्मचारी जिनमें अनेक मन्त्री भी किसी न किसी बहाने सम्मिलित हैं, विदेशों की सैर किया करते हैं। इन यात्राओं पर भी प्रतिबन्ध लगाना चहिए और विदेशों में स्थित भारतीय प्रतिनिधियों को ही यह काम सौंपना चाहिए अमीर बच्चों के लिए शौक की वस्तुओं के आयात पर भी प्रतिबन्ध लगाया जा सकता है। जब एक मध्यम वर्ग की श्रेणी की मां अपने बच्चे को अपने दूध से पाल सकती है तो फिर विदेशी भोजन तत्व अमीर बच्चों के लिए मंगाने की जरुरत नहीं है। बहुत ऐसा साहित्य भी हमारे देश में आता है जो हमारे ज्ञानवर्धन के लिए किसी तरह उपयोगी नहीं है । वह तो केवल कुछ फैशनेबल युवक और युवतियों का मनोरंजन और मार्ग-दर्शन करता है कि। किन्तु उसके लिए भारत को विदेशी मुद्रा कम नहीं लेनी पड़ती । इसलिए आश्वयक यह है कि जहाँ जहाँ हम विदेशी मुद्रा का पैसा बचा सकते हैं, वहाँ बचाना चाहिए । ● ●

## साख की रक्षा

जब हम यह पक्तियां लिख रहे हैं, हम पाठकों को घबराहट में नहीं डालना चाहते । भारत सरकार की आर्थिक नीति के संचालक उत्तरदायी व्यक्ति हैं। वे जानते हैं कि साखा बहुत बड़ी चीज है। इस लिए समय पर वे विदेशी ऋणों को चुकाने का महत्व अच्छी तरह जानते हैं। भारत सरकार ने अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष से १९५७ में २० करोड़ डालर ऋण लिया था । १९६० में ३० में से सवा सात करोड़ डालर वापस कर दिया था। १९५० में भी हमने १० करोड़ डालर ऋण लिया था, जिसे हमने ३ किस्तों में पूरा चुका दिया । यों उक्त कोष में हमारा ६० करोड़ डालर जमा है और नियमों के अनुसार हम १५ करोड़ डालर और भी ले सकते हैं। आशा करनी चाहिये कि भारत सरकार आगे भी अपनी साख को कायम रखेगी । ● ●

## देश भक्त व्यवसायी

श्री पुरुषोतम दास ठाकुर ४० वर्ष तक वाणिज्य व्यापार के क्षेत्र मंडल के नक्षत्र के रूप में रहे हैं । उद्योग-व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में किसी न किसी रूप में उनकी महत्वपूर्ण सेवा मिलती रही । ईस्ट इंडिया कॉटन एसोसियेशन, रिजर्व बैंक, ओरिंटल और फेडरेशन ऑफ इंडियन चेम्बर्स ऑफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्रीज—ये चार संस्थान ऐसे हैं जिनकी स्थापना का श्रेय आपको है। उनका जीवन किसी एकांकी बनिये की तरह नहीं रहा। देश की अर्थव्यवस्था व वाणिज्य-व्यापार आदि कारोबार के प्रमुख प्रवक्ता और संगठनकर्ता थे । वे विधान सभा के भीतर और बाहर भारतीय उद्योग-व्यापार के हित में आवाज बुलन्द करते-रहते थे। ब्रिटिश शासन के समय भी वे भारत के आर्थिक हितों के लिये दृढ़ देशभक्त के रूप में लड़ते रहे ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद टाटा और बिरला के साथ उन्होंने देश को योजनाबद्ध विकास की सर्वप्रथम एक योजना प्रस्तुत की । द्वितीय विश्वयुद्ध के दर्मियान देश में चल रही चोर बाजारी और मुनाफाखोरी को रोकने में वे सक्रिय रुप से मैदान में उतर आये । शिक्षा तथा समाज सुधार के कार्यों में भी वे अच्छी दिलचस्पी लेते थे। जब कभी जहां-कहीं देश में बाढ़ या अकाल पड़ता, वहीं वे मदद को दौड़ पड़ते। मानव समाज के प्रति उनकी सेवा असीम थी।

सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# औद्योगिक विकास में विदेशी पूंजी

जी० डी सोमानी

अनुन्नत और अविकसित देशों के औद्योगिक और आर्थिक विकास में विदेशी पूंजी का असाधारण महत्व है। यह सर्वविदित और असंदिग्ध तथ्य है। विभिन्न देशों का इतिहास भी इसी की पुष्टि करता है। स० रा० अमेरिका, कैनेडा, जर्मनी और जापान के इतिहास इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। साम्यवादी देशों में जनता की स्वतन्त्रता तथा क्रयशक्ति पर बड़ा बन्धन लगाकर वहाँ उपभोग्य वस्तुओं का उपभोग बहुत सीमित कर दिया जाता है। लोकतंत्रीय राज्यों में इस बल-प्रयोग का प्रयोग संभव नहीं है। इसलिए वहाँ विदेशी पूंजी का प्रयोग अनिवार्य हो गया है।

देश के औद्योगिक विकास के लिए जितने साधन आवश्यक हैं, वे सब देश में सुलभ नहीं हैं। आवश्यकता से बहुत कम साधन देश में मिल सकते हैं। इस अन्तर को पूर्ण करने के लिए विदेशी पूंजी अत्यन्त आवश्यक है। जब भारत में योजनाबद्ध विकास प्रारम्भ हुआ, तब राष्ट्रीय आय की केवल ५६% बचत होनी थी। पूँजी और निवेश का अनुपात ३ और १ है। इसलिए राष्ट्रीय आय में १॥, दो प्रतिशत से अधिक वृद्धि नहीं हो सकती, और जनसंख्या वृद्धि के साथ तो इसका महत्व सर्वथा शून्य हो जाता है।

जनसंख्या वृद्धि की अपेक्षा राष्ट्रीय आय को अधिक बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि हमारी विनियोजन की मात्रा अधिक बढ़े। क्योंकि देश की जनता का जीवन स्तर पहले ही बहुत गिरा हुआ है और बचत नहीं बढ़ सकती, विनियोजन की मात्रा बढ़ाने के लिए विदेशी पूँजी अनिवार्य हो जाती है। निम्नलिखित तालिका में बताया गया है कि विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में विदेशी पूँजी का कितना उपयोग हुआ है।

| | कुल व्यय (सरकारी क्षेत्र) | विदेशी पूंजी | विदेशी पूँजी का प्रतिशत (सरकारी क्षेत्र) |
|---|---|---|---|
| प्रथम पंचवर्षीय योजना | २०१२ | २९३ | १०.१ |
| द्वितीय पंचवर्षीय योजना | ४६०० | १००० | २१.७ |
| तृतीय पंचवर्षीय योजना | ७५०० | २२०० | २९.३ |

इस तालिका से यह मालूम होता है कि प्रति पंचवर्षीय योजना में विदेशी पूंजी का अनुपात बढ़ता गया है। विदेशी पूंजी की आवश्यकता हमें तब तक रहेंगी, जब तक साधनों की दृष्टि से देश स्वावलम्बी नहीं हो जाता। आर्थिक विकास के साथ-साथ हमारी बचत भी बढ़ती जायगी और विनियोजन के लिए आवश्यक राशि हम स्वयं उपलब्ध कर सकेंगे। तब विदेशी पूंजी की आवश्यकता बहुत कम रहेगी। विश्व बैंक की छः राष्ट्रों के साथ तीसरी योजना को प्रथम दो वर्षों में २२,८६० लाख डालर देने की घोषणा बहुत स्वागत योग्य है। इसे पश्चिमी देशों के सहकारिता के इतिहास में बहुत महत्व दिया जाएगा।

आज के औद्योगिक विकास में नित्य नई मशीनरी का प्रयोग आवश्यक हो गया है। यदि हम इसी तरह कुछ आन्तरिक साधन एकत्र भी कर लें तो भी विदेशी मुद्रा की आवश्यकता कम नहीं होगी, क्योंकि नई मशीनरी, कुछ उद्योगों के लिए कच्चा माल तथा विशेषज्ञ हमें विदेशों से ही मंगाने पड़ेंगे। और यह भी निश्चित है कि हमारा विदेशी व्यापार इस स्थिति में नहीं है कि हम उससे पर्याप्त विदेशी मुद्रा अर्जन कर सकें। अभी तो हम अपने साधारण आयात की आवश्यकता भी अपने विदेशी व्यापार से पूर्ण नहीं कर सकते।

यह अनुमान किया गया है कि हमें प्रति वर्ष करोड़ों रुपये का घाटा व्यापार में रहता है। हमारा निर्यात आगामी पाँच वर्षों में ६९० करोड़ रुपये वार्षिक से अधिक नहीं होगा। आयात के लिए विदेशी सहायता ६१४ करोड़ रुपया प्रति वर्ष मिलेगा। फिर भी हमें आयात का मूल्य चुकाने के लिए अन्य राशि का प्रबन्ध करना पड़ेगा।

प्रश्न यह है कि विदेशी पूंजी हम किस रूप में प्राप्त करें? क्या हम छोटी अवधि के लिए ऋण प्राप्त करें, मध्य या दीर्घ अवधि के लिए ऋण लें; निजी उद्योगों के लिए शेयर के रूप में विदेशी पूंजी प्राप्त करें अथवा विदेशी सरकारों से भारी ऋण लेकर उद्योगों में वितरित करें।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे महायुद्ध से पहले तक विदेशी पूंजीपति उद्योगों के शेयर खरीदते थे। किन्तु दूसरे महायुद्ध में यूरोप और सुदूर पूर्व के देशों में उद्योगों के भारी ध्वंस ने स्थिति बदल दी है। स० रा० अमेरिका ने पश्चिमी-यूरोप तथा अन्य देशों की ध्वस्त अर्थ व्यवस्था का पुनर्निर्माण करने की जिम्मेवारी अपने ऊपर ली। इसी समय अविकसित देशों के आर्थिक विकास का प्रश्न भी गम्भीरता से सामने आया और सरकारों के पारस्परिक सम्बन्ध का महत्व बढ़ गया। तभी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सहायता देने वाली संस्थाओं को जन्म मिला। ये संस्थाएं सरकारों के द्वारा अथवा व्यक्तिगत रूप से उद्योगों के विकास के लिए सहायता देने लगे। भारत में ही पिछले कुछ वर्षों में कितना विदेशी विनियोजन निजी उद्योगों के विकास के लिए हुआ है, यह निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट होगा—*

करोड़ रुपयों में

| वर्ष | कुल | निजी स्रोतों से | सरकारी स्रोतों से |
|---|---|---|---|
| १९४८ | २५५.८ | २५५.८ | — |
| १९५३ | ३९२.० | ३९२.० | — |
| १९५५ | ४५६.१ | ४५३.४ | २.७ |
| १९५६ | ४९३.० | ४७८.२ | १४.८ |
| १९५७ | ५४३.० | ४९६.१ | ४६.९ |
| १९५८ | ५७२.६ | ५००.४ | ७२.२ |
| १९५९ | ६१०.७ | ५११.२ | ९९.५ |

इस तालिका से स्पष्ट है कि १९५९ में १९४८ की अपेक्षा विदेशी पूंजी का विनियोजन १४० गुणा हो गया था। इस विदेशी पूंजी में भी मुख्य भाग ब्रिटेन और अमेरिका का है। यह इस तालिका से स्पष्ट है *

## पूंजी के प्रतिशत शेयर

| | |
|---|---|
| ब्रिटेन | ६५.५ |
| अमेरिका | १३.४ |
| अन्य देश | २१.१ |
| कुल | १००.० |

पिछले वर्षों में अमरीकी पूंजी कुछ अधिक आने लगी है। अमेरिका यूं तो अन्य देशों में भी पूंजी लगा रहा है, और वहाँ उसकी पूंजी भारत की अपेक्षा बहुत अधिक है, फिर भी अब भारत में उसकी पूंजी लगाने की रफ्तार ज्यादा तेजी से बढ़ रही है। यह निम्न तालिका से स्पष्ट होगा। १९५० की अपेक्षा १९५८ में विभिन्न देशों में उसने अपनी पूंजी निम्नलिखित अनुपात में बढ़ाई है :

| | |
|---|---|
| कैनेडा | १४९.४ |
| लैटिन अमेरिका | ९६.४० |
| फ्रांस | १४२.८६ |
| जर्मनी (पश्चिमी) | १८१.३७ |
| इटली | ३१९.०४ |
| ब्रिटेन | १४२.१७ |
| अफ्रीका | १७४.९१ |
| मध्यपूर्व | ८६.७९ |
| भारत | २०५.२६ |
| जापान | ८५७.८९ |
| इन्डोनेशिया | १५६.८९ |
| कुल विश्व | १२९.६८ |

इससे यह स्पष्ट है कि इटली और जापान को छोड़ कर भारत में पूंजी नियोजन में सबसे अधिक वृद्धि हुई है यद्यपि अब भी भारत में कुल अमेरिकन पूंजी अन्य देशों की अपेक्षा काफी कम है। फ्रांस, जर्मनी और ग्रेटब्रिटेन में १९५८ में उसकी पूंजी क्रमशः ५२७०, २६४०, २०५८० लाख डालर थी; तो भारत में केवल ११६० लाख, १९५९ और १९६० में अमेरिकन पूंजी और भी अधिक तेजी से बढ़ी है।

विदेशी उद्योग पति भारतीय उद्योगों को ऋण देने की अपेक्षा उनके शेयर लेना अधिक पसंद करते हैं। इस संयुक्त पूंजी से भारत में अनेक नए भारी उद्योग खुले हैं और खुल रहे हैं। इसके कारण न केवल हमें मशीनरी दीर्घकालीन अनुभव और विशेषज्ञ ही मिल जाते हैं, बल्कि हमारी विदेशी मुद्रा की समस्या भी हल हो जाती है। विदेशी उद्योगपति भी ब्याज की अपेक्षा अधिक दर पर मिलने वाला डिविडैंड पसन्द करते हैं। संयुक्त पूंजी से भारत को एक लाभ यह भी है, कि यदि किसी वर्ष उद्योग में कुछ हानि हो, तो भी भारत को वह सहन नहीं करनी पड़ती। फिर विदेशी उद्योगपति और विशेषज्ञ इस बात का और भी ध्यान रखते हैं, कि उद्योग का संचालन भली भांति हो और उद्योग पति भी विदेशी उद्योगपतियों की पूंजी के सहयोग की प्रवृत्ति को अधिक अच्छा समझते हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तीसरी पंचवर्षीय योजना के साधन

राष्ट्रीय विकास परिषद ने अपनी ३२ मई और १ जून की बैठक में निश्चय किया कि यद्यपि तीसरी पंचवर्षीय योजना के स्वीकृत कार्यक्रमों पर काफी व्यय आयेगा, परन्तु उपलब्ध वित्तीय साधनों के आधार पर वित्तीय सीमा ५५०० करोड़ रुपए रहेगी। तीसरी योजना में सम्मिलित ६,००० करोड़ रुपए से भी अधिक के कार्यक्रमों के लिए ५,००, करोड़ रुपए की व्यवस्था की गयी है। इस अन्तर को पूरा करने का भरसक प्रयत्न किया जायेगा। इस समस्या का समाधान बहुत कुछ देश में बचत के कार्यक्रम को गतिशील करने पर निर्भर करता है। केन्द्र तथा राज्यों के १९६१-६२ के आय-व्यय के ब्योरे के तथा नीचे की तालिका में बताये गये प्रत्येक मद के अन्तर्गत अधिक साधन उपलब्ध होने की गुंजाइश होने के कारण, दूसरी योजना की अवधि में केन्द्र तथा राज्य सरकारों द्वारा आय के साधनों को बढ़ाये जाने के बारे में काफी हद तक आशावादी दृष्टिकोण अपनाया जा सकता है। इस प्रकार दूसरी योजना के अंतर्गत इस अन्तर को कम करने के लिये बचत कार्यक्रम को अधिक सक्रिय तथा प्रभावशाली बनाया जायेगा।

२. नीचे तीसरी योजना में सार्वजनिक क्षेत्र के व्यय की वित्तीय व्यवस्था का विवरण दिया गया है। तुलनात्मक अध्ययन के लिये दूसरी योजना में प्रत्येक मुख्य वित्तीय साधन के योगदान को भी दिखाया गया है।

## वित्तीय साधन

(दूसरी तथा तीसरी योजना का प्राक्कलन)

(करोड़ रुपए)

| | दूसरी योजना के वर्तमान अनुमान | तीसरी योजना |
|---|---|---|
| १. चालू राजस्व से शेष राशि (अतिरिक्त करों को छोड़कर) | — ५० | ५५० |
| २. रेलों का योगदान | १५० | १०० |
| ३. अन्य सरकारी उद्योग-व्यवसायों से होने वाली बचत | — | ४५० |
| ४. जनता के लिये हुए ऋण (कुल) | ७८० | ८०० |
| ५. छोटी बचत (कुल) | ४०० | ६०० |
| ६. प्राविडेंट-फंड (कुल) | १७० | २६५ |
| ७. इस्पात समीकरण निधि | ३८ | १०५ |
| ८. पूंजी खाते में जमा बिविध रकमें | २२ | १७० |
| ९. १ से ८ तक का योगफल | १५१० | ३०४० |
| १०. नए कर, जिनमें सरकारी उद्योग व्यवसायों में अधिक लाभ करने के लिये किये जाने वाले उपाय शामिल हैं | १०५२ | १७१० |
| ११. विदेशी सहायता के रूप में बजट में | १०९० | २२०० |
| १२. घाटे की अर्थ-व्यवस्था | ९४८ | ५५० |
| योगफल | ४६०० | ७५०० |


## तृतीय पंचवर्षीय योजना अंक

### संभावित विषय सूची अन्यत्र पढ़िये।

यदि आप भारत के महान् आर्थिक प्रयत्नों का पूर्ण तुलनात्मक अध्ययन करना चाहते हैं, तो निम्नलिखित अंक भी मंगवाइये।

१. योजना अंक,

२. राष्ट्रीय विकास अंक,

३. योजना और राष्ट्रप्रगति अंक,




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राज्य व्यापार निगम और उसका क्षेत्र

अमीरचन्द टी. गुप्त

अन्धाधुन्ध आयात-निर्यात से ऐसा महसूस किया गया कि जिन वस्तुओं के आयात से भारत के लोगों की मुख्य जरूरतें तो पूरी नहीं होतीं परन्तु विलासिता की सामग्री देश को निगले जा रही है। विदेशों से अनाप-शनाप साहित्य सामग्री का निर्बाध आयात भी भारतीय अर्थ व्यवस्था के सुगठन की दृष्टि से हानिकर था। कई अन्य वस्तुयें ऐसी थीं जिनके व्यापार के लिये उपयुक्त बाजार की ढूंढ करना व्यापारी संस्थाओं की क्षमता से बाहर था। निर्यात वाली मुख्य वस्तुयें—मैंगनीज, कच्चा लोहा, अभरक आदि कच्ची धातुयें थीं। स्वदेशी उद्योगों के संरक्षणार्थ केन्द्रीय सरकार ने आयात पर कुछ प्रतिबन्ध लगाये और निर्यात व्यापार के प्रसारार्थ तथा विकास के लिये 'राज्य व्यापार निगम' की स्थापना की। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत का राजनैतिक महत्व तथा उसकी प्रतिष्ठा उत्तरोत्तर बढ़ती गई और विदेशी राष्ट्रों की सरकारें भारत से सभी प्रकार के सम्पर्क स्थापित करने की इच्छुक हो गईं। विदेशों की सरकारों से सम्बन्ध स्थापित हो जाने पर देश को ऐसी संस्था के स्थापना की आवश्यकता महसूस हुई जो सरकारी स्तर पर व्यापार समझौते आदि कर सकती। साम्यवादी व समाजवादी देशों में राज्य व्यापार निगम ही सर्व प्रमुख व्यापारिक संस्था है। उन देशों से निजी व्यापारी व निजी व्यापारी संस्थायें समझौता नहीं कर सकती थी, इसलिये उन देशों से भी व्यापारिक सम्पर्क स्थापित करने के लिये भी राज्य व्यापार निगम की स्थापना की आवश्यकताहुई।

वस्तुतः इन सभी समस्याओं के हल के लिये राज्य व्यापार निगम की स्थापना हुई। राज्य व्यापार निगम के द्वारा भारत को निश्चय ही बहुत कुछ लाभ हुआ तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार क्षेत्र में बहुत कुछ सफलता प्राप्त भी की। निगम के कार्य क्षेत्र में भी वृद्धि होती रही और उसे नई नई समस्याओं के निराकरण करने में भी निरंतर सफलता मिलती गई। निगम का कार्य क्षेत्र बढ़ जाने से निजी व्यापारी तथा निजी व्यापारी संस्थाओं को यह शंका होने लगी कि कहीं भारत के समूचे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर निगम हावी न हो जाय। इस भय के मारे उनकी यह शिकायत है कि निगम अब अपने कार्य क्षेत्र की पूर्व सीमा पार कर उनके हाथ में चल रहे रहे-सहे व्यापार को भी छीन लेना चाहता है। यह भय निर्मूल तो नहीं है क्योंकि 'समाजवादी समाज' की स्थापना में राष्ट्रीय व्यापार के सामूहिक हित पर अधिक बल दिया जा रहा है; परन्तु राष्ट्रीय व्यापार निगम पर अभी से अयोग्यता, तथा व्यर्थता की मोहर लगाना तर्क संगत तथा उचित नहीं प्रतीत होता।

आज के आर्थिक जगत में प्रतिस्पर्धा और प्रतियोगिता इतनी अधिक बढ़ गई है कि, उस स्थिति का सूक्ष्म अध्ययन किये बिना कुछ भी कह देना व्यर्थ की 'भुंझलाहट' है। निजी व्यापारियों की तरह केवल निजी मुनाफा कमाना ही सरकार का कर्तव्य नहीं है। उसे देश में अधिक उत्पादन को प्रोत्साहन देना है, किसानों और मजदूरों के हितों की रक्षा करना है, देश के जीवन स्तर को ऊंचा करना है तथा आगे भी विकास कार्यों को द्रुत-गति से आगे बढ़ाना है। हां यह बात जरूर है कि सरकारी निगम कोई तुर्त-फुर्त कदम नहीं उठा पाता, उसे किसी कार्य में कदम उठाने में इसलिये समय लग जाता है कि उसे समय-समय पर राष्ट्रीय सरकार से परामर्श लेना होता है।

कच्चा लोहा तथा मैंगनीज (वोर) के उत्पादन और व्यापार में घाना, ब्राजील और सोवियत-रूस बहुत बड़े प्रतिस्पर्धी हैं। इनसे प्रतियोगिता में आगे रहना अथवा इनसे अपने व्यपार पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़ने देना एक बड़ी समस्या है। लेकिन, फिर भी कुछ शिथिलता इस ओर अवश्य बरती गई। जब भारतीय मैंगनीज वोर (कच्चा मैंगनीज) की विदेशों में तीव्र मांग हुई, उसी समय सरकार ने अदूरदर्शितापूर्ण कदम उठाकर उस पर २५ रु० प्रति टन के हिसाब से निर्यात कर लगा दिया, यह समझ कर कि इतना भार तो यह व्यापार सहन कर ही लेगा। इसका नतीजा यह हुआ कि विदेशी व्यापारियों को इसमें कम मुनाफा दीखने लगा और उन्होंने अन्य देशों से सस्ते मूल्यों पर मैंगनीज वोर खरीदना शुरु कर दिया।

सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# स्वयं-स्फूर्त विकास योजना

तीसरी पंचवर्षीय योजना, भारत के आर्थिक विकास की एक निश्चयात्मक मंजिल होगी। आगामी पन्द्रह वर्षों में विकास के व्यापक कार्यक्रम का उद्देश्य है अर्थ-व्यवस्था का द्रुतगति से प्रसार जिससे न्यूनतम समय में देश की अर्थ-व्यवस्था स्वचालित हो जाय।

कृषि में हमारा लक्ष्य आगामी पन्द्रह वर्षों में इस प्रकार की विविधता लाना तथा उसे सक्षम बनाना है जिससे देश के सब लोगों के लिए सन्तुलित भोजन की व्यवस्था हो सके और इसके साथ-साथ व्यावसायिक फसलों का उत्पादन भी इतना बढ़ाया जा सके, जिससे भारत के उद्योगों की आवश्यकता पूरी होने के बाद भी निर्यात के लिये कुछ बच जाय।

उद्योगों के अन्तर्गत इस्पात, कोयला, बिजली, यंत्र निर्माण तथा रसायन जैसे मूल तथा बड़े उद्योगों के विकास पर बल दिया जायगा। भारत की अर्थ-व्यवस्था को व्यापक रूप से ध्यान में रखते हुए, यह अंदाजा लगाया गया है कि १९६०-६१ की कीमतों को आधार मानते हुए राष्ट्रीय आय बढ़कर दूसरी योजना के अन्त तक १४.-५०० करोड़ रुपये, तीसरी योजना के अन्त तक १९,००० करोड़ रुपये, चौथी योजना के अन्त तक २५,००० करोड़ रुपये और पांचवी योजना के अन्त तक ३३,००० करोड़ रुपए हो जानी चाहिए। इसी प्रकार प्रति व्यक्ति आय जो १९६०-६१ में ३३० रुपये होगी, बढ़कर सन् १९६६, १९७१ और १९७६ में क्रमशः ३८५ रुपये, ४५० रुपये तथा ५३० रुपये हो जानी चाहिए।

## चौथी तथा पांचवां योजना पर विनियोजन

यदि देश का इस गति से विकास करना है तो उसे चौथी तथा पांचवीं योजना पर क्रमशः १७,००० करोड़ रुपये और २५,००० करोड़ रुपये का विनियोजन करना होगा। आन्तरिक बचत भी पांचवी योजना के अन्त तक ८ प्रतिशत से बढ़ाकर १८.१९ प्रतिशत करनी होगी। कुल विनियोजन के अनुपात से बाहरी सहायता का भी उत्तरोत्तर ह्रास होगा। यह आशा की जाती है कि पांचवीं योजना के अंत तक देश की अर्थ-व्यवस्था इतनी मजबूत हो जायेगी जिससे सामान्य रूप से बाहर से आने वाली पूंजी के अलावा, बिना बाहरी सहायता के देश के विकास में संतोषप्रद प्रगति होती रहेगी। ● ●

---

आज मैंगनीज वोर और फेरो-मैंगनीज का 'बारटर डील' के आधार पर संयुक्त राज्य अमेरिका से व्यापार होता है। इस व्यापार की अवधि अब कम रह गई है और यदि नया समझौता नहीं हुआ तो इसका निर्यात व्यापार नहीं हो पायेगा। मैंगनीज वोर के खान मालिकों से राज्य व्यापार निगम जिस भाव पर मैंगनीज खरीदता है, वह निर्यात भाव से अधिक है। इस कठिनाई को दूर करने के लिये अपने ऊंचे मूल्यों के मैंगनीज के बदले में राज्य व्यापार निगम आयात की वस्तुओं के भी ऊंचे मूल्य अदा करता है। सरसरी तौर पर देखने में तो ऐसा लगता है कि जैसे हम फायदे में हों परन्तु वास्तविकता यह है कि बदले में जिन आयातित वस्तुओं की हम ऊंची कीमतें अदा करते हैं, साधारण रूप से आयातित उन्हीं वस्तुओं की कीमतें हमको उनसे कम देनी पड़ती है। इसप्रकार कीमतों के अन्तर जान लेने पर हमें घाटे का पता चलता है। देश के अधिकांश फैरोमैंगनीज की मात्रा को बारटर डील के अन्तर्गत संयुक्त राज्य अमेरिका को निर्यात के लिये सुरक्षित रखा जा रहा है और बहुत कम निजी व्यापार के हाथ में है। ऐसा भी समय आ सकता है जब हमें इसके लिये बाजार न मिले; क्योंकि दूसरे देशों से भी मैंगनीज वोर का बड़े पैमाने पर व्यापार होता है। एक यह सुझाव दिया गया है कि फेरो मैंगनीज को देश के अन्दर ही ऊंची दरों पर बेचा जाय जिससे सन्तुलन बना रहे। इससे देश को कोई लाभ नहीं हो सकता।

अच्छा यह होगा कि जिस वस्तु के व्यापार में सरकार मुनाफे की गुंजाइश नहीं देखती उसे 'निजी क्षेत्र' को सौंप देना चाहिये।

(लेखक के अंग्रेजी में लेख का भावानुवाद)

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अलौह धातुओं के स्थानापन्न

ले० जी० अलेक्जान्द्रोव

तांबा आदि अलौह धातुओं का बढ़ा हुआ प्रयोग इन धातुओं के अधिक दुर्लभ होने के कारण एक विकट समस्या बन गया है। इस समस्या को रूस ने वैकल्पिक प्रयोगों द्वारा हल करने की चेष्टा की। लेख में इसका संक्षिप्त परिचय है।

कांसे के स्थान पर लकड़ी काम में आने लगी है। तांबे की जगह अलुमीनियम का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल हो रहा है और प्लास्टिक की वस्तुएँ अलौह धातुओं का स्थान लेती जा रही है। सोवियत संघ आर्थिक सफलताओं की प्रदर्शनी है। एक विशाल मंडप में प्रदर्शित प्रत्येक वस्तु इस बात की साक्षी है कि अलौह धातुओं की बचत करने और उनके स्थान पर काम में लायी जा सकने वाली अन्य वस्तुओं का पता लगाने में कितनी अधिक सफलता प्राप्त कर ली गई है।

## तांबे के स्थान पर अलुमीनियम

किसी ऐसी रेलवे लाइन को ही लीजिए जिस पर गाड़ियां बिजली से चलती हों। यदि उस पर गाड़ियाँ चलाने के लिए डी-सी बिजली से काम लिया जाता हो तो उसकी कैटनरी की, जिसके बिना उस पर गाड़ियां चल ही नहीं सकेंगी, प्रत्येक किलोमीटर का वजन १०६० किलोग्राम होगा। ट्राली के तार भी तांबे अथवा विशेष प्रकार के कटाव वाले तांबा-कैडियम से बने होते हैं। इस प्रकार के एक किलोमीटर लम्बे तार का वजन ८९० किलोग्राम होता है। इसमें एक किलोमीटर कैटिनरी को लटकाने के के लिए लगाये जाने वाले पीतल के लगभग ३०० हैंगरों का वजन जोड़ दीजिए। यह ३० किलोग्राम होता है। सोवियत संघ में जिन हजारों किलोमीटर रेलवे लाइनों पर बिजली से रेलगाड़ियां चलाने की योजना बनाई गयी है। है उसके लिए सिर्फ तांबे का ही वजन हजारों टन हो जायगा।

लेकिन अब तांबे के स्थान पर दूसरी ऐसी वस्तुओं का इस्तेमाल आसान हो गया है जिनके गुण तांबे से मिलते-जुलते हैं। इस प्रदर्शनी में ऐसी ही एक कैटिनरी दिखायी गयी है जो कई 'कोर' वाले इस्पात और अलुमीनियम के तार से बनी है और जिसे तांबे वाले कैटिनरी के स्थान पर लगाना सम्भव है। इससे ट्राली वाले प्रत्येक किलोमीटर तार पर ३६० किलोग्राम तांबे की बचत हो सकेगी। इनके अलावा पीतल के हैंगरों और ऊपर लगाये जाने वाले अन्य जुगाड़ों के स्थान पर अलुमीनियम और प्लास्टिक का इस्तेमाल करने से जो धातु बचेगी वह अलग होगी।

इस प्रदर्शनी से इस बात का अन्दाजा भी हो जाता है कि बिजली की मीटरों, जमीन के नीचे बिछाये जाने वाले तरों में, ट्रांसफार्मरों, रोशनी के लिए लगाये जाने वाले तारों और अन्य प्रकार के बिजली के सामान में तांबे के स्थान पर किस सीमा तक अलुमीनियम का इस्तेमाल किया जा सकता है। इस प्रदर्शनी में बहुत सी ऐसी वस्तुएं दिखाई गयी हैं जिन्हें इन धातुओं के स्थान पर काम में लाया जा सकता है और जिनसे काम लेने से भारी बचत कर सकना सम्भव है।

इन धातुओं के स्थान पर काम में लायी जा सकने वाली विश्वसनीय संश्लिष्ट ग्रेफाइट को ही लीजिए। इस प्रदर्शनी में ग्रेफाइटों प्लास्टिक्स के बने नलीदार स्प्रे की तरह के कन्डेन्सरों, संश्लिष्ट ग्रेफाइट के डुबाये जा सकने वाले 'हीटएक्सचैंच एलीमेंटों', और खराब न हो सकने वाले ताप-संवाही ग्रैफाइटों प्लास्टिक्स से बने सामान के रूप में, जो सभी सोवियत उद्योगों की नयी से नयी सफलताओं के प्रतीक हैं, इनका व्यापक रूप से प्रदर्शन किया गया है। बड़े परिमाण में अम्लों को ठंडा करने के लिए रसायन उद्योग में स्प्रे की तरह के जिन नलीदार कन्डेन्सरों से काम लिया जाता है वह अब तक मिश्रित धातु के इस्पात और अलौह धातुओं से बनते थे। इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित कन्डेन्सर का एक भी पुर्जा इन कीमती धातुओं से बना नहीं है। उनके स्थान पर ऐसे हाई-ग्रैफाइट प्लास्टिक से काम लिया गना है जो खराब नहीं हो सकता और बड़ा ही अच्छा ताप-संवाही है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पूंजीवाद का ऐतिहासिक विकास

श्री जवाहरलाल नेहरू

समाजवादी आधार पर समाज के पुनर्गठन की अनिवार्यता को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम उसके पहले के सामाजिक संगठन के आधार को समझें। मानव इतिहास के समाजवादी दौर के पूर्व संसार के सामाजिक गठन की प्रणाली पूंजीवाद है। प्रस्तुत लेख में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पूंजीवाद के ऐतिहासिक विकास को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। —संपादक

इतिहास की लम्बी परम्परा में सरकार की अलग-अलग शक्लें एक के बाद दूसरे की जगह लेती हुई नजर आती है, इतिहास हमें उत्पादन और संगठन के बदलते हुए आर्थिक स्वरूपों की जानकारी भी हासिल कराता है। इन दोनों में सामंजस्य है और वह एक दूसरे की शक्ल बनाते और एक दूसरे पर असर डालते हैं। जब आर्थिक तब्दीलियां तेजी से आगे बढ़ती हैं और सरकार की शक्ल ज्यों की त्यों कायम रहती है, तो एक दरार पड़ जाती है, जिसका भराव अचानक किसी तबदीली से होता है। उसे क्रान्ति कहते हैं।

## पूंजीवाद : उसकी परिभाषा

पूंजीवाद शब्द का इस्तेमाल केवल एक ही अर्थ में हो सकता है। यह वह आर्थिक व्यवस्था है, जो लगभग डेढ़ सदी पहिले इंगलैंड की औद्योगिक क्रान्ति के बाद पनपी। इसका मतलब औद्योगिक पूंजीवाद है। जी० डी० एच० कोल की नई परिभाषा के अनुसार पूंजीवाद का मतलब है व्यक्तिगत मुनाफे के लिए उत्पादन की ऐसी विकसित व्यवस्था, जिसमें उत्पादन के साधनों पर निजी मिल्कियत रहती है। हालांकि व्यक्तिगत पूंजीपति अपने द्वारा उत्पादित अलग-अलग चीजों को सस्ता करने के लिए अक्सर रास्ते ढूंढ़ता है, पर बुनियादी तौर पर इस व्यवस्था से समाज में अभाव ही रहता है, प्रचुरता नहीं। चूंकि पूंजीपति के सामने उत्पादन का उद्देश्य मुनाफा कमाना ही होता है, इसलिए वह तन्ख्वाह को कीमत की शक्ल में देखता है और जहां तक मुमकिन हो, वह उसे कम से कम रखने की कोशिश करता है। इस सब का फल यह होता है कि जनता की क्रय-शक्ति कम होती जाती है।

## सारा संसार एक बाजार

हम देखते हैं कि उत्तरी-पूर्वी यूरोप में अधिनायकवाद और सामंतवाद की जगह मौजूदा पूंजीवादी व्यवस्था आती गई। जिसका नतीजा बड़े पैमाने पर उत्पादन और प्रतियोगिता हुआ। पुरानी छोटी आराजियां खत्म होती गईं नई, खेतिहर मजदूरों और किसानों पर से सामन्ती पाबन्दियां हटती गईं और साथ ही किसान अपनी छोटी-छोटी जमीनों से भी बेदखल होने लगे। बड़ी तादाद में भूमिहीन लोग बेरोजगार हो गये और अपने जीवन निर्वाह के लिए उनके पास कोई साधन नहीं रह गया। इस तरह जमीन और जायदाद रहित सर्वहारा वर्ग बन गया है। इसके साथ ही सामन्तवादी युग के सीमित बाजारों की पाबन्दियां खत्म होती गईं और उसकी जगह खुला बाजार सामने आगया है। अन्ततः सारे संसार का एक बाजार हो गया, पूंजीवाद की खास विशेषता है।

> पूंजीवाद का एक आधार भूमिहीन सर्वहारा वर्ग है, जिसे कारखानों में तन्ख्वाह देकर मजदूरी दी जा सके, और दूसरा आधार खुला बाजार है, जहां मशीन से बना हुआ सामान बेचा जा सके। पूंजीवाद तेजी से बढ़ता है और सारी दुनिया में फैल जाता है उत्पादन करने वाले मुल्कों में यह सक्रिय और जीवित पूंजी-बना है उपनिवेशों और माल खपाने वाले देशों में वह पश्चिम के मशीनी उद्योगों से बनी हुई चीजों की निष्क्रिय खपत थी। उत्तरी-पश्चिमी यूरोप और कुछ बाद में उत्तरी अमेरिका ने दुनिया के साधनों का फायदा लेना शुरू किया। उन्होंने एशिया, अफ्रीका, पूर्वी यूरोप और दक्षिणी अमेरिका का शोषण किया। उन्होंने दुनिया की दौलत को बेशुमार बढ़ाया, पर यह दौलत ज्यादातर कुछेक राष्ट्रों और कुछ लोगों के पास ही इकट्ठी हुई।

## भारतके शोषणसे ब्रिटेन के मजदूर सन्तुष्ट

पूंजीवाद के इस विकास में इंगलैंड के लिए भारत पर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार का खास महत्व था। शुरूआत में भारत के सोने ने इंगलैंड के औद्योगीकरण को बढ़ाने में काफी मदद की। इसके बाद इंगलैंड के कारखानों की मांग को पूरा करने के लिए भारत कच्चे माल का बड़ा उत्पादक और वहां के माल को खपाने के लिए बड़ा बाजार बन गया। दौलत इकट्ठा करने की जबरदस्त इच्छा के कारण इंगलैंड ने उद्योगों के खातिर खेती की उपेक्षा कर दी। इंगलैंड तो एक प्रकार से बड़ा शहर बन गया और भारत उससे जुड़ा हुआ ग्रामीण इलाका।

कुछ लोगों के हाथों में दौलत इकट्ठी होती चली गई, पर भारत और कुछ दूसरे देशों के शोषण से इंगलैंड के पास इतनी दौलत पहुँची कि उसमें से कुछ मज़दूर वर्ग के हाथों में भी पहुँची, जिससे उनके रहन-सहन का ढंग ऊंचा उठा। मज़दूरों के आन्दोलनों को पूंजीवादी मालिकों ने कुछ रियायतें देकर शान्त किया और उस पर काबू पा लिया। वे लोग बड़ी सरलता से ये रियायतें उस मुनाफे में से दे सके, जो उन्हें साम्राज्य के शोषण से मिलता था। तन्ख्वाहें बढ़ीं, काम के घंटे कम हुए और मज़दूरों के लिए बीमा तथा कुछ दूसरी कल्याण-योजनाएं लागू की गईं। इस तरह इंगलैंड की आम खुशहाली ने मज़दूरों के असन्तोष को रोक लिया।

## भारत में जमीन पर बोझ

भारत में जमीन पर बोझ लगातार बढ़ता ही गया। भारत तो विदेशों में बने मशीनी सामान को केवल खपाने वाला बन गया। उसके अपने कुटीर उद्योग कुछ तो जबरदस्ती से और कुछ आर्थिक कारणों से नष्ट हो गए। हालांकि हमारे मुल्क में औद्योगीकरण के काबिल सभी बातें और हालात मौजूदा थे, परन्तु इंगलैंड ने उन्हें प्रोत्साहित नहीं किया। दरअसल मशीनों पर टैक्स लगाकर उसने रोकने की कोशिश की। इसलिए जमीन पर बोझ बढ़ा और इसके साथ ही बेरोजगारी और गरीबी बढ़ी और भारत का तेजी से ग्रामीणीकरण होता गया।

परन्तु इतिहास और आर्थिक प्रक्रिया को ज्यादा समय तक नहीं रोका जा सकता। बावजूद इस बात के कि आम तौर पर गरीबी बढ़ रही थी, चन्द लोगों ने दौलत इकट्ठी कर ली और वे उसे लगाने के लिए क्षेत्र चाहते थे। इस तरह भारत में मशीनी उद्योग बढ़ा कुछ, तो भारतीय पूंजी से और उससे कहीं ज्यादा विदेशी पूंजी से। भारतीय पूंजी एक बड़ी हद तक विदेशी पूंजी के आधीन थी और, खास तौर पर वह विदेशी बैंक व्यवस्था से नियंत्रित की जा सकती थी। यह सभी जानते हैं कि विश्व युद्ध ने भारतीय उद्योगों को काफी आगे बढ़ाया। बाद में साम्राज्यवादी नीति की वजह से इंगलैंड ने भारतीय उद्योगों के प्रति अपनी नीति बदल दी और उसे प्रोत्साहित करना शुरू कर दिया। परन्तु ज्यादातर ऐसा विदेशी पूंजी से ही किया गया।

## अधिक उत्पादन और कम खपत : बढ़ती हुई बेरोजगारी

इसी बीच दो और प्रक्रियाएं भी चुपचाप परन्तु तेजी से काम कर रही थीं। एक तो बड़े ट्रस्ट, कर्टेलों और पूंजीवादी औद्योगिक फर्मों के आपस में जुड़ने से दौलत और औद्योगिक ताकत कुछ हाथों में इकट्ठी होती गई, दूसरे उत्पादन के तौर-तरीकों में लगातार सुधार हो रहा था, जिससे मशीनीकरण बढ़ा, उससे उत्पादन भी ज्यादा हुआ, साथ ही साथ मज़दूर की जगह मशीन ने ले ली और इससे बहुत ज्यादा बेरोजगारी बढ़ी। इसका नतीजा विचित्र हुआ। जबकि उद्योग इतिहास में सबसे ज्यादा पैमाने पर उत्पादन कर रहा था, उसी समय बहुत थोड़े लोग थे, जो उस सामान को खरीद सकते थे, क्योंकि ज्यादातर लोग बहुत गरीब थे। बेकारों की लम्बी भीड़ थी जो कुछ भी नहीं कमा रही थी। फिर खर्च करने का सवाल ही पैदा नहीं होता। जो कमा भी रहे थे उनमें से अधिकांश बहुत ही कम बचा पाते थे। उद्योगों के मालिकों के घबराये हुए दिमागों ने एक नई सचाई महसूस की। वह सचाई यह थी कि बड़े पैमाने के उत्पादन के लिए बड़े पैमाने पर खपाने वाले भी जरूरी हैं। यदि लोगों के पास धन नहीं है तो वे कैसे खरीदेंगे या खपायेंगे? और तब उत्पादन का क्या होगा? इससे उत्पादन रुकेगा या सीमित होगा और उद्योगों की गाड़ी मुश्किल से ही उत्पादन कर पायेगी? जब बेरोजगारी अधिक बढ़ती है तो खपत कम होती जाती है।

[ शेष पृष्ठ ४४८ पर ]



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तीसरी योजना में सामाजिक सेवाएँ

श्री गुलजारीलाल नन्दा

देश के विकास की जब बात होती है तब कुछ ऐसा समझ लिया जाता है कि इसमें वे बातें ही आती हैं जिनसे पैदावार ज्यादा हो और आमदनी बढ़े, जैसे सिंचाई और बिजली की योजनाएं या उद्योग और कारखानें। इसमें तो शक नहीं कि सब आवश्यक हैं और विकास का सबसे बड़ा अंग हैं। मगर यह भूलना नहीं चाहिए कि देश की उन्नति के लिए सामाजिक सेवाओं का महत्व कुछ कम नहीं है। इनमें मुख्य हैं—शिक्षा, स्वास्थ्य और रहने के मकान। इनका अगर अच्छी तरह से प्रबन्ध नहीं होता तो पैदावार बढ़ाने और उद्योगों को फैलाने में भी पूरी सफलता नहीं मिल सकती। कोई भी देश जिसमें ज्यादातर लोग अनपढ़ हैं, रोगी हैं, कमजोर हैं, वह आर्थिक प्रगति के मैदान में में पीछे रह जायगा और आगे नहीं बढ़ सकेगा। इसके अलावा यह भी समझने की बात है कि यह सब जद्दोजहद इंसान का जीवन सुखी बनाने के लिए ही तो है। और दूसरा बड़ा उद्देश्य तो यही है कि मनुष्य का अपना विकास हो, रहन-सहन सुधरे और शारीरिक और मानसिक उन्नति हो। इस ध्येय की पूर्ति का सबसे बड़ा साधन हैं हमारी ये सामाजिक सेवाएं।

## नियोजन का ध्येय

हम अपने देश में समाजवादी समाज की रचना करना चाहते हैं। इसका सबसे बड़ा हिस्सा है। हरेक व्यक्ति को अपने विकास के लिए बराबरी का मौका मिलना, शिक्षा हासिल करने के लिए और स्वास्थ्य अच्छा बनाने के लिए सुविधाएं और जरिये इस बराबरी की बुनियादी बातें हैं। इनसे समानता लाने में बड़ी सहायता मिल सकती है। इसी दृष्टि से तो समाज सेवाओं के कामों को हमने हाथ में लेने का फैसला किया। सेवाओं के क्षेत्र में इन दस वर्षों में हमने बहुत सा फासला तय किया और इस अर्से में शिक्षा, स्वास्थ्य के कामों में बहुत प्रगति हुई है। वैसे तो योजना बनने से पेश्तर कुछ काम इस क्षेत्र में होता था लेकिन वह इतना व्यापक नहीं था और न ही उसके लिए काफी खर्चे की व्यवस्था थी। पंचवर्षीय योजना के द्वारा यह काम ज्यादा बड़े पैमाने पर होने लगा और इन कामों के करने का ढंग भी कुछ सुधरा। पहली पंचवर्षीय योजना में कुल खर्च समाज सेवाओं पर ५३३ करोड़ रुपये हो गया। तीसरी योजना में समाज सेवाओं के कार्यक्रम पर १४०० करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है।

## शिक्षा

इन दस वर्षों में शिक्षा का प्रसार काफी हुआ। पहली योजना के शुरू होने के पहले साल शिक्षा पर ११४ करोड़ रुपये खर्च था, जो दूसरी योजना के आखिरी साल अर्थात् १९६०-६१ में बढ़कर ३१० करोड़ रुपये और तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त में अर्थात् १९६५-६६ के साल ४७५ करोड़ रुपये हो जायगा। यह तो हुआ खर्च। अब इससे जो नतीजे निकले उन पर एक नजर डालें। पहली योजना के शुरू में स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों की संख्या लगभग सवा दो करोड़ थी। आज यह बढ़कर साढ़े चार करोड़ तक पहुँच गई है और तीसरी योजना के अन्त में हमारे देश के स्कूलों और कालेजों में साढ़े छः करोड़ विद्यार्थी जाने लगेंगे। तीसरी योजना में ६ से ११ साल की उम्र के हर बच्चे के लिए शिक्षा की मुफ्त व्यवस्था हो जायगी। ११ से १४ साल वाले बच्चों के लिए भी शिक्षा की सुविधायें बहुत बढ़ाई जायेंगी और यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या तीसरी योजना के अन्त तक लगभग १३ लाख हो जायगी जो पहली योजना की अपेक्षा दुगुनी है।

शिक्षा के क्षेत्र में तीसरी योजना में एक खास स्कीम शुरू की जायगी, जिसका नाम है 'राष्ट्रीय वजीफा योजना'। इसमें योग्य छात्र-छात्राओं की बहुत बड़ी संख्या के लिए वजीफे देने का प्रबन्ध किया है ताकि वे अपनी पढ़ाई पूरी कर सकें और पैसे की कमी के कारण उन्हें पढ़ाई न छोड़नी पड़े। हम चाहते हैं कि तीसरी योजना के अन्त तक लगभग १०,००० स्कूलों में साइंस पढ़ाई जाने लगे। इसी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह इंजीनियरिंग की शिक्षा का सवाल है। अनुमान है कि तीसरी योजना में ५१,००० इंजीनियर और एक लाख डिप्लोमायाफ्ता लोगों की और जरूरत पड़ेगी। इसके लिए नये कालेज और पोलिटैकनीक खोले जायेंगे तथा मौजूदा कालेजों में विद्यार्थियों की तादाद बढ़ाई जायगी। इंजीनियरों के अलावा लगभग दो लाख कारीगर भी देश में तैयार किए जायेंगे।

इस तरह हम किस रफ्तार से प्रगति कर रहे हैं इसका अन्दाजा इससे हो जायगा कि पहली योजना में इंजीनियरिंग के डिग्री कालेजों में ४ हजार छात्र भर्ती होने थे जो तीसरी योजना में बढ़कर २० हजार हो जायेंगे। डिप्लोमा वाले छात्रों की संख्या ६ हजार से ४० हजार हो जायगी।

## स्वास्थ्य सेवाएं

सामाजिक सेवाओं में स्वास्थ्य का भी उतना ही महत्व है जितना शिक्षा का। पिछले दस साल में इस दिशा में जो प्रयत्न किये गये हैं उनके कुछ अच्छे नतीजे सामने आये हैं। मलेरिया जैसी बीमारी जिससे हमारे देश में लाखों आदमी मर जाते थे, लगभग समाप्त हो गई है। इसी तरह चेचक है।

तीसरी योजना में सबसे अधिक महत्व पीने के साफ पानी की व्यवस्था को दिया जायेगा। लक्ष्य यह होगा कि प्रत्येक गांव में पीने के साफ पानी की व्यवस्था हो जाये और शहरों में अधिक से अधिक लोगों को पीने का साफ पानी मिलने लगे, ताकि उनको बीमारियों का शिकार होने से बचाया जा सके।

तीसरी योजना में हैजा, चेचक, कोढ़ जैसी बीमारियों पर काबू पाने के उपाय किए जायेंगे। गांवों में चिकित्सा की सुविधाओं का जाल फैला दिया जायेगा और यह ख्याल है कि पांच हजार विकास खण्डों में से हरेक में एक चिकित्सा केन्द्र खोल दिया जायगा। जाहिर है कि इस काम के लिए बहुत से डाक्टरों, नर्सों और दाइयों की जरूरत पड़ेगी, इसलिए उनकी ट्रेनिंग का भी प्रबन्ध किया जायेगा। आयुर्वेद आदि देशी चिकित्सा की प्रणालियों को भी बढ़ावा दिया जायगा और तीसरी योजना में परिवार नियोजन का महत्वपूर्ण स्थान रहेगा।

## आवास की समस्या

मकानों की हालत के सम्बन्ध में पिछले दस वर्षों में सुधार हुआ है। गंदी बस्तियों में रहने वालों की संख्या बहुत ज्यादा है। शहरों में, खासकर औद्योगिक नगरों में जितनी आबादी बढ़ी। इसके कई कारण हैं। सीमेन्ट, इस्पात वगैरह मकान बनाने के सामान की तंगी रही जो अब औद्योगिक उत्पादन बढ़ने के फलस्वरूप दिन-ब-दिन दूर हो रही है। इसके अलावा शहरों में जमीन की हद से ज्यादा कीमत बढ़ जाने की वजह से भी लोगों को मकान बनाने में बड़ी कठिनाई रही। शहरों में जमीन वाजबी कीमत पर मिल सके इसके लिए कुछ कदम उठाये जायेंगे। सरकार की तरफ से पिछले दस वर्षों में मकान बनाने में सहायता देने के लिये ३३३ करोड़ रुपये की रकम दी गयी। तीसरी पंचवर्षीय योजना में इस काम के लिए ४०० करोड़ रुपये रखे गये हैं।

हमारे समाज में कुछ वर्ग ऐसे हैं जो सदियों से पिछड़े रहे हैं और उन्हें समाज में किसी भी रूप में समान दर्जा हासिल नहीं था। इनमें सबसे पहला नम्बर अनुसूचित जातियों और आदिम जातियों का है। हमारे विधान में जो समान न्याय का आश्वासन है, उसका लाभ सबसे पहले इन वर्गों को मिलना चाहिए। इसके लिये पहली दो योजनाओं में १३० करोड़ रुपये की विशेष व्यवस्था की गई। तीसरी पंचवर्षीय योजना में १४४ करोड़ रुपये रखा गया है। उद्देश्य यह है कि जल्दी से जल्दी ये वर्ग समाज अन्य वर्गों के बराबर आ जांय।

## जन सहयोग की आवश्यकता

यह भी ठीक है कि इस क्षेत्र में बहुत सी जरूरतें अभी पूरी नहीं हुई हैं, बहुत से लोगों को इनका लाभ नहीं हुआ और बहुत से लोगों को इनका लाभ नहीं पहुंच पा रहा है। तीसरी योजना में जो कार्यक्रम हैं उनको पूरा करने में १४०० करोड़ रुपया खर्च होगा। वस्तुतः हमारी समस्या तो बहुत बड़ी है और इसलिए मेरा सुझाव यह है कि देश में जैसे-जैसे लोगों की आमदनी बढ़े, उन्हें उसका कुछ भाग समाज सेवा के कार्यों में लगाना चाहिये। देश की हर समाज सेवी संस्था, परिवार, और व्यक्ति को इन कामों में हाथ बंटाना चाहिए।

सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांख्यिकी

# भारतीय भोजन के पोषक तत्वों में वृद्धि

निम्न तालिका से यह जानकारी भली प्रकार मिल जाती है कि भारतीय भोजन में पोषक तत्वों की कितनी अत्यधिक कमी है, तालिका में दिये देशों की तुलना में भारत सर्वाधिक निम्नस्तर पर है, भले ही भारतीय भोजन में प्रोटीन की मात्रा पाकिस्तानी भोजन से अधिक है किन्तु कैलरीज की मात्रा में हम उससे भी पिछड़ गये हैं। १९५१-५३ से १९५८-५९ तक केवल ५० कैलरीज की मात्रा की वृद्धि कोई उत्साहवर्द्धक नहीं कही जा सकती, फिर भी थोड़ा संतोष इसलिए होता है कि इन वर्षों में आखिर कुछ तो वृद्धि हुई। औसत भोजन में कैलरीज की मात्रा २८०० से ३०००। और प्रोटीन की मात्रा ८०-९० ग्राम होना आवश्यक है।

संसार के देशों में स्वास्थ्यकर प्रति व्यक्ति औसत खुराक की मात्रा निम्न तालिका में दी गई है :—

## प्रति व्यक्ति खुराक की मात्रा

| देश | वर्ष | प्रतिदिन कैलोरीज का उपयोग | प्रतिदिन प्रोटीन का उपयोग (ग्रामों में) |
|---|---|---|---|
| अर्जेंटाइना | १९५१-५३ | २९८० | ९० |
| | १९५७ | ३१०० | १२१ |
| आस्ट्रेलिया | १९५१-५३ | ३१७० | ९२ |
| | १९५८-५९ | ३२१० | ९२ |
| आस्ट्रिया | १९५१-५३ | २७०० | ०० |
| | १९५८-५९ | ३०८० | ८९ |
| बेलजियम | १९५१-५३ | २९५० | ८७ |
| | १९५८-५९ | २९३० | ८६ |
| ब्राजील | १९५१-५२ | २४१० | ६३ |
| | १९५७ | २५४० | ६५ |
| कनाडा | १९५१-५३ | ३०५० | ९३ |
| | १९५८-५९ | ३११० | ९५ |
| लंका | १९५२-५३ | १९९० | ४१ |
| | १९५८ | २०५० | ४२ |
| डेनमार्क | ०९५१-५३ | ३३४० | ९५ |
| | १९५८-५९ | ३३५० | ९२ |
| फ्रांस | १९५१-५३ | २८४० | ९३ |
| | १९५८-५९ | २९५० | ९६ |
| फिनलैंड | १९५१-५३ | ३०७० | ९६ |
| | १९५७-५० | २९५० | ९६ |
| प० जर्मनी | १९५१-५३ | २८७० | ७७ |
| | १९५९-६० | २८९० | ७८ |
| भारत | १९५१-५३ | १७५० | ४७ |
| | १९५७-५८ | १८०० | ४७ |
| इटली | १९५१-५३ | २४८० | ७२ |
| | १९५८-५९ | २६५० | ७६ |
| जापान | १९५०-५३ | १९६० | ५८ |
| | १९५८ | २२१० | ६७ |
| न्यूजीलैण्ड | १९५१-५३ | ३३५० | १०३ |
| | १९५८ | ३४३० | १०६ |
| पाकिस्तान | १९५१-५३ | २००० | ४७ |
| | १९५८ | १८१० | ४७ |
| स्पेन | १९५२-५३ | २५०० | ७० |
| | १९५८-५९ | २५५० | ७० |
| स्वीडन | १९५१-५३ | ३०६० | ९० |
| | १९५९-६० | २९२० | ८२ |
| टर्की | १९५१-५३ | २७३० | ८८ |
| | १९५८-५९ | २८५० | ९० |
| संयुक्त अरब ग० | १९५१-५३ | २४१० | ७० |
| | १९५७-५८ | २६४० | ७८ |
| इंगलैण्ड | १९५१-५३ | ३१०० | ८४ |
| | १९५८-५९ | ३२९० | ८६ |
| सं. रा. अमेरिका | १९५१-५३ | ३१५० | ८६ |
| | १९५८ | ३१०० | ९१ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विभिन्न वस्तुओं के थोक भाव

( आधार १९५३ = १०० )

| | १९५९-६० | १९६०-६१ |
|---|---|---|
| १— खाद्य पदार्थ | ११९.० | १२०.० |
| (अ) अनाज | १०४.१ | १०४.४ |
| (आ) दालें | ९३.५ | ९२.९ |
| (इ) फल तथा सब्जियां | १२७.८ | ११८.५ |
| (ई) दूध और घी | ११३.३ | ११६.० |
| (उ) खाद्य तेल | १३०.४ | १५०.३ |
| (ऊ) मछली, अण्डे और मांस | ११२.० | १२३.५ |
| (ए) चीनी और गुड़ | १४७.० | १३२.८ |
| (ऐ) अन्य | १६७.९ | १६७.८ |
| २— शराब और तम्बाकू | ९९.५ | १०९.९ |
| (अ) तम्बाकू | ९७.९ | १०८.३ |
| ३— ईन्धन शक्ति (पावर) रोशनी और चिकयाई वाले पदार्थ | ११६.५ | १२०.० |
| ४— औद्योगिक कच्चा माल | १२३.७ | १४५.४ |
| (अ) कपड़ा | ११४.६ | १५१.३ |
| (आ) तेल के बीज | १३४.५ | १४९.९ |
| (इ) खनिज | ९७.८ | ९७.४ |
| (ई) अन्य | १२२.७ | १२८.० |
| ५— निर्मित माल | १११.७ | १२३.९ |
| क—अन्तरवर्तीय माल | ११३.८ | १३०.० |
| ख—तैयार माल | १११.३ | १२२.८ |
| अ—टैक्सटाइल (वस्त्र) | १०७.८ | १२५.८ |
| (१) सूती वस्त्र | ११६.८ | १२८.१ |
| (२) जूट का सामान | ९०.३ | १३१.४ |
| (३) ऊनी वस्त्र | १०४.४ | १३१.४ |
| (४) रेशम और रेवन वस्त्र | ९६.४ | १०४.४ |
| (आ) धातु की वस्तुएं | १४४.४ | १४७.७ |
| (इ) रसायन | १०६.९ | १०४.४ |
| (ई) आइल केक | १४३.९ | १४१.३ |
| (उ) मशीदरी (संयत्र) और परिवहन की साज सज्जा का सामान | १०६.५ | १११.९ |
| (ऊ) अन्य | ११३.४ | ११६.१ |
| समस्त वस्तुएं | ११७.१ | १२४.८ |

# विदेशी सहायता

संसार के अविकसित राष्ट्रों को अन्तर्राष्ट्रीय सहायतायें प्रथम समूह प्रतिव्यक्ति १०० डालर से कम आय।

| राज्य और प्रति-व्यक्ति राष्ट्रीय आय | दस लाख डालरों में सहायता | जनसंख्या दस लाख में | प्रति व्यक्ति सहायता की प्राप्ति |
|---|---|---|---|
| अफगानिस्तान | ४०.१ | १३.० | ३.१ |
| बोलीविया | ५६.० | ३.४ | १६.५ |
| इथोपिया | १६.९ | २१.६ | ०.८ |
| हैटी | १२.१ | ३,४ | ३.६ |
| भारत | ६२२.७ | ३९७.४ | १.६ |
| बर्मा | २१.८ | २०.३ | १.१ |
| हिन्देशिया | २१०.६ | ८७.३ | २.४ |
| ट्रांसजोर्डन | १०८.९ | १.६ | ६८.१ |
| कोरिया (दक्षिणी) | ६४३.५ | २२.५ | २८.६ |
| लाइवेरिया | १६.१ | १.३ | १२.४ |
| नैपाल | ९.९ | ८.९ | १.१ |
| साऊदी अरब | १.४ | ६.० | —०.२ |
| सूडान | २६.५ | ११.० | २.४ |
| थाईलैंड (श्याम) | ६५.२ | २१.५ | ३.० |
| यमन | ०.२ | ४.५ | — |
| समह द्वितीय प्रति व्यक्ति १०० डालर से २०० डालर | | | |
| ब्राजील | १२८.२ | ६२.७ | २.० |
| लंका | ४२.४ | ९.४ | ४.५ |
| चीन (फारमूसा) | १७३.६ | ९.९ | १७.५ |
| डोमिनिकन गणतंत्र | ०.६ | २.८ | ०.२ |
| इक्वेडोर | १६.९ | ४.० | ४.२ |
| अल सेल्वेडोर | २.९ | २.४ | १.० |
| घाना | ४.६ | ४.८ | |

( शेष पृष्ठ ४३६ पर )





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बैंक और सार्वजनिक उद्योग

बी० एल० पंजाबी

राष्ट्रीय विकास परिषद् के अधिवेशनों में पार्षदों ने यह अनुभव किया कि 'समाजवादी समाज' की स्थापना के लिये यह आवश्यक है कि 'सार्वजनिक क्षेत्र' को और अधिक विस्तृत कर दिया जाय और सार्वजनिक क्षेत्र को हर दिशा में हर तरह सफल बनाने की भरपूर कोशिश की जाय, जिसके लिये प्राइवेट बैंकों से रुपया मिलना अनिवार्य रूप से आवश्यक समझा जाय।

इस निश्चय से 'निजी क्षेत्र' और कामर्शियल बैंकों में बेचैनी सी अनुभव की जा रही है कि यदि बैंकों का अधिकांश रुपया सार्वजनिक क्षेत्र की ओर खिंच गया तो निजी क्षेत्र के विकसित होने में भारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा अथवा निजी क्षेत्र की विकास की गति अवरुद्ध हो जायगी और धीरे-धीरे सार्वजनिक क्षेत्र निजी क्षेत्र पर हावी हो जायगा। दूसरी ओर प्रायवेट बैंकों को इस भय की आशंका हो गई कि कहीं सरकार अप्रत्यक्ष तरीकों से अथवा पिछवाड़े के दरवाजे से बैंकों के राष्ट्रीयकरण की ओर कदम तो नहीं रख रही है और अन्ततः एक दिन सरकार अपने कानूनों व नियमों के द्वारा इस तरह बांध तो नहीं देगी जैसे बैंक राष्ट्रीयकृत हो गये हों। उस स्थिति में बैंक अपने 'निजी हित संरक्षण' में सफल नहीं हो सकेंगे। राष्ट्रीय विकास परिषद की भावना को समझने में बैंकों को देर नहीं लगी। उन्हें यह अनुभव हो रहा है कि बैंकों पर नया अंकुश लगने पर उन्हें सार्वजनिक क्षेत्र को रुपया देने के लिये बाध्य किया जायगा और निजी क्षेत्र को पैसा देने पर जो लाभ की राशि उन्हें मिला करती थी वह सार्वजनिक क्षेत्र से नहीं मिलेगी। हालांकि बैंकों के राष्ट्रीयकरण का किसी प्रकार का सुझाव नहीं दिया गया, फिर भी बैंकों को 'एक स्थिर निश्चित नीति' अपनाने को कहा गया। 'निश्चित स्थिर नीति' का तात्पर्य यहां पर 'सार्वजनिक क्षेत्र' को अधिक ऋण देने की ओर लगाया गया है। लेकिन इस 'नई नीति' पर किस तरह से अमल हो, इस पर विस्तार से कुछ नहीं बताया गया। क्या इसका अर्थ यह नहीं कि बैंक बाध्य होकर अपना अधिकांश रुपया सार्वजनिक क्षेत्र को दें?

## सरल तरीका

सरकार को अपनी इच्छा के अनुकूल बैंकों की नीति बनाने के लिये 'बैंकिंग कम्पनीज एक्ट में आवश्यक संशोधन करने होंगे। परन्तु बैंक पहले ही व्यापार व्यवसाय और औद्योगिक क्षेत्र की मांगों को पूरा करने में कठिनाई अनुभव कर रहे हैं। और बैंकों को 'सार्वजनिक क्षेत्र' को ऋण देने को बाध्य करने का फल यह होगा कि देश की अर्थ व्यवस्था पर बुरा अहितकारी प्रभाव पड़ेबिना नहीं रहेगा।

यह कहना कि बैंक 'सार्वजनिक क्षेत्र' के निर्माण में कोई हाथ नहीं बटा रहे हैं, यह भ्रामक बात है, जबकि, वास्तव में स्थिति दूसरी है। बैंकों की १७६० करोड़ रुपये की कुल जमा पूंजी में से ५५० करोड़ रुपया याने ३० प्रतिशत की पूंजी सरकारी सिक्योरिटीज में लगायी गई है। इसके अतिक्ति १२८० करोड़ रुपये के बैंक क्रेडिट में से भारी भरकम राशि स्टेट बैंक को मुहैया की जा चुकी है जो सार्वजनिक क्षेत्र को ही दे दी गई है।

यही नहीं, बैंक बड़ी-बड़ी रकमें निजी क्षेत्र को देते हैं जो सरकार के बिलों के भुगतान हेतु फिर सरकार के ही पास चली जाती हैं। ये राशियां जमा पूंजी की १५ प्रतिशत होती हैं इसप्रकार प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष, दोनों प्रकार से लगभग ४५ प्रतिशत राशि सार्वजनिक क्षेत्र को पहले ही मिल रही हैं। निजी क्षेत्र को तथा निजी कामों को जो राशि दी जाती है, वह मुश्किल से ३५ प्रतिशत तक होती है।

निजी क्षेत्र को सहायता मिलने का स्रोत केवल बैंक हैं, जो काफी बड़ी ब्याजदर पर रुपया लेकर उद्योगों की स्थापना तथा विकास में खर्च करते हैं, जबकि 'सार्वजनिक क्षेत्र' को घाटे की अर्थ व्यवस्था का लाभ मिलता है और कम सूद पर ऋण भी। सरकार बैंकों को बहुत कम सूद देती है। जो निजी क्षेत्र की दर से अधा होती है। इस

( शेष पृष्ठ ४३७ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# किसानों की आर्थिक स्थिति

स्वाधीन होने के कुछ समय बाद भारत सरकार ने देश के ग्रामों और किसानों की आर्थिक स्थिति के अध्ययन के लिए एक समिति की स्थापना की थी। उसने १९५१-५२ के वर्ष में एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी। उसके महत्व को देखते हुए इस प्रकार की जांच को जारी रखने का निश्चय किया गया। १९५९ में इस जांच के लिए देश के भिन्न-भिन्न भागों में १२ निम्नलिखित जिलों को चुना गया :—

बर्दवान (पश्चिमी बंगाल) मुंगेर (बिहार), देवरिया—(उत्तर प्रदेश) जालन्धर (पंजाब), जयपुर (राजस्थान), सागर (मध्यप्रदेश), सोरठ (गुजरात), अकोला (महाराष्ट्र), निजामाबाद (आंध्रप्रदेश), बंगलौर (मैसूर) चिंगलपुर (मद्रास) और क्विलोन—(केरल)।

## भिन्न-भिन्न स्थितियां

इन सब जिलों की आर्थिक, भौगोलिक व सामाजिक परिस्थितियां भिन्न-भिन्न हैं। इसलिए इन जिलों की जांच प्रायः समस्त देश का प्रतिनिधित्व करेगी। इन जिलों में जनसंख्या, सिंचाई व्यवस्था, जोत का क्षेत्रफल, किसान का परिवार और ऋतु आदि सब अवस्थाएं भिन्न-भिन्न हैं। देवरिया में प्रति वर्गमील १००७ व्यक्ति हैं, तो सागर में केवल १६९। मुंगेर जिले की जनसंख्या करीब २६ लाख है तो सागर की ५.१३ लाख से अधिक नहीं है। बर्दवान के गांव में ७१ प्रतिशत खेती करते हैं, तो देवरिया में ९६ प्रतिशत।

उपर्युक्त जांच समिति ने बारह जिलों के किसानों की स्थिति का अध्ययन करते हुए यह मालूम किया है कि जैसे इन जिलों की भौगोलिक और सामाजिक स्थितियां भिन्न-भिन्न हैं, उसी तरह किसानों की आर्थिक स्थितियों में भी काफी अन्तर है। इन बारह जिलों में प्रत्येक किसान परिवार को औसतन जो भूमि-प्राप्त है उसकी आपस में किसी तरह की समानता नहीं है। देवरिया में प्रत्येक किसान परिवार के पास औसतन २.९ एकड़ जमीन है। क्विलोन में औसत अनुमानतः केवल १.८ एकड़ है। कुछ अन्य जिलों में यह औसत निम्नलिखित है—

बर्दवान ४.५ एकड़; मुंगेर ४.३ एकड़; जयपुर ९.५ एकड़; जालन्धर १२.५ एकड़; सागर १२.० एकड़; अकोला २३.३ एकड़ तथा सोरठ १९.४ एकड़।

## आर्थिक स्थिति

इसी तरह सिंचाई की दृष्टि से भी इन जिलों में कोई समानता नहीं है। सागर में सिर्फ एक प्रतिशत कृषि भूमि की सिंचाई की व्यवस्था है, जबकि सोरठ में ७ प्रतिशत। मद्रास का चिंगलपुट और पंजाब का जालन्धर इस दृष्टि से भाग्यशाली हैं। यहां क्रमशः ६८ और ७५ प्रतिशत भूमि की सिचाई होती है। सिंचाई में भी तालाब और कुओं का महत्वपूर्ण स्थान है। निजामाबाद जिले में नहरों का अग्रगण्य स्थान है। सोरठ, अकोला, जालन्धर, देवरिया आदि जिलों में कुओं की प्रधानता है। यह संभव है कि आगामी ५-१० वर्षों में नई नहरें सिंचाई में प्रमुख भाग अदा करने लगें।

कृषि पर अपने जीवन का आधार रखने वाले किसान परिवारों की आर्थिक स्थिति में भी बहुत अन्तर है। उक्त जांच समिति के अनुसार १० प्रतिशत किसान परिवार बहुत सम्पन्न हैं, २० प्रतिशत परिवार संपन्न हैं ४१ प्रतिशत मध्यम स्थिति के हैं और शेष प्रतिशत किसानों की आर्थिक स्थिति शोचनीय है। किसान परिवारों की सम्पत्ति का भी वर्गीकरण किया गया है। इस सम्पत्ति में जमीन, पशु, घर तथा उधार दी गई राशि में इन चार अंगों का समावेश है। इस गणना के अनुसार निजामाबाद जिले में एक औसत किसान परिवार की सम्पत्ति ३.२ हजार रुपया है, जबकि दूसरे जिलों में औसत सम्पत्ति निम्नलिखित है :—

जयपुर ३.३ हजार रु०; मुंगेर ६.९ हजार रुपये, सोरठ ८.४ हजार रु०, देवरिया ३.४ हजार रुपये; अकोला ६.५ हजार रुपए जालन्धर १९.५ हजार।

पंजाब का किसान इस दृष्टि से कधिक सम्पन्न है। सागर बंगलौर, चिंगलपुर तथा क्विलोन में यह सम्पत्ति ४ से ४॥ हजार रुपए है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसान परिवारों की आमदनी केवल खेती से ही नहीं होती वे कुछ जमीन लगान पर भी उठाते हैं, कुछ मजदूरी भी करते हैं। कुछ छोटे-मोटे धन्धे भी चलाते हैं—सब्जी-दूध आदि बेचते हैं तथा उनके सम्बन्धी गांव से बाहर शहरों में कमाते हैं और रुपये भेजते रहते हैं। सम्पन्न और गरीब किसानों की आय में एक से सौ तक का अन्तर पाया जाता है।

ये कुछ आंकड़े भारत के किसानों की आर्थिक स्थिति पर अच्छा प्रकाश डालते हैं। किसान की खेती से आमदनी आज से ५०-६० वर्ष पूर्व भी इससे अधिक नहीं होती होगी, किन्तु उस समय जहाँ उसके खर्च कम थे वहां उसे ग्रामोद्योगों द्वारा भी कुछ आय हो जाती थी जो उसके जीवन निर्वाह में महत्वपूर्ण स्थान रखती थी। घर की स्त्रियां चर्खा कातती थीं, आटा पीसती थी, धान काटती थीं और इसी तरह के अनेक धन्धों द्वारा न केवल अपनी आवश्यकता पूर्ण कर लेती थी, देश की नई आर्थिक व्यवस्था में यदि हम इसका ध्यान नहीं करेंगे तो कुछ समय बाद हम भारी धोखा खाएंगे।

## सड़कों के विकास के लिए ६ करोड़ डालर

अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक से सम्बद्ध संस्था अन्तर्राष्ट्रीय विकास असोसियेशन ने भारत को सड़कों के विकास के लिए ६ करोड़ डालर का ऋण दिया है। असोसियेशन की ओर से भारत को यह पहला ऋण है। संस्था ने अब तक कुल दो ऋण दिये हैं। इससे पहला ऋण ९० लाख डालर का सड़कों के विकास के लिए पिछले महीने हौंडूरास को दिया गया था।

ऋण की राशि मुख्यतः लगभग ६६० मील लम्बी उन सड़कों के निर्माण पर खर्च की जाएगी, जो भारत के कम विकसित हिस्सों में या बड़े कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों को जोड़ने के लिए या कलकत्ता और बम्बई के आस पास के क्षेत्रों में यातायात की भीड़ को कम करने के लिए बनाई जाएंगी। इसमें २९ बड़े पुल भी शामिल हैं।

( पृष्ठ ४३३ का शेष )

| | | | |
|---|---|---|---|
| ग्वाटेमाला | ३७.४ | ३.५ | १०.७ |
| हौंडूरास | १२.५ | १.८ | ६.९ |
| ईरान | १४२.२ | १९.७ | ७.२ |
| ईराक | ७.६ | ६.६ | १.२ |
| लीबिया | ६०.२ | १.२ | ५०.२ |
| निकारगुआ | १४.६ | १.४ | १०.४ |
| पेराग्वे | १३.६ | १.७ | ८.० |
| पेरू | १३३.० | १०.२ | १३.० |
| फिलीपीन | ८०.९ | २४.० | ३.४ |
| सं० अरब गणराज्य | ४९.२ | २९.१ | १.७ |
| **तृतीय समुह प्रति व्यक्ति २०० डालर से अधिक** | | | |
| अर्जेन्टाइना | १०५.६ | २०.२ | ५.२ |
| चिली | १०९.० | ७.३ | १४.९ |
| कोलम्बिया | १५३.९ | १३.५ | ११.४ |
| कोस्टारिका | २२.३ | १.१ | २०.३ |
| क्यूबा | १५.४ | ६.५ | २.४ |
| इजराइल (फिलस्तीन) | ९३.५ | २.० | ४६.८ |
| लेबनान | ४३.८ | १.६ | २७.४ |
| मेक्सिको | १२८.४ | ३२.३ | ४.० |
| पनामा | १०.१ | १.० | १०.१ |
| युरुग्वे | १०.४ | २.७ | ३.९ |
| वेनेजुयेन | ३.१ | ६.३ | ०.५ |

संयुक्तराष्ट्र संघ की स्टेटिस्टीकल के इयर बुक १९९० से।

( पृष्ठ ४३५ का शेष )

प्रकार बैंकों को सरकार सार्वजनिक क्षेत्र को ऋण देने में मुनाफे की भारी राशि से च्युत होना पड़ता है।

सरकार को तीसरी पंचवर्षीय योजना के लक्ष्यों की पूर्ति में निश्चय ही सामान्य जन की उपभोग्य वस्तुओं के मूल्य में मंहगाई से, अनुमानित धन राशि से अधिक की प्राप्ति की आवश्यकता पड़ेगी और उस स्थिति में बैंकों पर भारी अनुचित दबाव डाला जाना स्वाभाविक है, इसलिये बैंकों को समय रहते अपनी स्थिति का स्पष्टीकरण अभी से करना चाहिये।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कोलम्बो योजना और अन्य देशों की आर्थिक योजनाएं

कोलम्बो योजना के अनेक लाभों में सबसे बड़ा लाभ यह हुआ है कि दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में योजनाबद्ध विकास की बात घर कर गई है । १० वर्ष पूर्व इस क्षेत्र के देशों में योजनाबद्ध आर्थिक विकास एक नई और अजीब चीज समझी जाती थी । पर आज हर देश अपने विकास के लिए योजनाएं बना रखीं है । बहुत से देशों में आयोजन की कारगर विधियां निकाली गई हैं और शासन व्यवस्था सुधारी गई है ।

## पूंजी नियोजन

भारत अपनी तीसरी पंचवर्षीय योजना को हाथ में ले चुका है । तीसरी योजना का उद्देश्य राष्ट्रीय आय में प्रति-वर्ष ५-६ प्रतिशत वृद्धि करने का है । तीसरी योजना की अवधि में १०,२०० करोड़ रु० लगाने का विचार है । यह राशि पहली और दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं के खर्च के लगभग बराबर है । सरकार की ओर से ६,२०० करोड़ रु० की पूंजी लगाने की योजना के अलावा १,०५० करोड़ रु० चालू मदों पर खर्च होगा और इस प्रकार सरकारी क्षेत्र में ७,२५० करोड़ रु० खर्च करने का विचार है । तीसरी योजना में खेती के अलावा दूसरे धंधों में १ करोड़ से १ करोड़ १० लाख तक नौकरियां दिलाने का लक्ष्य है । इस प्रकार तीसरी योजना हर तरह से देश के आर्थिक विकास में खास महत्व रखती है यानी देश की अर्थ-व्यवस्था स्वावलम्बी हो जाएगी, ताकि आगे चलकर आर्थिक विकास तेजी से हो सके ।

## कम्बोदिया की योजना

कम्बोदिया की सरकार ने पहले अपने देश के लिए २ साल की योजना बनाई थी और १९६० के आरम्भ में उसने पहली पंचवर्षीय योजना का आरम्भ किया । इस योजना में अधिक ऊंचे लक्ष्य रखे गये हैं और योजना को कार्यान्वित करने के सारे शासन-तंत्र को सुधारा और बढ़ाया गया है । इस पंचवर्षीय योजना पर कम्बोदिया ८०० करोड़ रियल खर्च करेगा ।

अपनी पहली पंचवर्षीय योजना (१९५६-६०) पूरी कर लेने पर इंडोनेशिया इस वर्ष अपनी पहली सम्पूर्ण राष्ट्रीय विकास योजना आरम्भ कर रहा है । यह योजना ८ वर्ष की होगी ।

लाओस ने १९५८ में अपनी पंचवर्षीय योजना आरम्भ की थी । इस पर प्रति वर्ष १ करोड़ ४५ लाख अमरीकी डालर खर्च होता है । इसमें से ४० प्रतिशत समाज कल्याण-कारी कामों पर, ४० प्रतिशत परिवहन, संचार तथा निर्माण कार्यों पर और २० प्रतिशत खेती, उद्योगों और दूसरे कामों पर खर्च किया जा रहा है । लाओस में राष्ट्रीय पूंजी के अभाव में निजी और सरकारी क्षेत्रों में विदेशी पूंजी ही लगाई जा रही है । शिल्पियों के बारे में भी यही बात है ।

## दस वर्षीय योजना

लंका की आबादी प्रतिवर्ष ३ प्रतिशत बढ़ जाती है । अपनी इस बढ़ती हुई आबादी के लिए वहां की सरकार ने आर्थिक विकास की १० वर्षीय योजना (१९५९-६८) बनाई है । १९६१ से ६३ तक के तीन वर्षों के लिए काम की रूपरेखा तैयार की जा चुकी है ।

मलाया की पहली पंचवर्षीय योजना १९५६ से ६० तक की थी । इसमें रबड़ और कृषि उद्योग की उत्पादकता बढ़ाने, तरह-तरह के उद्योग खड़े करने और समाज सेवाओं को उन्नत करने का यत्न किया गया । मलाया की दूसरी योजना आजकल तैयार की जा रही है ।

नैपाल की पहली पंचवर्षीय योजना पूरी हो चुकी है और एक अन्य तीन वर्षीय योजना की जा रही है । दिसम्बर, १९५९ में उत्तरी बोर्नियो की १९५९ से १९६४ तक की योजना के लिए ७ करोड़ १० लाख मलायी डालर मंजूर किया गया था, जिसमें से २ करोड़ ८ लाख मलायी डालर सड़कों के लिए रखा गया था ।

## पाकिस्तान की योजना के लक्ष्य

जुलाई १९६० में पाकिस्तान की दूसरी पंचवर्षीय योजना

(शेष पृष्ठ ४५१ पर)





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# साम्यवादी देशों से व्यापार (एक अर्थशास्त्री की सूचनाएं)

भारत के एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो० श्री सी० एन० वकील ने एक लेख में साम्यवादी देशों के साथ बढ़ते हुए व्यापार पर एक विवेचनात्मक लेख लिखा है, उसका आशय यहां दिया जाता है। —सम्पादक

हमें विभिन्न देशों के साथ व्यापार करते हुए यह समझना चाहिये कि उन देशों की अर्थ व्यवस्था क्या है और उसमें हम अपने व्यापार को किस प्रकार खपा सकते हैं। हमें यह भी मालूम होना चाहिए कि साम्यवादी देशों में विदेशी व्यापार केवल सरकार ही कर सकती है। वह यह निश्चय करती है कि किस देश से कितना माल किस दर पर मंगाया जाय। देश की आर्थिक आवश्यकतों की दृष्टि से वही यह निश्चय करती है कि किस सामान की हमें पहले आवश्यकता है और किस की पीछे। सरकार ही यह निश्चय करती है कि किस वस्तु का हमें निर्यात करना है और कितनी मात्रा में।

दूसरी बात हमें यह स्मरण रखनी चाहिये कि साम्यवादी देश समूह स्वावलम्बी होने के लिए पूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं। इसका उद्देश्य यह है कि यथा संभव यह समूह स्वावलम्बी हो जाय। इसी उद्देश्य से परस्परिक अर्थ सहायता परिषद् का संगठन किया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि पहले साम्यवादी देश अपनी आवश्यकतायें एक दूसरे से पूरी करना चाहेंगे और फिर आवश्यकता होने पर दूसरे देशों के साथ व्यापार करेंगे। साम्यवादी देशों में उपभोग्य पदार्थों की मांग बढ़ती जा रही है और दूसरी ओर वे मशीनरी का निर्यात करने में भी समर्थ हो रहे हैं। इसलिए इस दिशा में परस्परिक व्यापार बढ़ सकता है।

हमें यह भी स्मरण रखना चाहिये कि अमेरिका आदि देश रूस और साम्यवादी देशों को वह पदार्थ भेजने को तैयार नहीं हैं, जिनका सामारिक दृष्टि से कोई महत्व है।

साम्यवादी देशों से व्यापारिक सम्बन्ध करते हुए हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि इन देशों में पदार्थों के मूल्य सरकार द्वारा नियत किये जाते हैं। वहां पदार्थों के मूल्य दुनिया के बाजारों को देखकर तय नहीं किये जाते, बल्कि सही खर्च के मूल्यांकन के रूप से तय होते हैं।

साम्यवादी देश दूसरे देशों से अधिकांश व्यापार पारस्परिक लेन-देन के आधार पर करते हैं और इसीलिए वे विदेशों के साथ बहुत भारी मात्रा में व्यापार नहीं कर सकते। अनेक देशों में उन्हें और विशेषकर रूस को अपना संचित स्वर्ण देकर भी माल खरीदना पड़ता है।

हमने बहुत बार यह सुना है कि साम्यवादी देश भारत को बड़े भारी परिमाण में जो सहायता दे रहे हैं, रुपये के रूप में उसकी वापसी चाहते हैं। इन देशों के साथ स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन या उससे सम्बद्ध सरकारी संस्थायें व्यापार करती हैं। रूस जो पदार्थ हमें देता है, उसका मूल्य रुपयों में दिया जाता है। भारतीय बैंक वह सारी राशि रूस के खाते में लिख लेता है, और दूसरी तरफ रूस भारत से मंगाये जानेवाले माल का मूल्य इसी खाते से चुकाता है। रूस निम्नलिखित रूप में भारत से रुपया वसूल करता है। १—भारत से माल मंगाकर, २—रूसी अधिकारियों और यात्रियों के यात्रा व्यय। ३—मेलों और प्रदर्शनियों में रूस की सरकार का खर्च। ४—राजदूतावास तथा सम्बद्ध कार्यालयों का वेतन आदि व्यय।

कभी-कभी रूस अपने रूबल को स्टर्लिंग की मुद्रा में भी परिवर्तित कर लेता है, जिससे रूसी अधिकारी ब्रिटेन आदि देशों में भी यात्रा कर सकते हैं तथा वहां रह सकते हैं।

साम्यवादी देशों के साथ व्यापार करने में कुछ कठिनतायें भी हैं। पहली कठिनता यह है कि पूँजीवादी देशों में उद्योगपति उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिये स्वतंत्र है, जबकि साम्यवादी देश पहले अपने देश की आवश्यकताओं पर ही ध्यान करते हैं। इसलिये इन देशों में निर्यात के लिये ही उत्पादन को प्रमुखता नहीं दी जाती। दूसरी कठिनता यह है कि सरकारी कारोबार में बहुत विलम्ब हो जाता है। आयातक देश की सरकार कोई निर्णय करने से पहले दस बार यह सोचती है कि कितना माल और किस दर पर मंगाया जाय, जो उनकी योजना से मेल खाता हो।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# अन्न-पूर्णा खेती

बनवारीलाल चौधरी

रूस और अमेरिका के फार्मों का स्वप्न देखने वाले विशेषज्ञ भारत भर में सूरतगढ़ सरीखे बड़े कृषि-क्षेत्र देखना चाहेंगे। वस्तुस्थिति का ज्ञान प्रयोगों द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। गत आठ-नौ वर्षों से निटाया (जिला होशंगाबाद) में इस तथ्य को जानने के लिये प्रयोगों, ग्राम-सेवा समिति, तरोंदा-निटाया के तत्वावधान में 'मित्र-मण्डल' और मध्य प्रदेश प्रदेश गांधी स्मारक निधि की सहायता से किये जा रहे हैं।

भारतीय कृषि की सही नीति संतुलित खेती है। इस दृष्टि अधिक खाद्य-तत्त्व-उत्पादन की होनी चाहिये, न कि अधिक रुपया कमाने की। उदाहरणार्थ, कोटगिरी में बहन मोरजरी साइक्स अपनी भूमि पर चाय लगाकर ज्यादा रुपया प्राप्त कर सकती हैं, पर वे काश्त कर रही हैं अनाज की, जो कि राष्ट्र के लिये आवश्यक है।

किसान की संतुलित भोजन की मांग पूरी करना उसकी खेती का ध्येय होना चाहिए। इसके अनुसार सन् १९५३ में पांच एकड़ कृषि-क्षेत्र की योजना बनाई गई थी। इतने रकबे की काश्त के लिए एक जोड़ी बैल आवश्यक थे, इस-लिए कृषि के सब यन्त्र बैल से चलने वाले रखे गये थे। तदनुसार सिंचाई के लिए रहट का उपयोग किया जाता था।

सन् '५९ में अखिल भारत सर्व सेवा संघ के सौजन्य से मुझे जापान की कृषि का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। इससे एक नई प्रेरणा और दृष्टि प्राप्त हुई। पांच एकड़ रकबा भी मुझे अधिक जँचा। इतने बड़े रकबे की सघन खेती के लिए काफी संख्या में मजदूर चाहिए। पांच-सात मजदूरों में हो रहे वर्तमान प्रयोगों का भी करीब-करीब यही अनुभव है।

इससे बचने के लिए और परिवार की शक्ति के आधार पर खेती करने के लिए एक डेढ़ एकड़ रकबा पर्याप्त होगा। इसके अनुसार लगभग १.२५ एकड़ क्षेत्र की एक अन्न-पूर्णा कृषि-योजना बनाई। सिंचाई के लिये रहट के बजाय बिजली का पम्प लगाया। बैलों की आवश्यकता नहीं रही। उनके स्थान पर परिवार की दूध की मांग पूरी करने के लिये दो गायें रखी। इस रकबे में उगे नींदन और घास एवं उत्पादित भूसा इनके लिये पर्याप्त हुआ।

क्षेत्र की पृष्ठ-भूमि की रूपरेखा एक उद्यान के सदृश बनाई गई। देखने से ही प्रथम प्रभाव ऐसा पड़े कि मानो किसी पार्क में प्रवेश कर रहे हैं। पुष्प-वृक्ष, द्रुम-लता और मौसमी फूल एवं फल-वृक्ष इस प्रकार से लगाये गये कि वे अनाज की फसल के प्लाट की किनारी का काम करें।

पूरा क्षेत्र ११ खण्डों में विभक्त किया गया। सब खण्डों तक जल जाने के लिये सिंचाई-नाली और पगडण्डी बनायी। क्षेत्र में 'लैण्ड-स्केप प्लानिंग' के सिद्धान्तों को ध्यान में रख जहां-तहां फूल एवं फल के वृक्ष लगाये। नाली के निथार के पानी का उपयोग नाली के दोनों ओर केले के वृक्षों की कतार लगा कर किया गया। फल वृक्षों की कतारों के बीच में अन्न की फसल गहाते हैं।

लगभग ०.२५ एकड़ रकबा दो फसली रखा गया है। अंगन-बाड़ी में एक के बाद एक ३-४ फसल लेते हैं।

ईंधन की मांग क्षेत्र के बीच में लगे एक बहुत पुराने पीपल से एक क्षेत्र की हद पर लगे बबूलों से पूरी होती

---

समाचार पत्रों में छपा था कि आगरे का जूता उद्योग ठप्प हो रहा है, क्योंकि पोलैण्ड और रूस की सरकारों ने न केवल जूतों का आर्डर देना बन्द कर दिया है बल्कि लाखों रुपये के जूते लेने से इन्कार कर दिया है। यह हानि स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन को हो अथवा लघु उद्योग निगम को हो यह अभी तक तय नहीं हुआ। पर इससे यह स्पष्ट है कि हम साम्यवादी देशों के साथ सब प्रकार के व्यापार पर निर्भर नहीं कर सकते, और साम्यवादी देश की नीति इन दिनों यह है कि वे उपभोग्य पदार्थों के निर्माण में अधिक ध्यान दे रहे हैं। इनके लिए ऐसा करना उचित भी है। परन्तु इसका एक निश्चित परिणाम यह होगा कि साम्यवादी देशों पर हमें अधिक अवधि के लिए व्यापार बढ़ाने के लिए बहुत निर्भर नहीं हो सकते। यदि हमें इन देशों से व्यापार बढ़ाना है तो कोई अधिक निश्चित और दीर्घकालीन योजना बनानी पड़ेगी। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। हद पर नार खींचने के लिये खम्भे लगाये गये थे। उसी समय वर्षा ऋतु में बबूल के पौधे भी लगा दिये गये थे। अब खम्भे सड़ गये हैं और तार बबूल के वृक्षों की पींड में ठोंक दिये गये हैं। इस तरह स्थायी खम्भे बन गये हैं। ये वृक्ष ईंधन की लकड़ी और कुछ वर्षों में कृषि के लिए उपयोगी लकड़ी देंगे।

| विभिन्न फलों का रकबा | वर्गफीट |
|---|---|
| (१) गेहूँ | २९,२८५ |
| (२) संतरा से रुका रकबा | ३,००५ |
| (३) किनारी की पट्टी | ८६२ |
| (४) धान (प्रस्तावित रकबा) | ४,८४० |
| (५) मिर्ची | १,००० |
| (६) सिंजाई की नाली पर केला; जाम और अनार | ३,६१० |
| (७) रास्ता, कुआं, स्नानघर | ९५८ |
| (८) निवास-गृह, बालबाड़ी, बालक्रीडा कार्यालय स्थल, समाजघर | १०,८८० |
| | कुल ५४,४४० |
| (९) दुहरी फसल का रकबा | १०,३६५ |
| (१०) आंगन बाड़ी निवास—घर के रकबा का एक भाग | ५०० |

खाद का प्रबंध : स्थानीय रूप से मुख्यतः गोबर और कम्पोस्ट बनाना जितना व्यवस्थित होना चाहिए, कर नहीं पाये। पूरे क्षेत्र में हरी खाद दी गयी। सन और तिल की हरी खाद का परीक्षात्मक अध्ययन किया गया। तिल की हरी खाद बहुत सस्ती, लगभग दो रुपया प्रति एकड़ पड़ती है। कृत्रिम खाद का उपयोग एक प्लाट में किया गया। मौसमी इत्यादि को खली दी गयी।

कार्य के घण्टे : हम चार लोग यहां स्थायी रूप से रहते हैं। हमारे एक वानप्रस्थ साथी हैं, वर्ष में दो माह यहां बिताते हैं। मेरी पत्नी और बच्ची फसल काटने में सहायता करती हैं, आंगनबाड़ी सम्हालती हैं। बालवाड़ी सहायिका भी कृषि-कार्य में समय देती हैं। एक ग्राम-युवक हमारे साथ है, जिसकी खेती की जिम्मेदारी है, पर उसे नौकरी कार्य में आधा समय देना पड़ता है। हम सबके खेती-कार्य के घण्टे लगभग २००० होंगे।

जुताई, बौनी के लिए बैल किराये के लिये, जिसका खर्च लगभग २५ रु० हुआ।

| उत्पादन | कीमत रु० |
|---|---|
| (१) गेहूँ १५ मन | २२५ |
| (२) सागभाजी १२ मन | ९० |
| (३) प्याज १५ मन | ७५ |
| (४) मिर्ची ८ सेर सूखी | २१ |
| (५) पपीता ४ मन | २८ |
| (६) मौसमी ७ दर्जन | २१ |
| (७) मटर २१॥ मन | २० |
| (८) धान (मोटी) २ मन | २० |
| (९) केला ६० दर्जन | १० |
| (१०) अमरूद १०० सेर | २५ |
| (११) गोभी के ८०० पौधे | ८ |
| | कुल ५४३ रुपये |

बिजली और अन्य खर्च २०० रु० हुआ।

लगभग ५०० घण्टे फल के पौधों को दिये, जिनसे अभी उत्पादन शुरू नहीं हुआ है, तीन वर्ष बाद होगा। इस अनुसार १५०० घण्टे कार्य से ३४३ रु० की आमद हुई, अर्थात् लगभग २२ नये पैसे प्रति घण्टा।

फलदार वृक्षों का उत्पादन आरम्भ होने पर यह आमद दुगुनी हो जायेगी। सन् ६४ से इसकी सम्भावना है।

इन प्रयोगों से यह स्पष्ट है कि खेती की इस रीति को पालन करने से प्रत्येक भारतीय ग्रामीण को खेती करने का अवसर प्राप्त हो सकेगा। "खेत गांव का और खेती किसान की" नीति को अमल में लाना सम्भव होगा। खेती एक आनन्ददायिनी 'हाबी' बन जायेगी। शौकिया रूप आने से उत्पादन में भी बहुत वृद्धि होगी।

(यदि बचा हुआ कुछ सामान घरेलू धन्धों को देदें तो आमदनी बढ़ सकती है।)

**'सम्पदा' आगामी अंक से नये आकर्षणों के साथ प्रकाशित होगी।**



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# यह खादी का ढंग नहीं है

विनोबा

आज जिस ढंग से खादी का काम राज्याश्रय से चल रहा है, उस ढंग से खादी हरगिज आगे नहीं बढ़ सकती। मैं सरकार के खिलाफ नहीं हूँ। लेकिन यह ढंग है, वह चापलूसी, जी-हां, हां-जी का। यह खादी के क्षेत्र में चलता है। सरकार ने इस क्षेत्र के लिए जो पैसा मंजूर किया है, वह खर्च होना ही चाहिये नहीं तो "लैप्स" होगा, इसमें कई तरह की बुराइयां आने की संभावना है। यह सब देखकर मुझे बड़ी वेदना होती है।

## मदद नहीं, संरक्षण चाहिये

खादी अगर टिक सकती है तो वह मदद से नहीं टिक सकती, उसके पीछे संरक्षण चाहिए। सरकार खादी को संरक्षण देने को कतई तैयार नहीं है, मदद देने को तैयार है। वैसे मदद तो मिल को भी देती है। इधर बैल घानी के तेल को भी मदद देता है और आयल-मिल को भी मदद देती है। वह कहती है आप हमारे प्रजाजन हैं, वैसे वे भी हैं। वे भी एम्पालाइमेंट चाहते हैं, और आप भी चाहते हैं। मेरा कहना यह है कि संरक्षण के बिना खादी टिकेगी यह नामुमकिन है। फिर चाहे आप अम्बर निकालें या साम्बर।

श्री सुखाड़ियाजी ने पंचायतों को खादी-काम सौंपने की तो सलाह दी है, उसे मानकर और उसके अनुसार खादी की व्यवस्था करके हम इन दोषों से छुटकारा पा सकते हैं। लेकिन सरकार को भी इसके लिए प्रारंभिक तैयारी करनी पड़ेगी। ग्राम पंचायतों के लिए सरकार की यह नीति होनी चाहिए कि जो पंचायतें अपने क्षेत्र में मिलों से बनी हुई चीजों के उपयोग पर रोक लगायेंगी, उन्हें ही राजस्व तथा अन्य सुविधाओं का अधिकार हो सकेगा। इस नीति से ग्राम पंचायतों को बल मिलेगा, और खादी का काम गांवों की अर्थ-व्यवस्था को मजबूत बनाने में सफल हो सकेगा। ऐसा न होने पर इन दिनों जो अनुकूल और प्रतिकूल हवाएं बह रही हैं, उनके भार को ग्रामस्तर पर भी खादी झेल नहीं सकेगी। बकरी और बाघ दोनों को एक साथ बांधने से शांति और व्यवस्था का जरिया एक कोरी कल्पना ही होगा।

खादी का विकास देश में सन् १९२० से हो रहा है। आज ४० साल हो गये। यदि देखा जाय कि आज कितनी खादी खपती है तो जवाब आयेगा कि एक प्रतिशत। मान लीजिए एक आदमी को १५ गज कपड़ा साल भर के लिए लगता है। यदि खादी दो रुपये गज हो तो एक आदमी को ३० रु० की खादी लगेगी। तो यदि भारत में सभी लोग खादी पहनें तो १२०० करोड़ रु० की खादी भारत को चाहिये। किन्तु आज खपती है केवल १२ करोड़ रुपये की। अब यदि हम सोचें कि एक प्रतिशत खपत तक पहुँचने के लिए ४० साल लग गये तो १०० प्रतिशत की खपत के लिये कितने वर्ष लगेंगे? कोई उत्तर नहीं आयेगा। मतलब यह कि जिस तरह से खादी चली है, उसी तरह चलेगी, तो उसमें जोर नहीं आयेगा। उतने में दुनियां कहीं की कहीं चली जायगी। इसलिए मैं कहता हूँ कि देहात के लोग खादी को उठालें। अपने लिए खादी बनायें और जो उपयोग से अधिक हो उसे स्टेट बोर्ड को बेचें। जैसे अनाज गांव में पैदा होता है, वैसे खादी भी बनेगी तभी उसका मुख्य उद्देश्य सफल होगा।

## नया मोड़ का आदेश

कोरा केन्द्र में हमने निश्चय किया कि खादी तथा रचनात्मक कार्यों को नया मोड़ देना चाहिए। खादी ग्रामोद्योग कार्योग ने भी इस कार्यक्रम को मान्यता दी है, और अपने सारे काम को ग्राम इकाइयों के रूप में मोड़ने का निश्चय किया है। रचनात्मक संस्थाएं भी यह समझती हैं कि अगर रचनात्मक कार्यों को एक शक्तिशाली सामाजिक रचना की शक्ति में परिणत करना है, तो एक-मात्र उपाय यह है कि लाखों गांवों के लोग इस को अपना काम समझकर उठा लें और जिस तरह अंग्रेजी सल्तनत से अपने को आज़ाद करने और स्वराज्य की स्थापना के लिए लाखों युवकों में और ग्रामवासियों में एक अपूर्व उत्साह

( शेष पृष्ठ ४४६ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सोवियत संघ में बैंकिंग प्रणाली

ले० वी० लाव्रोव

विशाल अर्थ-व्यवस्था वाले देश का काम ठोस वित्त-व्यवस्था एवं वित्तीय साधनों और सुसंचालित बैंकिंग प्रणाली के बिना नहीं चल सकता। सोवियत संघ के पास ये दोनों हैं। इस प्रणाली में केन्द्रीय स्थान सोवियत राजकीय बैंक का है, जिसकी शाखाएं हर संघीय तथा स्वायत जनतन्त्र में और हर प्रान्त, प्रदेश तथा नगर में है। सोवियत संघ में ऐसे प्रतिष्ठानों की संख्या इस समय लगभग ५,००० है।

राजकीय (स्टेट) बैंक का मुख्य ध्येय संस्थानों और संगठनों के बीच हिसाब किताब का निबटारा कराना, उनके अतिरिक्त धन को रखना और उन्हें कर्ज देना है। देश के समस्त राजकीय संस्थान और सहकारी संगठन राजकीय बैंक के जरिए ही अपनी खरीद फरोख्त का हिसाब चुकता करते हैं, निर्माण तथा सम्पन्न किये गये अन्य कार्यों के लिए माल की ढुलाई के लिए और अन्य सेवाओं के लिए पैसा अदा करते हैं। ये सब काम बैंक की शाखाओं द्वारा नियमतः नकद अदायगियों के बिना सम्पन्न किये जाते हैं। इस उद्देश्य के लिए हर राजकीय अथवा सहकारी उद्यम, संस्थान या संगठन सोवियत संघ के स्टेट बैंक में अपना चालू हिसाब या खाता खोल लेता है। उत्पादन की बिक्री के लिए और अन्य आर्थिक कारोबार के लिए प्राप्त समस्त धन, और संस्थान की आवश्यकताओं के लिए राजकीय बजट से निर्धारित रकमें इस हिसाब में जमा कर दी जाती हैं। कच्चे माल तथा अन्य सामानों के लिए और साथ ही तनखाहों तथा अन्य खर्चों के लिए भी इसी हिसाब में से अदायगी की जाती है।

## कर्जों की अदायगी और हिसाब-किताब

सोवियत संघ में बैंकों की गतिविधियों में एक महत्वपूर्ण स्थान ऋण सम्बन्धी काम का, अथवा लघु—कालीन तथा दीर्घकालीन ऋण प्रदान करने का है। ये ऋण प्रत्यक्ष, विशेष उद्देश्य, अदायगी की शर्त, और वापस भुगतान के हिसाब के सिद्धान्तों पर दिए जाते हैं। प्रत्यक्ष ऋण का अर्थ है कि ये ऋण सीधे किसी संस्थान या संगठन को बिलकुल निश्चित और कभी कभी पूर्ण निर्धारित उद्देश्यों के लिए दिये जाते हैं। इस प्रकार की ऋण प्रणाली ऋण सम्बन्धों को सुनियोजित रूप प्रदान करती है, जो अर्थ व्यवस्था की समाजवादी प्रणाली के अनुरूप है।

सोवियत संघ के स्टेट बैंक द्वारा लघुकालीन ऋण उत्पादन योजनाओं की पूर्ति या माल की बिक्री से सम्बन्धित आवश्यकताओं के लिए प्रदान किए जाते हैं और इनकी अवधि १२ मास से अधिक नहीं होती। विशेषकर ये ऋण कच्चे माल तथा उत्पादित सामान के सुरक्षित भण्डार बनाने के लिए दिये जाते हैं। ऐसे ऋणों की जरूरत हल्के तथा खाद्य उद्योगों को हो सकती है जो कृषिजन्य कच्चे माल का उपयोग करते हैं, तथा चीनी कारखाने, रुई साफ करने के संयत्र, आदि।

बैंक अपने उत्पादनों की बिक्री करने वाले संस्थानों को भी अपना माल रवाना करने और उनकी कीमत प्राप्त होने के बीच की अवधि के लिए ऋण प्रदान करते हैं। व्यापार संगठनों द्वारा खरीदे गए माल के लिए, संस्थानों में उत्पादन के सुरक्षित भण्डार बनाने के लिए और अन्य स्थायी जरूरतों के लिए भी ऋण प्रदान किये जा सकते हैं। ऋण की रकम पर बैंक सूद वसूल करते हैं। सूद की रकम ऋण की किस्म के अनुसार भिन्न होती है। उदाहरणार्थ, अस्थायी आवश्यकताओं के लिए ऋण पर सोवियत संघ में सूद आमतौर पर २ प्रतिशत होता है।

स्टेट बैंक सामूहिक खेतों और अन्य सहकारी संगठनों को उनकी पूंजीगत लागतों से सम्बन्धित उद्देश्यों के लिए दीर्घकालीन ऋण देते हैं। स्टेट बैंक अकेले व्यक्तियों को भी ऋण दे सकते हैं। उदाहरणार्थ, देहातों में रहने वाले व्यक्ति अपने निजी मकान बनाने के लिए ऋण प्राप्त कर सकते हैं।

देश की अर्थव्यवस्था के साथ स्टेट बैंक का निकट सम्बन्ध इसके लिए यह सम्भव बनाता है कि वह समस्त



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्थानों और संगठनों के काम की जानकारी रखे और उनके द्वारा आर्थिक तथा वित्तीय योजनाओं की पूर्ति पर, सप्लायरों एवं अन्य संगठनों के प्रति तथा राजकीय बजट के प्रति उनकी जिम्मेदारियों पर नजर रख सके। इस प्रकार सोवियत संघ के ऋण प्रदाता प्रतिष्ठान देश की अर्थ-व्यवस्था पर राजकीय नियंत्रण का एक महत्वपूर्ण साधन है और उसके विकास को बढ़ावा देते हैं। इसके अलावा, सोवियत संघ का स्टेट बैंक अन्तर्राष्ट्रीय हिसाब-किताब को निबटाने के लिए और धन को परिचलन के नियमन के लिए जिम्मेदार है।

## निर्माण बैंक

सोवियत संघ में स्टेट बैंक के अलावा पूंजीगत विनियोजन के लिए धन प्रदान करने का एक अखिल संघीय बैंक भी है। (स्त्रोइबैंक या सोवियत संघ का निर्माण बैंक)। इसकी आवश्यकता सोवियत संघ में विशाल पैमाने पर जारी निर्माण कार्य के लिए है। उदाहरणार्थ, केवल १९६० में ही देश में १,००० से अधिक बड़े औद्योगिक संस्थानों, लगभग १,५०० किलोमीटर रेलवे लाइनों, २४ लाख फ्लैटों (मकानों) और बड़ी संख्या में स्कूलों और अस्पतालों आदि का निर्माण किया गया।

बैंक इस बात को सुनिश्चित बताते हैं कि निर्माण कार्यों के लिए प्रदत धन का सर्वाधिक किफायतशारी के के साथ उपयोग किया जाता है।

## सेविंग बैंक

जैसा कि हमने देखा, सोवियत संघ में बैंक मुख्यतया राजकीय संस्थानों और सहकारी संगठनों की सेवा करते हैं जहां तक सामान्य जनता का सम्बन्ध है, ऋण-प्रदाता संस्थाओं के साथ उसका व्यापक सम्बन्ध राजकीय सेविंग बैंकों के जरिए है। सोवियत संघ में आज ६६,००० से ऊपर सेविंग बैंक हैं, जिनमें हिसाब रखने वालों (ग्राहकों) की संख्या ५ करोड़ २० लाख से अधिक है। १९६१ के आरम्भ में देश के सेविंग बैंकों में जमा कुल रकम ११ अरब से अधिक थी, अथवा १९५५ की तुलना में दुगुनी।

'डिपाजिट एट काल' या वह जमाखाता जिसमें पैसा जमा करने वाला व्यक्ति किसी भी समय अपना पैसा आंशिक रूप से या पूरा का पूरा निकाल सकते है, व्यापक रूप से प्रचलित हैं। ऐसे खातेदारों को बैंक २ प्रतिशत दर पर ब्याज देता है।

'टाइम डिपाजिटों' में पैसा कम से कम ६ मास तक सेविंग बैंक में रखा जाना चाहिए। इस अवस्था में खातेदार को ३ प्रतिशत वार्षिक ब्याज मिलता है। वह नियत समय की समाप्ति से पहले भी पैसा निकाल सकता है, लेकिन ऐसी स्थिति में उसे 'एट काल' खातेदार के समान ब्याज मिलता है।

देश के सेविंग बैंक अपने खातेदारों के लिए चालू हिसाब (करेंट एकाउण्ट) खोल सकते हैं। इस प्रकार का खातेदार अपनी बचतों का इस्तेमाल चेक काटकर (किसी व्यक्ति विशेष के नाम या बेयरर चेक) कर सकता है।

सोवियत संघ में सेविंग बैंक जमा किए गए धन की रकम के बारे में गोपनीयता बरतते हैं। खातेदार अपना पैसा स्वयं निकाल सकता है, जिसके नाम चाहे मुख्तारनामा लिख सकता है, चाहे जिसके नाम वसीयत कर सकता है, आदि।

जमाखाते में रकमें जमा करने और उन्हें वापिस करने के अलावा, देश के सेविंग बैंक और भी काम-संजाम देते हैं। जैसे जमा रकम को एक सेविंग बैंक से दूसरे को प्रेषित करना, हुंडियां जारी करना, मकान का भाड़ा देने तथा अन्य म्युनिसिपल सेवाओं के लिए पैसा अदा करने के बारे में खातेदारों के बारे में खातेदारों के निर्देशों के बारे में और खातेदारों के निर्देशों का पालन करना, इत्यादि।

विज्ञापन के लिए

सम्पदा

सर्वोत्तम

साधन

सम्पदा, अशोक प्रकाशन मन्दिर

२८-११ शक्तिनगर, दिल्ली-६



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया साहित्य

जागृति—(रवीन्द्र विशेषांक) सम्पादक, श्री मदन मोहन गोस्वामी । प्रकाशक—सूचना विभाग पंजाब सरकार, चन्डीगढ़ । मूल्य २५ न० पै० ।

यों तो पिछले दिनों में युग कवि रवीन्द्र के सम्बन्ध में बीसियों पत्र—पत्रिकाओं ने अपने विशेषांक निकाले हैं लेकिन इस विशेषांक की अपनी दो विशेषताएं हैं । रवीन्द्र के जीवन परिचय, उनके साहित्य के सम्बन्ध में विवेचनात्मक लेखों के अतिरिक्त इसमें एक ओर स्वयं रवीन्द्र की अनेक कविताओं तथा कहानियों के अनुवाद किये गये हैं, वहाँ दूसरी ओर रवीन्द्र की पंजाब सम्बन्धी रचनाओं और स्मृतियों का विशेष रूप से सम्पादक ने चयन करते हुए ध्यान रखा है । इन दोनों विशेषताओं का परिणाम यह हुआ है कि जागृति का यह विशेषांक अन्य पत्र पत्रिकाओं के विशेषाङ्कों का अनुकरण मात्र नहीं रहा । आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, बाबू गुलाब राय, आदि के लेख पढ़ने योग्य हैं । इकरंगे और बहुरंगे सुन्दर चित्रों तथा बाह्य रूप रंग के कारण यह अंक और भी नयनाभिराम हो गया है ।

सुहाग की सुबह—लेखक—श्री सत्यप्रकाश मिलिंद प्रकाशक—सरल प्रकाशन, रेगड़ पुरा, करोल बाग, नई दिल्ली । पृष्ठ संख्या १०६ । मूल्य ३) रु० सजिल्द ।

प्रस्तुत पुस्तक लेखक का सम्भवतः प्रथम उपन्यास है । प्रस्तुत उपन्यास का कथानक बहुत संक्षिप्त है । एक युवक एक रूपवती तरुणी विधवा के दुःखमय निराश जीवन को देखकर उसकी व्यथा दूर करने का संकल्प करता है । वह उसके तत्कालीन अभिभावकों की अनुमति प्राप्त कर लेता है । उसके पिता किसी और कन्या से विवाह करना चाहते हैं, परन्तु युवक सुधीर इन्कार कर देता है । वह ऊंची छत से गिर पड़ता है और तब उसके पिता विधवा के साथ सम्बन्ध के लिए तैयार हो जाते हैं ।

इस संक्षिप्त कथानक के साथ लेखक बाल वैधव्य की कुप्रथा पर चोट करना चाहता है और यही उसका उद्देश्य है । लेखक की भाषा परिष्कृत है । विधवा सांत्वना के हृदय की व्यथा और निराशा तथा आशा और प्रसन्नता की भावनाओं का लेखक ने सुन्दर चित्रण किया है ।

चौधरी और चौपाल—लेखक—श्री सत्यप्रकाश मिलिंद, प्रकाशक—राजीव प्रकाशन, बिड़ला लाईन्स दिल्ली-६. मूल्य ७५ नये पैसे ।

प्रस्तुत पुस्तिका में लेखक के तीन एकांकी नाटकों का संग्रह है । इन तीनों का उद्देश्य ग्रामों में नई चेतना का प्रचार है, पहली नाटिका का सम्बन्ध भूदान से है, तो दूसरी का दलितों के मन्दिर प्रवेश से । तीसरी का उद्देश्य पंचवर्षीय योजना का परिचय देना है । तीनों नाटिकाएं देहातियों के लिये लिखी गई हैं । इसलिये भाषा भी सरल रखी गई है । फिर भी परिग्रह, अपरिग्रह, उर्वरक समाज की व्यवस्था का निर्माण आदि कुछ कठिन शब्द आ गए हैं । सामुदायिक योजना की भावना को भी सरल शब्दों में समझाने की आवश्यकता है । तीनों एकांकी अपने उद्देश्य में जन जागरण में सफल होंगी, ऐसी हमारी आशा है ।

विश्व ज्योति—रवीन्द्र दर्शन अङ्क । प्रकाशक, साधु आश्रम, हशियारपुर मूल्य १) रु० वार्षिक मूल्य ८) रु० ।

विश्व ज्योति के विद्वान् सम्पादकों ने रवि दर्शन के नाम से विशेषांक प्रकाशित कर अपनी गम्भीरता, विद्वत्ता, तथा असाधारण सूझ का परिचय दिया है । इसकी मुख्य विशेषता विश्व कवि रवीन्द्र का जीवन परिचय देकर उनकी प्रशंसा करना ही नहीं है । इसमें रवीन्द्र की व्यापक दृष्टि को, उनकी विचार धारा को और शिक्षा, संस्कृति, सौंदर्य, आध्यात्म और बहुमुखी जीवन प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में कवि गुरु और महान् तत्व वेता रवीन्द्र की रुपन्र दृष्टि का पाठकों को परिचय देना है । उनकी साहित्यिक रचनाओं में काव्य प्रतिभा तथा पात्रों के चरित्र चित्रण आदि का उल्लेख तो बहुत से पत्रों ने किया है, किन्तु सामजिक और वैयक्तिक जीवन के प्रति उनके गम्भीर और सूक्ष्म चेष्टा बहुत कम पत्रों ने की है । इस कमी को पूर्ण करने के लिए विश्व ज्योति के सम्पादक कवि के सब भक्तों के बधाई के पात्र हैं । यह अङ्क स्थाई साहित्य के रूप में गिना जा सकता है । इस अङ्क से यह मालूम होगा कि विश्वविख्यात रवीन्द्र भारतीय वैदिक संस्कृति पर अगाध विश्वास रखते थे । उपनिषदों के मर्म को ये भली भांति समझते थे । उनकी प्रेरणा का स्रोत भारत की अध्यात्म विचार धारा थी । कवि की कुछ सुन्दर कविताओं तथा अनेक चित्रों के कारण यह अंक और भी स्मणीय हो गया है ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

( पृष्ठ ४४२ का शेष )

था, उसी तरह गांव की दरिद्रता, गाँव के शोषण और लाचारी को दूर करने में और सच्चे माने में ग्राम स्वराज्य स्थापित करने के लिए जन-जन को उत्साह हो। खादी कमीशन की योजना है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान में सारे देश में तीन हजार ग्राम-इकाइयों की स्थापना की जाय, जहां कृषि.ग्रामोद्योग-प्रधान समाज-रचना को सही रूप देने का पूरा प्रयास हो।

गम्भीर अध्ययन के बाद मैं इस निर्णय पर पहुँचता हूँ कि जब तक गांव की सारी काश्त-योग भूमि का ग्रामीकरण नहीं हो जाता, तब तक न केवल भूमि समस्या हमारी पकड़ से बाहर रहेगी, कलिक गाँव की सारी समस्याएं आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक, ज्यों की त्यों बनी रहेंगी। भूमि-व्यवस्था का मौजूदा तरीका अपने आप में ही अकेली एक ऐसी बात है कि जो गांव में वर्ग भेद, शोषण और मुकदमे बाजी का तथा गाँव समाज में सम्पत्ति, सुरक्षा व शिक्षा की दृष्टि से भारी विषमता का कारण है। बढ़ती हुई आबादी के अनुपात में देश में भूमि इतनी कम है कि वह अब व्यक्तिगत मुनाफ़े का जरिया नहीं रहना चाहिए। उसको अब सामूहिक हित का साधन बनाना ही होगा, ताकि समस्त गांव को भोजन मिल सके। यह सामुदायिक स्वामित्व और व्यवस्था से ही सम्भव है। ग्रामदान की बड़ी देन यह है कि उस के द्वारा यह चीज़ अधिकांश मात्रा में सम्पन्न हो सकी है। इस प्रकार कुछ ग्रामदानी गाँवों में न केवल जीवन के भौतिक पहलू से, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक दृष्टि से भी बड़ा उल्लेखनीय विकास हुआ है। —जयप्रकाश नारायण

विशेषज्ञ और आयोजक अपने ढंग से सोचते और करते हैं—और दरिद्रता, बेकारी, भुखमरी और विपन्नता के कटु तथ्य बेशर्मी के साथ मुँह बाये खड़े हैं।

इस देश में भूमि-समस्या का एकमेव समाजवादी तरीका है भूमि का सामुदायिक स्वामित्व और व्यवस्था।

लोग रोटी और रोज़ी चाहते हैं और चाहते हैं जानवरों से भिन्न तरीके से जीवन बिताना। यह सब आयोजक कैसे देंगे ?—उनके लिए योजना और आर्थिक विकास का क्या मतलब है ?

एक गरीब और क्षुधापीड़ित देश में क्या यह अत्यावश्यक नहीं है कि सम्पत्ति का उत्पादन इस प्रकार से हो कि वह सीधे जनता के पास पहुँच सके ?

● ●

# नारियल रेशे का उद्योग

१. नारियल का रेशा औद्योगिक सख्त रेशों की श्रेणी में आता है। नारियल के रेशे के अलावा सीसल, सन, हेनीक्वीन और के पेड़ के रेशे का सन काफी इस्तेमाल होता है। १९५९ में १० लाख टन औद्योगिक सख्त रेशे तैयार हुए। इसमें से १९ प्रतिशत या १ लाख टन नारियल का रेशा तैयार हुआ।

२. औद्योगिक सख्त रेशों में नारियल के रेशे का महत्वपूर्ण स्थान है। जो गुण नारियल के रेशे में हैं, वे बहुत कम रेशों में होते हैं। नारियल का रेशा गलता-सड़ता नहीं और इस पर पानी का भी असर नहीं होता। यह सीलन रोकता है, और गर्मी में ठण्डा रहता है।

३. नारियल का रेशा भारत और लंका में ही तैयार होता है और औद्योगिक-काम में लाया जाता है। भारत में हर साल लगभग ३ लाख १० हजार टन और लंका में ३ लाख ३० हजार टन रेशा तैयार किया जाता है। केवल भारत में ही नारियल के रेशे की चटाइयां, कालीन आदि बनाए जाते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि समुद्र के पानी से तट पर जो झील सी बन जाती हैं, उनमें नारियल की जटा को काफी समय तक खारे पानी में डुबाकर रखा जा सकता है।

४. देश भर में केरल ही एक ऐसा राज्य है, जहां पर नारियल रेशा उद्योग संगठित रूप से चलाया जा रहा है, इस राज्य का यह सबसे बड़ा घरेलू उद्योग है। इस उद्योग से ५ से ६ लाख तक मजदूरों की जीविका चलती है।

५. यह उद्योग अभी भी पुराने तरीकों से ही चलाया जाता है। इस उद्योग में सब काम हाथ से होता है और मशीनों का जरा भी उपयोग नहीं होता।

६. चाय और पटसन की तरह नारियल के रेशे और इससे बने सामान का काफी निर्यात होता है। नारियल का जितना सामान देश में बनता है, उसका आधे से अधिक भाग बाहर भेजा जाता है। हर साल नारियल के रेशे का ७५ हजार टन सामान विदेश भेजे जाने का औसत है। इसके अलावा ५० हजार टन नारियल की सुतली विदेश भेजी जाती हैं।

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# २२ जुलाई—पोलैण्ड का राष्ट्रीय दिवस

२२ जुलाई को पोलैण्ड के राष्ट्रीय मुक्ति दिवस की १७वीं वर्षगांठ मनाता है। यही वह दिन है जब १९४४ में राष्ट्रीय मुक्ति समिति के घोषणा पत्र का ऐलान किया गया था। १७ वर्षों के अपेक्षाकृत थोड़े समय के भीतर पोलैण्ड में सर्वांगीण परिवर्तन हुआ है। मानवीय और भौतिक दृष्टि, दोनों ही दृष्टियों से पोलैण्ड संसार का सबसे अधिक पीड़ित देश था। प्रति एक हजार आबादी में से २२० व्यक्ति मृत्यु और देश पर विदेशी अधिकार के फल स्वरूप या तो मारे गये या मौत के मुंह में गये और समस्त राष्ट्रीय सम्पत्ति का ३८ प्रतिशत या तो नष्ट हो गया या लूट लिया गया।

सत्तरह साल की अबाध प्रगति ने पोलैण्ड को संसार के प्रमुख औद्योगिक राष्ट्रों की पंक्ति में ला बिठाया है। औद्योगिक उत्पादन युद्ध पूर्व की तुलना में साढ़े सात गुना बढ़ा है। आज पोलैण्ड दो हफ्ते में उतना ही उत्पादन करता है, जितना वह युद्ध से पहले एक साल में करता था। उद्योग की सभी शाखाओं का समरस विकास सुनिश्चित करने वाले भारी उद्योग का शक्तिशाली आधार तैयार कर लिया गया है। नयी उत्पादन शाखाओं की पूरी शृंखला तैयार की गयी है, जैसे बड़े-बड़े रासायनिक कारखाने, जहाज बनाने के कारखाने, मशीनें बनाने वाले उद्योग जो प्रबल समृद्धि के द्योतक हैं। अब बेकारी का नामोनिशान नहीं है। पिछड़े खेतिहर-औद्योगिक देश के विकसित औद्योगिक-खेतिहर देश में कायापलट ने आबादी के गठन में भी मूलभूत परिवर्तन किये हैं। इसकी अभिव्यक्ति खेती में लगे लोगों की संख्या में एक तिहाई कमी के रूप में हुई।

पोलैण्ड के कायापलट का स्वाभाविक प्रभा आबादी के बड़े-बड़े भागों के जीवन स्तर पर भी पड़ा है। रिहायशी कमरों की संख्या में तेजी से वृद्धि होने के कारण शहरों में आबादी की सघनता घटी है। युद्धपूर्व की तुलना में गोश्त की खपत २५ प्रतिशत बढ़ी है।

स्वास्थ्य सेवाओं का बढ़िया जाल बिछा हुआ है जो निःशुल्क उपचार करता है।

निरक्षरता का पूरी तरह से सफाया किया जा चुका है और शिक्षा मुफ्त दी जाती है तथा बच्चों को पढ़ाना अनिवार्य है। आबादी घटने पर भी माध्यमिक तथा व्यावसायिक स्कूलों में पढ़ने वालों की संख्या चार गुनी और उच्चतर स्कूलों में पढ़ने वालों की तीन गुनी बढ़ी है। एक हजार की आबादी पर ५७ विद्यार्थियों की संख्या अनेक आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से उन्नत राज्यों की अपेक्षा जैसे बेलजियम, स्वीडन या इटली, आज काफी अधिक है। विविध प्रकार के साहित्य का प्रसार, समाचार पत्र पत्रिकाओं का प्रसार, देहातों में पुस्तकालयों का बढ़ना, रेडियो और टेलीविजन का विस्तार, ये सब इसका प्रमाण हैं।

---

(पृष्ठ ४३८ का शेष)

शुरू हुई। इस पर १९ अरब रु० खर्च होने का अनुमान है। इस अवधि में अनाज की उपज २१ प्रतिशत बढ़ाने और कपास की २३ लाख गांठ और पटसन की ७३ लाख गांठ करने का प्रयत्न होगा। इसी प्रकार उद्योगों का उत्पादन लगभग ४७ प्रतिशत बढ़ाने का लक्ष्य है। सड़कें और नहरें भी काफी बढ़ाई जाएंगी।

बर्मा में देश के सब आर्थिक साधनों को जुटा कर चौमुखी प्रगति के लिए चार वर्षों की योजना तैयार की जा रही है।

## आर्थिक और सामाजिक कल्याण

इस प्रकार सारावाक में १९५९ से १९६३ तक के लिए खेती की और फिलीपीन्स में १९५९ से १९६३ तक के लिए उद्योगों और खेती की उन्नति के लिए योजनाएं बनाई गयी हैं। फिलीपीन्स में १९६१ में होने वाले कामों पर ८६ करोड़ ९६ लाख पेस० खर्च होगा। पांचों सालों में ६७ करोड़ ५३ लाख पेस० के बराबर विदेशी मुद्रा की जरूरत पड़ेगी।

सिंगापुर की पंचवर्षीय योजना का उद्देश्य पूंजी नियोजन ११ प्रतिशत से बढ़ा के राष्ट्रीय आय का प्रतिशत करना है। थाईदेश में योजना द्वारा देश की बढ़ती हुई आबादी और कम रोजगार की समस्या को हल किया जाएगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ ४३० का शेष)

## पूंजीवाद के कारण सम्पति का विषय वितरण

यह पूंजीवाद का संकट है..... । मूलतः इसका कारण है दुनिया की दौलत का दोषपूर्ण बँटवारा कुछ हाथों में उसका इकट्ठा होना । यह बीमारी पूंजीवाद का निष्कर्ष है, जो तब तक उसके साथ ही बढ़ती है जब तक कि अपने को पैदा करने वाली व्यवस्था को ही खाकर वह नष्ट नहीं कर लेती । दुनिया में दौलत की, अनाज की और मनुष्य के उपभोग की अन्य सामग्रियों की कोई कमी नहीं है। आज की दुनिया, किसी भी समय से ज्यादा दौलतमन्द है और निकट भविष्य में बेहद तरक्की की सम्भावना है। तब भी व्यवस्था टूटती है। जबकि एक ओर लाखों लोग भूखे मरते हैं, अभाव सहन करते हैं, दूसरी ओर बड़ी तादाद में अनाज और अन्य चीजें नष्ट की जाती हैं । खेतों में अन्न नष्ट करने के लिए बीमारी के कीड़े छोड़ दिए जाते हैं। पैदावार इकट्ठी ही नहीं की जाती है । राष्ट्र इकट्ठा होकर इस बात पर मशविरा करते हैं कि भविष्य में गेहूँ, रूई, चाय, काफी और दूसरी कई तरह की चीजों की पैदावार किस तरह सीमित की जा सकती है।

❀ ❀ ❀

यूरोप में तृतीय दशक के बीच का समय (१९२४-२५) स्थिर होने और विश्वयुद्ध से निर्मित नई हालातों के मुताबिक होने का समय था । युद्ध के बाद अमेरिकी सोना यूरोप में बरसने लगा । युद्ध से थके हुए और भटकते हुए यूरोपवासियों को उसने किसी हद तक उबारा और समृद्धि का एक झूठा दिखावा निर्मित किया। पर इस समृद्धि की दर असल कोई सही बुनियाद नहीं थी । इसका राज उस वक्त खुला, जब १९२९ में संयुक्त राज्य अमेरिका ने यूरोप और दक्षिण अमेरिका को धन देना बन्द कर दिया। इस विस्फोट की कई वजहें थीं । खासकर गिरते हुए पूंजीवाद के निहित विरोधाभासों के कारण ऐसा हुआ और युद्ध के बाद की पूंजीवादी समृद्धि का हवाई महल गिरने लगा। गिरने की यह परम्परा चार सालों तक चलती रही और उसका अन्त नजर नहीं आया। इसे भाव में अचानक कमी, व्यापारिक मंदी, संकट आदि नामों से पुकारा गया है पर दरअसल यह पूंजीवादी व्यवस्था की संध्या थी और हालातों ने दुनिया को यह समझने के लिए मजबूर कर दिया। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग नाकामयाब रहा, दुनिया का बाजार, जो पूंजीवाद की जरूरी बुनियाद है, मिटता जा रहा है और हर राष्ट्र दूसरों की कीमत पर खुद को आगे बढ़ाने की कोशिश करने लग रहा। भविष्य में चाहे जो कुछ हो, पर एक बात तय है कि पुरानी व्यवस्था के दिन बीत गए और वह फिर कायम नहीं की जा सकती।

## पूंजीवाद का ह्रास और फासिज्म की ओर

चूंकि पुरानी पूंजीवादी व्यवस्था हिल गई थी, इसलिए मजदूरों की बढ़ती हुई ताकत की चुनौती उसके लिए ज्यादा गम्भीर हो गई। यह चुनौती जब खतरा बन गई तो इसने दौलतमन्द ताकतों को आपसी मतभेद भुलाकर एक हो जाने और सामान्य दुश्मन का मुकाबला करने को तैयार किया। इसका नतीजा फासिज्म और कुछ नरम शक्ल में तथाकथित राष्ट्रीय सरकारों का विकास था। जल्दी तौर पर शोषक वर्ग की अपने हकों को बचाने की यह आखिरी कोशिश थी। संघर्ष ज्यादा गम्भीर हो गया और उन्नीसवीं सदी के प्रजातंत्र का स्वरूप छोड़ दिया गया। पर फासिज्म या राष्ट्रीय सरकारें मौजूदा पूंजीवादी व्यवस्था के बुनियादी आर्थिक फासलों को दूर करने के लिए कोई सुझाव पेश नहीं करेगी । जब तक वह धन की असमानता को खत्म नहीं करतीं और बटवारे के मसले को हल नहीं करतीं उनकी असफलता निश्चित है।

फिर भी यह याद रखना ठीक होगा कि आज दुनिया में अनाज और जीवन की दूसरी जरूरी चीजें काफी तादाद में मौजूद हैं। फिर भी बड़े पैमाने पर सर्वत्र कमी इसलिए है कि मौजूदा व्यवस्था उसे बांटना नहीं जानती। ★

---

★ लेखक की विश्व इतिहास की झलक के कुछ अंश

---

**स्थायी ग्राहकः— पत्र व्यवहार करते समय ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा उत्तर देने में कठिनाई होगी। संभव है उत्तर जा ही न सके।**

—मैनेजर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

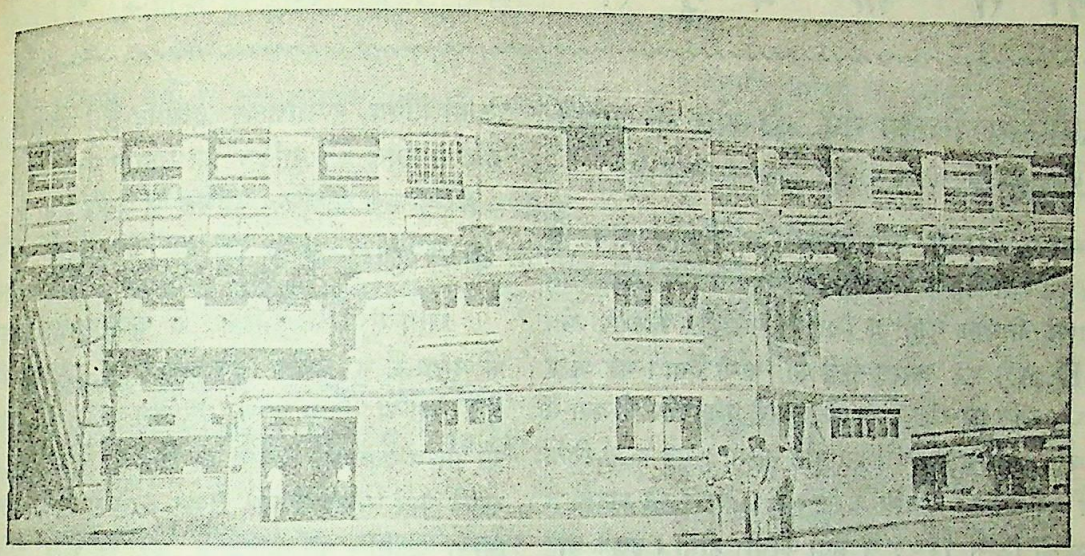

गुजरात राज्य (जामनगर) में बन रहे इस अस्पताल की तरह तीसरी योजना में भारत में लगभग १५ हजार अस्पतालों का निर्माण होगा।

# भारत में अस्पतालों की व्यवस्था

इन दस वर्षों में जब से पहली पंचवर्षीय योजना लागू हुई है, देश में अस्पतालों की सुविधाएं निरन्तर बढ़ती रही हैं। १९५१ में जहां सारे देश में ८,६०० अस्पताल और औषधालय थे, वहां १९६१ में इनकी संख्या बढ़कर १२,-६०० हो गई। इसी अवधि में अस्पतालों में बिस्तरों की संख्या १,१३,००० से बढ़कर १,६०,००० हो गई। तीसरी योजना में १४,६०० औषधालय और अस्पताल और १,९०,००० बिस्तर करने का लक्ष्य रखा गया है।

तीसरी योजना में स्वास्थ्य कार्य-क्रमों के लिए ५० करोड़ रु० का जो खर्च रखा गया है, वह पहली योजना के इस मद के वास्तविक खर्च से दुगना है।

दूसरी योजना में स्वास्थ्य कार्य-क्रमों का उद्देश्य यह था कि सब लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ पहुंचे। तीसरी योजना में पहली दो योजनाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी काम तो चलते ही रहेंगे, साथ ही संचारी रोगों से बचाव और उनके उन्मूलन तथा रोकथाम पर अधिक जोर दिया जाएगा। ● ●

## भारतीय मालबाही जहाजों की संख्या में वृद्धि

जहाज उद्योग के विकास की आवश्यकता जोरों से महसूस की जा रही है। श्री जी० एल० मेहता के कथनानुसार भारत को अपने जहाज उद्योग तथा मालबाही जहाजों की संख्या में भारी वृद्धि करना परम अनिवार्य हो गया है।

## इटैलियन तेल कम्पनी से समझौता

भारत सरकार और इटैलियन राज्यीय आयल कम्पनी के मध्य भारत में तेल शोधक कारखाने की स्थापना में शीघ्र ही एक समझौता सम्पन्न होगा। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं

## अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ की ओर से भारत को ऋण

भारत सरकार और अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ के मध्य हुये समझौते के अन्तर्गत जो विश्व बैंक से सम्बन्धित है, सड़क निर्माण कार्य के लिए अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ (I. D. A.) २९ करोड़ रुपये का ऋण देगा। यह ऋण उस धन राशि का अंश होगा जो तीसरी पंचवर्षीय योजना में एक वाह्य आर्थिक जरूरतों की पूर्ति करेगा। यह ऋण बिना ब्याज ५० वर्ष की अवधि के लिये है। ऋण की अदायगी की पहली किस्त १९७१ में अदा करनी होगी। इसके बाद मूलधन का एक प्रतिशत प्रति वर्ष दस वर्ष तक लगातार भुगतान करना होगा, फिर ३० वर्षों तक ३ प्रतिशत भुगतान हर वर्ष करता रहेगा, इस बड़ी धनराशि में से केवल ¾ प्रतिशत संघ के प्रशासनिक खर्च के लिये काट दिया जायगा।

## मशीनों के निर्माण से भारत का निर्माण

मशीन निर्माण उद्योग की विकास परिषद के उद्घाटन करते हुए उद्योग मंत्री श्री मनुभाई शाह ने कहा कि मशीन उद्योग के लिए भारत सरकार किस तरह की सुविधाएं देने को तैयार है। देश में १,१०० कारखाने, उद्योगों में काम आने वाली मशीनें बना रहे हैं। इनका उत्पादन लगभग १ अरब ६० करोड़ रु० वार्षिक का होता है, फिर भी हमें २ अरब रु० की मशीनें बाहर से मंगानी पड़ती है।

## भारत इलेक्ट्रानिक्स में टेप-रिकार्डरों का निर्माण

जून २०, १९६१ को बंगलौर में भारत इलेक्ट्रोनिक्स और जापान की निप्पन इलेक्ट्रिक कम्पनी में एक करार हुआ है, जिसके अनुसार भारत इलेक्ट्रोनिक्स के कारखाने में तीन प्रकार के टेप-रिकार्डरों का निर्माण होगा। १९५५ में भारत इलेक्ट्रोनिकल्स ने केवल दो चीजें बनानी शुरू की थीं, पर अब यहां २२ प्रकार के यंत्र बनाये जा रहे हैं, जिनमें प्रेषित्र, एम्लीफायर इत्यादि हैं। कारखाने में पहले जहां ५ लाख रु० वार्षिक का सामान बनता था, अब वहां १ करोड़ ६० लाख रु० वार्षिक का तैयार होता है।

## भारत खाद्यान्न के निर्यात में समर्थ

खाद्य मंत्री श्री पाटिल के कथनानुसार वर्तमान वर्ष में भारत में ८ करोड़ टन अनाज के उत्पादन की आशा है। देश में इतना अन्न उत्पादन कभी नहीं हुआ। आज तो भारत खाद्यान्न निर्यात की स्थिति में हो गया है, किन्तु अपने यहां 'संग्रह भंडार' तैयार करने के लिये निर्यात नहीं करना चाहता। श्री पाटिल ने कहा कि और अधिक अन्न उत्पादन करना उचित नहीं होगा, क्योंकि तब देश के सामने अतिरिक्त उत्पादन की वही समस्या, जो आज कई राष्ट्रों के सामने है, उठ खड़ी होगी। सरकार अब पटसन, चाय और चीनी जैसे व्यापारिक फसलों को प्रोत्साहन देना चाहती है।

## जूट के स्थान पर सेलजूट का आविष्कार

पोलैण्ड ने जूट वस्त्र के स्थान पर एक अन्य किस्म के कृत्रिम 'सेलजूट' नामक रेशा तैयार किया है। इस किस्म के सेलजूट वस्त्र उतने ही सस्ते, सुन्दर और टिकाऊ होते हैं जितना असली जूट के।

## पोलिश फर्म से समझौता

राष्ट्रीय कोयला विकास निगम ने झरिया की गहरी चौड़ी पट्टी वाली कोयला खानों से आधुनिक तरीके से ७५०० टन प्रतिदिन कोयले की खुदाई और धुलाई आदि के लिये पोलैण्ड की सेकोफ (CKOF) फर्म के साथ कारखाने की स्थापना के लिये एक समझौता किया है।

—भारत और ईरान की सरकार के मध्य एक व्यापार समझौता सम्पन्न हुआ है। इसके अन्तर्गत भारत ईरान को नियरी का सामान, कपड़ा, काफी, चाय, मशाले, तम्बाकू, दवाइयां आदि का निर्यात करेगा और सूखे फल, ताजे फल, ऊन, तांबा, मोती आदि का आयात करेगा।

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—गुजरात राज्य में तेल और गैस कमीशन ने अहमदाबाद से १७ मील दूर कलोल नामक स्थान में एक बड़े तेल क्षेत्र का पता लगाया है। आशा यह की जाती है कि दो-तीन वर्षों में तेल उत्पादन का कार्य आरम्भ हो जायगा।

—भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय चीनी समझौते में शामिल होना स्वीकार कर लिया है। भारत इस परिषद का २६ वां सदस्य होगा। चीनी का आयात करने वाले १८ देश भी इसके सदस्य हैं।

—कोलम्बो योजना के अन्तर्गत आस्ट्रेलिया की सरकार ने भारत तथा पाकिस्तान को ९८४५ टन गेहूँ की सहायता दी है।

—भारत ने अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में २३ अगस्त १९६१ से होने वाली 'जशन नुमायश' में भाग लेने का निश्चय किया है। नुमायश में एक भारतीय व्यापार पवेलियन होगा जिसमें अफगानिस्तान में खपत होने वाली सभी वस्तुएं, मशीनरी, सूती, ऊनी, रेशमी और रेयन के कपड़े तथा अन्य सामान, बिजली और इंजीनियरिंग का सामान, हथकर्घे के वस्त्र, क्वायर से बनी वस्तुएं, खेल का सामान और चमड़े तथा रबर की चीजों सहित प्रदर्शित की जायंगी।

—अमरीकी सहायता से सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत बोकारो में दो करोड़ रुपये की लागत से भारत का सबसे बड़ा चौथा इस्पात कारखाना स्थापित होगा। १०० करोड़ रुपये विदेशों से आवश्यक सामग्री पर व्यय होगा। यह कारखाना इस्पात का वार्षिक उत्पादन १० लाख टन तक करेगा।

## गुजरात में कोयले की खान का पता लगा

गुजरात में तेल क्षेत्रों की प्राप्ति के साथ साथ कोयले के बड़े भंडार का भी पता चला है जो गुजरात को उद्योग सम्पन्न राज्य बनाने में उपयोगी होगा।

—'स्टेट बैंक आफ इण्डिया' की एक योजना के अंतर्गत छोटे पैमाने पर देश में चलने वाले २६३३ औद्योगिक इकाइयों को मार्च १९६२ तक ९ करोड़ रुपए का ऋण देगा।

—तीसरी योजना में रूरकेला इस्पात कारखाने के इस्पात का उत्पादन १० लाख टन से १८ लाख टन प्रति वर्ष बढ़ाने के लिये कारखाने का विस्तार किया जा रहा है।

—मार्च १९६१ तक भारत में २६१०८ रजिस्टर्ड कम्पनियां थी, जिनकी प्रदत्त पूंजी १७२५ करोड़ रुपया है। इन कम्पनियों में विदेशी कम्पनियों की पूंजी ७० प्रतिशत से भी ऊपर है और राष्ट्रीय पूंजी ३० प्रतिशत से भी कम।

—दक्षिणी भारत में कावेरी और भवानी नदियों में बाढ़ और केरल में बाढ़ के साथ-साथ समुद्री कटाव का खतरा बढ़ता ही जा रहा है। जान-माल की क्षति बहुत अधिक हो रही है। लगभग एक लाख नागरिकों के जीवन पर बुरा असर पड़ा है। देश की आर्थिक अवस्था पर यह घातक प्रहार है।

—बर्मा सरकार ने भारतीयों के भारत में मनीआर्डर द्वारा रुपया भेजने पर रोक लगा दी है। बर्मा से प्रतिवर्ष ३३ हजार व्यक्ति मनिआर्डर द्वारा भारत में रुपया भेजते थे।

—भारत के विचार जानने के लिए ब्रिटेन के वायु मंत्री पीटर थार्नी क्राफ्ट १२ जुलाई को यहां आ रहे हैं। वे भारत सरकार से यह जानना चाहेंगे कि यदि ब्रिटेन यूरोप के कामन मार्केट का सदस्य बन जाय तो भारत पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी।

—भारत के वित्त मंत्री उस प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व करेंगे, जो ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि से इस प्रश्न पर विचार विनिमय करेगा। राष्ट्रमंडल के देश जिस तरह ब्रिटेन के कामन मार्केट में प्रवेश का विरोध कर रहे हैं उसे देखते हुये यह असंभव नहीं है कि ब्रिटेन कॉमन मार्केट में प्रवेश का विचार ही स्थगित करदे अथवा कॉमन मार्केट के संगठन में ही कुछ ऐसे संशोधन कर दे, जिससे राष्ट्रमंडल के देशों को अपने निर्यात व्यापार में किसी तरह की बाधा न हो।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अहिंसक समाज रचना की मासिक

# खादी पत्रिका

- खादी ग्रामोद्योग तथा सर्वोदय विचार पर विद्वतापूर्ण रचनाएं।
- खादी ग्रामोद्योग आन्दोलन की देशव्यापी जानकारी।
- कविता, लघुकथा, मील के पत्थर, साहित्य-समीक्षा, संस्था परिचय।
- सांख्यिकी पृष्ठ आदि स्थायी स्तम्भ।
- आकर्षक मुखपृष्ठ : हाथ कागज पर छपाई।

संपादक

**ध्वजाप्रसाद साहू**

**जवाहिरलाल जैन**

वार्षिक मूल्य ३) रु०, एक प्रति पच्चीस नये पैसे

राजस्थान खादी संघ पो० खादीबाग (जयपुर)



# 'भारत व्यापार पत्रिका' की विशेषताएँ

पृष्ठ सं. १०० वार्षिक चंदा ८) साधारण अंक ७५ न. पै.

- उद्योगपतियों एवं व्यापारियों के लिए उपयोगी सामग्री
- व्यापारिक भविष्यवाणी
- एक विज्ञापन मुफ्त छापने की योजना
- अर्थशास्त्र के छात्रों के लिए अनेक जानकारी
- मनोरंजन के लिए आकर्षक कहानी, गंगा की लहरें स्तम्भ में व्यंग विनोद तथा सामयिक कार्टून
- सम्पादक की डाक में आपके प्रश्नोत्तर
- इसके अलावा अनेकों स्थाई स्तम्भ

अगर आपने अब तक पत्रिका नहीं देखी है तो आज ही इस विज्ञापन की कटिंग के साथ २५ नये पैसे का पोस्टेज भेजकर नमूना मंगाइये। विज्ञापन दर तथा जानकारी के लिए लिखें—

**व्यवस्थापक, भारत व्यापार पत्रिका (मासिक)**

राजा दरवाजा, वाराणसी

तार-केनाको पो० बा० नं० ४९ फोन-३३१३



# ग्राम राज

(मास में तीन बार प्रकाशित)

सम्पादक : श्रीगोकुलभाई भट्ट

"ग्रामराज बहुत ही शानदार और बहुत ही सुन्दर पत्र निकल रहा है। सब तरह की जानकारी इसमें रहती है। राजस्थान के हर शिक्षित भाई बहन के हाथ में यह पत्रिका होनी चाहिए।"

—विनोबा

वार्षिक चन्दा तीन रुपया

**कार्यालय का पता :—ग्रामराज, किशोर निवास, त्रिपोलिया, जयपुर**



सबसे सस्ता सचित्र हिन्दी मासिक

# जागृति

जिसे राष्ट्र भाषा के सभी प्रमुख लेखकों, कवियों, और कहानीकारों का सहयोग प्राप्त है।

उत्प्रेरक कविताएं, ज्ञानवर्धक लेख, सांस्कृतिक निबंध, रोचक कहानियां, बाल संसार, साहित्य आगे बढ़ता है आदि स्तम्भ

तिरंगा आवरण, अनेकों इकरंगे चित्र

४८ से ५६ पृष्ठ की सम्पूर्ण छपाई आर्ट पेपर पर

इस पर भी मूल्य केवल २५ नए पैसे

एजेंटों को ५ से १०० प्रतियों पर २५ प्रतिशत और इससे ज्यादा पर ३३⅓ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है। डाक खर्च प्रकाशकों के जिम्मे। ऐजेन्ट नमूने की प्रति के लिए आज ही लिखें।

व्यवस्थापक—'जागृति' हिन्दी लोक सम्पर्क विभाग, पंजाब, चंडीगढ़


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आर्थिक राजनैतिक अनुसंधान विभाग का पाक्षिक पत्र

# आर्थिक समीक्षा

प्रधान सम्पादक : श्री सादिकअली

सम्पादक : श्री महेन्द्र मेहरा

- हिन्दी में अनूठा प्रयास
- आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख
- आर्थिक सूचनाओं से ओतप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक, पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक।

वार्षिक मूल्य : ५) रु० एक प्रति २२ नये पैसे

लिखें—व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

**अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी,**

७, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली



# "राष्ट्र-भारती"

सम्पादक—मोहनलाल भट्ट, हृषीकेश शर्मा

वार्षिक चन्दा मनीआर्डर से ६) रु;

नमूने की प्रति ६२ नये पैसे

इसमें आपको लब्धप्रतिष्ठ-विद्वान साहित्यकारों के ज्ञान-पोषक और मनोरंजक अच्छे-अच्छे लेख, कविताएं, कहानियां एकांकी, रेखाचित्र, शब्दचित्र आदि रचनायें पढ़ने को मिलेंगी।

इसमें संस्कृत, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं की तथा अंग्रेजी, रशियन आदि विदेशी भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं के सुन्दर हिन्दी अनुवाद भी रहते हैं।

आज ही मनीआर्डर द्वारा ६) भेजकर ग्राहक बन जाइये।

रियायत—स्कूल-कालेजों, सार्वजनिक पुस्तकालयों तथा वाचनालयों को केवल ५) वार्षिक चन्दे में मिलेगी।

पत्रव्यवहार का पता—

**व्यवस्थापक—"राष्ट्रभारती"**

हिन्दी नगर, वर्धा

(राष्ट्रभाषा प्रचार समिति)



# भारत की औद्योगिक नीति

भारत के आर्थिक विकास और औद्योगिक उन्नति का सर्वाधिक महत्व है। पर भारत सरकार की उद्योग नीति क्या है—सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के लिए किस तरह दोनों का विभाजन किया गया है, आदि बातें समझने के लिए प्रो० रामनरेशलाल द्वारा लिखित—

**भारत की औद्योगिक नीति**

को पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। इसमें भारत के औद्योगिक विकास के इतिहास का भी योग्य लेखक ने विद्यार्थियों की दृष्टि से उपयोगी और सुन्दर परिचय दिया है।

६२ न. पै. के टिकट भेजने पर पुस्तक अण्डर पोस्टल सर्टिफिकेट भेजी जायगी।

मैनेजर—अशोक प्रकाशन मन्दिर,

२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६



# उद्योग-व्यापार पत्रिका

देश में उद्योग और व्यापार को आगे बढ़ाने के लिये क्या हो रहा है और आप इससे किस तरह फायदा उठा सकते हैं? देश में क्या-क्या चीजें और कितने परिमाण में कहाँ-कहाँ बन रही हैं और आप क्या बना कर अच्छी कमाई कर सकते हैं? तरह-तरह के व्यापार की देश-विदेश में क्या दशा है? पंच-वर्षीय योजना से हमारी क्या उन्नति हो रही है? ये सभी प्रश्न ऐसे हैं, जिनके उत्तर आपको अवश्य जानने चाहिएँ, और इन सबकी जानकारी पाने का श्रेष्ठ साधन है—उद्योग व्यापार पत्रिका। इसलिये आप ६ रु० भेजकर साल भर के लिये आज ही ग्राहक बन जाइये। नमूना पत्र लिखकर मंगाइये।

एजेन्टों को भरपूर कमीशन।

पत्रिका विज्ञापन देने का अच्छा साधन है।

**वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,**

**भारत सरकार, नई दिल्ली**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


संचालक पंचायत राज विभाग उ० प्र०
की
विज्ञप्ति संख्या ४।५५८० : २७।३३।५३, दिनांक १५
द्वारा
पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत

# सुन्दर पुस्तकें

| | | रु० | आ० |
|---|---|---|---|
| वेद सार | प्रो० विश्वबन्धु | १ | ८ |
| प्रभु का प्यारा कौन ? (२) भाग | | | |
| सच्चा सन्त | | | ३ |
| सिद्ध साधक कृष्ण | | | ३ |
| जीते जी ही मोक्ष | | | ३ |
| आदर्श कर्मयोग | | | ३ |
| विश्व-शांन्ति के पथ पर | | | १ |
| भारतीय संस्कृति | प्रो० चारुदेव | | ३ |
| बच्चों की देखभाल | प्रिंसिपल बहादुरमल | १ | १२ |
| हमारे बच्चे | श्री सन्तराम बी. ए. | ३ | १३ |
| हमारा समाज | | ६ | |
| व्यावहारिक ज्ञान | | २ | १२ |
| फलाहार | | १ | ४ |
| रस-धारा | | ० | १४ |
| देश-देशान्तर की कहानियां | | १ | |
| नये युग की कहानियां | | १ | १२ |
| गल्प मंजुल | डा० रघुबरदयाल | १ | |
| विशालभारत का इतिहास | प्रो० वेदव्यास | ३ | ८ |

१० प्रतिशत कमीशन और ५० रु० से ऊपर के आदेशों पर १५ प्रतिशत कमीशन।

विश्वेश्वरानन्द पुस्तक भंडार
साधु आश्रम, होशियारपुर, पंजाब



# सुभाषित रत्नमाला

## दूसरा संस्करण

सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

७ वर्ष पूर्व इस पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ था और हाथों-हाथ बिक गया था। कई वर्षों से पुस्तक अप्राप्य थी और इसकी माँग निरंतर बढ़ रही थी! अब परिवर्धित संस्करण आकर्षक रूप-सज्जा में प्रकाशित हुआ है इस संग्रह में—

- वैदिक एवं संस्कृत साहित्य के अगाध भण्डार से चुने गये ऐसे सरल-सुन्दर श्लोक और मंत्र, जिन्हें छोटे बच्चे भी सुविधापूर्वक कण्ठस्थ कर सकते हैं।
- श्लोकों और मन्त्रों का सरल-सुबोध हिन्दी में अर्थ।
- पुस्तक के अन्त में अर्थ-सहित कुछ ऐसी सूक्तियाँ, जिनके उपयोग विद्यार्थी अपने निबन्धों में कर सकें।
- आपके बच्चों के स्वस्थ मानसिक विकास और उनमें नैतिक चेतना जगाने के लिए अनिवार्य।
- उपहार और पुरस्कार में देने के लिए बहुत उपयुक्त।

मूल्य एक प्रति १.१५ रु०। 'सम्पदा' के ग्राहकों से १ रु. प्राप्त होने पर 'बुक पोस्ड अन्डर पोस्टेल सर्टिफिकेट' द्वारा भेजी जाएगी।

अशोक प्रकाशन मन्दिर
२८/११, शक्तिनगर,
दिल्ली-६


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पश्चिम रेलवे

# शीघ्र यातायात सेवा

पश्चिम रेलवे बम्बई और अहमदाबाद, इन्दौर, नई दिल्ली और अन्य स्थानों के मध्य अपनी यातायात सेवाओं में शीघ्रता ले आई है ।

महत्वपूर्ण मार्गों पर सप्ताह में रविवार को छोड़कर शेष सभी दिनों शीघ्र यातायात सेवा सुलभ है, जबकि दूसरी रेलों में सप्ताह में दो अथवा तीन दिन की सेवा मिलती है । बुकिंग और डिलीवरी के दिनों सहित यातायात का समय :

| सेवा परिचय | | यातायात का समय |
|---|---|---|
| ब्रौड गेज | | |
| कर्नाक ब्रिज | नई दिल्ली | ५ दिन |
| ,, | अहमदाबाद | ३ दिन |
| ,, | इन्दौर | ४ दिन |
| ,, | सूरत | ३ दिन |
| ,, | बेलनगंज | ६ दिन |
| नई दिल्ली | कर्नाक ब्रिज | ५ दिन |
| ,, | अहमदाबाद | ६ दिन |
| बेलनगंज | कर्नाक ब्रिज | ६ दिन |
| अहमदाबाद | कर्नाक ब्रिज | ४ दिन |
| इन्दौर | कर्नाक ब्रिज | ५ दिन |
| सूरत | कर्नाक ब्रिज | ३ दिन |
| अहमदाबाद | नई दिल्ली | ६ दिन |
| मीटर गेज | | |
| अजमेर | जयपुर | २ दिन |
| जयपुर | अजमेर | २ दिन |

कर्नाक ब्रिज से शीघ्र माल यातायात भाड़े आदि के विवरण के लिये और माल बुकिंग के लिये कृपया गुड्स सुपरिन्टेन्डेंट कर्नाक ब्रिज से मालूम कीजिये ।

## पश्चिमी रेलवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Regd No. D. 361


# राजस्थान हस्तकला का केन्द्र है

राजस्थानी कला के नमूने खरीदकर अपने घरों को

सुशोभित कीजिए

तथा

## गृह उद्योगों को प्रोत्साहन दीजिये !

* हाथी दांत के खिलौने
* लाख व नगीनों के कंगन
* बंधाई व छपाई के स्कार्फ
* जोधपुर की बनी शीतल जल की झारियां
* चन्दन की लकड़ी के खिलौने
* रंगी एवं बंधेज की साड़ियां
* पक्के रंग की चादरें
* लकड़ी एवं खस की बनी वस्तुएं
* कलापूर्ण सामान
* नीले व सफेद पाटरी के सामान
* आकर्षक नमूने की दरियां
* सांगानेरी रंगाई व छपाई के वस्त्र
* उदयपुर के सुन्दर लकड़ी के खिलौने
* जयपुर की कसीदा की हुई जूतियां व जूते
* जयपुर की प्रसिद्धि प्राप्त चूड़ियां व चूड़े
* कोटा के सुन्दर डोरिये

## प्रत्येक सरकारी विक्रय केन्द्र पर प्राप्त

राजस्थानी हस्तकला के नमूने अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भी

ख्याति प्राप्त कर चुके हैं !

राजस्थान हैन्डीक्राफ्ट्स एम्पोरियम
क्वींन्स वे लेन, नई दिल्ली

राजस्थान हैन्डीक्राफ्ट्स एम्पोरियम
जयपुर, जोधपुर, उदयपुर

## राजस्थान राज्य द्वारा प्रचारित


सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीजिज ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित

अशोक प्रकाशन मन्दिर, २८/१०, अजमेरी गेट, दिल्ली-६ से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

D. 361

# सम्पदा

अर्थशास्त्र की नवीनतम गतिविधियों की
मासिक पत्रिका
अगस्त १९६१

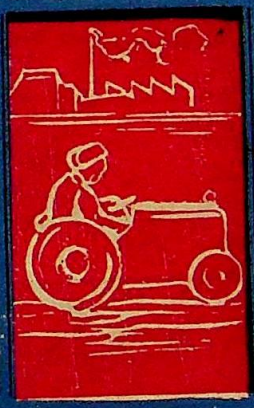

अशोक प्रकाशन मन्दिर शक्ति नगर दिल्ली

मूल्य
७५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# डालमिया

काश्म Stoneware एवं मृच्छिल्प Porcelain निर्मितियाँ (Products)

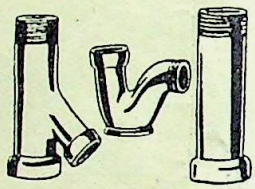

काश्म-नाल Stoneware Pipes
अधोभूमि जलोत्सारण के लिए

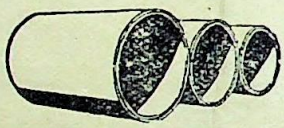

वज्रचूर्ण-अयस्संघा-नाल
( R. C. C. Spun Pipes )
पुलियाओं, जल-प्रदाय
और जलोत्सारण के लिए

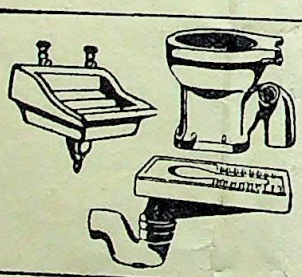

मृत्सा ( Porcelain )
आरोग्य पात्र ( Sanitary Wares )
भारतीय और यूरोपीय शौच-कुण्ड
( Water Closets )
धावन पात्री ( Wash Basins )
मूत्र-कुण्ड ( Urinals ) इत्यादि

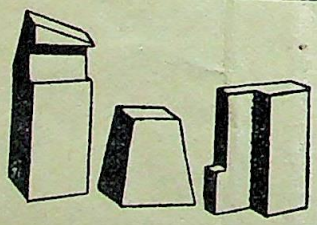

ऊष्मसह ( Refractories )
समस्त औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए

पोर्टलैण्ड सिमेंट
सामान्य निर्माण के लिये

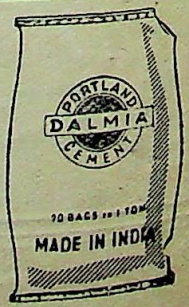


डालमिया सिमेंट ( भारत ) लिमिटेड
डालमियापुरम् ( तिरुचिरापल्ली )


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# गुजरात का दर्शन कीजिए

मोधरा में भव्य भवन निर्माण कला वाले प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर को देखने के लिए आइए ।

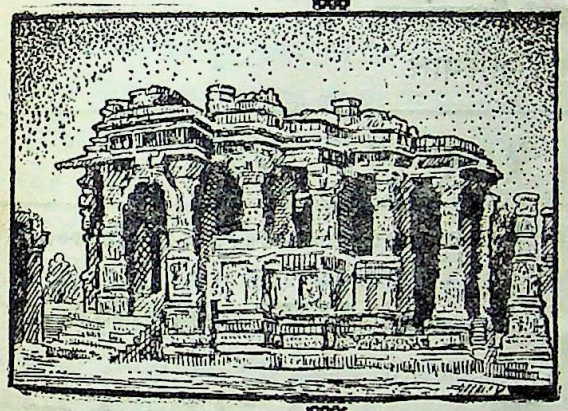

मोधरा, जिला महसाना में प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर है, जो भवन निर्माण कला की उत्कृष्टता से परिपूर्ण है। सूर्य की प्रमुख मूर्ति आज लुप्त है, परन्तु अनेक बड़ी मूर्तियां आज उपलब्ध हो सकी हैं। पिछले मध्यकालीन युग में सूर्य की पूजा बहुत प्रचलित थी। बहुत प्रसिद्ध मन्दिरों में से यह एक मन्दिर है।

यह मन्दिर १०२६-२७ ई० में बनाया गया था और सूर्य या सूर्यदेव को समर्पित किया गया था। मोधरा पाटन से दक्षिण में १८ मील और अहमदाबाद से ६० मील दूर है।

गुजरात राज्य के दर्शनीय और भ्रमण योग्य स्थानों की जानकारी के लिए 'गुजरात देखिये' नामक पुस्तक (मूल्य रु० १.००) पढ़िए, जिसके प्रकाशक हैं—

सूचना संचालक, सचिवालय अहमदाबाद-१५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| सम्पादकीय | ४६१ | आर्थिक विकास की सम्भावनाएं और निजी क्षेत्र | ४८७ |
| भारत में आर्थिक विकास के विविध पक्ष | ४६६ | भारत का वस्त्र-उद्योग अवनति की ओर ! | ४८९ |
| ब्रिटेन का कॉमन मार्केट में प्रवेश | ४६९ | तीसरी योजना में ग्रामोद्योग | ४९१ |
| आर्थिक स्वतंत्रता नवोदित राष्ट्रों के लिए आवश्यक | ४७१ | भारतवर्ष की श्रमिक समस्या | ४९३ |
| समाजवाद और साम्यबाद क्या है ? | ४७३ | स्वावलम्बनपूर्ण आर्थिक विकास | ४९५ |
| भारतीय जहाजरानी का विकास | ४७५ | पश्चिमी रेलवे का आर्थिक विकास में योगदान | ४९९ |
| तीसरी योजना में अपर्याप्त व्यवस्था | ४७७ | इंजीनियरिंग के सामान का निर्यात और कठिनाइयां | ५०२ |
| एशियायी जहाजरानी उद्योगों का अग्रणी : | | नया साहित्य | ५०४ |
| हिन्दुस्तान शिपयार्ड, लिमिटेड | ४७९ | रूस का नया २० वर्षीय कार्यक्रम | ५०५ |
| भारत का नया और बड़ा बन्दरगाह : कांदला | ४८१ | सांख्यिकी | ५०६ |
| समुद्रतटीय पोतचालन की समस्याएं | ४८२ | मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएँ | ५०८ |


• • •

सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

सहायक सम्पादक : देवीप्रसाद नौटियाल

नये विशेषांक पृष्ठ ५०९ पर पढ़िये


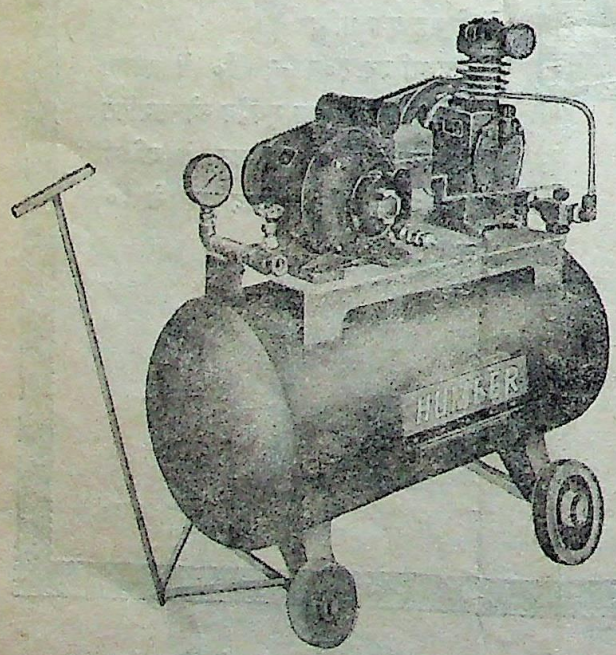


★ एयर कम्प्रेसर्स

★ स्प्रे पेंटिंग के साधन

★ कार वाशर

★ वैक्युम पम्प

डीडवानिया ब्रादर्स (प्रा.) लि.

कश्मीरी गेट दिल्ली-६ ।

टेलीफोन : २३८१८

टेलीग्राम : डीडवानिया


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# सम्पदा

वर्ष : १०

अंक : ८

अगस्त १९६१ (स्वाधीनता दिवस)


## स्वाधीनता के चौदह वर्ष

भारत को स्वाधीन हुए आज १४ वर्ष बीत गये, इन वर्षों में भारत ने दूसरे किसी क्षेत्र में—राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक और नैतिक क्षेत्र में उन्नति की हो या न की हो, आर्थिक क्षेत्र में कल्पनातीत उन्नति अवश्य की है।

आर्थिक उन्नति के प्रमाण वे अंक हैं, जो राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय के हैं। इन दस वर्षों में दोनों अंक ९१०० करोड़ रु० तथा २५० रु० से बढ़कर १४५०० करोड़ तथा ३३० रु० हो गये हैं। प्रत्येक भारतीय की औसत आयु भी बढ़ गई है।

औद्योगिक विकास के अंकों का विवरण देने का यहां स्थान नहीं है। शब्दभेदी विमान और आणविक रिएक्टर, लोहे के भारी सयंत्र, भारी मशीनरी के कारखाने तथा सैकड़ों इंजीनियरिंग पदार्थों की दिशा में हमने पर्याप्त उन्नति की है। उन्नति यह ऐसी उन्नति है, जिस पर हमारा देश गर्व कर सकता है। स्वाधीनता दिवस के हर्ष और उल्लास के क्षणों में हम राष्ट्र और प्रत्येक नागरिक का अभिनन्दन करते हैं।

❀ ❀ ❀ ❀

किन्तु इस सुनहरी तस्वीर का एक दूसरा भी पहलू है। देश के सुदूर अन्तर्वर्ती ग्रामों में आज भी १०-१५ रु० वार्षिक आय वालों की संख्या कम नहीं है। वे सत्तू और लस्सी पीकर अपना पेट भरते हैं, शरीर को ढंकने के लिए उनके पास दो धोती तक नहीं हैं। दूध, घी या दही उनके लिए बहुत दूर की वस्तु है।

हम स्वाधीनता के १४वें वर्ष में तीसरी पंचवर्षीय योजना आरंभ कर रहे हैं, जिसके लक्ष्य ११६ अरब रु० से भी ऊपर है। क्या सर्वोदय के आचार्य महात्मा गांधी के भारत में विकास योजनाओं में हम अन्नोदय को प्राथमिकता देंगे? बड़े-बड़े नगरों को और भी भव्य व शानदार बनाने से पहले एक-एक गांव में कच्ची सड़कें, कच्चे झोंपड़े, एक-एक कुआं व पाठशाला खोलने का दृढ़ संकल्प करेंगे? मध्यम वर्ग या सम्पन्न वर्ग की आय और जीवनस्तर को ऊंचा करने से पहले जंगलों में रहने वाले दीन-हीन भारतीय नागरिक को दो जून रोटी पहुँचाने को प्राथिकता देंगे? भिलाई और दुर्गापुर जैसे लोहे के कारखाने खोलने से पहले गरीब देहाती को ग्रामोद्योग देकर कुछ संतोष देने को अधिक महत्व देंगे?

❀ ❀ ❀ ❀

स्वाधीनता के १४वें वर्ष हम यह दृढ़ संकल्प करें कि इस तीसरी योजना में हम पहले दलित और उपेक्षित दीन-हीन का जीवनभार ऊंचा करेंगे और तब शहरों के मध्यम व सामान्य वर्ग की चिन्ता करेंगे।

तीसरी पंचवर्षीय योजना की सफलता की यही सच्ची कसौटी होगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आर्थिक विकास की तृतीय पंचवर्षीय योजना

दो वर्षों के निरन्तर अध्ययन, विचार-विनियम और अथक परिश्रम के बाद योजना आयोग ने ७७० पृष्ठ की एक बृहत्त आकार की तीसरी पंचवर्षीय योजना प्रकाशित कर दी।

इस योजना का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय आय में प्रतिवर्ष ५ प्र० श० की वृद्धि अर्थात् १४५०० करोड़ रुपये से बढ़ा कर तीसरी योजना के अन्त तक १९००० करोड़ रुपया और प्रति व्यक्ति आय ३३० रु० से बढ़ाकर ३८५ रु० करना है।

योजना के दूसरे उद्देश्यों में देश को अन्न के सम्बन्ध में न केवल स्वावलम्बी बनाना, किन्तु निर्यात के लिए भी आवश्यक उत्पादन, इस्पात, रासायनिक उद्योग, ईंधन और बिजली तथा मशीन निर्माण आदि उद्योगों का विकास जन-शक्ति का अधिकतम उपयोग आदि का समावेश है।

योजना का एक उद्देश्य सब लोगों को उन्नति के समान अवसर देना तथा आर्थिक शक्ति के अधिक वितरण के द्वारा आय तथा सम्पत्ति के भेद को कम करना है।

योजना के उक्त उद्देश्यों को पूरा करने के लिए तीसरी योजना के लक्ष्य ७५ सौ करोड़ रुपया सरकारी क्षेत्र में तथा ४३०० करोड़ रुपया निजी क्षेत्र में व्यय किए जाएंगे।

इस पंचवर्षीय योजना के पूर्ण होने पर जो लक्ष्य पूर्ण होंगे उन में से कुछ मुख्य निम्नलिखित हैं :—

| मद | इकाई | ६०-६१ | ६५-६६ | ६०-६१ की अपेक्षा ६५-६६ में वृद्धि का प्र.श. |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| अनाज उत्पादन | लाख टनों में | ७६० | १००० | ३२ |
| कुल सिंचित क्षेत्र | लाख एकड़ में | ७०० | ९०० | २९ |
| इस्पात में पिंडों का उत्पादन | लाख टनों में | ३५ | ९२ | १६३ |
| मशीनी औजार | करोड़ रु. में | ५.५ | ३ .० | ४४५ |
| पेट्रोल के उत्पादन | लाख टनों में | ५७ | ९९ | ७० |
| कपड़ा : | | | | |
| मिल का | लाख गजों में | ५१२७० | ५८००० | १३ |
| हथ करघे का, बिजली-करघे का और खादी | ,, | २३४९० | ३५००० | ४९ |
| खनिज : | | | | |
| कच्चा लोहा | लाख टनों में | १०७ | ३०० | १८० |
| कोयला | ,, | ५४६ | ९८७ | ७६ |
| निर्यात | करोड़ रुपयों में | ६४५ | ८५० | ३२ |
| बिजली की क्षमता | लाख कि. वा. में | ५७ | १२७ | १२३ |
| रेलवे माल ढुलाई | लाख टनों में | १५४० | २४५० | ५९ |
| जहाजरानी की क्षमता | लाख जी. आर. टी. | ९.० | १०.० | २१ |
| सामान्य शिक्षा : | | | | |
| स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या | लाखों में | ४३५ | ६३९ | ४७ |
| उपभोग स्तर : | | | | |
| खाद्य | प्रतिदिन दिन प्रति-व्यक्ति कैलोरी | २१०० | २३०० | १० |
| कपड़ा | प्रति वर्ष प्रति-व्यक्ति गज में | १५.५ | १७.२ | ११ |

इन लक्ष्यों को पूर्ण करने के लिए आर्थिक साधनों का निम्न प्रकार वितरण किया गया है।

| | करोड़ रु० में | प्र० श० |
|---|---|---|
| कृषि और सामुदायिक विकास | १०६८ | १४ |
| सिंचाई योजना | ६५० | ९ |
| बिजली | १०१२ | १३ |
| ग्राम और छोटे उद्योग | २६४ | ४ |
| बड़े उद्योग और खनिज | १५२० | २० |
| परिवहन और संचार | १४६६ | २० |
| सामाज सेवाएं | १३०० | १७ |
| कच्चा और अर्ध तैयार माल | २०० | ३ |
| कुल | ७५०० | १०० |

योजना में सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों को एक दूसरे का पूरक बताते हुए सरकारी क्षेत्रों और सहकारिता के क्षेत्र को बढ़ाने पर बल दिया गया है। निजी क्षेत्र के बारे में भी यह आशा प्रकट की गई है कि वह निरन्तर सहकारी रूप धारण करता जायेगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांव में सामुदायिक स्तर पर समाजवाद का विस्तार करने के लिए सामुदायिक विकास और पंचायत राज्य पर अधिक बल देने के लिए कहा गया है। शहरी क्षेत्रों में भी सामाजिक नीति अपनाने, बड़े पैमाने पर भूमि सरकारी अधिकार में लेने, कम आय वालों को सहायता देने, पूंजीगत आय और शहरी सम्पत्ति पर कर लगाने के सुझाव इसी योजना में दिये गये हैं। आर्थिक शक्ति को कुछ हाथों में केन्द्रित होने से बचाने पर योजना में विशेष बल दिया गया है और कहा गया है कि अब ऐसी आवश्यकता आ गई है कि समाजवादी समाज के लक्ष्य को प्राप्त करने की रफ्तार तेज की जाय। योजना आयोग एक ऐसा समाज स्थापित करना चाहता है, जिसमें जातीय, वर्ग और विशेषाधिकार न हों और जिसमें प्रत्येक को उन्नति करने के पूर्ण अवसर दिए जायें।

विकास की योजना का आधार यह भी रखना चाहिए कि विकास का लाभ विकास की गति को कम किये बिना सभी प्रदेशों को प्राप्त हो।

योजना में इस आवश्यकता को अनुभव किया गया है कि जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक वस्तुओं के मूल्य आवश्यक रूप से न बढ़ें।

## साधन

साधन सम्बन्धी प्रकरण में साधनों का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है :—

करोड़ रुपयों में

| | केन्द्र | राज्य | कुल |
|---|---|---|---|
| १. चालू राजस्व से प्राप्त | ४१० | १४० | ५५० |
| २. रेलों का अंश दान | १०० | — | १०० |
| ३. सरकारी कारखानों से लाभ | ३०० | १५० | ४५० |
| ४. सार्वजनिक ऋण | ४७५ | ३२५ | ८०० |
| ५. छोटी बचत | २१३ | ३८७ | ६०० |
| ६. भविष्य निधि | १८३ | ८२ | २६५ |
| ७. इस्पात प्रतिधारण निधि | १०५ | — | १०५ |
| ८. विविध | ४२८ | २५८ | १७० |
| ९. १ से ८ तक का जोड़ | २२१४ | ८२६ | ३०४० |
| १०. अतिरिक्त कर और सरकारी कारखानों से अतिरिक्त लाभ | ११०० | ६१० | १७१० |
| ११. विदेशी सहायता का अनुमान | २२०० | — | २२०० |
| १२. घाटे का अर्थ व्यवस्था | ५२४ | २६ | ५५० |
| कुल जोड़ | ६०३८ | १४६२ | ७५०० |

तीसरी योजना में आशा प्रकट की गई है कि राज्य सरकारें १४६२ करोड़ रुपये जुटा सकेंगी। केन्द्रीय सरकार राज्यों की योजना के लिए २३७५ करोड़ रुपया सहायता देगी।

तीसरी योजना में १७०० करोड़ रुपये के नये कर लगाये जायेंगे। इनमें से ६१० करोड़ रु० राज्य सरकारें लगायेंगी और शेष केन्द्र। नये करों का एक उद्देश्य देश की आन्तरिक खपत को कम करना बताया गया है।

निजी क्षेत्र में ४३०० करोड़ रु० की पूंजी एकत्र होने की संभावना है। इसमें से खेती पर ८५० करोड़ रु० बड़े और मध्यम उद्योगों पर ११०० करोड़ रु०, मकानों और अन्य इमारती कामों पर ११२५ करोड़ रु०, यातायात पर २५० करोड़ रु०, ग्राम और लघु उद्योगों पर ३२५ रुपये, कच्चे तथा अर्ध तैयार माल पर ६०० करोड़ रुपया व्यय होने का अनुमान है।

विदेशी मुद्रा की आवश्यकता २७५० करोड़ रु० की कूती गई है, जिसमें से ३७०० करोड़ रु० निर्यात से तथा २६०० करोड़ रु० विदेशी सहायता से प्राप्त होने की आशा की गई है।

तीसरी योजना में १७० लाख श्रमिकों की संख्या बढ़ेगी, जिसमें से १४० लाख लोगों को काम मिल सकेगा। दूसरी योजना के अन्त तक भी ५३ लाख बेकार थे। इस तरह ८०-९० लाख लोग तीसरी योजना के अन्त तक भी बेकार रहेंगे।

योजना के अन्त में जन सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया गया है। ● ●

## आगामी विशेषांक

तीसरी पंचवर्षीय योजना का संक्षिप्त रूप पाठकों ने पढ़ लिया। इस सम्बन्ध में विस्तृत प्रामाणिक विवरण और विविध अंगों पर विवेचनात्मक लेख 'सम्पदा' के आगामी विशेषांक में पढ़िये, जो सितम्बर में प्रकाशित होगा। इस अंक की एक प्रति १.७५ रु० भेजकर सुरक्षित करा लेंगे, तो पीछे से पछताना नहीं पड़ेगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## धीमी प्रगति का कारण

तीसरी पंचवर्षीय योजना की संक्षिप्त रूपरेखा हम ऊपर पढ़ चुके हैं। इसके विस्तृत विवेचन में न जाते हुए भी पाठकों और योजना निर्माताओं का ध्यान श्री शान्ति-प्रसाद जैन के उस भाषण की ओर खींचना चाहते हैं, जो उन्होंने पिछले दिनों कलकत्ते में इंडियन चेम्बर्स ऑफ कामर्स की त्रैमासिक बैठक में दिया था। उन्होंने संयुक्त राष्ट्रसंघ की इकॉनॉमिक सर्वे (१९६०) का हवाला देते हुए कहा था कि ३७ अविकसित और १५ विकसित राष्ट्रों के आर्थिक उन्नति के विवरण से ज्ञात होता है कि भारत की आर्थिक उन्नति पिछले दस वर्षों में ३ प्रतिशत वार्षिक की दर से हुई है, जबकि इजराइल में ११ प्रतिशत, ईराक में ९, बर्मा, फिलीपाइन्स और ब्राजील आदि में ६ प्रतिशत, दक्षिण अफ्रीका कांगों और घाना आदि में ५ प्रतिशत तथा थाईलैंण्ड, इण्डोनीशिया आदि में ४ प्रतिशत हुई है। जापान, पश्चिमी जर्मनी और इटली के लिए यह प्रतिशत क्रमशः ९, ७.५ और ५.७ प्रतिशत है। उन्होंने ठीक ही पूछा है कि भारत को विदेशों से विपुल आर्थिक सहायता मिल रही है। सरकार भारत में कृषि उत्पादन के भी उत्साहवर्धक आंकड़े पेश करती है और पंचवर्षीय योजनाओं पर अरबों रुपया खर्च कर रही है। तब भी इतनी कम उन्नति के क्या कारण हैं? इस प्रश्न पर हमें गंभीरता से विचार करना चाहिए। आखिर अमित साधनों के होते हुए भी हमारी प्रगति क्यों तीव्र नहीं है? यदि हम इस प्रश्न पर विशुद्ध व्यावहारिक तथा तर्क-संगत दृष्टि से बिना किसी वाद के आकर्षक शब्दजाल में बंधे हुए सही विचार कर सकें तो तीसरी योजना की पूर्ति में अधिक सफल हो सकेंगे।

## ध्वनिभेदी विमान

भारत औद्योगिक दृष्टि से भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में प्रगति कर रहा है। इसका एक प्रमाण बंगलौर के कारखाने में ध्वनिभेदी वायुयान का निर्माण है। यह वायुयान शब्द की गति से भी अधिक तेज चलता है। वैज्ञानिक तो इससे तेज गति वाला एक लड़ाकू विमान 'मार्क-२' बनाने में लगे हुए हैं। निस्संदेह यह समाचार अत्यन्त उत्साहवर्धक है और इस बात का सूचक है कि भारत का वैज्ञानिक और सार्वजनिक उद्योग यदि चाहे तो बहुत शीघ्र ही ऐसी सफलता प्राप्त कर सकता है, जिस पर देश गर्व कर सके।

## मध्यप्रदेश में उद्योग को नई सुविधाएं

किसी भी राज्य में उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिये यह आवश्यक है कि उस राज्य में प्रशासन नये उद्योगों को अधिक से अधिक सुविधाएं दे। मध्यप्रदेश के उद्योग-मंत्री श्री मंडलोई ने पिछले दिनों जिन सुविधाओं की घोषणा की है, वह सचमुच बहुत उत्साहवर्द्धक हैं। उद्योग के लिए निर्धारित सरकारी जमीन का प्रीमियम और लगान का स्टैण्डर्ड नियत कर दिया गया है। इन बस्तियों में अच्छी सड़कें, पानी, ट्रांसमिशन लाइन आदि की व्यवस्था की जायगी तथा इस भूमि पर उद्योग अपना स्वामित्व प्राप्त सकेंगे। प्रारंभिक वर्षों के लिए बिजली की दर बहुत कम ६ से ९ न० पै० तक रखी जायगी। स्वयं बिजली उत्पन्न करने वाले उद्योगों को १० न० पै० प्रति यूनिट सहायता दी जायगी। बिजली ड्यूटी में काफी छूट दी जायगी। दस वर्ष तक बिजली कर भी १ प्रतिशत के आधार पर लिया जायगा। इसी तरह चुंगी कर भी अधिक बढ़ने से रोका जायगा। सरकार कुछ आवश्यक उद्योगों की पूंजी के शेयर खरीदने पर भी विचार करेगी। इस तरह की सुविधाओं से मध्यप्रदेश में नये उद्योग के लिये मार्ग अवश्य प्रशस्त हो गया है। हमें आशा करनी चाहिये कि अन्य राज्य भी इस तरह की सुविधाएं नये उद्योगों को प्रदान करेंगे।

## चीनी की समस्या पर नये विचार

पिछले दिनों दो ऐसे संकेत मिले थे, जिनसे यह मालूम होता था कि भारत सरकार चीनी की समस्या पर व्यावहारिक दृष्टि से विचार कर रही है। एक के द्वारा यह प्रतीत होता था कि भारत सरकार चीनी उद्योग पर से यातायात आदि के नियंत्रण शिथिल कर देंगी। इससे चीनी उद्योग में परस्पर प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी और डेढ़ दो प्रतिशत तक मूल्यों में कमी की आशंका भी की जा सकती है। दूसरे संकेत द्वारा यह अनुमान किया गया था कि सरकारी अधिकारी गन्ने का मूल्य भी किसी न किसी रूप में कम



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के सुझावों पर विचार कर रहे हैं। एक सुझाव के अनुसार समस्त गन्ने का मूल्य रु० १·७५ न० पै० से कम किया जायगा। दूसरे सुझाव के अनुसार किसान कुल जितना गन्ना बेचें, उसके २० प्रतिशत के दाम कुछ कम लें ताकि विदेशों को चीनी कुछ सस्ती जा सके। तीसरे सुझाव के अनुसार गन्ने का मूल्य उसके वजन के आधार पर नहीं, गन्ने की मिठास के आधार पर नियत किया जाना चाहिये। मद्रास में गन्ने की मिठास १० प्रतिशत होती है, जबकि उत्तरप्रदेश में यह मिठास ९ और ९.५ प्रतिशत के बीच मिलती है। संभव है कि आगामी चुनावों को देखते हुए सरकार ऐसा कोई कदम न उठाये जिससे उसे गन्ना उत्पादक किसानों के मतों से हाथ धोना पड़े।

एक संकेत यह भी मिला था कि सरकार चीनी निर्यात का काम स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन को न देकर चीनी उद्योग संघ को दे दे। पाकिस्तान के साथ चीनी का सौदा रद्द हो जाने का यह स्वाभाविक परिणाम था।

## व्यापारिक संगठनों की लहर

योरुप में दो ऐसे संगठन बने हुए हैं, जिनके सदस्य परस्पर सहयोग से अपनी आर्थिक और औद्योगिक उन्नति करने में लगे हुये हैं। ये सदस्य अपने साथियों के माल पर तट कर समाप्त करके या बहुत कम करके एक दूसरे को सहयोग देना चाहते हैं। ब्रिटेन के कामन मार्केट में प्रवेश के प्रस्ताव के साथ ही इनकी चर्चा भारत में अधिक हुई है। इस प्रकार के आर्थिक संगठनों की प्रवृत्ति केवल योरुप में ही सीमित नहीं रही। दक्षिणपूर्वी एशिया के राष्ट्र भी फिलिपाइन, मलाया, थाईलैण्ड और इण्डोनेशिया आदि भी इस प्रकार का संगठन बनाने का विचार कर रहे हैं। आर्थिक दृष्टि से वे एक इकाई बन जाना चाहते हैं, जो परस्पर प्रतिसपर्धा से बच कर एक-दूसरे के सहयोग से अपनी-अपनी उन्नति कर सकें। अफ्रीका के नवोदित राष्ट्रों में भी इस प्रकार का आर्थिक संगठन बनाने की सम्भावना पर विचार किया जा रहा है। इस प्रकार के संगठन भविष्य में क्या परिणाम उत्पन्न करेंगे, यह आज निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। सम्भव है, यह संगठन स्वयं पुष्ट हो कर फिर एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन में परिणत हो जायें। तब विश्व में व्यापारिक प्रतिबन्ध बहुत कम हो जायेंगे, और समस्त विश्व सहयोग पूर्वक उन्नति कर सकेगा, बशर्ते कि साम्यवादी राष्ट्र भी इसमें सम्मिलित हो जायं। दूसरी सम्भावना यह भी हो सकती है कि इन संगठनों को इतना बल मिल जाय कि वे एक-दूसरे संगठन की प्रतिस्पर्धा में खड़े हो जायें, और तब किसी तरह का व्यापारिक और आर्थिक संघर्ष राजनीतिक संघर्ष में बदल जाय।

## आयोजना की त्रुटियां

श्री के० सन्तानम् एक लेख में लिखते हैं—"पिछले दो योजनाओं में ५,२०० करोड़ रु० से अधिक राशि सरकारी क्षेत्र में लगाई जा चुकी है। मुझे शक है कि योजना आयोग यह बता सकेगा कि इसमें से कितनी पूंजी-विनियोग कारगर हुआ है और कितना निष्फल गया है। करीब २९०० करोड़ रु० का प्रयोग केन्द्रीय क्षेत्र में हुआ है। राज्य सरकारों ने २३०० करोड़ रु० की राशि में से ९०० करोड़ रुपया स्थानीय निकायों को और तकावी ऋणों के रूप में दिया है। कोई आश्चर्य नहीं कि इस सारे पर पोचा ही फेरना पड़े। बाकी रक़म कालिजों, छात्रावासों, अस्पतालों, सड़कों व अन्य चीजों के निर्माण पर व्यय की गई है, जो निस्सन्देह उपयोगी तो है, किन्तु उससे राज्यों को कोई आमदनी नहीं होती। राज्यों में पूंजी का अधिक से अधिक लाभकारी उपयोग बहुउद्देश्यीय परियोजनाओं, पन-बिजली घरों और ताप बिजली घरों के निर्माण तथा सिंचाई की छोटी-छोटी योजनाओं में हुआ है। लेकिन मुझे लगता है कि इनसे इनमें लगाए गए पैसे का सूद भी वसूल होना मुश्किल है, मुनाफा बच रहने की तो बात ही अलग है।

"हमारी योजना का एक और दोष यह है कि हम यह मान लेते हैं कि उत्पादन का कोई भी कार्यक्रम ज़रूरी है, चाहे उस पर कितनी ही लागत आये। इससे हमारी सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था में लागत अनुमान से बढ़ जाना एक सामान्य बात हो गई है। भारत में ऐसी कोई भी चीज नहीं, जिसकी लागत विदेशों में बनी उसी चीज से अधिक न हो।"

क्या हम इन पंक्तियों पर ध्यान देंगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत में आर्थिक विकास के विविध पक्ष

श्री एच० वी० आर० अयङ्गार ( गवर्नर, रिजर्व बैंक आफ इण्डिया )

इस समय हमारे देश में आर्थिक विकास की जो चर्चाएं प्रायः हुआ करती हैं, उनमें एक बात मुख्य रूप से देखने में आती है कि लोग हमारे विकास की वर्तमान प्रगति पर टीका-टिप्पणी किया करते हैं। इस टीका-टिप्पणी का एक आसान उपाय लोगों ने यह अपना रखा है कि वे भारत की आय की प्रगति की तुलना जर्मनी और जापान में हुई प्रगति से करते हैं और कहते है कि जबकि ये देश असाधारण विकास कर रहे हैं, भारत में सफलता बहुत कम मिली है।

सचमुच इन देशों में असाधारण प्रगति हुई है। सन् १९५१ से, जबसे भारत ने प्रथम पंचवर्षीय योजना का कार्य अपने हाथों में लिया है, जर्मनी में राष्ट्रीय आय की औसत वृद्धि ७.५ प्रतिशत, जापान में लगभग ९ प्रतिशत और भारत में राष्ट्रीय आय में लगभग ३॥ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। किन्तु यह तुलना दोषपूर्ण और भ्रमात्मक है।

हर देश के पास उत्पादन का एक सीमित साधन होता है, जो बराबर उपयोग और उपभोग के लिए तरह-तरह के माल तैयार करते रहते हैं। ये साधन मुख्य रूप से, पूर्ण रूप से नहीं, एक ओर कृषि योग्य भूमि और खनिज तथा दूसरी ओर मशीनरी या पूंजीगत सामान होते हैं। जो कुछ उत्पादन किया जाता है, उसका एक भाग उत्पादनों के वर्तमान साधनों को कायम रखने के काम में लाया जाता है ताकि वे ठीक बने रहें, जैसे मशीनों को घिसाई से बचाना आदि। उत्पादन का अधिक भाग या तो सीधे उपयोग में लाया जाता है या उसको दूसरे देशों के सामानों से बदल लिया जाता है।

कुल उत्पादन और घिसाई तथा उपभोग के बीच जो कुछ बचा रहता है, वही समाज की बचत कहा जाता है। इन बचतों को एकत्र करने और उसको अन्य उत्पादन के प्रयासों में संगठित ढंग से लगाने के अनेक तरीके हैं। सरकार इन बचतों को करों द्वारा या ऋणों द्वारा एकत्र कर सकती है और इनका उपयोग बजट द्वारा या पूंजी-विनियोग द्वारा कर सकती है। लोग अपनी बचतों बैंकों में जमा कर सकते हैं और बैंक उत्पादन कार्यों के लिए इस धन को उधार दे सकता है। बचत धन को सीधे नयी कम्पनियों के शेयरों या डिबेंचरों में लगाया जा सकता है। इस प्रकार समाज की बचत को उत्पादन बढ़ाने के साधनों में लगाया जाता है।

## घाटे की अर्थव्यवस्था

जहां इन सभी उपायों का ताल-मेल ठीक ढंग से नहीं बैठता, जैसा कि भारत में हुआ है, तो दूसरे उपायों का सहारा लेना पड़ता है, जिसको सामान्य रूप से घाटे की अर्थव्यवस्था या डेफिसिट फाइनेंसिंग कहते है। जहां उपयोग में लाने के लिए वास्तविक साधन होते हैं—जैसे लौह, खनिज, कोयला और बेकार श्रमशक्ति, लेकिन उनसे लाभ उठा लेने की संगठित व्यवस्था करने के लिए पर्याप्त धन नहीं होता, वहां धन पैदा किया जाता है, मुद्रा बनाई जाती है। अर्थात् सरकारी प्रोनोटों के आधार पर नोट छापे जाते हैं ताकि इन साधनों को काम में लाया जा सके।

इस बात को निश्चित करने में काफी सावधानी रखनी पड़ती है कि जिस हद तक इस प्रकार की मुद्रा बनायी जाय उससे मुद्रास्फीति न हो जाय, लेकिन बहुत सावधानी रखने पर भी यह तरीका बचत को बढ़ाने का एक माकूल साधन बन जाता है। यदि समाज की बचत शून्य है तो देश प्रगति नहीं कर सकता, क्योंकि बचत उत्पादन कार्यों में लगायी जाती है और इसी से और उत्पादन बढ़ता रहता है।

विदेशी सहायता से भी बचत में कुछ जोड़ा जा सकता है जैसे कि हम लोगों की स्थिति है, लेकिन अन्ततः किसी देश का विकास चालू राष्ट्रीय आय में से की गयी बचत की मात्रा पर निर्भर है। अतिरिक्त पूंजी नियोजन से कितनी अतिरिक्त आय होती रहेगी, यह एक ऐसा प्रश्न है जो समस्याओं पर निर्भर करता है। एक प्रमुख अर्थशास्त्री ने हाल में ही कहा था कि इन दोनों में आपसी सम्बन्ध



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना अस्पष्ट है कि इनमें सम्बन्ध कहना मुश्किल मालूम पड़ता है, लेकिन कई देशों और कालों के अनुभवों से स्पष्ट है कि अतिरिक्त पूंजी विनियोग और अतिरिक्त आय में एक निश्चित अनुपात कायम किया जा सकता है।

## विनियोग और उत्पादन का अनुपात

जहां प्राविधिक कार्यकुशलता उच्च कोटि की है, वहां अतिरिक्त उत्पादन में पूंजी विनियोग का अनुपात कम पड़ता है, जिसे 'कैपिटल आउटपुट रेशियो' भी कहा जाता है। ऐसी स्थिति विशेष रूप से तब आयेगी, जब उत्पादक मशीनों का पूरा-पूरा उपयोग किया जायगा। जहां ये बातें न होंगी, जैसे कुछ आवश्यक औद्योगिक कच्चे मालों आदि की, वहां पूंजी विनियोग का अनुपात निस्सन्देह ऊंचा होगा।

कृषि के क्षेत्रों में तो भारत आज भी बहुत कुछ वर्षा पर निर्भर है, अतिरिक्त उत्पादन के अनुपात में पूंजी विनियोग वहां कम पड़ेगा। वहां किसान मेहनती हैं, खेती के नये तरीकों को अपनाने वाले हैं, अच्छे बीजों के उत्पादन और वितरण की व्यवस्था ठीक है और खाद तथा फसल की रक्षा का प्रबन्ध है। जहां इनमें से किसी सुविधा का अभाव है या व्यवस्था शिथिल है वहां उतनी ही पूंजी लगाने पर भी अतिरिक्त उत्पादन अपेक्षाकृत कम होगा। दूसरे शब्दों में 'कैपिटल आउटपुट रेशियो' ऊंचा होगा। विकसित और प्रगतिशील देशों का लक्षण यह होता है कि वहां बचत अधिक होती है। उदाहरण के लिए सन् १९५१ के बाद से जर्मनी में २० प्रतिशत बचत और जापान में २५ प्रतिशत बचत की गति है। इसी बचत और प्राविधिकता के उपयोग के कारण जर्मनी में वार्षिक विकास ७.५ प्रतिशत और जापान में ९ प्रतिशत हो सका है।

जब हम लोगों ने प्रथम पंचवर्षीय योजना प्रारम्भ की थी भारत में ५ प्रतिशत बचत थी और अब आशा है कि यह लगभग ८ प्रतिशत है। अप्लाइड इकोनामिक अनुसंधान की राष्ट्रीय परिषद ने अधिक आशाजनक अनुमान—करीब १० प्रतिशत का लगाया है। पूंजी विनियोग भी अधिक हुआ है क्योंकि देशकी बचत को बिदेशी सहायता का सहयोग मिला है और हमने अपना विदेशी-विनिमय-रिजर्व भी निकाल लिया है।

यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि भारत जैसे गरीब देश में जहां अधिकांश जन संख्या केवल जीवन-निर्वाह के स्तर पर जीती है, उतनी बचत नहीं की जा सकती, जितनी विकसित देशों में की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जहां बचत और विनियोग दोनों कम हैं, वहां विनियोग के अनुपात में अतिरिक्त आय अवश्य कम होगी।

इस समय भारत की स्थिति में यह कठिनाई है कि जर्मनी और जापान की भांति हमारी भी राष्ट्रीय आय नहीं बढ़ी। भारत की इन राष्ट्रों से तुलना करना और भ्रामक प्रचार करना इसीलिए असंगत है। हमारे बचत की दर गत १० वर्षों में ऊंची उठी है लेकिन हमें और बचत करनी है। हम आशा करते हैं कि हमारी बचत की दर बढ़ेगी और जो विदेशी सहायता हम प्राप्त कर रहे हैं, उससे दूसरी पंचवर्षीय योजना की तुलना में हम अच्छे रहेंगे और हमारी बचत की दर ५ प्रतिशत और बढ़ जायगी।

आज हमें एक बड़ी जनसंख्या को साथ लेकर चलना है, जिसे मत देने का अधिकार है और अधिकांश जनता यह जानती है कि उसे क्या चाहिये। इसलिए वह उपभोग के स्तर को आसानी से स्थगित नहीं कर सकती, जबकि विकास की मांग है कि बचत और विनियोग को प्राथमिकता दी जाय।

## ऐतिहासिक परम्परा

इस बात का फैसला करते हुए कि हमारी राष्ट्रीय आय के विकास की प्रगति औद्योगिक दृष्टि से बढ़े हुए राष्ट्रों की तुलना में कम है या अधिक, एक बात और स्मरण रखनी चाहिये। ये देश भारत की तुलना में बहुत अधिक समय पहले से प्रगति करते रहे हैं। बीच में युद्ध के दिनों में कुछ व्यवधान अवश्य पड़ गया था, लेकिन इनकी तुलना में भारत १९वीं सदी के प्रारम्भ से ही बराबर नीचे की ओर जाता रहा है। अतः हमारे सामने एक प्रश्न विकास की प्रगति को आगे बढ़ाना नहीं है, बल्कि इसके विपरीत गिरावट को रोकना है। पहिये को मोड़कर प्रगति की ओर ले चलना है और यह अपेक्षाकृत अधिक कठिन कार्य है।

उपलब्ध ऐतिहासिक तथ्यों से संकेत मिलता है कि सन् १८०० से १८५० के बीच भारत में प्रति व्यक्ति आय घटती गई, क्योंकि इसी अवधि में भारत के उद्योग नष्ट



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए और १८५० में भारत मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर रहने वाला देश बन गया। सन् १८०० से १९०० के बीच प्रति व्यक्ति आय में गिरावट ३० से ४० प्रतिशत होनी चाहिये। सन् १९०० से १९४५ के बीच प्रति व्यक्ति की आय करीब-करीब उतनी ही कायम रही होगी। इसका अर्थ यह हुआ कि यह देश सन् १८०० से बराबर नीचे गिरता रहा और दूसरी ओर अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी तथा अन्य अनेक देश तेजी से आर्थिक प्रगति करते रहे।

## स्वतन्त्रता के बाद प्रयत्न

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमने विकास के लिए योजनाएं बनायीं और भारतीय अर्थव्यवस्था की खामियों को ठीक करने में काफी हद तक सफल हुए। उद्योग तेजी से बढ़ रहा है, विशेष रूप से इस्पात उत्पादन में और मशीनों और मशीनरी औजारों के निर्माण में। हालके वर्षों में औद्योगिक उत्पादन ८ से १० प्रतिशत वार्षिक के हिसाब से बढ़ रहा है। १९५१ में औद्योगिक उत्पादन का संकेत १०० मान कर सन् १९५९ में यह १७० था। औद्योगिक उत्पादन की इस गति की तुलना हम कई देशों से कर सकते हैं। इससे भी बढ़कर महत्व की बात यह हुई है कि हम भारतीय उद्योगों में गत कुछ वर्षों में उत्पादन की काफी क्षमता ला सके हैं जिससे आगामी वर्षों में हमारे औद्योगिक उत्पापन और तेजी से बढ़ सकते हैं। हमारे श्रमिक नयी-नयी जानकारियां हासिल कर रहे हैं। व्यवस्था करने वाला नया वर्ग पैदा हो रहा है, जो साहस पूर्वक नये उद्योगों का कार्य भार संभाल रहा है।

सन् १९५१ में खाद्यान्नों का उत्पादन ५ करोड़ २२ लाख टन था १९६०-६१ में बढ़कर यह ७ करोड़ ६० लाख टन का हो गया है अनुमानतः यह वृद्धि ४५.६ प्रतिशत है। इसी प्रकार कपास का उत्पादन भी २९ लाख गांठों से बढ़कर ५१ लाख गांठ, जूट का उत्पादन ३३ लाख गांठों से ४३ लाख गांठ, तिलहनोंका उत्पादन ५१ लाख टन से बढ़कर ७१ लाख टन और चीनी का उत्पादन ५६ लाख टन से बढ़कर ८० लाख टन हो गया है। इससे बढ़कर महत्वकी बात यह हुई है कि भारतीय किसान अब यह महसूस करने लगा है कि फसलों के उत्पादन में नये औजारों और नये उर्वरकों का क्या स्थान है।

गत दो वर्षों में हमने देखा कि मुद्रा का दबाव अधिक रहा अतः इस दबाव को कम करने की आवश्यकता हुई। ऋण-नियन्त्रण के क्षेत्र में क्या ब्याज दर की नीति के क्षेत्र में रिजर्व बैंक द्वारा जारी किये गये विभिन्न निर्देशों को इसी दृष्टि से अध्ययन करना है।

लेकिन केवल रिजर्व बैंक के निर्णय से ही मुद्रा नहीं बनायी जाती। सरकार की नीति के कारण भी मुद्रा-पूर्ति की मात्रा में बार-बार परिवर्तन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि सरकारी बजट कमी का है और रिजर्व बैंक द्वारा मुद्रा पूर्ति से इस कमी को पूरा करना है तो निश्चय ही इससे मुद्रा-पूर्ति बढ़ेगी। विकास की जो गति है उससे कोई सन्तुष्ट नहीं रह सकता। विकास की गति को बढ़ाना जरूरी है, क्योंकि वर्तमात गति से तो हमारी इस विशाल जनता को केवल जीवन की आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त करने में भी वर्षों का समय लगेगा। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और प्रजातान्त्रिक ढंग की बलि दिये बिना कैसे यह किया जाय यह देश के सामने वास्तविक समस्या है।

इसका उत्तर अन्ततः इस बात पर निर्भर है कि इस महानतम कार्य की चुनौती को जनता किस हद तक स्वीकार करती है। योजनाएं केवल यह निश्चय कर सकती हैं कि विकास कार्य किस हद तक और कैसे हो, और मुद्रा नीतियां केवल मुद्रा अनुशासन की कुछ मोटी-मोटी सीमाओं का निर्देश कर सकती हैं। लेकिन न योजनाएं, न तो रिजर्व बैंक और न सरकार ऐसा कोई उपाय कर सकती है जो कि जनता की स्वेच्छया रजामन्दी का स्थान ग्रहण कर सके। यदि विकास की अधिकाधिक प्रगति वांछनीय है तो जनता को सचाई के साथ अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों का पालन करना होगा।

यदि बचत को अधिक से अधिक बढ़ाना है तो करों की चोरी नहीं होनी चाहिये। यदि पूंजी-विनियोग को ऊंचे दर्जे की उत्पादकता प्राप्त करनी है, तो हर स्तर पर कठिन श्रम करना होगा, ताकि साधनों का उपयोग अन्तिम सीमा तक हो सके। यदि निर्यात बढ़ाना है तो खराब उत्पादन नहीं होना चाहिये और निर्यात व्यापार में खराब आचरण नहीं करना होगा।

('आज' से)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76333

# ब्रिटेन का कॉमन मार्केट में प्रवेश

ब्रिटिश मंत्रियों के 'राष्ट्रमंडलीय' देशों के दौरे के बाद ब्रिटेन को यह पूरा विश्वास हो गया कि राष्ट्रमंडलीय देश ब्रिटेन के कामन मार्केट में प्रवेश के विरोधी हैं, फिर भी उसने 'कामन मार्केट' में शामिल होने का निश्चय कर लिया है। पर आखिर यह क्यों ?

इस के कारणों पर यहां प्रकाश डालना उपयुक्त होगा।

ब्रिटेन यह नहीं चाहता कि वह पड़ोसी यूरोपीय देशों के आर्थिक संगठनों से अपने को अलग रखकर अपनी एकांगी स्थिति में लटका रहे, वह अन्ततः अपना हित यूरोपीय देशों के आर्थिक संगठनों में शामिल होकर ही देखता है, भले ही उसे इस समय अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़े। उसको यह पक्का विश्वास हो गया है कि उसके दूर के राष्ट्रमंडलीय देश केवल अपने हितों पर आंच न आने देने के लिये उसे मजबूर कर रहे हैं, एशियाई, अफ्रीकी, राष्ट्र मंडलीय देश अपने देश के औद्योगीकरण में जुटे हुये हैं और आर्थिक स्वतंत्रता के लिये भारी संघर्ष कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में ब्रिटेन का उपनिवेशी बाजार खत्म होता जा रहा है।

ब्रिटेन का राजनीतिक प्रभाव भी पहले जैसा नहीं रहा। ब्रिटेन की विदेश नीति का जहां तहां राष्ट्रमंडलीय देशों में विरोध होता रहता है। उसको यह भी आशंका है कि ब्रिटेन पर विपत्ति आने पर कम से कम अफ्रेशियाई राष्ट्रमंडलीय देश तो उसका साथ नहीं देंगे। इसलिये वह अब राष्ट्र मंडलीय देशों के साथ आर्थिक गठबन्धनों

## भारत का ब्रिटेन को निर्यात

| पदार्थ | ब्रिटेन को निर्यात (लाख रुपयों में) | कुल निर्यात (लाख रुपयों में) | कुल निर्यात में ब्रिटेन का भाग प्रति शत |
|---|---|---|---|
| चाय | ७५.४० | १२०.०६ | ६२.५ |
| कपड़ा और सूत | १६.५१ | ७०.८२ | २३.३ |
| चमड़ा और खालें | १६.१२ | २५.७४ | ६२.६ |
| खली | १०.७० | १६.११ | ६६.५ |
| तम्बाकू कच्चा | १०.१२ | १४.५४ | ६९.६ |
| जूट (टाट और बोरियां) | ८.४० | ११९.०० | ७.१ |
| कालीन और दरियां | ३.५० | ४.८४ | ७२.३ |
| अरण्डी का तेल | ३.३९ | ८.८५ | ३८.३ |
| ऊन | २.०३ | ८.१७ | ३५.९ |
| मैंगनीज ओर | २.०० | १४.०० | १४.३ |
| अबरक | १.४८ | १०.३१ | १४.३ |
| अफीम | १.३८ | ४.०७ | ३३.९ |
| नारियल के फर्श | १.३४ | २.८८ | ४६.५ |
| मूंगफली | १.०६ | ३.९६ | २७.३ |

इस तालिका से यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्रिटेन इतनी अधिक मात्रा में भारत से माल मंगवाता है। और ब्रिटेन के कामन मार्केट में प्रवेश करने से इस निर्यात पर कितना प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा यह अभी नहीं कहा जा सकता।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को स्थायी नहीं समझता। राष्ट्र-मंडलीय देशों का वाणिज्य-व्यापार सम्बन्ध समाजवादी देशों से निरंतर बढ़ता जा रहा है, इससे भी ब्रिटेन अपने बाजार हाथ से जाता देख रहा है,

ब्रिटेन की तरह यूरोपीय देश उसके निकटवर्ती देश हैं। बहुत सारे उनमें से औपनिवेशिक द्वन्द से पीड़ित हैं। यूरोपीय समाजवादी देशों का औद्योगिक स्तर ऊंचा होता जा रहा है और वे हर स्वतंत्र देश के साथ अनेक सुविधायें देकर उनके साथ घनिष्ठ व्यापारिक सम्पर्क स्थापित करने में एक जुट प्रयत्न कर रहे हैं। उनकी आर्थिक शक्ति की वृद्धि से राजनीतिक शक्ति में भी वृद्धि हो रही है। ब्रिटेन को कच्चा माल भी मुंह मांगे दाम पर अब नहीं मिल रहा।

इन सब उपर्युक्त तथ्यों के आधार ही ब्रिटेन ने यूरोपीय कामन मार्केट में प्रवेश करने का निश्चय कर लिया है।

इस बात पर तो ब्रिटेन ने सोच-विचार किया ही होगा कि सभी यूरोपीय देश उद्योग सम्पन्न हैं, जिनके हाथ से कच्चे माल के स्रोत निरन्तर छिनते जा रहे हैं। यूरोप के सभी देश अपने माल की खपत के लिये बाजार की ढूंढ़ में है। फिर ब्रिटेन अपने इतने बड़े क्षेत्र को छोड़कर संकुचित दायरे में क्यों फंस रहा है यह आगे आने वाले नतीजे ही बतायेंगे।

एक समय था, जब ब्रिटेन सभी यूरीपीय देशों के माल के आयात पर मनमानी चुंगी लगा कर उनके व्यापार के विस्तार में बाधायें खड़ा करता था, आज वह स्वयं उनमें मिल जाने को लालायित तथा आतुर है।

ब्रिटिश मंत्री श्री थार्नीक्राफ्ट के कथन के अनुसार राष्ट्र मंडलीय देशों पर 'कोटा सिस्टम' लागू होना संभव है। फिर भी उन्होंने यह आश्वासन दिया है कि राष्ट्र मंडलीय देशों के माल के साथ उदारनीति का पालन किया जायगा। जहां तक भारत का सम्बन्ध है, उन्होंने यह आश्वासन दिया कि भारतीय निर्यात की समस्या को ध्यान में रखा जायगा और समय-समय पर कोई कदम उठाने से पूर्व भारत से सलाह ली जाती रहेगी। इसी तरह अन्य राष्टमंडलीय देशों को भी ब्रिटेन ने उनके हितों की सुरक्षा के लिये आश्वासन दिये हैं। अब देखना यह है कि क्या ब्रिटेन इतनी सारी शर्तों के साथ 'कॉमन मार्केट' में शामिल हो सकेगा और क्या कामन मार्केट के सदस्य राष्ट्र उसकी शर्तों को मानने को तैयार हो जांयगे?

कामन मार्केट में प्रवेश के बाद ब्रिटेन को यह ध्यान में रखना होगा कि राष्ट्रमंडलीय देशों के निर्यात व्यापार के साथ किसी किस्म का भेद-भाव न किया जाय। यदि भेद-भाव का बर्ताव किया गया तो यह ब्रिटेन के भावी सम्बन्धों को धक्का पहुँचायेगा।

आशंका इस बात की है कि ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और हांगकांग को अन्य राष्ट्रमंडलीय देशों की अपेक्षा अधिक सुविधायें देने की कोशिश करेगा जो निश्चित रूप से अफ्रेशियाई देशों को रुष्ट करने वाली बात होगी।

## राष्ट्रमंडलीय देशों के निर्यात व्यापार की समस्या

घाना का आधा कोको ब्रिटेन के द्वारा ही यूरोप के बाजारों में पहुँचता है। उसकी भी अब समस्या खड़ी

## पंजाब नेशनल बैंक

३० जून १९६१ को समाप्त होने वाली छःमाही में पंजाब नेशनल बैंक ने सन्तोषजनक प्रगति की है। अभी तक अनिरीक्षित हिसाब के अनुसार बैंक को ग्रैच्यूटी ट्रस्ट फण्ड के लिए ५.९० लाख रु० सुरक्षित रखने के बाद ७६-७५.९६ लाख रु० का लाभ हुआ है। गत वर्ष इसी छमाही में ४५.३७ लाख रु० का लाभ हुआ था। बकाया ४.२३ लाख रु० की राशि मिलाकर यह कुल रकम ८०.१९ लाख रु० हो जाती है, जिसका विभिन्न कार्यों में उपयोग करना है। बैंक के डायरेक्टरों ने १ रु० प्रति शेयर (अन्तरिम) डिविडैंड देने का फिलहाल निश्चय किया है। इसमें १२.५० लाख रु० लग जायगा। भारत, बर्मा और पाकिस्तान में इस बैंक के ४३० कार्यालय हैं और इनमें बैंकिंग और विदेशी मुद्रा के विनिमय की सब सुविधाएं दी जाती हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आर्थिक स्वतंत्रता नवोदित राष्ट्रों के लिए आवश्यक

देवीप्रसाद नौटियाल

किसी देश और उस देश की जनता के सुदृढ़ विकास के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता के बाद आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त कर लेना भी आवश्यक है। बिना राजनैतिक स्वतंत्रता के आर्थिक स्वतंत्रता कोई माने नहीं रखती। या यों कहिये कि राजनैतिक स्वाधीनता ही आर्थिक स्वाधीनता का द्वार खोलती है। परन्तु बिना आर्थिक स्वाधीनता-प्राप्त किये राजनैतिक स्वाधीनता अधिक दिन टिकी नहीं रह सकती। वह उस दशा में उस देश की कठपुतली बन जाता है जिसकी आर्थिक सहायता पर वह टिका रहता है।

'आर्थिक स्वतंत्रता' का तात्पर्य यहां यह बिल्कुल नहीं कि हम वाणिज्य-व्यापारिक सम्पर्क विदेशों से न रखें। देश की समृद्धि के लिए देश में जितने भी आन्तरिक साधन हैं उनका देश के आर्थिक विकास में पूर्ण उपयोग होना चाहिए। देश में आर्थिक विकास के साधन जितने प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होंगे, उतनी ही देश की दशा सुदृढ़तर होती जायगी। केवल बड़ी सशक्त सेना रखने और आर्थिक सहायता के लिए हर वक्त परमुखापेक्षी बने रहने से देश में सुदृढ़ता व आत्म-विश्वास आ ही नहीं सकता। इसलिए देश में ही महत्वपूर्ण उद्योगों का विकास किया जाना आवश्यक है।

हमारी दूसरी और तीसरी योजना में इस बात पर अधिक जोर दिया गया है कि देश में आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा की ओर प्रयत्न किए जाने आवश्यक हैं। हमारे जैसे नवोदित राष्ट्र के लिए आर्थिक क्षेत्र में आत्म-निर्भरता को प्राप्त करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी हो गया है।

आर्थिक स्वतंत्रता का यह अर्थ कदापि नहीं कि विदेशी राष्ट्रों से कम से कम सम्पर्क रहे। आज के वैज्ञानिक युग में और भविष्य में भी कोई भी राष्ट्र अलग-थलग नहीं रह सकता। राष्ट्रों के आपसी सम्पर्क बढ़ेंगे और बढ़ते ही रहेंगे। हम आन्तरिक साधनों की उपलब्धि के अनुसार अपने देश का औद्योगीकरण करेंगे, उत्पादन बढ़ायेंगे और अतिरिक्त उत्पादित माल को अन्य देशों की प्रतिस्पर्धा में सस्ते दामों पर बेचकर अपनी प्रमुख आवश्यकता की वस्तुओं का आयात करेंगे। जितनी देश की आर्थिक क्षमता बढ़ती जायगी उतने ही दूसरे देशों से हमारे आर्थिक सम्बन्ध सुदृढ़तर होते रहेंगे।

आर्थिक स्वतंत्रता अथवा आत्म-निर्भरता से देश की जनता को अपनी रोजी बनी रहने का विश्वास होता है। संकटकालीन स्थिति में विचलित होने की बात नहीं आ सकती।

यह तो संभव नहीं कि प्रत्येक देश अपनी जरूरत की प्रत्येक वस्तु में आत्म-निर्भर हो जाय, परन्तु कुछ महत्वपूर्ण बातों में आत्म-निर्भरता अनिवार्य हो जाती है। उदाहरण के लिये प्रतिरक्षा सामग्री के उपादन में देश

---

हो जायगी। जहां तक भारतीय जूट और चाय के निर्यात का प्रश्न है अब भारत को जूट के माल की खपत के लिये अन्य बाजार ढूंढ़ने होंगे और कीमतों में भी कमी करनी पड़ेगी। वस्त्र उद्योग को भी अनिश्चितता का सामना करना पड़ेगा।

आस्ट्रेलिया, कनाडा और न्यूजीलैण्ड को मक्खन, पनीर, गोस्त और खाद्यान्न के निर्यात में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। लंका को चाय के निर्यात में कठिनाई हो सकती है। और हांग कांग तो है ही ब्रिटेन पर निर्भर, उसको भी कम कठिनाई नहीं होगी।

इन उपर्युक्त बाधाओं के होते हुए भी ब्रिटेन के कॉमन मार्केट में प्रवेश से राष्ट्रमंडलीय देशों को अनेक लाभ हैं। ब्रिटेन अपने साथियों से राष्ट्रमंडलीय देशों के निर्यात माल के साथ रियायत तथा सुविधाओं के लिये आग्रह कर सकता है। अविकसित देशों की सहायता को अधिक आर्थिक सहायता देने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है। और जो सबसे बड़ी महत्व की बात होगी, वह यह कि राष्ट्र-मंडलीय देश स्वयं अपने प्रयत्नों पर खड़े होने और प्रति-स्पर्धा में टिकने की कोशिश करने में ही अपना उज्वल भविष्य देख सकेंगे।

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितना भी कम आयात पर आश्रित रहे उतनी ही देश में सुदृढ़ता रहेगी। एयर क्राफ्ट इंडस्ट्रीज को ही लीजिये। अपने ही देश में हवाई जहाजों के सब कल-पुर्जे बनने लगने और जहाजों की निर्माण संख्या में वृद्धि होने से शांतिकाल में यातायात तथा परिवहन में सुविधायें उपलब्ध होंगी और युद्ध के समय समूचा हवाई यातायात देश की सुरक्षा व्यवस्था में प्रयुक्त हो सकेगा। हवाई यातायात का समूचा स्टाफ सुरक्षा के कार्यों में इस्तेमाल किया जा सकता है। आज के युग में देश की सुरक्षा में वायु शक्ति का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। नये उद्योगों की स्थापना में, उत्पादन बढ़ाने में और उत्पादित माल की किस्म को उत्कृष्ट बनाने में तो समय लगेगा ही। जो आलोचक एकदम व्यापारिक दृष्टि से हानि-लाभ की बात करते हैं और अपने देश के उद्योगों के क्रमिक विकास में विश्वास नहीं रखते, वे देश की स्वतंत्रता की परवाह न करके देश को खतरे में डालने में भी नहीं हिचकते। सब कहीं मुनाफे कमाने की वृत्ति उपयुक्त नहीं कही जा सकती। जब तक देश योजनाबद्ध बुनियादी आर्थिक विकास में लगा हुआ है, उसे विदेशी विशेषज्ञों, टेक्निशियनों और कई महत्वपूर्ण सामग्री की आवश्यकता होती है और विदेशों से सहयोग लेना आवश्यक होता है। आर्थिक निर्भरता का तात्पर्य यह भी नहीं कि विदेशी राष्ट्रों से सहयोग न लें। सहयोग के अन्तर्गत की सहायता वांछनीय है, परन्तु किसी नीति विशेष के परिपालन में सहायता की प्राप्ति किसी भी स्वाभिमानी देश के लिए वांछनीय नहीं हो सकती।

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री फ्रैन्केल का मत है कि नवोदित राष्ट्रों की आर्थिक निर्भरता की प्राप्ति बात उस देश के अपने विकास के लिए खतरनाक है, क्योंकि इससे संकीर्ण राष्ट्रीयता की उत्पत्ति होती है। परन्तु प्रोफेसर महोदय को शायद यह भी मालूम होगा कि जापान और जर्मनी के निर्यात व्यापार के साथ अन्य पश्चिमी राष्ट्रों ने अनेक बधायें पैदा करके जो संकीर्णता का परिचय दिया, वही दो विश्वयुद्ध का कारण हुआ। आर्थिक साम्राज्यवाद का अन्त तभी होगा जब प्रत्येक देश बहुत कुछ आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त कर लेंगे।

सोवियत रूस के आर्थिक निर्माण पर पश्चिम के अनेक औद्योगिक राष्ट्रों ने अनेक बाधायें खड़ी की थीं। परन्तु उस ने अपने ही साधनों से अपने देश को आत्मनिर्भर ही नहीं बना दिया बल्कि वह दूसरे देशों को आर्थिक आत्मनिर्भरता में भरपूर सहयोग देने में भी सक्षम हो गया, यद्यपि इसके पीछे राजनीतिक कारण अवश्य रहा हो।

यह बात अवश्य है कि प्रत्येक देश में उसकी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए सीमित साधन हैं परन्तु अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से वह अपने साधनों की कमी पूरी कर सकता है। कुछ वस्तुओं के उत्पादन में वह दूसरा विकल्प ढूंढ़ सकता है जो स्थायी रूप से उसकी आर्थिक दशा को सुदृढ़ रखे। दूसरी बात यह है कि किसी देश को अपने आन्तरिक आर्थिक स्रोतों पर अपना अधिकार होना चाहिए। वह जैसा चाहे और जिस ढंग से चाहे उनका अपने ढंग से उपयोग कर सके।

परमुखापेक्षी देश की स्थिति सहायता देनेवाले देशों की आन्तरिक, वाह्य और उनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षा पर निर्भर करती है।

देश आर्थिक रूप से तभी स्वतंत्र हो सकता है जब वह कम से कम अपने यहां कैपीटल गुड्स का निर्माण करे और कैपीटल गुड्स के निर्माण में 'इनवेस्टमेंट गुड्स' का निर्माण देश में होना बहुत ही आवश्यक है, इसलिए बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना भी बहुत जरूरी है।

साधारण उपभोग की वस्तुओं के आयात पर प्रतिबन्ध लगाना इस दिशा में आवश्यक है। 'कैपीटल गुड्स' में उन कैपीटल गुड्स का आयात हितकर होता है जो कैपीटल गुड्स को पैदा करें। कैपीटल गुड्स अथवा कैपीटल गुड्स की समाग्री की सहायता देने वाले देशों के साथ कुछ आयात-निर्यात में ढिलाई करनी भी सामयिक तथा उचित ही होती है। नवोदित राष्ट्र तो फ़िलहाल अपना कच्चा माल देकर ही अपनी आर्थिक आवश्यकता की वस्तुएं प्राप्त कर सकते हैं। अन्ततः कुछ समय बीत जाने पर कुछ सीमा तक आत्मनिर्भर हो जाने के बाद नवोदित राष्ट्र अपने लम्बे कठिन संघर्ष के बाद प्राप्त की गई स्वतंत्रता को बनाये रखने में समर्थ हो जाएंगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# समाजवाद और साम्यवाद क्या हैं ?

ए. कुज्मिन

• साम्यवाद क्या है ? जनता को उससे क्या लाभ होते हैं ?

सोवियत राज्य के संस्थापक व्लादीमिर लेनिन ने नौजवानों को कम्युनिस्ट तथा कम्युनिज्म शब्दों का अर्थ समझाते हुए कहा था : "कम्युनिस्ट लैटिन शब्द है। कम्युनिस्ट का अर्थ है सम्मिलित । कम्युनिस्ट समाज का अर्थ है कि सब कुछ—जमीन, कारखाने और सम्मिलित श्रम—सबका है, यही साम्यवाद है।"

अतः साम्यवादी व्यवस्था एक ऐसी समाज-व्यवस्था है जिसमें उत्पादन के सारे औजार और साधन, इन्सान के हाथों से तैयार होने वाली सारी भौतिक और आत्मिक सम्पदा जनता की होती है ।

साम्यवाद ऐसा समाज है जो गरीबी का सदा-सर्वदा के लिए अन्त कर देता है और अपने तमाम नागरिकों के लिए भौतिक लाभों की प्रचुरता की व्यवस्था करता है। गरीबी, कष्ट और भूख, ये पहली समस्याएँ थीं, जिनका मेहनतकश लोगों ने अपने ऐतिहासिक विकास में सामना किया था। हजारों वर्ष तक ये समस्याएं समस्याएं ही बनी रहीं। उनका समाधान नहीं हो सका। दीर्घकाल तक सबके लिए प्रचुरता की बात कथा-कहानियों की ही सामग्री रही। जो लोग भूख से तड़पते थे, ठंठ से ठिठुरते थे और अभावग्रस्त थे, उनका त्राण न चमत्कारों ने किया और न प्रकृति ने।

सब सम्पन्न हों, इसे कैसे सम्भव बनाया जाये ? उत्पादक शक्तियों के विकास के सर्वोच्च स्तर पर पहुँचकर यह काम पूरा किया जा सकता है। अति यंत्रीकृत उद्योग का शीघ्रतम विकास कर तथा इस आधार पर अर्थतंत्र की तमाम शाखाओं में उभार लाकर साम्यवादी प्रचुरता की उपलब्धि हो सकती है।

## समाजवाद बनाम साम्यवाद

प्रश्न उठता है कि साम्यवादी समाज में और समाजवादी समाज में, जिसमें से साम्यवादी समाज का उद्भव होता है, क्या अन्तर है ? समाजवाद में "हर एक से उसकी योग्यतानुसार, हर एक को उसके कार्यानुसार" के सिद्धान्त के अनुसार भौतिक लाभ वितरित किये जाते हैं। यह समाज के विकास की समाजवादी मंजिल में, साम्यवाद के निर्माण की मौजूदा मंजिल में वितरण का एकमात्र न्यायोचित सिद्धान्त है।

समान वितरण समाजवाद से मेल नहीं खाता। कार्य की मात्रा के अनुसार वितरण समाजवाद उत्पादन के विकास को आगे बढ़ाता है। वह उत्पादन में जनता की भौतिक रुचि सुनिश्चित करता है, श्रम उत्पादकता में वृद्धि को शक्ति प्रदान करता है, मजदूरों के हुनर में सुधार करता है तथा प्रविधि को पूर्णतः परिष्कृत करता है। उसका शैक्षणिक महत्व भी अत्यधिक है। वह श्रम को व्यापक और अनिवार्य बनाता है, लोगों को सार्वजनिक सम्पत्ति की देखभाल करने और समाजवादी श्रम अनुशासन का पालन करने की शिक्षा देता है। वह काम करने के लिए नैतिक प्रेरणाओं को विकसित करता है तथा श्रम में उत्साह को बहुत ऊपर ले जाता है ।

साम्यवाद के सबसे ऊंचे दौर में "हर एक से उसकी योग्यतानुसार, हर एक को उसकी आवश्यकतानुसार" का सिद्धान्त क्रियान्वित किया जायेगा । आवश्यकताओं के अनुसार वितरण में संक्रमण उत्पादक शक्तियों के विकास के साथ-साथ चलेगा । यह संक्रमण तब पूरा होगा, जब तमाम उपभोग्य वस्तुओं की प्रचुरता हो जायेगी तथा जब जनता अपनी योग्यतानुसार अपनी इच्छा से काम किया करेगी और भौतिक लाभ की मात्रा का कोई ख्याल नहीं करेगी।

साम्यवाद के अंतर्गत मजदूर के लिए अपने काम के मिकदार पर उपभोग को अवलम्बित करने की जरूरत नहीं रहेगी। समाज इतना सम्पन्न हो जायेगा कि वह अपने सारे सदस्यों की जरूरतें पूरी कर दिया करेगा और दूसरी ओर जनता में इतनी चेतना होगी कि लोग अधिक आमदनी के प्रलोभन के कारण काम नहीं करेंगे, उनके लिए तो



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रम आन्तरिक आवश्यकता तथा स्वाभाविक आवश्यकता बन जायेगा।

साथ ही साम्यवाद का अर्थ जनता की जरूरतों को बराबर कर देना नहीं है। जिनकी जरूरतें ज्यादा हैं, उन्हें ज्यादा मिलेगा और इस चीज का किसी पर असर नहीं पड़ेगा और न किसी के हितों पर प्रहार होगा। इस चीज की ओर कोई ध्यान भी नहीं देगा—ठीक उसी तरह जिस तरह आज कुछ कैंटीनों में कोई भी व्यक्ति जितनी डबल रोटी खाना चाहे, खा सकता है। पास में बैठा व्यक्ति इस बात का कोई ख्याल नहीं करेगा कि उसने उससे ज्यादा रोटी खायी है।

साम्यवाद में भी लोगों की जरूरतों में अन्तर रहेगा। इसकी वजह यह है कि लोगों के स्वभाव और उनकी रुचि में अन्तर होता है। पर हर एक को अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए समान सुयोग मिलेगा। यहां हम जब आवश्यकताएं शब्द का प्रयोग करते हैं तो हमारा संकेत सांस्कृतिक दृष्टि से ऊपर उठी हुई जनता की जीवन्त आवश्यकताओं की ओर है। उसका ऐश्वर्य की वस्तुओं के लिए किये जाने वाले मनमाने या बेतुके दावों से कोई सम्बन्ध नहीं है।

भोजन, वस्त्र तथा आवास की जनगण की आवश्यकताएं असीम नहीं हैं। उदाहरण के लिए इंसान जितना पचा सकता है, उससे ज्यादा नहीं खा सकता। अगर वह ऐसा करेगा तो अपना नुकसान करेगा। यही वजह है कि अगर हम समुचित आवश्यकताओं को ध्यान में रखें तो समाज पहले ही यह हिसाब लगा सकता है कि सदस्यों की खाद्यपदार्थ सम्बन्धी आवश्यकता कितनी होगी। समाज उपभोग्य माल तैयार करने वाले उद्योगों का उत्पादन भी उसी अनुपात से निर्धारित कर सकता है।

## सोवियत रूस में

वितरण के साम्यवादी सिद्धान्त में संक्रमण का मार्ग तो समाजवाद में ही प्रशस्त हो चुका है। सोवियत संघ में उपभोग्य माल का एक भारी भाग मेहनतकश जनता में लोगों के काम की मात्रा और गुण के अनुसार वितरित किया जाता है। मजदूरों, सामूहिक किसानों और कर्मचारियों में से हर एक उतना धन या खाद्य पदार्थ पाता है, जितना उसने उपार्जित किया है। परन्तु सोवियत जनता के मंगल कल्याण के स्रोत लोगों की निजी आय ही नहीं हैं। सोवियत जनों का भौतिक और सांस्कृतिक लाभों का काफी भाग विविध सामाजिक सेवाओं के जरिये प्राप्त होता है। इसका अर्थ यह है कि उनके काम का इन लाभों की प्राप्ति से कोई सरोकार नहीं होता। डाक्टरी इलाज, सार्वजनिक शिक्षा, क्लब और पुस्तकालयों की सुविधाएं सबको निःशुल्क प्राप्त होती हैं। सैनेटोरियमों में मुफ्त ठहरने की सुविधा भी सभी सोवियत नागरिकों को उपलब्ध रहती है और बड़े परिवारों को भत्ता मिलता है। इन सुविधाओं का भी उनके काम से कोई सरोकार नहीं होता। काम की मात्रा और गुण का ख्याल किये बिना वितरित होने वाला जन उपभोग कोष का यह अंश निरन्तर बढ़ता जाता है।

१९४० में सोवियत संघ में छात्रवृत्तियों, निःशुल्क शिक्षा, चिकित्सा सेवा, सवेतन छुट्टियों, सामाजिक बीमा राशियों, और पेंशनों आदि पर राज्य बजट से तथा उत्पादन-प्रतिष्ठानों से ४२ अरब रूबल खर्च किया गया था, जबकि १९५८ में खर्च होने वाली यह राशि बढ़कर १९५९ में २३० अरब रूबल हो गयी। सप्तवर्षीय योजनानुसार १९६५ में इन कामों पर व्यय होने वाली राशि बढ़कर ३६० अरब रूबल हो जायेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रति मेहनतकश नर या नारी पर ३,८०० रूबल प्रति वर्ष खर्च होगा। इसके अलावा प्रति मेहनतकश नर या नारी के हिसाब से राज्य-धन की ८०० रूबल से ज्यादा राशि रिहायशी इमारतों, स्कूलों, सांस्कृतिक, भोजन एवं चिकित्सा प्रतिष्ठानों पर खर्च की जायेगी। यह जनता के मंगल कल्याण को बढ़ाने के लिए समाजवादी व्यवस्था से प्रस्फुटित होने वाली वास्तविक साम्यवादी विधि है। यहां दी गयीं तमाम राशियां १ जनवरी १९६१ से पहले के रूबलों में हैं।

साम्यवाद लाने के दिशा में श्री ख्रुश्चेव ने जो २० वर्षीय नई घोषणा की है, उसका सारांश अन्यत्र पढ़िये।

—



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

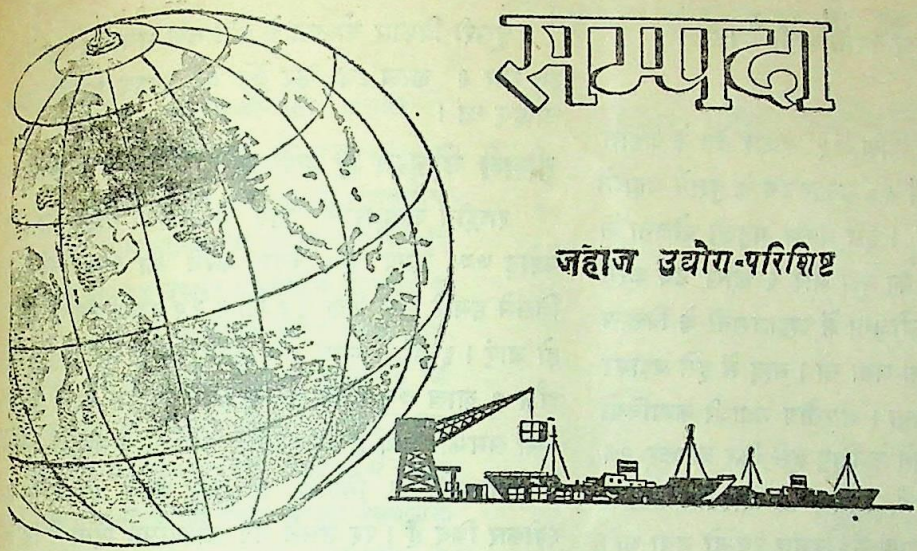


# भारतीय जहाजरानी का विकास

श्री अम्बेक जी

आजादी के बाद भारतीय जहाजरानी का काफी विकास हुआ है। स्वराज्य से पहले हमारे जहाज तटवर्ती व्यापार में भी पिछड़े हुए थे पर अब हमारे जहाजों की संख्या इतनी हो गई है कि भारत के समुद्र-तटवर्ती स्थानों और पड़ोस के देशों के अलावा वे दूर के देशों को भी आने-जाने लगे हैं। अब हमारे जहाज यूरोप, उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, रूस, जापान, आस्ट्रेलिया और अफ्रीका तक चलते हैं।

भारत का समुद्र तट ३ हजार मील विस्तृत है, समुद्र मार्ग का नाका होने के कारण हिन्द महासागार में चलने वाले विदेशी जहाज भारत होकर आते-जाते हैं। इसके अलावा विदेशों से स्वयं हमारा १५ अरब रु० वार्षिक का समुद्री व्यापार होता है। इसलिए भारतीय जहाजरानी का महत्व स्पष्ट है।

प्राचीन समय में भारत का समुद्री व्यापार काफी बढ़ा-चढ़ा था, पर विदेशी शासन के कारण इसकी अवनति होती गई। दूसरे महायुद्ध के शुरू में भारतीय कम्पनियों के पास केवल १ लाख २५ हजार टन के जहाज थे।

## जहाजरानी का महत्व

अस्तु, जहाजरानी के विकास के लिए जो प्रयत्न किये गये, उनके फलस्वरूप ३० जून, १९६० को भारतीय जहाजों का टन भार ७ लाख ९२ हजार टन हो गया था। जहाजों की संख्या बढ़ने के साथ-साथ नाविक कर्मचारियों, अफसरों, इंजीनियरों आदि की संख्या और कार्य-कुशलता भी बढ़ी है।

भारतीय जहाजरानी के विकास के लिए अनेक उपाय किये गये हैं। मसलन, तटवर्ती व्यापार भारतीय जहाजों के लिए सुरक्षित कर दिया गया है। सरकारी जहाजरानी निगम खोले गये हैं, जहाज कारखानों को बढ़ाया गया है। भारतीय जहाजी कम्पनियों को जहाज खरीदने के लिए ऋण देने की व्यवस्था की गयी है, जहाजरानी के विकास के लिए स्थायी निधि खोली गयी है, राष्ट्रीय जहाजरानी मंडल स्थापित किया गया है और एक कमेटी बनाई गई है जो सरकारी माल की ढुलाई भारतीय जहाजों से ही कराने की कोशिश करती है।

## तटवर्ती व्यापार

दूसरे महायुद्ध से पहले तटवर्ती व्यापार का तिहाई भाग ही भारतीय कम्पनियों के हाथों में था। इस समय व्यापारी माल का पूरा तटवर्ती व्यापार भारतीय जहाजों से होता है। महायुद्ध से पहले भारतीय जहाज भारत, बर्मा, और लंका के अतिरिक्त और कहीं माल नहीं ले जाते थे। आज प्रायः सभी प्रमुख देशों को भारतीय जहाज आते-जाते



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, फिर भी अभी बहुत कुछ करना बाकी है।

## पहली योजना

पहली योजना में २ लाख ७५ हजार टन के जहाज खरीदने का लक्ष्य था। इसमें ६० हजार टन के पुराने जहाजों को बदलना भी शामिल था। इस प्रकार पहली योजना के अन्त तक भारतीय जहाजों का पूरा भार ६ लाख टन करने का लक्ष्य था। पहले इस योजना में जहाजरानी के विकास के लिए १९ करोड़ रु० रखा गया था। बाद में इसे बढ़ाकर २३ करोड़ रु० कर दिया गया। भारतीय जहाजी कम्पनियों को विस्तार के हेतु रुपया देने के लिए इसे फिर बढ़ाकर २६ करोड़ किया गया। ३१ मार्च, १९५६ को भारतीय जहाजों का वास्तविक टन भार ४ लाख ८० हजार टन हो गया था। इसके अलावा जहाजी कम्पनियों ने जहाजों की खरीद के लिए जो आर्डर दे रखे थे, उनको जोड़कर पहली योजना के ६ लाख टन भार का लक्ष्य पूरा हो जाता है। पहली योजना में स्वीकृत अनुदान की पूरी रकम काम में लाई गई। इसमें से ८ करोड़ रु० उन जहाजों के मूल्य की अदायगी के लिए, आगे ले जाया गया, जिनकी खरीद का आर्डर पहली योजना में दिया गया था।

## दूसरी योजना

दूसरी योजना में ३ लाख ९० हजार टन के जहाज खरीदने का लक्ष्य है। इसमें ९० हजार टन के पुराने जहाजों का बदलना भी शामिल है। दूसरी योजना में जहाजरानी के विकास के लिए ४५ करोड़ रु० रखा गया है। इसमें पहली योजना का शेष ८ करोड़ रु० भी शामिल है।

दूसरी योजना के पहले साल में सरकारी और निजी जहाज कम्पनियों ने देश और विदेश से २६ नये और ३ पुराने जहाज खरीदने का आर्डर दिया। इसमें इस मद का प्रायः सारा रुपया खर्च हो गया। जहाजरानी विकास निधि की मार्फत ऋण देने के लिए सरकार ने ५ करोड़ २५ लाख रु० और दिया।

जहाजी कम्पनियों को विदेशों से किश्तों पर जहाज खरीदने की इजाजत दी गयी है। माल की ढुलाई से इन जहाजों को जो विदेशी मुद्रा मिलेगी, उससे ये किश्तों को अदा करेंगी। इस कार्यक्रम के अनुसार जहाजी कम्पनियों ने कोई एक दर्जन पुराने जहाज खरीद लिये हैं।

दूसरी विकास योजना के अंत तक भारतीय जहाजों का टन भार ९ लाख टन कर देने का लक्ष्य पूरा हो जाना चाहिए था।

## तीसरी योजना में लक्ष्य

राष्ट्रीय जहाजरानी बोर्ड ने तीसरी योजना में १०५ करोड़ ७७ लाख रु० व्यय करने का प्रस्ताव किया है, जिससे हमारे पास कुल १४ लाख २२ हजार टन के जहाज हो जाएं। इनमें ५ लाख १८ हजार टन के नये जहाज होंगे और १ लाख ७२ हजार टन के पुराने जहाज बदले जाएंगे। ऐसा समझा जाता है कि योजना कमीशन ने तीसरी योजना में जहाजरानी के विस्तार के लिए केवल ५५ करोड़ रु० स्वीकार किये हैं। पर उसने यह आश्वासन दिया है कि बाद में स्थिति पर पुनर्विचार भी किया जाएगा। यदि तीसरी योजना में ५५ करोड़ रुपये ही मिले, तो इससे केवल २ लाख टन के नये जहाज लिये जा सकेंगे और योजना के अन्त तक जहाजों का टन भार ११ लाख टन ही हो सकेगा।

## कम्पनियों को ऋण

जहाजी कम्पनियों को पहली योजना में २४ करोड़ रु० ऋण दिया गया। दूसरी योजना के पहले तीन वर्षों में निजी कम्पनियों को जहाज खरीदने के लिए १४ करोड़ रु० का ऋण दिया गया। किसी-किसी कम्पनी को जहाज की कीमत का ९५ प्रतिशत तक ऋण दिया गया। इन ऋणों की रकम सरकारी जहाजरानी निगमों में लगे धन से अलग है।

जहाजरानी की पिछले दस साल की प्रगति संतोषजनक है, पर अभी बहुत कुछ करने को है। भारत के विदेश व्यापार का केवल दसवां भाग ही भारतीय जहाजों में जाता है।

नाविकों की ट्रेनिंग पर भी विशेष ध्यान दिया गया है 'डफरिन' जहाज पर कैडेटों को प्रारम्भिक ट्रेनिंग दी जाती है। जहाजी इंजीनियरी शिक्षा के निर्देशालय ने भी ३०० कैडेटों को ट्रेनिंग दी। यह निर्देशालय १९४८ में स्थापित किया गया था। कलकत्ता, विशाखापत्तनम् और नौलखी में प्रारम्भिक जहाजी ट्रेनिंग के लिए तीन संस्थाएं भी खोली गयीं। इनमें करीब १० हजार लड़कों को ट्रेनिंग दी जा चुकी है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तीसरी योजना में अपर्याप्त व्यवस्था

दोनों पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में ी के क्षेत्र में काफी तरक्की हुई है। १९५०-५१ न-भार ३.९१ लाख टन था, जो पहली पंचवर्षीय के अंत में बढ़कर ४.८ लाख टन हो गया। विदेशी कठिनाइयों के बावजूद दूसरी पंचवर्षीय योजना के के लिए जो ९ लाख टन का लक्ष्य नियत किया गया करीब-करीब पूरा हो चुका है। अनुमान है कि विदेशों के साथ जो व्यापार होता है, इस समय ९ प्रतिशत हिस्सा भारतीय जहाजों में जाता निम्नलिखित तालिका में पहली और दूसरी पंचवर्षीय ों के खत्म होने के समय टन-भार की दृष्टि से विदेशी व्यापार की स्थिति दिखाई गई है।

जहाज (लाख टनों में)

| | १९५०-५१ | १९५५-५६ | १९६०-६१ (अनुमानित) |
|---|---|---|---|
| यापार | २.१७ | २.४० | २.९२ |
| यापार | १.७४ | २.४ | ६.१३ |
| | ३.९१ | ४.८ | ९.०५ |

पंचवर्षीय योजना में जहाजरानी कार्यक्रम पर करोड़ रुपये खर्च किए गए थे। दूसरी योजना में लगभग ५४ करोड़ रुपये के खर्च मान है। दूसरी पंचवर्षीय योजना में जो एक कदम उठाया गया, वह यह कि जहाजी कम्प- और अधिक जहाज खरीदने के लिए ऋण देनेवाले जहाजरानी विकास कोष की स्थापना की गई। सरी पंचवर्षीय योजना के लिए राष्ट्रीय जहाज रानी सिफारिश की है कि १९६५-६६ तक १४.२ लाख टन लक्ष्य प्राप्त कर लिया जाना चाहिए, जिसमें १०.८ विदेशी व्यापार के लिए और ३.४ लाख टन व्यापार के लिए हो। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए टन के अतिरिक्त जहाज अर्जित करने का विचार का अनुमान है कि पुराने जहाजों को बदलने के लाख टन के जहाजों की आवश्यकता होगी। अनु-

## विदेशी जहाजी कम्पनियों को दिया गया भाड़ा

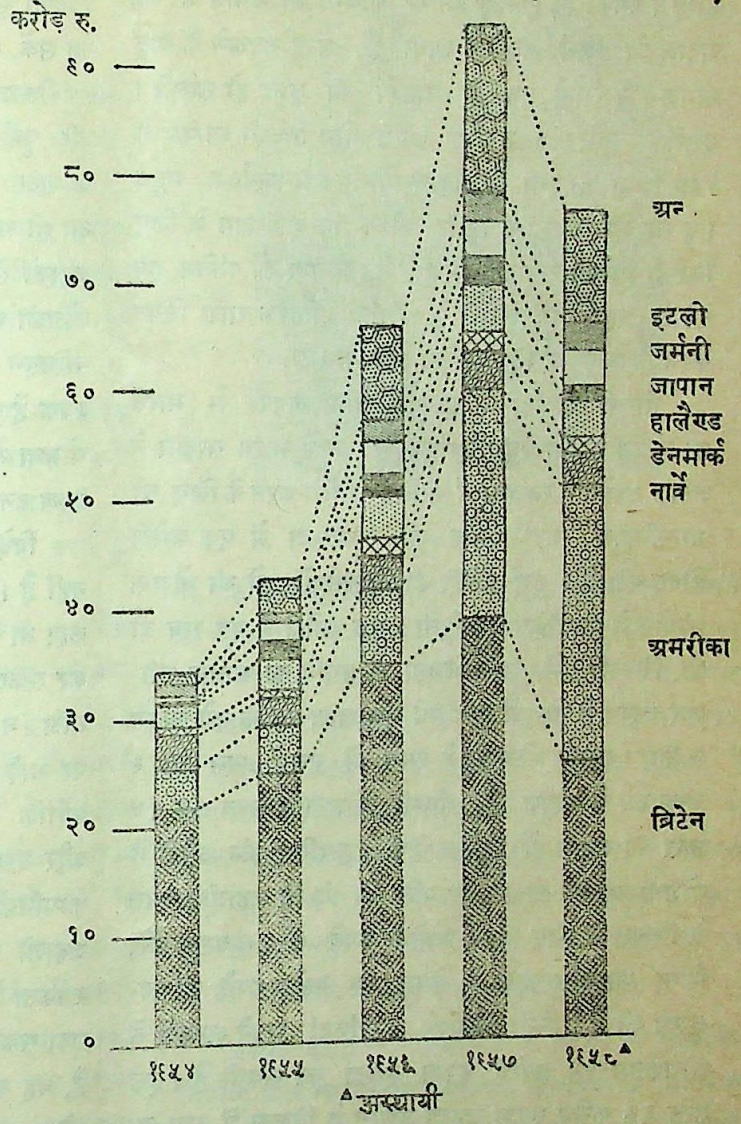


१९५९ और १९६० में यह भाड़ा और भी बढ़ गया है, क्योंकि आयात बहुत करना पड़ा है।

मान है कि इस कार्यक्रम पर कुल खर्च ११८.८ करोड़ रुपये होगा। इसमें १४ करोड़ रुपये की वह रकम भी शामिल है जो जहाजी कम्पनियां अपने साधनों से जुटाएंगी। इस समय तीसरी पंचवर्षीय योजना में जहाज-रानी के लिए ५५ करोड़ रुपये की व्यवस्था ही सम्भव हो



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती है। इसके अलावा, आशा है कि ४ करोड़ रुपये विकास-कोश से मिल जायेंगे। इस व्यवस्था के अनुरूप, जहाजी कम्पनियों का योगदान अनुमानतः ७ करोड़ रुपये होगा। आशा है, इस रकम से योजना की अवधि में जो जहाज या चीजें बदली जानी हैं, उन्हें बदलने के बाद लगभग २ लाख टन के जहाजों की वृद्धि हो सकेगी। इसमें से अधिकांश जहाजों का उपयोग विदेशी व्यापार के लिए किया जाएगा। जहाजरानी-विकास-कार्यक्रम बहुत हद तक इस बात पर निर्भर रहेगा कि इस काम के लिए कितनी विदेशी सहायता मिलती है। योजना को अंतिम रूप देने से पहले जहाजरानी के लिए अतिरिक्त राशि नियत करने के प्रश्न पर विचार किया जाएगा।

तीसरी योजना के इन अपर्याप्त लक्ष्यों से भारत का जहाज उद्योग बहुत असंतुष्ट है। स्वयं भारत सरकार ने जहाज उद्योग के सम्बन्ध में नीति निर्धारित करने के लिए श्री गगनबिहारी लाल मेहता की अध्यक्षता में एक कमेटी नियत की थी। इस कमेटी की सिफारिशों को भी योजना आयोग ने अस्वीकृत कर दिया। उक्त कमेटी ने यह राय दी थी कि यदि हमें दूसरी योजना की प्रगति का आधार स्वीकार करना है तो हमें प्रति वर्ष एक लाख टन के नये जहाज चाहिए। दूसरी योजना के अन्त में हमारे पास कुल ९ लाख टन के जहाज हैं, तीसरी योजना के अन्त तक १४ लाख टन जहाज हो जाने चाहिएं। इसलिए उक्त कमेटी ने योजना आयोग को यह सम्मति दी थी कि जहाजी उद्योग के विकास के लिए १०४ करोड़ रुपये की व्यवस्था करे, किन्तु भारत सरकार ने केवल ५५ करोड़ रुपये की व्यवस्था की है। निजी जहाजी कम्पनियां अपने साधनों से अधिकतम १४ करोड़ रुपया इकट्ठा कर सकती हैं। इस तरह ६९ करोड़ रुपया जहाज-उद्योग के विकास में काम आ सकता है।

आज से १४ वर्ष पूर्व जहाजरानी नीति उप-समिति ने यह सलाह दी थी कि भारत को १० वर्षों में ही इतना समर्थ हो जाना चाहिए कि वह विदेशी व्यापार का ५० प्रतिशत स्वयं वहन कर सके। किन्तु आज वह केवल ९ प्र. श. विदेशी व्यापार सम्भालता है। अब भी हमें प्रतिवर्ष करीब १३० करोड़ विदेशी जहाजी कम्पनियों को भाड़े के रूप में देना पड़ता है। इस विपुल राशि को बचाने के लिए यह आवश्यक है कि हमारा अपना जहाजी उद्योग काफी विकसित हो और इसको बचाने के लिए यदि कुछ विदेशी मुद्रा अधिक खर्च करके भी अधिक जहाज बनाए जा सकें, तो ऐसा करना दूरदर्शितापूर्ण ही होगा।

आज तो स्थिति यह है कि हम अपना तटीय व्यापार भी पूर्णतः पूरा नहीं कर सकते। हमारे जहाज कोयला, नमक तथा अन्य व्यापारिक पदार्थ कुल २५ लाख टन ही माल तटों पर ले जाते हैं। पिछले दिनों सरकार ने जहाजों से यह भी अपेक्षा की थी कि वह १० लाख टन कोयला और भी ले जाया करें, क्योंकि रेलवे कोयले के परिवहन में पूर्णतः समर्थ नहीं है। इसलिए यह आवश्यक है कि तटीय व्यापार करने वाले जहाज भी तीसरी योजना में बढ़ाए जायें, ताकि उनकी कुल क्षमता साढ़े चार लाख टन हो जाए।

विदेशी व्यापार के परिवहन की समस्या भी कम विकट नहीं है। भारतीय जहाजी कम्पनियों ने सरकार से यह कहा था कि वे अमेरिका से भारत आने वाले गेहूँ का लदान कर सकती हैं, यदि उन्हें इतना भाड़ा दिया जाय कि उन्हें घाटा न हो। स्वयं अमेरिकन सरकार गेहूँ के लदान पर भाड़े में जहाजी कम्पनियों को काफी सहायता देती है, क्योंकि दुनियां में भाड़े की दर बहुत कम हो गई है और उस दर पर इनको हानि होती थी। भारतीय जहाजी कम्पनियों का कहना यह है कि जब अमरीका की सम्पन्न जहाजी कम्पनियों को भी सरकारी सहायता की आवश्यकता है तो हम तो कम भाड़े पर गेहूँ किसी तरह नहीं उठा सकते। इसी सम्बन्ध में एक बात और भी विचारणीय है, वह यह कि अमेरिका से गेहूँ लाने वाले भारीय जहाजों को एक तरफ का भाड़ा मिलेगा। लेकिन भारत से अमेरिका उन्हें खाली हाथ जाना पड़ेगा। ले देकर इस वर्ष उन्हें २½ लाख टन चीनी ले जाने का मौका मिल सकता है, परन्तु वह बहुत थोड़ा है।

वस्तुतः आज जहाजी-उद्योग की स्थिति यह है कि वह बिना सरकारी सहायता के खड़ा नहीं हो सकता। अमेरिका ही नहीं अन्य देशों की सरकारें भी अपनी-अपनी कम्पनियों

( शेष पृष्ठ ४८५ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एशियायी जहाजरानी उद्योगों का अग्रणी

# हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड

विनोदचन्द्र सिनहा

कोरोमंडल के तट के मध्य में दक्षिण की ओर विशाखापतनम के प्राकृतिक सौन्दर्ययुक्त बन्दरगाह के दक्षिण-पश्चिम में हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड ७२ एकड़ भूमि के विस्तृत क्षेत्र में ग्रैंड ट्रंक रोड के उत्तर की ओर स्थित है। अपने समय के ख्यातिप्राप्त विख्यात इंजीनियर अलेक्जेण्डर गिब तथा उनके व्यावसायिक सहयोगियों की सहमति से हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड की स्थापना के लिए वर्तमान स्थल चुना गया था। अधिक समय तक काफी कठिन प्रयास के पश्चात इस संगठन की स्थापना करने वाले संगठन मेसर्स सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी ने १९४१ में अपनी योजना को साकार रूप प्रदान करने में सफलता पाई।

शिपयार्ड की नींव डालने का शुभारम्भ समारोह राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद के, जो उस समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे, द्वारा सम्पन्न हुआ था। निरन्तर व्यावसायिक संघर्षों में रत रहने पर भी दो बर्थों और सम्बन्धित निर्माणशाला सहित शिपयार्ड के विकास का प्रथम चरण १९४६ में उस समय सफलतापूर्वक पूर्ण हुआ था, जबकि शिपयार्ड का आंशिक निर्माण हो जाने के पश्चात् जहाजों का बनना प्रारम्भ हुआ। 'जल उषा' नामक ८,००० टन भार वहन करने की क्षमता वाले शिपयार्ड के प्रथम जहाज से निर्माण का शुभारम्भ हुआ था। भारतीय जहाजरानी उद्योग के भविष्य-सम्बल की यह प्रथम कृति १४ मार्च १९४८ को प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा जलावतरित हुई थी।

## राष्ट्रीयकरण और विकास

जहाजरानी उद्योग अधिकांशतः राष्ट्रीय और अत्यधिक संरक्षात्मक महत्व का उद्योग है। इस मूल कारण के अतिरिक्त अपने अनार्थिक स्वभाव के कारण यह उद्योग निजी क्षेत्रों में अधिक विकसित नहीं हो पाता। उसे ध्यान में रखते हुए मार्च १९५२ में भारत के जहाजरानी उद्योग

लेखक

का राष्ट्रीयकरण करके मेसर्स सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी की संरक्षता से हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड की व्यवस्था भारत सरकार ने अपने संरक्षण में ले ली। राष्ट्रीयकरण की व्यवस्था लगभग पूर्ण हो जाने के बाद ही भारत सरकार ने हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड के चतुर्दिक विकास के लिए फ्रांसीसी विशेषज्ञों के सहयोग से एक योजना का प्रारूप तैयार कियाभारतीय जहाजरानी उद्योग के निरन्तर बढ़ते जा रहे उत्पादन की गति तथा संख्या और पुराने जहाजरानी बाजार में उपलब्धि का ध्यान रखते हुए इस को दो चरणों में विभाजित कर दिया गया था।

प्रथम चरण—योजना के प्रथम चरण में सम्मिलित निर्माण और विकास की महत्वपूर्ण इकाइयों में बन्दरगाह के अन्तर्गत जहाज सुरक्षित रखने के स्थल (बर्थ) प्लाम्बरिंग और फाउण्ड्री कारखाने, भंडार तथा ड्राइंग कार्यालयों के लिए एक-एक नये भवन, टिम्बर इत्यादि के लिए कई भंडार-गृहों का निर्माण, लौह कारखाने का विकास, विभिन्न कारखानों में यंत्रों का नवीनीकरण, बन्दरगाहों में जहाज सुरक्षित रखने के स्थलों (बर्थों), जेटी तथा कारखानों में हेवी-लिफ्ट-ट्रैवेलिंग क्रेनों की व्यवस्था के साथ ही प्री-फैब्रीकेशन शाप में ४५ टन क्षमता के ओवर हेड ट्रैवलिंग



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

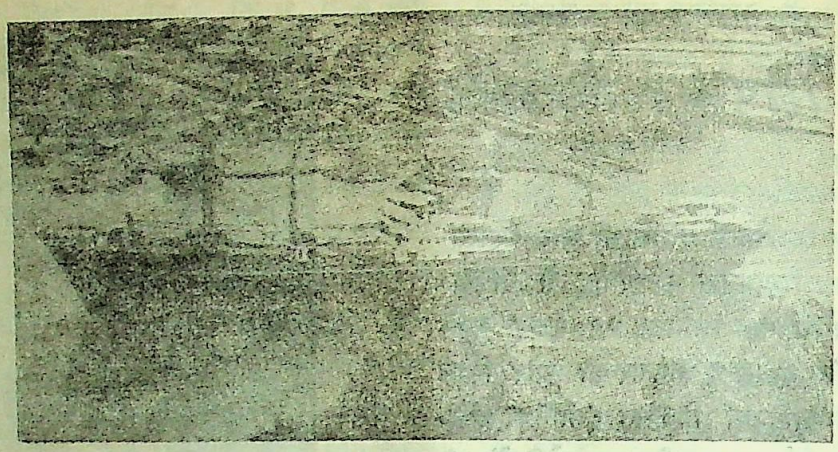

हिन्दुस्तान शिपयार्ड में बना ७००० टन का जल विहार।

क्रेन और दो असुरक्षित खाड़ियों का सुविधा सम्पन्न सुरक्षा-पूर्ण निर्माण विशेष उल्लेखनीय हैं। विकास योजना प्रारूप के इस प्रथम चरण में लगभग २०,००,००,००० रुपया व्यय हुआ था।

द्वितीय चरण—विकास योजना प्रारूप के द्वितीय चरण में लगभग ८,००,००,००० रुपया व्यय होने का अनुमान लगाया गया है। यह धन फिटिंग-आउट-ह्वार्फ को १,००० फुट क्षेत्र में विस्तृत करने और कर्मचारियों के आवास-गृहों के निर्माण के साथ ही उनकी सुविधाओं और हितों के अन्य मदों में व्यय होगा। इसी चरण के अन्तर्गत जेटी के विकास का कार्यक्रम भी सम्मिलित है, जिसे १९६० के अन्त तक पूर्ण हो जाने की आशा की जा रही थी।

## पूंजी विनियोजन

हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड की वर्तमान कुल निर्गमित और चुकता पूंजी ५,४७,८२००० रुपया है, जिसमें से ४,४२,५७,००० रुपये मूल्य के अंश भारत सरकार के और शेष १,०४,२५,०० रुपये के अंश शिपयार्ड के संस्थापक-संचालन संस्थान मेसर्स सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी के संरक्षण में सुरक्षित हैं।*

*भारत सरकार ने इस शिपयार्ड का पूर्ण राष्ट्रीयकरण करने का निश्चय कर लिया है। सिंधिया के शेयर भी सरकार खरीद लेगी।

## शुष्क-डक की योजना

विगत वर्षों में शिपयार्ड के चतुर्दिक विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत एक ग्रेविंग-डक के निर्माण के लिए भारत सरकार ने २.१५ करोड़ रुपया व्यय करना स्वीकार किया था, परन्तु विदेशी मुद्रा-उपलब्धि की कठिनाइयों के फलस्वरूप यह कार्यक्रम कार्यान्वित न हो सका। फिर भी गत वर्ष प्रकाशित भारत की तृतीय पंचवर्षीय योजना के प्रारूप के अन्तर्गत यह संकेत किया गया है कि प्रस्तुत योजना की अवधि में हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड के लिए एक शुष्क-डक का निर्माण किया जायगा।

## आवास की व्यवस्था

हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड के कर्मचरियों की सुविधा और हितों का मनोवैज्ञानिक आधार पर आधुनिक आवास गृहों की व्यवस्था में निरन्तर प्रगति का प्रयास किया जा रहा है। आवास- उपनिवेश के अन्तर्गत आवास-गृहों की कुल संख्या १५९९ हो गयी है, जिनमें जल-पूर्ति की व्यवस्था में पर्याप्त सुधार करने की चेष्टा की जा रही है। इस आवास-बस्ती की देख-भाल, सुरक्षा, सफाई तथा क्षतिग्रस्त हिस्सों की मरम्मत इत्यादि में शिपयार्ड प्रतिवर्ष आवर्त्तक रूप से लगभग १,९६,००० रुपया व्यय करता है। आवास-बस्ती द्वारा किराये के रूप में प्राप्त धन भी इसी मद में व्यय होता है।

( शेष पृष्ठ ४८३ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत का नया और बड़ा बंदरगाह—कांदला

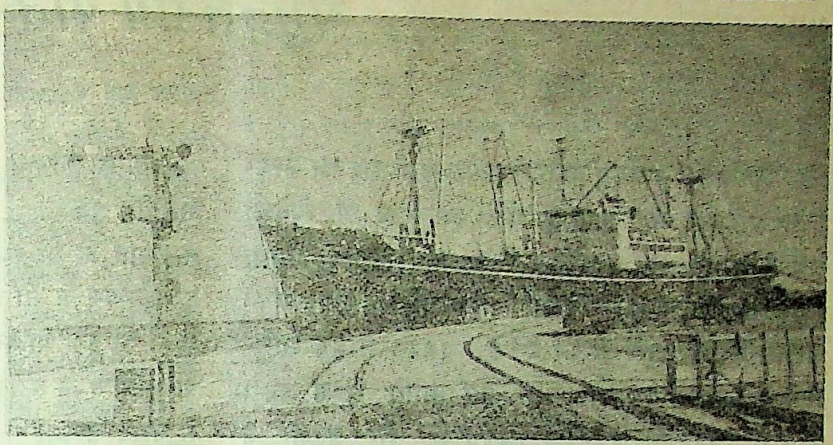

कांदला बन्दरगाह की जेटी

आज से कुछवर्ष पूर्व कौन जानता था कि कांदला के पास का निर्जन समुद्री मोड़ एक दिन भारत का बड़ा बन्दरगाह बन जायगा और यहां लाखों मन माल विदेशों से आएगा-जाएगा। केवल १० वर्षों में कांदला बन्दरगाह ही नहीं, देश का छठा बड़ा बन्दरगाह भी बन गया है और यहां से १०-१२ लाख टन से भी अधिक माल भेजा और मंगाया जाता है।

कांदला बन्दरगाह जम्मू-कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, हिमाचलप्रदेश, दिल्ली, पश्चिमी उत्तरप्रदेश और गुजरात के ३ लाख वर्ग मील क्षेत्र और ५ करोड़ आबादी के समुद्री व्यापार का द्वार है।

कांदला प्राकृतिक रूप से सुरक्षित बन्दरगाह है। ज्वार के दिनों में २८ फुट गहरी तली वाले जहाज इस बन्दरगाह तक पहुँच सकते हैं। ऊंचे ज्वार के दिनों में तो २९ से ३१ फुट गहरी तली वाले जहाज भी यहां आसानी से आ सकते हैं। यहां की एक अच्छाई यह है कि यहां मशीनों से माल जल्दी उतारा या लादा जाता है।

यहां ४ घाट इतने गहरे और बड़े हैं, जिनमें किसी भी आकार के और ३१ फुट गहरी तली वाले जहाज भी खड़े हो सकते हैं। बन्दरगाह में २१ बिजली की क्रेनें लगी हैं, जिनसे आसानी और बड़ी तेजी से माल चढ़ाया और उतारा जाता है। इसके अलावा सात और क्रेनें हैं। चलती-फिरती क्रेनें, फार्क लिफ्ट, स्वचालित ट्रकें और कोयला और लोहा भरने के यंत्र आदि लगे होने से कांदला बन्दरगाह में सभी आधुनिक सुविधाएं हैं।

कांदला में ६०० फुट लम्बे और २९ फुट गहरी तली वाले तेलवाहक जहाज भी आ सकते हैं। तेलवाहकों के पाइप सीधे तेल भण्डारों तक पहुँच सकते हैं।

## गोदामों की अच्छी व्यवस्था

कांदला में गोदामों की भी अच्छी व्यवस्था है। यहां चार बड़े-बड़े शैड हैं, जिनमें उतरा हुआ या लादा जाने वाला माल थोड़ी देर के लिए रखा जाता है। इसके अलावा ४ दुमंजले भंडार हैं। १० लाख वर्ग फुट खुली जगह भी है, जहां मामूली किराया देकर माल रखा जा सकता है। यहां से रेल और ट्रकों में माल लादने की सुविधा भी हैं।

कांदला बन्दरगाह में जहाजों की सहायता और मार्ग-दर्शन के लिए आधुनिक यंत्रादि लगे हैं। बन्दरगाह में तैरती बत्तियां लगी हैं। यहां १० हजार मील तक के समाचार पकड़ने और भेजने वाला बेतार केन्द्र है और तीस मील तक की सूचना देने वाला रडार यंत्र लगा है।

## योजना के अधिक काम

कांदला के बन्दरगाह पर जो काम हुआ है, वह आशा से कहीं अधिक है। पहले ५ सालों में यहां प्रति वर्ष ८॥

( शेष पृष्ठ ४८५ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# समुद्रतटीय पोतचालन की समस्यायें

शिवध्यानसिंह चौहान,

किसी देश का समुद्रतटीय व्यापार उस देश का जन्मसिद्ध अधिकार माना जाता है और इस क्षेत्र में विदेशी जहाजों का हस्तक्षेप सहन नहीं किया जा सकता। बहुधा सामुद्रिक राष्ट्र इस व्यापार को कानून द्वारा अपने जहाजों के लिए सुरक्षित कर देते हैं। १९३१ में ३६ सामुद्रिक राष्ट्रों में से २७ का व्यापार इस भांति रक्षित था। फ्रांस ने १७९३ में, जर्मनी ने १८८० में और इटली ने १९०४ में अपने तटीय व्यापार को अपने जहाजों के लिए सुरक्षित कर दिया था। स्वतन्त्रता से पूर्व भारत ही ऐसा देश था, जिसका समुद्रतटीय व्यापार इस भांति रक्षित नहीं था और उसमें ब्रिटिश पोत कम्पनियों का एकाधिकार था। स्वतन्त्र भारत इसे सहन नहीं कर सकता था। अतएव अवसर पाते ही स्वतंत्रता के उपरान्त भारत सरकार ने तटीय व्यापार को अपने देश के जहाजों के लिए रक्षित करने की घोषणा अगस्त १९५० में की और १९५३-५४ तक भारत के समुद्रतट पर शत प्रतिशत देशी जहाजों का अधिकार हो गया। तो भी हमारे इस व्यापार की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। अभी भी विदेशी कम्पनियों का हस्तक्षेप बना हुआ है और वे यातायात का एक बड़ा भाग ले जाती हैं। उनकी यह राष्ट्र विरोधी क्रिया बन्द होनी चाहिए। देशी जहाज पर्याप्त यातायात के अभाव में हानि उठाते रहते हैं, किन्तु विदेशी कम्पनियाँ पूर्ण यातायात प्राप्त करने में समर्थ हैं।

हमारे समुद्रतटीय पोतचालन की अन्य मुख्य कठिनाइयां निम्नांकित हैं जो उसके वांछित विकास में बाधक हैं।

(१) जहाज़ी कम्पनियों के संचालन व्यय में तेजी से वृद्धि होती गई है। जितनी वृद्धि संचालन व्यय में हुई है उतनी वृद्धि भाड़े की दरों में करने की कम्पनियों को अनुमति नहीं दी गई। अतएव उनका संचालन हानि कर होता जा रहा है।

(२) हमारी तटीय कम्पनियों को पर्याप्त यातायात नहीं मिलता। एक ओर उन्हें विदेशी कम्पनियों की प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता है और दूसरी ओर भारतीय रेलों से। भारतीय रेलें, नमक और कोयला जैसे यातायात को जो तटीय कम्पनियों का एकमात्र जीवनाधार है ढुलाई व्यय से भी नीचे भाड़ों पर ले जाकर जहाज़ी कम्पनियों को इस यातायात से वंचित रखती हैं। रेलों की इस प्रतियोगिता से तटीय कम्पनियों के बचाव के लिए १९५५ में भारत सरकार ने रेल-समुद्र समन्वय समिति बिठाई थी जिसने १९५७ में अपना प्रतिवेदन दिया और यह सुझाव दिया कि रेलों के भाड़े ढुलाई व्यय से नीचे नहीं रहने चाहिये तथा तटीय कम्पनियों को उनकी प्रतियोगिता से बचाने के यत्न करने चाहिये। अभी तक भारत सरकार ने इसकी ओर ध्यान नहीं दिया और रेल-समुद्र प्रतियोगिता जारी है।

(३) पूंजी के अभाव में जहाज़ी कम्पनियों को अपने पुराने जहाज़ों का नवीकरण और प्रतिस्थापन दुर्लभ है। समुद्रतट पर काम करने वाले ७३ जहाज़ों में से ३२ (अर्थात् लगभग ४४ प्रतिशत) जहाज़ ऐसे हैं जो १६ वर्ष से अधिक अवस्था के हैं। पुराने जहाज़ों को बदलने के लिए लगभग ४० करोड़ रुपए की पूंजी की आवश्यकता है। यदि सभी नए जहाज़ न लिए जायें, कुछ पुराने भी ले लिए जायें तो भी ३५ करोड़ रुपए की पूंजी की आवश्यकता है। तटीय कम्पनियों के पास इतना धन जुटाने के के साधन नहीं हैं। भारत सरकार ने १९५१ में एक ऋण योजना चालू की थी, किन्तु इसकी शर्तें कम्पनियों के लिए अनुकूल नहीं पड़तीं अतएव इसका कम्पनियों ने बहुत कम लाभ उठाया है। इसकी शर्तें उदार हो सकें तो उसका पूरा लाभ कम्पनियों को मिल सकता है।

(४) एक बड़ी कठिनाई जहाज़ी कम्पनियों का बढ़ता हुआ संचालन व्यय है। कोयले का मूल्य हाल के वर्षों में दुगुना हो गया है, ऐसी ही वृद्धि तेल के मूल्यों में हुई है। मजदूरी में और भी अधिक वृद्धि होती जा रही है और श्रमजीवी अधिकाधिक सुख-सुविधायें भी मांगते हैं। इस



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

( पृष्ठ ४८० का शेष )

## उत्पादन क्षमता

बन्दरगाह में जहाज सुरक्षित रखने के ५५० फुट लम्बे ४ बर्थों, साधारण उपयोग के लिए एक छोटे से बर्थ, १२५ टन क्षमता वाले हैमर से युक्त विशाल क्रेनों तथा बहुत बड़े बड़े पूरक कारखानों से युक्त एशिया के जहाजरानी उद्योगों का सर्वथा अग्रणी हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड १५०००-२०,००० टन की क्षमता के जहाजों का निर्माण करने में पूर्णतया समर्थ है। प्रस्तावित योजना के सफलतापूर्वक पूर्ण हो जाने पर शिपयार्ड की वर्तमान उत्पादन क्षमता जो २ अथवा ३ जहाज प्रतिवर्ष की है, बढ़कर आधुनिक डिजाइन के भारवाहक ४ अथवा ६ जहाज प्रतिवर्ष हो जाने का विश्वास है।

हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड अब तक जितने जहाजों का निर्माण कर चुका है उसमें २५ साधारण प्रकार के समुद्रीय जहाज, भारवाहक तथा यात्रीवाहक प्रकार के एक-एक जहाज, भारतीय नौसेना के लिए एक लड़ाकू जहाज, मद्रास पोर्ट ट्रस्ट के लिए एक टी० यन० जी के साथ ही केन्द्रीय आबकारी विभाग के लिए एक लाच का निर्माण विशेष महत्व का है।

## आर्थिक विनियोजन

विगत तीन वित्तीय वर्षों, १९५७-५८, १९५८-५९ और १९५९-६० में भारत सरकार द्वारा शिपयार्ड से सम्बन्धित प्रस्तुत किये गये बजटों में अनुमानित और वास्तविक व्ययों का विवरण इस प्रकार नीचे दिया जा रहा है:—

बजट के अनुमानित और वास्तविक व्ययों में होने वाले परिवर्तनों के आंशिक कारण संक्षेप में इस प्रकार हैं:— (१) आशा के विपरीत शिपयार्ड में इस्पात और सीमेंट की पूर्ति में कुछ कठिनाइयां सम्मुख आ गयीं, जिससे उसके विकास कार्यों में निश्चयानुसार प्रगति न हो सकी। परिणामस्वरूप सरकार ने शिपयार्ड के शेयरों की खरीद के रूप में जो धन लगाने का निश्चय किया था, उसमें कमी कर दी गयी थी। (२) शुष्क-डक योजना के विलम्ब से कार्यान्वित होने के कारण यद्यपि १९५७-५८ के बजट में उसके लिए कोई व्यवस्था नहीं की गयीं थीं, फिर भी भूमि अनुसंधान कार्यों तथा योजना के विवरण इत्यादि का प्रारूप तैयार करने में सलाहकारों को कुछ अधिक धन देना पड़ गया था। परन्तु अब आशा है, कि तृतीय पंचवर्षीय योजना की अवधि में इस योजना को साकार रूप दे दिया जायगा।

भारत सरकार द्वारा हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड के लिए इस वर्ष १६५ लाख रुपये की आर्थिक सहायता की जो व्यवस्था की गयी है, उसका आधार १९६०-६१ की अवधि में ७१७ लाख रुपये के उन वस्तुओं का उत्पादन करना है, जिसके लिए पहले से ही आर्डर प्राप्त हो चुके हैं। पिछले वर्षों में सरकार द्वारा इस प्रकार की आर्थिक सहायता देने की औसत दर लगभग २४ प्रतिशत रही जिसके अनुरूप इस वर्ष भी सरकार द्वारा प्राप्त आर्थिक सहायता का मूल्य उत्पादन की तुलना में लगभग २४ प्रतिशत (अपूर्ण विवरण) के दर से ही लगाया गया है।

| | अनुमानित व्यय | | | वास्तविक व्यय | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | १९५७-५८ | १९५८-५९ | १९५९-६० | १९५७-५८ | १९५८-५९ | १९५९-६० |
| | ( लाख रुपयों में ) | | | | | |
| (१) जहाज निर्माण उद्योग को सहायता | ७५ | ७० | ९५ | ७५ | ७९.१२ | ९५ |
| (२) हिन्दुस्तान शिपयार्ड के शेयरों की खरीद | ३० | ४० | २६.५० | २६.६५ | ३८.०२ | १४.१३ |
| (३) हिन्दुस्तान शिपयार्ड के शुष्क-डक निर्माण के लिए ऋण | ❀ | ४ | ❀ | १.३२ | ४ | ❀ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## मानव 'श्रम' शक्ति

हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड की सेवा के अन्तर्गत विगत तीन वर्षों में जितने कर्मचारियों ने अपनी सेवायें अर्पित कीं, उनका क्रमबद्ध विवरण निम्नलिखित तालिका में दिखलाया गया है:—

| वर्ग | १९५७-५८ | १९५८-५९ | १९५९-६० |
|---|---|---|---|
| (१) अधिकारी | | | |
| (अ) तकनीकी | ८४ | ९० | ७९ |
| (ब) गैर तकनीकी | १७ | २० | २३ |
| (२) कर्मचारी | | | |
| (अ) तकनीकी | ३३६ | ३९० | ४०५ |
| (ब) गैर तकनीकी | ३६० | ४१६ | ४२५ |
| (३) श्रमिक | | | |
| (अ) कुशल | १२९० | १३७९ | १४६१ |
| (ब) अर्धकुशल | १२६५ | १२८९ | १२०० |
| (स) अकुशल | १२६९ | १२६५ | ११६४ |

## लागत

अनुमानतः भारत में जहाजरानी निर्माण के उत्पादनों की लागत लगभग उतनी ही पड़ती है जितनी फ्रांस और इटली में। लागत का यह मूल्य संयुक्तराज्य अमेरिका और आस्ट्रेलिया से कम होने के साथ ही यू. के., जर्मनी और जापान से अधिक है। देश में अधिकांश यन्त्रों तथा उपकरणों का निर्माण न होने के कारण भारतीय जहाजरानी उद्योग को इंजन तथा अन्य सम्बन्धित कल-पुर्जों के लिए विदेशों पर आश्रित रहना पड़ता है। यहां तक कि जहाज के निर्माण में उपयोगी अधिकांश इस्पात, जो भारत में उपलब्ध हो सकता है, जहाजरानी उद्योग के लिए विदेशों से आयात करना पड़ता है।

इस हानि से बचने के लिए कि भारतीय जहाजरानी उद्योग के उत्पादकों को प्रतियोगिता मूलक-मूल्य न चुकाना पड़ जाय, भारत सरकार ने जहाजों की बिक्री से सम्बन्धित इस नीति को अपनाया है कि विशाखापत्तनम में निर्मित जहाजों को लगभग उसी मूल्य पर बेचा जाय, जितने मूल्य में उस प्रकार के जहाज ब्रिटेन में निर्मित होते हैं। बिक्री के इन मूल्यों के परस्पर अन्तर का भार भारत सरकार आर्थिक सहायता के रूप में स्वयं वहन करेगी। परन्तु भारत सरकार की इस नीति का ह्रास अनुमानतः उस समय प्रारम्भ हो जायगा जबकि हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड के लिए आवश्यक इस्पात की पूर्त्ति रूरकेला और भिलाई कारखानों के उत्पादनों से होने लगेगी। जहाजरानी उद्योग से सम्बन्धित आवश्यक यन्त्र तथा अन्य पूरक और सहायक सामग्रियों के आंशिक उत्पादन की गति विदेशी विनिमय की अठिनाइयों से निरंतर संघर्षरत होते हुए भी काफी तीव्र है।

## प्रशिक्षण योजना

हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड के लिए सदैव शिक्षित और कुशल कारीगरों की सेवायें उपलब्ध हो सकने की दृष्टि से शिपयार्ड के अन्तर्गत १९५५ से ही प्रशिक्षण योजना कार्यान्वित की गयी है। १९५९ में साधारण संशोधनों के पश्चात इस योजना का पुनर्गठन हुआ है।

## तृतीय पंचवर्षीय योजना में विकास कार्य

तृतीय पंचवर्षीय योजना की अवधि में हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड के चतुर्दिक विकास का एक कार्यक्रम अभी हाल ही में भारत सरकार ने अपनी तृतीय आयोजना के प्रारूप में सम्मिलित किया है। योजना के अन्तर्गत (१) वर्तमान दोनों खाड़ियों का नवीन हैलशाप के रूप में विकास और एक तीसरी खाड़ी की व्यवस्था, (२) समुद्र की दिशा में प्रथम एवं द्वितीय बर्थों के विकास के साथ ही ४५ टन तथा ३५ टन क्षमता के चलितक्रेन मार्ग का विस्तार, (३) बर्थ नं० ५ का विस्तार और विकास, (४) ड्राइंग कार्यालय का विकास और आवास उपनिवेश में सामाजिक कल्याण सम्बन्धी सुविधाओं की वृद्धि, (५) विद्युत पूर्ति की व्यवस्था में सुधार और अतिरिक्त सब स्टेशनों का निर्माण, (६) जेटी का पश्चिम की ओर ३३५ फुट तक विस्तार, (७) अतिरिक्त आवास-उपनिवेश की व्यवस्था और (८) कारखानों में यन्त्रों, क्रेन तथा अन्य उपकरणों का आधुनिकीकरण और अभिवृद्धि के कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में लगभग २४४ लाख रुपये के अनुमानित व्यय की व्यवस्था की गयी है। इस रकम में १२३ रुपये के मूल्य की विदेशी मुद्रा भी सम्मिलित रहेगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

( पृष्ठ ४८१ का शेष )

लाख टन माल के आने-जाने का अनुमान लगाया गया था, लेकिन तीसरे वर्ष में ही यहां से ११ लाख टन से भी अधिक माल का आयात-निर्यात हुआ और इस पर भी यहां जगह बच रही। यहां से मुख्यतः खनिज लोहा, अन्न, कपास, नमक, बोरे, हड्डी का चूरा, गंधक और मशीनें मंगायी और भेजी गयीं।

## सुन्दर बस्ती

इधर कुछ वर्षों में ही कांदला बन्दरगाह की बस्ती गांधीधाम बनी है। इसका नकशा अमेरिका के सुप्रसिद्ध नगर आयोजकों ने बनाया। बस्ती को इस ढंग से बसाया गया है कि हर वर्ग के नागरिकों को अपने विकास का पूरा अवसर मिले, नागरिकों को जीवन की सब सुविधाएं प्राप्त हों और एक जगह के रहने वालों को किसी चीज के लिए भी १० मिनट से अधिक चलकर न जाना पड़े। बस्ती में आबादी के बढ़ने यानी वर्तमान ३५,००० से बढ़कर १,५०,००० तक हो जाने की गुंजाइश भी रखी गयी है। जहां कुछ वर्ष पहले बियाबान जंगल था, आज वहां ३५,००० आबादी की सुन्दर बस्ती बस गयी है।

कांदला की समृद्धि को बढ़ाने के लिए यहां मुक्त व्यापार क्षेत्र चारों और तारों से घिरा इलाका होगा। अन्य बन्दरगाहों की तरह यहां लाकर भरे, छांटे और तैयार किये जाने वाले माल पर चुंगी नहीं लगेगी। यहां पर आयात किये जाने वाले माल पर आयात-शुल्क नहीं लगेगा और आयात सम्बन्धी कोटा आदि की भी पाबन्दी नहीं होगी। यहां नाम-मात्र के सीमा-शुल्क या चुंगी आदि के कारण व्यापार और उद्योगों को बहुत बढ़ावा मिलेगा।

इस प्रकार कांदला स्वतंत्र भारत की आर्थिक उन्नति की निशानी है। इस निशानी से हम सबको प्रेरणा और उत्साह मिलता है। ● ●

---

( पृष्ठ ४८२ का शेष )

प्रकार संचालन व्यय दिनों दिन बढ़ता जा रहा है, किंतु आय में उतनी वृद्धि नहीं हो रही।

(५) एक बड़ी समस्या बन्दरगाहों में भीड़-भाड़ के कारण जहाज़ों के खाली होने में देरी की है। इस कठिनाई के कारण जहाज़ों का पूरा उपयोग सम्भव नहीं है।

(६) हुगली में चाल सम्बन्धी प्रतिबन्ध और नियंत्रण भी तटीय जहाज़ों के मार्ग की भारी बाधा है। इस से जहाज़ों को माल लादने-उतारने में और भी अधिक देरी होती है और उनके समुचित उपयोग में बाधा पड़ती है।

जब तक इन कठिनाइयों से समुद्रतटीय पोतचालन को छुटकारा नहीं मिलता, उसका समुचित विकास संभव नहीं।

---

( पृष्ठ ४७८ का शेष )

को अनेक रूपों में सहायता देती हैं। ब्रिटेन की भांति भारत में भी ४० प्रतिशत रिबेट नई कम्पनियों को देने की चर्चा चली थी, किन्तु नए बजट में इस मद में कुछ कटौती की गई है।

जहाजी उद्योग के विकास के लिए बन्दरगाहों का विकास भी आवश्यक है।

तीसरी योजना में बड़े बन्दरगाहों के विकास के लिए ७५ करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। छोटे बंदरगाहों के विकास के बारे में भी सरकार बराबर ध्यान दे रही है और उनके लिए १० करोड़ रु० की व्यवस्था की गई है।

बड़े बंदरगाहों के विकास के लिए ७५ करोड़ रु० की जो व्यवस्था की गई है, उसमें से २८.५ करोड़ रु० कलकत्ता, २५.६ करोड़ रु० बम्बई, ७.३ करोड़ रु० मद्रास, १.७ करोड़ रु० कोचीन, ६.३ करोड़ रु० विशाखापत्तनम और ४.३ करोड़ रु० कंडला बंदरगाह के विकास के लिए नियत किये गये हैं।

छोटे बन्दरगाहों के विकास में एक बहुत बड़ी कठिनाई अब तक यह रही है कि उनके डिजाइन और उन डिजाइनों को अमल में लाने के लिए पर्याप्त शिल्पिक सहायता नहीं मिल पाती। एक केन्द्रीय शिल्पिक सहायता मंडल बनाया गया है।

---

विज्ञापन के लिए

**सम्पदा**

सर्वोत्तम

साधन

सम्पदा, अशोक प्रकाशन मन्दिर

२८-११ शक्तिनगर, दिल्ली-६



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

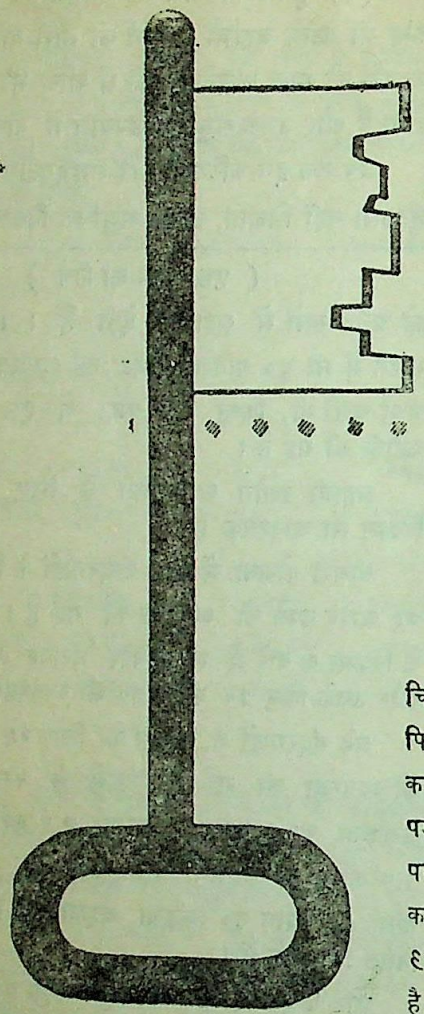

# शीघ्रता की कुंजी

हमारी यह भरपूर कोशिश रहती है कि सभी चिट्ठियां जल्दी से जल्दी यथा स्थान पहुंच जाएं। फिर भी विश्वास कीजिए हमें हर साल लगभग डेढ़ करोड़ चिट्ठियां 'रिटर्न लेटर आफिसों' की भेजनी पड़ती हैं। इसका कारण यह है कि उन चिट्ठियों पर पता पूरा अथवा स्पष्ट नहीं होता। यह दफ्तर काफी खोज-बीन और प्रयत्न के बाद लगभग ९० प्रतिशत पत्रों को पाने वाले के पास पहुंचा देता है अथवा उन्हें भेजने वाले को लौटा देता है। पर इस सब में देर लगना स्वाभाविक है।

**अधूरे व अस्पष्ट पते से चिट्ठियों के पहुंचने में देर लगती है**

साफ व पूरा पता
यानी
**जल्दी डाक**

## हमें उत्तम सेवा का अवसर दीजिए

डाक-तार विभाग

डीए ६०/४७९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आर्थिक विकास की संभावनाएं और निजी क्षेत्र

श्री सत्यदेव विद्यालंकार

• देश की गरीबी और आर्थिक विषमता को दूर करने के लिये कांग्रेस ने समाजवादी अर्थ व्यवस्था का जो आदर्श स्वीकार किया है उसके बारे में मतभेद के लिये अधिक गुंजायश नहीं है। समाजवादी अर्थ व्यवस्था की दृष्टि से ही जोत की अधिकतम सीमा, सहकारी खेती तथा उद्योगों के राष्ट्रीयकरण आदि के कार्यक्रम अपनाए गये। सब से अधिक विवादास्पद विषय उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का है। मतभेद और विवाद के रहते हुए भी प्रधान उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का ध्येय स्वीकार कर लिया गया है। उसके साथ निजी क्षेत्र और उसमें पहले से कायम अथवा नये चालू किये जाने वाले उद्योगों के महत्व को भी स्वीकार किया जा रहा है।

हमारे देश की स्थिति और आवश्यकताएँ भी कुछ ऐसी हैं कि एकाएक राष्ट्रीयकरण का कार्यक्रम शत प्रतिशत अपनाया नहीं जा सकता और निजी क्षेत्र की सर्वथा उपेक्षा नहीं की जा सकती। विदेशी शासन में हमारे देश में जिस आर्थिक और औद्योगिक नीति से काम लिया गया, उसका दुष्परिणाम यह हुआ कि हम बहुत पिछड़ गये। हमारे देश के क्षेत्रफल, विस्तार जनसंख्या की बहुलता और आर्थिक गरीबी आदि को देखते हुए औद्योगिक विकास की जो आवश्यकताएँ है, वे बिलकुल स्पष्ट है। इसी प्रकार हमारे देश के अपार खनिज भंडारों के विकास तथा उपयोग की दृष्टि से भी देश में उद्योग संबंधी संभावनाएँ इतनी अधिक विस्तृत और व्यापक है कि उन के लिये चहुँमुखी प्रयत्न किये जाने आवश्यक हैं।

उदाहरण के लिये राजस्थान का उल्लेख किया जाना पर्याप्त होना चाहिए। पिछले कुछ ही वर्षों में राजस्थान में भूरा कोयला, तांबा, सीसा, जस्ता, जिप्सम, कोराइट तथा अन्य अनेक धातुएँ इस प्रचुर मात्रा में जहाँ-तहां प्राप्त हुई है कि १५-२० वर्ष पहले उनके प्राप्त होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। सांभर झील से केवल नमक पैदा किया जाता था। अब उस से सोडियम प्राप्त करने की भी सम्भावनाओं को मूर्त रूप दिया जाने लगा है। राजस्थान के मरुस्थल में पानी के अभाव में जल विद्युत का पैदा किया जा सकना प्रायः असम्भव प्रतीत होता था। परन्तु अब चम्बल से कितनी बिजली पैदा की जाने लगी है और कितनी पैदा करने की संभावनाओं पर विचार किया जा रहा है। विश्व की सबसे बड़ी नहर राजस्थान में बन जाने के बाद उसका नक्शा बदल जायगा। तब बीकानेर में भूरे कोयले, अलवर तथा सेतड़ी में तांबे, जावद क्षेत्र में सीसे-जस्ते, नागौर में जिप्सम तथा अन्य स्थानों में ऐसी ही अन्य धातुओं की उपलब्धि प्रचुर मात्रा में सिंचाई साधनों के सुलभ होने से गन्ना, कपास तथा तिलहन की तो उपज संभव हो सकेगी, उसके कारण राजस्थान में जो नये-नये औद्योगिक क्षेत्र तथा व्यापार व्यवसाय की नई मंण्डियां कायम होंगी, उसकी कल्पना मात्र से राजस्थानी का हृदय खिल उठता है। भूरा कोयला २ करोड़ २० लाख टन और जिप्सम ३० करोड़ टन प्राप्त होने की सम्भावना है। यह भी उल्लेखनीय है कि इन पर आधारित नये उधोगों का प्रारम्भ प्रायः निजी क्षेत्र में किया जा रहा है। चित्तौड़ गढ़ के आस-पास विविध प्रकार के कच्चे पत्थर के प्राप्त होने से वहां निजी क्षेत्र में सीमेंट का कारखाना शुरू करने का लाईसैन्स दिया जा चुका है। इसी प्रकार काश्मीर सरीखे पहाड़ी व जंगली प्रदेश में भी प्लाईवुड, कागज, सीमेंट तथा कुछ ऐसे ही अन्य उद्योगों के शुरू करने की योजनाएँ बानाई जा रही हैं। प्लाईवुड का कारखाना इन्हीं दिनों २ करोड़ की पूंजी से निजी क्षेत्र में कायम किया गया है। वहां भी खनिज पदार्थों के भंडारों की खोज की जा रही है। इसी प्रकार मद्रास में भूरे कोयले, गुजरात व असम में तेल व गैस, मैसूर, आंन्ध्र, मध्यप्रदेश तथा उड़ीसा में लौह धातु और अनेक राज्यों में बिजली के उत्पादन की नई-नई सम्भावनाओं के कारण उद्योगों का जो विस्तार किया जा रहा है और किया जा सकेगा, वह कैसा आशाजनक है। सारांश यह है कि राजस्थान की तरह औद्योगीकरण की दृष्टि से सारे ही भारत का नक्शा बदल सकता है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## मिश्री क्षेत्र

अपने देश के औद्योगीकरण के विस्तार एवं विकास की इन संभावनाओं को देखते हुए यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि अपने देश को निजी क्षेत्र की उतनी ही आवश्यकता है जितनी की राष्ट्रीय क्षेत्र की समझी जाती है। निजी क्षेत्र का विस्तार देश के कोने कोने में संभव होने से औद्योगीकरण के कार्यक्रम को अधिक आसानी से पूरा किया जा सकता है। इस बारे में दो मत नहीं हो सकते कि कुछ उद्योग ऐसे हैं, जो राष्ट्रीय क्षेत्र में ही कुछ अधिक सुविधा से चल सकते हैं। बहूद्देश्यीय घाटी योजनाएँ, बिजली, तेल व गैस का उत्पादन, इस्पात का निर्माण और विभिन्न राज्यों की संयुक्त सीमा में शुरू किये जाने वाले बड़े-बड़े उद्योग धन्धों आदि का राष्ट्रीय क्षेत्र में रखा जाना अनेक दृष्टियों में आवश्यक और महत्वपूर्ण है। रेलवे, हवाई सेना, तार व फोन आदि में संचार साधन, ऐसे ही अन्य उद्योगों का राष्ट्रीय क्षेत्र में संचालन हो ही रहा है। बंगाल, बिहार, मध्यप्रदेश तथा मैसूर आदि राज्यों में अनेक बड़े-बड़े कल कारखाने राष्ट्रीय क्षेत्र में शुरू किये गये है। इनमें अधिकांश ऐसे हैं जिनके बिना निजी क्षेत्र का काम चल नहीं सकता। बिजली, इस्पात, बड़ी मशीनों तथा रासायनिक खाद आदि के लिए देश का राष्ट्रीय क्षेत्र पर निर्भर रहना स्वाभाविक है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि निजी क्षेत्र की सर्वथा उपेक्षा कर दी जाय। अपने देश की आर्थिक नीति इसी कारण इस समय मिश्रित अर्थ-व्यवस्था के आधार पर कायम की गई है। इस नीति के अनुसार निजी और सार्वजनिक दोनों ही क्षेत्रों में औद्योगिक विकास बड़ी द्रुतगति से हो रहा है।

देश में जो समाजवादी अर्थ व्यवस्था स्वीकार की गई उससे मिश्रित अर्थ व्यवस्था का कोई विरोध नहीं है। २०-२५ वर्ष के लम्बे समय बाद क्या परिवर्तन होने वाले हैं, इनकी कल्पना नहीं की जा सकती, परन्तु जहां तक निकट भविष्य के ५,१० वर्षों का सम्बन्ध है, यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यहां इस मिश्रित अर्थ-व्यवस्था की नीति के जारी रहने में ही देश का निश्चित कल्याण है। देश के सर्वांगीण औद्योगिक विकास में निजी क्षेत्र का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। उसके बिना देश की भावी प्रगति में काफ़ी धक्का लगने की सम्भावना है।

राष्ट्रीय क्षेत्र के समर्थक निजी क्षेत्र पर अनेक तरह के आरोप लगाकर उसकी निन्दा करते सुने जाते हैं। मुनाफाखोरी, भ्रष्टाचार, कालाबाजार, अव्यवस्था तथा मजदूरों के असंतोष एवं संघर्ष की शिकायतें बढ़ा-चढ़ा कर पेश की जाती हैं। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि उनमें सत्य का भी कुछ अंश है। लेकिन यह देश के नैतिक ह्रास की व्यापक समस्या का ही एक अंग है। केवल व्यापारी वर्ग ही क्यों—शायद ही कोई वर्ग नैतिक ह्रास से बचा हो। इसलिए इस समस्या को लेकर किसी एक वर्ग को ही बदनामी का निशाना बनाना उचित नहीं है। देश के हर वर्ग में कुछ न कुछ कमजोरियां है और व्यापारी वर्ग भी उनसे अछूता नहीं है। एक ओर व्यापारियों का देश के व्यापक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है और दूसरी ओर उसकी ये कमजोरियां है। तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो उनका राष्ट्रीय विकास में योगदान का पलड़ा भारी मिलेगा।

यह भी भुलाया नहीं जाना चाहिए कि ऐसी ही शिकायतें तथा आरोप राष्ट्रीय क्षेत्र के सम्बन्ध में भी उपस्थित किये जा सकते हैं। रेलवे की व्यवस्था और रिश्वतखोरी किसी से छिपी नहीं है। यात्रियों के भाड़े तथा पारसलों की दर में कितनी अधिक वृद्धि हुई है। संचार साधनों की दरों में भी कितनी अधिक वृद्धि कर दी गई है। जब हम समूचे देश की दृष्टि से विचार करते हैं तब दोनों क्षेत्रों में ईर्षा अथवा प्रतिस्पर्धा की भावना रहनी ही नहीं चाहिए। वस्तुस्थिति तो यह है कि दोनों ही एक दूसरे के पूरक है और आर्थिक उन्नति तथा गरीबी को दूर करने के लिए आवश्यक महत्व रखते हैं।

दोनों में एक दूसरे के प्रति पूरक होने की भावना पैदा करना, दोनों में संतुलन कायम रखना और देश के आर्थिक विकास के लिए दोनों के महत्व को स्वीकार करना अधिकतर विभिन्न राजनीतिक दलों पर निर्भर है। देश के आर्थिक विकास और जनता की गरीबी को दूर करने के महत्व को सभी राजनीतिक दल समान रूप से स्वीकार करते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि औद्योगिक क्षेत्र की दोनों बाजुओं के सम्बन्ध में स्पष्ट नीति और स्पष्ट दृष्टिकोण अपनाया जाय। प्रजातंत्रीय चुनाव राष्ट्र की नीति तथा दृष्टिकोण को व्यक्त करते हैं। उनमें दोनों क्षेत्रों के प्रति समदृष्टि रखनी आवश्यक है।

सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत का वस्त्र उद्योग अवनति की ओर ?

हम सम्पदा में कभी-कभी वस्त्र-उत्पादक व निर्यात की समस्या पर प्रकाश डालते रहते हैं। वस्तुतः वस्त्र-निर्यात की समस्या भारत की आर्थिक व्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण है। विदेशी मुद्रा से जब हम १०० रु० कमाते हैं, तब उसमें वस्त्र-निर्यात का भाग १०-११ रु० से कम नहीं होता। इसी लिए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि वस्त्र-निर्यात को किसी तरह हम कम न होने दें।

भारत सरकार की ओर से नियत वस्त्र-निर्यात प्रोत्साहन परिषद ने पिछले दिनों निर्यात की स्थिति का अध्ययन किया था। इससे हमारे निर्यात पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। १९५४ से १९६० तक के ६ वर्षों में विश्व का कुल वस्त्र-निर्यात १ अरब गज बढ़ गया है, किन्तु भारत का निर्यात इस अवधि में १४ करोड़ १० लाख गज कम हो गया। १९५४ में भारत से मिल और हाथ का बना कपड़ा ८६ करोड़ ३० लाख गज बाहर गया था। ६ वर्ष बाद यह मात्रा केवल ७४ करोड़ २० लाख गज रह गई। १९५४ में विश्व के वस्त्र निर्यात के व्यापार में भारत का १६ प्रतिशत भाग था, किन्तु यह अब गिर कर केवल ११ प्रतिशत रह गया है। जापान भारत से दुगुना वस्त्र निर्यात करता है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि आज से १० वर्ष पहले १९५० में वस्त्र-निर्यात में भारत का स्थान संसार में सर्वप्रथम था, किन्तु आज हमारा नम्बर दूसरा हो गया है। जापान विश्व के कुल वस्त्र निर्यात का २० सैकड़ा निर्यात करता है। इस अवधि में कम्युनिस्ट देशों ने भी अपना निर्यात व्यापार बहुत बढ़ा लिया है। विश्व-व्यापार में उनका भाग ५ से १६ प्रतिशत तक बढ़ गया है। छोटे से द्वीप हांगकांग ने भी अपना व्यापार ३ फीसदी से ५ फीसदी बढ़ा लिया है। नीचे की तालिका से मालूम होगा कि गत ३ वर्षों में प्रत्येक देश के निर्यात में कितनी कमी या अधिकता हुई है:—

| देश | लाख गजों में | |
|---|---|---|
| भारत | १९५७ | १९६० |
| जापान | ८८१४ | ७२१८ |
| हांगकांग | १४६८३ | १४२४६ |
| पाकिस्तान | १९६३ | ३०६० |
| ग्रीस | १०३ | ९३९ |
| पश्चिमी जर्मनी | ३१७८ | ५२१० |
| ब्रिटेन | २१७६ | २९४३ |
| अमेरीका | ४५५७ | ३७२० |
| मिस्र | ५५९३ | ४४२७ |
| चीन | ३७४ | ७५० |
| रूस | ३५८४ | ४५०० |
| चेकोस्लोवाकिया | १९४४ | १८०० |
| | १३८३ | १४६८ |

इससे यह प्रकट होता है कि १९६० में फ्रांस हम से केवल २० करोड़ गज पीछे था, लेकिन उनकी गति बहुत तेजी से बढ़ी है और यह असंभव नहीं है कि कुछ ही वर्षों में वह भारत से भी आगे बढ़ जाए। चीन के निर्यात और भी अधिक बढ़ सकते थे यदि वहां रुई की फसल धोखा न देती। मिस्र यह प्रयत्न कर रहा है कि भविष्य में वह रुई की जगह सूत बाहर भेजे। इसके लिए वह अधिकाधिक सूती मिलें खोलने की ओर ध्यान दे रहा है। यदि ऐसा हुआ तो भारत को भी रुई की अपेक्षा सूत के आयात पर अधिक व्यय करना पड़ेगा।

यहां हम एक तालिका दे रहे हैं, जिससे मालूम पड़ेगा कि संसार के मुख्य-उत्पादक देश कितना-कितना वस्त्र उत्पन्न करते हैं और पिछले चार वर्षों में इनके उत्पादन में कितनी कमी-बेशी हुई—

| देश | १० लाख गजों में १९५७ | १९६० |
|---|---|---|
| भारत | ७२६५.४० | ७२४३.३५ |
| जापान | ३८३८.०८ | ३८५३.१२ |
| चीन | ५५२४.०० | ८४९२.०० |
| अमरीका | ९५३३.७६ | ९३४८.०० |
| रूस | ६१२०.०० | ७२४८.०० |
| फ्रांस | ६१३५.९२ | अप्राप्य |
| पश्चिमी जर्मनी | १६३२.२० | १६५७.४८ |
| इटली | ११६ङ.३२ | १३३८.ङ० |
| ब्रिटेन | १६२७.६० | १२९३.५६ |

इस तालिका से मालूम होता है कि अमरीका का प्रथम स्थान इन चार वर्षों में कायम रहा है, दूसरा स्थान १९५७ में भारत का था, किन्तु १९६० में रूस और चीन भारत से आगे बढ़ गए और भारत का स्थान चौथा रह गया। ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## रूसी आन्तरिक्ष यात्री तीतोव

अन्तरिक्ष यात्रा के क्षेत्र में सोवियत रूस की महान् सफलता बहुत आश्चर्यजनक महत्वपूर्ण सफलता है। इसका विश्व की अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यह तो भविष्य ही बताएगा; परन्तु इतना तो निश्चित है ही कि अब दुनियां के देशों का ध्यान तकनीकी कार्यक्रम की ओर अधिक जायगा।

—आगामी आम चुनाव में मतदाताओं की संख्या २१ करोड़ होगी, जबकि १९५७ के आम चुनाव में मतदाताओं की संख्या १९ करोड़ ३० लाख थी।

—भारत और पोलैण्ड की सार्वजनिक संस्था सेकोप के मध्य हुए समझौते के अन्तर्गत पोलैण्ड मद्रास अथवा बम्बई में ५०,००० टन के आधुनिक अनाज गोदाम (ग्रेन अलेवेटर) का निर्माण करेगा।


# मध्यप्रदेश के बढ़ते चरण

* पंचवर्षीय योजना एक महान राष्ट्र द्वारा अपनी महानता के अनुरूप भविष्य निर्माण का सुदृढ़ प्रयास है। मध्यप्रदेश ने दूसरी योजना में शक्ति भर अपना योग दिया है।

* भिलाई इस्पात कारखाने ने प्रति वर्ष १० लाख टन इस्पात के उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त कर लिया है।

* हेवी इलेक्ट्रिकल्स ने निश्चित समय पर उत्पादन आरंभ कर दिया है।

* चम्बल बहुद्देश्यीय योजना का प्रथम चरण सम्पूर्ण हो चुका।

* बिजली का उत्पादन ७८ मेगावाट से बढ़कर २२५ मेगावाट तक बढ़ा है।

सिंचाई का क्षेत्र २.३७ लाख एकड़ से बढ़कर ६.४६ लाख एकड़ हो गया है।

रासायनिक खादों की बिक्री १२,५४१ टन से बढ़कर २८,४०८ टन प्रति वर्ष हो गई है।

* हमारे राज्य में दूसरी योजना की समाप्ति पर ८२१९ नई प्राथमिक शालायें खुली हैं।

* ३३२ नई माध्यमिक शालाएं हैं और ४८ नये महाविद्यालय हैं।

* मध्यप्रदेश देश के शेष राज्यों के साथ एक उज्वलतर तथा पूर्णतर जीवन की ओर गर्व से अग्रसर हो रहा है।

## सूचना तथा प्रकाशन, मध्यप्रदेश द्वारा प्रसारित




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तीसरी योजना में ग्रामोद्योग

तीसरी योजना में ग्रामोद्योगों के विकास के प्रयत्न विस्तृत पैमाने पर किए जाएंगे और गांवों तथा कस्बों में इन उद्योगों को बढ़ाने पर जोर दिया जायगा। इन कार्यक्रमों पर अमल करने में पहले की तरह ही, निम्नलिखित दृष्टिकोण अपनाया जाएगा :

१. देश की बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये छोटी और बड़ी इकाइयों के सापेक्षिक योगदान को विभिन्न उद्योगों के सामान्य उत्पादन कार्यक्रमों का एक भाग माना जाएगा।

२. छोटी इकाईयों को अपनी संगठनात्मक और तकनीकी दक्षता सुधारने में मदद दी जायगी।

३. कारीगरों और शिल्पियों को—विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में—सहकारी आधार पर कार्य करने में सहायता दी जाएगी।

राष्ट्रीय आय में वृद्धि, औद्योगिक विस्तार, जन-शक्ति के उपयोग और रोजगार दिलाने के अवसरों में वृद्धि के सम्बन्ध में तीसरी योजना के लक्ष्यों की पूर्ति में लघु और ग्रामोद्योगों का महत्व भी पूरी-पूरी तरह से स्वीकार किया गया है।

तीसरी योजना में उद्योगों को फैला कर कायम करने का प्रयत्न जारी रहेगा और ग्रामीण इलाकों में छोटे कुटीर-उद्योगों की उन्नति पर विशेष ध्यान दिया जायगा। विचार है कि औद्योगिक केन्द्र खोलने के कार्यक्रम में, उन्हें छोटे कस्बों और अर्द्धग्रामीण इलाकों में कायम करने पर खास जोर दिया जाए। एक योजना यह पेश की गई है कि औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए प्रदेशों में औद्योगिक विकास-क्षेत्रों की स्थापना करके और बिजली, पानी, आदि की मौलिक सुविधाएं देकर कारखाने खोलने योग्य स्थानों का विकास किया जाए और उन्हें भावी उद्योग-व्यवसायों के हाथ बेच दिया जाए अथवा लम्बी मियाद के ठेके पर दे दिया जाए।

तीसरी योजना के लिए प्रस्तावित मुख्य ठोस लक्ष्य इस प्रकार है :

## प्रस्तावित लक्ष्य

| | १९६० सम्भावित | १९६५-६६ लक्ष्य |
|---|---|---|
| १. हथकरघा (लाख गज) | २१,२५० | |
| २. बिजली-चालित करघे | | |
| (अ) हथकरघा-क्षेत्र में (लाख गज) | | ३५,००० |
| (आ) अन्य (लाख गज) | ४,०५० | |
| ३. खादी | | |
| (अ) परम्परागत (लाख गज) | ४८० | |
| (आ) अम्बर (लाख गज) | ३२० | |
| | २६,१०० | |
| ४. कच्चा रेशम (लाख पौंड) | ३७ | ५० |
| ५. औद्योगिक बस्तियां | ६० | ३६० |
| ६. हथकरघा-क्षेत्र में लगाए जाने वाले बिजली-चालित करघों की संख्या | ६,५०० | १३,००० |

तीसरी योजना में ग्रामोद्योगों और छोटे उद्योगों के विकास के लिए सरकारी क्षेत्र में अस्थायी रूप से २५० करोड़ रुपये के कुल व्यय का सुझाव दिया गया है। इस रकम में से फिलहाल विभिन्न उद्योगों पर अलग-अलग कितना खर्च करने का विचार है, इसका उल्लेख नीचे की तालिका में किया गया है और उसके साथ ही दूसरी योजना में प्रत्येक उद्योग पर प्रत्याशित खर्च का भी उल्लेख कर दिया गया है।

## अस्थायी व्यय-परिमाण

(करोड़ रुपये)

| | दूसरी योजना | तीसरा योजना |
|---|---|---|
| हथकरघा-क्षेत्र में हथकरघे और बिजली-चालित करघे | ३२.१ | ३६.० |
| खादी, अम्बर-खादी और ग्रामोद्योग | ८०.५ | ८९.० |
| छोटे पैमाने के उद्योग और औद्योगिक बस्तियां | ५६.३ | १०७.० |
| हस्तशिल्प | ५.३ | ८.० |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | |
|---|---|---|
| रेशम के कीड़े पालने का उद्योग | ३.८ | ७.० |
| कॉयर उद्योग | २.० | ३.० |
| योग | १८०.० | २.५० |

केन्द्रीय और राज्य सरकारों का २५० करोड़ रुपये का व्यय छोटे उद्योगों की उन व्यवस्थाओं से अलग होगा, जो सामुदायिक विकास-खण्डों में उनके अलग-अलग बजटों के अन्तर्गत और बेघर लोगों के पुनर्वास, सामाजिक कल्याण-कार्यक्रमों और पिछले वर्गों के लिए निश्चित किए गए कोषों में की गई है। फिर भी, जब तक बैंक, आदि संस्थाओं से ऋण की सुविधाएँ प्राप्त नहीं होंगी, तब तक काम चलाने के लिए जितनी पूंजी की आवश्यकता होगी, उसकी व्यवस्था इसमें कर दी गई है।

## ग्रामोद्योगों का वित्त-पोषण

ग्रामोद्योगों और छोटे उद्योगों के विकास के लिए बैंकिंग संस्थाओं से अधिक धन पाने के विचार से इस बात का प्रस्ताव किया गया है कि इन उद्योगों के निमित्त ऋण के लिए सरकारी गारण्टी दी जाए। प्रारम्भिक वर्षों में सरकार जोखिम की आंशिक जिम्मेदारी लेगी।

सरकारी क्षेत्र में जो व्यय होगा, उसके अलावा निजी स्रोतों से लगभग २७५ करोड़ रुपये की पूंजी प्राप्त होने की आशा है। अनुमान है कि इन विभिन्न कार्यक्रमों में लगभग ५० लाख लोगों को पूर्णकालिक रोजगार मिल जाएगा। आशा है कि हथकरघा-उद्योग, हथकरघा-क्षेत्र में बिजली चालित करघे और ग्रामोद्योगों के कार्यक्रम में पहले से अधिक रोजगार मिलेगा और खादी के उत्पादन के लिए हाथ-कते सूत के कार्यक्रम में अंशकालिक रोजगार मिलेगा। छोटे पैमाने के उद्योगों, जिनमें औद्योगिक बस्तियां भी शामिल हैं, हस्तशिल्प, रेशम के कीड़े पालने का उद्योग और कयर की कताई-बुनाई के कार्यक्रमों में ज्यादातर पूर्णकालिक रोजगार मिलने की उम्मीद है।

## अन्य सुविधाएं

इन उद्योगों के कार्यक्रमों का अभिप्राय बुनियादी सुविधाओं और सहायता परिमाण को बढ़ाना है, ताकि उनके विकास के अनुकूल परिस्थितियां पैदा हों। तकनीकी और संगठन कुशलता बढ़ाने पर विशेष रूप से जोर दिया गया है ताकि ये उद्योग अर्थ-व्यवस्था के आत्म-निर्भर अंग बन सकें। सहायता-अनुदानों, बिक्री पर कटौती और मंडियों को आश्रय-दान की व्यवस्था उत्तरोत्तर कम की जाएगी और ठोस रूप में सहायता देकर श्रमिक उत्पादकता को बढ़ाने की दिशा में तेजी से प्रयत्न किया जाएगा। वर्तमान कार्य-दक्षता और औजारों को उन्नत करने पर भी खास तौर से ध्यान दिया जाएगा। इसके साथ ही, काम करने वालों को अधिक कुशल बनाने और नए उपकरणों का प्रयोग शुरू करने की ओर भी ध्यान देना है। इसके लिए एक व्यापक विस्तार-सेवा का, जिसमें सामान्य सेवा-सुविधाएं भी शामिल हैं, संगठन करना होगा। शिल्पकारों, उद्यमीजनों और सहकारी समितियों को कारखानों के लिए जगह, ऋण, क्रय-विक्रय और तकनीकी सलाह के बारे में विशेष सहायता देनी होगी।

## विकास कार्यक्रम

राज्य सरकार छोटे उद्योगों के विकास के लिए व्यापक कार्यक्रम तैयार कर रही है, उनमें औद्योगिक बस्तियों की स्थापना, खादी (अम्बर-खादी शामिल करके) तथा ग्राम-उद्योगों, हथकरघों हस्तशिल्पों रेशम और नारियल के रेशों के कार्यक्रम भी शामिल हैं। मोटे तौर पर, उद्देश्य यह है कि निजी और सहकारी संस्थाओं को प्रशिक्षण, तकनीकी जानकारी, कर्ज़ और कच्चे माल, आदि सुविधाएं देकर उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। अस्थायी रूप से लक्ष्य यह रखा गया है कि विकेन्द्रित क्षेत्र का, अर्थात् हाथ तथा बिजली के करघों के कपड़े और खादी का उत्पादन १९६०-६१ के २६१ करोड़ गज और रेशम का ३७ लाख पौंड से बढ़ाकर ५० लाख पौंड कर दिया जाए। औद्योगिक बस्तियों की संख्या दूसरी योजना में ६० थी, जो तीसरी योजना के अन्त तक ३६९ कर दी जाएगी। छोटे उद्योगों के कार्यक्रमों में जोर इस बात पर दिया जाएगा कि उनका विकास छोटे कस्बों और गांवों में हो और उनका सहायक उद्योगों के रूप में, बड़े उद्योगों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध जोड़ दिया जाए।

## हथकरघा और खादी

९ अरब ३० करोड़ गज कपड़े के कुल लक्ष्य में से कपड़ा उद्योग के विकेन्द्रित क्षेत्र के लिए ३ अरब ५०

( शेष पृष्ठ ४९४ पर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारतवर्ष की श्रमिक समस्या

ले० श्री महात्मा मिश्र

आज की श्रमिक समस्या स्वतंत्र समस्या नहीं। मजदूरों की बढ़ती हुई वेतन वृद्धि तथा महंगाई भत्ते आदि की मांग और मालिकों की कम से कम देने की प्रवृत्ति ने प्रत्यक्ष रूप से इस समस्या को मालिक और मजदूरों तक ही सीमित कर दिया है। इंग्लैंड आदि देशों में जहां राजनैतिक क्रांति से पूर्व आर्थिक क्रांति हो चुकी थी, वहां श्रमिक समस्या का मालिक और मजदूर तक सीमित रहना स्वाभाविक है। पर भारतवर्ष जैसे देश में जहां राजनीतिक परिवर्तन के पश्चात् आर्थिक क्रांति की ओर लोग अग्रसर हो रहे हैं, श्रमिक समस्या सच्चे अर्थों में यहां की राष्ट्रीय एवं सामाजिक समस्या है। अतः इसका निदान और समाधान स्वतंत्र रूप से नहीं हो सकता।

## जड़वादी चिंतन की सारहीनता

वर्तमान राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक चिन्तन ने आज राष्ट्रीय जीवन को अस्तव्यस्त बना दिया है। इससे उत्पन्न सामाजिक एवं आर्थिक विश्रृंखलताओं के कारण अनेक दुष्परिणामों की सृष्टि हुई है, जिसमें एक श्रमिक समस्या भी है। कुछ चतुर और स्वार्थान्ध व्यक्तियों ने हर कीमत पर देश की शासन सत्ता और आर्थिक शक्ति को अपने अधिकार में रखने के लिए जड़वादी प्रवृत्ति के विष का संचार श्रमिक क्षेत्र में करने का प्रयास किया है। अतः आज चारों ओर अधिक उत्पादन और समाजवाद' के नारों की गूंज उठ रही है। इस प्रकार जड़वादी दर्शन से आक्रांत राष्ट्री जीवन में मनुष्य का मूल्य तुच्छ होता जा रहा है। मानव मानव का शोषण कर रहा है। अधिक से अधिक उत्पादन के लिए कम से कम मनुष्य शक्ति का उपयोग हो, इसलिए बड़े-बड़े कारखानों का केन्द्रीयकरण होने के फलस्वरूप उसका बड़ा हानिकारक प्रभाव देश की विशाल जनसंख्या पर पड़ा है।

फलतः आज बेरोजगारी फैल रही है। जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति हो, इसके योग्य वेतन नहीं मिलता, उपयुक्त वस्तुओं की तथा उपभोग सेवाओं की कीमत प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

## सर्ज बढ़ता गया·····

इन समस्याओं ने सम्पूर्ण देश का खासकर गरीब और मध्यवित्त वर्ग के लोगों का जीवन दूभर बना दिया है। इन्हें सुलझाने की जितनी ही कोशिश की जाती है ये समस्याएं उतनी उलझती ही जाती हैं। इसका एकमेव कारण यह है कि समस्याओं को अलग-अलग स्वतंत्र रूप से सुलझाने का प्रयास किया जाता है। यद्यपि इस प्रकार के प्रयास से किसी खास एक समस्या का प्रत्यक्ष रूप से समाधान हो जाता है, फिर भी इसकी प्रतिक्रिया अन्यान्य समस्याओं पर होती है, जिसके कारण अन्यान्य अनेकों समस्याओं का जन्म होता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि, सामाजिक जीवन का प्रत्येक क्षेत्र, उसकी समस्याएं और उनके समाधान का आपस में गहरा सम्बन्ध है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि किसी खास समस्या को सुलझाने का प्रयास करते समय, इस बात का ध्यान रखना अनिवार्य है कि सामाजिक जीवन के अन्यान्य क्षेत्र और समस्याओं पर इसका कैसा प्रभाव पड़ता है और इसकी क्या प्रतिक्रिया होती है। इसके पश्चात् तदनुरूप एक संतुलित सम्बन्ध को खोजकर समस्या का निराकरण करना है।

## अन्य देशों से भिन्न

भारतवर्ष जैसे विशाल देश में जहां की जनसंख्या का प्रायः ८० से ९० प्रतिशत भाग ग्रामों में निवास करता है और जिनमें प्रायः ७० प्रतिशत लोगों का जीवन कृषि पर निर्भर करता है, वहां की श्रमिक समस्या केवल औद्योगिक क्षेत्र की श्रमिक समस्या नहीं है। यहां की श्रमिक समस्यायें उद्योग और कृषि का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

## एकमात्र मार्ग

इस घनिष्ठ सम्बन्ध की कड़ी भारतवर्ष की विशाल जनसंख्या तथा नगरों के औद्योगिक क्षेत्र के बड़े-बड़े कारखानों में काम करने के लिए उपलब्ध होनेवाले श्रमिकों का प्राप्ति केन्द्र ग्राम हैं। अधिक जनसंख्या वाले देश में औद्योगिक उन्नति के लिए कृषि की उपेक्षा नहीं की जा सकती।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औद्योगिक प्रगति के साथ-साथ कृषि की प्रगति भी अनिवार्य है। पुनः जब श्रमिकों की उपलब्धि ग्रामों से ही होती है तो क्यों न सम्पूर्ण देश में लघु उद्योगों का जाल बिछा दिया जाय जिससे कि श्रमिकों की बहुत बड़ी संख्या इन लघु उद्योगों में लग जाय। ऐसा होने से नागरिक जीवन के भारी खर्च से श्रमिकों को राहत मिलेगी, तथा उनका जीवन अधिक सुखी और सन्तोषप्रद होगा। हां, यह बात साथ-साथ आवश्यक है कि जीवन को उन्नत बनाने के लिए स्कूल, पुस्तकालय आदि आवश्यक संस्थाओं की स्थापना भी ग्रामों में होनी चाहिए। इस प्रकार बड़े-बड़े उद्योगों को प्राप्त होनेवाले श्रमिकों की संख्या में भारी कमी आयेगी और उन श्रमिकों का मूल्य भी बढ़ जायगा और तभी शहरों में लगे हुए श्रमिकों को यथोचित पारिश्रमिक मिल सकेगा।

पर ये सब बातें तभी सम्भव हो सकती हैं जब देश की सभी समस्याओं को सुलझाने का आधार राष्ट्रीयता हो और सम्पूर्ण राष्ट्र एक सूत्र में बंधा हुआ हो। अतः किसी भी समस्या का समाधान स्वतंत्र रूप से नहीं हो सकता। उसकी अच्छी बुरी प्रतिक्रिया अन्यान्य समस्याओं पर भी पड़ती है। इसलिए उक्त बातों को ध्यान में रखकर निःस्वार्थ भाव से यदि देश के एक अदने नागरिक से राष्ट्रपति तक जड़वादी प्रवृत्ति की मोह माया से दूर, शुद्ध-सत्य और सनातन वैज्ञानिक आधार पर राष्ट्र जीवन का पुनरुद्धार करना चाहें तभी समस्त समस्याएं आसानी से सुलझ सकेंगी।

● ○

---

( पृष्ठ ४९२ का शेष )

करोड़ गज का लक्ष्य रखा गया है। इसका बंटवारा क्षेत्र के विभिन्न भागों में—यानी हथकरघा, हथकरघा-क्षेत्र में बिजली-चलित करघे, तथा अन्य करघे और खादी, जिसमें अम्बर और मामूली चर्खे के मिले-जुले सूत से बनी खादी भी शामिल है—अलग-अलग कितना कपड़ा तैयार होगा, इसका अन्तिम निश्चय अभी होना है। फिर भी हथकरघा-उद्योग के लिए १९६५-६६ तक २ अरब ८० करोड़ गज कपड़े के उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। लगभग २ लाख उन करघों को भी, जो इस समय बेकार पड़े हैं, चालू करने का विचार है। जहां तक हथकरघा-क्षेत्र में बिजली-चालित करघों का सवाल है, दूसरी योजना के दौरान स्वीकृत १३ हजार बिजली-चालित करघों के लगाने पर विशेष जोर दिया जाएगा। अतिरिक्त खादी-उत्पादन की व्यवस्था करने में इस बात पर दिया जाएगा कि उसकी स्थानीय आवश्यकताएं पूरी हों, ताकि बहुत अधिक बचे माल को कहीं और ले जाकर बेचने की कठिनाइयों से बचाया जा सके।

## ग्रामोद्योग

इधर कुछ वर्षों में ग्रामोद्योगों के विकास के क्षेत्र में बहुत सारे उपयोगी अनुभव प्राप्त हुए हैं। जो काम पहले किया जा चुका है, उसकी जड़ें मजबूत करने के अलावा तीसरी योजना में मुख्यतः कुछ चुने हुए क्षेत्रों में सघन प्रयत्न करने पर और इन उद्योगों के कार्यक्रमों को ग्राम विकास के दूसरे कार्यक्रमों से पूरी तरह समन्वित करने पर जोर दिया जाएगा। अनुभवों के परिणाम-स्वरूप खादी और ग्रामोद्योग आयोग कागज की लुग्दी तैयार करने के लिए, खाने के काम में आने वाले तेलों की पेराई के लिए गुड़, खाण्डसारी और ताड़ से चीनी बनाने के लिए, बिजली का उपयोग शुरू कर रहा है। ग्रामोद्योग में विकेन्द्रित आधार पर बिजली काम लाने की अन्य सम्भावनाओं की जांच की जा रही है।

दूसरी योजना में इस उद्देश्य से कुछ कार्यक्रम शुरू किए गए थे कि बड़े-बड़े कारखानों की सहायता के लिए और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए छोटे कारखानों का विकास किया जाए और यह सारा प्रबन्ध स्वेच्छा से हो। पता चला है कि बड़े कारखानों के सामने शुरू शुरू में जो कठिनाइयां उपस्थित हुईं, उनमें से एक तो यह थी कि छोटे कारखाने आवश्यक चीजों का नियमित रूप से संभरण करते रह सकेंगे या नहीं, इस विषय में नियमपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता था और दूसरी यह है कि उनकी चीज़ें हमेशा एक ही स्तर की हो भी सकेंगी या नहीं। दूसरी ओर छोटे कारखानों के सामने कभी कभी यह बाधा आती है कि उनके पास काफी साज-सामान नहीं होता और नक्शे, डिजाइन और विशिष्टता प्राप्त करने की आवश्यक सहूलियत नहीं होती। उद्योग तथा वाणिज्य मंत्रालय द्वारा नियुक्त एक समिति इस विषय की जांच कर रही है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# स्वावलम्बन पूर्ण आर्थिक विकास

ब्रिटिश नेशनल कोलबोर्ड के आर्थिक सलाहकार श्री ई० एफ० शुमेखर ने सर्व-सेवा-संघ द्वारा आयोजित पूने के एक अध्ययन केन्द्र में भारत के आर्थिक विकास के बारे में स्पष्ट कहा है कि भारत की अर्थ-व्यवस्था यहां के ८५ प्रतिशत बस्ती वाले छोटे-बड़े ५ लाख से अधिक गांवों को दृष्टि में रखते हुए होनी चाहिए, न कि कुछ हजार शहरों के १५ प्रतिशत नगर-निवासियों की भलाई के लिए। वर्तमान स्थिति यह है कि नगर-निवासी ग्रामवासियों के शत्रु बने हुए हैं और गांव वाले शहरियों के। शहरों में जो बड़े-बड़े उद्योग-धन्धे बढ़ रहे हैं वे गाँव वालों के हितों के प्रतिकूल हैं और गाँवों में इतनी बेकारी फैल रही है कि लोग भाग-भाग कर बड़े शहरों की ओर जा रहे हैं और इस प्रकार उन नगरों के सामने भी समस्या पैदा कर रहे हैं। भारत में बड़े-बड़े उद्योग छोटे उद्योगों का गला घोंट रहे हैं, इसलिए यह जरूरी है कि औद्योगिक प्रतिस्पर्द्धा की भावना को दूर किया जाय। केवल कृषि का विकास करने पर भी भारत का पूरा कल्याण नहीं होगा—सभी तरह के छोटे-बड़े उद्योगों का विकास होने पर ही समन्वयात्मक विकास हो सकता है। जब तक बड़े शहरों से दूर देहातों तक में छोटे उद्योग-धन्धों का विकास न हो तब तक ८५ प्रतिशत ग्रामवासियों का जीवन-मान ऊपर नहीं उठ सकता। भारत की योजना ज़िले वार ढंग पर, जिसमें दस से बीस लाख के आस-पास की आबादी हो और एक हजार तक गाँव हों, कुछ शहर हों और एक जिले का सदर-मुकाम हो, क्रियान्वित होनी चाहिए। हर जिला अपनी जरूरत खपत की हर चीज के मामले में आत्मभरित हो और उसे खाने-पीने, कपड़े, रहने के मकान, खेती और उद्योग के औजार और तकनीकी महाविद्यालय (टेकनिकल कालेज) तक की शिक्षा के लिए एक दूसरे क्षेत्र का मुंह न देखना पड़े। इसका मतलब यह है कि हर जिला अपने विकास का निर्माण और पूरक स्वयं हो। प्रश्न हो सकता है कि केन्द्रीय और प्रादेशिक सरकारें इसके लिए क्या करेंगी? मेरा विचार है कि वे आरम्भिक प्रेरणा दे सकती हैं और तकनीकी सहायता भी। केन्द्रीय सरकार अधिक से अधिक सहायता भी दे सकती है और उसे ऐसा करते समय कम-से-कम शर्तें लगानी चाहिए। यदि रुपया ऋण के रूप में दिया जाय तो उसे वापस न करके एक अलग कोश के रूप में निर्मित कर देना चाहिए जो बाद में जिला-स्तर पर काम में लाया जा सके।"

जिला-स्तर पर औद्योगिक विकास होने देने के लिए केन्द्रीय सरकार को बड़े शहरों में औद्योगिक विकास की गति रोक देनी चाहिए। जिले की ज़रूरत जिले में ही पूरी हो जाने और स्थानीय ढंग से स्थानीय श्रमिकों को काम पर लगा देने से न केवल बेकारी दूर हो जायगी, बल्कि बड़े पैमाने पर पाश्चात्य ढंग के कारखाने खोलने का लोभ भी नहीं बढ़ेगा। जिला-स्तर पर बनी चीज़ों के लिए विदेशी निर्यात ढूंढना गलत होगा, क्योंकि आत्मभरित क्षेत्रों को विदेशी डालर कमाने, विदेशी वस्तुएं अपने इस्तेमाल के लिए मंगाने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। केवल बड़ी योजनाओं—बाँधों आदि को लेकर जो निर्माण-कार्य हो रहा है, उसकी पूर्ति के लिए बाहरी मदद ज़रूर हो सकती है, पर ऐसी मदद भारत की आत्म-निर्भरता की भावना को ठेस पहुँचाने वाली होगी।

## पूंजीवाद, समाजवाद और सर्वोदयवाद

(१) अभी मैं दिल्ली स्टेशन पर रुका, सामने ही सुन्दर स्टाल है, जहाँ चाय, काफी आइसक्रीम आदि मिलती है। कीमतें काफी ऊंची हैं, दिल्ली स्टेशन के अनुरूप पैसे दीजिए और दिल व दिमाग तर कर लीजिए। चीज़ें ज़रूर साफ-सुथरी हैं, लेकिन पैसे का खेल है। जिसके पास पैसा नहीं, वह पास नहीं फटक सकता।

(२) कुछ फासले पर दूसरा स्थान है। रेलवे का इन्तजाम है। वहां ठंडा पानी मिलता है। मुफ्त मिलता है। गिलास भर कर एक लड़का देता है। पीते जाइए और हटते जाइए। लाइन लगी है। छह बजते हैं। लड़के की ड्यूटी खतम हो गयी। दूकान बन्द और लड़का गायब। लोग प्यासे रह गये, तो रह गये। आखिर लड़का ७ घंटे



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से तो ज्यादा काम तो नहीं कर सकता ! दूसरा आयेगा। देर भी हो सकती है।

(३) दिल्ली से पैसेंजर में रवाना हुआ। रास्ते में एक स्टेशन पड़ा। गांव के लोगों ने प्याऊ का इन्तजाम कर रखा था। ठण्डे पानी से भरे घड़े सजाये हुए थे। युवक बाल्टियां लिये हुए तैयार थे। बड़े आग्रह से, प्रेम से पानी पिला रहे थे। सबको पिला रहे थे, भाग-भागकर पिला रहे थे। गाड़ी जब तक रुकी रही, पिलाते रहे। चलने लगी तो भी जितनों को पिला सकते थे, पिलाया। आखिर गाड़ी चल दी।

पहली व्यवस्था में पूंजीवाद की झलक है, दूसरी में समाजवाद की और तीसरी में सर्वोदय की।

—श्री जवाहरलाल जैन

## समाजवाद की स्थापना कैसे हो !

अगर आप समाजवाद लाना चाहते हैं, तो उसका एक ही रास्ता है और वह यह है कि आप गरीब जनता के बीच गांवों में जाकर बैठिए और गांव का जीवन बिताइये। गांव वालों के जीवन के साथ अपने जीवन को घुला-मिला दीजिए, उनके साथ ८ घण्टे मेहनत कीजिए, अपने निजी जीवन में भी गांवों में पैदा होने वाली चीजों का ही उपयोग कीजिए, गांवों को निरक्षरता मिटाइये, अस्पृश्यता का नाश कीजिए और स्त्रियों को आगे बढ़ाइये। मैं तो आप से यहाँ तक कहूँगा कि आप गांवों के साथ ऐसा सजीव संबंध खड़ा कीजिए कि आप में से कोई अविवाहित हो और विवाह करना चाहता हो, तो वह गांव की कन्या से विवाह करे और कोई स्त्री हो तो वह अपने लिए गांव का लड़का ही पसन्द करे।

आप गांवों में और झोंपड़ियों में रहने वाली जनता को अपने हाथ में लीजिये। अपने ज्ञान, कौशल, सूझ-बूझ, रचनात्मक कार्य और देशभक्ति का लाभ उसे दीजिये। जनता को अपने जीवन से इस प्रकार की सच्ची शिक्षा दीजिए। आपके सारे कार्य जनता के हित में होने चाहिये। नहीं तो जनता के उलटने पर, बगावत करने पर, आज की इस गुलामी से भी कहीं बुरी हालत खड़ी हो जाएगी। इससे पहले कि जनता विनाश का रास्ता अपनाए, हमें उसे रचनात्मक कार्यों की जीवन-प्रद शिक्षा देनी चाहिए।

—गांधीजी

## ग्राम उद्योग किसे कहें ?

जिन उद्योगों में नीचे लिखे गुणों में से सब या अधिकतर हों, उन्हें ग्रामोद्योग मानना चाहिये—

(१) जो गांवों के लिये आवश्यक वस्तुओं का गांव वालों के लिये उत्पादन करते हैं।

(२) उत्पादन-विधियां गांव वालों की पहुँच के भीतर हैं।

(३) ऐसे औजार यन्त्र रूप काम में लाये जाते हैं जो गांव वालों की आर्थिक पहुँच के भीतर हैं।

(४) जिनमें स्थानीय कच्चे माल का उपयोग होता है

(५) चालक-शक्ति मनुष्य अथवा पशु द्वारा प्राप्त होती है।

(६) जिनका बना माल स्थानीय अथवा पास-पड़ौस के बाजारों में बिकता है।

(७) जिनसे मजदूरों में बेचारी नहीं पैदा होती।

इनमें से कुछ उद्योगों में बहुत से लोगों का सहयोग आवश्यक होना सम्भव है। यह सहयोग चाहे मजदूरी ले कर प्राप्त किया जाय या लाभ बांटकर। किसी भी उद्योग में मजदूरों की संख्या उद्योग-विशेष पर निर्भर करेगी।

—जे० सी० कुमारप्पा

## अम्बर चरखा व विद्युत

पिछले कुछ समय से सर्वोदय के क्षेत्रों में यह प्रश्न चर्चा का विषय बना हुआ है कि अम्बर चर्खे और खादी के कर्घों में बिजली की शक्ति का प्रयोग किया जाय या नहीं। इस सम्बन्ध में श्री रामसिंह भाई, संसद सदस्य ने अपने एक भाषण में कुछ विचार प्रकट किये थे वे यहां दिये जाते हैं—

हमने इन्दौर में अम्बर चरखा पावर से चलाना प्रारम्भ किया। हमने इस प्रयोग को पूज्य विनोबा भावे, श्री ढेबर भाई और केन्द्रीय उद्योग मन्त्री श्री मनुभाई शाह को बताया और कहा कि इससे एक कुटम्ब की आय आठ आने से बढ़कर दो ढाई रुपये हो जाती है। अगर एक गरीब बेकार कुटुम्ब को एक अम्बर चरखा दें, उसे पावर से चलाने दिया जावे तो हमारी बेकारी भी मिटेगी और काम करने वालों की आमदनी बढ़ेगी, किन्तु सभी ओर से हमें यह कहा जाता है कि बिजली से चलाने पर अम्बर चरखा कारखाने का रूप ले लेगा। मुझे यह समझ में नहीं आता

(शेष पृष्ठ ४९८ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## श्रम समस्या

### राष्ट्रीय मजदूरों की अभिलाषाएँ

म० प्र० रा० म० कां० का यह निश्चित मत है कि देश समाजवादी औद्योगीकरण की उस स्थिति पर पहुंच गया है जहां कि उद्योगों की व्यवस्था में श्रमिकों को उत्तरोत्तर जवाबदारी प्राप्त होना अपरिहार्य रूप से आवश्यक है। यह अधिवेशन तृतीय पंचवर्षीय योजना के शुभारम्भ पर अपनी इस प्रतिज्ञा को पुनः दोहराता है कि देश व प्रदेश के आर्थिक सामाजिक विकास के हेतु किये जाने वाले प्रयत्नों में इस प्रदेश का श्रमिक वर्ग उत्साहपूर्वक अगली कतार में रहेगा तथा सामाजिक न्याय के आधार पर उद्योगों में अनुशासन तथा शांति बनाए रखने, उत्पादन वृद्धि करने एवं राष्ट्रीय बचत योजना में शक्ति भर सहयोग देने की अपनी जवाबदारी का पूरा-पूरा निर्वाह करेगा।

नियोक्ता व उच्च संचालक-वर्ग से मांग करता है कि वे उद्योग-संचालन के स्तर में अविलम्ब पर्याप्त सुधार करें।

म० प्र० राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस का यह अधिवेशन प्रदेश के लाखों खेतिहर मजदूर परिवार की दयनीय स्थिति पर गहरी चिंता तथा उनके प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हुए उनके संगठन व आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति के हेतु उनका सुदृढ़ और प्रभावशील संगठन बनाने की आवश्यकता अनुभव करता है। किन्तु वर्तमान मंहगाई तथा जीवन-यापन की कठिनाइयों को देखते हुए निर्धारित खेतिहर श्रमिकों के न्यूनतम वेतन बहुत कम हैं। अतः न्यूनतम वेतन की इस राशि को उचित स्तर पर कायम करने की आवश्यकता पर बल देता हुआ यह अधिवेशन शासन से अनुरोध करता है कि इस कानून के अमल के हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में यथासम्भव स्थानीय स्तर पर सक्षम प्रशासकीय व्यवस्था कायम की जाय।

### शासकीय उद्योगों में श्रमिकों की स्थिति

यह अधिवेशन शासकीय तथा अर्ध-शासकीय उद्योगों-सेवाओं के सम्बन्ध में बड़े खेद के साथ पुनः यह घोषित करता है कि इन उद्योगों-सेवाओं के संचालक तथा अन्तोगत्वा शासन नियुक्तों के प्रति अपने प्राथमिक उत्तरदायित्वों को भी न केवल उपेक्षा कर रहा है, बल्कि उनके संबन्ध में मानो बिलकुल बेखबर और लापरवाह है। इस दृष्टि से यह अधिवेशन मांग करता है कि इन उद्योगों-सेवाओं को श्रम-समस्याओं के सम्बन्ध में विचार व निर्णय करने के उद्देश्य से एक उभयपक्षीय सम्मेलन शीघ्रातिशीघ्र बुलाया जाय।

---

### हड़ताल जनता पर प्रहार

बुनियादी उद्योगों में की जाने वाली हड़ताल; जनता के जीवन पर सीधा प्रहार है। उत्पादन ही देश की असली दौलत है। नये दिमाग और नये साधनों से दौलत पैदाकर आर्थिक क्रान्ति की जा सकती है। अधिक उत्पादन का समान बंटवारा ही समाजवाद है। इसके बिना तो गरीबी ही समाज में बांटनी होगी। अतः कठोर परिश्रम से उत्पादन बढ़ाना चाहिए। दस वर्षों में भारत स्वावलम्बी और समृद्ध हो जायगा।

सूदखोरो से जो धन पैदा होता है, वह तो पुराना है। नई दौलत तो नये उत्पादन से ही पैदा हो सकती है। दरिद्रता की बीमारी का इलाज उत्पादन बढ़ाने के अलावा दूसरा नहीं है, उत्पादन के अभाव में तो गरीबी ही बाँटी जा सकती है, धन नहीं।

दुनिया काफी बदल चुकी है। पहले कारखानों में मज़दूरों द्वारा हड़तालें की जाती थी। अब हड़तालों से भारी नुकसान होता है कारखानों का, मजदूरों का और देश का। रेल के मजदूरों की हड़ताल का उदाहरण लीजिए। एक दिन की हड़ताल से सारे देश का जीवन रुक जाता है। कपड़े के या दूसरे कारखाने के बन्द हो जाने से तो कुछ ही नुक होता है, लेकिन रेल जैसी हड़ताल से तो सारी जनता के जीवन पर ही हमला होता है। ऐसी हड़तालें गैर जरूरी करार करदी जानी चाहिए।

समाजवाद का मतलब गरीबी बांटना हरगिज नहीं है। उससे समाजवाद नहीं आ सकता।

—श्री जवाहरलाल नेहरू



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## बेरोजगारी

बेकारी का सवाल एक तरह से सारे राष्ट्र की आर्थिक-सामाजिक मुक्ति का सवाल बन गया है। इसका मुकम्मिल हल तो आयोजित विकास क्रम में कालान्तर से ही होगा, किन्तु अधिवेशन यह मांग करता है कि केन्द्रीय शासन, योजना आयोग व प्रादेशिक शासन इस सम्बन्ध में तात्कालिक रूप से अधिकतम सम्भव राहत देने की दृष्टि से गम्भीरता के साथ पुनर्विचार व भरसक प्रयत्न करें। ●

## सार्वजनिक क्षेत्र में बोनस

समाजवादी समाज की स्थापना में इस आदर्श के अपनाये जाने की समस्या है कि किसी कारखाने व फैक्ट्री में मालिक-मजदूर का सह प्रबन्ध हो, किन्तु समाजवादी समाज का उद्देश्य रखने वाली भारत सरकार सार्वजनिक क्षेत्र में मजदूरों के 'बोनस के प्रश्न पर यह कहना उचित समझ रही है कि सार्वजनिक क्षेत्र में मजदूरों को बोनस का अधिकार नहीं दिया जा सकता, क्योंकि सार्वजनिक क्षेत्र के राष्ट्रीय संस्थानों का लाभ समस्त देश का लाभ है! बम्बई के श्रम मन्त्री श्री शान्तिलाल शाह ने भी इसी आशय के वक्तव्य बम्बई में दिये हैं।

यह बात तो सच है कि सार्वजनिक क्षेत्र का लाभ राष्ट्रीय लाभ है और समूचे राष्ट्र की भलाई में खर्च कर दिया जाता है और निजी क्षेत्र का लाभ केवल मालिकों की जेबों जाता है। प्रश्न यह है कि संविधान के अन्तर्गत समान कानून और समान अधिकार की गारंटी दी गई है। क्या मजदूरों को निजी क्षेत्र में सार्वजनिक क्षेत्र की अपेक्षा अधिक अधिकार होने चाहिये? क्या यह समानता का व्यवहार है? जो लाभ उसे निजी क्षेत्र में उपलब्ध है, उन्हीं को सार्वजनिक क्षेत्र में राष्ट्र हित के नाम पर वह छोड़ देगा!

सार्वजनिक क्षेत्र का तेजी से विस्तार हो रहा है और मजदूरों की संख्या में भी अधिकाधिक वृद्धि होनी स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति में यदि सरकार मजदूरों के दिल में यह बात बैठाना चाहती है कि मजदूर का लाभ सार्वजनिक क्षेत्र की अपेक्षा 'निजी क्षेत्र' में अधिक है तो मजदूरों के दिलों में यह बात घर कर जायगी कि उनके व्यक्तिगत लाभ की दृष्टि से निजी क्षेत्र अच्छा है। क्या सरकार मजदूरों में इसी भावना को पैदा करना चाहती है? जब मजदूर अपना लाभ निजी क्षेत्र की अपेक्षा सार्वजनिक क्षेत्र में कम देखेगा तो क्या सरकार यह अपेक्षा रखेगी कि मजदूर अधिक उत्साह के साथ काम करे? ● ●

---

( पृष्ठ ४९६ का शेष )

कि एक कुटुम्ब में एक अम्बर चर्खा कैसे कारखाने का रूप ले सकता है। दूसरी ओर जिनकी बेकारी मिटाने और आमद बढ़ाने के लिये अम्बर चर्खा शुरू किया गया उन्हें पावर से चलाने देकर आठ आने से ढाई रुपये मजदूरी देने पर ऐतराज होता है और उसकी व्यवस्था के लिये रखे गये अधिकारी और स्टाफ को सेन्ट्रल गवर्नमेंट का पे स्केल लागू किया जाता है। हाल यह है कि देश में ७५ प्रतिशत अम्बर चरखे जिनकी संख्या लाखों में है, बेकार पड़े हैं। अगर उन्हें बिजली से चलाया जावे तो उत्पादन भी मिले और रोटी-रोजी भी। ● ●

## ग्रामीण तेल उद्योग सम्बन्धी महत्वपूर्ण आंकड़े

१९५९-६० में १३.३० लाख बंगाली मन तेल और २०.४१ लाख बंगाली मन खली का उत्पादन हुआ। उसी अवधि में २८,३४४ व्यक्तियों को पूर्ण समय के लिए और १३,५६७ व्यक्तियों कांशिक रूप से रोजगार मिला।

× × ×

१९५९-६० में खादी ग्रामोद्योग कमीशन ने ११४.४७ लाख रुपए उद्योग के विकास के लिए दिए।

× × ×

१९५९-६० में खादी ग्रामोद्योग कमीशन ने आदर्श केन्द्रों की स्थापना, समुन्नत घानियों का वितरण, घानी शेड निर्माण, घानी बनाने वाली वर्कशाप, प्रचार सम्मेलन, प्रशिक्षण और सुधार सम्बन्धी विभिन्न विकास पूरक योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए २८.०८ लाख रु० अनुदान के रूप में और ८५.३९ ऋण के रूप में राज्य सरकारों, विकासायुक्तों, राज्य बोर्डों तथा अन्य अभिकरणों को दिए।

× × ×

संस्थानात्मक प्रगति के दृष्टिकोण से देखा जाय तो १९५९-६० में प्राथमिक सहकारी समितियों, बहु-मुखी सहकारी समितियों, पूंजीबद्ध संस्थाओं, जिला सहकारी संघों तथा राज्य सहकारी संघों की संख्या क्रमशः ३,२२०; ३४७; ४८३,७ तथा ३ थी। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पश्चिमी रेलवे का आर्थिक विकास में योगदान

ले० श्री एस० एस० रामसुबन

पश्चिमी रेलवे का क्षेत्र ६००० मील तक फैला हुआ है। देश के पश्चिमी भागों की—महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश आदि की चार करोड़ जनता की वह सेवा करती है। करीब दस लाख यात्री प्रति दिन इस रेलवे की सेवाओं से लाभ उठाते हैं। बम्बई के उपनगरों के ही छः लाख व्यक्ति प्रतिदिन पश्चिमी रेलवे का उपयोग करते हैं।

केवल यात्रियों की दृष्टि से ही नहीं, व्यापार की दृष्टि से भी पश्चिमी रेलवे का असाधारण महत्व है। दिल्ली, पंजाब, राजस्थान और उत्तरप्रदेश आदि को दिल्ली और कांदला की बन्दरगाहों से मिलाने का महत्व सबसे छोटा मार्ग पश्चिमी रेलवे का है। बम्बई, बड़ौदा, अहमदाबाद, कोटा, इन्दौर, जयपुर और भावनगर आदि उद्योग प्रधान नगरों की आवश्यकताएं भी यही रेलवे पूर्ण करती है।

पश्चिमी रेलवे के मुख्य दो अंग है। बड़ी रेलवे और छोटी रेलवे। अहमदाबाद और दिल्ली के लम्बे मार्ग के द्वारा छोटी लाईन गुजरात और राजस्थान की सेवा करती है तो शेष भागों में बड़ी लाइन। बड़ी लाइन विदेशों से आये हुए अनाज, मशीनरी, पैट्रोलियम आदि देश में पहुँचाती है और भुसावल से कोयला तथा अन्य पदार्थ, जो उत्तरप्रदेश, बंगाल, बिहार आदि से आते हैं, यथा स्थान पहुँचाती है। सौराष्ट्र और राजस्थान आदि में छोटी लाइन यह सेवाएं करती है। आगरा, सवाई माधोपुर, रतलाम, वीरमगाम, और साबरमती अनेक स्थानों पर छोटी और बड़ी लाइनों का संगम होता है, जहां सामान को बदल कर यथा स्थान भेजा जाता है।

गत महायुद्ध में रेलवे की बहुत-सी मशीनरी और लाइनें आदि मरम्मत न होने से खराब हो गई थीं। प्रथम पंचवर्षीय योजना में ३१ करोड़ रुपया इस रेलवे के पुलों, वर्कशापों तथा खराब डब्बों आदि के बदलने आदि पर खर्च किया गया; कुछ मील डबल लाइन भी डाली गई; कांदला को दोसा से जोड़ा गया। तथा अनेक प्रकार की सुविधाएं यात्रियों को दी गई। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रथम योजना में यात्रियों की संख्या बीस करोड़ से बढ़कर तीस करोड़ हो गई और माल ८७.६ लाख टन की बजाय ११४ लाख टन हो गया।

## दूसरी योजना में

दूसरी पंचवर्षीय योजना में प० रेलवे को १७० करोड़ रुपये विकास के लिए मिले। इस अवधि में पश्चिमी रेलवे के यातायात माल के लदान तथा यात्रियों की सुख सुविधा में बहुत उन्नति हुई। इसका लक्ष्य ही यात्रियों में १५ प्र० श० और माल के लदान में २५ प्र० श० वृद्धि करना था। इसके लिए अनेक संस्थानों पर डबल लाइन बिछाई गई। गोधड़ा, रतलाम बड़ौदा, आनन्द तथा अन्य अनेक स्थानों पर यह लाइन बिछाई गई। अनेक रेलवे यार्डों का विस्तार और विकास किया गया, जिस से यात्रियों और विशेषकर माल के लदान के बारे में बहुत सुविधा हो गई। अब इन यार्डों पर पहले की अपेक्षा दुगने से भी अधिक मालगाड़ी के डिब्बे ठहर सकते हैं। अहमदाबाद और चर्चगेट के स्टेशनों का तो कायाकल्प ही कर दिया गया। इन दोनों स्टेशनों के प्लेट फार्मों की संख्या बढ़ा दी गई जिससे अधिक रेल-गाड़ियां आ जा सकें। ४६ नये क्रासिंग स्टेशन बनाए गए और १३६ स्टेशनों पर अतिरिक्त लूप का प्रबन्ध किया गया, जिससे लम्बी चलनेवाली गाड़ियों को बहुत अधिक सुविधा हो गई।

दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में इन्दौर और उज्जैन (देवास होकर) नई लाइन बनाई गयी। इसी तरह भीलदी और रानी बाड़ा स्टेशनों को परस्पर मिला दिया गया। उदयपुर से हिम्मतनगर की १३८ मील लम्बी लाइन बिछाने का काम भी शुरू हो गया है। इससे राजस्थान तथा भारत के पश्चिमी तट से सीधा सम्बन्ध हो जायेगा। और राजस्थान की जस्ते और शीशे की खानों का माल शीघ्र पश्चिम में पहुंच सकेगा।

दूसरी योजना की अवधि में व्यापार लगातार बढ़ा है। इस आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए यह जरूरी था, कि



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालगाड़ी के डिब्बे अधिक भार ले जाने में और इंजन अधिक भारी गाड़ी को खींचने में समर्थ हों, इसलिए उन्हें बदला गया। कुछ पुलों को भी इसीलिए अधिक मजबूत बनाया गया कि उन पर से भारी इंजन गुजर सकें। पुलों के पुनर्निर्माण और दृढ़ीकरण पर २ करोड़ रुपया खर्च किया गया। सिगनल और इन्टरलाक की व्यवस्था में भी सुधार हुआ। अब अधिक गाड़ियों के आने जाने की सूचना और व्यवस्था हो गई है। इसी तरह टेली-कम्युनीकेशन की व्यवस्था को बहुत ऊंचा कर दिया गया है सबडिविजनल हैडक्वाटरों पर स्वचालक टेलीफोन लग गये हैं। खम्भात की खाड़ी पर पारस्परिक सम्बन्ध के लिए व्यवस्था कर ली गई है।

करीब दस करोड़ रुपया खर्च करके नये वर्कशाप बनाए गए हैं, और कई पुराने वर्कशापों की मरम्मत की गई है। दोहद, परेल, अजमेर, जयपुर, कोटा, और साबरमती आदि के वर्कशाप पहले की अपेक्षा बहुत व्यापक कर दिये गये हैं या नये बनाये गये हैं।

रेलवे अधिकारी केवल लाइनों, स्टेशनों और वर्कशापों के विकास तक ही अपनी प्रवृत्तियों को सीमित नहीं कर पाये। रेलवे के असली संरक्षक तो यात्री ही होते हैं। उनकी सुख सुविधाओं वेटिंगहाल (प्रतीक्षा गृह) तथा खान-पान की सामग्री की व्यवस्था, स्नान-गृह आदि के नव-निर्माण और टिकट घर तथा प्लेट फार्मों को अधिक सुविधाजनक बनाने आदि के भी प्रयत्न किए गए हैं। पीने के पानी की व्यवस्था अधिक सुन्दर और व्यापक कर दी गई है। इन सब पर तीन करोड़ रुपया खर्च किया गया है।

रेलवे कर्मचारियों की स्थिति को सुधारने और उन्हें सुख सुविधा पहुंचाने के लिए ८ करोड़ रुपया खर्च किया गया है। नये क्वार्टर बनाए गए हैं। हस्पताल, स्कूल और पुस्तकालय बनाए गए हैं। अन्य भी अनेक प्रकार की सुविधाएं दी गई हैं।

दूसरी योजना के पश्चिमी रेलवे सम्बन्धी लक्ष्यों का निर्देश हम ऊपर कर चुके हैं। किन्तु इन पांच वर्षों में रेलवे ने अपने लक्ष्यों से भी अधिक सफलता प्राप्त कर ली है। १९५९-६० में ३८ करोड़ ६० लाख यात्रियों ने उसकी सेवा से लाभ उठाया है और १४५.४ लाख टन माल का परिवहन हुआ है। १९६०-६१ में तो ये संख्याएं क्रमशः ४० करोड़ ३० लाख और १५० करोड़ लाख टन तक पहुँचने की सम्भावना है। बहुत सी नई पैसेंजर गाड़ियां इस अवधि में चलाई गयी हैं जिनमें मुख्य ये हैं :

१. बम्बई-दिल्ली जनता ऐक्सप्रेस
२. बम्बई-दिल्ली वातानुकूलित ऐक्सप्रेस
३. गुजरात एक्सप्रेस
४. अहमदाबाद दिल्ली जनता एक्सप्रेस

और भी अनेक नयी गाड़ियां चलायी गयी हैं। पश्चिमी रेलवे में दो प्रकार की छोटी और बड़ी रेलवे लाइनें हैं। इन दोनों की पारस्परिक संगति के लिये—एक का माल दूसरी पर पहुँचाने के लिए की गई व्यवस्था इस अवधि का एक महत्वपूर्ण कार्य है। इसके द्वारा साबरमती और वीरमगाम की क्षमता पहले से कुछ अधिक बढ़ गई है।

## तीसरी योजना में

दूसरी योजना में चतुर्मुखी सफलता पाने के बाद भी अभी बहुत कुछ करना बाकी है। देश की अर्थ-व्यवस्था निरन्तर विकसित हो रही है। यातायात को भी नई आवश्यकताओं के अनुरूप अपना विस्तार करना होगा। इसी कारण तीसरी पंचवर्षीय योजना में बहुत ऊँचे लक्ष्य रखे गए हैं—१६५ मील लाइन डबल करनी है, ६३ क्रांसिंग स्टेशन बनाने हैं। ४६ स्टेशनों पर लूप की व्यवस्था करनी है; बहुत से यार्डों का विस्तार करना है : ४१२ मील नयी लाइनें बनानी हैं तथा २ बड़े पुलों को दुहरा करना है। इन सब कार्यों के लिए न जानें कितना कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। किन्तु हमें यह विश्वास है कि इस रेलवे के कर्मचारी और भी अधिक परिश्रम और मनोयोग से राष्ट्र की सेवा करने में कुछ कसर बाकी न रखेंगे।

---

—वर्मा से भारत को मनीआर्डर भेजने पर वर्मा सरकार ने जो रोक लगाई थी, उसको वर्मा के प्रधान मंत्री श्री ऊनू ने शीघ्र हटाने का निश्चय किया है।

—१४ नवम्बर से १ जनवरी तक भारत में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय औद्योगिक मेले में पोलैण्ड ११०,०० वर्ग फुट स्थान पर अपना मंडप बनायेगा, उसकी 'सेकोप' आदि मुख्य विदेश व्यापार संस्थायें इसमें मुख्य भाग लेंगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहु-उद्देशीय पालिसी का चमत्कार

# उसने, केवल एक बार ही २८८ रु. देकर अपने परिवार के लिए १,०१,८८० रु. का प्रबंध किया

घर के कर्त्ताधर्त्ता की मृत्यु होते की परिवार की आय की भी मृत्यु हो जाती है, वह तत्काल बंद हो जाती है। किन्तु बहु-उद्देशीय पालिसी लेने के बाद किसी बीमेदार की मृत्यु हो जाय तो उसके परिवार के लिए एक नई आय का प्रारंभ हो जाता है। इस अद्भुत पालिसी का जीता जागता उदाहरण हम यहाँ प्रस्तुत करते हैं:

● एक नौजवान केमिस्ट ने २०,००० रुपये की एक बहु उद्देशीय पालिसी (दुगुने दुर्घटना-लाभ के साथ) ली थी। और दुर्घटना के फलस्वरूप, कुछ ही दिनों में, उसका परिवार उसे खो बैठा। किन्तु इसी पालिसी से उसके परिवार को मिलीं निम्नलिखित सुविधाएँ:

- तुरन्त ही २०,०००) रु. की घनराशि (दुगुने दुर्घटना-लाभ)
- तथा २,०००) रु. अन्त्य-संस्कार, कानून और अन्य खर्चों के लिए
- २ वर्षों तक प्रतिमास ४००) रु.
- तथा २१ वर्षों तक प्रतिमास २००) रु.
- तथा संचित बोनस
- तथा १८,०००) रु., पालिसी की अवधि समाप्त होने पर।

उस नवयुवक ने प्रीमियम के रूप में केवल २८८) रु. ही दिये थे। और इतने से प्रीमियम के फलस्वरूप उसके परिवार को कुछ १,०१,८८० मिल गये–वह महान् धनराशि अत्यंत बुद्धिमत्ता से २३ वर्षों की अवधि तक फैला दी गई थी। और सौभाग्यवश यदि वह जीवित रहता तो निश्शंक उसे २०,०००) रु. तथा संचित बोनस, पालिसी की अवधि समाप्त होते ही, मिल जाते।

बहु उद्देशीय पालिसी तुरन्त ही लीजिए।
यह एक अनुपम सुरक्षा का प्रतीक, आपके परिवार के लिए, है।

## जीवन बीमा

सुरक्षा का सब से बेजोड़ साधन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ASP/LIC-E-22

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# इंजीनियरिंग के सामान का निर्यात और कठिनाइयां

डा. आर. विद्यार्थी (सेक्रेटरी इंजीनियरिंग विकास परिषद)

आज भी जब कोई भारतीय किसी देश में जाता है और भारतीय इंजीनियरिंग के सामान के निर्यात की बात करता है तो लोगों को विश्वास नहीं होता, कि भारत भी इतना सक्षम हो गया है ! क्योंकि १९४७ तक, भारत को विदेशी केवल कृषि-प्रधान देश ही समझते तथा देखते थे।

१५ वर्ष की अवधि में इंजीनियरिंग के सामान के उत्पादन तथा निर्यात में भारत के अत्यधिक उन्नति करने पर भी विदेशों में वह यह प्रभाव नहीं डाल सका कि भारत अब तेजी से एक औद्योगिक देश बनता जा रहा है। फिर भी लेख में दी गई तालिकायें बतायेंगी कि भारत के व्यापार सम्बन्ध कितनी द्रुतगति से विकसित हो रहे हैं। पिछले चार वर्षों में भारतीय इंजीनियरिंग उद्योग ने अपने निर्यात व्यापार में १९५६ में ३ करोड़ रुपये से १९६० में ९ करोड़ ५० लाख रुपये की वृद्धि की है।

भारत दुनिया के ७२ देशों और द्वीप राज्यों को १५० किस्म के इंजीनियरिंग का सामान का निर्यात करता है। बड़े सामान को छोड़कर छोटे सामान की निकासी में बहुत विस्तार किया जा चुका है। अलौह धातुओं के सामान निर्माण के क्षेत्र में भारत ने अल्मूनियम चादरें और सर्किल, तांबा चादरें, अन्य विभिन्न प्रकार की वस्तुयें, अल्मूनियम तार और पीतल के तार आदि आम उपभोग की वस्तुयें, इ० पी० एन० एस० तार आदि का निर्यात किया।

लौह और इस्पात की तैयार वस्तुओं में स्टील विलेट लूम, स्लाब, चादरें, बोल्ट, नट, हाथ के औजार, ब्लोवर, सिलिण्डर, फरनेस, स्टील फाइलें, स्टील टैंक, मशीनरी के हिस्से (पार्ट्स) और इनामेल वायर, खेती के औजार, क्रौन कार्क, कास्ट आइरन से निर्मित वस्तुयें, नेल, इस्क्रयू, रेजर ब्लेड, रिवेट, वाशर्स, स्टेनलेस स्टील के बर्तन, स्टील ट्रंक और स्टील फर्नीचर आदि उपभोग्य पदार्थों का भारत निर्यात करता है। फिर बड़ी संख्या में हार्डवेयर, कटलरी, इलैक्ट्रोड आदि भी निर्यात की वस्तुओं में सम्मिलित हैं।

## यंत्र तथा मशीनरी

निर्यात में सबसे महत्वपूर्ण वस्तुयें औद्योगिक सयंत्र और मशीनरी है। आज कल भारत मशीन टैक्स टाइल मशीनरी, जूट मिल मशीनरी, तेल, चावल, आटा और रबर मिल मशीनरी, चाय की मशीनरी, सिलाई की मशीनें, डिजेल इंजन और कलपुर्जे और पम्पिंग सैट का निर्यात भी करता है।

विद्युत इंजीनियरिंग के सामान में बिजली के पंखों का निर्यात सर्वाधिक है। इलैक्ट्रिक लैम्प, मोटर, ड्राइ बैटरी, स्टोरेज बैटरी, रेडियो, वायर, केबल आदि सभी सामानों का निर्यात हो रहा है। मोटर और मोटर के कलपुर्जों, मोटरों के ढांचे, ट्रैक्टर और ट्रैक्टर पार्ट, ट्रेलर, मोटर लोंच, साइकिल आदि की विदेशों में अच्छी मांग है। बिजली संयंत्र के निर्माण सामग्री भी हम निर्यात करने लगे हैं।

## कठिनताएं

यदि देश की जरूरतों को पूरा कर भी लिया, फिर भी माल के लिये विदेशों में बाजार प्राप्त करने में अनेक कठिनाईयां हैं।

पहली कठिनाई तो यह है जो देश हमारे ग्राहक हैं वहां राजनीतिक अस्थिरता तथा गड़बड़ी हैं। जो बाजार एक बार हाथ लगा वह दूसरी बार हाथ से निकल जाता है अथवा बाधा पड़ जाती है और फिर से नये सिरे से सम्बन्ध स्थापित करने पड़ते हैं।

दूसरी कठिनाई विदेशों में आयात कर की दीवार बहुत ऊंची है और प्रतिस्पर्धा में हम दूसरे देशों से पीछे रह जाते हैं। उदाहरण के लिये पाकिस्तान और आस्ट्रेलिया में कुछ सामान बेचने में घाटा उठाना पड़ता है।

तीसरी कठिनाई यूरोप के साझे बाजार हैं, जो निश्चय ही हमारे सामान के निर्यात में रोड़े हैं।

चौथी कठिनाई यह है कि इन पिछले दस साल में जो देश स्वतंत्र हुए हैं, उन सब देशों में प्रबल राष्ट्रवाद की व्यापक भावना आत्मनिर्भरता की मांग कर रही है और उपभोक्ता औद्योगिक माल के उत्पादन में जुट गये हैं। इसलिए हमारे सामान की मांग कम होती जा रही है और आगे और कम होने के आसार हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

( पृष्ठ ५०१ का शेष )

पांचवीं कठिनाई विदेशों में हमारे रेलवे ट्रेक सामग्री की मांग होती भी है तो उस पर सरकार का कठोर नियंत्रण है।

छटीं कठिनाई बड़ी मात्रा में कच्चे माल की उपलब्धि की है। उदाहरण के लिए कच्चा लोहा, इस्पात और अलौह धातुओं की इतनी अधिक उपलब्धि नहीं, जिसको अतिरिक्त माल के रूप में बाजार हथियाने के लिये सस्ती दर पर बेच सकें।

सातवीं कठिनाई यह है किसी विशेष उद्योग के साज-सज्जे अथवा उपभोग समूह के रूप में पूरी सामग्री का निर्यात कर सकने में हम असमर्थ हैं क्योंकि विदेशी व्यापारी किसी विशेष काम के लिए उसकी पूरी सामग्री चाहते हैं। उदाहरण के लिए सम्पूर्ण विद्युत सामग्री को एक साथ मुहैया करने में असमर्थ हैं।

और अंतिम कठिनाई यह है कि हमारे निर्यातकों में निर्यात व्यापार का वह मादा नहीं जो उनमें होना चाहिये।

जहां-जहां हमारा इंजीनियरिंग का सामान जाता है उन देशों को हम नौ क्षेत्रों में विभक्त करते हैं।

(१) दक्षिण पूर्वी एशिया (२) पश्चिमी एशिया, (३) अफ्रीका (४) आस्ट्रेलिया (५) न्यूजी लैण्ड, (६) यूरोप, (७) उत्तरी और मध्य अमेरिका (८) दक्षिण अमेरिका, (९) वैस्ट इंडीज और कुछ समुद्रद्वीपीय देश। दक्षिण पूर्वी एशिया में पाकिस्तान, लंका बर्मा और सिंगापुर हमारे माल के बड़े ग्राहक हैं। पश्चिमी एशिया में बहरीन प्रथम है, और फिर अदन, ईराक, सऊदी अरब और मस्कट है। अफ्रीका में मिश्र, घाना, नाईजीरिया हमारे सामान के बड़े सुन्दर ग्राहक हैं। सूडान में हमारा सामान बड़ी मात्रा जाता है। न्यूजीलैण्ड के साथ १९६० में हमारा व्यापार बहुत सन्तोषजनक रहा। आशा यह की जाती है हमारे इस सामान की खपत तथा मांग इन देशों में बढ़ती ही जायगी।

यूरोप में हमारा बड़ा ग्राहक ब्रिटेन है। पश्चिमी जर्मनी, हालैंड और इटली भी अच्छे ग्राहक हैं, फ्रांस, स्विटजरलैंड और स्वेडेन के बाजारों में हमारा प्रवेश अभी-अभी शुरू हुआ है। संयुक्त अमेरिका हमारे इंजीनियरिंग के सामान को बड़ी संख्या में मंगाता है। लगभग १३५ लाख का वह सामान मंगाता है। दूसरा स्थान कनाडा का है, लैटिन अमरीका के देशों में कोलम्बिया, चिली और पेरू तक हमारा इंजीनियरिंग का सामान जाने लगा है।

वैस्ट इंडीज में जहां आदिवासी भारतीयों की संख्या अधिक है उनका भी हमारे सामान के निर्यात में बड़ा भाग है। ब्रिटिश गिनी ट्रीनिडाड आदि में सामान की खपत अच्छी है। १२ सहद्र द्वीपीय साइप्रस, फिजी, मारीशस और न्यूगिनी आदि द्वीपों में भारतीय माल की अच्छी खपत है।

## भारत का निर्यात

लाख रुपयों में

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क्षेत्र | १९५७ | ५८ | ५९ | ६० |
| दक्षिण पूर्वी एशिया | १३८.७ | १०२.८ | १६२ | २१८ |
| पश्चिमी एशिया | ११४ | १२७ | १५८ | २१० |
| अफ्रीका | ८२ | ६२.५ | ८२ | १२९ |
| आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड | ७ | २ | ११ | ३ |
| उत्तरी और मध्य अमेरीका | ९१ | ११० | १०६.१ | १३८.२ |
| दक्षिणी अमेरीका और वैस्टइंडीज | ०.६ | ०.७ | ०.४ | ७ |
| द्वीप देश | ५.७ | .५ | १०.३ | ९.३ |
| कुल योग | ४३९.० | ४१०.० | ५५५.० | ८८८.० |

(लेखक के अंग्रेजी में लेख का भावानुवाद)

## स्थायी ग्राहकों से !

स्थायी ग्राहकों से निवेदन है कि वे पत्रव्यवहार में ग्राहक संस्था अवश्य लिखें। संस्था न लिखे होने पर पत्रों का उत्तर देना कठिन होता है। कभी-कभी तो उत्तर जा ही नहीं पाता।

—व्यवस्थापक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्याख्या ग्रन्थ—(पंचम पुष्प) लेखक श्री विद्यानन्द विदेह—प्रकाशक वेद सस्थान मूल्य १ रुपया।

स्वामी विदेही जी वेद संस्थान की ओर से वेदभाष्य प्रकाशित कर रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक में युजुर्वेद के पांचवे अध्याय की व्याख्या की गई है। पांचवें अध्याय का उन्होंने दम्पत्ति परक कार्य किया है। उनका विचार है कि वासना रहित दाम्पत्य प्रेम जीवन को दिव्य बना सकता है। और यही प्रेम आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्मा और परमात्मा के पारस्परिक स्नेह के रूप में परिणत होता है।

व्याख्या की शैली वही है जो पहले के पुष्पों में है। मन्त्र सान्वि, छेद, एक २ वाक्य शब्द की व्याख्या और और अपने भावों का प्रकाशन। इस पद्धति के कारण व्याख्या अधिक विस्तृत हो गई है। और अनेक स्थलों पर मन्त्र की भावना को समझने में सहायक होती है। स्वयं पाठक चिन्तन और विचार के लिए प्रवृत्त होने लगता है। हमारी नम्र सम्मति में यदि वेद भाष्य के महान और विस्तृत कार्य को कुछ वर्षों में सम्पन्न करना है तो अपेक्षा कृत संक्षेप की शैली अपनानी होगी।

निकिता ख्रुश्चेव के भाषण—प्रकाशक—सोवियत संघ का दूतावास २५ बारह खम्बा रोड नई दिल्ली मूल्य १ रुपया।

करीब सवा तीन सौ पृष्ठ की इस पुस्तक में रूस के प्रधानमंत्री श्री निकिता ख्रुश्चेव के उन भाषणों के वार्ताओं और व्यतव्यों का संग्रह है जो उन्होंने अक्तूबर १९६० में सं० रा० संघ की महासभा में अथवा उन दिनों में अमेरिका में दिए थे। इन सब भाषणों का सन्देशों और वक्तव्यों से विश्व शांति के सम्बन्ध में रूस की सद् इच्छाओं और दृष्टिकोण का परिचय मिलेगा। उपनिवेशवादी देशों की आलोचना, रूसी अर्थ नीति का समर्थन निःशस्त्रीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग आदि के सम्बन्ध में श्री ख्रुश्चेव के भाषण काफी ओजस्वी हैं। पत्र प्रतिनिधियों से मुलाकात का प्रकरण बहुत रोचक है।

आज का जापान १९६१—प्रकाशक—सांस्कृतिक विभाग विदेशी मन्त्रालय जापान।

जापान एशिया का छोटा सा परन्तु बहुत उन्नत और सम्पन्न देश है। इस देश का क्षेत्रफल भारत की अपेक्षा आठवां भाग है। फिर भी जापान ने आर्थिक क्षेत्रों में असाधारण उन्नति करके यह सिद्ध कर दिया है कि प्राकृतिक साधनों की सम्पन्नता न होते हुए भी कोई देश किस तरह अपनी अदम्य भावना अनथक परिश्रम और असाधारण प्रतिभा तथा अद्भुत व्यवहार कुशलता के कारण समृद्ध हो सकता है। इस छोटी सी पुस्तिका में जापान की आर्थिक शिक्षा सम्बन्धी सामाजिक और राजनैतिक सभी क्षेत्रों में प्रगति और वर्तमान स्थिति का परिचय दिया गया है। भारत भी उन्नति के मार्ग पर चल रहा है। उसे जापान के उदाहरण से प्रेरणा लेनी चाहिए।

सोशलिस्ट कांग्रेस सैन—सम्पादक श्री हर्षदेव मालवीय, ९३, जौर बाग, नई दिल्ली। मूल्य एक प्रति २५ न० पै०।

अंग्रेजी का यह पाक्षिक पिछले कुछ महीनों से प्रकाशित होने लगा है। इकॉनामिक रिव्यू का अनेक वर्षों तक सम्पादन करने वाले श्री हर्षदेव मालवीय इसके योग्य सम्पादक हैं। उन्हें आर्थिक विषयों का अच्छा ज्ञान है और वे एक अधिकारी की तरह से दृढ़ विश्वास पूर्वक लिखते हैं।

प्रस्तुत पत्र कांग्रेस के समाजवादी विचारों को शिक्षित जनता तक पहुँचाने के लिये निकाला गया है। प्रत्येक अंक में दो-एक पठनीय, मननीय और ज्ञानवर्द्धक लेख अवश्य मिलते हैं। कुछ लेख देश की राजनीति के सम्बन्ध में भी रहते हैं। हमें आशा है कि यह पत्र शीघ्र ही अपने उपयोगी और विचारात्मक लेखों के कारण उन्नति कर जायगा और संभव है कि कुछ समय बाद ही यह साप्ताहिक के रूप में प्रकाशित होने लगेगा।

सम्पदा में
विज्ञापन देकर लाभ उठायें।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रूस का नया २० वर्षीय कार्यक्रम

श्री ख्रुश्चेव

वर्तमान २० वर्षीय कार्यक्रम समाप्त होने पर ऐसी पीढ़िका बंध चुकी रहेगी, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता और आवश्यकता के अनुसार चीजें सुलभ करने के सिद्धांतानुकूल समुचित कम्युनिस्ट वितरण व्यवस्था चलायी जा सके।

२० वर्षों के भीतर सभी कर समाप्त कर दिये जायंगे और फुटकर बिक्री के भाव घटा दिये जायगे। शिक्षा, चिकित्सा, पेंशन और बच्चों के लालन-पालन को सर्वथा निःशुल्क कर दिया जायगा। सन् १९७० और १९८० के बीच सरकारी परिवहन में जनता के लिए यात्रा निःशुल्क हो जायगी।

सन् १९७० और १९८० के बीच स्कूली बच्चों को स्कूली पोशाकें और अन्य स्कूली जरूरत की चीजें मुफ्त मिलने लगेंगी और निःशुल्क नर्सरी तथा किंडरगार्टन व्यवस्था भी चालू हो जायगी। सामुदायिक रूप में निःशुल्क छात्रावासीय स्कूल चल पड़ेंगे जहां गरमागरम भोजन निःशुल्क मिलेगा।

प्रबलतम पूंजीवादी राष्ट्र अमेरिका अपनी अन्तिम ऊँचाई पर पहुँच कर अस्ताचल की ओर जा रहा है। ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और जापान जैसे साम्राज्यवादी राष्ट्रों की पूर्वकालीन शक्ति समाप्त हो चुकी है। अतएव, अनिवार्यतः सभी जगह पूंजीवाद का स्थान समाजवाद ग्रहण कर लेगा।

यह नवीन २० वर्षीय कार्यक्रम 'कम्युनिस्ट समाज की रचना का कार्यक्रम' है। कम्युनिस्ट दल का लक्ष्य ऐसा कम्युनिस्ट समाज तैयार करना है जिसकी पताका पर लिखा रहेगा कि 'प्रत्येक को उसकी योग्यता और जरूरतों के अनुकूल चीजें मिलेंगी।

प्रकाशित कार्यक्रम की भूमिका में कहा गया है—कम्युनिज्म सभी प्रकार की असमानता, अतिक्रमण, शोषण और युद्ध जन्य विनाशों के विरुद्ध समस्त मानव की महत्वाकांक्षाओं का ऐतिहासिक मनोरथ पूर्ण करने में लगा है और सम्पूर्ण विश्व के भीतर श्रम स्वातन्त्र्य, समानता और आनन्द सभी राष्ट्रों में प्रतिष्ठित कर रहा है।

पूंजीवाद की जगह समाजवाद को प्रतिष्ठित करने के लिए सन् १९१९ के लेनिन कार्यक्रम के बाद सामने आया। यह तीसरा कार्यक्रम है। इसे—'पूंजीवाद से कम्युनिज्म की ओर संक्रमण और मानवता के विकास का पथ' नाम दिया गया है। आगे कहा गया है—समाजवादी विश्व बढ़ता जा रहा है और पूंजीवादी जगत् सिकुड़ रहा है और उसका ध्यान सर्वत्र समाजवाद ग्रहण कर लेगा। वर्तमान दो परस्पर विरुद्ध व्यवस्थाओं में संघर्ष, समाजवादी और राष्ट्रीय विमुक्ति क्रान्ति, साम्राज्यवाद का विनाश, उपनिवेशवाद के अन्त और विश्वव्यापी रूप में समाजवाद एवं कम्युनिज्म के विस्तार का है।

केवल समाजवादी क्रान्ति और सर्वहारा तानाशाही की ही स्थापना से राष्ट्र समाजवाद के लक्ष्य पर पहुँच सकता है। रूसी अनुभव ने लेनिनवाद का ऐतिहासिक सत्य सिद्ध कर दिया है और उसने समाज-सुधार के आदर्शों को मारक धक्का दिया है। समाजवाद का रास्ता तैयार हो चुका है और देर-सबेर सभी लोग इसी रास्ते आ जायगे। सर्वहारा तानाशाही की ही एक किस्म 'जनीन जनतन्त्र' नामक एक नये राजनीतिक समाज संघटन के रूप में सामने आ गयी है, जिसमें व्यापक रूप में समाजवादी व्यवस्था उभर रही है।

## लेखकों से

'सम्पदा' में आर्थिक लेख ही छपते हैं, कविता, कहानियां या अन्य विषयों के नहीं। अतः लेखकों से प्रार्थना है कि वे केवल आर्थिक लेख ही हमारे पास भेजें जो कागज के एक ओर काफी हाशिया छोड़कर स्पष्ट अक्षरों में लिखे हुए हों। अस्वीकृत लेख वापिस मंगाने के लिए १५ न० पै० के टिकट भेजें।

—सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# स्वाधीन भारत का निर्यात व्यापार

१९४८-४९ में जहां भारत का निर्यात व्यापार ४५१.४ करोड़ रुपये का था, वहां १९५९-६० में बढ़कर ६३२.५ करोड़ रुपये का हो गया याने ४० प्रतिशत की वृद्धि हुई। विश्व आर्थिक प्रवृतियों में निरंतर परिवर्तन से हमारे निर्यात व्यापार पर बहुत प्रभाव पड़ा, जबकि अन्य देशों में भी उत्पादन अधिक बढ़ता गया। कुल व्यापार बढ़ने पर भी उसका प्रतिशत गिर गया। इस दृष्टि से भारत के निर्यात व्यापार के विषय में दिलचस्प अध्ययन सामग्री नीचे की तालिका में दी जा रही है।

विश्व के निर्यात व्यापार में भारत का हिस्सा
(करोड़ रुपयों में)

| वर्ष | विश्व का व्यापार | भारत का व्यापार | विश्व के निर्यात व्यापार में भारत का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| १९४८ | १७,४९० | ४५१ | २.६ |
| १९४९ | अप्राप्य | ४७९ | ... |
| १९५० | २६५९२ | ५६१ | २.१ |
| १९५१ | ३६,०४८ | ७८३ | २.२ |
| १९५२ | ३४७७६ | ६१८ | १.८ |
| १९५३ | ३५१३६ | ५३१ | १.५ |
| १९५४ | ३६४८० | ५६३ | १.५ |
| १९५५ | ३९६९६ | ६०७ | १.५ |
| १९५६ | ४४११२ | ६१९ | १.४ |
| १९५७ | ४७४२४ | ६५७ | १.४ |
| १९५८ | ४५१२० | ६२२ | ... |

इस तालिका से यह प्रकट होता है कि भारत के निर्यात व्यापार का हिस्सा २.६ से घटकर १.३ रह गया। स्टर्लिंग क्षेत्र में भी भारत के निर्यात व्यापार का हिस्सा ९.४ प्रतिशत से गिरकर १९५८ तक ५.९ प्रतिशत आ गया।

## निर्यात के व्यापार में वृद्धि

विदेशी निर्यात के सामान की मात्रा और निर्यात होने वाली वस्तुओं की कीमतों में निम्न तालिका से पर्याप्त प्रकाश पड़ जाता है।

भारत का निर्यात व्यापार
(१९४८-४९ = १००)
(निर्देशक अंक)

| वर्ष | मूल्य विवरण | मात्रा |
|---|---|---|
| १९४९-५० | १०३ | १०९ |
| १९५०-५१ | ११५ | १२३ |
| १९५१-५२ | १६९ | ९८ |
| १९५२-५३ | ११९ | १०९ |
| १९५३-५४ | १०९ | १०९ |
| १५५४-५५ | ११७ | ११४ |
| १९५५-५६ | १०७ | १२५ |
| १९५७ | ११२ | १३० |
| १९५८ | १११ | ११८ |
| १९५९ | १०८ | १३० |

निम्न तालिका से इस बात पर प्रर्याप्त प्रकाश पड़ जाता है कि (१) खाद्य पदार्थ, पेय पदार्थ, और तम्बाखू, (२) कच्चे माल और (३) तैयार माल की मात्रा और मूल्यों में १९५३-५४ से १९५८ तक किस तरह उतार चढ़ाव आया है।

मुख्य वस्तु—समूहों का निर्यात
(निर्देशक अंक)

| वर्ष | खाद्य, पेय और तम्बाखू | | कच्चा माल | | तैयार माल | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | मूल्य | मात्रा | मूल्य | मात्रा | मूल्य | मात्रा |
| १९५३-५४ | १०६ | ९८ | १०० | ७२ | ८३ | ११६ |
| १९५४-५५ | १२९ | १०७ | ९९ | ८२ | ८२ | ११७ |
| १९५५-५६ | ११७ | १०१ | ९० | १२३ | ८० | ११७ |
| १९५७ | ११७ | १११ | १०३ | ९४ | ८० | १३५ |
| १९५८ | ११४ | १२४ | ९३ | ४८ | ७९ | ११० |
| १९५९ | ११० | १२८ | ९३ | ९८ | ७९ | १२२ |





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अपने प्राचीन देश के पुनर्निर्माण में.....

**रजा बुलन्द शूगर कम्पनी लिमिटेड**
**रामपुर (उत्तरप्रदेश)**

जहां हम भारत में कहीं भी बनने वाली उत्तम सफेद दानेदार चीनी का निर्माण करते हैं ।

**उड़िशा सिमेंट लिमिटेड**
**राजगंगपुर (उड़िशा)**

जहां नवीनतम साधनों एवं उत्पादन की नवीनतम प्रणालियों द्वारा हम बड़ी संख्या में ऊष्मसहों (रिफ्रेक्टरीज़) का निर्माण करते हैं जो कि इस्पात, सिमेंट, कांच आदि विविध बड़े उद्योगों में भट्टियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

**डालमिया सिमेंट (भारत) लिमिटेड**
**डालमियापुरम् (मद्रास राज्य)**

जहां हमारा सिमेंट का उत्पादन निरन्तर वृद्धि पर है। सिमेंट हमारी उन समस्त विकास योजनाओं के लिये अत्यन्त आवश्यक है, जो हमारे उज्ज्वल भविष्य के स्वप्न को मूर्त रूप देने में सहायक हो रही हैं ।

**राष्ट्र की सेवा में सन्निहित एक राष्ट्रीय उद्योग**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं

## बाढ़ों का प्रकोप

उफनाती गंगा के स्तर में शाहबाद, पटना, मुंगेर, भागलपुर और सारन जिले के अधिकांश भूभाग जलमग्न, हो गए हैं। पटना जिले में बाढ़ से ६ लाख आबादी वाले २६९ गांव प्रभावित हुए हैं। १,३१,००० एकड़ में मकई और १२००० एकड़ में धान की खेती जलमग्न हो गई है।

कोसी नदी का पानी भी बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। नदी के तटबन्ध की परिधि में स्थित सहरसा और वारबंगा जिलों के २०० गांवों को उदरस्थ कर लिया है। बराह क्षेत्र में कोशी के पानी की निकासी २३२०,०० क्यूजेक हो गई है।

पूना में जो अप्रत्याशित बाढ़ आई, उसका कारण बांध का टूटना बताया जाता है। पूना को जो करोड़ों रुपयों की क्षति हुई इसके लिए अधिकारियों में भ्रष्टाचार और उनकी उदासी बताई जाती है।

पूर्वी उत्तरप्रदेश, शाहदरा का क्षेत्र और रोहतक का नाला नं० ८ का क्षेत्र जलमग्न होते जा रहे हैं। आर्थिक हानि का अन्दाज करना अभी कठिन है।

## उड़ीसा में जोत की सीमा २० एकड़

राज्य सरकार ने योजना आयोग से सलाह मशविरे के बाद राज्य कृषि भूमि (जोत) की अधिकतम सीमा २० स्टैण्डर्ड एकड़ रखने का निश्चय किया है।

सरकार सारी फालतू जमीन का अधिग्रहण कर लेगी और उसे प्राथमिकता के आधार पर बांटेगी। जोत की सीमा धर्मादा तथा धार्मिक संपत्ति पर लागू नहीं होगी।

जोत की अधिकतम सीमा लागू करने के लिए विधानमंडल के चालू अधिवेशन में उड़ीसा भूमि सुधार कानून में संशोधन उपस्थित किया जाएगा।

२० एकड़ की अधिकतम सीमा ५ व्यक्तियों के एक परिवार के हिसाब से होगी और पांच से अधिक हर सदस्य के लिए १ एकड़ भूमि और दी जाएगी लेकिन यह ३ स्टैण्डर्ड एकड़ से ज्यादा नहीं होगी।

एक स्टैण्डर्ड एकड़ की परिभाषा में संशोधन कर दिया गया है। उसका अर्थ है वर्ष भर सिंचाई की व्यवस्था वाली एक एकड़ जमीन। एक स्टैण्डर्ड एकड़ मौसमी सिंचाई व्यवस्था वाली डेढ़ एकड़ जमीन, वर्षा से सिंचाई वाली २ एकड़ जमीन और सूखी तीन एकड़ जमीन के बराबर माना जाएगा।

बड़े जमींदारों से प्राप्त की जाने वाली जमीन का हर्जाना उनको १० सालाना किश्तों में दिया जाएगा और यह उनको जोतने वाले मुजारों (किसानों) से ७ सालाना किस्तों में वसूल किया जाएगा।

—कुरासिया कालरी (चिरमिरी) की कोयला खान में लगी आग अभी तक बुझाई नहीं जा सकी है। अभी तक हुई क्षति का अनुमान करोड़ों रुपया आंका गया है। इसका देश के औद्योगिक विकास पर बुरा प्रभाव पड़ने की संभावना है।

—गैर सरकारी सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत अक्टूबर में स्वेदिश कारीगरों का एक दल श्री वितरलोफ के नेतृत्व में भारत आयेगा और उत्तरप्रदेश के धनौरा गांव में स्थानीय लोगों के समान रहकर गांव के निवासियों को कृषि तथा घरेलू उद्योग में आधुनिक उपकरणों का प्रयोग सिखायेगा। यह गांव आदर्श गांव बनेगा।

—उत्तर प्रदेश सरकार ने खादी और हथकरघा को उत्पादन तथा बिक्री कर में दी गई छूट समाप्त करने का निश्चय कर लिया है।

—जिस जूट की प्राप्ति की मात्रा में कमी बताई जा रही थी, वह अब बड़ी मात्रा में बाजार में आनी शुरू हो गई है और आगे के दो महीनों में तो बाजार में जूट बहुतायत में उपलब्ध हो जायगा। जूट की कीमत १० रु० प्रति मन गिर चुकी है। इससे काश्तकारों को बहुत परेशानी हो रही है। सरकार इस समस्या के हल के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत एक एक बफर स्टाक की योजना बना रही है जिससे समस्त जूट को उचित कीमत पर खरीद कर जमा रखा जायगा और फिर मिलों को मुहैय्या किया जाता रहेगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अहिंसक समाज रचना की मासिक

# खादी पत्रिका

- खादी ग्रामोद्योग तथा सर्वोदय विचार पर विद्वतापूर्ण रचनाएं।
- खादी ग्रामोद्योग आन्दोलन की देशव्यापी जानकारी।
- कविता, लघुकथा, मील के पत्थर, साहित्य-समीक्षा, संस्था परिचय।
- सांख्यिकी पृष्ठ आदि स्थायी स्तम्भ।
- आकर्षक मुखपृष्ठ : हाथ कागज पर छपाई।

संपादक

ध्वजाप्रसाद साहू

जवाहिरलाल जैन

वार्षिक मूल्य ३) रु०, एक प्रति पच्चीस नये पैसे

राजस्थान खादी संघ पो० खादीबाग (जयपुर)

# 'भारत व्यापार पत्रिका' की विशेषताए

पृष्ठ सं. १०० वार्षिक चंदा ८) साधारण अंक ७५ न.पै.

- उद्योगपतियों एवं व्यापारियों के लिए उपयोगी सामग्री
- व्यापारिक भविष्यवाणी
- एक विज्ञापन मुफ्त छापने की योजना
- अर्थशास्त्र के छात्रों के लिए अनेक जानकारी
- मनोरंजन के लिए आकर्षक कहानी, गंगा की लहरें स्तम्भ में व्यंग विनोद तथा सामयिक कार्टून
- सम्पादक की डाक में आपके प्रश्नोत्तर
- इसके अलावा अनेकों स्थाई स्तम्भ

अगर आपने अब तक पत्रिका नहीं देखी है तो आज ही इस विज्ञापन की कटिंग के साथ २५ नये पैसे का पोस्टेज भेजकर नमूना मंगाइये। विज्ञापन दर तथा जानकारी के लिए लिखें—

व्यवस्थापक, भारत व्यापार पत्रिका (मासिक)

राजा दरवाजा, वाराणसी

तार-केनाको पो० बा० नं० ४६ फोन-३३४३

# आपका अपना राष्ट्र समृद्ध हो जायगा

## ११५ अरब रु० की योजना

तैयार होकर अमल में आने लगी है। आप इसे जरूर जानना चाहेंगे। और पढ़ना चाहेंगे इसके विविध पहलुओं पर विभिन्न दृष्टियों से विवेचनात्मक लेख होंगे, तो सम्पदा के तृतीय पंचवर्षीय योजना अंक की प्रति अभी से सुरक्षित करलीजिये।

लेखों, तालिकाओं, चित्रों, ग्राफ़ चार्टों से परिपूर्ण इस अंक का मूल्य केवल १.५० रु०।

अपने एजेण्ट को कहिए या १.७५ रु० भेजकर यहां से अण्डर पोस्टल सार्टफ़िकेट अपनी कापी मंगा लीजिये।

मैनेजर सम्पदा

२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली—६

सबसे सस्ता सचित्र हिन्दी मासिक

# जागृति

जिसे राष्ट्र भाषा के सभी प्रमुख लेखकों, कवियों, और कहानीकारों का सहयोग प्राप्त है।

उत्प्रेरक कविताएं, ज्ञानवर्धक लेख, सांस्कृतिक निबंध. रोचक कहानियां, बाल संसार, साहित्य आगे बढ़ता है आदि स्तम्भ

तिरंगा आवरण, अनेकों इकरंगे चित्र

४८ से ५६ पृष्ठ की सम्पूर्ण छपाई आर्ट पेपर पर

इस पर भी मूल्य केवल २५ नए पैसे

एजेंटों को ५ से १०० प्रतियों पर २५ प्रतिशत और इससे ज्यादा पर ३३$\frac{1}{3}$ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है। डाक खर्च प्रकाशकों के जिम्मे। ऐजेन्ट नमूने की प्रति के लिए आज ही लिखें।

व्यवस्थापक—'जागृति' हिन्दी लोक सम्पर्क विभाग, पंजाब, चंडीगढ़


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आर्थिक-राजनैतिक अनुसंधान विभाग का पाक्षिक पत्र

# आर्थिक समीक्षा

प्रधान सम्पादक : श्री सादिकअली

सम्पादक : श्री महेन्द्र मेहरा

- हिन्दी में अनूठा प्रयास
- आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख
- आर्थिक सूचनाओं से ओतप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक, पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक।

वार्षिक मूल्य : ५) रु० एक प्रति २२ नये पैसे

लिखें—व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी,

७, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली

# "राष्ट्र-भारती"

सम्पादक—मोहनलाल भट्ट, हृषीकेश शर्मा

वार्षिक चन्दा मनीआर्डर से ६) रु;

नमूने की प्रति ६२ नये पैसे

इसमें आपको लब्धप्रतिष्ठ-विद्वान साहित्यकारों के ज्ञान-पोषक और मनोरंजक अच्छे-अच्छे लेख, कविताएं, कहानियां एकांकी, रेखाचित्र, शब्दचित्र आदि रचनायें पढ़ने को मिलेंगी।

इसमें संस्कृत, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं की तथा अंग्रेजी, रशियन आदि विदेशी भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं के सुन्दर हिन्दी अनुवाद भी रहते हैं।

आज ही मनीआर्डर द्वारा ६) भेजकर ग्राहक बन जाइये।

रियायत—स्कूल-कालेजों, सार्वजनिक पुस्तकालयों तथा वाचनालयों को केवल ५) वार्षिक चन्दे में मिलेगी।

पत्रव्यवहार का पता—

व्यवस्थापक—"राष्ट्रभारती"

हिन्दी नगर, वर्धा

(राष्ट्रभाषा प्रचार समिति)

# भारत की औद्योगिक नीति

भारत के आर्थिक विकास और औद्योगिक उन्नति का सर्वाधिक महत्व है। पर भारत सरकार की उद्योग नीति क्या है—सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के लिए किस तरह दोनों का विभाजन किया गया है, आदि बातें समझने के लिए प्रो० रामनरेशलाल द्वारा लिखित—

## भारत की औद्योगिक नीति

को पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। इसमें भारत के औद्योगिक विकास के इतिहास का भी योग्य लेखक ने विद्यार्थियों की दृष्टि से उपयोगी और सुन्दर परिचय दिया है।

६२ न. पै. के टिकट भेजने पर पुस्तक अण्डर पोस्टल सर्टिफिकेट भेजी जायगी।

मैनेजर—अशोक प्रकाशन मन्दिर,

२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६

# उद्योग-व्यापार पत्रिका

देश में उद्योग और व्यापार को आगे बढ़ाने के लिये क्या हो रहा है और आप इससे किस तरह फायदा उठा सकते हैं? देश में क्या-क्या चीजें और कितने परिमाण में कहाँ-कहाँ बन रही हैं और आप क्या बना कर अच्छी कमाई कर सकते हैं? तरह-तरह के व्यापार की देश-विदेश में क्या दशा है? पंच-वर्षीय योजना से हमारी क्या उन्नति हो रही है? ये सभी प्रश्न ऐसे हैं, जिनके उत्तर आपको अवश्य जानने चाहिएँ, और इन सबकी जानकारी पाने का श्रेष्ठ साधन है—उद्योग व्यापार पत्रिका। इसलिये आप ६ रु० भेजकर साल भर के लिये आज ही ग्राहक बन जाइये। नमूना पत्र लिखकर मंगाइये।

एजेन्टों को भरपूर कमीशन।

पत्रिका विज्ञापन देने का अच्छा साधन है।

वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,

भारत सरकार, नई दिल्ली


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

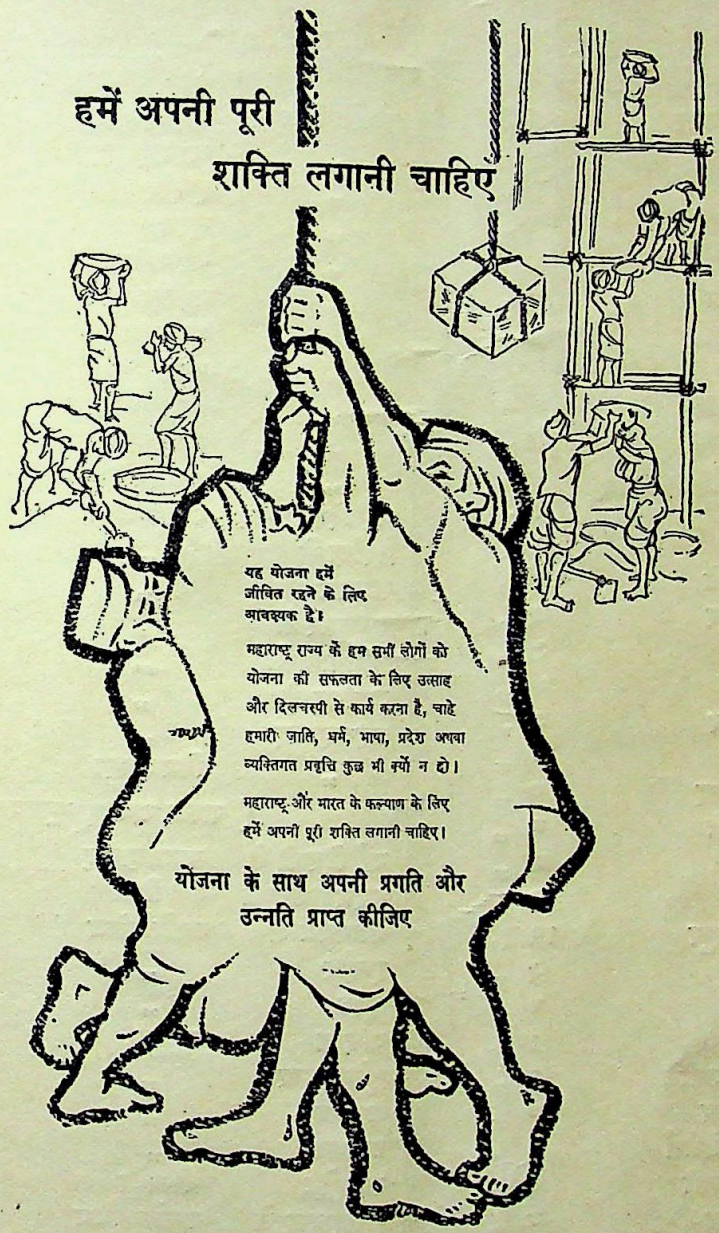


मुद्रक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीजिज ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित व
अशोक प्रकाशन मन्दिर, २८/११, शक्तिनगर, दिल्ली-६ से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक नियत समय में

# माल शीघ्र पहुंचाने की सेवा

## बम्बई की दोनों रेलवे की ओर से कुछ महत्वपूर्ण गाड़ियां निम्नलिखित हैं

### सेंट्रल रेलवे

| | | माल पहुंचाने का समय |
|---|---|---|
| बादी बन्दर से | बंगलौर शहर | ५ दिन |
| ,, | शालीमार | ८ ,, |
| ,, | नागपुर | ३ ,, |
| ,, | साल्ट कोटौर्स | ७ ,, |
| ,, | अडोनी | ५ ,, |
| ,, | यरगुन्तला | ५ ,, |
| ,, | कोल्हापुर | ३ ,, |
| ,, | कानपुर | ६ ,, |
| ,, | विजयवाड़ा | ६ ,, |
| ,, | सिकन्द्राबाद | ३ ,, |
| ,, | हैदराबाद | ४ ,, |
| ,, | शोलापुर | २ ,, |
| ,, | अकोला | २ ,, |
| ,, | अमरावती | ३ ,, |
| ,, | जब्बलपुर | ४ ,, |
| ,, | सतना | ५ ,, |
| ,, | भोपाल | ४ ,, |
| ,, | ग्वालियर | ५ ,, |
| ,, | लखनऊ | ७ ,, |
| ,, | इलाहाबाद | ७ ,, |
| ,, | वाराणसी | ८ ,, |
| ,, | पटना | ९ ,, |
| ,, | हावड़ा | १२ ,, |
| ,, | मुजफ्फरपुर | १२ ,, |
| ,, | द्रुग | ५ ,, |
| ,, | गुलबर्ग | ४ ,, |
| ,, | पूना | १ ,, |
| पूना से | नई दिल्ली | ६ ,, |
| ,, | शालीमार | ७ ,, |
| शोलापुर से | साल्ट कोटौर्स | ५ ,, |
| लासल गांव से | नई दिल्ली | ६ ,, |
| ,, | शालीमार | ८ ,, |
| नागपुर से | नई दिल्ली | ६ ,, |
| ,, | साल्ट कोटौर्स | ७ ,, |
| ,, | वादी बन्दर | ४ ,, |
| सिकन्दराबाद | बंगलौर शहर | ६ ,, |
| फरीदाबाद से | कर्नाक ब्रिज | ६ ,, |
| धौलपुर | वाड़ी बन्दर | ६ ,, |

### पश्चिमी रेलवे

| | | माल पहुंचाने का समय |
|---|---|---|
| कर्नाक ब्रिज से | नई दिल्ली | ५ दिन |
| ,, | अहमदाबाद | ३ ,, |
| ,, | इन्दौर | ४ ,, |
| ,, | सूरत | ३ ,, |
| ,, | बेलनगंज | ६ ,, |
| ,, | बड़ौदा | ३ ,, |
| ,, | अमृतसर | ८ ,, |
| ,, | लुधियाना | ८ ,, |
| ,, | जालंधर शहर | ८ ,, |
| ,, | मुरादाबाद | ८ ,, |
| ,, | रतलाम | ३ ,, |
| नई दिल्ली से | कार्नक ब्रिज | ५ ,, |
| बड़ौदा से | ,, | ३ ,, |
| रतलाम से | ,, | ३ ,, |
| अमृतसर से | , | ८ ,, |
| लुधियाना से | ,, | १० ,, |
| जालंधर से | ,, | ८ ,, |
| अहमदाबाद | ,, | ३ ,, |
| ,, | विजयवाड़ा | ६ ,, |
| | ( रास्ता उधना, भूसावल ) | |
| नई दिल्ली से | अहमदाबाद | ६ ,, |
| अहमदाबाद से | नई दिल्ली | ६ ,, |
| बेलनगंज से | कर्नाक ब्रिज | ६ ,, |
| इन्दौर | ,, | ५ ,, |
| सूरत | ,, | ३ ,, |
| कांदला | जयपुर | ५ ,, |
| सुरेन्द्रनगर | ,, | ५ ,, |
| अजमेर | ,, | २ ,, |
| असरवा | ,, | ६ ,, |
| राजकोट | बीकानेर | ७ ,, |
| मुरादाबाद से | कर्नाक ब्रिज | ८ ,, |
| जयपुर से | अजमेर | २ ,, |
| ,, | कांदला | ५ ,, |
| ,, | सुरेन्द्रनगर | ५ ,, |
| ,, | असरवा | ६ ,, |
| अहमदाबाद से | मुजफ्फरपुर | १३ ,, |
| ,, | तिन सुकिया | २५ ,, |

रेल द्वारा इसकी शीघ्र तथा सुरक्षित सर्विस के लिए तथा अन्य विवरण के लिए आप कृपया क्रमशः गुड्स सुपरिन्टेन्डेंट, वादी बन्दर और कर्नाकब्रिज से पत्र-व्यवहार करें।

सेंट्रल और पश्चिमी रेलवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76333

# सम्पदा

अर्थशास्त्र की नवीनतम गतिविधियों की
मासिक पत्रिका
अक्टूबर १९६१

अशोक प्रकाशन मन्दिर शक्ति नगर दिल्ली

मूल्य
७५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कल सोना बरसेगा गगन से

जहाँ लाल माँ का मुसकाये ...
सूर्य चंद्र जैसे दो नयनों से हर दिल में दीप जलाये,
बाहों में बल उमड़े जैसे गरजे दूर कहीं तूफ़ान...
घर कहलाये वही स्थान !
घर में होता उदय पुरुष कलका... वह कल जब हम
इक दो पल हंस लेंगे अधिक, ग़म होंगे इक दो कम !

**आज और हमेशा हिंदुस्तान लीवर का आदर्श...घर घर की सेवा —साबुन, खाद्य पदार्थ और प्रसाधनों द्वारा**

R. . .52 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा के अनूठे उपहार : १२ विशेषांक

'सम्पदा' का प्रत्येक अंक ज्ञानवर्धक होता है, पर विशेषांक तो अपने विषय के विश्व-कोष ही होते हैं। प्रोफेसर श्री ओमप्रकाश तोषनीवाल, एम० कॉम० कहते हैं—'सम्पदा' के विशेषांक तो हमारे लिए गीता व बाइबिल के समान हैं।'

## १-योजना अंक

(प्रथम योजना सम्बन्धी अपूर्व सामग्री)

एक प्रशंसनीय प्रयत्न। यह अंक पंचवर्षीय योजना को समझने की कुंजी है।

मूल्य : १.०० —जीवन साहित्य

## २-भूमि-सुधार अंक

(भूमि समस्याओं का अद्भुत विवेचन)

इस विषय में अपने ढंग का अद्वितीय प्रकाशन है।

मूल्य : १.०० (अप्राप्य) —प्रताप

## ३-वस्त्र-उद्योग अंक

(भारत के प्रमुख उद्योग का परिचय और समस्याएं)

इस अंक के पीछे काफी श्रम किया गया है संपादक को बधाई।

मूल्य : १.२५ —श्री घनश्यामदास बिड़ला

## ४-चम्बल अंक

(चम्बल योजना का विस्तृत परिचय)

अंक को सभी दृष्टि से रोचक बनाया गया है।

मूल्य : ००.७५ (अप्राप्य) —श्री मिश्रीलाल गंगवाल

## ५-मजदूर अंक

(मजदूर समस्या के विविध पहलुओं का विवेचन)

लेख बहुत रोचक व उपयोगी है। ...मानव की नैतिकता पर जोर दिया गया है जो देश की संस्कृति व परम्पराओं के अनुकूल है।

मूल्य : १.५० —श्री खंडूभाई देसाई

## ६-उद्योग अंक

(प्रमुख उद्योगों के विकास का व्यापक परिचय)

भारतीय उद्योग और व्यवसाय की मूल समस्याओं पर गम्भीर तथा उपयोगी लेखों का अच्छा संग्रह है। (अप्राप्य)

मूल्य : १.२५ —अजन्ता

## ७-राष्ट्रीय-विकास अंक

(द्वितीय पंचवर्षीय योजना का अध्ययन)

ज्ञानवर्धन के लिए ऐसी सामग्री प्रस्तुत करने वाले अंक का सर्वत्र स्वागत होगा।

मूल्य : १.२५ —श्री मोहनलाल सुखाड़िया

## ८-बैंक अंक

(भारतीय बैंकों की समस्याओं का निरूपण)

Here is more 'Sampada' Special worth treasuring. (अप्राप्य)

मूल्य : १.२५ —Organiser

## ९-समाजवाद अंक

(समाजवाद के विभिन्न पहलुओं पर विचार)

सम्पदा का समाजवाद अंक मिला। यह काफी अच्छा और पठनीय है।

मूल्य : १.५० —श्री श्रीमन्नारायण

## १०-राष्ट्रीय प्रगति अंक

(द्वितीय योजनाकाल की समस्याओं का विवेचन)

यह अति लाभदायक तथा उपयोगी है। लिखने का ढंग बहुत सुन्दर और रोचक है।

मूल्य : १.५० —श्री अमरनाथ विद्यालंकार

## ११-सहकारी कृषि अंक

देश के अत्यन्त विवादग्रस्त प्रश्नों पर विविध समन्वयात्मक दृष्टिकोण। मूल्य : १.५०

## १२-तृतीय पंचवर्षीय योजना अंक

तृतीय योजना का प्रामाणिक परिचय

मूल्य : १.५०

रजिस्ट्री से सब प्राप्य अंक मंगाने के लिए १०.५० भेजिये।

**सम्पदा • २८-११ शक्तिनगर • दिल्ली-६**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| संख्या | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १. | चीन और भारत का उत्पादन | ६३७ |
| २. | सम्पादकीय टिप्पणियां | ६३८ |
| ३. | अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और कम उन्नत देश | ६४३ |
| ४. | पंचवर्षीय योजना की नीति और सिद्धान्त | ६४५ |
| ५. | एशिया का आर्थिक विकास | ६४७ |
| ६. | विदेशी पूंजी की आवश्यकता | ६४८ |
| ७. | पोलैंड और भारत के व्यापारिक सम्बन्ध | ६४९ |
| ८. | यूरोपीय सामान्य बाजार व राष्ट्र मण्डल | ६५१ |
| ९. | चीन की आबादी कितनी है ? | ६५३ |
| १०. | रेलों के परिचालन में बिजली व डीजल | ६५५ |
| ११. | पंचायती राज व सामुदायिक विकास | ६५७ |
| १२. | गत दशाब्दि में भारत की आर्थिक प्रगति | ६५९ |
| १३. | बिना हड़तालों का देश हालैण्ड | ६६१ |
| १४. | तीसरी योजना में उपभोग व बचत | ६६२ |
| १५. | छोटी सिंचाई और उन्नत बीज | ६६४ |
| १६. | राजनैतिक दलों के आर्थिक कार्यक्रम | ६६७ |
| १७. | साहित्य समालोचना | ६७१ |
| १८. | मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं | ६७३ |


● ● ●

सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

## क्षमा प्रार्थना

प्रैस की असुविधाओं के कारण इस अंक में आठ पृष्ठ कम दिये जा रहे हैं। आगामी अंक में यह कमी पूरी कर दी जायगी।

—व्यवस्थापक


## उद्योग-प्रदर्शनी-परिशिष्ट

नयी दिल्ली में एक अन्तर्राष्ट्रीय विराट् उद्योग प्रदर्शनी इस मास होने जा रही है। इसमें भारत और विभिन्न देशों के उद्योग विकास का परिचय मिलेगा। इस अवसर पर नवम्बर के अंक में सम्पदा का उद्योग प्रदर्शनी परिशिष्ट प्रकाशित किया जायगा। जानकारी व उद्योग समस्याओं पर प्रकाश की दृष्टि से यह परिशिष्ट महत्वपूर्ण होगा। अंक का मूल्य १) रु० होगा। लेने के इच्छुक रु. १.२५ भेजकर मंगवा लें। उन्हें अण्डर पोस्टल सर्टिफिकेट भेजा जायगा।

—मैनेजर

२८-११ शक्तिनगर, दिल्ली


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष १०
अंक : १०
अक्टूबर १९६१

# सप्तपदी

## भारत और चीन में उत्पादन

चीन सरकार द्वारा प्रकाशित होने वाले आर्थिक उन्नति के आँकड़े विश्वसनीय नहीं होते, यह बताने की आवश्यकता नहीं। उसने स्वयं यह स्वीकार किया है कि वह जनता को प्रोत्साहित करने के लिए समय-समय पर अत्युक्ति-पूर्ण अंक प्रकाशित करती है। फिर भी रूस के एक आर्थिक पत्र ने चीन की औद्योगिक उन्नति के सम्बन्ध में कुछ अंक प्रकाशित किये हैं। बम्बई से प्रकाशित होने वाले 'इकनामिक टाइम्ज़' ने इन अंकों के साथ तुलना के लिए भारतीय प्रगति के भी अंक दिए हैं। हम दोनों देशों के अंक नीचे दे रहे हैं—

(१० लाख मीट्रिक टनों में)

| | चीन | भारत |
|---|---|---|
| कच्चा लोहा | २७.५ | ४.०९३ |
| स्पात | १८.५ | २.१६५ |
| रसायनिक खाद | १.९८ | ०.१६२ |
| पैट्रोलियम जन्म | ५.५ (स्थानीय साधनों से) | ५.६ (आयात के द्वारा) |
| कोयला | ३४७.८ | ५३.७३ |
| सीमेंट | १२.६७ | ८.३६ |
| बिजली बिलियन किल वाट) | ५५.५ | १९.७ |
| रेलवे इन्जन | ८००. | १७६४* |

* अगामी पांच वर्षों का लक्ष्य

ये संख्यायें बताती हैं कि चीन में औद्योगिक उत्पादन भारत की अपेक्षा बहुत अधिक हो रहा है। हम नहीं जानते कि रूसी पत्र द्वारा प्रकाशित ये अंक कहां तक ठीक हैं? किन्तु इन अंकों में यदि १०-१५ प्रतिशत की अत्युक्ति की सम्भावना भी मान ली जाय, फिर भी चीन प्रमुख उद्योगों के उत्पादन में भारत से बहुत आगे बढ़ गया है।

अभी चीन की सरकारने भी इसी आशय के अंक प्रकाशित किये हैं।

इन अंकों का तुलनात्मक अध्ययन करने से पूर्व हमें दो बातें अवश्य ध्यान में रखनी होंगी। एक तो यह कि चीन की जन संख्या ७० करोड़ है अर्थात् भारत से ६० प्रतिशत अधिक। इसलिए उत्पादन में यदि ६० प्रतिशत की अधिकता है, तो प्रति व्यक्ति भारत के बराबर उत्पादन होता है। इस से अधिक उत्पादन भारत की अपेक्षा अधिक उत्पादन माना जायगा। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि चीन का क्षेत्रफल भारत से बहुत अधिक है। दूसरी बात यह ध्यान में रखनी चाहिए कि भारत और चीन दोनों ने करीब एक साथ आर्थिक विकास की दिशा में आगे बढ़ना शुरू किया है। इससे पहले दोनों देश औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए थे। परन्तु दोनों देशों ने अलग-अलग पद्धति के द्वारा आर्थिक विकास का प्रयत्न किया है। जहां भारत ने लोकतंत्रीय पद्धति अपनाई है, वहां चीन ने आतंकवादी साम्यवादी पद्धति का आश्रय लिया है। भारत में शासन जनता को अधिक बचत के लिये प्रेरित करता है तथा संसद में जन प्रतिनिधियों की सम्मति लेकर कार्य करता है। चीन में कम्यूनों तथा उद्योगों पर पूर्ण स्वामित्व के द्वारा जनता पर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठोर नियंत्रण किया जाता है । चीन की सरकार जितना चाहती है, बलात् जनता से छीन लेती है। और जो थोड़ा बहुत देना चाहती है, वही जनता को देती है। इस भारी भेद के परिणमस्वरूप चीन में कुल राष्ट्रीय आयका २० प्रतिशत विनियोजन में लगाय जा सकता है, जबकि भारत में राष्ट्रीय आय का केवल ८.५ प्रतिशत। विनियोजन जितना अधिक होगा, उत्पादन उतना ही अधिक होगा, दोनों देशों की औद्योगिक उन्नति में अन्तर का यह प्रमुख कारण है।

चीन जहां प्रमुख उद्योगों के विकास की ओर अपनी समस्त शक्ति केन्द्रित कर रहा है, वहां भारत कृषि और उद्योग दोनों के विकास की ओर संतुलित ध्यान देता है। चीन की आर्थिक नीति रूस की भांति भारी उद्योगों के विकास की है । इसके आवेश में वह कृषि तथा अन्य उपभोग्य पदार्थों के उत्पादन में बहुत पिछड़ गया है। भारत की नीति संतुलन की नीति है। इसलिए जहां चीन में खाद्य संकट अनेक वर्षों से बराबर चला आ रहा है, वहां भारत में अन्न संकट लगातार कम हो रहा है । अभी तक रूस और चीन अपनी-अपनी पद्धति से आर्थिक विकास का एक महान परीक्षण कर रहे हैं । इसके विपरीत भारत ने लोक तंत्रीय पद्धति अपनाते हुए योजना बद्ध विकास का महान परीक्षण किया है । हमें विश्वास रखना चाहिए कि भारत अपने परीक्षण में अवश्य सफल होगा। उसे चीन के उत्पादन अंकों से हताश नहीं होना चाहिए ।

## एशियायी देशों का आर्थिक सम्मेलन

इस सप्ताह एशिया और सुदूर पूर्व के १७ देशों के आर्थिक आयोजकों का सम्मेलन नई दिल्ली में हुआ । विकास की योजना बनाकर ही आज किसी देश की उन्नति की जा सकती है। अधिकांश एशियायी देशों की आर्थिक समस्याएं एक जैसी हैं। अविकसित और कृषि-प्रधान देशों में कृषि के विकास पर सबसे पहले बल दिया जाना चाहिए और उसके बाद उद्योग पर। आवश्यक साधनों की उपलब्धि और उद्योगों के विकास के लिए कच्चे माल, शिल्पिक कुशलता और आवश्यक पूंजी की व्यवस्था आदि की समस्याएं प्रायः सभी एशियाई देशों के सामने उपस्थित हैं । किसी देश के सामने ये समस्याएं कुछ अधिक विकट रूप में हैं तो किसी देश के सामने कुछ कम। इसलिए आज यह आवश्यकता सभी अनुभव करने लगे हैं कि एक सुनिश्चित योजना बना कर आर्थिक विकास के लिए प्रयत्न किया जाए। जैसे भारत एक योजना बनाकर आर्थिक विकास की दिशा में प्रयत्न कर रहा है, वैसे ही एशिया के अन्य अनुन्नत देश भी विकास के लिए एक योजना बनाकर काम करने लगे हैं । संयुक्त राष्ट्रसंघ के सुझाव पर स्थापित एशियायी देशों का योजना व विकास सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करने के लिए ही दिल्ली में यह 'इकाफे' सम्मेलन किया गया। ऐसे सम्मेलनों में विभिन्न देश अपनी समस्याओं पर विचार करते हैं और दूसरे देशों की सफलता पर भी दृष्टि डालते हैं। आर्थिक विकास में एक राज्य दूसरे को किस तरह सहयोग दे सकता है, कच्चे माल, मशीनरी, उपभोग्य पदार्थ और विशेषज्ञों आदि की दृष्टि से दूसरे देशों से क्या सहयोग ले सकता है, यह भी विचार-विनिमय से स्पष्ट होता है ।

'इकाफे' के सचिवालय ने पारस्परिक क्षेत्रीय सहयोग की संभावनाओं पर एक विचारपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किया था। इसमें बताया गया था कि स्वावलम्बन के आदर्श को लेकर हम यह भूल जाते हैं कि कौन-सा उद्योग हम लाभकारी रूप में स्थापित कर सकते हैं और किस उद्योग की स्थापना में हमें हानि होगी या उत्पादन-व्यय इतना अधिक होगा कि वह माल बाहर से मंगाना अच्छा होगा। उदाहरण के तौर पर एक सीमित यात्रा में सीमेण्ट, इस्पात या मशीन बनाने वाले कारखाने में उत्पादनव्यय अधिक पड़ता है। इसलिए उक्त सचिवालय की राय यह थी कि जिन छोटे देशों में लोहे की पर्याप्त आवश्यकता आज नहीं है, अथवा बड़ा कारखाना खोलने की क्षमता नहीं है, वे देश परस्पर मिलकर एक कारखाना खोलें, ताकि उनको लोहा और इस्पात सस्ता पड़े। सचिवालय ने अपने अध्ययन में यह भी लिखा है कि एक लाख टन सीमेंट के कारखाने में १८ लाख टन सीमेंट के कारखाने की अपेक्षा दुगना उत्पादन व्यय होता है, तथापि श्रीलंका, और भारत में केवल १--१॥ लाख टन के कारखाने खोले जा रहे हैं।

एशियाई देशों के आर्थिक विकास के लिए यह



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक है कि निर्यात के लिए बाजार स्थिर हों, क्योंकि उनमें उत्पन्न पदार्थ विदेशी मुन्द्रा का निश्चिन्त होकर अर्जन कर सकें। तभी तो व अपनी आवश्यक सामग्री को प्राप्त कर सकेंगे। निर्यात के लिए एक सुनिश्चित योजना बनानी चाहिए और इसके लिए देशों का परस्पर सहयोग हो, ताकि पारस्परीक प्रतिस्पर्धा से उन्हें नुकसान न हो। औद्योगिक विकास में परस्पर सहयोग और समन्वय की आवश्यकता को भी अनुभव किया गया। एशियायी देशों की आर्थिक स्थिति व आवश्यकताओं का निरंतर अध्ययन करते रहने के लिए एक संस्था का संगठन किया जाएगा। विदेशों से सहायता आवश्यक होने पर भी यह अनुभव किया गया कि सब देश अपने आन्तरिक स्रोतों का दोहन अधिक-से-अधिक करने की चेष्टा करें। मूल्यों की स्थिरता, कृषि के विकास आदि की भी आवश्यकता पर बल दिया गया।

सरसरी नजर से देखने से सचिवालय की परस्पर सहयोग पूर्वक उद्योग स्थापित करने की दलील बहुत सही मालूम होती है, किन्तु यह प्रस्ताव जहां अव्यावहारिक है, वहां बहुत युक्तियुक्त भी नहीं है। बहुत भारी कारखाने खोलने के लिए साधन ही उपलब्ध नहीं होंगे। फिर एक स्थान पर भारी उद्योग स्थापित कर देने से माल का वितरण बहुत व्ययसाध्य हो जाएगा। उद्योग का घोर केन्द्रीयकरण भी हानिकर है। दूसरे भिन्न-भिन्न देश अपना स्वावलम्बन छोड़ने को तैयार नहीं है। पारस्परिक मतभेद, द्वेषभाव और संघर्ष भी देशों के सम्मिलित रूप से उद्योग खोलने में बाधक हैं। उदाहरणतः भारत और पाकिस्तान यह कभी नहीं चाहेंगे कि वे एक-दूसरे के देश में स्थापित उद्योग पर आश्रित हो जावें। यूरोप में जरूर सांझा बाजार की योजना पर अमल होने लगा है, किन्तु अभी एशिया में ऐसे सम्मिलित प्रयत्नों के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ेगी; जब पारस्परिक अविश्वास और सन्देह का वातावरण दूर हो कर हम एक दूसरे की आवश्यकताओं को अपनी आवश्यकता अनुभव करने लगेंगे। इस दृष्टि से 'इकाफे' सम्मेलन कोई ठोस व्यावहारिक प्रस्ताव नहीं लाया, पर उसने योजनाबद्ध विकास तथा पारस्परिक सहयोग की समस्याओं पर ध्यान अवश्य खींचा है।

## आर्थिक विकास व राष्ट्रीय एकता

पिछले दिनों दिल्ली में राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का जोर रहा। देश में बढ़ती हुई विभाजन प्रवृत्तियां जहां राजनीतिक सामाजिक दृष्टि से बहुत खतरनाक हैं, वहां आर्थिक दृष्टि से भी वे कम खतरनाक नहीं हैं। प्रत्येक राज्य की दृष्टि सभी उद्योगों में स्वावलम्बी होने की है, जैसे समस्त देश एक इकाई न हो। जब कभी नये उद्योग की स्थापना की चर्चा होती है, तब राज्यों में परस्पर प्रतिस्पर्धा का एक नया दृश्य उत्पन्न हो जाता है। आजकल राष्ट्रपति द्वारा नियत वित्तीय आयोग, जिसके अध्यक्ष श्री चांदा हैं, विविध राज्यों के आवेदनपत्रों पर विचार कर रहा है। सभी राज्य केन्द्र की क्षमता तथा अविकसित राज्यों की स्थिति का विचार किए बिना अधिक से अधिक रुपया मांगने के लिए तुल गये हैं। अनेक राज्यों में उद्योगों में किसी दूसरे राज्य के कर्मचारी या मजदूर लेने पर भी आपत्ति की जा रही है, मानो वे विदेशी हों। ऐसा मालूम पड़ता है कि समस्त भारत को एक राष्ट्र के रूप में देखने और सब राज्यों के एक समान विकसित होने पर प्रसन्न होने की भावना ही सर्वथा नष्ट हो गई है। पाठकों को स्मरण होगा कि केरल राज्य के एक अधिकारी ने धमकी दी थी कि यदि तेल-संशोधन-उद्योग केरल में स्थापित न हुआ तो वह मद्रास तक बिछाई जाने वाली पाइप लाइन को अपने राज्य में बिछाने ही नहीं देगा। यह बहुत घातक प्रवृत्ति है। भारत सरकार सभी राज्यों के संतुलित आर्थिक विकास की दृष्टि से विचार करने लगी है। योजना आयोग ने भी इस पर बल दिया है। राष्ट्र की भावनात्मक एकता का महत्व सभी क्षेत्रों के लिये है और देश के विचारकों व नेताओं को जितनी जल्दी इस समस्या का समाधान मिल जाए, आर्थिक दृष्टि से भी उतना ही लाभकारी है।

## पैट्रोलियम की खपत

अर्थशास्त्री विभिन्न देशों की आर्थिक तुलना के लिए नये-नये मापकों का प्रयोग करते हैं। लोहा, सीमेंट, डाक तार व रेल आदि की ढुलाई आदि के अंक किसी देश में प्रति व्यक्ति जितने अधिक होंगे, उतनी ही उस देश की औद्योगिक उन्नति अधिक होगी। इसी तरह प्रति व्यक्ति पैट्रोलियम व तज्जन्य पदार्थों की खपत का भी अनुमान



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगाया गया है। इसके अनुसार १९५९ में भारत में प्रति व्यक्ति खपत ४ गैलन थी, जबकि अन्य देशों में यह खपत इस तरह थी :—

| | | |
|---|---|---|
| सं. रा. अमरीका | ६६३ | गैलन |
| ब्रिटेन | १६२ | ,, |
| जापान | ५३ | ,, |
| श्रीलंका | १५ | ,, |
| पाकिस्तान | ६ | ,, |
| भारत | ४ | ,, |

यह भी अनुमान लगाया गया है कि भारत में खपत १९७३ में १० गैलन और १९८४ में २० गैलन प्रति व्यक्ति होने लगेगी, लेकिन तब अन्य देशों में भी खपत बहुत बढ़ जाएगी। आज भी पाकिस्तान में खपत ज्यादा है। संभवतः इसका कारण वहां कोयले की कमी है।

## सही दिशा की ओर

भारत सरकार ने आखिर चीनी पर से यातायात और मूल्य सम्बन्धी नियन्त्रण हटा लिये। चीनी उद्योग अनेक वर्षों से इसकी मांग कर रहा था। वस्तुतः आज समस्या यह नहीं थी कि चीनी के मूल्य बढ़ने से कैसे रोके जाएं। आज तो चीनी की मुख्य समस्या यह है कि जिस तरह चीनी का उत्पादन बढ़ रहा है, उसको देखते हुए उसकी खपत को कैसे बढ़ाया जाए। विदेशों में हमारी चीनी सुविधापूर्वक नहीं खप सकती, यह निश्चित है। कुछ भी चीनी बाहर भेजने के लिए भारत के करदाताओं को भारी बोझ सहन करना पड़ता है। गन्ने के मूल्य कम करने का साहस आज सरकार नहीं कर सकती। हमारी नम्र सम्मति में कृषि मंत्री श्री पाटिल ने चीनी उद्योग के उत्पादन पर १० प्रतिशत कमी करने का प्रतिबन्ध लगा कर उचित किया है। इसका वर्तमान उद्योग पर कुछ प्रतिकूल प्रभाव अवश्य पड़ सकता है, किन्तु इसके कारण चीनी के अत्यधिक उत्पादन पर कुछ नियंत्रण होगा और परिणामतः किसान गन्ने की खेती में कुछ कमी करेंगे। इस तरह बची हुई भूमि दूसरे आवश्यक उत्पादनों के काम में आएगी। हमें दूरवर्ती नीति का निर्धारण करते हुए उत्पादन की स्थिति को जरूर देखना चाहिए। ऐसा न हो कि अत्युत्साह अत्युत्पादन का रूप ले ले। आज किसी नई चीनी मिल को खुलने देने से पूर्व खूब सोच समझ लेना होगा कि कहीं अत्युत्पादन तो नहीं हो जायगा। गुड़ और खण्डसारी के ग्रामोद्योग को भी प्रतिस्पर्धा से बचाने का ध्यान रखना होगा।

## उद्योगों की अनुशासन संहिता

औद्योगिक विकास के लिए उद्योगों के दोनों पक्षों-मजदूर और मालिक—में शान्ति की आवश्यकता को देखते हुए कुछ वर्ष पहले एक अनुशासन संहिता की रचना की गई थी। इसके अनुसार दोनों पक्ष अपने ऊपर कुछ नियंत्रण लगाते हैं कि वे दूसरे पक्ष के साथ व्यवहार में कुछ नियमों का पालन करेंगे। इस संहिता का तीन वर्षों से पालन हो रहा है, यद्यपि इसे पूर्ण संतोषजनक नहीं कहा जा सकता।

अनुशासन संहिता क्या है? यह वास्तव में कल-कारखानों के मालिकों और मजदूरों के झगड़े, मुकदमेबाजी, हड़तालें और शिकायतों को आपस में बातचीत, बीच-बिचाव और समझौते द्वारा निपटाने की ओर दोनों के सम्बन्ध मधुर बनाने की आदर्श व्यवस्था है। इससे एक ओर स्वस्थ मजदूर संगठन की बुनियाद पड़ती है, तो दूसरी ओर मालिकों को हड़तालों और झगड़ों की मुसीबत से छुटकारा मिलता है। इस प्रकार की संहिता के कारण हमारे उद्योग धंधों में रात-दिन कलह रहने की नौबत नहीं आयेगी। अनुशासन संहिता के थोड़े बहुत पालन से भी मालिक-मजदूर सम्बन्ध सुधरे हैं। देश की सबसे बड़ी कोयला खान कम्पनियों में से एक कम्पनी इस संहिता के प्रति बड़ी उदासीन थी, लेकिन केन्द्रीय श्रम मंत्रालय के कहने पर उसने शिकायत दूर करने का जो तरीका अपनाया, उससे निस्सन्देह प्रबन्धकों और कर्मचारियों के संबंध सुधरे और वर्ष के अन्त में रिपोर्ट में भी इस बात को स्वीकार किया गया। एक सरकारी उद्योग में १९५८ के एक समझौते का पालन नहीं किया गया था, जिससे प्रबन्धकों और कर्मचारियों के सम्बन्ध प्रायः टूटने वाले थे, लेकिन समय पर इस संहिता का आश्रय लेने से अप्रिय स्थिति नहीं उत्पन्न हुई। १९५९ में कोयला खानों में ३२८ हजार जनदिन बेकार गये, १९६० में यह संख्या घट कर १२० हजार रह गई। इस संहिता के कारण १५० मामलों में मालिकों और मजदूरों के संबंध सुधरे और मालिकों को समझा-





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुझाकर श्रम कानूनों का पालन कराया गया तथा मजदूरों से उनके जो समझौते हुए थे, उनका पालन कराया गया। झगड़े को टालने के प्रयत्नों के फलस्वरूप बहुत सी हड़तालें और भूख हड़तालें आदि टल गईं तथा उत्पादन रुकने की स्थिति नहीं आने दी गई।

सितम्बर के अंतिम सप्ताह में उद्योगपतियों की ओर से अनुशासन-संहिता पर एक विचार गोष्ठी हुई थी। इसके एक वक्तव्य के अनुसार इसका संतोषजनक पालन नहीं हो रहा। दोनों पक्ष अपने-अपने प्रयोजन के अनुकूल संहिता का अर्थ निकाल लेते हैं। उद्योगपतियों को यह अधिकार मिलना चाहिए कि उस यूनियन की मान्यता वापस ले सकें, जो यूनियन संहिता पर आचरण न करता हो। फिर इस बात का भी यथोचित निर्णय होना चाहिए कि एक उद्योग में किस यूनियन को मान्यता का अधिकार मिले। परस्पर संघर्षशील यूनियन झूठे सच्चे रिकार्ड बनाकर मान्यता का दावा करते हैं। यह भी एक कटु सत्य है कि मजदूर अपने नेताओं के नियंत्रण में नहीं रहते और फलतः संहिता का पालन ठीक-ठीक नहीं हो पाता। केवल मान्यता प्राप्त यूनियनों को ही सरकार और अदालतें स्वीकार करें। यदि संहिता का पालन होना है, तो इन बातों पर भी विचार करना आवश्यक है।

## सामुदायिक परियोजनाएं

पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत सामुदायिक परियोजनाओं का उद्देश्य देश की रीढ ग्रामों का सुधार विकास और वहां के निवासियों में स्वावलम्बन की भावना पैदा करना है। देहातों में जो विस्तृत जन-शक्ति बेकार पड़ी है, उसका संग्रह कर, उसे कृषि व छोटे हाथ उद्योगों में केन्द्रित कर एक नवीन दिशा में प्रेरित करना इसका एक उद्देश्य है। उत्तम बीज, सिंचाई इत्यादि के द्वारा खेती की उपज को बढ़ाना और इस मार्ग में आने वाली किसानों की रुकावटों को दूर करना, सामुदायिक परियोजना का विशेष लक्ष्य है। यह ठीक है कि भारत का किसान, विचारों की दृष्टि से, बड़ा अनुदार और परम्पराप्रिय है तथा किसी नई चीज को ग्रहण करने में संकोच करता है। पर पिछले कुछ वर्षों के निरन्तर प्रयत्न से, देहातियों का दृष्टिकोण भी बदल रहा है और वे अपने को परिस्थितियों के अधिक अनुकूल बना रहे हैं। उदाहरण के लिए सामुदायिक परियोजनाओं द्वारा पहले सामाजिक कल्याण के कामों पर ज्यादा जोर दिया जाता था, पर अब आर्थिक प्रवृत्तियों पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। ग्राम-स्तर कर्मी अपना तीन चौथाई समय अब खाद्य उत्पादन की ओर देते हैं और कृषि-विस्तार अधिकारी दफ्तरी कार्रवाहियों को पूरा करने के बदले, सिंचाई की छोटी योजनाओं को सुधारने व चालू करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय यह है कि ग्रामों की जो निर्बल और उपेक्षित आबादी अभी तक रही है, उसे अपने पैरों पर खड़ा करने की ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। विभिन्न राज्यों में पंचायत राज के चालू होने से इसमें विशेष सहायता मिलेगी।

गांवों की एक बड़ी समस्या बेकार पड़ी विशाल जन शक्ति का प्रयोग करना है। यह समस्या अभी तक हल नहीं हो सकी है। देहाती आबादी का करीब एक चौथाई खेतीहर मजदूर हैं। फसल के बाद ये सब खाली रहते हैं। इस बारे में एक सुझाव यह दिया जा रहा है कि इनसे श्रमदान कराया जाए और बदले में गांव की ओर से अथवा प्रखंड की ओर से उन्हें भोजन दिया जावे। व्यावहारिकता और फलाफल के आंकड़ों की दृष्टि से अभी इस सुझाव पर पूरा विचार करना होगा।

## अतिरिक्त तकुओं के लाइसेंस

योजना आयोग के सदस्य और प्रमुख गांधीवादी, अर्थशास्त्र विशारद श्री श्रीमन्नारायण ने पिछले दिनों कहा था कि तीसरी योजना बनाते समय गांधीवादी सिद्धांतों का ध्यान रखा गया है। इसके लिए उन्होंने पंचायत, ग्रामोद्योग, मधनिषेध आदि के उदाहरण भी दिये हैं। इसमें सन्देह नहीं कि ये स्तुत्य प्रयत्न हैं, परन्तु सरकार के एक नये निश्चय के साथ इनकी संगति नहीं बैठती। भारत सरकार ने हाल ही में देश की ९ कपड़ा मिलों को अपने तकुए बढ़ाने की स्वीकृति दी है। इनमें से ५ गुजरात में, २ राजस्थान में, और एक-एक मध्यप्रदेश और केरल में हैं। इन सब मिलों को जितने तकुए दिये गये हैं, उनकी कुल संख्या ३०,२७२ है। इसका अभिप्राय यह है कि उन मिलों से, अब कपड़े का उत्पादन अधिक होगा, जिसके मुकाबले में खादी को धक्का लगेगा। यह तो निःसंदिग्ध है कि बाजार में मिल


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कपड़े के मुकाबले में खादी नहीं ठहर सकती है। खादी के प्रचार के लिए तो राज्य को ही विशेष प्रयत्न करना होगा।

## चुनाव घोषणा पत्र

'सम्पदा' के पाठक इस अंक में अन्यत्र कांग्रेस और जन संघ के चुनाव घोषणा पत्रों के वे अंश पढ़ेंगे, जिन का सम्बन्ध देश की आर्थिक नीति से है। कुछ दिनों में प्रजासोशलिस्ट पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टियों के भी घोषणा पत्र प्रकाशित होंगे। हम सम्पदा के विवेकशील पाठकों से यह अनुरोध करना चाहते हैं कि वे उन घोषणा-पत्रों को अच्छी तरह से पढ़ें और देश की आर्थिक समस्याओं तथा उनके समाधानों पर विचार करें। घोषणा पत्रों में हरेक पार्टी सब्ज बाग दिखाने का प्रयत्न करती है। उनके प्रलोभन में न पड़कर यह सोचना चाहिये कि वे सब्ज़ बाग कहां तक क्रियान्वित किये जा सकते हैं। जिस पार्टी के विचार व्यावहारिक हों, उसी पार्टी को अधिक युक्तियुक्त मानना चाहिए।

## विलास सामग्री बनाम आवश्यक सामग्री

कांग्रेस के घोषणा-पत्र में यह कहा गया है कि विलास सामग्री के उत्पादन की अपेक्षा जीवन के लिए आवश्यक सामग्री के उत्पादन पर अधिक ध्यान दिया जायगा। हम सदा इस विचार का समर्थन करते रहे हैं, किन्तु आज प्रश्न यह है कि विलास सामग्री के अन्तर्गत कौन-कौन-सी वस्तुएं ली जानी चाहिएं। एक ओर सरकार छोटी मोटर गाडियां बनाने के लिए भारी योजना बना रही है और दूसरी ओर वह विलास सामग्री के उत्पादन को निरुत्साहित करना चाहती है। दिक्कत यह है कि बहुत सी वस्तुएं, जो कल तक विलास की सामग्री समझी जाती थीं, आज ऊँचे जीवन-स्तर के नाम पर आवश्यक वस्तु मानी जाने लगी है। सरकारी अधिकारी गांव-गांव में बिजली पहुँचाकर कर बिजली के पंखों, बत्तियों रेडियों और हाटरों को प्रोत्साहन दे रहे हैं। इन वस्तुओं को विलास की सामग्री स्वीकार किया जायगा या नहीं अथवा कौनसी वस्तु आवश्यक है और कौन सी वस्तु विलास सामग्री, इसके निर्धारण की रेखा क्या है? यह प्रश्न काफ़ी रोचक और मनोरंजक है।

## प्रकृति का प्रकोप

यह दैव की विडम्बना है कि जब एक ओर भारत कृषि-उत्पादन में स्वावलम्बी होने और अन्न के निर्यात में भी क्षमता प्राप्त करने का स्वप्न ले रहा है, तब प्रकृति का प्रकोप हमारे स्वप्नों को धूलिसात् करने लगा है। इस वर्ष देश के प्रायः सभी भागों में असाधारण रूप से बाढ़ें आ रही हैं। अनेक राज्यों में बाढ़ों ने करोड़ों रु० की फसलें तबाह कर डाली हैं। बिहार, पंजाब, उत्तरप्रदेश और मध्य-प्रदेश आदि में प्रकृति का प्रकोप बहुत हुआ है। यह बाढ़ें इस बात की चेतावनी देती हैं कि तीसरी योजना में कृषि-उत्पादन के लिए हमें और भी अधिक प्रयत्न करना है।

## राजस्थान नहर

राजस्थान नहर के निर्माण कार्य में द्रुतगति से काम चल रहा है। इस वर्ष से मौसमी सिचाई प्रारम्भ की जा रही है। ११ अक्टूबर को उपराष्ट्र पति ने बटन दबाकर नहर में पानी के वितरण का श्री गणेश किया है। राजस्थान नहर परियोजना द्वारा लाभान्वित क्षेत्र के सामजस्यपूर्ण विकास के लिए राजस्थान नहर बोर्ड ने विभिन्न विभागों के परामर्श से एक "मास्टर प्लान" तैयार कर लिया है। इस प्लान के प्रस्तावो के क्रियान्वयन पर होने वाले व्यय में राज्य क्षेत्र में लगभग ११३ करोड़ रु० तथा केन्द्रीय क्षेत्र में ३६ करौड़ रु० एवं राज्य क्षेत्र में ३७ करोड़ रु० तक और केन्द्रीय क्षेत्र में २६ करोड़ रु० का ऋण सम्मिलित रहेगा। परियोजना के निर्माण-कार्य की सफलतापूर्वक समाप्ति और प्लान स्कीमों के क्रियान्वित होने से राजस्थान नहर परियोजना क्षेत्र देश में एक अत्यंत विकसित क्षेत्र बन जायेगा, जो आदर्श ग्रामों, मंडियों आदर्श संचार साधनों और वहां के निवासियों के लिए जीवन की सभी सुख सुविधाओं से भरपूर होगा। परियोजना के पूर्ण होने एवं उसके विकास पर आशा है, वहां की वर्तमान जनसंख्या लगभग १ लाख से बढ़कर २० लाख हो जायेगी। इस परियोजना से (२६ लाख एकड़ भूमि के लिए) सिंचाई का सीधा लाभ लगभग २६ लाख टन खाद्यान्न और कोई १.६ लाख टन कपास के वार्षिक कृषि उत्पादन के रूप में होगा। इस कृषि उत्पादन का मूल्य लगभग ६६ करोड़ रु० वार्षिक अनुमानित है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष और कम-उन्नत देश

संयुक्तराष्ट्र संघ से जो दो जुड़वां बच्चे पैदा हुए, उनमें एक "अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष" है। इसे स्थापित करने की आवश्यकता हुई। आज विश्व में व्यापार लगातार बढ़ रहा है। इस बढ़ाव को कायम रखने और उसमें संतुलन रखने के लिए यह जरूरी है कि जिन देशों के पास भुगतान करने से रकम बच जाती है, वे इस रकम को उन देशों को दें, जिनके पास भुगतान के लिए रकम की कमी है। अगर एक बार भी इस उसूल को तोड़ दिया जाए, तब अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा में कमी आ जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि विनिमय और व्यापार में रुकावटें आ जाती हैं और विश्व-व्यापार सिकुड़ने लगता है।

## कोष की स्थापना का उद्देश्य

"अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष" इसलिए स्थापित किया गया था कि जिन देशों के भुगतान की अदायगी प्रतिकूल थी और उसके उपाय स्वरूप जो आयात पर रुकावट लगाते थे, उन्हें इस परेशानी से मुक्त किया जाए। इस प्रकार की रुकावट आमदनी और रोजगार को प्रभावित करती थी। यह कोष पिछले १५ साल से काम कर रहा है।

इस सम्बन्ध में यह बात उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष एक मुद्रा को दूसरी मुद्रा में परिवर्तन करने की व्यवस्था से कई देशों ने लाभ उठाया है। इस व्यवस्था के अनुसार कोष से लिये गये ऋण की अदायगी इन दूसरी मुद्राओं में की जा सकती है। इससे कोष के कारोबार में इन मुद्राओं के प्रयोग को बढ़ावा मिला है। इससे मुख्य स्थिर कोष पर बोझ हल्का हो गया है।

इस कोषका वार्षिक सम्मेलन अभी वीयना में हुआ। इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र संघ की अन्य वित्तीय संस्थाओं जैसे विश्व कोष, अन्तर्राष्ट्रीय वित्त-आयोग और अन्तर्राष्ट्रीय विकास संस्था—के भी वार्षिक विवरण प्रस्तुत किये गये। इनमें से "अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष" का विवरण पाठकों के लिए सबसे अधिक रुचिकर होगा।

इस विवरण में संभवतः पहली बार उन देशों के महत्व को स्वीकार किया गया है, जो मुख्यतः उन्नति करने के लिए प्रयत्नशील हैं अर्थात् वे देश जो अविकसित हैं। विवरण में विश्व में अदायगी की स्थिति को इन शब्दों में प्रकट किया गया है—

कोष कई ऐसे देशों को वित्तीय सहायता देने में समर्थ हुआ है, जिन्होंने आर्थिक स्थिरता के कार्यक्रम हाथ में लिये हैं। अपनी शक्ति के अनुसार, जैसा कि नियमों में कहा गया है, "यह सब सदस्यों के उत्पादक साधनों के विकास में" योगदान देने के लिए उत्सुक है।"

ये शब्द इस दृष्टि से आश्वासन देने वाले हैं कि पहले के विवरणों से कुछ ऐसा आभास होता था कि अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का मुख्य सम्बन्ध केवल विकसित देशों के साथ ही है।

## अनुन्नत देशों की अदायगी

१९६०-६१ में इस कोष से उधार लेने वाले लगभग, सभी देश अविकसित हैं। विकसित देशों ने अपने उधार वापस कर दिये हैं। ३० अप्रैल १९६१ के अन्त तक कोष ने ५७७ मिलियन डालर के सम-मूल्य की रकमें उधार दीं और उधार की वापसी के रूपमें उसे ३५९ मिलियन डालर मिले। इसमें अधिकांश रकमें पेशगी दी गयी थीं। अनुन्नत देशों को दी गयी रकमें और औद्योगिक देशों से प्राप्त भुगतान से १९६०-६१ में कोष की स्थितिका आभास मिलता है। अनुन्नत देशों को, सामूहिक रूप से अदायगी में १.२५ बिलियन डालर का घाटा रहा, क्योंकि उनके निर्यात की अपेक्षा आयात अधिक तेजी से बढ गये थे। विकसित देशों में आर्थिक प्रगति का स्तर ऊंचा होने से अविकसित देशों को निर्यात का अधिक अवसर मिला, पर व्यापार की शर्तें इन अविकसित देशों के अनुकूल नहीं थीं। अविकसित देशों को अपने निर्यात के मूल्य की नीची दरें स्वीकार करनी पड़ी, क्योंकि पहली बात तो यह कि इनका आपस में ही तेज मुकाबला है और दूसरी बात यह कि अमेरिका की मांग जबर्दस्त नहीं थी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## विकासशील देशों की स्थिति

इस साल भी यह रुख जारी रहा है। अनुन्नत देशों की हालत सुधरने के अवसर यद्यपि कम है, पर कुछ ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय हालात पैदा हो रहे हैं जिनके कारण उन्नत देशों का आयात अवश्य ही बढ़ेगा। तब इसका हल क्या है? कोष में अपनी वार्षिक रिपोर्ट में विकासशील देशों की इच्छाओं का निम्न शब्दों में ठीक वर्णन किया है—

"विकास शील देश, स्वभावतः इस बात के लिए उत्सुक हैं कि यूरोप में उनकी आर्थिक प्रवृत्तियाँ बढ़ती रहें। ये देश यह भी चाहते हैं कि अमेरिका के साथ व्यापार में वे सशक्त हों और अमेरिका के आयात बढ़ें। इन देशों के लिए यह बात बड़े महत्व की है कि उनके परम्परागत उत्पादनों को बाहर जाने का कोई रास्ता मिले। औद्योगिक देशों की शक्ति और समृद्धि का प्रयोग कम उन्नत देशों को केवल आर्थिक सहायता देने में ही न हो, किन्तु, साथ ही, उनके विविध प्रकार के उत्पादनों को अपने भीतर समा लेने में भी हो।" कोष ने कम उन्नत देशों को सलाह दी है कि वे अपनी आर्थिक नीतियों को अधिक बुद्धियुक्त ढंग से चलाने का प्रयत्न करें। इस सम्बन्ध में कोष की रिपोर्ट में कहा गया है—

> "ये कम उन्नत देश यह चाहते हैं कि उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी हो जिससे वे अधिक शक्ति से उत्पादन कर सकें और ऐसा वातावरण उनके देश में हो, जिससे विदेशी पूंजी अधिक आकृष्ट हो और उनके साधनों को इस प्रकार सूत्रबद्ध किया जाए, जिससे पूंजी में लगातार बढ़ोतरी होती रहे।"

## कम उन्नत देशों को चेतावनी

इस परामर्श से कोई इन्कार नहीं कर सकता। भारत तथा अन्य अनुन्नत देशों को यह बात अनुभव कर लेनी होगी कि (१) अधिकांश विकसित देशों ने मुद्रा स्फीति पर इस ढंग से काबू पा लिया है कि वह अब दोबारा सिर नहीं उठा सकती है (२) और बहुमुखी व्यापार और विनिमय के निर्बाध रूपान्तर में उनका विश्वास युद्धोत्तर काल की अपेक्षा अब अधिक मजबूत है। विकसित देशों की इस स्थिति से अनुन्नत देशों को लाभ भी है और आह्वान भी। लाभ इस दृष्टि से कि इस स्थिरता के कारण उनके आयात-निर्यात का मूल्य स्थिर रहेगा और आह्वान इसलिए कि इन अनुन्नत देशों को भी दृढ़ता से अपना आर्थिक विकास करने के लिए प्रयत्न करना होगा। निश्चय ही, यह संभव नहीं है कि अनुन्नत देश अपने आर्थिक मामलों की ठीक ढंग से व्यवस्था न करें और फिर यह आशा करें कि उन्नत देश इनकी भूलों के लिए क्षति उठावें।

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा अनुन्नत देशों को मिलने वाली सहायता सीमित समय तक के लिए ही हो सकती है। यह कोष उनकी विनिमय दरों को स्थिर रखने और प्रतियोगात्मक ढंग पर विश्व-व्यापार बढ़ाने में काफी सहायता कर सकता है। फिर भी, इस कोष का ज्यादा सम्बन्ध बड़े औद्योगिक देशों के साथ ही है। बड़े देशों की स्थिरता और विकास का प्रभाव, छोटे देशों के लिए लाभप्रद ही होगा।

## भारत का अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से कर्ज

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष विदेशी मुद्राओं में भारत सरकार को ११९ करोड़ ४ लाख रु० (२५ करोड़ डालर) देने को राजी हो गया है। इनमें से ५२ करोड ३८ लाख रु० (११ करोड़ डालर) अमरीकी डालरों में, २८ करोड़ ५७ लाख रु० (६ करोड डालर) पौंड स्टर्लिंग में, २१ करोड़ ४३ लाख रु० (१ करोड़ ५० लाख डालर) डि० मार्क में, ७ करोड़ १४ लाख रुपये (१ करोड़ ५० लाख डाशर) इतालो लिरा में और २ करोड़ ३८ लाख रु० (५० लाख डालर) जापानी येन में दिया जायगा। यह पहला समय है जब अंतरांष्ट्रीय मुद्रा कोष का कोई सदस्य येन में भी ऋण ले रहा है।

भारत सरकार को ११९ करोड़ ४ लाख रु० (२५ करोड़ डालर) का ऋण विदेशी मुद्राओं में देने के करार की घोषणा हो चुकी है, यह ऋण १ अगस्त १९६१ को मिलना था। रिजर्व बैंक ने संबधित देशों के केन्द्रीय बैंक से निर्धारित राशि लेने के लिए आवश्यक प्रबन्ध कर लिए हैं।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में भारत का २८५ करोड़ ७१ लाख रु० (६० करोड़ डालर) का हिस्सा है, जिसमें से ३७ करोड़ ९० लाख रु० (७ करोड़ ७५ लाख डालर) का सोना और शेष भारतीय मुद्रा में दिया गया है। यह पहला



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पंचवर्षीय योजना की नीति और सिद्धान्त

पी० एस० लोकनाथन

हमारी तीनों पांचसाला योजनाएं एक विकास-पद्धति का संकेत करती हैं। पर कुछ लोग यह समझते हैं कि ये योजनाएं लोकतंत्र की दृष्टि से हानिकारक है और जनता पर बोझ डालती हैं। लेखक की सम्मति में यह धारणा अशुद्ध हैं और लोकसंत्र की दृष्टि से हानिकारक हैं।

विकास की पद्धति का अर्थ है विकास के लक्ष्य सिद्ध करने के लिए क्या उपाय किये जा रहे हैं और किन को प्राथमिकता दी जा रही है। पहली योजना में विकास की कोई निश्चित पद्धति नहीं थी। दूसरी योजना में अवश्य एक पद्धति बनाने का कुछ प्रयत्न किया गया, जिससे लम्बी अवधि तक आर्थिक उन्नति की जा सके। लेकिन तीसरी पंचवर्षीय योजना में विकास की पद्धति स्पष्ट कर दी गयी है।

स्पष्ट है कि उपाय लक्ष्य के अनुरूप होंगे। लक्ष्य है समाजवादी ढंग के समाज की स्थापना, जिसमें संविधान के निर्देशक सिद्धान्तों में निहित सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति हो सके। संविधान में कहा गया है कि राज्य को ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि देश के सब स्त्री-पुरुषों को जीविका कमाने के लिए यथेष्ट अवसर मिलें। आर्थिक साधनों का बंटवारा ऐसे ढंग से हो कि सारे समाज को लाभ हो और थोड़े से ही लोगों के हाथ में समाज का धन और कल-कारखाने न सिमट जाएं और शासन ऐसा बने जो लोकतंत्री हो और जिसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय का राज्य हो।

## लम्बे समय के लिए योजना

वास्तव में हमें देश के आर्थिक विकास का कार्यक्रम बनाते समय ५ वर्ष का नहीं, २५-३० वर्षों का ख्याल रखना होगा। इस कारण ऐसी योजनाएं हाथ में लेनी होंगी, जो भले ही केवल ५ वर्षों की दृष्टि से मंहगी लगें पर दूर-गामी हों। यह भी देखना होगा कि जो योजना पांच वर्षों के लिए लाभदायक जंचती है, वह आगे चलकर भी ऐसी ही लाभदायक रहेगी या नहीं। हमारी विकास नीति के बहुत से आलोचक यहीं गड़बड़ा जाते हैं। यदि इस ढंग से पूंजी लगाई जाए, जिससे थोड़े समय में ही बहुत अधिक उत्पादन हो या लाभ मिले, मगर आगे चलकर अधिक विकास न हो या विकास की गति न बढ़े तो यह अच्छा नहीं। हमारे लिए तो वही तरीका और वही नीति अच्छी रहेगी, जिससे ३० वर्षों तक विकास की गति निरंतर बढ़ती चली जाए। तभी देश की समृद्धि बढ़ेगी, लोगों की हालत अच्छी होगी और बेकारी घटेगी।

## निर्यात कम, आयात अधिक

सभी जानते हैं कि जहां शुरू में बड़ी मशीनों और मशीनें बनाने वाली मशीनों के निर्माण में अधिक पूंजी लगाई जाती है, वहां आगे चलकर उत्पादन अधिक होता है, विकास के लिए अधिक धन आता है और आर्थिक उन्नति की नींव पक्की होती है। यह हमारी विकास की बुनियादी नीति है। दूसरा चरण भी पहले से ही हुआ है, अर्थात् हमारी अर्थ-व्यवस्था स्वावलम्बी तभी हो सकती है, जब बड़े और मशीन-निर्माण उद्योग देश में स्थापित हों।

लेकिन भारी उद्योगों की स्थापना के लिए हमें शुरू में निर्यात से आयात अधिक करना होता है और विदेशी

---

मौका नहीं है जब भारत ने मुद्रा कोष से अपनी भुगतान की कठिनाई को दूर करने के लिए ऋण लिया हो। पहली बार १९४८-४९ में भारत ने ४७ करोड़ ६२ लाख रु० (१० करोड़ डालर) मुद्रा कोष से लिया था। यह राशि अप्रेल १९५९ तक चुका दी गई। १९५७ में भारत ने मुद्रा कोष से ६० करोड़ ७१ लाख रु० (१२ करोड़ ७५ लाख डालर) लिया। इसके बाद भारत ने ६४ करोड़ ५६ लाख रु० (७ करोड़ २५ लाख डालर) का "आवश्यकता ऋण" लिया। आवश्यकता ऋण तीन साल के भीतर यानी जून १९६१ तक चुका दिया गया। ६० करोड़ ७१ लाख रु० के ऋण में से २६ जून १९६१ तक ३० करोड़ ६० लाख रु० अदा किया जा चुका था। शेष ३० करोड़ ११ लाख रु० जल्दी ही अदा किया जाएगा। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायता भी जरूरी होती है। मशीनें बनाने के लिए आवश्यक मशीनें बाहर से ही मंगानी पड़ती हैं। इससे धीरे-धीरे हमारी विदेशी मशीनरी की मांग घटती जाएगी और विदेशी मदद की फि जरूरत नहीं होगी। इस प्रकार वह स्थिति आ जाएगी कि हम अपने पैरों पर खड़े हो सकेंगे।

यह पूछा जा सकता है कि विदेशी मुद्रा कमाने के लिए पहले निर्यात का माल बनाने वाले उद्योगों को क्यों न बढ़ावें और इससे जो आमदनी हो, उससे भारी मशीनरी आदि मंगावें। इसका जवाब यह है कि यदि हम मशीन बनाने के कारखानों के बजाय और माल बनाने के कारखाने बढ़ावें तो भविष्य में विकास की गति धीमी पड़ जाएगी और भारत की वर्तमान अर्थ-व्यवस्था को देखते हुए जो निर्यात है, वह बहुत अधिक नहीं बढ़ सकता। अतः हमारा निर्यात बुनियादी व मशीनी उद्योगों की स्थापना के बाद बढ़ सकता है, पहले नहीं।

## विकसित देशों से सहायता

इन्हीं बातों के कारण आज भी हमारी स्थिति में बाहरी सहायता बहुत आवश्यक है। पिछले १५-२० वर्षों में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भी बहुत परिवर्तन हुआ है। विकसित देश कम विकसित देशों की मदद करने को तैयार दिखाई देते हैं और इधर धनी देशों ने गरीब देशों को भारी आर्थिक सहायता दी है। भारत की सहायता के लिए भी अनेक देशों ने तत्परता दिखाई है। हां, हमारा यह यत्न होना चाहिए कि विदेशी सहायता की निर्भरता जितनी जल्दी खत्म हो, उतना अच्छा। निर्यात बढ़ाने के नए-नए उपाय किए जा रहे हैं। तीसरी योजना की नीति है कि देश के अन्दर उपभोग या खपत घटाकर निर्यात बढ़ाया जाए।

## अन्न में आत्मनिर्भरता

आर्थिक विकास की नीति का तीसरा अंग है अन्न में आत्मनिर्भरता, जिसे तीसरी योजना में ऊंचा स्थान दिया गया है। देशवासियों को भरपेट भोजन देने के लिए पर्याप्त अनाज पैदा करना जरूरी है। काफी अन्न पैदा होने लगे, तो अन्य जिन्सों पर भी ध्यान दिया जाएगा।

## सरकारी उद्योगों में बढ़ोतरी

हर आर्थिक योजना के कुछ सामाजिक उद्देश्य भी होते हैं। ये सामाजिक उद्देश्य केवल विकास की गति बढ़ा देने से ही पूरे नहीं होते। शुरू में आर्थिक विकास के कामों और सामाजिक उद्देश्यों में विरोध भी हो सकता है। हमारा लक्ष्य समाजवादी समाज की स्थापना है। समाजवादी समाज में सरकार अधिकाधिक उद्योग-धन्धों में हाथ डालेगी। देश की समृद्धि के लिए ही नहीं, धन को मुट्ठी भर लोगों के कब्जे में जाने से रोकने के लिए भी सरकारी उद्योगों की आवश्यकता है। इस बारे में १९४८ और १९५६ के उद्योग-नीति के संकल्प हमारे मार्गदर्शक हैं। अनुमान है कि १९६१ में सरकारी उद्योगों में देश में तैयार होने वाले माल का १० प्रतिशत बनता था। १९६५ तक इनमें २५ प्रतिशत माल बनाने का लक्ष्य है। लेकिन स्थिति के अनुसार इस नीति में हेरफेर भी हो सकता है। मसलन् उर्वरक के निजी कारखाने स्थापित करने की अनुमति दी गई है।

## क्षेत्रीय समानता

दूसरी पंचवर्षीय योजना से ही देश के हर क्षेत्र का एकसा विकास करने पर बहुत जोर दिया जा रहा है और पिछड़े क्षेत्रों के विकास का खास ख्याल रखा जा रहा है।

छोटे और घरेलू उद्योगों पर भी जोर दिया जा रहा है। इनसे लोगों को काम व रोजगार मिलता है और अर्थ-व्यवस्था विकेन्द्रित होती है। तीसरे, इनसे देशवासियों में उद्यमशीलता बढ़ती है।

इस प्रकार आर्थिक विकास की हमने जो नीति अपनाई है, कुल मिलाकर वह सही है और उससे हमारे उद्देश्यों की पूर्ति होगी। यह भी अच्छी बात है कि हमने अपनी रीति में स्थिति के अनुसार परिवर्तन की गुंजाइश रखी है।

## लेखकों से

'सम्पदा' में आर्थिक लेख ही छपते हैं, कविता, कहानियां या अन्य विषयों के नहीं। अतः लेखकों से प्रार्थना है कि वे केवल आर्थिक लेख ही हमारे पास भेजें, जो कागज के एक ओर काफी हाशिया छोड़कर स्पष्ट अक्षरों में लिखे हुए हों। अस्वीकृत लेख वापिस मंगाने के लिए १५ न० पै० के टिकट भेजें।

—सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# एशिया के आर्थिक विकास की समस्याएं

संयुक्त राष्ट्रसंघ के एशिया और दूर पूर्व-आर्थिक आयोग का नयी दिल्ली में २६ सितम्बर से ३ अक्टूबर, १९६१ तक सम्मेलन हुआ। इस में इकाफे क्षेत्र के लगभग १७ देशों के आर्थिक विकास की योजनाओं पर विचार और इनके अनुभव का अध्ययन किया गया।

कोई भी देश जब आर्थिक विकास की योजना बनाता है, तो प्रायः उसका लक्ष्य अपने लोगों का रहन-सहन सुधारना, खेती और उद्योगों की उन्नति और प्राकृतिक साधनों का विकास होता है। योजना इन लक्ष्यों की सिद्धि का साधन होती है। योजनाएं जनसंख्या, प्राकृतिक साधन आदि बातों पर निर्भर होती हैं। इस क्षेत्र के अधिकांश देश कृषि प्रधान हैं। यद्यपि कुछ वर्षों में इनमें उद्योगों का काफी विकास हुआ है, लेकिन अब भी कृषि की प्रधानता है।

पिछले १० वर्ष में इन देशों में परिवहन, संचार, बिजली, सिंचाई आदि व्यवस्था में काफी उन्नति हुई है। आर्थिक विकास का यही आधार है।

## जनसंख्या

योजना बनाते समय जनसंख्या का ख्याल रखना अत्यन्त आवश्यक है। अगर जनसंख्या अधिक न हो तो कम खर्च और आसानी से बेरोजगारों को काम दिलाया जा सकता है। पर जिन देशों की आबादी तेजी से बढ़ रही हो, उनमें बेकारी की समस्या भी कठिन हो जाती है। मशीनों और नई तरकीबों से उत्पादकता बढ़ती है, किन्तु इससे तुरत रोजगार नहीं बढ़ता। अतः उत्पादकता और रोजगार दोनों को बढ़ाने पर ध्यान रखना है।

कृषि प्रधान देशों के लिए ऋतु का बहुत महत्व है, क्योंकि इसी पर सारे देश का उत्पादन निर्भर होता है। खेती की उपज में घट-बढ़ से अन्य चीजों की उत्पादन की योजनाओं में भी उलट-पलट हो जाती है। अतः योजना बनाते समय इस परिवर्तनशीलता का भी ध्यान रखना चाहिए।

अधिकांश अविकसित देशों में शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी समाज सेवाओं पर काफी धन खर्च करना पड़ता है। पर मजदूरों की उत्पादनशीलता और शिल्प कुशलता बढ़ाने के लिए भी इन सेवाओं पर खर्च करना आवश्यक है। इसी प्रकार कारखाना खड़ा करने या बांध आदि बांधने में पूंजी तो तुरत लग जाती है, पर फल मिलने में समय लगता है।

## सरकारी सहयोग

इकाफे क्षेत्र के लगभग सभी देश समझते हैं कि आर्थिक विकास की योजना बनाने और चलाने में सरकार की जिम्मेदारी बहुत बड़ी है। पर किसी देश में सरकार पूरी जिम्मेदारी उठाती है और किसी में सरकार केवल विकास का रास्ता बना देती है और बाकी काम निजी उद्योग पर छोड़ दिया जाता है।

आर्थिक विकास की नीति या उपाय में भी काफी अन्तर हो सकता है। अविकसित और कृषि प्रधान देशों के लिए पहले खेती का विकास जरूरी है। इसके बाद औद्योगीकरण में हाथ लगाया जा सकता है। पर जो देश तेजी से विकास करना चाहते हैं और देश को आधुनिक बनाना चाहते हैं, वे शुरू में ही उद्योगों पर अधिक ध्यान देते हैं, यद्यपि इसमें कठिनाइयां आ सकती हैं, परन्तु इस बात का भी ध्यान रखना जरूरी है कि उन्नत देशों में किस गति से विकास हो रहा है। अर्थात् विकसित और अविकसित देशों में जो अन्तर है, वह और न बढ़ने पाए, बल्कि जहां तक हो, कम होता जाय। मतलब यह है कि अपनी योजनाएं बनाते समय अविकसित देशों को अनेक बातों का ध्यान रखना पड़ता है अर्थात्, उत्पादकता बढ़ाने के साथ बेकारी घटाने का, और वर्तमान के साथ भविष्य का भी ध्यान रखने का। निजी क्षेत्र और सरकारी क्षेत्र में क्या संबंध रहें, इस पर भी बहुत चर्चा चलती है। भारत के अलावा श्रीलंका, बर्मा, इण्डोनेशिया आदि देश भी सरकारी क्षेत्र



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विदेशी पूंजी की आवश्यकता

विश्व के भिन्न-भिन्न अर्थ-शास्त्री विश्व में चलने वाली आर्थिक प्रवृत्तियों का अध्ययन करते हैं और विभिन्न आर्थिक सिद्धान्तों की कल्पना करते हैं। इनमें से एक कल्पना है "टेक ऑफ" अर्थात् 'विकास क्रम की।' इस कल्पना का आधार यह है कि किसी देश में पूँजी का जितना विनियोग होगा, उतनी अधिक बचत होगी और आगे विकास योजनाओं में उतना ही विनियोग अधिक होगा। इस तरह एक नियत अवधि में एक देश काफी विकास कर जाता है।

कॉलिन क्लार्क नामक अर्थशास्त्री ने इस कल्पना को बहुत प्रामाणिक नहीं माना है। वे कहते हैं कि अमेरिकन या रूसी पद्धति से केवल पूँजी लगा देने भर से सब समस्यायें हल नहीं हो जाती। श्री डब्ल्यू० डब्ल्यू० रोस्टो कहते है कि आर्थिक विकास विनियोग की दर के साथ और तीन शर्तो की पूर्ति पर निर्भर है।

१. बचत की दर बढ़ती रहनी चाहिए, यहाँ तक कि वह दुगनी हो जाये।

२. लोगों में रुपया लगाने की उमंग और क्षमता होनी चाहिए।

३. कोई ऐसी मशीनरी होनी चाहिए, जिससे लोगों की बचत का रुपया उद्योगों में लग सके।

लोगों में रुपया लगाने की उत्सुकता भी इस बात पर निर्भर है कि लोगों को उससे कितना मुनाफा होता है। तीसरी शर्त की पूर्ति के लिए आवश्यक है कि पूंजी का बाजार संगठित किया जाये, जहां लोग अपनी बचत को जमा करा सकें, जैसे—बैंक, या शेयर बाजार और उससे रुपया सीधा उद्योगों में लग सके। अविकासित राष्ट्रों में ये तीनों शर्तें पूरी नहीं होतीं। वहां न इतने उद्योग पनपते हैं और न उतनी पूंजी होती है और न इतनी बचत होती है कि लोग आर्थिक विकास के लिए आवश्यक उद्योगों में अपना रुपया लगा सकें। इस आधार पर कालिन-क्लार्क ने 'टेक ऑफ' या विकास क्रम की कल्पना का बहुत समर्थन नहीं किया। वह कहता है कि यह कल्पना ऐतिहासिक तथ्य हो सकती है, किन्तु अविकसित राष्ट्रों के लिए यह मान्य सिद्धान्त नहीं हो सकता। इसके लिए आवश्यक है कि विदेशी उद्योगपति आकर अविकसित देशवासियों को प्रेरणा दे और उनका मार्ग दर्शन करें। विदेशी पूंजी के सहयोग से ही उन देशों में अपनी बचत को उद्योगों में लगाने की प्रेरणा मिलेगी, और तथी उन देशों का आर्थिक विकास होगा।

---

को बढ़ा रहे हैं, जिससे आर्थिक उन्नति की नींव पक्की हो।

## धन की समस्या

इस क्षेत्र के सभी देशों के सामने विकास के लिए धन जुटाने की समस्या है। उत्पादकता और कम आय के कारण बचत ज्यादा नहीं हो पाती। अतः सरकार को बचत बढ़ाने के लिए अनेक उपाय करने पड़ते हैं। योजनाओंके मुख्य साधन ये हैं:—(१) सरकारी बचत, (२) जनता से ऋण, (३) विदेशी सहायता और (४) घाटे की वित्त व्यवस्था।

सरकारी बचत का मतलब है मुनाफे का बजट। लेकिन इस क्षेत्र के देशों में राजस्व विकास की जरूरतों के हिसाब से तेजी से नहीं बढ़ रहा है। अतः विकास योजनाओं के लिए कर बढ़ाए जा रहे हैं। लेकिन कम विकसित देशों में कर बढ़ाने की भी सीमा होती है। ऐसी हालत में सार्वजनिक उद्योगों में मुनाफा होना बहुत जरूरी है।

जनता से भी ऋण लिया जा रहा है। भारत, पाकिस्तान, थाइदेश और श्री लंका, मलय और बर्मा में भी जनता से ऋण लिया जा रहा है।

विदेशी सहायता भी बहुत जरूरी है। इस क्षेत्र के देशों को अपनी योजनाओं के लिए मशीन व सामान आदि मंगाने के लिए विदेशी मुद्रा की बहुत जरूरत है। कुछ देशों में तो योजनाओं पर जितना खर्च होता है, उसका आधा विदेशी मुद्रा में होता है। यह समस्या बाहरी मदद से ही हल हो सकती है।

घाटे की अर्थ व्यवस्था से भी बहुत से गुप्त या निकृष्ट साधन काम में लाए जा सकते हैं। किन्तु इस पर ज्यादा निर्भर नहीं रहना चाहिए। इसका ध्यान रखना होता है कि मुद्रा स्फीति न बढ़े।

एशिया के देशों को अपने विकास के लिए हर प्रकार से अपने साधन जुटाने चाहिए और साथ ही विदेशी सहायता का भी ठीक-ठीक उपयोग करना चाहिए और शीघ्र अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश करनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पोलैण्ड और भारत के आर्थिक सम्बन्ध

यद्यपि पोलैण्ड और भारत के आर्थिक सम्बन्धों का आरम्भ केवल एक दशक पहले हुआ, फिर भी भारत अब पोलैण्ड के वैदेशिक व्यापार का महत्वपूर्ण भागीदार माना जाता है। इस दशक के दौरान दोनों देशों के वार्षिक व्यापार और व्यापार विनिमयों के स्वरूपों, दोनों में बड़े-बड़े परिवर्तन हुए हैं। १९५२ में २६.४ लाख रु० की छोटी सी शुरूआत से पौलैण्ड और भारत का व्यापार १९६० में ६३७.७ लाख रु० तक पहुंच गया। फिर भी ऐसी आशा है कि चालू वर्ष में दोनों ओर का व्यापार पिछले साल की अपेक्षा दूना हो जायगा।

३ अप्रैल, १९५६ को ३ साल के व्यापारिक समझौते पर हस्ताक्षर के साथ पौलैण्ड और भारत के आर्थिक सम्पर्कों को दृढ़ और औपचारिक आधार प्रदान किया गया। उसी साल के दिसम्बर में यह समझौता लागू होने के साथ-साथ दोनों के आर्थिक सम्बन्धों में नये युग का सूत्रपात हुआ। समझौते के अन्तर्गत भारत को अपनी दूसरी पंचवर्षीय योजना की सिद्धि के लिए बहुत जरूरी मशीनें, रेलों के डिब्बे आदि प्राप्त हुए। इसके बदले में पौलैण्ड ने भारत से बड़ी मात्रा में खनिज लौह, अबरक तथा दूसरी परम्परागत निर्यात वस्तुएं खरीदीं। नीचे के आंकड़े बतलाते हैं कि उस समझौते के बाद व्यापार में किस तरह बराबर वृद्धि हुई है।

| वर्ष | कुल व्यापार (लाख रुपयों में) |
|---|---|
| १९५६ | ३१९.६ |
| १९५७ | ६२९.६ |
| १९५८ | ४७८.९ |
| १९५९ | ७५७.६ |
| १९६० | ६३७.७ |

समझौता लागू होने के ठीक बाद ही स्वेज संकट पोलिश-भारत सम्बन्धों के विस्तार में रोड़ा जान पड़ा। फिर भी नहर की नाकेबन्दी की सारी कठिनाइयों व खतरों के बावजूद पौलैण्ड भारत को बिना अतिरिक्त व्यय के माल पहुंचाने की गति बनाये रख सका।

## रुपयों में समझौता

"दोस्त वह जो जरूरत में काम आये" यह एक पुरानी कहावत है। पौलैण्ड से हुए समझौते के ठीक बाद के काल में भारत के सामने विदेशी मुद्रा की बहुत बड़ी कमी आ गई, जिसके फलस्वरूप आयातों पर नियंत्रण लगाने की जरूरत पड़ी। विदेशी मुद्रा पाने की कठिनाइयां कम करने के उपाय निकालने के लिए तथा व्यापार की गति बनाये रखने के लिये दोनों सरकारों ने वार्तालाप किया। इन वार्तालापों का परिणाम था विशेष भुगतान-व्यवस्था जो १२ मार्च १९५८ को अमल में आई। इस समझौते के अनुसार भारत अपरिवर्तनीय भारतीय रुपये में भुगतान देकर पोलैण्ड से पूंजीगत साज-सामान खरीद सका। इस व्यवस्था से पौलैण्ड को होने वाले भारतीय निर्यात का दायरा बढ़ा।

पोजनान के अन्तर्राष्ट्रीय मेले में १९५७ में प्रथम बार भारत की शिरकत बड़ी हद तक भारत के निर्यातकर्ताओं और पौलैण्ड के आयातकर्ताओं तथा उपभोक्ताओं में सीधे सम्पर्क स्थापित करने के लिए बड़ी उपयोगी सिद्धि हुई। १९६१ में भारत ने पांचवीं बार पोजनान के अन्तर्राष्ट्रीय मेले में भाग लिया। इस मेले में इस साल भारतीय फर्मों के भाग लेने के फलस्वरूप भारतीय फर्मों और पोलिश विदेशी व्यापार संगठनों में ७० लाख रुपये से अधिक के कई समझौते हुए।

पोलैंड भी १९६१ में नई दिल्ली में होने वाले भारतीय औद्योगिक मेले में भाग लेगा। पोलैंड के मण्डप में अनेक पोलिश विदेशी व्यापार संगठन तरह-तरह के निर्यात पदार्थों का खासकर नये प्रकार की विविध मशीनों और साज-सामान का प्रदर्शन करेंगे।

## दूसरा व्यापारिक समझौता

पौलैंड और भारत में ३ साल का दूसरा व्यापारिक समझौता २ नवम्बर, १९५९ को नई दिल्ली में हुआ था, जो १ जनवरी १९६० से अमल में आ गया। इस समझौते की खास विशेषता यह है कि दोनों पक्ष दोतरफा व्या-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार को सन्तुलित करने को सहमत हुए हैं। पोलैण्ड द्वारा अर्जित रुपयों का उपयोग भारत में उसी मूल्य का माल खरीदने में किया जायगा। पोलैण्ड ने समझौते के अन्तर्गत अन्य चीजों के अलावा औद्योगिक कच्चा माल विविध प्रकार की मशीनें व साज-सामान जैसे मशीनी टूल और धातु का काम करने वाला साज-सामान, कोयला खोदने का साज-सामान, बर्मा करने का साज-सामान, निर्माण व यातायात का साज-समान, वस्त्र उद्योग की मशीनरी, आटा मिलों की मशीनें, डीजल इंजन, बिजली के मोटर, पम्प, ढलाई के कारखानों के लिए साज-सामान, बिजली से वेल्डिंग का साज-सामान, डाक्टरी साज-सामान व यंत्र देने को कहा। उपर्युक्त समझौते के अंतर्गत दी जाने वाली दूसरी महत्वपूर्ण चीजें ये हैं : पूंजीगत माल जैसे पूरे औद्योगिक प्लाण्ट, लोहा इस्पात पदार्थ, औषधियां, रंगाई के पदार्थ, मंझोले रसायन पदार्थ।

एक दूसरे पहलू से भी समझौता महत्वपूर्ण था। प्रथम बार इसमें भारत के इंजीनियरिंग उद्योग के पदार्थ जैसे वस्त्र मशीनरी और उसके सहायक पुर्जे पोलैण्ड को निर्यात करने की परिकल्पना की गयी।

## सहयोग का नया अध्याय

पोलैण्ड और भारत में नये प्रकार का नियोजित सहयोग आरम्भ करने के लिए ७ मई १९६० को दोनों देशों में एक नया समझौता हुआ। इसके अनुसार पोलैण्ड की सरकार ने भारत को १४.३ करोड़ रुपये का ऋण ढाई प्रतिशत वार्षिक ब्याज पर दिया।

ऐसी आशा है कि भारत इस ऋण से तीसरी पंचवर्षीय योजना में परिकल्पित कुछ परियोजनाओं को पूरा कर सकेगा। नेशनज कोल डेवलपमेंट कार्पोरेशन और पोलिश विदेशी व्यापार कारोबार मेसर्स सेकप में झरिया कोयला क्षेत्र में गहरे शैफ्ट की कोयला खान बनाने के लिए परियोजना रिपोर्ट का विशदीकरण करने के लिए तथा मशीनें और प्लाण्ट देने के लिए समझौता हुआ है। इससे भारत तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत कोयले का उत्पादन काफी बढ़ा सकेगा।

सहयोग सम्बन्धी समझौते में अन्य बातों के अलावा दो भीमकाय बखार बनाने की भी परिकल्पना है, जिनकी क्षमता ५०,००० टन होगी तथा हैदाराबाद में बड़ी मशीन टूल फैक्टरी बनाने की भी व्यवस्था है।

ताप बिजली कारखानों के लिए ब्वायलर देने तथा कोयला धोने के कारखानों के लिए मशीनें और साजसामान देने के बारे में शीघ्र ही बात चीत होने की आशा है। ●


"राष्ट्र-भारती"

सम्पादक—मोहनलाल भट्ट, हृषीकेश शर्मा

इसमें आपको लब्धप्रतिष्ठ-विद्वान साहित्यकारों के ज्ञान-पोषक और मनोरंजक अच्छे-अच्छे लेख, कविताएं, कहानियां एकांकी, रेखाचित्र, शब्दचित्र आदि रचनायें पढ़ने को मिलेंगी।

इसमें संस्कृत, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं की तथा अंग्रेजी, रशियन आदि विदेशी भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं के सुन्दर हिन्दी अनुवाद भी रहते हैं।

आज ही मनीआर्डर द्वारा ६) भेजकर ग्राहक बन जाइये।

रियायत—स्कूल-कालेजों, सार्वजनिक पुस्तकालयों तथा वाचनालयों को केवल ५) वार्षिक चन्दे में मिलेगी।

पत्रव्यवहार का पता—

व्यवस्थापक—"राष्ट्रभारती"
हिन्दी नगर, वर्धा
(राष्ट्रभाषा प्रचार समिति)

सबसे सस्ता सचित्र हिन्दी मासिक

जागृति

जिसे भारत के सभी प्रमुख लेखकों, कवियों, और कहानीकारों का सहयोग प्राप्त है।

उत्प्रेरक कविताएं, ज्ञानवर्धक लेख, सांस्कृतिक निबंध, रोचक कहानियां, बाल संसार, साहित्य आगे बढ़ता है आदि स्तम्भ

तिरंगा आवरण, अनेकों इकरंगे चित्र

४८ से ५६ पृष्ठ की सम्पूर्ण छपाई आर्ट पेपर पर

इस पर भी मूल्य केवल २५ नए पैसे

एजेंटों को ५ से १०० प्रतियों पर २५ प्रतिशत और इससे ज्यादा पर ३३⅓ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है। डाक खर्च प्रकाशकों के जिम्मे। ऐजेन्ट नमूने की प्रति के लिए आज ही लिखें।

व्यवस्थापक—'जागृति' हिन्दी लोक सम्पर्क विभाग, पंजाब, चंडीगढ़




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# यूरोपीय सामान्य बाजार, ब्रिटेन और राष्ट्रमंडल

प्रोफेसर पूरनचन्द रावत

आधुनिक युद्ध विनाश का प्रतीक ही नहीं है, विकास का अग्रदूत भी है। गत दो विश्व युद्धों ने महाविनाश द्वारा जहां विश्व का अहित किया है, वहां उसने कराहती मानवता को सहयोग का पाठ पढ़ाकर विकास के लिए जागृत किया है। आज सभी देश अपनी-अपनी समस्याओं को अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग द्वारा सुलझाने के लिए चिंतित है। स्वतंत्र व्यापार (Leissez Faire Policy) अब केवल १९ वीं सदी का स्वप्न मात्र रह गया है, क्योंकि सभी देश एक दूसरे के परस्परावलम्बी हैं। भौगोलिक भिन्नता एवं उत्पादन के साधनों का असमान वितरण ही अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का जन्मदाता है। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, अन्तर्राष्ट्रीय बैंक इत्यादि इसी आपसी सहयोग की कड़ी हैं।

## सांझे बाजार का स्वरूप

आपसी सहयोग के आधार पर ही यूरोपीय सामान्य बाजार अस्तित्व में आया। इसका प्रधान कार्यालय ब्रुसैल्स में है और संभव है कि वह लंदन में स्थानान्तरित कर दिया जाय। यूरोपीय सामान्य बाजार की उत्पत्ति O.E.E.C. अर्थात् Organisation of Eunopeon Economic Cooperation से हुई है। इस संगठन में १६ देशों में पारस्परिक सहयोग का समझौता हुआ। ये देश हैं, आस्ट्रिया, बेलजियम, डेनमार्क, फ्रांस, प० जर्मनी, यूनान, आइसलैंड, आयरलैंड, इटली, लुग्जेम्बर्ग, नीदरलेंड, नार्वे, पोर्तुगाल, स्वीडन, स्विटजरलेंड और टर्की। कालांतर में ब्रिटेन भी इसमें शामिल हो गया। इस संगठन को १६ अप्रैल १९४८ में जन्म मिला और निम्नलिखित उद्देश्य सामने रखे गये :—

"सदस्य राष्ट्रों द्वारा अपनी आर्थिक शक्ति, व्यक्तिगत कार्यक्षमता और उत्पादन-क्षमता का सम्मिलित उपयोग करके उत्पादन बढ़ाना, अपने कृषि और औद्योगिक विकास के निमित्त तत्सम्बन्धी उपकरण और साज सज्जा का आधुनिकीकरण, व्यापारिक क्षेत्र में उत्तरोत्तर वृद्धि करना, व्यापारिक प्रतिबन्धों को शनैः शनैः कम करना एवं सदस्य राष्ट्रों की मुद्रा में स्थिरता पैदा करना है।"

## ६ देशों का अलग गुट

परन्तु कुछ समय पश्चात इस संगठन के ६ देशों ने एक छोटा गुट बना लिया और इसमें बेलजियम, फ्रांस, प० जर्मनी, लुग्जेम्बर्ग और नीदरलेंड सम्मिलित हैं। इन देशों ने २५ मार्च, १९५७ को एक संधि की, जो रोम संधि कहलाती है। इसके अनुसार ये देश इस बात पर सहमत हो गये कि १५ वर्ष में वे परस्पर सभी व्यापार प्रतिबन्धों को हटाकर एक दूसरे की अर्थ-व्यवस्था में अधिक सामंजस्य स्थापित करेंगे। १ जनवरी से यह कार्यक्रम लागू हुआ एवं इन देशों ने सीमा शुल्क में १० प्रतिशत कमी कर दी। इन देशों को सम्मिलित रूप से ही सामान्य बाजार (Common Market) कहते हैं। वास्तव में यूरोप की अर्थ-व्यवस्था सुदृढ़ करने की ओर यह महत्वपूर्ण कदम है।

अभी-अभी ब्रिटेन ने भी इसमें शामिल होने के लिए एक आवेदन पत्र दिया है, जिसे लेकर बड़ा मतभेद उपस्थित यो गया है। वास्तव में ब्रिटेन राष्ट्रमंडलीय देशों का प्रमुख है। यदि वह बिना अन्य देशों का विचार किए सामान्य बाजार में मिल जाता है तो यह अविकसित राष्ट्रों की अर्थ-व्यवस्था पर एक भयंकर चोट होगी।

## ब्रिटेन की गौरव पूर्ण स्थिति

ब्रिटेन के सामान्य बाजार में सम्मलित होने के अनेक कारण हैं। न्यूजीलेंड ने दूध की बनी वस्तुओं के निर्यात द्वारा आय कम हो जाने के फलस्वरूप आयात लाइसेंस देने की नीति कठोर कर दी है। राष्ट्रमंडलीय देशों से आयात करने वाले देश के रूप में ब्रिटेन का प्रमुख स्थान अब नहीं रहा। सन् १९५५ में ब्रिटेन ने कुल आयात का ४५ प्रतिशत राष्ट्रमंडल से मंगाया; पर सन् १९५९ में वह घटकर केवल ४० प्रतिशत ही रह गया। यदि वह इन्हीं अविकसित राष्ट्रों से जुड़ा रहता है तो उसका उत्पादन स्तर घट जाएगा एवं वह स्टर्लिंग क्षेत्र में बैंकर की स्थिति



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त नहीं कर सकेगा ।

सन् १९५० और १९५८ के बीच की अवधि में यूरोपीय सामान्य बाजार के देशों की राष्ट्रीय आय ५३ प्रतिशत बढ़ी, जबकि यूरोप की आय ४२ प्रतिशत, अमेरिका की २६ प्रतिशत तथा ब्रिटेन की २२ प्रतिशत ही बढ़ पायी। अतः ब्रिटेन को अपनी अर्थ-व्यवस्था सुदृढ़ करने और नये-नये बाजार प्राप्त करने के लिए सामान्य बाजार में शामिल हो जाना पड़ेगा ब्रिटेन की अर्थ-व्यवस्था सुधारने के लिए केवल ३ मार्ग शेष रह जाते हैं :—

(१) पौंड का अवमूल्यन करना Devaluation)।

(२) विदेशी विनिमय पर नियंत्रण ।

(३) निर्यात व्यापार में सहायता एवं मंदी को प्रोत्साहन देना। इन सब उपायों में सबसे अच्छा सामान्य बाजार में शामिल होना है, जिससे सांप भी न मरे और लाठी भी न टूटे। ब्रिटिश प्रधानमंत्री श्री मैकमिलन के शब्दों में :—

"There is an old fable of rivalry between the sun and the wind, as to which would make the traveller discard his coat. As the east wind blows, nations tend to draw together under the Common cloak of unity." If Britain goes on as she is there will come an economic crisis she will not survive.

अर्थात् सूर्य और वायु में झगड़ा होने की पुरानी कहानी है, जिसके अनुसार मुसाफिर का कोट जो उतरवा देगा, वही जीत जाएगा। जैसे-जैसे पूर्व की हवा चलती है, वैसे-वैसे एकता के सांझे आवरण के नीचे राष्ट्र एक दूसरे पास खिचे आते हैं। अगर ब्रिटेन की वही हालत रही जैसी इस समय है तो उसके सामने ऐसा आर्थिक संकट आयगा कि वह बच नहीं सकेगा।

## राष्ट्रमंडलीय देशों की प्रतिक्रिया

राष्ट्रमंडलीय देश अभी तक एक इकाई के रूप में कार्य करते रहे हैं, क्योंकि इनका माल ब्रिटेन में बिना आयात शुल्क के जाता था। अतः राष्ट्रमंडलीय देशों के समक्ष एक चुनौती उपस्थित हो गयी है। इसलिए ब्रिटेन ने श्री डंकन सेंडिज को कनाडा, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलेंड भेजा इसके। अतिरिक्त श्री थार्नीकाफ्ट एशियाई देशों के दौरे पर आये और १२ जुलाई से १६ जुलाई तक दिल्ली में वार्ताएं कीं।

ब्रिटेन के सामान्य व्यापार में शामिल होने से न्यूजीलेंड को बहुत हानि होगी, क्योंकि कुल निर्यात व्यापार में ८८ प्रतिशत ऊन, दूध और मांस है। यह सभी ब्रिटेन जाता है, अतः न्यूजीलेंड संकट में पड़ जाएगा।

इसी तरह साइप्रस अपनी ७० प्रतिशत खेती की पैदावार ब्रिटेन भेजता है, जिससे साइप्रस को बड़ी चिंता है। आस्ट्रेलिया के कुल निर्यात का एक चौथाई ब्रिटेन जाता है, इसलिए श्री मेन्जीज ने कहा है कि यदि बिना शर्त ब्रिटेन सामान्य बाजार में सम्मिलित होता है तो उसे लाखों पौंड की हानि होगी।

भारत का ब्रिटेन से सदा वास्ता रहा है और हमारी अर्थ-व्यवस्था बहुत कुछ ब्रिटेन पर आधारित है। सन् १९६० में कुल १७४ करोड़ रुपए का माल ब्रिटेन गया, जो कि भारतीय कुल निर्यात का २६ प्रतिशत है। भारत ब्रिटेन के व्यापारिक आंकड़े नीचे दिये जाते हैं :—

| वस्तुएं | ब्रिटेन को निर्यात (लाख रु० में) | ब्रिटेन के कुल निर्यात में प्रतिशत हिस्सा |
|---|---|---|
| चाय | ७५,४० | ६२.५ प्रतिशत |
| ऊनी वस्तुएं, चटाइयां | ३,५० | ७२ " |
| सूती वस्तुएं और धागा | १६५१ | २३ " |
| चमड़ा और वस्तुएं | १६१२ | ६२ " |
| खली | १०७० | ६६ " |
| कच्चा तमाखू | १०१२ | ६९ " |
| जूट की वस्तुएं | ८४० | ७ " |
| काजू और मूंगफली | २१७ | २५ " |

भारत ब्रिटेन का चौथा सबसे बड़ा ग्राहक और पांचवां सबसे बड़ा माल देने वाला देश है।

## भारत क्या करे ?

यद्यपि ब्रिटिश सरकार की ओर से यह आश्वासन दिया गया है कि बिना राष्ट्रमंडलीय देशों के संरक्षण के ब्रिटेन साझे बाजार में शामिल नहीं होगा, परन्तु फिर भी हमारे निर्यात व्यापार पर बड़ा गहरा असर होगा। हमारे चाय, जूट, वस्त्र, शक्कर, मसाले आदि उद्योग नष्ट हो



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चीन की आबादी कितनी है?

भारत के समान चीन भी काफी प्राचीन देश है, पर इसकी आबादी ठीक कितनी है, यह कई सदियों से नहीं जाना जा सका है। सदियों तक यहां राजाओं की वंश परम्पराओं का शासन रहा। ईसा पूर्व २२०० में इस आबादी का अनुमान १ करोड़ ३० लाख लगाया गया था। जनगणना में एक बड़ी रुकावट जनता में फैला हुआ यह आम विचार था कि टैक्स लगाने और फौज में भर्ती करने अथवा बेगार लेने के लिए आबादी की गिनती की जा रही है। ७५४ ई० में जो मर्दुमशुमारी की गयी, उसके मुताबिक ५,२९,१९,३०९ संख्या थी। इस गणना को करते समय प्रत्येक स्थान को कुछ परिवार समूहों में बांट दिया गया था, जिसमें एक व्यक्ति को उस टोली से टैक्स जमा करने, फौज के लिए रंगरूट देने और बेगार देने के साथ-साथ अपने आधीन व्यक्तियों की संख्या गिनने का दायित्व दिया गया था। टैक्स इत्यादि से बचने के लिए आम लोग ठीक संख्या छिपाते थे। ५८७-६०६ ई, अर्थात् १९ वर्षों में ३० से ८० लाख तक की वृद्धि अंकित की गयी। १७२१ में बेगार बंद कर दी गयी तथा अन्य कुछ सुधार किये गये। तब आबादी की गिनती २ करोड़ ४० लाख से एकदम बढ़कर १२ करोड़ ४० लाख हो गयी। यह संख्या ठीक थी, इस बात की गारंटी फिर भी नहीं की जा सकती थी, क्योंकि चीन के अनेक प्रदेश इतने दूर और अगम्य हैं कि वहां कोई गणक पहुँच ही नहीं सकता था।

चीनके प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता डा० सन-यात सेन ने सब से पहले १८९४ में चीन की लगातार बढ़ती हुई आबादी के खतरे की ओर नेताओं का ध्यान खींचा। उसने यहां तक कहा कि"—अगर हमने इसका इलाज समय पर न किया तो इससे हमारी चिन्ताएँ बढ़ जाएँगी।"

मंचू सरकारने १८४२ में एक जनगणना करायी थी, जिसमें चीन की आबादी ४१,३०,२०, ००० निकली। १९०८ में मंचू प्रशासनने फिर जनगणना करायी, जो १९११ में पूरी हुई। यद्यपि क्रान्ति होने से मंचू राजा उसी साल समाप्त हो गये पर परिणाम स्वरूप ३७, ४२,२३,००८ जनसंख्या निकली। १९१२ में एक अन्य अनुमानिक जनगणना की गयी, जिसके अनुसार चीन की आबादी ४७,६८,००,००० थी। यह गणना किस प्रकार की जाती थी, इस सम्बन्ध में उस समय के एक विद्वान् ने जांच करके लिखा है कि स्थानीय मैजिस्ट्रेट अपने इलाके में कितना नमक अथवा अन्य कोई दैनिक प्रयोग की वस्तु कितनी खर्च होती है, इसकी मात्रा पर आबादी की संख्या निर्धारित कर लेते थे।"

कम्युनिस्ट शासन प्रारम्भ होने पर, चीन की आबादी के सम्बन्ध में सबसे पहली प्रामाणिक घोषणा १६ जून १९५० को कम्युनिस्ट चीन के प्रधान मन्त्री श्री चाऊ एन-लाई ने की, जिसके अनुसार इस देश की आबादी ४८,७६,९०,००० बतायी गयी।

अप्रैल १९५३ में आम चुनावों के लिए मतदाताओं

---

जाएंगे। सन् १९६० में १२० करोड़ रुपए की कुल चाय में से ७५ करोड़ की चाय सिर्फ ब्रिटेन भेजी गयी। यदि इस शुल्क माफ चाय पर १८ प्रतिशत चुंगी दी जाएगी तो हमारी चाय ब्रिटेन में महंगी पड़ेगी। हमें अपनी अर्थ-व्यवस्था सुधारने के लिए पैसा चाहिए। विदेशी विनिमय अर्जन करना हमारे लिए मुश्किल हो जाएगा। संभव है, ब्रिटेन के इस निर्णय का प्रभाव हमारी पंचवर्षीय योजनाओं पर पड़े। अतः हमें निर्यात प्रवर्तन आन्दोलन को मजबूत बनाना होगा और ब्रिटेन पर पूर्ण निर्भर नहीं रहना होगा। संभव है, जैसे कि आसार दीख रहे हैं, भारतीय सरकार सामान्य बाजार के देशों से सीधा सम्बन्ध स्थापित करेगी और अपने निर्यात की समस्या को सुलझायगी। श्री थार्नीकाफ्ट ने यह आश्वासन दिया है कि वे भारतीय दृष्टि-कोण को ध्यान में रखेंगे, जिससे उसके निर्यात को आंच न आने पावे। हमें अपना आंतरिक व्यापार भी संगठित करना पड़ेगा, जिससे यूरुप की सांझे बाजार की तलवार का भय हमारे सिर पर न रहे।

• •



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सूची बनानी जरूरी थी। उस समय सर्वेक्षण किया गया जो मई, १९५४ में पूरा हुआ और जिसकी सरकारी घोषणा इसी साल नवम्बर में की गयी। इस गणना के समय केवल तीन प्रश्न पूछे जाते थे—नाम, लिंग और आयु। इसमें विशुद्धता लाने के लिए ३० जून, १९५३ की रात समूचे देश की गणना की गयी। इस काम में २५ लाख व्यक्ति लगाये गये।

इस गणना के अनुसार समूचे संसार में ६०,१९,३८,०३५ चीनी हैं जिन में से ५७,४२,०५,९४० को प्रत्यक्ष रूपसे गिना गया और शेष का अनुमान अप्रत्यक्ष रूपसे लगाया गया। इस अप्रत्यक्ष गणना में ७५,९१,२९८ चीनी कुमितांग-तेवान (फारमोसा) में हैं और १,१७,४३,३२० चीनी विदेशों में रहते व पढ़ते हैं और ८३,९७,४७७ दूरस्थ सीमान्त प्रदेशों में हैं। इन प्रत्यक्ष गिने जाने वाले व्यक्तियों में ५१.८२ सी सदी पुरुष और ४८.८१ फी सदी स्त्रियां हैं। संख्या के अनुसार क्रमशः २९,७५,३३,५१८ और २७,६६,५२,४२२।

प्रधान मन्त्री श्री चाऊ-एन-लाई ने एक भारतीय शिष्ट मंडल से जुलाई १९५३ में कहा था कि चीन की आबादी लगभग २ प्रतिशत तक बढ़ती है और १९८० में इसकी कुल आबादी ८० करोड़ हो जाएगी। चीन परिवार नियोजन के विरुद्ध है।

कुछ प्रमुख राजनीतिज्ञों का विचार है कि चीन अपनी आबादी को जान बूझकर बढ़ाकर दक्षिण-पूर्व एशिया के समीपवर्ती देशों में आतंक फैलाकर अपनी विस्तार-वाद की नीति अपनाना चाहता है। चीन द्वारा भारत के लगभग १२ हजार वर्ग मील पर जबर्दस्ती कब्जा करना इसी नीति का परिणाम है। प्रसिद्ध लेखक श्री सी. ए. किशोर के अनुसार चीन की यह वृद्धि अन्य देशों के लिए भयंकर खतरा है। कुछ समय बाद वह—"मुझे अधिक स्थान चाहिए"—इस मांग की आड़ में एशियायी देशों के लिए संकट पैदा करेगा।❀

❀ श्री हर्षदेव मालवीय के एक लेख के आधार पर।


## 'भारत व्यापार पत्रिका' की विशेषताएँ

पृष्ठ सं. १०० वार्षिक चंदा ८) साधारण अंक ७५ न.पै.

- ❀ उद्योगपतियों एवं व्यापारियों के लिए उपयोगी सामग्री
- ❀ व्यापारिक भविष्यवाणी
- ❀ एक विज्ञापन मुफ्त छापने की योजना
- ❀ अर्थशास्त्र के छात्रों के लिए अनेक जानकारी
- ❀ मनोरंजन के लिए आकर्षक कहानी, गंगा की लहरें स्तम्भ में व्यंग विनोद तथा सामयिक कार्टून
- ❀ सम्पादक की डाक में आपके प्रश्नोत्तर
- ❀ इसके अलावा अनेकों स्थाई स्तम्भ

अगर आपने अब तक पत्रिका नहीं देखी है तो आज ही इस विज्ञापन की कटिंग के साथ २५ नये पैसे का पोस्टेज भेजकर नमूना मंगाइये। विज्ञापन दर तथा जानकारी के लिए लिखें—

**व्यवस्थापक, भारत व्यापार पत्रिका (मासिक)**
राजा दरवाजा, वाराणसी

तार-केनाको पो० बा० नं० ४९ फोन-३३४३

## उद्योग-व्यापार पत्रिका

देश में उद्योग और व्यापार को आगे बढ़ाने के लिये क्या हो रहा है और आप इससे किस तरह फायदा उठा सकते हैं? देश में क्या-क्या चीजें और कितने परिमाण में कहाँ-कहाँ बन रही हैं और आप क्या बना कर अच्छी कमाई कर सकते हैं? तरह-तरह के व्यापार की देश-विदेश में क्या दशा है? पंच-वर्षीय योजना से हमारी क्या उन्नति हो रही है? ये सभी प्रश्न ऐसे हैं, जिनके उत्तर आपको अवश्य जानने चाहिएँ, और इन सबकी जानकारी पाने का श्रेष्ठ साधन है—उद्योग व्यापार पत्रिका। इसलिये आप ६ रु० भेजकर साल भर के लिये आज ही ग्राहक बन जाइये। नमूना पत्र लिखकर मंगाइये।

एजेन्टों को भरपूर कमीशन।
पत्रिका विज्ञापन देने का अच्छा साधन है।

**वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,**
**भारत सरकार, नई दिल्ली**




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रेलों के परिचालन में बिजली और डीजल

श्री प्रमोदचन्द्र शुक्ल उपनिदेशक, रेलवे बोर्ड

संसार भर में यात्रियों और माल के परिवहन के लिए मोटरों के प्रयोग में आश्चर्यजनक वृद्धि हो गयी है। इस ने रेलों के आस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है। पश्चिमी देशों की रेलें, तेज रफ्तार और परिवहन सुविधा में ट्रकों व बसों की समता करने के लिए, कर्षण के नये-नये तरीके अपना रही हैं। बीसवीं सदी के पांचवें दशक में, डीजल और विद्युत ने भाप के इंजनों का स्थान ले लिया है।

स्विट्जरलैण्ड और स्वीडन में सारी की सारी रेलें बिजली के इंजनों से चलती हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में भी डीजल गाड़ियों ने करीबन सभी भाप गाड़ियों को अपदस्थ कर लिया है। कर्षण के नये तरीकों को अपना कर फ्रांस की रेलें विश्व भर में प्रशंसा की पात्र बन गई हैं। ब्रिटिश रेलों ने भी बिजली रेलें चलाना शुरू किया है। अन्य देशों में, यद्यपि ऐसी तेजी से परिवर्तन नहीं हुए हैं, फिर भी भाप इंजनों का एकाधिकार भी वहां अब नहीं रह गया है। यह बात तो सभी मानते हैं कि यार्ड में डीजल शंटर सर्वाधिक मितव्ययितापूर्ण और उपयोगी हैं। यह क्रांति वैसी ही है, जैसी १९वीं सदी में भाप इंजनों की थी।

## टेकनीकी कारण

इस परिवर्तन के मूल में आर्थिक और टेकनीकी कारण हैं। कोयले की मांग उसकी पूर्ति के साधनों से भी बढ़ जाने संयुक्त राज्य जैसे देशों में डीजल तेल और स्विट्जरलैण्ड में जल-विद्युत सुलभ होने के कारण भाप के इंजनों की अपेक्षा डीजल और बिजली के इंजनों का उपयोग अधिक किफायत का पड़ता है। कर्षण के नये तरीके, उन विशाल देशों के लिये अधिक उपयुक्त हैं, जहां हजार दो हजार मील की यात्रा बिना किसी परिवर्तन के पूरी करनी होती है। ब्रिटेन जैसे देशों में भी, जहां काफी मात्रा में कोयला है, इंजनों के ईंधन के रूप में कोयला जलाने की अपेक्षा उससे बिजली पैदा करना सस्ता और अधिक उपयोगी पड़ता है। भाप के इंजन की कुल ऊष्मा उपयोगिता ४-५ प्रतिशत, विद्युत इंजन की करीब १४ प्रतिशत और डीजल इंजन की करीब २२ प्रतिशत है। हिसाब लगाया गया है कि भारत में १ टन डीजल तेल ८ टन कोयले का काम कर सकता है। उसी तरह विद्युत कर्षण की तुलना में वाष्प-कर्षण में कोयले की खपत का अनुपात ३:१ है। शटिंग करने पर भाप के इंजनों की कुल ऊष्मा उपयोगिता ३ प्रतिशत ही रह जाती है, क्योंकि खड़े रहने पर भी उसके बायलर में ईंधन जलता ही है; अतः नये तरीकों से मितव्ययिता स्पष्ट है।

## काम में सफाई

कर्षण के इन नये तरीकों में काम के वक्त सफाई की झंझट बच गयी है और आराम से काम होता है। भाप के इंजनों के फायर बक्स और स्टीम बक्स रोज साफ किया जाता है, जिससे उनके काम का समय कम होता है और इंजन चलने की अवस्था में सफाई की झंझट रहती है। डीजल और बिजली के इंजनों में ये दोष नहीं है। समान एक्सल लोड होने पर भी डीजल और बिजली के इंजनों में भाप के इंजनों से ऊंची कर्षण शक्ति होती है और ये अधिक भार अधिक रफ्तार से ढो सकते हैं। लाइन की क्षमता बढाने के खर्चीले निर्माण बिना ही इससे परिवहन क्षमता बढ़ जाती है। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि रेलों के लिए ही काफी दूर-दूर तक कोयला पहुँचाने की समस्या, कर्षण के ये नये तरीके अपना लेने से स्वतः हल हो जाती है। इस तरह इससे बची परिवहन-क्षमता माल ढोने के लिए सुलभ हो जाती है, जिससे रेलों को आमदनी होती है।

ऐसा माना जाता है कि बिजली से रेलों का संचालन सर्वाधिक कुशलतापूर्वक किया जा सकता है और यदि सस्ती बिजली सुलभ हो तो, यह सबसे सस्ता भी होता है। एक निश्चित परिमाण में बोझ रहने पर बिजली के



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंजन एक रफ्तार से चल सकते हैं और समय की पाबन्दी की जा सकती है। अंतिम स्टेशनों पर रुकने की आवश्यकताएं भी कम होती हैं और वहां रुकने का समय भी कम किया जा सकता है। चालू होने के बाद यह शीघ्र ही रफ्तार पकड़ लेता है और इसे तेज रफ्तार में भी जगह-जगह रोका जा सकता है। वाष्प इंजनों के विपरीत, बिजली के इंजन एक दूसरे के बिलकुल करीब आ जाने पर रोके जा सकते हैं। इनके लिए फायरमैन की आवश्यकता नहीं होती। भारी माल गाड़ियों या तेज पैसंजर गाड़ियों को छोड़कर इनके लिए एक मोटर चालक ही काफी होता है। एक ही साथ दो या उससे अधिक बिजली के इंजनों या गाड़ियों के स्टाक को एक मोटर चालक द्वारा ही, संचालित किया जा सकता है।

१८९३ में जर्मनी निवासी डा० श्री राडाल्फ डीजल ने सर्वप्रथम डीजल तेल की उपयोगिता का प्रदर्शन किया, जिससे तेल का नाम उनके नाम पर पड़ा। पर रेल-चालन में डीजल तेल के प्रयोग होने में करीब एक चौथाई शताब्दी लगी। पहले छोटी शाखा लाइन पर पैसंजर गाड़ी में पेट्रोल का प्रयोग किया गया। लेकिन यह अनुभव किया गया कि रेल-चालन के लिए पेट्रोल का ईंधन खर्चीला होता है। साथ ही पटरी से गाड़ी के उतर जाने या टक्कर में गाड़ियों के साथ काफी मात्रा में पेट्रोल रखना भी खतरे से खाली नहीं था। इसलिए डीजल ने, जिसमें उच्च स्फुरांक (हाई फ्लैश प्वाइन्ट) होता है, पेट्रोल की जगह ली और डीजल इंजनों की महान सम्भावनाओं के द्वार खुले।

## डीजल इंजन

डीजल इंजन तेज रफ्तार से लम्बी यात्रा कर सकते हैं। उन लम्बे-चौड़े देशों के लिए जहां बड़े-बड़े तेल-स्रोत हैं, ये उपयुक्त रहते हैं। संयुक्त राज्य में ९० फी सदी पैसंजर और माल गाड़ियों में डीजल इंजन लगते हैं। लम्बी यात्रा वाली अधिकांश गाड़ियां दो या चार डीजल इंजन-युग्मों से खींची जाती हैं। जिनमें एक ही चालक वर्ग उनको चलाने के लिए काफी होता है। मार्शलिंग यार्डों में सामान्यतया १५०० से १६०० अश्व शक्ति के शंटर काम में लाये जाते हैं। भारी यात्री-यातायात वाली कम दूरी की यात्राओं के लिये डीजल कारें काम में लाई जाती हैं, जो बहुत जल्द रफ्तार तेज कर लेती हैं और पांच मील की दूरी पांच मिनट में तय कर लेती हैं। इन डीजल कारों में ईंधन की कम खपत होती है, अतः ये कम खर्चीली भी पड़ती हैं।

डीजल इंजन बहुत ही पेचीदा यंत्र है। इसके निर्माण में सर्वथा शुद्ध माप और अनुरक्षण में भी कुशलता आवश्यक है। डीजल इंजन के निर्माण में भाप के इंजन से ढाई गुना खर्च पड़ता है। निर्माण पर भारी खर्च की पूर्ति इससे होने वाली मितव्ययिता से हो जाती है। भाप के इंजनों की तरह इसे गर्माने के लिए कई घन्टों का खर्च नहीं करना होता, और न काम लेने के पहले उतना ही वक्त राख आदि झाड़ने में ही नष्ट करना पड़ता है। डीजल इंजन निर्धारित से अधिक यात्रा के लिए भी आवश्यक ईंधन रख सकता है। बिना किसी प्रकार की विशेष देख-रेख और बदलाव के डीजल शंटर पूरे एक हफ्ते तक दिन-रात काम कर सकता है। डीजल इंजन में उच्च कर्षण शक्ति होती है; अतः वे भारी बोझ ढो सकते हैं। दो डीजल इंजनों को एक में जोड़ा जा सकता है, और वे एक इंजन की तरह एक ही चालक दल द्वारा चलाये जा सकते हैं। डीजल इंजन एक्सल लोड को कम रखता है जिससे पुलों और रेल-पथ को दृढ़ करने का भारी खर्च बच जाता है। डीजल इंजन से गाड़ियां चलाने से चल-स्टाक और स्टेशन साफ रहते हैं। इस तरह उनके रखाव पर व्यय बच जाता है।

## भारत में डीजल इंजनों की सम्भावनाएं

भारतीय रेलों पर डीजल इंजनों के प्रयोग की मुख्य कठिनाई यह है कि यह बहुत कीमती होता है और उसका अनुरक्षण भी काफी खर्चीला होता है। डीजल तेल भी मंहगा है। भारत में १९५८ के भावों पर प्रति टन डीजल तेल की औसत कीमत ३५० रुपये पड़ती है और देश के विभिन्न भागों में प्रति-टन कोयले की कीमत २७ रुपये से ४४ रुपये तक है। यदि यह बात ध्यान में रखी जाए कि मुख्य लाइन पर एक टन डीजल तेल, आठ टन कोयले की ऊष्मा उपयोगिता में बराबर काम करता है, तो ईंधन की लागत में समूची दक्षिण रेलवे, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे एवं पश्चिमी रेलवे के सौराष्ट्र क्षेत्र में डीजल इंजन का उप-

(शेष पृष्ठ ६५८ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पंचायती राज व सामुदायिक विकास

श्री सुरेन्द्रकुमार दे

इस समय देश में ३,१०० विकास खंड काम कर रहे हैं, जिनसे ३,७०,००० गांवों को लाभ पहुँच रहा है। पिछली दो पंचवर्षीय योजनाओं में सामुदायिक विकास कार्य के लिए २ अरब ४० करोड़ रु० दिया गया, जबकि तीसरी योजना में इस काम के लिए २ अरब ९४ करोड़ रु० की व्यवस्था है। इनके अलावा पंचायतों के लिए भी २८ करोड़ रु० रखा गया है।

तीसरी योजना में विकास-कार्य के रूप में सबसे बड़ा परिवर्तन यह होगा कि अब विकास के सारे कामों में प्रारम्भ जनता करेगी। जनता इस काम को (१) पंचायती राज, (२) सहकारी संगठन और (३) समाज सेवी संस्थाओं तथा अन्य प्रकार से जन सहयोग द्वारा पूरा करेगी।

## पंचायतें और सहकारियां

पंचायतों और सहकारियों की स्थापना से गांवों की सामाजिक और आर्थिक उन्नति के लिए कदम बढ़ाने की सारी जिम्मेदारी गांव वालों पर आ गई है। अब स्थिति पहले से बिल्कुल उल्टी होगी। पहले सरकार और सरकारी अमला विकास-कार्य की योजना बनाते थे और गांव वालों से उसे पूरा करने को कहा जाता था, लेकिन अब पंचायती राज की स्थापना से ग्रामवासी योजनाएं बनाएंगे और सरकारी कर्मचारी उन पर अमल करेंगे। विकास की सारी जिम्मेदारी खंड पंचायत समितियों और जिला परिषदों पर तथा गांव-गांव में वहाँ की पंचायतों पर होगी। गांव वालों के चुने हुए प्रतिनिधियों को नये ढंग से अपने ग्रामीण भाइयों की सेवा करने का अवसर मिलेगा।

## गांवों में उपज बढ़ाने की योजनाएं

तीसरी योजना की अवधि में इस बात का भरसक प्रयत्न किया जाएगा कि हर गांव उपज बढ़ाने के लिए उपज के अपने-अपने लक्ष्य रखे और इसके लिए योजना बनाये। अभी तक ऐसा नहीं हो पाया है। गांवों की उपज बढ़ाने की योजनाएं दो प्रकार की होंगी : पहली में ऋण, उर्वरक, बढ़िया बीज, सिंचाई की सुविधाएं आदि दिलाने की, जिनके लिए गांवों से बाहर के साधनों की भी जरूरत होगी। दूसरी योजनाओं में सिंचाई के लिए खेतों में नालियां खोदना, बांधों और नालियों की मरम्मत करना, मेड़ बांधना, तालाब खोदना, कूड़ा-गोबर की खाद का पूरा उपयोग करना तथा सब ग्रामवासियों को लाभ पहुँचाना है।

## जन-सहयोग

हमारे देश में समाज सेवा की पुरानी परम्परा रही है। सहकारिता का भी आशय यही है कि लोग मिलकर समाज का नवनिर्माण करें। पंचायती राज द्वारा लोगों को प्रोत्साहित किया जा रहा है कि वे गांवों के जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए जो प्रयत्न चल रहे हैं, उनमें आगे बढ़कर हाथ बटाएं और अपनी बुद्धि और शक्ति का गांव वालों के जीवन सुधारने में उपयोग करें।

गांवों में खाली दिनों में जो निर्माण-कार्य होंगे, उनसे तीसरी योजना के अन्त तक २५ लाख व्यक्तियों को काम मिल सकेगा। ये काम अधिकतर सामुदायिक विकास संगठनों द्वारा ही कराये जाएंगे। पहले ये काम उन क्षेत्रों में शुरू किये जाएंगे, जहाँ आबादी अधिक है और रोजगार कम है। बाद में और क्षेत्रों में भी शुरू किये जाएंगे।

## सरकारी गैर-सरकारी प्रशिक्षण

सरकारी और गैर-सरकारी सब कार्यकर्ताओं में आपस में सहयोग और कार्य में सफलता के लिए यह जरूरी है कि ये लोग अपने काम को अच्छी तरह समझें। विकास-कार्य की सफलता बहुत कुछ स्थानीय संगठनों पर निर्भर है। इसलिए विकास-कार्य के लिए सरकारी और गैर-सरकारी कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण को बहुत ऊंचा स्थान दिया जा रहा है।

१९५१ के अंत में देश के विभिन्न भागों में, उपज बढ़ाने के १५ कार्यक्रम चालू किये जा चुके थे। इस काम को चलाने के लिए ग्रामसेवकों का संगठन किया गया और उन्हें ट्रेनिंग देने के लिए प्रशिक्षण केन्द्र खोले गये।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## पंचायती राज में कठिनाइयां

आरम्भ में पंचायतों के सामने काफी कठिनाइयां आएंगी। हम चाहते हैं, काम सर्वसम्मति से हो और पंचायतों के चुनाव, दलों के आधार पर न लड़े जाएं। पर राजनीतिक दल सक्रिय हैं और सद्भाव की भी कमी है। अतः कुछ ही लोग सर्वसम्मति और राजनीतिक दलबंदी बचाने के पक्ष में हैं। अधिकांश लोग अपने स्वार्थ साधन के लिए इन बातों की चर्चा तो करते हैं, पर इसे दिल से नहीं चाहते। समान सुविधाएं मिलने पर, कमजोरों की अपेक्षा, शक्तिशाली लोग अपनी शक्ति अधिक बढ़ा सकते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि समाज के शक्तिशाली और धनी लोग, निर्धनों या साधारण लोगों की बनिस्बत, अधिक शक्तिशाली और धनी होते जाएंगे। पंचायती राज द्वारा इस स्थिति को सुधारना होगा। अब ग्राम सभाओं की जिम्मेदारी बढ़ेगी। उन्हें अधिक सजग होना होगा। लोकसभा देश भर की सबसे बड़ी ग्रामसभा के समान है। इसका अर्थ है कि ग्रामसभा हमारे लोकतंत्र का आधार है, पंचायत नहीं। ग्राम पंचायत को ग्रामसभा का कार्यकारी अंग होना चाहिए, जो ग्रामसभा के निर्णयों को लागू करे, जैसे केन्द्र और राज्यों के मंत्रालय संसद और विधान सभाओं के निर्णय अमल में लाते हैं। ●

---

(पृष्ठ ६५६ का शेष)

योग किफायत पड़ेगा। अतः भारतीय रेलों में डीजलीकरण देश में डीजल तेल के स्रोतों की प्राप्ति पर निर्भर है। गुजरात में अभी हाल में तेल की खोज से इसकी संभावना उज्ज्वल प्रतीत होती है। इसके लिए दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि अपने देश में ही डीजल यंत्रों और उपकरणों की डिजाइन बनें और उसका निर्माण हो। वाराणसी में इस तरह के कारखाने के बनाने की योजना है।

डीजल इंजन या बिजली गाड़ियां चलना शुरू होने पर माल-डिब्बों की डिजाइन बदलना भी आवश्यक है ताकि वे उनके साथ तेज रफ्तार से चल सकें। फलस्वरूप चौपहिये माल डिब्बों की जगह बोगी-माल डिब्बे काम में लाये जा रहे हैं। इससे भारी गाडियां खींचना सम्भव हुआ है। लेकिन गाड़ियों की लम्बाई अनिश्चित सीमा तक नहीं बढ़ायी जा सकती। इसलिए अधिक माल ढोने वाले बोगी-माल डिब्बे बनाना आरम्भ कर दिया गया है। भारत में 'वाव' और 'बाक्स' किस्म के डिब्बे बन रहे हैं। खनिज ये कोयला और पत्थर आदि लादने के काम में आयेंगे। बड़ी लाइन पर २,२५० फुट की लूप क्षमता के साथ चौपहिये माल-डिब्बे वाली एक गाड़ी करीब १५०० टन कोयला ढो सकती है, उसी खण्ड पर बाक्स किस्म से ४३ डिब्बों वाली एक गाड़ी करीब २,४०० टन कोयला ढो सकती है। इससे ढोये जाने वाले बोझ में तो वृद्धि होती ही है, खाली गाड़ी का वजन भी कम होता है जो किरायों के बिना ढोना पड़ता है।

## मार्गों का विद्युतीकरण

पहले भारत में बम्बई और मद्रास के उपनगरी खण्डों पर ही बिजली की गाड़ियां चलती थीं। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में हावड़ा से मुगलसराय तक, कोयले के भारी यातायात के लिए बिजली की दो रेलगाड़ी चलाने का निर्णय किया गया। तृतीय योजना काल में कानपुर तक उसका विस्तार करने का प्रस्ताव है। हाल ही में देश के अन्दर तेल मिलने से डीजलीकरण का भविष्य उज्ज्वल प्रतीत होने लगा है। लगता है कि इस सदी के वर्तमान दशक में ही भारत में २० फीसदी गाड़ियां विद्युत या डीजल इंजनों से चलेंगी क्योंकि, यही एक उपाय है, जिससे हम पंचवर्षीय योजनाओं के कारण बढ़े हुए यातायात को मितव्ययिता और कुशलता से सम्भाल सकेंगे। ● ●

—

विज्ञापन के लिए

सम्पदा

सर्वोत्तम

साधन

सम्पदा, अशोक प्रकाशन मन्दिर

२८-११ शक्तिनगर, दिल्ली-६



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# गत दशाब्दी में भारत में आर्थिक प्रगति

एच० पी० दानी

सदियों की दासता के पश्चात् १५ अगस्त सन् १९४७ को हमारा देश स्वतन्त्र हुआ। उस समय भारत आर्थिक क्षेत्र में काफी पिछड़ा हुआ था तथा देश में अनेक आर्थिक समस्याएं गम्भीर रूप धारण किए हुए थीं। अतः देश को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बनाने तथा आर्थिक समस्याओं का हल करने के लिए पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण किया गया। भारत की प्रथम पंचवर्षीय योयना १ मार्च, १९५१ को प्रारम्भ हुई और अब तक देश में दो पंचवर्षीय योजनाएं पूरी हो चुकी हैं और तीसरी योजना प्रारम्भ हो गई है। निःसन्देह भारत ने पिछले दस वर्षों में आर्थिक क्षेत्र में प्रगति की है परन्तु क्या यह सन्तोषजनक है ?

## राष्ट्रीय आय

प्रथम पंचवर्षीय योजना में भारत की राष्ट्रीय आय में १८ प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा द्वितीय पंचवर्षीय योजना में २० प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि राष्ट्रीय आय में २५ प्रतिशत वृद्धि का लक्ष्य रखा गया था। पिछले दस वर्षों में भारत की राष्ट्रीय आय में कुल ४२ प्रतिशत की वृद्धि हुई है लेकिन जनसंख्या में २१ प्रतिशत वृद्धि होने के कारण राष्ट्रीय आय में वास्तविक वृद्धि १६ प्रतिशत की ही हुई है। इसके अतिरिक्त पिछले १० वर्षों में वस्तुओं के भावों में असाधारण वृद्धि होने के कारण लोगों का जीवन स्तर नीचा हो गया है। श्री हृदयनाथ कुंजरू ने अपने भाषण में कहा कि—"इसमें सन्देह नहीं कि गत दो पंचवर्षीय योजनाकों के परिणाय स्वरूप राष्ट्रीय तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई है परन्तु द्वितीय पंचवर्षीय योजना काल के आरम्भ से मूल्यों के स्तर में २० प्रतिशत वृद्धि हो गई है उसकी तुलना में वह कुछ भी नहीं है।

## कृषि

इस काल में कृषि वस्तुओं के उत्पादन में ४१ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। खाद्यान्न का उत्पादन अपने निर्धारित लक्ष्य से ४० लाख टन कम हुआ है। यह वास्तव में बड़ी चिन्ताजनक बात है कि एक ओर तो जनसंख्या में आशा से अधिक वृद्धि हो रही है और दूसरी ओर खाद्यान्न का उत्पादन निर्धारित लक्ष्य से भी कम हुआ है। इसी प्रकार मुख्य व्यापारिक फसलों—जैसे कपास तथा पटसन—का उत्पादन क्रमशः ५.१ तथा ४.० मिलियन गांठ हुआ जबकि लक्ष्य क्रमशः ५.५ तथा ५ मिलियन गांठ निर्धारित किया गया था। सिंचाई की सुविधाएं प्रदान करने के लिए ८८ मिलियन एकड़ क्षेत्र निर्धारित किया गया था जबकि दूसरी योजना के अन्त तक केवल ७० मिलियन एकड़ क्षेत्र में ही सिंचाई की सुविधाएं प्रदान की जा सकी है। रासायनिक खाद के उपभोग के सम्बन्ध में तो स्थिति और भी निराशाजनक रही है। द्वितीय योजना के अन्त तक २३००० टन (N) तथा ७०००० टन (P205) रासायनिक खाद का उपभोग किया गया जो कि निर्धारित लक्ष्य से बहुत कम है। इसके अतिरिक्त सामुदायिक विकास योजना के अन्तर्गत सम्पूर्ण जनसंख्या को लाने का लक्ष्य पूरा नहीं हो सका है।

व्यापारिक फसलों जैसे गन्ना, तिलहन तथा चाय का उत्पादन अपने निर्धारित लक्ष्य तक पहुँच गया है।

## उद्योग तथा खनिज

पिछले १० वर्षों में भारत के औद्योगिक उत्पादन में कुल ९४ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना की अवधि में भारत में सार्वजनिक क्षेत्र में ३ नये इस्पात के कारखाने स्थापित किये गये तथा वर्तमान कारखानों की उत्पादन क्षमता भी बढ़ाई गई जिसके फलस्वरूप इस्पात का उत्पादन योजना की अवधि के अन्त तक २२ लाख टन हो गया जबकि लक्ष्य ४३ लाख टन निर्धारित किया गया था। जूट तथा सीमेण्ट उद्योग में भी उत्पादन अपने निर्धारित लक्ष्य से बहुत कम हुआ है।

इन योजनाओं की अवधि में देश में अनेक नये-नये उद्योगों की स्थापना की गई है जो कि भारत की औद्योगिक उन्नति में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। परन्तु इन उद्योगों द्वारा की गई प्रगति सन्तोषजनक नहीं रही हैं जो निम्न



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका से स्पष्ट है :—

| उद्योग | इकाई | उत्पादन लक्ष्य १९६०-६१ | वास्तविक उत्पादन १९६०-६१ |
|---|---|---|---|
| रासायनिक खाद(N) | ००० टन | २९० | ११० |
| ,, ,, (P205) | ,, | १२० | ५५ |
| अलमूनियम | ,, | २५ | १८.५ |
| कास्टिक सोडा | ,, | २३० | १४५ |
| अखबारी कागज | ,, | ६० | २५ |
| टैक्सटाइल मशीनरी | करोड़ रु० | १७ | ९ |
| सीमेन्ट ,, | ,, | २ | ०.६ |

कोयले का उत्पादन अपने निर्धारित लक्ष्य से ५.५ मिलियन टन कम हुआ है। खनिज लोहे का उत्पादन अपने लक्ष्य तक पहुंच गया है। इसके अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण खनिजों का उत्पादन लक्ष्य भी लगभग पूरे हो गए हैं।

## विद्युत

पिछले १० वर्षों में विद्युत उत्पादन क्षमता में १४८ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। प्रथम योजना के प्रारम्भ में विद्युत उत्पादन क्षमता २३ लाख किलोवाट थी जो कि १९६०-६१ में बढ़कर ५७ लाख किलोवाट हो गई है जबकि लक्ष्य ६९ लाख किलोवाट विद्युत उत्पादन क्षमता का रखा गया था।

## परिवहन तथा संचार

इस दिशा में पिछले दस वर्षों में की गई प्रगति सन्तोषजनक है। योजनाकाल में सड़कों, रेलों तथा वायुयानों के विकास के लिए जो लक्ष्य रखे गये थे वे लगभग पूरे हो गये हैं। इसी प्रकार टेलीफोन तथा डाकघर आदि की सेवाओं में वृद्धि के लक्ष्य भी लगभग पूरे हो चुके हैं।

## रोजगार

प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत ५० लाख बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार दिया गया। द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत १ करोड़ व्यक्तियों को रोजगार देने का लक्ष्य रखा गया जबकि केवल ६५ लाख व्यक्तियों को ही रोजगार दिया जा सका है।

## योजनाओं पर व्यय तथा विदेशी ऋण

इन दो योजनाओं पर सरकारी क्षेत्र में ५२१० करोड़ रुपया तथा निजी क्षेत्र में ४९०० करोड़ रुपये व्यय हुए हैं अर्थात् कुल व्यय १०११० करोड़ रुपये का हुआ है। इन दोनों योजनाओं को पूरा करने के लिए हमारी सरकार ने भारी मात्रा में विदेशों से ऋण लिये हैं। ३१ मार्च १९६२ तक इन विदेशी ऋणों की राशि ५५५४ करोड़ रुपये हो जाएगी। इसके अतिरिक्त सरकार ने १८६८ करोड़ रुपये का ऋण पोस्टआफिस सेविंग बैंक, केश सर्टिफिकेट तथा प्रविडेंट फंड के रूप में लिया है। तृतीय योजना के अन्त तक भारत सरकार पर ११ हजार करोड़ रुपये का विदेशी ऋण होने की सम्भावना है। श्री एम. ए. मास्टर के अनुसार चौथी योजना के प्रारम्भ में हमें प्रतिवर्ष १०० करोड़ रुपया ब्याज के रूप में चुकाना पड़ेगा। जबकि १५० करोड़ रुपया प्रतिवर्ष किश्तों के रूप में चुकाना पड़ेगा। अतः यह स्पष्ट है कि चौथी योजना के प्रारम्भ में विदेशी ऋणों के भुगतान की समस्या बहुत जटिल हो जायगी और यदि तीसरी योजना में हमारे निर्यात निर्धारित लक्ष्य तक नहीं पहुँचे तो बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

## विकास की दर

श्री एस. पी. जैन ने हाल ही में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा सन् १९६० के लिए किए गये विश्व आर्थिक सर्वेक्षण से भारत की आर्थिक प्रगति की दर के बारे में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य उद्धृत किये हैं। इस सर्वेक्षण के अनुसार भारत में विकास की दर केवल ३ प्रतिशत रही है जब कि कुछ अन्य देशों में विकास की दर इस प्रकार रही है :—

| देश का नाम | विकास की दर | देश का नाम | विकास की दर |
|---|---|---|---|
| इसराइल | ११ प्र० श० | बर्मा | ६ प्र० श० |
| ईराक | ९ ,, | इटली | ५.७ ,, |
| जापान | ९ ,, | कुछ दक्षिणी अफ्रीकी देश | ५ ,, |
| पश्चिमी जर्मनी | ७.५ ,, | थाईलैंड | ४ ,, |
| ब्राजील | ६ ,, | | |

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि भारत में विकास की दर बहुत धीमी है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इन उपरोक्त देशों में से अधिकांश देशों में भारत की तरह न तो योजनाएं बनाई जा रही हैं और न ही उन्होंने विदेशों से भारी मात्रा में ऋण लिए हैं और न इन देशों



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बिना हड़तालों का देश—हालैण्ड

इस युग की समस्याओं में एक बड़ी विकट समस्या हड़ताल की है। यह सर्वव्यापक और सार्वभौम रोग है। जैसे-जैसे, उद्योगों का विस्तार हो रहा है, वैसे-वैसे ही हड़तालों का भी फैलाव हो रहा है। पर, यह समझना भूल है कि हड़ताल की सीमा के क्षेत्र केवल कारखाने अथवा उद्योग पुरियां ही हैं। यह ऐसा छूत का रोग है जो दफतर, स्कूल-कालेज, मंदिर, बाजार, हाट, दुकान—और कभी परिवार की सीमाओं के भीतर तक—घुस जाता है। जब कोई राजनीतिक दल समूचे राष्ट्रीय स्तर पर हड़ताल की घोषणा कर देता है, तब सब प्रवृत्तियाँ पंगु हो जाती हैं और सरकार के लिए एक विकट स्थिति पैदा हो जाती है। जिस प्रकार किसी सद्गृहस्थ के चार लड़कों में से एक लड़का कुलक्षणी और अधम पैदा हो जाए तो वह अपने कुल के नाम को डुबो देता है और लोग उसकी अच्छी सन्तानों को भूलकर पापी की ही ज्यादा चर्चा करते हैं। इसी प्रकार विज्ञान से मानव के लिए जहाँ इतने उपकार हुए, वहां इसके पेट से प्रादुर्भूत हड़ताल ने इसे कलंकित कर दिया है।

विश्व के समस्त हड़ताल-ग्रस्त देशों में—रेगिस्तान में हरित शाद्वल के समान—एक देश ऐसा भी है जो हड़ताल नाम की छूत की बीमारी से अभी तक मुक्त है। इस देश का नाम हालैंड है। यह उत्तर यूरुप में स्केन्डेनेविया के चार देशों में से एक है। विश्व अदालत इसी देश के हेग नगर में है। इसके निवासी डच कहे जाते हैं।

यहाँ कभी हड़ताल का नाम भी सुनाई नहीं पड़ता। कम्युनिस्ट देशों की तरह यहाँ हड़ताल गैर-कानूनी करार नहीं की गयी है और न ही तानाशाही शासकों की तरह इसका सर्वथा अन्त कर दिया गया है। बात यह है कि मालिक और मजदूर के आपसी सम्बन्ध यहाँ ऐसे मीठे और एक दूसरे के साथ निभाने वाले रहते हैं कि हड़ताल की जरूरत ही नहीं पड़ती। अगर कभी दोनों में किसी प्रकार का खिंचाव पैदा भी हो जाता है अथवा किसी एक पक्ष को दूसरे पक्ष से शिकायत हो तो आपस में वार्ता द्वारा उन्हें तै कर लिया जाता है। एक-दूसरे की उचित बात को पूरा करने में कभी आनाकानी भी नहीं की जाती है।

अमेरिका और ब्रिटेन में, बहुधा, जनताके दैनिक जीवन में काम आने वाली चीज पैदा करने वाले कारखानों में हड़ताल हो जाने से सारे कारोबार ठप्प हो जाते हैं। ब्रिटेन में एक बार, बिजली के कारखानों में हड़ताल हो जाने से सारे उद्योग ठप्प हो गये थे। अमेरिका में लोहे के कारखानों में कई सप्ताह तक चलने वाली हड़ताल से सारे विश्व की मंडी में उथल-पुथल हो गयी थी। बम्बई की कपड़ा मिलों में, कुछ वर्ष हुए, लगभग एक सप्ताह की हड़ताल हुई थी। इससे देश के लाखों रुपये की क्षति हुई। पर, हमारे पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि हालैंड में ऐसी स्थिति कभी नहीं आयी। एक अंग्रेज विश्व यात्री ने हालैंड की यात्रा करके इस तथ्य पर काफी प्रकाश डाला है।

ऐसा मधुर वातावरण कैसे पैदा हो सका? हालैंड की सरकार ने श्रमिकों के वेतन और वस्तुओं के मूल्यों पर नियंत्रण लगा रखा है। जिस समय कीमतें चढ़ने लगती है, सरकार स्वयं ही श्रमिकों का वेतन, उसी अनुपात से, बढ़ा देती है। वेतन पर नियंत्रण रहने से उत्पादन पर भी नियंत्रण रहता है। इसके फलस्वरूप, दुनियाँ की मंडियों

(शेष पृष्ठ ६६३ पर)

---

के नेतागण प्रतिक्षण मंच से देश की उन्नति के लिए गला फाड़-फाड़कर चिल्लाते हैं।

यह सब तथ्य इस बात की ओर इंगित करते हैं कि इन योजनाओं में कुछ न कुछ दोष अवश्य हैं। हमारे देश की प्रशासन व्यवस्था भी किसी हद अक्षम है, जिसके फलस्वरूप योजनाओं पर भारी व्यय होने के बावजूद देश आशानुकूल प्रगति नहीं कर रहा है। देश में भ्रष्टाचार का बोलबाला होने से योजनाओं पर व्यय की गई राशि का सदुपयोग नहीं हो रहा और योजना के अन्त में निराशा-जनक परिणाम ही सामने आते हैं। भारत उन्नति के पथ पर आगे बढ़ तो रहा है, भ्रष्टाचार के कारण रुकावट पड़ रही है प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए इस भ्रष्टाचार का अंत नितांत आवश्यक है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तीसरी योजना में उपभोग और बचत

ले० डा० के० एस० गिल, योजना आयोग

●

तीसरी योजना में राष्ट्रीय आय प्रति वर्ष ५-६ प्रतिशत की गति से बढ़ने की कल्पना की गई है। इस समय हम अपनी राष्ट्रीय आय का ८.५ प्रतिशत बचा रहे हैं। इसे बढ़ाकर १९७५-५६ तक लगभग २० प्रतिशत कर देना है, तभी हम स्वावलंबी हो सकेंगे, अर्थात्, बिना बाहरी मदद के आर्थिक विकास करेंगे। इसके लिए यह जरूरी है कि राष्ट्रीय आय जिस गति से बढ़े, उपयोग या खपत उससे कम गति से बढ़े। यदि ऐसा न हुआ तो बचत की गति धीमी रहेगी। इसलिए यह हिसाब रखा गया है कि खपत ४-५ प्रतिशत सालाना बढ़े और राष्ट्रीय आय ५-६ प्रतिशत। स्पष्ट है कि यह अंतर इतना हलका है कि यह नहीं कहा जा सकता कि उपभोग पर अनुचित अंकुश लगाया जा रहा है। बल्कि यह कहना होगा कि हमारे देश में पहले कभी इतनी तेज रफ्तार से उपभोग नहीं बढ़ा। अन्य देशों में भी विकास की स्थिति में उपभोग पर इतना कम अंकुश नहीं रखा गया।

फिर, यह सभी मानते हैं कि वर्तमान परिस्थितियों में हम अपनी राष्ट्रीय आय ५-६ प्रतिशत सालाना से ज्यादा नहीं बढ़ा सकते। इसलिए यह जरूरी है कि खपत की रफ्तार इससे कम रहे।

यदि जितनी राष्ट्रीय आय हो, वह सब उपभोग में लग जाए तो बचत में कोई बढ़ती नहीं होगी। इस समय राष्ट्रीय आय का केवल ८.५ प्रतिशत बच पाता है, इसलिए इस समय बिना बाहरी सहायता के उन्नति करना असम्भव है। परन्तु बाहरी सहायता भी सदा नहीं ली जा सकती। अतः हमें बचत की मात्रा बढ़ानी होगी, और यह तभी बढ़ सकती है जब राष्ट्र में खपत या उपभोग राष्ट्रीय आय से कम रहे।

यदि हमें अगले ५ वर्षों में बाहरी सहायता मिलने की आशा न होती, तो हमें खपत और भी कम करनी पड़ती और बचत बढ़ाकर विकास में लगाने को बाध्य होना पड़ता।

## आवश्यक वस्तुएं

तीसरी योजना में सभी उपभोग्य वस्तुओं का, खासकर आवश्यक सामान का उत्पादन बढ़ाने की व्यवस्था की गई है। सबसे जरूरी चीज है अनाज। इसका उत्पादन ३२ प्रतिशत बढ़ाने की व्यवस्था है और कपास का २४ प्रतिशत। इसी प्रकार चीनी, तेल आदि नित्य उपभोग की चीजों का उत्पादन भी बढ़ाने की व्यवस्था है।

यह सही है कि दूसरी योजना की तरह तीसरी योजना में भी खान, धातु, इंजीनीयरी, रसायन और खनिज तेल आदि भारी उद्योगों को प्राथमिकता दी गई है। परन्तु इससे उपभोग्य वस्तुओं के बनाने की गति किसी भी प्रकार कम नहीं हुई है। और यदि हम आगे की सोचें तो स्पष्ट हो जाएगा कि भारी उद्योग भी अन्ततः उपभोग्य वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाने के लिए ही बिठाए जा रहे हैं। अतः यह कहना बिल्कुल गलत है कि देश उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ाने पर ध्यान नहीं दे रहा है।

## पूंजी

खपत बढ़ाने के लिए आय बढ़ाना जरूरी है और आय बढ़ाने के लिए उद्योग धंधों के विकास में अधिक धन लगाना आवश्यक है। इसीलिए पहले भारी उद्योगों को बढ़ाना भी जरूरी है। भारत जैसे विशाल देश को उद्योग धंधों की उन्नति के साधन और यंत्रादिक स्वयं उत्पन्न करने होंगे।

तीसरी योजना में कहा गया है कि राष्ट्रीय आय को ६ प्रतिशत सालाना बढ़ाने से देश १९५७-५६ तक स्वावलम्बी हो जाएगा। इसके लिए राष्ट्रीय आय का १९-२० प्रतिशत विकास में लगाना होगा। अनुमान है कि १९७५-७६ तक राष्ट्रीय आय ३३-३४ हजार करोड़ रु० हो जाएगी। इस प्रकार १९७५-७६ में राष्ट्रीय आय का २० प्रतिशत, अर्थात् ६६ अरब रु० नियोजित होने लगेगा। आर्थिक उन्नति में लगाने के लिए ६० प्रतिशत पूंजी, अर्थात् ४० अरब रु० का सामान, भारी उद्योगों की मशीनों, यंत्रों और इमारती सामग्री के रूप में दरकार होगा। इसके अलावा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने यंत्रों को बदलने और आधुनिकीकरण पर भी १० अरब रु० लगेगा। इस प्रकार १९७५-७६ में कुल ५० अरब रु० लगाने होंगे, जो वर्तमान निर्यात का ८ गुना है। उस समय तक निर्यात को इतना अधिक बढ़ाना असम्भव है। इससे स्पष्ट है कि हमें इतना साधन जुटाने के लिए देश की आय का उत्पादन बढ़ाना होगा।

यह भी ध्यान रहे कि राष्ट्रीय आय बढ़ने के साथ उपभोग बढ़ाने के लिए भी भारी उद्योगों पर निर्भर रहना होगा। क्योंकि उन्नत अर्थ व्यवस्था में पेट्रोल, अन्य सामान, प्लास्टिक, नकली वस्त्र, बिजली, दवा, घरेलू मशीन और यातायात आदि का उपयोग बढ़ता है। यहां तक कि खेती की पैदावार की वृद्धि भी भारी उद्योग पर निर्भर है, क्योंकि इसके लिए उर्वरक, कीड़े मारने की दवा और कृषि-यंत्र चाहते हैं।

## आवश्यकता बनाम विलासिता

यह भी कहा जाता है कि तीसरी योजना में उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन की व्यवस्था ठीक नहीं है। आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन आराम की चीजों से अधिक होना चाहिए। अभी कार, रेफ्रिजिरेटर, वातानुकूलक और शानदार इमारतों का निर्माण जरूरी नहीं और उनमें लगने वाली पूंजी साधारण जन के उपयोग की आवश्यक चीजें बनाने में लगाई जानी चाहिएं।

इस विषय में हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि उपभोग्य वस्तुओं का निर्माण मांग पर निर्भर है और मांग व्यक्ति की आय पर। व्यक्तिगत आय में जितना ही कम अन्तर होगा, उतना ही लोग जरूरी सामान अधिक खरीदेंगे और आराम का सामान कम। परन्तु इस समय आय का जो वितरण है, उस स्थिति में मांग और उसके अनुसार उत्पादन का रूप, उससे भिन्न नहीं हो सकता, जो तीसरी योजना में रखा गया है।

हां, मांग को भी उत्पादन शुल्क आदि लगाकर प्रभावित किया जा सकता है। जैसे—आवश्यकता की चीजों पर उत्पादन-शुल्क नहीं लगता या बहुत कम लगता है, और कम आवश्यक चीजों या आराम की चीजों पर अधिक लगता है। इस प्रकार आवश्यकता की चीजों की मांग बढ़ाई और विलासिता की चीजों की घटाई जानी है।

(पृष्ठ ६६१ का शेष)

में इस देश की बनी चीजें मुकाबले में ठहरती हैं और बिकती भी हैं। वेतन और मूल्यों में तारतम्य रखने के लिए सरकार की ओर से एक समिति बनी हुई है, जिसमें मालिक और मजदूर—दोनों के प्रतिनिधि हैं।

यह समिति अपना कार्य बड़ी तत्परता और निष्पक्ष भाव से करती है। हालैंड और विश्व के बाजार में वस्तुओं के मूल्यों में होने वाले उतार—चढ़ाव के प्रति अत्यन्त जागरूक रहने के साथ-साथ यह समिति मजदूरों को संतुष्ट रखने के लिए भी सचेष्ट रहती है। देश के सारे मजदूरों की केन्द्रीय ट्रेड-यूनियन का इस समिति को पूरा सहयोग मिलता है। ट्रेड यूनियन पदाधिकारियों का रुख कितना देश भक्तिपूर्ण है—यह इसी बात से पता चल जाएगा कि जब उत्पादन और मूल्यों में वृद्धि हुई तब श्रमिक भी वेतन-वृद्धि माँगेंगे—इस आशंका के स्वाभाविक रूप से पैदा होते ही यूनियन के अधिकारियों ने घोषणा की कि हम देश-हित की दृष्टि से यह माँग नहीं करेंगे। श्रमिकों ने काम के घंटों में कमी करने की जब माँग की तो जनता को पूरा आश्वासन दिया कि इससे उत्पादन पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

भारत के कारखानेदार और मजदूर तथा सरकार—तीनों पक्ष अगर हालैंड का अनुकरण कर सकें तो देश की आर्थिक स्थिति अविलम्ब सुधर सकती है।

—नाथ


**ग्राम राज**

(मास में तीन बार प्रकाशित)

सम्पादक : श्रीगोकुलभाई भट्ट

"ग्रामराज बहुत ही शानदार और बहुत ही सुन्दर पत्र निकल रहा है। सब तरह की जानकारी इसमें रहती है। राजस्थान के हर शिक्षित भाई बहन के हाथ में यह पत्रिका होनी चाहिए।"

—विनोबा

वार्षिक चन्दा तीन रुपया

**कार्यालय का पता :—ग्रामराज, किशोर निवास, त्रिपोलिया, जयपुर**




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# छोटी सिंचाई और उन्नत बीज की व्यवस्था

योजना आयोग बहुत ऊँचे लक्ष्य रखता है, पर व्यवहार में कहां तक सफलता मिलती है, इस का संक्षिप्त परिचय नीचे देखिये ।

दो मास पूर्व योजना आयोग के कार्यक्रम मूल्यांकन संगठन ने तीन रिपोर्टें प्रकाशित की थी । इनमें छोटी सिंचाई योजनाओं, अच्छे बीज के उत्पादन और वितरण तथा ग्रामसहायक कार्यक्रम की समीक्षा की गई है ।

## छोटी सिंचाई योजनाएं

सिंचाई की छोटी योजनाओं के अध्ययन का उद्देश्य यह देखना था कि ये योजनाएं किस प्रकार की हैं, कितना विस्तार और उपयोग हुआ है, इनकी देखभाल कैसे होती है और १९५५-५६ से इनका खेती और सिंचाई पर क्या असर पड़ा है । रिपोर्ट में सरकारी नलकूपों पर, तालों और कुओं से अलग विचार करते हुए कहा गया है कि सिंचाई के छोटे साधनों का उपयोग काफी कम हुआ है । निजी पम्प और नलकूप काफी बढ़ रहे हैं । इससे यह नुकसान हो रहा है कि इनमें पूंजी काफी लग रही है, जबकि उपयोग भरपूर नहीं हो रहा है ।

१९६० में यह तय किया गया था कि सामुदायिक विकास खंडों के बजट में खेती, छोटी सिंचाई और भूमि सुधार की मद में जितना धन है, उसका दो-तिहाई सिंचाई के छोटे साधनों पर खर्च किया जाए, लेकिन आसाम और केरल में दूसरी योजना भर में इस पर कम खर्च हुआ और पश्चिम बंगाल में इसके लिए जो कम रकम रखी गयी, वह भी पूरी खर्च नहीं हुई । योजनाओं के आदेश के बावजूद बहुत से राज्यों में सर्वे भी नहीं हुई ।

नमूने के गांवों में २९ प्रतिशत क्षेत्र में छोटे साधनों से सिंचाई हो सकती है और गांवों के कुओं आदि को ले लिया जाय तो ४० प्रतिशत क्षेत्र सींचा जा सकता है । पर सन १९५९-६० में खरीफ की फसल में ५४ प्रतिशत सिंचाई साधनों का उपयोग नहीं हुआ और रबी में ३१ प्रतिशत का । अस्तु । छोटे साधनों से सिंचाई बढ़ाने की अभी बहुत गुंजाइश है । यह भी पता चला कि सन १९५५-५६ से १९६०-६१ के बीच उक्त क्षेत्र में तालों की संख्या २.४ प्रतिशत, पक्के कुओं की २८ प्रतिशत, नलकूपों की २९ प्रतिशत और पम्पों की ३ $\frac{1}{3}$ गुना बढ़ी ।

## कुओं व तालाबों की मरम्मत जरूरी

सिंचाई का भरपूर उपयोग न होने का मुख्य कारण तालों, कुओं आदि का बेमरम्मत और दूर होना था । ६५ प्रतिशत ताल बुरी हालत में पाये गये । कुओं का पूरा उपयोग इसलिए नहीं हो सका कि या तो वे दूर थे, या निजी अधिकार में थे, जिससे दूसरे पानी नहीं ले सकते थे । एक ओर तालों और कुओं का पूरा उपयोग नहीं हुआ, दूसरी ओर ८० प्रतिशत आदमियों को पानी की कमी भी रही । पानी की कमी का प्रभाव धान और गेहूँ की खेती पर पड़ा और इस कारण अनेक नई जिंसों की खेती भी न हो सकी ।

## पंचायतें

पंचायतों ने अभी तक सिंचाई के छोटे साधनों को बनाने और देखभाल करने पर अधिक ध्यान नहीं दिया है । सिंचाई के लिए ऋणों के मंजूर करने और देने में सरलता और शीघ्रता होनी चाहिए तथा किसानों को सिंचाई के लिए मशीनें और सामान देना चाहिए । उपज वृद्धि आंदोलन के अंतर्गत सिंचाई के जो कुएं आदि बनते हैं, उनमें यह शर्त नहीं लगाई जाती कि लोग भी अपना हिस्सा दें, जबकि विकास खण्डों की ओर से बनने वाले कामों में यह शर्त होती है ।

सरकारी नलकूप घाटे में चल रहे हैं । ये नलकूप कम समय चलते हैं, इसी से घाटा होता है । नलकूपों की सिंचाई का क्षेत्र भी बड़ा होता है । इसका नतीजा यह होता है कि दूर के खेतों को काफी पानी नहीं मिलता । नलकूप अधिकारियों और किसानों में अच्छे और घने सम्बन्ध होने चाहिए ।

## बढ़िया चीज

रिपोर्ट के अनुसार १४ राज्यों के जिलों के ३२ विकास



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खण्डों के १८३ गांवों में बढ़िया बीज के बारे में पड़ताल की गयी। कई जगह पहले से बढ़िया बीज बोया जा रहा है और नयी किस्मों के बीज का भी प्रयोग हो रहा है। पर इसमें सन्देह है कि नयी किस्मों से अधिक उपज होगी। अतः ऐसे बीज ही किसानों को दिये जाएं, जिनसे पैदावार बढ़े।

सुधरे या उन्नत बीजों का परीक्षण प्रयोगशालाओं में होता है, पर यह निश्चित नहीं कि खेतों में बोये जाने पर भी ये पैदावार ज्यादा देंगे या नहीं। पैदावार की वृद्धि आंकने का तरीका भी निर्दोष नहीं है। अच्छे बीज उगाने पर कम ध्यान है और बांटने पर अधिक। दूसरी योजना की अवधि में अधिक उगने वाले धान और गेहूँ के बीजों का उपयोग या प्रचार घटा है। जल्दी उगने वाले बीजों का उपयोग वैसा ही रहा। कीड़े और बीमारी रोधक किस्मों के बीज बांटने पर बाद में अधिक ध्यान दिया गया। इसी प्रकार सिंचित और सभी तरह की ढालू जमीन के उपयुक्त धान के बीजों के प्रचार पर भी जोर दिया गया।

## बीज खेतों का प्रबन्ध

बीज खेतों के कुप्रबन्ध के बारे में रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि सरकारी बीज खेतों और विकास खण्डों के विस्तार संगठन में सहयोग नहीं है, जिसका नतीजा यह है कि गेहूँ के ३४ प्रतिशत और धान के ३० प्रतिशत क्षेत्रों में ऐसे बीज उगाये जा रहे थे जिन्हें किसान पसन्द नहीं करते। इसके अलावा इन फार्मों में केवल ५ प्रतिशत ऐसे थे, जिनमें बीज को शुद्ध रखने के लिए पूरी सावधानी बरती जाती थी।

९० प्रतिशत सरकारी बीज फार्मों में घाटा पाया गया। ५० एकड़ से छोटे फार्मों में घाटा सबसे अधिक रहा। लगभग ५० एकड़ के फार्म अच्छे चल रहे थे। कुल मिलाकर सरकारी बीज खेतों का प्रबन्ध प्रायः संतोषजनक नहीं पाया गया। यह भी देखा गया कि बीज खेतों में उन्नत बीज से जो उपज हुई वह रजिस्टर्ड किसानों के खेतों के मुकाबले कम थी। धान की कुछ किस्मों के बीजों की उपज, जितना अनुमान था उससे काफी कम रही। इससे सरकारों के अधिक उपज के दावों में सन्देह पैदा होता है।

नमूने के क्षेत्र में ६१ प्रतिशत किसानों और ४१ प्रतिशत जानकार किसानों ने धान के उन्नत बीजों का और ४८ प्रतिशत और ६७ प्रतिशत ने गेहूँ के बीजों का कभी इस्तेमाल नहीं किया।

## ग्राम सहायक कार्यक्रम

इस कार्यक्रम की उपयोगिता और व्यवस्था आंकने के लिए दल ने १० राज्यों के ११ जिलों के २२ खंडों को चुना, जिनके बारे में राज्य सरकारों का कहना था कि सामुदायिक विकास कार्यक्रम वहां अधिक सफल रहा है। लेकिन यह देखा गया कि जितनी लगन के साथ १९५७ में यह कार्यक्रम शुरू किया गया था, उतनी लगन बाद में नहीं रही। ग्राम सहायकों की ट्रेनिंग का कार्यक्रम भिन्न-भिन्न राज्यों ने अपने-अपने ढंग से चलाया और इसके बारे में काफी गड़बड़ है। हर राज्य ने ग्राम सहायकों के शिक्षण की देखरेख के लिए एक-एक अफसर नियुक्त किया, लेकिन बहुत से अफसरों को इस काम का कोई अनुभव नहीं था। जिन राज्यों में पंचायती राज्य स्थापित हुआ है, उनके अफसर समझते हैं कि इस कार्यक्रम में वे अधिक सहायक नहीं हो सकते। ग्राम सहायकों के शिक्षण में अधिकतर अधीक जमीन वाले किसानों ने हिस्सा लिया। इस कारण छोटे किसानों को इसका बहुत कम फायदा पहुँचा है। हरिजनों और भूमिहीन किसानों को तो बहुत ही कम। सीखी हुई विधियों का लगभग ९० प्रतिशत ग्राम सहायकों ने प्रयोग किया। अधिक जमीन वाले किसानों ने इन विधियों से अधिक लाभ उठाया और कम जमीन वालों ने कम। करीब ७१ प्रतिशत ग्राम सहायकों ने दूसरों को भी बताने की कोशिश की और ६० प्रतिशत का कहना है कि उनके बताने से अन्य किसानों ने नये ढंग से खेती की है।

● ●

सम्पदा में
विज्ञापन देकर लाभ उठायें।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


संचालक पंचायत राज विभाग उ० प्र०

की

विज्ञप्ति संख्या ४।५५८० : २७।३३।५३, दिनांक १५

द्वारा

पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत

## सुन्दर पुस्तकें

| | | रु० | आ० |
|---|---|---|---|
| वेद सार | प्रो० विश्वबन्धु | १ | ८ |
| प्रभु का प्यारा कौन ? (२) भाग | | | |
| सच्चा सन्त | | | ३ |
| सिद्ध साधक कृष्ण | | | ३ |
| जीते जी ही मोक्ष | | | ३ |
| आदर्श कर्मयोग | | | ३ |
| विश्व-शान्ति के पथ पर | | | १ |
| भारतीय संस्कृति | प्रो० चारुदेव | | ३ |
| बच्चों की देखभाल | प्रिंसिपल बहादुरमल | १ | १२ |
| हमारे बच्चे | श्री सन्तराम बी. ए. | ३ | १३ |
| हमारा समाज | | ६ | |
| व्यावहारिक ज्ञान | | २ | १२ |
| फलाहार | | १ | ४ |
| रस-धारा | | ० | १४ |
| देश-देशान्तर की कहानियां | | १ | |
| नये युग की कहानियां | | १ | १२ |
| गल्प मंजुल | डा० रघुबरदयाल | १ | |
| विशालभारत का इतिहास | प्रो० वेदव्यास | ३ | ८ |

१० प्रतिशत कमीशन और ५० रु० से ऊपर के आदेशों पर १५ प्रतिशत कमीशन।

विश्वेश्वरानन्द पुस्तक भंडार
साधु आश्रम, होशियारपुर, पंजाब



# सुभाषित रत्नमाला

## दूसरा संस्करण

सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

७ वर्ष पूर्व इस पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ था और हाथों-हाथ बिक गया था। कई वर्षों से पुस्तक अप्राप्य थी और इसकी माँग निरंतर बढ़ रही थी! अब परिवर्धित संस्करण आकर्षक रूप-सज्जा में प्रकाशित हुआ है इस संग्रह में—

- वैदिक एवं संस्कृत साहित्य के अगाध भण्डार से चुने गये ऐसे सरल-सुन्दर श्लोक और मंत्र, जिन्हें छोटे बच्चे भी सुविधापूर्वक कण्ठस्थ कर सकते हैं।
- श्लोकों और मन्त्रों का सरल-सुबोध हिन्दी में अर्थ।
- पुस्तक के अन्त में अर्थ-सहित कुछ ऐसी सूक्तियाँ, जिनके उपयोग विद्यार्थी अपने निबन्धों में कर सकें।
- आपके बच्चों के स्वस्थ मानसिक विकास और उनमें नैतिक चेतना जगाने के लिए अनिवार्य।
- उपहार और पुरस्कार में देने के लिए बहुत उपयुक्त। मूल्य एक प्रति १.१५ रु०। 'सम्पदा' के ग्राहकों से १ रु० प्राप्त होने पर 'बुक पोस्ड अन्डर पोस्टल सर्टिफिकेट' द्वारा भेजी जाएगी।

अशोक प्रकाशन मन्दिर
२८/११, शक्तिनगर,
दिल्ली-६




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजनैतिक दलों के आर्थिक कार्यक्रम

चुनाव पास आ रहे हैं और विभिन्न राजनैतिक दल अपने-अपने घोषणापत्र प्रकाशित कर रहे हैं। इन पृष्ठों में कांग्रेस व जनसंघ के घोषणापत्रों में से केवल आर्थिक कार्यक्रम दिये जा रहे हैं।

## कांग्रेस

आर्थिक प्रगति अथवा अभियानका मूल्यांकन पंचवर्षीय योजनाओं की सफलताओं के बलपर किया जा सकता है। दो पंचवर्षीय योजनाएं समाप्त हो गयी हैं और तीसरी योजना अभी-अभी शुरू हुई है। इस योजना से न केवल हमारी मंजिल अथवा दिशा, बल्कि अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के हमारे ठोस कदमों का स्पष्ट संकेत भी मिल जाता है। अब तक हुई प्रगति का जो आंकड़ा सुलभ है उससे यह पता चल जाता है कि बुनियादी और भारी उद्योगों,लघु एवं मध्यम उद्योगों की दिशा में कितना विकास हुआ है; कृषि उत्पादन और कृषि की पद्धतियों में कितनी प्रगति हुई है और विज्ञान तथा उद्योग के क्षेत्रों में कहां तक काम हुआ है।

यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि पिछड़ापन और निर्धनता के विरुद्ध चल रहे संघर्ष के इस जटिल क्षण में चतुर्दिक सन्तुलित विकास कठिन है। वैसे हमारा संकल्प सन्तुलित विकास का अवश्य है। हमने कृषि, बुनियादी और भारी उद्योगों, शिक्षा और प्राविधिक प्रशिक्षणपर विशेष जोर :देने का निश्चय किया है।

सन् १९५०-५१ में २ करोड़ ४० लाख लड़के-लड़कियां स्कूलों में पढ़ने जाती थीं, जब कि आज ४ करोड़ ६० लाख लड़के-लड़कियां स्कूलों में पढ़ने जाया करती हैं। तृतीय योजना के अन्ततक यह संख्या संभवतः ६॥ करोड़ होने जा रही है। भारत में लोगों की औसत आयु ३२ वर्ष से बढ़कर ४७.५ वर्ष हो गयी है। यह एक उल्लेखनीय प्रगति है।

सामुदायिक विकास की योजना का विकास भी कम उल्लेखनीय वस्तु नहीं है, जिससे पंचायती राज का मार्ग प्रशस्त हुआ है। इस वर्ष पहली सितम्बर तक ३३६१ विकास खण्ड थे, जिनके अन्तर्गत ४ लाख गांव थे। इस प्रकार देश के ७२ प्रतिशत गांव इस योजना के अन्तर्गत ले लिये गये हैं। इस व्यवस्था में न केवल कृषि बल्कि पशुसंरक्षण, ग्रामोद्योग, सामाजिक शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण सफाई आदि कार्यों पर भी ध्यान दिया जाता है और ये विभाग पंचायती राज से सम्बद्ध हैं। सन् १९६३ के अन्त तक देश का पूरा ग्रामीण क्षेत्र इस व्यवस्था में आ जायगा तथा पूरे देश में सामुदायिक योजनाओं का जाल बिछ जायगा।

सामुदायिक विकास आन्दोलन ने पंचायतीराज और जनतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण का मार्ग प्रशस्त किया है। पंचायतीराज आन्ध्र और राजस्थान प्रदेशों में शुरू हो गया है। आसाम, मद्रास, मैसूर और उड़ीसा में भी इसे कार्यान्वित किया जा रहा है। पंजाब, उत्तरप्रदेश, मध्य-प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और बिहार में इसे शीघ्र चरितार्थ किये जाने की आशा है।

सब मिलाकर यह आन्दोलन देश की ८० प्रतिशत से अधिक जनता के लिए असाधारण महत्व रखता है। तृतीय योजना स्वयं एक ऐसी सड़क अथवा मार्ग का संकेत करती है, जिस पर अगले वर्षों में हम लोगों को चलना है। लेकिन नियोजन को ५ वर्षों की अवधि में नहीं बांधा जा सकता। यह आवश्यक है कि हम लोग दीवकालिक अथवा दूरगामी दृष्टिकोण अपनायें और उस भविष्य पर भी दृष्टि डालें जिसका निर्माण करना है।

अब आगामी १५ वर्षों के लिए नियोजन का कार्यक्रम तैयार करने पर विचार किया जा रहा है। तृतीय नियोजन की सफलता पर ही सामाजिक दृष्टि से सन्तुलित और समृद्धिशाली सामुदाय का निर्माण आधृत है। आधुनिक विज्ञान का पूर्ण लाभ उठाते हुए इस्पात, विद्युत्, ईंधन और मशीन निर्माण जैसे बुनियादी उद्योगों पर जोर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया है ।

भारत की बुनियादी समस्या केवल जनता का जीवन मान ऊंचा उठाने की नहीं, बल्कि क्रमशः सामाजिक और आर्थिक समानता लाने की भी है। वर्तमान आर्थिक और सामाजिक असमानता नैतिक दृष्टि से गलत है। उससे सर्व मोरचों पर प्रगति रुकेगी ।

१९५६ में स्वीकृत औद्योगिक नीति-सम्बन्धी प्रस्ताव के अनुसार राजकीय उद्योगों का प्रसार बढ़ता जायगा। उसके साथ ही इस बात पर भी जोर दिया गया है कि एक ही मशीन के दो पुर्जों की भांति राजकीय और निजी उद्योग मिल कर काम करें।

उत्पादन में वृद्धि की आवश्यकता का अनुभव करते हुए विशिष्ट क्षेत्रों में निजी उद्योगों को भी प्रोत्साहन मिलना चाहिये। सामान्यतः बड़े उद्योग राजकीय क्षेत्र में ही रहें। मध्यम और छोटे आकार के नये उद्योगों तथा सहकारिता पर आधृत उद्योगों को प्रोत्साहन मिलना चाहिये।

जीवन बीमा निगम के साधनों को भी इस उद्देश्य की पूर्ति में लगाया जा सकता है।

औद्योगिक बस्तियों की स्थापना का (विशेषतः ग्रामीण क्षेत्र में) स्वागत किया जाना चाहिए। कारण इनसे उद्योगों की परिव्याप्ति, ग्रामीण क्षेत्रों के विकास और छोटे कस्बों तथा गांवों में उद्योगीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ है। सरकारी क्षेत्र में उद्योग के संचालन का जो अनुभव प्राप्त हुआ है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि उद्योगों के सुचारु रूप से संचालन के लिए उचित संघटनात्मक और प्रशासकीय परिवर्तन आवश्यक है। विशेष रूप से उन लोगों अथवा संस्थाओं को अधिक अधिकार दिये जाने चाहिए, जिन पर उद्योग चलाने की जिम्मेदारियां दी गयी हैं।

उद्योग और कृषि घनिष्ठ रूप से परस्पर सम्बद्ध हैं और एक के विकास पर ही दूसरे का विकास निर्भर करता है। कृषि उपज की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। द्वितीय योजना में खाद्यान्नों के उत्पादन का लक्ष्य ८ करोड़ ५ लाख टन स्थिर किया गया था, जबकि वास्तविक उपलब्धि ७ करोड़ ९३ लाख टन की रही।

जोत की हदबन्दी सहित इन सुधारों को सभी प्रदेशों में यथाशीघ्र चरितार्थ करने की आवश्यकता है।

कृषि क्षेत्र में प्रगति मुख्यतः सहकारिता पर आधृत है। भारत में, जहां जोत के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े हैं, सहपद्धति बहुत आवश्यक है। इस समय देश में २ लाख से अधिक बुनियादी कृषि ऋण-समितियां काम कर रही हैं, जिनकी सदस्य-संख्या १ करोड़ ७० लाख है। द्वितीय योजना के अन्त तक कुल २ अरब रुपये वितरित किये जा चुके थे। आशा की जाती है कि तृतीय योजना के अन्त तक यह रकम बढ़कर ५ अरब ३० करोड़ हो जायगी। सहकारी समितियों के माध्यम से कृषकों को दिये जाने वाले दीर्घकालिक ऋण की मद में प्रथम योजना के अन्त तक १३ करोड़ रुपये खर्च किये गये थे। तृतीय योजना के अन्त तक यह रकम बढ़कर १॥ अरब हो जाने की आशा की जाती है। देश के पूरे ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा सहकारी समितियों का जाल फैला देने का कार्यक्रम है। ग्रामोद्योगों के लिए विद्युतशक्ति का सर्वाधिक महत्व है।

कांग्रेस ने हमेशा देश के विभिन्न भागों में सन्तुलित विकास तथा सुनियोजित विकास का अधिकाधिक लाभ पिछड़े क्षेत्रों को सुलभ करने पर जोर दिया है।

बेरोजगारी का अन्त बहुत जरूरी है, आर्थिक और सामाजिक दोनों ही दृष्टि से राष्ट्र-निर्माण के कार्यों में रोजगार की गुंजाइशें पैदा कर सहकारी समितियों द्वारा माल तैयार कराये जायँ और ऐसी समितियों को विद्युत शक्ति और कर्ज की सुविधा प्रदान की जाय।

सामाजिक सेवा और खासकर शिक्षा तथा स्वास्थ्य का विस्तार होना चाहिए और इसके लिए आर्थिक शिक्षा में पिछड़ी जनता की ओर विशेष ध्यान दिया जाय।

सामाजिक और आर्थिक प्रगति के लिए शिक्षा जरूरी है। तृतीय आयोजन में यह व्यवस्था है कि ६ से ११ वर्ष के बच्चे को निःशुल्क शिक्षा दी जाय। कुछ राज्यों के, जहां संभव हो सका है, प्राइमरी स्कूलों में दोपहर के भोजन की व्यवस्था की गई है। दोपहर के भोजन और बच्चों की पोशाक की व्यवस्था जनता के सहयोग से होनी चाहिये।

श्रमिकों के प्रशिक्षण और कल्याण तथा उद्योगों के प्रबन्ध में प्रगति पूर्वक उन्हें शामिल करने की ओर भी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान देते रहना आवश्यक है।

आवश्यक वस्तुओं का मूल्य स्थिर किया जाना चाहिये और जहाँ सुविधाजनक हो, सरकार को व्यापार अपने हाथ में लेना चाहिए। किसानों को यह आश्वासन मिलना चाहिये कि जिन खाद्यान्नों एवं अन्य वस्तुओं का वह उत्पादन करता है, उनके दाम समुचित निम्नतम सीमा से नीचे नहीं गिरने दिये जायंगे।

विलासितापूर्ण तथा अनावश्यक सामानों के उत्पादन को बढ़ावा नहीं मिलना चाहिए। पूंजी लगाने के लिए बचत करने की दर में वृद्धि आवश्यक है और इसलिए उपभोग को नियंत्रित करना है। यह जरूरी है कि बचत की दर राष्ट्रीय आय के मौजूदा ८ प्रतिशत स्तर से ११ प्रतिशत तक बढ़ाई जाय। कर इस प्रकार लगाये जायँ कि उनसे आय की विषमताएँ कम हों और विकास के लिए प्राप्त साधनों में वृद्धि हो।

तृतीय योजना के अन्त तक ऐसे गांव न रह जायं, जिनमें पीने के पानी, प्राइमरी स्कूल और सड़कों की समुचित व्यवस्था न हो।

नियोजित विकास कार्यक्रमों के कार्यान्वय में सरकारी शासनतन्त्र को दृढ़ करना, विलम्ब को रोकना और इसके गुण में सुधार करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस कार्य के लिए अधिकार का विकेन्द्रीकरण, उत्तरदायित्व का निर्धारण और किये हुए काम का उचित मूल्यांकन होना चाहिये।

परिवार नियोजन और सन्तति निग्रह अत्यन्त महत्वशाली हैं। अन्यथा रहन-सहन स्तर और बेकारी की समस्या कठिन रूप धारण कर लेंगी।

कांग्रेस की मद्यनिषेध नीति को कायम रखना चाहिये। ऐसा करने में इसे प्रभावशाली बनाने का प्रयास किया जा रहा है। ●○

## जनसंघ

आज की स्थिति में जिन समस्याओं की ओर अविलम्ब ध्यान देना चाहिए और जिनको हल किये बिना न तो स्वतन्त्रता का संरक्षण ही किया जा सकता है और न देश का आर्थिक विकास ही संभव है, वे ये हैं :—१. राष्ट्रीय सुरक्षा एवं एकता। २. शासन की शुचिता और दक्षता। ३. मूल्यों का स्थिरीकरण, तथा बेकारी का उन्मूलन। ४. शिक्षा-पद्धति का पुनर्गठन।

भारतीय जनसंघ आगामी ५ वर्षों में इन समस्याओं के समाधान का बीड़ा उठाता है।

मूल्य के उतार-चढ़ाव से देश की आर्थिक-व्यवस्था असन्तुलित हो गई है। इसका परिणाम उत्पादक एवं उपभोक्ता दोनों पर हो रहा है। भारतीय जनसंघ अर्थ-व्यवस्था के सन्तुलित विकास के लिये आवश्यक समझता है कि कृषि और उद्योग के उत्पादनों के मूल्य, वेतन और मजदूरी, ब्याज और मुनाफों; इस सबके बीच तालमेल बिठाया जाय। भारतीय जनसंघ पंचवर्षीय योजनाओं तथा शासन की मौद्रिक एवं वित्तीय नीतियों का इस प्रकार निर्धारण करेगा कि राष्ट्रीय आय की वृद्धि में देश के सभी वर्ग समान रूप से साझीदार हो सकें, तथा अर्थ-व्यवस्था में खिंचाव पैदा होकर विकास के मार्ग में बाधाएं उत्पन्न न हों।

उपजीविका के अधिकार को भारतीय जनसंघ नागरिक का अधिकार मानता है।

शिक्षा का जीविकोपार्जन के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। आज न तो शिक्षा का पुनर्गठन किया गया है, जिससे वह व्यक्तित्व का समन्वित विकास करते हुए व्यक्ति को समाज के प्रति अपने दायित्वों के निर्वाह और जीविकोपार्जन में समर्थ बना सके और न प्रत्येक बालक-बालिका के लिये शिक्षा की उचित व्यवस्था की गई है।

भारतीय जनसंघ आगामी पांच वर्षों में प्रत्येक युवक को निःशुल्क शिक्षा और रोजगार की गारन्टी देता है।

राजनीतिक शक्ति का विकेन्द्रीकरण करते हुए आधारभूत स्वतंत्रताओं का संरक्षण किया जाएगा। प्रशासन में सुधार और प्रशासन व्यय में बचत करते हुए न्याय को सस्ता और सुलभ बनाया जाएगा।

विस्थापितों के पुनर्वास और दावों का शीघ्र भुगतान किया जायेगा।

अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाएं संविधान द्वारा नियत अवधि के अन्दर राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित की जाएंगी। हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के विकास के लिये एक पंचवर्षीय योजना बनायी जाएगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्थिक कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि को प्राथमिकता, और कुटीर, छोटे उद्योगों को प्राथमिकता, सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार को रोक कर उसका दृढ़ीकरण, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के सैद्धान्तिक एवं कृत्रिम भेद की समाप्ति, मूल्यों का स्थिरीकरण, अधिकतम उत्पादन, समानान्तर वितरण, अधिकतम रोजगार और सामान्य जीवन-स्तर सभी वर्गों एवं क्षेत्रों का सन्तुलित और समान विकास शामिल है। सुरक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सामान्य योजना से बन्धी हुई अलग योजना बनाई जाएगी।

योजना आयोग और राष्ट्रीय विकास परिषद का पुनर्गठन किया जाएगा।

कृषि के लिये आवश्यक साधन और पूंजी की व्यवस्था की जाएगी। सिंचाई की उचित व्यवस्था की जाएगी और जल के सही और वैज्ञानिक उपयोग की ओर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

जनसंघ किसान को भूमि का मालिक बनायगा और बेदखली रोकेगा। ५ एकड़ तक के भूस्वामियों, विधवा, नाबालिग, अपंग व्यक्तियों, सैनिक और धर्म-स्थानों को पट्टे का अधिकार दिया जाएगा। भूमि पुनर्वितरण की त्रुटियों को दूर करते हुए आर्थिक-जोत को पुष्ट किया जाएगा तथा चकबन्दी से पहले गांव का सर्वेक्षण किया जाएगा। सहकारिता को आत्मनिर्भर बनाते हुए जनसंघ सहकारी खेती को लोकतन्त्र के लिये घातक तथा प्रति एकड़ अधिकतम उत्पादन की दृष्टि से अनुपयुक्त समझता है। किसान अपनी उपज का उचित दाम पा सके, इस हेतु गोदामों का निर्माण किया जाएगा। उचित दाम न मिलने की दशा में न्यूनतम पूर्वघोषित मूल्यों पर कृषि-उपज को शासन के द्वारा खरीदने की व्यवस्था रहेगी।

गोरक्षा तथा पशुपालन, वन संरक्षण के साथ-साथ भारतीय जनसंघ कृषि, उद्योग, व्यापार और सेवाओं, चारों के संतुलित एवं समन्वित विकास का समर्थक है।

छोटे उद्योगों के विकास के लिए निम्नलिखित साधन उपयोग में लाये जाएंगे :---

(१) नई छोटी मशीनों तथा कलों का निर्माण, जो कुटीरों तथा ग्रामों में चल सकें, (२) ग्रामों में औद्योगिक शिक्षालयों की स्थापना, (३) छोटे कुटीर तथा ग्रामोद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं के विक्रय के लिये बाजार सुरक्षित करना। (४) संयुक्त तथा सहकारी उद्योगों को प्रोत्साहन देना।

बड़े उद्योगों के विकेन्द्रीकरण की योजना बनायी जायगी। आधारभूत उद्योग एवं सुरक्षा उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया जाएगा और सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत आये उद्योगों के लिये स्वायत्त कारपोरेशन बनाई जाएगी। इसमें विदेशी पूंजी का बहुत कम स्थान है, और भारतीय जनसंघ इस बात का प्रयत्न करेगा कि खान, जूट, तम्बाकू, काफी, चाय, रबर, दियासलाई, साबुन, वनस्पति तथा ऐसे अन्य उद्योग, जो बहुतांश विदेशियों के हाथ में हैं, उनका भारतीयकरण हो जाय।

पूंजी-निर्माण के लिए एक ओर बचत तथा दूसरी ओर बचत को पूंजी के रूप में लगाने की व्यवस्था होनी चाहिए। इस दृष्टि से जनसंघ २००० रुपये प्रतिमास व्यययोग्य आय निर्धारित कर अर्थ-नीतियों को कार्यान्वित करेगा और प्रत्येक कर्मचारी का न्यूनतम वेतन १२५ रुपये प्रतिमास निश्चित किया जायगा।

करों का बोझ हल्का करते हुए जीवन की आवश्यकताओं को अप्रत्यक्ष करों से मुक्त किया जायगा। न्यूनतम आय के व्यक्तियों पर कोई प्रत्यक्ष कर नहीं लगाया जायगा, कर उगाहने की पद्धति को सरल बनाया जाएगा।

उद्योगधन्धों के विकास तथा विदेशी मुद्रा की बचत के लिये जनसंघ स्वदेशी के मन्त्र का पुनर्जागरण करेगा। और जनसंघ की कल्पना की अर्थरचना में आयात का परिमाण बहुत कम हो जाएगा।

मजदूरों में कर्तव्यनिष्ठता तथा अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिये जनसंघ मजदूरों के ट्रेड यूनियन अधिकारों की रक्षा करेगा और प्रत्येक मजदूर को किसी-न-किसी ट्रेड यूनियन का सदस्य बनने को प्रोत्साहित करेगा। और मजदूरों को उद्योग के प्रबन्ध और लाभ में साझीदारी बनाएगा, देश के विभिन्न श्रमिकों एवं कर्मचारियों की वेतन-दरों को निश्चित करने के लिये एक एक स्थायी वेतन आयोग की नियुक्ति की जायगी, और मजदूरों की सामाजिक सुरक्षा का दायित्व राज्य पर होगा।

जनसंघ सड़क, रेल, जल एवं हवाई यातायात के विस्तार एवं समन्वित विकास की ओर विशेष ध्यान दिया जाएगा। जनसंघ सड़क-यातायात के राष्ट्रीयकरण का विरोधी है।

जनसंघ प्रत्येक परिवार के लिये एक साफ-सुथरे मकान की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए नगरों और गांवों में सभी जगह सस्ते मकान सुलभ होने का प्रयास करेगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# साहित्य समालोचना

वेद व्याख्या-ग्रन्थ (पंचम पुष्प)—लेखक—श्री स्वामी विद्यानन्द जी विदेह। आकार २०×३० का ८, पृष्ठ संख्या ७५, मूल्य १॥), प्राप्ति स्थान, वेद संस्थान अजमेर।

श्री स्वामी जी यजुर्वेद की व्याख्या रूप में यह पुष्प प्रकाशित कर रहे हैं। अभी तक चार अध्यायों के व्याख्या युक्त चार पुष्पों के बाद यह पंचम पुष्प के नाम से यजुर्वेद के पांचवें अध्याय की व्याख्या है। इसमें "दिव्य दम्पती" का वर्णन है। आसुरी और दिव्य दाम्पत्य भावनाओं में भेद बताते हुए लेखक के निम्न शब्द उपयुक्त ही हैं—

"दाम्पत्य नाम दो शरीरों के मिलन का नहीं है, दो आत्माओं के मिलन का है। नर और नारी के रूप में मिलकर दो आत्माएं नारायण से मिलने के लिए दाम्पत्य में संयुक्त होते हैं। पति और पत्नी के रूप में दो आत्माओं का मिलन परमात्मा-मिलन की सुपावन भूमिका है।"

मंत्रों के अर्थ सरल और सुबोध शब्दों में दिये गये हैं।

चंढोक परिवार द्वारा इस पुष्प के प्रकाशन के लिए दी गई ५०० रु० की सहायता के प्रति स्वामी जी का परिवार के छहों भाइयों के फोटो सहित कृतज्ञता—प्रकाशन पुस्तक के अन्त में दिया जाता तो अधिक अच्छा होता।

संस्कृत स्वयं शिक्षक (प्रथम पुष्प)—लेखक व प्रकाशक उपर्युक्त ही। पृष्ठ संख्या ६७, मूल्य ७० न. पै.।

इस पुस्तक के द्वारा संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान घर बैठे किया जा सकता है। ३० पाठ दिये गये हैं और छोटे-छोटे होने से ऊब पैदा करने वाले नहीं हैं। २९ वें पाठ में वेदमंत्रों के अर्थ समझाने की योग्यता काफी मात्रा में आजाने की घोषणा कुछ अतिशयोक्ति ही प्रतीत होती है। संस्कृत भाषा के प्रचार की दृष्टि से पुस्तक लाभदायक और सहायक हो सकती है।

स्वास्थ्य और सौंदर्य—लेखक व प्रकाशक—उपर्युक्त ही। १६ पेजी डिमाई आकार, पृष्ठ ३३, मूल्य ६० न. पै.।

मनुष्य का जीवन स्वस्थ भी हो और सुन्दर भी हो—दोनों साथ-साथ चलने वाले हों—इस विषय का लेखक ने सुन्दर ढंग से विवेचन किया है। इन दोनों की प्राप्ति के उपाय क्या हैं, किस प्रकार का आहार हो, विहार का जीवन में क्या स्थान है, निद्रा कम से कम कितने घंटे की और किस प्रकार की हो तथा सहज व्यायाम और प्राणायाम, प्रार्थना, आत्म चिन्तन इत्यादि का सरल भाषा में वर्णन किया गया है।

प्रगतिशील कर के सिद्धांत—लेखक—श्री रामनन्दन प्रसाद सिन्हा एम. काम। प्रकाशक—श्री रामदेव प्रसाद वर्मा, तानववरिया (गया), मूल्य ३२ न. पै.।

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों से आज देश का प्रत्येक नागरिक प्रभावित हो रहा है। इस विषय पर वैज्ञानिक ढंग से आधुनिक पाश्चात्य लेखकों के आधार पर इसे पुस्तिका में खोज की गई है।

आज का जापान—सांस्कृतिक विभाग, विदेश मंत्रालय दिल्ली। मूल्य लिखा नहीं। १८×२२ के चार की आकृति-आकर्षक गेटअप व मुखपृष्ठ और अच्छी छपाई वाली ५२ पृष्ठों की इस सचित्र पुस्तक में जापान के बारे में अच्छी जानकारी दी गयी है। भाषा कई जगह कुछ विशिष्ट, पेचदार और भद्दे अनुवाद का परिचय देती है।

साहित्य सन्देश—निबंध—विशेषांक। सम्पादक, श्री महेन्द्र। प्रकाशक—साहित्यरत्न भंडार, आगरा। इस अंक का मूल्य दो रुपये।

निबंध के स्वरूप और हिन्दी निबंध के वर्तमान युग के कई मूर्धन्य लेखकों के बारे में आलोचनात्मक पाठ्य-सामग्री से युक्त हिन्दी के इस प्रमुख मासिक का यह विशेषांक काफी उपयोगी है।

भारत व्यापार पत्रिका—योजना विशेषांक, अगस्त १९६१, इस अंक का मूल्य एक रुपये।

तीसरी योजना के सम्बन्ध में पाठ्य सामग्री का संग्रह किया गया है।

सुधारक—वेद-प्रवेश विशेषांक (प्रथम और द्वितीय खंड), १६ पेजी डिमायी प्रथम खण्ड का ७५ न. पै. और द्वितीय खण्ड का मूल्य १ रु०। पृष्ठ संख्या क्रमशः १०० और १२८। प्रधान सम्पादक—श्री भगवान्



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव आचार्य और सम्पादक श्री वेदव्रत स्नातक। पता—गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक (पंजाब)।

आर्य समाज में स्वर्गीय श्री स्वामी वेदानन्द जी वैदिक साहित्य के प्रमुख विद्वान् थे। उन्होंने उन सज्जनों के लिए जिन्हें वेद से प्रेम है और उसका स्वाध्याय करना चाहते हैं "—वेद प्रवेश" नाम की पुस्तक लिखी थी। उनके जीवन-काल में यह पुस्तक प्रकाशित नहीं हो सकी। गुरुकुल झज्जर, रोहतक से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र 'सुधारक' के इन दोनों विशेषांकों द्वारा इस अप्रकाशित पुस्तक को जनता तक पहुँचाया गया है। नवम्बर के विशेषांक में शेषांश छाप कर इस पुस्तक को पूरा कर दिया जायगा।

वैदिक साहित्य के प्रेमियों के लिए दोनों विशेषांक उपादेय और संग्रहणीय हैं। मूल्य भी ज्यादा नहीं है।

—नाथ

सोशलिस्ट कांग्रेस मैन—(फिरोज गांधी विशेषांक) सम्पादक—श्री हर्षदेव मालवीय।

प्रस्तुत अंक भारत के प्रसिद्ध पार्लिमेन्टेरियन श्री फिरोज गांधी की स्मृति में निकाला गया है। इसमें श्री फिरोज गांधी के सम्बन्ध में अनेक सुन्दर संस्मरणों तथा लेखों के अतिरिक्त उन्हें देश के विभिन्न नेताओं की ओर से दी गई श्रद्धांजलियों का संग्रह किया गया है। इस से मालूम होता है कि वह कितने निर्भीक स्पष्टवादी विचारक थे। यदि वह बीच में चले न जाते तो निस्सन्देह पार्लियामेन्ट के एक प्रसिद्ध वक्ता होते, जिनकी सूझ-बूझ और चेतावनियों से देश लाभ उठाता।

इस अंक में दूसरे भी महत्वपूर्ण विषयों पर विद्वत्तापूर्ण लेख हैं। श्री मालवीय का चीन-संबन्धी लेख पढ़ने योग्य है। आयोजित अर्थ व्यवस्था के मार्ग के सम्बन्ध में दिये गये विचारों का संग्रह भी उपयोगी है।


## भारत की औद्योगिक नीति

भारत के आर्थिक विकास और औद्योगिक उन्नति का सर्वाधिक महत्व है। पर भारत सरकार की उद्योग नीति क्या है—सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के लिए किस तरह दोनों का विभाजन किया गया है, आदि बातें समझने के लिए प्रो० रामनरेशलाल द्वारा लिखित—

### भारत की औद्योगिक नीति

को पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। इसमें भारत के औद्योगिक विकास के इतिहास का भी योग्य लेखक ने विद्यार्थियों की दृष्टि से उपयोगी और सुन्दर परिचय दिया है।

६२ न. पै. के टिकट भेजने पर पुस्तक अण्डर पोस्टल सर्टिफिकेट भेजी जायगी।

मैनेजर अशोक प्रकाशन मन्दिर,
२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आर्थिक-राजनैतिक अनुसंधान विभाग का पाक्षिक पत्र

## आर्थिक समीक्षा

प्रधान सम्पादक : श्री सादिकअली
सम्पादक : श्री महेन्द्र मेहरा

- हिन्दी में अनूठा प्रयास
- आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख
- आर्थिक सूचनाओं से ओतप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक, पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक।

वार्षिक मूल्य : ५) रु० एक प्रति २२ नये पैसे

लिखें—व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी,
७, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं

## जीवन बीमा निगम के व्यापार में वृद्धि

जीवन बीमा निगम का व्यापार १९५९ के व्यापार से १९६० में १६.१ प्रतिशत बढ़ा। १९६० में २२ अरब ८५ करोड़ रु० के बीमे की कुल ७७ लाख १३ हजार पालिसियां चालू थीं। यह रकम १९५९ में चालू पालिसियों की रकम से ३ अरब २७ करोड़ रु० अधिक है।

१९६० में निगम का जीवन कोष १९५९ के कोष से ५५ करोड़ ६३ लाख रु० बढ़ा। ३१ सितम्बर, १९६० को जीवन कोष में कुल ५ अरब ६० करोड़ ३८ लाख रु० था।

## नया व्यापार

निगम ने १९६० में ४ अरब ९५ करोड़ ७२ लाख रु० की १२,३३,६३८ पालिसियां जारी कीं, जबकि १९५९ में ४ अरब २७ करोड़ १६ लाख रु० की १७,२२,५९४ पालिसियां जारी की थीं। १९५९ में प्रति पालिसी का औसत ३,६७१ रु० था, जबकि १९६० में प्रति पालिसी यह औसत बढ़कर ३,९०३ रु० हो गया। विदेशों में किए गए बीमों की रकम भी १९५९ के प्रति पालिसी ११,९६९ रु० से बढ़कर १९६० में १२,५३९ रु० हो गयी।

१९६० में निगम को बीमे की किश्तों से ९६ करोड़ ८९ लाख रु० मिला, जबकि १९५९ में ८४ करोड़ ४६ लाख रु० मिला था।

निगम ने इस वर्ष ३१ सितम्बर १९६० तक सिक्यूरिटी आदि में कुल ५ अरब २७ करोड़ ११ लाख रु० लगाया। इसमें से देश में केन्द्रीय तथा राज्य सरकार की सिक्यूरिटियों, सरकारी कम्पनियों के हिस्सों आदि में कुल ३ अरब ६० करोड़ ६ लाख रु०, और निजी क्षेत्र में ज्वाइंट स्टाक कम्पनियों के डिवेंचरों तथा हिस्सों और कुछ स्वीकृत सिक्यूरिटियों में ९७ करोड़ ३७ लाख रु० लगाया गया।

निगम ने लन्दन में भी एक शाखा कार्यालय खोल दिया है। इस प्रकार निगम अब अदन, फिजी, हांगकांग, केनिया, मलाया, मारिशस, सिंगापुर, तंगनयिका, उगण्डा, ब्रिटेन और जंजीबार में व्यापार करने लगा है।

## मीट्रिक प्रणाली

भारत सरकार ने राज्य सरकारों से सलाह करके १ १ अक्टूबर, १९६१ से सारे देश में लम्बाई आदि के नाप में मीट्रिक प्रणाली लागू कर दी है। अर्थात् अब कपड़ा आदि मीट्रिक प्रणाली से नापा जाया करेगा। मीटर के बाद किलोमीटर (१००० मीटर) होता है।

देश के कुछ भागों में तोल में मीट्रिक प्रणाली १ अक्टूबर, १९६० से ही अनिवार्य कर दी गई थी। जम्मू-कश्मीर के अलावा अन्य सब क्षेत्रों में भी १ अप्रैल, १९६२ से तोल में मीट्रिक प्रणाली अनिवार्य रूप से लागू कर दी जाएगी। १९६० में खर्च का अनुपात २८.४ प्रतिशत रहा, जबकि १९५९ में २८.७ प्रतिशत था।

—ब्रिटेन ने अपना बैंक दर ७ प्रतिशत से घटा कर ६½ प्रतिशत कर दिया है। कुछ दिन पहले आर्थिक स्थिति के सुधार तथा मुद्रा प्रसार को रोकने के लिये बैंक दर ७ प्रतिशत की गयी थी अब स्थिति में सुधार के नाम से फिर बैंक दर कुछ कम कर दी गई है।

दूसरे विश्व युद्ध के बाद से ब्रिटेन में बैंक दर बीस बार बदली गई है किन्तु ६॥ प्रतिशत कभी नहीं रही

—केरल सरकार अनेक छोटे उद्योगों को, जिन्हें वह चलाती है, फिर निजी उद्योगों को सौंपने पर वह विचार कर रही है।

—अमेरिका और भारत में बोकारों में स्पात का चौथा कारखाना खोलने के सम्बन्ध में बात चीत चल रही है।

—दामोदर घाटी निगम को १९६०-६१ में बिजली की बिक्री से ७ करोड़ ८३ लाख रु० मिला। यह १९५९-६० की बिजली की बिक्री से १ करोड़ ६७ लाख रु० अधिक है।

दामोदर घाटी निगम के बिजली घरों में १९६०-६१ में कुल १६ करोड़ ३७ लाख ३० हजार किलोवाट बिजली बनाई गयी, जबकि पिछले साल १४ करोड़ ५८ लाख २० हजार किलोवाट बिजली बनाई गयी थी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## सहकारी खेती की ओर

तीसरी योजना में सहकारी खेती की ३२० पथ-प्रदर्शक योजनाएं चलाई जाएंगी। एक योजना एक जिले में होगी और उसके अन्तर्गत १० सहकारी समितियां रहेंगी। इस सिलसिले में २ अक्टूबर को देश में खेती की ५० नई सहकारी समितियां खुली। सहकारी खेती की इन योजनाओं को चलाने का मुख्य ध्येय है—गरीब किसानों और भूमिहीन खेतिहरों को पैदावार में मदद देना और जीविका देना। इन खेती सहकारियों में शामिल होने के लिए कोई दबाव नहीं डाला जायगा। जो किसान अपनी इच्छा से इसमें शामिल होंगे, वे अपने खेतों को मिला कर संयुक्त खेती करेंगे।

इन योजनाओं में मुख्यतः नई सहकारी समितियां ही शामिल की जाएंगी। इनमें अधिक से अधिक १० प्रतिशत पुरानी समितियां शामिल की जा सकेंगी। नई समितियों को बनाते समय इन बातों को ध्यान में रखा जाएगा :

१. अधिकांश सदस्य भूमिहीन गरीब किसान हों।

२. जो लोग खेत या समिति का अन्य काम करने को राजी हों, उन्हें ही इसमें शामिल किया जाए। काम करने वाले सदस्यों की संख्या एक-चौथाई से अधिक न होगी।

३. राज्य ने एक समिति की जितनी सदस्य-संख्या और रकबा निश्चित किया है, उससे कम नहीं होना चाहिए।

४. सदस्य कम से कम ५ वर्ष के लिए अपनी जमीन दें। असाधारण परिस्थितियों में, इसके पहले भी जमीन वापसी की अनुमति दी जा सकती है, (मसलन्, कोई सदस्य गांव छोड़कर जा रहा हो, आदि)। इस हालात में उसे सहकारी खेती के चक के किनारे जमीन दी जा सकेगी, और यदि रजामंदी हो तो नकद मुआवजा भी दिया सकता है।

५. समिति का मुख्य काम भरपूर खेती करना होगा। मुर्गी पालने, दूध-दही का धंधा और छोटे उद्योग-धंधे भी होने चाहिएं। गांव के साधनों, खाद का भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए।

६. सरकारी खेती के साथ ही चकबन्दी का काम भी हो। जहां चकबंदी हो गयी है या हो रही है, वहां इन समितियों को चलाना ठीक होगा।

## १८ उद्योगों को २१ करोड़ रु० के ऋण

उद्योग वित्त निगम की १९६०-६१ की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार इस वर्ष निगम ने १८ उद्योगों को २१ करोड़ २१ लाख रु० के ऋण दिये। यह राशि पिछले सब वर्षों से अधिक है। पिछले वर्ष निगम ने १७ करोड़ ९१ लाख रु० के ऋण दिये थे। ३० जून १९६१ को समाप्त हुए वर्ष की यह रिपोर्ट हाल ही में प्रकाशित हुई है।

निगम की स्थापना १३ वर्ष पहले हुई थी। तब से अब तक निगम २३९ कारखानों को कुछ मिलाकर १ अरब ५ करोड़ ८२ लाख रु० के ऋण दिये जा चुके हैं। इस वर्ष ५७ कारखनों को ऋण दिये जाएंगे, जिनमें से ४७ नये तथा १० पुराने हैं।

इस बर्ष ७६ कारखानों ने ३६ करोड़ ८५ लाख रु० में ऋणों के लिए अर्जियां भेजीं। दो अर्जियां रद्द कर दी गयीं, २४ अर्जियां वापस ले ली गईं तथा २८ अर्जियां अभी विचाराधीन हैं।

अमेरिकी विकास ऋण कोष से १ करोड़ का जो ऋण मिला था, उवमें से १४ कारखानों को इस वर्ष ४ करोड़ १९ लाख रु० से अधिक के ऋण दिये गये हैं।

विकास ऋण कोष से जितनी राशि प्राप्त हुई है, वह ऋणों के रूप में कारखानों के लिए मंजूर करदी गयी है। विकास ऋण कोष से २ करोड़ डालर ऋण की बातचीत और शुरू हुई है। निगम और देशों से भी विदेशी मुद्रा के कारण प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है। इस साल पहली बार निगम ने १ कोयला खान को ऋण दिया है। यह खान पश्चिम बंगाल की है और इसे २० लाख रु० का ऋण दिया गया है।

ऋण देने में निगम ने सहकारी कारखानों को सबसे अधिक प्राथमिकता दी है। ऋणों को कुल में से २२, ४ प्रतिशत राशि के ऋण सहकारी कारखानों को दिये गये हैं। कुल मिलाकर अब तक सहकारी कारखानों को २३ करोड़ ६९ लाख रु० के ऋण दिये जा चुके हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अपने प्राचीन देश के पुनर्निर्माण में.....

**रज़ा बुलन्द शूगर कम्पनी लिमिटेड**
**रामपुर (उत्तरप्रदेश)**

जहां हम भारत में कहीं भी बनने वाली उत्तम सफेद दानेदार चीनी का निर्माण करते हैं ।

**उड़िशा सिमेंट लिमिटेड**
**राजगंगपुर (उड़िशा)**

जहां नवीनतम साधनों एवं उत्पादन की नवीनतम प्रणालियों द्वारा हम बड़ी संख्या में ऊष्मसहों (रिफ्रेक्टरीज़) का निर्माण करते हैं जो कि इस्पात, सिमेंट, कांच आदि विविध बड़े उद्योगों में भट्टियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

**डालमिया सिमेंट (भारत) लिमिटेड**
**डालमियापुरम् (मद्रास राज्य)**

जहां हमारा सिमेंट का उत्पादन निरन्तर वृद्धि पर है। सिमेंट हमारी उन समस्त विकास योजनाओं के लिये अत्यन्त आवश्यक है, जो हमारे उज्ज्वल भविष्य के स्वप्न को मूर्त रूप देने में सहायक हो रही हैं ।

## राष्ट्र की सेवा में सन्निहित डालमिया उद्योग


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## कौन क्या कहता है ?

# तृतीय पंचवर्षीय योजना अंक

योजना आयोग के सदस्य श्री श्रीमन्नारायण लिखते हैं—

**सम्पदा का पंचवर्षीय योजना विशेषांक देखकर खुशी हुई । उसमें काफी उपयोगी सामग्री एकत्र की गई है और मैं आशा करता हूँ कि उसका लाभ हिन्दी जगत् उठायगा ।**

### हिन्दी में अर्थशास्त्र की पत्रिका

श्री अमरनाथ विद्यालंकार शिक्षामंत्री पंजाब लिखते हैं—

श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा सम्पादित सम्पदा देखता रहता हूँ । अर्थशास्त्रीय साहित्य को हिन्दी में प्रकाशित करने का यह सुन्दर व उपयोगी प्रयास है ।

सम्पदा का तृतीय पंचवर्षीय योजना अंक बहुत सुन्दर प्रकाशित हुआ है । अर्थ-शास्त्र के प्रेमियों और देश की आर्थिक प्रगति में रुचि लेने वालों के लिए यह अंक बहुत उपयोगी है ।.....तीसरी योजना को सामान्य पाठक तक पहुँचाने के इस सुन्दर प्रयास के लिए मैं सम्पादक को बधाई देता हूँ ।

### हिन्दी में एकमात्र पत्रिका

अपने इस अथक परिश्रम के लिए आप बधाई के पात्र हैं । आर्थिक समस्याओं के विवेचन में 'सम्पदा' अपने किस्म की एकमात्र पत्रिका हिन्दी में है, इसमें दो मत नहीं हो सकते । —ओम्प्रकाश तोषनीवाल एम. काम.

### योजना का सुबोध परिचय

पिछले दस वर्षों से आर्थिक समस्याओं और गतिविधियों के सम्बन्ध में प्रकाशित 'सम्पदा' समय-समय पर महत्वपूर्ण आर्थिक प्रश्नों पर विशेषांक प्रकाशित करती रही है । इसी श्रृंखला में यह बारहवां विशेषांक है ।

प्रस्तुत अंक में तीसरी बृहद्कार योजना की नीतियों व सिद्धान्तों की विवेचना करते हुए उसके विभिन्न अंगों का सुबोध परिचय दिया गया है । योजना की नीति और विभिन्न पहलुओं पर पृथक्-पृथक् दृष्टिकोण से आलोचनात्मक विवेचन इसमें होने से अर्थशास्त्र के प्रेमियों व विद्यार्थियों के लिए यह अंक विशेष उपयोगी बन पड़ा है । ग्राफ, चित्रों और तालिकाओं से विषय अधिक सुबोध और रोचक बन गया है । रूस, ब्रिटेन, अमेरिका, चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड आदि देशों की योजनाओं तथा अर्थनीति सम्बन्धी लेखों के कारण तुलनात्मक दृष्टि से विचार की सुविधा भी पाठक को मिल जाती है । —हिन्दुस्तान

## विकास योजना एक दीर्घकालीन श्रृंखला है

इसलिए यह आवश्यक है कि तीसरी योजना की पृष्ठभूमि को समझने के लिए पहली और दूसरी योजना का भी परिचय प्राप्त किया जाय । इसके लिए—

| | | |
|---|---|---|
| योजना अंक | (प्रथम योजना) | १) |
| राष्ट्रीय विकास अंक | (द्वितीय योजना) | १।।) |
| राष्ट्रीय प्रगति अंक | (योजना संबंधी समस्याओं का विवेचन) | १।।) |

उक्त तीनों अंक ४.२५ रु० भेजकर रजिस्ट्री से अपने घर मंगवालें ।

**मैनेजर—सम्पदा २८-११ शक्तिनगर दिल्ली-६**

सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीजिज ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित व अशोक प्रकाशन मन्दिर २८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६ से प्रकाशित ।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा

वर्ष १०
अंक ११

(प्रदर्शनी परिशिष्ट सहित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

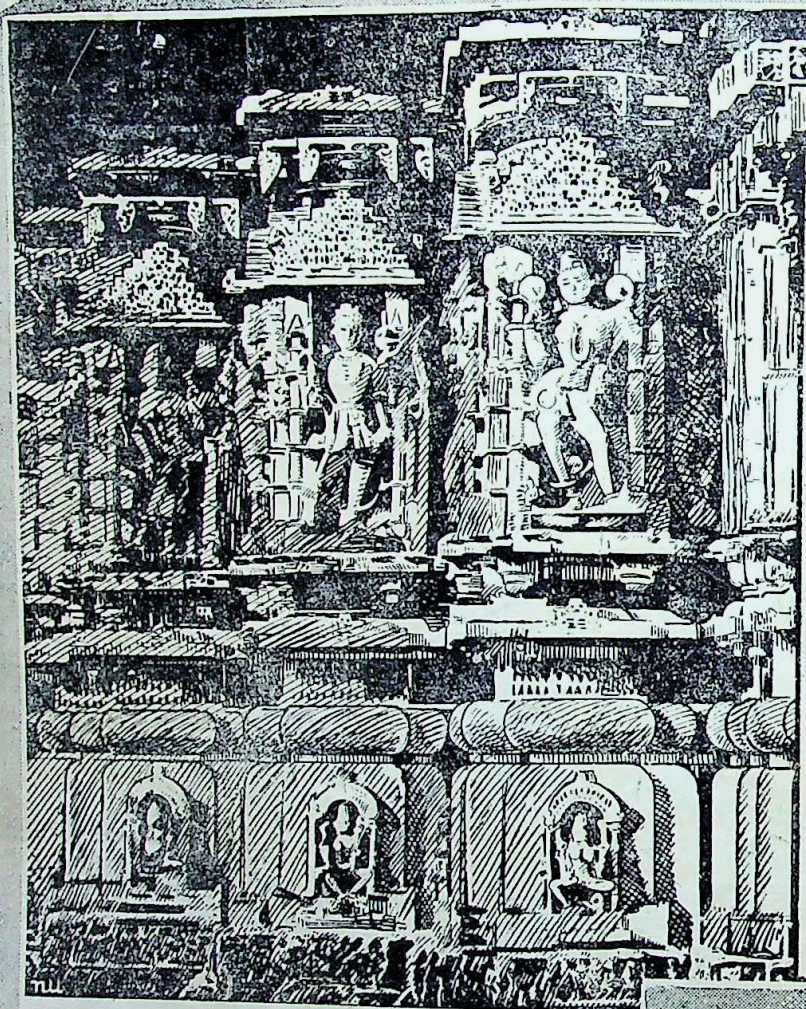

**मोधेरा सूर्य मंदिर देखने आइए**

अपनी अद्भुत स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध हैं पर्यटकों की दिलचस्पी के गुजरात राज्य के अन्य स्थानों के बारे में सूचना प्राप्त करने के लिए कृपा कर, "गुजरात देखो" पुस्तक मंगाइये (मूल्य १ रु० मात्र) **सूचना निर्देशक**

सचिवालय, अहमदाबाद—१५

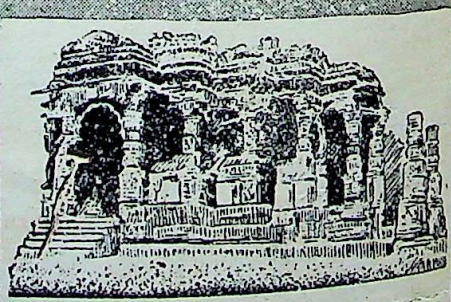

गुजरात आइए
आकर्षक स्थापत्य कला की इसकी कुछ प्राचीन इमारतें देखिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कल सोना बरसेगा गगन से

जहाँ लाल माँ का मुसकाये ...
सूर्य चंद्र जैसे दो नयनों से हर दिल में दीप जलाये,
बाहों में बल उमड़े जैसे गरजे दूर कहीं तूफ़ान...
घर कहलाये वही स्थान !
घर में होता उदय पुरुष कलका... वह कल जब हम
इक दो पल हंस लेंगे अधिक, ग़म होंगे इक दो कम !

**आज और हमेशा हिंदुस्तान लीवर का आदर्श...घर घर की सेवा — साबुन, खाद्य पदार्थ और प्रसाधनों द्वारा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


१. देश की औद्योगिक उन्नति में अमेरिका का सहयोग ४८१
२. सम्पादकीय टिप्पणियां ४८३
३. १५ वर्ष बाद प्रति व्यक्ति की आय दुगुनी श्री जी. एस. पथिक ४८७
४. भारत एक और अखंड है—श्री विनोबा ४९०
५. जन कल्याण की बलिवेदी पर प्रलयंकर विनाश ४९१
६. श्रम समस्या के कुछ समाधान श्री बी. बी. गिरी ४९२
७. योजना से अधिकतम आर्थिक विकास श्री जे० एल ढोलकिया ४९४
८. दूसरी योजना की अवधि में आयात ४९६
९. दूसरी योजना की अवधि में निर्यात ४९७
१०. सर्वोदय पृष्ठ—यदि मैं प्रधान मंत्री बन जाऊं ४९९
११. आर्थिक संतुलन के लिए ग्राम उद्योग ५००
१२. अर्थ वृत्त चयन ५०१
१३. अमेरिका की गतिशील अर्थ-व्यवस्था ५०३
१४. तृतीय योजना में उद्योग—श्री रावत ५०५
१५. साधनों के लिए जन सहयोग आवश्यक श्री मुरारजी देसाई ५०७
१६. साहित्य समालोचना ५०९


## प्रदर्शनी परिशिष्ट (५११ से ५१८ तक)


१७. भारतीय उद्योग मेला
१८. उद्योग प्रदर्शनी की रूपरेखा
१९. जन जीवन के प्रेरक मेले
२०. प्रदर्शनी का सोवियत मंडप
२१. अ. भा. उद्योग वाणिज्य संघ
२२. भारत की रेलों में बिजली के इंजिन ५१९
२३. सड़क परिवहन और सरकार ५२१
२४. राजनैतिक दलों के आर्थिक कार्यक्रम ५२२
२५. देश का पशु धन ५२६
२६. समाजवाद की ओर कदम ५२९
२७. राजस्थान की नहर ५२७
२८. आर्थिक समाचार ५३१



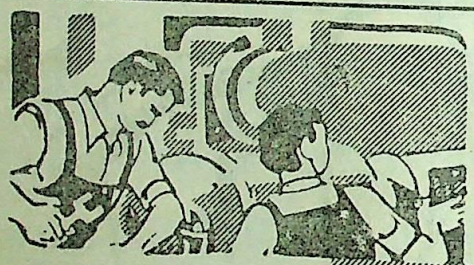

बैंकिंग
राष्ट्रीय सम्पदा को बढ़ाती है

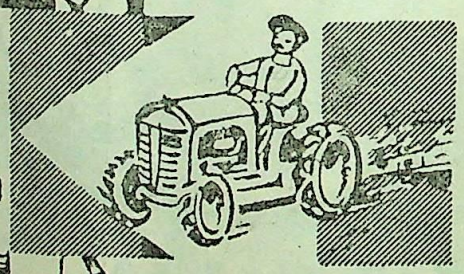

पंजाब नैशनल बैंक
राष्ट्र के उद्योग, कृषि और व्यापार की सेवा करता है।

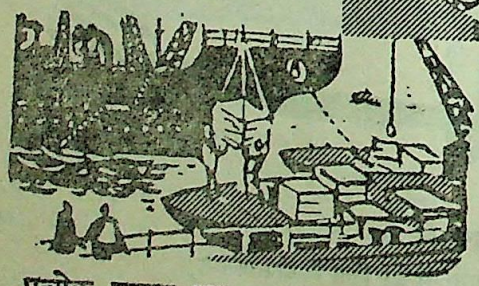

प्रत्येक प्रकार का बैंकिंग व्यापार होता है।

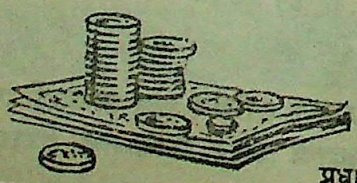

दि पंजाब नैशनल बैंक लि०

संस्थापित १८९५

प्रधान कार्यालय : नई दिल्ली


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष १०
अंक : ११
नवम्बर १९६१

# सम्पदा

## भारत के औद्योगिक विकास में अमेरिका का सहयोग

निजी उद्योग के सम्बन्ध में भारत सरकार की नीति पहले भले ही बहुत विवादास्पद रही हो, आज वह उतनी विवादास्पद नहीं रही है। उसने वास्तविक स्थितियों और तथ्यों का अध्ययन किया है। अनेक आवश्यकताओं ने भी उसे विवश किया है, इसलिए अब उसकी नीति अपेक्षाकृत उदार हो गई है। भले ही कुछ प्रमुख अधिकारी कभी-कभी आवेश में समाजवाद का समर्थन करते हुए कोई ऐसी बात कह जाते हैं, जिससे निजी उद्योग उद्विग्न हो जाते हैं।

सरकार ने यह अनुभव कर लिया है कि राष्ट्र के सर्वांगीण आर्थिक विकास में निजी उद्योग का सहयोग बहुत महत्वपूर्ण है। तीसरी योजना में निजी क्षेत्र के लिए ४१०० करोड़ रु० की राशि भले ही पर्याप्त संतोष न दे सके, किन्तु वह बहुत असंतोषजनक भी नहीं कही जा सकती। विदेशी मुद्रा की कठिन समस्या के समाधान की दिशा में भी निजी उद्योग बहुत सहायक हो सकते हैं, क्योंकि वे विदेशी पूंजी का सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। आज भी देश के बीसियों प्रतिष्ठान विदेशी उद्योगपतियों के सहयोग से चल रहे हैं। इस सहयोग से भारत की भी निष्क्रिय पूंजी सक्रिय रूप में सामने आ जाती है। यह कम लाभ की बात नहीं है। ऋण या ब्याज की भी परेशानी देश को उतनी नहीं पड़ती।

पिछले दिनों अमेरिका के प्रमुख उद्योगों के प्रतिनिधि भारत में आये थे। दी बिजिनैस इन्टरनेशनल राउण्ड टेबल नामक संस्था के सदस्य अमेरीका तथा अन्य देशों में समय समय पर मिलते रहते हैं और अपने उद्योग व व्यापार के विकास के लिए विभिन्न देशों की स्थिति का अध्ययन करते हैं। ब्राजील (१९५६), इटली (१९५७), अरजैण्टाइना (१९५८), जापान १९५९ और ब्रुसेल्स (१९६०) में वे पहले मिल चुके हैं। विदेशों में छठा सम्मेलन भारत में किया गया। यों वाशिंगटन में भी प्रति वर्ष विचार विनियम के लिए सम्मेलन किया जाता है। यह प्रतिनिधि मण्डल भारत में आकर उन सब सन्देहों को दूर करना चाहता था, जो भारत की आर्थिक नीति के सम्बन्ध में वहां फैले हुए थे। इनका आशय यह था कि भारत सरकार समाजवाद और राष्ट्रीयकरण की नीति के पक्ष में है, वह विदेशी पूंजी को निरुत्साहित करने के उद्देश्य से आवश्यक सुविधाएं नहीं देती, वह कभी भी सब उद्योगों को अपने नियंत्रण में ले सकती है और निजी उद्योगों की समाप्ति कर सकती है, इन संदेहों का बार-बार निराकरण करने के बावजूद वहां ये संदेह दूर नहीं हुए थे। इन संदेहों के कारण समस्त स्थिति का अध्ययन आवश्यक था। अमेरिकन उद्योगपति भारत के विशाल क्षेत्र का आकर्षण छोड़ भी नहीं सकते थे। इस मण्डल के वक्तव्य में बताया गया है कि अमेरिका व इंग्लैंड के उद्योग प्रतिनिधि भारत में किस उद्देश्य से आये। इसमें बताया गया है कि—

१. भारत स्वतंत्र संसार का सबसे बड़ा बाजार है। इसकी जनसंख्या समस्त पश्चिमी यूरोप, कनाडा व मैक्सिको की संयुक्त जनसंख्या से बड़ी है।

२. नव-स्वतंत्र देशों में भारत ही ऐसा देश है, जहां १४



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्षों से लोकतन्त्र अक्षुण्ण रहा है। विदेशी पूंजी लोकतंत्रीय देशों में तानाशाही देशों की अपेक्षा आर्थिक लाभ दे सकती है।

३. भारत सरकार को भी देश के आर्थिक विकास के लिए विदेशी पूंजी की आवश्यकता अनुभव होती है।

४. विदेशी पूंजी के लिए भारत में स्थिति अधिक अनुकूल हो नई है।

५. भारत सरकार के अधिकारी अपने उतरदायित्व को अधिक समझते हैं।

६. पं० नेहरू के नेतृत्व में भारत में राजनैतिक स्थिरता रही है। यहां कम्यूनिस्ट पार्टी का कोई स्थान नहीं है।

७. भारत में पूंजी भी सुलभ है, जो विशाल और सुसंगठित स्टाक मार्केट के द्वारा प्राप्त हो सकती है और यहां संयुक्त कम्पनियां खुल सकती हैं।

८. भारत में आर्थिक उन्नति निरंतर हो रही है और यहां दीर्घकालीन योजनाओं में लाभ की संभावनाएं कम नहीं है।

९. विदेशी विनियोजकों को भारत में निरन्तर उचित लाभ मिलता रहा है। भारत सरकार ने आवश्यकता व इच्छा होने पर विदेशी पूंजी को वापस करने का वचन दिया है।

१०. स्वतंत्र संसार के अनेक उद्योगपति भारत में जनता के जीवन स्तर को ऊंचा करने के लिए अपने साधनों को प्रयुक्त करना चाहते हैं। और निजी उद्योग में सहयोग के द्वारा यह संभव है। भारत की जनता महज एक बाजार ही नहीं है, वह केवल गरजमन्द पड़ोसी ही नहीं हैं। उसके हाथ में समस्त दक्षिणी एशिया और संभवतः संपूर्ण स्वतंत्र संसार का भविष्य सुरक्षित है।

इन्टरनेशनल प्रतिनिधि मण्डल का यह वक्तव्य इस दृष्टि से संतोषजनक है कि भारत की राजनैतिक व आर्थिक प्रतिष्ठा संसार में बनी हुई है। प्रतिनिधि मण्डल ने भारत के अधिकारियों, नेताओं, अर्थशास्त्रियों, उद्योगपतियों तथा व्यापारियों से खुलकर सब महत्वपूर्ण प्रश्नों पर चर्चा की। उनके अनेक सन्देह भी दूर हुए। और वे इस परिणाम पर पहुँचे कि भारत के औद्योगिक विकास में उनका सहयोग देना वांछनीय और लाभकारी है। उन्हें यह खतरा भी नहीं रहा कि उनकी पूंजी को कोई नुकसान पहुँचेगा। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि प्रमुख आधारभूत उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र में रहें और संयुक्त उद्योगों में विदेशी पूंजी को सहयोग का अवसर मिले। उनकी आशंकाओं का समाधान करते हुए कहा गया कि बड़े कारखानों में विदेशी पूंजी का सहयोग वांछनीय है, छोटे उद्योगों के लिए तो भारतीय पूंजी भी सुलभ है।

भारत की अन्तर्राष्ट्रीय व आर्थिक नीतियों के सम्बन्ध में सही-सही अनेक आशंकाओं को प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू की अमेरिका यात्रा ने बहुत हद तक दूर कर दिया है। अमेरिकन राष्ट्रपति श्री कैनेडी के शब्दों में पं० जवाहरलाल साम्यवाद के समर्थक न होकर व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक हैं। पं० जवाहरलाल की अमरिका यात्रा के बाद यह आशा करनी चाहिए कि भारत के आर्थिक विकास में अमेरिका का सहयोग और भी तीव्र गति से मिलने लगेगा। • •

: ❀ ❀ :

## भारत के सार्वजनिक उद्योग

भारत सरकार ने हाल ही में प्रकाशित एक विवरण में बताया है कि सरकारी उद्योगों में गत वर्ष उत्पादन बहुत बढ़ा है। निस्सन्देह इस पर प्रत्येक भारतीय को प्रसन्न होना चाहिए। नीचे की तालिका से उत्पादन में प्रगति की कुछ साक्षी मिलेगी—

| | १९५९-६० | १९६०-६१ |
|---|---|---|
| हिन्दुस्तान मशीन टूल्स | २.७ करोड़ रु. की. (७०२ मशीने) | ३.३ करोड़ रु. की १००२ महीने |
| हिंदुस्तान केबल | १ करोड़ रु. | १.६ करोड़ रु. |
| नेशनल इंस्ट्रमेंटस | ५३.७ लाख रु. | ५९.३ लाख रु० |
| नाहन फैक्टरी | २२.७५ लाख रु. की ३०६७ टन मशीने | २५ लाख रु. की ३१७२ टन मशीन |
| प्राग टूल्स | ४०.३२ लाख रु० | ४८.३२ लाख रु० |
| हिंदुस्तान इनसैक्टिसाइड | — | ३,००० टन डी. डी. टी. |
| हिन्दुस्तान एंटिबायोटिक्स | ३६११५ लाख मेगा पैंसिलीन | ४२७.६ लाख मेगा पैंसिलीन |
| नेशनल न्यूज प्रिंट | — | २३०२८ टन |
| सिन्दरी खाद | २८५४११ टन अमोनियम सल्फेट | ३००४११ टन अमोनियम सल्फेट |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन उद्योगों में अधिक उत्पादन के परिणामस्वरूप लाभ भी अधिक हुआ है । हिन्दुस्तान मशीन टूल ने तो इस वर्ष १० प्रतिशत का डिविडेण्ड (लाभांश) भी घोषित किया है । नीचे की तालिका से यह मालूम होगा कि किन-किन उद्योगों ने कितना-कितना कमाया है ।

## सार्वजनिक उद्योगों का लाभ १९६०-६१

| (करोड़ रु० में) | प्रदत्त पूँजी | कुल लाभ |
|---|---|---|
| हिन्दुस्तान मशीन टूल | ५.३१ | ०.७४ |
| हिन्दुस्तान केबल | १.२५ | ०.१६ |
| नाहन फाउण्ड्री | ०.४० | ०.०५ |
| प्रागा टूल्ज कार्पोरेशन | १.३६ | ०.०३ |
| हिन्दुस्तान साल्ट कम्पनी | ०२४ | ०.०६ |
| सिन्दरी कारखाना | १७.०० | १.५१ |
| नेशनल इन्स्ट्रयूमेंट्स | ०.९१. | ०.०८ |
| हिन्दुस्तान एन्टीबायोटिक्स | २.४७ | १.४६ |
| नेपा (कागज) | ४.२५ | ०.३८ |
| हिन्दुस्तान इंसैक्ट्रीसाईड्स | ०.९७ | ०.१७ |
| | ३४.१६ | ४.५२ |

सरकारी विवरण में अंक देते हुए यह प्रकट किया गया है कि प्रारम्भिक कठिनाइयों पर विजय पा लने के बाद अब उद्योग तीव्र गति से उन्नति करेंगे । इसी विवरण में यह भी बताया गया है कि इन उद्योगों के विस्तार और विकास की भावी योजनाएं क्या हैं । अनेक विदेशी संस्थाओं से अधिक सहयोग के समझौते हो चुके हैं और योजनाएँ बना ली गई हैं कि उत्पादन किस तरह बढ़ाया जाए और कौन-कौन सी नई वस्तुएं किन-किन कारखानों में तैयार की जाएं । इसमें सन्देह नहीं कि यह विवरण हमारे लिए उत्साहजनक है । उद्योगों के खड़ा करने में काफी समय लगता है ।

उद्योगों में इसी प्रगति के आधार पर तीसरी योजना में आयोग ने यह आशा प्रगट की है कि ये उद्योग सरकार को ४५० करोड़ रुपया कमा कर देंगे जिस का अर्थ यह है कि इन उद्योगों को ९० करोड़ रुपया प्रति वर्ष औसतन कमा कर देना चाहिए ।

इस दृष्टि से देखें तो उन्नति का यह विवरण बहुत अधिक आशाजनक नहीं दीखता । सरकारी उद्योगों में ६०४.६६ करोड़ रुपया प्रदत्त पूँजी के रूप में लगा हुआ है । उस पर केवल ४.५० करोड़ रुपया इस वर्ष कमाया गया है । उपर्युक्त १० उद्योगों में लाभ हुआ है और शेष उद्योग अभी किसी लाभ का विवरण नहीं दे पाये । तुलना के लिए यदि हम निजी उद्योग की प्रगति देखें तो स्थिति अधिक स्पष्ट हो जाएगी । रिजर्व बैंक आफ इण्डिया ने १००१ कम्पनियों की प्रगति का विवरण कुछ समय पूर्व प्रकाशित किया है और यह बताया था कि उन्हें १०.५ प्रतिशत का लाभ हुआ था, जबकि सरकारी उद्योगों में प्रदत्त पूँजी को दृष्टि में रखते हुए ७.९७ प्रतिशत से अधिक लाभ नहीं पड़ता ।

उपर्युक्त तालिका पर दृष्टि डालने से एक बात और भी स्पष्ट हो रही है कि सिन्दरी, हिन्दुस्तान मशीन टूल्स और हिन्दुस्तान एन्टीबायोटिक्स ने ही सार्वजनिक उद्योगों के कुल लाभ का ८० प्रतिशत कमाया है । शेष उद्योगों का लाभ नगण्य ही है । हिन्दुस्तान मशीन टूल्स का उत्पादन ३९.१ प्रतिशत बढ़ा है । इसी तरह एण्टी-बायोटिक्स ने भी अपना उत्पादन काफी बढ़ाया है । इसलिए सार्वजनिक उद्योगों की उन्नति पर बहुत अधिक प्रसन्न होने की आवश्यकता नहीं है । हमें यह गम्भीरता से विचार करना चाहिए कि सरकारी उद्योगों को, जो राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति है, किस तरह उन्नत और विकसित किया जाए, ताकि वे राष्ट्र की समृद्धि की योजनाओं में आज की अपेक्षा अधिक योग दे सकें ?

## लोहे का अतिरिक्त उत्पादन ?

**जैसे भारत में चीनी आवश्यकता से अधिक उत्पन्न होने लगी है और इसकी खपत की समस्या सामने आ गई है, इसी तरह अन्य देशों में भी वैज्ञानिक उन्नति के कारण किसी-किसी उद्योग में अत्युत्पादन होने लगा है । ब्रिटेन में लोह-उद्योग के सामने भी यही समस्या उत्पन्न होने की संभावनाएं की जाने लगी हैं । प्रथम विश्व युद्ध के समय ब्रिटेन के लोह उद्योग ने बढ़ती हुई आवश्यकताओं को देखकर उत्पादन बहुत बढ़ा लिया था, अनेक नये कारखाने खुल गये, परन्तु युद्ध समाप्त होते ही मांग कम हो गई ।**



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके बाद २० वर्ष तक ब्रिटेन लोह के अत्यधिक उत्पादन की समस्या हल नहीं कर सका और द्वितीय युद्ध ने ही आकर यह समस्या हल कर दी।

दूसरे विश्व युद्ध के बाद दस वर्षों तक पुनर्निर्माण की भारी आवश्यकताओं के कारण लोहे की कमी बनी रही, पर १९५५ के बाद श्री विलियम रीस मौग के कथनानुसार फिर उत्पादन मांग की सीमा को पार कर गया है। अमेरिका में भी यही स्थिति रही। १९६० में कई बार लोह उद्योग को ५० प्रतिशत उत्पादन क्षमता से ही काम करना पड़ा। शेष संसार में भी ९० प्रतिशत उत्पादन क्षमता का उपयोग हुआ। ब्रिटेन में आज ७७ प्रतिशत उत्पादन-क्षमता का उपयोग हो रहा है। अमेरिका में तो स्थिति इस सीमा तक पहुंची है कि उद्योग ने उत्पादन अंकों का प्रकाशन ही बन्द कर दिया है। इस कारण सारे संसार में लोह-उद्योग के शेयरों के मूल्य गिर रहे हैं। श्री रीस पूछते हैं कि दूसरी ओर अनेक देश लोह-उत्पादन बढ़ाने की ओर ध्यान दे रहे हैं, तो क्या स्थिति और भी विषम न हो जायगी? खनिज तेल के उत्पादन के समान लोह उद्योग के सामने समस्या पैदा होने लगी है। लोह व तेल स्वयं उत्पन्न करने की अपेक्षा बाजार में लौह खरीदना अधिक लाभकारी है, क्योंकि उसके मूल्य कम हो गये हैं। लोह की मांग कम होने का एक और भी कारण है। नये वैज्ञानिक टैकनीक से अब कम और कम भारी मशीनरी से ही काम होने लगा है, क्योंकि अब भार में हलकी मशीनरी अधिक उत्पादन करने लगी है। यह ठीक है कि भारत में आज यह समस्या उत्पन्न नहीं हुई, लेकिन लोह उद्योग की भविष्य के लिए नीति निर्धारित करते समय हमें दूरवर्ती भविष्य का भी ध्यान रखना होगा।

## निर्यात पर निर्भरता

हम इन पंक्तियों में कई बार यह विचार प्रकट कर चुके हैं कि निर्यात की अधिकाधिक वृद्धि अनिवार्य है। यह भी ठीक है कि भारत सरकार और विभिन्न उद्योग इसके लिए पूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं। किन्तु हम यह भी स्पष्ट करते रहे हैं कि हम कोई दीर्घकालीन नीति निर्यात के आधार पर नहीं बना सकते। यदि हम निर्यात को प्रमुख आधार मानेंगे और उसी दृष्टि से करोड़ों अरबों रुपया नई योजनाओं पर व्यय करेंगे, तो किसी समय भी हम धोखा खा सकते हैं। सभी देश स्वावलम्बन की दिशा में बहुत आगे बढ़ रहे हैं और वे भारतीय माल अधिक समय तक नहीं ले सकेंगे, जैसे कि भारत स्वयं स्वावलम्बी होने के लिए जी तोड़ परिश्रम कर रहा है। शनैः शनैः वस्त्रों के निर्यात व्यापार में कमी होती जा रही है। समाजवादी देश और विशेष कर चीन घोर प्रतिस्पर्द्धा कर रहे हैं। जापान, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, और पाकिस्तान तक भी इस क्षेत्र में आ गये हैं और भारत के बाजार छीन रहे हैं। इन्टरनेशनल काटन एडाइवाईजरी कमेटी वाशिंगटन की सम्मति में आगामी दशक घोर प्रतिस्पर्द्धा का दशक होगा। राष्ट्रीय भावना के विकास के साथ साथ प्रत्येक अनुन्नत देश स्वावलम्बन की दिशा में आगे बढ़ना चाहता है। फिर ब्रिटेन स्वयं कामन मार्केट में शामिल होकर भारत के निर्यात व्यापार को नुकसान पहुँचाएगा। इसलिए यह आवश्यक है कि दीर्घ कालीन नीति अपनाते समय हम यह ध्यान में रखें कि हम निर्यात को अपनी उन्नति का चिरकाल तक आधार नहीं बना सकते। इसीलिए हमें अपनी भावी योजनाओं पर केवल निर्यात के लिए विपुल-राशि व्यय करने से पूर्व अच्छी तरह सोच समझ लेना चाहिए।

## उद्योग प्रदर्शनी

इन दिनों दिल्ली में विशाल उद्योग प्रदर्शनी हो रही है। इसका कुछ परिचय पाठक प्रदर्शनी-परिशिष्ट में पढ़ेंगे। अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मण्डल का इस दिशा में यह दूसरा भारी कदम है। इस प्रदर्शनी से भारतवर्ष के शासकों, उद्योगपतियों और शिक्षित जनता को यह मालूम होगा कि दूसरे देश कितनी प्रगति कर रहे हैं और भारत वर्ष को कितनी अधिक प्रगति करनी है। पिछले दशक में भारत ने भी असाधारण प्रगति की है, इसका भी कुछ परिचय इस प्रदर्शनी में मिलेगा। भारत की औद्योगिक प्रगति का पूर्ण श्रेय सार्वजनिक और निजी क्षेत्र दोनों को मिलना चाहिए, इसकी कुछ झांकी भी इस प्रदर्शनी में मिलेगी। हमें किसी तरह निराश होने की आवश्यकता नहीं। फिर भी इस प्रदर्शनी से हमें यह मालूम होगा कि अभी हमें और कितना आगे बढ़ना है। हम अ० भा० उद्योग व्यापार मण्डल को इस महान् कार्य के लिए बधाई देते हैं। ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## उज्ज्वलतम कार्य

तीसरी योजना का सबसे उज्ज्वल पक्ष वह आदेश पत्र है, जिस में केन्द्रीय सरकार ने राज्य सरकार और केन्द्र-शासित क्षेत्र-शासनों से कहा है कि वे तीसरी योजना के अन्त तक देश भर में पूर्ण-मद्य-निषेध के लिए कार्यक्रम बनाएं। इस सम्बन्ध में केन्द्रीय मद्य-निषेध समिति ने इस साल सितम्बर में सिफारिश की थी। उसी की सिफारिश पर यह कदम उठाया गया है। राज्यों से कहा गया है कि वे इस महीने के अन्त तक अपने कार्यक्रम भेज दें। तब समिति दिसम्बर में इन कार्यक्रमों पर विचार करेगी। अभी तक राज्य इस भय से इस दिशामें कदम नहीं उठाते थे कि राज्य की आय में बहुत कमी हो जायगी।

योजना मंत्री, श्री गुलजारीलाल नन्दा ने भी राज्यों को लिखा है कि मद्य-निषेध से तीसरी योजना में यदि उन्हें अनुमान से कम उत्पादन कर मिलेगा तो उस कमी का आधा केन्द्रीय सरकार पूरा करने को तैयार है। उक्त समिति ने यह भी सुझाव दिया है कि भारत सरकार नमूने के लिए मद्य-निषेध कानून का मसौदा तैयार करे। समिति ने केन्द्रीय सरकार और राज्य-सरकारों से कहा है कि यदि कुछ मौकों पर उनके कर्मचारी शराब पीते हैं, तो उसे दुराचरण घोषित किया जाए। समिति ने कहा है कि तीन साल के अन्दर अर्थात मार्च १९६४ के अन्त तक गांजे का उपयोग (चिकित्सा के अलावा) पूर्णत: बन्द कर दिया जाना चाहिए। इसके लिए हर साल गांजे की खेती के क्षेत्रफल में कमी की जाए और इस समय एक व्यक्ति को जितना गांजा रखने का अधिकार है, उसे धीरे-धीरे कम किया जाए। इसी प्रकार भांग की खेती में भी धीरे-धीरे कमी की जाए, जिससे तीसरी योजना के अन्त तक भांग केवल चिकित्सा के ही लिए उपयुक्त हो सके।

वस्तुतः राज्य सामूहिक रूप से आर्थिक विकास की दिशा में विचार करते हुए उस व्यक्ति को भूल जाता है, जिस पर ही राज्य का अस्तित्व निर्भर करता है। उसकी नैतिक हानि के साथ-साथ आर्थिक हानि का भी मद्यपान प्रधान कारण है। किसी कल्याणकारी राज्य में इसकी उपेक्षा करना भयंकर अपराध है। इसीलिए सरकार के मद्यनिषेध प्रयत्न को हमने तीसरी योजना का उज्ज्वलतम पक्ष कहा है।

## यंत्रीकृत कृषि से बेकारी

अमेरिकन खेतों और फार्मों में मशीनरी के अधिकाधिक प्रयोग ने वहां भी समस्या उत्पन्न करदी है। फसल काटने के जिस काम को २० आदमी करते थे, अब ४००० डालर की एक मशीन द्वारा एक ही आदमी उसे कर लेता है। चुकन्दर की खेती में ५००० डालर की नई मशीन दो पंक्तियों को खोद देती है, मिट्टी को ऊपर फेंक देती है, चुकन्दर को उठाकर ट्रफ में डाल देती है। इस मशीन से ५० आदमी बेकार हो जाते हैं। १२००० डालर की एक मशीन दो आदमियों की सहायता से उस फसल को काट देती है, जिसे काटने के लिए ७० आदमी लगाते थे। इन मशीनों के प्रयोग के बाद भूमिपतियों के सामने मजदूर इकट्ठा करने, उन्हें खेतों पर लाने या उनके लिए मकान बनाने की समस्याओं को हल कर लिया है। मशीनों पर अब अधिक दक्ष श्रमिक की आवश्यकता-अनुभव की जाने लगी है। जो भूमिपति खर्चीली मशीने नहीं खरीद सकते, वे भी इन मशीनों को किराये पर लेकर मजदूरी का खर्च बचा लेते हैं, किन्तु इन सबसे बेकारी की जो भीषम समस्या उत्पन्न हो रही है, उसका समाधान कैसे होगा? भारत की कृषि का यंत्रीकरण व ट्रैक्टरीकरण भी क्या यह समस्या उत्पन्न नहीं करेगा? नई मशीनरी कितने किसानों व कृषि श्रमिकों को बेकार करेगी, इसका कुछ अनुमान उद्योग प्रदर्शनी में दिखाई जाने वाली मशीनों से थोड़ा बहुत हो सकता है। क्या हम इस पर कुछ सोचेंगे?

## तीसरी योजना में उद्योगपुरियां

तीसरी योजना में १०० सहकारी उद्योगपुरियां खोली जाएंगी। इन उद्योगपुरियों के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त करने के बारे में बातचीत चल रही है। इस समय सहकारी उद्योगपुरियां बहुत कम हैं। इन उद्योगपुरियों के लिए छोटे उद्योगपतियों को कुल हिस्सा पूंजी का २० प्रतिशत जुटाना होता है और शेष राज्य सरकारें लम्बी अवधि के लिए ऋण के रूप में देती हैं। तीसरी योजना के छोटे उद्योगों



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ग्राम उद्योगों को बढ़ाने के कार्यक्रमों में उद्योगपुरियों को विशेष महत्व दिया गया है। १९५९-६० के अन्त में देश भर में ३० हजार उद्योग सहकारियां थीं, जबकि १९५७-५८ के अन्त में इनकी संख्या २० हजार थी। सबसे अधिक उद्योग सहकारियां बुनकरों की हैं। इन सहकारियों की संख्या ११,००० से अधिक है। ९,००० से अधिक सहकारियां खादी और ग्राम उद्योगों की हैं। उद्योग सहकारियों को बढ़ाने के लिए इधर इन्हें आर्थिक सहायता देने की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। इन सहकारियों को सहकारी बैंकों की मार्फत सरकारी ऋण दिये जाते हैं। उद्योग सहकारियों के सदस्यों को हिस्सा पूंजी के लिए ऋण देने का कार्यक्रम शुरू किया गया है। इन ऋणों को आसान किश्तों में अदा किया जाता है।

उद्योगपुरियों के इतिहास का अध्ययन करने से पता लगता है कि १९वीं सदी के अन्त में पश्चिमी यूरोप व अमेरिका में उद्योग के निर्माण, सेवा और संगठन के लिए एक नयी पद्धति प्रयोग में लाई जाने लगी है। अनेक छोटे-छोटे उद्योग अपनी बिजली, वेल्डिंग, परिवहन गली सड़कें, निर्माण आदि की सेवाएं एक साथ उपलब्ध कर सकें, इसलिए अनेक संगठन बनाये गये। उन्होंने एक विस्तृत क्षेत्र को विभिन्न उद्योगों के लिए छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त किया और उन्हें उक्त सुविधाएं एक साथ देने की व्यवस्था की। इटली में भी यह व्यवस्था अपनाई गई। सबसे पहली उद्योगपुरी ब्रिटेन के मांचैस्टर में १८९६ ई० में बनाई गई। इसके तीन वर्ष बाद शिकांगो (अमेरिका) में उद्योगपुरी स्थापित हुई। इटली में पहली उद्योगपुरी १९०४ में बनाई गई। लेकिन बहुत वर्षों तक इस दिशा में कोई खास प्रगति नहीं हुई। दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति पर ब्रिटेन में नये उद्योग शीघ्र से शीघ्र खोलने के लिए उद्योगपुरियों की स्थापना होने लगी। अमेरिका में और भी अधिक तेजी से उद्योगपुरियां बनने लगीं। १९५९ तक वहां १००० उद्योगपुरियां बन चुकी थीं। अन्य देशों ने भी अधिक उत्साह से ऐसी पुरियां बनाने की ओर ध्यान दिया।

अनुन्नत देशों में पर्टोरिको तथा भारत ने इस दिशा में सबसे पहले कदम उठाया। भारत में प्रायः सभी राज्यों ने इधर ध्यान दिया है। इन पुरियों में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र दोनों ने अनेक उद्योग स्थापित किये हैं। सरकार इन पुरियों के निर्माण की सब आवश्यक, सुविधाएं उत्पन्न करती है, विभिन्न टुकड़े, सड़कें, गली, पानी और बिजली आदि की व्यवस्था सभी सरकार करती है। किन्तु केवल उद्योगपुरियों की स्थापना मात्र काफी नहीं है। देखना यह भी है कि इन पुरियों में स्थापित उद्योग ठीक काम करते हैं या नहीं। ओखला की उद्योगपुरी की जांच-पड़ताल से मालूम होता है कि वहां स्थापित ३१ उद्योगों में से केवल ४ उद्योग ही अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग कर रहे हैं। क्षमता का पूर्ण उद्योग न होने के अनेक कारण बताये जाते हैं—पूंजी की कमी, कच्चे माल की दुर्लभता, बिजली व दक्ष कर्मचारियों की कमी और बाजार में माल की मांग में कमी आदि। यदि इन कमियों को दूर कर दिया जाय, तो ८०० अधिक कर्मचारियों को वहां रोजगार मिल सकता है और प्रति व्यक्ति विनियोजन की मात्रा ४५०० रुपये से घटाकर ३००० रु० की जा सकती है। कुछ अर्थ शास्त्रियों की सम्मति में तीसरी योजना की अवधि में नई-नई उद्योग-पुरियों की स्थापना से पूर्व वर्तमान उद्योगपुरियों की त्रुटियों को दूर करना अधिक आवश्यक है, ताकि इनमें स्थापित क्षमता का पूर्ण उपयोग किया जा सके।

## उद्योगों का विकेन्द्रीकरण

इण्डियन चैम्बर आफ कामर्स के अध्यक्ष श्री शान्ति-प्रसाद जैन ने पिछले सप्ताह औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने पर विचार प्रकट करते हुए कहा है कि हमें दो बातों पर विशेष रूप से ध्यान देना होगा। पहली बात तो यह कि उत्पादन-व्यय यथा संभव कम हो और दूसरी बात यह कि सीमित विदेशी मुद्रा का अधिकतम उपयोग किया जाय। वस्तुतः यदि हमें अन्तर्राष्ट्रीय बाजार की प्रतिस्पर्धा में ठहरना है, तो उत्पादन व्यय में कमी अनिवार्य है। परन्तु इसके लिए उन्होंने कहा है कि देश में उद्योगों के विकेन्द्रीकरण की नीति बाधक सिद्ध होगी। कोयला, लोहा, परिवहन तथा अन्य अनेक सुविधाएं आज जिन केन्द्रों में उपलब्ध हैं, उनसे भिन्न स्थानों में उन्हें स्थापित करने से उत्पादन व्यय

( शेष पृष्ठ ५३४ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# १५ वर्ष बाद प्रति व्यक्ति की आय दुगनी होगी

श्री जी० एस० पथिक

राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति की आय के क्षेत्र में भारत काफी पिछड़ा हुआ है। अपनी सामाजिक और पारिवारिक व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन किये बिना हम अपनी आय नहीं बढ़ा सकते हैं। किसी देश की अर्थव्यवस्था कैंची के दो फलकों के सदृश होती है। वह कैसे? विद्वान् लेखक का विवेचन पठनीय है—

दूसरी पंच वर्षीय योजना में यह बताया गया था कि अर्थ-व्यवस्था का विकास तीन तत्वों पर निर्भर है—जन-संख्या की वृद्धि, विनियोजन के लिए समाज की बचत और पूंजीगत उत्पादन राशि की दर। तब इन अनुमानों के आधार पर यह सुझाव दिया गया था कि यह सम्भव होगा कि देश की राष्ट्रीय आय में वृद्धि १९६७-६८ तक दुगनी हो जाए। और १९७३-७४ तक प्रति व्यक्ति की आय में दुगनी वृद्धि हो गए।

सन् १९५०-५१ में राष्ट्रीय और प्रति व्यक्ति की आय १९६०-६१ के मूल्य के स्तर पर १०२४० करोड़ रुपए और २८४ रुपए क्रमशः थी। इसका अर्थ यह है कि उक्त लक्ष्य तक पहुँचने के लिए १९६७-६८ तक राष्ट्रीय आय में २०४८० करोड़ रुपए और १९७३-७४ तक ५६८ रुपए की वृद्धि करनी चाहिए। इस प्रकार प्रति व्यक्ति की आय दुगनी करने के लिए राष्ट्रीय आय २७५४८ करोड़ रुपए की वृद्धि पाए।

१९५०-५१ के राष्ट्रीय आय के स्तर को १९६७-६८ में दुगुना करने के लिए १९६१-६२ से १९६७-६८ के काल में जनसंख्या की वृद्धि ५.०५ प्रतिशत वार्षिक दर से अधिक न हो। यह कठिन काम नहीं है। तीसरी योजना के काल में जनसंख्या की वृद्धि में ५.५५ की वृद्धि का सुझाव पहले से रखा गया है, जिससे १९५०-५१ में जो राष्ट्रीय आय थी, उससे दुगुनी से भी अधिक हो जाएगी।

मगर वृद्धि की इस दर से १९७३-७४ तक प्रति व्यक्ति आय दुगुनी न हो पाएगी, क्योंकि १९५६ में जन-संख्या की वृद्धि का जो अनुमान लगाया गया, वह पूर्ण रूप से गलत निकला।

## जनसंख्या का अनुमान

(दस लाख में)

| वर्ष | दूसरी योजना का अनुमान | १९६१ की जन गणना का अनुमान (व्यवस्था) |
|---|---|---|
| १९६१ | ४०८ | ४३८ |
| १९६६ | ४३४ | ४९२ |
| १९७१ | ४६५ | ५५५ |
| १९७३-७४ | ४८६ (करीबन) | ६०० |
| १९७६ | ५०० | ६२५ |

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें अधिक प्रयत्न करने की आवश्यकता है। सन् १९७३-७४ में अनुमानित ६० करोड़ की जनसंख्या के आधार पर राष्ट्रीय आय में ३४१०० करोड़ रुपए की वृद्धि होना आवश्यक है जिससे प्रति व्यक्ति की आय दुगुनी हो सके। इसका अर्थ यह है कि १९६०-६१ की १४५०० करोड़ रुपए की आय में १.३५ प्रतिशत से ऊपर वृद्धि हो, या १९७३-७४ के अन्त तक १३ वर्षों में वार्षिक वृद्धि १.८ प्रतिशत हो।

## राष्ट्रीय आय में वृद्धि

तीसरी पंचवर्षीय योजना में यह अनुमान लगाया गया है कि योजना में जितने कार्यक्रम रखे गए हैं, यदि वे समय पर पूरे हुए तो १९६०-६१ के मूल्य के स्तर पर राष्ट्रीय आय ३४ प्रतिशत बढ़ेगी। मगर इससे पहले योजना के विवेचन में यह कहा गया है कि अनेक कठिन



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिस्थितियों को हल करना पड़ेगा। उन सब में सबसे कठिन काम पूरे विनियोजन का है।

अतः जो स्रोत सोचे गए हैं, उन सब को एकत्र करने के लिए यह कहा गया है कि जो कमी पड़े, उसे कम किया जाए। वर्तमान अनुमान के आधार पर तीसरी योजना के काल में राष्ट्रीय आय में करीब ३० प्रतिशत की वृद्धि हो, अर्थात् १९६०-६१ के मूल्यों के आधार पर करीब १४५०० करोड़ रुपए, दूसरी योजना के अन्त में हो और तीसरी योजना के अन्त में १९००० करोड़ रुपए हो।

राष्ट्रीय आय में १४००० करोड़ रुपए से १९००० करोड़ रुपए होने का अर्थ यह है कि ३० प्रतिशत की अपेक्षा ३१ प्रतिशत की वृद्धि हो। अर्थात्, तीसरी योजना के काल में ५.५५ प्रतिशत वार्षिक वृद्धि हो। वृद्धि के इस अनुपात से १९७६-७७ में प्रति व्यक्ति आय दुगुनी होगी, और राष्ट्र अपने लक्ष्य से दो वर्ष पीछे रह जाएगा। लक्ष्य की प्राप्ति तब होगी, जबकि वृद्धि की वार्षिक दर ६.२ प्रतिशत हो, अगले वर्षों में इस अनुपात से वृद्धि होनी चाहिए। स्थायी मूल्य के आधार पर २२ वर्षों में या १९७३-७४ में प्रति व्यक्ति की आय दुगुनी होगी। यह बड़ी आकांक्षा का लक्ष्य है। भारत की अपेक्षा अन्य कई अविकसित देशों में इससे भी ऊंची वृद्धि की दर रही है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए जितने विनियोग की आवश्यकता है, उसकी रूप रेखा इस प्रकार है :—

| वर्ष | राष्ट्रीय आय (करोड़ रुपए) | राष्ट्रीय आय में वार्षिक वृद्धि (करोड़ रुपए) | एक यूनिट के उत्पादन के लिए पूंजी की आवश्यकता | विनियोजन की आवश्यकता (करोड़ रुपए) | राष्ट्रीय आय के प्रतिशत में विनियोजन |
|---|---|---|---|---|---|
| १९६०-६१ | १४.५०० | | | | |
| १९६१-६२ | १५.४८६ | ९८६ | २.१० | २००० | १३.४ |
| १९६२-६३ | १६.५३९ | १०५२ | २.२० | २३१६ | १४.० |
| १९६३-६४ | १७.६८३ | ११२४ | २.३० | २५८५ | १४.६ |
| १९६४-६५ | १८.८६४ | १२०१ | २.४० | २८८२ | १५.३ |
| १९६५-६६ | २०.१४६ | १२८२ | २.५० | ३२०५ | १५.९ |
| १९६६-६७ | २१.५१६ | ३३७० | २.६० | ३५८२ | १६.६ |
| १९६७-६८ | २२.९७९ | १४६३ | २.७० | ३९५० | १७.२ |
| १९६८-६९ | २४.५४२ | १५६३ | २.८० | ४३७६ | १७.८ |
| १९६९-७० | २६.२११ | १६६९ | २.८६ | ४७७३ | १८.२ |
| १९७०-७१ | २७.९९३ | १७८२ | २.९२ | ५२०३ | १८.६ |
| १९७१-७२ | २९.८९६ | १९०३ | २.९८ | ५५६१ | १९.० |
| १९७२-७३ | ३१.९२९ | २०३३ | ३.०४ | ६१८० | १९.४ |
| १९७३-७४ | ३४.१०० | २१७१ | ३.१० | ६७३० | १९.७ |

पूंजीगत उत्पादन २.३०:१, २.८०:१ और ३.००:१ का अनुमान तीसरी, चौथी और पांचवी योजनाओं में किया गया है। तीसरी योजना के काल में आरम्भ के कुछ वर्षों में प्रति यूनिट उत्पादन के लिए पूंजी की आवश्यकता कम होगी, क्योंकि दूसरी योजना के काल में जो उद्योग खड़े किए गए हैं, इन वर्षों में विनियोजन के लिए उनका लाभ मिलेगा। यहां पूंजीगत उत्पादन का जो अनुमान दिया गया है, उस आधार पर १९६०-६१ की राष्ट्रीय आय का १३.४ प्रतिशत विनियोजन होना चाहिए और इस प्रतिशत में १९६५-६६ में १५.९, १९७०-७१ में १८.६, १९७३-७४ में १९.७ की वृद्धि हो। विनियोजन और बचत की इन दरों से अगले १३ वर्षों में प्रतिव्यक्ति ४.० और ४.५ प्रतिशत प्रति वर्ष बढ़ेगी। राष्ट्रीय खपत ६.० से ६.५ प्रति वर्ष होगी और प्रति व्यक्ति खपत ३.३ से ३.८ प्रतिशत प्रति वर्ष होगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## पारिवारिक पूंजी का निर्माण

राष्ट्रीय आय जनसंख्या पर प्रति व्यक्ति आय का आधार रखती है। प्रति व्यक्ति आय का बढ़ना राष्ट्रीय आय और आबादी पर निर्भर है। राष्ट्रीय आय विनियोजन और पूंजीगत उत्पादन के अनुपात पर निर्भर है। विनियोजन बचत और विदेशी सहायता पर निर्भर है। अतः प्रति व्यक्ति आय के बढ़ने के मूल्य आधार विदेशी सहायता, बचत, आबादी और पूंजीगत उत्पादन के अनुपात है। विदेशी सहायता सहायता देने वाले राष्ट्र और सहायता पाने वाले देश के राजनीतिक वातावरण पर निर्भर है। आज के जगत में राजनीतिक वातावरण बहुत अधिक अस्थिर है। भारत की विदेशी नीति कब कौन-सा मोड़ ले, क्या बोल दे और सहायता देने वाले किसी देश का रुख कब बन बिगड़ जाए, इसका कोई ठीक नहीं है। फिर भी विदेशी सहायता पाने में जो प्रयत्न किये गए, और अब तक जो अनुकूल वचन मिले, उससे यह कहा जा सकता है कि तीसरी योजना में हमारी राष्ट्रीय आय के २.५ प्रतिशत के स्तर में अगले पांच वर्षों तक विदेशी सहायता प्राप्त होगी। चौथी और पांचवीं योजना में इस प्रतिशत से अधिक सहायता की आकांक्षा करना बुद्धिमानी नहीं होगी। जैसा कि हमने कहा १९६१-६२ में राष्ट्रीय आय के अनुपात में बचत १०.९ प्रतिशत होगी और १९७३-७४ तक उसमें १७.२ प्रतिशत वृद्धि होनी चाहिए। यह कोई भारी बोझ नहीं है। इन बचतों के सिवाय प्रति व्यक्ति खपत में ३.३ से ३.८ प्रतिशत प्रति वर्ष वृद्धि होगी। हम देखते हैं कि घरू उत्पादन के प्रतिशत में असली घरू बचत बर्मा में १४ और इराक में १३ है। पारिवारिक उत्पादन के अनुपात में पारिवारिक पूंजी निर्माण इजरायल में २६, बर्मा में १८, यूनान में १७ और चीन (ताइवान) में १७, थाइलैंड में १६, इराक में १५, टर्की में १४, गणतंत्र कोरिया में १३, मिस्र में १२, घाना में ११ है, किन्तु भारत में केवल ८ है।

## सोने से इतना प्रेम क्यों ?

दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्रों के पारिवारिक बजट की जांच से यह अनुमान लगाया गया है कि प्रत्येक घर के कुल औसत व्यय का ५.६० प्रतिशत त्यौहारों और रीति-रिवाजों के पालन में व्यय हुआ। डाक्टर वी० के० आर० वी० राव ने अनुमान लगाया कि तीसरी योजना के लिए ७८० करोड़ रुपए प्राप्त किए जा सकते हैं, यदि उत्सवों आदि के मनाने में व्यय कम किया जाए। भारत में लोगों के पास ३००० करोड़ रूपए का सोना जमा है। यदि उसका उपयोग राष्ट्र के उत्पादन में हो, तो इसका अर्थ यह है कि हमारी राष्ट्रीय आय में १२०० करोड़ रुपए की वृद्धि हो। किन्तु जन साधारण में उस चेतना का अभाव है। इस देश में सोना चांदी का विशेष उत्पादन नहीं है, फिर भी सरकार की छत्रछाया में उसका फाटका होता है। उसकी आमद अधिक न होने पर लोग पहले की तरह सोने-चांदी के जेवर बनाने से वंचित रहते हैं, किन्तु शादी विवाह के अवसर पर सभी लोग खरीद करते हैं। यदि सरकार बाजार से सोना खींचे, तो उसे अधिक दाम देने पड़ेंगे। ऊंचे दाम होने पर जमा हुआ सोना निकल सकता है। अन्यथा सोने की जप्ती होने पर संघर्ष खड़ा होने का भय है। लोकतंत्र के ढांचे में न तो सरकार प्रजा से सोना पा सकती है, और लाल चीन की तरह सब को विकास योजनाओं में लगा सकती है। लाल चीन में लोकतंत्र न होने पर उसका आर्थिक विकास भारत से कई गुना अधिक हुआ। एकाधिकार शासन वाले देशों के लिए यह आसान है कि वे लोगों को अमुक बचत करने के लिए मजबूर करें। पर लोकतंत्र शासन में यह कदम कानून बनाने पर निर्भर रहता है। फिर उससे जो आय होगी, उसका बड़ा भाग उसकी वसूली में व्यय होगा। किन्तु किसी रूप में ऐसा नियम होना चाहिए। यही हो कि रीति रिवाजों के पालन पर कर लगे, तो अपव्यय कम हो सकता है, और तब वह बचत उत्पादन में लग सकती है। यह आवश्यक है कि बचत के लिए जन मत तैयार किया जाए, लोगों में चेतना पैदा की जाए कि वे अपव्यय न करें। स्त्रियों पर प्रभाव डाला जाए कि वे कम आभूषण धारण करें। ग्राम पंचायतें और भारत सेवक समाज और सर्वोदय संघ इन दिशाओं में उपयोगी काम कर सकते हैं। यदि सर्वोदय संघ सिनेमा के पोस्टर और स्त्रियों की पोषाकों के विरोध में अपनी शक्ति न लगा कर इस काम में समय दें, तो वह ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ा काम करने में समर्थ होगा। उसके संगठन

[ शेष पृष्ठ ५२५ पर ]



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत एक और अखण्ड है, वह अखण्ड ही रहेगा

**आचार्य विनोबा**

●

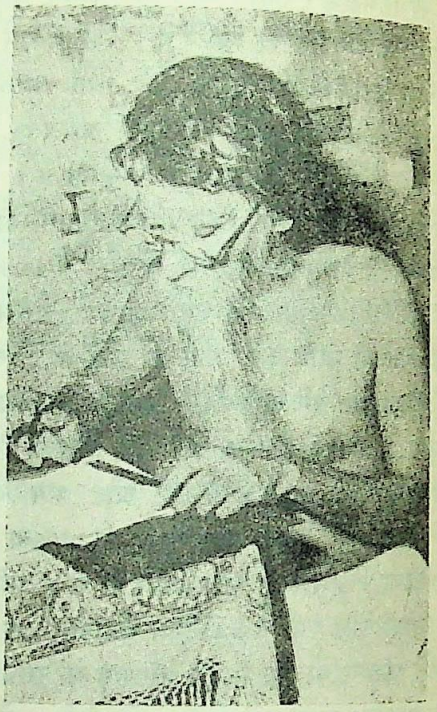

काशी की गंगा का पानी लेकर रामेश्वर को अभिषेक करते हैं और रामेश्वर का पानी लेकर काशी में विश्वेश्वर को अभिषेक करते हैं। भारत की एकता के लिये यह सब किया जाता है।

मलबार के शंकराचार्य ने कन्याकुमारी में जन्म पाया पर अखिल भारत में यात्रा की। वे असम भी आये थे कामाख्या के दर्शन के लिये। उन्होंने यहाँ के वैष्णवों से चर्चा की थी। वे श्रीनगर में भी गये थे। उनकी समाधि कैलाश में है। इतना बड़ा अखिल भारतीय व्यक्तित्व था। असम के महाप्रभु शंकरदेव बारह वर्ष भारत में घूमे व भारत-दर्शन के लिये घूमे, जिसे आज 'इमोशनल इंटीग्रेशन' (भावात्मक एकता) कहते हैं। उन्होंने संस्कृत में 'भक्ति रत्नाकर' नाम का एक ग्रंथ लिखा है। उसमें 'भारत भाग्य प्रशंसा' नामक एक अध्याय है उसमें संस्कृत के उद्धरण दिये हैं।

"गायन्ति देवाः किल गीतकानि
धन्यास्तु ते भारत जन्मभूमिः।"

हिन्दुस्तान एक नहीं होता तो अंग्रेज उसके टुकड़े कैसे करते? लेकिन उनकी नीति थी टुकड़े करने की। पाकिस्तान, ब्रह्म-देश-जितने कर सकते थे उतने टुकड़े किये! राजा-महाराजाओं को भी अलग रहने की सहूलियत दी। लेकिन यह भारत की महिमा है कि आजादी के बाद राजा-महाराजा अलग नहीं रहे।

अब हम आजाद भारत में हैं, तो अंग्रेजी का वातावरण वैसा ही बना रखा है तो 'क्विट इंडिया' (भारत छोड़ो) के बदले 'रिटर्न इंडिया' (भारत लौट आओ) कहना होगा।

—कितनी मेहनत से हमने भारत को एक बनाया है! हजारों वर्षों से तपस्या इसके लिए हुई है। बाल्मीकी ने एक श्लोक में राम का वर्णन किया है, उसी एक श्लोक में सारे भारत का वर्णन आता है। राम एक राष्ट्रपुरुष थे, उनके गुण कैसे थे :—

"समुद्र इव गाम्भीर्ये, स्थैर्ये च हिमवानिष"।

गम्भीरता में वे समुद्र जैसे हैं और स्थिरता में हिमालय जैसे—आधे श्लोक में पूरा भारत खड़ा कर दिया। समुद्र से हिमालय—आसेतु हिमाचल—तक हमने एक देश माना और बनाया इसके ये दो बड़े गुण "सिम्बालिकल"—सांकेतिक हैं। समुद्र की गंभीरता व हिमालय की स्थिरता दोनों मिलकर भारतीयता होती है। परमेश्वर हम में ये दो गुण स्थिर करे। इसलिए हम घूम रहे हैं, गांव-गांव में समझा रहे हैं, "तुम एक बनो और नेक बनो," दस साल पहले किसी ने मुझ से संदेह मांगा था—तो मैंने यही दो शब्द कहे थे—एक बनो और नेक बनो।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जन-कल्याण की बलिवेदी पर प्रलयंकारी विनाश

एक ओर संसार में अभाव, गरीबी, भूख, अशिक्षा, बीमारी का राज्य है, तो दूसरी ओर मानवजाति के विनाश और प्रलय की लीला के लिए अरबों व खरबों रुपया पानी की तरह बहाया जा रहा है।

## पिस्तौल दिखाकर शान्ति

विश्व के सभ्य कहे जाने वाले देश आज घातक और संहारक शस्त्रों को बनाने की जबरदस्त होड़ कर रहे हैं। अमेरिका और रूस दोनों, इस क्षेत्र में, एक दूसरे को पछाड़ने में लगे हुए हैं। दूसरे महायुद्ध के बाद कई निःशस्त्रीकरण सम्मेलन हो चुके हैं, कभी मंत्रियों के स्तर पर और कभी "शिखर सम्मेलन" के रूप में, पर उनके परिणाम, साबुन की झाग के समान, निराशाजनक ही निकले हैं। "हाथ में पिस्तौल लेकर शान्ति स्थापना"—यही रुख इन दोनों गुटों के प्रत्येक राष्ट्र ने अपनाया हुआ है।

पर इन प्राण घातक और सर्व संहारक शस्त्रों के बनाने में कितना खर्च होता है और अगर उसी राशि से जन-कल्याण के काम किये जाएं तो वे कितनी मात्रा में और किस स्वरूप तक हो सकते हैं—यह सोशलिस्ट कांग्रेसमैन में दी गई नीचे की तालिका से स्पष्ट हो जाएगा। पाठक देखेंगे कि अगर आज दोनों गुटों के देश सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण अपना लें—जैसा भारत ने कई बार कहा है—तो विश्व में से अज्ञान, अकाल, गरीबी, बीमारी, इत्यादि कष्ट बड़ी मात्रा में समाप्त हो जाएंगे और मानव जाति का अपरिमित कल्याण हो जाएगा।

| अगर हथियार बनाये जाएं | | अगर सेवा कार्य किये जाएं |
|---|---|---|
| फौजी सामान | लगभग मूल्य मिलियन डालर | इसके समतुल्य जन कल्याण कार्य मिलियन डालर |
| १. बॉम्बर (बी० ७०) | १५-२० | ५०० स्कूल—कमरे, फी कमरा ४०.००० |
| २. हैवी बॉम्बर (बी० ४२) | ८.५ | २१३ स्कूल—कमरे, फी कमरा ४०.००० |
| ३. डिस्ट्रायर | २७ | ९ स्कूल—इमारतें, फी इमारत ३ |
| ४. गाइडेड मिस्साइल डिस्ट्रायर | ३६ | १० स्कूल—इमारतें, फी इमारत ३.३ |
| ५. अणु शक्ति सहित हवाई जहाज ले जाने वाला | ३१४ | ९५ स्कूल—इमारतें, फी इमारत ३.३ |
| ६. पेसिफिक एअर मिस्साइल रेंज | ५.००० | १५०० स्कूल—इमारतें, फी इमारत ३.३ |
| ७. बॉम्बर (बी० ३६) | १.५ | ३०० अध्यापक, वार्षिक वेतन ५.००० |
| ८. गोला बारूद का जहाज | १९ | १,९००० अध्यापकों की वेतन वृद्धि प्रत्येक का वेतन—१००० की दर से |
| ९. डिस्ट्रायर एस्कॉर्ट | २० | ४० साजो सामान और देखरेख सहित खेलके मैदान, प्रत्येक ५००.०००, मिलियन डालर का |
| १०. एटलस मिस्साइल, अणु शक्ति | १.५ | ३ पुस्तकालय, प्रत्येक ५००.०००, का मिलयन डालर का |
| ११. अणु शक्ति सहित पनडुब्बी | ४७-५० | १० अस्पताल प्रत्येक ५ मिलियन डालर का |
| १२. पोलारिस पनडुब्बी | ८५-१०५ | २३ अस्पताल प्रत्येक ४ मिलियन डालर का (१६० बिस्तर प्रत्येक में) |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# श्रम समस्या के कुछ समाधान

श्री वी० वी० गिरि, राज्यपाल, केरल

"योरुप का मजदूर दिन भर काम करके थक जाता है तो रात में शराब पीता है, हिन्दुस्तान का मजदूर दिन भर काम करके थक जाता है तो रात में भजन करता है।"

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

देश की आज की अर्थ व्यवस्था में "मजदूर" ने एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है। इसकी समस्याएं लगातार बढ़ रही हैं और इनका हल करने लिए अधिक से अधिक प्रयत्न हो रहे हैं। क्योंकि अब "मजदूर" औद्योगिक पद्धति का एक अंग बन गया है। पर "मजदूर" की सब समस्याएं एक केन्द्र बिन्दु के चारों ओर घूमती है। यह है "मजदूर संघ आन्दोलन।" इस बात को अब मान लिया गया है कि औद्योगिक लोकतंत्र और राजनीतिक लोकतंत्र—दोनों में ठीक ढंग से समन्वय और सन्तुलन पैदा करने के लिए "मजदूर संघ आन्दोलन" का ठीक समुचित दिशा में विकास होना चाहिए। हमारी योजनाओं की सफलता, बहुत कुछ श्रमिकों के उत्साह, उनकी स्फूर्ति, प्रेरणा व संगठन पर निर्भर करती है।

यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि हमारी औद्योगिक नीति तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक सम्बद्ध पक्ष—मजदूर, मालिक, सरकार और जनता—सुदृढ़ मजदूर संगठन आन्दोलन के महत्त्व को नहीं समझ लेते और सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था में इसका क्या स्थान है—यह बात नहीं जान लेते। इसके बाद मजदूर के स्वार्थों की रक्षा और उत्पादन के लक्ष्यों की पूर्ति हो सकती है।

मजदूर संगठन आन्दोलन में आज कई रुकावटें हैं। दूसरी पंचवर्षीय योजना में इनका संकेत इस प्रकार किया गया है—

"मजदूर संगठनों की बहुतायत, राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता, साधनों का अभाव और आम मजदूरों में एकता का न होना।" इन कारणों के साथ मैं यह शब्द और जोड़ दूंगा—मजदूरों में शिक्षा का अभाव, झगड़ों के तय

| | | |
|---|---|---|
| १३. एम्फिबियसशिप | ४० | इस समय अमरीकी सरकार कैंसर की खोज पर जितना खर्च हर साल करती है उससे दुगुना, |
| १४. गाइडेड् मिस्साइल फ्राइगेट | ४९ | एक नया मैडिकल स्कूल—इमारत और साजो सामान सहित |
| १५. अणु शक्ति सहित गाइडेड मिस्साइल फ्राइगेट | १०८ | दो नये मैडिकल स्कूल ५० मिलियन डालर के, इमारत और साजो सामान सहित |
| १६. एअर क्राफ्ट कैरियर फोरेस्टल क्लास | २१४ | अमरीकी सरकार इस समय सब प्रकार की डाक्टरी खोज पर जितना हर साल खर्च करती है, उससे दुगुनी राशि |
| १७. गाइडेड मिस्साइल क्रूजर | १५८ | आधुनिक मकान आयोजन की १५,८०० रिहायशी इकाइयां |
| १८. एअर-टु- एअर मिस्साइल प्रोग्राम (रास्कल) | ३७४ | २६,१५० रिहायशी इकाइयां, १४,३०० मिलियन डालर की |
| १९. नेवी ए-३-जे बॉम्बर | १७.६ | ८८० घर २०,००० मिलियन डालर के |

(श्री हर्षदेव मालवीय के लेख के एक आधार पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में बाहर के साधनों पर जोर, मालिकों की कम सहानुभूति और सरकार की ओर से अपर्याप्त सहायता।

स्वतंत्रता के बाद मजदूरों में किसी प्रकार का भी दुराव और फटाव नहीं होना चाहिए। सब मजदूरों को—चाहे वे खेत-खलिहान व कारखाने में हों—मिलकर एक केन्द्रीय संगठन बना लेना चाहिए ताकि पूरे प्रतिनिधित्व के साथ वे अपनी युक्ति-युक्त मांगें पेश कर सकें। इससे औद्योगिक शान्ति कायम करने में बड़ी सहायता मिलेगी। अब सरकार भी आर्थिक मामलों में अधिक से अधिकतर हिस्सा ले रही है। इस हालत में एक केन्द्रीय संगठन का होना ज्यादा जरूरी है जो मजदूरों का दृष्टिकोण पेश कर सके और केन्द्रीय सरकार की औद्योगिक तथा श्रमनीतियों के निर्माण में प्रबल सहायता कर सके। हमारा लक्ष्य होना चाहिए—"एक उद्योग में एक यूनियन और सब मजदूरों का एक केन्द्रीय संगठन।"

मजदूरों के अधिकार और दायित्व क्या हैं, इस प्रश्न पर मैं कुछ कहना चाहता हूँ। इस बारे में एक मुख्य प्रश्न यह उठाया जाता है कि क्या "हड़ताल" का अधिकार अनिवार्य है? पिछले साल केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों की हड़ताल के बाद से यह प्रश्न खास तौर पर प्रमुखता में आ गया है। मेरा सदा यह विश्वास रहा है कि मजदूर के शस्त्रागार में हड़ताल अन्तिम शस्त्र होना चाहिए और बड़ी कंजूसी के साथ इसका प्रयोग होना चाहिए। मजदूर संगठन के आम मेम्बरों को यह बात खास तौर पर ध्यान में रखनी चाहिए, क्योंकि अक्सर वे भूल से यह समझ लेते हैं कि झगड़े को हल करने का सबसे सरल तरीका "हड़ताल" है।

मेरी व्यक्तिगत सम्मति तो यह है कि हम अशान्ति और बेचैनी को, बहुत कुछ, अच्छे औद्योगिक सम्बन्धों को निभाते हुए, दूर कर सकते हैं। केवल मात्र औद्योगिक शान्ति और औद्योगिक संधि की अपेक्षा यह मार्ग ज्यादा अच्छा है। औद्योगिक सम्बन्धों की स्थिति का देश के चालू राजनीतिक ढांचे के साथ गहरा ताल्लुक होता है। औद्योगिक सम्बन्धों की समस्या का अपरिहार्य ताल्लुक मिलने-जुलने की स्वतंत्रता, सामूहिक सौदा और औद्योगिक विवादों को सुलझाने के तरीकों से है। ये उपाय हैं जिनके द्वारा अच्छे औद्योगिक सम्बन्धों की प्राप्ति हो सकती है।

औद्योगिक सम्बन्ध, मेरी दृष्टि में, मानवीय सम्बन्धों के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। संयुक्त परिवार की तरह इनका आपस में निर्वाह होना चाहिए। इस समय जो कई झगड़े होते हैं, वे मालिक और मजदूर की आपसी वार्त्ता से जल्दी दूर हो सकते हैं। अगर यह वार्त्ता असफल हो जाए तो कुछ सलाहकारों का एक ऐसा पटल बन जाए जिसे उस उद्योग की पूरी जानकारी हो, उससे इन झगड़ों को सुलझाने में सहायता ली जाए। अगर वे सफल न हों तो स्वेच्छा से पंचनामा करने के लिए सरकार व्यवस्था करें। अगर पंचनामा से भी समझौता न हो तो सरकार एक निर्णायक (अम्पायर) नियुक्त कर दे। इस प्रकार कुछ परम्पराएं और ढंग बन जाएंगे जिनसे समझौता अवश्य हो जायगा।

मजदूरी के प्रश्न को लेकर अक्सर विवाद खड़े होते हैं। निःसन्देह भारत में मजदूरी का स्तर बहुत कम है। सरकार को ऐसे कदम उठाने चाहिए जिसमें मजदूर को अधिक वेतन मिले और उसके रहन-सहन की हालत, सामाजिक सुरक्षा, आमोद-प्रमोद, शिक्षा, सेहत, इत्यादि की पूरी व्यवस्था हो।

मालिक, अक्सर कहते हैं कि हम इतना ज्यादा वेतन नहीं दे सकते। इसका उपाय है कि उत्पादन शक्ति बढ़ाई जाए।

मजदूरों को सहयोग प्राप्त करने के कुछ उपाय ये हैं—

(१) बिना किसी संकोच के, मालिकों की ओर से निरन्तर सहयोग का प्रदर्शन।

(२) मजदूर संगठन को मजबूत बनाना।

(३) उचित मजदूरी और जीवन स्तर को ऊंचा करने वाली अवस्थायें।

(४) यह विश्वास देना कि उत्पादन बढ़ने पर मुनाफे में मजदूरों को हिस्सा दिया जायगा।

(५) औद्योगिक मामलों के बारे में मजदूरों में पूरी जानकारी का विस्तार।

(५) नियुक्ति की नीति के बारे में श्रमिकों से परामर्श।

(७) प्रशिक्षण और उन्नति करने के लिए मजदूरों को अवसर दिये जाएं।

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# योजना से अधिकतम आर्थिक विकास

लेः—प्रो० जे० एल० ढोलकिया, रीडर, अर्थशास्त्र विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय

भारत की तीसरी पंचवर्षीय योजना का बुनियादी उद्देश्य अनिवार्यतः निर्धन को श्रेष्ठ जीवन बिताने का अवसर प्रदान करना होना चाहिये। यदि यह उद्देश्य स्वीकार कर लिया जाता है तो फलस्वरूप तीसरी योजना को इस तरह से तैयार किया जाना चाहिए था, जिससे विकास वृद्धि इस अर्थ में हो कि जनता द्वारा इच्छित खपत के सामानों और सेवाओं की मात्रा बढे। जब जनता को उसकी इच्छित वस्तुएं प्राप्त होंगी, केवल तभी श्रेष्ठ जीवन की अवस्थाएं पैदा की जा सकेंगी। लेकिन तीसरे आयोजन की यह योजना संदिग्ध ही दिखाई देती है। इस योजना में भारी उद्योगों तथा मशीन-निर्माण की क्षमता में पूंजी लगाने पर जोर दिया गया है। पूंजीगत सामानों तथा मशीन औजारों सम्बन्धी औद्योगिक प्रवृत्ति, आर्थिक प्रवृत्ति का केवल एक पहलू है। ऐसा कोई सामान्य कारण नहीं है कि इस दिशा में किया गया अत्यधिक व्यय अनिवार्यतया अच्छे जीवन की परिस्थितियाँ पैदा करे। यदि हमारा उद्देश्य, सभी लोगों के अच्छे जीवन के लिए अवसर प्रदान करना है तो कृषि उत्पादकता में वृद्धि, खपत सामानों का निर्माण और खेती तथा खपत सामान उद्योगों के लिए सस्ती मशीनों का निर्माण करना अधिक वांछनीय होगा। लेकिन तीसरी पंचवर्षीय योजना में निर्देशित लागत की पद्धति और मात्रा, भारतीय जनता के जीवनमान को ऊंचा उठाने के बुनियादी उद्देश्य की ओर ढाली ही नहीं गई है।

नियोजित विकास का यह उद्देश्य भी होना चाहिए कि भारत के औसत व्यक्ति की कार्यक्षमता और सामान्य जीवन स्तर में सुधार हो और सामाजिक, वैज्ञानिक तथा तांत्रिक क्षेत्रों में सर्जनात्मक नेतृत्व का अनवरत बहाव जारी रहे। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सार्वजनिक क्षेत्र में भारी पूंजी लगानी होगी। लेकिन तीसरी योजना में तो भौतिक पूँजी में अर्थात् मशीनों में भारी रकम लगाने का प्रस्ताव किया गया है, "मनुष्यों" में नहीं। यदि दुर्लभ लागत साधनों का उपयोग, भौतिक परिसम्पत्तियों के निर्माण में किया जाता है तो फलस्वरूप "मानवपूँजी" में लागत लगाने की ओर दुर्लक्ष्य होगा। यह बात ध्यान रखना जरूरी है कि किसी अर्थ-व्यवस्था में, उत्पादन शक्ति और आर्थिक विकास के बृहद् साधन, मशीनें, सरंजाम और भौतिक पूँजी नहीं, बल्कि समाज के मनुष्यों की रचनात्मक कार्यक्षमता होती है। इसी प्रकार न इस बात पर अत्यधिक जोर दिया जा सकता है कि भौतिक पूँजी में की गई लागत, अधिकतम आर्थिक वृद्धि के उद्देश्य से किये गये कुल व्यय का एक भाग है। इस योजना में, न अधिकतम आर्थिक वृद्धि की और न अच्छे जीवन की व्यवस्था है क्योंकि इसमें मानव श्रम के पूर्ण उपयोग की ओर कम ध्यान दिया गया है।

## रोजगार की अपर्याप्त व्यवस्था

भारत में नियोजन का एक प्रमुख उद्देश्य रोजगार की व्यवस्था भी है। मानव श्रम को एक मूल्यवान साधन के रूप में मानना चाहिए। उसका लगातार अल्प उपयोग त्रुटि-पूर्ण नियोजन का प्रमाण है। तीसरी योजना में रोजगार को प्राथमिकता नहीं दी गई है। उसका उद्देश्य वर्तमान बेरोजगारी की स्थिति को बिगड़ने न देने के अलावा और कुछ नहीं है। तीसरी पंचवर्षीय योजनावधि में रोजगारों का विस्तार, उसी अवधि में कामगरों की बढी हुई संख्या के अनुपात में नहीं होगा। तीसरी पंचवर्षीय योजनावधि में कामगरों की संख्या लगभग एक करोड़ ७० लाख होगी। श्रमिकों की संख्या में प्रविष्ट इन एक करोड़ ७० लाख नये लोगों में से १ करोड़ ५ लाख लोगों को गैर-कृषि कार्य दिये जायेंगे। यह अन्दाज इस मान्यता पर आधारित है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना के विकास कार्यक्रमों के कारण उत्पन्न होने वाले अधिक सीधे रोजगारों के ५६ प्रतिशत परोक्ष रोजगार अवसर वाणिज्य, व्यापार, और परिवहन के क्षेत्र में पैदा होंगे। लेकिन द्वितीय योजना के अनुभव से पता चलता है कि वास्तव में यह मान्यता दुर्बल है। अन्य ३५ लाख रोजगार, कृषि

[ शेष पृष्ठ ५१० पर ]



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थशास्त्र की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका : सम्पदा

## योजना-अंक पर लोकमत

गत १० वर्षों से प्रकाशित यह पत्रिका आर्थिक मामलों की एक प्रमुख उच्च कोटि की पत्रिका है। हिन्दी में आर्थिक विषयों की बहुत कम पत्रिकाएं हैं। तीसरी योजना के सम्बन्ध में, संक्षेप से जानकारी इस अंक में दी गई है।

योजना को सफल बनाने के लिए पहले इसकी पूरी जानकारी की आवश्यकता है। ग्राम सेवकों और जन-सेवकों को तो योजना का पूरा अध्ययन करना चाहिए। इस विशेषांक में एक विशेषता यह भी है कि अन्य देशों की योजनाएं भी संक्षेप में दी गई हैं, जिससे भारत के साथ उनकी तुलना करके जानकारी बढ़ायी जा सकती है। योजना की त्रुटियों और कमियों का भी अच्छा विवेचन किया गया है। सम्पादक महोदय ने प्रारम्भ में विस्तृत टिप्पणी द्वारा योजना के अन्तर्निहित तत्त्वों पर प्रकाश डालते हुए उसकी कुछ खामियों पर ज्ञानवर्द्धक प्रकाश डाला है। यह विशेषांक निःसन्देह, पठनीय, संग्रहणीय और स्थिर साहित्य की उपादेय चीज है।

"ग्राम सहयोगी" साप्ताहिक, फरीदाबाद

### महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

हिन्दी में आर्थिक विषयों के प्रमुख लेखक और पत्रकार श्री जी० एस० पथिक, कलकत्ता से लिखते हैं :—

"सम्पदा की तीसरी योजना का विशेषांक महत्वपूर्ण प्रकाशन है। इसकी रचनाएं अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। योजना पर पूरा प्रकाश डाला गया है। समाज के हर वर्ग के लिए पठनीय है...आपने उस धारणा को भी अपने कर्मठ जीवन से मिटा दिया कि किसी पत्र पत्रिका के प्रकाशन में धनी वर्ग का हाथ होना चाहिए।"

### विद्यार्थियों की बधाई

जे० बी० एस० एम० डिग्री कालेज हरिद्वार में बी० ए० अर्थशास्त्र के विद्यार्थी श्री योगेन्द्रनाथ शर्मा "अरुण" सहर्ष लिखते हैं :—

"तृतीय योजना का विशेषांक देखा और आद्योपान्त पढ़ा।

"मुझे गर्व है कि मैं इस सर्वोत्कृष्ट, अर्थशास्त्र से सम्बन्धित प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई दे रहा हूँ। वस्तुतः योजनाओं का यथार्थ ज्ञान "सम्पदा" के अतिरिक्त अन्य पत्रिका दे रही है, यह मैं नहीं कह सकता।"

### बहुत उपयोगी सामग्री

हिन्दी के अर्थशास्त्र सम्बन्धी मासिक पत्रों में 'सम्पदा' का स्थान बहुत ऊंचा है। समय-समय पर विविध महत्वपूर्ण आर्थिक प्रश्नों पर विशेषांक प्रकाशित करके 'सम्पदा' हिन्दी-भाषियों को बहुत उपयोगी सामग्री प्रदान करती है। प्रस्तुत विशेषांक इस प्रयत्न में 'सम्पदा' का १२ वां विशेषांक है। इसमें देश को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से बनाई गई बृहदाकार तीसरी योजना की नीतियों और उनके सिद्धान्तों पर विवेचनात्मक लेख दिए गए हैं। अर्थशास्त्र के प्रेमी और विद्यार्थी योजना पर विविध दृष्टियों से विचार कर सकें, इसके लिए इसमें अनेक अर्थशास्त्रियों के आलोचनात्मक लेख भी हैं। ग्राफों, चित्रों, तालिकाओं आदि के समावेश से पत्रिका की उपयोगिता और बढ़ गई है।

"योजना" नई दिल्ली, २२ अक्तूबर १९६१

### प्रशंसनीय प्रयास

हिन्दी की एक प्रतिष्ठ मासिक 'सम्पदा' के तृतीय पंचवर्षीय विकास योजना के विशेषांक में विभिन्न पहलुओं, समस्याओं तथा विशेषताओं पर विशद प्रकाश डाला गया है। योजना पूरी जानकारी जनता को कराना जरूरी है। इस दृष्टि से सम्पदा का प्रस्तुत प्रयास प्रशंसनीय है। आशा है कि इस से जहां एक ओर हिन्दी बोलने और समझने वाले विशाल जन समूह को अपनी विकास योजना की जानकारी होगी, वहां उसे अपने हिताहित की दृष्टि से उस पर सोचने के लिए प्रेरणा भी मिलेगी।

"भारत, प्रयाग, ५ नवम्बर ६१"



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत में आयात व्यापार

वृत्तों में दिये गये अङ्क कुल आयात का प्रतिशत बताते हैं

१९५५-५६

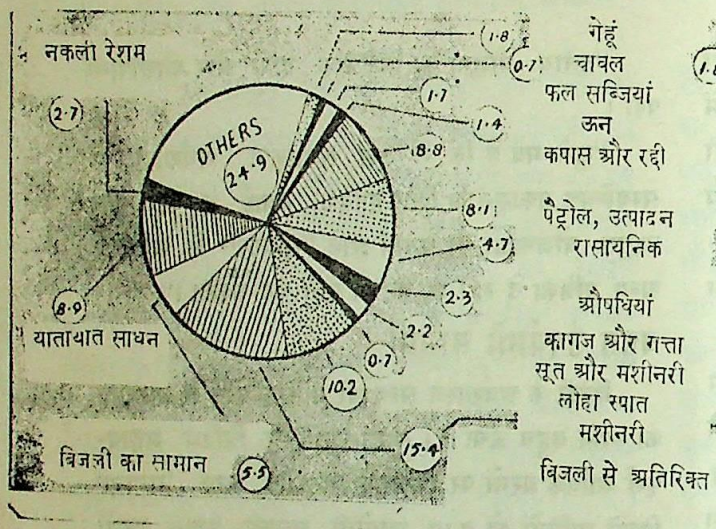


६५० करोड़ रु.

१९६०-६१

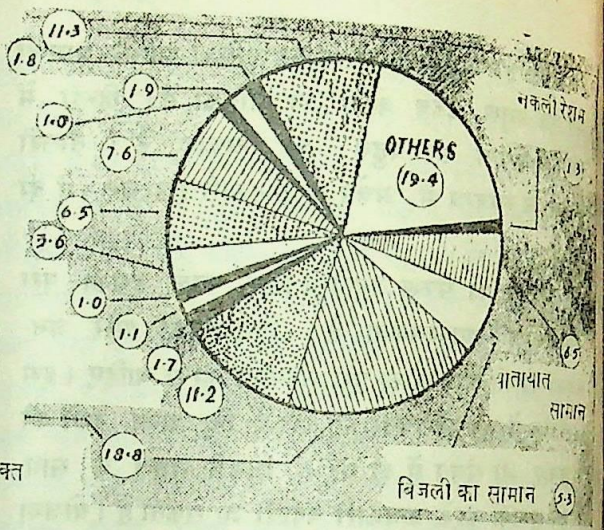


१०७० करोड़ रु.

# दूसरी योजना की अवधि में आयात

भारतीय आयात का रूप पिछले कुछ सालों से धीमे-धीमे पर लगातार बदल रहा है। दूसरी योजना-अवधि में औद्योगिक क्षेत्र के द्रुत विकास के कारण पूंजीगत सामान और आवश्यक कच्चे सामान का अधिक मात्रा में आयात जरूरी हो गया है। इनमें कई चीजें ऐसी हैं जिनकी बढ़ोतरी न केवल उनकी अपने स्वरूप में अपि तु कुल आयात के अनुपात में भी बहुत ज्यादा हुई है।

ऊपर के चित्र से पता चलता है कि पहली योजना और दूसरी योजना के अन्तिम वर्षों में कुछ आवश्यक चीजों का प्रतिशत आयात कितना हुआ है। भारतीय आयात १९५५-५६ और १९६०-६१ के पांच सालों में ६५० करोड़ रु० से बढ़कर १०७० करोड़ रु० हो गया, अर्थात् ६४ प्रतिशत से ज्यादा।

आयात की इन चीजों में सबसे ज्यादा वृद्धि मैशीनरी (बिजली के अतिरिक्त) की हुई, १९५५-५६ के १०० करोड़ रु० के स्तर की तुलना में दुगुने से अधिक इसका आयात हुआ, कुल आयात के अनुपात में इसकी वृद्धि अलोच्य अवधि में १५·४ प्रतिशत से १८.८ प्रतिशत हुई। इसी अवधि में लोहा और इस्पात का आयात—निर्माताओं को शामिल करते हुए—६७ करोड़ रु० से बढ़कर १२० करोड़ रु० हो गया।

परिवहन का सामान और बिजली की मशीनरी का आयात केवल अपने रूप में ज्यादा हुआ पर देश में हुए कुल आयात के अनुपात की दृष्टि से घट गया। बहुत हद तक यह कमी देश में अधिक उत्पादन के कारण हुई है।

## खाद्यान्न और कच्चा सामान

इसके अन्तर्गत गेहूँ की वृद्धि का प्रमुख स्थान है। कुल आयात व्यापार में इसका अनुपातिक भाग १९५५-५६ में २ प्रतिशत से बढ़कर १९६०-६१ में ११ प्रतिशत हो गया। इस अवधि के अन्त में चावल का ०-७ प्रतिशत से बढ़कर

[ शेष पृष्ठ ४९८ पर ]



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत से निर्यात व्यापार

वृत्तों में दिये अङ्क कुल निर्यात का प्रतिशत बताते हैं

१९५५-५६

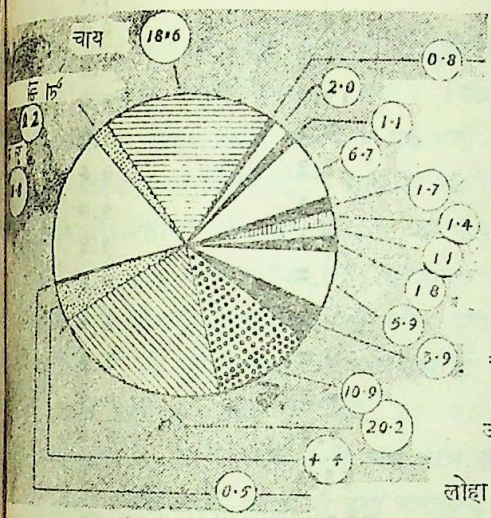


५८५ करोड़ रु.

काली मिर्च
तमाखू
चमड़ा व खालें
कपास व रद्दी
ऊन
अबरक
आयरन और मैंगनीज
वनस्पति
चमड़े का सामान
कपड़ा
जूट का सामान
दूसरे वस्त्र
लोहा व इंजिनियरिंग

१९६०-६१

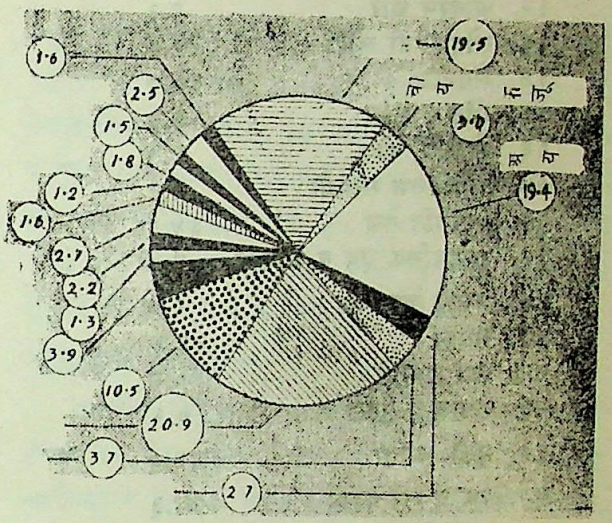


६३३ करोड़

# दूसरी योजना की अवधि में निर्यात

जिस तरह देश के आयात में पिछले वर्षों में परिवर्तन हुआ है, उसी तरह निर्यात में भी परिवर्तन हुआ है, यद्यपि यह उतना क्रांतिकारी नहीं हुआ। रुई और वनस्पति घी के निर्यात में अपेक्षाकृत अधिक कमी हुई है। चाय, जूट, तम्बाखू और कपड़े के निर्यात में महत्वपूर्ण स्थान यथा पूर्व ही रहा है। इंजीनियरिंग सामग्री, रासायनिक पदार्थों और प्लास्टिक के निर्यात नई प्रगति के सूचक हैं। लोहा व इंजीनियरिंग सामग्री का निर्यात ०.५ से बढ़कर ३.०० हो गया है। देश ने इस दिशा में सन्तोषजनक प्रगति की है। मांग बढ़ जाने के कारण रुई, ऊन, वानस्पतिक तेल आदि के निर्यात में कमी हुई है। काजू व काफी के निर्यात बढ़ गये हैं। चाय और जूट के अनुपात क्रमशः १९ से २० और २० से २१ प्रतिशत तक बढ़ गये है। तम्बाखू का निर्यात ३ प्रतिशत बढ़ा है। कपड़े का निर्यात मात्रा में ही बढ़ा है, पर अनुपात में कम हो गया है। काली मिर्च के निर्यात १ से २ प्रतिशत तक बढ़े हैं। चमड़े व खालों के निर्यात में वृद्धि इस बात की सूचक है कि पशु अधिक संख्या में मारे जाने लगे हैं। चमड़े का सामान ही १ करोड़ रु० का अधिक बाहर गया है।

नीचे की तालिका से निर्यात में परिवर्तन बहुत स्पष्ट हो जायगा—

## भारतीय निर्यात की रचना

| पदार्थ | मूल्य करोड़ रु० में | कुल का प्रतिशत | मूल्य करोड़ रु० में | कुल का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| १. काजू | १२.९ | २.२ | १८.९ | ३.० |
| २. चीनी | १.० | ०.२ | ३.३ | ०.५ |
| ३. काफी | १.५ | ०.३ | ७.२ | १.१ |
| ४. चाय | १०८.६ | १८.६ | १२३.२ | १९.५ |
| ५. काली मिर्च | ४.७ | ०.८ | १०.३ | १.६ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ६. तम्बाकू सिगरेट | ११.७ | २.० | १५.७ | २.५ |
| ७. चमड़े व खालें | ६.६ | १.१ | ९.५ | १.५ |
| ८. तिलहन | ४.० | ०.७ | ५.१ | ०.८ |
| ९. रुई व वेस्ट | ३९.४ | ६.७ | ११.६ | १.८ |
| १०. ऊन | ९.७ | १.७ | ७.७ | १.२ |
| ११. अभरक | ८.४ | १.४ | १०.१ | १.६ |
| १२. आयरन ओर | ६.३ | १.१ | १६.८ | २.७ |
| १३. लोहा, रद्दी लोहा | २.७ | ०.५ | ५.६ | ०.९ |
| १४. मैंगनीज | १०.७ | १.८ | १४.० | २.२ |
| १५. गोंद व लाख | १३.० | २.२ | ८.५ | १.३ |
| १६. कोयला, कोक | २.१ | ०.४ | ३.३ | ०.५ |
| १७. पैट्रोलियम सामग्री | २.३ | ०.४ | ४.१ | ०.७ |
| १८. वनस्पति तेल | ३४.३ | ५.९ | ८.५ | १.३ |
| १९. रासायनिक द्रव व औषधि | ४.० | ०.७ | १.८ | ०.३ |
| २०. जरूरी तेल | २.७ | ०.४ | ४.१ | ०.७ |
| २१. चमड़ा | २३.० | ३.९ | २४.८ | ३.९ |
| २२. रबर सामग्री | ०.८ | ०.१ | ०.३ | ०.१ |
| २३. कागज व पुट्ठा | ०.९ | ०.१ | ०.६ | ०.१ |
| २४. सूती कपड़ा | ६३.५ | १०.९ | ६६.७ | १०.५ |
| २५. जूट व जूट पदार्थ | ११८.३ | २०.२ | १३२.४ | २०.९ |
| २६. दूसरे टैक्सटाइल | २५.७ | ४.४ | २३.३ | ३.७ |
| २७. लोहा व इस्पात | १.९ | ०.३ | ९.७ | १.५ |
| २८. इंजीनियरिंग पदार्थ | १.२ | ०.२ | ६.७ | १.२ |
| २९. अन्य सामग्री | ६३.१ | १०.८ | ७८.७ | १२.४ |
| कुल | ५८४.७ | १००.० | ६३२.९ | १००.० |

[ पृष्ठ ४९६ का शेष ]

२ प्रतिशत हो गया। कच्ची कपास और उसकी निकम्मी बचत, (वेस्ट) कच्ची ऊन, बनावटी रेशम, रासायनिक, रंग और रोगन, पेट्रोलिमन और इसके उत्पादन--इनका आयात कम हुआ जिस से पता चलता है कि देशी उत्पादन इन चीजों का बढ़ गया है। पर कच्ची कपास और रासायनिक के मामले में सामान्य आयात में आई कमी उन चीजों के आयात से पूरी हो गई जो पी० ए० ल० ४८० और टी० सी० ए० प्रोग्रामों के अन्तर्गत हुए।

"औषध और औषध निर्माण सम्बन्धी" और कागज—इन दोनों के आयात में कमी आई, १९५५-५६ में २ प्रतिशत से १९६०-६१ में कुल आयात का १ प्रतिशत हुआ। उपभोक्ता सामान के क्षेत्र में, विभिन्न चीजों के आयात में कमी आई, जैसे चीनी का सामान, लोहे का सामान, बिजली का सामान, ऊनी धागा और निर्माता, रायन कपड़े इत्यादि लेकिन सूती धागा और निर्माताओं ने कुछ बढ़ोतरी दिखाई, १९५५-५६ में करीब १ प्रतिशत से बढ़कर १९६०-६१ में २ प्रतिशत हो गई।

पिछले पांच सालों में भारत के आयात व्यापार का उल्लेखनीय स्वरूप यह है कि जहां हम मशीनरी का अधिक मात्रा में आयात कर रहे हैं ताकि उद्योगीकरण हो और पुरानी मशीनों की जगह नई मशीनें आयें वहां अधिकांश कच्चे माल और उपभोक्ता सामान के लिए हम अपने साधनों पर ही निर्भर कर रहे हैं। लोहा और इस्पात के आयात का महत्व भी प्राथमिकता में कम हो रहा है क्योंकि देश का उत्पादन, क्रमशः, बढ़ रहा है।





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# यदि मैं प्रधानमंत्री बन जाऊं ?

## महात्मा गांधी की कल्पना—

'अगर मेरा बस चले, मैं सारे हिन्दुस्तान में सिनेमा घरों की जगह कताई घर खड़े करूँ। भिन्न-भिन्न हस्त-कलाओं की दस्तकारियों की चीजें उन घरों में बनाऊँ। और अखबारों में विज्ञापनों के नाम से हमारे नर-नारियों यानी अभिनेताओं और अभिनेत्रियों के कैसे गन्दे चित्र छापे जाते हैं ? जरा सोचिए तो अभिनेता और अभिनेत्रियाँ हैं कौन ? हमारी ही बहनें और हमारे ही भाई तो हैं न ? पैसे की बरबादी के साथ हमारी संस्कृति की बरबादी होती है। यदि कोई मुझे इस देश का प्रधान मन्त्री बना दे, तो मैं सबसे पहले यही काम करूँ। मशीन से चलने वाली सारी चक्कियाँ बन्द करवा दूँ। तेल पेरने की मशीनें भी अमुक संख्या में ही रहने दूँ, और जगह-जगह देशी घानिया ही चलवाऊं। कपड़े की मिल हों तो उसे बिलकुल जला तो न डालूँ, फिर भी उसे बढ़ावा तो हरगिज न दूँ, और नई मिल को कभी खड़ी होने ही न दूँ। सिनेमा घरों को बिल्कुल बन्द ही करा दूँ, अथवा; शायद इतनी छूट रखूँ कि जिन चित्रों द्वारा शिक्षा मिले, या जिनमें प्राकृतिक दृश्य दिखाये जायँ, उन्हीं का प्रदर्शन हो। लेकिन नाच-गाने तो बिल्कुल ही बन्द करा दूँ। नृत्य कला के प्रति मेरे मन में आदर है। संगीत तो मुझे बहुत प्रिय है। यही नहीं, बल्कि मेरा दावा है कि मैं संगीत को समझता हूँ। लेकिन जिन गानों और नृत्यों से युवक और युवतियों के मन खराब हों, उन पर तो मैं रोक लगाऊं ही।

इसलिए मैं तो सरकार को यहां तक सुझाना चाहूँगा कि जीवन को क्षति पहुँचाने वाले सारे कार्यों पर वह भारी कर लगा दे। यही चीज व्यसनों के लिए भी हो। शराब, तम्बाकू, चाय इन चीजों पर भी कर बैठा दिये जायँ, जिससे ये अपने आप ही देश में कम हो जायं। और जो गांव अनाज के मामले में स्वावलम्बी हो, जिस गांव में आटा पीसने की एक भी मशीन चक्की न हो, जिस गांव में घर-घर कपास उगाने से लेकर कपड़ा सीने तक की सारी क्रियायें होती हों, ऐसे आदर्श गांव को इनाम दिए जायं और उसे सब प्रकार के कर भार से मुक्त रखा जाय। फिर ऐसे आदर्श गांव में लोग खुद ही अपने सिपाही होंगे, खुद ही डाक्टर होंगे, खुद ही रक्षक होंगे और उस हालत में उन्हें परस्पर लड़ने की फुरसत तो एक मिनट के लिए होगी ही क्यों !"

## सामूहिक विकास—

सामूहिक विकास की दृष्टि से हमारा ग्राम-स्वावलम्बन पर जोर होगा। गांव अपनी बुद्धि से, अपनी उंगलियों के हुनर से, अपने साधनों से अपने लिए भोजन, वस्त्र, मकान का प्रबन्ध कर ले। इतना ही नहीं, गांव अपनी शिक्षा, आरोग्य, व्यायाम और सुरक्षा का भी प्रबन्ध करे। ग्राम-भावना से शुरू करके धीरे-धीरे गांव की सहकार-शक्ति इतनी विकसित हो जाय कि उसे बाहर के व्यापारी, पुलिस के सिपाही और पार्टी के नेता की जरूरत ही न रह जाय। क्यों, जरूरत रहेगी ? गांव की अपनी दुकान होगी, गांव के जवान उसकी रक्षा करेंगे, तथा गांव के सब बालिगों की ग्राम-सभा और उसकी सर्व-सम्मति से चुनी हुई ग्राम-समिति गांव की पूरी-पूरी व्यवस्था चलायगी। गाँव आवश्यक समझेगा तो बाहर से सलाह लेगा, किसी संस्था या सरकार से साधन लेगा, लेकिन गाँव के भीतर निर्णय गांव का ही चलेगा। निर्णय का स्वावलम्बन दूसरे सब स्वावलम्बनों की जड़ है।

सम्पदा में विज्ञापन देकर
लाभ उठावें



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आर्थिक संतुलन के लिए ग्रामोद्योग

**श्री चिरंजीलाल शर्मा**

आर्थिक संतुलन को कायम करने के लिये प्रथम कदम है, सभी गांवों में रोजगारी के साधन बढ़ाना। भारत की ८० प्रतिशत आबादी गांवों में निवास करती है। इन ग्रामीणों की हालत आर्थिक दृष्टि से चिन्ताजनक है। ग्रामीणों को खेती के अलावा उनके फालतू समय में ऐसे रोजगार दिये जायें, जो वे अपने गांव में रह कर भी आसानी से कर सकें और अपनी रोजगारी कमा सकें। इस स्थिति के हल के लिये प्रत्येक गांव में छोटे-मोटे ग्रामोद्योग आरम्भ किये जाने चाहिये। उदाहरण के तौर पर, जिस गांव में जो कच्चा माल प्राप्त होता है, वहां उसी का उद्योग आरम्भ कर दिया जाय, और उससे प्राप्त उत्पादन की खपत भी वहीं की जाये। इससे ग्राम का श्रम, कच्चा माल व विनिमय सब गांव में ही रह जायगा और फिर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये तथा आंशिक रोजगार के लिये ग्रामीणों को बड़ी-बड़ी फैक्टरियों व मिलों में न दौड़ना पड़ेगा, जो उनके गांवों से दूर शहरों में हैं। तात्पर्य यह है कि कार्य नीचे से आरंभ किया जाये, बड़ी-बड़ी मशीनों से नहीं। ग्रामोद्योगों में ऐसी अपार शक्ति है कि वह लाखों करोड़ों बेरोजगार ग्रामीणों को आंशिक रोजगारी प्रदान करने में सक्षम है।

लोगों की अज्ञानता को दूर करने और खादी ग्रामोद्योगों को साधन सम्पन्न बनाने के लिये योजना आयोग ने नया मोड़ व ग्राम इकाई कार्यक्रम को मान्यता दी है। नवीनता के लिये वह कार्यक्रम केवल गांवों में ही लागू किया जा रहा है और इससे जनता जनार्दन में स्व-विकास की एक नई लहर सी दौड़ रही है।

योजना आयोग, पंचवर्षीय योजनायें व खादी ग्रामोद्योग अपने कार्यक्रमों द्वारा गांवों के उत्थान व विकास के हर संभव प्रयत्न कर रहे हैं। गांवों और शहरों की खाई पाटने में, निर्धन और अमीर के बीच आर्थिक समानता लाने में खादी ग्रामोद्योग आयोग का नया मोड़ व ग्राम इकाई योजना एक कड़ी है, जिससे कार्य नीचे से किया जायेगा और सहायता ऊपर से मिलेगी। एक छोटी ग्राम इकाई में खादी ग्रामोद्योग कार्य सघन रूप से प्रारम्भ किया जायगा, जिसकी कमसे-कम ५००० की आबादी नियोजित की गई है। इन सम्पूर्ण आबादी वाले गांवों में कुछ न कुछ कच्ची सामग्री पैदा होती है। उसे एक केन्द्रित स्थान पर उपयोग की वस्तुओं में परिणित किये जाने के लिये ग्रामोद्योग चलाये जायें और इन ग्रामोद्योगों में अधिक-से-अधिक मानव श्रम का उपयोग किया जायेगा, जिससे लोगों को रोजगार के साथ स्व-खपत के लिये तैयार माल भी उन्हें वहीं मिल जाया करेगा। इससे ग्रामीण अपनी जरूरत की चीजों के लिये शहरों पर निर्भर नहीं करेंगे, और इस प्रकार वे स्वावलम्बी होकर सुख का जीवन बिताने लगेंगे। गांवों में तिलहन पैदा होती है, कपास भी बोया जाता है, काफी मात्रा में कपड़ा भी मिल जाता है। और अनाज के तो वे अकेले उत्तराधिकारी हैं ऐसी अवस्था में भला गांवों में क्यों न उद्योग आरम्भ किये जा सकते हैं? कच्ची सामग्री के साथ गांवों में मानव-श्रम भी अपरिमित मात्रा में है, फिर ऐसे सक्षम गांवों को आश्रित क्यों रहना चाहिए?

"भूदान यज्ञ" से साभार


अहिंसक समाज रचना की मासिक

**खादी पत्रिका**

- खादी ग्रामोद्योग तथा सर्वोदय विचार पर विद्वत्तापूर्ण रचनाएं।
- खादी ग्रामोद्योग आन्दोलन की देशव्यापी जानकारी।
- कविता, लघुकथा, मील के पत्थर, साहित्य-समीक्षा, संस्था परिचय।
- सांख्यिकी पृष्ठ आदि स्थायी स्तम्भ।
- आकर्षक मुखपृष्ठ : हाथ कागज पर छपाई।

संपादक

ध्वजाप्रसाद साहू

जवाहिरलाल जैन

वार्षिक मूल्य ३) रु०, एक प्रति पच्चीस नये पैसे

राजस्थान खादी संघ पो० खादीबाग (जयपुर)




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ वृत्त चयन

## एक अमेरिकी कितनी सहायता देता है ?

अमेरिका विश्व के कई देशों को बड़ी उदारता से सहायता देता है। अमेरिकी सरकार की एक एजेन्सी ने इस बारे में कुछ रोचक आंकड़े इकट्ठे किये हैं। पहली बात तो यह है ३० जून १९६१ को समाप्त होने वाली १५ वर्ष की अवधि में अमेरिका ने कुल ६१,३९,६३,००,००० (६१ अरब ३९ करोड़ ६३ लाख डालर) की सहायता दी है।

अमेरिका में ६०० लाख से कुछ अधिक श्रमिक हैं और वे सब कर देने वाले हैं। इसलिए, स्वभावतः विदेशों को दी जाने वाली अमरीकी सहायता में इनका भी हिस्सा जाता है। इस हिसाब से अमेरिका का प्रति परिवार करीब १,००० डालर विदेशी सहायता देता है। इस सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि कारखाने का मजदूर औसतन, लगभग, ९० डालर प्रति सप्ताह कमाता है। उसकी कमाई में से ११ सप्ताह की कमाई विदेशी सहायता में चली जाती है।

इस राशि के अतिरिक्त, अमेरिकान ने "आपसी सुरक्षा प्रोग्राम में सांझेदार" के अन्तर्गत सहायता दी है जो, दूसरे शब्दों में, विदेशों में अमेरिकी फौजी अड्डे बनाने के लिए दी गई सहायता है। यह रकम २९१३० मिलियन डालर हैं जो समूची अनुदान के रूप में है।

## परन्तु सहायता किसे ?

अमेरिका इस बात का बड़ा ढिंढोरा पीटता है कि वह अविकसित देशों को उन्नत करने के लिए उदारता से देता है। पर, दर असल, स्थिति इसके विपरीत है। आंकड़ों से पता चलता है कि अमेरिका सहायता से सर्वाधिक लाभ उठाने वाले फ्रांस और ब्रिटेन हैं, जिन्हें क्रमशः ९,४३१ मिलियन डालर और ८,६८५ मिलियन डालर मिलते हैं। अमेरिका की फौजी गुट बंदी के साथी अन्य देशों को कितना मिला है, उसका ब्यौरा यह है :—

| देश | मिलियन डालर |
|---|---|
| ईरान | ६६५.१ |
| जोर्डन | २८१.६ |
| टर्की | १,४०३.२ |
| पाकिस्तान | १,४३०.९ |
| लंका | ४३.५ |
| इजरायल | ७९२.३ |
| संयुक्त अरब गणराज्य | ४३८.८ |

## रडार चूल्हे पर एक मिनट में भोजन तैयार

ब्रिटेन में एक कम्पनी ने एक साधारण रडार हीटर, या चूल्हा, बनाया है जिसका मूल्य ५०० पौंड के आसपास होगा। यह चूल्हा बर्फ में रखे खाद्य-पदार्थों को कुछ ही सेकेन्डों में गर्म कर सकता है। इत चूल्हों का सार्वजनिक गृहों और कैफे, आदि में उपयोग हो सकेगा।

रेफ्रिजरेटर अलमारियों के अन्दर तश्तरियों में सजे खाद्य-पदार्थ को ग्राहक द्वारा पसन्द कर लिये जाने के बाद उस तश्तरी को घूमने वाली एक बैल्ट, या पेटी, पर रख दिया जायेगा जो उसे रडार चूल्हे के अन्दर ले जायेगी। दूसरी ओर जब यह तश्तरी बाहर निकलेगी तो खाना ग्राहक को तैयार मिलेगा। इस पूरी क्रिया में केवल सेकेन्डों का ही समय लगेगा। इसमें खाद्य-पदार्थ सब जगह समान रूप से गर्म रहता है।

## इटली की राष्ट्रीय आय

| | विशुद्ध राष्ट्रीय आय (हजार मिलियनों में) आज के दिन लीरा | आय प्रति व्यक्ति लीरा |
|---|---|---|
| १९११ | ५,५०० | १५०,००० |
| १९३८ | ८,००० | २५०,००० |
| १९४५ | ४,००० | १२५,००० |
| १९५० | ८,००० | २५०,००० |
| १९६० | १७,००० | ३४०,००० |

इटली की राष्ट्रीय आय भी पिछले दस वर्षों में दुगनी से अधिक हो गई है। हमें अभी कितना रास्ता तय करना है जब हम इटली के बराबर गति से चलने लगेंगे।

—भारत सरकार के बिजली व सिंचाई विभाग के उप मंत्री श्री जय सुखलाल हाथी ने बताया है कि भारत सरकार भाव नगर तथा दूसरे सीमावर्ती बन्दर गाहों पर यह जाँच कर रही हैं कि क्या समुद्र की ऊँची लहरों से



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली उत्पन्न की जा सकती है ? इसके लिए विभिन्न इन्जीनियर अमेरिका, रूस, जर्मनी और डेनमार्क में भेजे गये हैं। वे यह भी देखेंगे कि समुद्र का खारा पानी पीने और सिंचाई के काम के लिए मीठा बनाया जा सकता है या नहीं। रूस में इस दिशा में काम किया जा रहा है।

## जर्मन और भारतीय टैकनिशियन

करीब दस वर्ष पूर्व कुछ जर्मन दो जर्मन टेकनीशियन तथा वैज्ञानिक मुझे मिले थे। उनमें से कुछ भारत में तीन महीने बिताकर जर्मनी वापस जा रहे थे। उनमें से एक ने मुझे बताया कि प्राविधिक विषयों में भारतीय बहुत पिछड़े हुए हैं और कार्यकुशलता की तराजू के एक पलड़े पर एक जर्मन टेकनीशियन को रखा जाए तो उसकी बराबरी के लिए दूसरे पलड़े पर सात भारतीय टेकनीशियनों को रखना पड़ेगा। अकस्मात वही व्यक्ति दस वर्ष बाद मुझे मिल गया। अब उसने कहा कि भारत में महान औद्योगिक तथा प्राविधिक प्रगति हुई है और अब एक जर्मन टेकनीशियन एक भारतीय टेकनीशियन के ही बराबर है। इतना ही नहीं, कुछ मामलों में तो भारतीय टेकनीशियन जर्मन टेकनीशियन से अच्छा है।

—जनरल करिअप्पा

## हम भविष्य में प्लास्टिक के मकानों में रहेंगे

कैलिफोर्निया के डिजनीलैंड में 'हाउस औव् टुमारो' नामक एक ऐसे भवन का प्रदर्शन किया जा रहा है, जो प्लास्टिक से निर्मित किया गया है। कुछ वर्षों में बच्चे केवल प्लास्टिक से निर्मित स्कूलों में अध्ययन कर सकेंगे। अभी हाल में प्लास्टिक के हल्के वजन के तख्तों को जोड़ कर तैयार किया गया है। आवश्यकता पड़ने पर श्रेणी-कक्षों की सुगमता से इन्हें छोटा-बड़ा किया जा सकता है।

भवन निर्माण सम्बन्धी कार्यों में इसका अधिकाधिक प्रयोग होने लगा है। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण प्लास्टिक की दीवार, विद्युत अवरोधक सामग्री, लकड़ी तथा ऐसी विविध सामग्री की रक्षा करने के लिये टिकाऊ पलस्तर तथा रंग-रोगन आदि सम्मिलित है।

कुछ वर्ष पूर्व, प्लास्टिक झाग बड़े आशाजनक समझे जाते थे। अगले वर्ष तक ४ करोड़ घन फुट में उनका प्रयोग किया जायेगा। कुछ प्लास्टिक-झागों का व्यापार की भारी मात्रा में उत्पादन किया जा सकेगा। उनमें से दो पदार्थों—पीलिस्टरेन तथा मरेथेन—का पहले से उत्पादन हो रहा है। यदि रसायन शास्त्री फेनोलिक नामक पदार्थ को टूटने से बचाने की विधि मालूम कर लें, तो फिर उसका उत्पादन प्रारम्भ हो जायेगा।

सबसे प्रसिद्ध तथा सबसे नये यूरेथेन पलस्तर भी बनाये गये हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी में इनका विकास हुआ था। गत वर्षों में अमेरिका में भी इनके विषय में कुछ परीक्षण किये गये।

भवन निर्माण के क्षेत्र यूरेथेन ने बहुत अच्छे परिणाम दिखाये हैं। ये फर्शों पर पलस्तर करने के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। आशा है कि मकानों के भीतर पलस्तर करने तथा रंग-रोगन करने आदि के लिये इनका व्यापक प्रयोग किया जाने लगेगा।

कुछ समय पूर्व, जब सर्वप्रथम अपने रासायनिक पदार्थ लेकर भवन निर्माताओं के पास पहुँचे तब रासायनिक पदार्थों की सहायता भवन निर्माण करने के उनके विचारों का किसी ने आदर नहीं किया था। किन्तु आज उन भवन-निर्माण कार्यों में व्यापक प्रयोग हो रहा है।

सबसे सस्ता सचित्र हिन्दी मासिक

**जागृति**

जिसे भारत के सभी प्रमुख लेखकों, कवियों,
और कहानीकारों का सहयोग प्राप्त है।
उत्प्रेरक कविताएं, ज्ञानवर्धक लेख, सांस्कृतिक निबंध,
रोचक कहानियां, बाल संसार, साहित्य आगे
बढ़ता है आदि स्तम्भ
तिरंगा आवरण, अनेकों इकरंगे चित्र
४८ से ५६ पृष्ठ की सम्पूर्ण छपाई आर्ट पेपर पर
इस पर भी मूल्य केवल २५ नए पैसे
एजेंटों को ५ से १०० प्रतियों पर २५ प्रतिशत और इससे
ज्यादा पर ३३⅓ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है। डाक
खर्च प्रकाशकों के जिम्मे। ऐजेन्ट नमूने की प्रति के लिए
आज ही लिखें।
व्यवस्थापक—'जागृति' हिन्दी लोक सम्पर्क
विभाग, पंजाब, चंडीगढ़



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अमेरिका की गतिशील अर्थ-व्यवस्था का भविष्य

डा० जे० फिलिप वर्नेट (मिशिगन विश्वविद्यालय में व्यावसायिक प्रशासन के प्राध्यापक)

(इस लेख के लेखक, डा० वर्नेट, प्रमुख अर्थशास्त्री हैं और मिशिगन से प्रकाशित पत्रिका 'बिजिनेस रिव्यू' के सम्पादक हैं। डा० वर्नेट ने इस लेख में बताया है कि आगामी वर्षों में अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था का विकास उत्तरोत्तर जारी रहेगा, जिस के फलस्वरूप, अमेरिकी लोगों के रहन-सहन का स्तर और अधिक ऊंचा होता जायेगा )

अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था और अमेरिका के निजी उद्यम के भविष्य में मेरा विश्वास दो प्रकार के तर्कों पर आधारित है: प्रथम, ऐतिहासिक घटनाचक्र, और द्वितीय, उन स्थितियों का विश्लेषण, जो अमेरिका की समृद्धि को नियन्त्रित करती हैं।

सन् १८०० में अमेरिका की कुल जन-संख्या ५० लाख से कुछ ही अधिक थी, जबकि उस की कुल राष्ट्रीय आय, डालर की १९६० की क्रयशक्ति के रूप में, लगभग १०० करोड़ डालर थी। इस का अर्थ यह हुआ कि उस समय सभी पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को मिला कर प्रति व्यक्ति औसत आय २०० डालर थी। उस समय अमेरिका की गणना एक 'अल्प-विकसित देश की कोटि' में होती थी।

## आय में वृद्धि : श्रम में कमी

किन्तु, आज अमेरिका में प्रति व्यक्ति औसत आय लगभग २३०० डालर है, जो १८०० ई० की प्रति व्यक्ति औसत आय के ११ गुने से अधिक है। अमेरिका में यह समृद्धि-श्रम-घंटों में वृद्धि कर के या अधिक कठिन श्रम कर के प्राप्त नहीं की गयी है। इस के विपरीत, इस बीच काम के घण्टों में पर्याप्त कमी हुई है। साथ ही उत्पादन के कार्य में श्रमिकों को कमर तोड़ पसीना बहाने वाले शारीरिक श्रम से भी पर्याप्त राहत मिली है। किन्तु, बौद्धिक कार्यों की मात्रा में वृद्धि हुई है।

वस्तुतः इस महान सफलता का रहस्य एक शब्द में निहित है, और वह शब्द है 'उत्पादन'। उत्पादन-मात्रा एवं निविष्ट साधन का अनुपात, जिसे प्रायः प्रति घण्टे उत्पादन मात्रा के रूप में नापा जाता है, बहुत ही अधिक बढ़ा गया है और सच पूछिये तो अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था की सफलता का यही मूल कारण है।

उत्पादकता में जो वृद्धि हुई है, उस में अनेक तत्त्वों ने योग दिया है। इन तत्त्वों में बिजली द्वारा चालित मशीन, औजार, उपकरण, टेक्नौलौजी, प्रबन्ध-निपुणता, उद्यम तथा इन सब के मूल में सर्व व्यापक शिक्षा की मात्रा में वृद्धि और किस्म में सुधार विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन सब तत्त्वों में उत्तरोत्तर सुधार होता रहेगा, जिस के फल स्वरूप, अमेरिका में उत्पादकता में वृद्धि बराबर जारी रहेगी और लोगों के रहन-सहन के स्तर उत्तरोत्तर ऊंचे उठते रहेंगे।

१९६० के प्रारम्भ में अनेक अर्थ शास्त्रियों ने अगली दशाब्दि पर विश्लेषणात्मक दृष्टि से विचार किया है और उनमें से अधिकांश स्थिति से सन्तुष्ट थे। सच तो यह है कि प्रायः प्रत्येक ने १९६० की दशाब्दि को 'अभिवृद्धि' की दशाब्दि माना है।

## १९६० में स्थिति

फिर, १९६० का वर्ष जैसे-जैसे बीतता गया, प्रतिकूल स्थितियां उत्पन्न होती गयीं, जिन से काफी निराशा व्यक्त की जाने लगी। सभी मानते थे कि वह वर्ष बहुत बुरा नहीं रहेगा। फिर भी व्यावसायिक क्षेत्र में काफी गिरावट हुई, जिस से विचारवान लोगों को यह आशंका होने लगी कि इस समय 'अभिवृद्धि' की जो भविष्यवाणी की गयी थी, वह गलत तो नहीं थी, अथवा कोई ऐसी बात तो नहीं हो गयी, जिस से अभिवृद्धि की इस प्रवृत्ति को गहरा धक्का लगा हो। मुझे तो यह आशा है कि १९६१ का वर्ष श्रेष्ठतर वर्ष सिद्ध होगा।

## अभिवृद्धि की प्रवृत्ति

मेरा अनुमान है कि अमेरिका की जन-संख्या में १५ से २० प्रतिशत तक की वृद्धि होगी। १९६० में १८ करोड़ से बढ़ कर यह १९७० में लगभग २१ करोड़ हो



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायेगी। श्रम-शक्ति में जन-संख्या की अपेक्षा तीव्रतर वृद्धि होगी, क्योंकि १९४० के दशाब्द में जन-संख्या में जो वृद्धि की प्रवृत्ति प्रारम्भ हुई, उस के फलस्वरूप उस समय उत्पन्न बच्चे १९६० के दशाब्द में कार्य करने की आयु में पहुंच जायेंगे। प्रति श्रम-घण्टे उत्पादन-मात्रा में लगभग २० प्रतिशत वृद्धि होगी। १९६० की क्रय शक्ति वाले डालर के रूप में, परिवार की औसत 'वास्तविक' आय इस दशाब्द में लगभग २५ प्रतिशत बढ़ जायेगी। मुझे आशा है कि अमेरिका की कुल उत्पादन-मात्रा इस दौरान में ५५ प्रतिशत बढ़ जायेगी। अन्य शब्दों में, कुल राष्ट्रीय उत्पादन, जो पिछले वर्ष ५०,००० करोड़ डालर का था, १९७० में लगभग ७८,००० करोड़ डालर का हो जायेगा। यह अभिवृद्धि बिना मुद्रास्फीति के ही होगी।

आलोच्य दशाब्द में, सम्भवतः दो और आर्थिक मन्दियां उत्पन्न होंगी। इन में से एक मन्दी सम्भवतः १९६४-६५ में और दूसरी मन्दी १९६७-६८ में उत्पन्न होगी। परन्तु यह मन्दी अधिक चिन्ताजनक नहीं होगी।

## १९७० के आगे

अब तनिक इन अगले १० वर्षों से आगे की स्थिति का पूर्वानुमान लगाइये। उस अधिक लम्बे भविष्य में आर्थिक स्थिति कैसी रहेगी?

सामान्यतया, अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था के भावी स्वरूप को एक विकास और परिवर्त्तन कहा जा सकता है। अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था की कुल उत्पादन-मात्रा में अभूतपूर्व वृद्धि होने की सम्भावना है। यह २० वर्ष से कम समय में ही दूनी हो जायेगी। अमेरिकी लोगों के रहन-सहन का स्तर लगभग ३० या ३५ वर्ष में दूना ऊंचा हो जायेगा। रहन-सहन से यहां आशय 'वास्तविक' रहन-सहन के स्तर से, अर्थात लोग जिन वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग करेंगे, उन के अबाध प्रवाह से है। उन्हें न केवल इस समय उपलब्ध वस्तुएं और सेवाएं अधिक मात्रा में सुलभ होंगी, बल्कि कितनी ही ऐसी नयी वस्तुएं और सेवाएं प्राप्त होंगी, जो अभी अस्तित्व में भी नहीं हैं।

आगामी वर्षों में प्रौद्योगिक या टेक्नोलौजी सम्बन्धी विकास से नवीन वस्तुओं के उत्पादन और नवीन विधियों में जो योग मिलेगा, वह कल्पनातीत है। इन नयी वस्तुओं में कुछ तो उपभोक्ता वस्तुएं होंगी, जबकि अन्य वस्तुएं पूंजीगत तथा उत्पादक वस्तुएं होंगी।

ये वस्तुएं क्या होंगी? इस प्रश्न का उत्तर देना भी कठिन है।

आगामी वर्षों में जो नयी-नयी वस्तुएं बनेंगी और उत्पादन की जो नयी-नयी विधियां विकसित होंगी, उन की भविष्यवाणी करने में जो कठिनाई है, उस का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि अगर इस शताब्दी के आरम्भ में हमें उन वस्तुओं और सेवाओं की भविष्यवाणी करनी होती, जो इस बीच बनायी गयी हैं, तो यह काम कितना कठिन होता।

उस समय कौन सोच सकता था कि मोटर, बस, ट्रक, सैनिक विभाग, जेट विमान, टेलिफोन, बिजली के चूल्हे, रेफ्रीजरेटर, सफाई-धुलाई मशीन, रेडियो, टेलिविजन, पैंसिलीन और इसी प्रकार की अगणित वस्तुओं का निर्माण और विकास इतना अधिक हो जायेगा? और सूची यहीं पर समाप्त नहीं होती। सचमुच, यदि १९०० में किसी ने इन वस्तुओं की भविष्यवाणी करने का प्रयास किया होता, तो सभी लोग यही कहते कि वह उस का दिवास्वप्न था।

## अनुसन्धान का योग

आजकल अमेरिका में वैज्ञानिक खोज और उत्पादन-विकास जितनी तीव्र गति से हो रहा है, उतनी तीव्र गति से पहले कभी नहीं हुआ था। १९५३ में अनुसन्धान और विकास पर कुल ५१५ करोड़ डालर व्यय हुआ था। इस समय इस व्यय की मात्रा १,३५३ करोड़ डालर तक पहुंच गयी है और आशा है कि इस व्यय की मात्रा बराबर बढ़ती रहेगी। अनुसन्धान और विकास का यह उद्यम नवीन उत्पादनों और उत्पादन-विधियों के शीघ्रातिशीघ्र उद्भव में महत्वपूर्ण योग देगा।

इस में से कितनी ही नवीन विधियां और उपकरण अणुशक्ति का उपयोग करने के कारण बहुत सुधरी किस्म के होंगे। उन में से कितने ही को 'आटोमेटिक' कहा जायेगा। उन के लिए प्रचुर और सस्ती बिजली की व्यवस्था होगी।

[ शेष पृष्ठ ५०८ पर ]



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तृतीय योजना में उद्योग

प्रोफेसर पी० सी० रावत, एम. कॉम

"भारत निर्धन निवासियों का सम्पन्न देश है ।" इस विराधाभास पूर्ण लोकोक्ति के अनेक कारणों में औद्योगिक शिथिलता एक प्रधान कारण है । अधिकांश व्यक्ति कृषि पर निर्भर है । और कृषि भी एक उद्योग न होते हुए केवल जीवन यापन का साधन मात्र है । जनसंख्या २ प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से बढ़ रही है और प्रतिवर्ष एक नया डेनमार्क (५० लाख) निर्मित हो जाता है ।

निम्न जीवन स्तर, निर्जीव करने वाली भयानक निर्धनता, शिक्षित मध्यवर्ग की बेकारी, अर्ध-रोजगारी, देश की कमी को घाटे की अर्थ-व्यवस्था से निकालकर बचत की अर्थ-व्यवस्था में लाने के लिए नियोजित औद्योगिक विकास परमावश्यक है । देश की सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के लिए भी औद्योगिक सुदृढ़ता वांछनीय हैं । बिना औद्योगिक विकास के राष्ट्रीय आय में वृद्धि, व्यवसाय प्राप्ति, आत्म-निर्भरता, निर्यात में वृद्धि तथा स्वचालित अर्थ-व्यवस्था की कल्पना करना व्यर्थ है क्योंकि आज के युग में एक देश की निर्धनता सम्पन्न देशों के लिये भी घातक है । विदेशों की औद्योगिक एवं वैज्ञानिक प्रगति ने हमें ललकार दिया है और अब भी यदि हम परमुखापेक्षी रहे तो फिर वही "लकड़ी काटने वाले" और पानी भरने वाले ही बने रहेंगे ।

## दूसरी योजना में उद्योग

हमारे यहां बम्बई योजना, विश्वेश्वरैया योजना आदि योजनाएं बनाई गईं । बम्बई योजना में कुल ४४८० करोड़ रु० उद्योग पर व्यय किये जाने का प्रविधान था । किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् योजना आयोग की स्थापना द्वारा भी संगठित कदम उठाये गये । प्रथम योजना मूलतः कृषि प्रधान थी । यह इसलिए किया गया, जिससे उद्योगों के लिए आवश्यक कच्चा माल प्राप्त हो । द्वितीय योजना में प्रथम योजना से दुगना व्यय उद्योगों के विकास पर हुआ और इसमें उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है जो नीचे दिये गये आंकड़ों से स्पष्ट है :—

| | कुल व्यय | विशाल उद्योग | लघु उद्योग | बिजली | तीनों का कुल योग | क प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम | २३५६ | १५० | ३० | १८४ | ३६५ | १८.७ |
| द्वितीय | ४६०० | ६०० | १७५ | ४४५ | १५२० | ३३.१ |
| तृतीय | ७५०० | १५२० | २६४ | १०१२ | २७९६ | ३७.३ |

## उद्योगीकरण की दृढ़ नींव

औद्योगिक विकास की जिस स्थिति तक हम पहुँच गए हैं वह अनेक तपस्याओं का फल है । विदेशी सरकार की नीति भारतीय उद्योगों को हतोत्साहित कर ब्रिटेन के उद्योग पालने की थी । भारत से इंगलैंड के लिए कच्चा माल निर्यात होता और पक्का माल भारत आता था । इस प्रकार सारा धारोष्ण दूध इंग्लैंड के मुंह में जाता था । सन् १९०८ में पहली इस्पात मिल सर जे. एन. टाटा के प्रयत्न से स्थापित हुई, फिर संरक्षण की नीति, स्वदेशी आंदोलन, युद्ध कालीन आवश्यकताएं आदि के कारण भारत में औद्योगीकरण को प्रोत्साहन मिला । युद्ध के पश्चात् अनेक कठिनाइयां सामने आईं और विभाजन ने हमारी अर्थ-व्यवस्था को पंगु कर दिया ।

सन् १९४७-४८ में राष्ट्रीय आय ५ प्रतिशत ही उद्योगों से प्राप्त होता था । पर अब ९ प्रतिशत प्राप्त होता है । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अनेक नये उद्योगों को भी जन्म मिला है । प्रथम दो योजनाओं से औद्योगीकरण की सुदृढ़ नींव पड़ गई जो कि नीचे दी गई तालिका से स्पष्ट है !



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| वस्तुएं | इकाई | १९५०-५१ | १९६०-६१ | १९६० का उत्पादन सूचनांक १९५१-१०० |
|---|---|---|---|---|
| पक्का लोहा | मिलियन टन | १.० | ३.१ | ३१० |
| अलूमिनियम | टन | ३८४८ | १८,१७.६ | ४७२ |
| औद्योगिक मशीनें | | | | |
| (चीनी) | लाख रुपया | | ४१९ | — |
| (जूट) | ,, | | २१९ | — |
| लकड़ी में लगने वाले पेंच | ००० ग्रुस | ७९७ | ९९९५ | १२६० |
| मशीनी उपकरण | लाख रु० | ४७ | ६०० | १२७० |
| साइकल | ००० नं० | ११४ | १०५१ | ९२० |
| सूती वस्त्र | ००० गज | ४०७६ | ५०४८८ | १०६ |
| जूट | ००० टन | ८७५ | १०६८ | १२४ |
| जहाज | ००० जी. आर. टी. | २० | | ५०-६० |
| रेल के डिब्बे | नं० | ७३२५ | | २१,९७५ |
| कागज की लुग्दी | ००० टन | — | | ९० |

कई वस्तुओं का उत्पादन देश में पहली बार हुआ जैसे बायलर, पिसाई मशीनें, डी. डी. टी., अखबारी कागज आदि। इस अवधि में ६० इंडस्ट्रियल एस्टेट बनाई गई।

## तीसरी योजना में उद्योगों के लक्ष्य

तीसरी योजना भी उपर्युक्त सभी उद्योगों का विस्तार मात्र है। इसमें निम्नलिखित क्रम से प्राथमिकता दी गई है!

(१) जिन योजनाओं पर कार्य प्रारम्भ हो चुका है उन्हें पूरा करना।

(२) भारी इंजीनियरिंग, मशीन, और इस्पात उद्योग का विस्तार।

(३) उत्पादक वस्तुओं जैसे अलूमूनियम, रासायनिक उद्योगों का विस्तार।

(४) वर्तमान औद्योगिक क्षमता का पूर्ण उपयोग।

(५) आवश्यकताओं की वस्तुएं जैसे कागज, कपड़ा, शक्कर, तेल आदि का उत्पादन बढ़ाना।

तीसरी योजना में उत्पादन के निम्नलिखित लक्ष्य हैं :—

| वस्तुएं | इकाई | वर्तमान उत्पादन | लक्ष्य (१९६५-६६) |
|---|---|---|---|
| इस्पात | ००० | २१७३ | ६९०० |
| अलूमूनियम | टन | १८१७६ | ८०,००० |
| औद्योगिक मशीनें | | | |
| (कपड़ा) | लाख रु० | — | २,००० |
| (सीमेंट) | ,, | ६४ | ५०० |
| घड़ियां | नं० | — | २,४०,००० |

| | करोड़ रु० |
|---|---|
| धातु एवं इंजीनियरिंग उद्योग | १२०० |
| रसायन एवं अन्य उद्योग | ६५० |
| वस्त्र उद्योग | १२५ |
| खाद्य उद्योग | ७५ |
| खनिज पदार्थ सम्बन्धी | ४०५ |
| अन्य | ४५ |
| | २५०० |

औद्योगिक विकास को स्वयंचालित बनाने के लिए मशीन बनाने के उद्योग अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इस योजना में उद्योगों और खनिजों पर कुल मिलाकर २५०० करोड़ रुपया खर्च किए जाने का प्रविधान है। इसमें से १५०० करोड़ रुपया सरकारी क्षेत्र में और १००० करोड़ रुप निजी क्षेत्र में व्यय होंगे। यह निम्न ढंग से व्यय किए जायेंगे :—

उद्योगों का विकास भारतीय औद्यगिक नीति १९५६ के अनुसार होगा। निजी और सरकारी क्षेत्र एक दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करेंगे, जैसे नाइट्रोजन उर्वरकों की प्रधान जिम्मेवारी सरकारी क्षेत्र की है, पर निजी क्षेत्र उसका उत्पादन बढ़ाएंगे। १९५६ के प्रस्ताव के अनुसार

[ शेष पृष्ठ ५०० पर ]



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# साधनों के लिए जन-सहयोग आवश्यक

श्री मुरारजी देसाई

सब कुल मिलाकर तीसरी योजना पर १२,१०० करोड़ रु० खर्च होगा, जिसमें से ८,००० करोड़ रु० सरकारी क्षेत्र और ४,१०० करोड़ रु० निजी क्षेत्र में खर्च होंगे। फिलहाल सरकारी क्षेत्र का खर्चा ७,५०० करोड़ रु० रखा गया है, क्योंकि मौजूदा साधनों से सभी कार्यक्रमों और योजनाओं का खर्चा पूरा नहीं हो पाएगा। इसलिए हम सब के लिए यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम समस्याओं को समझें कि हम किस प्रकार साधन जुटा सकते हैं।

प्रशासन, प्रतिरक्षा तथा दूसरी योजना में शुरू हुए स्कूलों, अस्पतालों, बिजली घरों आदि का खर्चा पूरा करने के बाद राजस्व से तीसरी योजना शुरू होने पर योजना कार्यक्रमों पर व्यय के लिए ५५० करोड़ रु० मिल सकेंगे। बाकी साधनों के लिए हमें सरकारी कारखानों, सार्वजनिक ऋणों, छोटी बचत या अतिरिक्त करों पर निर्भर रहना होगा। सरकारी कारखानों से ५५० करोड़ रु० मिलने का अनुमान है। सार्वजनिक ऋणों से ८०० करोड़ रु० और छोटी बचत योजनाओं से ६०० करोड़ रु० मिलने का अनुमान है। इस अवसर पर मैं चाहूँगा कि देशवासी सब विविध प्रकार की छोटी बचत योजनाओं में अधिक-से-अधिक रुपया डालने का प्रयास करें। भविष्य निधि आदि से ५४० करोड़ रु० की प्राप्ति का अनुमान है। इन सबको मिला कर ३,०४० करोड़ रु० होते हैं। शेष राशि हमें अब अतिरिक्त कर, विदेशी ऋण और घाटे की अर्थ-व्यवस्था से पूरी करनी है। तीसरी योजना में घाटे की अर्थ-व्यवस्था की गुंजाइश बहुत कम है, क्योंकि हमें मूल्यों को स्थिर रखना है। प्रतिवर्ष उत्पादन, मूल्यों की स्थिति और बैंकों को पूंजी आदि देखकर ही घाटे का बजट बनाया जाएगा। फिर भी मोटे तौर पर तीसरी योजना के दौरान ५५० करोड़ रु० की घाटे की अर्थ-व्यवस्था करनी होगी।

अतिरिक्त करों से १,७१० करोड़ रु० की आय का अनुमान है। यह राशि यद्यपि काफी बड़ी है, लेकिन इसे देखकर डरने की जरूरत नहीं, क्योंकि देश में जैसे-जैसे आय बढ़ती है, वैसे ही वैसे लोगों की कर देने की क्षमता भी बढ़ती है। हमारी राष्ट्रीय आय १९६०-६१ की १४,५०० करोड़ रु० से बढ़कर १९६५-६६ में १९,००० करोड़ रु० हो जाएगी। ऐसी स्थिति में यह उचित ही होगा कि इस बढ़ी हुई आय में से सरकार अतिरिक्त करों के द्वारा योजनाओं के लिए कुछ हिस्सा ले लें। एक और बात ध्यान में रखने की यह है कि अतिरिक्त कर लगने के बाद भी हमारे राजस्व और राष्ट्रीय आय का अनुपात मौजूदा ९ प्रतिशत से थोड़ा ही बढ़ेगा, और तीसरी योजना के अन्त तक वह ११ प्रतिशत कुछ ही अधिक होगा। जिस प्रकार की विकासशील स्थिति में हम हैं, वैसी स्थिति वाले और देशों में यह अनुपात ज्यादा है।

हमने विदेशी सहायता से २,२०० करोड़ रु० का अनुमान लगाया है। यह विदेशी सहायता भी जरूरी है, क्योंकि हमारी योजनाओं के सब काम अपनी ही मुद्रा से पूरे नहीं होते। उनके लिए हमें पौंड, डालर और रुबल की भी जरूरत है, लेकिन यह जरूरत हम अपने निर्यात से पूरी नहीं कर सकते। मुझे प्रसन्नता है कि मित्र देशों से अब तक हमें जो उत्तर मिले हैं, उनसे आशा है कि विदेशी सहायता का हमारा यह अनुमान पूरा हो जाएगा।

परन्तु यह सब कुछ ठीक होते हुए भी—विदेशी सहायता चाहे जितनी मिल जाए, वह हमारे अपने साधनों का स्थान नहीं ले सकती। इसलिए हम सबको चाहिए कि जो कुछ थोड़ा-बहुत भी हम बचा सकते हैं, उसे बचाएं, जिस से कि हमारी योजनाओं के लिए अधिक रुपया मिल सके।

योजना में निजी क्षेत्र का महत्व भी कम नहीं। निजी क्षेत्र के लिए ४,१०० करोड़ रु० की आवश्यकता है। इसे पूरा करने के लिए निजी क्षेत्र को चाहिए कि वह अपने कारखानों से होने वाली आय में अधिक लाभांश देने की बजाय उस रुपए को नये उद्योगों में लगायें।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे देश में अभी भी कुछ लोग हैं, जो तीसरी योजना को बहुत बड़ा बताते हैं। लेकिन ऐसा कहते समय भूल जाते हैं कि यदि हमने छोटी योजना बनाई तो पांच वर्ष के बाद लेखा-जोखा करने पर हमें पता लगेगा कि हमारी जितनी जनसंख्या बढ़ी है, उसको देखते हुए जो कुछ भी हमने किया है, उससे स्थिति पहले की अपेक्षा सुधरी नहीं है। निश्चय ही हमारा उद्देश्य अपने देश की जनता की स्थिति सुधारने और उसे अच्छा बनाने का है। इस बात को यदि हम ध्यान में रखें तो अनुभव होगा कि हमारी योजना कुछ बड़ी नहीं बल्कि छोटी ही है और वह छोटी इसलिए है कि हमारे पास साधन नहीं। लेकिन हमारा प्रयास दिनोंदिन यही होना चाहिए कि हमारे साधन बढ़ें, जिससे हम और तेज रफ्तार से प्रगति कर सकें। ● ●

[ पृष्ठ ४९६ का शेष ]

## रहन-सहन का स्तर ऊंचा

लोगों के रहने के मकान श्रेष्ठतर और अधिक आकर्षक होंगे। उन के निर्माण में प्लास्टिक जैसे नयी-नयी सामग्रियों का प्रयोग किया जायेगा। घर के भीतर नयी-नयी सुविधाजनक वस्तुएं दिखलायी पड़ेंगी, जैसी धूल साफ करने के लिए विधुदाणविक यन्त्र, प्लास्टिक की सस्ती तश्तरियां, बर्त्तन, नयी लाइट तथा नयी खाद्य सामग्रियां। लोगों का स्वास्थ्य बढ़ाने के लिए नयी-नयी औषधियां उपलब्ध होंगी। यातायात और संचार के साधन अधिक तीव्र गति वाले और अच्छे होंगे। अब वह युग आ रहा है, जिस में हर आदमी के पास अपने विमान होंगे, तत्काल सम्वाद सम्प्रेषण यन्त्र होंगे और लोग अन्तरिक्ष-यात्रा के क्षेत्र में साहसिक प्रयास करेंगे।

संक्षेप में, यदि घटनाएं सकुशल घटती रहीं तो अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था का भावी स्वरूप एक उंची और वृद्धिशील समृद्धि का होगा। निस्सन्देह, हो सकता है कि कुछ प्रतिकूल बातें भी हों। मुद्रास्फीति, आटोमेशन, निजी और सार्वजनिक ऋणों में वृद्धि, प्राकृतिक साधनों का समाप्त होना—आदि ऐसी बातें हैं, जिन से समस्याएं जटिल हो सकती हैं। कुछ ऐसी कठिनाइयां हैं, जो वास्तविक समस्याएं हैं, और अमेरिका में हम लोगों को इन का समाधान ढूंढना ही पड़ेगा। किन्तु हमारे देश के लिए समस्याओं का समाधान ढूंढना कोई नयी बात नहीं। मैं एक बार फिर कहता हूं कि तथ्य और स्थितियां यह प्रमाणित करती हैं कि अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था सुदृढ़ रहेगी एवं अभिवृद्धि की दिशा में प्रगति करती रहेगी। ● ●

(पृष्ठ ४९८ का शेष)

उद्योगों को तीन भागों में बांटा गया है। प्रथम भाग में १७ उद्योग हैं जो कि सीधे सरकारी नियंत्रण में हैं जैसे शस्त्रास्त्र, लोहा, इस्पात, अणु शक्ति आदि। दूसरे भाग में अलूमीनियम, उर्वरक, औषधियां आदि १२ उद्योग हैं जिन्हें धीरे-धीरे राज्य के नियंत्रण में लाया जावेगा। लेष उद्योग निजी क्षेत्र के लिए स्वतंत्र हैं।

## सलाहकार परिषदें

देश के सुनियोजित विकास के लिए सरकार ने १९५१ में औद्योगिक (विकास एवं नियमन) अधिनियम पास किया है जिसके अनुसार ३८ ऐसे उद्योग हैं, जिन्हें लाइसेंस लेना अनिवार्य है। यदि व्यवस्था में गड़बड़ी होगी तो सरकार उस उद्योग को अपने हाथ में ले लेगी। इसके लिए केन्द्रीय औद्योगिक सलाहकार परिषद की स्थापना की गई है। इसका काम श्रमिकों को प्रशिक्षण, कच्चे माल की व्यवस्था, बिक्री में सहायता देना आदि है। वर्तमान समय में १६५ उद्योग इस अधिनियम के अन्तर्गत हैं। उत्पादन शिष्ट मंडल के अनुसार जिसने जापान और अन्य देशों की यात्रा की, एक "राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद्" की स्थापना भी सन् १९५८ में की जा चुकी है। इसमें सरकारी, श्रमिक और नियोजक सभी का प्रतिनिधित्व है। बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, कानपुर और बंगलौर में इसके ५ क्षेत्रीय कार्यालय हैं और ४० से अधिक स्थानीय परिषदें हैं। उद्योगों के विकास के लिए वित्त की बड़ी आवश्यकता है। इसके लिए भी औद्योगिक अर्थ निगम, राज्य अर्थ निगम, राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम, आदि की स्थापना की जा चुकी है। अतः तीसरी योजना के अंत तक हमारी अर्थ व्यवस्था संतुलित और सुदृढ़ हो जायगी, इसमें कोई संदेह नहीं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# साहित्य समालोचना

सहकारी खेती—लेखक श्री जी० एस० पथिक, प्रकाशक—अशोक पुस्तक मंदिर, १६३ महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता। साइज १८×२२ का चार, सजिल्द, मूल्य चार रु० ५० न० पै० पृष्ठ संख्या १८६।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक श्री जी० एस० पथिक 'सम्पदा' के पाठकों के निकट नये नहीं हैं। इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने नागपुर कांग्रेस में प्रस्तावित और भारत सरकार द्वारा स्वीकृत सहकारी कृषि के सम्बन्ध में विस्तार से विचार किया है। लेखक का यह विश्वास है कि किसानों का हित इस बात में है कि वे अपनी उन्नति, ग्रामों में सुख और शान्ति पैदा करने के लिए मिलजुलकर खेती पैदा करें। उन्हें खेतों पर व्यक्तिगत अधिकार और अलग अलग खेती करने का मोह छोड़ना होगा। लेखक सहकारिता को उन्नति का साधन नहीं, लक्ष्य मानता है।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने भारत में सहकारिता व सहकारिता आंदोलन का इतिहास देते हुए सहकारी कृषि पर किये जाने वाले आक्षेपों का भिन्न भिन्न अध्यायों में जवाब दिया है और सहकारिता के बीसियों लाभ बताते हैं। प्रसंग वश, खेती के जोतों का आकार, किसानों की आर्थिक अवस्था तथा सहकारिता आदि पर भी प्रकाश डाला गया है।

"संयुक्त खेती में प्रवेश के पूर्व" नामक अध्याय बहुत योग्यता के साथ लिखा गया है। इसमें, प्रायः, उन सब कठिनाइयों की चर्चा है जो संयुक्त खेती के मार्ग में आती हैं। लेखक ने किसानों को यह उपदेश अवश्य दिया है कि वे उन सब कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करें परन्तु हमें सन्देह है कि यह आदर्शवाद का उपदेश किसानों के सदियों के संस्कारों को दूर करने में कहां तक सफल होगा? और वस्तुतः यही सबसे बड़ी कठिनता है, जो संयुक्त सहकारी कृषिमें बाधक है। लेखक ने सामूहिक कृषि और रूस व चीन की कृषि पद्धति का भी परिचय दिया है। सहकारी कृषि सम्बन्धी अन्य भी अनेक महत्वपूर्ण प्रश्नों पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है और सरकार द्वारा चलायी जाने वाली प्रवृत्तियों का भी अच्छा परिचय दिया गया है तथा व्यक्तिगत और सहकारी कृषि के तुलनात्मक आंकड़े दिये गये हैं। विदेशों में सहकारी कृषि की प्रवृत्तियों का भी संक्षेप से परिचय पुस्तक से मिलता है। संक्षेप से कहें तो सहकारी कृषि के समर्थन में यह पुस्तक बहुत योग्यतापूर्वक लिखी गयी है। हमारी विनम्र सम्मति में यदि लेखक संयुक्त कृषि के लिए आवश्यक यंत्रीकरण के दूसरे पक्ष पर भी प्रकाश डालते तो अधिक अच्छा होता।

इस पुस्तक की भूमिका भारत के प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू ने लिखी है। उन्होंने भूमिका में यह आशा प्रकट की है कि इस पुस्तक के भिन्न भिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में भी अनुवाद होंगे।

(२) भारत में व्यापार एवं प्रशुल्क नीति—लेखक—श्री के० सी० मंडारी और बी० पी० श्रीवास्तव। प्रकाशक—लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, अस्पताल रोड आगरा। पृष्ठ संख्या ४३५ मूल्य सात रु० पचास नये पैसे, साइज १८×२२ का चार।

प्रस्तुत पुस्तक इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने के बाद प्रकाशक और लेखक हिन्दी में उत्कृष्ट साहित्य लिखने में पीछे नहीं रहेंगे। यह पुस्तक चार भागों और २४ अध्यायों में विभक्त है। पहले भाग में भारत के आन्तरिक व्यापार तथा सामुद्रिक बंदरगाहों की चर्चा करते हुए यह बताया गया है कि इस आंतरिक व्यापार में साहूकार, बनिये, सर्राफ, बैंक और सरकारी वित्त संस्थाएं इत्यादि किस तरह महत्वपूर्ण भाग अदा करती हैं। इस अर्थ व्यवस्था का परिचय विस्तार से देते हुए लेखक ने बताया है कि भारतीय किसान प्रतिवर्ष ७५० करोड़ रु० के ऋण लेते हैं और इन ऋणों में सरकारी और सहकारी संस्थाओं का केवल ७.३ प्रतिशत भाग होता है। यह स्वल्प राशि हमें स्थिति की गम्भीरता का परिचय देती है। बैंक भारतीय व्यापार में कितना महत्वपूर्ण भाग अदा करते हैं, यह अपने आप में बहुत दिलचस्प विषय है। दूसरे भाग में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धांत, व्यापार और भुगतान के सन्तुलन का सैद्धांतिक परिचय दिया गया है।

आज भारत को विदेशी व्यापार में निरन्तर करोड़ों-अरबों रुपये का घाटा होता है और यह घाटा पंचवर्षीय योजनाओं के नाम पर हम स्वयं कर रहे हैं। परन्तु इससे स्थिति की गम्भीरता अवश्य प्रकट होती है। तीसरे भाग



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भारत के विदेशी व्यापार का प्राचीनकाल से लेकर अब तक का इतिहास देते हुए बताया गया है कि इस व्यापार में कब-कब, कैसे-कैसे उतार-चढ़ाव आये। यह अध्याय पुस्तक का महत्वपूर्ण अध्याय है। इससे पाठक जान सकेंगे कि आज देश की और उसके आयात-निर्यात की क्या स्थिति है और पंचवर्षीय योजनाओं में आयात और निर्यात के क्या लक्ष्य रक्खे गये हैं?

आज के युग में व्यापारिक समझौतों का महत्व बढ़ता जा रहा है। पुस्तक में द्विपक्षीय, बहुपक्षीय समझौतों का परिचय देते हुए उन अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भी विस्तार से जानकारी दी गई है, जो व्यापार पर नियंत्रण व परामर्श और सहयोग देती हैं। अन्तिम भाग में तट-कर-संरक्षण-कर आदि की चर्चा करते हुए मुक्त व्यापार और संरक्षित व्यापार के संबंध में सुन्दर विवेचन किया गया है।

यह ग्रन्थ लिखने के लिए लेखक ने पर्याप्त श्रम और गम्भीर तथा विस्तृत अध्ययन किया है। हमें विश्वास है कि न केवल अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए, बल्कि देश की आर्थिक व्यवस्था और विकास में रूचि लेने वालों के लिए भी यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

वेदोक्त विवाह संस्कार पद्धति—लेखक श्री ज्ञानेश्वरानन्द जी, प्रकाशक—वेदोक्त यज्ञ प्रचारक मंडल, दीवान हाल, दिल्ली, मूल्य रु० १.७५ न. पै.।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने वैदिक विवाह पद्धति को सरलतापूर्वक समझाने का प्रयत्न किया है। गोदान, फेरे, सप्तपदी, पाणिग्रहण, प्रतिज्ञा लाजाआहुति तथा ध्रुव दर्शन आदि विधियों को पालन विवाहसंस्कार में किस तरह व किस क्रम से किया जाय, यह सब इस पुस्तक से ज्ञात होता है। संस्कार में आवश्यक मंत्रों के अर्थ भी सरल भाषा में दिये गये हैं। कहीं-कहीं प्रूफ की गलतियां खटकती हैं।

देवयज्ञ मीमांसा—लेखक व प्रकाशक वही। मूल्य ०.५० न. पै.।

प्रस्तुत पुस्तक में अग्निहोत्र-यज्ञ के लाभ बताते हुए प्रार्थना मन्त्रों, दैनिक तथा बृहत् यज्ञ, स्वस्ति वाचन व शांति-प्रकरण मन्त्रों का अर्थ सरल भाषा में लिखा गया है। यज्ञ के प्रेमियों को मन्त्रों के अर्थों का ज्ञान अवश्य प्राप्त करना चाहिए। ● ●

---

[ पृष्ठ ४६४ का शेष ]

क्षेत्र में पैदा किये जायेंगे। इस प्रकार १ करोड़ ८० लाख रोजगार पैदा किये जायेंगे, फिर भी लगभग ३० लाख लोगों के लिए रोजगार देने की जरूरत बनी रहेगी। यह समस्या लगभग वर्तमान ६० लाख बेरोजगार—बकाया लोगों को रोजगार देने के अलावा होगी। इस प्रकार तीसरी योजना के अन्त में बेरोजगारी का परिमाण बहुत भारी होगा। इसके अलावा योजना आयोग की यह आशा भी संदिग्ध है कि "ग्रामीण निर्माण कार्यक्रमों" से रोजगार के अधिक अवसर पैदा होंगे। बेरोजगार लोगों की संख्या देखते हुए पर्याप्त रोजगारों की व्यवस्था करना वास्तव में काफी समय तक एक स्वप्न ही रहेगा।

## सर्जनात्मक कल्पना की कमी

तीसरी पंचवर्षीय योजना में यह स्वीकार किया गया है कि समाजवादी रूपरेखा के अनुकूल विकास के जरिये तीव्र आर्थिक विकास हो सकेगा और आमदनी तथा समृद्धि की असमानताओं को कम किया जा सकेगा। निस्सन्देह यह प्रशंसनीय उद्देश्य है। लेकिन मुझे डर है कि समाजवादी रूपरेखा के अनुसार होने वाले विकास के जरिये अधिकतम आर्थिक विकास न हो सकेगा, क्योंकि सार्वजनिक क्षेत्र के फैलाव से जनता के सर्जनात्मक दृष्टिकोण के मन्द होने तथा उसके सर्जनात्मक जीवन के दुर्बल होने की संभावना है। सर्जनात्मक दृष्टिकोण, सजीवता, पहल और सामाजिक अर्थ-व्यवस्था के प्रोत्साहन वास्तव में वृद्धि-सम्वर्धन के मूलभूत तथ्य है। कुछ क्षेत्रों में सकारात्मक राजकीय नियोजन की आवश्यकता से इंकार नहीं किया जा सकता है, लेकिन राज्यकीय क्षेत्र का असीमित विस्तार आर्थिक विकास के लिए हानिकर है।

जहाँ तक आय की समानता का प्रश्न है, यह बात ध्यान रखने योग्य है कि आय का समान उपभोग, भारतीय जनता की निर्धनता कम करने के साधनों में से केवल एक है। भारत में जनता की निर्धनता कम करने के लिए यह अत्यधिक प्रभावशाली साधन का दावा नहीं कर सकता है। शायद भारत में निर्धनता दूर करने के लिए आय के समान बंटवारे की अपेक्षा अधिकतम आर्थिक विकास का मार्ग कहीं अधिक प्रभावशाली है। तीसरी पंचवर्षीय योजना में प्रतिपादित उद्देश्य में अधिकतम आर्थिक विकास के लिए इस दृष्टिकोण का अभाव है। भारतीय अर्थ-व्यवस्था के सन्दर्भ में यह बात कहनी आवश्यक है कि समान वितरण की अपेक्षा सर्जनात्मक आर्थिक विकास कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। वास्तव में भारत में आज ऐसे ओजस्वी वातावरण की जरूरत है, जहाँ समाजवादी उद्देश्यों के ऊपर अधिकतम विकास को प्राथमिकता उपलब्ध हो।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योजना

प्रदर्शनी-परिशिष्ट

नवम्बर १९६१

१. भारतीय उद्योग का मेला १९६१
२. उद्योग प्रदर्शनी की रूपरेखा
३. जनजीवन के प्रेरक मेले
४. प्रदर्शनी का सोवियत मण्डप
५. अ. भा. उद्योग वाणिज्य संघ

# भारतीय उद्योग का मेला १९६१

श्री जी० एल० बंसल, एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर, मेला

इस साल का औद्योगिक मेला अपने ढंग का दूसरा है। दूसरी पंचवर्षीय योजना के शुरू होने पर १९५५ में फैडरेशन आफ इंडियन चेम्बर्स आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा जो मेला लगाया गया था, उसके बाद अब यह मेला लग रहा है। यह भी फैडरेशन द्वारा लगाया जा रहा है और तीसरी योजना शुरू होने के साथ इसका सम्बन्ध है। फिर भी दूसरी योजना के बाद तीसरी योजना—यह लम्बा समय है। उद्योगीकरण के क्षेत्र में तीसरी योजना विस्तृत है और बहुत बड़ी है। १९६१ का मेला भी ऐसा ही है। दोनों का आपस में यह सम्बन्ध अचानक नहीं हुआ है। १९५५ का मेला देश में विशाल उद्योगीकरण की तैयारी का प्रदर्शक था। हमारे सामने कितना बड़ा रास्ता है और कितना खालीपन अभी हमें भरना है—यह इससे स्पष्ट प्रतीत होता है।

पिछले पांच साल हमारी वित्त-व्यवस्था के इतिहास में बड़े महत्वपूर्ण हैं। औद्योगिक उत्पादन काफी बढ़ गया है। नये उत्पादन बड़ी संख्या में बाजार में आ रहे हैं। हमारे औद्योगिक क्षितिज में तीन नये इस्पात के कारखाने चमक रहे हैं। इस प्रकार भारी इंजीनियरी, रासायनिक, रंग, इत्यादि में भी सफलता मिल रही है। हमारे इंजीनियरी उद्योग का सामान विश्व के बाजार में आ रहा है और हम तीसरी योजना में एक ऐसे महान् क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं जिससे जनता की समृद्धि बढ़ेगी। इसलिए, यह दूसरा उद्योग मेला भारत में धीमे-धीमे और स्थिरता से हो रहे विकास की झांकी पेश कर रहा है।

पिछले और वर्तमान मेले में कई समानताएं हैं। इसके आयोजक वही हैं और भारत सरकार से पहले जैसा ही प्रबल समर्थन मिला है। इसका स्वरूप भी पहले की तरह अन्तर्राष्ट्रीय है। स्थान भी वही है, अर्थात् मथुरा रोड पर, प्रदर्शनी का मैदान। लगातार लग रही, कई प्रदर्शनियों के कारण यह स्थान राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त कर रहा है। इस मैदान का विस्तार भी अब काफी हो गया है।

यह प्रदर्शनी विश्व के इस भाग में सब से बड़ी है, १८० एकड़ में जबकि १९५५ के मेले में ७२ एकड़ स्थान था। यह एक नगर के सामान आबाद हो गया है। १९५५ के मेले में ३६०० किलोवाट बिजली थी, जबकि इस मेले में ७२०० किलोवाट है, ठीक दुगुनी। विस्तार की दृष्टि से, एक दर्शक को सारी प्रदर्शनी देखने में ३५ मील से ज्यादा चलना पड़ेगा। प्रदर्शनी के तीन मुख्य द्वार हैं। पहले द्वार से चौथे द्वार तक १ हजार फुट की झील है जिसमें नौका बिहार की सुविधाएं हैं। रेलों ने १६ हजार टन से ज्यादा सामान करीब १ हजार वैगनों द्वारा प्रदर्शनी के लिए ढोया है। इसे लाने और उतारने के लिए ट्रकों की बड़ी तादाद काम कर रही है।

मेले में भाग लेने वालों की संख्या पहले की अपेक्षा बहुत ज्यादा है। सरकारी और निजी—दोनों क्षेत्र हिस्सा ले रहे हैं। विदेश—विशेषतः उनके प्रमुख उद्योग—खास हिस्सा ले रहे हैं। प्रदर्शनी में जिन चीजों का प्रदर्शन हो



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# प्रदर्शनी की रूपरेखा

तिलक पुल (हार्डिंग ब्रिज) और मथुरा मार्ग, नई दिल्ली में पुराना पाण्डवों का किला—इन दोनों के बीच १८० एकड़ जमीन के प्रदर्शनी मैदान में—फिर हलचल शुरू हो गई है। १० हजार से ज्यादा कारीगरों और मजदूरों की—जो १४ नवम्बर से प्रारम्भ होने वाली इस १९६१ भारतीय उद्योग प्रदर्शनी को अन्तिम रूप दे रहे हैं—आवाजों और कोलाहल से यहां का सारा वायु मंडल गूंज रहा है।

भारत के औद्योगिक विकास की इस "दूसरी खिड़की" का प्रारम्भ फैडरेशन आफ इंडियन चेम्बर आफ कामर्स की ओर से भारत सरकार के निकट सहयोग द्वारा हुआ है।

भारत की इस राजधानी में अभी तक जितनी प्रदर्शनियां हुई हैं, उनमें इस वर्ष की प्रदर्शनी सबसे बड़ी है। कृषि प्रदर्शनी और रेलवे शताब्दि प्रदर्शनी से भी यह बड़ी है। इसमें २० लाख वर्ग फुट से भी ज्यादा जमीन पर इमारतें और निर्मित स्टाल इत्यादि होंगे। पहले औद्योगिक मेले की तुलना में—जिसमें ९ लाख वर्ग फुट प्राप्त स्थान में केवल ७२ एकड़ स्थान आच्छादित था—यह प्रदर्शनी दुगुनी से भी ज्यादा है।

१८ विदेशों की कम्पनियां, ११ भारतीय प्रदेश, समस्त भारतीय सरकारी उद्योग और करीब ४०० भारतीय उद्योग गृह इस मेले में भाग ले रहे हैं।

चोटी के पांच स्थानों में से चार सबसे बड़े मंडप विदेशों ने लिये हैं। सबसे बड़ा मंडप अमेरिका का है। दूसरा सबसे बड़ा मंडप भारतीय रेलवे का है जो भारत का सबसे बड़ा सरकारी उद्योग है और जिसमें १० लाख से ज्यादा आदमी काम करते हैं। इसके बाद अगले तीन बड़े मंडप सोवियत रूस, ब्रिटेन और पश्चिमी जर्मनी के हैं।

सरकारी उद्योगों में "हिन्दुस्तान स्टील" का मंडप प्रभावशाली होगा।

अमरीकी सरकार के प्रदर्शनी-निर्देशक श्री मेसेमोर के अनुसार अमेरीकी मंडप, दुनिया में उनकी सरकार द्वारा अभी तक लगाये औद्योगिक मंडपों में, सबसे बड़ा होगा। यह करीब ५-५ एकड जमीन में होगा और इसमें भारी मशीनरी दिखाई जायगी जिसे इस तीसरी योजना में भारत विशेष तरजीह दे रहा है। यह मशीनरी भी ३ मिलियन डालर से भी ज्यादा की है। इस प्रदर्शनी पर अमरीकी सरकार का करीब ४-५ मिलियन डालर खर्च आया है।

भारत के लोग पहली बार हवाई कार देखेंगे जो जमीन से करीब १ फुट ऊंची चलती है। यह कार जमीन के ऐसे हिस्सों पर चलती है जहां मोटर नहीं चल सकती है।

ब्रिटिश मंडप की शुभ्र दीवारें इस ढंग की बनायी

---

रहा है, उनका क्षेत्र भी विस्तृत है। नवीनतम वैज्ञानिक और टेकनिकल वस्तुओं को दिखाया जा रहा है। मशीनरी, स्पुतनिक, हाथ उद्योग इत्यादि के इलावा कोमल कलाओं और कमनीय तथा सुन्दर वस्तुओं का प्रदर्शन भी हो रहा है।

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की बड़ी मात्रा ने इस मेले को सफल बना दिया है। करीब २० लाख वर्ग फुट और इससे भी ज्यादा मंडपों और स्टालों ने जिस जगह को घेरा है उसमें सरकारी और घरेलू तथा निजी—सभी उद्योगों ने हिस्सा लिया है। कई प्रदेश सरकारें भी हिस्सा ले रही हैं।

इस प्रदर्शनी को सफल बनाने के लिए जिस बुद्धि, समझ और परिश्रम ने अपना भाग अदा किया है उसका वर्णन करना सहज नहीं है। मंडपों और स्टालों के डिजाइन—जिसमें नयी और पुरानी स्थापत्य कला का समावेश है—यह बताते हैं कि निर्माताओं ने कितनी मेहनत और प्रखर बुद्धि से काम किया है। स्टालों के नमूने सांची के स्तूप, कुतुबमीनार और मिस्र के पिरामिडों जैसे हैं। भारतीय रेल, ब्रिटेन तथा अन्य देशों के प्रभावशाली मंडप हैं। इस बात का ध्यान रखा गया है कि यात्रियों के आने-जाने और घूमने-फिरने में पूरी सुविधा रहे।

इस प्रकार यह मेला व्यापारियों और निर्माताओं के मिलन का बढ़िया केन्द्र है। इससे हमारे देश के निर्यात को प्रोत्साहन मिलेगा और सबसे बढ़कर स्वदेश और विदेश के लोगों में विचार विनिमय, सद्भावना और मैत्री की वृद्धि होगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई हैं जिनमें दीवारों में किये गये प्रकाश की आकर्षक प्रतिच्छाया झलकेगी ।

ब्रिटिश क्षेत्र में ३५,००० घन फुट देदीप्यमान हवाई घर भी होगा । यह हवाई-घर जिस समय खड़ा हो जायगा, तब नायलोन की हल्की पर खुरदरी वाटर प्रूफ चमड़ी विशाल—इगलोगेड की तरह—दिखाई देगी । तीव्र गति वाले पंखों द्वारा ही यह हवा में फहराएगी, इसमें किसी किस्म के डंडे व रस्से नहीं लगे होंगे ।

ब्रिटिश मंडप के दो मुख्य भाग होंगे । पहला वह जिसमें ब्रिटेन भारत का औगोगिक हिस्सेदार होगा, अर्थात् भारत के उद्योगीकरण में ब्रिटेन का जो योगदान है उसका प्रदर्शन होगा । दूसरे भाग में ब्रिटिश सहयोग के साथ ब्रिटिश और भारतीय कम्पनियों के अपने उत्पादनों का प्रदर्शन होगा ।

पश्चिमी बंगाल में दुर्गापुर स्टील वर्क्स के निर्माण में "इस्कान" ने जो काम किया है, वह विशेष रूप से दिखाया जायगा ।

"स्वेक" मंडप में पानी हवाई जहाज का साजो समान, जिसमें एक्चुएटर, मोटर, जैनरेटर और निरन्तर स्पीड-ड्राइवर शामिल हैं—उसी ढंग के जैसे कम्पनी ने एअर इंडिया के बोइंग ७०७ को सैडस्ट्रैंड ड्राइव मुहय्या किये हैं—दिखाये जाएंगे ।

पूर्वी यूरुपीय देश, उत्तरी विअतनाम और यूगोस्लाविया—इस बात की पूरी कोशिश कर रहे हैं कि अपनी औद्योगिक सफलता को यथासम्भव बढ़िया ढंग से दिखायें । इसमें मशीनरी और कई अद्भुत चीजें शामिल हैं ।

रूसी मंडप जो, दरअसल, पिछले साल के कृषि मेले के लिए बनाया गया था, अब रूस से हाल ही में आये विशेषज्ञों द्वारा नई शक्ल में आ रहा है । जिन स्पुतनिकों और वेस्टाक में मेजर गागरिन और मेजर टिटोव अन्तरिक्ष यात्रा में गये थे—उनके नमूने दिखाये जाने की आशा है । ऐसी मशीनरी दिखाने पर विशेष जोर दिया जायगा जो भारत के लिए उपयोगी हो सकती है ।

भारतीय रेलवे की ओर से इस मेले का बहुत ही भव्य मंडप बनाया जा रहा है जिसमें दो मुख्य भवन होंगे, रेखा चित्रों और अन्य चित्रों से सुसज्जित, बीच में हरी घास के मैदान और केफ़टेरिया । दर्शक बिजली और भाप से चलने वाले इंजिनों, रेल डिब्बों, वेगन तथा भारत में बनने वाले अन्य रेल सामान को देख सकेंगे । इनमें से कई चीजें पहली बार दिखाई जाएंगी और काम करते नमूने दिखाये जाएंगे । इनका उद्देश्य जहां जानकारी देना है वहां साथ ही खुश करना भी है । दूसरी योजना में लक्ष्यों की पूर्ति और प्राप्त आत्म निर्भरता भी दिखाई जायगी । दूसरा लक्ष्य यह है कि विदेशों से आये खरीददारों की आंख भी इन पर जाए ।

मेले के अधिकारियों का यह प्रबल विश्वास है कि भारी दिक्कतों के बावजूद मेला ठीक तारीख पर शुरू हो जाएगा । कार्यकर्ताओं के सामने भारी और पेचीदा काम है । उदाहरण के लिए सफाई के काम, जैसे नालियां, सड़कें, बिजली की लाइनें इत्यादि काम कई सरकारी महकमों को सुपुर्द करने होंगे और उन्हें ब्यौरा बताना होगा । यह सारा काम अच्छे ढंग से और जोर से चल सके—इसके लिए सब सम्बद्ध पक्षों का सहयोग जरूरी है । बिजली के बढ़ते हुए बोझ को पूरा करने के लिए मौजूदा बिजली केन्द्र के अतिरिक्त दो अन्य उप-केन्द्र बनाये गये हैं । ४०० एक्स-टैंशन लाइनों की शक्ति का टेलीफोन एक्सचेंज भी लगाया जा रहा है और वह पूरा होने वाला है ।

यह सारे विकास कार्य पूरे होने जा रहे हैं ।

दो और प्रवेश द्वार बनाए जा रहे हैं जो उद्योग के अनुकूल ही हैं । मुगल ढंग का छज्जे वाला एक बाग और १०० फुट ऊंचे मीनार पर एक रेस्टौरां—इस मेले की खास चीजें होंगी ।

प्रवेश द्वार नम्बर २ में से जाने वाले दर्शक वह बाग देखेंगे जिसमें विभिन्न रंगों के फूल, पौधे व झाड़ियां होंगी । रेस्टोरां से दर्शक समूची प्रदर्शनी-भूमि का एक दृश्य देख सकेगा ।

मेले के भीतर सड़क के दोनों ओर फूल-पत्तियों के गमले सजाये जाएंगे । इनके बीच १५ बगीचे होंगे । एक चौड़ी झील—जिसमें नौकायान की सुविधा होगी—इस मेले का आकर्षण होगी ।

दर्शकों की भीड़ का मुकाबला करने के लिए डी० टी० यू० दो बस अड्डे कायम कर रही हैं, एक तिलक पुल के



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास और दूसरा पुराने किले पर।

प्रदर्शनी के अधिकारी एक पथ प्रदर्शक चित्र निकालने की योजना बना रहे हैं। "आप यहां पर हैं" इस प्रकार के चार्ट प्रमुख स्थानों पर मेले के भीतर टंगे होंगे जिससे दर्शकों को देखने-दिखाने में सुविधा हो। एक प्रदर्शनी-ग्रन्थ पथ-प्रदर्शन सहित—भी प्रकाशित किया जायगा। वह स्थिर साहित्य की चीज होगी जो प्रत्येक के पुस्तकालय की शोभा को बढ़ाने वाली होगी।

इस बार के मेले में चीन, हालैण्ड, बेलजियम, स्पेन, आस्ट्रेलिया और पाकिस्तान हिस्सा नहीं ले रहे हैं।

तैयारी में लगे सभी देशों में जबर्दस्त होड़ लगी हुई है। किसी भी मंडप में बाहरी व्यक्तियों को प्रविष्ट नहीं होने दिया जाता ताकि उनके नये-नये डिजाइनों और चित्रों की रूपरेखाओं की चोरी न हो जाए। ब्रिटेन, फ्रांस, अरब गणराज्य, जर्मनी, उत्तरी वियतनाम, स्विट्जरलैंड (निजी क्षेत्र), बलगेरिया, आस्ट्रिया आदि भी एक दूसरे से बढ़ कर आकर्षक बनने के प्रयत्न में हैं। जर्मनी के मंडप में इस बार शीशे की स्त्री की चर्चा सब ओर है। भारत के ३८० मंडप है जिनमें से आधे लघु उद्योगों के हैं।

हालैंड के सहयोग से बन रहे "फिलिप्स इंडिया लि०" का मंडप वस्तुतः अन्तर्राष्ट्रीय मंडप है। इसमें फिलिप्स द्वारा बनाई गई चीजें हैं, जैसे टेलीवीजन, रेडियो, एक्स रे, बिजली आदि के नये नमूने का सामान। डेनमार्क, नारवे, स्वीडन आदि देशों से इस मंडप के निर्माण के लिए सामग्री आई है।

"फिलिप्स" के मंडप में अनेक मनोरंजक और आश्चर्य-जनक चीजें हैं। एक जादू का बाग होगा जिसमें विभिन्न देशों की वनस्पति होंगी। इसमें जादू के पशु-पक्षी रखे जाएंगे और जब एक व्यक्ति उन पर बारी-बारी से बंदूक चलाएगा तो उनकी आंखें भी बन्द हो जाएगी। इस मंडप में एक ऐसा झरना भी होगा जिसकी लहरें संगीत की ध्वनि के साथ ही ऊपर-नीचे होंगी।

इस प्रदर्शनी में जहां सबसे बड़े मंडप अमेरिका और सोवियत रूस के हैं, वहां दोनों मंडप आमने-सामने एक ही सड़क पर हैं। इस मेले में तो कम से कम दोनों एकदम पड़ौसी हैं। दोनों देशों के मंडपों के भीतर दिन रात तैयारी हो रही है। हर दम, मोटर गाड़ियों पर अमेरीकी और रूसी अफसर आते-जाते रहते हैं। दोनों अपने काम से यह दिखाने का प्रयत्न कर रहे हैं कि किसके काम करने का ढंग अधिक अच्छा, जल्दी और प्रभावशाली है। दोनों देश दर्शकों के सामने अपने देश का और अपनी शासन पद्धति का सर्वोत्तम स्वरूप पेश करने की होड़ में हैं।

रूसी मंडप के बाहर स्पुतनिक का भारी नमूना जहां दर्शक का स्वागत करेगा वहां अमरीकी मंडप में उसे एक ऐसा यंत्र दिखाया जाएगा जिसमें अन्तरिक्ष उपग्रह द्वारा मौसम की भविष्य वाणी करना प्रदर्शित किया जायगा। ५०० मील ऊपर अन्तरिक्ष के बादल का फोटो और टिरोस का प्रति १०० मिनिट में पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाना दिखाया जायगा। सोवियत मंडप में हरदम चक्कर लगाता टेलीवीजन ट्रांसमीटर और अमरीकी मंडप में प्रदर्शनी की अवधि में कुछ मशीनों को चक्कर लगातार करता हुआ दिखाया जायगा। दोनों देशों के मंडपों में अपने-अपने देश की औद्योगिक उन्नति की झांकी दिखाई जायगी। अमेरिकी मंडप में छात्रों की एक ऐसी कक्षा दिखाई जाएगी जिसमें बिजली के साधनों के द्वारा पढ़ाई कराई जा रही है। दोनों देशों के मंडपों में भारत के उद्योगी करण के लिए दी जा रही सहायता का प्रदर्शन विशेष रूप से होगा।

इन दोनों देशों के मंडपों को देखने के बाद दर्शक उसी सड़क से वहां जायगा जिधर "आज का भारत" का शान-दार मंडप है।

## प्रदर्शनी पर ५ करोड़ रु० का खर्च

अन्तर्राष्ट्रीय उद्योग मेले का उद्घाटन १४ नवम्बर को उपराष्ट्रपति डा० राधा कृष्णन करेंगे। उद्घाटन-समारोह के लिये लगभग ५००० प्रतिष्ठित नागरिकों को निमंत्रित किया जायगा।

भारतीय उद्योग और वाणिज्य मंडल के तत्वावधान में आयोजित इस मेले के एक अधिकारी ने बताया कि मेले की विशालता का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि केवल ३८० छोटे-बड़े कक्षों के निर्माण में ही लगभग ५ करोड़ रुपए की पूंजी लगने की सम्भावना है। अधिकारी ने यह भी बताया कि सारे मेले का एक पूर्ण चलचित्र तैयार किया जायगा। इस मेले के अन्दर विभिन्न प्रकार के १५ उद्यान लगाए जाएंगे जिसमें एक उद्यान राष्ट्रपति भवन के मुगल उद्यान की तरह का होगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत के जन-जीवन के प्रेरक मेले

भारत के जन-जीवन में मेलों का एक विशिष्ट स्थान है। धार्मिक लाभ की दृष्टि से की गयी तीर्थ यात्राएं और मेले दोनों का आपस में निकट सम्पर्क रहा है। मेलों में धार्मिक कथा-वार्त्ता और सत्संग के अतिरिक्त देसावर से आये व्यापारियों का मेल-जोल और अपनी-अपनी चीजों का क्रय-विक्रय भी होता था। प्रदर्शनी की परम्परा तो यूरुप से इस देश में आयी है। प्रदर्शनी और मेले में अन्तर है। प्रदर्शनी में निर्माता अपने माल का प्रदर्शन करता है जब कि मेले का उद्देश्य इतना प्रदर्शन नहीं है जितना ग्राहक और निर्माता को निकट सम्पर्क में लाना है। यद्यपि मेले में बहुत खरीद फरोख्त नहीं होती तथापि विक्रेता व ग्राहक एक दूसरे को पहचान जाते हैं और आपसी व्यापार की पृष्ठभूमि तैयार हो जाती है।

आज मेलों का आर्थिक महत्व कम हो रहा है पर उनका एकदम अन्त नहीं हुआ है। भारत के प्रत्येक प्रदेश, जिला और गांव में स्थानीय मेले काफी होते हैं। जिन दिनों सवारी और सड़क के आज जैसे सस्ते, तेज और कई किस्म के साधन इतनी मात्रा में नहीं थे, उस समय मेले ही भारी मात्रा में क्रय-विक्रय के साधन होते थे। मेलों की खरीद, प्रायः सरकारी अधिकारियों के सामने होती है। इसलिए, लेने-देने के विवादास्पद मामले जल्दी वहीं तय हो जाते हैं।

## यूरुप के मेले

फ्रांस व ब्रिटेन आदि देशों में भी मेले लगते थे। वहां आपसी मामलों को तय करने के लिए विशेष अदालतें नियत करदी गयी थीं। इन मेलों का शनैः शनैः विकास होता गया। सिक्के की खोट के कारण मूल्य का भुगतान तत्काल संभव न रहा, वह पीछे से होने लगा। १७-१८ वीं सदी में मेले सुसंगठित रूप से होने लगे।

## लिपजिग का मेला

यूरुप का प्रसिद्ध लिपजिग का मेला १५०७ में शुरू हुआ। इसमें पूर्वी यूरुप के देश विशेष रूप से भाग लेते थे क्योंकि अच्छी सड़कों के कारण वह समस्त यूरुप का केन्द्र सा बन चुका था। इस इलाके के देश अंग्रेज डच आदि व्यापारियों से सम्पर्क कायम करते थे। इन मेलों में लाखों रुपयों की खरीद फरोख्त होती थी। यूरुप में नये मेलों का तो अभाव हो गया है पर लिपजिग का मेला आज भी जारी है और यह अन्तर्राष्ट्रीय रूप धारण कर चुका है। रूस आदि देशों के मेले अब फीके होते जा रहे हैं।

## प्रदर्शनियों का प्रारम्भ

उद्योग धन्धों के चलने से प्रदर्शनियों का प्रारम्भ हुआ। लन्दन में १८५१ में एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी हुई थी जो, लगभग, स्थानीय ही थी। उस समय इसका विरोध किया गया था। इसके विरोध में दी जाने वाली दलीलों में मुख्य यह थी कि विदेशी राजनितिक क्रान्तिकारी यहां आकर अशान्ति पैदा कर देंगे, अंग्रेजों की भावनाओं और राजा के प्रति जनता की श्रद्धा की भावना को चोट लगेगी और विदेशी व्यापारी हमारे रहस्यों को जान लेंगे।

## प्रदर्शनियों से लाभ

पर ये अशंकाएं निर्मूल सिद्ध हुई और निर्यात व्यापार को प्रोत्साहन मिला। इस प्रदर्शनी से दो लाख पौंड की बचत हुई और विदेशों में इंगलैंड की व्यापारिक व निर्माण कुशलता की धाक बैठ गयी। विदेशी प्रतिनिधियों ने इससे बहुत कुछ सीखा। इसके बाद से प्रदर्शनियों का तांता लग गया और प्रायः सभी उन्नत देशों में प्रदर्शनियों का आयोजन होने लगा।

इसके बाद कई अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियां हुई पर आर्थिक दृष्टि से वे असफल रहीं, यद्यपि प्रचार के दृष्टि से वे सफल ही रहीं। इन प्रदर्शनियों के कारण जनता का ध्यान नये आविष्कारों की ओर खींचा। रबड़ की नयी संम्भावनाएं, टेलीफोन, बिजली, इंजन, मोटर, हवाई जहाज इत्यादि के आविष्कार जनता के सामने आये। हाल की प्रदर्शनियों द्वारा अणु शक्ति की ओर सबका ध्यान खिंचा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इस प्रकार, इन प्रदर्शनियों द्वारा राष्ट्र में व्यापक चेतना व प्रगति की भावना का संचार हुआ।

## भारत में प्रदर्शनियों का आरम्भ

भारत में इन प्रदर्शनियों का इतिहास संक्षिप्त ही है। कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन १८८४ में हुआ। उस समय उसके साथ सबसे पहली औद्योगिक प्रदर्शनी हुई। स्वदेशी की बढ़ती हुई भावना के कारण भारतीय निर्माता अधिक संगठित रूप से कांग्रेस के अधिवेशनों के साथ औद्योगिक प्रदर्शनियां करने लगे। कुछ प्रांतों में भी प्रदर्शनियां होने लगी।

देश के स्वतन्त्र हो जाने के बाद प्रदर्शनियों की संख्या बढ़ने लगी। दिल्ली में रेलवे शताब्दी, अन्तर्राष्ट्रीय इंजीनियरिंग, कम खर्च के मकान और डाक-तार की प्रदर्शनियां पिछले वर्षों में हो चुकी है। मथुरा रोड पर १९५९ में कृषि प्रदर्शनी, १९६० में औद्योगिक प्रदर्शनी और इस साल फिर उद्योग प्रदर्शनी—एक ही स्थान पर हो रही है। यह वर्तमान औद्योगिक मेला अपने ढंग का निराला है। इसमें भारत के छोटे-बड़े व्यापारी, भारत सरकार के उद्योग और प्रमुख विदेश भाग ले रहे हैं। इसमें औद्योगिक उन्नति के साथ-साथ वैज्ञानिक उन्नति का भी—विशेषतः विदेशों में—परिचय मिलता है। अभी तक बहुत से भारतीय दर्शक विदेशों की औद्योगिक प्रदर्शनियों से प्रभावित होकर यहां आते थे। अब स्थिति बदल रही है। अब विदेशी भारत में बड़े पैमाने पर हो रहे उद्योगीकरण से प्रभावित होकर यहां से जाते हैं।

यह प्रदर्शनी लगभग ६ सप्ताह तक रहेगी। इसके द्वारा भारत और विदेशों के व्यापारियों और निर्माताओं का मिलन होगा, और व्यतिगत सम्पर्कों, आवश्यकताओं की प्रथम सूचनाओं, अवस्थाओं, प्रकार, स्वरूप और उपलब्धियों के आदान-प्रदान के अतिरिक्त विभिन्न देशों के साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने के अवसर प्राप्त होंगे। व्यापार और विचार—दोनों का स्वच्छन्द विनिमय देश के लिए लाभकारी होगा। भारत के व्यापारियों को विशेष प्रेरणा मिलेगी, और विकास के नये-नये क्षेत्र उनके सामने खुल जायेंगे।

इस मेले को देखने से भारत की औद्योगिक उन्नति का बड़ा उज्ज्वल चित्र सामने आ जाता है। इंजन, बायलर, बिजली के मोटर, बिजली के पंखे, बिजली के केबल व तार, डीजल इंजन, कपड़ा कारखानों की मशीनें, सीने की मशीन, साइकिल, मशीनों के पुर्जे, छोटे औजार इत्यादि अनेक दिशाओं में भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है और उसकी आशा प्रद झांकियां इस प्रदर्शनी में देखने को मिलती है।

# प्रदर्शनी में सोवियत-मंडप

दिल्ली की उद्योग प्रदर्शनी में सोवियत संघ मास्को, कुइबिशेव, नोवोसीबिर्स्क, ओद्येस्सा, गोर्की, गोमेल आदि नगरों में बने बैकिंग आफ लेथ, मिलिंग, टर्निंग, गियरकटिंग, ग्राइंडिंग और ड्रिलिंग के यन्त्र तथा शेपिंग हाइड्रालिक मशीनें प्रदर्शित करेगा। इनमें से कुछ मशीनें भारतीय कारखानों में काम भी कर रही हैं।

दर्शकगण मंडप में एक अर्ध-स्वचालित गियर कटिंग मशीनें देखेंगे, जो बड़ा जटिल कार्य करती है। मंडप में एक कम्बिनेशन टर्निंग लेथ है जिसमें तरह-तरह के सहायक पुर्जे हैं। इस लेथ के केन्द्रों की ऊंचाई घटायी-बढ़ायी जा सकती है। इसमें ६०० मिलीमीटर व्यास से अधिक के सामानों की भी १००० मिलिमीटर लम्बाई तक मशीनिंग की जा सकती है। यह छोटी-छोटी फैक्टरियों के तथा मरम्मत खातों के लिए बड़े काम की चीज है।

भारतीय उद्योग प्रदर्शनी में सोवियत मंडप के अन्दर आप दुर्गापुर (पश्चिमी बंगाल) में बन रहे खान-मशीन कारखाने का एक बढ़िया माडल देखेंगे। यह कारखाना हिन्दुस्तान मशीन टूल कार्पोरेशन द्वारा सोवियत संगठनों से मिलकर तैयार किया जा रहा है।

सोवियत संघ का निर्यात-आयात कार्पोरेशन मश्शीनोरिन्तोर्ग प्रदर्शनी में स्थित सोवियत मंडप में बड़ा स्थान ग्रहण करेगा।

सोवियत संघ की काशिकीय उद्योगों द्वारा प्रस्तुत माल सर्वप्रमुख मालों में होंगे। इसमें नये सोवियत कैमरे



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अखिल भारतीय उद्योग वाणिज्य संघ

श्री पी० चेंतसाल राव, मंत्री, संघ और भारतीय उद्योग मेला

संघ द्वारा १९५५ में पहला भारतीय मेला आयोजित किया गया था जिसके बाद, अब १९६१ में ज्यादा बड़े पैमाने पर यह दूसरा मेला लगाये जाने से संघ की ख्याति काफी अधिक हो गई है। फिर भी, इसके मूल भूत और सामान्य विविध प्रकार के कामों का काफी परिचय लोगों को नहीं है। इस व्यापारिक संघ की स्थापना और इसकी प्रवृत्तियों के बारे में यह परिचयात्मक लेख पाठकों के लिए लाभकारी होगा।

१९२७ में स्थापित यह संघ भारत के औद्योगिक और वाणिज्य क्षेत्र में अपना साथी नहीं रखता। इस क्षेत्र के प्रमुख व्यक्तियों द्वारा इसकी स्थापना की गई थी क्योंकि एक केन्द्रीय संस्था की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। इस दृढ़ आधार पर यह संघ पिछले ३४ वर्ष में काफी प्रगति कर चुका है। स्वतन्त्रता से पहले और अब भी यह संघ व्यापारी वर्ग के लिये आंख, कान और मुख का काम करता है। व्यापार क्षेत्र में कुछ ऐसी संस्थाएं अभी तक मौजूद हैं जिनके नाम तो भारतीय हैं पर वे इस संघ की सदस्य नहीं हैं। ये भारत के व्यापारी-वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती हैं। यह संघ अपने राष्ट्रीय स्वरूप के कारण देशी और भारत में लगी विदेशी पूंजी—दोनों के न्याय संगत हितों का ध्यान रखती है। इस संघ की स्थिति मुख्यतः, चार बातों पर आधारित हैं—(१) सदस्यता का क्षेत्र (२) समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण (३) देश के आर्थिक और राष्ट्रीय जीवन में योगदान और (४) अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ सम्पर्क।

## (१) सदस्यता का क्षेत्र

संघ का प्रारम्भ २४ वाणिज्य, व्यापार और औद्योगिक संस्थाओं की सदस्यता से हुआ था जब कि आज इसकी सदस्यता सूची पर १३८ संस्थाएं हैं और देश के २९२ प्रमुख व्यापार-गृह इसके सम्बद्ध-सदस्य हैं। इस सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि सदस्य-संस्थाओं के अपने हजारों की संख्या वाले सदस्य हैं। इस प्रकार, प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से, इस संघ के अन्तर्गत समूचे देश के लगभग सभी संगठित उद्योग, वाणिज्य और व्यापार का क्षेत्र समा जाता है।

## (२) समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण

न केवल व्यापारी क्षेत्र में किन्तु सरकारी क्षेत्रों में भी आज संघ को जिस सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, उसका केवल यह कारण नहीं है कि यह संस्था व्यापारियों का विस्तृत प्रतिनिधित्व करती है, अपितु, देश की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं के प्रति जो इसका दृष्टिकोण है, वह भी इसके सम्मान को ऊंचा करने में एक बड़ा हेतु है। इस संघ का मुख्य लक्ष्य हमेशा यही रहा है कि वह सारे भारत के व्यापारी समुदाय में आत्म विश्वास को बढ़ाये और यह भावना पैदा करे कि अगर कोई चीज सारे देश के लिए अनुकूल है, तो कोई कारण नहीं कि वह एक व्यापार और एक प्रदेश के अनुकूल न हो। हरेक समस्या पर विशाल दृष्टि से विचार किया जाता है और उसे देश की सामाजिक और आर्थिक प्रक्रिया का अंग समझा जाता है। इस संघ की स्थापना के पहले सालों में देश में स्वतंत्रता

---

होंगे, जिनमें जोर्की—६ भी है।

इस विभाग में अन्य वस्तुएं हैं: रम्पा अपेराग्लास, बाइनोक्युलर, स्कूली खुर्दबीन, आदि।

सोवियत टेलीविजन उद्योग अनेक नये टी० वी० सैट प्रदर्शित कर रहा है। इनमें से एक है तेम्स-६ जिस पर १२ टेलीविजन चैनल प्राप्त होते हैं। इसका स्क्रीन २९०×३७० मिलिमीटर का है। तेम्स-७ का स्क्रीन ३७०×४७० मिलिमीटर का है।

सभी टेलीविजन सैट चलते हुए दिखाये जाते हैं।

वायरलेस यन्त्रों में मिंस्क-टी नामक बैटरी ट्रैंसिस्टर सैट विशेष दिलचस्प चीज है।

गाउजा दो रेंजों का पाकेट सैट है। उसके बाक्स में लाउड स्पीकर, बैटरी और चुम्बकीय एण्टीना लगे हैं।

निकट ही सोवियत टेप रिकार्डर लगा है। टेप-रिकार्डर के लिए अलग-अलग।

प्रदर्शित वस्तुओं में सोवियत कलाई-घड़ियों का खास स्थान है। सिंगनल नामक कलाई-घड़ी तो दरअसल एक नन्हा अलार्म-क्लाक ही है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आन्दोलन चल रहा था। संघ की ओर से इस आन्दोलन को पूरा समर्थन मिला। यह सौभाग्य की बात है कि भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस और इस संघ में हमेशा सद्-भावना और सहयोग रहा है। अपने क्षेत्र में, संघ हमेशा उन विधान सम्बन्धी पगों के प्रति जागरूक रहता है जिनका सम्बन्ध भारतीय उद्योग व वाणिज्य के साथ होता है। हम हमेशा सरकार पर यह जोर देते रहते हैं कि वह अपनी आर्थिक, वित्तीय, टैक्स इत्यादि और अन्य नीतियों को ऐसा स्वरूप दे जिससे व्यापार, वाणिज्य और उद्योग को पूर्ण विकसित होने का अवसर मिल सके। संघ की यह कम उपलब्धि नहीं है कि उसने व्यापारी वर्ग का दृष्टिकोण केवल कारोबार करने से बदलकर निर्माण करने की ओर प्रेरित किया है, अर्थात् पूर्ण रूप में उद्योगीकरण की दिशा में। आजादी से पहले भी संघ आयोजन से सम्बद्ध प्रश्नों में बहुत दिलचस्पी लेता था और अब योजनाओं के शुरू किये जाने पर वह इसमें राष्ट्रीय सरकार की नीति के अंश स्वरूप में हिस्सा लेता है। इसने दूसरी और तीसरी पांच साला योजनाओं की अपनी रूप रेखा प्रस्तुत की। योज-नाओं को सफल बनाने के लिए पूर्व—आवश्यकता के रूप में संघ इस बात पर विशेष जोर देता है कि आर्थिक विकास के लिए केवल उद्योग और वाणिज्य का स्वस्थ नीतियों पर आधारित होना ही जरूरी नहीं है किन्तु आर्थिक प्रशासन भी उत्तम होना चाहिए, शिक्षा का सम्बन्ध पूर्ण रूप में राष्ट्रीय जीवन के साथ होना चाहिए और अधिक उत्पादन को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

## आर्थिक और राष्ट्रीय जीवन में योगदान

१९२७ से लेकर शायद ही कोई ऐसा आर्थिक महत्व का प्रश्न होगा जिस पर संघ ने विचार न किया हो। तटीय जहाज रानी के संरक्षण का इसने प्रबल सम-र्थन किया ताकि राष्ट्रीय जहाज रानी को प्रोत्साहन मिल सके। दूसरे युद्ध काल में इसने देश के आयात निर्यात व्यापार में विदेशी संस्थाओं के प्रवेश का प्रबल विरोध किया। जमा हो रहे स्टरलिंग पावने की ओर देश का ध्यान खींचने में यह संघ, सबसे आगे था। युद्ध के पश्चात् के निर्माण कार्य में संघ पीछे नहीं रहा। विभिन्न अन्त-र्राष्ट्रीय सम्मेलनों में इसने हमेशा भारतीय दृष्टिकोण को जोरदार शब्दों में रखा। हाल ही में यूरोप के सांझे बाजार के मामले में संघ ने विशेष हिस्सा लिया।

संघ स्मरणपत्रक, आवेदन, प्रकाशन तथा अपने प्रतिनिधियों द्वारा अपना कार्य करता है। ६० से अधिक संस्थाओं में संघ का प्रतिनिधित्व है। १९५५ में संघ ने एक अन्तर्राष्ट्रीय मेले का आयोजन किया था जिस का नाम भारतीय उद्योग मेला था। यह अपने ढंग का भारत में पहला मेला था। पिछले से कई गुणा बड़ा दूसरा मेला, इस वर्ष के अंत में, दिल्ली में फिर संघ द्वारा आयोजित किया गया है।

संघ ने पंच नामेका ट्रिब्यूनल कायम किया है और इस बारे में अमेरिका, जापान, जर्मन के साथ ऐसा इकरार नामा किया है जिससे इन देशों और भारत के बीच होने वाले व्यापारी झगड़ों का आपसी फैसला हो सके। अन्य विदेशी संस्थाओं के साथ भी इसी प्रकार का समझौता करने के लिए संघ प्रयत्नशील है।

## अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से सम्बन्ध

अन्तर्राष्ट्रीय मोर्चे पर, संघ अन्तर्राष्ट्रीय मेलों का आयोजन करता है और भारत की ऐसी संस्थाएं जिनका आन्तर्राष्ट्रीय संघों से सम्बन्ध है, यह संघ उनके साथ निकट सम्पर्क रखता है और उन्हें अपनी प्रवृतियों में प्रोत्साहन देता है। इन संस्थाओं की बनी-भारत की राष्ट्रीय समितियां अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संघ में हिस्सा लेती हैं। इस अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संघ के क्षेत्रीय—आयोग की प्रवृत्तियों की देखरेख हमारे संघ का सचिवालय ही करता है। संघ यह चाहता है कि विकसित और औद्योगिक देशों और कम विकसित देशों के बीच सामान और सेवाओं का, न्याय संगत और पक्षपात रहित आधार पर, विनिमय होता रहे। संघ यह चाहता है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारका स्वरूप समय-समय पर बदलते रहना चाहिए ताकि विश्व-व्यापार को प्रोत्साहन मिले।

## संघ का भविष्य

भारत के आर्थिक जीवन में जो विविध प्रकार का है और कभी-कभी पारस्परिक संघर्ष युक्त होजाता है—यह संघ एकता का प्रतीक है। देश में एक महत्वपूर्ण आर्थिक संस्था के रूप में संघ का विकास इसी लिए हुआ है क्योंकि इसके पास अनुभव है, योग्यता है और दूर दृष्टि है उन उद्योगपतियों और व्यापारियों की जो भारत के ऊर्ध्व स्थानीय हैं। ऐसे बहुत कम अवसर आते हैं जब संघ के निर्णय बहुमत से होते हों—समिति की बैठकों में या वार्षिक अधिवेशनों में वे निर्णय एक मत से ही होते हैं। इसी में संघ की शक्ति अन्तर्निहित है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत की रेलों में बिजली के इंजन

ले.-श्री एच० डी० अवस्थी

भाप का इंजन एक दिन में १०० मील चलता है, तो बिजली का इंजन एक दिन में २५० मील चल सकता है। यही कारण है कि उन्नतिशील देशों में बिजली से अधिक रेलें चलती हैं। बिजली के इंजनों से न धुआं होता है न राख और खर्च भी भाप तथा डीजल के इंजनों से कम होता है।

बिजली का एक इंजन भाप के ढाई इंजनों के बराबर काम करता है। उन्नत देशों में मुख्य लाइनों पर बिजली के और शाखा लाइनों पर डीजल के इंजन चलते हैं। भाप और डीजल के इंजनों से बिजली के इंजनों पर खर्च कम होता है। अतः रेलों के आधुनिकीकरण में बिजली से रेल चलाने का बहुत महत्व है।

## ए० सी० और डी० सी०

डी० सी० से ए० सी० बिजली के इंजन अच्छे होते हैं यद्यपि दोनों में डी० सी० की ही मोटर लगती है। सब बातों पर विचार करके १९५७ में रेल मंत्रालय ने २५ किलोवाट ए० सी० बिजली के इंजनों को स्टैंडर्ड निश्चित किया।

भारत में बिजली के इंजन, बहुत से उन्नत देशों से पहले ही चलने शुरू हो गये थे। मध्य रेलवे में सन् १९२५ में १५०० वोल्ट के डी० सी० इंजन चलने लगे थे। पहली योजना के अन्त में ३९० किलोमीटर लाइनों पर बिजली से रेल चल रही थी। यह सारा काम विदेशी सलाहकारों की सहायता से ही शुरू हुआ। इसके लिए इंजन व डिब्बे व सामान भी बाहर से ही मंगाये गये।

पहली योजना के आखिर साल से बिजली की रेल चलाने के काम में तेजी आई। १९५४ के मध्य में हवड़ा-बर्दवान और शेवराफुली-तारकेश्वर भागों पर ३००० वोल्ट डी० सी० बिजली से रेल चलाने की तैयारी शुरू की गई। दिसम्बर, १९५७ में प्रधानमंत्री ने हावड़ा से बन्देल तक बिजली से चलाने का श्रीगणेश किया।

बिजली से रेल-संचालन के लिए केन्द्रीय सरकार ने एक संगठन स्थापित किया। और इस दिशा में काफी प्रगति हुई है। १९६१-६२ में ५३६ किलोमीटर पर ए० सी० बिजली की रेल चलने लगेंगी।

## दूसरी योजना में प्रगति

तीसरी और आगे की योजनाओं में बिजली से रेल चलाने का काफी बड़ा कार्यक्रम है। अतः बिजली के इंजन और डिब्बे बनाना भी जरूरी है। बिजली की रेल चलाने में मुख्य लाइनों पर चल स्टाक पर कुल खर्च का लगभग ३३ प्रतिशत तक खर्च आता है। उपनगरीय लाइनों पर इससे भी ज्यादा खर्च हो सकता है। दूसरी योजना में तार से बिजली लेने आदि का सामान देश में बनने लगा है। फिर भी ११० ए० सी० इंजन बाहर से मंगाने पड़े।

बाहर से इंजन आदि मंगाने में विदेशी मुद्रा के अलावा कुछ दिक्कतें और भी हैं। माल आने में काफी विलम्ब होता है। टेंडर मंगाने, ठेका देने और उसके बाद की कार-वाइयों में बहुत समय लगता है। हमारे इंजीनीयरों का इन कामों में काफी समय बर्बाद हो जाता है। अतः रेल मंडल ने तीसरी योजना के देश में बिजली के इंजन बनाने का काम शुरू किया है। इलेक्ट्रिकल मल्टीपल यूनिटें भी देश में ही बनेंगी, डी० सी० के हिस्से निजी कारखानों में और ए० सी० के पेरम्बूर कारखाने में बनेंगे। बिजली के भारी कल-पुर्जे भोपाल के कारखाने में बनेंगे। चित्तरंजन कारखाने में ए० सी० और डी० सी के बड़ी व छोटी लाइनों के इंजनों के हिस्से बनेंगे यहीं इनमें बिजली का सामान फिट होगा और पूरा इंजन तैयार होगा।

## चित्तरंजन में निर्माण

इस कारखाने में डी० सी० के २१ इंजन बनना शुरू हो गया है। बड़ी लाइन के मालगाड़ी के ए० सी० के ५७ इंजनों और छोटी लाइन के सवारी और मालगाड़ी के १६



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ए० सी० इंजनों के हिस्से बनाने का आर्डर भी कारखाने को दिया जा चुका है। बड़ी लाइन के माल और सवारी गाड़ियों के २० और ए० सी० इंजन भी इस कारखाने में बनेंगे।

इस कारखाने में प्रति मास बिजली के छः इंजन बनाने का लक्ष्य है, जो तीसरी योजना समाप्त होने से काफी पहले पूरा हो जाएगा। बिजली से रेल चालन का कार्यक्रम तभी पूरा हो सकता है, जब जल्दी से जल्दी देश में इंजन बनने लगें। आशा है चित्तरंजन कारखाना इस काम को कुशलता से पूरा करेगा। चित्तरंजन में बना बिजली का पहला इंजन १४ अक्तूबर को उतारा गया।

## तीसरी योजना में

तीसरी योजना में लगभग १,१००, मील पर और बिजली से रेल चलाने का विचार है। अतः बिजली के इंजनों की मांग बढ़ना स्वाभाविक है। इसलिए देश में इन इंजनों का बनाना भी बहुत जरूरी है।

शुरू में चित्तरंजन कारखाने में प्रतिमास डी० सी० के ६ इंजन बनाने का निश्चय किया गया। इस इंजन के पुर्जे, हिस्से आदि इस कारखाने में ही बनेंगे, किन्तु शुरू में बिजली का सामान विदेशों से मंगाना पड़ेगा। भोपाल के बिजली के भारी सामान कारखाने में जब काफी सामान बनने लगेगा, तब इंजनों के लिए बिजली का सामान भी देश में ही मिलने लगेगा।

## बिजली का पहला इंजन

इस कारखाने का बिजली का पहला इंजन अब तैयार है। यह ३,६००० अश्वशक्ति का है और १,५०० वोल्ट की डी० सी० बिजली से चलेगा। इसके अधिकांश पुर्जे चित्तरंजन में ही बने हैं और बिजली का सामान इंग्लैंड से मंगाकर लगाया गया है। इसमें ३,९०० प्रकार के कुल लगभग ३४ हजार हिस्से और पुर्जे लगे हैं।

बिजली का यह पहला इंजन चित्तरंजन की कुशलता और कारीगरी का नमूना है। इसे बनाने में बहुत कम काम ऐसा है, जिसे रद्द करना पड़ा या दोबारा करना पड़ा। कुछ विदेशी विशेषज्ञों का ख्याल था कि इस इंजन को बनाने में १४ महीने लग जाएंगे। परन्तु विदेशों से सामान आने में विलम्ब होने पर भी यह इंजन १२ महीने में बन गया।

यह इंजन मध्य रेलवे को दिया जाएगा। इससे पश्चिमी घाट के क्षेत्र में माल और सवारी, दोनों तरह की गाड़ियां खींची जाएगी। यह इंजन ५६० टन की एक्सप्रेस गाड़ी ६५ मील प्रति घंटा की गति से और २ हजार टन की मालगाड़ी ४५ मील की गति से खींच सकता है। इसका वजन १२३ टन है और एक्सिल-भार २०.५ टन है। यह तीन-तीन धुरी (एक्सिलों) की बोगियों पर है। प्रत्येक धुरी में अलग चालान मोटर लगे हैं।

इन इंजनों में ऐसे ब्रेक लगे हैं, जो गहरी ढाल पर गाड़ी को ऐसा सम्भाल कर उतारते हैं, जिससे ब्रेकों और पहियों की घिसाई कम होती है। इसमें बिजली का धक्का आदि बचाने का भी अच्छा इन्तजाम है।


## 'भारत व्यापार पत्रिका' की विशेषताएं

पृष्ठ सं. १०० वार्षिक चंदा ८) साधारण अंक ७५ न.पै.

- उद्योगपतियों एवं व्यापारियों के लिए उपयोगी सामग्री
- व्यापारिक भविष्यवाणी
- एक विज्ञापन मुफ्त छापने की योजना
- अर्थशास्त्र के छात्रों के लिए अनेक जानकारी
- मनोरंजन के लिए आकर्षक कहानी, गंगा की लहरें स्तम्भ में व्यंग विनोद तथा सामयिक कार्टून
- सम्पादक की डाक में आपके प्रश्नोत्तर
- इसके अलावा अनेकों स्थाई स्तम्भ

अगर आपने अब तक पत्रिका नहीं देखी है तो आज ही इस विज्ञापन की कटिंग के साथ २५ नये पैसे का पोस्टेज भेजकर नमूना मंगाइये। विज्ञापन दर तथा जानकारी के लिए लिखें—

**व्यवस्थापक, भारत व्यापार पत्रिका (मासिक)**

राजा दरवाजा, वाराणसी

तार-केन्द्रको पो० बा० नं० ४९ फोन-३३४३




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सड़क परिवहन और सरकार

बीस साल के अन्दर इतनी सड़कें बनाने का लक्ष्य है कि देश में कोई गांव ऐसा न रह जाए जो किसी भी पक्की सड़क के चार मील से ज्यादा दूर हो और हर गांव से डेढ़ मील के अन्दर कोई न कोई कच्ची या पक्की सड़क अवश्य होगी। यानी किसी गांव वाले को अपने गांव से आने जाने के लिये बस पकड़ने ४ मील से ज्यादा न जाना पड़े। यह सड़क विकास के २० वर्षी कार्यक्रम का लक्ष्य है।

## सरकार की व्यवस्था

राज्य सरकारों की सरकारी सड़क गाड़ियों में, महाराष्ट्र के पास सबसे अधिक गाड़ियां, ४१९० हैं। उत्तर प्रदेश के पास ३२०० और गुजरात के पास २०२४ हैं।

सन् १९५९-६० में उत्तर प्रदेश रोडवेज को सबसे अधिक २,११,१६,००० रु० की आमदनी हुई। महाराष्ट्र को १ करोड़ २८ लाख ७२ हजार रु० और पंजाब के सरकारी सड़क गाड़ी विभाग को ७८ लाख ६१ हजार रु० की आमदनी हुई।

महाराष्ट्र सरकार के परिवहन संस्थान में सबसे ज्यादा धन, २१ करोड़ ३७ लाख ३२ हजार रु० लगा हुआ है। दूसरे नम्बर पर उत्तर प्रदेश रोडवेज है, जिसमें ११ करोड़ २ लाख ३ हजार रु० लगा है।

## निगम बन रहे हैं

कुछ राज्यों में इन संस्थानों को सरकारी विभाग चलाते हैं और कुछ में इनको चलाने के लिए निगम बनाए गए हैं। कुछ शहरों की नगरपालिकाएं भी परिवहन चलाती हैं, जिनमें बम्बई की 'बेस्ट' उल्लेखनीय है। भारत सरकार ने राज्य सरकारों से कहा है कि वे सरकारी परिवहन के प्रबन्ध के लिए निगम स्थापित करें। योजना आयोग ने भी राज्यों को सुझाव दिया था कि वे सड़क परिवहन निगम अधिनियम, १९५० के अन्तर्गत निगम स्थापित करें। इनमें रेलों और, हो सके तो निजी परिवहन मालिकों को भी हिस्से लेने चाहिए। बहुत से राज्यों में निगम स्थापित हो गये हैं। आशा है, बाकी राज्य सरकारें भी शीघ्र ही ऐसे निगम स्थापित करेंगी।

तीसरी योजना में व्यवस्था है कि रेलें भी सड़क परिवहन के विकास में हाथ बटाएं और राज्यों के परिवहन निगमों में हिस्से खरीदें।

सरकारी और निजी, दोनों क्षेत्रों में सड़क परिवहन को काफी बढ़ाया जा सकता है। हिमाचल प्रदेश के अलावा अन्य सब राज्यों में सरकारी और निजी, दोनों प्रबन्ध में सवारी बसें चल रही हैं। पंजाब में आधे रास्तों पर सरकारी और आधे पर निजी बसें चल रही हैं। पंजाब और कश्मीर में, सरकारी और गैर-सरकारी परिवहन में अच्छा सहयोग है।

## रेलों को हानि नहीं

यह ख्याल गलत है कि सड़कों पर सवारी बसों के चलने से रेलों को नुकसान होगा। क्षेत्रीय या राज्य परिवहन अधिकारी लम्बे रास्तों पर बसें चलाने की इजाजत देने से पहले रेलों से राय कर लेते हैं। पड़ोसी राज्य एक से दूसरे में, बसें ले जाने के बारे में खुद समझौता करते हैं। रेल मुख्य शहरों और व्यापार केन्द्रों के बीच चलती हैं, पर देहात में बसें और ट्रक ही काम आते हैं।

समय-समय पर केन्द्रीय सरकार, राज्यों के परिवहन प्रतितिधियों का सम्मेलन करती हैं और समितियां भी नियुक्त करती है। इन सम्मेलनों और समितियों में एकसी रीति नीति बनाई जाती है। कुछ राज्यों के परिवहनों ने बसों का ढांचा बनाने और मरम्मत आदि के कारखाने भी खोलें हैं। इस प्रकार विदेशी-मुद्रा भी काफी बचती है।

सरकारी परिवहन संस्थानों के प्रबन्धकों और शिल्पिकों को काम सिखाने के लिए एक केन्द्रीय संस्था खोलने पर विचार किया जा रहा है। इसमें निजी क्षेत्र के कर्मचारियों को भी सिखाने की सुविधा दी जाएगी। ● ●

सम्पदा में विज्ञापन देकर
लाभ उठाएं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजनैतिक दलों के आर्थिक कार्यक्रम

"सम्पदा" के पिछले अंक में कांग्रेस और जनसंघ के आर्थिक कार्यक्रम दिये गये थे। इस अंक में अब प्रजा सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट पार्टियों के आर्थिक कार्यक्रम दिये जा रहे हैं।

## प्रजा सोशलिस्ट पार्टी

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी विश्वास करती है कि जनतान्त्रिक तौर पर संगठित जिला इकाई को आर्थिक विकास की मुख्य इकाई बनाना चाहिए। उसकी देखरेख में भूमि सुधारों को एक निश्चित समय के अन्दर लागू करना चाहिए। उनका विकास-योजनाओं के साथ सम्बन्ध जोड़ना जरूरी है ताकि भूमि सुधार और पुनस्संगठन साथ-साथ चलें। ऋण की सुविधा और कल पुर्जों की सहायता को भी साथ-साथ चलना चाहिए। सहायता अधिकतर उन ६ करोड़ लोगों की आर्थिक हालत सुधारने के लिये दी जायगी ज़िनकी प्रति व्यक्ति औसत आय २५ नये पैसे के लगभग है।

जिलों की विकास योजनाएं गांवों की योजनाओं पर बनेंगी जिनका लक्ष्य यह होगा कि मेहनत, ज़मीन और पानी के साधनों का पूरा इस्तेमाल किया जाए। रोजगार पाना हर एक आदमी का बुनियादी अधिकार है और नागरिकता की यही सबसे ऊंची पहचान है। जिलों की योजनाएं हर एक व्यक्ति को रोजगार के अवसर प्रदान करेंगी। सरकार की यह मुख्य जिम्मेदारी होगी कि वह निर्माण कार्यक्रमों को प्रोत्साहन और मदद दे।

छोट-छोटी जोतों वाले किसानों को उचित सहायता देकर सहकारी समितियों में भर्ती होने के लिए मनाया जायगा। जोतों को सहकार में लाने से पहले साधनों और यंत्रों को सहकार में लाया जायगा। जोत के लायक बनाई गई बंजर धरती और अतिरिक्त धरती पर भूमिहीन किसानों को काम, घर और जमीन दी जायगी।

गांवों की पुनर्विकास योजनाओं के जरिये उनमें मकानों की समस्या को सुलझाया जायगा। गाँवों के दुबारा बनाने में न केवल विभिन्न पञ्चायती सुविधाएं दी जाएंगी, बल्कि भूमिहीनों और पिछड़ी हुई जातियों के लोगों के लिए घर बनाने की ओर तुरन्त ध्यान दिया जायगा। इन विकास कार्यों में स्थानीय-साधनों का पूरा-पूरा इस्तेमाल किया जायगा और इनके द्वारा पूर्ण रोजगार के आधार पर आर्थिक व सामाजिक जीवन का फिर से नया निर्माण किया जायगा।

उद्योगों का जगह-जगह फैलाव करने के साथ-साथ गांवों के लोगों को देश के उद्योगीकरण से अनिवार्य रूप में बड़ा हिस्सा लेना चाहिये। कच्चे माल को पक्का बनाने के और बहुत से उपभोग्य पदार्थों, उद्योग व हल्के इञ्जीनियरिंग उद्योग जो गांवों के लोगोंकी, और खेती व सिंचाई के विकास की, ज़रूरतों को पूरा कर सकते हैं, जिला परिषदों को दे दिये जायेंगे और उन परिषदों को रुपये की और मशीनी सहायता दी जायगी ताकि वे उन उद्योगों के मालिक बन सकें और उनको चला सकें। कृषि के विकास और उद्योगों के विकास को एक दूसरे से सुगठित किया जाएगा।

गरीबी के खिलाफ लड़ाई में कामयाबी तभी हासिल हो सकती है जब देश की जनता के बाजुओं की ताकत का पूरा-पूरा उपयोग किया जाय। इसलिये आर्थिक विकास के लिए श्रम के पूँजी के तौर पर ज्यादा-से-ज्यादा इस्तेमाल करने का तरीका ही सफल और महत्वपूर्ण साबित होगा। जनतांत्रिक हिन्दुस्तान में इनको हासिल करके के लिए समानता कायम की जायगी।

## आर्थिक ढांचे में परिवर्तन

लाइसेंस देते हुए ऋण नीतियों को नई दिशा देकर उनके द्वारा नये कारखानों की सहायता की जाएगी। हर बड़े कारखाने को अपने काम का बड़ा हिस्सा छोटे-छोटे उत्पादकों में, जिन्हें औद्योगिक बस्ती में एकत्रित किया जायगा, बांटना पड़ेगा।

उद्योगों में काम करने वाले मज़दूरों और कर्मचारियों



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को उन उद्योगों के हिस्सेदार बनाने के लिए मदद और प्रोत्साहन दिया जायगा। मज़दूर यूनियनों के मजबूत बनने के साथ कारखानों के प्रबन्ध में पूंजीपति व मज़दूर दोनों का हाथ हो जायगा। छोटी इकाइयों के बनाने से न केवल उद्योगों का ज्यादा फैलाव होगा बल्कि सम्पत्ति और शक्ति के होने पर भी सख्त रोक लग जायगी।

कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों को पूरी तरह से राजकीय व्यापार निगमों के सुपुर्द कर दिया जायगा।

छोटे-छोटे उत्पादकों को, चाहे वे हाथ से काम करते हों या मशीन से, यह विश्वास दिलाया जायगा कि उनके माल की खरीद निश्चित तौर पर होगी। इस नीति को खेती पर भी लागू किया जायगा। सरकार इस तरह माल खरीदने को तैयार होगी तो इससे पैदावारी माल के गुण और मात्रा दोनों के बढ़ाने में मदद मिलेगी। इस तरह सरकार के हाथ में माल का जो स्टाक रहेगा उससे वह कीमतों पर कन्ट्रोल रखने और विकास की गति को कायम रखने के योग्य बन जायगी।

सार्वजनिक क्षेत्र में बड़े-बड़े निगमों को विभाजित कर दिया जायगा, मुकाबले बाजी को प्रोत्साहित किया जायगा, प्रबन्धकों को यह अवसर दिया जायगा कि वह अपनी सूझ और पहल करने की योग्यता का इस्तेमाल कर सकें और कुशलता की माप की कसौटी यह होगी कि आम तौर पर काम कैसे और कितनी क्षमता से किया गया है। सार्वजनिक क्षेत्र के कारखाने अपने प्रबन्ध में मजदूरों को हिस्सा देने, उद्योग के अन्दर ही ट्रेनिंग का इन्तज़ाम करने और औद्योगिक विकास के ज़रिये सामाजिक परिवर्तन लाने के कामों को खुद पहले शुरू करके बाकी कारखानों का नेतृत्व और मार्गदर्शन करेंगे।

विकास का एक आकस्मिक फल यह हुआ है कि नगरों में ज़मीनों की कीमतों में वृद्धि हो गई है। यह वृद्धि नगरपालिकाओं को मिलनी चाहिये ताकि वह मकानों के बनाने और सामुदायिक सेवाओं के चालू करने योग्य बनें।

यह पार्टी जिस तरह का आर्थिक नवजीवन लाने की कामना करती है उसके लिये मजदूर के दर्जे और दृष्टिकोण में तबदील होना जरूरी है। उजरत और वेतन पाने वाले मजदूरों और सरकारी कर्मचारियों को आज़ादी से अपनी यूनियनें बनाने का पूरा हक मिलना चाहिये। जब तक वे अपनी अज़ाद और जनतांत्रिक यूनियनों की संगठित शक्ति के मालिक नहीं बनते और काम की शर्तों के बारे में आजादी के साथ समझौता नहीं करते, तब तक वे, बेबस व लाचार, अर्थव्यवस्था के हमलों के शिकार बने रहेंगे। ऐसी राष्ट्रीय औद्योगिक यूनियनें जिनके सदस्य बनना हर मजदूर के लिये अनिवार्य होगा और जिनके अन्दर कायम जनतंत्र रखने की कानूनी व्यवस्था की जायगी, मजदूरों को इस लायक बना देंगी कि वे सामूहिक समझौते कर सकें, प्राविधिक और आम शिक्षा हासिल कर सकें और पैदावार की योजना के बनाने में भाग ले सकें। ●

## कम्युनिस्ट पार्टी

पंचवर्षीय योजना को सर्वप्रथम जनता को लिए होना चाहिये। योजनाओं को भारत की विशाल जनश्रम शक्ति का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिये और मेहनतकश जनता के जीवन स्तर को निरन्तर ऊंचा उठाकर श्रम उत्साह उत्पन्न करना चाहिये।

पार्टी एक तरफ तो धनी वर्गों पर प्रत्यक्ष कर बढ़ाने और दूसरी ओर अप्रत्यक्ष कर घटाने के पक्ष में है। इजारेदारों, बड़े सट्टाबाजों, पुराने रजवाड़ों और बड़े जमींदारों के पास जो अपार धन पड़ा हुआ है उसका पूरा-पूरा इस्तेमाल करना चाहिये। पुराने रजवाड़ों को बाध्य कर देना चाहिये कि वह अपनी पुरानी सम्पत्ति राज्य के हाथों समर्पित करदें, साथ ही उनके गुजारे के नाम से जो भारी रकम दी जाती है, फौरन बन्द कर देनी चाहिये।

राष्ट्रीय अर्थतंत्र से विदेशी इजारेदारियों को हटाया जाये। देश के व्यापार के नकशे को पुनस्संगठित किया जाये और राष्ट्रीय नियोजन के एक आवश्यक अंग के रूप में सोवियत यूनियन और दूसरे समाजवादी देशों के साथ आर्थिक सहयोग दृढ़तर बनाया जाये।

पिछले वर्षों में जितने भी भूमि के तबादले हुए हैं उन सबकी फिर से जांच की जाये और सारे जाली तबादले रद्द किये जायें। वर्तमान कृषि कानूनों की सारी कमियों, विशेषकर सीमा के विषय में, फौरन दूर की जायें। भूमि-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीन मजदूरों और गरीब किसानों में भूमि का बंटवारा किया जाये।

किसानों पर भारी मालगुजारी, भारी टैक्स और कर्जे के रूप में जो आर्थिक दबाव हैं उन्हें फौरन हटाया जाए, पैदावार के उचित दामों की गारन्टी की जाये और बाजार के लूटने वाले उलट फेर से बचाया जाये। इस कार्य के लिये न्यूनतम और अधिकतम मूल्य निर्धारित करना आवश्यक है।

खेत मजदूरों के लिये हर जगह मजदूरी की न्यूनतम दर निर्धारित की जाये।

कम्युनिस्ट पार्टी ऐसे तेज औद्योगिक विकास के सर्वांगीण कार्यक्रम के पक्ष में है जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र को तत्काल नेतृत्वकारी भूमिका प्रदान की जाये और पूंजीगत भारी उद्योग को गर्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो। बैंकों, साधारण बीमा, लोहा और इस्पात, कोयला तथा खनिज, तेल, शक्कर, जूट, उद्योग विदेशी नियंत्रण के चाय बागान तथा आयात और निर्यात का राष्ट्रीयकरण किया।

सरकार की बड़े व्यापारी, इजारेदार समर्थक समस्त नीतियों का अन्त किया जाय और शासन की नीतियों में दूरगामी प्रगतिशील परिवर्तन किये जायं। इनमें मैनेजिंग एजेन्सी व्यवस्था की समाप्ति तथा कम्पनियों के प्रबन्ध में कम्पनियों के पारस्परिक गठबन्धन, कम्पनियों द्वारा अन्य कम्पनियों को हथिया लेने तथा सहायक कम्पनियों आदि की जांच भी शामिल है। मुनाफों तथा उच्च व्यापारिक कार्यवाहकों के वेतन पर सीमा आरोपित कर दी जानी चाहिये।

पार्टी मूल्यों के स्तर को कायम रखने, बुनियादी वेतन में सामान्य वृद्धि करने तथा न्यूनतम वेतन को बढ़ाने और निर्धारित करने के पक्ष में हैं तथा मांग करती है कि समस्त संगठित उद्योगों, व्यापारों और पेशों में मंहगाई भत्ते का परिवर्तनशील पैमाना जिससे मंहगाई का प्रभाव पूर्ण रूप से समाप्त किया जा सके, लागू किया जाये।

वह उत्पादन शीलता के इस प्रकार के नवीनीकरण के विरुद्ध संघर्ष करती रहेगी जो छटनी, काम के बढ़े हुये बोझ जिसके अनुपात में वेतन वृद्धि न हो, की ओर ले जाता है।


## उद्योग-व्यापार पत्रिका

देश में उद्योग और व्यापार को आगे बढ़ाने के लिये क्या हो रहा है और आप इससे किस तरह फायदा उठा सकते हैं? देश में क्या-क्या चीजें और कितने परिमाण में कहाँ-कहाँ बन रही हैं और आप क्या बना कर अच्छी कमाई कर सकते हैं? तरह-तरह के व्यापार की देश-विदेश में क्या दशा है? पंच-वर्षीय योजना से हमारी क्या उन्नति हो रही है? ये सभी प्रश्न ऐसे हैं, जिनके उत्तर आपको अवश्य जानने चाहिएँ, और इन सबकी जानकारी पाने का श्रेष्ठ साधन है—उद्योग व्यापार पत्रिका। इसलिये आप ६ रु० भेजकर साल भर के लिये आज ही ग्राहक बन जाइये। नमूना पत्र लिखकर मंगाइये।

एजेन्टों को भरपूर कमीशन।
पत्रिका विज्ञापन देने का अच्छा साधन है।
वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली

## आर्थिक समीक्षा

प्रधान सम्पादक : श्री सादिकअली
सम्पादक : श्री महेन्द्र मेहरा

- हिन्दी में अनूठा प्रयास
- आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख
- आर्थिक सूचनाओं से ओतप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक, पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक।

वार्षिक मूल्य : ५) रु० एक प्रति २२ नये पैसे

लिखें—व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी,




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ पृष्ठ ४८६ का शेष ]

की उपयोगिता सिद्ध होगी। वह जो चाहता है, समाज उस रूप में परिणत होगा। उसके वर्तमान लक्ष्य भी पूरे हो सकेंगे।

## अपव्यय को रोकें

बचत करने और उसे उत्पादन में लगाने की स्थिति आज बहुत कमजोर है। लोग बहुत कम रुपया डाकखानों के सेविंग बैंक और बचत सर्टीफिकेट खरीदने में लगाते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि देश में कुछ ऐसे संगठन खड़े हों जो ग्रामों में बचत करने का प्रयत्न करें। भारत में बचत का स्तर अनेक अविकासित देशों से पिछड़ा हुआ है। विकासित देश ऋण या सहायता देते समय इस बात को देखते हैं कि हम अपने साधनों से कितनी बचत करते हैं और कितना धन विनियोजन में लगाते हैं। इससे ग्रामीणों में अपव्यय की प्रवृत्तियां घटेंगी और वे बचत की ओर बढ़ेंगे। हर एक ग्राम को बचत की उपयोगिता प्रकट करनी चाहिए। चलते फिरते बैंक हों, जिनमें हजारों आदमी काम करें और उससे बचत का वातावरण पैदा किया जाए।

## अर्थव्यवस्था कैंची की तरह

हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि हमारी अर्थव्यवस्था कैंची के सदृश है। उसका नीचे का हिस्सा राष्ट्रीय आय है और ऊपर का हिस्सा आबादी है। यह अभी तक संभव नहीं हुआ कि दोनों हिस्से मिलें। कई योरोपियन देशों में ऊपर का हिस्सा स्थिर बना हुआ है। पर भारत में उल्टा ही हो रहा है। इस विकास काल में ऊपर का हिस्सा तेजी से बढ़ता जा रहा है और उसके सबसे ऊंचे व्यक्ति जो चोटी पर आसीन हैं, वे सारी अर्जित सम्पदा खींचने में लगे हैं। इससे उसके अंगीभूत—निजी क्षेत्र में बेचैनी पैदा हो गई है और वे यह कहने लगे हैं कि इनकी अवस्था जर्मनी के यहूदियों की तरह होगी। उसकी तरह मर मिटेंगे और इनके परिवारों को कोई पूछेगा तक नहीं। इसलिए यदि ऊपर का हिस्सा कुछ नीचे नहीं आता है या स्थिर नहीं रहता है, या उसे बढ़ना है तो वह धीरे २ बढ़े जिससे कि नीचे का हिस्सा ऊपर बढ़े। उसके प्रयत्नों में सजीवता आए और वह इतना समर्थ हो कि ऊपर के हिस्से से मिल सके। स्वस्थ अर्थव्यवस्था के निर्माण के लिए कैंची के दोनों ब्लेड नजदीक आने चाहिए। अतः उचित समय में दोनों ब्लेडों का मिलना वांछनीय है।

वैज्ञानिक अपने योग दान से इस परिस्थिति को सुधार सकते हैं। यह उनकी शक्ति के बाहर नहीं है कि वे ऐसी सस्ती अवरोधक गोलियां तैयार करें, जिनके खाने से अस्थायी वांझपन पैदा हो। ये गोलियां पुरुष और स्त्री दोनों के लिए हों। इस क्षेत्र में पूरे अनुसंधान की आवश्यकता है। समाज के दोनों स्तरों में सन्तति निग्रह का वातावरण पैदा किया जाए। आबादी की वृद्धि में रोक हुए बिना देश समृद्धिशाली नहीं बन सकता है। वर्तमान अवस्था में हम विकास का जितना पग बढ़ाते हैं, आबादी की वृद्धि उसके आगे बीभत्स रूप में खड़ी मिलती है। आबादी की वृद्धि रोकना राष्ट्र के लिए जीवन मरण का प्रश्न है। हमारी सभ्यता और संस्कृति पर काला दाग लगता है, यदि हम पशु बनकर इस तरह आबादी बढ़ाते रहे। प्रत्येक परिवार के लिए सन्तति पैदा करने की संख्या नियत होनी चाहिए। उससे अधिक सन्तानें पैदा करने पर कठोरतम दण्ड दिया जाए। यह होने पर ही राष्ट्रीय आय बढ़ सकेगी और समाज को आर्थिक विकास के सुखद परिणाम मिलेंगे।

## सरकारी नौकरों में चेतना नहीं

प्रति यूनिट के उत्पादन में जितनी पूंजी की आवश्यकता है, वह भी घटाई जा सकती है, यदि इस दिशा में पूरी शक्ति से काम किया जाए। यह प्रकट है कि आर्थिक वृद्धि का बहुत-सा धन गैर उत्पादन स्रोतों में बह जाता है। भ्रष्टाचार और सरकारी अधिकारियों की अक्षमता आदि भी रोड़े हैं। यदि हम साहस पूर्वक इन खराबियों को मिटाने में सफल हों तो बहुत कुछ धन बचाया जा सकता है और तब तीसरी योजना के लिए हम जितनी आय सोचते हैं, उससे कहीं अधिक होगी। उस अवस्था में व्यय कम होगा, श्रम की बचत होगी और धन की भी बचत होगी। दुर्भाग्यवश विकास का भार नौकरशाही के कन्धों पर है जिसमें कोई चेतना नहीं है। शासक दल योजना की रूप रेखा मात्र तैयार करता है, पर उसे क्रियात्मक करना अधिकारियों के हाथ में नहीं है। अन्य देशों में शासन करने वाला दल अपने द्वारा सारी योजना का संचालन करता है।

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# देश का पशुधन

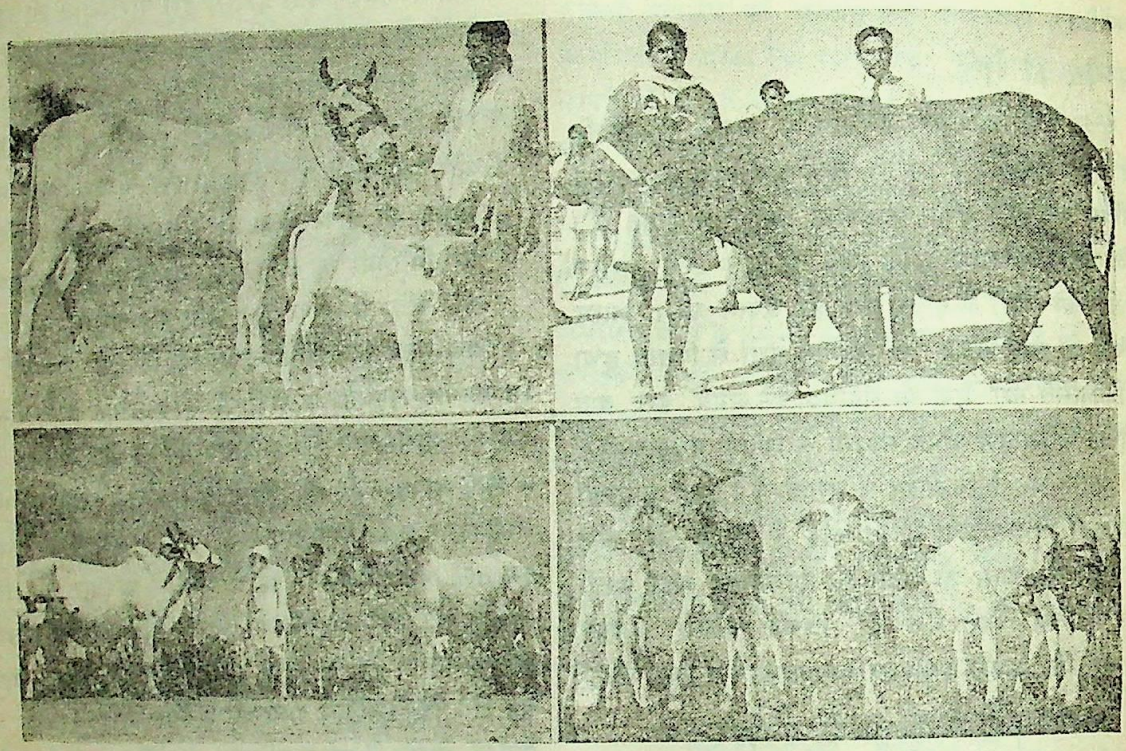

चित्र में (ऊपर बाएं) मुबारकपुर गांव की एक हरियाना गाय; (ऊपर दाहिने) यह भैंस हर रोज ४६ पौण्ड दूध देती है; (नीचे बाएं) बहादुरगढ़ के अखिल भारतीय पशु मेले में प्रदर्शित भारतीय सांड और (नीचे दाहिने) इज्जतनगर के पशु-चिकित्सा अनुसंधान केन्द्र में कृत्रिम गर्भाधान से उत्पन्न बछड़े।

तीसरी योजना के खेती और गांवों की उन्नति के कार्यक्रमों के अन्तर्गत पशु-पालन का भी कार्यक्रम है। तीसरी योजना में, विशेषकर नदी-घाटी के क्षेत्रों में, खेती के साथ पशु पालन पर जोर दिया जायगा।

देश में लगभग ३३ करोड़ पशु होने का अनुमान है। इनमें से गाय-भैंसों की संख्या २२ करोड़ यानी, दो तिहाई और संसार भर के गोवंश का चौथाई है। पर हमारी गाय-भैंसें कम दूध देती हैं। देशी गाय एक ब्यात में लगभग ४०० पौंड और भैंस १,००० पौंड दूध देती हैं, जबकि पश्चिम के उन्नत देशों में लगभग ५ हजार पौंड दूध देती है।

तीसरी योजना में पशु पालन के लिए ४४ करोड़ रु० रखा गया है, दूसरी योजना में २१ करोड़ और पहली योजना में ८ करोड़ रु० गया था।

## उन्नति के चार साधन

पशु पालन की उन्नति के चार काम करने हैं। पशुओं की नस्ल सुधारना, बूढ़े और बेकार ढोरों को हटाना, अच्छे चारे का प्रबन्ध करना और बीमारियों की रोकथाम करनी है। इन्हीं कामों के लिए पिछली योजनाओं में, आदर्श पशु-ग्राम बनाने का काम शुरू किया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कई गांवों को मिलाकर आदर्श पशु-ग्राम खण्ड बनाए गए। ढोरों की नस्ल सुधारने के लिए, इन खण्डों

[ शेष पृष्ठ ५२८ पर ]



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# समाजवाद की दिशा में एक भारी कदम : तीसरी योजना

श्री श्रीमन्नारायण

भारत में समाजवादी समाज की स्थापना में तीसरी पंचवर्षीय योजना एक ठोस कदम होगी। तीसरी योजना के अन्तर्गत कम आय वाले परिवारों के योग्य विद्यार्थियों की काफी बड़ी संख्या को छात्र-वृत्तियां देने के लिए साधन व्यवस्था की गई है। अनुमान है कि तीसरी योजना-अवधि में, यूनिवर्सिटी ग्रान्ट कमीशन और अन्य सभी छात्र-वृत्ति स्कीमों के अन्तर्गत लगभग १३० करोड़ रुपये छात्र-वृत्तियों पर खर्च किये जायेंगे। ग्रामीण क्षेत्रों के योग्य विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का विशेष ध्यान रखा जायगा, ताकि भूमि-सुधार कानूनों और आराजी की उच्चतम सीमा निर्धारण के कारण ग्रामीण विद्यार्थियों की शिक्षा-दीक्षा को हानि न पहुँचे। देश में समाजवादी समाज-व्यवस्था स्थापित करने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में सब को समान अवसर देना नितान्त आवश्यक है।

तीसरी योजना में ग्रामीण क्षेत्रों में, सहकारिता के आधार पर, उद्योगों का विकेन्द्रीकरण करने पर विशेष बल दिया गया है। अनुमान है कि दूसरी योजना के अन्त तक देश के लगभग २३,००० गांवों को विद्युतीकरण के लाभ प्राप्त हो चुके हैं। तीसरी योजना की अवधि में २०,-००० और गांवों में बिजली पहुँचाने की इच्छा है। गांवों में विद्युत-शक्ति से न केवल सघन-कृषि को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि छोटे और ग्रामोद्योगों का भी मुख्यतः सहकारिता के आधार पर विकास सम्भव हो सकेगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन कृषि-मजदूरों के सात लाख परिवारों के बीच ५० लाख एकड़ भूमि वितरित करने की व्यवस्था की जा रही है। भूमिहीन मजदूरों को मकान के लिए जमीन देने और मकान बनाने के लिए ऋण देने के लिए लगभग १० करोड़ रुपये की राशि सुरक्षित की गई है। शहरी क्षेत्रों में, १५० रु० या उससे कम आमदनी वाले निर्धन लोगों के लिए पहली बार आवास सुविधाओं के लिए १५ करोड़ रुपये का व्यय निश्चित किया गया है।

तीसरी योजना में इस कार्य के लिए काफी बड़ी व्यवस्था की गई है कि काम चाहने वाले लोगों को, मजदूरों की स्थानीय दर पर और विशेषतः मन्दी या कम रोजगार के दिनों में काम दिया जाए। इसके लिए १५० करोड़ रुपयों की व्यवस्था रखी गई है। भूमि को सुधार कर कृषि-योग्य बनाने भू-संरक्षण, लघु-सिंचाई सुविधाओं के विस्तार, वन-विकास और सड़कों के निर्माण आदि के द्वारा भी रोजगार के अवसर काफी बड़ी संख्या में उपलब्ध होंगे।

योजना में यह नीति अत्यन्त स्पष्ट और निश्चित रूप से प्रकट कर दी गई है कि बड़े और मध्यम आकार के उद्योगों में आर्थिक सत्ता को कुछ ही हाथों में केन्द्रित होने से रोका जाएगा। इसके लिए उचित नियमों और कानून द्वारा नए उद्यमियों को उद्योग स्थापित करने का प्रोत्साहन दिया जाएना। भारी उद्योगों के अधिकाधिक सार्वजनिक क्षेत्र में विकास के अतिरिक्त सरकार सहकारी आधार पर कृषि और उद्योगों के विकास को निरन्तर प्रश्रय और प्रोत्साहन देती रहेगी।

तीसरी योजना अवधि में प्रारम्भिक सहकारी समितियों की संख्या बढ़कर २,४०,००० हो जायगी। ये समितियां देश के सभी गांवों की सेवा करेंगी तथा इनसे कृषक-जन-संख्या का लगभग ६० प्रतिशत भाग लाभान्वित होगा। अनुमान है कि दूसरी योजना के अन्त में एक करोड़ ६० लाख व्यक्ति इन समितियों के सदस्य थे। तीसरी योजना के अन्त तक इनकी संख्या ३ करोड़ ६० लाख हो जाएगी। यह अन्दाज लगाया गया है कि तीसरी योजना के अन्त तक ५३० करोड़ रुपये के दीर्घकालीन ऋण किसानों को दिये जायेंगे।

कृषि विकास के उद्देश्य से दीर्घकालीन ऋणों का विस्तार करने के लिये कृषि विकास वित्त निगम स्थापित करने का सुझाव रखा गवा है।

तीसरी योजना में मूल्यों पर भी विशेष बल दिया गया है कि परचून के मूल्यों को उचित स्तर पर रखने और खाद्य वस्तुओं में मिलावट को रोकने के लिये देश भर में



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ पृष्ठ ५२६ का शेष ]

को अच्छे सांड दिये गये और कृत्रिम गर्भाधान का प्रबन्ध बढ़ाया गया। घटिया नस्ल के सांडों को बधिया किया या हटाया गया। अधिक चारा उगाने और रखने का प्रबन्ध किया गया। संक्रामक रोगों से बचाने के लिए पशुओं को टीके लगाये गए। इससे पशुओं की नस्ल और दुधारूपन सुधरेगा।

देश में गायों की २५ और भैंसों की ६ नस्लें हैं। इन में से कुछ दुधारू हैं और कुछ हल जोतने और भार ढोने के काम के हैं। हरियाना, कांकडेज और अंगोल नस्ल के ढोर दोनों काम के हैं। नस्ल सुधार का उद्देश्य यह है कि दूध देने वाली गाय और बढ़िया बैल दोनों मिल सकें। तीसरी योजना में प्रयोग के तौर पर कुछ विदेशी और देशी नस्लों का मेल किया जाएगा। इस काम के लिए पहाड़ों में फार्म खोले जाएंगे।

अच्छे सांडों की कमी ढोरों की नस्ल सुधारने में बाधक होती है। इस समय देश में ढोरों की नस्ल सुधारने के १२५ सरकारी फार्म हैं, पर अब तक केवल ५ हजार अच्छे सांड तैयार किए जा सके हैं, जो बहुत कम हैं। तीसरी योजना में अच्छे सांड तैयार करने के लिए ११ फार्म या गोशालाएं चालू की जाएंगी और सरकार अच्छी नस्ल के ३० हजार बछड़े पालने के लिए सहायता देगी। ३३ सरकारी फार्मों में ढोरों का रेवड़ बढ़ाया जाएगा, जिससे अधिक अच्छे सांड मिल सकें।

इसके अलावा कुछ और पशुशालाएं भी खोली जाएंगी। अच्छी नस्ल के सांडों को उत्पन्न करने के लिए कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र खोले गये। तीसरी योजना में आदर्श पशु ग्राम खण्डों में बहुत से कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र खोले जाएंगे। गोशालाओं की भी नस्ल सुधारने के लिए सहायता दी जाएगी। दूसरी योजना में २४६ गोशालाओं को दूध का उत्पादन बढ़ाने और अच्छे सांड तैयार करने के लिए आर्थिक और प्राविधिक सहायता दी जाएगी। खाना बदोश या घुमंतू पशु पालकों को देश के विभिन्न भागों में बसाने की भी योजना है।

ढोरों की नस्ल सुधारने के लिए घटिया ढोरों को हटाना जरूरी है। इसके लिए गोसदन स्थापित किए गए। बेकार या ठांठ ढोरों को जंगलों में व गोसदनों में रख दिया जाता है। पिछली दो योजनाओं में ५९ गोसदन खोले गए और तीसरी योजना में २३ और खोले जाएंगे। गोसदनों के प्रबन्ध में सुधार की लगातार कोशिश की जाती है, जिससे इनका खर्च कम हो। मृत ढोरों की खाल, हड्डियों और सींगों का उपयोग भी किया जाता है।

तीसरी योजना में घटिया सांडों को बधिया करने का काम भी चलाया जाएगा। शुरू में यह काम उन इलाकों में किया जाएगा, जहां नस्ल-सुधार का कार्यक्रम चालू है। बाद में दूसरे क्षेत्रों में यह काम शुरू किया जाएगा।

तीसरी योजना में ढोरों को पूरा चारा और अच्छा पोषण देने की ओर ध्यान दिया जायगा। इसके लिए गोचर बनाए जाएंगे, और चारा उगाया जाएगा और उसे रखने का अच्छा प्रबन्ध किया जायगा। खली आदि के समुचित उपयोग की भी व्यवस्था की जायगी। जिन दिनों चारा कम होता है, उस समय चारे के भण्डार बहुत कम आते हैं। दूसरी योजना में चारे का एक भंडार खोला गया था और तीसरी योजना में दो और भंडार खोले जाएंगे।

---

तदनुरूप सहकारी समितियों का एक जाल-सा बिछा दिया जाए। शहरों में खाद्यान्नों, अनिवार्य उपभोग की वस्तुओं और कपड़े आदि के मूल्य तब तक स्थिर नहीं रखे जा सकते, जब तक कि नगर क्षेत्र या मुहल्ला उपभोक्ता सहकारी केन्द्र सुचारू रूप से और बड़े पैमाने पर स्थापित न किये जाएं।

ठेकेदारी व्यवस्था का उन्मूलन करने के लिये, तीसरी योजना के अन्तर्गत श्रमिकों और भवन-निर्माताओं की सहकारी समितियां भी बनाने के कार्यक्रम भी सम्मिलित किए गए हैं।

तीसरी योजना का महत्व केवल उसके उत्पादन लक्ष्यों या सफलताओं में ही निहित नहीं है। तीसरी योजना में समाज के वर्तमान आर्थिक ढांचे के कुछ महत्वपूर्ण स्थलों पर आवश्यक संगठनात्मक परिवर्तन करने पर भी बल दिया गया है। यह साफ तौर पर समझ लेना चाहिए कि आधुनिक युग में आर्थिक विकास की प्रक्रिया, विशेषतः अर्द्ध-विकसित देशों में, केवल पूंजी निर्माण पर ही नहीं, बल्कि एक विकासशील समाज में जनता के उत्तरदायित्वों और अधिकारों के प्रति दृष्टिकोण में कुछ विशेष परिवर्तन लाने पर निर्भर करती है।

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

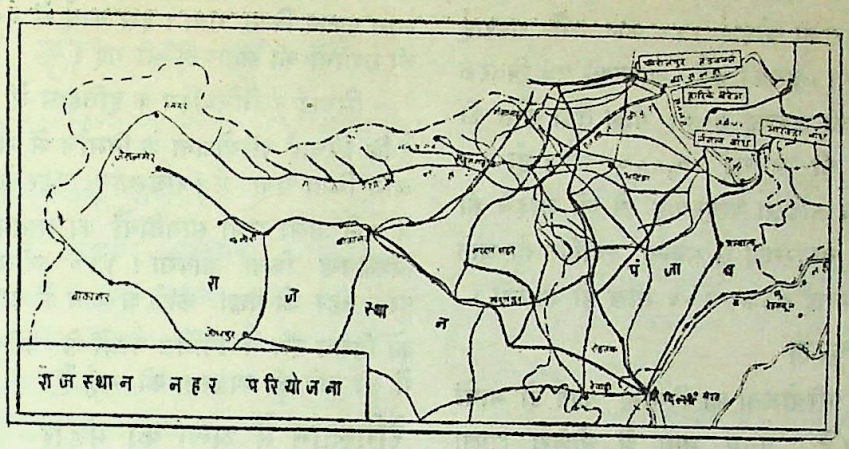


# राजस्थान-नहर

भगवानलाल कोठारी, बी० कॉम०

राजस्थान के पश्चिमोत्तर भाग में लगभग १५० लाख एकड़ भूमि में भारत का विशाल थार का मरुस्थल फैला हुआ है। वर्तमान समय में राजस्थान के इस चमकीले टीले वाले क्षेत्र में बहुत कम जनसंख्या निवास करती है। यहां की जनसंख्या का औसत दो व्यक्ति प्रति वर्ग मील है। इस भाग में वर्षा बहुत कम होती है तथा अनावृष्टि एवं अकाल साधारण सी बात है। यहां के निवासियों को पीने के पानी के लिये भी वर्षा ऋतु में कड़ी मेहनत से पानी इकट्ठा करना पड़ता है।

नहर की योजना का प्रादुर्भाव सन् १९४८ में हुआ। उस समय भूतपूर्व बीकानेर रियासत के तत्कालीन मुख्य अभियन्ता श्री कंवरसैन ने 'बीकानेर राज्य की जल सम्बन्धी आवश्यकताएं' नामक अपने प्रारम्भिक अध्ययन में भारत सरकार को सुझाव दिया कि वर्तमान राजस्थान राज्य के रेगिस्तान को सींचने के लिए 'हरीके हैडवर्क्स' तथा राजस्थान नहर का साथ-साथ निर्माण किया जाय।

'हरीके हैडवर्क्स' का निर्माण १९४९-५० में हुआ था तथा सन् १९५१ में केन्द्रीय जल एवं विद्युत आयोग ने राजस्थान नहर योजना के बनाने की प्रारम्भिक कार्यवाही शुरू कर दी थी। राजस्थान सरकार ने इसका विस्तृत सर्वेक्षण किया तथा ६६ करोड़ रुपये के लगभग लागत के अनुमानों की एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट भी तैयार की। यह परियोजना १९५७ में योजना आयोग द्वारा अनुमोदित हुई तथा उसी वर्ष राजस्थान सरकार द्वारा स्वीकृत की गई।

राजस्थान नहर से लाभान्वित होने वाले भाग में राजस्थान के श्रीगंगानगर, बीकानेर एवं जैसलमेर के जिलों का वह भूभाग सम्मिलित है जो भारत पाक सीमा से जुड़ा हुआ है। जो राजस्थान शताब्दियों से अकाल पीड़ित रहता आया है, उसी राजस्थान में भारत के तात्कालिक गृह मंत्री, स्वर्गीय श्री गोविन्द वल्लभ पन्त ने ३० मार्च १९५८ को इस दुर्भिक्ष दानव को मार भगाने के लिये विश्व की (होने वाली) सबसे लम्बी नहर—राजस्थान नहर—का औपचारिक रूप से उद्घाटन किया।

## कांडला बन्दरगाह से सम्पर्क

राजस्थान नहर सतलज एवं व्यास नदियों के संगम से डेढ़ मील नीचे की ओर स्थित हरीके बांध से निकलती है। केवल भारत में ही नहीं, अपितु विश्व में राजस्थान नहर सबसे लम्बी नहर होगी जिसकी लम्बाई ४२५ मील होगी। इस विशाल योजना के निर्माण में १,१०० करोड़ घनफुट मिट्टी की खुदाई की जायगी जो भाखरा बांध की नहरों से चार गुनी तथा दामोदर घाटी निगम से आठ



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुनी होगी। इस नहर की चौड़ाई १३४ फीट और गहराई २१ से २३ फुट होगी। इसकी बड़ी शाखाओं एवं वितरक शाखाओं की नहरों की लम्बाई ५००० मील तथा खेतों को जाने वाली नालियों की लम्बाई ४०,००० मील होगी। इस नहर का सम्बन्ध कांडला बन्दरगाह से भी जोड़ने की योजना है। कांडला बन्दरगाह से संबन्ध स्थापित हो जाने पर इस नहर की लम्बाई बढ़कर ९०० मील हो जायगी।

## निर्माण के दो चरण

राजस्थान नहर परियोजना का निर्माण कार्य दो भागों विभक्त किया गया है। प्रथम भाग में नोशेरा शाखा सहित १२२ मील तक मुख्य नहर का निर्माण सम्मिलित है, जो सम्भवतः १९६८-६९ तक पूरा हो जायगा। द्वितीय भाग जो मुख्य नहर के अन्त तक (लीलूबा शाखा सहित) ३०३ मील है, सन् १९७५-७६ तक सम्पूर्ण हो जायगा। सम्पूर्ण विकास के लिए इस योजना में रावी एवं व्यास नदियों पर सम्बद्ध कार्य जैसे रावी एवं व्यास को जोड़ने वाली नहर, तथा व्यास नदी पर बांध आदि का निर्माण भी सम्मिलित है। रावी एवं व्यास के बीच माधोपुर में व्यास नहर का निर्माण हो चुका है तथा व्यास पर पांग बांध का निर्माण प्रारम्भ कर दिया गया है जिस पर तृतीय योजना में २५ करोड़ रुपया खर्च किया जाएगा।

निर्माण कार्यक्रम का नियोजन इस प्रकार से किया गया है कि निर्माण की अवधि में भी सिंचाई के लिए अधिकाधिक पानी उपलब्ध हो सके, जिससे इस योजना के प्रारम्भ से ही फल मिलना प्रारम्भ हो शायगा।

६ सितम्बर १९६१ को प्रयोग के तौर पर राजस्थान नहर बोर्ड के अध्यक्ष श्री कुंवरसेन की उपस्थिति में ३० मील के टुकड़े में पानी छोड़ा गया है जिसमें ७ मील का भाग पंजाब में व शेष राजस्थान में है। इसमें रेगिस्तान की प्यासी भूमि को प्रथम वार जीवनप्रद जल सुलभ हुआ है।

नहर को पक्की बनाने के हेतु आवश्यक कोयले के चूरे तथा सीमेन्ट की उपलब्धि संबन्धी कठिनाइयों के बावजूद भी निर्माण कार्य प्रगति पर है। राजस्थान पूरक नहर की फरवरी १९६१ तक १९,३००० लाख घनफुट मिट्टी की खुदाई की गई। एवं मुख्य नहर की १३४४ लाख घनफुट मिट्टी खोदी गई। राजस्थान पूरक नहर का ४० मील का भाग पक्का किया गया। इस कार्य में २०० विभिन्न प्रकार की मशीनों की सहायता ली गई।

सिंचाई इंजीनियरिंग के इतिहास में यह प्रथम अवसर है कि सिंचाई परियोजना के निर्माण में भी 'स्तर नियन्त्रण' लागू किया गया है। राजस्थान नहर के निर्माण के काम में आने वाली सभी सामग्रियों का रासायनिक परीक्षण एवं विश्लेषण किया जायगा। ११० मील लम्बी राजस्थान पूरक नहर को पक्का करने के काम में आने वाली हर ईंट को विशेष रूप से निर्मित यन्त्रों से परीक्षण करके ही काम में ली जाने की व्यवस्था की गई है।

## रेगिस्तान में अन्न का भंडार

विस्तृत एवं ऊजड़ रेगिस्तान को समृद्ध कृषि क्षेत्र में परिणित करने वाली यह योजना 'व्यास बांध' के निर्माण में पश्चात् बारह मासी सिंचाई की सुविधाएं उत्पन्न कर सकेगी। प्रारम्भ में २७,००० एकड़ भूमि को मौसमी सिंचाई की सुविधा प्रदान करती हुई यह नहर तृतीय योजना के अन्त तक ढ़ाई लाख एकड़ भूमि को तथा योजना के सम्पूर्ण होने पर ३६ लाख एकड़ भूमि को सिंचाई की सुविधाएं प्रदान कर सकेगी, जिससे यह रेगिस्तान एक दिन भारत के विशालतम अन्नागार में परिणत हो जायगा। इस नहर निर्माण से राज्य २५ लाख टन खाद्यान्न उत्पन्न कर सकेगा, जो वर्तमान बाजार भाव पर ६६ करोड़ रुपयों के मूल्य का होगा।


**नवजात शिशु·····**

लाख आपका जाना पहचाना न हो मगर उसकी निश्छल मधुर मुस्कान, आपका प्यार और दुलार पाने को उठे हुए उसके नन्हें-नन्हें मोहक हाथ, आपको आकर्षित किये बिना नहीं रहेंगे। बस कुछ ऐसी है आपकी अपनी "शिक्षा भारती" नन्ही मुन्नी नई-नवेली। इसे आपका प्यार चाहिये—दुलार चाहिये। इसे अपनाइये। इसे गले लगाइये।

**शिक्षा-भारती**

शिक्षा जगत का प्रतिनिधि मासिक पत्र

**१२ बालविहार, दमदिया रोड भोपाल,**

संचालक — पूरनचन्द्र अग्रवाल "आनन्द"

सम्पादक — विष्णु राजोरिया

वार्षिक मूल्य ८) — एक प्रति ७५ न० पै०




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं

## सार्वजनिक उद्योग

सन् १९६१-६१ में सरकारी कारखानों के उत्पादन में वृद्धि हुई। इस साल के कुछ आंकड़े प्राप्त हुए हैं, जिनसे पता चलता है कि पिछले साल की अपेक्षा इस साल सरकारी कारखनों को लाभ भी अधिक हुआ।

बंगलौर के हिन्दुस्तान मशीनटूल कारखाने में ३ करोड़ ३० लाख रु० की १,००२ मशीनें बनीं, जबकि पिछले साल २ करोड़ ३७ लाख रु० की ७०२ मशीनें बनी थी। रूपनारायणपुर की हिन्दुस्तान केबुल फैक्टरी में इस साल १ करोड़ ६० रु० का सामान बना, जबकि १९५९-६० में १ करोड़ १० लाख रु० का बना था। कलकत्ता की नेशनल इंस्ट्रूमेंट्स फैक्ट्री के उत्पादन में ५९ लाख ३० हजार रु० की वृद्धि हुई, जबकि १९५९-६० में ५३ लाख ७० हजार रु० की हुई थी।

हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स के दोनों कारखानों में २,८०० टन डी० डी० टी० बना, जो पिछले साल से अधिक है। नेपानगर में २३,०२९ टन अखबारी कागज बना, जो पिछले से कुछ अधिक है। सिन्दरी उर्वरक कारखाने में १९६०-६१ में पिछले साल की अपेक्षा १५ हजार टन अधिक अमोनियम सल्फेट बना। नंगल उर्वरक कारखाना फरवरी, १९६१ में चालू हुआ और उस महीने यहां १,१८५ टन उर्वरक बना, जबकि अगस्त, १९६१ में १९ हजार टन बना।

१९६०-६१ मे भोपाल में बिजली का भारी सामान बनाने का कारखाना भी चालू हुआ।

लगभग सभी सरकारी कारखानों में घिसावट, कर, ऋणों पर व्याज आदि निकालकर, १९६०-६१ में पिछले साल की अपेक्षा अधिक लाभ हुआ। हिन्दुस्तान मशीनटूल कारखाने को ७४ लाख रु० का लाभ हुआ, जो पिछले साल से लगभग दुगना है। इस कारखाने ने पहली बार इस साल १० प्रतिशत का लाभांश देने की घोषणा की। हिन्दुस्तान केबुल फैक्टरी का लाभ भी दुगना होकर १६ लाख रु० हो गया। प्राग टूल्स कारपोरेशन को १९६०-६१ में पिछले साल की अपेक्षा ३० हजार रु० कम का फायदा हुआ। पिम्परी की पेनसिलीन फैक्टरी को ७९ लाख रु० और नेपानगर के अखबारी कागज कारखाने को ३७ लाख ८० हजार रु० का लाभ हुआ, जो पिछले साल से कुछ अधिक है।

## कारखानों का विस्तार

लगभग सभी सरकारी कारखानों का विस्तार किया जा रहा है। हिन्दुस्तान मशीनटूल ने कुछ विशेष प्रकार की मशीनें बनाने के बारे में मैसर्स रिनौल्ट्स से समझौता किया है। इसने पंजाब के पिंजोर में भी एक कारखाना खोलने के बारे में पूर्व जर्मनी के एक फ़र्म से समझौता किया है। कलकत्ते की नेशनल इंस्ट्रूमेंटस फैक्टरी ने माइक्रो-आप्टिक थ्यौडो लाइन, थर्मामीटर और कैमरे बनाने के बारे में विदेशी फर्मों से समझौते किए हैं। अब यहां रूसी सहायता से ऐनक के शीशे भी बनेंगे।

हैदराबाद के प्राग टूल्स कारपोरेशन का बड़ा भारी विस्तार किया जा रहा है। यहां विभिन्न प्रकार की ऐसी बहुत सी मशीनें बनाई जाएंगी, जो अब तक भारत में नहीं बन रही हैं। आशा है १९६४-६५ में इस का उत्पादन १९६१-६२ के उत्पादन से दुगना हो जाएगा। हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स के दोनों कारखानों में डी० डी० टी० का उत्पादन भी दुगना किया जा रहा है। इनके विस्तार पर कुल ३ करोड़ ४० लाख रु० खर्च होंगे।

तीसरी योजना में नेपानगर के अखबारी कागज कारखाने का भी उत्पादन दुगना किया जाएगा। सिन्दरी उर्वरक कारखाने का विस्तार-कार्यक्रम पूरा हो चुका है, जिस पर १५ करोड़ रु० खर्च हुए हैं। अब इसका उत्पादन लगभग ६० प्रतिशत बढ़ जाएगा।

—सितम्बर १९६१ में दिल्ली में श्रमिकों के लिए लेवर ब्यूरो द्वारा सूचित मूल्य सूचक अंक, २ अंक गिरकर १२८ रह गया (आधार १९४९=१००)। पिछले महीने यह सूचक अंक अपरिवर्तित रहा था। खाद्यों का सूचक अंक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२ अंक गिरा, जिस का मुख्य कारण गेहूँ, दूध और घी के मूल्यों में गिरावट थी।

—केन्द्रीय सरकार ने चीनी की मांग पूरी करने के लिए खुले बाजार में बिक्री के लिए १ लाख टन चीनी और दी है।

## गांवों में बिजली

दूसरी योजना में लक्ष्य से २ हजार अधिक अर्थात् १७ हजार से भी अधिक गांवों में बिजली पहुंचाई गई। तीसरी योजना में २० हजार गांवों में बिजली पहुंचाई जाएगी। लक्ष्य है कि तीसरी योजना में ५ हजार से अधिक आबादी वाले सभी नगरों और गांवों में तथा २ हजार से ५ हजार की आबादी के लगभग १० हजार गांवों में बिजली पहुंचा दी जाएगी।

## राजस्थान में तेल की खोज

तेल और प्राकृतिक गैस आयोग राजस्थान के जैसलमेर जिले में लगभग १८०० वर्गमील का भूगर्भ सर्वेक्षण करके नक्शे बना चुका है। जैसलमेर, जोधपुर और बीकानेर जिलों के २४०० वर्गमील क्षेत्र के भी प्रारंभिक भूमि सम्बन्धी नक्शे बनाए जा चुके है। जैसलमेर क्षेत्र में तेल की खुदाई करने के बारे में आयोग और फ्रांस की पेट्रोल संस्था के बीच एक समझौता पहले ही हो चुका है। इस खुदाई पर लगभग ४ करोड़ रु० की विदेशी मुद्रा लगेगी। यह धन फ्रांस सरकार के ऋण में से खर्च किया जाएगा।

## राजस्थान के मरुस्थल में भू-जल

"राजस्थान में पानी की खोज में हमें जो सफलता मिली है, वह स्वप्नातीत है। बीकानेर और जैसलमेर के बीच चन्दन क्षेत्र में जो कुंए खोदे गए हैं, उनसे ५० हजार गैलन पानी प्रति घंटे निकलना ही काफी समझा जाता है। नलकूपों से अभी तक गंगा-सिन्धु के मैदान में ही सिंचाई होती थी, लेकिन अब और क्षेत्रों में भी नलकूपों से सिंचाई का प्रयत्न किया जा रहा है।" ये शब्द केन्द्रीय खाद्य तथा कृषि मंत्री, श्री सदाशिव कान्होजी पाटिल ने २६ अक्टूबर को नयी दिल्ली में क्षेत्रीय लिघु सचाई सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहे। छोटी सिंचाई योजनाओं पर तीसरी पंचवर्षीय योजना में लगभग ३ अरब रुपया खर्च किया जाएगा। छोटी सिंचाई योजनाओं का यह भी लाभ है कि उनमें स्थानीय सामग्री और साधनों का उपयोग होता है, ये जल्दी पूरी हो सकती हैं और इनके लिए विदेशी-मुद्रा की आवश्यकता नहीं होती।

## अलौह धातुओं के आयात के लिए ऋण

अलौह धातुओं के आयात के लिए अमेरिका ने भारत को २ करोड़ डालर (९॥ करोड़ रु०) का ऋण दिया है। यह ऋण अमेरिकी विकास ऋण निधि के मार्फत दिया जाएगा। विकास ऋण निधि के और ऋणों की तरह इस ऋण की अदायगी भी रुपयों में की जाएगी। इस ऋण से भारत अमेरिका से अलमूनियम, तांबा और जस्ता खरीदेगा, जिससे हाल में खुले नये कारखानों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। अधिकांश धातुएं भारत के कारखानों में ही शोधी जाएंगी। शोधन के बाद बचे माल का बिजली, यातायात तथा संचार की योजनाओं में प्रयोग किया जाएगा।

## सरकार के लिए छोटे उद्योगों से माल

भारत सरकार के सप्लाई और डिस्पोजल के महानिर्देशालय ने १९६०-६१ में छोटे उद्योगों से ६ करोड़ ४६ लाख रु० का माल खरीदा, जो पिछले साल से ५० प्रतिशत अधिक है। सरकार छोटे उद्योगों का उत्पादन बढ़ाने में सहयोग दे रही है। २७ चीजें ऐसी हैं जो केवल छोटे उद्योगों से खरीदी जाती हैं। अब इनकी संख्या बढ़ाकर ४४ करने का विचार है। १९६०-६१ में इस महानिर्देशालय ने कुल २२२ करोड़ रु० का सामान खरीदा, जितना अभी तक नहीं खरीदा गया। इसमें विदेशों से केवल ४२ करोड़ रु० का माल आयात हुआ। १९५९-६० में १८२ करोड़ रु० का माल खरीदा गया था।

## फलों और सब्जियों की उपज

भूख से मुक्ति-आन्दोलन की राष्ट्रीय समिति के शासक मण्डल ने फलों और सब्जियों की उपज बढ़ाने की एक योजना स्वीकार की है। इस योजना के परिणामस्वरूप पपीता, अमरूद, नींबू, टमाटर, गोभी, गाजर, बैंगन, सेम और भिंडी आदि की उपज काफी बढ़ सकेगी। मण्डल की बैठक नयी दिल्ली में हुई थी। आशा है कि इस योजना के लिए खाद्य और कृषि संगठन की मार्फत विदेशी सहायता मिल जाएगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा के अनूठे उपहार : १२ विशेषांक

'सम्पदा' का प्रत्येक अंक ज्ञानवर्धक होता है, पर विशेषांक तो अपने विषय के विश्व-कोष ही होते हैं। प्रोफेसर श्री ओमप्रकाश तोषनीवाल, एम० कॉम० कहते हैं—'सम्पदा' के विशेषांक तो हमारे लिए गीता व बाइबिल के समान हैं।'

## १-योजना अंक

( प्रथम योजना सम्बन्धी अपूर्व सामग्री )

एक प्रशंसनीय प्रयत्न। यह अंक पंचवर्षीय योजना को समझने की कुंजी है।

मूल्य : १.०० —जीवन साहित्य

## २-भूमि-सुधार अंक

( भूमि समस्याओं का अद्भुत विवेचन )

इस विषय में अपने ढंग का अद्वितीय प्रकाशन है।

मूल्य : १.०० (अप्राप्य) —प्रताप

## ३-वस्त्र-उद्योग अंक

(भारत के प्रमुख उद्योग का परिचय और समस्याएं)

इस अंक के पीछे काफी श्रम किया गया है संपादक को बधाई।

मूल्य : १.२५ —श्री घनश्यामदास बिड़ला

## ४-चम्बल अंक

( चम्बल योजना का विस्तृत परिचय )

अंक को सभी दृष्टि से रोचक बनाया गया है।

मूल्य : ००.७५ (अप्राप्य) —श्री मिश्रीलाल गंगवाल

## ५-मजदूर अंक

( मजदूर समस्या के विविध पहलुओं का विवेचन )

लेख बहुत रोचक व उपयोगी है। ...मानव की नैतिकता पर जोर दिया गया है जो देश की संस्कृति व परम्पराओं के अनुकूल है।

मूल्य : १.५० —श्री खंडूभाई देसाई

## ६-उद्योग अंक

( प्रमुख उद्योगों के विकास का व्यापक परिचय )

भारतीय उद्योग और व्यवसाय की मूल, समस्याओं पर गम्भीर तथा उपयोगी लेखों का अच्छा संग्रह है। (अप्राप्य)

मूल्य : १.२५ —अजन्ता

## ७-राष्ट्रीय-विकास अंक

( द्वितीय पंचवर्षीय योजना का अध्ययन )

ज्ञानवर्धन के लिए ऐसी सामग्री प्रस्तुत करने वाले अंक का सर्वत्र स्वागत होगा।

मूल्य : १.२५ —श्री मोहनलाल सुखड़िया

## ८-बैंक अंक

( भारतीय बैंकों की समस्याओं का निरूपण )

Here is more 'Sampada' Special worth treasuring. (अप्राप्य)

मूल्य : १.२५ —Organiser

## ९-समाजवाद अंक

( समाजवाद के विभिन्न पहलुओं पर विचार )

सम्पदा का समाजवाद अंक मिला। यह काफी अच्छा और पठनीय है। (अप्राप्य)

मूल्य : १.५० —श्री श्रीमन्नारायण

## १०-राष्ट्रीय प्रगति अंक

( द्वितीय योजनाकाल की समस्याओं का विवेचन )

यह अति लाभदायक तथा उपयोगी है। लिखने का ढंग बहुत सुन्दर और रोचक है।

मूल्य : १.५० —श्री अमरनाथ विद्यालंकार

## ११-सहकारी कृषि अंक

देश के अत्यन्त विवादग्रस्त प्रश्नों पर विविध समन्वयात्मक दृष्टिकोण। मूल्य : १.५०

## १२-तृतीय पंचवर्षीय योजना अंक

तृतीय योजना का प्रामाणिक परिचय

मूल्य : १.५०

रजिस्ट्री से सब प्राप्य अंक मंगाने के लिए रु० ८.५० भेजिये।

**सम्पदा • २८-११ शक्तिनगर • दिल्ली-६**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ पृष्ठ ४८६ का शेष ]

बढ़ेगा। उनके इस युक्तिक्रम में बल अवश्य है, किन्तु दूसरी ओर समस्त देश में सम्पत्ति और विकास की समानता भी कम आवश्यक नहीं है। आज कुछ समय के लिए असुविधा हो सकती है, किन्तु कुछ ही समय में इन पर विजय प्राप्त की जा सकती है। विद्युत् शक्ति दूर से लाने पर एक बार व्यय करना पड़ेगा, और उसके बाद शक्ति की कठिनता समाप्त हो जायगी। विभिन्न राज्यों में आर्थिक विषमता स्वयं अनेक समस्याओं को उत्पन्न करती है। इसलिए यथासंभव विकेन्द्रीकरण की नीति अपनानी चाहिए, यद्यपि भारी असुविधाओं और उत्पादन व्यय में भारी अन्तर का भी कुछ न कुछ तो ख्याल रखना ही पड़ेगा।

## खाना बनाने और परोसने की कला

एक सूचना के अनुसार दिल्ली में जल्दी खाना बनाने और परोसने की कला सिखाने के लिए कालेज खोला जाएगा। भारत सरकार देश में पौष्टिक और सन्तुलित भोजन की तथा वैज्ञानिक तरीके तथा सफाई से खाना बनाने और परोसने की शिक्षा देने के लिए तीन कालेज खोल रही है। दिल्ली का कालेज उन्हीं में से है। अन्य कालेज बम्बई और कलकत्ता में खोले जाएंगे। इस समय बम्बई (अंधेरी) में जो कालेज चल रहा है, उसे पुनर्गठित किया जायगा और स्थायी बनाया जायगा।

दिल्ली के कालेज में जनवरी, १९६२ से पढ़ाई शुरू हो जायगी। इसका खर्च केन्द्रीय सरकार उठाएगी और बम्बई, कलकत्ता तथा मद्रास के कालेजों का खर्च केन्द्रीय सरकार तथा वहां की राज्य-सरकारें आधा-आधा उठाएंगी। इनमें तीन साल का डिप्लोमा कोर्स होगा, पर दिल्ली में 'आरामदायक' होटलों का प्रबन्ध करने की भी विशेष शिक्षा दी जाएगी। परन्तु क्या यह सब इतना महत्वपूर्ण और अनिवार्य है कि अन्य अनेक आवश्यक कार्यों से भी इसे अधिक प्राथमिकता दी जाय? ●●

## प्रति व्यक्ति ५ गुना बिजली

तीसरी योजना के अन्त तक प्रति व्यक्ति बिजली का औसत तो पचगुना हो जाएगा। १९५० में औसत प्रति व्यक्ति १८ किलोवाट घंटा पड़ती थी, जबकि १९६५ में यह औसत ९५ किलोवाट घंटा हो जाएगी।

बिजली के सभी साधनों का उपयोग किया जा रहा है। पन-बिजली सबसे सस्ती पड़ती है और देश में पानी भी प्रचुर मात्रा में है, अतः पन बिजली बनाने पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। अनुमान है कि देश में ४ करोड़ २० लाख किलोवाट पन-बिजली बन सकती है।

पहली योजना के शुरू में देश में केवल २३ लाख किलोवाट बिजली बनाने की क्षमता थी। पहली योजना में १० लाख २० हजार कि० वा० की और अधिक क्षमता हो गयी और दूसरी योजना के अन्त में ५७ लाख कि० वा० की क्षमता हो गयी।

तीसरी योजना में प्रति वर्ष १४ लाख कि० वा० की क्षमता बढ़ेगी और इसके अंत तक देश में लगभग १ करोड़ ३६ लाख कि० वा० बिजली की क्षमता हो जाएगी, जिसमें से १ करोड़ २६ लाख ९० हजार कि० वा० वितरित होने लगेगी।

## मध्यप्रदेश में हमारे प्रतिनिधि

मध्यप्रदेश में सम्पदा के ग्राहक बनाने तथा बेचने की व्यवस्था के लिए हमने श्री आनन्दस्वरूप गुप्त २३ बेनजीर क्वार्टर्स भोपाल को नियत किया है। आशा है सब सम्बद्ध व्यक्ति उन्हें सहयोग देंगे।

—व्यवस्थापक

विज्ञापन के लिए

**सम्पदा**

सर्वोत्तम

साधन है

**सम्पदा, अशोक प्रकाशन मन्दिर**

: २८-११ शक्तिनगर, दिल्ली-६



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ला. इ. का. की चर्चा लोगों में है

कारपोरेशन का व्यवसाय, प्रतिवर्ष, दिन दूना और रात चौगुना बढ़ रहा है । इससे प्रीमियम की आय में भी धीरे-धीरे वृद्धि हो रही है। इसी धन का अधिकतर अंश देश के आर्थिक विकास में लगाया जाता है-औसत, हररोज, १५ लाख से अधिक रुपये इसमे लगाये जाते हैं ।

इससे आर्थिक उद्योगों को एक नई गति मिलती है और साथ ही साथ, देश भी समृद्ध हो जाता है । आर्थिक उद्योगों की सहायता करके अधिक रोजगार, अधिक आय और अधिक उत्पादन की निर्मिति में कारपोरेशन हाथ बँटा रही है ।

"व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय स्थिरता में कारपोरेशन योग प्रदान कर रही है" इस तत्व को, देश के कोने कोने से, आज मान्यता मिल रही है ।

**लाइफ़ इन्श्योरेन्स कारपोरेशन आफ़ इन्डिया**

ASP/LIC-E-24

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Regd No. D. 361


# भारतीय उद्योग मेला 1961 नई दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रीय

15 नवम्बर 1961 से 1 जनवरी 1962 तक

फेडरेशन आफ इंडियन चेंबर्स आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा भारत सरकार के सक्रिय समर्थन से आयोजित

## एशिया का महान् औद्योगिक व व्यापारिक मेला

NEWFIELDS


सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीजिज ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित व अशोक प्रकाशन मन्दिर, २८/११, शक्तिनगर, दिल्ली-६ से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा

वर्ष १० अंक १२

१२ १२/६१

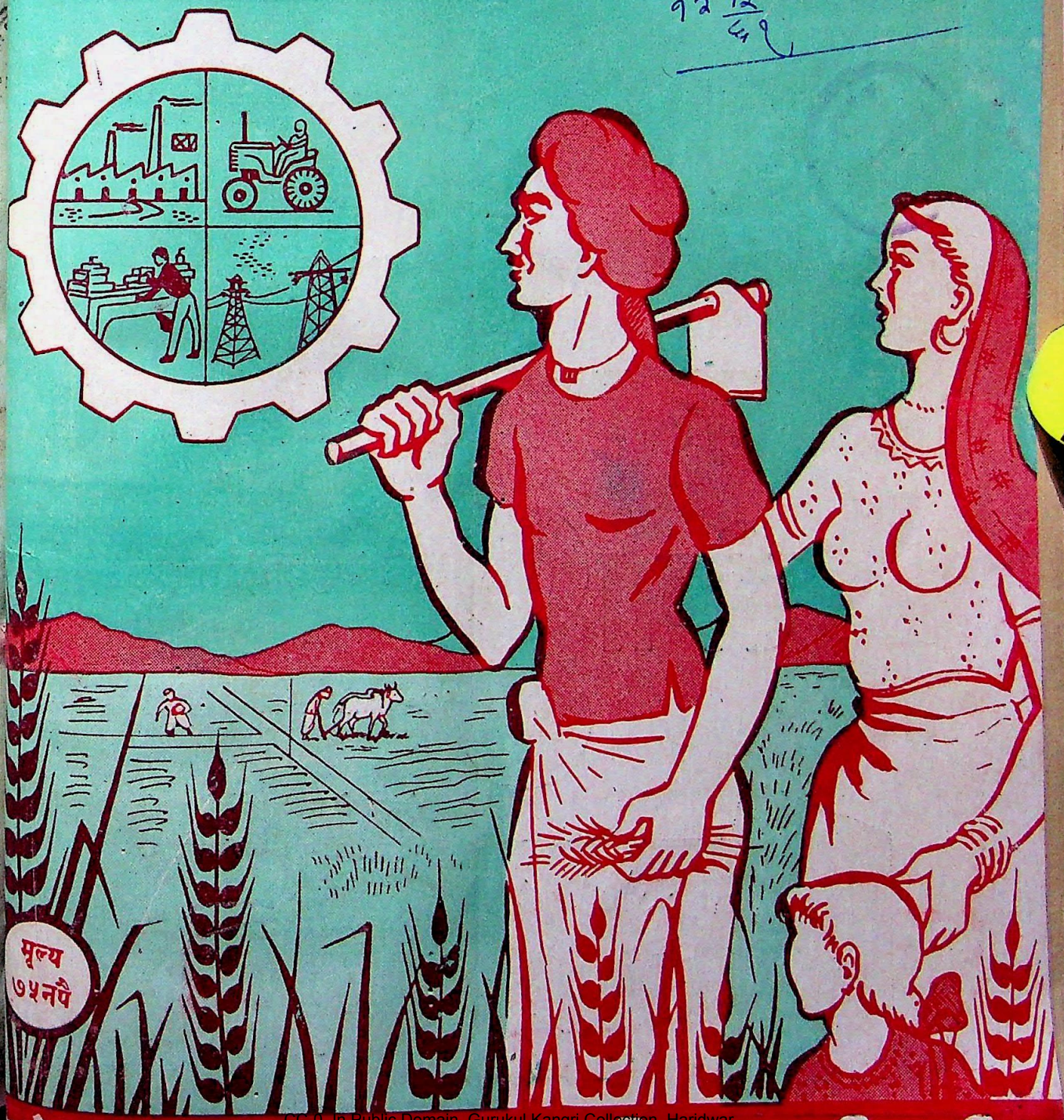

मूल्य ७५ नये पै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर एक के लिये

# योजना से क्या होगा

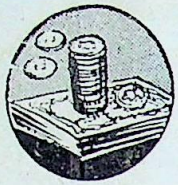

आमदनी में ५५ रुपये की बढ़त

काफी अन्न

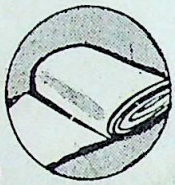

लगभग दो गज अधिक कपड़ा

बिना फीस अनिवार्य प्राइमरी शिक्षा

स्वास्थ्य के लिए बेहतर व्यवस्था

देहातों में शुद्ध और साफ पानी

और

१४० लाख अधिक नौकरियाँ

योजना को सफल बनाने में अपनी मेहनत, हिम्मत और श्रद्धा से मदद दीजिये।

## सब का सुख सब की सुविधा

DA-CI/448

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा के अनूठे उपहार : १२ विशेषांक

'सम्पदा' का प्रत्येक अंक ज्ञानवर्धक होता है, पर विशेषांक तो अपने विषय के विश्व-कोष ही होते हैं। प्रोफेसर श्री ओमप्रकाश तोषनीवाल, एम० कॉम० कहते हैं—'सम्पदा' के विशेषांक तो हमारे लिए गीता व बाइबिल के समान हैं।'

## १-योजना अंक

( प्रथम योजना सम्बन्धी अपूर्व सामग्री )

एक प्रशंसनीय प्रयत्न। यह अंक पंचवर्षीय योजना को समझने की कुंजी है।

मूल्य : १.०० —जीवन साहित्य

## २-भूमि-सुधार अंक

( भूमि समस्याओं का अद्भुत विवेचन )

इस विषय में अपने ढंग का अद्वितीय प्रकाशन है।

मूल्य : १.०० (अप्राप्य) —प्रताप

## ३-वस्त्र-उद्योग अंक

(भारत के प्रमुख उद्योग का परिचय और समस्याएं)

इस अंक के पीछे काफी श्रम किया गया है संपादक को बधाई।

मूल्य : १.२५ —श्री घनश्यामदास बिड़ला

## ४-चम्बल अंक

( चम्बल योजना का विस्तृत परिचय )

अंक को सभी दृष्टि से रोचक बनाया गया है।

मूल्य : ००.७५ (अप्राप्य) —श्री मिश्रीलाल गंगवाल

## ५-मजदूर अंक

( मजदूर समस्या के विविध पहलुओं का विवेचन )

लेख बहुत रोचक व उपयोगी है। ...मानव की नैतिकता पर जोर दिया गया है जो देश की संस्कृति व परम्पराओं के अनुकूल है।

मूल्य : १.५० —श्री खंडूभाई देसाई

## ६-उद्योग अंक

( प्रमुख उद्योगों के विकास का व्यापक परिचय )

भारतीय उद्योग और व्यवसाय की मूल समस्याओं पर गम्भीर तथा उपयोगी लेखों का अच्छा संग्रह है। (अप्राप्य)

मूल्य : १.२५ —अजन्ता

## ७-राष्ट्रीय-विकास अंक

( द्वितीय पंचवर्षीय योजना का अध्ययन )

ज्ञानवर्धन के लिए ऐसी सामग्री प्रस्तुत करने वाले अंक का सर्वत्र स्वागत होगा।

मूल्य : १.२५ —श्री मोहनलाल सुखड़िया

## ८-बैंक अंक

( भारतीय बैंकों की समस्याओं का निरूपण )

Here is more 'Sampada' Special worth treasuring. (अप्राप्य)

मूल्य : १.२५ —Organiser

## ९-समाजवाद अंक

( समाजवाद के विभिन्न पहलुओं पर विचार )

सम्पदा का समाजवाद अंक मिला। यह काफी अच्छा और पठनीय है। (अप्राप्य)

मूल्य : १.५० —श्री श्रीमन्नारायण

## १०-राष्ट्रीय प्रगति अंक

(द्वितीय योजनाकाल की समस्याओं का विवेचन )

यह अति लाभदायक तथा उपयोगी है। लिखने का ढंग बहुत सुन्दर और रोचक है।

मूल्य : १.५० —श्री अमरनाथ विद्यालंकार

## ११-सहकारी कृषि अंक

देश के अत्यन्त विवादग्रस्त प्रश्नों पर विविध समन्वयात्मक दृष्टिकोण। मूल्य : १.५०

## १२-तृतीय पंचवर्षीय योजना अंक

तृतीय योजना का प्रामाणिक परिचय

मूल्य : १.५०

## ११-सहकारी कृषि अंक

देश के अत्यन्त विवादग्रस्त प्रश्न पर विविध समन्वयात्मक दृष्टिकोण। —मू० १.५०

रजिस्ट्री से सब प्राप्य अंक मंगाने के लिए रु० ८.५० भेजिये।

**सम्पदा • १८-११ शक्तिनगर • दिल्ली-६**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| १. सम्पादकीय | ५५३ | ११. राजस्थान में क्रान्तिकारी भूमि सुधार | ५७३ |
| २. विदेशी तेल और उसका मूल्य | ५५९ | १२. अर्थ-वृत्त चयन | ५७५ |
| ३. सीमेंट की नई आवश्यकताएं : उत्पादन लक्ष्य और मूल्य | ५६१ | १३. रूस और भारत की विकास योजनाएं | ५७७ |
| ४. विश्व के सबसे बड़े दस उद्योग | ५६३ | १४. सर्वोदय-कांग्रेस की आर्थिक नीति | ५७९ |
| ५. देश में अमीर दिन-दिन अमीर हो रहे हैं ! | ५६४ | १५. साहित्य समालोचना | ५८१ |
| ६. कृषि का आर्थिक पहलू | ५६५ | १६. अजस्र शक्ति का स्रोत—सूर्य | ५८३ |
| ७. रोजगार की जटिल समस्या | ५६६ | १७. लोकतंत्र में समृद्धि का मार्ग | ५८५ |
| ८. युग की चुनौती | ५६७ | १८. प्रदर्शनी में नये भारत की झांकी | ५९१ |
| ९. भारत में विदेशी पूँजी का सहयोग और प्रभाव | ५६९ | १९. विदेशों का सहयोग | ५९२ |
| १०. अधिकोष निक्षेप बीमा योजना | ५७१ | २०. सोवियत रूस की कृषि संस्था—गोस्पलेन | ५९५ |
| | | २१. इस मास की आर्थिक प्रमुख घटनायें | ५९७ |


• • •

सम्पादक : कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

• • •


मध्य प्रदेश में

## सम्पदा के प्रतिनिधि

हमने मध्य प्रदेश में सम्पदा के ग्राहक व एजेंन्ट बनाने तथा वितरण की व्यवस्था के लिए श्री आनन्दस्वरूप गुप्त २३ बेनज़ीर क्वार्टर्स भूपाल को अपना प्रतिनिधि नियत किया है। सब उन्हें आवश्यक सहयोग देवें।

—मैनेजर सम्पदा

२८/११ शक्तिनगर दिल्ली-६

इन्दौर में

सम्पदा के वितरण और विक्रय के लिए इन्दौर में एक उत्साही एजेंन्ट की आवश्यकता है। एजेंन्ट शीघ्र पत्र व्यवहार करें।

—मैनेजर सम्पदा २८/११ शक्तिनगर दिल्ली-६

## सम्पदा के दस वर्ष पूर्ण

हमने अपना कर्तव्य पूर्ण किया है। आप भी अपना कर्तव्य पालन करेंगे।

प्रत्येक ग्राहक से अनुरोध है कि वह चार-चार ग्राहक बना कर हमें सहयोग देने की कृपा करें। चार ग्राहक बनाने पर उसे—

**सुभाषित रत्नमाला**

पुरस्कार में दी जायगी।

मैनेजर :

सम्पदा, दिल्ली।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष १०
अंक : १२
दिसम्बर १९६१

# सम्पदा

## सम्पदा के दस वर्ष

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सम्पदा ने अपने जीवन के दस वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। जब हमने सम्पदा का प्रारम्भ किया था, कोई विशुद्ध आर्थिक पत्र हिन्दी में नहीं था। इसे चलाने में हमें अपने सीमित साधनों के कारण किन किन विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, इसकी चर्चा करके हम उन पाठकों, लेखकों व सहयोगियों के प्रेम की अवहेलना नहीं करना चाहते, जिनकी सद्भावनाओं ने हमें सदा उत्साह प्रदान किया है और हम ये दस वर्ष पूर्ण कर सके हैं।

हमने यथाशक्ति प्रयत्न किया है कि सम्पदा का स्तर ऊंचा रखें और इसे हल्की चीजों से मुक्त रखा जाय। हमारी यह भी इच्छा रही है कि हिन्दी भाषी जनता में आर्थिक विषयों के प्रति, जो स्वराज्य के बाद आज हमारे सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न रहे हैं, अधिकाधिक रुचि उत्पन्न हो और वह समस्याओं की जानकारी के साथ साथ देश के आर्थिक उत्थान में अपने उत्तरदायित्व को समझे। विभिन्न प्रश्नों पर विशेषांकों की स्वस्थ परम्परा इसीलिए जारी की गयी है।

हमारी प्रारम्भ से यह कोशिश रही है कि सम्पदा के पाठकों को किसी प्रश्न और समस्या के सब पहलुओं की जानकारी प्राप्त हो। विभिन्न सिद्धान्तों या वादों के आज के युग में सत्य पर किसी का एकाधिकार नहीं है, इसलिए हमने पाठक के सामने निःसंग भाव से सब पक्ष रखने का प्रयत्न किया है। समाजवाद, साम्यवाद, स्वतन्त्र उद्योग, सर्वोदय पद्धति, सरकार की आर्थिक नीति या उसकी आलोचना, सब को ईमानदारी से एक समान स्थान दिया है और इस विविध पक्ष स्थापन के द्वारा हम पाठक में किसी आग्रह और पक्षपात से ऊपर उठकर स्वतन्त्र चिन्तन की भावना व शक्ति उत्पन्न करना चाहते हैं, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि विविध प्रश्नों पर सम्पादक की कोई निश्चित सम्मति नहीं है। सम्पादकीय स्तम्भ में एक सुनिश्चित नीति पाठक को मिलेगी।

हम अपने प्रयत्नों में कहां तक सफल हुए हैं, कहां तक पाठकों को आर्थिक समस्याओं और प्रवृत्तियों की जानकारी दे सके हैं, आर्थिक सिद्धान्तों पर स्वतन्त्र चिन्तन की दिशा में कहां तक उन्हें प्रेरित कर सके हैं, आदि निर्णय पाठक स्वयं करेंगे। हम अपनी कमजोरियों और अभावों से भली भांति परिचित हैं। फिर भी हमें इतना आत्मसन्तोष है कि हमने निष्पक्ष रहकर सत्य को प्रकट करने में कभी संकोच नहीं किया है। अन्त में हम अपने विद्वान पाठकों और अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों से एक नम्र निवेदन करना चाहते हैं। हम सम्पदा के स्तर और उसकी उपयोगिता को बढ़ाकर उसका अधिकाधिक प्रचार करना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में यदि वे अपने अपने उपयोगी परामर्श देंगे, तो हम यथाशक्ति उनका पालन करने का प्रयत्न करेंगे।

सम्पदा के हितैषी पाठक अपने अपने कर्तव्य को समझेंगे और हिन्दी संसार में इसे प्रतिष्ठित पत्र बनाने में हमारी सहायता करेंगे, इस विश्वास के साथ—

—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार, सम्पादक सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# योजना का वास्तविक अर्थ—अन्त्योदय

किसी देश की विकास-योजना का अर्थ केवल बड़ी-बड़ी इमारतें, रेलवे, जहाज, नदियों पर बांध या कारखाने बना लेना भर नहीं है। योजना का वास्तविक अर्थ और अभिप्राय है जनता का जीवन-स्तर ऊंचा करना, उसे भोजन, वस्त्र, मकान, शिक्षा व चिकित्सा की अनिवार्य सुविधाएं सुलभ करना। लेकिन यदि योजना केवल मध्यम या उच्च वर्ग को ही समृद्ध बनाती है, तो वह एकांगी है। आचार्य विनोबा ने यही दृष्टि योजना आयोग को दी थी कि सबसे पहले दरिद्र और दरिद्रतम की चिन्ता करो, बाद में सामान्य और उच्च स्थिति के वर्ग की। यही सच्चा समाजवाद या—साम्यवाद है। जब तक नागरिकों की न्यूनतम आय ३०० रु० प्रति व्यक्ति नहीं हो जाती, तब तक किसी व्यक्ति की आय ५००) रु० से बढ़ाकर ६००) रु० करने को कम से कम प्राथमिकता नहीं दी जानी चाहिए।

पिछले दिनों ग्रामीण समुदाय के कमजोर वर्गों की स्थिति का अध्ययन करने के लिए अध्ययन मण्डल नियत हुआ था, जिसके अध्यक्ष श्री जयप्रकाशनारायण थे। इसने अपनी रिपोर्ट में गांवों की दरिद्रतम जनता की स्थिति में पायी जाने वाली भयंकर असमानताओं के प्रति राष्ट्र को सचेत करने का प्रयत्न किया है। इस मण्डल के सदस्य केवल भूदानी नहीं थे, कई सरकारी अधिकारी व तीन संसद-सदस्य भी इसमें सम्मिलित थे। अध्ययन मण्डल ने अत्यन्त योग्यता के साथ देश को दरिद्रतम वर्ग के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाने के लिए सचेत किया है। ग्रामीण जनता की निर्धनता मिटाने या समिति के शब्दों में कमजोर वर्ग के रक्षण का काम दीर्घकाल की अपेक्षा रखता है।

सबसे ज़्यादा कमजोर वर्ग कौन सा है? भूमि या आय की सीमा के पैमानों से इसकी पहचान की जा सकती है। ग्रामीण परिवार में से २० प्रतिशत के पास भूमि बिलकुल नहीं है और २५ प्रतिशत के पास एक एकड़ से भी कम भूमि है। उनकी आय पर इसका स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। ३५ से ५० प्रतिशत तक ग्रामीण परिवारों की आय ५००) रु० वार्षिक से भी कम है अर्थात् प्रतिव्यक्ति १००) रु०, जबकि राष्ट्रीय आय के हिसाब से औसतन आय ३०० रु० से भी ऊपर बैठती है। पर बहुत से परिवार २५०) रु० वार्षिक से भी कम कमाते हैं। इसलिए देश का प्रथम कर्त्तव्य है ऐसे दीनतम लोगों को पहले सहायता देना अध्ययन मंडल ने एक साधारण सिद्धान्त विचार के लिए प्रस्तुत किया है :—

जिन परिवारों की वार्षिक आय १,००० रु० से कम है, उन्हें दीर्घकालीन या स्थायी आर्थिक पिछड़ेपन का एक मामला समझा जाय। दूसरा सुझाव है, गांधीजी के अंत्योदय के सिद्धान्त का अनुकरण करने की दृष्टि से। प्राथमिकता उन परिवारों को दी जाय, जिनकी सालाना आमदनी ५०० रु० से कम है। हम यह महसूस करते हैं कि सबसे नीची सीढ़ी से कार्य आरम्भ करना ठीक होगा। अन्त में हमारे विचार से जिन परिवारों की आय २५० रु० सालाना से कम हो, उन्हें अत्यन्त निर्धन माना जाय। सबसे पहले इसी वर्ग के लिए कल्याण के उपाय किये जायं, जिनकी जिम्मेदारी पंचायती राज समितियों पर हो या इनके माध्यम से और कोई संस्था इस जिम्मेदारी को पूरा करे। राज्य द्वारा इन समितियों की सहायता के लिए उचित सहायता-अनुदान दिया जाय।

यह संभव है कि सरकार वित्तीय साधनों का अभाव कहकर इस अत्यन्त दरिद्र वर्ग की सहायता करने में अपनी असमर्थता प्रकट करे किन्तु यह तो संभव है कि केन्द्रीय सरकार विभिन्न राज्यों को अनुदान व सहायता देते समय इस बात का ध्यान रखे कि किस राज्य में ऐसे दरिद्र वर्ग की संख्या अधिक है, जिसे सहायता की सबसे अधिक आवश्यकता है। 'इस्टर्न इकानामिस्ट' इस विचार का समर्थन करते हुए लिखता है :—

"यह संभव नहीं कि निर्धनता और हीनावस्था को आर्थिक नीति के एक झटके के साथ समाप्त कर दिया जाय। पर अगर इस दिशा में धीरे-धीरे काम किया जाय, तो जनता के कमजोर वर्गों में आशा पैदा की जा सकेगी और उन्हें यह विश्वास भी दिलाया जा सकेगा कि समाजवादी ढाँचे को शिक्षित एवं प्रभावशाली लोगों के अधिकार बढ़ाने के लिए नहीं, वरन् गरीबों के संरक्षण के लिए लागू किया गया है।"



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# औद्योगिक विकास की तीव्र गति

भारत वर्ष का औद्योगिक विकास किस तीव्र गति से हो रहा है, यह निम्नलिखित अंकों से स्पष्ट हो जायगा। पिछले छः मास में अप्रेल से सितम्बर तक भारत में ८५१ नई कम्पनियों कीं रजिस्टरी हुई है। इनकी कुल अधिकृत पूंजी १७७ करोड़ रुपये है। इनमें से १० बड़ी कम्पनियां सरकारी हैं, जिन की पूंजी ६८ करोड़ रुपया नियत की गई है। बाकी ८४१ कम्पनियां निजी व्यवसायियों द्वारा खड़ी की गई हैं। इन नई कम्पनियों के अतिरिक्त प्रायः प्रति सप्ताह हम अखबारों में यह पढ़ते हैं कि पुरानी कम्पनियों को अपनी पूंजी बढ़ाने या डिबैंचर जारी करने की अनुमति दी गयी है। ये कम्पनियां भिन्न-भिन्न उद्योगों के लिए खुल रही हैं।

इन नये उद्योगों की एक विशेषता है कि इनमें ऐसी कम्पनियां भी काफी है, जिनकी पूंजी करोड़ों रुपयों में है। सरकारी कम्पनियों में ही पांच ऐसी कम्पनियां निम्नलिखित हैं।

| नाम | पूंजी |
|---|---|
| दुर्गापुर प्रौजैक्ट (पश्चिमी बंगाल) | २५ करोड़ रु० |
| मैसूर आयरन एण्ड स्टील | २० करोड़ रु० |
| इंडियन ड्रग्ज एण्ड फार्मैस्युटिकल्ज (दिल्ली) | १५ करोड़ रु० |
| केरल स्टेट इंडस्ट्रियल कार्पोरेशन | ५ करोड़ रु० |
| मध्य प्रदेश स्टेट इंडस्ट्रीज कार्पोरेशन | १॥ करोड़ रु० |

इनके अतिरिक्त पांच और सरकारी कम्पनियां है, जिनमे से तीन की पूंजी ५०-५० लाख रुपया है।

इसी तरह निजी क्षेत्र में भी ३९ ऐसी कम्पनियां हैं, जिनकी पूंजी एक करोड़ रुपये से लेकर १० करोड़ रुपये तक है। नेशनल आर्गेनिक कैमिकल्ज महाराष्ट्र की पूंजी १० करोड़ रुपया है। एसोशिएटिड बेयरिंग कंपनी (महाराष्ट्र) की पूंजी ७.५० करोड़ रु० है। तीसरी सबसे ज्यादा पूंजी वाली कम्पनी (बोटोनियम) की पूंजी ५ करोड़ रुपया है। चौथी बड़ी कम्पनी भी प्रभात उद्योग महाराष्ट्र में है, जिसकी पूंजी ३ करोड़ रुपये है। एक करोड़ रुपये से खुलने वाली भी अनेक कम्पनियां महाराष्ट्र में स्थापित की जा रही हैं। बम्बई दीर्घ काल से उद्योग का केन्द्र रहा है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि वहां नये उद्योग अधिक सुविधा के साथ खुलें। सरकार ने उद्योगों के विकेन्द्रीकरण की नीति अपनाई है। कच्चे माल की प्राप्ति, परिवहन, बिजली, मशीनरी और स्टोर की सुलभता तथा दक्ष कर्मचारियों की प्राप्ति आदि के कारण वह इस नीति पर पूर्णतः अमल नहीं कर पा रही है। इन बड़ी कम्पनियों को मद्रास, गुजरात, पश्चिमी बंगाल, दिल्ली, राजस्थान तथा केरल में अनुमति मिली है। यह आश्चर्य की बात है कि उत्तर प्रदेश जैसे विशाल राज्य में पिछले छः माह में कोई नई बड़ी कम्पनी रजिस्टर्ड नहीं हो सकी है।

१९५७-५८ में विशाल प्रतिष्ठानों की संख्या १५६ थी और उनकी प्रदत्त पूंजी ६०३ करोड़ रुपये थी। अब यह संख्या करीब दुगनी हो गई है। सम्भवतः आज की परिस्थिति और देश की आवश्यकताएं ऐसी हैं, कि सरकार पूंजी के विकेन्द्रीकरण की नीति को सिद्धान्त रूप में स्वीकार करते हुए भी उसे व्यावहारिक नहीं मान रही। यही कारण है कि पिछले छः मासों में नई कम्पनियों को जितनी पूंजी प्राप्त करने की अनुमति मिली है, उसका करीब ६४ प्रतिशत पूंजी केवल ३९ उद्योगों के पास चली गई है। ये संख्याएं जहां यह बताती हैं कि सरकार निजी उद्योग के विरोध में नहीं जा रही, वहां इनसे यह भी स्पष्ट होता है कि देश कितनी तीव्रता से औद्योगिक प्रगति के पथ पर चल रहा है। पाठक अन्यत्र भी औद्योगिक प्रगति के सम्बन्ध में एक विवरण पढ़ेंगे।

## रूस से समझौता

पिछले दिनों भारत के अखिल भारतीय उद्योग वाणिज्य मण्डल तथा रूस के ऑल यूनियन चैम्बर आफ कामर्स में एक समझौता हुआ है। इसके अनुसार रूस के विदेशी व्यापार संगठन और भारतीय कम्पनियों में उठने वाले परस्पर विवादों की परस्पर तय करने की व्यवस्था की गई है। इस समझौते के अनुसार दोनों संस्थाओं की समय-समय पर विचार विनिमय के लिए बैठक हुआ करेगी। इस से पहले भी यह मण्डल (फैडरेशन) जापान, अमेरिका



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जर्मनी से समझौते कर चुका है। अब रूस से यह समझौता इस सद्भावना का सूचक है कि रूस दूसरे देशों के निजी उद्योग से कतराता नहीं है, वरन् उनके साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है।

## ७४८ एवरो

कानपुर में भारतीय वायु सेना ने एवरो ७४८ के नमूने पर एक वायुयान निर्माण करके सचमुच एक प्रशंसनीय कार्य किया है। इस वायुयान के निर्माण के बाद यह सम्भव हो सकेगा कि डाकोटा विमानों की जगह ये नये विमान ले लें। कानपुर की वायुसेना के इंजीनियर १९६२ में २, १९६३ में १२, १९६४ में १८ और १९६५ में ३६ ऐसे विमान बनाने का संकल्प कर चुके हैं। इस विमान निर्माण की सफलता ने भारत सरकार को यह आशा भी दिला दी है कि कुछ समय बाद विदेशों को वायुयानों का निर्यात भी किया जा सकेगा। बर्मा, मलाया, इंडोनेशिया, और मिस्र आदि देशों से इसकी पूछताछ भी शुरू हो गई है। लेकिन अभी निर्यात की आशा बहुत अधिक नहीं करनी चाहिए, क्योंकि न केवल यहां वायुयानों की कमी है, वरन् यह भी हमें ध्यान रखना होगा, कि वायुसेना के बहुत से विमान पुराने हो चुके हैं। पहला काम उन्हें बदलना होगा। ● ●

## व्यावहारिक नीति

पिछले दिनों संसद में सरकार ने यह स्वीकार किया है कि जिन क्षेत्रों में सरकारी हवाई कम्पनी काम नहीं कर रही, उन क्षेत्रों में सरकार को यह अधिकार है कि वह प्राइवेट कम्पनियों को वायुयान चलाने की अनुमति दे सके। कलिंग एयर वेज़ को बम्बई से बड़ोदा तक सर्विस की अनुमति मिल भी चुकी है। शायद पाठकों को यह स्मरण होगा कि १९५६ की औद्योगिक नीति के अनुसार वायु यातायात केवल सरकारी क्षेत्र के लिए निश्चित कर दिया गया था। अब सरकार शनैः शनैः आवश्यकता को देखते हुए व्यावहारिक मार्ग को अपना रही है। यह सरकार की दूरदर्शितापूर्ण नीति है, कि वह केवल नारे बाजी और सैद्धान्तिक चर्चा के कारण देश के औद्योगिक विकास पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाना चाहती। इस मास के शुरू में भाषण देते हुए पं० जवाहर लाल नेहरू ने कलकत्ता में कहा था, कि विदेशी मुद्रा, शक्ति और परिवहन ये तीन बाधाएं आज हमारे औद्योगिक विकास के मार्ग में हैं। इन तीनों बाधाओं पर हम विजय प्राप्त करेंगे और इसमें सैद्धान्तिक मतभेद बाधक नहीं होने देंगे। अपनी समाजवादी भावनाओं के लिए प्रसिद्ध ईंधन मन्त्री श्री केशवदेव मालवीय ने भी संसद में विदेशी तेल कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण करने से इन्कार कर दिया है। खाद, जहाज निर्माण आदि अनेक उद्योगों के विकास में भी सरकार निजी उद्योग का सहयोग लेने को उत्सुक है। यह सब इस बात के प्रमाण हैं कि भारत सरकार देश की आवश्यकताओं की उपेक्षा केवल इस आधार पर नहीं करना चाहती कि समाजवाद के भावुकतापूर्ण नारे इसमें बाधक हैं। ● ●

## स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन

भारत सरकार के स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन पर जब तब अनेक उद्योगपति आक्षेप करते रहते हैं। इन आक्षेपों की यथार्थता और उक्त कार्पोरेशन की उपयोगिता के सम्बन्ध में जांच करने के लिए इकनामिक एज्यूकेशन की कौंसिल ने लन्दन की इकनामिस्ट इन्टैलिजेंन्स यूनिट लिमिटेड से आग्रह किया था। और इस संस्था ने भी अपनी लम्बी चौड़ी रिपोर्ट में कार्पोरेशन की अनेक असफलताओं की चर्चा की है। किन्तु उसने यह भी स्वीकार किया है कि कार्पोरेशन ने कई बहुत बड़े-बड़े सौदे किये हैं; आइरन—ओर के निर्यात ने काफी सफलता प्राप्त की है। यह सम्भावना बढ़ गई है कि आगामी अनेक वर्षों तक इसका निर्यात बढ़ता जायेगा, इसने अनुचित रूप से कम मूल्यों पर सौदा नहीं किया, जापान से इसके व्यापार में भारत को काफी लाभ हुआ है। फिर भी हम सरकार से कहना चाहते हैं कि वह उक्त कार्पोरेशन की सफलताओं पर प्रसन्न होने के साथ-साथ उन अभियोगों को दूर करने की भी चेष्टा करे जो अर्थशास्त्रियों की उक्त संस्था तथा भारत के अधिकांश व्यापारी उस पर लगाते हैं। परन्तु सरकार ने उन आरोपों को स्वीकार करने से इंकार करते हुए उसको और भी अधिक विस्तृत करने की घोषणा की है। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## कोयले की कठिनता

कोयले के योजनाबद्ध उत्पादन और औद्योगिक उत्पादन में एक बड़ी रुकावट अभी तक यातायात की अव्यवस्था है। इस समय परिवहन के जितने साधन उपलब्ध हैं और जितनों की आवश्यकता है—इन दोनों के बीच इतना असन्तुलन है कि उसका प्रभाव योजना पर और लागत मूल्य की वृद्धि पर पड़ सकता है। कोयले के यातायात की इस असफलता के चाहे जो कारण हों, पर उनका इलाज शीघ्र होना चाहिए परन्तु प्रतीत ऐसा होता है कि तीसरी योजना की अवधि में इसमें सुधार की बहुत कम गुंजायश है। कोयला परिवहन परामर्श समिति के अध्यक्ष सर बी० पी० सिंह राय के कथनानुसार, तीसरी योजना में कोयले के उत्पादन को ६०० लाख टन से बढ़ाकर ९७० लाख टन तक करने के लिए निम्नलिखित ढंग से रेलवे वेगनों की जरूरत होगी—

| वर्ष | प्रतिदिन वेगन की आवश्यकता |
|---|---|
| १९६१-६२ | ७,१८३ |
| १९६२-६३ | ८,५६१ |
| १९६३-६४ | ९,९१० |
| १९६४-६५ | ११,५०२ |
| १९६५-६६ | १२,३३९ |

प्रश्न यह है कि इतने वेगन कहाँ से आएंगे, क्योंकि रेलवे केवल ५,८८८५ वेगन मुहय्या कर सकती है। योजना आयोग के उच्च अधिकारियों ने एक प्रेस सम्मेलन में यह स्वीकार किया था कि मुगलसराय से ऊपर के क्षेत्र के लिए कोयले की सप्लायी के लिए रेलवे की सामर्थ्य ज़रूरत से कम ही रहेगी और कोयले के पृथक् पृथक् भण्डारों की स्कीम, जैसी उम्मीद थी, वैसी कारगर नहीं हो सकेगी। दामोदर घाटी योजना की नहर में नौकायान के लिए २० लाख टन प्रतिवर्ष कोयला रफ्तान करने की स्कीम अभी तक ठंडी पड़ी है। यह नहर १९५९ तक पूरी होनी थी, पर, पिछले साल बाढ़ के कारण, अब अगले मध्य वर्ष तक पूरी होने की संभावना है। कोयला-कंट्रोलर ने एक समिति नियुक्त की है जो इस नहर के द्वारा कोयला ले जाने की संभावनाओं पर विचार करेगी। पर, इस समय जो स्थिति है, उसे ध्यान में रखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि कम से कम दो-तीन साल तक यह संभव नहीं होगा। फिर, तीसरी योजना में कोयले की मूल्य-वृद्धि भी होने की संभावना है जिसके लक्षण अभी से प्रकट हो रहे हैं। १९५५ के मध्य से जनवरी १९६१ तक कोयले के दाम में ४५ प्रतिशत वृद्धि हुई है और यह निश्चित है कि तीसरी योजना में दाम और भी चढ़ेंगे।

## उदयपुर-हिम्मतनगर रेलवे लाइन

राजस्थान में एक नई लाइन बड़ी भारी कमी को पूरा करने जा रही है। उदयपुर हिम्मत नगर रेलवे लाइन का निर्माण कार्य, १९६१ के आरम्भ में शुरू किया गया था। इस रेलवे लाइन का मुख्य प्रयोजन पश्चिमी राजस्थान के प्रमुख वाणिज्य केन्द्रों को अहमदाबाद तथा बम्बई कांडला और सौराष्ट्र के अन्य बन्दरगाहों से बिल्कुल सीधे और कम से कम दूरी के मार्ग द्वारा जोड़ना है। इस परियोजना के पूर्ण होने के पश्चात् उदयपुर से अहमदाबाद की दूरी, जो मारवाड़ जंकशन होकर ३३६ मील है, घटकर १९६ मील रह जायेगी। इसके बनजाने पर राजस्थान में तथा गुजरात राज्य के साबरकंथा जिलों में लाखों लोगों को यातायात की सुविधाएं सुलभ हो जायगी और इस क्षेत्र के प्राकृतिक स्रोतों के उपयोग, विशेषतः जावर की खानों के पास जस्ता और रांगा तथा नाथरिया—की—पाल के पास कच्चे लोहे की खानों से खनिज पदार्थ निकालने में सहायता मिलेगी।

इस नयी लाइन की विशेष बात अरावली पर्वत श्रेणी में खरवा और जावर के बीच ८५० फीट लम्बी सुरंग का निर्माण है। अब इस सुरंग का निर्माण भी शुरू हो गया है।

## उर्वरक की कीमतों में कमी

भारत सरकार ने उर्वरक खरीदकर किलामों की कीमतों में कुछ कमी करने का निश्चय यह किया है। यह कमी १ दिसम्बर, १०६१ से लागू हो गई है। उर्वरकों की पुरानी और नई कीमतें इस प्रकार हैं:—

| | पुरानी कीमतें (प्रति मीट्रिक टन) | नई कीमतें (प्रति मीट्रिक टन) |
|---|---|---|
| अमोनियम सल्फेट | ३४४.५० रु० | ३३०.०० रु० |
| यूरिया | ६८४.१० रु० | ६७०.०० रु० |
| अमोनियम सल्फेट नाइट्रेट | ४०८.५० रु० | ४००.०० रु० |
| कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट | ३२४.८० रु० | ३१०.०० रु० |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्वरकों का मूल्य कम करने का मुख्य प्रयोजन किसानों की हलके प्रयोग के लिए प्रभाहित करना है। जब यह मुख्य मंत्रिमण्डल में उपस्थित हुआ तो कहा जाता है कि जिन मंत्रालय ने इस आधार पर कमी का विरोध किया कि सरकारी उद्योग तृतीय योजना में प्रस्थापित ४५० करोड़ रु० की राष्ट्रिय सरकार को नहीं दे सकेंगे, किन्तु कृषि मंत्री ने जब यह कहा कि इससे कृषि का उत्पादन बहुत बढ़ जायगा और आयात में कमी हो सकेगी, तब मूल्यों में कमी करने का निश्चय कर लिया गया। आगामी छः मास बतायेंगे कि मूल्यों में कमी से किसानों को इन वैज्ञानिक खादों के प्रयोग के लिए कितना प्रोत्साहन दिया।

## कृषि-भूमि का नियंत्रण

खाद्यमंत्री श्री पाटिल ने संसद में एक ऐसी समिति स्थापित करने का सुझाव उपस्थित किया है, जो यह निश्चय करेगी कि देश में कृषि का नियंत्रण कैसे किया जाय अर्थात् खाद्य पदार्थों और व्यापारिक फसलों की दृष्टि से भूमि का नियंत्रण करेगी। आज इस बात की परम आवश्यकता है कि भूमि का प्रत्येक एकड़ उसी फसल के लिए प्रयुक्त हो जिसकी देश को अधिक आवश्यकता हो। लाईसेंस आदि के द्वारा सरकार उद्योगों पर नियंत्रण करती है, जिससे अधिक आवश्यक उद्योग जल्दी स्थापित हों और देश की शक्ति कम आवश्यक उद्योगों में व्यय न हो। इसी तरह कृषि भूमि का भी नियंत्रण होना चाहिए। तम्बाकू और गन्ने की खेती व्यक्ति किसान को लाभकर भले ही हो, किन्तु देश को अधिक आवश्यक वस्तु से वंचित रह जाना पड़ता है। इस लिए यह अनुचित न होगा कि खेती को भी विशुद्ध राष्ट्रीय हित की दृष्टि से नियंत्रित किया जाय।

## एशिया में सबसे बड़ा बिजली घर

प्रति सप्ताह समाचार पत्रों में हम कोई न कोई समाचार ऐसा पढ़ लेते हैं, जिससे मालूम होता है कि हमारा देश अपनी विकास योजनाओं को एक एक करके पूरा करता जा रहा है। अभी १० दिसम्बर को भारत के प्रधान मन्त्री पं० नेहरू ने भाखड़ा के बाएं तट पर बिजली घर का उद्घाटन किया। यह बिजलीघर २०.२२ करोड़ रुपए की लागत से बनाया गया है। यह एशिया में सबसे बड़ा बिजली घर है और संसार के विशालतम १० बिजली घरों में एक गिना जाता है।

इस बिजली घर में ९०-९० हज़ार किलोवाट बिजली की प्रस्थापित क्षमता वाले ५ यूनिट हैं। नव निर्मित इस बिजली घर का भवन अयस्संघायित (रीइनफोर्स्ड) कंक्रीट का बना हुआ है। इसके निर्माण में १,३५,००० घन गज़ कंक्रीट और ६ हजार टन इस्पात लगा है। इसके साथ ही ऐसी व्यवस्था की गई है कि इस पर भूकम्प का भी कोई प्रभाव न पड़े। बिजली घर के निर्माण में लगभग ४० इंजीनियरों और १२०० कुशल एवं अकुशल श्रमिकों ने दिन रात कठोर परिश्रम किया है। इस बिजली घर से बिजली पहुंचाने के लिए २ सब स्टेशन प्रस्थापित किए गए हैं। प्रथम सब स्टेशन द्वारा नया नंगल स्थित विशालतम खाद कारखाने को १,६०,००० किलोवाट बिजली पहुँचाई जाती है। दूसरे सब स्टेशन से, पंजाब ग्रिड, दिल्ली, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश को १,८०,००० किलोवाट बिजली पहुँचाई जायगी। इन सब स्टेशनों में जितनी मोटी तारें लगाई गई हैं, उनका भारत में पहली बार प्रयोग हुआ है। इस बिजली घर के पूर्णतः चालू हो जाने से पंजाब की बिजली की प्रस्थापित क्षमता ६,४०,००० किलोवाट हो जायगी। इससे आशा की जाती है कि तृतीय योजना के अन्त तक ७,४१६ गांवों को बिजली पहुंच जायगी।

भाखड़े के दाएं तट पर भी बिजली के ४ यूनिटों वाला एक बिजली घर बनाने की योजना है। इन में से एक यूनिट का निर्माण कार्य तो आरंभ भी कर दिया गया है। इन यूनिटों की प्रत्येक की प्रस्थापित क्षमता १,२०,००० किलोवाट होगी। अनेक अन्य योजनाएं भी विचारणीय हैं।

इससे यह आशा की जाती है कि वह दिन दूर नहीं, जब पंजाब का प्रत्येक घर बिजली के प्रकाश से जगमगा उठेगा और गांव-गांव तथा नगर-नगर में छोटे और बड़े दोनों ही प्रकार के उद्योगों की चहल पहल शुरू हो जाएगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया विवाद ग्रस्त प्रश्न

# विदेशी तेल और उसका मूल्य

कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

तेल ने संसार के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण भाग अदा किया है। वह संसार की असाधारण घटनाओं का, युद्धों का और संधियों का कारण रहा है और आज भी है। लार्ड कर्जन ने प्रथम महायुद्ध के बाद कहा था कि "मित्र राष्ट्रों ने तेल की लहरों पर तैरकर विजय प्राप्त की है।" दूसरे महायुद्ध में भी तेल का असाधारण महत्व रहा है और आज भी वह महत्व कम नहीं है।

कुछ वर्षों से भारत में भी तेल की समस्या राजनीतिज्ञों, अर्थ-शास्त्रियों, अधिकारियों तथा उद्योगपतियों का ध्यान बराबर खींचती रही है। दूसरी योजना की अवधि में भारत में तेल की खपत ४९ लाख मीट्रिक टन से बढ़कर ७८ लाख मीट्रिक टन हो गई है और तीसरी योजना में यह खपत १२ प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना है। इस लिए यह समस्या अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। यह समस्या क्या है और तेल की बड़ी कम्पनियों और भारत-सरकार में किस प्रश्न पर उग्र मतभेद पैदा हो गया है, इसका थोड़ा-सा परिचय हम इस लेख में पाठकों को देना चाहते हैं।

कुछ मास पूर्व भारत-सरकार ने बर्मा शैल, काल्टैक्स और स्टैण्डर्ड वैक्युम आयल कम्पनियों से तेल के मूल्य-सम्बन्धी प्रश्न पर विचार करने के लिए एक समिति की स्थापना की थी। इसके अध्यक्ष के नाम से यह समिति "दामले-समिति" कहलाती है। इस समिति ने संसार की प्रसिद्ध तेल-कम्पनियों और तेल-उत्पादकों से सम्पर्क स्थापित किया और यह पता लगाने की कोशिश की कि तेल-उत्पादक किस भाव पर कम्पनियों को तेल देते हैं।

तेल दो प्रकार का होता है—एक क्रूड आयल के नाम से प्रसिद्ध है और दूसरा उसको संशोधित करके बनाए गए तेल-जैसे पैट्रोल, कैरोसिन आदि के नाम से। दामले-समिति ने यह मालूम किया कि तेल-उत्पादकों से तेल-कम्पनियों को ८-१० प्रतिशत तक कमीशन मिलता है, इसलिए तेल-कम्पनियां कुछ कम मूल्यों पर भी भारत को तेल दे सकती हैं। भारत-सरकार महंगा तेल क्यों खरीदे? वह तेल कम्पनियों को उचित लाभ देने के बाद भी अपने लिए यदि करोड़ों रुपये की बचत कर सकती है, तो ऐसा

## तेल कम्पनियों का प्रश्न भी सुनिये

जब से तेल के मूल्यों का विवाद छिड़ा है तब से तेल कम्पनियां पाठकों को यह बताने लगी हैं कि वस्तुतः उनको बहुत कम बचत होती है। बम्बई के तेल पम्पों पर एक खुदरा खरीददार को १ रु. का पेट्रोल लेने पर उस का वितरण कैसे होता है—यह स्टेन्डर्ड वेकम कम्पनी ने अपने एक विवरण में बताया है :—

१९ न. पै. तेल के उत्पादक को

८.५ न. पै. तेल के वितरण में

६ न. पै. तेल को बेचने वाले भारतीय व्यापारी को कमीशन

६६.५ न. प. सरकार को विभिन्न टैक्सों के रूप में

इस तरह कम्पनी को एक रुपये के पीछे केवल एक नया पैसा २७ सितम्बर ६१ तक बचता रहा, और इस के बाद उत्पादन व्यय ज्यादा बढ़ गया है जब कि मूल्यों में कोई वृद्धि नहीं हुई है। भारत सरकार का इन अंकोंके बारे में क्या वक्तव्य है—यह इन पंक्तियों लिखने तक उपलब्ध नहीं हुआ है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न करना ही अदूरदर्शिता है।

तेल-कम्पनियों को भी इस पर कोई गम्भीर आपत्ति नहीं हो सकती थी। लेकिन उन्होंने कहा है कि हमें क्रूड आयल पर कमीशन मिलता है और हम वह कुछ सस्ते मूल्य पर दे भी सकते हैं, किन्तु पैट्रोल आदि संशोधित तेलों पर हमें कमीशन नहीं मिलता, इसलिए संशोधित तेल के मूल्यों में कमी नहीं हो सकती। दामले-समिति का विचार यह था कि क्रूड आयल पर कमीशन मिलता है तो संशोधित तेलों पर भी मिलता ही होगा। बर्मा शैल ने यह स्वीकार किया, कि उसे एकाध उत्पादक से थोड़ा बहुत कमीशन मिला है। बर्मा शैल और काल्टैक्स ने कमेटी के सामने वे कागजात भी प्रस्तुत नहीं किए, जिनसे वह यह जान सकें कि वास्तविक उत्पादकों और तेल मुहैया करनेवालों के साथ उनकी क्या त हैं? इसलिए वह किसी निश्चित परिणाम पर न हुंच सकी, किन्तु उसने यह अनुमान अवश्य किया कि जब क्रूड आयल पर कमीशन मिलता है, तो संशोधित तेलों पर भी मिलता होगा।

सरकार द्वारा मांगे गये डिस्काउन्ट का प्रभाव केवल वास्तविक आयात किये गये तेल पर ही नहीं पड़ेगा, किन्तु भारत में निकाले और साफ तेल कीकी दरों पर भी पड़ेगा। तेल कम्पके साथ हुए समझौते में एक धारा यह भी है कि जिस भाव पर आयात-उत्पादन कम्पनियों को मिलते हैं, उसी भाव पर ये बेचे जाने होंगे। इस बारे में कम्पनियों का यह सुझाव है कि उन्हें बेसाफ तेल (क्रूड आयल) अधिक मात्रा में आयात करने की सुविधा दी जाए और इसके साफ करने की प्रक्रिया वे भारत में उन्हें करने दी जाए। कम्पनियों का यह सुझाव बहुत बुरा नहीं है। इससे साफ शुदा तेल-उत्पादनों की आयात कम हो जाएगा, डिस्काउन्ट का झगड़ा भी कुछ कम हो जाएगा और विदेशी मुद्रा में भुगतान करने में कमी आ जाएगी। कम्पनियों को ८ व ९ प्रतिशत डिस्काउन्ट बेसाफ तेल पर मिलता है और मिलता रहेगा। इसलिए अगर बेसाफ तेल का आयात करके और उसे अपने देश में ही साफ कर लिया जाए—बजाय इसके कि साफ शुदा तेल व उसके उत्पादन आयात किये जाएं—इससे विदेशी मुद्रा की बचत जरूर हो जाएगी।

ईंधन-मंत्री श्री केशवदेव मालवीय बहुत योग्यता और दृढ़ता से तेल-कम्पनियों के साथ चर्चा या बातचीत कर रहे हैं। यहां तक कि अनेक व्यक्ति उन पर समाजवाद का भूत चढ़ा होने का आरोप लगाते हैं। उनका कहना है कि मुझे तो कुछ सूत्रों से मालूम हुआ है कि तेल-कम्पनियों को उससे भी अधिक कमीशन मिलता है, जिसका उल्लेख दामले-समिति ने किया है। लेकिन मैं दामले-समिति को एक पंच-निर्णय के रूप में स्वीकार करता हूँ, इसलिए उसकी सिफारिशों में कोई भी कमी-बेशी किए बिना पूर्ण रूप से उन्हें मान लेता हूँ। पाठकों को यह भी मालूम होना चाहिए कि पहले उत्पादक तेल-कम्पनियों को कमीशन नहीं देते थे, किन्तु रूसी तेल बाजार में भारी मात्रा में आने पर उन्हें प्रतिस्पर्धा में आकर कमीशन देने को विवश होना पड़ा। अब भी भारत-सरकार का शायद यही विश्वास है कि संसार के बाजार में प्रतिस्पर्धा का लाभ उठाकर मूल्यों में कमी करने पर आग्रह किया जा सकता है। किन्तु कम्पनियों ने अत्यन्त दृढ़तापूर्वक कमीशन देने से इन्कार कर दिया है, यही कारण है कि समाचारपत्रों में पिछले दिनों तेल सम्बन्धी चर्चा बहुत होती रही।

आगामी दो-तीन महीनों में सारे भारत में चुनाव की चहल-पहल होगी। उम्मीदवारों और राजनीतिक दलों को जीप गाड़ियों, मोटरकारों और हवाई जहाजों का उपयोग बहुत करना पड़ेगा और विपुल मात्रा में तेल का प्रयोग होगा। यद्यपि ईंधन-मंत्री श्री केशवदेव मालवीय ने बहुत दृढ़तापूर्वक तेल कम्पनियों के आगे झुकने से इंकार कर दिया था, तथापि अब अनेक संधि-चर्चाओं के बाद वह इस बात पर राजी हो गए हैं कि अक्तूबर से मार्च तक के पांच महीने वह संशोधित तेलों पर कमीशन देने के लिए कोई आग्रह नहीं करेंगे।

इसी प्रसंग में तेल-कम्पनियों ने एक और प्रस्ताव प्रस्तुत किया, कि उन्हें अधिक मात्रा में विदेशों से क्रूड आयल मंगाने और अपनी रिफाइनरियों (तेल शोधक कारखानों) में साफ करने की अनुमति दी जाए, ताकि अतिरिक्त क्रूड आयल पर मिलनेवाले कमीशन का भी लाभ देश को पहुँचा सकें। ईंधन-मंत्री श्री मालवीय ने

( शेष पृष्ठ ५८० पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सीमेन्ट की नई आवश्यकताएं : उत्पादन लक्ष्य और मूल्य

तीसरी योजना में आयोग ने सीमेंट उत्पादन क्षमता को १८० लाख टन तक करने का सुझाव दिया है और तदनुसार उद्योग मंत्रालय आज की १६३.६ लाख टन क्षमता को बढ़ाने का विचार कर रहा है। इसी दिशा में ए. सी. सी., ए. वी. वी. और के. सी. डी. को विदेशी संस्थानों के सहयोग से सीमेंट मशीनरी बनाने के लाइसेंस मिल भी चुके हैं। जेकोस्लोवेकिया के स्कोडा और प. जर्मनी के क्रप ने भी मशीनरी बनाने में रुचि प्रकट की है। १९५४ तक भारत में सीमेंट मशीनरी बनाने वाले आठ प्लांट बन जायेंगे। टैरिफ बोर्ड कमीशन ने १९५८ में यह आशा प्रकट की थी कि १९६० तक १६ कारखाने सीमेंट उत्पादन की क्षमता बढ़ा लेंगे, और १६ नये कारखाने भी खुल जाएंगे और इस तरह सीमेंट उत्पादन की क्षमता १९५७ में ६४.३ लाख टन से बढ़कर १२५.२ लाख टन हो जायगी, किन्तु उनकी आशा पूर्ण नहीं हुई। केवल १० कारखानों ने उत्पादन क्षमता बढ़ाई और केवल ६ नये कारखाने खुले। यदि अब सभी कारखाने अपने नियत लक्ष्यों के अनुसार उत्पादन करने लगें, तो क्षमता २०.६ लाख टन हो जायगी। नौ कारखानों को अपनी क्षमता बढ़ानी पड़ेगी और ८ नये कारखाने खुल जाने चाहिए। योजना आयोग का अनुमान निम्नलिखित है—

| | उत्पादन क्षमता (लाख टनों में) | उत्पादन क्षमता | कारखानों की संख्या |
|---|---|---|---|
| अप्रैल १९६१ के अन्त में | — | ९५.० | ३४ |
| जून, ६२ तक | ६.३ | १०१.३ | ३७ |
| जून, ६३ तक | ३.६ | १०४.९ | ३९ |
| जून, ६४ तक | १०.७ | ११५.६ | ४२ |
| कुल | २०.६ | — | — |

योजना आयोग ने अनुमान लगाया है कि १९६५-६६ तक १३३.४ लाख टन सीमेंट की मांग हो जायगी और इसके लिए १५२.४ लाख टन की उत्पादन-क्षमता जरूर हो जानी चाहिए। सीमेंट उत्पादक संस्थाओं ने भी अपने-अपने अनुमान लगाये हैं। यह अनुमान परस्पर नहीं मिलते। टैरिफ कमीशन ने १९६४ तक १२८ लाख टन सीमेंट की मांग का अनुमान लगाया है। किन्तु पूर्ण उत्पादन क्षमता का उपयोग नहीं होता, इसलिए १९६४ तक भी मांग से १८ लाख टन सीमेंट कम ही बन सकेगा। इस लिए कमीशन की सम्मति में सीमेंट के नये कारखानों की स्थापना के लाइसेंस दिये जाने चाहिए। सरकार की नीति नये व्यक्तियों को उद्योग में लाने की है, किन्तु कमीशन ने यह सम्मति दी है कि इससे उत्पादन में प्रगति नहीं होगी, इसलिए पुराने अनुभवी व्यक्तियों को भी विस्तार की अनुमति न देने पर बहुत आग्रह नहीं करना चाहिए।*

किन्तु सीमेंट-उत्पादन को बढ़ाने के लिए मूल्यों में वृद्धि द्वारा प्रोत्साहन आवश्यक है, यह समझकर सरकार ने सीमेंट के न्यूनतम मूल्य बढ़ाने की घोषणा की है। इस नई घोषणा से सीमेंट उद्योग की स्थिति पर पाठक का ध्यान अनायास चला गया है। सीमेंट भारत का प्रमुख उद्योग है। इसके वर्तमान ३४ कारखानों की उत्पादनक्षमता ९५ लाख टन है। इस उद्योग में ६२ करोड़ रु० की पूंजी लगी है और ३७३०० कर्मचारियों व श्रमिकों को इस उद्योग से आजीविका मिलती है। इस उद्योग में प्रतिवर्ष ३३ लाख टन कोयले की खपत होती है। भारत का जूट उद्योग जितना कुल उत्पादन करता है, उसका छटा भाग सीमेंट खपा लेता है। इस उद्योग का भविष्य बहुत उज्जवल है। सीमेंट की मांग प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, क्योंकि देश में मकानों, सड़कों, कारखानों तथा छोटे-बड़े बांधों के निर्माण में लगातार वृद्धि हो रही है। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है १९६४ में ११५.६

* ४ दिसम्बर ६१ की एक सूचना के अनुसार सरकार ने ३० कम्पनियों को ५५,०४४८० टन सीमेंट बनाने के लिए कारखाने लगाने का विचार सिद्धान्ततः स्वीकार कर लिया है। — सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाख टन सीमेंट-उत्पादन की क्षमता हो जाएगी। तब पश्चिमी बंगाल को छोड़कर देश में ४२ कारखाने उत्पादन करने लगेंगे, किन्तु उत्पादनक्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं होता, इसलिए ११० लाख टन से अधिक सीमेंट नहीं बन सकेगा। यह उत्पादन संभावित मांग की अपेक्षा २० लाख टन कम होगा। सरकार द्वारा नियत टैरिफ कमीशन ने इस तथ्य को स्वीकार करते हुए ही सरकार से उक्त सिफारिश की है कि इस उद्योग को विस्तार व विकास की सुविधाएं अवश्य मिलनी चाहिए।

लेकिन कमीशन जानता है कि उद्योग को जब तक कुछ लाभ नहीं होगा, वह विकास की ओर प्रवृत्त नहीं होगा। और इसीलिए कारखानों के उत्पादन मूल्य की वृद्धि के लिए अनुकूल सम्मति दी। भिन्न-भिन्न भागों में अपनी-अपनी परिस्थिति के अनुसार उत्पादन-व्यय भी अलग-अलग पड़ता है और क्योंकि सीमेंट के वितरण और मूल्य पर सरकार का पूर्ण नियंत्रण है, इसलिए बाजार में व्यापारिक नियमों के अनुसार मूल्य निर्धारित नहीं हो सकते। यह देखकर टैरिफ कमीशन ने भिन्न-भिन्न स्थानों पर स्थित कारखानों के लिए अलग-अलग मूल्य निर्धारित करने की सिफारिश की थी। मूल्यों का निर्धारण करते समय उसने निम्नलिखित तीन उद्देश्य सामने रखे :—

(१) वर्तमान में चल रहे उद्योगों को अपना उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन मिले।

(२) कम उत्पादन व्यय वाले कारखानों को जहां उत्पादन में प्रोत्साहन मिले, वहां अधिक उत्पादन व्यय वाले कारखानों को भी निरुत्साहित न होना पड़े।

(३) नये उद्योगों की स्थापना हो और कम पूंजीवाले व्यवसायी भी उद्योग में प्रवेश कर सकें।

इन उद्देश्यों को सामने रख कर कमीशन ने जुलाई १९६१ से जून १९६४ तक के लिए विभिन्न कारखानों के लिए कारखाने पर न्यूनतम मूल्य नियत करने की सिफारिश की है। सरकार ने इन सिफारिशों में कुछ परिवर्तन किया है। हम उदाहरण के लिए तीन-चार कारखानों के मूल्य दे रहे हैं:—

## फैक्टरी-मूल्य प्रति टन रुपयों में

| | वर्तमान | कमीशन की नई सिफारिश | सरकार द्वारा घोषित |
|---|---|---|---|
| डालमिया भारत | ५५.५ | ६७.५ | ६९.५ |
| ए. सी. सी. उद्योग | ५९.३ | ७३.५ | ६९.५ |
| आंध्र सीमेंट | ६०.२ | ७३.० | ६९.० |
| यू. पी. सरकारी उद्योग | ६३.२ | ७५.० | ६९.५ |
| दिग्विजय | ६८.२ | ७९.० | ७२.५ |

इन मूल्यों में पैकिंग या बोरी का मूल्य सम्मिलित नहीं है। सीमेंट उद्योग मूल्यवृद्धि के लिए बहुत वर्षों से मांग कर रहा था। उसका कहना था कि पिछले वर्षों में उत्पादन-व्यय बहुत बढ़ गया है, जिसके कारण निम्न-लिखित हैं :—

(१) मजदूरी में वृद्धि, वेतन वृद्धि, प्राविडैण्ट फण्ड, स्वास्थ्य बीमा और अन्य सुविधाओं के कारण व्यय बढ़ गया है।

(२) रेलवे का भाड़ा बहुत बढ़ गया है।

(३) कोयला भी पहले से मंहगा हो गया और पर्याप्त मात्रा में सुलभ भी नहीं है।

(४) खानों में भी मजदूरी बढ़ जाने से चूना व रेत आदि मंहगे हो गए हैं।

(५) बिजली की दर भी बढ़ी है और उस पर कर भी।

(६) फिर स्टाकिस्टों को कमीशन भी देना पड़ता है और कर्मचारियों को ग्रैचुइटी भी।

इससे पहले १९५८ में भी मूल्य निर्धारण करते समय इनमें से अनेक बातों का विचार किया गया था, परन्तु अब उपर्युक्त सभी बातें ध्यान में रखी गई है। टैरिफ कमीशन ने यह भी हिसाब लगाया कि किस उद्योग में पूंजी पर प्रतिशत कितना लाभ होता है और कितना कमाना चाहिए। जिन उद्योगों में उत्पादन-व्यय कम होता है, उन्हें अधिक लाभ की गुंजाइश दी गई है, क्योंकि जो अपनी क्षमता व योग्यता से उत्पादन व्यय कम करते हैं, उन्हें अधिक लाभ देना उचित है। उद्योगों को पुनर्निर्माण पर कितना व्यय करना पड़ेगा, इसका भी ध्यान रखने की कोशिश की गई है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विश्व के सबसे बड़े दस उद्योग

विश्व और भारत में सबसे बड़े उद्योग, जिनका विश्व और भारत की अर्थ-व्यवस्था या आर्थिक प्रगति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, नीचे की तालिका में गिनाये गये हैं।

| नाम कम्पनी | १९५८-५९ के आधार पर विलियन डालर में बिक्री |
|---|---|
| १. जनरल मोटर्स (अमेरिका) (आटो मोबाइल्स) | ११.२ डालर |
| २. स्टेन्डर्ड आयल (अमेरिका) (पेट्रोलियम उत्पादन) | ७.९ डालर |
| ३. फोर्ड मोटर्स (आटोमोबाइल्स) | ५.४ डालर |
| ४. रायल डच शैल (ब्रिटेन, हालैंड) | ५.३ डालर |
| ५. जनरल इलैक्ट्रिक (अमेरिका) (इलैक्ट्रिकल्स) | ४.३ डालर |
| ६. यूनिलेवर (ब्रिटेन-हालैंड) (खाद्यान्न, चर्बी, और तेल, साबुन) | ३.७ डालर |
| ७. यू. एस. स्टील (अमेरिका) (लोहा और इस्पात) | ३.६ डालर |
| ८. सोकोनी मोबिल आयल (अमेरिका) (पैट्रोलियम उत्पादन) | ३.१ डालर |
| ९. गल्फ आयलर (अमेरिका) (पैट्रोलियम उत्पादन) | २.७ डालर |
| १०. टैक्साको (अमेरिका) (पैट्रोलियम उत्पादन) | २.७ डालर |

## भारत के सबसे बड़े दूसरे उद्योग

| | १९५६-५७ के आधार पर करोड़ रुपयों में |
|---|---|
| १. टाटा आयरन एण्ड स्टील (लोहा और इस्पात) | ५१ |
| २. इम्पीरियल टुबेको कं० आफ इंडिया (तम्बाकू) | ३२ |
| ३. इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कं० (लोहा और इस्पात) | ३१ |
| ४. दिल्ली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्ज़ (कपड़ा, रासायनिक और चीनी) | २८ |
| ५. हिन्तुस्थान लिविर (तेल, रासायनिक, साबुन) | २८ |
| ६. राली इण्डिया (मशीनरी) | २६ |
| ७. स्टेण्डर्ड वेकम रिफाइनिंग कम्पनी (पैट्रोल उत्पादन) | २४ |
| ८. एसोशिएटेड सीमेंट कम्पनी | २३ |
| ९. टाटा लोको मोटिव्स एंड इंजिनीयरिंग कम्पनी (इंजिन इंजिनीयरिंग) | २२ |
| १०. प्रीमियर आटोमोबाइल्ज़ (आटोमोबाइल्ज) | १८ |

विश्व के सबसे बड़े पूंजीपतियों में ७४ अमेरिकी कम्पनियां, १२ ब्रिटिश कम्पनियां, ८ जर्मन कम्पनियां, २ फ्रेंच कम्पनियां और एक स्विटजरलैंड, हालैंड, इटली और जापान—प्रत्येक की है।

## सरकार की घोषणा

लेकिन सरकार ने टैरिफ कमीशन की सब सिफारिशों को ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं कर लिया। उसमें जुलाई १९६१ की अपेक्षा १ नवम्बर ६१ से लक्ष कमीशन की सिफारिशों से कम मूल्य घोषित किये हैं। भिन्न-भिन्न कारखानों के मूल्य में कमी भी अलग-अलग की गई। किसी उद्योग पर ३.५० रु० तो, किसी पर ४, ५.५०, ६ या ८ रुपए प्रतिटन की कमी की गई है। टैरिफ कमीशन की सिफारिशों में इस कदर कमी की घोषणा से सीमेंट उद्योग में असंतोष फैल गया है। उसका कहना है कि सरकार ने अपने विशेषज्ञों द्वारा तय किए गए उत्पादन व्यय को भी स्वीकार करने से इंकार किया है तो इसका उचित निर्णय कैसे होगा किन्तु सरकार ने दो बातों को अपने सामने रखा है। एक तो यह कि सीमेंट के मूल्यों में अधिक वृद्धि का प्रभाव देश और नागरिकों को तथा निर्माण कार्यों पर प्रतिकूल पड़ेगा। दूसरे यह कि उत्पादन व्यय में अंतर का स्थायी प्रभाव मूल्यों में अन्तर नहीं होना चाहिए। सब कारखानों को जल्दी से जल्दी उत्पादन व्यय कम करने का प्रयत्न करना चाहिए अन्यथा उन्हें लाभ भी कम होना चाहिए। उत्पादन व्यय में वृद्धि का भार ग्राहक पर बहुत नहीं पड़ना चाहिए। नये मूल्यों में पैकिंग, रेल भाड़ा, स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन आदि के भारी व्यय भी जोड़ दिए जाएं, तो ग्राहक को केवल ६५ नये पैसे का फर्क पड़ेगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# देश में अमीर दिन-दिन अमीर हो रहे हैं !

ले० विद्यासागर पाँडे

भारत का लक्ष्य समाजवादी ढांचे का समाज कायम करना और समाज कल्याण है, पर वास्तविक स्थिति यह है कि इन योजनाओं के बावजूद विषमता कम नहीं हो रही वह बढ़ती जाती है। इस सम्बन्ध में नीचे के आंकड़े अपनी बात स्वयं कहते हैं :—

(अ) कृषि (पशु) बन तथा मछली व्यवसाय में प्रति १००० व्यक्तियों में से जहां भारत में ७०६ व्यक्ति निर्भर हैं, वहां अमेरिका में १२८ व्यक्ति और ब्रिटेन में केवल ५९ व्यक्ति निर्भर हैं।

दूसरी ओर उद्योगों, खानों तथा वाणिज्य में प्रति १००० व्यक्तियों में से जहां भारत में केवल १५३ व्यक्ति निर्भर हैं, वहां अमेरिका में ४५६ व्यक्ति और ब्रिटेन में ५५५ व्यक्ति निर्भर हैं।

(आ) तीसरी योजना में सर्व प्रथम प्राथमिकता तो कहने को कृषि को प्राप्त है, परन्तु योजनाओं के कुल खर्च का प्रतिशत अध्ययन विपरीत-सी स्थिति दर्शाता है—

| | प्रथम योजना में प्रतिशत | द्वितीय योजना में प्रतिशत | तृतीय योजना में प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| कृषि एवं सामूहिक विकास में | १७.५ | ११.८ | ८.६ |
| उद्योगों में | ८.४ | १८.५ | २०.७ |

(इ) तीनों योजनाओं के व्यय से यह स्पष्ट हो जायगा कि उद्योगों, यातायात, संदेश-वाहन तथा बिजली के साधनों के लिए कुल खर्च में से—प्रथम योजना का एक-तिहाई, द्वितीय योजना का आधा और तीसरी का दो तिहाई लगा है।

(ई) उद्योगों में पूंजी का विनियोजन

(१) जहां सैकड़ों वर्षों में भारतीय व विदेशी उद्योगपतियों ने सन् १९५० तक सिर्फ ७९९ करोड़ रुपयों की पूंजी लगायी थी, वहां तृतीय योजना के अन्त तक सिर्फ १५ वर्षों में ५५५० करोड़ रुपयों का विनियोजन हो जायेगा।

(२) सरकारी और निजी क्षेत्र की दृष्टि से योजनाओं में विनियोजन निम्न प्रकार करने का विधान है :—

| | प्रथम योजना में | द्वितीय योजना में | तृतीय योजना में |
|---|---|---|---|
| | करोड़ रु० में | | |
| सरकारी क्षेत्र में | करीब ६० | ७२० | ११५० |
| निजी क्षेत्र में | करीब ३३० | ८५० | १३०० |

(३) जबकि श्री मनुभाई शाह के अनुसार ग्रामीण उद्योगीकरण के लिए तीसरी योजना में केवल १३ अरब में से दो अरब रुपयों का अतिरिक्त व्यय करने का आश्वासन प्राप्त हुआ है।

## परिणाम

हमारी योजनाओं के खर्च का नतीजा और समाजवादी समाज-स्थापना की दिशाएं सही हैं या गलत, इन्हें निम्न आंकड़ों की पृष्ठ-भूमि से समझ लेना चाहिए :

रिजर्व बैंक ने १९५५ में जमा सम्बन्धी जो आंकड़े प्रस्तुत किये हैं, वे अमीरों को अधिक अमीर करने की दिशा का ही निर्देशन देते हैं :

( सन् १९४९ से सन् १९५५ तक के आंकड़े )

| वर्ग | खातों की संख्या वृद्धि : हजारों में | अतिरिक्त जमा वृद्धि (करोड़ रुपयों में) | औसत वृद्धि प्रति खाता रुपयों में |
|---|---|---|---|
| ५०० रु. से नीचे जमा रखने वाला (साधारण वर्ग) | १२,५०० | २ | १६० |
| ५०० से १०,००० रु. जमा रखने वाला (मध्य वर्ग) | १३,७०० | ३८ | २,७८० |
| १०,००० रुपयों से ऊपर जमा रखने वाला (अमीरवर्ग) | २,१०० | ९७ | ४६,१९० |

ऊपर दी गई तालिका से स्पष्ट होता है कि भारत में विषमता बढ़ रही है और अमीर अधिक अमीर हो रहे हैं !

—(भूदान यज्ञ से)

* डा० सक्सेना : भारत की आर्थिक समस्याएं, पृ. ११०



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कृषि का आर्थिक पहलू

श्री आर० एम० श्रीवास्तव

भारत की आर्थिक व्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान हैं। पहली दो योजनाओं द्वारा यद्यपि कृषि-उत्पादन बढ़ा है पर इस सारे कार्यक्रम में कृषि के आर्थिक पहलू पर जितना जोर दिया जाना चाहिए था, उतना नहीं दिया गया। हमारा अधिक जोर भौतिक लक्ष्यों पर ही है। इसी कारण कृषि उत्पादन काफी नहीं बढ़ सका है। जब हम आर्थिक पहलू की बात कहते हैं तो हमारा अभिप्राय भूमि, श्रम पूँजी और संगठन से होता है। ये सब आर्थिक प्रवृत्तियाँ ऐसी हैं, जिन पर ध्यान केन्द्रित करने से, निश्चय ही, उत्पादन बढ़ सकता है। जब हम कृषि-उत्पादन की वृद्धि की बात कहते हैं, तो उसका मतलब यही होता है कि इन सारे अंगों का अथवा इनमें से कुछ का अच्छी प्रकार विकास किया जाए।

आर्थिक उत्पादन शक्ति के स्वरूप को प्रकट करने के लिए यह देखना होगा कि समूचे साधनों की दृष्टि से उसका क्या अनुपात है, अर्थात् भूमि, श्रम, पूँजी और संगठन, की दृष्टि से भूमि में प्रति एकड़, प्रति फार्म मालिक, पूँजी की प्रति इकाई इत्यादि के रूप में। उन इलाकों में जहां फालतू ज़मीन मिल सकती है, वहाँ विस्तृत खेती करके फी आदमी उत्पादन बढ़ सकता है। भारत जैसे देश में जहाँ भूमि पर दबाव ज्यादा है, वहाँ फी एकड़ उत्पादन बढ़ाने की ज्यादा जरूरत है पर छोटे पैमाने पर खेती होने से इसकी संभावनाएं कम होती है। अच्छा हो, अगर इनमें से कुछ जमीनों को खेती से अतिरिक्त के काम में लाया जाए। जमीन पर पूँजी लगाने की भी गुंजाइश कम है। महंगी मशीनें तथा अन्य उपकरणों का प्रयोग भी संभव नहीं है, क्योंकि छोटे किसानों के पास इस काम के लिए पूँजी की कमी है। मौजूदा हालात के खेतों को बड़े आकार में लाना तो संभव नहीं है पर उसमें बढ़िया बीज, उर्वरक, सिंचाई, संगठन और काम में लगी पूंजी की संभाल—इन साधनों द्वारा उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। भारत जैसे घनी आबादी के देश के लिए उपज बढ़ाने का अल्पकालीन उपाय इससे बेहतर नहीं हो सकता।

उपज बढ़ाने के लिए नये और सुधरे साधनों की जांच और खोज-पड़ताल होते रहनी चाहिए। फिर, इनका प्रचार होना चाहिए, अर्थात् प्रदर्शन, क्रियात्मक प्रयोग इत्यादि के द्वारा किसानों की दृष्टि में इन सबको लाना चाहिए, और इसके बाद संगठन, अर्थात जब किसान के दिल में इन नये साधनों को अपनाने की प्रबल भावना हो और वह इसके लिए निश्चय कर ले तब ऐसा संगठन उसके सम्मुख उपस्थित होना चाहिए, जिसके द्वारा वह अपने निश्चय को कार्यान्वित कर सके। उदाहरण के लिए, अगर वह बढ़िया बीज व उर्वरक प्रयोग में लाने का निश्चय करता है, तब ठीक समय पर सन्तोषजनक मात्रा में और अच्छी स्थिति में उसको सब चीजें मिल सकें—इसके लिए एक दृढ़ संगठन होना चाहिए, जिसका रुख विकास के प्रति सहानुभूतिपूर्ण और तत्परता का हो। काम करने व उर्वरकों के प्रयोग के ढंग के बारे में तकनीकी जानकारी भी उसके लिए सुलभ हो। इन सब बातों का आपस में गहरा और निकट सम्बन्ध है तथा ये एक दूसरे पर आश्रित है।

शिक्षा प्रचार और संगठन एक दूसरे पर प्रभाव डालते हैं। प्रचार का काम जितना अधिक मजबूत होगा, उतनी ही विकास की भावना प्रबल और दृढ़ होगी। किसान के दिल में जब तक दृढ़ विश्वास नहीं जम जाएगा, तब तक केवल प्रेरणा व प्रलोभन से पैदा किया गया उत्साह अधिक दिन तक नहीं ठहरता है। जब किसान का दृढ़ निश्चय हो जाएगा ऐसे स्वेच्छा संगठन व सरकारी एजेंसियां ठोस रूप में आ जाएंगी जिनके द्वारा विकास के ये निश्चय पूरे हो सकेंगे। इसलिए, सबसे पहला काम प्रबल इच्छा का पैदा करना है। इस प्रकार संगठनों का प्रादुर्भाव होगा और ये संगठन बलशाली होंगे।

सरकार की वर्तमान कृषि नीति में इस आर्थिक पहलू पर पर्याप्त जोर नहीं दिया जा रहा है। इस समय तो सरकारी नीति का एक ही लक्ष्य है कि उपज बढ़े, पर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रोजगार की जटिल समस्या

श्री गुलजारी लाल नंदा

श्रम तथा रोजगार के सम्बन्ध में हमारे सामने जो कठिनाइयां हैं, वे हमारी अर्थ-व्यवस्था के तेजी से विकसित होने से ही हल हो सकती हैं। अर्थ-व्यवस्था को सुधारने के लिए हमें जनसंख्या की वृद्धि को थामना, बचत को बढ़ाना और योजनाओं तथा आम आर्थिक हित के कामों में कुशलता दिखाना होगा। ऐसा होने पर भी ऐसे हर आदमी को काम मिल सकेगा, जो काम करना चाहता है और हर देशवासी की आम जरूरतें पूरी हो सकेंगी। पिछले दस वर्षों में हमारे देश में रोजगार बहुत बढ़ा है। यह ठीक है कि अब तक की सारी कोशिशें देश की रोजगार की सारी जरूरत के लिए काफी नहीं है। इसलिए हमारी आयोजित अर्थ-व्यवस्था का एक बड़ा लक्ष्य रोजगार बढ़ाने का है।

किसी भी अर्थ-व्यवस्था में रोजगार की उत्पत्ति उस व्यवस्था के विकास और उन्नति की कसौटी है। पहली पंचवर्षीय योजना में हमने आयोजित विकास की ओर पहला कदम बढ़ाया और सरकारी तथा गैरसरकारी क्षेत्र में ३२ अरब रुपया लगाया। अनुमान है कि इससे ५५ से ६० लाख व्यक्तियों को काम मिला होगा। दूसरी योजना में ६७ अरब रु० लगाया गया, जिससे ८० लाख नये लोगों को काम मिलने का अनुमान है। इन आंकड़ों से यह अनुमान हो सकता है कि रोजगार बढ़ाने के लिए कितना व्यापक प्रयत्न किया जा रहा है।

## जनसंख्या में तीव्र वृद्धि

पिछले दस वर्षों में इस वृद्धि से हमारी कठिनाइयां भी बढ़ी हैं।

पिछले दस वर्षों के अनुभव से इन दस वर्षों में जनसंख्या में प्रतिवर्ष १.२५ प्रतिशत वृद्धि होने का हिसाब लगाया गया था यानी हर वर्ष ४५ लाख की वृद्धि आंकी गयी थी। इसलिए हमारी योजनाओं में दस वर्षों में दस वर्षों में १ करोड़ ८० लाख लोगों को रोजगार देने की व्यवस्था की गयी। लेकिन १९६०-१९६१ की जन-गणना से पता चला कि वृद्धि १.२५ प्रतिशत वार्षिक की बजाय २.१ प्रतिशत वार्षिक की हो रही है। इसलिए इन दस वर्षों में २ करोड़ २० लाख आबादी बढ़ी। दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त में हमारे देश में लगभग ९० लाख बेकार बचे हैं।

इन बचे हुए ९० लाख लोगों और नये काम करने वालो को तीसरी पंचवर्षीय योजना में काम देने की व्यवस्था करनी होगी। नये काम चाहते वालों की संख्या १ करोड़ ७० लाख होगी। इन संख्याओं से अन्दाज लग सकता है कि देश की तेजी से बढ़ती हुई आबादी के कारण रोजगार का प्रश्न कितना जटिल हो गया है।

---

उसके आर्थिक प्रभाव क्या होते हैं—इसका कोई विचार नहीं किया जाता। यह समझना भूल है कि केवल तकनीकी उत्कृष्टता ही काफी है। किसान को जिस चीज की जरूरत है, वह तो आर्थिक उत्कृष्टता है। इसके लिए बीज डालने से लेकर फसल कट कर बिक जाने तक—सब अंगों को एक सूत्र में आबद्ध करना होगा और एक-एक अंग की दृष्टि से नहीं किन्तु समूचे रूप में विचार करना होगा। ब्रिटेन और अमेरिका की तुलना में हम इस आर्थिक पहलू के क्षेत्र में बहुत पीछे हैं।

विस्तार के सम्बन्ध में यह ध्यान रखना चाहिए कि यह प्रक्रिया है, अर्थात् गवेषणा केन्द्र से प्राप्त ज्ञान का विस्तार खेत तक और खेत के अनुभव का विस्तार गवेषणा केन्द्र तक। जैसे, सुधरे बीज के पौधे को पकने के लिए ज्यादा समय लगता है। इससे किसान की दूसरी व तीसरी फसल पर असर पड़ता है। अगर अनाज घटिया हुआ व स्वाद में अच्छा न हुआ, या चारा ऊंचे ढंग का न हुआ तो इसका प्रभाव कीमतों पर पड़ता है।

प्रखंड, जिला, प्रदेश और केन्द्र इन विभिन्न स्तरों पर कृषि-विशेषज्ञों की तो भरमार है पर, आश्चर्य है, इनमें किसी स्तर पर भी कृषि अर्थशास्त्री का कोई स्थान नहीं है। परिणामतः प्रखंड स्तर पर अधिकारी आर्थिक स्तर पर अपने प्रोग्राम को पूरा नहीं कर पाते, अर्थात् किसान को यह नहीं बता सकते कि उनके प्रोग्रामों की आर्थिक योग्यता क्या है। इस आर्थिक योग्यता की उत्कट आकांक्षा किसान में पैदा करना यही असली काम है, जिसकी इस समय बड़ी कमी है।

(२४ नवम्बर ६१ के "ईस्टर्न इकानामिस्ट" के एक लेख के आधार पर)।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# युग की चुनौती

सर पाल गोर बूथ (ब्रिटेन के भारत स्थित उच्चायुक्त)

## आर्थिक अस्थिरता और अनिश्चितता का समाधान कैसे हो ?

विचार और तर्क की दृष्टि से आज के युग की चुनौती का विभाजन कई प्रकार से किया जा सकता है। आज की सर्वप्रथम वैज्ञानिक चुनौती है, क्योंकि मानव इतिहास के केवल २०० वर्षों में विज्ञान द्वारा विश्व में कल्पनातीत परिवर्तन हो गया है। यह चुनौती बहुत बड़ी है। उसके बाद आर्थिक चुनौती है। महान औद्योगिक कृषि तथा वैज्ञानिक उपलब्धियों से अच्छी और अधिक वस्तुओं का उत्पादन करने में मनुष्य सफल हुआ है, साथ ही उसने ऐसे यंत्र भी बनाये हैं जिनसे और भी अच्छी तथा अधिक परिमाण में वस्तुओं का उत्पादन किया जा सकता है।

तीसरी चुनौती है सामाजिक चुनौती। यह सामाजिक चेतना तथा सामाजिक अन्तर चेतना की चुनौती है—यह चेतना कि मानवता का विभाजन कुछ थोड़े से सौभाग्यशालियों और अधिकांशतः दुर्भाग्यग्रस्त व्यक्तियों में न हो, जिसमें अल्पसंख्यक सौभाग्यशालियों की प्रभुता स्थापित हो और बहुसंख्यक लोगों को अभावों में ही सन्तोष करना पड़े। अन्त में राजनीतिक चुनौती है, जिसमें विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं का संघर्ष हो रहा है और इस कारण हमारे सामने मानवता की यह चुनौती उपस्थित हो जाती है कि मनुष्य का उद्देश्य और भाग्य क्या है ?

### वैज्ञानिक चुनौती

सर्वप्रथम हम वैज्ञानिक चुनौती पर विचार करें। इस सम्बन्ध में साधारणतः औद्योगिक क्रांति, यातायात के साधनों की क्रांति तथा निर्माण और विनाश के साधनों की क्रांति का, जिसे मनुष्य ने हाल में ही विकसित किया है, उल्लेख बड़ी सरलता से किया जा सकता है। अनेक तरह की वैज्ञानिक उपलब्धियां की जा चुकी हैं—इण्टरनल कमक्शन इंजन, टेलीग्राफ, टेलीफोन, वायुयान, लोहमय बड़े बड़े दानव आदि। यह सब कुछ इतनी तेज गति से हुआ है कि बुद्धि चकरा जाती है और उसमें कोई कमी भी नहीं दिखाई देती। यदि मनुष्य के पास रुपये और साधन हो तो वह अब ४ हजार मील प्रति घन्टा की रफ्तार से यात्रा कर सकता है। सबसे आश्चर्यजनक प्रगति आणविक शक्ति है। सभी लोग यह जानते हैं कि अंग्रेजी 'एटम' मूलतः यूनानी शब्द है, जिसका अर्थ होता है ऐसी वस्तु जो विभाजित न की जा सके। सचमुच ५०-६० वर्ष पूर्व यह विश्वास किया जाता था कि एटम (अणु) स्थूल वस्तु का सबसे छोटा भाग है। पर अब परमाणुओं के भी विभाजन और उनमें घर्षण शक्ति उत्पन्न करने की संभावनाओं ने मनुष्य को एकाएक अविश्वसनीय सर्जनात्मक तथा विनाशक शक्ति से लैस कर दिया। आज के राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन की पृष्ठभूमि में यही अणु विद्यमान है।

विज्ञान की इस अविश्वसनीय प्रगति ने मनुष्य की बुद्धि पर प्रहार किया है और कुछ हद तक उसकी नैतिकता को भी असन्तुलित कर दिया है। हमने प्रकृति पर यह अविश्वसनीय विजय प्राप्त कर ली है और यदि बहुत सरल ढंग से कहा जाय तो हम अभी यह नहीं समझ पाये हैं कि इसका उपयोग किस प्रकार करें। जहां निर्माण कार्यों में इसका उपयोग होने लगा है, वहां इसके विपरीत यह वैज्ञानिक शक्ति उन विध्वंसक प्रवृत्तियों के हाथों में छोड़ दी जा सकती है, जिन्होंने मानव इतिहास को समय-समय पर विकृत कर दिया है। मनुष्य मात्र की विज्ञान की पहली चुनौती इस विषय पर विचार करना है कि बुद्धि को चकरा देने वाले आविष्कारों की गति से क्या किया जाय, जिससे उसका उपयोग जनता के लाभ में हो सके।

### आर्थिक चुनौती

जैसे हम विज्ञान के विकास के सम्बन्ध में कुछ मोटी बातें जानते हैं, उसी प्रकार अर्थशास्त्रीय नियमों के बारे में भी आज का सामान्य ज्ञान उस समय से कहीं अधिक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, जब आज से २०० वर्ष से भी कम समय पूर्व ऐडम स्थिम ने अर्थशास्त्र का वैज्ञानिक अध्ययन प्रारम्भ किया था। आज हम मांग और पूर्ति, पूंजी की आवश्यकता आदि के बारे में काफी जानते हैं। आप चाहे पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में विश्वास रखते हैं या कम्युनिस्ट अर्थतंत्र में पूंजी अपरिहार्य है। हम जानते हैं कि यदि पूंजी को बनाये रखना है तो आय में से बचत आवश्यक है। हम यह भी जानते हैं कि वस्तुओं के विनिमय के लिए किसी-न-किसी प्रकार का मूल्य निर्धारण भी आवश्यक है चाहे वह मूल्य निर्धारण उत्पादन की लागत को ध्यान में रखकर किया जाय अथवा मनमाना दाम रख दिया जाय, पर हर हालत में वस्तुओं का मूल्य रखना जरूरी है।

कोई भी सरकार जनता को रोजगार देने और विकास को प्रोत्साहन देने तथा अर्थव्यवस्था के किसी विशेष क्षेत्र में केन्द्रित रखने में क्या कर सकती है, यह भी हम भली भांति जानते हैं। पिछली पीढ़ी के दौरान में विश्व के सभी देशों की सरकारों ने उपयुक्त कदम उठाने की पहले से कहीं अधिक इच्छा दिखायी है।

लेकिन यह एक बिडम्बना ही है कि इस सम्पूर्ण ज्ञान और गत १५० वर्षों में उत्पादन तथा समृद्धि में अभूतपूर्व वृद्धि होने के बावजूद विश्व में आर्थिक अनिश्चितता और विषमता बहुत अधिक है। अतः चुनौती इसी बात की है कि इस अनिश्चितता के स्थान पर निश्चितता की स्थिति लायी जाय।

## ब्रिटेन में आर्थिक चुनौती

ब्रिटेन में हम इस आर्थिक चुनौती का सामना दो तरह से कर रहे हैं। पहला अपने देश में और दूसरा विदेशों में। पहले को बड़ी सरलता से 'ब्रिटिश क्रांति' कहा जा सकता है। इस क्रांति में कोई नारेबाजी या सामूहिक विद्वेष इत्यादि जैसी बातें नहीं है, इसलिए यह सम्भवतः लोगों का ध्यान कम आकर्षित करती है, फिर भी इसमें बहुत-सी मूल-भूत बातें हैं। वह हमारे समाज द्वारा किया जा रहा एक सचेत प्रयत्न है, जिसका उद्देश्य अपने सभी नागरिकों को २० वीं शताब्दी की सभी शान्तिकालिक सुविधाओं का उचित भाग देना है। यह ऊपर से कोई बड़ी क्रान्तिकारी बात नहीं लगती, किन्तु वस्तुतः इससे देश के सामाजिक और आर्थिक ढांचे का काफी हद तक पुनर्गठन हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति को अस्थिरता और विषमता से काफी छूट दिलवाने के लिए ब्रिटिश सरकार तक को अपने देश की व्यवस्था और व्यापार-वाणिज्य में हस्तक्षेप करना पड़ा है।

जहां तक एक साधारण व्यक्ति का सम्बन्ध है, आर्थिक अस्थिरता रोजगार और मूल्य के उतार-चढ़ाव की है। सीधे-साधे शब्दों में इसे इस तरह कहा जा सकता है कि कोई व्यक्ति एकाएक बेकार हो जा सकता है जबकि उस बेकार होने में उसकी कोई गलती नहीं है, या पदार्थों मूल्यों में इतनी वृद्धि हो जा सकती है कि उसकी क्रय शक्ति मूल्यों के मुकाबले बहुत कम हो जाय। इन उतार-चढ़ावों पर नियन्त्रण करने के लिए दुनिया की सभी सरकारें प्रयास कर रही है और इसमें कम या अधिक सफलता भी मिल रही है। दुर्भाग्यवश अधिकांश देशों का यह अनुभव है कि मूल्यों और अपने यहां की जनता को काम में लगाये रहने में स्थिरता लाना साधारणतः असम्भव-सा है।

## दुविधा

यह केवल ऐसी ही शर्तों पर सम्भव है जो हमें मान्य नहीं है यानी कम्युनिस्ट अर्थ-तंत्र की व्यवस्था। हमने ब्रिटेन में अनेक वर्षों तक इस दोहरी समस्या को हल करने की कोशिश की है और मैं यह नहीं कहता कि हमने इस पर पूरी तरह विजय प्राप्त कर ली है। हमने जनता को रोजगार देने का प्रतिशत ऊंचा रखने में काफी हद तक सफलता प्राप्त की है, पर इसका मूल्य यह चुकाना पड़ा है कि मूल्यों में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही है। इसे हम 'उछलती मूल्य वृद्धि' कहते हैं। कठिनाई यह है कि यदि आप सभी लोगों को रोजगार देते हैं तो आप मूल्य वृद्धि और अदायगी के सन्तुलन में संकट लाने का खतरा उठाते हैं, और यदि आप मूल्यों को स्थिर रखने की कोशिश करते हैं तो बेकारी का खतरा मोल लेते है। इस समस्या के समाधान का कोई तरीका अभी तक किसी ने बिना व्यक्तिगत आर्थिक स्वतन्त्रता समाप्त किये नहीं ढूंढ़ा है, किन्तु अधिकांश देशों को यह तरीका, यानी कम्युनिस्ट तरीका, मान्य नहीं है।

फिर भी बिटेन में साधनसम्पन्नों और साधनहीनों

(शेष पृष्ट ५८८ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत में विदेशी पूँजी का सहयोग और प्रभाव

३० जून १९४८ को, भारत में कुल विदेशी पूंजी ३२०४ मिलियन रुपये थी, जो इस समय रुपये की चालू मुद्रा विनिमय दर के हिसाब से ५९६० मिलियन रु० है। भारत में लगी पूंजी में ब्रिटेन का ७२%, अमेरिका का ५.६% और अन्य देशों का २२.४% अंश था। इस पूंजी के विनियोजन के बारे में रिजर्व बैंक की रिपोर्ट इस प्रकार है— ६८.३% व्यापार में और २५.५% उत्पादन के क्षेत्र में विदेशी पूंजी का विनियोग हो रहा है।

१९४९-५१ में विदेशी पूंजी में ३००.१ मिलियन रुपयों की वृद्धि हुई। इसमें ब्रिटेन का स्थान पहला था, ८१.६% अमेरिका का दूसरा १०.७% और अन्य देशों का हिस्सा था ७.७%।

## भारतीयों में असन्तोष

पहली योजना के आरम्भकाल में अर्थात् १९५१ में, प्रमुख स्थान ब्रिटेन का था, अर्थात् तेल उद्योग में ९७%, रबड़ उद्योग में ९३% रेलों के सामान के उत्पादन में ९०%, जूट उद्योग में ८९% और चाय बागान में ८३%। मैनेजिंग एजेन्सियों द्वारा विदेशी पूंजी देश में काम करती थी। हमारे भारतीय थोक व्यापारी इन मैनेजिंग एजेन्सियों पर निर्भर करते थे और इन्हीं एजेन्सियों को बिचौलिया बनाकर ही माल खरीद व बेच सकते थे। साजो सामान और औद्योगिक चीजों का बहुत सारा हिस्सा इन्हीं बिचौलिया एजेन्सियों द्वारा ही विदेश से प्राप्त होता था। विदेशी प्रभुत्व की इन मैनेजिंग एजेन्सियों और ब्रिटिश एकाधिकार ने भारतीयों के हृदय में रोष व क्षोभ की भावना पैदा कर दी।

१९५५ में रिजर्व बैंक की रिपोर्ट में ३१ दिसम्बर, १९५५ तक की स्थिति दी गयी और १९५४ और १९५५ में जो परिवर्तन हुए, उनका ब्यौरा दिया। इसके अनुसार ३१ दिसम्बर १९५५ को विदेशी पूंजी विनियोग, अधिकतः निजी, ४८०६ मिलियन रु० था, जिसमें ब्रिटेन का हिस्सा १९४८ के ७२% से बढ़कर ८१.५% प्रतिशत हो गया था। ब्रिटिश पूंजी, अधिकतर, पुराने परम्परागत ढंग पर लगायी गयी थी, जिसमें ब्रिटिश पूंजी लगाने वाले और भारतीय व्यापारी थे। अमेरिकी पूंजी ३० जून, १९४८ को १७९.६ मिलियन रु० से बढ़ कर ३१ दिसम्बर, १९५५ को ४१६ मिलियन रु० हो गयी।

भारत में विदेशी पूंजी का विनियोग किस प्रकार है— इसके आंकड़े "ईस्टर्न इकोनोमिस्ट" ने २३ जून, १९६१ के अंक में इस प्रकार दिये हैं :—

| | जून १९४८ | मिलियन रु० वर्ष के अन्त में | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | १९५३ | १९५५ | १९५६ | १९५७ | १९५८ | १९५९ |
| १. बागान | ५२२ | ७१५ | ८७२ | ८७९ | ८६६ | ९६० | ९५१ |
| २. खनिज | १५५ | ८४ | ९६ | १०८ | ९८ | १२४ | १३० |
| ३. मिट्टी का तेल | २२३ | ७७१ | १०४० | ११६४ | १३४१ | ११८४ | १२०७ |
| ४. औद्योगिक उत्पादन | ७०७ | १२४१ | १३१८ | १४७६ | १८४० | २१८६ | २५०७ |
| ५. सेवाएं | ९९१ | ११०९ | १२३५ | १३०३ | १२८५ | १२७२ | १३१२ |
| योग | २५५८ | ३९२० | ४५६१ | ४९३० | ५४३० | ५७२६ | ६१०७ |

इस तालिका से यह साफ जाहिर हो जाता है कि विदेशी पूंजी विनियोग में कोई बाधा नहीं डाली गई, विशेषतः, मिट्टी के तेल और इससे सम्बद्ध ईंधनों की पहुँचायी, सफायी इत्यादि और बिक्री में। यह भी उल्लेखनीय है कि औद्योगिक उत्पादन में पूंजी विनियोग की विशेष बढ़ोतरी हुई है।

## विदेशी ऋण व पूंजी से लाभ ?

हमें यह जानना चाहिए कि विदेशी राष्ट्रों द्वारा भारत में पूंजी विनियोग अथवा भारत को



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## विदेशी कम्पनियों को लाभ (मिलियान रुपयों में)

| | १९५६ | | | १९५७ | | | १९५८ | | | १९५९ | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | कुल लाभ | भारत में बांटा गया लाभ | बाहर भेजा गया लाभ | कुल लाभ | भारत में बांटा गया लाभ | बाहर भेजा गया लाभ | कुल लाभ | भारत में बांटा गया लाभ | बाहर भेजा गया लाभ | कुल लाभ | भारत में बांटा गया लाभ | बाहर भेजा गया लाभ |
| मिट्टी का तेल | १६६ | ६९ | ९७ | १२५ | ७१ | ५४ | ११० | ५४ | ५६ | १०६ | ४५ | ६१ |
| औद्योगिक उत्पादन | १२४ | ६८ | ५३ | १०७ | ६९ | ३८ | १२९ | ७८ | ५१ | १६१ | ९० | ७१ |
| बागान | १०७ | ९० | १७ | ५३ | ६८ | १५ | ४९ | ६३ | १४ | ५७ | ४८ | ९ |
| विविध | ७० | ४५ | २५ | ६६ | ४८ | १८ | ६४ | ५९ | ५ | ६० | ५० | १ |
| योग | ४६७ | २७२ | १९५ | ३५१ | २५६ | ९५ | ३५२ | २५४ | ९८ | ३८४ | २३३ | १५१ |

ऋण देना महज़ किसी परोपकार की भावना से नहीं होता। उनको स्वयं भी लाभ होता है, भले ही इससे भारत को भी औद्योगिक विकास में सहायता मिल जाय। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाएगी। अमेरिका ने भारत को कुल १ हजार मिलियन डालर से ज्यादा की सहायता दी है। इसमें, आधे से अधिक "गेहूँ का ऋण" तथा अन्य फालतू फार्म की उपज हैं। यह तो निःसन्देह है कि अमेरिका ने इसमें लाभ ही उठाया है क्योंकि इससे फालतू अन्न और उपज से उसे छुटकारा मिल गया। पर जब भारत से फालतू चीनी को लेने का सवाल आया, तब लम्बी बात-चीत के बाद भी अमेरिका का रुख बहुत संतोषजनक नहीं था। इसके अतिरिक्त, अमेरिका की यह भी शर्त है कि भारत ७०% मशीनरी इत्यादि सामान एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट बैंक द्वारा अमेरिका से ही खरीदे। इसका नतीजा यह है कि हमें अन्य देशों से सस्ता मिलने वाला सामान भी अमेरिका से खरीदना पड़ता है।

इन विदेशी कम्पनियों को जिनके दफ्तर भारत से बाहर हैं, कितना लाभ होता है यह ऊपर की ईस्टर्न इकानामिक्स (२९ जून १९६१) में दी गई तालिका से स्पष्ट हो जाएगा।

विदेशी पूंजी का स्वागत करते हुए भी उस पर अधिक कड़ा नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। इस विषय में निरन्तर सावधान रहते हुए तनिक ढील देना भी भारत की राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से हानिकर हो सकता है।


अहिंसक समाज रचना की मासिक

**खादी पत्रिका**

- खादी ग्रामोद्योग तथा सर्वोदय विचार पर विद्वत्तापूर्ण रचनाएं।
- खादी ग्रामोद्योग आन्दोलन की देशव्यापी जानकारी।
- कविता, लघुकथा, मील के पत्थर, साहित्य-समीक्षा, संस्था परिचय।
- सांख्यिकी पृष्ठ आदि स्थायी स्तम्भ।
- आकर्षक मुखपृष्ठ : हाथ कागज पर छपाई।

संपादक

ध्वजाप्रसाद साहू

जवाहिरलाल जैन

वार्षिक मूल्य ३) रु०, एक प्रति पच्चीस नये पैसे

राजस्थान खादी संघ पो० खादीबाग (जयपुर)




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अधिकोष निक्षेप बीमा योजना

प्रो० पूरनचन्द रावत । ( इंशुरेन्स आफ बैंक डिपोज़िट्स )

आधुनिक अर्थव्यवस्था में बैंकों का महत्व असाधारण है । वे जनता के अतिरिक्त धन को गति प्रदान करते हैं, साख पत्रों एवं चलन को संगठित करते हैं और राशि स्थानान्तरण की सुविधा प्रदान कर औद्योगिक और व्यापारिक कार्यों में उसे विनियोजित करते हैं । सुरक्षा के साधनों को प्रोत्साहित कर जनता में बचत की आदत निर्माण करते व पूंजी निर्माण को प्रोत्साहन देते हैं । राजकीय अर्थ प्रबंधन में भी बैंकों का बहुत महत्व है । वास्तव में वे मौद्रिक सौर मंडल के सूर्य के समान हैं । संतुलित आर्थिक विकास के लिए उनका महत्व किसी से छिपा नहीं है ।

बैंकों के प्रति विश्वास सम्पादन के लिए जो डिपाज़िट बीमा कानून संसद ने स्वीकृत किया है, उसका संक्षिप्त परिचय इस लेख में पढ़िये ।

सारी बैंकिंग व्यवस्था अंग्रेजी के चार M. पर निर्भर है "Men's money manager's mind" अर्थात् जनता का रुपया कितनी कुशलता और विवेक के साथ विनियोग किया जाता है, इसी बात पर बैंकों की प्रगति निर्भर रहती है । बैंक में जो रुपया आता है, उसी में से बैंकों को अपना खर्च निकाल कर और जमा कर्त्ताओं को ब्याज देकर लाभ कमाना पड़ता है । अतः "विभिन्न स्रोतों में रुपया कैसे और कितना विनियोग किया जाय" इस बात का विवेकपूर्ण निर्णय बैंकों की सफलता का निर्देशक है । बैंकों को कई तरफ से रुपया प्राप्त होता है, जैसे अंशों और ऋण पत्रों के निर्गमन द्वारा, जनता से ऋण लेकर या जमा के रूप में । बैंक विभिन्न वर्गों की मनोवृत्ति को ध्यान में रखते हुए अपने पास चल लेखे, स्थायी निक्षेप और बचत लेखे द्वारा राशि आकर्षित करते हैं और "Don't keep the eggs in the same basket" वाले सिद्धांत पर चलकर लाभ कमाते हैं ।

## जमा राशि बढ़ रही है

यहां एक बात बताना आवश्यक है कि बैंक जन विश्वास पर ही कार्य करते हैं, जैसे ही विश्वास हटता है, वैसे बैंकों पर विपत्ति टूट पड़ती है और लोग अपना रुपया बैंकों से निकालना प्रारंभ कर देते हैं । भारतीय बैंकिंग के इतिहास में सन् १९१३-१७ का संकट उदाहरण स्वरूप है । एक बैंक डूबने से अन्य मजबूत बैंकों पर कठिनाई आ जाती है, क्योंकि बैंकिंग ढांचे की तुलना एक ताश के मकान से की गई है । यदि एक ताश अलग कर दिया जाय तो सारा महल ढह जाता है । भारत में जुलाई १९६० में पलाई बैंक और लक्ष्मी बैंक के फेल हो जाने से चारों ओर अनिश्चितता का वातावरण छा गया है और लोगों का विश्वास बैंकों पर से कम होता जा रहा है । यदि यही हाल रहा तो हमारी पंचवर्षीय योजनाएं निष्क्रिय हो जायंगी । अतः चारों ओर से जमा कर्त्ताओं की सुरक्षा के लिए मांग की जा रही है । जमा राशि का महत्व भारत में बढ़ता ही जा रहा है, जो कि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है:—

| सन् | करोड़ रुपया |
|---|---|
| १९५५ | ९९३.६ |
| १९५६ | १०७४.८ |
| १९५७ | १३४७.६ |
| १९५८ | १५४१.३ |
| १९६० | १८३०.६ |

उपर्युक्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि राष्ट्रीय बचत का अधिकांश भाग बैंक आकर्षित कर लेते हैं । सन् १९५०-५१ में कुल बचत का २.६१ प्रतिशत भाग बैंकों ने आकर्षित किया था, जबकि १९६०-६१ में यही ३० प्रतिशत हो गया । बैंकों का राष्ट्रीय महत्व भी बढ़ता जा रहा है । सन् १९५०-५१ में सूचीबद्ध बैंकों के कुल निक्षेप राष्ट्रीय आय का ९.३ प्रतिशत थे जबकि १९६० में यह १५ प्रतिशत हो



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। अन्य देशों की तुलना में यह बहुत कम है। अन्य देशों में राष्ट्रीय आय का निम्नलिखित प्रतिशत बैंक निक्षेप के रूप में होता है:—

भारत—१५ प्रतिशत
अमेरिका—४२.२५ प्रतिशत
ब्रिटेन—३२.१२ प्रतिशत
जर्मनी—३६.३० प्रतिशत
जापान—६०.८० प्रतिशत

भारत में अधिकोषण विकास के लिए बहुत क्षेत्र है। तृतीय पंचवर्षीय योजना में छोटे उद्योगों, संगठित उद्योगों और खनिज उद्योगों पर २९९५ करोड़ रुपया व्यय होगा। अतः रिजर्व बैंक के एक अनुमान के अनुसार व्यापारिक बैंकों का कार्यभार दुगना हो जायगा अर्थात् निक्षेप की मात्रा ३३८८ करोड़ हो जायगी। यदि जनता की इस पसीने की कमाई की सुरक्षा नहीं होती, तो पूंजी निर्माण मंद पड़ जायगा और अर्थव्यवस्था अस्तव्यस्त हो जायगी। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए जमा राशि के बीमा की मांग की जा रही है।

## बैंकों का बीमा

अमेरिका में सर्वप्रथम यह योजना प्रथम महायुद्ध के बाद मंदी में प्रारंभ हुई। वहां एक Federal Deposit Insurance Corporation की स्थापना की गई जो सदस्य बैंकों पर प्रतिवर्ष १ प्रतिशत का $\frac{1}{12}$ की दर से प्रीमियम लेता है। प्रति निक्षेप अधिकतम १०,००० डालर का होना चाहिए। भारत की भांति अमेरिका में भी बैंक फेल होते आए हैं। अतः संसद में पारित बीमा योजना से तीन लाभ होंगे। पहला जनता में विश्वास की भावना बढ़ती है, दूसरा बैंकों के फेल होने पर भी मुद्रा प्रसार होता रहे और तीसरा बैंकों की स्थिति में सुधार और जनता के हल्ले को रोकना।

आज से ग्यारह वर्ष पूर्व ग्रामीण अधिकोषण जांच समिति (सभापति पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास) ने जमा बीमा योजना की सिफारिश की थी। उसके तीन वर्ष पश्चात श्राफ कमेटी ने भी इसकी सिफारिश की। लेकिन कुछ बड़े बैंकों ने इसका विरोध किया और यह तर्क रखा कि अच्छे बैंकों के लिए बीमा उपयोगी नहीं है। यह तो निम्नकोटि के बैंकों को सहारा देना है। इससे बैंकों पर आर्थिक भार बढ़ेगा परन्तु ये सभी तर्क गलत हैं। वास्तव में जमा बीमा द्वारा थोड़े से खर्च में जमा कर्त्ताओं का विश्वास सम्पादन किया जा सकता है। इससे देश में बैंकों का संगठित विकास होगा।

## लोक सभा में विधेयक

सौभाग्य से ३१ अगस्त १९६१ को लोक सभा में एक जमा राशि बीमा कारपोरेशन बिल रखा गया जिसे वित्तमंत्री श्री देसाई ने पेश किया। इसके अनुसार एक "जमा बीमा प्रमंडल" की स्थापना १ करोड़ रुपये की पूंजी से की जायगी, जो सब सरकारी होगी। इसका प्रधान कार्यालय बम्बई में होगा। प्रमंडल सरकारी जमा को छोड़ कर सभी व्यापारिक बैंकों और स्टेट बैंक की जमा राशि का बीमा करेगा। प्रति जमा की अधिकतम रकम १५०० रुपया होगी परन्तु इसमें केन्द्रीय सरकार की अनुमति से परिवर्तन हो सकेगा। प्रीमियम की अधिकतम दर १५ नये पैसे प्रति १०० रुपया वार्षिक होगी। प्रीमियम न दे सकने पर उस पर ८ प्रतिशत ब्याज भी लगाया जायगा। प्रमंडल स्थापना के ३० दिन के अंदर प्रत्येक बैंक को अपना पंजीयन इसके साथ कराना होगा। नवम्बर ६१ में यह विधेयक संसद ने स्वीकार कर लिया।

प्रमंडल का प्रबंध एक संचालक सभा करेगी जिसमें निम्नलिखित व्यक्ति होंगे:—

१. सभापति (रिजर्व बैंक का गवर्नर)
१. रिजर्व बैंक का डिप्टी गवर्नर
१. केन्द्रीय सरकार का आफीसर
२. अन्य व्यक्ति जिन्हें वित्त का अनुभव हो (चुनाव केन्द्रीय सरकार करेगी)

इसके अतिरिक्त कानून में रुपया भुगतान की पद्धति, आदि का भी वर्णन है। प्रमंडल में २ फंड बनाए जायगें। (१) जमा बीमा फंड (२) सामान्य फंड। पहले फंड का उपयोग जमा राशि के दायित्व का भुगतान करने में होगा। अन्य रुपया सामान्य फंड में जमा होगा। प्रमंडल को बीमा शुदा बैंकों पर बहुत अधिकार हैं। वह किसी भी समय सूचना मांग सकता है और जांच करवा सकता है। गलत

( शेष पृष्ठ ५९० पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान में क्रान्तिकारी भूमिसुधार

श्री ए० ए० खेरी

मार्च, १९४९ में राजस्थान के एकीकरण के पश्चात् राज्य सरकार को जिस प्रमुख समस्या का सामना करना पड़ा वह राज्य और काश्तकार के बीच की कड़ी के उन्मूलन की समस्या थी। सारे राजस्थान के दृष्टि से देखा जाय तो समस्या की विशालता इस तथ्य से ही प्रमाणित हो सकती है कि राजस्थान के संपूर्ण क्षेत्रफल के ६० प्रतिशत से अधिक भाग में जागीरदारी प्रथा प्रचलित थी और लगभग ५००० गांवों में जागीरदारी अथवा विस्वेदारी का आधिपत्य था। अधिकांश जागीरदारी गांवों में, जहां बन्दोवस्त लागू नहीं हुआ था, किसान अपने अधिकारों के नियमित रेकार्ड के अभाव में पीड़ित थे और भूस्वामियों द्वारा किसानों के अधिकारों में किये जा रहे हस्तक्षेपों के विरुद्ध कोई संरक्षण नहीं था। जागीरदार ज़मींदार थे, जो चाहते, किसान से लगान वसूल करते और जब चाहते, येदखल कर देते थे।

इस आशंका से कि काश्तकारों को कानूनी अधिकार सौपे जाने के कानून पास किये जा रहे हैं, जागीरदारों और ज़मीरदारों ने अपने किसानों को उनकी जमीनों से निरंकुशता पूर्वक वेदखल करना शुरू कर दिया। भारी संख्या में होने वाली इन वेदखलियों को रोकने के उद्देश्य से राजस्थान सरकार ने जून, १९४९ में राजस्थान (कृषकों का संरक्षण) अध्यादेश, १९४९ जारी किया। संपूर्ण राजस्थान के काश्तकारों ने इस अध्यादेश से जिसके द्वारा उन्हें पूर्ण संरक्षण की सुविधा दी गयी थी, पूरा-पूरा लाभ उठाया और बहुत सी बेदखल की गई जमीनें वापस भी ले लीं।

जून, १९५१ में राजस्थान उपज भाटक नियमन अधिनियम, १९५१ के द्वारा उपज का अधिकतम भाग सकल उपज का १/६ तक निश्चित कर दिया गया, जो जागीरदार व जमीदार ले सकते थे।

जमींदारों और विस्वेदारों द्वारा किसानों से अत्यधिक नकद लगान वसूली को राजस्थान कृषि भाटक नियंत्रण अधिनियम, १९५२ से रोक दिया गया। इस अधिनियम ने जमींदारों द्वारा किसानों से वसूल किये जाने वाले नकद लगान को सीमित कर दिया। अधिनियम के अनुसार यह राशि निर्धारित भू राजस्व के दुगुने से अधिक नहीं हो सकती।

## जागीर-पुनर्ग्रहण

राजस्थान भूमि सुधार एवं जागीर पुनर्ग्रहण अधिनियम, यद्यपि १९५२, में बन गया किन्तु कई कारणों से जागीरों के पुनर्ग्रहण की वास्तविक कार्यवाही जून, १९५४ में आरम्भ हुई। समस्त गैर-धार्मिक जागीरें तथा १००० रु० तक वार्षिक आय की धार्मिक जागीरों का अब पुनर्ग्रहण किया जा चुका है। इस से कम आय वाली धार्मिक जागीरों का पुनर्ग्रहण किया जाना शेष है। जागीरदारों को, जिन्हें पुनः संस्थापन अनुदान भी स्वीकृत हो चुका है, उनकी जागीरों का मुआवजा देय है। मुआवजा और पुनः संस्थापन अनुदान बिनिमेय बांडों के रूप में १५ वार्षिक किश्तों में देय है। ये वांड पुनर्ग्रहण की तिथि से २॥ प्रतिशत वार्षिक ब्याज सहित हैं। मुआवजे की संपूर्ण राशि जो चुकायी जाने को है, लगभग ४५ करोड़ रु० के आसपास बनेगी। इसमें अंतरिम मुआवजे अथवा अंतिम मुआवजे की किश्तों के रूप में १० करोड़ रु. पहले ही चुकाये जाचुके हैं।

राजस्थान जमींदारी व विस्वेदारी उन्मूलन अधिनियम १९५९ के द्वारा बन्दोबस्त शुदा और गैर-बन्दोवस्त शुदा जमींदारी या विस्वेदारी जायदादों का, जिनकी संख्या करीब ३,२४,५८७ तक आ पहुंची है, अब उन्मूलन किया जा चुका है। जमीदारों व बिस्वेदारों के मुआवजे की यह राशि लगभग ८ करोड़ रु० तक पहुँचने की आशा है।

## राजस्थान काश्तकारी अधिनियम, १९५५

अक्टूबर, १९५५ से पूर्व १९ एकीकृत रियासतों में से प्रत्येक में अपना काश्तकारी कानून था। राजस्थान काश्तकारी कानून, १५ अक्टूबर १९५५ से प्रभाव



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लाया गया। छोटे काश्तकारों या खुदकाश्त जमींनों के काश्तकारों के अलावा प्रत्येक व्यक्ति, जो काश्तकार था, खातेदार काश्तकार बन गया। खुदकाश्त करने वाले काश्तकारों तथा शिकमी काश्तकारों को भी उनके द्वारा जमींन के मालिक को मुआवजा दे देने पर खातेदारी अधिकार दे दिये गये हैं। सभी काश्तकारों को विरासत संबंधी अधिकार दिये गये हैं। कोई भी खातेदार काश्तकार अपनी इच्छानुसार विरासत कर सकता है। खातेदार किसानों को अपनी जमीन को बेचने अथवा भेंट करने का हक है, किन्तु यदि ऐसे व्यक्ति को हस्तान्तरण किया जाय जिसके पास ३० एकड़ सिंचित अथवा ९० एकड़ असिंचित भूमि हो तो इसके लिए उसे सरकार से पूर्व अनुमति प्राप्त करनी होगी।

इस प्रतिबंध का उद्देश्य धनवान तथा खेती पर अनुपस्थित रहने वाले जमींदारों के अधिकार में अधिक भूमि के संग्रह को रोकना है। खातेदार काश्तकार अपनी जमींन को १० साल तक के लिए भोग बंधक रूप से रहन रख सकता है, और भी कुछ नियंत्रण व प्रतिबंध लगाये गये हैं। नबालिग, पागल, विधवा, अन्य अपंग व्यक्ति तथा प्रतिरक्षा सेवाओं के व्यक्तियों को इस प्रतिबंध से मुक्त रखा गया है। मेड़ों पर तथा सुधार के लिए भी अधिकार दिये गये हैं। लगान की बकाया रकमें जमा न करने अथवा शर्त तोड़ने या हानिकारक कृत्य को छोड़कर काश्तकारी अधिनियम में काश्तकारों की भोगावधि सुरक्षित है, तथा उन्हें बेदखली से संरक्षण दिया गया है। काश्तकारों को उस गांव की आबादी में जहां उसका कृषिस्वामित्व है अपने निवास के मकान के लिए स्थान मुफ्त रखने का अधिकार दिया गया है।

## ग्राम पंचायतें और भूमिसुधार

ग्राम पंचायतों को गश्त गिरदावरी का काम सौंपा गया है। ग्राम पंचायतों को संघर्षपूर्ण तथा असंघर्षित मामलों में दाखिल खारिज मंजूर करने के भी अधिकार दिये गये हैं। पंचायत क्षेत्रों में समस्त सरकारी स्वमित्व की आबादी को तथा संपूर्ण समुचित रूप से सीमांकित चरागाहों की भूमि को ग्रामपंचायतों के सुपुर्द कर दिया गया है।

आचार्य विनोबा भावे द्वारा आरम्भ किये गये भूदान यज्ञ की गतिविधियों को सुविधापूर्ण बनाने के लिए १९५४ में एक पृथक् अधिनियम पास किया गया। राजस्थान भूदान बोर्ड ने जनवरी, १९५५ से कार्य करना प्रारम्भ किया और बोर्ड ने अबतक ४,३३,३२३ एकड़ भूमि भूदान में तथा २३३ गांव ग्रामदान में प्राप्त किये हैं। तदन्तर्गत बोर्ड ने ९५,००५ एकड़ जमींने ११,६२९ भूमि रहित परिवारों में बांटी है।

भारत में जमींनों के छोटे छोटे टुकड़ों की गंभीर समस्या है। जोतों की चकबन्दी और इस तरह के छोटे-छोटे टुकड़े होने से रोकने के लिए एक पृथक् अधिनियम पास किया गया और एकत्रीकरण कार्य तेजी से प्रगति कर रहा है। ५८५ गांवों में १८,२७,७७० एकड़ भूमि की चकबन्दी की जा चुकी है।

राजस्थान काश्तकार अधिनियम, १९५५ के उपकारों (लागबाग) पर प्रतिबंध संबंधी प्रावधान के अतिरिक्त सभी उपकरों की समाप्ति के लिए अलग से कानून पास किये गये। राजस्थान सरकार (सहकारी समितियों को भूमि आवंटन) नियम, १९५९ को प्रचारित कर सहकारी कृषि को प्रोत्साहन दिया गया है। इस नियम के अधीन भूमि रहित व्यक्तियों की सहकारी समिति को दखल रहित सरकारी भूमि निःशुल्क दी गयी है।

## कृषिभूमि के स्वामित्व का सीमानिर्धारण

हदबन्दी से संबंधित कानून पास किया जा चुका है। कानून के अंतर्गत ५ या पांच से कम सदस्यों के परिवार के लिए अधिकतम ३० स्टैण्डर्ड एकड़ क्षेत्र रहेगा। स्टैण्डर्ड एकड़ से अभिप्राय जमींन के ऐसे क्षेत्र से है, जो प्रतिवर्ष संभवतः १० मन गेहूँ अथवा इसके समान मूल्य की अन्य उपज पैदा करता हो। हदबन्दी कानून को पराजित करने के उद्देश्य से किये गये समर्पणों को मान्यता नहीं दी जायगी, उच्चतम सीमा से अधिक भूमि को राज्य सरकार के अर्पण करना होगा जिसके लिए मुआवजा दिया जायेगा। समर्पित जमींनों को भूमि रहित तथा अन्य व्यक्तियों को नियमों में बतायी गयी शर्तों और प्रतिबंधों के साथ खेती करने के लिए दिया जायेगा।

( शेष पृष्ठ ५९० पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ-वृत चयन

## १९६१ में उत्पादन के रुख

औद्योगिक उत्पादन के हाल के रुखों से पता चलता है कि १९६१ में वृद्धि की जो गति है वह तुलना में, १९६० से धीमी है। १९५० के निर्देशक अंक को औद्योगिक उत्पादन का आधार मानकर १९५९ वर्ष का सूचक अंक १५१.९ से बढ़कर १९६० में १७०.३ हो गया, अर्थात् १२.१%। १९६१ के पहले ५ मास का औसतन सूचक अंक १८४.१ हैं जो ८.२% वृद्धि का निर्देशक है जबकि इसके मुकाबले में १९६० के पहले पांच मास की वृद्धि ८.९% थी। कुछ नये उद्योगों की वृद्धि की गति भी मन्द हो गयी है, जैसे, रबड़ का उत्पादन १९५९ में २०६.७ से बढ़कर १९६० में २३६.७ हो गया था पर १९६१ की जनवरी-मई की अवधि में केवल २४४.६, अर्थात, ८ अंश ही बढ़ा है। इस कमी का प्रभाव, प्रायः, उन उद्योगों पर पड़ा है जो आयात किये गये कच्चे माल पर निर्भर करते हैं। इस कमी को बढ़ाने में जो अन्य कारण सहायक हैं, वे हैं, यातायात में अवरोध और कोयला, बिजली इत्यादि की कमी। इस सम्बन्ध में विशेष उल्लेखनीय यह हैं कि १९६१ के पहले आधे वर्ष में कुछ उद्योगों का उत्पादन इसी अवधि के १९६० के स्तर से कम है। नीचे की तालिका से यह स्पट हो जाता है :—

| उद्योग | इकाई | १९६० (जन. जून.) | १९६० (जन. जून.) | १९६१ (जन. जून.) |
|---|---|---|---|---|
| १. मोटर साइकिल | संख्या | ३९९६ | १९३३ | १८७१ |
| २. अलूमिनियम | टन | १८१७६ | ९०५५ | ८७४८ |
| ३. तांबा | टन | ८८५० | ४३७३ | ४०७३ |
| ४. सिक्का | टन | ३७१८ | १८३८ | १७६३ |
| ५. प्लाईवुड | लाख | | | |
| चाय चेस्ट | वर्ग फुट | १०४२ | ५८८ | ४६८ |
| ६. सूती धागा | मिलियन पौंड | १७३७ | ८४१ | ७५४ |
| ७. जूट का | | | | |
| बना सामान | ,००० टन | १०६८ | ५३६ | ४७५ |

## शोम्बे का मुख्य आधार—"यूनियन "मिनियेर'

"कांगों के बारे में सुरक्षा परिषद में हो रही बहस एक ओर संयुक्त राष्ट्रसंघ तथा दूसरी ओर प्राइवेट औद्योगिक साम्राज्य की शक्ति परीक्षा है। यह विशाल औद्योगिक साम्राज्य "यूनियन मिनियेर" है, जो बेलजियम की एक प्राइवेट खान-खदान कम्पनी है और पृथक्वादी प्रान्त कटंगा में जिसके बेशुमार मुनाफे विद्रोही प्रेसीडेंट शोम्बे की वित्तीय सहायता के मुख्य आधार हैं। कटंगा के मुख्यतः कोबाल्ट, तांबा, सीसा, यूरानियम, जस्ता, सुवर्ण और मेंगनीज का भारी मात्रा में उत्पादन ९८०,०००,००० डालर मूल्य का होता है।" ये शब्द हैं न्यूयार्क पोस्ट के संवाददाता थियोडोर कगान के, जिसने कांगों की स्थिति तथा सुरक्षा परिषद् में इसके सम्बन्ध में हो रही बहस के बारे में अपने विचार उपर्युक्त शब्दों में व्यक्त किये हैं।

"क्रिश्चियन सायंस मोनीटर" का संवाददाता विलियम फ्राई लिखता है कि तांबा, कोबाल्ट तथा अन्य खानों का मूल्य करोड़ों क्या अरबों डालर तक जाता है। फ्राई लिखता है कि कटंगा की खानों के मालिक और शेयर होल्डर जो राष्ट्रीयकरण से मौत की तरह डरते हैं, कंगोलियों के अपने देश को ऐक्यबद्ध करने के प्रयासों को विफल करने के लिए सब कुछ करने को तैयार हैं। इसका कारण है कोबाल्ट, यूरानियम, सोना, लाखों का मुनाफा। न्यूयार्क पोस्ट का संवाददाता स्मिथ हैम्पस्टोन लिखता है कि यह तथ्य बना हुआ है कि बेलजियम कार्पोरेशन की जानकारी के बिना, और जैसा कि नियम है, उसकी स्वीकृति के बिना कटंगा में कुछ नहीं होता। "यूनियन मिनियेर" में ब्रिटेन और अमरीका के वित्तपतियों के काफी हित हैं। (राकफेलर ने भी वहां कुछ धन लगा रखा है।)

रोगर्स "न्यूयार्क हेरल्ड ट्रिब्यून" में लिखता है कि अब "यूनियन मिनियेर" "स्वतंत्र जगत्" में उत्पादित कोबाल्ट का ६० प्रतिशत देता है, जो उद्जन बम के निर्माण का कच्चा माल है। हमें अपने राकेटों के लिए जेरमानियम की जरूरत है और "यूनियन मिनियेर" यह धातु देता है।

भीमकाय आक्टोपस (आठ पैरों के जन्तु) की भांति "यूनियर मिनियेर" अफ्रीका देश को जकड़े हुए हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## दिल्ली से पैरिस तक रेलगाड़ी

मास्को से पेकिंग जाने वाली ट्रांस साइबीरियन एक्सप्रेस रेलगाड़ी ७ दिन में ५ हजार मील तय करती है। कुछ वैज्ञानिक दिल्ली को पैरिस से रेलगाड़ी द्वारा मिलाने का विचार कर रहे हैं। यह दूरी करीब ६ हजार मील है, जो ९ दिन में पूरी की जाएगी। इन ९ दिनों में वह समय भी शामिल है जो भिन्न-भिन्न देशों की सीमाओं पर तटकर व चुंगी देने में लगेगा। यह रेल यात्रा समुद्री यात्रा से भी सस्ती पड़ेगी। इस मार्ग में अभी तक टर्की और ईरान में तीन ऐसे भाग हैं, जहां रेलवे लाइन नहीं बनी है। इन प्रदेशों में रेलवे लाइन बिछाने के बाद यह नयी रेलगाड़ी दिल्ली, अमृतसर, लाहौर, क्वेटा, ज़हीदन, काशान, तेहरान, जोला, मुस, अंकारा, बेलग्रेड, बुखारिस्ट, बूडापेस्ट, और वियना से होती हुई पैरिस पहुँचेगी। अनुमान यह है कि यदि कोई नयी बाधा खड़ी न हो तो इस लाइन के बनाने में ५ साल लगेंगे। इस मार्ग के बनने पर यूरुप और भारत का परस्पर व्यापार और यातायात बहुत बढ़ जाएगा।

## लघु उद्योग किसे कहते हैं ?

भारत सरकार लघु उद्योगों की उन्नति के बारे में बहुत जोर देती है, पर लघु उद्योगों की परिभा क्या है, यह सरकार के निम्नलिखित शब्दों से पता चलता है :

"लघु उद्योग उसे कहते हैं जिसमें जमीन, इमारत, मशीनों और साज-सामान आदि पर ५ लाख रु० तक की पूँजी लगी हो। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जिन उद्योगों में १० लाख रु० तक की पूँजी लगी हो, उन्हें भी लघु उद्योगों के सहायक के रूप में सहायता मिल सकती है।"

यह अनुमान है कि संसार में प्रत्येक २४ घण्टों में हर ६० सेकेण्ड बाद २ हजार पृष्ठों का—इसमें पुस्तकें, समाचार-पत्र और रिपोर्टें शामिल रहती हैं—प्रकाशन होता है। यदि एक व्यक्ति एक वर्ष तक अपना सारा समय केवल प्रकाशित सामग्री को पढ़ने पर ही लगा दे तो वह १,०५,१२,००,००० पृष्ठ पीछे रह जायेगा। जैसे-जैसे संसार का स्वरूप अधिकाधिक जटिल होता जाता है, प्रकाशित साहित्य की विषय-वस्तु के सम्बन्ध में लोगों का ज्ञान बराबर पीछे पड़ता जा रहा है।

लेकिन सं० रा० अमेरिका में आविष्कृत नया विद्युदणु मस्तिष्क 'आई० एस० आर० एल०' एक वर्ष की अवधि में प्रकाशित समस्त टैक्निकल सामग्री को कुछ ही घण्टे में पढ़ सकता है और किसी भी प्रश्न का, चाहे वह सामान्य हो या विशिष्ट, सरल हो या क्लिष्ट तुरत-फुरत बिल्कुल सही उत्तर दे सकता है।

## विद्युदणु मस्तिष्क

यदि इस विद्युदणु मस्तिष्क से यह प्रश्न पूछा जाए कि अभी हाल में मस्तिष्क कैंसर की शल्प-चिकित्सा के बारे में क्या साहित्य प्रकाशित हुआ है, तो प्रश्न पूछने के बाद कुछ ही मिनिटों में यह विद्युदणु-मस्तिष्क उस समस्त साहित्य का विवरण छाप कर आपके समक्ष प्रस्तुत कर देगा जो पिछले दो सप्ताहों में पिछले वर्ष, अथवा किसी विशिष्ट अवधि में इस विषय पर प्रकाशित हुआ हो। यह विद्युदणु मस्तिष्क टैक्निकल लेखों, सरकारी रिपोर्टों के सूचीबद्ध उद्धरणों की १ लाख प्रति- घण्टे की गति से खोज कर सकता है। एक ही समय पर यह यन्त्र १० सर्वथा भिन्न प्रश्नों के उत्तर दे सकता है।

लेकिन, इस जटिल विद्युदणु मशीन को चलाने के लिए अब भी मनुष्यों की आवश्यकता पड़ती है। इस विद्युदणु यन्त्र पर कार्य करने वाले ५० विशेषज्ञों को सम्बन्धित विषय पर विश्व में प्रकाशित हुए समस्त साहित्य की जानकारी होनी चाहिए। लेखों का विश्लेषण ऐसे वैज्ञानिकों द्वारा किया जाना चाहिए, जिन्हें विषय-सामग्री के साथ-साथ उस भाषा की भी जानकारी होनी चाहिए जिसमें वह प्रकाशित हुए हों। इसके अलावा दो प्रकार के 'डाइजेस्ट' अवश्य तैयार किए जाने चाहिए—एक तो सामान्य अंग्रेजी भाषा में और दूसरा उस सांकेतिक शब्दावली में जो विद्युदणु मस्तिष्क में इस्तेमाल की जाती हो।

इस बात की बहुत आशा है कि इस विद्युदणु मस्तिष्क के आविष्कार से खर्च में काफी बचत होने की सम्भावना है। यही नहीं, वैज्ञानिकों को अनुसंधान के क्षेत्र में दोहरा प्रयत्न करने से मुक्ति मिल जाएगी। 'आई० एस० आर० एस० एल०' नामक यह विद्युदणु यन्त्र किसी भी विषय के किसी भी विशिष्ट अंग के बारे में नवीनतम जानकारी, उसके

( शेष पृष्ठ ५७८ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रूस और भारत की विकास योजनाएं

श्री कृष्णानन्द राय

पहली तीन योजनाओं में रूस एक ओर लोहे, ताँबे, अलमुनियम, जिंक विद्युत, शस्त्र, रसायन एवं मशीनों में जहां यूरोप के समुन्नत राष्ट्रों के समकक्ष पहुँच गया, जूता, कपड़ा, चीनी और खाद्य पदार्थों में १/६ के स्तर पर भी नहीं पहुँच सका और प्रति व्यक्ति एक जूता प्रति वर्ष भी इस आवश्यक वस्तु का उत्पादन न हो सका। रूस की आर्थिक योजनाएँ जनता के त्याग, कमियों, पीड़न तथा आँसुओं के बीच विकसित और सफल हुई हैं और रूस की निरंकुश राजनीतिक व्यवस्था जनता से बलपूर्वक इतना बड़ा त्याग और तपस्या लेने में सफल हो सकी है।

भारत की लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था भारत में लोकतान्त्रिक आर्थिक आयोजन पर प्रयोग कर रही है और यदि इसमें वह सफल हुई तो जनता पर बिना क्रूर उत्पीड़न किये हुए आर्थिक आयोजनों का क्रम विश्व में चल जायगा और यह विश्व-इतिहास को एक बड़ी देन होगी। जनता का स्वेच्छया सहयोग और त्याग ही केवल इस लोकतांत्रिक आयोजन को सफल बना सकता है।

रूसी नीति के बिलकुल विपरीत भारत की प्रथम पंचवर्षीय योजना देश में उद्योगीकरण की नींव डालने के लिए नहीं निर्मित हुई वरन् उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए बनी। प्रथम योजना का ध्येय देश में चल रहे उद्योगों को संगठित करना और उनमें नवीनता लाना था। स्मरण रहे कि १९५०-५१ में भारत के उद्योग जनोपयोगी अथवा उपभोक्ता उद्योग थे। कपड़ा, चीनी, चमड़ा और जूट सम्बन्धी उद्योगों को संगटित करना और उनमें आये युद्ध-कालीन ह्रास को समाप्त करने का ध्येय जनता की आवश्यक वस्तुओं की कमी को पूरा करना था। ये उद्योग भी अधिकांशतः निजी क्षेत्र में थे। भूमि संगठन का आधार कृषकों का स्वामित्व माना गया। अन्न की कमी को दृष्टि में रख कर प्रथम योजना में अन्न-उत्पादन और कृषि का विकास प्रमुख रखा गया। इस प्रकार योजना का ध्येय कृषकों, कारीगरों, कारखानों के स्वामियों को आर्थिक एवं नियोजित सहायता देकर उनकी स्थिति में सुधार करना था और उत्पादन को प्रोत्साहन देकर द्वितीय महायुद्धकालीन आर्थिक विषमताओं को सम करना तथा बढ़ते हुए दामों, जीवनोपयोगी वस्तुओं की बाजारों में कमी, शरणार्थियों की आवास की समस्याओं का समाधान करना था। बुनियादी उद्योगों में धन लगाने की योजना में व्यवस्था नहीं थी। अतः जनता से न तो कुछ राष्ट्र को छीनना था और न समाज से अत्यधिक धन वसूल करके राष्ट्र निर्माण के बुनियादी कामों में, जिनका लाभ जनता को तत्कालीन नहीं होता वरन् भविष्य में मिलता है, लगाना था। राष्ट्रीय आय का केवल छठा हिस्सा योजना में व्यय करने का प्रस्ताव था। १७९३ करोड़ रुपये के योजना सम्बन्धी पूरे व्यय में जनता से केवल ३५० करोड़ रुपया कर लिया गया। योजना की अवधि में प्रति व्यक्ति १० रुपये से अधिक भार जनता पर न पड़ा। रूस की प्रथम योजना की तुलना में भारत की प्रथम योजना केवल योजना की एक भूमिका ही कही जा सकती है और जन-मस्तिष्क को योजनाओं के लिए तैयार करने का एक प्रयास ही कहा जा सकता है।

भारत की द्वितीय योजना को कुछ साहसिक बनाने का प्रयास किया गया, किन्तु इतने बन्धनों के साथ कि जनता यह न अनुभव करे कि उसे एकाएक किसी अनजाने जीवन की ओर मोड़ दिया गया है। इसका ध्येय समाजवादी ढाँचे के समाज की रचना निश्चित हुआ। यह एक ऐसा मुहावरा था जो प्रस्तावित आर्थिक व्यवस्था को किसी विशेष रूढ़िवादी व्यवस्था में बाँधता नहीं था वरन् केवल एक दिशा का संकेत करता था। इसमें राजकीय या सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों की स्थापना की बात थी, किन्तु उन्हीं उद्योगों में जिनमें निजी क्षेत्र निष्क्रिय था। निजी क्षेत्र अपनी सीमा में विकसित होने को स्वतन्त्र था। राष्ट्रीय आय में बढ़ोतरी, उद्योगीकरण की ओर कदम, बेकारी में कमी करना तथा आर्थिक असमानता में न्यूनता लाना इस योजना का लक्ष्य



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। इसमें ४८०० करोड़ रुपये सार्वजनिक क्षेत्र म व्यय करने का कार्यक्रम था जो राष्ट्रीय आय का केवल दसवाँ भाग था और जिसमें जनता से ८०० करोड़ रुपये कर द्वारा लेना था। कर का औसत लगभग २० रुपया प्रति व्यक्ति था। इस प्रकार यह एक ऐसी योजना थी जो देश को उद्योगीकरण की ओर कदम उठाने को प्रेरित करती थी, किन्तु जनता का कोष खाली करके नहीं वरन् आय का केवल दसवाँ भाग कर द्वारा ले करके और भारी तथा बुनियादी उद्योगों के नाम पर जीवनोपयोगी वस्तुओं के उत्पादन पर रोक नहीं लगाती थी। समाजवाद की ओर बढ़ने का प्रयास था किन्तु नये उत्पादनों के स्रोत को विस्तृत करके और उनसे प्राप्त आय का वितरण करके न कि मौजूदा पूँजी को छीन कर वितरण करके। भूमि-सुधार में सहकारिता की ओर संकेत किया गया किन्तु स्वेच्छा के सिद्धान्त के साथ। इस प्रकार प्रत्येक कदम पर लोकतान्त्रिक प्रवृत्ति की प्रतिष्ठा रखी गयी।

तीसरी योजना में ७२०० करोड़ रुपया राजकीय क्षेत्र में लगाने का प्रस्ताव किया गया है। ४००० करोड़ रुपया निजी क्षेत्र में लगाने का प्रस्ताव है। अतः तृतीय योजना में भी निजी पूंजी को विकसित होने की पर्याप्त स्वतन्त्रता है। राजकीय क्षेत्र के ७२०० करोड़ रुपये की प्रस्तावित खपत में कृषि पर १६७५ करोड़ और उद्योगों पर १५०० करोड़ व्यय का अनुमान है। इस प्रकार यह योजना राजकीय क्षेत्र, निजी क्षेत्र, कृषि और उद्योग सभी को विकसित करने के लिए प्रयास करेगी। इसका ध्येय राष्ट्रीय आय में ५ प्रतिशत प्रति वर्ष बढ़ोतरी, अन्त में आत्मनिर्भरता, औद्योगिक कच्चे माल में आत्मनिर्भरता, इस्पात, बिजली, तेल, ईंधन आदि के उत्पादनों में प्रगति, १५० लाख व्यक्तियों को रोजगार तथा भोजन और कपड़े के प्रति व्यक्ति औसत में सन्तुलन है। सहकारिता को सरकार प्रोत्साहित करेगी किन्तु उसका आधार स्वेच्छा रहेगा। जनता से करों के द्वारा १६०० करोड़ रुपये प्राप्त करने का प्रस्ताव किया गया है।

( पृष्ठ ५७५ का शेष )

प्रसारित होने के दो-या तीन सप्ताह बाद ही, सुलभ कर सकता है।

दो वर्षों तक इस आविष्कार के आर्थिक और भौतिक लाभ प्रत्यक्ष होने की सम्भावना है।

## स्वीडन की परेशानी

भारत में प्रशासक व अर्थशास्त्री जनसंख्या की निरन्तर वृद्धि से परेशान है, तो स्वीडन में समस्या यह है कि वहां जनसंख्या आवश्यकता से भी कम बढ़ रही है। इस सदी के प्रारम्भ में वहां की जनसंख्या २७ प्रति हजार थी, १९२० में गिरकर २० प्रति हजार रह गई। १९३० तक यह और भी गिरी तथा १४ प्रति हजार हो गई। इसके बाद कुछ दर बढ़ी, और १९४४ तक २० प्रतिशत तक पहुँच गयी। इसके बाद वह फिर गिरने लगा। ब्रिटेन, स्विट्जरलैण्ड और आस्ट्रिया में यह दर नहीं गिर रही। आज संसार में सबसे कम जनसंख्या का अनुपात केवल स्वीडन में है। दूसरी ओर मृत्युसंख्या का दर १० प्रतिशत यथापूर्व है, इसलिए जनसंख्या बहुत धीमी गति से बढ़ती है। १९५० में ५०००० ही वृद्धि हुई थी, जबकि १९६० में २७००० ही बढ़ी। स्वीडन में प्रतिवर्ष केवल ५०,००० औसतन आबादी बढ़ी है, जबकि भारत में ८६ लाख। यदि यही गति रही तो बूढ़ों की संख्या बढ़ती जायगी और १९७१-७५ में १५ वर्ष से ६४ वर्षों तक के लोगों की वृद्धि का अनुपात केवल ०.४ प्रतिशत रह जायगा। इसका स्वीडन की औद्योगिक कार्य-क्षमता पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

**नवजात शिशु·····**

लाख आपका जाना पहचाना न हो मगर उसकी निश्छल मधुर मुस्कान, आपका प्यार और दुलार पाने को उठे हुए उसके नन्हें-नन्हें मोहक हाथ, आपको आकर्षित किये बिना नहीं रहेंगे। बस कुछ ऐसी है आपकी अपनी "शिक्षा भारती" नन्ही मुन्नी नई-नवेली। इसे आपका प्यार चाहिये—दुलार चाहिये। इसे अपनाइये। इसे गले लगाइये।

**शिक्षा-भारती**

शिक्षा जगत का प्रतिनिधि मासिक पत्र

१२ बालबिहार, दमदिया रोड भोपाल,

संचालक — पूरनचन्द अग्रवाल "आनन्द"
सम्पादक — विष्णु राजोरिया

वार्षिक मूल्य ८) — एक प्रति ७५ न० पै०



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोदय

# कांग्रेस की आर्थिक नीति

सुरेश राम

कांग्रेस के चुनाव-घोषणापत्र का काफी हिस्सा, लगभग तीन-चौथाई हिस्सा देश की आर्थिक गतिविधि से सम्बन्ध रखता है और नियोजन तथा विकास की सफलता, आवश्यकता और सम्भावनाओं पर रोशनी डाली गई है। सामाजवादी अर्थनीति का इसका लक्ष्य रहा है और व्यक्ति के विकास व स्वतंत्रता पर उसने पूरा जोर दिया है। उस के चुनाव घोषणा-पत्र में कहा गया है कि भारत की बुनियादी समस्या केवल यह नहीं है कि लोगों के रहन-सहन का स्तर उठाया जाये, बल्कि यह है कि तेजी के साथ सामाजिक और आर्थिक समानता स्थापित हो। उसमें चेतावनी दी गई है कि व्यक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए साधन व सुविधा तो मिलनी चाहिए, मगर वे इस प्रकार से न दिये जायें कि समाज में ज्यादा विषमता बढ़ जाये और कुछ लोग दूसरों का शोषण करते रहें। यह सिद्धान्त बड़ा सुन्दर और आवश्यक है।

लेकिन दुःख की बात है कि घोषणापत्र ने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया कि गत दस वर्षों में देश में, नियोजन के बावजूद, आर्थिक विषमता बढ़ी है। हमारे दीन-दुःखी भूमिहीन मजदूरों की दशा और भी ज्यादा कमजोर पड़ गई है। वैसे आश्चर्य की बात है कि देश में जो औद्योगिक कम्पनियां हैं, उनमें जो पूंजी लगी है, उसका ६७ प्रतिशत, केवल दस परिवारों के हाथ में है! चाय, काफी और रबर के बागान गिने-चुने लोगों की बपौती बनते जा रहे हैं। देश की आमदनी में जो वृद्धि होती है, उसका लाभ थोड़ों तक ही सीमित है।

घोषणा-पत्र में कहा गया है कि टैक्सों द्वारा शहर की आमदनी पर पाबन्दी लग रही है और आर्थिक विषमता भी कम होगी। मगर सच यह है कि पिछले दस साल में, प्रत्यक्ष टैक्स (डाइरेक्ट टैक्स) में कमी आई है और परोक्ष टैक्स (इनडाइरेक्ट टैक्स) बढ़े हैं। इसका प्रमाण यह है कि १९५१-५२ में देश की आमदनी जहां ९,९७० करोड़ रुपये थी, १९६०-६१ में १४,५०० करोड़ रुपये हो गई! लेकिन इस दौरान में इन्कम टैक्स की आमदनी की प्रतिशत टैक्स की आमदनी की प्रतिशत १.९६ से घट कर १.८३ रह गयी! फिर, "आय और सम्पत्ति" पर १९५१-५२ में प्रत्यक्ष टैक्स द्वारा कुल टैक्स आय का जहां ३२.६ प्रतिशत था, १९६०-६१ में वह २९.५ प्रतिशत ही रह गया!! और परोक्ष टैक्स की आमद ५९.३ से बढ़कर ६२.७ प्रतिशत पर पहुँच गई!!!

नियोजन के दौरान में खेतिहर मजदूरों की जो हालत हुई है, उसके बारे में सरकार की ओर से दूसरी खेतिहर मजदूर जांच-समिति की रिपोर्ट भी निकल चुकी है। उसके अनुसार इन मजदूरों के काम के दिन घटे हैं, इनकी औसत मजदूरी कम हुई है और कर्ज का बोझ ज्यादा बढ़ गया है। आर्थिक विषमता की वृद्धि की भयानकता का अन्दाज इससे हो सकता है।

और जहां तक बेरोजगारी का सवाल है, वह लगातार बढ़ रही है। पहली और दूसरी योजनाओं के बीच उसकी स्थिति इन आंकड़ों से पता चलती है:

(१) दूसरी योजना के आरम्भ बेरोजगार (लाखों में) पुराने शेष बेकारों की संख्या—५३

(२) योजना के दौरान में काम करने वालों की वृद्धि—१००

(३) दूसरी योजना में काम पाने वालों की संख्या—६५

(४) योजना के अन्त में बेकारों की संख्या—

(५) कम काम पाने वाले की संख्या—१५०

ऊपर से बढ़ती हुई महंगाई है। साथ ही देहात में लाखों-करोड़ों ऐसे पड़े हैं, जिनका नाम-लेवा, पानी-देवा भी कोई नहीं है, जिन्हें एक जून भरपेट खाना भी नसीब नहीं होता। घोषणा-पत्र में इस दोष के निराकरण का कोई आश्वासन नहीं मिलता।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## खेती और भूमि-सुधार

खेती भारतीय अर्थनीति का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। घोषणा-पत्र में इसको मान्यता दी गई है। यह भी बतलाया गया है कि अनाज के उत्पादन का दूसरी योजना में लक्ष्य ८०५ लाख टन था। सौभाग्य से इसमें सफलता मिली और उत्पादन ७९३ लाख टन हुआ। लेकिन विदेशों से अनाज अभी तक आ रहा है और आता रहेगा।

बड़े खेद की बात है कि अनाज-स्वावलम्बन की महत्ता नहीं महसूस की जाती और उस पर आवश्यक जोर भी नहीं दिया जा रहा है। तम्बाखू, ईख और पटसन आदि पर ज्यादा जोर देना हमारे लिए घातक सिद्ध हो रहा है। उत्पादन निर्भर करता है भूमि-वितरण पर। आज देखते क्या हैं कि जो जमीन के मालिक हैं, वे आम तौर से खुद जोतते-बोते नहीं और जो जोतते-बोते हैं, उनके पास जमीन नहीं है, या बहुत थोड़ी है। भूमि का यह असमान वितरण उत्पादन में सबसे बड़ी बाधा है। यह सही है कि विभिन्न प्रदेशों में जोत की जमीन की उच्चतम सीमा (सीलिंग) के कानून बन गये हैं। लेकिन उन पर अगर ठीक से अमल हो तो मुश्किल से नौ-दस लाख एकड़ ही जमीन निकलेगी। इससे क्या भला होगा उस देश का, जहां एक करोड़ भूमिहीन परिवार हैं?

—भूदान यज्ञ से

## बैलों को बेकार मत करो

हमने गाय को मानव कुटुम्ब का हिस्सा माना है। इसका अर्थ यह है कि हमने एक ऐसे समाजवाद की कल्पना की है जिसमें गाय और बैल ग्रामीण अर्थशास्त्र के केन्द्र बन जाते हैं। इस चीज का भान उन लोगों को नहीं है जो सिर्फ दुग्धादि के लोभ से गोपालन और गो संवर्धन की बातें करते हैं। खेती को बैल के खिलाफ याने उसे बेकार करने वाला कोई औजार इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। निकम्मे जानवर पैदा न हों, इस तरह का विज्ञान सीखना चाहिए। गायों को भी उनकी सेहत सुधारने के वास्ते कुछ काम देने की योजना करनी चाहिए। अलबत्ता उनसे हमको दूध मिलता है, कमजोर जानवरों के लिए गोसदन न सिर्फ सरकार की ओर से बल्कि महाजनों की ओर से भी खुलने चाहिए। जानवरों के मल-मूत्र, हड्डी चर्म आदि का पूरा उपयोग होना चाहिए। श्रीकृष्ण भगवान के समान कार्य कर्ता के हाथ गोबर से लिये रहने चाहिए। यह सेवा करेंगे, तभी गोपालन और संवर्धन होगा।

—विनोबा

---

( पृष्ठ ५६० का शेष )

इस प्रस्ताव को संशोधित तेलों पर कमीशन के साथ न मिलाकर पृथक् रूप से विचार करने का सुझाव दिया है। सरकार की नीति तेल उद्योग में अधिकाधिक स्वावलम्बन प्राप्त करने की है इसलिए वह तेल-कम्पनियों को अधिक क्रूड आयल देने से पहले अधिक सोच-समझ लेना चाहता है। दूसरी ओर राज्य सभा में उन्होंने एक सदस्य के इस प्रस्ताव को मानने से इन्कार कर दिया है कि तेल कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण कर लिया जाय। सम्भवतः उन्हें विश्वास है कि आगामी कुछ महीनों में भारत में ही सरकारी रिफाइनरियां अधिक काम करने लगेंगी और नई सरकारी इण्डियन आयल कम्पनी रूसी तेल के वितरण की भी अच्छी व्यवस्था कर लेंगी।

पांच मास तक संशोधित तेल पर कमीशन के लिए आग्रह न करने के कारण यह समस्या कुछ समय के लिए टल अवश्य गयी है, किन्तु अन्तिम रूप से हल नहीं हुई है। यह सम्भव है कि कुछ समय तक तेल-कम्पनियां इस अवधि में तेल-उत्पादकों पर जोर डालकर कमीशन के लिए उन्हें विवश कर दें।

यद्यपि ईंधन मंत्री श्री मालवीय ने विदेशी कम्पनियों को ५ महीने की मोहलत दी है तथापि बाद के समाचारों से यह मालूम हुआ है कि उन्होंने तेल-कम्पनियों को यह भी कहा है कि तेल किस कीमत पर बिकेगा यह सरकार तय करेगी। वस्तुतः सरकार को यह भरोसा है कि रूसी तेल काफी मात्रा में भारत में आ रहा है। अगस्त १९६० से अक्तूबर १९६१ तक १ लाख ५२ हजार मीट्रिक टन रूसी तेल भारत में आ चुका है और यह तेल असम, पश्चिमी बंगाल और मैसूर को छोड़कर सारे देश में बिक रहा है। इन तीनों प्रदेशों में अभी तक इंडियन आयल कम्पनी के गोदाम नहीं बन सके हैं। ईंधन मंत्री के इस मूल्य सम्बन्धी वक्तव्य के कारण तेल कम्पनियां फिर दुविधा में पड़ गयी हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# साहित्य समालोचना

पांचजन्य (हिमालय अंक सचित्र)—१५ वर्ष से प्रकाशित इस साप्ताहिक का २२४ पृष्ठ का सचित्र यह दीपावली विशेषांक है। इस अंक का मूल्य है ५० न० पैसे।

यह अंक सम्पादक के शब्दों में, दो उद्देश्यों से निकाला गया है। पहला, यह कि राष्ट्र जीवन में दिनोदिन अपने मानबिन्दुओं के प्रति जिस आस्था और आत्मीयता का ह्रास हो रहा है, उसे जागृत करना और दूसरा यह कि इस स्वर्गपुरी की पवित्रता को नष्ट-भ्रष्ट कर उसे रौंद डालने की चुनौती का सामना करने के लिए "हिमालय पुत्रों" का प्रबन्ध करना। विशेषांक में प्रकाशित ठोस, विविध और ज्ञानवर्द्धक पाठक सामग्री को देखकर यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि सम्पादक मंडल इस काम में पूर्ण सफल हुआ है। हमारे देश की संस्कृति, परम्पराएं, गाथाएं और समूचा इतिहास हिमालय के ललित और सुरम्य वर्णनों से भरपूर है। हम उसे अभी तक देश के अजस और शाश्वत प्रहरी के समान ही समझते रहे हैं। पर हमारी आज के राजनीतिक भूलों के परिणाम से चीन को यह साहस हो गया कि वह पिछले कई वर्षों से इस "देवस्थान" के लगभग १४ हजार वर्गमील पर अन्याय और मित्र-द्रोह करके कब्जा किये बैठा है। यह विशेषांक हमें इस दिशा में अपने कर्तव्य के प्रति बड़ी प्रबल प्रेरणा देता है। राजनीतिक दृष्टि से विभिन्न मत और विचार के लोग भी हिमालय के सम्बन्ध में जिस प्रकार भतैक्य रखते हैं—यह इस अंक में प्रकाशित बहुविध पाठ्य-सामग्री से स्पष्ट हो जाता है।

जीवन साहित्य—रवीन्द्र अंक, सम्पादक श्री हरिभाऊ उपाध्याय और श्री यशपाल जैन। इस अंक का मूल्य १ रु० ५० न० पै०।

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के साहित्य के सम्बन्ध में, प्रायः संस्मरणात्मक और विवेचनात्मक लेख हैं। रवीन्द्रनाथ शताब्दी समारोह भारत और विदेशों में भी उत्साह के साथ इस वर्ष मनाया गया। उसी पृष्ठ-भूमि में यह विशेषांक है जो बड़ा सफल और प्रेरणादायक है। सम्पादकों ने लेखों के चयन और चित्रों के संग्रह में विशेष प्रयास किया है। अनेक लेख बहुत अधिक परिश्रम, अध्ययन और विश्व कवि से निकट सम्पर्क को परिचय देते हैं।

## मिल का मुकाबला 'जनता चरखा' करेगा

मैंने २५ तकुवे का एक छोटा चरखा बनाया है। इसमें अम्बर चरखे की जैसे टेढ़े तकुवे व कागज के बाबिन की झंझट बिल्कुल नहीं है। चरखा पांवों से घुमाया जाता है और दोनों हाथ टूटे धागों को जोड़ने के लिए खाली रहते हैं। चरखा चलने में हल्का व कातने में आरामदेह है। एक कत्तिन आठ घंटे में एक सौ गुंडी से १२० गुंडी तक कात सकती है। उसके लिये आवश्यक पूनी अधिक गति से तैयार करने की संयुक्त धुनाई-बेलनी भी तैयार हो रही है।

इस 'जनता-चरखा' द्वारा कत्तिन को सम्माननीय जीवन बिताने के लिए आवश्यक जीवन-वेतन मिल सकता है, और खादी की कीमत मिल के कपड़े के बराबर आ सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे नये सुधारों को जनता तक पहुंचाने वाले कार्यकर्ता चाहिए। इस पचीस तकुवे वाले जनता-चरखा द्वारा खादी का प्रचार विदेशों में भी हो सकता है।

—सत्यन् —'भूदान यज्ञ' १ दिसम्बर ६१


## उद्योग-व्यापार पत्रिका
का
## उद्योग मेला विशेषांक

'उद्योग-व्यापार पत्रिका' का दिसम्बर १९६१ अंक 'उद्योग मेला विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। अपने स्थायी स्तम्भों के अतिरिक्त इसमें निम्नलिखित विशेष सामग्री होगी—

१. एशिया के महान औद्योगिक व व्यापारिक मेले 'भारतीय उद्योग मेला (१९६१)" में स्थापित विभिन्न मंडपों के बारे में उपयोगी एवं सुरुचिपूर्ण जानकारी।

२. भारत के कुछ बड़े एवं गृह उद्योगों से संबंधित उपयोगी, रुचिकर एवं नवीनतम जानकारी से पूर्ण लेख।

अनेक आकर्षक चित्रों से सुसज्जित इस विशेषांक का मूल्य रखा गया है केवल ५० नये पैसे। विज्ञापन का अमूल्य साधन, एजेन्टों को भरपूर कमीशन।

निर्देशक, व्यापार प्रकाशन निदेशालय,
वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,
भारत सरकार, उद्योग भवन, नयी दिल्ली।




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


संचालक, पंचायत राज विभाग, उत्तर प्रदेश

की

विज्ञप्ति संख्या ४।५५८० : २७।३३, दिनांक १५

द्वारा

पुस्तकायों के लिए स्वीकृत

## सुन्दर पुस्तकें

| | | रु० | आ० |
|---|---|---|---|
| वेद सार | प्रो० विश्वबन्धु | १ | ८ |
| प्रभु का प्यारा कौन ? (२) भाग | | | |
| सच्चा सन्त | | | ३ |
| सिद्ध साधक कृष्ण | | | ३ |
| जीते जी ही मोक्ष | | | ३ |
| आदर्श कर्मयोग | | | ३ |
| विश्व-शान्ति के पथ पर | | | १ |
| भारतीय संस्कृति | प्रो० चारुदेव | | ३ |
| बच्चों की देखभाल | प्रिंसिपल बहादुरमल | १ | १२ |
| हमारे बच्चे | श्री सन्तराम बी. ए. | ३ | १३ |
| हमारा समाज | | ६ | |
| व्यावहारिक ज्ञान | | २ | १२ |
| फलाहार | | १ | ४ |
| रस-धारा | | ० | १४ |
| देश-देशान्तर की कहानियां | | १ | |
| नये युग की कहानियां | | १ | १२ |
| गल्प मंजुल | डा० रघुबरदयाल | १ | |
| विशालभारत का इतिहास | प्रो० वेदव्यास | ३ | ८ |

१० प्रतिशत कमीशन और ५० रु० से ऊपर के आदेशों पर १५ प्रतिशत कमीशन।

विश्वेश्वरानन्द पुस्तक भंडार

साधु आश्रम, होशियारपुर, पंजाब



उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश राजस्थान, पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश की राज्य सरकारों द्वारा शिक्षा-संस्थाओं, वाचनालयों, पंचायतों एवं विकास खंडों के लिए स्वीकृत

## भारत व्यापार पत्रिका

की लोकप्रियता के कारण

- उद्योग पतियों तथा व्यापारियों के लिए उपयोगी लेख, तेज समाचार तथा अन्य गतिविधियां प्रकाशित किये जाते हैं ?
- निःशुल्क विज्ञापन कूपन के विज्ञापन कूपन के माध्यम से आप का विज्ञापन मुफ्त छाप कर परस्पर व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ाता है।
- लघु उद्योग के अन्तर्गत भिन्न भिन्न वस्तुयें बनाने की योजना को प्रकाशित किया जाता है।
- आपके मनोरंजन के लिए हर अङ्क में एक आकर्षक कहानी, चलशित्र उद्योग, 'गंगा की लहरें' में व्यंग विनोद तथा सामायिक कार्टून दिये जाते हैं।
- इसके अलावा अनेक स्थायी स्तम्भ, चित्रावलि आदि।
  - पृष्ठ संख्या ६४ से ७२ तक
  - साधारण अंक, ५० नये पैसे • वार्षिक चन्दा ६) रु०

अगर आपने अब तक पत्रिका नहीं देखी है तो इस विज्ञापन की कटिंग के साथ आज ही २५ नए पैसे के स्टाम्प भेजकर रियायती मूल्य पर नमूना मंगाइये।

विज्ञापन दर तथा अन्य जानकारी के लिए लिखें—

व्यवस्थापक—भारत व्यापार पत्रिका

पोस्ट बाक्स नं० ४६, राजा दरवाजा, वाराणसी (उ० प्र०)

फोन नं० ३३४३ तार—'केनाको'


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अजस्र शक्ति का स्रोत—सूर्य

भारत की वैदिक ऋचाओं में सूर्य देव से वरदानों के लिए प्रार्थना की गई है। अन्य प्राचीन धर्मों में, न केवल समस्त मानव, पौध एवं पशु-जीवन के मूल स्रोत के रूप में, बल्कि भूमण्डल पर सर्वत्र संत्रस्त करने वाली कलुष शक्तियों के संहारक के रूप में भी, सूर्य की स्तुति की गई है। वस्तुतः सृष्टि के प्रारम्भ से ही सूर्य पृथ्वी के समस्त सजीव पदार्थों का आधार रहा है। यदि अकस्मात् पृथ्वी के ऊपर सूर्य के प्रकाश का आना पूर्णतया बन्द हो जाये, तो कुछ दिनों के भीतर यहां के सभी सजीव पदार्थों का अन्त हो जायेगा।

## सौर ऊर्जा

यदि भूगर्भ में दबे हुए समस्त खनिज तेल, गैस और कोयले को खोद कर निकाल लिया जाय और उन्हें एक विशालाकार चूल्हे में जला दिया जाये, और यदि विश्व के समस्त बनों में आग लगा दी जाए, तो इन सबसे उत्पन्न शक्ति की मात्रा भी पृथ्वी पर तीन दिन में सूर्य की किरणों से अबाध रूप में प्राप्त होने वाली शक्ति या ऊर्जा के बराबर नहीं होगी।

प्रचण्ड सूर्य की किरणों से पृथ्वी पर प्रतिदिन जितनी ऊर्जा प्राप्त होती है, वह इस समय २४ घण्टे में विश्व की समस्त जनसंख्या द्वारा प्रयुक्त शक्ति के ३२,००० गुने से अधिक है।

यदि मकान की छतों पर पड़ने वाली धूप की ऊर्जा को बिजली में परिणत कर दिया जाय, तो उससे आज के मकान को गर्म या ठण्डा रखा जा सकता है, और उसके सभी आधुनिक उपकरणों, जैसे रेडियो, आयरन, हीटर और कपड़ा धोने वाली मशीनों को चलाया जा सकता है।

मृग मरीचिका की भांति, ये आंकड़े उन वैज्ञानिकों के मस्तिष्क को परेशान कर रहे हैं, जो सौर ऊर्जा को नियन्त्रित करके उसे प्रयुक्त करने के साधनों और विधियों की खोज कर रहे हैं। वे जानते हैं कि पृथ्वी पर उपलब्ध ईंधन के सभी ठोस साधनों—खनिज तेल, गैस और कोयले—की मात्रा सीमित है, और वह कुछ ही समय बाद समाप्त हो जायेगी। वे यह भी जानते हैं कि अणुशक्ति भी दीर्घकालीन दृष्टि से मनुष्य की शक्ति सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने की समस्या का समाधान नहीं, क्योंकि इसके मूल साधन यूरेनियम की मात्रा भी सीमित है।

यह सही है कि मनुष्य लाखों वर्षों तक प्रकृति द्वारा प्रदत्त शक्ति के इन स्रोतों का उपयोग कर सकता है, किन्तु वह उन्हें प्रतिस्थापित नहीं कर सकता। इस समय जहां कहीं भी वे प्रचुरता से उपलब्ध हैं, वहां वे किसी समय समाप्त होकर ही रहेंगे। निस्सन्देह, अभी दो-चार दिनों में ही वे समाप्त नहीं होंगे, फिर भी यह सच है कि उनका समाप्त होना अपरिहार्य है।

## शक्ति का अनन्त स्रोत

अतः अन्ततोगत्वा मनुष्य को शक्ति के अन्य स्रोतों पर निर्भर होना ही पड़ेगा। सौर ऊर्जा मनुष्य की सेवा उस समय तक अनवरत करती रहेगी, जब तक पृथ्वी पर जीवों का अस्तित्व रहेगा। अतः, लगभग ३० देशों के वैज्ञानिक अनुसन्धानकर्त्ता ऐसी सस्ती और लाभकर विधियों की खोज में संलग्न हैं, जिनके द्वारा सूर्य की किरणों को बिजली में परिणत करके उसका उपयोग किया जा सके।

भारत में सौर चूल्हे (सोलर कुकर) ने यह दिखला दिया है कि परिवार के लिए भोजन को एक ऋजु प्रतिबिम्बिक द्वारा धूप को बिजली में परिणत करके पकाया जा सकता है। यदि भारतीय ग्रामों में व्यापक रूप से सस्ते सौर चूल्हे उपलब्ध हो जायें, तो वहां परम्परा से ईंधन के रूप से प्रयुक्त गोबर के उपले की बहुत बचत की जा सकेगी। ऐसी स्थिति में खाद के रूप में प्रयुक्त करने के लिए बहुत बड़ी मात्रा में गोबर उपलब्ध हो जायेगा।

## अमरीका में अनुसन्धान

अमेरिका में भी सौर ऊर्जा को नियन्त्रित करके उपयोग में लाने के लिये विधियों और उपकरणों की खोज की गई है। अमेरिका में दो आधारभूत किस्म के सौर-चूल्हे विकसित किये गये हैं। इनमें से एक साधारण किस्म का रिफ्लेक्टर या प्रतिबिम्बक उपकरण है, जो सूर्य की किरणों को केन्द्रित और सघन करके ताप को उत्पन्न करता है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भारतीय चूल्हे जैसा ही है। दूसरा एक ऐसा सौर-चूल्हा (सोलर ओवेन) है, जो एक इन्सुलेटेड धातु का सन्दूक है। इसकी कांच की खिड़कियों के चारों ओर प्रतिबिम्बक उपकरण लगे हुए हैं। इसमें २०० अंश सेण्टीग्रेड तक तापक्रम उत्पन्न हो जाता है। यह गर्मी इतनी होती है, जिससे उतने ही समय में रोटी को पकाया जा सकता है, या मांस को भूना जा सकता है, जितने समय में परम्परागत चूल्हों पर।

अमेरिका में सौर ऊर्जा सम्बन्धी अनुसन्धान अभी तक व्यक्तियों तथा निजी संस्थाओं द्वारा होता रहा है। इसका उद्देश्य एक तो सूर्य की किरणों की ताप से सस्ती दर पर बिजली उत्पन्न करना रहा है, दूसरे ऐसी विधि ढूंढ़ निकालना रहा है, जिसके द्वारा सौर ताप को आवश्यकता अनुसार प्रयुक्त करने के लिए संचित कर रखा जाये।

## सौर विद्युत के उपयोग

धूप की ताप से पर्याप्त बिजली प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त मशीनें सामान्यतः बहुत महंगी सिद्ध हुई हैं। किन्तु वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि तत्काल बिजली का प्रयोग करने वाले शहरी क्षेत्रों और कारखानों के लिए सौर बिजली सुलभ नहीं की जा सकती, तो कम से कम छोटे जन-समुदायों की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए तो पर्याप्त मात्रा में उसका उपयोग हो ही सकता है।

सूर्य की किरणों से उत्पन्न शक्ति या बिजली का प्रयोग फार्मों पर और घरों में हो सकता है। इसके अतिरिक्त, इस का उपयोग विश्व के उन क्षेत्रों में हो सकता है, जो पुराने किस्म के उपकरणों से बिजली उत्पन्न करने के लिए अभी भी कम विद्युत शक्ति वाले क्षेत्र बने हुए हैं। इसके लिए सस्ते और पुरानी किस्म के जैनरेक्टर प्रयुक्त हो सकते हैं। वे सस्ते होंगे और उनका चलाना आसान होगा। वे उन क्षेत्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगे, जहां धूप तेज हो और पानी कम मात्रा में उपलब्ध हो।

आर्थर वान हिपेल का, जो कई वर्षों से 'मैसाचुसेट्स इन्स्टिट्यूट ओफ टैकनोलोजी' में सौर-अनुसन्धान कर रहे हैं, कहना है, 'पृथ्वी के किसी मरुस्थल की यात्रा करने वाला वैज्ञानिक वहां की स्थिति के विरोधाभास से हैरान हुए बगैर नहीं रहेगा। वहां चिलचिलाती धूप वनस्पतियों को जला कर खाक कर देती है, किन्तु बालू के नीचे अनेक स्थानों पर पानी है, जिसे उसी सौर शक्ति की सहायता से पम्प द्वारा निकाल कर मरुभूमि को नन्दन वन में परिणत किया जा सकता है।'

हाल में अमेरिका की एक प्रमुख फार्म ने एक ऐसा सौर जैनरेटर विकसित किया है, जो परबलयाकार प्रतिबिम्बक का प्रयोग करके अनेक थर्माकपुलों (परस्पर स्पर्श करते हुए दो असमान धातुओं के पुंज) पर सूर्य की किरणों के ताप को केन्द्रीभूत कर देता है। तप्त होकर वे बिजली की करेण्ट उत्पन्न कर देते हैं। यह करेण्ट पानी के पम्प को चलाने के लिए पर्याप्त होती है। इस पम्प द्वारा जमीन के नीचे २० फुट से इतना पानी सतह पर लाया जा सकता है, जिससे ४० एकड़ भूमि की सिंचाई हो सकती है।

सौर-अनुसन्धान के क्षेत्र में अमेरिका ने जो उल्लेखनीय योग प्रदान किया है, उसमें एक है १९५४ में सौर बैटरी का आविष्कार। इसका स्वरूप एक बड़ी तश्तरी जैसा है, जिसमें आर्सनिक तथा बोरोन से उपचारित सिलिकोन की परतें भरी होती हैं। इसमें प्रत्येक तश्तरीनुमा सेल एक लघु विद्युत उत्पादक उपकरण या जेनरेटर का कार्य करता है। परतों से टकराने वाली प्रत्येक किरण एक विद्युत-करेण्ट को जन्म देती है। इस करेण्ट से ड्राई सेल विद्युत-धर्मी हो जाते हैं, जिन्हें रात में रोशनी के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। जार्जिया में इस प्रकार की एक बैटरी को एक खम्भे पर लगा रखा गया है और ६ महीने से वह ८ परिवारों के एक ग्रामीण समाज में टेलीफोन-प्रणाली चालू रखने के लिए पर्याप्त बिजली उत्पन्न कर रही है।

## सौर भट्टियां

प्रयोग के लिए अमेरिका में सौर भट्टियों का भी निर्माण किया गया है। इस प्रकार की सबसे बड़ी सौर भट्टियों में से एक सेनडीगो, कैलिफोर्निया में स्थापित की गई है, जो एक विशाल वर्त्तुलाकार अल्यूमिनियम दर्पण द्वारा सूर्य की किरणों के ताप का संग्रह करके, उसे एक केन्द्रीय बिन्दु पर प्रतिबिम्बित करता है।

दोपहर के समय इस भट्टी का तापक्रम ४,००० अंश सेण्टीग्रेड तक पहुँच सकता है। इतना ताप कुछ सेकण्डों में ही इस्पात की डिबरी को गला देने के लिए पर्याप्त होता

( शेष पृष्ठ ५९० पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# लोकतंत्र में समृद्धि का मार्ग ?

ए० डी० श्राफ,

प्रसिद्ध अर्थ शास्त्री श्री० ए० डी० श्राफ़ सरकार की वर्तमान अर्थनीति और उसके व्यवहार के कठोर आलोचक हैं। उनकी आलोचना कुछ अप्रिय अवश्य होती है, पर यह एक दूसरा पक्ष उपस्थित करती है, जो हमें गंभीरता से वर्तमान नीति और कार्य पद्धति पर विचार करने के लिए विवश कर देती है।

आजकल भारतीय अर्थ-व्यवस्था में पंचवर्षीय योजनाओं का बोलबाला है। इसलिए, स्वभावतः आर्थिक वादविवादों और विचार विमर्शों का मुख्य विषय भी तीसरी पंचवर्षीय योजना है।

जब हमारे देश में तीव्र आर्थिक विकास के लिए किसी प्रकार के नियोजन की जरूरत है और यदि सोवियत-पद्धति भारत के लिए अनुपयुक्त है तो कौन-सा विकल्प अपनाना चाहिए ? स्पष्टतया, हमको अपना दृष्टिकोण बढ़ाकर नियोजन की दशा में अन्य देशों में हुई प्रगति पर ध्यान देना चाहिए। इस प्रकार का एक उदाहरण फ्रान्स का नियोजन है, जिसके जरिये फ्रान्स की अर्थ-व्यवस्था की काफी प्रगति हुई और उसने ग्रेट ब्रिटेन के नेताओं तक को काफी हद तक प्रभावित किया जिन्होंने उसी प्रकार की पद्धति अपनाने का प्रस्ताव किया।

फ्रान्सीसी नियोजन का उद्देश्य है। "वृद्धि की ऐसी अधिकतम संभव गति का चुनाव करना, जिससे अर्थ-व्यवस्था के सन्तुलन को खतरा पैदा न हो, अर्थात् जो सम्पूर्ण रोजगार की स्थिति के अनुकूल हो लेकिन अधिक सम्पूर्ण रोजगार के नहीं, जिसमें बचत के बराबर पूँजी लगाने की व्यवस्था हो और सार्वजनिक वित्त के अवशेष तथा विदेशी भुगतानों के अनुकूल हो।" यह अर्थ-व्यवस्था अनेक क्षेत्रों में विभाजित की गई है। २५ आयोगों (कमीशनों) में संगठित उद्योगों तथा अन्य हितों के लगभग ३,००० प्रतिनिधियों से लक्ष्यों और उनकी पूर्ति के बारे में सलाह ली जाती है। बीस आयोगों का सम्बन्ध कृषि, शक्ति, निर्माण उद्योग, आवास और शिक्षा जैसे विभिन्न क्षेत्रों से है। पांच आयोगों का सम्बन्ध सभी क्षेत्रों की सामान्य समस्याओं से है। उदाहरण के तौर पर, श्रम-आयोग रोजगार का और वित्त आयोग पूंजी लगाने सम्बन्धी मामलों की देखरेख करता है।

हमारे देश में नियोजकों की इस बात की धुन सवार है कि सभी खर्च लागत है, और पूँजीगत सामानों में लगाई गई कुछ रकम से स्वतः उत्पादन में वृद्धि हो जायगी। पूँजी-उत्पादन अनुपात सम्बन्धी सिद्धान्त, अब कुछ पश्चिमी योरोपीय देशों के अनुभव से खरा नहीं उतरता है। आज आर्थिक विकास में मानवीय पहलू पर जोर दिया जा रहा है। प्रो० कोलिन क्लार्क ने अपनी प्रभावशाली पुस्तक ग्रोथमेनशिप में कहा है कि—

"वास्तव में तथ्य यह है कि हालांकि आर्थिक वृद्धि के लिए पूँजी में रकम लगाना निस्सन्देह जरूरी है, फिर भी निश्चय रूप से यह नियंत्रक या प्रधान पहलू नहीं है। अर्थशास्त्री अभी इस बात का सम्पूर्णतया विश्लेषण करने की स्थिति में नहीं है; लेकिन हम यह कह सकते हैं कि



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्थिक वृद्धि का प्रमुख पहलू भौतिक—अर्थात् प्राकृतिक साधन और लगाई गई पूँजी—नहीं है बल्कि मनुष्य हैं। युद्ध या इसी प्रकार के संकट के तत्काल बाद के वर्षों में आर्थिक वृद्धि बड़ी तीव्र हो सकती है। लेकिन, इन समयों के अलावा, आर्थिक वृद्धि में मानवीय पहलुओं का योग तुलनात्मक धीमा और स्थिर गति से रहा है। हालांकि इस बात से इन्कार नहीं किया गया है कि अच्छी सरकार और जनता का चरित्र और प्रयत्न इस गति को सुधारने में कुछ कर सकतेहैं। लेकिन इस गति को तीव्रता से बलात बढ़ाने की दिशा में किये गये प्रयत्न से पूँजी की तथा अन्य साधनों की बर्बादी होने की संभावना है और उसका अन्त वास्तव में उसे मंद करने में ही होता है।"

अर्थशास्त्री प्रो० क्लार्क ने सरकार द्वारा चलाये जाने वाले उद्योगों में कई प्रकार की आशंकाएं प्रकट की हैं। इनकी पुष्टि हमारे देश में राजकीय उद्योगों के अनुभव से होती है। घुटाले करने का श्रेय राजकीय व्यापार निगम (स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन) को है। सीमेन्ट के वितरण तथा कुछ अन्य मामलों से सम्बन्धित प्रवृत्तियों से राजकीय व्यापार निगम द्वारा उठाये लाभ की संसद की अंदाज समिति ने अपनी ८६वीं रिपोर्ट में आलोचना की है। लेकिन स्पष्टतः संसदीय आलोचना तक का इस नौकरशाही पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। व्यापारिक सौदों के लिए नौकरशाही तरीके अनुपयुक्त है, यह बात हाल ही में पाकिस्तान के साथ हुए चीनी के सौदे के एक मामले से स्पष्ट होती है जिसमें निगम को ११ लाख रुपये की हानि केवल इसलिए उठानी पड़ी कि उसने समय पर तार नहीं भेजा और पाकिस्तान की ओर से सौदा रद्द कर दिया गया। एक समाचार पत्र की रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि "हाल ही के विगत समय में निगम में इस प्रकार की अनेक असफलताएं हुई। जानकार सूत्रों के अनुसार इसका कारण यह है कि निगम में विभिन्न मंत्रालयों के ऐसे कर्मचारियों की भरमार है जिनकी व्यापार सम्बन्धी तरीकों की जानकारी बहुत सामान्य है। निगम ने वरिष्ट कर्मचारियों की भर्ती से सम्बन्धित सिफारिशों पर बहुत कम ध्यान दिया है और मंत्रालय से अवकाश प्राप्त व्यक्तियों का ही किराये पर रखना जारी है।"

अब राजकीय व्यापार निगम द्वारा कम्युनिस्ट देशों के साथ की गई रुपया भुगतान व्यवस्था से एक नया घुटाला खड़ा हो गया है। भारतीय विदेश व्यापार परिषद के अध्यक्ष, श्री मुरारजी वैद्य ने बताया है कि "यहां से जो सामान विदेशों को (राजकीय व्यापार निगम द्वारा रुपया भुगतान व्यवस्था के अन्तर्गत) निर्यात किया गया वह हमारे सामान्य विदेशी बाजारों में उन कीमतों में पहुँच गया जो उन देशों में सीधे निर्यात के जरिये उपलब्ध होने वाली कीमतों से कम थी और जिससे पश्चिमी देशों में मात्रा और कीमत के सन्दर्भ में हमारा निर्यात कम हो गया, ऐसी स्थिति में यह आश्चर्यजनक नहीं है कि हमारी विदेशी मुद्रा की स्थिति सुधरने की बजाय बिगड़ती जाय।"

अन्य राजकीय उद्योगों की तस्वीर भी सुखद नहीं है। उनकी अकार्यक्षमता और सुलभ साधनों की बर्बादी के बारे में की जाने वाली दीर्घकालीन आशंकाओं की पुष्टि वित्त मंत्री ने १९६१-६२ वर्ष का बजट पेश करते हुए की है। उन्होंने यह बताया कि राजकीय उद्योगों में लगाई गई कुल पूँजी पर प्रतिफल केवल आधा प्रतिशत ही है। कम्पनी कानून प्रशासन की १९५९-६० वर्ष की सरकारी सालाना रिपोर्ट भी, जो २० फरवरी १९६१ की है, राजकीय उद्योगों के प्रति जरा भी प्रशंसनीय नहीं है। उसमें कहा गया है कि :

> "एक कार्यक्षम आन्तरिक लेखा-जोखा पद्धति और व्यवस्था के अभाव में और एक आन्तरिक कास्टिंग पद्धति तथा संगठन न होने के कारण बजट-सम्बन्धी अपर्याप्त नियोजन, बजटों पर प्रभावहीन नियंत्रण और कम्पनियों की नीतियां निर्धारण करने की दिशा में आवश्यक लागत-विवरण का पर्याप्त उपयोग नहीं हुआ है।"

रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि अनेक सरकारी कम्पनियों ने अपने वार्षिक हिसाबों को बन्द करने, अपनी बैलेन्स शीट तैयार करने तथा अपने हिसाबों की जांच करवाने के लिए निर्धारित की गई समय सूचियों का पालन नहीं किया है। कार्यक्षमता का अभाव और दुर्लभ साधनों की बर्बादी, राजकीय उद्योगों के केवल दो पहलू है। सबसे अधिक खेद की बात तो व्यापारिक नैतिकता का नीचे गिरना है। सामान्य लोगों की यह धारणा, कि सरकारें



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनैतिक व्यवहारों से परे हैं, अमान्य हो चुकी है। उपभोक्ता के खर्च पर मुनाफाखोरी और अनैतिक व्यवहार राजकीय उद्योगों में असामान्य नहीं है। इस आरोप को प्रतिपादित करने के लिए उदाहरण ही काफी में राजकीय व्यापार निगम द्वारा सीमेंट में की गई मुनाफाखोरी हैं, पहिले ही किया जाचुका है। टेलीफोन की दरों में एक-तरफा संशोधन करना एक दूसरा उदाहरण है। दाशमिक पद्धति में परिवर्तन करते समय दो आने के टिकट को कानूनी १२ नये पैसे की जगह १३ नये पैसों में बदलना एक और ऐसा ही उदाहरण है। इसी प्रकार सामान्य व्यक्ति से अधिक नये पैसे ऐंठने में रेलवे विभाग भी पीछे नहीं रहा। प्लेटफार्म जैसी साधारण लेकिन जरूरी चीज की कीमत एक आने से बढ़ाकर १० नये पैसे कर दी गई। भारतीय एयर लाइन कारपोरेशन द्वारा हाल ही में हवाई यात्रा के किराये में बढ़ाई गई दरें और एक ऐसा उदाहरण है, जिसमें एकाधिकारी सरकारी संस्थान द्वारा उपभोक्ताओं से पैसा ऐंठने की शक्ति का परिचय मिलता है।

जनता को भाषणों और प्रेस विज्ञप्तियों से जानकारी दी जाती है, जिनमें कुछ राजकीय उद्योगों की "सफलताओं" का विवरण होता है। जनता को इन "सफलताओं" की सही तस्वीर कभी ही देखने को मिलती है। दिल्ली के थाट मैगजीन में "बीच कोम्बर" ने निम्न समीक्षा की है, जो निस्सन्देह आखें खोलने वाली है :

> "कौन कहता है हम लोग प्रगति नहीं कर रहे हैं? यहां तक कि मर्दानी और जनानी घड़ियां तक अब हमारे देश में एच० एम० टी० द्वारा तैयार की जाने लगी है, हिन्दुस्तान मशीन, टूल्स, सार्वजनिक क्षेत्र की एक बड़ी प्रगतिशील संस्था मालूम पड़ती है।
>
> "लेकिन विश्वास कीजिये या नहीं, प्रथम एक हजार घड़ियां भाग्यवान लोगों को — अधिकांश संसद सदस्यों और दो पत्रकारों, खासकर सम्पादकों को बांटी गयी है। मैंने "बांटी गई" शब्द जानबूझकर कहा है, हालांकि कुछ मामलों में एच० एम० टी०, या उद्योग मंत्रालय ने, भूल से (या सावधानी से ?) उपहारों को उनकी कीमतों के लिए चेक की मांग के बिना ही भेजा है। बहरहाल, यह तो केवल एक बात की बात है। लेकिन जिन लोगों ने सुजाता घड़ियों को देखा है, उनका कहना है कि वे हिन्दुस्तानी होने की अपेक्षा वास्तव में जापानी है। केवल उनकी डायले ही पक्की हिन्दुस्तानी है। इसका मतलब यह हुआ कि ये घड़ियां वास्तव में भारत में एकत्रित की गई है न कि, दावे के अनुसार, भारत की बनी है।

जहां तक एक तरफ राजकीय क्षेत्र का रिकार्ड असन्तोषजनक है और उसमें अच्छी तरह छानबीन की जरूरत है तो दूसरी ओर उतनी ही चिन्ता की बात यह है कि निजी उद्योग और लोकतांत्रिक समाज की बुनियादी जरूरतों पर लगातार प्रहार किये जा रहे हैं, जैसे कि निजी व्यापार के अधिकार और प्रेस की स्वतंत्रता।

महाराष्ट्र अधिकतम भूमि निर्धारण कानून को दक्षिण की चीनी फैक्टरियों के क्षेत्रों पर लागू कर, लोकतंत्र के अधिकारों में हस्तक्षेप किया जा रहा है। इन चीनी फैक्टरियों की स्थापना कुछ अध्यवसायी लोगों ने की थी और उनके आस-पास बनाये गये फर्मों से गन्ना मिलता है, जिनसे चीनी के उत्पादन की चौगुनी मात्र प्राप्त होती है। अनुसंधान और कठिन परिश्रम के बाद यह परिणाम प्राप्त हुआ। लेकिन भूमि की अधिकतम सीमा निर्धारण करने की सैद्धान्तिक नीति के अन्तर्गत, योजना आयोग के पहिले निर्णय को अमान्य करते हुए राज्य सरकार ने चीनी फैक्टरियों के इन फार्मों को संयुक्त सहकारी फार्मों या राजकीय फार्मों में बदलने का निश्चय कर लिया है।

अतः आर्थिक विकास तथा हमारे लोकतान्त्रिक मूल्यों के संरक्षण के लिए आवश्यकता हमारे उद्योगों पर अधिकतम सीमा निर्धारित करने की नहीं बल्कि राजनैतिक और नौकरशाही अधिकारों की अधिकतम सीमा निर्धारित करने की है।

केन्द्रीय मंत्रियों द्वारा लिये गये वेतनों के बारे में कन्ट्रोलर और आडीटर जनरल की रिपोर्ट निस्संदेह आंखें खोल देने वाली है। वैसे तो प्रत्यक्ष रूप से केन्द्रीय मंत्रियों को २,२५० रुपये माहवार दिये जाते हैं, लेकिन

( शेष पृष्ठ ५८९ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

( पृष्ट ५६८ का शेष )

के जीवन में जो सबसे मुख्य अंतर थे, उसे समाप्त करने में हम अधिक सफल हुए हैं। इसके लिए सरकार को करों और ब्रिटिश अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप करना पड़ा है, यहां तक कि कुछ उद्योगों का संचालन राष्ट्रीय स्तर पर भी करना पड़ा है। इसका उद्देश्य यह है कि जो काम किया जाना है, वह सरकार की ओर से किया जाय, उसमें लाभ हो या हानि हो और प्रत्येक को जहां तक सम्भव हो राष्ट्रीय धन का उचित भाग मिल सके। परन्तु साथ ही इसका भी ध्यान रखा गया है कि आर्थिक स्वतन्त्रता और निजी प्रेरणा का खतरनाक हद तक हनन न हो सके, जिससे कठिन श्रम और प्रतिभा को उचित पुरस्कार मिलने की संभावनाएं ही समाप्त हो जायं। मानव इतिहास में अपना और दूसरों का भी जीवन सुधारने की यह सम्भावना ही सबसे बड़ी आकर्षण रही है।

## मिश्रित व्यवस्था

अतः हम एक ऐसी स्थिति में आ गये हैं कि जिसे मिश्रित अर्थ-व्यवस्था कहा जाता है। कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि जिस तरह का सामंजस्य स्थापित किया गया है, वह हमारे देश में या किसी भी देश में आदर्श सामंजस्य है। वास्तविकता यह है कि इस मामले में जो आदर्श सामंजस्य होगा, वह प्रति वर्ष इस गति से बदलता रहेगा कि कानून और प्रशासन उसका मुकाबला नहीं कर सकेंगे, किन्तु कम-से-कम ब्रिटेन की सरकारों ने एक प्रकार का सामंजस्य अर्थव्यवस्था में कायम रखने की कोशिश की है, जिसके फलस्वरूम हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर पाये हैं, जो शायद चार्ल्स डिकेन्स या दूसरे प्रसिद्ध लन्दनवासी कार्लमार्क्स को बहुत अपरिचित लगेगा।

## सामाजिक चुनौती

सामाजिक चुनौती काफी हदतक आर्थिक चुनौती के ही समान है। उदाहरण के लिए, यदि आप ब्रिटेन की राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजना को देखें तो आप पायेंगे कि उसमें सामाजिक चिंतन की क्रांति आ गयी है। अब तक चूंकि समाज इतना अधिक समृद्ध और उत्पादनशील नहीं था, इसलिए हमें यह स्वीकार करना पड़ता था कि केवल उन्हीं लोगों का स्वास्थ्य अच्छा रह सकता था, जो इसका मूल्य चुका सकते थे।

यह बात स्थिति को बहुत उभाड़ कर रख देती है, किन्तु यह समय है कि अभी तक चिकित्सा और स्वास्थ्य सम्बन्धी उतनी सुविधाएं उपलब्ध नहीं रही हैं कि इसे लोगों के साधनों के सिवाय और किसी तरह से वितरित किया जा सके या इसे दूसरे ढंग से इस तरह कहा जा सकता है कि जो लोग चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाओं का बाजार भाव दे सकें वे इसे प्राप्त करें और अन्य लोग जिस तरह भी जी सकें जीयें।

अब कुछ देशों में इस मसले को दूसरी तरह से हल करने का प्रयत्न हो रहा है। यह कहा जा रहा है कि समाज पर अपने सभी सदस्यों को उस हद तक चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाएं देने की जिम्मेदारी है जिस हद तक चिकित्सा विज्ञान की बर्तमान उपलब्धियों द्वारा दी जा सकती है, पर इसका भी यह मतलब नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति चिकित्सा की प्रत्येक सुविधाएं पा जायगा। हम कभी-कभी यह पाते हैं कि मांग और पूर्ति का सिद्धान्त इस में भी लागू हो जाता है। किसी चीज की मांग इतनी अधिक हो जाती है कि उसकी पूर्ति कठिन हो जाती है, किन्तु साधारणतः लोगों को, जो चिकित्सा आवश्यक होती है वह मिल जाती है, यद्यपि जितनी जल्दी मिलनी आवश्यक होती है, उतनी जल्दी नही मिल पाती। सामाजिक दृष्टि से एक आधुनिक विकसित समाज की ओर यह एक अनिवार्य प्रारम्भिक कदम है।

शिक्षा की चुनौती सामाजिक चुनौती के अन्तर्गत एक बहुत बड़ी चुनौती है। यदि कोई देश अपनी पूर्ण क्षमता के अनुरूप विकास करना चाहता है तो उसे अपने नागरिकों की बुद्धि और कौशल का उपयोग उनकी पूरी क्षमता तक करना चाहिये। यह प्रत्येक देश का कर्तव्य है कि अपनी आर्थिक संभावनाओं और साधनों के अनुसार यह अपने अधिकाधिक नागरिकों की शिक्षा का प्रबन्ध करे।

ब्रिटेन विदेशों में इस आर्थिक व सामाजिक चुनौती का सामना कर रहा है। आधुनिक अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण ने एक नयी समस्या को स्पष्ट कर दिया है। वह समस्या है उन देशों के विकास की, जिन्होंने बहुत बाद यानी हाल ही में उद्योगीकरण शुरू किया है। यह समस्या हर जगह एक आर्थिक,



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक और राजनीतिक आवश्यकता समझी जा रही है। इस बात की भारी आवश्यकता अनुभव की जा रही है कि अनेकानेक कारणों से जिन देशों की जनता निम्न स्तर का जीवन बिता रही है, वहां भी आधुनिक, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक प्रगति की सुविधाएं उपलब्ध की जायं। वे सुविधाएं प्रत्येक देश की परिस्थितियों के ही अनुरूप हों। जैसे यदि कोई खेतिहर देश हो, तो वहां कृषि के आधुनिक यन्त्रों की सुविधा मिलनी चाहिए। इन पिछड़े देशों की जनता की यह मांग है और विकसित देशों की जनता यह बात भलीभांति समझती है कि विकासशील राष्ट्रों के विकास में सहयोग करना उनका कर्तव्य है। इसी कारण अनेक पिछड़े हुए, किन्तु विकास का प्रयत्न कर रहे देशों को, जैसे भारत को, विकसित देशों की जनता सहयोग देने के लिए सन्नद्ध है। राष्ट्रकुलीय देशों को ब्रिटेन प्रतिवर्ष १० करोड़ पौंड (१ अरब ३० करोड़ रुपये) की सहायता देता है। भारत को अब तक १२ करोड़ पौंड सहायता ब्रिटेन की ओर से दी जा चुकी है।

सरकारी सहयोग के साथ हमें ब्रिटेन और अन्य विकसित देशों के निजी उद्योगों की लगी हुई पूंजी को भी नहीं भूलना चाहिए।

अतः ब्रिटेन और अन्य देशों के निजी उद्योगों की काफी पूंजी विकासशील देशों में लगती है। जैसे द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से भारत में ब्रिटेन के निजी उद्योगों ने १८० करोड़ की पूंजी लगायी है।


# आर्थिक समीक्षा

प्रधान सम्पादक : श्री सादिकअली

सम्पादक : श्री महेन्द्र मेहरा

- हिन्दी में अनूठा प्रयास
- आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख
- आर्थिक सूचनाओं से ओतप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक, पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक।

वार्षिक मूल्य : ५) रु० एक प्रति २२ नये पैसे

लिखें—व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

**अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी,**


## लोकतंत्र में समृद्धि का मार्ग ?

( पृष्ठ ५८७ का शेष )

जब मुफ्त बिजली जैसी अन्य सुविधाओं की लागत को मिला दिया जाता है, तो कुल रकम करीब ६,००० रुपए हो जाती है।

देश के तीव्र आर्थिक विकास के लिए निजी उद्योग को चाहिए कि वह वर्तमान समाजवादी नियोजन के स्थान पर यथार्थ-वादी नियोजन के पक्ष में जनमत जागृत करे। उसे अपने विभिन्न संगठनों के जरिये समाज सेवाओं में और विशेषतया शिक्षा और नागरिक जीवन में, भाग लेना चाहिए। यह हर्ष की बात है कि इस दिशा में अब परिवर्तन की हवा चल पड़ी है। कलकत्ता में इण्डियन चेम्बर ऑफ कामर्स ने दण्डकारण्य में विस्थापितों की सहायता के लिए एक योजना हाथ में ली है बम्बई में इण्डियन मर्चेन्ट्स चेम्बर ने एक आर्थिक अनुसन्धान संस्था और आन्ध्र चेम्बर्स ऑफ कोमर्स के एक निजी एम्प्लायमेंट एक्सचेंज की स्थापना की है। एक सीमेन्ट संस्थान ने अपनी फैक्टरियों के आसपास के इलाकों में ग्रामीण विकास का कार्य शुरू किया है। पूना ने एक बड़े फर्म ने नये अध्यवसायियों के लिए तांत्रिक तथा कानूनी सहायता देने के लिए एक फ़ाउन्डेशन की स्थापना की है।

इस प्रकार आशाजनक चिन्हों का सूत्रपात हुआ है। और हम लोगों को इस बात पर पूरा विश्वास हो सकता है कि निजी उद्योग अपनी चुनौती को स्वीकार करने के लिए तैयार है। यह चुनौती है व्यापक पैमाने पर देश को तेजी से विकसित करने की, ताकि जनता के विशाल जनसमूहों के लिए श्रेष्ठ जीवनमान सुलभ किया जा सके; वृद्धि क्षमता को पैदा किया जा सके और सभी के लिए समान अवसर प्रदान करने का वातावरण पैदा किया जा सके; और उनको, उत्पादक और उपभोक्ता तथा एक लोकतंत्र के नागरिकों के रूप में सर्जनात्मक सम्पूर्णता का सन्तुष्ट जीवन प्रदान किया जा सके।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## प्रधिकोष निक्षेप बीमा योजना

( पृष्ठ ५७२ का शेष )

सूचना देने पर तीन साल के कारावास की व्यवस्था है। प्रमंडल की आय पर किसी प्रकार का आय कर, सुपर टैक्स आदि प्रथम पांच वर्षों तक नहीं लगेगा।

### जनता की ओर से स्वागत

उपर्युक्त प्रमंडल की स्थापना से निक्षेप कर्त्ताओं में सुरक्षा की भावना बढ़ेगी। यद्यपि इस योजना से यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि बैंकिंग संकट समाप्त हो जायगें परन्तु बीमा कर्त्ता का निरीक्षण होने से वे कम अवश्य होंगे। स्टेट बैंक का इस योजना में शामिल होना दूरदर्शिता और अन्य बैंकों से सहयोग की भावना दर्शाता है। इस योजना में १५०० रुपया तक की अधिकतम राशि निश्चित की गई है, जो अपर्याप्त है। भारतीय बैंकों में प्रतिखाता औसतन ४७०० रुपया की राशि जमा रहती है, अतः इस सीमा को बढ़ाकर २५०० रुपया कर दिया जाना चाहिये जो बाद में १०,००० रुपया हो जाए। यदि सीमा नहीं बढ़ाई जाती तो व्यक्ति अपने खाते को विभिन्न बैंकों में विभक्त कर योजना का पूरा लाभ उठाने की कोशिश करेंगे। अतः बड़े बैंकों के साधन कम हो जाने का भय है। ऊपरी खर्चों का भी भार बढ़ जायगा। इस दृष्टि से कुछ लोग प्रीमियम की दर १० नये पैसे करने का सुझाव देते हैं।

कुछ भी हो, यह निर्विवाद है कि जमा बीमा प्रमंडल की स्थापना से सुरक्षा और विश्वास की भावना बढ़ेगी। बैंकिंग अर्थ व्यवस्था में सुधार के लिए यह एक अत्यन्त लाभ कारी कदम होगा यद्यपि इससे पूर्ण समाधान की आशा नहीं की जा सकती।

## राजस्थान में भूमि सुधार

( पृष्ठ ५७४ का शेष )

राजस्थान की विभिन्न तहसीलों के लिए अब हदबन्दी के क्षेत्र निर्धारित किये जा रहे हैं और ज्योंही ये तैयार हो जायेंगे और आवश्यक नियम बना लिये जायेंगे, हदबन्दी संबंधी कानून लागू कर दिया जायेगा।

उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट हो जायेगा कि १२ वर्ष की अल्प अवधि में राजस्थान में सामंतवाद खत्म किया जा चुका है और धरती जोतने वाले किसान और राज्य के बीच की कड़ी को समाप्त कर दिया गया है। इस प्रकार शोषण की संभावनाओं को दूर कर काश्तकारों को न केवल भोगावधि की स्थायिता और लगान की स्थिरता ही प्रदान की गयी, बल्कि उनके लिए लगान की निष्पक्ष दर भी निश्चित हुई और स्वेच्छित बेदखली और कड़ा लगान अब बीते युग की बात बन कर रह गयी है। किसानों को विरासत के तथा अधिकांश मामलों में हस्तान्तरण के अधिकार दिये गये। व्यवहारतः जैसलमेर जिले के कुछ रेतीले गांवों को छोड़कर, संपूर्ण राजस्थान में माजगुजारी निश्चित करने संबंधी सर्वेक्षण पूर्ण करके बन्दोबस्त द्वारा नकद लगान निर्धारित किया जा चुका है तथा राजस्थान भर में लागू किया जा चुका है।

## अजस्र शक्ति का स्रोत

( पृष्ठ ५८४ का शेष )

है। ईंधन का प्रयोग किये बगैर ही अत्यधिक ताप उत्पन्न करने में समर्थ होने के कारण सौर भट्टियां वैज्ञानिक अनुसन्धान की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी उपकरण सिद्ध होती हैं।

### मकान का गर्म करने के लिए

अमेरिका में सभी प्रकार के ईंधन का सबसे अधिक प्रयोग मकानों को गर्म रखने के लिए होता है। इस कार्य के लिए सौर विद्युत का प्रयोग करने की विधि ढूंढ निकालने में संलग्न वैज्ञानिकों ने डोवर, मैसाचूसेट्स, के एक मकान में इसकी क्षमता का सफल प्रदर्शन किया है।

इस प्रकार सौर भवन, सौर चूल्हा, सौर भट्टी तथा सौर बैटरी का भविष्य अमित सम्भावनाओं से पूर्ण है। किन्तु इन सबसे भी बढ़कर उपयोगी भविष्य सौर बक यन्त्र का है। इस यन्त्र का उपयोग सारे पानी को पीने योग्य ताजे पानी में परिणत करने में होता है।

सूर्य से पृथ्वी को शक्ति की ऐसी प्रचुरता प्राप्त है, जिसका ६० प्रतिशत अभी भी अप्रयुक्त है। इसमें से अधिकांश शक्ति को पृथ्वी के ऊपर छाये बादल आत्मसात कर लेते हैं। भूमि तथा समुद्र के ऊपर टकराने वाली रवि-रश्मियां बिजली उत्पन्न करती हैं। अनेक अमेरिकी वैज्ञानिकों का विश्वास है कि आगे चलकर जब इस प्रकार व्यर्थ हो रही सौर शक्ति का उपयोग होने लगेगा और उसे संचित कर रखने की विधियां ढूंढ निकाली जायेंगी, तो भावी विश्व की चालक-शक्ति के रूप में सौर शक्ति अणु-शक्ति को भी मात कर देगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# उद्योग प्रदर्शनी में नये भारत की झाँकी

१९६०-६१ में औद्योगिक उत्पादन का सूचक अंक १९५०-५१ को आधार वर्ष मानकर १९४ था। यह हमारे औद्योगिक उत्पादन के दुगने हो जाने का संकेत है। १९५०-५१ से पूर्व हमारे देश में औद्योगिक विकास अव्यवस्थित ढंग से हो रहा था और वह एक प्रकार से असंतुलित था, क्योंकि पूंजीगत वस्तुओं के उद्योगों के विकास के स्थान पर उस समय उपभोग-वस्तुओं के उद्योगों पर अधिक बल दिया जा रहा था। विगत दशाब्दि में हुई औद्योगिक उन्नति का विशेष महत्व हो जाता है, क्योंकि इस अवधि में हर प्रकार की मशीनों का उत्पादन पांच गुना हो गया है। इसमें लोहा और इस्पात के उत्पादन में १३८ प्रतिशत वृद्धि हुई और रासायनिकों के उत्पादन में १८८ प्रतिशत वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त हमने अब नई औद्योगिक वस्तुएं बनाना शुरू कर दिया है, जैसे उद्योगों में काम आने वाले बाइलर, मिल की मशीनें, अन्य प्रकार के मशीनी औजार, ट्रेक्टर, औद्योगिक विस्फोटक द्रव्य, अखबारी कागज, मोटर साईकिल और स्कूटर, केलशियम कारबाइट, रंग साजी का सामान इत्यादि। इस उन्नति का प्रदर्शन इस औद्योगिक प्रदर्शनी में हो रहा है।

## सरकारी क्षेत्र जम गया है

यह मेला ६ वर्ष के बाद हो रहा है। प्रथम मेले के समय भारत दूसरी योजना प्रारम्भ करने वाला था, उद्योगीकरण की शुरूआत होने वाली थी। सरकारी क्षेत्र उस समय केवल विचार क्षेत्र में ही था, केवल रेलवे ही इस क्षेत्र में विकसित कही जा सकती थी। अब स्थिति बिल्कुल बदली हुई है। सरकारी क्षेत्र अब जम गया है और इस्पात, भारी मशीनरी, बिजली का सामान, कोयला इत्यादि इसकी सफलता के द्योतक हैं। इस क्षेत्र में अब कई उद्योग आ गये हैं और विदेशी मंडपों को छोड़ कर प्रदर्शनी में सबसे ज्यादा स्थान अब सरकारी क्षेत्र ने ही लिया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय दर्शकों के सम्मुख गर्व के साथ खड़ा होने के लिए सरकारी क्षेत्र के पास काफी ठोस सामान है। १९५५ में छोटे उद्योग

विराट् उद्योग मेले के प्रबन्ध संचालक

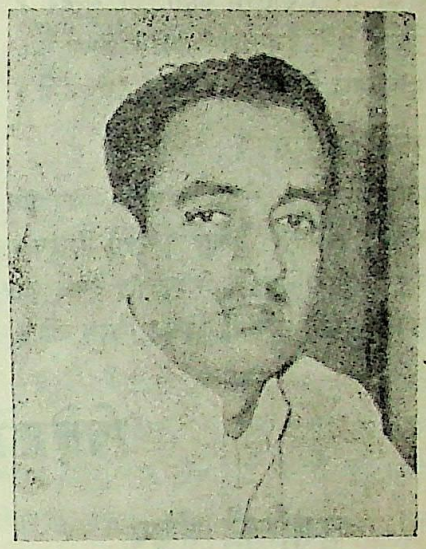

श्री जी० एल० बंसल

लगभग नगण्य थे, पर इस प्रदर्शनी में इन्होंने भी अपना उल्लेखनीय स्थान प्राप्त किया है।

विदेशों के मंडपों से, जो इस मेले में और इससे पूर्व के मेले में लगाए गए थे, प्रतीत होता है कि इस अवधि में इन राष्ट्रों ने विज्ञान और टेक्नोलोजी के क्षेत्र में असाधारण प्रगति की है। उद्योग मेले का बृहद् आकार छः वर्षों के भीतर समूचे विश्व में हुई औद्योगिक उन्नति का प्रतीक है।

औद्योगिक मेला एक छोटे नगर के सामान आबाद हो गया है—वास्तव में यह समूचे विश्व का प्रतिरूप है जिसमें विश्व की सर्वोत्तम वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं।

## पंजाब का मंडप

भारतीय उद्योग मेले में पंजाब के कलात्मक मंडप में औद्योगिक उत्पादन प्रदर्शित किया गया है। हाथ की बनी हुई हाथी दांत, कपड़े और धातु की चीजें भी रखी गई हैं। इंजीनियरी का सामान, साइकिल, सिलाई की



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशीन के पुर्जे, वैज्ञानिक और सर्जरी के काम का सामान, खेलकूद का सामान, टाइप रायटर ( बहादुरगढ़ में निर्मित) आदि तीन विभागों में बांटकर रखा गया है। पहले कक्ष में आदर्श गांव का दृश्य बनाया गया है।

मंडप का बाहरी रूप भी बहुत ही सुन्दर है। खुले स्थान में ट्रैक्टर, तेल, इंजन आदि भी रखे गए हैं।

मंडप का कुल क्षेत्रफल १९,८०० वर्गफुट है।

### अन्य राज्यों के मण्डप

चौथे द्वार के निकट स्थित राज्यों के मंडप अब बढ़िया ढंग से तैयार हो गये हैं। असम के मंडप में जंगल से प्राप्त वस्तुओं और आदिवासियों के शिरस्त्राण देखने लायक हैं। गुजरात मंडप के पीढ़े-कुर्सियां विशेष किस्म की हैं। मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के मंडपों में दस्तकारी का सुन्दर सामान भरा हुआ है। यहां बिक्री बहुत हो रही है। इसी प्रकार हिमाचल प्रदेश, मैसूर, मद्रास, पश्चिमी बंगाल, बिहार, बम्बई इत्यादि अन्य प्रदेशों के मंडप भी बड़े अच्छे ढंग से अपने-अपने उद्योगों का प्रदर्शन कर रहे हैं।

### बालचन्द उद्योग मण्डप

बालचन्द उद्योग मंडप भी देखने लायक है। यहां कोयना (महाराष्ट्र) योजना के पर्वत के गर्भ में बने बिजली-घर का मंडप भी दिखाया गया है। इसके अतिरिक्त इस कम्पनी द्वारा निर्मित अनेक प्रकार की बड़ी-बड़ी मशीनों का प्रदर्शन किया गया है।

# विदेशों का सहयोग

## अमरिकी मंडप

उद्योग और विज्ञान मानव की क्या सेवा कर सकते हैं, इसका प्रदर्शन स्पष्ट रूप से भारतीय उद्योग मेले के विभिन्न मंडपों में किया गया है। इस मंडपों में सुई जैसी छोटी-सी चीज से लेकर टनों भारी मोटर ट्रक तक दिखाए गये हैं। एक ऐसी कार देखने को मिलेगी जो हवा में उड़ती है। अन्तरिक्ष यात्री किस प्रकार कैप्सूल में बैठकर आकाश में उड़ते हैं। इसका पता इस मेले में एक मर्करी कैप्सूल से लग सकता है। बाहर से कैप्सूल के अन्दर झांकिए। तो एक पुतला यात्री और अनेक यंत्र कण्ट्रौल बोर्ड देखने को मिलेंगे।

### वैज्ञानिक उपकरण

इस मेले में अमरीकी मंडप के सुनहरी गुम्बद दूर से ही दिखायी देते हैं। मेले में एक हजार टन से अधिक वजन के औद्योगिक और वैज्ञानिक उपकरण प्रदर्शित किये गये।

सबसे पहले सामग्री को उठाने धरने के साधन दिखाये गये हैं। छोटी-छोटी ट्राली जिस पर आदमी बैठता है। बड़ा-बड़ा सामान सैकण्डों में उठाकर ले जाती है।

मंडप में टायर नये करने का उद्योग समझाया गया है। पुराने टायरों को नया करने की मशीनें दिखाई गयी हैं। अमरीका में गतवर्ष में चार करोड़ से अधिक पुराने टायरों को नया किया गया।

### कागज निर्माण और छपाई की विधि

मंडप में कागज निर्माण तथा छपाई की आधुनिक विधियों का प्रदर्शन किया गया है। छपाई में दो मशीनें दिखायी गयी हैं। एक आफसैट मशीन तथा एक आधुनिक मशीन जो छपाई की प्लेट बनाने के काम आ सकती हैं। एक छोटी-सी मशीन दिखायी गयी है, जिससे एक छोटे-से खेत के लिये एक शक्तिशाली ट्रैक्टर बनाया जा सकता है। इसका उपयोग ऊबड़-खाबड़ जमीन में भी किया जा सकता है।

इस काम के लिये मिट्टी हटाने वाली मशीनें और जंगी ट्रक दिखाये गये हैं। इन उपकारणों में ट्रैक्टर, डोजर, स्क्रेपर, ट्रक, पावर शोवल तथा कन्वेयर बैल्ट शामिल हैं। इनसे पहाड़ी स्थानों को समतल किया जा सकता है। पृथ्वी के अन्दर से खनिज निकाले जा सकते हैं। नदियों का बहाव बदला जा सकता है और सड़कें, बांध तथा औद्योगिक बस्तियां बसायी जा सकती हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## हवाई मोटर में अस्पताल

मंडप में हवाई मोटर दर्शकों के लिए एक अद्भुत आकर्षण है। दर्शक इसे पृथ्वी से थोड़ा ऊपर बिना पहियों और डैनों के चलता देखकर चकित रह जाते हैं। इसका कुल वजन दो हजार पौण्ड है और यह पृथ्वी से एक फुट ऊपर चलती है। इसकी गति ६० मील प्रति घण्टा है। इन्हीं कारों पर ऐसे हवाई अस्पताल होंगे, जो एक स्थान से दूसरे स्थान को जा सकेंगे। भूकम्प के समय इन्हें भूकम्प-स्थलों तक भेजा जा सकता है।

मंडप में एक ऐसे मौसम केन्द्र का माडल दिखाया गया है, जो ध्रुवीय क्षेत्र में स्थापित किया गया है, और बिना किसी आदमी के काम करता है। यह केन्द्र परमाणु शक्ति से चलता है। विश्व का यह प्रथम परमाणु शक्ति चालित मौसम केन्द्र है। इस केन्द्र को शक्ति स्ट्रांशियम—९० की पत्तरों से मिलती है जो गरमी उत्पन्न करता है और यह गरमी बिजली में बदल जाती है। इस बिजली का संग्रह कर लिया जाता है।

प्लास्टिक पदार्थ अब बड़े उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। इससे सुई जैसी छोटी चीज से लेकर बड़ी-बड़ी चद्दरें तक बनायी जाती है। प्लास्टिक के माडल स्कूलों में शिक्षण के काम आते हैं। ये माडल बड़े सस्ते हैं। मशीनों द्वारा प्लास्टिक विभिन्न प्रकार की चीजें बनाकर दिखाई जाती हैं। इनसे लचीले पाइप, नालियां नथा आकर्षक प्याले और गिलास बनाये जा सकते हैं।

मण्डप में परमाणु भट्टी का एक माडल है, जिससे जान सकते हैं कि भट्टी किस प्रकार काम करती है। इसके कौन-कौन से भाग है और इसमें क्या सामग्री प्रयुक्त होती है।

## ब्रिटिश मंडप

औद्योगिक मेले के अन्तर्गत ब्रिटिश मंडप में वहाँ की "मारकोनी वायरलैस टेलीग्राफ कं० लि० के बिल्कुल नये ढंग के टेलीविजन केमरे लगाये गये गये हैं जो १४ इंच मानिटर और २१ इंच मानिटर की है। इनसे ३ इंच और ४ इंच की शक्ल ली जा सकेगी।

ब्रिटेन के रोल्स रोयसे के इंजनों का प्रदर्शन लाभकारी है। भारत के साथ इस कम्पनी का काफी सहयोग है।

ब्रिटिश नायलयन स्पिनर्स लिमिटेड द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली वस्तुयें ३५,००० घनफुट के एक चमचमाते हुए 'वायु सदन' में रखी गयी है। बर्फ की एक विशाल झोपड़ी सदृश दिखाने वाला मजबूत किन्तु हल्के जलरोधी (वाटरप्रूफ) नायलन तन्तु से बना यह 'वायु सदन' शक्तिशाली पंखों से मिलने वाली हवा के सहारे खड़ा रहता है। नायलन की अन्य वस्तुओं में एक मुड़ जाने वाला 'टैंक', या तालाब, भी है। इसमें कोई भी तरल पदार्थ भर कर लारियों द्वारा ले जाया जा सकता है, और लौटते हुए इस लारी में कोई अन्य वस्तु लायी जा सकती है, क्योंकि इस टैंक को मोड़कर रख दिये जाने से जगह खाली हो जायेगी। इस प्रकार के बड़े नायलन 'तालाब' भी उपलब्ध हैं जिनका उपयोग रेगिस्तान या निर्माण स्थलों पर जलाशयों के रूप में किया जा सकता है।


## "राष्ट्र-भारत"

सम्पादक—मोहनलाल भट्ट, हृषीकेश शर्मा

इसमें आपको लब्धप्रतिष्ठ-विद्वान साहित्यकारों के ज्ञान-पोषक और मनोरंजक अच्छे-अच्छे लेख, कविताएं, कहानियां एकांकी, रेखाचित्र, शब्दचित्र आदि रचनायें पढ़ने को मिलेंगी।

इसमें संस्कृत, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं की तथा अंग्रेजी, रशियन आदि विदेशी भाषा ओं की उत्कृष्ट रचनाओं के सुन्दर हिन्दी अनुवाद भी रहते हैं।

आज ही मनीआर्डर द्वारा ६) भेजकर ग्राहक बन जाइये

रियायत—स्कूल-कालेजों, सार्वजनिक पुस्तकालयों तथा वाचनालयों को केवल ५) वार्षिक चन्दे में मिलेगी।

पत्रव्यवहार का पता—

व्यवस्थापक— "राष्ट्रभारती"

हिन्दी नगर, वर्धा

(राष्ट्रभाषा प्रचार समिति)




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113086

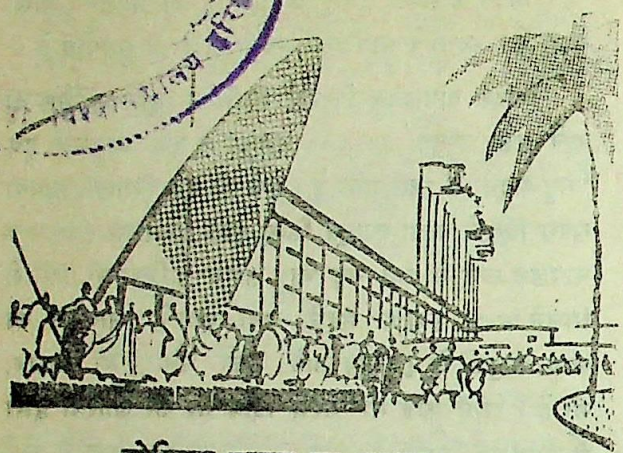

सोवियत मण्डप का स्वागत

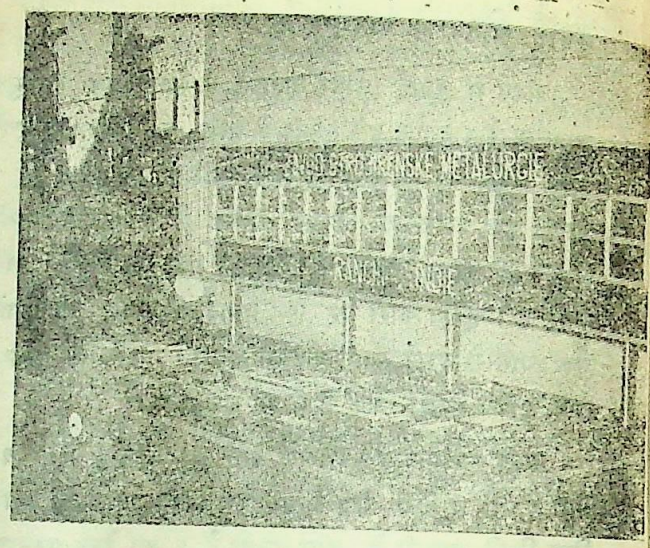

## सोवियत रूस

अमेरिकी मंडप के समक्ष ही सोवियत रूस का मंडप है। उद्योग, इंजिनीयरी, विज्ञान, कृषि, विदेशी-व्यापार इत्यादि में रूस ने जो सफलता प्राप्त की है, दर्शक के सम्मुख उसका विशाल स्वरूप इसमें पेश किया गया है। १० हजार वर्ग मीटर से अधिक भूमि पर फैले इस मंडप में पहले कक्ष में भारत रूस के सहयोग से इस देश में हुई तकनीकी उन्नति का संकेत करते हुए दूसरे कक्ष में भारी उद्योगों की विविध मशीनें रखी गयी हैं। रूस में विद्युतीकरण से कितना परिवर्तन आया है—एक पृथक् कक्ष द्वारा इस का प्रदर्शन किया गया है। एक कक्ष में करड़ा, घरेलू मशीन, पुस्तक, घड़ी, शीशे की चीजें इत्यादि उपभोग्य वस्तुएं शामिल हैं। टेलीविजन, रेडियो, टेप रिकार्ड—इत्यादि नये डिजाइन के दिखाये गये हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य-समाज कल्याण की आधुनिक रूसी प्रवृत्तियों को दिखाने के अतिरिक्त कृषि यंत्रों का विराट् प्रदर्शन है।

सोवियत रूस के मंडप का सर्वाधिक आकर्षण स्पुतनिक का नमूना है, जिसके द्वारा रूसी उड़ाकों ने अन्तरिक्ष यात्राएं की हैं।

## चैकोस्लोवाकिया

मेले में इस देश के मंडप में इंजिनीयरी उद्योग का, खास तौर पर, प्रदर्शन किया गया है। इस देश में इंजिनीयरी को प्राथमिकता दी गयी है। भारत के साथ इस देश क इस क्षेत्र में अच्छा सहयोग है। मंडप में भारत—चेकोस्लोवाकिया के सहयोग से किस प्रकार की मशीनें तैयार हो रही हैं, वह दिखाया गया है।

## इटली का मंडप

इसी प्रकार का एक मंडप इटली का है, जहां भारत-इटली सहयोग पर बल देते हुए ही सारी वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं। यह मंडप जहां बाहर से सुन्दर है वहां इस का अन्दर का फर्श भी बिल्लौरी टाइलों से बना होने के कारण अनोखा है। मंडप में प्रसिद्ध मोटरकार "फियट २३००" भी प्रदर्शित है। स्कूटर लैम्ब्रेटा व वेस्पा तथा टाइपराइटर आंलिवेत्ती की जानकारी के साथ मशीनों के पुर्जे भी प्रदर्शित किए गए हैं। मंडप के निर्देशक डा. तारदिमोली ने बताया कि इटली के उद्योगपति और तकनीकी भारत के आर्थिक विकास के लिए अपने अनुभवों का लाभ देना चाहते हैं।

## पश्चिमी जर्मनी

करीब ८ हज़ार वर्ग मीटर में पश्चिमी जर्मनी का मंडप है। रसायन, औषधि निर्माण, बिजली भारी उद्योग आदि ६४ कम्पनियों के प्रदर्शन शामिल हैं। पश्चिमी जर्मनी और भारत के सहयोग से विविध उपयोगी प्रकार की लगभग ६० चीजें ओखला प्रशिक्षण केन्द्र, दिल्ली में तैयार की गयी हैं जिन्हें दर्शक यहां देख सकता है।

पश्चिमी जर्मनी केन्द्र विश्व प्रसिद्ध लोहे के कारखाने "क्रुप" की कई मशीनें यहां दिखायी गयी हैं। भारत में रूरकेला इस्पात कारखाना बनवाने में क्रुप ने विशेष भाग लिया है।

( शेष पृष्ठ ५४६ पर )





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सोवियत रूस की कृषिसंस्था—गोस्प्लेन

ले० आई० एम० कुशिनोव प्राध्यापक,

सोवियत संघ में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास की योजना तैयार करने वाली वैज्ञानिक संस्था सोवियत संघ की मंत्रिपरिषद् की राज्यीय योजना समिति है जिसे 'गोस्प्लैन' कहते हैं।

कृषि उत्पादन की योजना बनाते समय गोस्प्लैन कृषि सम्बन्धी उपक्रमों को सही स्थानों पर रखने, देश के विभिन्न आर्थिक और भौगोलिक प्रदेशों में उसकी विभिन्न शाखाओं की स्थापना और अलग-अलग फसलें लगाने के काम पर विशेष ध्यान देती है। गोस्प्लैन अर्थव्यवस्था की अन्य शाखाओं के विकास के साथ कृषि-सम्बन्धी विकास का सन्तुलन रखती है। वह उसके विकास सम्बन्धी लक्ष्यों की पूर्ति के सम्बन्ध में आवश्यक देखरेख करते रहने के लिए भी उत्तरदायी है। राज्यकीय नियोजन में कृषि विशेषज्ञों को प्रशिक्षण देकर, खेती में वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग आरम्भ कराकर और साथ ही पूंजीगत सामान और ऋण, सुनियोजित ढंग से नयी मशीनें, खनिज उर्वरक और फसलों को लगने वाले कीड़ों और बीमारियों का नाश करने वाली दवाओं के माध्यम से कृषि-सम्बन्धी उपक्रमों को सक्रिय सहायता प्रदान करने की व्यवस्था है।

## सामूहिक फार्मों की योजना

पहले से यह जानकर कि इतना उत्पादन राज्य को बेचना होगा, अपने-अपने फार्म के कुल उत्पादन की योजना सामूहिक फार्म व राज्य फार्म स्वयं ही बनाते हैं, अर्थात् वे स्वयं ही यह तय करते हैं कि कितनी फसल बोनी है और कितने पशुओं का प्रजनन कराना है। वे स्वयं ही कृषि-तकनीक, पशु-तकनीक और संगठन सम्बन्धी कार्य पद्धतियों का ब्योरा तैयार करते हैं, वे ही यह तय करते हैं कि कितनी जमीन में खेती की जायगी, आदि। वे ही यह तय करते हैं कि कौन-कौन सी फसलें बोयी जाएंगी, कुल कितना उत्पादन किया जाएगा, पशुओं के कितने बड़े-बड़े रेवड़ रखे जाएंगे और एक-एक पशु की उत्पादन शक्ति कितनी होनी चाहिए। स्वाभाविक रूप से ही बिक्री योग्य वस्तुओं के परिमाण की योजना बनाते समय राज्य की आवश्यकताओं और घरेलू खपत का पूरा ध्यान रखा जाता है। इसमें खेती करने वालों की मजूरी, खाद्यान्नों सम्बन्धी बीमे का रक्षित कोष, बीमारों व वृद्ध व्यक्तियों की सहायता का कोष और फार्म का बीज और चारे का स्टाक भी शामिल रहता है।

योजना बनाते समय फार्म का प्रत्येक कार्य-दल और इकाई और प्रत्येक पशु-फार्म उत्पादन बढ़ाने के तरीके खोजता है। उसके बाद सामूहिक फार्म की आम सभा में इस योजना के मसौदे पर चर्चा की जाती है। बुवाई, फसल की क्षमता, कुल उत्पादन, रेवड़ के आकार और पशुधन की उत्पादन शक्ति को आम सभा द्वारा स्वीकृत योजनाओं को अनुमोदन के लिए मेहनतकश जनता की क्षेत्रीय सोवियतों के सदस्यों के पास भेज दिया जाता है। यहां कृषि विशेषज्ञ उनकी जांच करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर उनमें संशोधन करते हैं व उनका अनुमोदन कर दिया जाता है।

वर्षों के अभ्यास से सोवियत नियोजन की दो मुख्य दिशाएं हो गयी हैं: दीर्घकालीन योजनाएं ५-७ वर्षों की व्यापक ब्योरेवार योजनाएं बनायी जाएं और चालू योजनाएं नियमतः एक वर्ष से अधिक समय के लिए न बनायी जाएं।

## दीर्घकालिक नियोजन

दीर्घकालिक योजना बनाते समय ध्यान रखने योग्य मुख्य बातें ये हैं: स्थानीय प्राकृतिक व आर्थिक परिस्थितियों का समुचित ध्यान रखते हुए कृषि की विभिन्न शाखाओं का अच्छे से अच्छे और उपयुक्त स्थान पर विकास किया जाए, और कुछ क्षेत्रों में विशिष्ट फसलें ही विकसित की जाएं, मशीनीकरण का स्तर और भी ऊंचा उठाया जाए और जटिल मशीनीकरण के विकास के लिए कृषि की प्रत्येक शाखा में मशीनों व बिजली का अधिक से अधिक उपयोग किया जाए, कृषि की पैदावार बढ़ायी जाए, श्रम की उत्पादन क्षमता बढ़ायी जाए और श्रम व धन का खर्च



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम किया जाए, फार्म के कार्यों में कृषि-विज्ञान की सफलताओं और उन्नत अनुभव का व्यापक उपयोग किया जाए, सिंचाई, दलदल साफ करने, चरागाहों में पानी देने की व्यवस्था की जाए, परती जमीनों को कृषि योग्य बनाया जाए, वन-क्षेत्रों का उचित उपयोग किया जाए, आय-व्यय में सन्तुलन लाया जाए, प्रत्येक १०० हेक्टर जमीन की प्रति व्यक्ति पैदावार बढ़ायी जाए।

दीर्घकालिक योजनाओं में फार्म की अर्थव्यवस्था की प्रत्येक प्रमुख शाखा के वार्षिक विकास की व्यवस्था रहती है। फार्म के सुनियोजित विकास के लिए होने वाले श्रम व धन सम्बन्धी खर्च (अर्थात् चारे, खाद, मजूरी आदि) और उत्पादन सम्बन्धी आर्थिक अनुमानों के सन्तुलन द्वारा ही ये योजनाएं बनती है।

## वार्षिक योजना व काम की योजना

वार्षिक योजना दीर्घकालिक योजना के फलस्वरूप बनायी जाती है। उसका मुख्य उद्देश्य दीर्घकालिक विकास में लक्ष्य का क्रम निर्धारित करना होता है।

सामूहिक फार्म अथवा राज्य फार्म की वार्षिक योजना में फसल पैदा करने व पशु-प्रजनन के उत्पादन कार्यक्रम की रूपरेखा दी जाती है। उसमें पैदावार की बिक्री और उपयोग की व्यवस्था रहती है। वार्षिक योजना में मेहनत और मजूरी व अनाज और पशु-उत्पादनों की लागत में सन्तुलन लाना होता है और आर्थिक सन्तुलन भी रखना पड़ता है। अलग-अलग फार्मों की निजी विशेषताओं के आधार पर सामान्य रूपरेखा में आवश्यक सुधार व संशोधन कर दिये जाते हैं।

सामान्य वित्तीय व उत्पादन योजना के आधार पर प्रत्येक कार्य-दल, पशु-फार्म, खेत पर काम करने वाले दल और सहायक उपक्रमों के वार्षिक उत्पादन के लक्ष्य निर्धारित कर दिये जाते हैं।

यह लक्ष्य वही होता है जो सोवियत राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए बनायी सप्तवर्षीय योजना में निर्धारित किया जाता है और जिसका उद्देश्य यह होता है कि खाद्य पदार्थों के उत्पादन के मामले में आबादी की, कच्चे माल के उत्पादन के विषय में उद्योगों की और कृषि सम्बन्धी अन्य वस्तुओं के मामले में देश की अन्य आवश्यकताओं को पूरा किया जाए।

[ पृष्ठ ५६४ का शेष ]

## पूर्वी जर्मनी (जनवादी गणतंत्र)

प्रदर्शनी में इस मंडप में सबसे अधिक आकर्षक "शीशे की० औरत" है जो कलकत्ता के बाद दिल्ली की इस प्रदर्शनी में आयी है। यह एक ऐसा वैज्ञानिक नमूना है जिसके पारदर्शी अवयव की रोशनियां अपेक्षित भाषा में टेप-रिकार्ड के साथ बोलने लगती हैं।

इस मंडप में ऐसी मशीनें हैं जिनके द्वारा इस्पात, तांबा, पीतल, अलूमूनियम, निकेल आदि के नये-धातु व धागे बनाये जाते हैं और उन धागों से कपड़े भी बुने जा सकते हैं। इन धागों और इन कपड़ों का गठन-बहुत अच्छा होता है।

इस मंडप में हिन्दी टाइप राइटर देखने लायक है। यह पूर्वी जर्मनी और भारत के सहयोग से बना है। इसका "की बोर्ड" सक्षम और सुगम है। इसके साथ ही एक ऐसी मशीन है जिसके द्वारा १२ अंकों वाली ५५ संख्याओं का हिसाब-किताब हो सकता है, साथ ही लिखने की भी व्यवस्था है। कई दफ्तरों और फर्मों में इसका प्रयोग हो रहा है।

सबसे सस्ता सचित्र हिन्दी मासिक

**जागृति**

जिसे भारत के सभी प्रमुख लेखकों, कवियों, और कहानीकारों का सहयोग प्राप्त है।

उत्प्रेरक कविताएं, ज्ञानवर्धक लेख, सांस्कृतिक निबंध. रोचक कहानियां, बाल संसार, साहित्य आगे बढ़ता है आदि स्तम्भ

तिरंगा आवरण, अनेकों इकरंगे चित्र

४८ से ५६ पृष्ठ की सम्पूर्ण छपाई आर्ट पेपर पर

इस पर भी मूल्य केवल २५ नए पैसे

एजेंटों को ५ से १ प्रतियों पर २५ प्रतिशत और इससे ज्यादा पर ३३⅓ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है। डाक खर्च प्रकाशकों के जिम्मे। ऐजेन्ट नमूने की प्रति के लिए आज ही लिखें।

व्यवस्थापक—'जागृति' हिन्दी लोक सम्पर्क विभाग, पंजाब, चंडीगढ़



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwár

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# इस मास की प्रमुख आर्थिक घटनायें

## ब्रिटेन का भारत को कुल ऋण

—ब्रिटेन की सरकार ने भारत सरकार को ६.६७ करोड़ रु० (५० लाख पौंड) का एक और ऋण दिया है। यह ऋण किसी योजना-विशेष के लिए नहीं है। भारत इस ऋण की रकम से ब्रिटेन से आवश्यकतानुसार कोई भी माल आयात कर सकता है। भारत की सहायता देने वाले देशों के संगठन के निर्णयों के अनुसार, ब्रिटेन ने भारत की तीसरी योजना के लिए १२० करोड़ रु० (९ करोड़ पौंड) की सहायता का वचन दिया है। यह ऋण ब्रिटेन द्वारा दिया गया तीसरा ऋण है। इससे पहले विभिन्न योजनाओं तथा विकास-कार्य के लिए ३ करोड़ पौंड और भुगतान सन्तुलन बनाए रखने के लिए १ करोड़ पौंड के दो ऋण ब्रिटेन और दे चुका है। दूसरी योजना में ब्रिटेन ने १०७ करोड़ रु० (८ करोड़ ५० लाख पौंड) से कुछ अधिक की सहायता दी थी। तीसरी योजना के लिए ब्रिटेन ने जितनी सहायता का वचन दिया है, उस सब को मिलाकर ब्रिटेन से प्राप्त हुई सहायता २२७ करोड़ रु० (१७ करोड़ ५० लाख पौंड) होती है। ५० लाख पौंड के इस नए ऋण की अदायगी ६ वर्ष बाद शुरू होगी और २५ वर्षों में की जाएगी।

## अमेरिका से भारत को नया ऋण

—भारत और अमेरिका की सरकारों में चार करार हुए हैं जिनके अनुसार भारत को राष्ट्रीय सड़कों, दुग्ध-शालाओं के विकास, भूमि और जल की रक्षा तथा पानी की खोज की योजनाओं के लिए कुल २६ करोड़ ४० लाख रु० (५ करोड़ ५० लाख डालर) की सहायता मिलेगी। यह धन अमेरिका के पब्लिक ला ४८० के अन्तर्गत मिलने वाली कृषि जिन्सों की बिक्री से भारत को दिया जाएगा। यह अनुदान तीसरी पंचवर्षीय योजना के पहले दो वर्षों में उक्त कार्यों पर खर्च होंगे।

सहायता में से सबसे अधिक राशि २० करोड़ रु० राष्ट्रीय सड़कों के सुधार पर खर्च होगी। ३ करोड़ ६० लाख रु० अमृतसर, बंगलोर, बरौनी, कलकत्ता, हैदराबाद, जबलपुर, कानपुर, कोजीकोड, मद्रास, मदुरई, नागपुर, सूरत, विजयवाड़ा और वोरली में दुग्धशालाएं स्थापित करने और पंजाब, गुजरात में दुग्धशाला सम्बन्धी अनुसंधान कार्य बढ़ाने पर खर्च होगा। २ करोड़ रु० भाखड़ा-नांगल, दामोदर घाटी निगम, मछकुन्ड, हीराकुड, चंबल, कोसी, मयूराक्षी, कुन्डा, तुंगभद्रा और रामगंगा योजनाओं के जल प्रवाह क्षेत्र में भूमि की रक्षा के कामों के लिए है। ८० लाख रु० आंध्र प्रदेश, आसाम, बिहार, गुजरात, केरल, मध्य प्रदेश, मद्रास, महाराष्ट्र, मैसूर, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, प० बंगाल, हिमाचल प्रदेश और त्रिपुरा में नलकूप खोदने आदि के काम आयेगा। दूसरी पंचवर्षीय योजना में अमेरिका की सहायता से २८७ नलकूप बनाये गये थे।

## रोजगारों में बढ़ोतरी

—५२,००० संस्थानों से जानकारी मिली है कि वहां मार्च, १९६१ में समाप्त तिमाही में नौकरियों की संख्या १ करोड़ २ लाख २४ हजार से बढ़कर १ करोड़ ४ लाख ४० हजार हो गई। इस प्रकार इस तिमाही में रोजगार में २.१ प्रतिशत वृद्धि हुई। जानकारी देने वाले संस्थानों में ३३,००० संस्थान सरकारी हैं, जहां नौकरियों की संख्या दिसम्बर, १९६० के अन्त के ६३ लाख ४२ हजार से बढ़कर मार्च, १९६१ के अन्त में ६४ लाख ५० हजार हो गई। इस प्रकार कुल १.७ प्रतिशत वृद्धि हुई। बाकी १९,००० संस्थान प्राइवेट हैं, जहां २५ या उससे अधिक कर्मचारी काम करते हैं। इन संस्थानों में नौकरियों की संख्या दिसम्बर, १९६० के ३८ लाख ८२ हजार से बढ़कर मार्च, १९६१ अन्त में ३९ लाख ८९ हजार हो गई। इस प्रकार रोजगार में २.८ प्रतिशत वृद्धि हुई।

दूसरी योजना में सरकारी क्षेत्र में रोजगार काफी बढ़ा। केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार, अर्ध-सरकारी संस्थान और स्थानीय शासनों की सभी शाखाओं का विस्तार हुआ। मार्च, १९६१ के अन्त में सरकारी क्षेत्र में कुल ७० लाख ४० हजार आदमी काम में लगे थे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अपने प्राचीन देश के पुनर्निर्माण में.....

रजा बुलन्द शूगर कम्पनी लिमिटेड
रामपुर (उत्तरप्रदेश)

जहां हम भारत में कहीं भी बनने वाली उत्तम सफेद दानेदार चीनी का निर्माण करते हैं ।

उड़िशा सिमेंट लिमिटेड
राजगंगपुर (उड़िशा)

जहां नवीनतम साधनों एवं उत्पादन की नवीनतम प्रणालियों द्वारा हम बड़ी संख्या में ऊष्मसहों (रिफ्रेक्टरीज़) का निर्माण करते हैं जो कि इस्पात, सिमेंट, कांच आदि विविध बड़े उद्योगों में भट्टियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

डालमिया सिमेंट (भारत) लिमिटेड
डालमियापुरम् (मद्रास राज्य)

जहां हमारा सिमेंट का उत्पादन निरन्तर वृद्धि पर है। सिमेंट हमारी उन समस्त विकास योजनाओं के लिये अत्यन्त आवश्यक है, जो हमारे उज्ज्वल भविष्य के स्वप्न को मूर्त रूप देने में सहायक हो रही हैं ।

## राष्ट्र की सेवा में सन्निहित डालमिया उद्योग


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1939-2030

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arcadia Fund in Partnership with Foundation Scientifique de la Méditerranée